

ऋक्संहितास्थपरिशिष्टविषयानुक्रमणिका ।

विषया	पृ०	विषया	पृ०	विषया	पृ०
वेदभ्रास्ताविकम्	१	देवताविशेषदेवतांतरसमुच्चय.	१४	वेदपारायणप्रयोगः	२०
संहिताहोमेप्रमाणम्	३	इंद्रासोमादिविचारः	१५	ऋक्संहिताहोमप्रवृत्तिः	२१
मंत्रपिनिर्णयः	५	भाववृत्तविचार.	१५	ऋक्संहिताहोमप्रयोग	२४
ऋषिदेवतच्छद्वज्रहनिर्णयः	६	प्रकृतेदेवतासुदेवतातरप्राप्ति	१६	संहिताहोमागमृपितर्पणम्	३४
छदोनिर्णय.	८	ऋसुगणस्थल्लिङ्गोक्तदेवता.	१६	संहिताहोमागदेवतर्पणम्	३५
देवतास्थानभक्तिरूपगुणविचार	८	रोदःशब्दविचार	१६	देवतासेदपक्षेणऋघोमान्वाधानम्	३६
स्थानादीनामनुत्कीर्तनेफलाभाव.	९	संहितास्थगायत्र्यादिच्छद्वज्रयत्ता	१७	अनुवाकाद्युदेवतान्वाधानम्	४५
गणत्रयानुक्तेदेवतास्थानादिविचार.	११	गायत्र्यादिछदोमेदपरिगणनम्	१७	अनुवाकाद्युचासृप्यादयः	४५
सर्वानुक्रमण्युक्तस्थानादिकादेवताः	१२	स्वाहावत्युचः	१८	ऋग्विधानम्	४७—६६
देवतास्वरूपविचारः	१२	स्वाहावनमन्नविचार.	१८	ऋक्संहितासंपूर्णा—अष्टमाष्टकांते—	
लिङ्गोक्तदेवतानां निर्णयः	१३	वासिष्ठविषयेविशेष.	१९	मिषिदाध्यायः ६५ कृता	
लिङ्गोक्तदेवतास्थाननिर्देश.	१३	पारायणहोमाचारभकालः	१९	संहितास्थमंत्राणां वर्णक्रमकोश	

॥ ऋग्वेदसंहितार्चामकारादिक्रमकोशः ॥



मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग
अगादगाहोन्नोलोन्नो	८ ८ २१	अतरेश्चैस्तर्नयाय	५ १ २	असेनामेस्त ग्राह्य	५ २ २२	अश्वावर्मीमदतहि	१ ६ ३
अंगिरसेन पितरं	७ ६ १५	अतर्दत्तोरोर्दमीदुस्सर्दयते	८ २०	अहोयुर्वस्तुन्वन्मन्वेतेवि	४ ३	अक्षानहोर्नयतन	८ १ १४
अगिरस्तावतविष्णुवता	६ ३ १६	अतर्यच्छृणिषास्त	८ ५ २०	अकर्मतेस्वर्षसोअभूम	३ ४	अक्षसर्दकुशिन	७ ८ ३
अतिरोमिराहि	७ ६ १४	अतर्यश्चर्दयसे	२ ५ २७	अकुर्मादित्युरभिर्नोअमृतु	७ ७	अक्षितोति मनेदुस्म	१ १ १०
अंजतित्वामधुरे	३ १ ३	अतश्चप्रागाअदिति	६ ४ ११	अकारितद्भृगोर्त्तमेभि	१ ७	अक्षीभ्यतिनासिंकारभ्यां	८ ८ २१
अंजतियमथयतो नविम्रा	४ २ २१	अतश्चरतिरोचना	८ ८ ४७	अक्रागिषण्यमसिधान	३ ५	अक्षेत्रकिरक्षेत्रविन्द	७ ७ ३०
अंजतेव्यजते	७ ३ २०	अतिचित्सतमह	५ ८ ३५	अकारिनामधसो	५ १	अक्षेर्मादीव्य कृषिमित	७ ८ ५
अंजत्येनमध्वोरसेन	७ ७ २१	अतिवामादुरेअभिर्वसुच्छ	५ ५ २४	अकद्वृष्टिस्तनयन्	८ २८	अक्षोदयच्छन्साक्षाम	३ ६ १
अतरिक्षप्रारजसो	८ ५ २	अवयोर्ययलध्वभि.	१ १ ११	अकविहस्तासुकृते	४ ३	अक्षोनचुम्प्यो दूर	४ ६ २७
अतरिक्षेणपतति	८ ७ २४	अवितमेनदीतमे	२ ८ १०	अक्रान्त्समुद्र ग्रथमे	७ ४	अक्षश्चिद्रातुवितरा	६ २ २०
अतरिक्षेपुषिभि	८ ८ २६	अशुद्धहतिस्तनयन्त	७ २ २८	अक्रोनयत्रि संमिथे	२ ८	अगच्छतकृपमाण	१ ८ २१
अतरिच्छतितजने	६ ५ १४	असेपुवद्वय	४ ३ १६	अक्षणवत् कर्णवत्.	८ २	अगच्छवृविप्रवम.	३ २ ६

मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र.	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग
-------	---------	--------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------	-------	---------

मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट.	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट.	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग
अभिमुपसंस्थिना	३	१	२०	अभिर्जातोअर्थवर्ण	७	७	४	अभिर्मर्धादिव कुकुत्	६	३	३९	अभिश्चिरोमस्तो	३	१	२६
अभिरक्षिभरद्वाज	८	८	८	अभिर्जातोअरोचत	४	१	६	अभिर्वहसुवीर्यमभि	१	३	११	अभिष्वात्ता पितर	७	७	६ १२
अभिर्पुष्पासृतीपह	४	५	१६	अभिर्पुष्पतनोतिर	४	१	५	अभिर्वृत्राणिजघनत्	४	५	२७	अभिर्सेनोतिवीर्याणि	३	१	२५
अभिरस्मिजन्मना	३	१	२७	अभिर्देवतिसर्पति	४	१	१८	अभिर्हृल्यजरत्.कर्ण	८	३	१५	अभि ससिवाजमर	८	३	१५
अभिरिद्धिप्रचेता	४	५	१६	अभिर्द्वारविजनीरपेक्षा	८	३	१०	अभिर्हृनामधायिदत्	८	६	१८	अभिस्तुमेनशोचिषा	४	५	२६
अभिरिद्वोवरणोमित्र	८	२	९	अभिर्देवेभिर्मनुषश्च	८	८	२१	अभिर्हिजानिपूर्व	५	८	२४	अभिस्तुविश्रवस्तम	४	१	१७
अभिरैवमन्यो	८	३	१९	अभिर्देवेपुराजति	४	१	१७	अभिर्हिवाजिनविशे	३	८	२२	अभिस्त्रीणित्रिधात्सि	६	३	२३
अभिर्पांसुख्येवदातुन	६	५	१३	अभिर्देवेपुसर्वसु	६	३	२३	अभिर्हिवाजिनानिद	४	५	१६	अभीर्पर्जन्याववत	४	८	१६
अभिरिद्विद्वहृतो	५	२	१४	अभिर्देवोदेवानामभवत्	८	८	८	अभिर्होताक्रिकृत्	१	५	१९	अभीरक्षासिसेधति	५	२	१९
अभिरिद्विद्वहृत क्षत्रियस्य	३	५	१२	अभिर्द्यावापृथिवी	३	१	२५	अभिर्होतागृहपति	४	५	१९	अभीपोमाचेतितत्	१	६	२८
अभिरिद्वोवसुव्यस्य	३	८	७	अभिर्धियासचेतति	३	१	९	अभिर्होतादास्यत	४	१	१	अभीपोमापिपुत्	१	६	२९
अभिरुक्थेपुरोहित	६	२	३०	अभिर्नयेत्राजसा	८	३	१२	अभिर्होतानोअध्वरे	३	५	१५	अभीपोमायआहुति	१	६	२८
अभिरिद्विपुरोहित	७	२	१०	अभिर्नयेवज्या	७	३	२४	अभिर्होतान्यसीदत्	३	८	१२	अभीपोमायोज्यवा	१	६	२८
अभिरिद्विपुर्वमान.	३	२	५	अभिर्नयुक्त्वने	४	६	५	अभिर्होतापुरोहितो	३	१	९	अभीपोमावनेनवां	१	६	२९
अभिरिद्विजुह्वानुरेजमान	४	२	२५	अभिर्नैतामर्गद्व	३	१	२०	अभि शुचिद्वततम.	६	३	४०	अभीपोमाविमानिन.	१	६	२९
अभिरिद्विगार्तसृच	६	३	२३	अभिर्नैतामर्गद्व	४	१	३	अभिश्चयन्मस्तो	४	३	२५	अभीपोमाविमस्तुमे	१	६	२८

मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र
--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------

मंत्र	अष्ट	अं	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अं	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अं	वर्ग
अजातशत्रुमजरास्वर्वती	४	२	३	अञ्जेष्टासोऽकनिकास	४	३	२५	अतिथिमानुषाणां	६	२	१३
अज्ञाद्वृत्तद्वन्द्वारपदी	२	४	१६	अञ्जैविदक्षकुण्डला	६	२	३४	अतिद्रवसारसेयौ	७	६	१५
अज्ञाश्च पशुपावाजपस्त्य	४	८	२४	अन्त परिजम्भामहि	१	१	१२	अतिन सुश्रतो नय	१	३	२५
अजिरासुस्तदप	४	३	१	अन्त समुद्रमुद्गत	५	८	१४	अतिनो विरिप्तिपुर	६	६	२३
अजिरासोहरयोयेत	६	४	१५	अन्त सुहृन्नितिजा	५	८	२७	अतिवायो सप्तोयाहि	२	१	२५
अजीजनज्जट्टमतस्यांसो	३	३	३४	अन्त जत्वा पिभृत	७	५	२९	अतिवार्यो मरुतो	४	८	१४
अजीजनोजुधते	७	५	२२	अन्त यमावे अक्षसावती	२	५	२	अतिवारान्भवमानो	७	१	१७
अजीजनो हिपेवमान	७	५	२२	अन्त श्रिदिग्गण उप	६	६	१६	अतिविद्धा बिधुरेणा चित्	६	६	३२
अजीतिये हतये	७	४	६	अन्त स्वार्थिमभि	७	१	५	अतिविधा पविष्ठा	८	५	९
अजैम्माद्यासनामच	६	४	१०	अन्तरि पुर्मतागव्य व सं	३	२	१४	अतिश्रुतीतिरुश्रतां	६	८	४
अजैम्माद्यासनामच	८	८	२२	अन्तरि भूतमसस्यारमुल्ल	५	५	२०	अतिष्ठती नामति ये शुनानां	२	३७	३७
अजोनक्षादाधारघृथिवी	१	५	११	अन्तरि भूतमसस्यार	१	६	२५	अतीदुशुकओहते	६	५	७
अजोग्राक्षपसुत	७	६	२०	अन्तरि भूतमसस्यार	२	४	२९	अर्तयाम निद्रक्षिर	४	३	१३
अजोहवीदधिनातौग्र्यो	१	८	१५	अन्तरि भूतमसस्यारमुल्ल	२	५	१	अर्ती हि मन्यु पाविण	६	३	५
अजोहवीदधिनावर्तिका	१	८	१६	अलिबुधवक्षिथ	३	१	५	अर्तुण्वत्तं विर्यतम	३	६	१
अजोहवीक्षासत्याकरावा	१	८	१०	अतित्रीसोमरोचना	६	८	७	अर्तो देवा बवतुन.	१	२	७

मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग
अत्राहुतद्रहेयमध्वआहुतिर	३	१	२५	अदब्धेभिस्तवगोपाभि	४	५	१०	अदंश्रमस्फुक्तव	१	४	७
अत्राहतेहरिस्ताट	३	६	८	अर्द्धरुसमर्थजोविखाभि	४	१	३२	अदृष्टान्हल्यायनी	२	५	१४
अनुमनुरुख्य	२	५	२९	अदर्भापारुवेवरीयसी	२	१	२६	अदेदिष्टद्युहागोपतिगां	३	२	८
अत्रियद्वाभवरोहन्	४	४	१९	अर्धाधिगतुचित्तम	६	७	१३	अदेद्याहेव प्रचता	८	७	९
अत्रीणास्तोममग्निवो	६	३	१८	अदाग्नेमैषुरुत्स्य	६	१	३५	अदेधेनुमनसा	२	६	३१
अवेदुमेमससेल्लमुक्त	७	७	१६	अदाभ्येनश्रोचिपां	८	६	२५	अदोयद्बुरुष्वते	८	८	१३
अत्रेरिवश्रणुतपूर्व्यस्तीति	६	३	१७	अदाभ्योनशुवनानि	३	८	४	अदीर्घिदुप्रस्थितेमा	८	६	२१
अत्रैववोपिनह्याभि	८	८	२४	अदाभ्य पुरगता	३	१	९	अङ्गि सोमपट्ट्यानस्य	७	२	३२
अथालेअगिरस्तम	१	५	२३	अदितिर्द्यौर्वाष्ट्रीवीकृत	८	२	१२	अथाचित्रिक्षित्तदपो	४	७	२
अथलेअंतमाना	१	१	७	अदितिर्द्यौरादितिरतरिक्ष	१	६	१६	अथादूतवृणीमहे	१	३	२८
अथानलम्भेपा	१	२	२१	अदितिनंतरुध्यतु	६	४	८	अथादेद्याउदितासूर्यस्य	१	८	७
आद्रद्रयादयेतेवार्याणि	४	३	३	अदितिर्नोदिया	६	१	२६	अद्यायाश्चक्षुइन्द	६	४	३९
अर्द्धराभीमहूते	१	४	११	अदिलिखजनिष्ट	८	३	१	अद्यानोदिवसवित	३	४	२५
अर्द्धच्छद्दोपवसे	७	३	१०	अदितेमिन्द्रवरुणे	२	७	८	अद्यासुरीयुयदियातुधानं	५	७	७
अर्द्धवल्गस्त्वधावत	६	३	३९	अदितस्तच्चिटाद्युणे	४	८	१७	अद्येदुप्राणीतममन्न	७	७	३०
अर्द्धवेभिः सवित.	५	१	१५	अदिसुतस्वर्पाको	४	५	१३	अद्विपातेमदिनं	७	८	२०

मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग
अध्वत्वाभिद्रविद्धि	८ १ ३०	अधश्चेत्तकुलशृंगोभिर्गुक्तं	६ ३ १६	अध्वावंहिजस्करः	६ ३ १०	अधोद्वयद्वयमेवेत्वाया	३ ४ १८		
अध्वलघतिमह.	४ ६ २	अधश्चेत्तकुलशृं	७ २ ३२	अध्वानो न्यो हुतेधा	४ ३ १०	अधोद्वयतोऽश्विना	५ २ १		
अधत्वाविधेपुर.	४ ६ २	अधस्सयस्याच्य	४ १ १	अधानो विश्वसौमग	३ ३ २५	अधोद्वयहोतृव	४ ३ ४		
अधत्विर्पामाभ्योर्जसा	२ ६ २८	अधस्सातेचर्पणयो	४ ६ २०	अध्वान्वस्यजेन्यस्य	८ १ ३०	अधोद्वयनहोद्वयं	५ १ ५		
अधद्वप्सोऽंशुमत्याउपत्ये	६ ३ ३४	अधस्सानुददेवता	२ ७ १४	अध्वान्वस्संदशजगन्वान्	६ १०	अधोद्वयविद्वीढ्योसि	५ २ २		
अधद्वुतान पित्रो	५ ३ २	अधस्सानोवृधेभव	४ ७ २९	अधोमन्येवृहदसुयम्	४ ७ २	अधोद्वयहोतृगर्वणः	६ ७ ७		
अध्याश्रितेअपसा	४ ६ २	अधस्सात्यपनयति	४ ५ १४	अधोमन्ये श्रतेअस्या	१ ७ १९	अधोद्वयहोतृन्यसीदो	४ ३ ५		
अध्वार्द्यामध्वा	४ ७ १३	अधस्सायोपणामही	६ ४ ६	अधोमहीनआयस्य	५ २ २०	अधोद्वयहोतृपुपां	४ १ ८		
अध पयस्वमोपरं	६ ३ १०	अधस्सनाहुताविभ्यु.	१ ६ ३२	अधोमोतुरुपसं ससवित्रां	३ ४ १८	अधोद्वयश्रेष्ठतोर्भुद्रस्य	५ १०		
अध्वमर्जशेतुरणिर्मनु	१ ८ २५	अधस्सनाम्नुस्ताविध्वं	१ ३ १६	अध्वायथान पितर परास.३	४ १९	अधोद्वयमिहानिपय	६ १ १		
अध्वियमिपिराय	६ ४ ६	अधस्समस्य सिर्विदे	१ ८ २३	अधोयिधोतिरसस्त्र	७ ७ २७	अधोद्वयमस्थाद्वुपभो	३ ११		
अध्वज्ञायोर्गिरतिदासत्	५ ७ १६	अधोऽकुणो.पृथिवी	२ ६ १०	अध्वयोविश्वामुवना	२ ६ १९	अधोद्वयोरद्वयाउक्थ्य	५ ३ ४		
अध्वयचार्यगणे	६ ४ ६	अधोऽकुणो प्रथमवीर्य	२ ६ १९	अधोयुधिर्मनुपीपुविष्टु	२ ६ २४	अधिनहोद्वयं	६ ३ ४		
अध्वयदिमेपवमान	७ ५ २३	अधोगावउपमाति	८ १ ३०	अधोऽस्यतपृथिवी	४ ३ ३०	अधोद्वयोपमश्रवः	७ ८ २		
अध्वयद्राजानाविष्टो	८ १ ३०	अधोचिद्वयदिधिपा	८ ७ २०	अधोऽयंतवह्नयः	१ ७ २	अधोद्वयोसिचपतेवृहोर्व	१ ६ २४		
अधश्चतुकवपवृद्धं	५ २ २६	अधोतेअप्रतिष्कृतं	६ ६ २३	अधोसुमदोऽवरुति.	८ १ २९	अधोद्वयपणीनां	४ ७ २६		

मंत्र	अष्ट. अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग
अधियर्दसिन्धालिनीव	७	४	अध्वर्यवोपइतासमुद्र	७	७	२४	अध्वर्योवीरप्रमहे	४	७	१८	अनानुदुर्वुपभोजगिम	२	६	३१
अधियस्त्रस्योकेशवता	८	५	अध्वर्यवोभरतेद्राय	२	६	१३	अनच्छयेतुरगतुजीव	२	३	१९	अनोयतोवनिबद्ध कथा	३	५	१३
अधियावुहुतोदिव	६	२	अध्वर्यवोयउरण	२	६	१३	अनसमस्तुष्टुर	६	८	६	अनोयतोवनिबद्ध	३	५	१३
अधिश्रियेदुहिता	५	१	अध्वर्यवोयन्नर	२	६	१४	अनमीवाउपसआ	७	८	७	अनारभणेतदवीरयेथाम्	१	८	८
अधिश्रियनिदधुश्चारं	१	५	अध्वर्यवोयोअपो	२	६	१३	अनमीवासद्वज्यामर्दतो	३	४	५	अनिरेणवचसाफल्यवेन	३	५	३
अधिसानुनिजिह्वते	१	५	अध्वर्यवोयोदिव्यस्यं	२	६	१४	अनर्वाणोलेपां	६	१	२५	अनुकुणेवसुधितियेमाते	३	७	२४
अधीन्वत्रससुतिचसुसचं	८	४	अध्वर्यवोयोदुभीक	२	६	१३	अनर्वाणवृपभंमद्रजिहं	२	५	१२	अनुकामर्तपयेथा	१	१	३२
अधीवयाद्विरीणां	५	८	अध्वर्यवोय श्रुतमासुहस्व	२	६	१४	अनेधरातिवसुदासुपस्तुहि	६	७	३	अनुकुणेवसुधिती	३	२	८
अधीवासपरिमासु.	२	२	अध्वर्यवोय श्रुतशंवरस्या	२	६	१३	अनुशोजातोअनमीशु	२	२	२२	अनुतदुर्वीरोदंसी	५	३	२७
अधुक्षतक्षियमधु	६	७	अध्वर्यवोय'स्त्रश्रं	२	६	१३	अनुशोजातोअनमीशु	३	७	७	अनुतत्रोजास्पति.	५	४	५
अधुक्षरिपुत्युपीमिप	६	५	अध्वर्यवोरुणदुग्धमशु	५	६	२३	अनुवचैरिभियुभि.	१	१	१२	अनुतेदायिमहर्दद्वियार्य	४	६	२०
अधेनुदस्त्रास्यं विपक्तां	१	६	अध्वर्यवोहविर्भताहि	७	७	२४	अनवस्त्रेयमश्रायतक्षन्	४	१	२९	अनुतेक्षुप्मेतुरयतमीयशु.	६	७	३
अध्वर्यव कर्तनाश्रुष्टि	२	६	अध्वर्युभिं पंचभि.	३	१	२	अनस्वतासर्पतिमामहेमे	४	१	२१	अनुतमतेमधवशक्तिनु	२	३	२५
अध्वर्यव पयसो	२	६	अध्वर्युवानमधुपाणि	७	८	२१	अनागसोअदितये	४	४	२६	अनुत्रितस्युध्यत.	५	९	२२
अध्वर्यवश्चकुवासोमधूनि	४	२	अध्वर्योअद्रिभि सुत	७	१	८	अनाष्टपानिष्टपित	८	७	२६	अनुत्वामुहीपाजसीअचुके	१	८	२६
अध्वर्यवानुहिपिंच	६	३	अध्वर्योद्वावयात्वं	५	७	३२	अनानुदुर्वुपभोदोधत	२	६	२७	अनुत्वारथोअनुमन्योअर्वान्	२	३	१२

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
अनुत्वारोदसीवमे	६ ५ २८	अनुदित्वावुतसोम	७ २२	अन्योज्ञायां परितृशंस्य	७ ८	अपुद्गारामतीनां	६ ७ ३५		
अनुत्वारोदसीवमेचक्र	५ ८ १६	अनूतोदग्रहस्त्यतोअदि	४ २७	अन्योअन्यमनुगुण्याति	५ ७	अपन शोछुचदुध	१ ७ ५		
अनुत्वाहिद्विअर्धदेव	४ ६	अनूपेगोमान्गोभिरक्षा.	७ १३	अन्वपाखान्यवृत्तमोजसा	५ ६	अपुत्राचद्वद्विश्वात्	८ ७ १९		
अनुद्यावापृथिवी	४ ६	अनूक्षराऋजव	८ २४	अन्वस्यस्युरददोपुरस्तात्	७ ७	अपुयोरिद्व पापजे	८ ५ २६		
अनुद्रप्सासुददवः	६ ७	अनेनोवोमरुतो	५ २६	अन्वेहुमासुअन्विद्वनाति	४ ७	अपुत्रिद्वेपविभ्योऽदमूनाः	२ ८		
अनुद्वाजहितानयो	३ ६ २२	अनेहसप्रतरणविवर्धणं	६ ४ १४	अन्वेकोवदतियहदाति	२ ६	अपदयगोपामनिपद्यमानं	३ २०		
अनुपूवाण्योक्त्वा	३ २२	अनेहसंवाहवमानमूतये	६ ४ १६	अपुप्रतोअराण्य	६ ८	अपदयगोपामनिपद्यमानं	८ ३५		
अनुप्रलस्योक्तस	१ २ २९	अनेहोदात्रमदितिरनुव	२ ५	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुप्रलस्योक्तस.	६ ५ ७	अनेहोनेउरुधजे	६ ४ ५३	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुप्रवासआयव	६ ८ १३	अनेहोभिन्नार्थमन्	६ ४ ५३	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुप्रथेजेनआजो	४ ७ ८	अन्यदृद्यकवैरमन्यदु	४ ७ ८	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुयदांमस्तोमन्दसानं	४ १ २३	अन्यमस्माद्वियाइय	४ ७ ८	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुव्रतार्यरन्धयन्नपन्नजा	४ १ २३	अन्यमस्तोमन्दसानं	४ ७ ८	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुश्रुताममतिवर्धत्	४ ३ ३०	अन्यव्रतमामनुप	४ ३ ३०	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुस्पशोभवत्येप	८ ८ १८	अन्यस्यावत्संरिहती	८ ८ १८	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		
अनुस्वधामभक्षत्रापो	१ ३ ३	अन्यावोअन्यामवतु	१ ३ ३	अपुप्रन्त्सोमरुक्षसं	७ १ ३५	अपदयग्रामं वहुमानं	७ १८		

मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग
अपादितवदुनश्चिन्तम	४	७	अपाच्यसाधसो	२	६	अपेद्विपुतोमन.	८	१०	अप्राभिसलयमधुवन्तयेत्.	६	४
अपाविहोअपावुभिः	६	५	अपारोवोमहिमा	४	४	अपेहिमनस्पते	८	२२	अप्सरसांगधर्वोणा	८	७
अपादुशिष्यधर	६	६	अपागभैदुतमोपधीना	२	८	अपोदेवीरूपक्षये	१	११	अप्सराजामुपसिप्ति	८	७
अपादतिप्रथमापुद्धतीना	२	२	अपानपातमवसे	१	२	अपोमहीरुभिर्नास्ते	८	५	अप्साद्देयवायवे	७	२
अपाद्वोत्रादुतपोत्रार्दमत्र	२	८	अपानपादात्स्थोदुपस्थे	२	७	अपोयवर्द्धिपुरुहूत	३	५	अप्सुत्वामधुमत्तम	६	८
अपाधमदुभिर्नास्ती	६	६	अपापेर्कजीवधन्य	७	८	अपोवसान् परिकोदा	७	५	अप्सुधृतस्यहरिवः	८	५
अपान्यदेत्यन्यपुन्यदेति	२	१	अपाफेनेननसुचे	६	१	अपोवृत्रवद्विवासं	३	५	अप्सुमेसोमोअवधीत्	१	२
अपामतिष्ठरुणं हरतम	१	३	अपासधेतस्थिवासं	५	६	अपोपाजनंस सरत्	३	६	अप्सुमेसोमोअवधीत्	७	५
अपामसोममृताअमूम	६	४	अपा पूर्वपांहरिव	८	५	अपोपुण्ड्रयशस्	६	४	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	३	३
अपामिदन्यथन	८	७	अपा सोममस्त्रिमिदं	३	३	अपोसुम्यक्षवरुण	२	१०	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	१	२
अपामिदेदूर्मयुस्सदृगाणा	७	४	अपिपथमिगन्महि	४	६	अपोरेपामकुपतद्वेवा.	३	७	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	१	२
अपामीवामपवित्रा	८	२	अपिबल्लदुर्व सुतं	६	३	असूयैमरुतआपि	३	३	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	७	८
अपामीवामपुलिधं	६	१	अपिवृषपुरणवत्	६	३	अमस्वतीमधिनावाचं	१	७	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	५	२
अपामीवासविता	८	५	अपिदुत सविता	५	४	अप्रक्षितवसुभिर्मापुहस्तं	१	४	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	३	२
अपामुपस्थेमहिपा	४	५	अपूव्यापुस्तमां	४	७	अप्रतीतो जयतिसधर्नामि	३	७	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	२	२
अपामूर्मिर्मेदञ्चिव	६	१	अपेतवीतसिचर्मपूतात्.	७	६	अप्रयुद्धमयुच्छिन्निरसो	२	२	अप्स्वमेसोमोअवधीत्	३	८

मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग							
अब्जामुक्थेराहं	५	३	२६	अभितेमर्धुनापर्यं	५	७	३६	अभित्वाद्युपभासुते	६	३	४६	अभिप्रचूररुप्यता	६	६	१२	
अमाग सक्षपुपरेत.	३	८	१८	अभित्यगाव पर्यसा	३	७	३	९	अभित्वाद्यूरनोनुम	५	३	२१	अभिप्रयासिवाहसा	३	१	१०
अभिकण्वाअनूपत	५	८	१५	अभित्यपुव्यमर्द	५	७	२६	अभित्वासिधोशिशुमिव	८	३	६	अभिप्रयासिसुधिताति	४	५	१९	
अभिन्नग्याचिदद्रिव.	२	१	२२	अभित्यमद्यमर्द	२	७	२६	अभियार्मद्विनामुव	८	६	२७	अभिप्रवतसमनेव	३	८	११	
अभिकत्वद्रूपरय	५	३	४	अभित्यमेपुरुहूतमुगिमयं	५	४	९	अभियुग्नानिवृनिन	३	३	२	अभिप्रव साराधस.	६	४	१४	
अभिकर्दन्कलश	७	३	१४	अभित्यवीरगिर्वणसं	७	४	९	अभियुग्नवृहद्यश.	७	५	१८	अभिप्रस्थाताहेव	५	६	२५	
अभिकर्दस्तनय	४	४	२८	अभित्तिपुष्टपुणं	४	७	२६	अभित्द्रोणानिवृत्रव	४	८	२३	अभिप्रियाणिकाव्या	७	१	१४	
अभिक्षिपु समंमत	६	८	४	अभित्वागोतंमागिरा	६	१	२६	अभित्तिजन्मात्रिदृद्व	२	२	५	अभिप्रियाणिपवते	७	२	३३	
अभित्वानोमववन्	८	६	१३	अभित्वागोतंमागिरा	८	३	२८	अभित्तिजन्मात्रीरोचनातिर	२	२	१८	अभिप्रियाणिपवते	७	४	१३	
अभिमर्धुवर्मवृणत्	६	५	२९	अभित्वादेवसवित	६	१	२३	अभित्तिजन्मात्रीरोचनातिर	४	२	१६	अभिप्रियादिवस्पदा	६	७	३९	
अभिगव्यानिर्वीतये	७	१	२८	अभित्वादेव सवित	७	८	३२	अभित्तिजन्मात्रीरोचनातिर	२	७	२	अभिप्रियादिवस्पदा	६	७	३५	
अभिगावोअधन्विपु	६	८	१४	अभित्वा नक्तिकपसं.	६	२	२०	अभिनोदेवीरवसा	१	२	६	अभिप्रियादिवस्पदा	६	२	३२	
अभिगावोअचूतयोपा	६	८	२२	अभित्वापाजोरक्षसो	६	४	१२	अभिनोनर्यवसु	४	८	१७	अभिप्रेहिदक्षिणत	८	३	१८	
अभिगोत्राणिसहसा	८	५	२३	अभित्वापूर्वपितये	८	१	३७	अभिनोवाजसवतम	७	७	२३	अभिब्रह्मीरन्पत	६	८	२३	
अभिर्जेत्रीरसचतस्पृधान	३	२	५	अभित्वापूर्वपितये	३	७	२६	अभिप्रयोपतिगिरा	६	५	५	अभिमुवैभिसंगाय	२	६	२७	
अभिततैवदीधयामनीपां	३	२	२३	अभित्वायोपणोदश	३	७	१३	अभिप्रददूर्जनयो न	३	६	१	अभिभूरुहमार्गमं	८	८	२४	

मंत्र	अष्ट. अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ	वर्ग		
अभियज्ञगृणीहिनः	१	१	२८	अभिवोअचोप्योवावतोचृन्	२	१४	अभिहिसत्यसोमपा.	६	७	१	अमीन्मृग्यं पौत्ये.	८	२	२२
अभियेत्वाविभावरि	४	४	२१	अभिवोद्विधीय	५	३	अमीकंआसांपदवीर	३	४	१	अमीहिमन्योतवसं	८	३	१८
अभियेमियोवनुप	५	४	५	अभिवोवीरमन्धसोमदंयुद	४	३	अमीनआवधृत्स	३	६	२४	अभुत्सुमदेव्या	५	८	३३
अभियोमहिनादिवं	३	४	४	अभिव्ययस्यखदिरस्य	३	३	अमीनवतेजुद्रुहं.	७	४	२७	अभूद्विष्टवयुनमोपुर्भूपत	२	४	२७
अभियदेवीनिऋति	५	४	४	अभिव्रजनतंक्षिपे	५	८	अमीनोअदजक्यमित्	२	२	७	अभूदुपारमेतवे	१	३	३५
अभियदेव्यादिति	५	४	५	अभिव्यावन्नकुदीनेभिः	८	२	अमीनोअर्पदिव्या	७	४	२१	अभूदुभाउअशवं	१	३	३४
अभिवस्त्रासुवसुनानि	७	४	२१	अभिष्टनेतैअद्रिवो	१	५	अमीत्रुदमेक्रमेकं.	८	१	६	अभूदुवोविधुतेरंलधेयं	३	७	३
अभिवह्नयजतये	६	१	३	अभिष्टयेसुदायुध	६	५	अमीत्रुसमद्वयाजुत	६	७	१७	अभूदुपाद्दतमामघोनीं	५	५	२६
अभिवह्निरमत्ये	६	७	३३	अभिसिध्मोअजिगा	१	३	अमीमवन्वस्त्वमिष्टिं	१	४	९	अभूदुपास्तोत्पथु	४	४	१६
अभिवानुनमंश्चिना	५	५	१२	अभिसुवानासुददंव	५	८	अमीमृतस्यदोहनोअनूपतर	२	२	१३	अभूद्वेव संवितावद्यो	३	८	५
अभिवयुदील्यर्पा	७	४	२०	अभिसूयवसनय	१	३	अमीमृतस्यविष्टप	६	८	२४	अभूद्वीरगियेणो	४	७	२३
अभिविप्राअनूपतगावं	६	७	३८	अभिसोमासज्जायवं.	६	८	अगोवर्तनंहुविपां	८	८	३२	अभूद्वीरगियेपते	४	७	३
अभिविप्राअनूपतमूर्धन	६	८	७	अभिसोमासज्जायवं.	७	५	अमीवृत्कृदोतोविंश्चरूप	१	३	६	अभूद्वीरगिभ्युं आयु	७	७	१६
अभिविश्वाग्निवार्या	६	८	३२	अभिसुपूर्भिर्मियो	६	४	अमीपतस्तदाभर	५	३	२१	अभ्यभिहिश्रयंसा	७	५	२२
अभिवृत्सुपलां	८	८	३२	अभिवस्त्रतुयेतवं	६	१	अमीपुणस्त्वर्धि	६	६	२५	अभ्यर्चनमाकूवत्	३	३	२४
अभिविनाअनूपत	७	१	४०	अभिवस्त्रद्विष्टिमदैस्य	१	४	अमीपुण.सर्वांनां	३	६	२४	अभ्यर्पतसुष्टुतिगाव्यं	३	८	११

मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग
अयमग्नेवेवपि	६	३	३१	अयाचितोविपानया	७	२	३	अयाहुसंमाययावावृथानं४	६	१४	अरमउन्नयाम्णे
अयमस्मान्वनस्पतिर्मा	३	३	२२	अयातेअसेविधेम	२	५	२७	अयुजोअसमोचुभि.	६	४	अरमेगतंहवनाय
अयमस्मासुकाव्यं	८	८	२	अयातेअग्नेसमिधा	३	४	२५	अयुज्जतइदविश्वकृषी.	२	४	अरहिष्मासुतेपुण.
अयमसिजरीतु पर्यमेह	६	७	४	अयाधियाचगव्याया	६	६	२४	अयुक्तसप्तशुधुवः	१	४	अरण्यान्यरण्यानि
अयमिन्द्रवपाकपि	८	४	४	अयानिजश्विरोजसा	७	१	१०	अयुक्तसप्तशुधुवः	५	५	अरण्योनिरहितोजातवेदा
अयमिन्द्रमूरुसखा	६	५	२७	अयापवस्वदेव्यु	७	५	११	अयुक्तसूरपतशु	७	१	अरमतिरनर्वा.
अयमिहमथमोधाधि	३	५	६	अयापवस्वधारया	७	१	३१	अयुक्तदधुघावृते	६	३	अरममाणोअस्यति
अयमुत्तेसमंतसि	१	२	२८	अयापवपवस्वना	७	४	२१	अयुक्तेनोविश्वो	८	२	अरमय सरपस.
अयमुत्तेसरस्वतिवसिष्ठ.	५	६	१९	अयामधीवतोधि.	६	६	१७	अयुत्सजनवद्यत्यसेना	१	३	अरमय गायति
अयमुत्वाविचर्पणे	६	१	२३	अयामिधोपद्भ	५	३	७	अयोदशोयुचिपा	८	४	अरइमानोयेरया
अयमुत्वापुस्तमोरयीणां	३	४	९	अयामितेनमंडक्ति	३	१	१४	अयोक्तेवदुर्मदआहिजुहे	१	२	अराइवेदचरमा
अयमुद्गान पर्यङ्गि	४	७	११	अयारुचाहरिण्या	७	५	२४	अरकामायहरयः	८	५	अराधिहोतानिपद्वा
अयमुप्यमदेव्यु.	८	८	३४	अयावाजदेवाहित	४	६	३	अरकृण्वतुवेदिं	२	४	अराधिहोतास्व१निपत्तः
अयमुप्यसुमहां	५	२	११	अयावीतीपरिन्नव	७	१	१८	अरक्षयानोमहे	६	१	अराधिकोणेविक्रंटे
अयमेकइत्यापुरू	६	२	२४	अयासमभेसुक्षिति	२	७	२४	अरतइदकुक्षय	६	१	अरावीदंशु.सर्वमान.
अयमेभिनिचाकंशन	८	४	४	अयासोम.सुकुलया	७	१	४	अररासोनमीज्हुपेकराणि५	६	८	अरित्रवादिवस्पृशु

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
अरिष्ट समतोर्विश्वं	८ २ ५	अणोसिचितप्रयाना	५ २ २४	अर्वाङ्गेहि सोमकामं त्वाहुः	१ ७ १९	अपीतो मधुमत्तमः	७ २ ४		
अरुणं चरुपायमभूत्	६ ५ २०	अर्थमिद्वारुअर्थिनः	१ ७ २७	अर्वाङ्गत्रिचक्रो मधुवाहनो	२ २ २७	अपीण सोमशगर्वे	७ १ २०		
अरुणो मासुष्टुक्.	१ ७ २३	अर्थिनो यतिचेदर्थ	६ ५ ३३	अर्वाङ्गं रादैव्येनावसा	५ ३ ३	अर्हंतो यसुदानव	४ ३ ८		
अरुणं दुहितरा	४ ८ ५	अर्धवीर्यं श्रुतापां	५ २ २७	अर्वाङ्गवश्रवसे सुति	७ ४ १५	अर्हन्ति मर्गिसार्यकानि	७ १७		
अरुणं नयनिारं	६ ८ १५	अर्मको नकुमारक	६ ५ ७	अर्वाचमद्यय्यनुवाहण	२ ८ १	अलानुणो वलद्वद्वजोगो	२ २		
अरुणं चरुपसं प्रक्षि	७ ३ ८	अर्यमणवृहस्पति	८ ७ २९	अर्वाचत्वारुष्टुत	६ ३ ३	अलायस्व परशुर्ननाश	७ २ १८		
अरोरवीर्यो मस्य	२ ६ ४	अर्यमणवरुणमित्रमेपां	३ ४ १६	अर्वाचत्वारुष्टुत	५ ८ १७	अवतमत्रयेगृह	५ १९		
अर्चतु प्राचैत	६ ५ ६	अर्यमाणो अदिति	३ ३ २७	अर्वाचत्वासुखेरथे	३ ३ ४	अवक्रवक्षिणवृषमयथाजुरं	७ १०		
अर्चद्वपाद्युपभि	२ ४ १३	अर्यग्यवरुणमित्र्यवा	४ ३ ३१	अर्वाचैद्व्यजनं	१ ३ २२	अवतुन पितरं सुप्रवाचनं	७ २४		
अर्चतु एकेमहि सामं न्वत	६ २ ३६	अर्यो वागिरो अर्यर्च	८ ८ ६	अर्वाचवाससय	१ ४ २	अवतुमासुपसो	८ १४		
अर्चतस्वाहवामहे	४ १ ५	अर्यो विशागाहुरेति	७ ७ २	अर्वाचो अद्याभवता	२ ७ ११	अवरोद्यामस्तभाय	६ १५		
अर्चितनारीरुपसो न	१ ६ २४	अर्वक्षिरमुभवतो वृक्षि	१ ६ २४	अर्वाचीनो वसो मव	३ ६ २९	अव परेण पुरगनावरेण	२ ३ १७		
अर्चो दिवेषु ते राज्य	१ ४ १७	अर्वतो न श्रवसो	५ ६ १२	अर्वाचीनसुतेमनं	३ ३ २१	अव परेण पितरय	२ ३ १७		
अर्चो मिते सुमति	३ ४ २४	अर्वतो न श्रवसो	५ ६ १२	अर्वाचीनमगो भव	३ ३ २२	अवक्षिपदिवो अस्मान	२ ७ १२		
अर्चो मिवावर्थाय	७ ६ ११	अर्वाप्रथनियच्छत	६ ३ १७	अर्वावतो न भागहि	३ ३ २	अवचष्टरुचीपम	६ ४ ४०		
अर्चो आशुशक्तिने	१ ४ १७	अर्वाप्रथविश्ववार्ते	४ ७ ९	अर्वावतो न भागहि	३ ३ २				

मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग
अवतेहेळोवरुणमोसि	१	२	१५	अवचर्महृद्रदृढिभ्रुचीनं	२	१	२२	अवस्वरातिगौर	६	५	६	अविभेचिदुयोदधत्	४	७	२१
अवमनोभरतेकेतेवेदा	१	७	१८	अवर्षोर्वंमुदुपू	४	४	२८	अवस्वेदाद्वामिते	८	७	२२	अविप्रोवायदविधत्	६	४	३७
अवत्यावृद्धीरिपे	८	७	२२	अवविद्धतोऽयमपु	२	४	२८	अवाकल्पेपुन पुम	६	७	३३	अविष्पृधीवधिनानासु	५	५	१३
अवत्वेद्दप्रवतो	४	७	३२	अववेदिहोत्राभिर्यजेत	५	५	२	अवाचक्षपदमेस्वस्व.	४	१	२६	अविष्टोऽस्मान्विष्ठासु	५	३	२६
अवृथासिबुमन्यमाना	३	५	२५	अवसिधुवरुणोद्यौरिव	५	६	९	अवानुक्रुज्ययात्	८	१	९	अवीभोअसिहृव्यान्	५	३	२६
अवद्युदान कुलमान्	७	२	३३	अवसृजपुनरमे	७	६	२०	अवानोअमजृत्तिभि.	१	५	२८	अवीरासिबुमामय	८	४	२
अवद्वप्सोअंशुमतीमतिष्ठ	६	६	३४	अवसृजष्टप मनो	२	२	११	अवानोवाजुपुरथं	६	५	३६	अवीवृधद्वोअमृताअमदी	६	५	३६
अवद्वुगधानि पित्र्यासृजानो	५	६	८	अवसृजावनस्पते	१	१	२५	अवावज्ञातधीतयं	६	८	९	अवीवृधतुगोतमा	३	६	२९
अवद्वकेअवयिका	८	१	२३	अवसृष्टापरपत	५	१	२२	अवासामयवन्जहि	२	१	२२	अवेयमंभेद्युवति पुरस्तात्	२	१	९
अवनोवृजिनाशिशीहि	८	५	२७	अवसृष्टधिपितरयोधि	३	८	१७	अवासृजतुजिवयोन	३	६	१	अवीचामकुवयेमेध्याय	३	८	१३
अवपततीरवदन्	८	५	११	अवसृष्टदुर्हणायत	८	७	२२	अवासृज प्रस्त्र.श्चचयं.	८	७	२६	अवीचामनमोअस्मा	१	८	६
अवयच्छयेनोअस्वनी	३	६	१६	अवसृष्टयस्यवेपणे	३	४	२४	अवितानोअजाथं	७	२	१४	अवीचामनिवचनाति	२	५	११
अवयत्त्वशतक्रतो	८	७	२२	अवसृष्टेस्तुवतेष्टेष्णिथार्यं	१	८	२	अवितासिसुन्वतो	६	३	१८	अवीचाममहुतसौभगाय	६	४	३१
अवयत्त्वसुधस्थं	६	५	३४	अवसृष्टागध्वनोनाते	३	५	१७	अविदुदक्षमित्रो	४	७	१७	अवीचामरहृगण	१	५	२६
अवसृष्टानात्राणि	३	५	२६	अवसृष्टमैवाचिन्वती	३	४	८	अविद्विहोनिहितगुहो	२	१	१८	अवोद्वाभ्यापुरणकया	८	२	१५
अवर्धयन्सुभगसमृद्धीः	२	८	१३	अवसृष्टादिवाद्यथा	२	४	६	अविद्वतेअतिहित	८	८	३९	अवोरिस्थाचोच्छदिपः	५	१	१०

मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग
अवोर्वानुनर्मश्चिनायुवाकुं. ५	५ १२	अश्चनत्वावारवतं	१ २ २२	अश्चासो नये ज्येष्ठास	८ ३ १२	अश्चिनास्त्वयेस्तुहि	६ २ २७
अव्येषुनानपरिवारे	७ ३ १६	अश्चयेर्वो निपदनं	८ ५	अश्चासो ये वासुपदाकुपो	५ ५ २१	अश्चिनाहरिणा विव	४ ४ १९
अव्येवधुयु पवते	७ २ २१	अश्चमिद्वारयत्रां	६ ५ २२	अश्चिनापरिवासिप	३ ४ ४	अश्चिनोरस नरथ	१ ८ २३
अव्योवारपरिश्रियं	७ १	अश्चस्यस्मनारथ्यस्य	३ ७ १६	अश्चिनापिवत्तमधु	१ १ २९	अश्चिरथीसुरूपद्वत्	५ ७ २१
अव्योवारपरिश्रिय	६ ७ २९	अश्चस्यात्रजनिमा	२ ७ २३	अश्चिनापुरुदससा	१ १ ५	अश्चैवचित्रारपी	३ ८ ३
अव्योवारैभि. पवते	७ ५ ३	अश्चद्वेदेरुपासं	४ ३ २४	अश्चिनामधुमत्तम	१ ४ ४	अश्चोनक्रदन्वनिभि	३ १ २६
अशौच्यमि समिधानो	५ १ २	अश्चादियुयेति यद्वदति	८ ३ ४	अश्चिनामधुपुत्तम	३ १ ५	अश्चोनक्रदोद्युपभि	७ ४ १६
अश्चापिनद्धमधुपथं	८ २ १८	अश्चानयावाजिनो	५ १ १	अश्चिनायज्वरीरिप	१ १ १	अश्चोनचक्रदोद्युपां	७ १ ३६
अदमन्वतीरीयते	८ १ १४	अश्चायतोगव्यतो	८ ८	अश्चिनायद्वकाहंचित	४ ४ १४	अश्चोवोहहसुखरथं	७ ५ २५
अदमस्यमवुत्तत्रह्मण	२ ७ १	अश्चावतिप्रथमोगोपु	१ ६ ४	अश्चिनायामहूतमा	६ ५ १९	अश्चयोवारैभभव	१ २ ३८
अदयामते सुसतिदैवयस्य	१ ७ ७	अश्चावतीगोमतीर्न	५ ४ ४	अश्चिनावतिरसदा	१ ६ २७	अपाब्धहमप्रपृतनासु	६ ५ ८
अदयामतकाममये	४ ५ ७	अश्चावतीगोमतीर्नउपासं	५ ५ २७	अश्चिनावजिनीवसू	४ ४ १९	अपाब्धहोअग्नेद्युपभो	३ १ १५
अश्रवृरिभूरिदवत्तत्रां	१ ७ २८	अश्चावतीगोमतीर्विश्ववारा	१ १ १	अश्चिनावायुनायुव	३ ४ १६	अपाब्धहयसुधुतेनासुपमि	१ ६ २३
अथीरानुनर्भवति	८ १ २५	अश्चावतीगोमती	१ ४ ३	अश्चिनावेहगच्छत	४ ४ १६	अष्टामहोदिवआदोहरी	१ ८ २५
अश्चनगीर्भोरथ्यसुदानव	६ ७ १४	अश्चावतीसोमावतीं	८ ५ ९	अश्चिनावेहगच्छतं	४ ४ १९	अष्टोपुत्रासो अदिते	८ ३ ७
अश्चनगब्धमश्चिनासुदैवै	१ ८ ११	अश्चावतरथिन	८ १ ३	अश्चिनासुविचारकशर	६ ५ २०	अष्टोव्यव्यल्लुकुम.	१ ३ ७

मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग
अस्मभ्यतद्वसोदानाय	२	६	१२	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	१	४	२८	अस्माकंष्टण्यारयौ	३	६	२६	अस्माकमिन्द्रावरुणा	५	६	३
अस्मभ्यतद्वसोदानाय	२	६	१४	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	१	४	२७	अस्माकमिन्द्रावरुणा	२	७	१४	अस्माकमिन्द्रावरुणा	५	६	३
अस्मभ्यतोअगोद्विधि	३	६	२६	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	१	४	२९	अस्माकमिन्द्रावरुणा	२	१	१६	अस्माकमिन्द्रावरुणा	५	६	३
अस्मभ्यवावसुविद	७	५	७	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	१	४	२७	अस्माकमिन्द्रावरुणा	१	२	३०	अस्माकमिन्द्रावरुणा	३	६	२६
अस्मभ्यरोदसीरयं	६	७	२९	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	१	४	२७	अस्माकमिन्द्रावरुणा	६	३	४३	अस्माकमिन्द्रावरुणा	७	७	१४
अस्मभ्यवाजिनीवसू	५	८	३	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	१	४	२७	अस्माकमिन्द्रावरुणा	३	८	१९	अस्माकमिन्द्रावरुणा	२	७	१३
अस्मभ्यं सुवर्षिद्रतान्	८	७	२१	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	२	२६	अस्माकमिन्द्रावरुणा	२	२	६	अस्माकमिन्द्रावरुणा	२	४	११
अस्मभ्यसुवर्षवसू	६	२	२८	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	४	३६	अस्माकमिन्द्रावरुणा	४	५	१०	अस्माकमिन्द्रावरुणा	७	३	१०
अस्मभ्यवसुतेभ्यः	३	६	२५	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	६	६	३२	अस्माकमिन्द्रावरुणा	३	७	१८	अस्माकमिन्द्रावरुणा	१	१	१८
अस्मभ्यविद्विष्विह	३	६	२६	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	६	३	२६	अस्माकमिन्द्रावरुणा	३	४	१४	अस्माकमिन्द्रावरुणा	७	८	१४
अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	३	७	१४	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	७	३	अस्माकमिन्द्रावरुणा	५	८	४	अस्माकमिन्द्रावरुणा	५	१२	५
अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	३	७	१४	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	७	३	अस्माकमिन्द्रावरुणा	६	३	९	अस्माकमिन्द्रावरुणा	८	७	२०
अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	३	७	१४	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	७	३	अस्माकमिन्द्रावरुणा	३	४	११	अस्माकमिन्द्रावरुणा	२	७	२४
अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	३	७	१४	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	७	३	अस्माकमिन्द्रावरुणा	३	६	८	अस्माकमिन्द्रावरुणा	४	४	१६
अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	३	७	१४	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	७	३	अस्माकमिन्द्रावरुणा	५	८	२	अस्माकमिन्द्रावरुणा	५	८	३
अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	३	७	१४	अस्माद्दुस्वर्णतक्षत्	४	७	३	अस्माकमिन्द्रावरुणा	७	८	२६	अस्माकमिन्द्रावरुणा	६	६	३७

मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ	वर्ग
असोद्द्रावृहस्पती	३	७	२५	असोवीरोमस्त.	५	४	२६	अस्यदेवस्यमीळुपः	५	४	७	अस्ययामोसोबृहत्.	७	५	३१
असोद्द्रावरुणाविश्ववार	५	६	६	असोद्द्रावरुणो	५	६	५	अस्यदेवस्यसंसदि	५	२	५	अस्यरुणवास्वत्येवपृष्टिः	२	५	२४
असोद्द्रावरुणोमित्रो	५	६	३	असोऽश्वेभिर्भुञ्जिर्वि	५	५	२४	अस्यपिवक्ष्मते	८	६	२०	अस्यवागमस्यपङ्कितस्य	२	३	१४
अस्यजुषुवृषणामाद्वेयां	२	५	१	असोसावाभाध्वीरातिः	२	५	१	अस्यपिवतमग्निना	५	८	३	अस्यवासाउर्विपो	४	१	९
अस्येतादिद्वावरुणा	३	४	९	असोसोमत्रियमग्नि	१	३	२७	अस्यपिवयस्यजङ्गान	४	७	१२	अस्यवीरस्यवृष्टिपि	१	६	११
अस्येतादिद्वन्द्वसंतु	७	७	८	अस्येतिहोअव्युथयार्	२	७	२२	अस्यपीत्वामर्दानाद्वो	६	६	१६	अस्यवृष्णोव्योदने	६	४	४३
अस्येधेहिद्युमती	८	५	१२	अस्येतिप्रतिद्वयैते	६	३	२९	अस्यपीत्वामर्दानां	६	८	१३	अस्यवोद्वेघसा	७	४	२४
अस्येधेहिद्युमथरा	६	८	२२	अस्येवहनामवेमायु	२	७	२४	अस्यपीत्वार्शतक्रतो	१	१	८	अस्यवृत्तानिनाष्टपे	७	१	१०
अस्येधेहिश्रवोबृहत्	१	१	१८	अस्येभीमायुमर्मासा	१	४	२२	अस्यप्रज्ञातवेदस	८	८	४६	अस्यवृत्तेसुजोपसः	७	५	४
अस्येप्रयथिमघवज्जीपिन्ऋ	३	२	२०	अस्येवयंयद्वावानु	४	६	१५	अस्यप्रजावतीगृहे	६	२	३८	अस्यशासुर्भयास सचते	४	४	२६
अस्येरायिनस्वर्ध	२	२	९	अस्यक्रत्वाविचैतस	४	१	९	अस्यप्रज्ञामनुद्युत	७	१	१०	अस्यश्रुमांसोददृशानपवे	५	३	११
अस्येरायाद्वेदेवै	३	५	८	अस्यवावीरईवत.	३	५	१५	अस्यप्रेपाद्मेनर्ना	७	४	११	अस्यश्रवोनुचं सुसविभ्रति	५	५	१४
अस्येऋद्रामेहनापर्वतास.	१	४	४३	अस्यतेसुर्येवयतव	७	१	२३	अस्यमृदानोमध्वो	२	६	२३	अस्यश्रियेसमिधानस्य	३	५	३
अस्येवर्षिष्ठाऋणुहि	३	६	८	अस्यतेसुख्येवयमियेक्षत.	७	२	९	अस्यमर्दपूरुवर्षीति	४	७	१८	अस्यश्रेष्ठासुभगस्य	३	४	१३
अस्येवसूतिधारय	७	१	३५	अस्यजित.ऋतुना	७	६	४	अस्यमर्देस्वर्धदाऋताय	१	८	२४	अस्यश्रौपत्वाभुव.	१	६	११
अस्येवत्संपरिपतनर्विद्वज्	१	५	१७	अस्यत्वेयजजराअस्य	२	२	१२	अस्यमेधावापृथिवी	२	७	१५	अस्यश्लोकौदिवीयते	२	५	१२

मंत्र	अष्ट. अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ	वर्ग			
अस्य सुवानस्य मयि दितं	२	६	अस्ये देवश्रवसाशुपतं	१	४	२८	अहपुरोमदमानो	३	६	१५	अहहितेहरिवोद्वहं	३	४	२३
अस्य स्तुपिमाहि मय्यराधं	२	१	अस्ये देपासुमति पप्रथाना	७	७	२८	अहसुवसुन	८	१	५	अहहवानाक्षं	६	५	२३
अस्य स्तोमे भिरोगिज	८	५	अस्वमजस्तरण्य	३	४	२५	अहभूमिमददामार्याय	३	६	१५	अहरोतो न्यसीद	८	१	१२
अस्य स्तोमे मघोनं	४	१	अस्वा पर्यदुमीतये	३	६	२३	अहमजुरभवस्यैश्चाह	३	६	१५	अहृच्छाद्विपवैतिश्रियुण	१	२	३६
अस्या हि स्वयं राक्षार	४	४	अहृक्षे तुरहमर्धो	८	८	१७	अहरथयन्धुगय	८	१	७	अहृभिद्रो अर्यहृदभि	३	६	१७
अस्या हि स्वयं राक्षार	४	१	अहृगभीमदधा	८	१	४१	अहराजावरुणोमह्य	३	७	१७	अहृन्वुव्रुचर्षपम	६	३	३६
अस्या ऊपुण्डपसातयै	२	२	अहृगुगुभ्यो अतिशिव	८	१	६	अहराष्टीसुगमनी	८	७	११	अहृन्वुव्रुव्रतरयात्स	१	२	३६
अस्या जरासोदुमा	८	१	अहृचुलचवृत्रहन्	६	४	४१	अहृरुद्राय धनरा	८	७	१२	अहृमाकृवये	८	१	७
अस्ये दिद्रो मे देव्या	६	७	अहृचुततत्सुरिभि	४	६	२२	अहृरुद्रेभिर्वसुभि	८	७	११	अहृमपोषपिन्वमुक्षमाणा	३	७	१७
अस्ये दिद्रो मे देव्या	७	५	अहृतटां घुधारयं	८	१	८	अहृससन्नवतं	८	१	८	अहृमस्मिमहामहो	८	६	२७
अस्ये दिद्रो वावृदेव्यु	५	७	अहृतथेवधुर	८	६	२६	अहृससहानहुप	८	१	८	अहृमस्मि सपलहा	८	८	२४
अस्ये दुल्लेपसारतसिधव	१	४	अहृतातिश्वाचकट	३	७	१८	अहृसयोनववास्व	८	१	८	अहृमस्मि सहेमाना	८	८	३
अस्ये दुम्रह्महि पूज्याणि	१	४	अहृवांगुणते पूज्यं	८	१	७	अहृसुवेयितरमस्य	८	७	१२	अहृमिदिपितुणरं	८	८	१०
अस्ये दुस्त्रियास्त्रयश्च	१	४	अहृच्छाद्विपशयानमर्ण.	३	२	११	अहृस्यैत्युपरियाभि	८	१	८	अहृमिद्रो नपरान्तिन्ये	८	१	५
अस्ये दुमातु सर्वने सुसद्य	१	४	अहृग्रलेनमन्मना	५	८	११	अहृसोषस्मिय पूरासुते	१	७	२१	अहृमिद्रो रोधोवक्ष	८	१	५
अस्ये देवमरि रिक्षे	१	४	अहृपिते वेवेतुसूत्र	८	१	७	अहृसोममाहुनसं	८	७	११	अहृमिद्रो वरुणस्तोमहित्वा	३	७	१७

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
अहमेतंगव्ययुमश्च	८ १	५ आग्नेस्तुगुदाभ्यः	८ ८	२१ आगन्मवृहत्तमं	६ ५	२१ आघ्रायेअग्निर्मिथुते	६ ५	२१ अघ्रायेअग्निर्मिथुते	६ ५
अहमेतान्छात्रसतः	८ १	६ आकुरेवसोर्जिता	३ ३	१५ आरावोअमभुतभद्रं	४ ६	२५ आघ्रायोपेवसुनरी	१ ४	२५ आघ्रायोपेवसुनरी	१ ४
अहमेववातइव	८ ७	१२ आकुलशोअनूपत	७ ७	३ आगोभेतानासस्यारथेन	५ ५	१५ आचुत्वायेतावृपणा	३ ३	१५ आचुत्वायेतावृपणा	३ ३
अहमेवस्वयमिदं	८ ७	११ आकुलशोपुधावति	६ ७	७ आग्नेअमभद्रहवसे	१ १	५ आचुनत्वोचिकित्सामा	६ ६	५ आचुनत्वोचिकित्सामा	६ ६
अहश्चकृणमहुरर्धुन	४ ५	११ आकुलशोपुधावति	७ ७	१५ आग्नेनस्ववृक्तिभिः	७ ७	४ आचनोवहि.सदेवा	५ ४	४ आचनोवहि.सदेवा	५ ४
अहुस्तायदुपदी	७ ७	८ आकुर्गोसुथैत्यरोचनात्	१ १	२७ आग्निर्गामिभारत.	४ ५	२४ आचर्पणिप्राष्टुभ	२ २	२४ आचर्पणिप्राष्टुभ	२ २
अहनिगृध्रा पर्याव	१ ६	१४ आकुण्णेरजसुवर्तमान.	१ ६	३ आग्नेनिरोदिवआ	५ ४	६ आचुवहोसितोइह	१ ५	६ आचुवहोसितोइह	१ ५
अहयार्दिद्रसुदिना	५ ३	१४ आकुर्गोसुथैत्यरोचनात्	३ ३	७ आग्नेयाहिमुहस्सखा	६ ७	१५ आचष्टआसोपाथो	५ ३	१५ आचष्टआसोपाथो	५ ३
अहव्यमेहुविरात्ये	८ ४	२२ आकुर्गोसुथैत्यरोचनात्	४ ४	७ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	८ ७	२२ आचिकितानसुक्रतू	४ ४	२२ आचिकितानसुक्रतू	४ ४
अहितेनचिदवता	६ ४	४० आक्षिप्सुर्वास्वपरा	३ ३	३५ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	५ ५	१४ आचुआजानुदक्षिणतः	७ ७	१४ आचुआजानुदक्षिणतः	७ ७
अहिरिवमोर्गो पर्यति	५ १	२१ आक्षोदोमहिवृतं	४ ५	३५ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	८ ८	१४ आचुआजानुदक्षिणतः	८ ८	१४ आचुआजानुदक्षिणतः	८ ८
अहमयज्यपुथासुराणा	५ ५	२० आक्षणायावनोवहन्ति	५ ५	३५ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	७ ७	१४ आचुआजानुदक्षिणतः	५ ५	१४ आचुआजानुदक्षिणतः	५ ५
अह्येयुताकरमं पश्यइन्द्र	१ २	३८ आगधितापरिगधिता	२ २	३५ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	४ ४	२६ आजघतिसान्वेषां	४ ४	२६ आजघतिसान्वेषां	४ ४
अहेकतामनसा शुष्टि	२ ७	१५ आगतामारिपण्यत	६ ६	३५ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	३ ३	२० आजनयेपसंस्था	८ ८	२० आजनयेपसंस्था	८ ८
अहेकमानुपयाहि	४ ७	१३ आगन्देवकुतुभिर्वैधु	३ ३	३५ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	३ ३	२५ आजागृविर्विप्रक्रुता	७ ७	२५ आजागृविर्विप्रक्रुता	७ ७
आजन्गविशुरभि	८ ८	४ आगन्नुभणाभिह	३ ३	३५ आग्नेवहुवरुणसिष्टयेनः	३ ३	७ आजातंजातवेदसि	४ ४	७ आजातंजातवेदसि	४ ४

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
आज्ञासितकैऽव्यत	७ ५	३	आतिष्ठतुष्टुथोरथः	२ ४	२५	आतेभमन्नुचाहुविः	३ ८
आजास पूणरथं	४ ८	२१	आतिष्ठतुष्टुपुष्टिर्धेअमूपन्न	३ २	२३	आतेकारोभृणवामा	३ २
आजिपतेरुपुत्वमिच्छि	६ ४	२५	आतिष्ठतुष्टुपणवृपति	२ ४	२०	आतेदक्षमयोऽनु	३ २
आजितुरसपति	६ ४	२३	आतिष्ठतुष्टुत्रय	१ ६	५	आतेदक्षविराचुना	३ २
आजुहोतादुष्यता	४ १	२२	आतुरीष्टिप्रतुद्रव	६ १	९	आतेदधार्मीद्विय	३ २
आजुहोतास्वधूर	३ १	६	आतुरेद्वैद्रकैशिक	१ १	२०	आतेनयतुमनस	३ २
आजुहोतुर्नैच्छोवधे	८ ६	८	आतुरेद्वैद्रकुमत्	६ १	३७	आतेपितर्मस्तासुन्न	३ २
आजुहोतुर्नैच्छोवधे	२ ५	८	आतुरेद्वैद्रकुमत्	३ ३	३	आतेमहद्द्वैद्युय	३ २
आतर्मजसोऽश्वसेषु	७ ८	२५	आतुरेद्वैद्रकुमत्	३ ३	२७	आतेरथस्यूपन्न	३ २
आतर्द्वोमदोयक	७ १	२७	आतुरेद्वैद्रकुमत्	७ २	२८	आतेरु पवमानस्य	३ २
आतर्द्वमहिमानं	६ ४	४६	आतुरेद्वैद्रकुमत्	३ ३	२०	आतेवृत्तोमनोयमत्	३ २
आतर्द्वतावचोयुजा	६ ३	४५	आतुरेद्वैद्रकुमत्	५ ७	२१	आतेयुष्टुपणो	३ २
आतर्द्वमनु पुन	८ १	१९	आतुरेद्वैद्रकुमत्	८ ५	१५	आतेवोवैरण्य	३ २
आतर्द्वतावचोयुजा	१ ७	३२	आतुरेद्वैद्रकुमत्	६ ५	७	आतेयुष्टुपणो	३ २
आतर्द्वतावचोयुजा	८ ३	५	आतुरेद्वैद्रकुमत्	३ ८	२२	आतेसपुष्टुवसे	३ २
आतर्द्वतावचोयुजा	१ ३	२४	आतुरेद्वैद्रकुमत्	४ ५	३०	आतेसिचामिकुदयो	३ २
आतर्द्वतावचोयुजा	३ ३	२४	आतुरेद्वैद्रकुमत्	४ ५	३०	आतेसिचामिकुदयो	३ २

अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
१ ५ २७	आतेसुपुर्णभमिनतुपैवः	३ ८
४ ८ २२	आतेस्वस्तिमीमहे	३ २
४ २ ७	आतेहृन्हरिव शूरशिमे	३ २
७ २ ३१	आतुमन्वन्नमोदुह्यते	३ २
५ ६ ९	आत्मातेवातोरजभा	३ २
८ ८ २६	आत्मादेवानामुर्वनस्य	३ २
२ ३ १२	आत्मानतेमनसारा	३ २
५ ७ २९	आत्मापितुस्तनुर्वसं	३ २
५ ७ २७	आत्मायज्ञस्युरद्या	३ २
५ ७ १३	आत्वधुसुधस्तुति	३ २
५ ७ ११	आत्वधुसुधस्तुति	३ २
६ ६ ३	आत्वाकण्वोऽहूपत	३ २
१ १ २६	आत्वाकण्वोऽहूपत	३ २
३ ३ ११	आत्वाकण्वोऽहूपत	३ २
८ ७ २५	आत्वाकण्वोऽहूपत	३ २
६ ६ ३०	आत्वाकण्वोऽहूपत	३ २

मंत्रः	अष्ट. अ.	वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ.	वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ.	वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ.	वर्गः
आत्वागीर्म्मिहसूहं	६	४	४८	आत्वाधुतासुहद्व	६	४	१४	आदाययेनोअभर	३	६	१५
आत्वागोभितिवृज	६	२	१४	आत्वाहृयोवृषणो	४	७	१९	आदुरोवाभतीनां	१	३	३३
आत्वाग्रावावदञ्जिह	६	३	११	आत्वाहृयतप्रयुजः	८	५	७	आदिद्र सुत्रातविपी	८	६	१४
आत्वाजुवोरारदृणाअभि	२	१	२३	आत्वाहार्यमतरंधि	८	३	३१	आदिसेअस्यवीर्यस्य	२	१	२०
आत्वावृंहृतोहरय	३	३	७	आत्वाहोतामदुहितः	६	३	१२	आदिसेविश्वेक्तुजुपंत	१	५	१२
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	६	१	२२	आत्वेतानिपीहृत	१	१	९	आदिस्पश्चावुधधाना	३	४	१५
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	६	३	१२	आत्वेतोमद्विज्योरस्तः	७	१	४	आदिस्पलसुरेतस	५	८	१४
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	५	७	१४	आत्वेतोमद्विज्योरस्तः	१	८	१७	आदित्याअवहिर्यत	६	४	१८
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	६	५	१	आत्वेतोमद्विज्योरस्तः	१	६	४	आदित्याअवहिर्यत	३	४	१८
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	६	३	४५	आदक्षिणासृज्यते	७	३	२५	आदित्यानामवसा	८	१	१८
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	१	१	३०	आदक्षिणासृज्यते	३	७	१२	आदित्यानामवसा	३	१	४
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	१	३	३२	आदक्षिणासृज्यते	६	५	१५	आदित्यानामवसा	५	३	३०
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	१	१	१०	आदक्षिणासृज्यते	२	२	५	आदित्यानामवसा	५	४	१८
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	६	६	१९	आदक्षिणासृज्यते	३	६	३	आदित्यानामवसा	८	७	१३
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	६	६	३०	आदक्षिणासृज्यते	३	५	१८	आदित्यानामवसा	५	४	१९
आत्वाभ्रह्मजुजाहरी	५	७	१४	आदक्षिणासृज्यते	१	१	११	आदित्यानामवसा	५	४	१८

मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
आदेवानामभवः केतुरग्ने	२	८ १६	आधेनव पर्यसात्पर्ययाः ४	२ २०	आनं स्तुतउपवाजे	३	६ १८	आनाममिर्मस्तोवक्षि	४ २ २१
आदेवोदेबुध्या	५	२ ९	आधेनवोधुनयता	३ ३१	आनं स्तोमसुपद्रवत्	५ ८	२	आनार्यस्यदक्षिणा	६ २ २०
आदेवोदुतोअजिर	८	५ १२	आधेनवोमामतेय	२ २२	आनं स्तोमसुपद्रवत्	६ ४	१	आनासत्यागच्छतंहयते	१ ३ ५
आदेवोयोतुसविता	५	४ १२	आध्रेणचित्तेकं	५ २७	आनंददोमहीमिप	७ २	३	आनासत्यात्रिभिरकादशे	१ ३ ५
आदैव्यानिपार्थिवानि	४	२ १६	आनं पवस्वधारया	६ ८ २५	आनंददेशतुग्विनुगवां	७ २	४	आनिरैकमुतप्रिय	६ २ १५
आदैव्यानिघृताचिकित्वा	१	५ १४	आनं पवस्ववसुमत्	७ २ २२	आनंददेशतुग्विनं	७ २	१४	आनिवर्तनवर्तयु	७ ७ १
आदैव्यावृणीमुहेवसि	५	६ २१	आनं पूपापवमान.	३ ६	आनंदद्रष्टसे	७ ७	७	आनिवर्तनवर्तयु	७ ७ १
आद्यरथेभानुमो	३	८ १३	आनं प्रजाजनयतु	८ ३ २८	आनंदद्रमहीमिप	५ ८	१३	आनुनमृश्चिनोर्क्षे.	५ ८ ३१
आद्यांतनोपिरदिमभि.	३	८ ३	आनं शुष्मनपाह्वं	६ ८ २०	आनंदद्रावृहस्पती	३ २	७ २५	आनुनमृश्चिनायुव	५ ८ ३०
आद्रोदसीवितरवि	४	१ २३	आनं सहस्रशोभर	६ ३ १३	आनंदद्रोदुरादानं	३ ३	६ ३	आनुनयातमश्चिना	५ ८ २५
आद्वाभ्याहरिभ्यां	२	६ २१	आनं सुतासुइद्व	७ ५ १०	आनंदद्रोहरीभि	३ ३	६ ३	आनुनयातमश्चिना	६ ६ १०
आह्विह्वोअमिन	८	६ २०	आनं सोमपवमान किरा	३ ६	आनंदद्रोसिद्विदये	२ २	५	आनुनयातमश्चिनेमा	५ ८ ३२
आर्धर्णसिबृहद्विवोररण.	४	२ २१	आनं सोमसहोशुवं	७ २	आनुर्जवहृतमश्चिनायुवं	२ २	२७	आनुनयुवर्तनि	५ ८ ३१
आर्धवतासुहस्त्य	७	१ ३	आनं सोमसुयत	३ ३ १५	आनपात शवसोयातु	३ ३	७	आनाभमेर्यमर	१ ५ २८
आर्धपमाणाया पतिः	७	७ १४	आनं सोमस्वच्छर	६ ४ १६	आनुस्जुर्यभिराशं	३ ३	३	आनोअमेवयुवृध	६ ४ ३४
आधुष्वैसैदधाता	५	३ २५	आनं सोमपुवित्रा	७ १ २८	आनं स्तोमसुस्तर	३ ३	४	आनोअमेवयुवृना	१ ५ २८

अष्ट.	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ. वर्ग	मंत्र
६	२	३१	आनोदिव सविता	८	५	१६	आनोभ्रमर्गमिन्द्रधुमतं	३	२	४	आनोयातंद्विस्पर्श
६	२	८	आनोदिवशवसा	५	३	१४	आनोभ्रमुपण्डुष्म	४	६	८	आनोयाहि परावतः
१	३	५	आनोदिवानसुर्वेनु	७	७	२७	आनोभ्रव्यजन्गामश्च	६	५	३१	आनोयाहि महेयते
५	८	२८	आनोदिवैवेधिर्य	५	२	१७	आनोभ्रदक्षणे	६	५	३८	आनोयाहिसुतावंतो
४	४	९	आनोदेवेभिरुपातमूर्वा	५	५	१९	आनोभद्रा कृतवीर्यु	१	६	१५	आनोयाद्युपश्रुति
५	८	२८	आनोदुष्टैराश्रवोसिः	५	८	७	आनोमुखस्यद्वावने	५	८	२३	आनोरत्नानिब्रिता
६	३	३३	आनोदृप्तामधुमतः	८	५	१२	आनोमहीमरमत्तिसुजोषा	४	२	२१	आनोर्यमिन्द्रच्युतं
४	८	२९	आनोनूचामतीनां	१	३	३४	आनोमित्सुदीप्तिभिः	४	४	२	आनोराधांसिसवितः
६	५	२०	आनोत्त्रियुक्ते श्रुतिनीभिः	२	१	२४	आनोमित्त्रवरुणा	३	५	११	आनोरुद्रस्यसूनवो
२	८	१६	आनोन्नियुद्धिः श्रुतिनीभिः	५	६	१४	आनोमित्त्रवरुणा	५	७	७	आनोवायोमहेतने
३	८	२	आनोवर्हि संघमादै	७	८	७	आनोयुक्तदिक्सृष्टं	६	७	७	आनोविश्वजास्त्रागर्मनु
५	४	११	आनोवर्हृशिशादसः	१	२	२०	आनोयुजनमोवृध	३	३	७	आनोविश्वान्यधिना
५	४	३१	आनोवृंहंतवृद्धतीभि	३	७	१६	आनोयुजमारती	८	६	९	आनोविश्वामिभ्रुतिभिः
५	३	८	आनोयज्ञाग्निमरुतः	२	७	२०	आनोयुजार्पतक्षत्रम्	१	७	२८	आनोविश्वामिभ्रुतिभिः
४	२	२२	आनोभजपरमेपु	१	२	२२	आनोथातसुपश्रुति	५	३	२५	आनोविश्वसुहृव्यः
४	८	९	आनोभ्रदक्षिणेना	६	५	३८	आनोयातद्विवोअच्छा	३	७	२०	आनोविश्वेषारथ

मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग
आनोविश्वेसुजोपसा	६ ४ २४	आर्पवमानसुष्टुति	७ २ १	आपानासोविस्वतः	६ ७ ३४	आप्यायस्वमदितम	१ ६ २२
आनोवोभिर्मरुतोयान्तु	२ ४ ४	आर्पवस्वगविष्टये	७ २ ९	आपतमन्युस्तूपलप्रभमो	४ ३ १४	आप्यायस्वसमेदुते	१ ६ २२
आन्यद्विजोमतरिक्षा	१ ६ २८	आर्पवस्वदिक्षापते	७ ५ २६	आपीबोअस्यितरेव	८ ६ १	आप्यायस्वसमेदुते	६ ८ २१
आपं ष्णीतमेपुजं	१ २ १२	आर्पवस्वमदितम	६ ८ १५	आपुत्रासोनमातरं	५ ४ १०	आप्रद्रवपरवतः	६ ६ १
आपं ष्णीतमेपुजं	७ ६ ५	आर्पवस्वमदितम	७ १ ७	आपृणोअस्यकृलशः	३ २ ११	आप्रद्रवहरिवोमाविचैन.	४ १ २९
आपुद्गद्वाउभेपुजी.	८ ७ २५	आर्पवस्वमहीमिपं	६ ८ ३१	आपृषवित्रबर्हिप	१ २ १०	आप्रयोतमरुतोविष्णो	६ २ ३२
आपुवथासौभलानता	५ २ २५	आर्पवस्वसदृक्षिणं	७ १ २६	आपोअद्यान्वचारिपं	१ २ १२	आप्रारजोसिद्विव्याति	३ ८ ४
आपययोविपथयो	४ ३ ९	आर्पवस्वसदृक्षिणं	७ १ ३०	आपोअद्यान्वचारिपं	७ ६ ५	आप्रुपायन्मधुन	८ २ १७
आपयथायमद्विनादृण्यो	६ ५ ९	आर्पवस्वसुवीर्यं	७ २ १	आपोअस्यान्मातरः	७ ६ २४	आबुद्वदृग्रहादे	६ ३ ४२
आपुमुपीपार्थिवानि	४ ८ ३२	आर्पवस्वहिरण्यवत्	७ १ ३३	आपोनदेवीरुपयति	१ ६ ४	आभर्दमानेउपाके	२ २ ११
आपुमुपीविभावरि	३ ८ ८	आपुञ्जगासिपृथिवी	६ २ ३१	आपोनसिधुमसियत्	७ ८ २५	आमर्दमानेउपसाउपाके	२ ८ २३
आपंशोपाथैवर्जः	१ ६ १	आपुश्चातांआसत्पापुरस्ता	५ ५ १९	आपोभूर्यष्टाद्व्येको	५ ३ १४	आमभ्वोअसाअसिचत्	७ ७ २३
आपरमाभिरुत	५ १ २	आपुश्चातांआसत्पापुरस्ता	५ ५ २०	आपोयवप्रयमं	५ ७ ३	आमनीपामतरिक्षस्य	१ ७ ३१
आपवैतस्यसस्ता	३ ८ ८	आपुश्चातिपिप्यु स्तुर्य.	५ ३ ७	आपोरिवती क्षययाहि	७ ७ ३	आमर्दमानवैरण्य	७ २ ६
आर्पवमानधारय	६ ७ ३९	आर्पश्चिदस्यैपिन्वत	५ ३ २५	आपोह्यदृदृतीर्विष्व	८ ७ ३	आमर्दस्यसन्वित्यतो	२ ८ १७
आर्पवमाननोभर	६ ८ १३	आर्पश्चिद्विस्वयशस.	५ ६ ७	आपोहिद्विहिरिभि.	६ ५	आमर्दस्यैरिद्विहिरिभि.	३ ३ ९

मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग
आमासुतापार्थिवानि	४ ५ ८	आमित्रैर्वरेण्यं	४ ५ ८	आयुजीवाजुसातमा	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमाल्यमिरुपसा	४ ५ ८	आमूरजस्रत्यावर्तय	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आभारतुक्षितवज्रबाहू	४ ५ ८	आमैरुस्रप्रतीव्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आभारतीभारतीभिः	४ ५ ८	आमेवचास्युद्यता	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आभारतीभारतीभिः	४ ५ ८	आमेहर्चनास्रत्या	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमिस्तृष्टोमिथुती	४ ५ ८	आयगौ पृश्निरकसीत्	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमिर्विधेमाग्र्ये	४ ५ ८	आयजनाजमिचक्षे	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमिष्टेअत्यग्नीभिः	४ ५ ८	आयुतारमहिस्थिर	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमूल्यासहजावज्र	४ ५ ८	आयुपूणातिदिशि	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आभेपेण्यवोमस्तो	४ ५ ८	आयन्नरः सुदानवो	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आभोग्यं प्रयद्विच्छंत	४ ५ ८	आयहस्तेनखादिने	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमन्येथामागत	४ ५ ८	आय पत्राजयमानः	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमापूषुपद्रव	४ ५ ८	आयः पत्राभानुना	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमामित्रावरुणह	४ ५ ८	आय पुरनामिणीमदीदे	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमासुपक्वमेरयः	४ ५ ८	आयः सोमेनजुष्टमपिप्रत	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८
आमित्रावरुणाभय	४ ५ ८	आय स्वर्गभानुना	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८	आयुजोर्वृमत्यं	४ ५ ८

मंत्र
आयोतमित्रावरुणा
आयोतमित्रावरुणा
आयोतमस्तोदिव
आयोतुमुपमूपतं
आयाल्विद्र स्वपति
आयाल्विद्रोदिवआ
आयाल्विद्रोवसुउप
आयोहिकुणवामते
आयोहिपवैतेभ्य
आयोहिपवैरति
आयोहिवनसासुह
आयोहिवल्यधिष्या
आयोहिशश्वदुता
आयोहिसुपमाहितो
आयोहिसहदव
आयोहमेपय्या १ अनु

अष्ट अ वर्ग मंत्र अष्ट अ वर्ग मंत्र
५ १ ९ आयाल्वेसमिधानोअवो २ ८ २३ आयोपूर्यानपित्रो
५ ५ ११ आयाल्वेसमिधानो ५ २ २ आयोयोनिदिवकृतं
४ ३ १२ आयाल्वेसमिधानो ५ ४ ११ आयोवनतानुपाण
५ ५ २१ आयाल्वेसमिधानो ५ ३ १२ आविवार्यसुचर्याय
७ ८ २६ आयाल्वेसमिधानो ५ ३ ७ आयोविश्वनिवार्या
३ ६ ५ आयुर्विधायु परि ५ ६ २३ आरारेवमध्वरेयेथे
३ ५ आयुवान कवयो ५ ८ ७ आरुयिमासुवेतुन
३ ४ ४० आयुवेवसुमतिपुत्रो ५ ४ १९ आराच्छुमपवाधस्व
६ ३ १३ आयुतन्वतिरादिमभि. ५ १ ३७ आराजानामहकतस्य
३ ३ ७ आयुतुस्थु पुपतीपु ५ ३ २५ आरित्तकिराराकुणु
८ ८ ३० आयुतुस्थु सितविपीमि ५ ४ १ आरुमैरायुधानरं
८ ८ ३० आयुतुस्थु स्वपुल्यानितुस्थु ५ ५ १८ आरुद्रासुद्वेवत
४ ७ १२ आयुविश्वार्थिवाभि ५ ६ २९ आरुअवाकोन्वी १७ त्या
६ १ २२ आयुगोभि सृज्यते ५ ७ ९ आरुलस्यदमतिमारे
६ २ १ आयुनिमिमिहेतवतम ५ ८ २५ आरुतेगोममुतपुरुष
५ २ १० आयुनिमरुणरुद्र ५ ८ ३० आरुमन्युदुविद्वत्स्य

अष्ट अ वर्ग मंत्र अष्ट अ वर्ग
७ ६ ३ आरेसाव सुदानवः ७ ६ ३ आरुदसीअपुण्णदोत
५ २ ५ आरोकाद्वेषेदह ५ २ ५ आरोदसीअपुण्णदोत
२ ५ २५ आरोदसीअपुण्णदोत २ २ २६ आरोदसीअपुण्णदोत
२ २ २६ आरोदसीअपुण्णदोत २ २ २६ आरोदसीअपुण्णदोत
६ ८ ८ आरोदसीअपुण्णदोत ६ ८ ८ आरोदसीअपुण्णदोत
७ ६ ३ आरोदसीअपुण्णदोत ७ ६ ३ आरोदसीअपुण्णदोत
७ ८ २३ आरुहतायुर्जस्त ७ ८ २३ आरुहतायुर्जस्त
५ ५ ६ आरुवन्नमस्तु सस्विन्ना ५ ५ ६ आरुवन्नमस्तु सस्विन्ना
४ ८ १८ आरुकायारुद्रपीणा ४ ८ १८ आरुकायारुद्रपीणा
४ ३ ९ आरुसतेमघवावीरवथा ४ ३ ९ आरुसतेमघवावीरवथा
४ ३ २१ आरु कुत्समिद्वयस्विन् ४ ३ २१ आरु कुत्समिद्वयस्विन्
८ ५ २१ आरु शर्मपुपमस्तुयासु ८ ५ २१ आरु शर्मपुपमस्तुयासु
३ ५ ११ आरुहृद्विर्विथया ३ ५ ११ आरुहृद्विर्विथया
३ १ ८ आरुवजसकुजा ३ १ ८ आरुवजसकुजा
७ ८ ६ आरुवक्षिदेवाहुहविम ७ ८ ६ आरुवक्षिदेवाहुहविम

अष्ट अ वर्ग
५ ४ १२
५ ६ २९
८ १८
८ २६
१ १६
५ १७
५ ७
६ २७
४ १४
१ २१
७ १४
३ ३
३ ३
२ २८
३ ८
७ २५

मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग
आवच्यस्वमष्टिप्सरः	६	७	१८	आवायथपुरुमायमनोजुव	१	८	२०	आवांसुहृहृहरय	३	७	२२
आवच्यस्वसुदक्षबम्बोः	७	५	१८	आवायथयुवतिस्त्रिदक्ष	१	८	१८	आवसुज्जेवारिमन्	५	१	४
आवदिद्वयमुना	५	२	२७	आवायथमवमस्याव्युष्टौ	५	५	१८	आवसुज्जे शयूहव	८	८	१
आवदुस्त्वशकुनेभृदमा	२	८	१२	आवायथोअश्विना	१	८	१८	आवाजायातोपनक्तभुक्षा	३	७	३
आवहृत्ततीरधुद्विधारा	७	७	२५	आवायथोत्रियुत्वान्वक्षु	२	१	२४	आवातवाहिमेयज	८	७	२५
आवहृतीपोष्यावायोणि	१	८	३	आवायथोरथानां	४	४	१४	आवातस्यध्रजतो	५	४	१
आवहृत्प्रीत्योवायोनि	३	५	१४	आवायथोदसीवदध्यान	५	५	१६	आवागगन्सुमतिर्वो	७	८	२०
आवहृत्प्रीत्योवायोनि	५	८	७	आवायथोवन्तिर्न	२	४	२५	आवायोभूपञ्चविपाउर्पनः	५	६	१४
आवाहृत्प्रीत्योवायोनि	६	३	२८	आवायथानावध्वरे	५	६	६	आवामश्वसोअभि	५	१	१३
आवाहृत्प्रीत्योवायोनि	८	४	२३	आवायथोश्वसो	५	१	४	आवामश्वस. शुर्वय.	२	४	२५
आवाधियोवधुत्पुत्रध्वराज	१	१	२४	आवावाहिष्ठाद्वहते	३	५	१४	आवामश्वस सुयुजो	४	३	३०
आवाधियोवधुत्पुत्रध्वराज	४	४	१६	आवावाहिष्ठोअश्विना	६	२	२६	आवामपस्थमदुहा	२	८	१०
आवाधियोवधुत्पुत्रध्वराज	२	२	२०	आवाविप्रद्वहवसे	५	८	२६	आवामतायकेशिनी	२	२	२१
आवाधियोवधुत्पुत्रध्वराज	२	२	२२	आवाविश्वभिर्रुतिभिः	५	८	२८	आवाविश्वभिर्रुतिभिः	२	६	१४
आवाधियोवधुत्पुत्रध्वराज	४	२	१३	आवाविश्वभिर्रुतिभिः	६	६	१०	आवाविश्वभिर्रुतिभिः	१	६	१४
आवाधियोवधुत्पुत्रध्वराज	१	८	११	आवायथेनासोअश्विना	१	८	१८	आवाविश्वभिर्रुतिभिः	२	६	२९

आवायथेनासोअश्विना

आवायथेनासोअश्विना

आवायथेनासोअश्विना

आवायथेनासोअश्विना

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
आवोयनदवाद्वासां	४	३	२३	आशुपुण्वतेअदपिताय	३	४	२०	आसुग्यायसुग्ये	६	२	७	आस्वमग्नयुवमानोजरः	५	४	२३
आवोराजाजमध्वरस्य	३	४	२०	आशुनस्यजवसाचूतनेन	१	८	१९	आसुतोसिचतुश्चि	६	५	१६	आहसरस्वतीवतोः	६	३	२१
आवोस्वपुमौशिजो	२	१	१	आशुत्कर्णधुधीहव	१	१	२०	आसुतुतीनमसावर्तयध्वै	४	२	२०	आहपितृन्सुविद्वान्	७	६	१७
आवोवहदुससयोरुप्यद	१	६	९	आश्विनावश्ववति	१	२	३१	आसुष्माणोमघवन्	४	७	१९	आहरय.मसुजिरे	६	५	५
आवोवाहिष्टोवहतु	५	४	३	आश्वेयस्यजतव	४	१	११	आसुप्वयतीयजते	८	६	९	आहयतायधृणवै	७	४	२५
आवोहोताजोहयति	५	४	२५	आष्टिपेजोहोत्रस्य	४	१	१२	आसुर्येणदमयोध्रुवास	१	४	२५	आहयतोअजुनेअत्के	७	५	१४
आशर्मपर्वताजामोता	६	१	२८	आस्यतमिद्रण.	६	४	१४	आसुर्योअरुहच्युक्रमणैः	४	२	२७	आहयमश्विनोरय-	५	८	३३
आशर्मपर्वताजवृणीमहे	६	२	३९	आसपतुयईवदा	३	४	५	आसुर्योनमानुमंज्ञि.	४	५	६	आहयित्वाविद्वत्वा	८	८	१९
आशस्तनविशंसन	८	३	२६	आसखाय सवर्दुवा	४	८	३	आसुर्योयातुसुसाध	४	२	२७	आहिद्यावापृथिवीवसे	७	५	२९
आश्रीत्यानवुल्लयाहि	२	६	२२	आसुयोगोतुमुचवा	३	५	१७	आसोतापसिपिचत	७	५	१८	आहिरुहतेमश्विना	६	२	६
आशुदधिक्रातमुमुष्टवाम	३	७	१३	आसुवंसवितुयथा	३	७	१०	आसोमसुवानोअद्रिभि	५	४	२७	आहिष्मासुनवेषिता	३	१	२०
आशुदुलविवस्वतो	३	५	६	आसन्नपास शवसान	३	४	९	आसुतासोमस्तो	५	४	५	आहिष्मासुनवेषिता	३	१	२०
आशु शिशानोवृपुम.	८	५	२२	आसुहवपुशिभि	४	४	६	आस्थापयतयुवतियुवानः	२	४	५	आहोतामद्रोविद्वथा	३	१	१४
आशुभिश्चिद्यानिवसुवाति	२	८	२	आसापूर्वसामहसु	२	१	८	आशोवृकसुवर्तिका	१	८	१०	इदुविद्वयवृहुते	७	२	२२
आशुआयतमश्विना	५	५	१४	आसीनासोअरुणीना	५	६	१८	आसुरयधृपणेपु	१	४	११	इदु पविष्टचारुर्मदाय	५	७	२१
आशुपर्वद्वहन्मते	६	८	२९	आसीमरोहस्तुयमा	३	१	१	आसिन्पिशगमिद्व.	६	८	११	इदु पविष्टचेतन.	७	१	३७

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
इदं पुनानो अति	७	३	१७	इदं तच्छुभपुरहन्मन्त्रवसे	६	५	८	इदं वृत्राय हन्त वेदेवा	६	१	५	इदं सूर्यस्वस्तिमभि.	६	१	२
इदं पुनान प्रजासुराण-	७	५	२०	इदं नरोत्तम धिता	५	३	११	इदं वो विश्वत्स्परि	१	१	१४	इदं स्वर्पाजुन्युग्रहानि	३	२	१५
इदुरत्यो न वाजस्र	६	८	३३	इदं वो नर सत्याय	४	७	१	इदं सोमस्य पीतये	३	३	५	इदं स्वाहा पिबतु	३	३	१४
इदुरिद्राय पवते	७	५	१	इदं नो अयेव सुभि	५	२	१३	इदं स्वा नृतम	८	४	१४	इदं आशाभ्यस्परि	२	८	९
इदुरिद्राय तोराते	७	५	२१	इदं परे वरे मध्यमास	३	६	१४	इदं किल श्रुत्या अस्म	८	६	१०	इदं आसने ताबृहस्पतिः	८	५	२३
इदुरिहतिमहिषा	७	४	२२	इदं युक्तेन मन्मना	६	५	२७	इदं भूभिर्दातिरहासमुक्ते	३	२	१५	इदं हस्तो मपायुक्-	५	७	१७
इदुर्वाना सुपस्रव्य	७	४	११	इदं प्रातर्ह्वामहे	४	१	३०	इदं ग्रणं पुरण्तेव	४	७	३१	इदं इन्द्रयो सच	१	१	१३
इदुर्वीजी पवते	७	४	१२	इदं सतिर्हृदवाव्यमाना	३	२	२५	इदं सतामनेकृत	६	६	२२	इदं इन्द्रो महाना	६	६	१५
इदुर्हिन्वानो अयति	७	२	१३	इदं मित्रवरुणमग्निमाहु	२	३	२२	इदं समस्तयजमानमार्थ	२	१	१९	इदं इन्द्रो देवा तु न	६	६	२७
इदुर्हियान सोयुभिः	६	८	२०	इदं मित्रवरुणमग्निमूतये	१	७	२४	इदं सहस्रदामा	१	१	३२	इदं उक्थे नु अचसा	८	५	१६
इदो यथा तवस्तव	७	१	१२	इदं वयमहाघने	१	१	१३	इदं सीतानि गृह्णातु	३	८	९	इदं ऋभुभिर्वाजवन्नि.	२	४	७
इदो यदग्निं स्रत	६	८	१४	इदं वधतु नो गिर	६	१	१०	इदं सुते पुंसो मे पु	६	१	७	इदं ऋभुभिर्वाजिभि.	३	४	७
इदो व्यव्यमर्षसि	७	२	१३	इदं वधतो अगुरे	७	१	३०	इदं सुत्रामास्ववो	४	७	३२	इदं ऋभुमान्वाजवान्	३	४	७
इदो समुद्रमीख्य	६	८	२५	इदं वाणीरनुत्तमन्यु	५	३	१६	इदं सुत्रामास्वान्	८	७	१९	इदं ओषधीरसनोदहानि	३	२	१६
इदं कामावसुयतो	३	५	१९	इदं विश्वा अवीदुधन्	१	१	२१	इदं सुपावृषणा	३	४	२	इदं कर्तु न आभर	५	३	२१
इदं कुत्सो वृद्धाण्यवीपतिः	७	७	२४	इदं वृत्राय हन्त वेपुरु	३	२	२१	इदं सुशिप्रो मघवा तरेत्र.	३	२	१	इदं कर्तु विदसूते	३	३	१

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	
-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	--

अष्ट. अ. वर्ग
३ ७ २२
१ १ ३
१ १ २६
८ ७ २२
१ २ ८
३ १ ९
६ ३ १
६ ३ १
२ ८ ९
३ ३ ६
३ ७ २३
३ ७ २७
३ ३ १०
३ ३ २
३ ३ २७
१ १ २८



कोशः

॥ १८ ॥

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
इन्द्रसोमसोमपतेपिबेमं	३ २	इन्द्रसोमसोमपवमान	७ ३	इन्द्राग्नीजरीतु सचा	१ ११	इन्द्रावृद्धरुपतीव्यं	३ ७	इन्द्रावृद्धरुपतीव्यं	३ ७
इन्द्रसोममिमपिबि	७ ७	इन्द्रसोमसोमराधसे	७ १	इन्द्राग्नीतपतिमा	८ ३	इन्द्रागुगावजासिरे	५ ५	इन्द्रागुगावजासिरे	५ ५
इन्द्रसोमा सुताइमेतव	३ ३	इन्द्रसोमसोमराधसे	३ ३	इन्द्राग्नीतविपाणिवां	३ १	इन्द्रायगिरोअनिक्षित	८ ३	इन्द्रायगिरोअनिक्षित	८ ३
इन्द्रसोमा सुताइमेतान्	३ ३	इन्द्रस्युहादिसोमधानं	५ ७	इन्द्राग्नीनवतिपुरो	३ १	इन्द्रायनूनमर्चत	५ ५	इन्द्रायनूनमर्चत	५ ५
इन्द्रस्युजोवृहणाआविवेश	३ ३	इन्द्रस्यागिरसचेष्टो	३ ३	इन्द्राग्नीमित्रावरुणादिति	३ १	इन्द्रायपवतेमदः	७ ७	इन्द्रायपवतेमदः	७ ७
इन्द्रसोमसुतस्येया	७ ७	इन्द्रस्यावतविपीभ्य.	५ ३	इन्द्राग्नीयमवथ.	५ ३	इन्द्रायमदनेसुते	६ ६	इन्द्रायमदनेसुते	६ ६
इन्द्रस्यातर्हरीणा	५ ३	इन्द्रस्येवरतिमा	८ ८	इन्द्राग्नीयवोरपि	८ ३	इन्द्रायवृषणमदं	५ ५	इन्द्रायवृषणमदं	५ ५
इन्द्र स्पळुतवृत्रहा	६ ६	इन्द्रकुत्सावहमानारथेन	३ ३	इन्द्राग्नीयुवामिमे	३ ३	इन्द्रायसामेगायत	७ ७	इन्द्रायसामेगायत	७ ७
इन्द्रस्यकर्मसुकृतापूरुणि	३ ३	इन्द्राकोवावरुणा	३ ३	इन्द्राग्नीयुवंसुनं.	३ ३	इन्द्रायसुमदितम	५ ५	इन्द्रायसुमदितम	५ ५
इन्द्रस्यदुतीरपिता	८ ८	इन्द्राग्नीअपसुस्पुपं	८ ८	इन्द्राग्नीरोचनादिव	३ ३	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	३ ३	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	३ ३
इन्द्रस्यनुवीर्याणिप्रवांच	३ ३	इन्द्राग्नीअपाद्विज	३ ३	इन्द्राग्नीवृत्रहर्षेणु	८ ८	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	५ ५	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	५ ५
इन्द्रस्यसुकृतेद्वेय	८ ८	इन्द्राग्नीअवृसगतं	५ ५	इन्द्राग्नीयतदाहि	५ ५	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७
इन्द्रस्यवज्रआयसो	६ ६	इन्द्राग्नीआततसुतं	३ ३	इन्द्राग्नीयतदाहि	३ ३	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७
इन्द्रस्यवज्रोमस्ता	३ ३	इन्द्राग्नीआहितन्यते	३ ३	इन्द्राग्नीमसुतादिपु	८ ८	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७
इन्द्रस्यवृणोअसुरस्य	८ ८	इन्द्राग्नीउक्थवाहसा	५ ५	इन्द्राग्नीमसुतादिपु	८ ८	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	७ ७
इन्द्रस्यसुख्यममर्वाः	३ ३	इन्द्राग्नीकोअसचा	३ ३	इन्द्राग्नीपर्वतावृहतारथेन	८ ८	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	३ ३	इन्द्रायसोमपतेवेवृभिः	३ ३

ऋक्सं.

॥ १८ ॥

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	
-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	--

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग
इदोमहामहूतः	८ ६ १०	इदोमहामहूतः	३ ३ ८	इतोर्वासातिमीमहे	१ १ १२	इदं वचः शतसाः	५ २ ११
इदोमहामहूतः	५ ७ २६	इदोमहामहूतः	२ ७ १९	इथाधीचतमद्रिवः	५ ७ २४	इदवपुनिवचननासः	४ ३ ११
इदोयज्वनेपुणतेच	४ ६ २५	इधनोअधिवनवत्	२ ७ ४	इथायथातजुतर्धे	४ १ १२	इदं वसोसुतमर्धः	५ ७ १७
इदोयातुनामभवत्	५ ७ ९	इधराजासमर्थो	५ २ ११	इथाहिसोमइन्मर्दे	५ ५ २९	इदवामास्यहृविः	३ ७ २५
इदोयातोवसितस्तराजा	१ २ ३८	इच्छतुरेतोमिथस्तनूषु	१ ५ १२	इदकुवेरोदितस्य	२ ७ ९	इदवामादिरमधु	३ ७ २०
इदोरेथायप्रवर्तकृणोति	४ १ २९	इच्छतित्वातोभ्यासु	३ २ ७	इदं तु एकपूरजंतु	८ १ १८	इदविष्णुर्विचक्षमे	१ २ ७
इदोराजाजगत्.	५ ३ ११	इच्छतिदेवा सुन्वतु	५ ७ ७	इदतोपात्रसनवित्तं	८ ३ १३	इदश्रेष्ठज्योतिपुज्योतिरा	१ ८ १
इदोवल्लरीक्षितारं	८ २ १६	इच्छन्नश्चस्ययच्छिरं	१ ६ ७	इदतैसोम्यमधु	६ ४ ४७	इदश्रेष्ठज्योतिपुज्योति	८ ८ २८
इदो वसुभिः परिपातु	८ २ १२	इतकृतीवोअजरं	६ ७ ३	इदत्यत्पात्रमिद्वपानं	४ ७ १९	इदसुर्मेजरितुराविकिद्धि	७ ७ २०
इदोवाघेदियन्मघं	६ २ ४	इतिचिद्वित्वाधनां	८ ७ ७	इदं धावापृथिवीसुत्यमस्तु	५ ३ ३	इदस्वरिदमिदंम	८ ७ १०
इदोवाजस्यस्वविरस्य	४ ७ ९	इतिचिद्विजुजायैपयुमल्यै	४ २ १६	इदनमोद्वपभायस्वरार्जे	४ ४ ११	इदहननमेपां	६ १ २५
इदोविश्वैर्वयं	३ ३ २६	इतिचिन्मन्युमग्निजं.	३ २ २५	इदपितृभ्योनमोअस्तु	७ ६ १७	इदत्यन्वोर्जसासुते	३ ३ १६
इदोवृत्रमपृणोच्छर्धनीतिः	३ ३ १५	इतिवामोवृष्टिहन्त्य	८ ६ १९	इदपित्रेभुस्तोसुच्यते	१ ८ ३	इदहृविमघवत्	८ ६ २१
इदोवृत्रस्यतविषां	५ ३ ३०	इतिवामोवृष्टिहन्त्य	८ ६ १९	इदमेअग्नेक्रियते	३ ५ २	इदहिवाग्नेद्विस्त्रानं	४ ३ १७
इदोवृत्रस्यदोधत.	५ ३ २९	इतिवाइतिमेमनं.	८ ६ २९	इदयुमस्तुसादनं	८ ७ २६	इदमर्कमनमो	८ २ १८
इदोहरीयुजेअग्निवारथं	३ ५ ५	इतिस्तुतासोअसथा	३ ५ ५	इदं वचः पुर्जन्यायस्वरार्जे	५ ७ १	इदमग्नेसुधितुं दुधितादधि	२ ७ ७

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट.
-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	-------

[illegible]

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
इमेयामोस्त्वद्विगोभूवन्	३	८	१७	इयदेवपुरोहितियुवभ्यां	५	५	३	इयत्तक कुपुमक.	२	५	१६
इमेयेतेसुवोयोवागोऽसः	२	१	२५	इयनउस्त्राप्रथमासु	७	८	६	इयत्तिकारकुतिका	२	५	१६
इमेयेनार्वापूर.	८	२	२४	इयमद्वाप्रस्तृणीते	५	१	९	इयमददद्वजस	३	८	३०
इमेष्टप्रचिन्मरतो	५	४	२५	इयमनीपाइयमश्चिन्मगी	५	५	१७	इयमिद्ववरुणमष्टमेगी.	५	६	३
इमेवास्तोमोऽस्वसुता	२	१	२५	इयमनीपाइयमश्चिन्मगी	५	५	१८	इयमिद्ववरुणमष्टमेगी.	५	६	३
इमेविप्रसवेधत्	६	३	२९	इयमनीपाइयमश्चिन्मगी	५	३	२४	इयसुतेअनुष्टुति.	६	४	४३
इमेमोमोसुदद	१	१	३१	इयमेनाभिहिहमे	८	१	२९	इयमेपासुस्तान्गीः	८	३	५
इमेहितेऽकारवोवावु	५	७	२८	इययानीच्याकिणी	६	७	८	इयज्यत्रोप्रथयस्व	८	७	२८
इमेहितेवगृहृत.	५	३	१७	इयवामस्यमन्मनः	५	६	१७	इरावतीधेनुमती	५	६	२४
इमोऽन्तेऽतीतमनि	५	१	२६	इयवामहेऽगृहृत	७	८	१६	इरावतीवरुणधेनवोवां	५	४	२४
इमोऽदेवोऽजायमानोऽपत	२	८	६	इयवावृषणस्पतेसुवृकि.	५	६	२२	इपतेकार्यनोदधत्	७	२	५
इयतेऽमुत्पियानती	६	१	२	इयंविस्तृष्टियंतया	८	७	१७	इपदुहन्सुदुवां	८	७	६
इयतेददगिऽग.	६	१	७	इयवेदि. परोअत.	२	३	२०	इपमूर्जचपिन्वसे	७	१	३०
इयतेनव्यमीमति.	६	७	२२	इयकुप्रेमिभिःसुसाद्व	४	८	३०	इपमूर्जपवमाना	७	३	१८
इयतेपूत्रायणे	३	४	१०	इयसाऽय्याउपसामिवक्षा	७	७	२७	इपमूर्जमभ्यऽप्रांखां	७	४	४
इयदेऽनपुरोहितियुवभ्यां	५	५	२	इयमावोऽसेदीधिति.	२	५	५	इपमिदुस्वादुते	६	१	२५

मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग
इहवाभूर्निचिरेदुप	३	४	२४	इहेहवोमनसावधुता	३	४	७	ईक्षेराय क्षयस्य	३	६	४
इहत्वागोपरीणसा	६	३	४६	इहेहव स्वतवसः	५	४	३०	इजानमिद्वयौतावसु	८	७	२०
इहमजामिहरयि	३	७	८	इहेवस्त्रमावियौष्टं	८	३	२८	इजेयसेभि शत्रुसे	४	५	३
इहमभूहियतम	८	४	६	इहेवैधिमपच्योष्टा	८	८	३१	इयिवासमल्लिध	३	१	५
इहमयाणमस्तुवा	३	७	२२	इहोपयातशवसोनपातः	३	७	५	इयुरथूनन्युथं	५	२	२५
इहमियमजयति	८	३	३५	इळामभेपुरुदसं	८	३	१६	इयुर्गवोनयवसा	५	२	२५
इहम्वीनुयईमगवेदं	२	३	१५	इळामभेपुरुदसंसनिगो.	२	८	२५	इयुष्टेयपूर्वतरामपदयन्	१	८	३
इहश्रुतइदंजसो	७	७	६	इळामभेपुरुदसंसनिगो.	२	८	२७	इमातासि सिलिफ	२	३	१२
इहगगतवृणवसू	६	५	१९	इळामभेपुरुदसं	३	१	२	इमोन्यदपुये	४	४	११
इहितिष परवते.	६	३	५	इळामभेपुरुदसं	३	१	१५	इजानइमाभुवनानि	७	३	१९
इहेद्रामीउपह्वये	१	२	३	इळामभेपुरुदसं	३	१	२२	इजानकृतोभुवनयो	१	५	६
इहेद्राणीमुपह्वये	१	२	६	इळामभेपुरुदसं	३	१	२३	इजानायमहुतियस्तभानं	५	६	१२
इहेवशृण्वण्णं	१	३	१२	इळयास्त्वापदेव्य	३	१	३२	इक्षानावायौणा	७	६	५
इहेहजातासमवावरीतां	२	४	२५	इळासरस्वतीमही	१	१	२५	इजानामोयेदधतेस्वर्णं	५	६	१२
इहेहयद्वसिमा	३	७	१९	इळासरस्वतीमही	३	८	२१	इक्षिपिवार्यस्यहि	६	३	३९
इहेहयद्वसिमापपूक्षे	३	७	२०	इखयतीरपस्युव.	८	८	११	इक्षेन्यु.पवमानः	५	२	७

मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
उक्थचनश्रुत्यमानं	५ ७	उग्रयुज्मपृतनासु	६ ४	उच्छयाभेयजुता	४ ४	उतघासरथीतमः	४ ८ २२
उक्थर्वक्यसोमुह्र	५ ३	उग्रब्रोजं स्थिरा	५ ४	उच्छादिवोदुहित	५ १	उततेषुद्रुताहरी	६ १ ११
उक्थमृत्तसाममृत्तं	५ ३	उग्रवाहुभ्रक्षकुत्वापुरदर	६ ४	उच्छिष्टचुम्बोभर	१ २	उतत्यचमसंनवं	१ २ २
उक्थमिद्रयुत्वात्यं	१ १	उग्रस्तरुपाळभिर्मूलोजा	३ ३	उच्छुम्भाजोपवीना	८ ५	उतत्यनोमार्स्तुशार्धआगमः	२ २८
उक्थवाहसेविम्बेमनीपां	६ ६	उग्राह्वप्रवर्हतं सुमार्यसु	८ ४	उच्छोचिपासहसस्पुत्र	३ १	उतत्यपुत्रमुचुव	३ ६ २२
उक्थेभिरुवागवसे	१ ४	उग्राविघनिनामृधं	४ ८	उच्छयस्वनस्पते	३ १	उतत्यमुज्युमंश्विना	५ ५ १५
उक्थेभिर्दुत्रहर्तमा	५ ६	उग्रासताह्वामहे	१ २	उच्छ्वेचस्वपृथिविमा	७ ६	उतत्यवीरधनसामृजीविर्ग	६ ६ ९
उक्थेज्जिह्वुरयेषु	२ ६	उग्रोव्जिह्वुरमदत्तान.	२ ६	उच्छुवमानाश्रुथिवी	७ ७	उतत्यदुस्वऋयं	५ ८ १३
उक्षतेभश्चौत्थलौह्व	२ ७	उग्रोनेत्रेवीथीय	५ ३	उज्जातमिद्रुतेभवं	६ ४	उतत्यदुस्वऋयं	५ ५ १५
उक्षात्रायवृक्षात्राय	६ ३	उग्रोवककुहोयधि.	४ ४	उज्जापतापरशु	७ ८	उतत्यदुर्वशायदू	३ ६ २२
उक्षासहजुभिर्वक्षरुने	२ २	उग्र्येवृषुपिग स्वराह	६ ४	उतक्रतुभिर्क्रतुपा	३ ३	उतत्यदिव्यभिपज्ज	६ १ २६
उक्षाभिमातिप्रति	७ ७	उच्चातेजातमधंस.	७ ७	उतकण्वयुपदं पुत्र	७ ७	उतत्यभेयुशसथितेनाथै	२ १ १
उक्षासंमुद्रोभरूपः	४ ३	उक्षादिनिद्रक्षिणावत	८ ६	उतगावह्वादति	८ ८	उतत्यभेरीद्रविर्मता	८ १ २८
उसेवयुथापरियन्	७ ७	उच्छतीयाकुणोपिमहना	५ ६	उतस्राजमिरेध्वर	३ ५	उतत्ययजुताहरी	३ ६ १६
उक्ष्णोहिसेपंचदश	८ ४	उच्छतीरुद्याचितयंत	३ ८	उतस्राज्यतुदेवपत्नी	४ २	उतत्यसुखआया	३ ६ २२
उग्रनवीरनमसोपसेदिम	६ ४	उच्छत्रुपसं सुदिनागरिप्रा.	६ १२	उतव्रानेभोभस्तुत	४ ३	उतत्यहृरितुवदो	७ १ ३१

ऋक्सं.

॥ २२ ॥

मंत्र

उतत्यामेहवमार्जम्यातं	४	८	९	उतत्वामदितेमहि	मंत्र
उतत्येदेवीसुभगे	२	७	१४	उतत्वामरुणव्य	
उतत्येनोमरुतो	५	४	२	उतत्वासीमाशीपसी	
उतत्येन पर्वतास.	४	२	२८	उतद्वासरुवर्चिन.	
उतत्येमाध्वन्यस्युष्टा.	४	२	२	उतद्वासापरिविषे	
उतत्येमापौरुत्सत्यसुरे:	४	२	२	उतद्वासकौलितरे	
उतत्येमासारुताश्वस्य	४	२	२	उतदेवाअवहितु	
उतत्वमघवच्छृणु	६	३	४३	उतर्थावाष्टयिवीक्षत्र	
उतत्वसुख्येस्थिरपीतं	८	२	२३	उतद्युमत्सुवीर्य	
उतत्वसुनोसहसो	४	८	९	उतद्धारउशती.	
उतत्व पश्यन्नददृश	८	२	२३	उतर्न कर्णशोभमाना	
उतत्वमिमेमसुस्तुतः	६	३	३२	उतर्न. पितुसाभर	
उतत्वाधीतयोमम	६	३	४०	उतर्न. प्रियाश्रियासु	
उतत्वानमसाव्यं	६	३	३१	उतन् सिधुर्पां	
उतत्वार्धधिरव्यं	६	३	४५	उतर्न सुशानोदेवर्गोपा.	
उतत्वार्धगुवच्छुचे	६	३	३१	उतर्नः सुद्योन्माजिराश्वः	२

अष्ट. अ. वर्ग	६	४	५२	उतर्न. सुभर्गोअरि.	मंत्र.
	७	१	२	उतर्नईत्विष्टागन्त्वच्छास्वर	१
	४	३	२७	उतर्नईमृतयोधयोगा:	५
	३	६	२१	उतर्नईमरुतोबुद्धसेना	५
	८	२	२	उतर्नपुनार्पव्या	५
	३	६	२१	उतर्नपुनर्पव्या	७
	८	७	२५	उतर्नपुनर्पु	५
	४	८	८	उतर्नयर्दिक्ष्यं	३
	१	५	२२	उतर्नोर्गोमत्स्कुधि	६
	५	२	२३	उतर्नोर्गोमतीरिप.	३
	६	५	३१	उतर्नोर्गोमतीरिप.	४
	३	३	२	उतर्नोर्गोमतीरिप.	५
	८	३१	२	उतर्नोर्गोविद्विष्वित्	७
	२	२३	उतर्नोर्गोपणिधिर्	७	१
	१	१२	उतर्नोर्दिव्याहृपः	४	३
	२	१	उतर्नोर्दिवदेवान्	५	८
	३	१	उतर्नोर्दिवावृश्निना	६	५
	२	९	उतर्नोर्दिवावृश्निना	८	५

कोशः

॥ २२ ॥

मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग	मंत्र	अ. वर्ग
उतमकुप्रेपुरयस्य	५ १	उतवाविधुमद्यास्वधं.	२ २३	उतस्मासतन्युतोर्विव	३ ७	उतस्यावांरुसतोयप्सस	२ ४ २६
उतमन्येपितुरुद्धः	२ ३	उतव शसमुजिनां	२ ७	उतस्मास्यद्रवतः	३ ७	उतस्याश्चतुयावरी	६ २ २९
उतमातावृहद्विवा	८ २	उतवृत्तानिसोमते	७ ११	उतस्मास्यपनयति	३ ७	उतस्वयान्याउ संवदेतवः	६ ८
उतमातामद्विपमन्वेन	३ ५	उतशृण्वस्यष्टपुण्या	३ ६	उतस्माहिरवामाहु	३ ६	उतस्वरजोअदितिः	५ ७ ९
उतमैप्रयिथोवयिथोः	६ १	उतासखास्यधिनीरुत	३ ८	उतसैनवखुमर्थेन	३ ७	उतस्वरजोअदिति.	६ १ ३
उतमेवोचतादिति	४ ३	उतसिधुविवात्यं	३ ६	उतस्यदेव सविता	४ ८	उतस्वस्याअरत्या	७ ३ ४
उतमेरपथुवति	४ ३	उतसुलेपयोवृधा	५ ७	उतस्यदेवोमुवनस्य	२ ७	उतस्वानासौदिविपव	३ ८ १५
उतवाय सहस्यप्रविद्धान्	२ २	उतसुतासोमरुतो	५ ४	उतस्यगद्गोविश्वचर्पणिः	२ ७	उताद परुरेपवि	४ ८ २२
उतथासिसवितुलीनि	४ ४	उतसुतेपरुण्यारं	४ ४	उतस्यनवशिजांमुर्विया	८ ४	उतामयेपुरुहूतश्रवोमि	३ २ १
उतयोमानुयेष्वा	१ २	उतसुतेवनस्पते	१ २	उतस्यवाजीक्षिपुणिं	३ ७	उतायातसंगुवेप्रात.	४ ४ १७
उतयोपणेद्विव्येमही	५ २	उतसंदुर्गभीयसे	४ २	उतस्यवाजीसदुरि	३ ७	उतालब्धस्यशुहि	८ ४ ६
उतवाउपरिवृणक्षि	८ ७	उतस्मयशिशुयथा	४ १	उतस्यवाज्यरूप	४ ३	उताक्षिप्राकनुशृण्वति	२ ७ ३
उतवासिनपुरुनिष्पिच्वर्नं	३ ८	उतस्मयशिशुपारं	७ ११	उतस्यानु सरस्वती	४ ८	उतासिमैत्रावरुणो	५ ३ २४
उतवातपितासिन	८ ८	उतस्मयसमर्हयतस्यं	८ ४४	उतस्यानु सरस्वती	५ ६	उताहंनक्तमुतसोमतेदिवो	५ ५ १५
उतवायस्यवाजिनं	१ १	उतस्मासिधत्पारं	६ ११	उतस्यानोदिवो	६ १	उतेदानींमगवंत.	५ ४ ८
उतवायोनोमर्चया	२ ६	उतस्मासुप्रथम सरित्य	३ ७	उतस्यावांमधुमन्मक्षिका	१ ८	उतेक्षिपेप्रसवस्य	४ ४ २४

मंत्र.	अष्ट.	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ. वर्ग
उतोऽनातोऽपुष्ट्याऽं	५	३	उत्तानायामवभरा	३	१	उत्तर्वामदत्तोर्मा	३	१	उत्तर्वामदत्तोर्मा	३	१
उतो नोऽस्य कस्य चित्	५	२	उत्तिष्ठतावपश्यत	५	२	उत्सूर्यो बृहदूर्ध्वक्षेत्र	५	२	उत्सूर्यो बृहदूर्ध्वक्षेत्र	५	२
उतो नोऽस्या उपसर्जयेत्	२	१	उत्तिष्ठन्मया	३	१	उत्सुवातो वहति वासो	५	२	उत्सुवातो वहति वासो	५	२
उतो न्वस्योऽपुमां	६	२	उत्तिष्ठन्मया	६	२	उदगादयमादित्यः	१	४	उदगानदकुहो दिव	५	८
उतो न्वस्य यस्पद	६	५	उत्तिष्ठन्मया	६	५	उदसेतवत द्रुतात्	३	३	उदवातत्वक्षसा	५	३
उतो न्वस्य यन्महत्	६	५	उत्तिष्ठन्मया	६	५	उदसेति प्रस्थातेऽनुज	३	३	उदितायो निदितो वेदितु	५	३
उतो पतिर्य उच्यते	६	१	उत्तेवृहतोऽर्चय	६	१	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उतो पितृभ्यां विदनु	३	१	उत्तेवृहतोऽर्चय	३	१	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उतो सममृष्टाभिर्दुभिः	१	२	उत्तेवृहतोऽर्चय	१	२	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उतो सुहृन्मर्षसं	७	१	उत्तेवृहतोऽर्चय	७	१	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उतो हिवाऽनासंति	३	७	उत्तेवृहतोऽर्चय	३	७	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उतो हिवाऽपुन्योऽपि विदुः	३	७	उत्तेवृहतोऽर्चय	३	७	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उतो हिवाऽपुन्योऽपि विदुः	३	७	उत्तेवृहतोऽर्चय	३	७	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उत्तराहस्यं सरः	५	८	उत्तेवृहतोऽर्चय	५	८	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उत्तानपणैः सुभने	८	८	उत्तेवृहतोऽर्चय	८	८	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२
उत्तानायामजनयन्	२	६	उत्तेवृहतोऽर्चय	२	६	उदमेभारतद्युमत्	५	२	उदित्वस्य रिच्यते	५	२

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
उद्गीर्णोत्त पतिवर्तिल्लो	८ ३ २४	उदुप्यदेव सवितासुवाय	२ ८ २	उदुप्यध्वसमनस	८ ५ १८	उद्वेतिप्रसवीताजनानां	५ ५ ५
उद्गीर्णतोविश्रावसो	८ ३ २४	उदुप्यदेव सविता	५ १ १५	उद्यसह सहेसुआजनिष्ट	४ १ २९	उद्वेतिसुभगोविश्वक्षा	५ ५ ५
उदुज्योतिर्युतविश्वजन्म	५ ५ २३	उदुप्यदेव सवितादर्भना	५ १ १५	उद्यदिदोमहतेवानुवाय	४ १ ३३	उन्सिभूमिदृष्टिर्वी	४ ४ ३०
उदुतिष्ठसवित	५ ४ ५	उदुप्यदेव सविता	५ ४ ५	उद्यधमित्रमह	१ ४ ८	उन्मदितामौनेयेन	८ ७ २४
उदुतिष्ठस्वध्वरः	६ २ ९	उदुप्यव सवितासुप्रणीत	६ २ २३	उद्यद्रुमल्यविष्टप	६ ५ ६	उन्मध्वजुर्मिर्वननो	७ ३ १९
उदुत्तमसुसुनिधन	१ २ १९	उदुप्यशरणेदिव	६ २ २४	उद्यमीतिसवितेववाह	१ ७ २	उन्मापीतायसत	८ ६ २६
उदुत्तमवरुणपाशमस्वात्	१ २ १५	उदुस्तोमोसोअश्विनोरुभ	५ १ १९	उद्यस्यतेनवजातस्य	५ २ ३	उन्माभमदृष्टुभो	२ ७ १७
उदुत्यचक्षुर्महिमित्रयो	४ ८ ११	उदुक्षिया सृजतेसूर्य सचाप	५ ६ १	उद्यमिवेत्तुणजो	५ ३ २२	उपक्रमस्वाभर	६ ५ ३८
उदुत्यदर्शितवपुः	५ ५ १०	उदुस्वानेभिरीरते	५ ८ २१	उद्वदनैमैरतदसनामि	१ ८ १९	उपक्षयपृथीतहति	१ ३ २१
उदुत्येवरुणसंवः	५ ८ १९	उद्वययाउपवकेव	५ ५ १	उद्वजुमि शम्याद्वत्वापो	३ २ १४	उपक्षरतिसिधवोमयोसुव.२	१ १ १०
उदुत्येमधुमत्तमा	५ ७ २७	उदुपुणोवसोमहे	६ ५ ९	उद्वत्सस्वाअकृणोतना	२ ३ ३	उपक्षेतारुस्ववसुप्रणीते	२ ८ १६
उदुत्येसुननोभिः	१ ३ १३	उद्वर्वाजदगिरोभ्य	६ १ १५	उद्वयतमसुस्परि	१ ४ ८	उपछायामिवघुणे	५ ५ २८
उदुत्यजातवदसं	१ ३ ४	उद्वतेवशकुनेसामगायसिर	२ ८ १२	उद्वचक्षुर्वरुणसुप्रतीक	५ ५ ३	उपतेगाडवकर	८ ७ १४
उदुग्रहान्यैरत	५ ३ ७	उद्वेदभिभ्रुतामघ	६ ५ २१	उद्वपुक्षासोमधुमत	३ ७ ११	उपतेधासहमाना	८ ८ ३
उदुश्रियउपसरोचमाना	५ १ ५	उद्वर्पयमघवज्रायुधानि	८ ५ २३	उद्वपुक्षासोमधुमतो	५ ५ १	उपतेस्तोमान्युपाडुवाकर	८ ८ ६
उदुष्टत समिधाबुद्धोवधो	८ २५	उद्वोद्वदमपिब्रजहपाण.	८ ५ २०	उद्वहुरक्ष.सहमूलमिद्र	३ २ ४	उपुत्तमन्यावनस्पते	५ ५ ९

॥

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
उपयावह्नीगमलुविश्व	५	५	२०	उपनोवाजाध्वर	३	७	९	उपमाश्यावा स्वनयेन	२	१	११
उपत्रितस्पण्यो	७	५	४	उपनोवाजिनीवसू	६	२	६	उपमापङ्कहाद्वा	६	५	३
उपवाकर्मवृत्तये	६	२	१	उपनोहरिभि सुत	६	६	२७	उपयमेतियुवति	५	१	२४
उपत्वामेदिवेदिवे	१	१	२	उपप्रजिन्वबुशती	१	५	१५	उपयोनमोनमसि	३	६	५
उपत्वाजामयोमिरः	६	७	११	उपप्रयतोऽध्वर	१	५	२१	उपवपुनर्मसाजिगीपा	२	५	४
उपत्वाजुहोऽमम	६	३	३६	उपप्रागाच्छसनवाज्यर्वा	३	१३	उपवपुर्वेर्वाभि शपे	४	६	२४	
उपत्वारणवसद्या	४	५	२८	उपप्रागात्परमयत्सुधर्य	३	१३	उपवपुर्वेर्वाभि शपे	३	५	३	
उपत्वासातयेनरो	५	२	१९	उपप्रागात्सुमन्मैधाधि	३	१३	उपवपुर्वेर्वाभि शपे	३	५	३	
उपन पित्वाचर	२	५	६	उपप्रियपनिमल	३	१३	उपवपुर्वेर्वाभि शपे	३	५	३	
उपन सवनगहि	१	१	७	उपमेतकुशिकाश्वेत्यध्व	३	१३	उपवपुर्वेर्वाभि शपे	३	५	३	
उपन सुतमागत	४	४	९	उपुष्वदमङ्करी	३	१३	उपवपुर्वेर्वाभि शपे	३	५	३	
उपन सुतमागहि	१	१	३०	उपवधवावातावृणहरी	५	७	उपस्त्वितिरौच्ययसुरवे	२	३	१	
उपन सुतमागहि	३	३	५	उपव्रह्माणिहरिव	८	५	उपस्त्वितिनमसुचर्त्तिच	२	५	१२	
उपनोदवाकवुसगमंतु	४	८	१५	उपमर्त्वामवोना	६	४	उपस्त्वहिप्रथमत्तुधेय	४	२	१८	
उपनोयातमश्विना	१	७	२५	उपमापेपिशत्तम	८	७	उपस्त्वृणितमत्रवे	६	५	१८	
	६	२	२७	उपमामृतिरस्थित	८	६	उपस्थायमातरमन्त्र	३	३	१२	
							उपस्थायचरतियत्सुमारतर	३	३	१२	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	
									३	३	

मंत्र.	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग
उपोऽसि पृथ्वते	७	२	२१	उभाभ्यां देवसवितः	७	२	१७	उरुतुभ्यं उरुतावै	६	५	३	उरौ देवाभ्यां निघोषे स्याम	१३	२	१९
उपोरथेऽपुष्टपतीरयुग्धं	१	३	१९	उभावाभिद्राभीभाहुवचैः	१	८	२९	उरुनैलोऽकमनुनेपि	५	७	३१	उरौ देवाभ्यां निघोषे स्याम	५	२	२२
उपोरुहवेयुवतिर्नयोपा	५	५	२४	उभावांसानयामाविष्टा	२	५	३	उरुयज्ञार्थचक्रशुख्लोकं	५	६	२४	उरौ मुहूर्थां निघोषे ववर्ध	२	८	१५
उपोपुजावमसुरं	७	१	२०	उभाहिदुष्तामिपजा	६	७	९	उरुं हि राजावसेणश्चकारं	१	२	१४	उरौ वायेभ्यतरिक्षे मर्दति	२	८	२७
उपोपुष्ट्युद्दीर्गिरे	१	६	३	उमेकसोपीपयत	२	५	८	उरुणव्यतिरभयामि	७	३	२६	उर्वोपुष्ट्यीवहुले	२	५	३
उपोहुयहिदथवाजिनोगुः	५	६	१५	उमेविदिद्रोदसी	५	३	१	उरुणस्तन्वेऽनुतेन	६	५	३	उर्वोसिर्वानीवृद्धीकृतेन	२	५	३
उपोहरीणांपति	६	२	१७	उमेथावापुथिवी	७	३	६	उरुतेऽग्रयं परित्युग्न	१	७	२	उलूकयातुं शुखलूकयातु	५	७	९
उमथैतेनक्षरीयते	६	२	६	उमेधुरोवहिरापिबद्मान	८	५	१९	उखारय परिनक्षति	३	७	१९	उवाच मे वरुणो मे धिराय	५	६	९
उमथ्यं युगवचन	६	५	३६	उमेपुनासिरोदसीकृतेन	२	१	२२	उख्यवसासहिनी	२	३	३	उवासीयातुच्छाब्जु	१	५	३
उमयत् पवमानस्य	७	३	१३	उमेमूद्रेजोपयेतेनमेतं	१	७	२	उख्यचसेसुहिनं	५	३	१६	उर्वेक्षवसुलाभिके	८	५	२
उमथ्यसिजातवेदस्याम	२	५	२१	उमेयत्तैमहिनाञ्जुञ्जे	५	६	२०	उख्यचानोमहिप	८	५	१६	उवोऽपि यद्दिमघवन्	५	५	३
उभाऽनुनतादिदथेये	८	६	१	उमेयदिद्रोदसी	८	७	२२	उखं सानसुवृधा	३	५	११	उशतस्त्वानिधीमाहि	७	६	२२
उभासिगययुर्नपरा	५	१	१३	उमेसुश्चद्रसिपौ	३	८	२३	उख्यणोऽभिसिंस्ते	१	६	२१	उशतवृत्तानदमयगोपा	५	६	१३
उभादेवादिविस्तृता	१	२	८	उमेसोमवचकश्चर	६	८	२२	उख्यणो मापरादा	६	५	१२	उशतिघातेऽपृष्टतासः	७	६	६
उभादेवानुचक्षसा	६	७	२५	उमोमयाविबुधेऽहि	८	५	५	उरुणसावसुरपौ	७	६	१६	उशनः काव्यस्त्वा	६	२	१२
उभापिबतमक्षिना	१	३	३५	उलूमीरिजुषा	३	३	१०	उरोऽहद्वरायंस	५	५	९	उचामायस्यरावतः	५	८	२३

मंत्र-	अष्ट अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट अ. वर्गः
इशानायस्तद्धृत्यै	४ १ २४	उपोनजुरोविभावोक्ष.	१ ५ १३	ऊर्जोदेवोअवस्योजसुतां	६ ३ १८	ऊर्ध्वोहितैदिवेदिवे	६ ३ ४४
इशसुणुणं सुमनाउपुके	३ ६ ३	इपोनजुर.पुशुपजो	५ २ १३	ऊर्जोनपाजातयेद	८ ७ २८	ऊर्ध्वोधीतिःप्रत्यस्यप्रयाम	१ ८ २०
इशिकपावकोअरति	७ ८ २९	उपोभुदेभिरगहि	१ ४ ६	ऊर्जोनपतमध्वरे	३ १ ३०	ऊर्ध्वोअभि सुसति	५ ४ ६
इशिकपावकोवसु	१ ४ २६	उपोमघोम्यावहसुते	३ ८ ६	ऊर्जोनपतमाहुवे	६ ३ ३८	ऊर्ध्वोगध्वोअधिनके	७ ३ ११
उपे मतीचीसुवनानि	३ ४ ८	उपोयदुमिसमिथेचकथं	१ ८ २	ऊर्जोनपतसहिनायम्	४ ८ १	ऊर्ध्वोगध्वोअधि	८ ७ ८
उपुवाभाहिभानुना	१ ४ ४	उपोयदुद्यभानुना	१ ४ ५	ऊर्जोनपतसुभगं	६ १ २९	ऊर्ध्वोआवावहुदभि	८ २ २२
उपउपोहिवसोअग्र	७ ६ ३	उपोयेतेप्रयामेपु	१ ४ ३	ऊर्जोनपात्सहसावन्	८ ६ १९	ऊर्ध्वोआवावसवोस्तु	८ ५ १७
उपसु पूर्वोअग्रयत्	३ ३ २८	उपोवाजैनवाजिनिग्रचेता	३ ४ ८	ऊर्जोअदाविग्रथस्वाभ्यां	३ ८ २०	ऊर्ध्वोन पाह्यहस	१ ३ १०
उपसोनकेतवो	८ ३ १३	उपोवाजुहिवस्व	१ ४ ५	ऊर्ध्वोकेतुसवित्तादेवो	३ ५ १४	ऊर्ध्वोभवप्रतिविध्या	३ ४ २३
उपस्तस्त्रिभामर	१ ६ २६	उष्टारेवफरेपु	८ ६ १	ऊर्ध्वमुदेवततओजसा	१ ६ १०	ऊर्ध्वोवागितुरध्वरेअका	२ ८ २२
उपुक्तमइयाशससुवीर	१ ६ २५	उस्तावेदुवसूनां	७ १ १५	ऊर्ध्वभानुसवित्तादेवो	३ ५ १३	ऊर्ध्वोवामिग्रध्वरे	५ १ ३
उपाअपुस्तपुस्तमः	८ ८ ३०	ऊतीदेवानवियमिद्वत	२ १ २६	ऊर्ध्वकुपुणकुतये	१ ३ १०	ऊर्ध्वोह्यस्यादध्युतारिसे	२ ७ १२
उपाउच्छन्तीसमिधुने	२ १ ७	ऊतीद्वचीवस्तव	८ ५ २४	ऊर्ध्वकुपुणोअध्वरस्य	३ ५ ४	ऊर्मिथसेपवित्रभा	७ १ ३८
उपासानक्तादृहृती	७ ७ ९	ऊरुम्यतिअष्टीवज्यां	८ ८ २१	ऊर्ध्वस्तिष्ठानकुतये	१ २ २९	ऊक्तामामभ्याममिहितौ	८ ३ २२
उपोअधोहगोमति	१ ६ २६	ऊर्जागोयवसे	८ ५ १७	ऊर्ध्वयत्तेत्रेतिनीभूत्	८ ५ २७	ऊक्ताकुपोतनुदत	८ ८ २३
उपोद्व्यमस्योविभाहि	३ ४ ८	ऊर्जनोद्योअपृथिवी	५ १ १४	ऊर्ध्वसुस्तवान्विद्वद्व	५ ३ १६	ऊक्तांत्व.पोयमास्ते	८ २ २४

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
ऋचोजुक्षोरैपरुमेभ्योमन्त्र	२ ३ २१	ऋतं वदधृतयुद्ध	७ ५ २६	ऋतस्य वाक्कोशिनो योग्या	२ ८ २७	ऋतावायस्य रोदसी	३ १ १३
ऋजिप्यर्हमिन्द्रावतोन	३ ६ १६	ऋतवोचेनमसा	३ ५ ३	ऋतस्य वोर्य्य पूतदक्षो	४ ८ १२	ऋतुर्जनित्री तस्या	२ ६ १०
ऋजीतिपरिदुहृष्टि	५ १ २१	ऋतशंसतऋजुदीर्घाना.	८ २ १५	ऋतस्य हि धेनवो वा वशाना.	१ ५ २०	ऋतेन ऋतमपि हित	४ ३ ३०
ऋजीलेनीरुशती	८ ३ ७	ऋतज्येनक्षिमेण	२ ७ २	ऋतस्य हि यसि तिष्ठोः	८ ४ २३	ऋतेन ऋतं धृष्टं धारयंत	४ १ ७
ऋजीपिभ्योनोददमानो	३ ६ १५	ऋतधीतयुजागत	४ ३ ५	ऋतस्य हि वर्तनयः	७ ५ ३३	ऋतेन ऋतनिर्यतमीळ	३ ४ २१
ऋजीपीवज्रीवृषभ	४ २ ११	ऋतमतेनसपते	४ ४ ६	ऋतस्य हि दुरुधः सति	३ ६ १०	ऋतेन देव सविता नो मातय	६ ६ ९
ऋजुनीतीनोवरुण	१ ६ १७	ऋतस्य गोपानदभाय	७ २ ३०	ऋतस्य हि स दसो	८ ६ १०	ऋतेन देवीरसृता	३ ४ २२
ऋजुःपवस्यदृजिनसं	७ ४ १९	ऋतस्य गोपावधि	४ ४ १	ऋतायिनीमायिनी	७ ५ २२	ऋतेन मित्रावरुणा	१ १ ४
ऋजुरिच्छंसेवनवत्	२ ७ ७	ऋतस्य जिह्वापवतेमधु	७ २ ३३	ऋतावरीषिवोर्कैर्बोध्या	३ ४ ८	ऋतेन यावता वृधा	१ २ ८
ऋजुसुकुण्याग्रने	६ २ २५	ऋतस्य तंतुर्वितंत	७ २ ३०	ऋतावानं ऋतजाता	५ ५ १०	ऋतेन हिष्माद्युपमश्चिदुक्तः	३ ४ २१
ऋजर्विन्द्रोतभावेदे	६ ५ ३	ऋतस्य दृढं ह्यधुरुणां नि	३ ६ १०	ऋतावानं सृतायवो	६ २ १०	ऋतेनाद्रिं न्यसिभद्रतः	३ ४ २२
ऋतं वसत्यचामीद्धात्	८ ८ ४८	ऋतस्य देवा अनुवृता	१ ५ ९	ऋतावानां निपेदु	६ २ २२	ऋते सर्विदतेयुध	६ २ ३४
ऋतचिक्रिवऋतमित्र	४ १ ४	ऋतस्य पथिवेधा	४ ७ १७	ऋतावानं महिपं	८ ७ २८	ऋदुर्देणसख्यासचय	६ ४ १२
ऋतदिवेतदवोचपृथिव्यै	२ ५ ३	ऋतस्य अेषा ऋतस्य धीति	१ ५ १२	ऋतावानं नृश्रियविभ्रं	२ ८ १९	ऋधुक्सावोभरतो	४ ४ २७
ऋतदेवाय कृण्वते	२ ७ १२	ऋतस्य वृक्ष उपसां भिपृण्यन्	४ ४ ८	ऋतावानं विचेतसं	३ ५ ६	ऋधक् सोमस्वख्ये	७ १ ४१
ऋतयेमानं ऋतमिद्वनो	३ ६ १०	ऋतस्य रूदिमं नृयच्छमाना	१ ६ १	ऋतावानं प्रतिचक्ष्यान्वृता	७ २	ऋधगित्यासमर्त्यै.	६ ७ ६

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
ऋधद्यस्तेमुदानवे	४	५	१	ऋपमसमानानां	८	८	२४	पुद्गयाहिरिभिः	६	३	११	एकस्मिन्योगेदुरणा	५	५	१३
ऋध्यामस्तोमसनुयाम	८	६	२	ऋपेमनायकपिक्कृत्	७	४	९	पुद्गयाद्युपेत परावतः	२	१	१८	एकस्याचिन्मेविभ्वः	२	३	२५
ऋसुक्षणमिद्रमाहुव	१	७	३	ऋपिर्नस्तुभ्वविष्णुप्रशस्त	१	५	१०	पुद्गवाहोनुपति	७	८	२६	एकस्यावस्तोरावतरणाय	१	८	१२
ऋसुक्षणंनवर्तवे	६	३	४	ऋपिर्विम पुरता	७	३	२२	पुद्गसानसिरयि	१	१	१५	एकचित्तरस्वतीनदीनां	५	६	१९
ऋसुक्षणेवाजा	५	४	१५	ऋपिर्हि पूर्वजाभसि	५	८	१७	पुद्गस्यकुक्षार्पवते	७	३	५	एकौद्देवसुमतीसमीची	३	२	३
ऋसुतोरेयिःप्रथम	३	७	७	ऋपेनरावहसु पांचजन्य	१	८	१३	एकचमसंचतुरः कृणोतन	२	३	४	एकौवहूनामसिमन्यवी	८	३	१९
ऋसुमतावृणवाजवता	६	३	१६	ऋपेमंत्रकृतांस्तोमैः	७	५	२८	एकचययोविशुति	५	२	२६	एतत्तेस्तोमनुविजात	३	८	१५
ऋसुयसुक्षणोरयि	३	७	९	ऋष्टयोवोमस्तो	४	३	२२	पुक्कुनुत्वासरपतिपांचजन्य	५	१	३३	एतत्पुद्गुरितोदश	६	८	२८
ऋसुर्कसुक्षान्कसुर्विधतः	८	४	२७	ऋष्टस्त्वमिद्रशरजातः	८	८	६	पुक्कुविचक्रचमसंचतुर्वयं	३	७	७	एतद्वितस्ययोपणः	६	८	२८
ऋसुर्कसुभिरभि	५	४	१५	ऋष्वतोपादाप्रयजिगीसि	८	३	३	एकं समुद्रोद्युरण	७	५	२३	एतमृजंतिमर्ज्य	३	८	५
ऋसुर्नृदं शवसानवीया	१	७	३१	पुद्गमिद्रायासंचित	६	२	१७	एकं सुपूर्णं ससमुद्रं	८	६	१६	एतमृजंतिमर्ज्य	१	३	३
ऋसुर्नरथ्युनव	६	८	११	पुद्गोपाधिचरयि	६	८	१९	एकपुवाभिर्बहुधासमिद्धः	६	४	२९	एतमेस्तोमसूर्ये	४	३	२९
ऋसुर्भरायसंनिशातु	१	७	३२	पुद्गोपाधिचरयि	७	८	९	एकपाच्योद्विपुद्गो	८	६	२३	एतमेस्तोमनुगानसूर्ये	८	४	२८
ऋसुर्विन्नावाजहृद्गो	३	७	३	पुद्गोपाधिचरयि	६	७	१	एकयाप्रतिधापिवत्	६	५	२९	एतवास्तोममधिनी	७	८	१८
ऋसुर्बहुइच्छाचरुनाम	२	८	२५	पुद्गोपाधिचरयि	६	३	९	एकराजस्यभुवनस्यराज	६	३	१९	एतवार्धधामयस्यसूरे	२	१	३
ऋसुर्नोमृष्यभृपानमा	५	७	३१	पुद्गोपाधिचरयि	५	७	१४	एकस्त्वष्टुरध्वस्याविशुक्ता	२	३	१०	एतवसंसमिद्रास्मयुग्मे	८	४	२८



मंत्र.	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ वर्ग
एतत्तुल्येकवीदुनू	६	८	११	एताअपंत्यल्लाभवती	३	५	२६	एतानोअमोसोभंगा	५	२	५
एतत्तुल्येपतयतिश्चयतव	५	७	८	एतातुल्याउपसं. केतुमंक्रत	१	६	२४	एतानोअमोसोभंगा	५	२	५
एतत्तुल्येप्रत्यदश्रव	२	५	१४	एतातुल्या मलदश्रनूपरस्त्रा	५	५	२५	एतान्यभिनवसिर्नव	८	५	१३
एतच्छनवोविचिकेतदेपां	२	२	२२	एताचिकित्वोभूमनिपा	१	५	१४	एतान्यभिनवसिहस्ता	८	५	१३
एतत्तद्वद्वीर्य	६	४	२४	एताच्यौजानितिकृता	६	५	३०	एतायामोपगव्यंतदद	१	३	१
एतत्तत्तद्वद्वृण्डकथ	१	७	११	एतातैअमृडचथानिवेध.	१	५	२०	एतावतश्चिदेपा	५	८	२०
एतत्तत्तद्वद्विचयमचेति	४	६	२३	एतातैअमृडचथा	३	४	१९	एतावतस्त्राईमहे	६	४	१५
एतत्तत्तद्वद्विचयमचेति	१	६	१४	एतातैअमृजनिमासनीनि	२	८	१६	एतावतस्तेवसो	६	४	१७
एतद्वद्व्याअनं दाये	३	६	२१	एतास्यातेश्चुल्यानि	८	७	२६	एतावद्वांघृणवसू	५	८	६
एतद्वेदुतवीर्य	३	६	२०	एताधिर्यकणवांमासखाय	४	२	२७	एतावद्देदुपुस्व	४	४	२२
एतद्वचोजरितमोपिमृष्टाः	३	२	१३	एतानिधीरौनिण्या	५	४	२३	एतावानस्यमहिमा	८	४	१७
एतमुल्यदशुक्षिप.	६	८	५	एतानिमृद्राकलशक्रियाम	७	७	३०	एताविधाचक्रवाईदु	४	१	२५
एतमुल्यदशुक्षिप	७	१	१९	एतानिवाभशिनवधैना	२	८	५	एताविधाविदुपुतुभ्य	३	४	२२
एतमुल्यमद्वच्युतंसहस्र	७	५	१९	एतानिवाभशिनवधीर्यणि	१	८	१७	एताविधासवना	८	१	१९
एताअमआक्षुपाणासहृष्टी	५	६	१६	एतानिवाभशिनवसुदानू	१	८	१४	एतावोवस्म्युयता	२	७	१४
एताअपंतिहथाव	३	८	१०	एतानिसोमपवमान	७	३	३	एतप्रहोतात्रतमस्य	२	२	१३



मंत्र

एतेवाताइवोरचः
एतेविश्वानिवायुः
एतेशमीभिः सुरासी
एतेसोमावतिवारीणि
एतेसोमाअभिगव्या
एतेसोमाअभिधियं
एतेसोमाअसृक्षत
एतेसोमाःपर्वमानास
एतेसोमासलारावः
एतेसोमासइंदवः
एतेसोमानुराष्टतम
एतेनवः१३सुध्योऽर्वासा
एतेनवः१३सुवाम
एतेनवः१३सुवामेशा
एतेनवः१३सुवामशुद्ध
एतेनवः१३सुवामशुद्ध

अष्ट. अ. वर्ग.

मंत्र

६ ८ १२ एदसस्तोअधिना
६ ८ ११ एदुसध्वोमदितर
७ ७ २१ एनागयेणवयमिद्वत
७ ३ २३ एनामद्वानोजिह्वर
७ ३ २२ एनावयपयसापिर्वमाना.३
६ ७ ३० एनाविश्वान्युयथा
७ १ २८ एनावोअधिनमसा
७ २ २२ एमिधुभिः सुमनागभि.
६ ८ १२ एमिनइंद्राहभि.
७ १ ३ एमिधुभिःइंद्राहभिः
२ ३० एमिनोअर्कमवानो
२ २६ एमिधुवसुमनाअसे
२ १८ एमाअमत्रेवतीः
५ ३७ एमाअमशवैभर
६ ३१ एमेनप्रत्येतन
७ १८ एमेनसृजतासुते

अष्ट. अ. वर्ग.

मंत्र

५ १ २० एवोअधिमजुयसुः
६ २ १८ एवोअधिमजुयसुः
१ ७ २३ एवाकविस्तुविरवांक्तुसा
५ ७ १९ एवाधिसहस्र
२ १२ एवाधिरागेतमेभिर्कृतावा
१ १ २० एवाधिरागेतमेभिर्कृतावा
५ २ २१ एवाचत्वसरमआ
५ ४ १५ एवाजज्ञानंसहसे
३ ३ १२ एवातइदोसुभ्व
५ ५ २० एवातइदोचयमहे
५ १० एवातइदोहृदुना
५ ४ २२ एवातमाहुस्तुष्टव.
७ २६ एवाताविश्वचक्रवर्त्स
१ १ ८ एवातेअमेविमदो
५ १३ एवातेअमेसुमतिर्वकान
१ १७ एवातेगुत्समदा शूर

अष्ट अ वर्ग

मंत्र

३ ८ २३ एवातेवयमिद्वजुजतीनां ८ ५ १६
५ १ १८ एवातेहारियोजनासुवृक्तिः ५ ५ २९
२ ८ एवात्वामिद्ववज्जिज्ञत्रे ३ ५ १
५ ४ ९ एवादेवदेवतते ३ ५ १६
५ २५ एवादेवोइदोविद्ये ५ ५ १८
६ १९ एवानइंद्रवार्यस्य ५ ३ ८
६ ६ एवानइंद्रवार्यस्य ५ ३ ८
७ १० एवानइंद्रवार्यस्य ५ ४ १५
३ ४ एवानइंद्रोतिभिर्व ५ २ २
६ २४ एवानइंद्रोतिभिर्व ५ २ २४
८ २ एवानपतोममतस्य ५ ८ १०
३ १० एवानुसुपस्तुहि ५ ८ १०
३ ३ एवानुमिर्दि. सुश्रवसा ५ ८ १०
३ ३ एवानोअमेअष्टतेपु ५ ८ १०
३ २१ एवानोअमेविस्वा ५ ८ १०
६ २४ एवानोअमेसमिधावृधानः१ ५ ८ १०

कोशः

मंत्रः	अष्ट	अं	वर्ग	मंत्रः	अष्ट	अं	वर्ग	मंत्रः	अष्ट	अं	वर्ग	मंत्रः	अष्ट	अं	वर्ग
एवानोअमसिधिवृयाना	१	७	३	एवामृतपयमदक्षेयार्थ	७	५	२०	एवाह्यस्यकार्या	१	१	१६	एवद्वितीयवायवे	६	६	१७
एवानं सोमपरिपिच्य	७	२	२०	एवारोजेवक्रुमान्	७	३	२६	एवाह्यस्यसूनुता	१	१	१६	एवउस्यपुनव्रत	६	७	११
एवानं सोमपरिपिच्य	७	३	१८	एवारुतिस्वीमघ	६	६	२०	एवेद्विभिभ्यापितृवज्जीय	६	३	३५	एवउस्यवृणारय	६	६	२८
एवानं स्पृष्टु समजा	३	६	२०	एवार्धुपभासुते	६	३	३९	एवेद्विभिभ्यामहा	३	३	३२	एवएतानिचकार	५	७	२३
एवापतिद्रोणसाच	७	८	२६	एवावदस्ववर्णबृहते	७	३	२८	एवेद्विभीपपिवासासुतस्य	१	७	२७	एवकुविरभिष्टुत	६	८	१७
एवापवस्वमदिर	७	३	१३	एवावसिष्टद्वद्व	५	३	१०	एवेदिद्वीयवृणभाय	३	५	२०	एवक्षेतिरयवीति	३	३	२९
एवापहिमुत्था	३	६	१	एवावस्वद्वद्वस्य	३	६	६	एवेदिद्ववृणं	५	३	७	एवगव्युरचिभृद्व	६	८	१७
एवापित्रेविश्वदेवाय	३	७	२७	एवावामहृऊतये	३	६	२१	एवेदिद्व सुतेअस्तावि	३	६	१६	एवप्रावेवजरितार्तद्व	३	२	७
एवापुनानद्वद्व	६	७	२७	एवावामहृऊतये	६	३	२८	एवेदिद्व सुहव	३	७	१	एवपच्छागे पुरोअध्वेन	२	३	७
एवापुनानोअपस्व	७	३	१	एवासुर्यमघवानायुव	७	३	१७	एवेदेतेप्रतिमारोचमाना	२	३	२६	एवतुओअभिष्टुत	७	२	१७
एवाहृते सुनुरवीवृधद्व	८	२	५	एवाहितुविभृतय	८	१	१६	एवेदे पवुविकुर्मि	५	७	२३	एवतेदेवनेता	३	३	१३
एवाहृते सुनुरवीवृधद्व	८	२	८	एवाहितेशसवानासमूद्व	८	२	१४	एवेदेपापुरुतमाद्वशोकं	२	१	८	एवदिविधावति	६	७	२१
एवावओवृपम	२	७	१८	एवाहित्वास्तुथायातय	२	३	१	एवेदेपापुरुतयोनमत	७	७	२५	एवदिवव्यासरत्	६	७	२१
एवामहृस्त्विजातः	२	५	१३	एवाहिमातुवसज्जु	२	७	३३	एवेदेपापुरुतयोनमत	२	१	१४	एवदेव जुभायते	६	८	१८
एवामहान्वहृद्वि	८	७	२	एवाहिमातुवसवर्धयति	८	७	२०	एवेदेपापुरुतयोनमत	५	३	२२	एवदेवोअमर्य	६	७	२०
एवामहोअसुर	८	५	१५	एवाह्यसिवीर्यु	८	६	२०	एवेदेपापुरुतयोनमत	७	८	२७	एवदेवोरथर्यति	६	७	२०

[illegible]

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
पुपाव्यनीमवति	४	४ २३	पुष्पुप्रवाणिते	४	५ २४	ओलेनरुद्रंमूलयंगु.	१ ७ १८
पुपाश्रानतन्वाविदा	४	४ २३	पुच्छोमत्वायुधाजातवेद	४	१ १०	ओमानमापोमानुपी	४ ८ ९
पुपास्यानव्युमायुर्दधाना	५	५ २७	पुतात्रयपुस्तुथपं.	४	३ ११	ओमासश्रपणीष्टतो	१ १ ६
पुपास्यानोदुहिता	५	१ ७	पुतुपुपरयिभगं	६	२ ४०	ओवप्राअमर्त्या	८ ७ १४
पुपास्यायुजानापरकात्	५	५ २२	पुमिरमेदुवोगिरः	१	१ २६	ओश्रुष्टिर्विद्व्या	५ ४ ७
पुपास्यावोमरुतोनुमत्रो	१	६ १४	पुमिरमेसरययाह्वाङ्	२	८ २७	ओपधयुःसर्वदन्तो	८ ५ ११
पुपोऽपाअपूर्व्या	१	३ ३३	पुमिर्देदुवृण्णायैस्यानि	८	१ १७	ओपधी प्रतिमोदृच	८ ५ ८
पुहगमृण्यु.सोमं	८	६ २७	पुपुचाकन्धिधपुरुहूत	८	५	ओपधीरितिमातर	८ ५ ८
पुहदेवामयोमुवा	१	६ २७	पुपुचेतुदृपण्वती	६	५ ४	ओपमिस्पृथिवीमह	८ ५ ८
पुहवापुपितप्सव.	५	८ ७	पुपुथावापृथिवीयात	८	४ २७	ओपुष्टिर्विराधसो	५ ४ २७
पुहहरिब्रह्मयुजा	५	७ २२	पुपुथावीरवृधशं.	४	४ २२	ओपुप्रयाह्मिवाजंभि.	५ ४ २२
पुहिमोहिषयोदिवि	६	४ ४४	ओकिवासासुितेसचां	४	८ २५	ओपुष्ट्याःप्रयज्यून	५ ८ २५
पुहिमनुदंबुयु.	८	१ १०	ओचित्सलोयसख्यावद्	७	६ ६	ओपुस्तसार कारवैश्रणोत३	५ ८ २५
पुहिवविमुचोन	४	८ २१	ओजुस्रदस्यातिस्विये	५	८ ९	ओपूणोअसेयणुहित्व	२ २ ४
पुहिस्तोमोअभिस्वर	१	१ १९	ओजिष्टेमम्यतो	३	१ २१	ओषाविवमध्वासेवर्दता	२ ८ ५
पुर्बमृहहरोतानिपीवा	१	५ २४	ओत्समद्भुभारथं	६	२ ५	ओसुष्टुतद्दयाहि	२ ४ २०

अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
१ २८	ओचुत्सारात्रीपरितकम्या	१ २८
७ ९	ओर्वभृगुवच्छवि	७ ९
५ १४	ककतोनककुतो	५ १४
४ ४५	कंतेदानाअसक्षत	४ ४५
५ १४	कनश्चित्रमिपण्यसिचिक्ति	५ १४
४ १४	कंयथु कर्हगच्छथ	४ १४
७ २३	क कुमारमजनयत्	७ २३
४ २८	कस्विदुक्षोनिष्टितो	४ २८
३ १२	कडुमदुसाभिर्मम	३ १२
१ ७	कडुमवोतिण्यमाविकित	१ ७
३ ६	कर्हवेदसुतेसचां	३ ६
५ २३	कर्हव्यक्तानर समीळा.	५ २३
६ ८	कर्हपेतुज्युतकोवि.	६ ८
७ ३२	कर्हस्ववल्क.पृणात्कोयजाते	७ ३२
१ १५	कडुनुतेमहिमनं समस्या	१ १५
७ १९	कडुश्रवल्कतुमोयुक्षियानां	७ १९

म-

एपदेवे	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग
कृकद्वैष्टुपभोयुक्कासीत्	५	२०	कथाननुवांविमनाउपस्तव	६	९	कृदाभुव्रयक्षयाणि	४	७	कृदुक्तस्यधर्षि	४	७	७	७	७	७	७
कृकुहविस्वाकवे	६	४४	कथामहामवृक्षस्यहोतु	३	६	कृदामर्तमराधसे	१	६	कद्वोअथमहाना	१	६	६	६	६	६	६
कृकुह सोम्योरसं.	७	१४	कथामहेषुधिरायपणो	३	४	कृदावसोस्तोव्रह्मयत	८	२५	कनिकद्वजुप्रप्रजुवाणः	८	२५	२	२	२	२	२
कण्वाइवभृगव सूर्याइव	५	७	कथामहेरुदियाव्रवाम	४	२	कृदावातोअयोविधत्	५	८	कनिकद्वजुगोभिरज्य	५	८	३	३	३	३	३
कण्वाइवदकृत	५	८	कथाराधामसखाय	१	३	कृदासुतु पितरंजातइच्छा	८	५	कनिकद्वजुपन्थामृतस्य	८	५	७	७	७	७	७
कण्वासइदतेमति	५	८	कथाशार्धायमस्तमृताय	३	४	कद्विथानु. पात्रदेवयुतां	१	८	कनिकद्वजुरिरासुज्यमान.	१	८	४	४	४	४	४
कण्वेभिर्धृष्णावाधुपत्	६	३	कथाशृणोतिह्वमानमि	३	६	कद्वुयुम्रमिद्वत्वावतोनुन्	७	७	कनीनकेवविद्वधे	७	३	३	३	३	३	३
कतरापूर्वाकतरापरायोः	२	५	कथासबाध शशमानो	३	६	कद्वुमियायुधाक्षेमनामहे	४	३	कनव्योअतसीनां	३	५	५	५	५	५	५
कत्यमय. कतिसूर्यासः	८	४	कथाहस्तद्वरणायत्वमभे	३	४	कद्वुमेषाविपरंयीणा	२	४	कन्याइववहुतुमेतवाड	२	४	२	२	२	२	२
कथाकद्वस्याउपसोव्युष्टो	३	६	कथोनुतेपरिचराणि	४	१	कद्वुस्तुवतंक्ततयतेव	५	७	कन्याइववारवायती	६	३	३	३	३	३	३
कथाकविस्वविरवान्	८	२	कद्वतिपतसूर्यः	६	६	कद्वन्व १ स्याकृत	६	३	कन्यैवतन्वा ३ शशदाना	२	१	१	१	१	१	१
कथातेपुतद्वहमाचिकेते	७	७	कदाक्षत्राश्रियनरमा	१	२	कद्वमहीरधदाअस्य	६	३	कर्पुन्नरः कपुयमुदधातन	८	५	५	५	५	५	५
कथातेअभेशुचयतआयो. २	२	१६	कदागच्छाथमरुत.	५	८	कद्वनूनं कधप्रिय	१	३	कमुग्विदस्यसेनया	६	५	५	५	५	५	५
कथादादेशमनमसासुदान्	४	२	कदाचनस्तरीसि	६	४	कद्वनूनं कधप्रियः	५	८	कमेतंत्वंयुवतेकुमारं	३	३	३	३	३	३	३
कथादादेशमभये	१	५	कदाचनमयुच्छस्यु	६	४	कद्विण्ण्यासुवृधसानोअभे ३	३	४	कयातच्छृण्वेशय्याशचिष्ट	३	६	६	६	६	६	६
कथादेवानांनक्तमस्ययाम ८	२	६	कदातद्वद्वसिर्वण	६	१	कद्वुदयप्रचेतसे	१	३	कयतिअभेअक्षिरः	६	६	६	६	६	६	६

[illegible]

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
किमुयंत्वांषुपाकपिः	८	४	१	कीरिश्चिद्विस्वामवसेजुहा	५	३	४	कुविदुपुण्यतीश्य	६	८	९
किमस्यमदेकिम्वस्यपीता	४	६	२३	कुतस्त्वमिदमाहिनः	२	३	२४	कुविशोअग्निरुचयस्य	२	२	१२
किमागवासवरुण्येष्ट	५	६	८	कुत्राचिथस्यसद्यतौ	३	८	२४	कुविन्मगोपकरसेजनस्य	३	३	७
किमादमत्रसुख्यसखिभ्यः	३	६	१०	कुत्साएतेहयश्वायश्रुपं	५	३	९	कुपुमकसदन्नवीत्	२	५	१६
किमाहुतासिद्वृत्रहन्	३	६	२०	कुत्सायुजुष्णमनुपतिवर्ही	३	५	१९	कुहुत्याकुहुनुश्रुता	४	४	१३
किमिच्छन्तीसुरसामेदमा	८	६	५	कुमारश्चित्पितर	२	७	१८	कुहुयांतासुष्टुतिकृव्यास्य	१	८	१५
किमित्तंविष्णोपरिचक्ष्य	५	६	२५	कुमारमातायुवतिःससुन्ध	३	८	१४	कुहंश्रुतदंष्ट्रःकसिञ्चथ	७	७	६
किमिदंवापुराणवत्	६	३	२०	कुरुश्रवणमावृणि	७	८	१	कुहंस्थःकुहजगमतु	६	५	१८
किमुश्रेष्ठ कियविष्टोन	२	३	४	कुर्मस्त्वायुरजरयदक्षे	८	१	११	कुहंस्विहोपाकुहवस्तोरभि	७	८	१८
किमुग्विदसेनिविदो	३	५	२६	कुविच्छकल्कुविकरत्	६	६	१४	कुचिज्जायतेसनयासुनव्यः	७	२	३२
किमुनुवःकृण्वामा	२	७	११	कुवित्सदैवीःसनयोनवो	३	८	१	कुष्टोदेवावधिना	४	४	१३
किमेतावाचाकृण्वतातवाहं	८	५	१	कुवित्सस्यमहिन्नज	४	७	२५	कुण्वज्वाजुःप्रसितिन	३	४	२३
कियतीयोपामर्थतोवधु	७	७	१७	कुविरसुनोराविष्टये	६	५	२६	कुणोतधुमंवृणं	३	३	३३
कियस्त्विद्विदोअध्येति	३	५	२३	कुविदुन्नममसायेवृधासः	५	६	१३	कुणोत्यस्त्विचरिवोयद्व्या	३	६	१२
किद्यात्यायस्समयाभवति	१	८	२	कुविदुहप्रतियथाचिद्वस्य	८	२	६	कुण्वतोवविवागवै	७	१	२४
कीदृष्टिदं सरमेकादशी	८	६	५	कुविदुहयवमतोयवचित्	८	७	१९	कुतानीदसुक्त्वा	७	१	४

अष्ट.	अ.	वर्ग.	मंत्र.	अष्ट.	अ.	वर्ग.
५	४	९	कुतोचिद्वृत्रमस्तोरणत	५	४	९
३	५	१०	कुतचिद्विष्मसनेमिद्वेप	३	५	१०
७	८	२४	कुतनश्चत्रीविचितीतिदेव	७	८	२४
५	६	६	कुतनोयज्ञविद्येपूचारं	५	६	६
३	१	१	कुधीनोअहयोदेव	३	१	१
८	४	२७	कुधीनोअहयोदेव	८	४	२७
५	२	२१	कुधीरव्यर्जमानाय	५	२	२१
८	६	२३	कुपन्निरालुअशितकृणो	८	६	२३
३	५	७	कुणत्तएमरुशत.पुरोभाः	३	५	७
२	३	२३	कुणनियानुहरय सुपर्णा	२	३	२३
२	२	५	कुण्यमुतौविविजेअस्य	२	२	५
७	५	३१	कुणायदेनिमिभिवर्पसा	७	५	३१
७	७	३	कुण्य श्वेतोरुपोयासोअस्य	७	७	३
८	१	२६	कुण्ययज्ञोव्वरुणीपुसीदं	८	१	२६
६	३	३०	कुण्यारजीसिपस्तुतः	६	३	३०
७	१	३७	कुतुं कुण्वन्दिवस्पशं	७	१	३७

मन्त्र	अष्ट	अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ. वर्ग
कोऽनुकृष्टवक्रोक्तवै	१	११	कोऽददशप्रथमजायमान	२	३	कोऽवेदनमंषां	३	१४	क्रत्व समहृद्दीर्घा	५	६
केतुयुञ्जानाविदयस्य	२	२०	कोऽवेव्यतमश्चत्	१	३	कोऽवोतमंरुतः	३	२१	क्रव्यादमंषिप्रहिणोमिदूर	७	८
केतेअश्रेपिवेधनास	३	१	कोऽदेवानामवोअष्टावृणीते	३	६	कोऽवोमहतिमहतामुद	३	१३	क्राणारुद्रामरुतोविश्वकृष्ट	८	९
केतेनरद्वयेतद्वये	८	१	कोऽनानामवचसासोऽस्याये	३	६	कोऽवोवर्षप्रभानरो	१	१३	क्राणारुद्रेमिर्वसुभिपुरो	१	२
केतेनशर्मन्सचतेसुपाम	६	३	कोऽनुमर्याअभिथित	६	३	क्रतुप्रावर्जरीताशर्धताम	८	५	क्राणाशिमुर्महीना	७	८
केमेमर्यकवियवतगोभि	३	१४	कोऽनुवोभिप्रावरुणावृत्ता	४	२	क्रतुयतिक्रतवोद्वसुधीत	८	२	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
केऽन्य१भिकेनीविप	८	७	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
केऽन्य२श्रेष्ठतमा	३	२६	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुमिर्दिद्विर्पा	१	६	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुद्वार्वेदकृद्वहप्रवोचत्	३	२४	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुद्वार्वेदकृद्वहप्रवोचत्	८	७	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुयनयैदेवकांम	३	२४	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुयद्वहकैयुरिगा	१	६	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुयवीर सधुमादमा	३	२४	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुयवेदयमस्याह	७	६	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०
कोऽनुयशुष्मूतविपी	३	२४	कोऽनुवोभिप्रास्तुत	४	३	क्रतुयंतिक्षितयुयोगंउग्र	३	५	क्रौत्तोरस्मभायुव	९	१०

क. तैरुदसृलयाकुं

क. १. सवीर. कोअपश्यादि

क. २. सवृपभोयुवां

क. ३. सवोमस्त स्यासी

क. ४. सिद्धकतुमास्वक्षिनां

क. ५. सिद्धसर्जसोमह

क. ६. सिद्धसाकतमापुराणी

क. ७. कययुकेदसि

क. ८. अवंजिन्वतसुतजिन्वत

क. ९. अत्रायत्वमवसिनत्वमावि

क. १०. अत्रायत्वमवसिन्त्वमाहीया

क. ११. क्षपउस्रधदीदिहि

क. १२. क्षपोराज्जुतमना

क. १३. क्षियंतत्वमक्षियंतं

क. १४. क्षेतिसैमैभि. साधुभि.

क. १५. क्षेत्रमिबुविमसुत्तेजनेन

अष्ट अ. वर्ग

२ ७ १७

३ १ २६

४ ४ ४५

५ २५

६ २०

७ ४

८ २

९ ११

१० ३

११ ३

१२ २

१३ २

१४ ५

१५ ५

१६ ५

१७ ६

१८ ३०

मंत्र

क्षेत्रस्यपतिनावयं

क्षेत्रस्यपतेमधुमत

क्षेत्रादपश्यसनुत

क्षेत्रस्यचग्रयुजक्षत्वमीक्षि

क्षेत्रमोनसाधु कतुर्नमुद्र

क्षेत्रस्यखेनस

गंतानोयुज्यक्षिया

गताराहिस्योवसे

गतेयतिसर्वनाहारिभ्यां

गृधर्वद्वथापदमस्यरक्षति

गुप्तीरौडधौरिव

गुप्तीरेणनउरुणामन्त्रिप्रेप.५

गच्छतद्वाधुयोगह

गुणानात्वागणपति

गमद्गजवाजयन्त्रिदमर्त्य. ५

गमद्गजसेवसूयाहिसिप ७

अष्ट अ. वर्ग

३ ८ ९

४ ८ ९

५ ८ १४

६ ३ १९

७ ५ ११

८ ६ १४

९ ४ ३४

१० १ ३२

११ ६ १५

१२ ३ ८

१३ ९

१४ ६ १८

१५ ८

१६ २९

१७ ३ १९

१८ ८ २६

मंत्र

गुरुरकानोअमीविहा

गर्भेनुनौजनितादपतीक

गर्भेनुसंनन्वेपामवेद

गर्भेमातु पितृणिता

गर्भेयोपामदुर्वत्समास

गर्भेयुज्यदेवयु

गर्भेयोअपागर्भ

गर्भेधेहिसिनीवालि

गर्भमिवश्रियसेथगसुज

गर्भशिरसुथिनमिदशुक

गव्यतद्दसख्यायवित्रा

गन्धोपुणोयथापुरा

गाथपतिमेधपति

गाथश्रवसुसर्पति

गामुद्रपुआहृत्यति

गायत्रेणप्रतिमिमीतेअर्क

अष्ट अ. वर्ग

१ ६ २१

२ ६ ६

३ ६ १६

४ ५ २७

५ १ १४

६ १ ३

७ ५ १४

८ ८ ४२

९ ३ २४

१० २ ९

११ ५ २४

१२ ४ २

१३ ३ २६

१४ ७ २४

१५ ८ ४

मंत्र.

गायत्सार्मनमन्य

गार्यतित्वागायत्रिणं

गार्हपत्येनसंस्त

गार्हपत्यमयुधिरिवा

गार्हपत्यतावतं

गार्हपत्यसमन्यवः

गार्हपत्यसुपयतिवध्रय.६

गार्हपत्यगार्हपत्ये

गार्हपत्यवयुताअर्थोअक्षवृ७

गिर्यश्चिजिहिते

गिर्यश्चासैगिवाह

गिर्यस्वद्विजोससा

गिर्यातद्दहसुत

गिर्यायुतायुनज्जरीति

गिर्यायुदीसवधव.

गिर्यावज्जोनसंभृतः

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
गिरिनय स्वतवाङ्गव	३	६	३	गष्टि संसुवस्थविरतवा	३	५	२६	गोमन्त्र सोमवीरवत्	६	८	३२	आवाणेवतादिदर्शजरेथे	२	८	४
सिरिगञ्जाज्रेजमानाधार	७	८	२७	गृहमेधासुआगत	५	४	३०	गोमौजुमेविमौअश्वीयुज	३	४	१६	आवाणोअपदुच्छुता	८	८	३३
निरौणेषथामध्वरजुपेथा	६	३	१४	गृहोयाम्यरकृत	८	६	२७	गोमार्तरोयच्छुभयते	१	६	९	आवाणोनसूरय सिधुमा	८	३	१३
सिर्वण पादिन सुत	३	३	२	गोक्षितवाहूअमितक्रतु	१	७	१५	गोमायुरदादुजमायुरदात्	५	७	४	आवावदुजपरक्षसिसेध	७	८	९
गीणंसुधनतमसापगूणह	८	४	१०	गोखिन्न सोमोपयजिद्विर	७	३	३	गोमायुरेकोअजमायुरेक	५	७	४	आवाणेतुबोअभिष्टुत	७	२	१६
गीभिर्विप्र प्रमतिमिच्छ	५	६	१५	गोत्रभिर्दगोविद्वजवाहु	८	५	२२	गोवित्स्ववस्ववसुविद्धिरण्य	७	३	१९	आवाणोब्रह्मायुयुजान	४	२	१२
गुह्यभिरोनिरहितधगक्षी	८	३	१४	गोभिर्मिमिक्षुदधिरेसुपा	३	३	१४	गोपाईदोनपावसि	६	७	१९	श्रीवाभ्यस्तवृणिर्हभ्य	८	८	२१
गुह्यसतीरुत्तमना	५	८	१०	गोमिर्यदीमन्येअस्यत्	५	७	१८	गोयुप्रज्ञास्तिवनोपुषिये	१	५	१४	घनेवविण्विजह्य	१	३	११
गुह्यद्वितगुणगूणह	२	६	३	गोमिर्वाणोअज्यतेसोमरी	६	१	३७	गौरमीमेदुर्जुवरसमिपन्ते	२	३	१९	धुर्मासमताद्विदुत्व्यापनु	८	६	१६
गुह्यलगुह्यतम	१	६	१२	गोमिष्टरेमामतिदुरेवा	७	८	२३	गौतीर्मिमायसखिलाभि	२	३	२२	धुर्मेवमथुजठरेसनेरु	८	६	२
गुह्यगुह्यमहनायात्य	२	१	४	गोमिष्टरेमामतिदुरेवा	७	८	२५	गोधैयतिमसता	६	६	२८	धुतपृष्ठामनोयुज	१	१	२६
गुणानाजमदग्निना	३	४	११	गोमिष्टरेमामतिदुरेवा	७	८	२७	ग्राश्वयज्ररश्वावुधत्	५	१	११	धुतप्रतीकवक्रतस्य	२	२	१२
गुणानोअगिरोभि	१	५	१	गोमुदश्वावद्वयवत्सुवीर	४	३	२२	अर्थिनविष्यअथितपुनान	७	४	१४	धुतनपूतनुरेपा	३	५	१०
गुणतद्विदलेयव	६	४	४१	गोमदुपुनसिता	२	८	८	आवाण सवितानुव	८	८	३३	धुतपवस्वधारया	७	१	६
गुमीततेमनइद्विहर्षा	५	३	८	गोमुद्धिरण्यवद्वसु	५	६	१८	आवाण सोमनोहिक	४	८	१३	धुतमिमिक्षेवृत्तमस्य	२	५	२३
गुम्यासितेसोभगुत्वाय	८	३	२७	गोमन्त्रइदोअक्षवत्	७	५	८	आवाणउपरैष्वा	८	८	२३	धुतमुप.सौम्याजीर	६	४	३

मंत्रः	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग	मंत्र	अष्ट अ वर्ग
धृतमेवध्वस्यवर्धन	८	२ १९	चक्रुवांसकभक्तदपृच्छत	३	४	चतुश्चिह्नज्ञानेदिव	२ ३ १०
धृतवतीसुवनानामग्निश्चि	५	३ १४	चक्रनवचतुरहृतवेपते	४	७	चतु सहस्रगव्यस्यपुष्ट	४ १ २८
धृतवतुमुपमासि	२	२ १०	चक्रयदस्यास्त्वानिपते	८	४	चत्तोदुतश्चासुत	८ १३
धृतवत पावकते	३	१ २१	चक्राणांस परीणहृथिव्या	३	२	चत्वारिदिविअतिसेमयंत	४ ३ १
धृतहिववदीदिव	१	१ २२	चक्रायेहिसुध्यापूइनामभद्र	७	२६	चत्वारिदिवसुयाणिनाम	४ ३ १
धृतनद्यावागुथिवीविह्व	५	३ ३१	चक्रिदिव पवतुक्कव्योरस	७	३	चत्वारिवाक्पारिमितापदा	८ १ १५
धृतनगसि समज्यते	८	१ १४	चक्रियैविश्वसुवना	३	१	चत्वारिदिवत्रयोधस्य	८ १०
धृतपावकवनिन	१	६ २४	चक्रुर्नोदिव सविता	८	१६	चत्वारिदिवहृतयस्य	३ १ ११
धृतपु श्येनायकृवने	८	२ ८	चक्रुर्नोधिह्विचक्षुमे	८	१६	चत्वारिदिवमशरस्य	३ १ ११
धृतोवत्रमत्तत्रोदसी	१	३ ९	चक्षुश्चश्चत्रचमनश्च	४	७	चत्वारिदिवमशरस्य	३ १ ११
धृतप्राण्यपुद्विप	६	३ ३४	चक्षुष पितामनसाहिचौर	८	३	चत्वारिदिवमशरस्य	३ १ ११
चद्रममिचिचद्रथहर्षित	२	८ २०	चतस्रहृदुह सचते	७	३	चत्वारिदिवमशरस्य	३ १ ११
चद्रममिचिचद्रथहर्षित	१	७ ७	चतुर्दशान्येर्महिमानात्	१	३	चत्वारिदिवमशरस्य	३ १ ११
चद्रममनसोजात	८	४ १९	चतुर्दशान्येर्महिमानोअ	८	६	चत्वारिदिवमशरस्य	३ १ ११
चक्ररुताकुणवज्रनमन्या	५	३ १०	चतुर्दशान्येर्महिमानोअ	८	६	चत्वारिदिवमशरस्य	३ १ ११

मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग
विद्योवोस्तुयामः	२ ४ १२	जुज्जनोनुशतकतु.	६ ५ २९	जुनश्चिद्वोमस्तस्त्वेष्येण	५ ४ २८	जानतोरूपमकृपतुविप्रोः	८ ७ ७		
चोदयतसुनुता पिबन्तु	७ ८ १५	जुज्जनोहरिरोद्युर्पा	३ ३ ८	जनेनोर्वेवज्जुह्य.	१ ५ १३	जानत्यह्म.प्रथमस्य	२ १ ५		
चोदयित्रीसुनुतानां	१ १ १	जुज्जियुइत्यारोरीथ्यायहि	८ ५ ३	जनोयोभिन्नावरुणा	२ १ २	जामि सिधुनांआतेव	१ ५ ९		
छुदस्तुमं कुमच्यव	४ ३ १०	जन्तवस्त्रिन्महिचिन्मन्य	४ ६ ८	जन्मन्जन्मन्निहितोजात	२ ८ १६	जाम्यतीतपेधु.	६ ५ १४		
छुद्विर्द्वीतसर्दान्य	६ ६ ७	जनयश्चोचुनादिव	६ ८ ३२	जयतचप्रस्तुतचप्रचावत	६ ३ १५	जायातप्येतोकिमुवस्यहीना	७ ८ ४		
जमयतममितो	२ ४ २७	जनस्यगोपाभजनिष्टुजापु	४ १ ३	जयतामिवतन्युतु	१ ३ १०	जायेदसमघवन्स्तेडुयोनि	३ ३ १९		
जगतासिधुद्विच्यस्तमाय	२ ३ १८	जनायचिद्यईवतडलोक	५ १ १७	जयेमकारेपुरुहूतकारिणः	६ २ ३	जायेवपुल्यावधिवेमंहसे	७ ३ ७		
जगुममातेदक्षिणमिन्द्र	८ १ ३	जनासोजिद्विदधिरसह	१ ३ ८	जर्तरीमिरोपयीभिः	७ ५ २५	जिघर्म्यभिहुविपाधुतेन	२ ६ २		
जवनोचोदपुपां	४ ३ २६	जनासोवृकधर्हिप	५ ८ ४	जर्भराण समिध्यसे	८ ६ २४	जिह्वानुनुद्रेवततया	१ ६ १०		
जघन्वाइद्रमित्रैरुच	२ ४ १७	जनिताद्विवाजनितापृथि	६ ३ १८	जरोजोयतद्विविद्धि	१ ३ २३	जिह्मस्येडु चरितवेम्वोनी	१ ८ १		
जघन्वाडुहरमि संयुत	१ ४ १३	जनिताश्चानाजनितागवी	६ ३ १८	जागर्पित्वसुवने	४ ३ २५	जिह्वाभिरहुननम	६ ३ ३०		
जघाननवृत्रस्त्रधितिवर्नच	८ ४ १५	जनिष्ठयोपापतयत्कनीन	७ ८ १९	जातवेदसेसुनवामसोम	१ ७ ७	जीमूतस्येवमवतिप्रतीकं	५ १ १९		
जतिर्वृत्रमसिधियं	७ १ २१	जनिष्टाहिजेन्योजम्रेभङ्गा	३ ८ १२	जातोअमीरोचते	३ १ ३३	जीवात्रोजमिधेतन	६ ४ ५१		
जज्ञानससमातरं	७ ५ ४	जनिष्ठाउग्र सहसैतुराय	८ ३ ३	जातोजायतेसुदिनत्वे	३ ३ १	जीवरुदतिविमयतेअध्व	७ ८ १६		
जज्ञान सोमसहसैपपाथ	५ ६ २३	जनिष्ठादेववीतये	४ ५ २०	जातोयदम्रेसुवनाद्व्यख्य	५ १ १६	जुजुरूपोनासयोतवत्रि	१ ८ ९		
जज्ञानपवव्यवाधतस्त्व.८	४ १६	जरीयतोन्वयग्रव.	५ ६ २०	जानतिवृणोअकूपस्य	३ १ १	जुपहुड्यामानुपस्य	७ ८ २		

मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट अ. वर्ग						
जुपस्वस्व सुमिधममेधुय	५	२	१	जेतातृतिरिद्रं पृत्सुशरं	२	४	२१	तगावोअधुनयत	६	८	१६	तत्वाधृततजवीमहे	४	१	१९
जुपस्वस्वप्रथस्तम	१	५	२३	जोयुधदीमसुयसुचध्वं	२	४	४	तगीभिर्वीचर्मिख्य	६	८	२५	तत्त्वजनतमतरं.	६	७	१२
जुपस्वामिहंकासुजोपा	३	८	१८	जोपासवितुयस्ते	८	५	८	तंगुतयोनेमन्निपु परीणस	१	४	२१	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुपणोअधोअतिहयमेवच	८	५	५	जोप्यसेसुमिधजोप्याहुतिर	२	६	२	तगुध्यास्वर्णर	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुपेययुज्यमिष्टय	६	३	३७	जोहृजोअग्नि प्रथम	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुपेययुज्यवोधतहवस्यसे	६	३	२०	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुपेययुज्यवोधत	२	७	२५	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टहृदयमस्तर	६	८	२	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टीनरोब्रह्मणाव पितृणा	५	३	२२	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टोदमनाअतिशिरुरोणे	३	८	१९	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टोमदीयदेवतातद्दो	७	४	१४	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टोहिदुतोअसि	१	३	२८	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टीनहृदसुपयासुगानि	७	४	१४	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टुराणाचिदाक्षिना	६	२	२६	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१
जुष्टुरेविचितयंत.	४	१	११	जुयामागसहसानोवरेण	२	६	२	तगोसिधृणरस	६	१	२९	तत्वाधृततकृष्णमहेयशस्तम	५	२	२१

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
तत्त्वावयवहवामहे	६ ३ ३३	तत्प्रत्ययपूर्वार्थविश्वेभ्यो	४ २ २३	तत्त्वश्चार्थवयवस्य	१ १ ५	तत्सुप्रममिमवसे	३ १ २६
तत्त्वावाजोयुवाजिन	१ १ ८	तत्तमर्जयतसुकृत्	६ ६ ६	तत्त्वार्यवयवमथाहुवेम	२ ४ ४	तत्सखाय पुरोहव	७ ४ २४
तत्त्वाविश्ववचोविद	७ १ ४८	तत्तमर्तोअमत्य	८ ६ २५	तत्त्वार्यवयवमथाहुवेम	३ ७ ७	तत्सुधीर्चांगतयोवृण्यगिनि	४ ७ ८
तत्त्वाविश्वविपुन्यवो	३ १ ८	तत्तमर्जुजानमहिपनसानो	७ ४ ५	तत्त्वधृतमार्तुआर्जहृष्टि	५ १ १	तत्सुवाधोयतक्षुच	३ १ २९
तत्त्वोशोचिष्टदीदिवः	४ १ १६	तत्तज्जुसाधमपिवात	२ १ १४	तत्त्वधामेधयाह्यन्	६ ८ ६	तत्सजानावधिजामय.	६ ८ १६
तत्त्वासुमिर्दिरगिर	४ ५ २३	तत्तुज्जुवाहंपिप्रौक्षन्	८ ४ १८	तत्त्वोद्वस्यतीपह	६ ६ ६	तत्सिधवोमत्सरमिद्रूपान	७ ७ २५
तत्त्वासहस्रचक्षसं	७ १ १७	तत्तुवदेवावधिन	३ ५ १६	तत्त्वोदीर्घायुशोचिप	४ ४ १	तत्सुप्रतीकंसुदृशस्वच	४ ५ १८
तत्त्वोसुतेष्वायुव	७ २ ६	तत्तुजाथामनसोयोजवी	२ ४ २९	तत्त्वोधि्यानव्यस्यादाविष्ट	४ ४ ६	तत्सुधुल्याविवासे	६ १ २०
तत्त्वोद्विष्यतीर्विश	५ ८ १४	तत्तु शर्धुमारुतसुञ्जु	२ ७ १३	तत्त्वोधि्यापरमयापुराजा	४ ७ ७	तत्सोतारोधनुसुत	७ १ २७
तत्त्वोद्विस्त्रिणोमधुमतम	७ ३ ५	तत्तु शर्धुर्थाना	४ ३ १२	तत्त्वोमहोमहाय्य	६ ६ ६	तत्स्मार्थमयवन्म्रावसात	१ ७ १४
तत्त्वोद्विन्वतिवेषस	६ ८ १६	तत्तु शर्धुर्थेजुभ	४ ३ २०	तत्त्वोवाजानापति	६ ६ २	तत्तिन्वतिमद्रुच्युत	७ १ १०
तद्दुरोपममीनर	७ ५ १	तत्तु सखायोमदाय	७ ५ ८	तत्त्वोविश्वपददेवमधस	८ ६ १८	तत्तिशर्धुतुङ्कते	४ १ ६
तद्देवायुभ्रेजस	२ ५ २०	तत्तु सखाय संयथासुतेषु	४ ६ १६	तत्तुश्रमासोअरुपासोअर्धा	५ ५ ६	तत्तिस्वर्जपृथमतमोजसे	६ ४ ३६
तत्पृच्छतासजगामासवै	२ २ १४	तत्तुवदं चतिनमस्तुशकै	४ ४ ७	तत्तुशर्धतीपुमानृषु	३ ३ ५	तत्तुधेयतक्षुच	६ २ १२
तत्पृच्छतीवज्रहस्तरयेष्टां	४ ६ १३	तत्तुवद्वद्वनसुकृत्	४ ४ ८	तत्तुविशीतासुवृक्तिभि	६ ६ ३	तत्तुहोतारमध्वरस्यप्रचेतस	५ २ २२
तत्पृच्छतोवरासु पराणि	४ ६ १२	तत्तुवर्धयतोमतिभि श्रिवा	८ २ १६	तत्तुविशीतास्वध्वर	६ ६ ३	तत्तुआदित्यागतासुर्वता	१ ७ २४

[illegible]

मन्त्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग
तन्नो विश्वा अस्व	६ ८ ३३	तमद्याधसेमहे	६ ४ ४५	तमाननवजनमन्यथाधि	४ ७	तमिद्रिप्रोअवस्व	६ १ १०
तन्नो हिबुध्नो अक्षिरुके	४ ८ ७	तमध्वरेष्वीकते	४ १ ६	तमानो अकममृतो यजुष्टे	५ ६ २१	तमिद्रोचैमा विदधेपु	१ ३ २१
तन्मरुतोर्मिद्वारवित्रपा	६ ६ ३८	तमप्सस्तु शवसवस्वरूपे	१ ७ ५	तमिद्रुमदुमागहि	३ ३ ५	तमिजरो विह्वयते समीके	३ ६ ११
तमिद्रस्ववरुणस्याग्निच	१ ८ ७	तममृक्षतवाजिन	६ ८ १६	तमिद्रजोहवीमिचवान	६ ६ ३८	तमिन्वेतु वसमनासमा	३ ५ २
तपसाये अनाधुष्या.	८ ८ १२	तमकैभिस्तसामभि	६ १ २१	तमिद्रदानमीमहे	६ ४ २	तमोहिन्वतिधीतयोदश	२ २ १३
तपतिशत्रुस्वर्गं भूमं	५ ३ २६	तमवतनसानुसिमरुपं	३ ५ १६	तमिद्रवाजयामसि	६ ६ २२	तमीहिन्वत्यसुव	६ ७ १७
तपुर्जमो वनवावर्चोदि	१ ४ २३	तमवतनसानुसिगृणीहि	६ ७ ११	तमिद्र्योवैरायंति	६ १ २०	तमीहोतारमानुपक्	३ ५ ६
तपुर्धुधातपसुरक्षसोये	८ ८ ४०	तमसैरायुवतयो	२ ७ २२	तमितृच्छतिनसिमोविपृ	२ २ १४	तमीकतप्रथमयज्ञसाधं	१ ७ ३
तपोष्वये अंतराग्नि	३ ८ ११	तमस्यद्यावापृथिवीसर्वेत	६ १४	तमित्सलित्वमीमहे	१ १ १५	तमीकित्वयआहुत	७ ३ ३३
तपोपविश्रुविततद्विस्व	७ ३ ८	तमस्यपृक्षमुपरा	२ १ १२	तमित्सुदुव्यमक्षिर	१ ५ २१	तमीकित्वयोअविपा	४ ८ २८
तमगिरस्वन्नमसासपुर्वन्	३ २ ८	तमस्यमर्जयामसि	७ ४ २५	तमिद्रोपातमपसियविधं	५ २ ३	तमीमण्वी.समयका	७ १७
तमआसीत्तमसागलहमये	८ ७ १७	तमस्यविष्णुर्महिमानमो	८ ६ १४	तमिद्रच्छतिजुह्वस्तमव	२ २ १४	तमीमिद्रुदमस्यराय	३ ६ १३
तमग्निमस्तेवसवोन्युष्वन्	५ १ २३	तमस्यराजावरुणस्तमश्चि	२ १ २३	तमिद्रभयथमवद्वृआप.	८ ३ १७	तमीमहेपुरुषुत	६ १ ११
तमग्नेपास्युततं पिपि	४ ५ १५	तमह्वेवाजसातये	६ १ ७	तमिद्रनेपुहितेपु	६ १ २०	तमीस्यत्यायव.	७ १ ३३
तमग्नेष्टुतापह	४ १ १५	तमदान्भरिजोर्धिया	६ ८ १६	तमिद्रुदं सुहवद्वैम	३ ५ २०	तमीशानंजरात	१ ६ १५
तमशुव.कैदिनी सहिरै	२ २ ६	तमार्गन्मसोभरयः	६ १ ३५	तमिद्रधृतुनो गिरै	७ १ २०	तमुक्षमाणमव्यये	७ ४ २५

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग.	मंत्र	अष्ट.	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
तमुक्षमाणरजसिस्त्र	२	५	२०	तमुष्टवामयगिरं	६	६	३१	तयोपवस्वधारया	७	१	२	तवत्यद्दोअंधस	७	१	८
तमुज्येष्टनमसाहुविभि	५	६	२१	तमुष्टुह्रियोअभिभूलोजा	२	६	४	तयोपवस्वधारया	७	१	६	तवत्यर्दिद्वियवृहव	६	१	१८
तमुत्वागोतमागिरा	१	५	२६	तमुष्टुह्रिय स्त्रिपु सुध	४	२	१९	तयोरिदमवच्छव	४	४	३२	तवत्येअभिअर्चय	३	८	२३
तमुत्वाद्वह्यद्वि	४	५	२३	तमुष्टुह्रीद्वयोहुसत्वा	२	४	१३	तयोरिदवसाव्य	१	१	३३	तवत्येअभिअर्चय	४	१	२
तमुत्वानुनमसुरप्रचेतस	६	६	१३	तमुस्तुपइद्वतगुणीपे	२	६	२७	तयोरिद्वतवत्य	१	२	६	तवत्येअभिहुरितोवृत्ता	३	५	५
तमुत्वानुनमीमहे	६	२	२०	तमुस्तुपइद्वयोविदोन	४	६	११	तुरगिर्विश्वदेशत	१	४	७	तवत्येपितोददत	२	५	६
तमुत्वापाथ्योवृषा	४	५	२३	तमुस्तोतार पृथ्ययथाविट	२	२	२६	तुरगिरित्सिपासति	५	३	२०	तवत्येपितोरसारजुसि	२	५	६
तमुत्वाय पुरासिथ	४	७	२३	तमुत्त्वामिद्वनरेजमानम	७	६	१	तुरगिजोवोना	६	३	४७	तवत्येसोमपवमाननिग्ये	७	४	२
तमुत्वावाजुसातस	१	५	२६	तमुत्तयोरणयुन्धूरसातौ	१	७	९	तुरत्समुदीधावति	७	१	१५	तवत्येसोमशक्तिभि	७	७	११
तमुत्वावाजिननर	६	८	७	तमुत्सोमपोमधुमात्तमंव	५	४	१४	तुरत्समुद्रंपवमानजुर्मिणा	७	५	१४	तवत्येनयनूतोपइद्र	२	६	२८
तमुत्वावृद्धतम	१	५	२७	तमुत्सुसंमनागिरा	६	३	२६	तुरोभिवाविद्वसु	६	४	४८	तवत्रिधातुपुथिवीउतद्यो	५	२	७
तमुत्वासत्यसोमपा	४	७	२२	तमुत्तिययाउपवाच.	२	५	१२	तवक्रवातवतइसनाभि	४	६	२	तवत्रिपोजनिमज्रेजतद्यो	३	५	२१
तमुद्युम पुर्वणीकहेत	४	५	१२	तमेवक्रपितमुन्नह्वाणमाहु	८	६	४	तवक्रवातवोतिभि	६	७	२३	तवद्रुमतोअर्चय	४	१	१८
तमुन्नतविपीमतसेपा	४	३	२३	तमोपधीर्दधेराभमूत्वि	८	४	२२	तवक्रवासनेयतवरातिभि	६	१	१४	तवद्योर्द्वयोत्य	६	१	१८
तमुन्न पूर्वपितरोनवग्वा	२	६	२३	तम्बमिप्रगायत	६	१	१७	तवच्यौत्तानिवाज्रहस्तता	५	२	२९	तवद्रुप्साउद्रुतः	७	५	१०
तमुष्टवामयद्वुमाजुजानं	६	६	३३	तम्बमिप्रार्धत	६	६	१५	तवत्यर्द्वद्वसुत्येपुवक्ष्य.	८	७	२६	तवद्रुप्सोनीलवान्वाशाजुः	६	१	३५

ऋक्सं.

॥ ३६ ॥

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	म
-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	---

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग			
ताअभिसंतुमस्तुत	६ ७	३२ ३२	तानःशक्तुपार्थिवस्य	४ ४	३ ३	ताभिरार्यातयुपणोपमेहव	२ २	७ ७	तावृत्रिणर्मदिन्तोभ्युमदे	८ ८	५ ५	६ ६
ताकस्युज्येष्टमिन्द्रिय	८ ७	१० १०	तानुआबोलहमथिना	२ ८	८ ८	तामुज्युविभिर्द्रव्य संगुद्रा	१ १	२ २	तावदुपोराधोभुसम्भ	५ ५	५ ५	२६ २६
ताकस्युनमसासह	१ १	६ ६	तानव्यसोर्जमाणस्युम	५ १	१ १	ताभूरिपाज्ञाववृत्तस्यसेध	५ ५	७ ७	तावृत्तियतजुयुपाविपर्वत	७ ७	८ ८	१७ १७
ताकस्यपशुशानुयुव	१ १	६ ६	तानस्तिपतनुपा	५ ५	८ ८	ताभ्यविश्वस्यराजसि	२ २	७ ७	तावल्गुद्वार्युह्नाकतमा	५ ५	१ १	१ १
ताकस्यवर्णमायु	२ २	५ ५	तानीदृष्टानिबहुलान्यास	५ ५	२३ २३	तामंदसानामनुपेदुरोण	७ ७	८ ८	तावर्गीभिर्विपुन्यव	५ ५	६ ६	१७ १७
ताकस्यसुदोहसः	६ ६	५ ५	तातृभ्यभासौश्रवसाक्षुनी	४ ५	१५ १५	तामभ्रैअसेष्टपमेरयस्व	५ ५	२ २	तावांशियोवसेवाजुयती	३ ३	७ ७	१६ १६
ताआचरतिसमनापुरस्ता	३ ३	८ ८	तानोअयवन्नस्पती	१ १	२६ २६	तामस्यरीतिपर्योर्विषम	४ ४	३ ३	तावानरास्त्वसेसुजुता	१ १	८ ८	१९ १९
ताङ्गुन्वेइवसमनासमानी	३ ३	८ ८	तानोरासज्रातिपाचोवसू	५ ५	३ ३	तामहातासदुस्पती	१ १	२ २	तावामित्रावरुणाधारायन्	८ ८	७ ७	२० २०
ताईवधतिमखस्यपौत्थी	२ २	२५ २५	तानोवाजवतीरिपः	४ ४	८ ८	तामाताविश्ववेदसा	६ ६	२ २	तावांवास्वन्दुर्मसि	२ २	२ २	२४ २४
ताकुर्मापतरासौ	२ २	४ ४	तान्यजत्राक्ततुवध	१ १	१ १	तामित्रयमन्नक्षत्रे	१ १	२ २	तावांविश्वस्यगोपा	६ ६	२ २	२१ २१
तागृणीहिनमस्यैभिःश्रुपैः	५ ५	१ १	तान्पूर्ययानिविवाहमहे	१ १	६ ६	तामेकधिनानसनीनां	५ ५	८ ८	तावोसम्यगदुष्टाणा	४ ४	४ ४	८ ८
ताघातामद्राउपसंपुरासु	३ ३	८ ८	तान्वेदस्वमस्तुत्ताउपस्तु	६ ६	१ १	तामेकधर्यानाहरीणां	६ ६	२ २	तावोसम्यगतवपरुह्वेम	२ २	५ ५	१ १
ताखिद्वयासदुमेवसुमेधा	५ ५	१ १	तान्वोमहोमस्तपुन	२ २	७ ७	तायज्ञमाशुचिभिश्चक्रमा	५ ५	१ १	तावोमयहवामहे	६ ६	२ २	२६ २६
तावत्तद्वद्रमद्रुतोमहानि	३ ३	६ ६	तावाहवासुचेतुना	४ ४	४ ४	तायुक्तेपुपभसता	१ १	२ २	तावोमियानोवसे	४ ४	४ ४	३ ३
तावत्तेस्यसासुविनृण्वि	३ ३	६ ६	ताभिरागच्छतरा	४ ४	८ ८	तायोधिष्टमभिगाईदनु	४ ४	८ ८	तावामेयेरथानां	४ ४	४ ४	४ ४
तातेयुगंतिवेधसः	३ ३	६ ६	ताभिरार्यातमतिभिः	५ ५	८ ८	तारोजानाशुचिद्यता	४ ४	५ ५	तावामेयेरथानां	४ ४	४ ४	३२ ३२

मंत्रः

ताविद्यैधैजुरैपूणञ्चै

ताविदाचिदहानां

ताविदुःशसमर्त्यै

ताविदोपाताउपसिञ्चुम

ताविद्वाराहवामहेवां

तावुधतावनुधून्

तासुआजायुतासुती

तासानुसीचैवसानाहिभू

तासुजिह्वासुपह्वये

तासुदेवायदाशुपै

ताहलहृत्तिर्यदुरधसुया

ताहिक्षत्रमविदुतं

ताहिक्षत्रंधारयेधैजनुधू

ताहिदेवानामसुराताव

ताहिमध्यंभराणां

ताहियधतुईकते

अष्ट. अ. वर्ग

५ १ १०

६ २ ७

५ ६ १८

६ २ ७

१ ८ २२

५ ४ ३२

८ ८

६ १५

१ १ २५

५ ८

१ १

५ ४

१ १०

५ ५

६ ३ २४

५ ६ १७

मंत्रः

ताहिश्रेष्ठवर्षसा

ताहिश्रेष्ठदेवतातातुजा

ताहुवेयोरिदं

तिग्मचिदेममहिर्वषां

तिग्मजभायुतरुणाय

तिग्ममायुधमस्तामनी

तिग्ममेकोविभतिहस्ता

तिग्मायुधतरुणानि पतां

तिग्मायुधौतिग्महेतीसुशै

तिर पुरुचिदधिनारजां

तिरश्चीनोवितेतोरुदिमरे

तिष्ठासुकमघवन्मापरागां

तिष्ठाहरीरयआयुज्यमानां

तिक्ष्णपक्षिरहतिवजं

तिष्ठादेवीवहतिद्वर्याः

तिष्ठादेष्टायनिर्जतीरपासते

अष्ट. अ. वर्ग

५ ४ ३

५ १ ११

५ ८ २७

५ ४ ३

६ १ ३३

६ ३ ३३

२ ३ ६

५ २०

१ १८

५ ४ ३

७ १७

३ १९

२ १७

८ ८

२ २२

६ १६

मंत्रः

तिष्ठोद्यावोनिहिताअतर

तिष्ठोद्यावं सविदुद्यां

तिष्ठोभूमीधारयन्

तिष्ठोमातृक्षीन्पितृन्

तिन्वयेदंशरदं

तिष्ठोयहस्यसमिधं पारं

तिष्ठोवाचईरयतिप्रवहिं

तिष्ठोवाचउर्दरिते

तिष्ठोवाच प्रवदुज्योतिरं

तीक्ष्णेनक्षेत्रक्षुपारक्षयन्

तीवस्याभिवयसोअस्पां

तीवा सोमासुआहि

तीवा सोमासुआहि

तीवान्चोपांक्षुण्वतेष्टपपां

तीवोवोमधुमाअयं

तंजेज्येयउत्तरे

अष्ट. अ. वर्ग

५ ६ ९

३ ३ ७

२ ३ १५

५ १७

८ १८

५ १७

८ २३

१ १७

७ १७

५ ४

८ १८

२ ८

६ १

१ २०

८ ९

मंत्रः

तुभ्योहभूत्युमधिनोदसेवे

तुचेतनयतसुनं

तुजेनस्तनेपर्वता. संतु

तुभ्यंगावोयुतंपयः

तुभ्यवेतेजनाइमे

तुभ्यताअगिरस्तम

तुभ्यदक्षकविक्रतो

तुभ्यपयोयपितरावनीतां

तुभ्यवह्नाणिगिरिदंद्रुभ्यं

तुभ्यभरतिक्षितयोयविष्टं

तुभ्यवाताअग्निप्रियं.

तुभ्यशुकास शुचयस्तु

तुभ्यश्चेतत्यग्निगो

तुभ्यसुतास्तुभ्यसुसोत्वां

तुभ्यसोमा. सुताइमे

तुभ्यस्तोकायुतश्चतां

अष्ट. अ. वर्ग

५ ६ ९

३ ३ ७

२ ३ १५

५ १७

८ १८

५ १७

८ २३

१ १७

७ १७

५ ४

८ १८

२ ८

६ १

१ २०

८ ९

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
सुम्यहिन्वानोवसिष्ठ	२ ७ २५	तुविष्णुतेसुष्ठुलसुमयधनुः	६ ५ ३०	तेआचरतीसमनेवयोपा	५ १ १९	तेवामदावृद्धदिदस्वधावः४	६ १		
सुम्यमयेपर्यवहन्	८ ३ २७	तुविष्णीवोवरोदर	६ १ २३	तेक्षोणीभिररुणेभि	२ ७ २१	तेदर्शवाःप्रथमा	२ ७ २१		
सुम्यमुपातःशुचय परा	२ १ २३	तुविष्णीवोवृषभोवाचुधानः३	८ १५	तेगव्यतामनेसाहप्रमुवध	३ ४ १४	तेन पूर्वासुपरसुहृदवः ७	३ २		
सुभ्यायमदिभि सुतः	६ १ १	तुविष्णुस्मृतविकृतो	६ ५	तेघाराजोअमृतस्यसु	८ ४ २६	तेनःसंतुयुज सदा	६ ३		
सुभ्यायसोम परिप्लो	२ १ २४	तुतुजानोमहिमते	६ १ ९	तेघेदसेस्वाध्या	६ १ ३२	तेन सहस्त्रिणरुयि	६ ८		
सुभ्येदममेमधुमत्तसवच	४ १ ३	तुवृक्षोजीयान्तवसुस्वर्वा	४ ६ ९	तेघेदसेस्वाध्या	६ ३ ३४	तेनआजोवृकोणां	४ ५३		
सुभ्येदमिद्रपरिपिच्यतेम	८ २ ५	तुणस्कुदस्यनुविश	२ ४ १२	तेचिक्षिपूर्वोर्मिसतिश्रा	५ ४ १५	तेनहृदःपृथिवीक्षामवर्ध	४ ८ १३		
सुभ्येदिमासवनाधुरविष्वा	५ ३ २८	तुतीयेधाना सवनेपुरुतः३	३ १८	तेजश्चिरेदिवक्त्रवासः	५ ५ १६	तेननासत्यागतं	५ ४ २		
सुभ्येदिद्रमरुत्तते	६ ३ २८	तुद्विलाजतुद्विलासोवदयः८	४ ३१	तेजानुस्वमोक्थ	६ ५ ३१	तेनसत्येनजगत्	५ २ ३		
सुभ्येदिद्रस्वओक्थे	३ ३ ३	तुपुयन्नातुपुणविवक्ष	३ ५ ७	तेजिष्ठयातपनी	२ ६ ३१	तेनसत्येनजगत्	५ २ ३		
सुभ्येदेतेवहृलाअदिद्रुग्धा	१ ४ १८	तुष्टमेतत्कुडुकेमेतत्	८ ३ २६	तेजिष्ठायस्योर्तिर्वेनराद्र	४ ५ १४	तेनक्षोत्रभ्युभार	४ ५ ३०		
सुभ्येदेतेमरुतःसुरोवा.	४ १ २७	तुष्टामयाप्रथमयातवेसुज	८ ३ ७	तेतेभमेत्तो.	४ ५ २६	तेनस्वाध्वेतवत	४ २ २७		
सुभ्येमासुवनाकवे	७ १ २९	तेअज्येष्टाअर्कमिष्टासतु	४ ३ २४	तेतेदेवनेत	४ ३ २४	तेननोयमदुये	७ १३		
सुरण्यतोमधुमतघृतक्षुतं	६ ४ १९	तेअद्वयोदशयत्रासाशव	४ ३ ३०	तेतेदेवयुदाशत स्याम	५ २ २३	तेनोअर्वातोहवनश्रुतोहव	८ २ ७		
सुरण्यवोगिरिसोमक्षत	५ ४ १९	तेअस्ययश्चर्मयस	१ ६ १७	तेवामदाअमदुतानिद्र	१ ४ १६	तेनोगृणानेमहिनीमहि	२ ३ ३		
सुरीयनामयुधिर्य	३ ५ ३६	तेअस्यसंतुकेतवोर्ध्वलवः ७	२ २३	तेवामदाहृदमादयतु	५ ३ ७	तेनोगोपअपाच्यः	३ २ ३५		

मंत्रः	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्रः	अष्ट.	अ.	वर्ग
तेनोनावसुहव्यत	६	२	२३	तेरुणेभिर्वरमापिर्वागैः	१	६	१४	तेस्यामदेवरुण	५	५	५	तोत्रावृत्रहणादुवे	५	५	११
तेनोभ्रमेणशर्मणा	६	१	२८	तेरुद्रासु सुर्मखाजमयो	४	४	३४	तेस्यामयेअग्रये	३	५	३	तोत्रासारथ्यावावा	६	३	२०
तेनोमित्रोवरुणोव्यमा	४	२	१३	तेवदन्प्रयमाग्रहकिल्बि	८	६	७	तेहियावापृथिवीभृरित	८	४	१	स्मवावहतोदुरो	५	५	१३
तेनोरत्नोनिधत्तु	१	२	२	तेवर्धतुस्वतवसो	१	६	१०	तेहियावापृथिवीमातरा	८	२	३	स्मनासुमत्सुहिनोतयज्ञ	५	३	२५
तेनोरारोचुमसोवाजवतः	४	८	१०	तेविदन्मनसादीर्घ्याना	८	८	३९	तेहियावापृथिवीविश्वना	२	३	७	स्यचिद्वैतगिरि	६	४	४४
तेनोर्द्ध.सरस्वतीसुजो	४	८	१०	तेविश्वादाद्युवेवसु	७	७	३७	तेहिन्विरेअरुणजेन्यवसु	६	७	१	स्यचिद्वैतगिरि	८	८	१
तेनोवसुनिकाग्या	४	३	२९	तेवोहृदेमनसेसतुयज्ञा	३	३	७	तेहिपुत्रासोअदिते.	६	१	१	स्यचिद्वैतगिरि	४	१	३३
तेनोवृद्धिवरपरि	७	२	५	तेपाहिचिन्मुक्थ्य	६	६	५१	तेहिप्रजायाभमरतविश्र	८	४	४	स्यचिद्वैतगिरि	८	८	१
तेप्रत्नासोव्युधियु	७	४	२४	तेपाहिमुहामहुतामनर्व	८	२	९	तेहियुक्तेपुयुक्षियासुजमा.	५	४	३	स्यचिद्वैतगिरि	४	१	३२
तेभ्योगोधाअयर्थकपदेत	७	७	२१	तेसुत्येनमनसादीर्घ्यानाः	८	२	१६	तेहियुक्तेपुयुक्षियासुजमा.	८	३	३१	स्यचिद्वैतगिरि	४	१	३२
तेभ्योवृद्धवर्धनाः	४	४	२२	तेसुत्येनमनसादीर्घ्यानाः	५	६	१२	तेहिवस्त्वोवसवानाः	१	६	१७	स्यचिद्वैतगिरि	४	१	३३
तेमभाह्वयंभयु.	४	३	११	तेसीपतुजोपुमायज	५	५	१०	तेहिश्रेष्ठवर्चसुस्तज	४	८	१२	स्यचिद्वैतगिरि	५	३	१४
तेमन्वत्प्रथमनामधेनो	३	४	१५	तेसुतासोमदितमा	७	२	१६	तेहिप्रमावनुपोनर	६	४	२३	स्यचिद्वैतगिरि	५	६	२९
तेमर्जुजतदृष्टासोअदि	३	४	१४	तेसुनव.स्वपस सुदंससः	२	३	२	तेहिसुतासुक्तमुद्राः	४	४	५	स्यचिद्वैतगिरि	५	८	३४
तेमायिनोमभिरिसुप्रचैतस.	२	३	२	तेसुमादोहृदीर्घस्यानिंस	८	४	३०	तेहिस्थिरसुशर्वसः	४	४	३	स्यचिद्वैतगिरि	५	१	१२
तेरायातेसुवीर्यः	३	५	८	तेस्पुद्रासोनोक्षण.	४	३	८	तेकोहेतितनयजुर्वरासु	३	७	१६	स्यचिद्वैतगिरि	४	७	१६

मंत्र	अष्ट	अ	वर्गः	मंत्र	अष्ट	अ	वर्गः	मंत्र	अष्ट	अ	वर्गः	मंत्र	अष्ट	अ	वर्गः
तमुव सत्रासाहं	६	६	१६	त्रिंशच्छतं धर्मिणश्च दसाकं	४	६	२४	त्रिपाद्वर्धयैतु रुरुपः	८	४	१७	त्रिर्वीर्यं तत्रिरनुब्रूते	१	३	४
तमुपुवाजिनेवज्जुत	८	८	३६	त्रिंशद्धामविराजति	८	८	४७	त्रिभि पवित्रपु	३	१	२७	त्रिपुत्रेण विष्टुता	१	४	१
तस्य चिन्म हृतो निर्मगस्य	४	१	३२	त्रि पृष्टिस्वामस्तो वावृ	६	६	३३	त्रिभिपृष्टेव सवित	७	२	१८	त्रिपुत्रेण विष्टुतारयेन	१	८	१८
त्यानुस्रियो बव	६	४	५१	त्रिः ससमयूयं सुस	२	५	१६	त्रिसुधानसुसरो दिमगृणीये	२	२	१५	त्रिपुत्रेण विष्टुतारयेन	६	६	८
त्यानुपतदक्षसः	६	६	२९	त्रि ससयद्ध्या नित्ये	१	५	१८	त्रिन रिक्षसविताम हित्व	३	८	४	त्रिविष्टिधा तु प्रतिमानमो	१	७	१५
त्यानुये विरोदसी	६	६	२९	त्रि ससविष्णुल्लङ्घका	२	७	१६	त्रिरेक्षिना सिंघुभि	१	३	५	त्रिश्चिद्वक्तो प्रचिकितुर्वसू	५	२	१४
त्रयहदस्य सोमाः	५	७	१८	त्रि सससत्तानुद्योमहीरुप	८	२	७	त्रिरसेसुसधेनवो दुदुहे	७	२	२३	त्रिपथस्थसुसधार्तु	४	८	३२
त्रय कृण्वति सुवनेपुरेत	५	३	२३	त्रि स्समाह्वं श्रययौवैतसे	८	५	१	त्रिरस्युता परमासतिसु	३	४	१३	त्रिपथस्थे वाहिपि	१	४	१
त्रय कैशिनं कलुथा	२	३	२२	त्रिकदुके भि पतति	७	६	१६	त्रिरोदिव सवितुर्वार्याणि	३	४	१	त्रिणिजाना परैभूपत्यस्य	१	७	१
त्रय कोशासश्चोतति	५	७	१८	त्रिकदुके पुचेतनं	५	३	१०	त्रिरादिव सविता सोपवी	३	४	१	त्रिणिजाना परैभूपत्यस्य	१	७	१
त्रय पुवयोमधुवाहनेरथे	१	३	२४	त्रिकदुके पुचेतन	४	६	१९	त्रिरुत्तमादुणशरोचनानि	३	६	२५	त्रिणिजितस्य धारया	२	३	१२
ज्ञातानो बोधिदक्षानया	३	५	२४	त्रिकदुके पुमहिपो	२	३	२८	त्रिदुव पृथिवी मेपुलतां	५	३	४	त्रिणिपुदा न्यक्षितो	५	८	२९
ज्ञातारो भिदमवितारमिदं	४	७	३२	त्रित कृपेवहितो देवान्	१	३	१०	त्रिनो अश्विनादिव्यानि	१	३	५	त्रिणिपुदा विचक्रमे	१	२	७
ज्ञातारो देवा बधिवो चत्ता	६	३	१३	त्रिधा हितपुणिभिर्गुह्यमा	३	८	४	त्रिनो अश्विना यजुता	१	३	५	त्रिणिपुदा विचक्रमे	१	२	७
ज्ञातारं त्वातनूना	२	६	३०	त्रिपचाया श्रीळतिवातपु	७	३	४	त्रिनो अश्विना यजुता	१	३	५	त्रिणिपुदा विचक्रमे	१	२	७
त्रायतामिह देवा	८	७	२५	त्रिपजुस्यो वृषभो विषकं	३	३	१	त्रिर्यो तुधान प्रसितं तपु	८	४	७	त्रिणिशुतात्रीसहस्रा	३	१	६

मंत्रः

ॐ णिगुतात्रीसुहृन्नाण्यु

ॐ णिगुतान्यवतां

ॐ णिसरासिपुक्षयः

ॐ ण्यायुपितवजातवेद

ॐ ण्येकउरुगायोविचक्रमे

ॐ यच्छतामहिपाणामस्रो

ॐ रोचुनादिव्याघारयंत

ॐ रोचुनावरुणग्रीरुत

ॐ पुधस्थसिधवस्त्रिक

ॐ यंकंयजामहे

ॐ ययुमामनुपेदेवताता

ॐ युदायदेवहितयथावः

ॐ त्वकरजमुतपूर्णयवधी

ॐ त्वकुर्विचोदुर्कसातो

ॐ वकुत्सशुण्यहर्त्येवाविथ

ॐ त्वंकुत्सेनामिशुण्यमिद

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

ॐ त्वतमिदमस्य

अष्ट. अ. वर्ग

१ १२

५ १७

५ १९

३ १७

२ ३६

१ २४

७ ७

३ ३

५ ३०

१ २३

७ ९

३ ३

५ ३०

१ २३

७ ९

३ ३

५ ३०

१ २३

७ ९

३ ३

५ ३०

१ २३

७ ९

३ ३

५ ३०

१ २३

मंत्रः

ॐ गोत्रमगिरोभ्योवृणोरप

ॐ त्वचसोमनोवराः

ॐ त्वचितीतवदक्षैः

ॐ त्वचिन्न शम्यामग्रेअस्या

ॐ त्वजुधयनसुचिमखस्यु

ॐ त्वजामिर्जनां

ॐ त्वजिगेयनधनारुरोधिथ

ॐ त्वतदुक्थमिद्वहर्णाकः

ॐ त्वतदेवजिह्वया

ॐ त्वतब्रह्मणस्पते

ॐ त्वतमग्रेअमृतत्व

ॐ त्वतमिद्वपर्वतमभोजसे

ॐ त्वतमिद्वपर्वतमहामुरुं

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

ॐ त्वतमिद्वमस्य

अष्ट. अ. वर्ग

१ ४

५ २०

५ ३३

५ २०

३ ४

५ २३

७ १५

५ २१

५ २७

१ ३४

२ ३३

४ १९

४ २२

५ २

८ २९

२ १

३ २०

५ २०

३ १

५ २०

३ १

५ २०

३ १

५ २०

३ १

मंत्रः

ॐ त्वत्स्यद्वयाविर्नो

ॐ त्वतोअमउभयाविवि

ॐ त्वतोइद्वोभयेअमित्रान्

ॐ त्वतानसचमतिचाति

ॐ त्वतान्यद्वहर्त्येचोदयोनु

ॐ त्वतनइद्वतरयिदा

ॐ त्वत्यपणीनाविदोवसु

ॐ त्वत्यमितोरथ

ॐ त्वत्यमिद्वसूर्य

ॐ त्वत्याचिद्व्युता

ॐ त्वत्याचिद्वतस्याश्वागाः

ॐ त्वत्याअइद्वदेवचित्रा

ॐ त्वत्येभिराहि

ॐ त्वत्वमहर्थाउपस्तुत

ॐ त्वदाताप्रथमोराधसाम

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

ॐ त्वद्विवोधरुणधिपुञ्जसा

अष्ट. अ. वर्ग

१ ३

५ २१

५ २१

५ १९

५ १९

७ ७

५ २४

८ २९

८ २९

५ २

५ ७

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

अष्ट. अ. वर्ग

१ ३

५ २१

५ २१

५ १९

५ १९

७ ७

५ २४

८ २९

८ २९

५ २

५ ७

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

अष्ट. अ. वर्ग

१ ३

५ २१

५ २१

५ १९

५ १९

७ ७

५ २४

८ २९

८ २९

५ २

५ ७

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

५ २

मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग			
स्वन सोमसुकुं	७	१२	स्वनोअमेअधरादुक्तात्	८	५	८	स्वर्पाहीद्वसहयिसोवृन्	२	४	११	स्वर्णप्रभरोयोधमुन्व	४	६	२१
स्वनहृदक्रतु.	६	५	स्वनोअमेअभुत	४	१	२	स्वपिमुसुगयश्रुवास्	३	५	१९	स्वर्णयिपुर्वीर	६	५	१२
स्वनहृदत्वाभिरुती	२	६	स्वनोअमेअंगिरः	४	१	२	स्वपुरहृदचिकिदेनाव्योज	६	६	३८	स्वर्णजेद्वेचदेवाः	२	४	१६
स्वनहृदरायातरूपसा	२	११	स्वनोअमेअतवदेव	१	२	३४	स्वपुरचरिण्व	५	७	१५	स्वर्णजवसुदन्त	६	८	१०
स्वनहृदरायापरीणसा	२	११	स्वनोअमेपित्रोरुपस्थे	१	२	३३	स्वपुरुण्याभरास्वध्या	८	६	१५	स्वर्णजवसुदन्त	५	२	१५
स्वनहृदवाजु.	५	३	स्वनोअमेअमहोभि	६	५	११	स्वपुरुसहस्राणिशतानिच	६	४	३७	स्वर्वरोसुपारणे	३	२	१४
स्वनहृदशरशूरै	७	७	स्वनोअमेअवरुणस्याविद्वान्	३	४	१२	स्वभगोनोआहिरवसिपे	४	५	१५	स्ववर्मासिसुप्रय	५	३	१५
स्वनहृदभरुओजो	३	७	स्वनोअमेअसुनयेधनानां	१	२	३३	स्वभुव प्रतिमानं पृथिव्या	१	४	१४	स्ववरुस्यगोमेत	१	१	२१
स्वनहृदसाहसै	६	५	स्वनोअसिभारतामे	२	५	२८	स्वमरस्यदोधन्त	८	८	२९	स्वविश्वुप्रदिव सीवजासु	४	५	७
स्वनिश्चित्रकृत्या	४	८	स्वनोअस्याहृददुर्हणाया.	१	८	२६	स्वमहाहृदतुभ्यहृक्षाः	३	५	२१	स्वविप्रस्त्वकुविः	६	८	८
स्वनुचक्षाअसिसोमविश्व	७	३	स्वनोअस्याअमतेरुतक्षुधः	६	४	५०	स्वमहाहृदयोहृशुमे	१	५	४	स्वविश्वसुजगत	८	५	२१
स्वनुचक्षावृपमानु	३	१५	स्वनोअस्याजुपसो	३	१	१५	स्वमहीमवर्निद्विधधेनां	३	६	२	स्वविश्वस्यधनुर्धसि	५	३	२०
स्वनुभिर्दमणोदेववीतौ	५	२	स्वनोअगोपा पथिकृत्	२	६	३०	स्वमानेभ्यहृदविश्वजन्त्या	२	४	९	स्वविश्वस्यमेधिर	१	२	१९
स्वनोअमआयुषे	६	३	स्वनोवायवेपामपूर्य.	२	१	२३	स्वमायाभिरनवयमयिनं	८	७	९	स्वविश्वपावकणासि	८	५	१५
स्वनोअमगृपां	४	१	स्वनोवृशहतम	७	७	१२	स्वमायागिरपमायिनोय	१	४	९	स्वविश्वपावकणासि	२	७	७
स्वनोअमेअभिभि.	८	७	स्वपत्रैरजसोविधर्मणि	७	३	१७	स्वयविष्ठदाशुप.	६	६	५	स्वविष्णोसुमतिविश्वज	५	६	२५

मंत्र.

त्वं वृथानृधं हृदं

त्ववृधं हृदं पूव्यो भू

त्वं वृपुजनानां

त्वशुतान्यवृधवरस्य

त्वशर्धा यमहिना गृणान.

त्वश्रद्धाभिर्मदसान.

त्वं सुत्य हृदं धृष्टुणेतान्

त्वं सुथो अपि वोजात हृदं

त्वं समुद्रिया अप.

त्वं समुद्रो अस्ति विश्ववित्कं

त्वं सिधू रवासजः

त्वं सुतस्पीतये

त्वसुतो जुमादन.

त्वं सुष्वाणो अङ्गिभि.

त्वं सुकुरस्य दृढि

त्वं सुगृह्णितो राम्यो हृन्

मंत्र

त्वं सूर्ये नृआभेज

त्वं सोम कर्तुमि सुक

त्वं सोम तनुरुद्ध.

त्वं सोम नृमादन

त्वं सोम पुण्यभ्या

त्वं सोम पर्वमान.

त्वं सोम पितृभि संविदान

त्वं सोम प्रचिकितो

त्वं सोम समहेमर्ग

त्वं सोम विपुश्चित

त्वं सोम विपुश्चित

त्वं सोम सुरप.

त्वं सोम सिधार्युः

त्वं सोम सिस्वतिः

त्वं सुत्यत्सम्यो जायमानः

त्वं सुत्यदप्रतिमानमोर्जः

अष्ट अ. वर्ग

६ ७ २२

त्वं सुत्यदिद्रुकुत्समाव.

३ ६ १९

त्वं सुत्यदिद्रुचोदी

६ ५ ३३

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ८ १४

त्वं सुत्यदिद्रुरिपण्यन्

६ ८ १२

त्वं सुत्यदृणयाद्रुधीर.

७ १ १६

त्वं सुत्यदृपभचर्पणीनां

६ ४ १३

त्वं सुत्यदृदमायोदस्यन्

३ ६ १९

त्वं सुत्यदृविष्टय

३ ६ २०

त्वं सुत्यदृवृधश.

६ ८ ६

त्वं सुत्यदृसुन्व. सोमगोपा.

७ १ ४०

त्वं सुत्यदृपितावसो

७ २ १०

त्वं सुत्यदृभिन्यो अमिभ्यो जा

७ २ १३

त्वं सुत्यदृपेजे

३ ६ १९

त्वं सुत्यदृस्वतेराधसोम

६ ३ ५

त्वं सुत्यदृविश्वतो सुल

६ ३ ५

त्वं सुत्यदृवृधनेपा

६ ३ ५

मंत्र

त्वं सुत्यदिद्रुकुत्समाव.

५ २ २९

त्वं सुत्यदिद्रुचोदी

३ ५ ४

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

३ ५ ४

त्वं सुत्यदिद्रुरिपण्यन्

३ ५ ४

त्वं सुत्यदिद्रुधोदी

८ ४ १५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

अष्ट अ. वर्ग

५ २ २९

त्वं सुत्यदिद्रुकुत्समाव.

३ ५ ४

त्वं सुत्यदिद्रुचोदी

३ ५ ४

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

३ ५ ४

त्वं सुत्यदिद्रुरिपण्यन्

३ ५ ४

त्वं सुत्यदिद्रुधोदी

८ ४ १५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

६ ४ ३५

त्वं सुत्यदिद्रुस ननु

कोशः

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
त्वद्भिः शब्दात्त्वन्मनीया	३	५	११	त्वमंशेत्वशविधुते	२	५	१७	त्वमंशेवनुप्युतोनिपाहि	५	२	६	त्वमपामपिधानवृणोरप	१	५	९
त्वद्विपुत्रसहस्रो	३	१	१४	त्वमंशेपुत्रिस्त्वमा	२	५	१७	त्वमंशेवरुणोजायस्यत्	३	८	१६	त्वमपोयदेवतुर्वश्याया	५	१	३०
त्वद्वियाविशआयुजसि	५	२	७	त्वमंशेद्विणोदा	२	५	१८	त्वमंशेवसूरिह	१	३	३१	त्वमपोयद्वद्रजघ्नन्वान्	३	२	१०
त्वद्वियेद्रपार्थिवानि	४	७	३	त्वमंशेपुरुषोविज्ञोविज्ञे	३	८	२६	त्वमंशेवाघतेसुप्रणीति	३	५	१८	त्वमपोविदुरोविपुर्वी	५	७	२
त्वद्वाजीवजसुरोविहया	३	५	११	त्वमंशेप्रथमोअंगिरा	१	२	३२	त्वमंशेवीरवद्यज्ञ	१	२	२०	त्वमर्युमामवस्यत्	३	८	१६
त्वद्विप्रोजायतेवाज्यमे	४	५	९	त्वमंशेप्रथमोअंगिरस्तम	१	२	३२	त्वमंशेवृजिनवर्तनि	१	२	३३	त्वमसिप्रशस्य	५	८	३५
त्वद्विधासुभगलौर्मगानि	४	५	१५	त्वमंशेप्रथमोमातुरिन्ने	१	२	३०	त्वमंशेवृषभ युष्टिवर्धन	१	२	३२	त्वमस्माकमिन्द्रविश्वध	२	४	१७
त्वमगजतिरार्यविष्ट	३	८	१७	त्वमंशेप्रमति	१	२	३३	त्वमंशेवतपाजसि	५	८	३५	त्वमस्यपुरेजसोव्योमन	१	४	१४
त्वमगप्रशंसिप	१	६	८	त्वमंशेप्रयतदक्षिण	१	२	३४	त्वमंशेवशमानाय	२	२	९	त्वमयुसप्रतिवर्तयोगो	१	८	२५
त्वमगहोद्वृषभ	२	५	१७	त्वमंशेवृहद्वय	१	२	३४	त्वमंशेचिपाशोद्युञ्चान	५	२	१६	त्वमविशुन्यनर्गुवैश्याहु	१	४	१८
त्वमगहोद्विजोतवेद	७	६	१९	त्वमंशेनवेद्यामवाशय	१	२	३२	त्वमंशेसुप्रयाअसिञ्जो	५	३	१	त्वमविशुन्यनर्गुवैश्याहु	१	४	१६
त्वमगठरुशस्यवाघते	१	२	३४	त्वमंशेयुञ्जानां	४	५	२१	त्वमंशेसहस्रासहस्रतम	२	१	१३	त्वमिस्तुप्रयाअसि	६	४	३२
त्वमगभक्तुसुराकेन	२	५	१८	त्वमंशेयज्यवेपाशु	१	२	३४	त्वमंशेसुभुततत्तम	२	५	१९	त्वमिन्द्रनयोंयाअवोवृन्	१	८	२६
त्वमंशेअदिदिद्व	२	५	१९	त्वमंशेराजावरुणो	२	५	१७	त्वमंशेसुहवारुणवसद्वह	५	३	२७	त्वमिन्द्रप्रतेतपु	३	७	३
त्वमंशेअमृतत्वचन्मै	१	२	३३	त्वमंशेअद्वोअसुरो	२	५	१८	त्वमंशेप्रथमजायमान	३	५	२२	त्वमिन्द्रबलुदधि	८	८	११
त्वमंशेअहृपतिः	५	२	२१	त्वमंशेवनुप्युतोनिपाहि	४	५	१९	त्वमंशेव्यस्तुहोता	१	३	३१	त्वमिन्द्रयशाअसि	६	६	१३

[illegible]

मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग
त्वांह्रुत्वाहुं द्रुणीसातो	१	५	त्वाभमेप्रथममायु	१	२	३४	त्वामिच्छेवसस्पते	५	८	१३	त्वामुतेस्वामुर्व
त्वाहिमद्वतममर्कशोकै	४	५	त्वाभमेप्रथमदेवयत्त	३	५	११	त्वामिद्वद्रवृणतेत्वायवः	८	४	२१	त्वायुजातवतत्सोमसुख्य.३
त्वाहिष्मार्चणयः	४	५	त्वाभमेप्रदिववाहुतयुते.	३	८	२६	त्वामिद्वस्याउपसोन्युष्टिपु	८	७	६	त्वायुजानिबिद्वत्सूर्यस्य
त्वाहित्यमर्द्रिवः	६	४	त्वाभमेमनीपिण	३	१	७	त्वामिदाहो नर	६	७	३	त्वयिद्वसोमसुपुमासुदक्ष
त्वाहित्युत्तरस्तमं	६	२	त्वाभमेमनीपिणः	६	३	३९	त्वामिद्विवायव	६	६	२०	त्वावतोहिद्वक्वेअस्मि
त्वांह्रीं द्रुवसेमिवाचः	४	७	त्वाभमेयजमानाअनुधूत्र	७	८	२९	त्वामिद्विहसस्पुत्र	१	३	२०	त्वावत पुरुवसो
त्वाह्रिस्मिद्वमिस्सुन्यवः	३	४	त्वाभमेमानुपीरीकृतैवि	३	८	२६	त्वामिद्विहवामहे	४	७	२७	त्वपीमंतोअध्वरस्यवद्वि
त्वावत्तेभीरुद्रुवातमेभिः	२	७	त्वाभमेवसुपतिवसूना	३	८	१८	त्वामिद्वयुर्मम	६	५	३२	त्वेषम्रजाहवनाभिभूरि
त्वाम्रमेअंगिरसोऽगृह्णितं	३	१	त्वाभमेवाजुसातमं	४	१	५	त्वामिद्वत्रहतम	४	२	६	त्वेषम्रोविषेअमृतसो
त्वाम्रमेअतिथिपूव्यविश.	३	८	त्वाभमेसमिधानोवसिष्ठ	५	२	१२	त्वामिद्वत्रहतम	५	८	१६	त्वेषम्रोसुमतिभिश्च
त्वाम्रमेअत्वाहित्यासं.	२	५	त्वाभमेसमिधानयविष्ठय	३	८	२६	त्वामिद्वत्रहतमसुता	६	६	२६	त्वेषम्रोस्वाहुत
त्वाम्रमेअक्रतायव.समीधि	३	८	त्वाभमेस्त्वार्य.	४	५	२२	त्वामीकृतेअजिरदूत्याय	५	२	१४	त्वेषसूर्यवसवोन्युण्वत्
त्वाम्रमेअद्वामावि	२	५	त्वाभमेह्रितोवावशानाः	५	२	७	त्वामीकृत्रघटिता	४	५	२१	त्वैहद्वेसुभगेयवि
त्वाम्रमेअर्घुणस्तिविधावुयं	३	८	त्वाभमेह्रविष्मत्.	४	१	१	त्वामुअमवसेचर्षीसह	४	७	२८	त्वैहद्व्यायभूमविप्रा
त्वाम्रमेअपितरमिष्टि	२	५	त्वाभमेच्छाचरामसि	६	७	१६	त्वामुजातवेदसं	८	८	८	त्वैकनुमपिद्वृजतिविभं
त्वाम्रमेअपुष्करादधि	४	५	त्वाभमेस्याव्युपिदेवपूर्व	३	८	१७	त्वामुतेदधिरेहव्याह	५	२	३३	त्वैधर्माणसाते

कोशः

मंत्र	अष्ट. अ.	वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्गः
त्वेधेनु सुदुर्घाजातवेद.	८	२०	त्वेषोमप्रथमामृक्वाहिप.	७	५	२३	दधामितेषुताना	६	३	११	दशुंनुविश्वदर्शत	१	२	१९
त्वेषितोमहानदिवानां	२	५	त्वेषुयस्वितरश्चिजइन्द्र	५	२	२४	दुधिकामप्रिमुपसं	३	१	२०	दशन्वत्रश्रुतपथनिद्रान्	७	७	१६
त्वेषार्यइन्द्रतोशर्तमा.	२	४	त्वेषोतासुसत्वावसा	७	१	२२	दुधिकामनमसबोधयतः	५	४	११	दुविद्युतयारुचा	७	१	४१
त्वेषसूनिपुर्वणीकहोत	४	५	त्वेषोतासुस्वायुजा	६	५	२	दुधिकावाणदुधधानोअ	५	४	११	दशक्षिपोयुयतेबाहूअ	४	२	२०
त्वेषसूनिर्गता	६	५	त्वेषोतासोमववक्त्रिइविम्रां	३	६	१८	दुधिकावाप्रथमोवाज्यवी	५	४	११	दशक्षिपं पुण्यसी	३	१	२३
त्वेषिश्वातविपिसुथगिघ्रि	१	४	त्वेषोतावाज्यइयो	२	५	२२	दुधिकाधणइदुनुचकिराम	३	७	१४	दशतेकुलशाना	३	६	३०
त्वेषिश्वासरस्वति	२	८	दक्षस्यवादितेजन्मनिव्र	८	२	६	दुधिकाव्यहुपऊजोमहोय	३	७	१३	दशमासान्धशान.	४	४	२०
त्वेषमिथ्यासमरेणशिमी	२	२	दक्षिणावतामिदिसावि	२	१	१०	दुधिकाव्योअकारिप	३	७	१३	दशरथान्प्रष्टिमत्	४	७	३४
त्वेषस्तैधुमऋण्वति	४	५	दक्षिणावानप्रथमोहृतपुति	८	६	३	दुधिकाव प्रथममश्विनोप	५	४	११	दशराजान् सभित्ताभयज्य	५	६	५
त्वेषासोअभेरमंवतो	१	३	दक्षिणाश्वदक्षिणागार्ददा	८	६	४	दुधिव्याजडैसुतं	३	३	२४	दशरात्रीरशिवेनानघान्	१	८	१२
त्वेषंगणतवसंखादिहस्तं	४	३	दुदानमिन्नदंभदतमन्म	२	३	१७	दुधुद्राभृगोमानुपेत्वा	१	४	२४	दशदयावाअधद्रय.	६	४	५
त्वेषरूपकणुतउत्तरंयत्	१	७	दुदीरेकणस्तन्वेदुदिर्यसु	६	४	३	दुधद्वहमेजुगुपुर्वा	२	२	४	दशस्यतामनवेपथ्यदिवि	६	२	६
त्वेषरूपकणुतेवर्णाभस्या	७	२	दुधकृतधनयन्नस्य	१	५	१५	दुनोविशइदमधवाच	२	४	१६	दशमरं पौतकृत	६	४	२७
त्वेषवृयुरुद्रयज्ञसाधं	१	८	दुधन्वेवायद्रीमनु	२	५	२६	दुअभिश्चिच्छशीयास	३	६	२७	दशस्यतौनोमस्तोमृज्जु	५	४	२५
त्वेषंशधोनमारुतंनुविज्व	४	८	दुधानोगोमटधवत्	६	४	१	दुअभिश्चित्वावत.	३	६	४८	दशस्यानं पुर्वणीकहोत.	४	५	१३
वेसुपुत्रशवस.	६	१७	दुधामितेमुनुनोअशमअ	६	७	४	दुमूनसोअपसोयेसुहस्ताः	४	२	१९	दशानामेककपिलसमानं	७	७	१८

मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग
दशानिम्बोदशकक्ष्येभ्यः ८	४ ३०	दामानविश्वचर्पणे	६ २	दिवश्चिद्रोचनादधि	५ ८	दिवोयतासिशुक्र प्रीयुषं ७	५ २०
दशान्दशकोशान्	४ ७	दाशराज्ञेपरिचायविश्व ५	६ ६	दिवस्कण्वासुदं व	१ ३	दिवोधासमिवरण ५	५ ११
दशोमत्वधुर्जनयतुर्गर्भं	१ ७	१ दाशेसकस्यमनसा	६ ६	दिवस्परिप्रथमजबेअग्नि ७	८ २८	दिवोनतुभ्यमान्विद्वसुत्रा ४	६ ९
दुस्रोहिष्मावृण	२ १	१६ दासपद्मरहिर्गोपाअतिष्ठ १	२ ३८	दिवस्पृथिव्याअधि	६ ८	दिवोनयस्यरेतसोदुर्बाना १, ७	७ १६
दत्तायुवाकव सुता	१ १	५ दिदृक्षतजपसोयार्मज्जको. ३	२ ३	दिवस्पृथिव्योवुवावृणी ७	८ ८	दिवोनयस्यविघ्नतो नवी ४	५ ४
दत्ताहिविधमानुपक्	६ २	२७ दिदृक्षेण्य परिकाशसुजे २	२ १५	दिवस्पृथिव्या. पर्योजुडं ४	७ ३५	दिवोनसर्गाअससुप्रमह्नां ७	४ १६
दसून्निष्ठभूश्वपुरुतुपदै	१ ७	११ दिव प्रीयुषं सुलभ ७	१ ७	दिवचित्तम कृण्वति १	३ १६	दिवोनमानुपिप्युपी ८	६ ६
दंडाडुवेद्रोभजनसआस ५	३ ३	३३ दिव प्रीयुषं पुर्व्ययदुक्थं ७	५ २३	दिवायतिमस्तो भूस्याग्नि २	३ ३	दिवोनसानुस्तनयंअचिक ७	३ १३
द्रातानेपृथीनां	६ ४	४७ दिवक्षसोअग्निजिह्वाकृता ८	२ १०	दिविक्षयतारजस पृथिव्यां ५	५ ५	दिवोनाकुमधुजिह्वा ७	३ ११
द्रादृहणोवज्रमिद्रो	२ १	८ दिवक्षसोधेनवो ३	३ १	दिवितेनामपरमोयर्वाइदे ७	३ ३	दिवोनामाविचक्षणः ६	७ ३८
द्राधारक्षेभुमोकोनर	१ ५	१० दिवश्चित्तेवृहृतोजातवेद १	४ २५	दिविनकेतुरधिधायिहृत. ८	५ ५	दिवोनेवृष्टेमस्तो ररीध्व ४	४ २८
द्रानामृगोनवार्णः	६ ३	८ दिवश्चिदस्यवरिमाविपम १	४ १९	दिविमेअन्य पक्ष. ८	६ २७	दिवोमानोत्सदन् ६	४ ४२
द्रावायुमन. सोमपावज	१ ४	२० दिवश्चिदातेरुचयतरोका. २	८ २७	दिविस्वदयुजमसाकम ७	८ १०	दिवोयस्तुभोयुरुण स्वात ७	२ ३१
दानेस पृथुश्रवस.	६ ४	५ दिवश्चिदापुण्यजायमाना ३	२ २५	दिविस्वनोयततेभ्योप ८	३ ३	दिवोत्समउरुचक्षाउदेति ५	५ ५
दानोअशोधियारयि	५ १	२३ दिवश्चिदावोमवचरेभ्य ८	३ ८	दिवेवैवेसद्वकीन्यमर्ध ४	७ ३४	दिवोवराहमरुपंकपुर्दने १	८ ५
दानोअमेवृहृतोदा.	२ ५	२१ दिवश्चिदादुहितर ३	६ २०	दिवोयतोमुवनस्यप्रजाप ३	८ ८	दिवोवासादुस्पृशतुवरीय ८	२ २१

मं.न.	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग
द्विज्यः न्य. सदनं चक्र उवाच	८	३	३	३	३	३	३	३	३
द्विज्यः सुपुण्यं वायुसंभृतं	२	३	३	३	३	३	३	३	३
द्विज्यः सुपुण्यं चक्षुःसोम	७	३	३	३	३	३	३	३	३
द्विज्याः अपोऽग्निदेवमा	५	३	३	३	३	३	३	३	३
विशः स्यो नमिनाति	३	३	३	३	३	३	३	३	३
द्रीद्विवांसपूज्यं	३	३	३	३	३	३	३	३	३
द्रीधर्षकुशर्या	८	३	३	३	३	३	३	३	३
द्रीधर्षतुर्वृहदुभयमसिः	८	३	३	३	३	३	३	३	३
द्रीधर्षतमामामतेयो	२	३	३	३	३	३	३	३	३
द्रीधर्षोऽस्त्वंकुशः	६	३	३	३	३	३	३	३	३
दुराध्योऽदिदितिलेवयत	५	३	३	३	३	३	३	३	३
दुरोऽभस्यदुरद्विगोरसि	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दुरोऽकनोचिः क्रतुर्न	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दुरोचिषः सुगंधि	६	३	३	३	३	३	३	३	३
दुर्मन्त्राभृत्यनाम	७	३	३	३	३	३	३	३	३
दुर्हर्तिसैकासुप	६	३	३	३	३	३	३	३	३

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
देवासस्त्वावर्णोमित्रो	१ ३	देवैर्नोदेव्यादितिर्नितु	१ ७	द्यामिद्रोहरिधायसं	३ ३	द्युष्मिर्वास्तोमोवक्षिना	६ ६	१०	वर्ग
देवासोहिष्मामनविसर्म	६ २	देवैर्नोदेव्यादितिर्नितु	३ ८	द्यावाविदस्सपृथिवी	२ २	द्युष्मपुष्टनाल्ये	३ २	२२	
देवीवाचमजनयतदेवा	६ ७	देवोदेवानामसिमित्रो	१ ३	द्यावानोअद्यपृथिवीअर्ना	७ ६	द्यौर्नयद्दुर्गभिस्मृमा	४ ६	९	
देवी पळुर्वीरुल्लं. कृणोत	८ ७	देवोदेवान्निस्सृजेतेन	७ ७	द्यावान पृथिवीदुमं	२ ८	द्यौर्मपित्तान्नितानाभि	२ ३	२०	
देवीदिवोदुहितरोसुहि	८ २	देवोदेवायधारय	६ ७	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	८ ८	द्यौर्व. पितापृथिवी	२ ५	१५	
देवीदेवस्यरोदसीर्जननी	५ ६	देवोनय पृथिवी	१ ७	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	५ ८	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ८	२६	
देवीदेवेनियंजुतेयजन्ने	३ ८	देवोनय सवितास्य	१ ७	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	८ ८	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ८	९	
देवीयदितविपीत्वावृधोत	१ ४	देवोभगः सवितारायोअं	४ ४	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवीद्विरोविश्रयध्वं	३ ८	देवोवोद्विणोदा	५ ८	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवेर्नोमनसादेवसोम	१ ६	देवीपुतदक्षिणादेवयुज्या	८ ४	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवेर्मिद्व्यदिते	६ १	देव्याहोतराप्रथमावि	२ ५	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवेभिस्त्वितोयक्षियेभि	८ ४	देव्याहोतराप्रथमान्यजे	२ ४	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवेभ्य कर्मधुणीतमृत्यु	७ ७	देव्याहोतराप्रथमान्यजे	२ ४	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवेभ्यस्त्वामवयुन	४ ७	देव्याहोतराप्रथमान्यजे	२ ४	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवेभ्यस्त्वयुगापजसे	७ ७	देव्याहोतराप्रथमान्यजे	२ ४	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	
देवेभ्योहिप्रयमयक्षियेभ्य	३ ८	देव्याहोतराप्रथमान्यजे	२ ४	द्यावापृथिवीजनयद्दभि	७ ७	द्यौश्चत्वापृथिवीयुजियास	२ ४	१३	

[illegible]

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.						
ध्रुपतिवकुलेशोममि	४	७	३१	नकिरिद्रवदुत्तर	३	६	१७	नक्षोणीभ्यापरिभ्वेत	२	६	१७	नतमंहोन्दुरितकुतश्चन	२	६	२९
ध्रुनन्तासुयवसेदुदुक्षन्	५	२	२४	नकिरेपानिद्रितामलेपु	३	२	२५	नधात्वद्विगपेवेतिमेव	७	८	२४	नतमहोन्दुरितदेवासो	८	७	१३
ध्रेतु प्रलस्यकाम्य	३	४	३	नकिदेवामिनीमसि	८	७	२२	नधारोजद्रादभन्न	२	४	२१	नतस्यमायथाचन	६	२	१२
ध्रेतुष्टद्वदुपुनता	६	१	१४	नकिशेषाजद्रूपिचेद	५	४	२३	नधावसुनियमते	४	७	२५	नतस्यविद्युतदुपुप्रवांचत	७	८	२०
धेनूनिन्वतमुतजिन्वतवि	६	३	१६	नकिष्टपुताघुता	१	५	१३	नधासमामपुजोपजभार	३	६	१६	नताअवारिणुककादोअश्रुते	४	६	२५
ध्रुवतेराजावरुण.	८	८	३१	नकिष्टकर्मणानश	६	५	८	नधेमन्यदापन	५	७	२०	नतानशतिनदंभातितस्कं	४	६	२५
ध्रुवध्रुवैणह्रविपा	८	८	३१	नकिष्टकर्मणानश्रप	६	२	४०	नजामयेतान्वोरिक्थमा	३	२	५	नतामिनितिमाथिवोनधी	३	४	३
ध्रुवज्योतिर्निहितहृशयेक	४	५	११	नकिष्टदृथीतर.	१	६	६	नतजिनितिदृववोनद्रुआ	३	६	१३	नतिष्ठतिननिमिपत्येते	७	६	७
ध्रुवाण्वर्व पितरौयुगेयुगे	८	४	३१	नकीर्मिद्रोमिकर्तवे	६	५	३१	नतंतिमचनसजः	६	४	८	नतेअदेव प्रदिवोनिकासते	७	८	१२
ध्रुवाद्याध्रुवापृथिवी	८	८	३१	नकीर्वर्तसख्यायविदसे	६	२	३	नतराजानावदितेकुतश्चन	७	८	१७	नतेअत शवसोधाव्यस्य	४	७	१
ध्रुवासुत्वासुक्षितिपुक्षिय	५	६	१०	नकीर्दुधीकद्वदसे	६	५	३१	नतंविदाथयद्रुमाजजान	८	३	१७	नतेगिरोअपिमृद्वेतुरस्य	५	३	५
ध्वज्यो पुरुष्यो	७	१	१५	नकोपासावर्णसासेम्यनि	१	७	३	नतद्वद्रसुमतयोनराय.	५	२	२७	नतेतद्वद्राभ्यास्सहृष्व	४	२	१
नकि परिष्टीचवन्मघस्य	६	६	११	नकोपासासुपेक्षसा	१	१	२५	नतद्विवानपृथिव्याचुमन्ये	४	८	१४	नतेदूरेपरमाविद्वजसि	३	२	१
नकि सुदासोरथ	५	३	१८	नक्षतुद्रमवसे	६	४	२४	नतमद्रोअरतय	६	५	११	नतेवर्तास्तिराधस	६	१	१४
नकिरस्यदाचीना	६	३	३	नक्षद्ववमरुणी पूर्यराद्	१	८	२४	नतमश्रोतिकश्चन	८	१	२	नतेविष्योजायमानोनजा	५	६	२४
नकिरस्यसहस्य	१	२	२३	नक्षद्वोतापरिलक्षमिताय	२	४	१३	नतमंहोन्दुरितानिमित्त	५	३	६	नतेसखासख्यवष्टयेतत्	७	६	६

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
नतेसव्यंनदक्षिणं	६ २ १५	नद्यावद्भद्रमोजसा	५ ८ ११	नमसेदुपसीदत	६ ७ ३७	नयविचित्रोदसी	६ १ ५		
नत्वागभीर पुरुहूतसिधुं	३ २ ११	ननुगुह्यणांमृणं	६ ३ ४	नमस्तेअश्रुओजसे	६ ५ २५	नयंशुक्रोनदुराशी	५ ७ १७		
नत्वादेवासआशत	६ ३ ३७	ननुमस्तिनोश्च	२ ४ १०	नमस्यतद्व्यद्यतिस्वध्वर	२ ८ १८	नयहिसतिधीतयोनवाणी	४ ७ ६		
नत्वाद्धोतापूर्वाभ्युयजीया	३ ८ १६	नपुचभिर्दशभिर्वृष्टारभं	४ २ ३	नमगनृद्योमावृतेमा	२ ३ १	नय संपृच्छेनपुनर्हवीतवे	६ ७ ६		
नत्वावृहृतोअर्द्रय	६ ६ ११	नपर्वतानद्योवरंतवः	४ ३ १८	नमत्तमन्नश्रमन्नोत	२ ७ १३	नयईपतेजुसुयोया	५ १ ७		
नत्वासीयाभिदास्तये	६ १ ३४	नपातुशवसेमह	६ २ २१	नमामिमेथुनजिहीळाण्या	७ ८ ३	नयजमानरिष्यसि	६ २ ४०		
नत्वावरंतेअन्यथा	३ ६ २८	नपातोदुर्गहस्यमे	६ ४ ४७	नमस्त्युरासीदृष्टतुनंताई	८ ७ १७	नयसीद्वितिद्विपं.	४ ७ २२		
नत्वावैअन्योदिव्योनपा	५ ३ २१	नपापासोमनामहे	६ ४ ४	नमृपाश्रंतंयदवतिदेवाः	२ ४ २२	नयस्यंतेशवसान	५ २		
नत्वाशतचनहुतः	७ १ २३	नपूणमेथामसि	१ ३ २५	नमोदिवेष्टुहेतरोदसीभ्यां	२ १ २६	नयस्यदेवादेवतानमतोः	१ ७ १०		
नर्दक्षिणाविचिकित्ते	२ ७ ८	नसीभिर्योविवस्वत	६ ८ ३	नमोसुहृद्योनमो	१ २ २४	नयस्यद्यावापृथिवीमनु	१ ४ १४		
नर्वनभिन्नममुयाशर्यान	१ २ ३७	नप्रमियैसवितुदैव्यस्य	३ ८ ५	नमोभिन्नस्वरूपस्वक्ष	७ ८ १२	नयस्यद्यावापृथिवीनध	८ ४ १५		
नर्दवओदतीना	६ ५ ५	नमोजामेष्टुनन्यर्थमीयुः	८ ६ ४	नमोवैकप्रस्थितेअध्वरे	६ १ १७	नयस्यवतेजुसुपान्वस्ति	३ ६ ४		
नदस्यमारुधत काम	२ ४ २२	नम.पुतातेवरुणो	२ ७ १०	नयजर्तितिशुरदोनमासा	४ ६ १८	नयस्यसातुर्जनितोर	३ ५ ५		
नदुपुतीमर्त्योविदतेवसु	५ ३ २१	नमइदुग्रनमआविवासे	४ ८ १२	नयंदिप्यसतिदिप्यसवः	१ २ १८	नयस्यरोनातर.	२ ८ ८		
नदेवानामपिन्नत	७ ८ २	नमइद्रेणसुर्यं	२ ६ २२	नयंहुध्रावर्तितेनस्थिरासुर	६ ४ ४८	नयस्यपुराचक्रकामकंदनं	७ ६ ६		
नदेवानामपिद्धतः	६ २ ३९	नमत्वीसुभसत्तरा	८ ४ २	नयंरिपवोनरिपुण्यवो	२ २ १७	नयस्यद्रोवरुणोनमित्र.	२ ८ ३		

मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग
नयतबंदं दृष्टुं न	५ ३ ३	नरोयेकेचासदा	७ ७ ३	नवोनवोभवतिजायमान.	८ ३ ३	नहितेपूर्तमक्षिपत्	५ २४
नयुमेवाजघंधव	६ ५ ४	नवगवास सुतसोमासुदं४	१ २५ ३	नवजुस्तोममग्रये	५ २ १८	नहितेश्वराघस.	६ ४ ३
नयेद्वि पृथिव्यार्जते	१ ३ २	नवयदयनवृत्तिचमोगान्४	१ २४ ३	नव्यतदुक्थ्यद्वित	१ ७ २२	नहितेपामाचन	८ ४३
नयोरेपविद्वरश्चय.	१ ५ २२	नवयोनवतिपुर.	६ ६ २१	नसस्कृतप्रमिमीतोगमि	४ ४ १७	नहित्वारोदसीजमे	१ १ २०
नयोवरायमरुता	२ २ १२	नवाकरण्यानिहिति	८ ८ ४	नसर्जायतेमरुतो नहन्यते	४ ३ १५	नहित्वाश्रुदेवान्	६ ५ ३७
नरागैरेवविद्युतं पृथुणा	५ ५ १६	नवाउत्तन्त्रियसेनरि	२ ३ १०	नसराजाच्यतेयस्मिन्नि	४ २ ८	नहित्वाश्रुनतुरोनघृणु	६ १९
नरादसिष्ठावक्रये	८ ८ १	नवाउत्तेतन्वातन्व१ संपे	७ ६ ८	नससखायोनददतिसख्ये	८ ६ २२	नहित्वो नमस्य.	१ १ ३८
नरावाशसंपणसगोह्य	८ २ ६	नवाउदेवा क्षुधमिद्वय	८ ६ २२	नस स्वोदक्षोवरुणधृति. सा५	६ ८ २३	नहितेनमद्रिमने समस्य	४ ६ २३
नरावाशसिंहप्रिय	१ १ २४	नवाउसोमोवृजिनहिनो	७ ७ १५	नसार्यकस्यचिकित्तेजनास	३ ३ २३	नहितुयादधीमसि	५ ३१
नरावाशसो नवतुप्रयाजे	५ ८ ४०	नवाननवतीना	५ ७ ७	नसीमदैवआपुदिय	६ ५ ५	नहितमन्यु पौरुषेय	५ ११
नरावाशसवजिनवाजयश्चिह	७ ७ २४	नवानोअमआमर	२ ५ १६	नसेशुयस्यरोमना	८ ४ ४	नहितमैअक्षिपञ्चन	८ ६ २६
नरावाशसुधर्म	१ १ ३५	नविजोनामियदिवेद	२ ३ २१	नसेशुयस्यरवते	८ ४ ४	नहितमैअस्यद्वया	८ ७ १२
नरावासुःप्रतिधामनि	२ ५ २२	नवीज्वेनमतेनस्थिराय	४ ६ १८	नसोमद्रमसुलोममाद	५ ३ १०	नहितमैरोदसीजमे	८ ६ २७
नरावास सुपुदति	३ ८ २०	नवेपसानतन्यते	१ ५ ३१	नहितमैभेवृपमप्रतिष्ठये	६ ४ ३४	नहितवृजति पृतनासु	५ ४ २९
नरोयतापगिनसुधर्मिदं	३ ६ १४	नवोगुहाचक्रमभूरिदुष्कृ	८ ५ १७	नहितेक्षत्रनसद्रोनमन्यु	१ २ १४	नहितवृक्षरमंचन	५ ४ २९

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
नहिवासास्तिदूके	१	२	३	नानानवाडनोधिपं.	७	५	२५
नहिवावव्रयामहे	६	३	२४	नानाहिवाहवमानजना	१	७	३५
नहिबोअस्यर्भक.	६	२	२७	नानाखं१अवेसे	४	५	१४
नहिपस्ववनोमम	६	३	१०	नानौकासिदुयौविश्वमायु	२	८	२
नहिप्पयद्धं.परा	५	८	२२	नार्पाभृतनवौतीतृपा	३	७	२२
नहिपमतेज्ञातंवन	३	६	२५	नाभानाभिनुआददे	६	७	२५
नहिस्थूयुथायातमस्ति	८	७	१९	नाभापृथिव्यायुरुणोसुहो	७	७	१९
नहीनुवोमस्तोअंल्यस्से	२	४	५	नाभियज्ञानासदनरयीणां	४	५	५
नह्य१न्यवळाकर	६	५	३५	नाभ्यावासोदंतरिक्ष	८	४	३५
नह्यस्यानामंगमणाभि	८	८	३	नामामितेचतक्तो	३	८	३
नह्य१गर्धतोत्वत्	६	२	१७	नावानक्षोदं.प्रद्विशं.पृथि	८	२	१७
नह्य१गपुराचन	६	२	१७	नावेवन पारयतयगेव	२	२	१७
नाकस्सपृथुअधि	२	१	१०	नासत्याभ्यांवाहरेवप्रवृजे	१	३	१०
नाकैसुपुर्णसुपपस्तिवांसं	७	३	११	नासस्यामेपितरायन्यपृच्छ	३	३	११
नाकैसुपुर्णसुपयत्पतंतं	८	७	८	नासदासीन्नोसदासीत्	८	७	८
नानाचक्रातेयन्य३वपूभि	३	३	३०	नास्माकमस्तिचरं.	६	३	३०

मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग
निदुर्गहृदक्षयिष्ठमित्रान्	५	३	९	५	१८	निश्चर्मणक्रमवोगामपिंशः	५	१८	निश्चर्मणक्रमवोगामपिंशः	५	१८
निधीयमानमपण्डितसु	७	७	३०	६	८	निश्चर्मणोगामरिणीत	२	३	निश्चर्मणोगामरिणीत	२	३
निनोहोतावेरेण	१	२	२०	५	७	निपसादधृतघ्नतः	१	२	निपसादधृतघ्नतः	१	२
निपवत साधप्रयुच्छन्	२	६	४	१	५	नि पिध्वरीरोपधी	६	४	नि पिध्वरीरोपधी	६	४
निपस्त्यासुधितस्तमयन्	८	१	२	८	७	नि पिध्वरीस्तजोपधीरुता	३	३	नि पिध्वरीस्तजोपधीरुता	३	३
निमिपश्चिज्जवीयसा	६	५	१८	३	१	निपीमिदग्रगुह्यादर्धाना.	३	१	निपीमिदग्रगुह्यादर्धाना.	३	१
नियद्यामायवोगिरि	५	८	१८	८	७	निपुत्रह्मजनाना	५	८	निपुत्रह्मजनाना	५	८
नियजुवेथेनियुत सुढान्	२	४	२४	५	२	निसुसीदगणपतेगणेषु	८	४	निसुसीदगणपतेगणेषु	८	४
नियदृणाक्षिश्चसुनस्यमूर्ध	१	४	१७	२	२	निसुनमातिमतिकयस्य	२	१	निसुनमातिमतिकयस्य	२	१
नियुवानानियुत स्पार्हवी	५	६	१३	३	७	निष्कवाधाकणवते	६	४	निष्कवाधाकणवते	६	४
नियुत्वतोभ्रामजितोयथा	४	३	१५	७	७	निष्वापयामिथुदशा	१	१	निष्वापयामिथुदशा	१	१
नियुत्वान्वायवागहि	२	८	७	३	३	निसर्वसेनइपुर्धार	३	३	निसर्वसेनइपुर्धार	३	३
नियेनसुष्टिदुलया	१	१	१५	१	३	निसामनामिपिरामिद्व	३	३	निसामनामिपिरामिद्व	३	३
नियेरिणत्योजसा	४	३	१९	६	८	निहोताहोवुपदने	२	६	निहोताहोवुपदने	२	६
निर्मयोरुत्तुनिरुसूर्य	५	७	२८	५	८	नीचावयाजभवदुन्नपुत्र	१	१	नीचावयाजभवदुन्नपुत्र	१	१
निरोगिष्यद्विरिभ्यका	६	५	३०	७	१	नीचावततउपरि	७	१	नीचावततउपरि	७	१

मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ. वर्ग
नीचीनवावर्ण कयध	४	३१	नीचीनवावर्ण कयध	४	३१
नील्लोलोहितभवति	८	५	नील्लोलोहितभवति	८	५
नूअन्यत्राचिददिव	६	२	नूअन्यत्राचिददिव	६	२
नूइयतैपूर्वथाचप्रवा	२	३०	नूइयतैपूर्वथाचप्रवा	२	३०
नूइद्रायेवरिक्स्थधीन.	५	३१	नूइद्रायेवरिक्स्थधीन.	५	३१
नूइद्रशरुस्तवमानकुती	५	२३	नूइद्रशरुस्तवमानकुती	५	२३
नूगुणानोगुणतेप्रबराजन्	४	३	नूगुणानोगुणतेप्रबराजन्	४	३
नूचपुराचसदनरयीणाम्	१	१३	नूचपुराचसदनरयीणाम्	१	१३
नूचित्सअपतेजोनोरंयन्	५	१६	नूचित्सअपतेजोनोरंयन्	५	१६
नूचित्सहोजाअमृतोनिहं	१	९	नूचित्सहोजाअमृतोनिहं	१	९
नूचिन्नइद्रोमघवासहृती	५	२७	नूचिन्नइद्रोमघवासहृती	५	२७
नूचिबुतेमन्यमानस्यदुस्स	५	१	नूचिबुतेमन्यमानस्यदुस्स	५	१
नूतआमिरुभिष्टिभि	४	२	नूतआमिरुभिष्टिभि	४	२
नूतेपूर्वस्यावसोअर्धावो	२	१	नूतेपूर्वस्यावसोअर्धावो	२	१
नूवाद्दिदतेवय	६	२	नूवाद्दिदतेवय	६	२
नूवाममईमइवसिष्टा	५	४	नूवाममईमइवसिष्टा	५	४

मंत्र	अष्ट.	अं.	वर्ग	मंत्र-	अष्ट.	अं.	वर्ग	मंत्र	अष्ट.	अं.	वर्ग
नूत्वाभ्रमईमहेवसिद्धिः	५	२	११	नूनव्यसेनवीर्यसे	६	७	३३	नूमेतिरोनासुत्या	६	६	८
नूदेवासोवारिव कर्ताना	५	४	१५	नूनश्चित्रपुडुवाजाभिस्तीक्ष्ण	७	५	१२	नूमेब्राह्मण्यभ्रउच्छशाधिः	१	२६	१
नूनैर्द्वद्वादशपर्यायचल	४	७	५	नूनस्वरथिरोदैवसोम	७	४	२०	नूमेब्राह्मण्यभ्रउच्छशाधिः	१	२७	४
नूनपुनानोविभि परिखव	७	५	१२	नूनौभ्रऊतये	४	१	२	नूमेहवमाशृणुंतयुवाना	५	१३	२
नूनतादिद्वद्विन	६	१	७	नूनौभ्रकुवेके स्विस्ति	४	५	६	नूमेहवमाशृणुंतयुवाना	५	१६	७
नूनसातेप्रतिवरजरित्रे	२	६	६	नूनौभ्रगेमदीरवदेहिरत्न	५	५	२२	नूरौदसीअभिद्रुत्वसिधैः	५	४	७
नूनसातेप्रतिवरजरित्रे	२	६	१८	नूनौरथियुरुवीरयुहत	३	७	२०	नूरौदसीअभिद्रुत्वसिधैः	५	४	७
नूनसातेप्रतिवरजरित्रे	२	६	२०	नूनौरथिमहार्मदो	३	८	३०	नूरौटसीअहिनावृष्येन	३	८	७
नूनसातेप्रतिवरजरित्रे	२	६	२२	नूनोरुरथिरथ्यचर्पणिग्रं	४	८	७	नूरौदसीयुहकिन्नोकैः	३	८	७
नूनसातेप्रतिवरजरित्रे	२	६	२४	नूनौरथिसुपर्मास्वनवंत	४	४	३	नूष्टतहंद्रनूरुणानः	३	५	२०
नूनसातेप्रतिवरजरित्रे	२	६	२६	नूनौरास्सुहृषवत्	३	४	१३	नूष्टतहंद्रनूरुणानः	३	५	२४
नूनसातेप्रतिवरजरित्रे	२	६	१६	नूमआवाचसुपर्याहि वि	४	६	१२	नूष्टतहंद्रनूरुणानः	३	६	२
नूद्विचार्यमासा	४	१	९	नूमन्वानर्ण्या	३	३	१०	नूष्टतहंद्रनूरुणानः	३	६	४
नूद्वारवर्णागुणाना	५	१	१२	नूमतोदैवते सनिष्यन्	५	६	२५	नूष्टतहंद्रनूरुणानः	३	६	४
नूप्रतिवार्यमै	४	१	८	नूमित्रोवरुणे अर्थमानं.	५	५	४	नूष्टतहंद्रनूरुणानः	३	६	८
नूर्चेचित्हायसे	६	२	१३	नूमित्रोवरुणे अर्थमानं:	५	५	५	नूष्टतहंद्रनूरुणानः	३	६	१०

मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.
नेतारज्जुगुणस्त्रिः	८ ७ १३	न्युम्रियोमनुष सादिहोता	५ २०	पुयस्पथ परंपति	४ ८ ६	पुर सोमस्तुतन्वाद्रुतना	५ ७ ७
नेमिनमतिवक्ष	६ ३८	न्युत्रु पुवाचप्रमहेभरामहे	४ १५	पटापुर्णिरावसः	६ ४ ४४	परकुणासावीरघ	७ ७ १०
नेशत्तमोदुधितरोचतथौ.३	४ १५	पचजनाममद्वोत्रपता	८ १ १३	पुवेद्वनिहिते	३ ३ ३०	पुत्रुचिद्वितपति	३ ३ २३
नेहभृदरेक्ष्विन	६ ९	पचपुदगनिरुपोअन्वरोह	६ १३	पुदेपदेमेजरिभानिघाति	४ २ १५	परस्याअधिसंवतः	६ ५ २६
नेतावदुन्येमस्तोयथेमे	५ ४ २७	पचपादपितरद्वादशाकृतिर	३ १६	पुदेवस्तुनमसाव्यत.	४ ४ ३५	पराकात्तचिदद्विवः	६ ६ २०
नेतावदेनापुरोजुन्यदक्षि	७ २८	पचारिचक्रपरिवर्तमाने	२ १६	पुदेवस्तुमीक्षुप	६ ७ ११	परागावोयवसंकाचिदाष्ट	५ ७ ३३
न्यक्रुत्न्यायिनोमध्रवाच.	५ २ ९	पुजेवचवैजार	८ ६ २	पषावखेपुठरुपा	३ ३ ३०	पराचिच्छीयाववृजुखड्ड	३ १ १
न्यक्रदयजुपुयतेपुनं	८ ५ २०	पुतगमकमसुरस	८ ३५	पुनाच्यतदक्षिना	४ ७ २१	पराणुदस्ममघवक्रुमित्राभ	३ २१ २५
न्य१मिजातवैदसंधाता	४ १ १४	पुतगोत्राचमनसा	८ ३५	पन्यपन्यमित्सोतारः	५ ७ २१	परादेहिनामुल्य	८ ३ २५
न्य२मिजातवदैसहोत्रवा	४ १ २०	पतातिकुडुणाच्या	१ २ २७	पन्यआदेर्विरच्छता	६ ३ ४	परायदेवावृजिनं	८ ४ ७
न्य३नेनव्यसावचः	६ ३ २२	पतिर्भेववृत्रहन्सूतनां	३ २ ८	पन्यइदुपेगायत	६ ३ ३	परापूर्वपासुख्यवृणकि	४ ७ ३३
न्य४म्वतोववाति	८ १ २५	पतिर्यध्वराणां	१ ३ २९	पन्यासंजातवैदसं	४ ५ २१	पराभेयतिधीतयं	१ २ १९
न्य५न्यस्यधनि	१ २ ३१	पुतोजगारप्रत्यचे	७ ७ १७	पुपुसेन्यमिद्वत्वेखोने	४ २ २	परायतीनामन्वेतिपाथः	१ ८ २
न्य६इदुस्यनिघ्नं	६ ३ १	पतीवत सुताडुमे	६ ३ २५	पुप्रायक्षांमिद्विस्तोव्यु	४ ६ २	परायतीमातरं	३ ५ २५
न्य७सौदेवीस्वधितिर्निही	४ १ ३३	पतीवपुण्ड्रति	२ १ १	पयस्स्तुलोरोपेधयः	७ ६ २५	परायाहिमघवन्	३ ३ १९
न्यासिच्यदिछीनिग्नस	१ ३ ३	पुयएकःपीपायुतस्करोय	६ २ ३६	परंशुयोमनुपरेहि	७ ६ २६	परावतोयेदिधियत	८ २ ३

मंत्रः	अष्ट.	अ.	वर्ग.	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग.	मंत्र	अष्ट.	अ.	वर्ग.	मंत्रः	अष्ट.	अ.	वर्ग.
परिवृत्तनासित्यानुदेथा	१	८	९	परिणोवृणजज्ञवा	६	४	७	परिप्रापुरस्ताव	४	८	२०	परिवाराण्यव्या	४	८	२०
परवीरासप्तन	४	३	२६	परिणोद्वेतीरुद्रस्यवृज्या	२	७	१८	परिप्रजातु क्रत्वा	१	५	१३	परिविश्वविचेतसा	६	८	१०
पराव्यक्तोऽक्षुप.	७	२	२६	परिचंघिपणीतरां	४	८	१७	परिप्रधुन्वेद्रायसोम	७	५	२०	परिविश्वानिसुधिता	३	१	१०
पराशुश्रयासोयव्या	२	४	४	परितेजिन्युपोयथा	७	४	२७	परिप्रयतेव्यसुयंसदं	७	२	२०	परिविष्टजाहुपविश्वतर्सी	८	१	११
पराशृणीहितपसा	८	४	७	परितेदुळमोरयो	३	५	९	परिप्रसोमतेरसे.	७	२	१५	परिवृक्तेवपतिविद्यं	८	५	२१
पराह्वयस्त्रिरह्व	१	३	१८	परिस्मनमित्तु	३	५	४	परिप्रासिज्यदत्तवि	६	८	३	परिवोविश्वतोदधे	७	७	१
पराहिमेविमन्यव.	१	२	१६	परित्यह्वेतहरि	७	४	२४	परिप्रिय. कुलदो	७	४	७	परिपद्यंरंणस्यरेवणो	५	२	६
पराह्विद्रधावसि	८	४	१	परिप्रिधातुरध्वर	६	५	१५	परिप्रियादिव. कुवि.	६	७	३२	परित्यसुवानोअक्षाः	७	४	२३
परिकोशमधुश्रुतं	७	५	६	परिप्रिध्याध्वर	३	५	१५	परियत्कवि काव्या	७	४	४	परित्यसुवानोअव्ययं	६	४	२३
परिक्षितापितरां	८	२	१०	परित्वासिर्वणोतिरे	१	१	२०	परियत्काव्याकवि	६	७	२८	परिष्कृतासुदंदवः	६	८	२९
परिचिन्मतोद्विण	७	७	२७	परित्वाधुपुरेव्यं	८	४	९	परियादिद्रोदसीडुमे	१	३	२	परिष्कृतासुदंदवः	७	१	३
परिणशर्मयन्त्या	६	८	३१	परिद्व्यानिमर्दवात्	६	८	४	परियदेपुमेको	१	५	१२	परिसतिर्नवाजुः	७	५	६
परिणितामतीना	७	५	६	परिदेवीरनुस्वधाः	७	५	६	परियोरुदिमनादिवः	६	२	२४	परिसन्नैवपशुमति	७	४	२
परिणोअधमश्चवित्	७	१	१८	परिद्युक्षसहसः	७	२	२५	परियोरुदसीडुमे	६	८	८	परिसुबानश्चक्षे	७	५	१२
परिणोदेववीतये	७	१	११	परिद्युक्ष सनद्रधि.	७	१	९	परिवाजपति. कुविः	३	५	१५	परिसुबानासुदंदव.	६	७	३४
परिणोयादस्सुयुः	७	१	३९	परिधामानियानिते	७	२	७	परिवाजेनवाजुयुं	७	१	३३	परिसुबानोगिरिष्ठाः	६	८	८

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र
-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------

मंत्र

पर्वस्वजुनयुधिपं.

पर्वस्वदक्षसाधनः

पर्वस्वदेवमादन.

पर्वस्वदेववीतये

पर्वस्वदेववीरति

पर्वस्वदेवायुपक्

पर्वस्वमधुमत्तमहृद्राय

पर्वस्ववाचोअग्रिय

पर्वस्ववाजसातये

पर्वस्वविश्वचर्पणे

पर्वस्ववृधहन्तम

पर्वस्ववृष्टिमासुनं.

पर्वस्वसोमकतुवित्

पर्वस्वसोमकवेदक्षाय

पर्वस्वसोमद्विन्येपु

पर्वस्वसोमदेववीतये

पर्वस्वसोमहृद्रीसुधार

पर्वस्वसोममधुमन्त्रतावा

पर्वस्वसोमसदयन्

अष्ट. अ. वर्ग

७ २ ७

६ ८ १५

७ ३ ९

७ ५ १०

६ ७ १८

७ १ ३४

७ ५ १७

७ १ २८

७ ४ २८

७ ५ १६

७ २ ७

६ ८ १४

७ १ ६

७ ३ २१

७ ५ २०

७ ३ १६

७ २ २४

७ ५ २०

७ ८

७ २ १६

मंत्र

पर्वस्वदेवायुपक्

पर्वस्वमधुमत्तमहृद्राय

पर्वस्ववाचोअग्रिय

पर्वस्ववाजसातये

पर्वस्वविश्वचर्पणे

पर्वस्ववृधहन्तम

पर्वस्ववृष्टिमासुनं.

पर्वस्वसोमकतुवित्

पर्वस्वसोमकवेदक्षाय

पर्वस्वसोमद्विन्येपु

पर्वस्वसोमदेववीतये

पर्वस्वसोमहृद्रीसुधार

पर्वस्वसोममधुमन्त्रतावा

पर्वस्वसोमसदयन्

अष्ट. अ. वर्ग

७ १ ३४

७ ५ १७

७ १ २८

७ ४ २८

६ ८ ३३

७ ५ १६

७ २ ७

६ ८ १४

७ १ ६

७ ३ २१

७ ५ २०

७ ३ १६

७ २ २४

७ ५ २०

७ ८

७ २ १६

मंत्र

पर्वस्वसोममहान्समुद्र

पर्वस्वाहोअदोभ्य.

पर्वस्वेदोपवमान

पर्वस्वेदोष्टपासुत

पुवित्रतेवित्त

पुवित्रवत् परिवाच

पुवित्रेभि. पर्वमान

पर्वीतार पुनीतन्

पुहुनं. सोमरक्षसि

पुशन्नचित्रासुभगा

पुश्वापुरस्तादिधुरात्

पुश्चेदमन्यदभवत्

पश्यन्नन्यस्याअतिथि

पुश्चान्तुयुग्रा

पुश्चायत्युश्चावियुता

पांतमावोअंधस.

अष्ट. अ. वर्ग

७ ५ २०

७ १ १६

७ ४ १०

७ १ २३

७ ३ ८

७ २ २९

७ ४ १५

६ ७ २२

७ १ २

७ ६ २६

८ ४

८ ८

८ ७

१ ५

८ १ २८

६ ६ १५

मंत्र

पांतिमित्रावरुणावबुधात्

पाकत्रास्थनदेवा

पाकं पृच्छामिमनसावि

पातनोरुद्रापायुभि.

पातावृत्रहासुत

पातासुतमिद्रोअस्तुसो

पातासुतमिद्रोअस्तुसो

पातिम्रियरिपोअग्रपदवे.

पारावतस्यरातिपु

पार्युह्राण प्रस्कण्व

पुवकययश्चितयत्याकृपा

पुवकवर्चा शुक्रवर्चा.

पुवकशोचेतवृहिक्षयंपरि

पुवकान. सरस्वती

पुवसानीयोअध्वेति

पार्वीरवीकन्याचित्रायुः

॥ ४९ ॥

कोशः

॥ ४९ ॥

मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
पार्वीरवीकुन्याचित्रायु	८	२	११	पितृश्रिद्वयर्जनुपविचेद	२	८	१४	(पित्रां पिबेदिन्द्रश्चर)	२	५	६
पाहिगायार्धसोमदे	६	३	७	पितृ प्रवत्यजन्मना	१	६	१३	पित्रां पिबेदिन्द्रश्चर	७	७	७
पाहिर्नद्वद्रसुदुत	२	१	१७	पितृवैपुत्रमभिभः	८	२	२०	पित्रावर्धस्वत्तवधासुतासं	३	२	१९
पाहिनोअभ्रपृकया	६	४	३३	पितृवैचिद्रं सवर्जुसर्मसं	३	२	७	पित्रासुतस्वरसिनं	५	७	२५
पाहिनोअभ्रेपायुभि	२	५	१०	पितृवैलपुमस्तं सुदानं	१	५	७	पित्रासोममभियमुत्तदं	४	६	१
पाहिनोअभेरक्षसं	१	३	१०	पितृवैनोआदितीराजपुत्रा	२	७	७	पित्रासोममिन्द्र	२	१	१८
पाहिनोअभेरक्षसो	५	१	२५	पितृवैतुमातहतसं	७	८	७	पित्रासोममिन्द्रमर्दतु	५	३	५
पाहिविषसाद्रक्षसोअरा	६	४	३३	पितृवैअशुर्मद्योन	३	६	८	पित्रासोममर्वायुक	६	६	३०
पितायज्ञानामसुरोविपु	२	८	२०	पितृवैहिद्वैवाङ्गना	७	५	३०	पित्रासोममहृते	८	६	२०
पितायस्वाहुहितरं	८	१	२७	पितृवैतर्धर्ममधुमतमश्चि	६	६	१०	पित्रासोममहृते	६	५	२८
पितृस्त्रोपमहो	२	५	६	पितृवैतचतुष्पुतचाचंगच्छ	६	३	१५	पित्रासोममहृते	२	१	२२
पितृयुतोततुमिव	८	८	३०	पितृवैतुसोममधुमतमश्चि	६	६	१०	पित्रासोममहृते	२	५	२३
पितृर्नपुत्र सुस्तोदुरोण	६	१	३४	पितृवैतुमिद्रोअर्थमा	६	६	२८	पित्रासोममहृते	२	२	२३
पितृर्नपुत्रा क्रतु	१	५	१२	पितृवैतुमिद्रोअर्थमा	७	५	२१	पित्रासोममहृते	४	५	१२
पितृमाचुरध्यायेसु	७	२	२९	पितृवैतुमिद्रोअर्थमा	६	३	४	पित्रासोममहृते	८	६	२०
पितृक्षगर्भजनिद्रुअवज्जे	२	८	१४	पितृवैतुमिद्रोअर्थमा	५	७	१५	पित्रासोममहृते	७	७	१८

अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
५	६	१३	पितृवैअशुर्मद्योन	५	६	१३
३	७	९	पितृवैअशुर्मद्योन	३	७	९
८	७	१९	पितृवैअशुर्मद्योन	८	७	१९
६	२	३९	पितृवैअशुर्मद्योन	६	२	३९
१	५	१३	पितृवैअशुर्मद्योन	१	५	१३
७	२	१८	पितृवैअशुर्मद्योन	७	२	१८
८	३	२८	पितृवैअशुर्मद्योन	८	३	२८
१	६	२५	पितृवैअशुर्मद्योन	१	६	२५
२	८	२	पितृवैअशुर्मद्योन	२	८	२
७	७	१	पितृवैअशुर्मद्योन	७	७	१
७	७	१	पितृवैअशुर्मद्योन	७	७	१
८	४	४	पितृवैअशुर्मद्योन	८	४	४
८	६	७	पितृवैअशुर्मद्योन	८	६	७
८	१	२३	पितृवैअशुर्मद्योन	८	१	२३
८	१	१९	पितृवैअशुर्मद्योन	८	१	१९
७	७	१	पितृवैअशुर्मद्योन	७	७	१

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग
पुनर्वेदेवार्धदुः	८ ६	पुनानोरूपेभ्यर्थे	८ ८	पुरुवाचिबिवावरा	५ ५	पुरुतमपुरुणास्तोत्राणां	५ ७
पुनार्तादक्षसार्धनं	७ ५	पुनानोवरिवच्छधि	७ १	पुरुवाहिसुद्वसि	५ ३	पुरुयत्तद्वसुतुन्या	५ २
पुनार्तिपतिभुतं	६ ७	पुनोर्वेवामर्क्षसमनीपां	५ ६	पुरुवाहिसुद्वसि	६ ३	पुरुवाहोमासुधामा	५ ३
पुनान कुलशेषा	६ ७	पुमोएनतसुतुवत्	५ ७	पुरुवादाश्रान्वोचे	२ २	पुरुणाचिच्छसि	५ ७
पुनान सोमजागृविः	५ १	पुरदराक्षितवन्नहस्ता	५ १	पुरुद्वप्साभजिमंत सुदा	५ ३	पुरुवपीस्यभिजावधाना	५ ८
पुनान.सोमधारेया	५ ३	पुरनष्टण्णवारुज	५ ३	पुरुद्वियाणकुतये	५ ७	पुरोगाअग्निद्वानां	५ ७
पुनान सोमधारेया	५ ५	पुरं सद्यद्व्याधिभे	५ १	पुरुमंदापुरुवर्ष	५ ८	पुरोबितीचोअधंसः	५ ७
पुनानहृद्वामर	५ ७	पुराभेदुरितेभ्यः	५ ३	पुरं पुरुवेदसर्व	५ ८	पुरोवोमंदद्विव्यसुवृकि	५ १
पुनानहृद्वामर	५ ७	पुराणमोर्कं सुख्यं	५ ३	पुरुद्वतस्यधामभि.	५ ३	पुरोळाअमेपच्यत.	५ ३
पुनानहृद्वेपां	५ ७	पुराणावावीर्यां प्रववा	५ ३	पुरुद्विवापुरुमुजाद्वेपां	५ ३	पुरोळाहृत्तुर्वशोयधुं	५ ३
पुनानश्चमृजनयन्	५ ७	पुराणाअनयेनतं	५ ३	पुरुद्वतोय पुरुद्वतं.	५ ३	पुरोळाअचनोघसो	५ ३
पुनानासंश्चमृपदः	५ ७	पुरायस्वस्तमसोअपीतिः	५ ३	पुरुद्वतपुरुद्वतं	५ ३	पुरोळाअचनोघसः	५ ३
पुनानेतुन्यामिय.	५ ७	पुरासंवाधाद्व्यावधुस्व	५ ३	पुरुणिद्वसोनिर्दिणानि	५ ३	पुरोळाअचनोघसः	५ ३
पुनानोर्धक्रमीद्वमि	५ ७	पुराभिद्वुर्वाकविः	५ ३	पुरुणिद्वसोनिर्दिणानि	५ ३	पुरोळाअचनोघसः	५ ३
पुनानोर्धवर्वातये	५ ७	पुरीण्यासोअस्य.	५ ३	पुरुण्यनेपुरुवात्वाया	५ ३	पुरोळाअचनोघसः	५ ३
पुनानोर्धातिहृतः	५ ७	पुरुकुत्सानीहिवामदाशय	५ ३	पुरुतमपुरुणाभी	५ ३	पुरोळाअचनोघसः	५ ३

मन्त्र	अष्ट. अ. वर्गः	मन्त्र	अष्ट अ वर्गः	मन्त्र	अष्ट अ वर्गः	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्गः
पुष्टिर्नैर्वाक्षितिर्नै	१ ५ १	पूयहोतस्वतो	१ २ २०	पुष्टेताविष्ठा सुवनाववक्षि	२ ७ १९	प्रहसुयोदतमिषुवाच	३ ७ १
पुष्ट्याक्षेभैर्अभियोगेभवा	४ २ ८	पूयणन्व जाक्ष	४ ८ २१	पुष्टोचपु पितृमान्	२ २ ८	प्रकुविद्वैर्वीतये	६ ८ १०
पर्वोपरचरतो	८ ३ २३	पूयवतेतेचक्रमा	३ ३ १८	पुच्छामित्वापरमतृयि	२ ३ २०	प्रकारवोमननावच्यमा	२ ८ २६
पर्वोपुपसुहवपुरुस्पृह	६ २ ५	पूयवतेमरुत्वते	२ २ ११	पुच्छेतदेनोवरुणद्विदक्षूपो	६ ६ ८	प्रकाव्यामुशनेव	७ ४ १२
पूवोमनुमिदिशयाति	७ ५ २४	पूयन्तवद्यतेव्य	४ ८ २०	पूणीयादिआधमानाय	८ ६ २२	प्रकृतान्वृजुपिण	६ ३ १
पूवोमनुप्रयति	२ १ १२	पूयमनुप्रगाहृदि	४ ८ २०	पूयवप्रायन्प्रथमा	७ ८ २७	प्रकुष्टिहेवदापयति	७ २ २५
पूवोविश्वस्वाङ्गुवना	२ १ ४	पूपागाबन्वेतुन	४ ८ १९	पूयपाजाअमत्यः	३ १ २८	प्रकुजुनोदृहतायीति	७ ६ ३
पूवोभिर्हिदेदाशिम	१ ६ १२	पूपात्येतश्रयावयतु	७ ६ २३	पूथुकरत्तावहृलागभस्ती	४ ६ ७	प्रक्षोदेसाधार्यसासन्न	५ ६ १९
पूवोस्त्वनिपिपथो	३ ३ १५	पूपात्येतोनयदुहस्तगृह्य	८ ३ २५	पूथुरथोदक्षिणाया	२ १ ४	प्रगायताभ्यर्चाम	७ ४ ११
पूवोस्त्वहृशरदंशशमाणा	२ ४ २२	पूपाजाननमाधृणि	१ २ १०	पूदाकुमानुर्यजुतोगवेपण	६ १ २४	प्रगायत्रेणगायत	७ १ १७
पूवोस्तिद्विस्वरातय	१ १ २१	पूपाविष्णुर्हवनमे	६ ४ २४	पूपदक्षामरुत पृथि	१ ६ १९	प्रधान्वचसमहृतोमुहानि	२ ६ १५
पूवोरुपस शरदंश	३ ६ २	पूपासुवयुद्विवापृथि	४ ८ २४	पूपेमेध्येभातरिस्थनि	६ ४ २४	प्रचक्रुसहसासह	५ ७ ३०
पूवोस्तिद्विस्वलेतुविकर्मना	६ ४ ५०	पूपाआशुगभर्जवेद	७ ४ ५०	पूष्टोद्विवाच्युभि इयि	५ २ ७	प्रचर्पणिभ्य पृतनाहवेपु	१ ७ २९
पूवोपृष्टद्वोपमातय.	६ ३ २५	पूपाश्चरुनरिप्यति	४ ८ १९	पूष्टोद्विपिपृष्टाभि.	१ ७ १९	प्रचिन्मकंणतेतुराय	५ १ ८
पूवोमधुरजस्तो	२ १ ७	पूपाप्रयजोद्विण सुवाच.	३ १ २	पूराचिखुद्वसुत	४ ४ १३	प्रचेतसस्वाकवे	६ ७ १२
पूवोदेवामवजुसु	१ ६ ३१	पूपाक्षस्युष्णोमरुपसूनस	४ ५ १०	पूरोअक्षस्यपुरुद्वद्वाम	६ ४ ३७	प्रच्यवीनाजुजुप	४ ४ १३

मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट	अ.	वर्ग
प्रजानमृतेतव्योनिं	८	४	२०	प्रतआशव पवमान	७	३	१२	प्रतितेदस्यचेष्टक	६	४	२७	प्रतियदापोअहंश्रं	७	७	२६
प्रजापतिर्महमिता	८	८	२७	प्रतआश्विनी पवमान	७	३	१२	प्रतित्यचारमभ्वर	१	१	३६	प्रतियस्यानीथादाशुं	१	७	१८
प्रजापतेनत्वद्वेतानिं	८	७	४	प्रतद्वद्रूपव्याणिप्र	८	६	१३	प्रतित्वाहुहितदिवः	५	६	१	प्रतिवपुनानमसाहमेभि	२	४	११
प्रजाभ्यं पुष्टिविभजत	२	६	१०	प्रततेअद्यक्षिपिषिष्टुनाम	५	६	२५	प्रतित्वाथसुमनसोऽनुधंत	५	५	२५	प्रतिवारथनुपतीजुरधै	५	५	१२
प्रजामृतस्यपिप्रत-	५	८	९	प्रततेअधाकरणकृतभूत	४	६	६	प्रतिवाशवुसीधदत्	६	३	४२	प्रतिवासूरुदितेभिन्न	५	५	९
प्रजावृतावचसा	१	५	२४	प्रतहु शीमेपृथवाने	८	४	२८	प्रतित्वास्तोमैरीळतेवासिं	५	५	२३	प्रतिवासूरुदितेसूक्तै-	५	५	७
प्रजावती सूर्यवसं	४	६	२५	प्रतद्विष्णुस्तवते	२	२	२४	प्रतिश्रुतानामरुपासोअ	५	५	२२	प्रतिवोष्टुपदजय	६	१	३७
प्रजाहतिबोअत्यायमी	६	७	८	प्रतद्वोच्युभय्याये	२	१	१७	प्रतिश्रुतानाभरत	३	३	१८	प्रतिश्रुतायवोभुपत्	६	३	१
प्रजिह्वयाभरतेवेप.	८	१	२	प्रतमिद्वनशीमहि	५	८	१०	प्रतिनृस्तोमत्वष्टाजुवेत	५	३	२७	प्रतिपीमभिर्जरतेसमिद्ध	५	५	२५
प्रणद्वेदोमहेतने	७	१	१	प्रतव्यसीनव्यसीं	२	२	१२	प्रतिश्रुणामसुरस्यविद्वावृ	४	३	३	प्रतिष्टोभतिसिधंव पुत्रि	२	४	७
प्रणद्वेदोमहेरणे	७	२	९	प्रतव्यसोनमडांक्तितुरस्यं	४	२	२१	प्रतिप्रयादीडमीळुपोनुनृ	४	४	९	प्रतिप्यासनरीजनीं	३	८	३
प्रणीतिमिद्वेद्व्यश्च	८	५	२४	प्रतार्यायुं प्रतुर	८	१	२२	प्रतिप्राश्रव्योद्वत.	६	२	३९	प्रतिस्तोमैभिरुपसवसिष्ठा.	५	५	२७
प्रणुत्वाविप्रमध्वरेपुसाशु	३	८	१३	प्रतार्यामिद्वैभमत	३	५	१	प्रतिप्रियतेमुरयं	४	४	१५	प्रतिस्पशोविरुज	३	४	२३
प्रणुत्वारुचस्योअच्छं	६	१	२१	प्रतिकृतेव प्रथमअद्वश्रन्	५	५	२५	प्रतिब्रवाणिवृत्तयेते	८	५	३	प्रतिस्त्रेथातुजयक्षिरेवै	५	७	६
प्रणोद्वीसरस्वती	४	८	३०	प्रतिश्रोणाभेतानाम्	२	४	९	प्रतिमद्राअद्वक्षत	३	८	३	प्रतीचीनेमामहंति	७	६	२८
प्रणोधान्वक्विद्वद्व.	७	३	४	प्रतिचक्षुविचक्षद्वद्व	५	७	९	प्रतिमेस्तोममद्वितिर्जगृ	४	२	१७	प्रतुद्ववपरिकोशं	७	३	२२

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	म
-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	-------	---------------	---

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
प्रतिज्ञेनेवसिधंव	६ ८	७ प्रपीपयवृपमृजिन्ववाजा	३ १ १५	प्रबोधयोप पृणतो	२ १	८ प्रसिन्नयोर्वेक्षणयो	५ ५	८	५ ८
प्रनुयदैपामहिनाचि	२ ५	५ प्रपुनानस्यचेतसा	६ ८	६ अग्रह्याणिनभाकृवत्	६ ३	२४ प्रसिन्नायप्रार्थ्यगो	६ ७	६	५ ७
प्रनुवयसुतेयातेकृतानि	४ १	२६ प्रपुनानायेधसे	७ ५	६ प्रमृह्याणोअगिरसोनक्षत	५ ४	९ प्रमेनमीसाव्यङ्ग्ये	८ १	६	५ ६
प्रनुवोचासुतेपुवा	४ ८	२५ प्रपुतास्त्रिमशोचिये	१ ५	५ अग्रहोतुसदनाइतस्य	५ ४	१ प्रमेपयादेवयानाअटश्रन्	५ ५	२३	५ २३
प्रनूनजातवदसं	८ ८	४६ प्रपुवेजेपितरानव्यसीसि.	५ ४	२० प्रमृगीक्षरोमधवर्वातुवीमव	६ ४	९ प्रमेविक्किंकाविदन्	३ ६	२	५ २
प्रनूनजायतामय	८ २	२ प्रपुणवृणीमहे	५ ७	३२ प्रमृगदुर्मतीना	६ ४	४ प्रयतमित्परि	२ २	२२	५ २२
प्रनूनधावतापृथक्	६ ७	५ प्रप्यायस्त्रप्रस्यदस्व	७ २	१८ प्रमेतोरयगच्च्यंत	५ ७	३ प्रयतिश्रुज्ञविपर्यतिवृद्धि.	५ ३	३	५ ३
प्रनूनवह्णस्पर्तिः	१ ३	२० प्रप्रक्षयायुपन्यसे	६ ७	३२ प्रमृजयतमहां	८ १	१ प्रयंरायेनिनीपसि	६ ७	१३	५ १३
प्रनूमीहित्वंष्टुपमस्य	१ ४	२५ प्रप्रपुणस्तुविजातस्य	२ २	२ प्रमृओतुव्यस्तुदानवः	६ ६	४ प्रयतुवाजास्ताविपीमिरुम	३ १	२६	५ २६
प्रनूसमर्तु शवसा	१ ५	८ प्रप्रवर्द्धिष्टुमसिप	६ ५	५ प्रमृदितैपितुमर्दयता	१ ७	१ प्रयअर विातिपुष्टस्यधासे.३	५ १	१	५ १
प्रनेमीस्मिन्दृशो	८ १	६ प्रप्रायममिर्भरतस्यश्रुवे	५ २	११ प्रमहिष्टायगायत	६ ७	१४ प्रयज्ञपेतुहेत्वोनससि.	५ ४	१०	५ १०
प्रनोयच्छत्वर्यमा	८ ७	२९ प्रप्रवोयस्त्रस्य	२ १	१७ प्रमहिष्टायवृद्धतेबृहदये	१ ४	२२ प्रयज्ञपुत्वानुपक्	४ १	२०	५ २०
प्रपथेपुथामजनिष्ट	७ ६	२४ प्रप्रव्रवैवृपुभायश्चितीचे	२ ७	१७ प्रमन्महेशवसानाय	१ ५	१ प्रयज्यवोमस्तोअजंष्टयः४	३ ३	१७	५ १७
प्रपर्वतानासुशतीडपस्था	३ ३	१२ प्रवाहवासिस्तज्जीवसेन.	५ ५	४ प्रमस्तु प्रतरगुदं	८ ३	१४ प्रयत्तेभमेसूरय.	१ ७	५	५ ५
प्रपर्वमानधन्वसि	६ ८	१४ प्रबुद्ध्यावर्द्धतेमहसि	५ ५	४ प्रमात्राभीरिरिचे	३ ३	१० प्रयस्पितु परमात्	२ २	८	५ ८
प्रपत्स्याइ मदिर्तिसिधुम	३ ८	६ प्रबोधयोपोअश्विना	५ ५	३३ प्रमायुयुजेप्रयुजः	७ ८	१ प्रयसिन्धव प्रसुवंयथाय३	३ २	२०	५ २०

मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.	वर्ग
प्रयदुमे सहस्रत.	१	७	५	प्रया सिञ्चतेसुर्यस्ये	७	८	६	प्रराजावाचजनयन्	७	३	३
प्रयद्वित्यापरावते.	१	३	१८	प्रयुजतीद्विषयंतिब्रुवाणा	४	३	१	प्ररुदेणययिनायति	८	४	२३
प्रयद्वित्यामहिनामृम्यो	२	४	१४	प्रयुजोवाचोर्वेप्रिय.	६	७	२८	प्ररेभण्यतिवार	७	३	१८
प्रयद्वेदिएया	१	७	५	प्रयेगावोनमूर्णय	६	८	३१	प्रव पातमधसो	२	२	२५
प्रयद्वयेपुष्टपतीरयु	१	६	५	प्रयेगुहादमेमदुस्त्वाया	५	२	२८	प्रवः पातरुधुमन्यवो	२	१	१
प्रयद्वंखिपुभमिप	५	८	१८	प्रयेजातामहिनायेचनुस्व	४	३	३३	प्रव शधीयघृत्वये	१	३	१२
प्रयद्वहृध्वेमस्त	८	३	११	प्रयेद्विचोवृद्धतःशृण्विरे	४	४	३३	प्रव शुनायमानवेभरध्व	५	२	५
प्रयद्वहेयमहिनारयस्य	२	४	२४	प्रयेद्विव पृथिव्यान	८	३	१०	प्रवः शसायदुह	६	२	३३
प्रयद्वमित्रावरुणास्पृध्व	५	१	१०	प्रयेधामानिपूर्य्यण्यर्चा	३	८	६	प्रव सखायोभूमये	४	५	२५
प्रयमृतद्वपसुवास	७	८	२३	प्रयेमित्रप्रार्थमाण	८	४	१५	प्रव सताजयेष्ठतमाय	२	६	१७
प्रयावोपेष्टगवाणेनशोभे	१	८	२२	प्रयेमेबध्वये	४	३	१०	प्रव स्पळकनसुवि	४	३	२४
प्रयाजान्मेभनुयाजान्	८	१	११	प्रयेयुष्टुर्वकासोरयाइव	५	५	२१	प्रवद्वद्रायापायत	६	६	१२
प्रयाजिगातिपुगेवृनक	५	७	८	प्रयेवसुम्युईवदानमोदु	४	३	३	प्रवद्वद्रयवृद्धते	५	६	१२
प्रयातशीभमाशुभि	१	३	१४	प्रयेशुभतेजनयो	१	६	९	प्रवद्वद्रयमादनं	५	३	१५
प्रयाभियासिद्धाश्वासम	५	६	१४	प्रयोननसुभूम्यो	६	४	१९	प्रवजुत्रायनिष्टे	६	३	२
प्रयामहिन्नामहिनासुवे	४	८	३२	प्रयोवाभिन्नावरुणा	६	७	६	प्रवपुकोमिमय	२	७	११

मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ.	वर्ग
प्रवाजमिदुरिष्यति	६	८	२५	प्रवेपयतिपवैतान्	१	३	१८	प्रवोयुहपुरुणा	१	३	८
प्रवाताइवदोवंत.	८	६	२६	प्रवोत्रावाण सविता	८	८	३३	प्रवोरयिक्तार्थभरध्व	४	२	१३
प्रवातावातिपतर्यतिविद्यु	४	४	२७	प्रवोच्छरिरेचेदेव्यु.	७	७	२९	प्रवोवाजाअभिधव	३	१	२८
प्रवामर्धासिमर्धान्यस्थु	५	५	१४	प्रवोद्विवायामये	३	१	१३	प्रवोवयुरथयुजकुणध्व	४	२	१४
प्रवामर्चयुविधन	३	१	११	प्रवोद्विवाचित्सहसानमग्नि	५	२	१०	प्रवोवायुरथयुज	८	२	७
प्रवामवोचमध्विनाधिय	३	७	२१	प्रवोधिरोमद्रुव.	७	३	१५	प्रशतमावरुणदीधितीगी.	४	२	१७
प्रवामश्रोतुसृष्टिः	१	१	३३	प्रवोअियंतद्वदव.	१	१	२६	प्रशसमानोअतिधिर्नमि	६	१	३०
प्रवायुमच्छविद्वृतीर्मनी	४	८	५	प्रवोमरुतस्तविपाउदन्य	४	३	१४	प्रशसागोव्वह्य	१	३	१२
प्रवाद्युजेसुप्रयावाहिरेपा	५	४	६	प्रवोमहीमरर्मतिकुणध्व	५	४	२	प्रशर्धाआतेप्रथम	३	३	१४
प्रविश्वसामच्चग्रिवत्	४	१	१४	प्रवोमहेमृतयोग्यतुविष्ण	४	४	३३	प्रशर्धाद्यमरुतायुस्वभान	४	३	१४
प्रविष्णवेशूपमेतमन्म	२	२	२४	प्रवोमहेमर्दमानायाधस.	८	१	९	प्रशुक्रासोचयोजुव	७	२	६
प्रवीरसंग्रविचिचि	६	४	१७	प्रवोमहेमहिद्वधेभरध्व	५	३	१६	प्रशुक्रदेवीर्मनीपा	५	३	२५
प्रवीरयाशुचोदद्विरेवा	५	६	१२	प्रवोमहेमहिनमो	१	५	१	प्रशुच्युववरुणायुमेष्टा	५	६	१०
प्रवीरायप्रतवसेतुराय	४	८	७	प्रवोमहेसहसा	२	१	१३	प्रशोचत्साउपसो	८	४	१६
प्रवृण्वतोअभियुज.	६	८	११	प्रवोमित्रायगायत	४	४	६	प्रश्यावाश्चधृणया	४	३	८
प्रवेधसेरुवथेवेद्याय	४	२	७	प्रवोयुसेपुदेव्यतोअर्चन्	५	४	१०	प्रश्रेनोनमद्विरमंशुमस्मै	४	६	१०

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
प्रसीमादित्योऽर्चजत्	२ ७ १	प्रसूनवक्त्रभूणा	८ ८ ३३	प्रसोमोऽतिधारया	६ ८ २०	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुगमताधियसानस्य	७ ७ २९	प्रसूनपुष्पध्वर	६ २ ३१	प्रस्तुमैदृणाभनवन्न	२ ४ २	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुज्येष्टिनिचिराम्या	२ १ २६	प्रसुमदेष्टुधरणाथमेधां	४ २ १९	प्रस्तुतिवोधाम	२ २ २३	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुन्वानस्याधस	७ ५ ३	प्रसेनानी शूरोअग्ने	७ ४ ६	प्रस्तोऽतिधारया	४ १ ३४	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुमेधागतावित	७ ४ २	प्रसोमोऽतिधारया	६ १ ३४	प्रस्तोऽतिधारया	६ १ ३४	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुवभापोमहिमानं	८ ३ ६	प्रसोमोऽतिधारया	५ ६ १४	प्रस्तोऽतिधारया	६ १ ३४	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुवानवदुरक्षा	७ २ १२	प्रसोमोऽतिधारया	७ ५ १४	प्रस्तोऽतिधारया	७ ५ १४	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुवानोअक्षा.सुहसं	७ ५ २१	प्रसोमोऽतिधारया	७ १ ३३	प्रस्तोऽतिधारया	७ १ ३३	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुवानोधारयातना	६ ८ २४	प्रसोमोऽतिधारया	७ २ ८	प्रस्तोऽतिधारया	७ २ ८	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुविश्वान्नक्षसो	१ ५ २४	प्रसोमोऽतिधारया	७ ५ २१	प्रस्तोऽतिधारया	७ ५ २१	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुश्रुतसुराधस	६ ४ १६	प्रसोमोऽतिधारया	७ ४ १६	प्रस्तोऽतिधारया	७ ४ १६	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुपविश्वयोमरतो	३ ६ १५	प्रसोमोऽतिधारया	७ ६ १५	प्रस्तोऽतिधारया	७ ६ १५	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुपुति स्तनयतस्वत	४ २ १९	प्रसोमोऽतिधारया	७ २ १९	प्रस्तोऽतिधारया	७ २ १९	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुस्तोमंभरतवाजयतं	६ ७ ४	प्रसोमोऽतिधारया	७ ७ ४	प्रस्तोऽतिधारया	७ ७ ४	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुतददप्रवताहर्णिभ्या	३ २ २	प्रसोमोऽतिधारया	७ २ २	प्रस्तोऽतिधारया	७ २ २	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७
प्रसुतोभक्षमंकरचुरौ	८ ८ २५	प्रसोमोऽतिधारया	७ ८ २५	प्रस्तोऽतिधारया	७ ८ २५	प्रसोमोऽतिधारया	५ २ ७

मंत्र
 आतयैजध्वमखिनाहिनो ५ अष्ट. अ वर्ग मंत्र
 आतयैवसिरागतं ६ ४ १८ प्रासैहिनोतमभुं
 आतयैवाणाग्रमार्जध्वं ६ ३ २१ प्रासुधाराअक्षरन्
 आतयैवाणारुयैववीरा ४ १८ प्रासुधारावृहती
 आतयैवणा सहस्कृत २ ८ ४ प्रियदुग्धनकाम्यं
 आतयैजनासुत्याधि १ ३ ३२ प्रियश्रद्धेददत्त
 आतयैजनाविबोधय ७ ८ २१ प्रियमेघवदत्रिवत्
 आतारतमातरित्वा १ २ ४ प्रियातृष्टानिमैकपि
 आतारथोनवोयोजि २ १ १० प्रियापुदानिपुश्चो
 आन्यद्युक्तमवृह.सूर्यस्य २ ६ २१ प्रियावोनार्मदुवेतुराणां
 आव स्तोतारमघवन्नव ४ १ २४ प्रियासुहृत्तमघवन्नमिधौ
 आर्वीविपद्वाचज्जमि ६ ३ १८ प्रियोनोअस्तुविश्रपति.
 आत्वेपामावृहती ७ ४ ७ प्रीणीताश्वाहितत्रयाय ८
 आत्तोदृष्योजाऊत्वेभि. ७ ८ ३ प्रदस्यवोचप्रथमाकृतानि ७
 आस्माऊर्जधृतश्रुतं ५ ८ २८ प्रेक्षाभिर्भासुवचस्या ८
 आसैगायत्रमर्चयत ५ ७ ११ प्रेतयज्यतानर.
 २ ८ १० प्रेतयज्यस्वशुभुवां

अष्ट. अ. वर्ग.
 ७ ७ २५ प्रेतोमुंचामिनासुतः
 ६ ८ १९ प्रेदमखवृत्तयैव्वाविथ
 ७ ४ १० प्रेद्वोअग्नेदीदिहिपुरो
 ४ १ ११ प्रेद्वमिवावृधेस्तोमैभि
 ८ ८ ९ प्रेरयसुरोअयून
 १ ३ ३१ प्रेष्ठसुप्रियाणां
 ८ ४ १ प्रेष्ठवोअतिथिरुणीये
 १ ५ ११ प्रेष्ठवोअतिथिस्तुये
 ५ ४ २३ प्रेहिमेहिपुथिभि.
 २ ३ ३० प्रेक्षभीहि घृणहि
 २ २१ प्रेतुवर्णस्पति.
 ५ १९ प्रेतवदत्तुमवयं
 ६ २३ प्रैपामजमपुष्टयिवी
 ६ २१ प्रैप.स्तोम.पृथिवीमृतांरं
 ५ २३ प्रोथयासीद्विदुरिदस्य
 २ ८ १० प्रोअश्विनाववसेकृणु

अष्ट अ वर्ग
 ८ ३ २४ प्रोथस्साउपस्पृति मंत्र
 ६ ३ १९ प्रोयापीतिवृणुइयमि
 ५ १ २३ प्रोतयेवरुणमित्रमिदं
 २ ८ २४ प्रोत्वेअमयोमिषु
 ७ ७ २२ प्रोयदश्वोनयवसेविष्य
 ६ ७ १४ प्रोदोणेहरयु कर्मन्मन्
 २ ५ ४ प्रोरोमिवावरुणा
 ६ ६ ५ प्रोष्टेशुयावहेशुया
 ७ १५ प्रोत्वंसेपुरोरय
 ५ २९ प्रोत्सवहि पृथ्याभि.
 ३ २० वदधुर्यश्रवसामहजसि
 ४ २९ वणमहजसि सुयं
 ६ १३ वतोवतासियमनैव
 २ १९ वृत्रवेजुस्वतवसे
 ३ १५ वृत्राण.वृनोसहसोव्यथोत्तर
 ५ वृत्रेकोविपुणःसुनरं ६ ७ ३६
 ८ १४ २ ३६

मंत्र.	अष्ट.	अं.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट.	अं.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट.	अं.	वर्ग	मन्त्र	अष्ट.	अं.	वर्ग
यार्हं प्राचीनमोर्जसा	६	६	२४	विमंतिं चार्हं विद्वन्नामं	७	५	२१	बृहस्पतेर्येते	२	६	१	बृहस्पतेः प्रातिमेदेवता	८	५	१२
यार्हं चोयस्त्वपुलाय	१	६	४	विमंतिं चार्हं विद्वन्नामं	१	२	१८	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	८	६	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	८	२	२३
यार्हं पुनः पितरं जती	७	६	१७	वीमंतिं चार्हं विद्वन्नामं	८	७	१७	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	७	७	१७	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	३	७	२४
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	३	३	२२	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	६	३	२	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	३	३	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	५	३	२२
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	८	५	२२	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	१	४	२५	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	३	३	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	५	३	२३
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	५	५	१९	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	३	८	१३	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	७	७	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	१	७	२४
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	५	१	१९	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	३	८	१३	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	७	७	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	३	२	१६
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	८	७	१९	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	३	८	१३	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	७	७	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	३	२	१६
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	८	४	२३	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	५	४	२०	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	८	४	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	३	४	१५
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	२	२	२	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	४	४	२१	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	८	४	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	३	४	१५
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	४	४	२८	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	४	४	२२	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	५	४	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	३	४	१५
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	४	८	२५	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	५	४	२८	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	२	४	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	८	४	११
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	६	४	४३	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	४	१	८	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	३	४	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	८	४	११
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	४	७	२७	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	६	१	२८	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	२	७	१	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	६	३	१६
वर्धयेद्विद्वन्पुनो	६	३	४७	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	८	३	१५	बृहस्पतेर्गोर्भरेषु	८	५	२	बृहस्पतेः प्रथमवाच.	८	३	१६

मंत्रः	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्रः	अष्ट.	अ.	वर्ग	मंत्रः	अष्ट.	अ	वर्ग	मंत्रः	अष्ट.	अ.	वर्ग
ब्रह्मणस्पतेर्वसुस्य	२	६	३२	ब्राह्मणादिद्राघस-	१	१	२८	भद्रमनं कृणुष्ववृष्ट्यै	६	१	३२	भरययुसुभरतभारं	८	५	१५
ब्रह्मणस्पतेर्वसुस्ययुता	२	७	३३	ब्राह्मणासौ अतिरात्रेनसो	५	७	४	भद्रवैवर्युणते	८	८	२२	भरैपुहव्योनमसोप	२	६	३१
ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथा	२	७	३३	ब्राह्मणास पितरः सोम्या	५	१	२०	भद्रसिद्धं दशमो अशकृन्	५	१	२८	भरैपिवद्रसुहव	८	२	४
ब्रह्मणस्पतेरसुयर्मस्य	२	७	३३	ब्राह्मणास सोमिनोवाच	५	७	४	भद्रमिन्द्राद्रुणवत्सर	५	६	२०	भरगो हुनामोतयस्य	८	१	२८
ब्रह्मणाग्निः सविदान	८	२०	३३	ब्राह्मणोऽसुखमासीत्	८	४	१९	भद्राशुमेर्वध्यक्षस्य	८	२	१९	भरवानो अग्ने वितोत	८	२	१९
ब्रह्मणते ब्रह्मयुजायुन	३	२	१७	भगु धियवाजयत	२	८	३	भद्रातै अशेस्वनीक	३	५	५	भरवानो अग्ने वितोत	७	६	२
ब्रह्मन्वीरवसकृतिजुषाण	५	३	१३	भगएव भगवोऽवस्तुदेवाः	५	४	८	भद्रा अर्थाद्वरित सुयस्य	१	८	७	भरवानो अग्ने सुमना उपेतो	३	१	१८
ब्रह्मभुजावुदाभर	४	५	२८	भगु यणे तु भगसत्यराधः	५	४	८	भद्रा तु हस्ता सुकृतोत	३	६	६	भरवानो अग्ने वितोत	२	२	२६
ब्रह्मोऽकृणोति वरुणः	१	७	२२	भगु भक्त्यते वयं	१	२	१३	भद्रा ददक्ष उर्विया विभा	५	१	५	भरवानो अग्ने वितोत	१	४	२४
ब्रह्माणवस्त्ववाहसं	४	७	२२	भगोऽस्त्वसावरुणस्य	२	१	४	भद्रा वस्त्रासमन्या	७	४	११	भरवानो अग्ने वितोत	५	३	१८
ब्रह्माण्डं दोषया हि निद्रा	५	३	१२	भजति त्रिंशे देवत्व	१	५	१२	भद्रो नो अग्नि राहुतः	६	१	३२	भरवानो अग्ने वितोत	६	७	२५
ब्रह्माणस्त्वावयं युजा	६	१	२२	भद्रकर्णेभिः शृणुयाम	१	६	१६	भद्रोऽभद्रासवमानः	७	५	३१	भरवानो अग्ने वितोत	२	५	९
ब्रह्माणि हि चक्रपेव धर्मानि	४	६	१६	भद्रतै अशे स हसि	३	५	११	भरुद्यद्विरतो	३	६	१५	भरवानो अग्ने वितोत	१	६	२५
ब्रह्माणि मे मतयः असुतासं	२	३	२४	भद्रनो अपि वातयमनं	७	७	२	भरुद्रा जायसुप्रथं	४	५	२७	भरवानो अग्ने वितोत	१	८	१
ब्रह्मातत इन्द्रगिरिणः	६	६	१३	भद्रनो अपि वातय	७	७	११	भरुद्रा जायवधुक्षत द्विता	४	८	३	भरवानो अग्ने वितोत	६	३	४९
ब्रह्मादेवानां पदवीः	७	४	७	भद्रं भद्रं जुवाभर	६	६	२६	भरमिमे मं कृणवा	१	६	३०	भरवानो अग्ने वितोत	२	१	१९

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग								
भिनद्विरशवसा	३	५	२१	भूयामतेसुमतावाजिनोव	५	७	२५	भूरीद्वंद्ववीथं	३	४	२६	मंदिष्टयदुराशेकुल्येसचा	१	४	११
भिनह्रलमंगिरोभि.	२	६	१६	भूयामोपुल्लवतः	३	६	२८	भूर्जवउत्तनपद.	३	८	३	मदहोतारमुशिलोयविष्ट	५	२	१३
भीतायनाधमानाय	४	४	२०	भूरिकर्मणेष्टुमायवृष्णे	१	७	१७	सूयज्योधिबभ्रुषु	२	२	६	मंदहोतारमुशिले.	८	१	१
भीमोविषयाधुभिरेपां	५	३	३	भूरिचक्रयुज्योभि	२	३	२५	भूमिशिद्धासित्तुलिः	३	३	२७	मंदहोतारमुशिले	६	३	३७
भुज्युमंहस.पिपृथः	८	२	११	भूरिचक्रमस्तु.पिथ्याणि	५	४	२६	भोजत्वामिद्रव्य	२	२	६	मंदहोतारमुशिले	२	८	१९
भुराडुनोयुक्तासा	८	३	९	भूरितद्वद्वीर्षुतव	१	४	२२	भोजमभा सुष्टुवाहः	८	६	४	मदजिह्वाजुगूर्वणि	२	२	११
भुवद्वितत्यमज्यं	६	८	२४	भूरिदक्षेभिर्वचनेभि	८	६	१५	भोजालिल्यु सुरभि	८	६	४	मदयसोमधारया	६	७	२६
भुवनस्यपितरंभीभिराभिः	४	८	६	भूरिद्विभूरिदेहिनी	३	३	३०	भोजायाशंसयजति	८	६	४	मदस्यकुवेद्वित्यस्यवहं	४	७	११
भुवश्चक्षुर्महत्कृत्यं	७	६	३	भूरिद्वालासिश्चत.पुल्लवा	३	६	३०	मन्त्रमखर्वसुधितसुपेरासं	५	३	१९	मदस्यरूपंविबिदु.	७	२	२०
भुवस्त्यभिद्रव्यक्षणा	८	१	९	भूरिनामवर्दमानोदधाति	३	८	१७	मथतानर कुविमद्वयंतं	३	१	३२	मदक्किणध्वधियुआतनुच्चं	१	५	१८
भुवोजनस्यद्वित्यस्यराजा	४	६	१४	भूरिभि.समहृ.रुपिभिः	६	५	१०	मदमानकृतादधि	८	३	३	मंदोहोतारगृहपति.	१	३	८
भुवोयजस्यरजस	७	३	४	भूरिहितेसर्वनामानुपेपु	५	३	६	मंदतुल्वामधवक्षुद्वेदव.	५	७	३०	मंसीमहित्वावयं	७	७	१३
भुवोवितानामदेवस्य	३	५	२०	भूरिद्वेअर्चत्तीचरत	२	५	२	मंदतुल्वामंदिनो	२	२	१	मंहिष्टावाजुसातमा	५	८	१
भुस्याअंतपयैकेचरति	८	६	१७	भूरिणिमदानयैपु	२	४	२	मंदस्वहोत्रादनूनोपमध	२	८	१	महिष्ठवोमवोनां	४	२	१०
भुयइष्टाधुवेवीयां	४	७	२	भूरिणिहित्वेदीधुरेअनी	३	१	१९	मदस्वासुस्पर्ण	५	८	१६	मधूकुनाया सुख्यनवत्वा	८	१	२७
भूयसावृजमचरत्	३	६	१२	भूरिदिद्विउदिनक्षत	७	३	४	मदांमद्वेदशतयस्य	२	१	३	मधूकुनाया सुख्यनवीयः	८	१	२८

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्गः	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्गः	मन्त्रः	अष्ट. अ. वर्गः
मधूततद्वद्वदनामसः	७	मत्स्वांसुप्रहस्विस्तदीमह	७	मध्वेहोतादुरोगेवर्हिपोरा	४	मनोन्वाहुवामहे	८ १ १९
मधूदेववतोरयः	६	मथीयदीविष्टोमा	२	मध्वजुसमधयुवा	४	मन्युरिद्रोमन्युरेवास	८ ३ १८
मधूनवद्विभुजायाः	८	मथीयदुरीतिर्भृतो	५	मध्वः पिवतमधुपेभिरास	३	मन्येत्वायुश्चियुक्षिर्नानां	३ ३ ३२
मधूनयेपुडोहसेविदुया	५	मद्व्युक्षेति सादने	६	मध्वः सुदपवस्त	७	ममचूनतमघवच्	५ ५ २६
मधूहिष्मागच्छथर्हवतोद्युः	३	मदेनेपितमर्द	५	मध्वः सोमस्याश्विनामदा	१	ममचूनत्वान्युवृतिः	५ ५ २६
मखस्यतेतविपस्यप्रजुतिं	३	मदेमदेहिना	१	मध्वोवोनाममारुतयज	५	ममचुत्वादिभ्यः सोमः	८ ६ २०
मधोनआपवत्वनः	६	मधुनक्तमुतोपसो	१	मनीषिणः प्रभेरध्वं	८	ममचुत्वादिभ्यः सोमः	२ १ १
मधोनः सधृत्रहलेपुचोदयः	५	मधुनोद्यावापृथिवीमिमि	५	मनीषिभिः पवतेपुन्यः	७	ममचुत्वादिभ्यः सोमः	५ ७ १५
मत्तयः सोमपासुर	३	मधुप्रष्टयोरमयास	७	मनुज्वत्त्वाभिधीमहि	४	ममदेवाविह्वेसतु	८ ७ १५
मतीजुष्टोपियाद्वितः	७	मधुमतीरोपधीचावृआपः	३	मनुज्वदेभ्यो गिरस्वदेगिरः	१	ममदेविताराष्ट्रक्षत्रियस्य	३ ७ १७
मत्सिनोवस्यद्वद्वये	२	मधुमत्तनूनपात्	१	मनुज्वद्विद्वत्सवनं शुपाणः	३	ममपुत्रा शशुहणः	८ ८ १७
मत्सिवायुमिष्टये	७	मधुमन्मेपरायणं	७	मनोभस्याअनवासीत्	८	ममप्रसोद्वयात्तच्छं	२ ६ २२
मत्सिवायुमिष्टये	७	मधुमाजोवनस्पतिः	१	मनोजवसावृपणामद्व्यु	६	ममप्रसोद्वयात्तच्छं	८ ७ १५
मत्सिवायुमिष्टये	७	मधुवार्ताकतायते	१	मनोजवाअयमानः	६	ममप्रसोद्वयात्तच्छं	८ ७ ११
मत्सिवायुमिष्टये	७	मधुवार्ताकतायते	१	मनोनयेपुहवनेपु	८	ममप्रसोद्वयात्तच्छं	८ ७ १५
मत्स्यपाशितेमहः	२	मधुवार्थारामनुक्षर	६	मनोनयोडध्वनः	१	ममप्रसोद्वयात्तच्छं	८ ७ १३
मत्स्वांसुक्षिप्रमदिभि	१	मध्यायत्कर्वमर्भवत्	८				

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
मरुतोभूवोतोऽभिवातू	८ ८ २७	मरुतैश्चिद्वोऽमृतवोरुतमवक्ष्म	१ ४०	महौवमत्रोवृजनेविदुष्या	३ ३	महान्स्सुधस्थेध्रुवआनिर्प	२ ८ २६		
मरुतु पिबतऋतुना	१ १ २८	मरुतोऽभिरुतः	५ ८ ३५	महौवसिमाहिपु	३ ३	महिरेरवजुतये	१ ३ ३१		
मरुतोऽभिरुतः	३ १ ४०	मर्मणिनेवर्मणाच्छादया	५ १ १२	महौवसिसोमल्येष्ट	७ ७	महिसेत्रपुरश्चंद्रविद्विद्वान्	३ २ ७		
मरुतोयद्वेवदिवः	५ ८ २०	मर्मृजानासआयवः	७ १ ३९	महौवस्यध्वरस्यप्रकेतो	५ २	महिज्योतिर्निहितवक्षणा	३ २ ३		
मरुतोयद्वेवोवळ	१ ३ १४	मर्म्योनशुभ्रस्त्वन्व	७ ४ ९	महौवसिदिलोनमसो	३ ४	महिज्योतिर्विअतत्वा	७ ८ १३		
मरुतोयस्यहिक्षये	१ १ ११	मरुतः सरायपपते	२ २ १८	महौवदेनूवदाचर्पणिप्राः	४ ५	महित्रीणामवोस्तु	८ ८ ४३		
मरुतोवीकुपाणिभिः	१ ३ १७	मरुतु सुवोअरमिपेखवाम	६ ४ ४	महौवद्रोयभोजसा	५ ८	महिखाप्रमूर्जयतीरजुर्ग	३ १ १		
मरुत्वतोऽभ्रप्रतीतस्यजि	३ २ १८	मरुतुअयतवसेसुवृक्ति	६ ६ ३३	महौवदं पुरश्चतु	१ १	महिचावापुथिवीभूत	८ ४ २६		
मरुत्वतमृजोपिणं	३ ५ २७	मरुतत्सोमोमाहिप.	७ ४ १९	महौवओवाध्वेवीर्याय	३ २	महिस्सगु सुकृतसोम्य	७ २ ३१		
मरुत्वतद्वृषभ	३ ३ ११	मरुतदुल्लस्यविर	८ १ १०	महौवतासियस्यते	५ ३	महिमेहेतुवसेदीध्येद्वृन्	१ २ १		
मरुत्वतद्वृषभवावृथान	३ ६ ८	मरुतचंद्र कवय.	३ ३ २७	महौवक्रपिर्वृजा	३ ३	महिमेहेदिवेवचो	३ ३ २४		
मरुत्वतद्वृषभमेहे	१ २ ९	मरुतत्रासुगुह्यपुरस्सृष्ट	८ १ १६	महौवतासिवावरुणा	६ ३	महिअपुपोपितर.	८ १ १८		
मरुवौहदमीदु.	६ ५ २८	मरुतयमहुतामावृणीमहे	७ ८ ११	महौवतोमहविभ्वोऽ	२ ३	महिगार्धाविश्वजन्यंदर्धा	३ ७ ३४		
मरुवौहद्वृषभो	३ ३ २१	मरुतश्चकुर्यवैत क्रतुप्राः	३ ७ १३	महौवतकोशुसुदवातिपिच	४ ४	महिबोमहुतामव.	३ ७ ७		
मरुसुवोवचीमहि	३ ३ ८	मरुश्चिस्त्वमिद्वयतएताम्	२ ४ ८	महौवतैवामहीरजु	६ ७	महिबोमहुतामव	३ ४ ५१		
मरुस्तोत्रस्यवृजनेस्यगोप	७ १३	मरुश्चिद्वसुएवसो	३ ५ १२	महौवतमहिनावय	६ ३	महिपासोमायिनश्चित्र	५ ७		

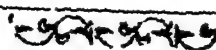
मन्त्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मन्त्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मन्त्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मन्त्रः	अष्ट. अ. वर्गः
महीअथमहिनावारं	२ २०	महोअणं सरस्वती	१ १	माकसैयातसम्यसिन्धिने	१ ८	मातारुदण्डुहितावसू	१ ८
महीयावापृथिवीद्वहज्येष्टं	८ ८	महोदेवान्यजसियद्वयानु	४ ८	माकस्यनोअररुणे	५ ६	माहृदिधिपुमव	४ ८
महीचौ पृथिवीवनः	१ २	महोदुहोअपविआयुधा	४ ६	माकस्ययुससदुभिद	३ ४	मातुपुदेपरमेशुकभयो.	४ २
महीमित्रस्यसाधय	३ ८	महोनोअमेसुवितस्य	५ १	माकस्याहुतक्त	४ ४	मातेअमाजुरोयथा	३ २
महीमेकस्यवृषनामं	४ ४	महोनोतायआभर	३ १	माककुवीरसुद्वोवनस्प	४ ८	मातेअस्यांसहसावुन्परि	५ २
महीयद्विधिपण्णाशिआये	३ २	महोमहानिपनयत्यस्य	३ २	माकिरेनापथागात्	५ ८	मातेगोद्वनिररामराधसः	६ २
महीरस्यप्रणीतय.	४ ७	महोरुजाभिव्युता	३ ४	माकिर्नेगनासख्यावि	७ ७	मातेराधासिमातुतयो	१ ६
महीरस्यप्रणीतयः	६ १	महोविश्वामिपुत.	३ ५	माकिर्नेशुनमाकीरिपत्	४ ८	मातेवयङ्गरसेपप्रयान	४ १
महीवांमतिरिथिनामथोअु	८ २	महोयसपतिःशवस	६ ७	माकुश्र्यगिद्वश्रुवस्ती	७ ७	मातेहरीवृषणावीतपृष्ठा	३ २
महीसमैरश्चन्वा	३ ३	महोयजतुममयानि	८ ७	माचिद्व्यद्विशसत	५ ७	मात्रेपूजाद्युण्डरसः	५ ४
महेचतत्वामद्विव.	५ ५	महोत्वष्टावज्रमतक्षत्	८ ८	माच्छेभरुशोरितिनाध	१ ७	मात्रेजुतेसुभिते	७ २
महेनोअद्यवोधय	४ ४	महोतैसुख्यवदिमशुकी.	३ ३	माजस्वनेवृषभनोररीथाः	४ ७	मात्वाभिध्वनयीदुसगधिः	३ ९
महेनोअद्यसुवितायवोधि	५ ५	माचुत्वारज्जाभावः	६ ५	मातलीकृच्यैर्येमोअंगिरो	७ ६	मात्वातपश्विअस्मापि	३ ३
महेयपिन्नद्वैरसं	१ ५	मादेवादेधिरहव्यवाह	८ ८	माताचयवद्वहिता	३ ३	मात्वाभूराअविष्यवः	६ ३
महेशुल्कायवरुणस्युत्वि	५ ६	माधुरिद्वनामदेवता	८ १	मातदेवानामदिते	१ ८	मात्वारुद्रचुकुधामानमो	२ ७
महेअुमेःसमिधानस्य	८ १	मानुर.स्वथावाजयतः	३ ७	मातापितरमुतआयभाज	३ ३	मात्वाश्वेनउद्धधीन्मासुपर	८ १

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
मात्वा सोमस्य गन्धया	५ ७ १३	मानिदृत्य इमां	३ ५ १	मानोमध्वोरभरा	३ ६ ४	मापणतोदुरित	२ १ १०
मादयस्व सुते सचा	१ ६ २	मानोऽग्नेदुभृतये सवैषु	५ १ २७	मानोमहत्सुतमानोऽग्ने	१ ८ ६	माप्रगासपथोऽयं	८ १ १९
मादयस्व हारिभिर्यत ईद	१ ७ १३	मानोऽग्नेमतेये	३ १ १६	मानोमित्रोवरुणोऽर्यमा	२ ३ ७	माभूंसुमिष्टा इवे	५ ७ १२
माध्यदिने सवने जातवेद	३ १ ३१	मानोऽग्नेवसुजो	२ ५ १०	मानोमृचारिपणां	६ ४ ५२	माभेमुमाश्रमिन्म-	५ ७ ३१
माध्यदिनस्य सवने स्य	३ ३ १७	मानोऽग्नेवरीते परादा	५ १ २६	मानोरक्षाकावेरीदायुणीव	६ ४ ३५	मामासिमत्तवसंतमत्र	४ २ १२
मान शसोऽगरेऽप	१ १ ३४	मानोऽग्ने सुख्यापिष्या	१ ५ १६	मानोरक्षाऽग्निनद्व्यानुमा	५ ७ ९	मायाभिर्दिदमायिन	१ १ २१
माने समस्य दूढ्य	६ ५ २५	मानोऽजो तावूजानोदुरा	५ ३ २१	मानोवधाय हृत्बवे	१ २ १६	मायाभिर्दुस्तिरुत्पसत	६ १ १६
मान सेतुं सियेदय	६ ४ ५२	मानोऽग्रातिरीशत	२ ५ २८	मानोवधीरिद्विमापरादा	१ ७ १९	मायावा मित्रावरुणादिवि	४ १ १
माने सोमफरिवाध-	१ ३ २७	मानोऽग्निसन्मघवन्	१ ४ १७	मानोवधीरुद्रमापरादा-	५ ४ १३	मारेऽसुसद्विमुसुच	३ ३ ४
माने सोमसर्वीविज	६ ५ ३४	मानोऽग्निसन्महाधने	६ ५ २६	मानोवधैर्वरुणयेत इष्टो	२ ७ १०	माजुर्ल्योऽमृज्यते स्वेदमू	३ ८ १३
माने स्तेनेभ्योऽयेऽग्नि	२ ६ ३२	मानोऽग्न्येऽग्निरुद्रै	६ ५ २०	मानोवृकाय ववये समस्मै	४ ८ १२	मावृणुनोऽन्यकृतमुजेम	४ ८ १२
माने इन्द्रपरावृणक्	६ ६ ३७	मानोऽग्निरिपआयो रहन्द्	७ ५ १५	मानोहिं बुध्यैरियेधात्	५ ३ २६	मावावृकोमावृको	२ ४ २९
माने इन्द्रपीतवै	५ ७ १९	मानोऽद्वानाविशो	६ ५ २५	मानोहिंसीजनिताय	८ ७ ४	माविदन्मरिपथिनः	८ ३ २६
माने इन्द्राभ्यां देविनाः	६ ६ २०	मानोऽनिवेचवक्त्रे	५ ३ १५	मानोऽहणीतामतिथिर्वसु	६ ७ ५५	मावोऽमृतमाशपत	१ ३ २३
माने पुक्कस्मिन्नागसि	६ ३ ४८	मानोऽमर्तोऽग्निर्दुहन्	१ १ १०	मानोऽतिविस्वत	६ ४ ५४	मावोऽद्वान्मस्तोतिररा	५ ४ २६
माने स्तोकेतने मानेऽग्रा	१ ८ ३	मानोऽमर्तोऽग्निरिवै	६ ४ ३३	मापापुत्रायेनो नरेद्वीक्षी	५ ४ १७		

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
मार्वोमृगोनयवसे	१ ३ १५	मित्रक्षुतुभ्यवरुणः	३ १ १४	मिमामृतौघोरदितिर्वीतयेन.४	२ २४	मृपोनशुश्राव्यदंति	७ ८ १
मार्वोरुसानितभाकुमा	४ ३ १२	मित्रक्ष्नोवरुणश्च	४ ३ १०	मिमिहिखोकेमास्ये	३ १७	मृगोनमीम कुचुरोनिहि	८ ८ ३८
मार्वोरिपत्नित	८ ५ ११	मित्रस्तन्नोवरुणोदेवोअर्य	५ ५	मिम्यक्षयेपुरोदसीचुदेवी ४	८ ८	मृजतिव्वादशुक्षिपः	६ ७ ३०
माशूनेअमुनिपदमनृणां	५ १ २५	मित्रस्तन्नोवरुणोमामहंत	५ ४ १९	मिम्यक्षयेपुसुधिता २	४ ४	मृजतिव्वासममुव.	७ २ १
मासख्यःश्रुनुमाविदे	६ ३ ४९	मित्रस्तन्नोवरुणोरोदसीच ५	५ ४	मिहः पावका प्रतताअभूव ३	२ ८	मृजानोवारेपवमानः	७ ५ २८
मासातेअसत्सुमतिर्विदे	१ ८ २६	मित्रस्य चर्पणीपुतोवो ३	४ ४	मिहृष्मतीवपृथिवीपराह ४	३ १९	मृजयमानः सुहस्य	७ ५ १६
मासीमव्यथामाह	६ ५ ३६	मित्रातनारथ्या	६ २ २१	मृचतुमाशपथ्या	८ ५ ११	मृलो पंदयोपर्यत	७ ६ २६
मास्येधत्सोमिनोदक्षता	५ ३ १९	मित्रायुपंचयेभिरे	३ ४ ६	मृचामिवाहुविपाजीवना ८	८ १९	मृजतेनोमरुतोमार्वधि	४ ३ १८
माहंसुघोनोवरुण	२ ७ ८	मित्रार्थशिक्षवरुणाय	८ २ ९	मृनेयोवातेरक्षना.	८ ७ २४	मृजानोरुद्रोतनोमर्यच्छ	१ ८ ५
माहमघोनोवरुण	२ ७ १०	मित्रावरुणवताउत्तथमैवं ६	६ ३ १६	मृसुक्ष्णोऽमनवे	२ २ ५	मैघंतुतेवह्वयोयेमिरीयसे २	८ ८ १
माहंसुघोनोवरुण	२ ७ ११	मित्रोअक्षिभैवतियस्समि २	८ २ २४	मृमोदुगर्भोवृषभ.	७ ६ ३	मेधाकारविदयस्य	८ ४ २१
मित्रंक्षुण्णखलं	७ ८ ५	मित्रोअहोश्चिदादुर	४ ४ ३	मृपायस्यैकवे	२ ४ १८	मेहनाद्वनकरणात्	८ ८ २१
मित्रनयशिश्यागोपु	२ २ २०	मित्रोजनान्यातयति	३ ४ ५	मृराअमृरुनवयं	७ ५ ३२	मेनममेविद्वहोमा	७ ६ २०
मित्रनयंसुधितंशृगवोद	४ ५ १७	मित्रोदेवेष्वायुपु	३ ४ ६	मृधार्दिवोनाभिरग्निः	१ ४ २५	मोघमज्रविदले	८ ६ २३
मित्रवयंहवामहे	१ २ ८	मित्रोनोअर्थाहति	६ ४ ५१	मृधार्नदिवोअरुतितृथि	४ ५ ९	मोतेरिपत्येअच्छोक्तिमिर्बुद्ध	७ ७ १५
मित्रंहवेपतदक्षं	१ ३ ४	मिमामिवाह्विरेतशः	७ १ ३९	मृधार्भुवोभंवतिनक्तं	८ ४ ११	मोपुणःपरापरा	१ ३ १६

मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः
मोपुव्यावाधतश्चन	५ ३ १७	यत्रायध्वदुर्मिदु	५ ४ २९	यत्तवासोवथवाजसातौ	७ ८ ८	य कुकुमोनिधारय.	६ ३ २६
मोपुव्यावाधतस्व.	१ ७ २०	यत्तवमग्नेसुमदहुः	७ ६ २२	यत्तवासोवथवाजसातौ	८ २ २	य कुक्षि सोमपातम	१ १ १६
मोपुणो.सोममृत्यवे	८ १ २२	यत्तवयमिदमेधसा	५ १ १६	यत्तवाहुतेवपिप्रति	१ ३ २२	य.कृतदिद्वियोन्य	६ ३ ४७
मोपुवृक्षेवतद्रुपु.	६ ६ २०	यत्तवविप्रमेधसातौ	६ ५ ११	यमयै पुरुष्टुहं	३ ८ २५	य परस्याःपरावते.	८ ८ ४५
मोपुवृक्षणमन्यगुहं	५ ६ ११	यत्तवागोपवनोसिरा	६ ५ २३	यमेदुरिदोमरुत.	५ ७ २९	य पचचर्पणीरुभि	५ २ १८
मोपुवोअसादुमिता	२ २ ४	यत्तवाजनसिद्धते	६ ३ ३४	ययजनयथानरुः	१ ३ २२	य पविमानीरुयेति	७ २ १८
मोपुणहुद्राग्रपुसुदेवे	३ ३ २८	यत्तवाजनसिद्धते	६ ५ २३	ययवदुर्ध्वरायदेवा	५ १ १२	य पुषिणीश्चप्रस्वश्च	२ ६ २१
मोपुणोअग्रजुहुरन्त	५ ७ २०	यत्तवादेवादिधुरेहंन्यु	७ ५ ३२	ययर्क्षतिप्रचेतस.	१ ३ २२	य.पुत्र्यायिवेषसे	२ २ २६
मोपुव्युष्टाहुर्णवान्	८ ७ २३	यत्तवादेवापि.शुक्रुचान.	८ ५ १३	ययिप्रोत्कथवाहसः	६ १ ३	य.पुथिवीव्ययमाना	७ ८ ३
यकुमारुनमुरयं	८ ७ २३	यत्तवादेवासोमनयेदुष्टुहिह	३ ५ ३०	ययैसुसुस्वमानु.	३ ५ १३	य शुक्रोमक्षोअक्ष्य	८ ७ १६
यकुमारीप्रार्थय	८ ७ २३	यत्तवाद्यावापृथिवीय	७ ५ ३०	यसोमकुण्वन्तमसे	३ ७ ११	य.शुक्रमस्तुविसरमते	६ ७ १६
यक्रदसीसयुती	२ ६ ५	यत्तवापूर्वमीक्षितो	८ ७ ३	यंसीमनुमवतेवृद्धवतं	८ ३ १०	य.शयतोमद्येनो	२ २ ६
यजनोसोदुविर्मत	६ ६ २१	यत्तवावाजिह्वाश्रुभि	७ ३ २२	यसुपुर्णं परावत.	३ ३ १०	य शवरपर्वति	३ ३ २६
यतेश्येन पुदाभरत्	८ ८ २	यदेवासुश्चिरहंश्चायजते	८ ४ ११	यसापुच्छतिरुह	२ ३ ६	य.शुक्रहंवस्यो	१ ३ २६
यतेश्येनश्चारुमयुकं							

मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः
य शूरेर्मिह्वोयश्चमीरु	१	७	१२	यआधायचक्रमानाय	८	६	२२	यद्वंदायवचोयुजा	१	२	१
य श्रेताधिनिर्णिज	६	३	२७	यआनंयपरवते	४	७	२१	यद्वंदायसूनवत	३	६	१२
य सत्रहविचर्धलि.	४	७	२७	यआपिर्निर्लोवरणमिय.	५	६	१०	यद्वंदायसूनवत	४	७	२२
य सुसरदिमवृपुम-	२	६	९	यआयुंकुलंमतिथिगव	६	४	२२	यद्वंदायसूनवत	५	७	२३
य समिधायवाहुली	६	१	२९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	६	७	२३
य सुखेचिच्छुतकतुः	६	३	२९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	७	७	२३
य सुनीथोददाद्युपे	२	५	२९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	८	७	२३
य सुन्वतमवतिथः	२	६	९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	९	७	२३
य सुन्वतेपचतेदुधः	२	६	९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	१०	७	२३
य सुपव्या. सुदक्षिणः	६	३	२९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	११	७	२३
य सुर्विदुमनकीनि	६	३	२९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	१२	७	२३
य सोमसुरवेतव	१	६	२१	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	१३	७	२३
य सोमं कुलशुब्धा	६	७	३८	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	१४	७	२३
यः श्रीहितीपुपुव्यः	१	५	२१	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	१५	७	२३
य सारंधानोमघ्यासुम	३	७	२१	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	१६	७	२३
य आत्मदावंददायस्य	८	७	३९	यआयुंकुलंमतिथिगव	७	२	२५	यद्वंदायसूनवत	१७	७	२३



मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग
यक्रतेविदमिधिर्यः	५ ७ १२	यच्चित्रममंभुषसोवहती	१ ८ ४	यजतेअसख्यवयश्च	५ ४ १	युजइदमवर्धयत्	६ १ १४
यक्रतेचिह्नास्पदभ्यः	५ ७ २४	यच्चिदितेअपिचयि.	३ ४ ४	यजमानायसुन्वते	४ १ १९	युजस्यकेतुप्रथमपुरोहितं	४ १ ३
यक्रतेनसूर्यमारो	८ २ १	यच्चिदितेगणाडुमे	४ २ १	यजध्वैनप्रियमेथा	५ ७ २४	युजस्यकेतुप्रथम	८ ७ ५
यक्रज्व-श्चाव्यत्संसा	६ ४ ३	यच्चिदितेपुरूप	३ ५ १२	यजस्ववीरप्रविहि	२ ३ ५	युजस्यकेतु पवते	३ ३ १३
यक्रज्वाक्रष्टिविद्युत	४ ३ १०	यच्चिदितेविशोयथा	१ २ १६	यजस्वहोतरिपितोयजो	४ ५ १३	युजस्यवोरप्यविश्रपतिं	८ ४ २३
यपकुइद्यावपति	३ ५ २१	यच्चिदित्वाजनाडुमे	५ ७ १०	यजनोमित्रावरणा	१ २ २३	युजस्यहृदस्थक्रुत्विजा	६ ३ २०
यपकुइससुष्टुहि	४ ७ २८	यच्चिदित्त्वगृहेरुदे	१ २ २५	यजामिइदमसवृद्धिमिदं	३ ३ १०	युजानारख्येव्य	६ ३ ४१
यपकुइद्वयश्चर्पणीनां	४ १ ३३	यच्चिदिवपूररूपय	५ ८ २६	यजामिइद्वज्रं	७ ७ ९	युजायज्ञावोभुमयं	४ ८ १
यपकुइद्विदयते	१ ६ ६	यच्चिद्विशधतातना	१ २ २१	यजामिदेवामह सजोपा	२ २ २३	युजायज्ञाव समुनातुर्व	३ ४ ६
यपकुअर्पणीनां	३ १ १४	यच्चिद्विशधतामसि	३ ६ २९	यजिष्ठत्वायजमाना	२ १ १२	युजासाहुदुवृद्धे	७ ७ ३
यपुकोवास्तिदंसो	५ ७ १५	यच्चिद्विशधतामसि	६ ४ ३७	यजिष्ठत्वावहृमहे	६ १ २९	युजेद्विवोनपदनेपृथिव्या	५ ६ २०
यपनमाधिदेशति	४ ८ २२	यच्चिद्विशधतामसि	१ २ २७	यजातिवेदोमुवस्य	८ ४ १०	युजेनगातुमुसुरो	३ ६ २७
यथोलिष्ठद्वस्तसुनो	४ ७ ५	यचक्रासिपरावति	३ ६ १	यजायथाअपूर्व्यं	६ १ १२	युजेनयुजमयजतेदेवाः	२ ३ २३
यथोलिष्ठसामनर	७ ५ २	यचक्रासिपरावति	६ ३ ६	यजायथास्तद्वहिरस्य	३ ३ १२	युजेनयुजमयजंत	८ ४ १९
यथोलिष्ठसालेद्वर्धतो	४ २ १८	यचक्रासिपरावति	५ ४ १७	युजचनस्तुन्वचप्रजोचं	८ ८ १५	युजेनवर्धतज्जातवैदसं	२ ५ २०
यचगोपुडु ज्वभ्यं	६ ४ १	यचक्रासिपरावति	६ ४ ४५	युजपृच्छाम्यवमं	१ ७ २०	युजेनवृचच, पदुवीयं	८ २ २३

यज्ञेभिर्भुङ्क्तुं
यज्ञेभिर्भुङ्क्वाहसं
यज्ञेनेहमवसाचकेभुवा
यज्ञेयज्ञेसमर्थं
यज्ञेरथवाप्रथमः
यज्ञेरिपू.सुजर्ममानः
यज्ञेवायज्ञवाहस.
यज्ञे समिक्षा.घृपतीभिः
यज्ञोदेवानांभर्त्येतिसुहं
यज्ञोहितंहेद्ववर्धनोभूत
यज्ञोहिर्भेहकाश्चिहंघन
यज्ञोहीलोवोअंतर.
यतहेद्वभयामहे
यतासुजर्णोराति
यत्किचेद्ववर्णदेव्येजने
यत्तुदसुरपुतंशे

मंत्रः
यत्तुतीयसर्वनरद्वेयं
यत्तैअपोयदोषधी.
यत्तैकुणा.शकुनः
यत्तेगानादृशिनोपच्यमाना
यत्तेचर्तस.प्रदिशः
यत्तेद्विसुप्रार्थ्य
यत्तेद्विवययुधिर्वी
यत्तेपरीःपरावतः
यत्तेपर्वतान्दृहृत.
यत्तेपुवित्रमयिबत्
यत्तेपुवित्रमयिपि
यत्तेभूतंचुभग्यच
यत्तेभूमिचतुर्दृष्टि
यत्तेमरीची.प्रवतः
यत्तेमनूयदीकं
यत्तेयमवैवस्वतं

मंत्रः
यत्तेराजन्धृतंदुविः
यत्तेविश्वदिजगत्
यत्तेसमुद्रमणवं
यत्तेसुदेमहसा
यत्तेसुययदुपसं
यत्तेसोमगाशिरो
यत्तकामा.मिकामाश्र
यत्तकचतेमनः
यत्तप्रार्वापुथुह्न.
यत्तज्योतिरजसं
यत्तदेवौक्रचायतो
यत्तद्वाविजघर्ना
यत्तनार्थपच्युव
यत्तवाणाःसंपतीत
यत्तद्रक्षापवमान
यत्तसंयथिविब्रतं

अष्ट. अ. वर्ग. मंत्रः
७ ५ २८ यत्राजवैवस्वतः
८ १ २१ यत्रवाहिरभिहितः
८ १ २० यत्रवेत्यवनस्पते
२ ३ १० यत्ररारासस्तन्वोवितन्वते
८ १ २१ यत्राचकुरुस्तंगतुमसौ
२ ५ ७ यत्रानदाश्चमोदाश्च
७ ५ २७ यत्रानर.सुमयतेकुतध्वं
४ ५ २४ यत्राजुकामचरणं
१ २ २५ यत्रावदेतेअवर.
७ ५ २७ यत्रासमुद्र.स्कभितः
३ ६ १९ यत्रासुपुण्यमृतेस्यभ्रात
१ २ २५ यत्रेदानीपदयसि
१ २ २५ यत्रोतवाधितेभ्यः
५ १ २२ यत्रोतमत्यायकं
७ ५ २७ यत्रोपधीःसुममंत
१ २ २५ यत्तर्जन्त्यकनिःक्रदत्

अष्ट. अ. वर्ग.
७ ५ २७
८ १ २१
८ १ २०
२ ३ १०
८ १ २१
२ ५ ७
७ ५ २७
४ ५ २४
१ २ २५
७ ५ २७
३ ६ १९
१ २ २५
१ २ २५
५ १ २२
७ ५ २७
१ २ २५

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग
यत्पाकत्रामनंसा	७	५	३०	यत्सोमजसुतोचरं	५	६	१८
यत्पाचजन्ययाविशा	६	४	४३	यत्सोमचित्रसुक्थ्यं	६	८	९
यत्पुरुषेणहृविषा	८	४	२८	यत्सोममिन्द्रविष्वावि	६	१	४
यत्पुरुषव्यदधुः	८	४	१९	यत्सोमोवज्रमर्पति	७	१	१३
यत्पुर्व्यमरुतोयच्चनूतन	४	३	१८	यत्सोमोवदनुदेयी	५	८	३४
यत्प्रायासिष्टृपृपतीभिर	४	३	२३	यथाक्वणवैमघवच्चस	६	४	१५
यत्वातुरीयमृतभिः	१	१	१९	यथाक्वणवैमघवन्मेघेभश्च	६	४	१७
यत्वादिवप्रपिचति	८	३	२०	यथाकुलायथाशुफ	६	४	१०
यत्वापुच्छार्दजानः	६	२	२०	यथागौरोक्षपाकृत	५	७	३०
यत्वायाभिदुद्धितघ्नः	८	१	४	यथाचित्कण्वमावतं	५	८	५
यत्वांस्युल्लभांशुः	४	२	११	यथाचिष्टृद्धमेतस	६	४	२२
यत्वाहोतारमुनजन्मियेधे	३	१	१९	यथाचिन्मन्यसेहृदा	४	३	१९
यत्वेपयामानुदर्थत	२	४	१	यथादिवामसुरेणु	८	८	९
यत्सुवसमृभचोगामरक्ष	३	७	१	यथानोक्षदिति करत	१	३	२६
यत्सालो मानुमारुहत्	१	१	१९	यथानोमित्रोवरुणः	१	३	२६
यत्सिधौयदसिक्तया	६	१	४०	यथानोमित्रोवर्यमा	६	२	४०

अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः
६ ३ २८	यथावामत्रिराधिना	७ ४ ८	यथापेवथामनवे	५ ६ १८	यथापेवथामनवे
२ ५ २६	यथाविद्वांशुकरत्	२ ४ १८	यथापूर्वभ्योजरितुभ्यः	६ ८ ९	यथापूर्वभ्योजरितुभ्यः
१ ५ २४	यथाविप्रस्यमनुयो	२ ४ १९	यथापूर्वभ्योजरितुभ्यः	६ १ ४	यथापूर्वभ्योजरितुभ्यः
३ ५ १२	यथाहुत्यद्वसवो	७ ३ ७	यथापूर्वभ्य शतसाः	७ १ १३	यथापूर्वभ्य शतसाः
८ ७ १३	यथाहुत्यद्वसवोगौर्य	८ ७ २३	यथामेवदनुदेयी	५ ८ ३४	यथामेवदनुदेयी
७ ६ २६	यथाहान्यनुपूर्वं	६ ४ १८	यथामनौसावर्णौ	६ ४ १५	यथामनौसावर्णौ
४ ५ ५	यथाहोतमनुपोद्वेवताता	६ ४ २०	यथामनौविवस्वति	४ ४ १७	यथामनौविवस्वति
८ १ २५	यथेयपृथिवीमही	३ १ १७	यथार्यजोहोत्रमेमेष्टुथि	४ ४ १०	यथार्यजोहोत्रमेमेष्टुथि
५ ८ ६	यथोतकृत्स्न्येधने	८ १ २५	यथायुगवर्त्रया	५ ७ ३०	यथायुगवर्त्रया
५ ८ १४	यदुगतविपीयसे	६ १ ३९	यथारुद्रस्यसुनवः	५ ८ ५	यथारुद्रस्यसुनवः
५ ८ १८	यदुगतविपीयवः	५ २ ४	यथाव स्वाहाश्रयेदाशेम	६ ४ २२	यथाव स्वाहाश्रयेदाशेम
३ २ १४	यदुगत्वाभरता सुतरंशु	६ २ २०	यथावरोसुपाग्णे	४ ३ १९	यथावरोसुपाग्णे
१ १ २	यदुगदाशुपेत्व	६ २ ४०	यथावरोसुपाग्णे	८ ८ ९	यथावरोसुपाग्णे
३ ३ २	यदुतरापरवतं	६ २ ३५	यथावशतिद्विवास्त्रयेदस्त	१ ३ २६	यथावशतिद्विवास्त्रयेदस्त
५ ८ ३४	यदुतरिक्षेपतंय पुष्पमुज	४ ४ २०	यथावातं पुष्करिणी	१ ३ २६	यथावातं पुष्करिणी
५ ८ ३०	यदुतरिक्षेयहि वि	४ ४ २०	यथावातोयथावचं	६ २ ४०	यथावातोयथावचं

मंत्रः	अष्ट	अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट	अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट	अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट	अ. वर्गः
यदन्ति यच्च दुरके	७	२	१७	यदुद्भि परिपिच्यसे	७	२	२	यदब्रवयथमर्वावृणान्	१	७	२७
यदक्रेद प्रथमजार्थमानः	२	३	११	यदुद्यकाह्विचिह्नं	६	५	१८	यदथातदिवोदासायवर्ति	१	८	११
यदमृपासमिति.	७	६	१०	यदुद्यवापुरुषुत	४	८	२२	यदथातदुभस्पती	८	३	२२
यदमेजयमिथुना	८	४	७	यदुद्यत्वाप्रयतियज्ञेऽस्मि	३	१	३४	यदयुक्थाअरूपा	१	६	३१
यदमेकानिकानिचिह्नं	६	७	१२	यदुद्यभागाविभजसि	२	१	४	यद्वेजेनसारमेय	५	४	२२
यदमेदिपिजाअसि	६	३	३४	यदुद्यवानासत्या	५	८	३१	यदश्वासाक्रविपोमक्षिका	२	३	१८
यदमेमत्यसव	६	१	३३	यदुद्यसूरुद्विते	५	८	३४	यदथान्धुपुष्टीरयुग्धव	४	३	१८
यदमेस्यामह	६	३	४०	यदुद्यसूरुद्विते	६	२	३४	यदथायवासउपस्तुणति	२	३	१०
यदचरस्तन्वावाद्युधान	८	१	१५	यदुद्यसूरुद्विते	६	२	३४	यदथान्धुपुष्टीरयुग्धव	४	३	१०
यदज्ञातेपुवुजनेपु	७	७	१५	यदुद्यसूरुद्विते	६	२	३४	यदथान्धुपुष्टीरयुग्धव	४	३	१०
यदस्युपलक्षिका	६	७	१२	यदुद्यस्थ. परावति	५	५	१	यदथान्धुपुष्टीरयुग्धव	४	३	१०
यदग्निगावोअग्निगू	६	२	७	यदुद्याश्विनावपाक	५	८	३४	यदुद्याजियात्याजिकृत्	६	३	११
यददोदिवोअर्णव	६	२	२९	यदुद्याश्विनावह	५	८	३४	यदुद्याजियात्याजिकृत्	६	३	११
यददोषितोअजगन्	२	५	७	यदुद्यासुवृषभो	३	३	३१	यदुद्यातेविष्णुरोजसा	६	३	११
यददोवाततेगृहे	८	८	४४	यदुपामोपधीना	२	५	७	यदुदातेहयताहरी	६	३	११
यदुद्यकचद्वहन्	६	६	२१	यदुस्युयद्वनस्पती	५	८	३०	यदुदादीधेनदक्षिपाणि	७	३	११

अष्ट.	अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट.	अ. वर्गः
५	८	३३	५	८
३	७	१	३	७
७	७	१	७	७
८	२	१७	८	२
८	२	१६	८	२
६	४	९	६	४
५	४	९	५	४
६	१	६	६	१
८	८	२२	८	८
३	६	१२	३	६
८	५	२	८	५
६	१	६	६	१
८	८	१९	८	८
४	२	१०	४	२
४	२	५	४	२
४	७	१२	४	७

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
यदिद्रनाहुपीन्वा	४ ७ २८	यदिद्राग्नीध्रदुपुर्व	१ ७ २७	यदीवृतेमिराहुतः	६ १ ३३	यद्वच्यमुदरस्यापुवार्ति	२ ३ ८		
यदिद्रपूवोअपरयुशिक्षन्	५ ३ २	यदिद्राहन्मथमजामहीनां	१ २ ३६	यदीदुहयुधये	७ ७ १५	यदेदेनमदधु	८ ४ १२		
यदिद्रपृतनाज्ये	६ १ ५	यदिद्राहयथास्त्व	६ १ १४	यदीमन्थतिबाहुभिः	३ १ ३३	यदेमिप्रसफुराक्षिव	५ ६ ११		
यदिद्रप्रागपगुदक्	५ ७ ३०	यदिद्रैणसरययाथोअक्षि	५ ८ ३२	यदीमौतुरुपुस्तसां	२ ५ २६	यदेपाप्मन्योअन्यस्यवाच	५ ७ ३		
यदिद्रप्रागपगुदक्	६ ४ ४६	यदिद्रोअनयुदितं	४ ८ २३	यदीमिद्रश्चाख्य	४ २ ९	यदेपाप्मन्योअन्यस्यवाच	५ ७ ३		
यदिद्रमन्मशस्त्वा	८ ८ २२	यदिप्रवृद्धसरपते	६ १ २	यदीमृतस्यपयसा	५ २ ७	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्रयावतस्त्व	६ १ १९	यदिमावाजयबृह	८ ५ १०	यदीमैनाउशुतोअम्यव	५ ७ ३	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्रराथोअस्ति	५ ३ २०	यदिमेरारण सुते	६ ३ २	यदीशीयाभृताना	७ ७ ८	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्रसगुर्वर्त	६ ४ २५	यदिमेसुख्यसावरं	६ ४ ११	यदीसुतेमिरिन्दुभिः	४ ७ १४	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्राग्नीध्रमस्या	४ ७ २९	यदिन्विद्रपृथिवीदशसु	१ ४ १४	यदुत्तुमेमस्तोमध्यमेवा	४ ३ ३५	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्राग्नीध्रदितोसूर्य	१ ७ २७	यदिद्राहमष्टतदेवसासं	५ ५ ७	यदुत्तुमेमस्तोमध्यमेवा	८ ४ ४	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्राग्नीध्रनाइमे	१ ७ २७	यदिस्तुतस्यमस्तोअधी	५ ४ २४	यदुत्तुमेमस्तोमध्यमेवा	१ ६ १	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्राग्नीध्रविष्टो	६ ३ २५	यदिस्तोमममश्रवत्	५ ४ २४	यदुत्तुमेमस्तोमध्यमेवा	८ ४ ४	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्राग्नीध्रपरमस्या	१ ७ २७	यदिगणस्यरशुनामज्जीग	५ ४ २४	यदुत्तुमेमस्तोमध्यमेवा	८ ४ ४	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
यदिद्राग्नीध्रमदयःस्ते	१ ७ २७	यदिस्तुतासुइदव	६ ४ १६	यदुत्तुमेमस्तोमध्यमेवा	८ ४ ४	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		
	१ ७ २७	यदिस्तोमावजुश्रुताअम	४ १ २८	यदुत्तुमेमस्तोमध्यमेवा	५ ८ ३३	यद्वापोवददितिःशर्मभद्र	५ ३ १८		

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग
यद्धनुर्नपरावति	६ ४ १७	यद्धातजुतोवर्ना	१ ५ ९	यद्विजामुन्यरुपिद्वंदं	५ ४ १७	यजुनमयंगतिं	४ ४ २	यद्धनुर्नयद्वायुने	६ ४ १५
यद्धनुर्नयद्वायुने	६ ४ १५	यद्धातुक्षौमघवंदुहावाज	४ ७ २८	यद्विरूपाचर्मलोपु	८ ५ ४	यजुनेध्रीमिरश्चिना	५ ८ ३३	यद्धावाचिरजगत	८ ८ १३
यद्धावाचिरजगत	८ ८ १३	यद्धाद्विषयैसुर्विमिदं	४ ६ १५	यद्विष्ठाविद्वयत्यरे	६ ३ ४९	यन्मन्यसेवरेणं	४ २ १०	यद्धयातिमरुतः	१ ३ १४
यद्धयातिमरुतः	१ ३ १४	यद्धाप्रबुद्धसपते	६ ६ २१	यद्धुन्नंतवचाशनि	१ ५ ३१	यन्मरुतःसभरस. स्वर्णर	४ ३ १५	यद्धविष्यसृतुशोदंयानं	२ ३ ७
यद्धविष्यसृतुशोदंयानं	२ ३ ७	यद्धाप्रसुत्तवणेदिवः	६ ४ ४६	यद्धादेवाश्चक्रम	७ ८ १३	यमग्निमेध्यातिथिः	१ ३ १०	यद्धुसातददश्चुष्टिरस्ति	२ ४ २१
यद्धुसातददश्चुष्टिरस्ति	२ ४ २१	यद्धाभिपित्वेकसुराकृतंयु	६ २ ३४	यद्धावृषप्रसिनाम	७ ५ ३०	यमग्नेपुत्सुमर्त्य	१ २ २३	यद्धहिपुनातिविधेसुदानू	४ ३ ३१
यद्धहिपुनातिविधेसुदानू	४ ३ ३१	यद्धामरुत्वःपरमेसयस्थे	१ ७ १३	यद्धाश्रंतायसुन्वते	६ ४ ५२	यमद्युमन्यसेरायं	७ ७ ४	यद्युजतेमरुतोरुक्मवक्षस.२	७ २ २७
यद्युजतेमरुतोरुक्मवक्षस.२	७ २ २७	यद्धायुजंमनवेसंसिमिक्ष	५ ८ ३४	यज्जहद्रेजुजुषे	३ ६ ७	यमग्नेवाजसातम	४ १ १२	यद्युजायेवृषणमश्चिना	२ २ २७
यद्युजायेवृषणमश्चिना	२ २ २७	यद्धारुमेरुमिदयावेकैक	५ ७ ३०	यज्जासत्यापराके	५ ८ ३२	यमर्त्यमिववाजिनं	६ ७ २६	यद्युयपृक्षिमातरः	१ ३ १५
यद्युयपृक्षिमातरः	१ ३ १५	यद्धावन्यपुरुदुत	६ ४ ४८	यज्जासत्यापरावति	१ ४ २	यमर्श्विनादुदथुःश्वेतमर्श्व	१ ८ ९	यद्योथर्यामहृतोमन्यमा	५ ६ २३
यद्योथर्यामहृतोमन्यमा	५ ६ २३	यद्धावानेपुरुतमं	८ ३ ५	यज्जासत्यापरावति	५ ८ २७	यमर्श्वीमित्यमुपयातियु	५ १ २५	यथावद्दंदेशत	६ ५ ८
यथावद्दंदेशत	६ ५ ८	यद्धाशक्रपरावति	६ १ ४	यज्जासत्याधुरण्ययः	५ ८ ३१	युमर्त्यमायुम्यः१कर्मः	७ ६ ७	यद्दोदसीमुदिवोअस्ति	५ ६ २
यद्दोदसीमुदिवोअस्ति	५ ६ २	यद्धासिरोचनेदिवः	६ ६ ३६	यक्षियानन्ययनं	७ ७ १	युमाचिदन्नयमसुरसूत	३ २ २५	यद्धावद्विषतिः	६ ७ ५
यद्धावद्विषतिः	६ ७ ५	यद्धासिसुन्वतोबुधः	६ १ ४	यक्षिणानन्ययनं	७ ७ १	युमादुहैवस्वतात्	८ १ २५	यद्धावद्वेत्याविचेतनानि	६ ७ ५
यद्धावद्वेत्याविचेतनानि	६ ७ ५	यद्धाहिष्ठंतदुमये	४ १ १८	यक्षीक्षणमांसपचन्या	२ ३ ९	यमार्दित्यासोअदुहः	६ १ ३६	यद्धाजिनोदामेसदानम	२ ३ ८
यद्धाजिनोदामेसदानम	२ ३ ८	यद्धाकक्षीर्वाजुत	५ ८ ३१	यजुनकि. पृतनासु	३ ३ १३	यमापोअद्युवर्ना	४ ८ १		

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.							
युमायेपुतपेद्धविः	७	१६	ययागाआकरामहे	८	१४	यस्तिताजसचिविदुं	८	२४	यस्तेमद्वोवैरेण्यः	७	१	२१		
युमायुमधुमत्तम	७	१६	ययारध्रपारयथावहः	२	७	२१	यस्तुभ्यमभेअमृता	३	४	१७	यस्तेमद्व. धृतनापाट	४	६	८
युमायुलोमसुजुत	७	१६	ययोरधिप्रयजा.	५	८	३४	यस्तुभ्यमभेअमृताय	८	४	२२	यस्तेमन्योविधद्व	८	३	१३
यमासाकृपनीळ	७	२	यववृकेणाश्विनावपन्ता	१	८	१७	यस्तुभ्यदाशुद्योवा	१	५	१२	यस्तेयुजेनसुमिधायजुवै	५	७	७
यमिद्वदधिपेत्त	६	३६	यवयवज्जोअन्यसा	७	१	१२	यस्तेअजेनससायुजमीद्वे	४	१	४	यस्तेरयोमनसो	८	६	१२
यमिमववृपाकपि.	८	४	यश्चिकेतससुकु	४	३५	यस्तेअभेसुमतेमतेः	यस्तेअयकृणवद्वद्रशोचे	७	६	१०	यस्तेरुवैअदाशुरि.	६	३	४४
यमीगर्ममृताद्युधः	७	५	यश्चिदापोमहिना	८	७	४	यस्तेअनुस्वधामस	७	८	२९	यस्तेशृङ्गवृपोनपात्	६	१	२४
यमीद्वीसवयसा	२	१३	यश्चिद्धितइत्याभगः	१	२	१३	यस्तेअनुस्वधामस	३	३	१६	यस्तेसाधिद्योवसे	४	२	५
यमुपूर्यमहुवेतमिद्वद्वे	२	८	यश्चिद्धित्वायहुभ्य	१	६	६	यस्तेगर्भेममीवा	८	८	२०	यस्तेसाधिद्योवसेतेसा	६	४	२३
यमेद्वकृतमाने	७	१३	यस्तुङ्गभंजमरत्सि	३	४	१७	यस्तेचित्रअवस्तम.	६	६	१८	यस्तेसुनोसहसोर्गीभि	४	५	१५
यमेनद्वत्तचितपुनमायुन	२	३	यस्तुद्वन्द्वप्रियोजनोददा	५	३	२	यस्तेद्वप्स स्कन्दतिथ.	७	६	२५	यस्तेस्वन शशुयोयोमयो	२	३	२३
यमेरिरेशृगोविश	२	१२	यस्तुद्वन्द्वमहीरप	५	८	१२	यस्तेद्वप्सस्कृत्रोयस्ते	७	६	२५	यस्तेहन्तिपुतयन्त	८	८	२०
यमेच्छाममनसुत्त.	८	१	यस्तुङ्गुरुविहृति	८	८	२०	यस्तेनूनशतक्रतो	६	६	१८	यस्त्वादेविसरस्वति	४	८	३०
यमोनोगातुमथमो	७	१४	यस्तुस्तमसहसाविजमोअ	३	७	२६	यस्तेभरुदनियते	३	४	१७	यस्त्वाद्योपायजुपसि	३	४	१७
यमुपिजोयहुधाकृत्प	६	४	यस्ताचकारसकुहस्विदि	४	६	११	यस्तेमद्वोयुज्यश्चारु	५	३	५	यस्त्वद्वोलापूर्वाअनेयजी	३	१	१७
यमोहजातोयमो	१	५	यस्तिमभृगोवृपमोनमी	५	२	२९	यस्तेमद्वोवैरेण्य.	६	४	२	यस्त्वाआतापतिर्भून्वा	८	८	२०

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः</
--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	----------------	--------	------------------

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
यस्यवायग्रप्रतिवाजिनो	४ १ ३९	यस्यानासु सूर्यस्येवग्रामः	१ ७	याओपोदिव्याउतवाञ्चर्व	५ ४	यातेकुसुसुकृतायावरि	४ ७ १३
यस्यवायोरिवद्ववत्	४ ७ २६	यस्यायनागभीरा	६ १ २०	याईद्रप्रस्त्वा	५ ८	यातेजिह्वामभुमती	३ ४ २
यस्यविश्वनिहस्तयो.	२ ४ १९	यस्यामितातिवीर्यो	६ २ १९	याईद्रमुज्ज्वामर	६ ३ ३६	यातेद्विबुदवसृष्टादिवस्य	५ ४ १३
यस्यविश्वनिहस्तयो.	४ ७ २२	यस्यायंविश्वआर्यो	६ ४ १९	याओपधीःपूर्वाज्ञाता	८ ५	यातेधामानिदिवि	१ ६ १९
यस्यप्रतेष्टयिवीनञमीति	४ ४ २७	यस्यास्त्वान्तोअर्चय	१ ४ ४	याओपधी सोमराज्ञी	८ ५ ११	यातेधामानिपरमाणि	८ ३ १६
यस्यभामेजुपुविश्वेजनासु	५ २ ९	यस्यावधीत्पितरयस्य	४ २ ३	याओपधी सोमराज्ञीवि	८ ५ ११	यातेधामानिह्रविषा	१ ६ २२
यस्याश्वस्तपपिवाईन्द्र	८ ६ १२	यस्याश्वास प्रादिशि	२ २ ६	यागुगुयांसिनीवाली	२ ७ १५	यातेभीमान्यायुग्वा	७ १ २३
यस्यश्वोरोदसीअन्तरु	५ २ २८	यस्येक्ष्वाकुरुषद्वते	८ १ २४	योगोमतीरुपसु सर्ववीरा	१ ८ ४	याद्वस्त्रासिन्धुमातरा	१ ३ ३३
यस्यश्वेताविचक्षणा	६ ३ २७	यस्येमेहिमवन्त	८ ७ ३	यातौर्वर्तनिर्नप्येति	८ २ १०	यादपतीसमनसा	६ २ ३८
यस्यसस्येनवृण्वते	१ १ ९	यस्यौपधी असर्पय	८ ५ १०	याजामयोवृण्वद्वच्छन्ति	३ ४ २	याद्वगोवदद्वेताद्वपुच्यते	४ २ २४
यस्याभिनन्तोअर्दुतः	४ ८ ३१	यांआभजोमरुतंहन्द्रसो	३ ३ ३	यातेकुतिरिमित्रहन्	४ ७ २३	याद्वेपुतन्व १मैरयन्तु	८ ८ २७
यस्याभिवर्षुगृहे	६ १ ३१	यांत्वादिचोदुहितर्वधु	५ ५ २४	यातेकुतिरिवमायापरमा	४ ६ १९	याद्वार्ध्व १वरुणोयोनिम	२ ८ ३
यस्यार्जवबोवसुमानसु	१ ७ १०	यांपूषन्ब्रह्मचोद्वी	४ ८ १८	यातेच्छर्दिष्पाउतनः पर	५ ८ ३२	याधुतरारजसोरोचनस्यो	४ ७ ७
यस्याजुषन्नमस्तिनः	६ ५ २५	यामेधियमरुत	८ २ ८	यातिदेव प्रयतायात्युद्धता	१ ३ ६	याध्वारयन्तदेवाः	५ ५ ८
यस्याद्विवाउपस्थे	६ ६ २८	या प्रवतोनिवत	५ ४ १७	यातेअमेपवैतस्येव	३ ४ ३	यातिस्थानोन्यश्चिनाद्वधा	५ ५ १७
यस्यानक्ष्वादुहिता	७ ७ १७	या सरूपविरूपा	८ ८ २७	यातेअष्टागोओपुता	४ ८ १८	यानीद्वीचक्रभुर्वीर्यो	१ ७ २६

मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः						
या स्यौरदिमभिरातवान्	५	१४	युक्ष्वाहिदेवहूतमान्	५	२४	युनकुसीरावियुगा	८	५	१८	शुवर्नरास्तुवतेकृष्णियाय	१	८	२४
यास्तोधारामयुक्षुत.	७		युक्ष्वाहिविजिनी	१	६	युनविमतेव्रक्षणा	१	६	३	शुवर्नरास्तुवतेपञ्चियाय	१	८	९
यास्तोपुष्पावोअतःसमुदे	४	८	युक्ष्वाहिवृत्रहन्तम्	५	७	युष्टुपत. स्ववयसा	२	२	१३	शुवनोयेयुवरुणा	४	४	२
यात्तेप्रजाजमुतस्य	१	३	युक्ष्वाहिरुपीरये	१	१	युयोतोशरुम्सदां	६	१	२७	शुवपयडुक्षियायामघत्त	२	४	२३
यास्तोरोकेसुमतर्य सुपेशसः	२	७	युगेयुगेविदुष्यगुणव्यं	४	५	युयोपनामिरुपरस्यायो	१	७	१८	शुवंपेदवेषुवरमश्विना	१	८	२१
युद्धव्यारुपीरये	४	३	युजहिमामकृथाआदिर्दि	४	१	युवकणवायनासत्या	५	८	५	शुवदेवाकृनुना	६	४	२८
युजतेमनवतयुजतेसियः	४	४	युजाकर्मणिजुनयन्	८	१	युवंकुवीष्ट पर्यश्चिनायं	७	८	१९	शुवमुत्तल्यसाधथोमहोयत्	३	२	२४
युजतिव्रधर्मरूप	१	१	युजानोअश्वावातस्य	४	७	युवचित्रदधथुर्भोजननरा	५	५	२१	शुवमुज्यु मर्वविद्धसमुदे	५	५	१६
युजन्तिहरीद्विरत्यगार्य	६	७	युजानोहुरितारये	४	७	युवच्यवानमश्विनाजरन्तं	१	८	१५	शुवभुज्युभरमाणंविभिर्गु	१	८	२०
युजत्यस्यकास्या	१	१	युजेरयगवेपणहरिभ्यां	५	३	युवच्यवानजुरसोसुसुकं	५	५	१८	शुवंपुज्युसमुदया	८	८	१
युजाथारासमरये	६	६	युजेवाव्रह्मपूव्यं	७	६	शुवच्यवानसुनय	७	८	१५	शुवभिन्नेमजनु	४	४	३
युक्तस्तेनस्तुदक्षिण	१	३	युधायुधसुपथेदैपि	३	४	युवन्तभिन्द्रापर्वता	२	२	११	शुवमुगजगृवांसं	५	८	८
युक्तामातासीदुरिदक्षिणा	२	३	युधेदेमहावारिविशकार	३	२	शुवतासिदिव्यस्य	१	७	३३	शुवरथनविमुदाय	७	८	१६
युक्तोहयद्वनोऽप्यार्य	२	३	युधमत्यतेद्वपमस्य	३	३	शुवतुंग्रायपूव्येभिरैवै	१	८	१५	शुवरेभपरिपुतेरुख्यथ.	१	८	२१
युक्ष्वाहिजेभिनाहरी	१	१	युध्मोअनवाखजुकृत्सम	५	३	शुवदक्षधतमता	१	१	२८	शुववरोसुपाग्ने	६	८	२६
युद्धगहिवरयासहा	६	२	युध्मसन्तमनवर्ण	६	३	युवधेनुशयवेनाधिताय	१	८	१९	शुववखाणिपीवसा	२	२	२२

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
युवं नन्दं निऋतं जरण्यया १	८ २१	युवं हि स्य स्वर्पती	६ ८	युवा देवास्त्रय एकादशास्तः १	१ ९	युवोरथस्य परित्वक्रमीयते ६	४ २८	युवोरथस्य परित्वक्रमीयते ६	४ २८
युवविप्रस्य जर्णां ७	८ १६	युवह्यमराजावसीदतु	८ ७	युवाकुहिदाचीनां १	१ २०	युवोरक्षिनावपुषे युवायुजं १	१ ३२	युवोरक्षिनावपुषे युवायुजं १	१ ३२
युवशक्रामाया विना ७	७ १०	युवह्यास्तमहोरन्युव	१ ८	युवादत्तस्य धिण्या ६	२ ३३	युवोराध्वहृदि न्वतिधौः ५	२ २८	युवोराध्वहृदि न्वतिधौः ५	२ २८
युवशरावायुशतीमदत्तं १	८ १४	युवमत्युस्याव नक्षथः २	४ ८	युवानं विवर्पति कुवि ६	२ ३३	युवोरुषाभानुश्रियं १	३ ४१	युवोरुषाभानुश्रियं १	३ ४१
युवशिर्यमश्विना देवतातां ३	७ २०	युवमद्वयेवनीतायतसं १	४ ८	युवाना पितरा पुनः १	२ ३९	युवोरुपूरयदुवे ६	१ ३१	युवोरुपूरयदुवे ६	१ ३१
युवश्रीभिर्वीर्यताभि ५	१ ४	युवमेतानि दिवि १	६ ८	युवानोरुदञ्जरा १	२ ४८	युवोर्ऋतरोदसी ३	५ १	युवोर्ऋतरोदसी ३	५ १
युवश्चेतपेदवृद्धं जतं १	८ १९	युवसेतचक्रयु सिन्धुपुष्टुजं २	४ ८	युवाभ्यदेवी धिण्यामर्दा १	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवश्चेतपेदवृद्धं ७	८ १६	युवांगोर्तम युस्मीहो २	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवसुरारमभक्षिना ८	८ १९	युवाचिद्विष्मश्चिनावनु २	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवं हृक्शं युवर्मक्षिना ७	८ १९	युवानरापश्यमानासुआ ५	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवहृगर्मजगतीपु २	२ २७	युवांपुषेवाक्षिनापुरंधिः २	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवं हृधर्ममधुमन्तमत्रये २	४ २३	युवामगोववारुणा ७	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवं हृभुज्युवर्मक्षिना ७	८ १९	युवायुचै प्रथमा २	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवं हृभवृपणा ७	८ १६	युवास्त्रोर्मै सिदैवयंतः २	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवहृस्योभिषजा २	२ २७	युवाहुघोपापयै धिनायुती ७	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८
युवं हिष्मपुरुषु जेमधुतं ६	६ ९	युवांहयंत उभयांसञ्जि ५	४ ८	युवाभ्यमित्रावरुणा ४	२ ७	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८	युवोर्दोनायसुभरा १	२ २८

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.
शुभेपितोमस्तोमसैपित १	३	१९	शुभह्रस्वमघवसुधाथ ५	४	३	योगोमत्वजवतंसुवीरं	३	७	४	येतुमुमंयेतविपीमवर्धन ३	२	९	२
शुभोतोविप्रोमस्त.शत ५	४	२०	युयहिदेवीकृत्युभिन्नशैः ३	८	१	येवपूर्वकृपयोयेचनूला	५	३	६	येतसखजुमयो	५	६	२०
यूनडुपुनविष्टया	६	१	३९	युयहिष्टासुदानव ४	८	१३	येचाकनन्तचाकनन्तनूते ४	१	३१	येतुसतिदशुग्विन	५	७	११
युष्टस्काडुतयेधृपवाहा ३	२	८	युयहिष्टासुदानव ५	८	२०	येचाहसिस्त सुदानव.	६	१	३१	येतिश्रतिश्रयस्पर.	६	२	३५
युयमसम्यधियणाभ्युस्प ३	७	८	युयहिष्टासुदानवदुन्द ६	४	४	येचिपुर्वकृतसाप	८	८	१२	येत्वादेवोलिकमन्य	२	५	१२
युयमसाचयतुवस्योअ ४	३	१८	येअभ्योनशोशुचक्रिधाना ५	१	७	येचिद्वित्वायुपय पूर्व	१	४	५	येत्वादिमिद्वनतुष्टुव	५	८	११
युयंगानोमेवथाकुशं ४	६	२५	येअभिदुधयेअनभिद ७	६	१९	येसिद्विपूर्वकृतसापभासं २	६	४	२२	येत्वाहिहलेमघवज	३	३	११
युयतस्तवशवस १	६	१२	येअभेचन्द्रेतेगिरं ४	१	२	येचिद्विमस्युवधव.	३	१	२८	येदेवानयुजियायुजिया	५	३	३०
युयदेवा.प्रमतिर्यय २	७	११	येअभुनेरयन्तिते ४	१	१२	येयेहपितरोयेच	७	६	१९	येदेवासद्वहस्थान	६	७	३७
युयधृपुमयुजोन ८	३	१०	येअग्ने परिजजिरे ८	२	२	येतापुष्टुदेवत्रा	७	३	१८	येदेवासोअमवतामुक्या ३	३	७	६
युयनउग्रामरुत २	४	२	येअर्वावृन्ताउपराचआहु २	३	१७	येतेत्रिहन्तसवित सवासं ३	३	८	५	येदेवासोद्विष्येकादशस्थ २	२	२	४
युयमतीविषयव. ४	३	२८	येअश्विनोयेपितरायजती ३	७	४	येतैपविप्रमर्मय	७	१	१८	येदृप्साद्विरोदेसी	५	८	२१
युयुर्यिमरुत स्याहवीर ४	३	१६	येअजिपयेवाशोपुस्तर्भा ३	३	११	येतेपथां सवित पृथ्वांसं १	३	७	३	येन पूर्वपितरं	७	६	१८
युयुराजानुभिर्युजनीय ४	३	२३	येअस्यायेअंग्यां २	५	१५	येतैविमद्वज्रकृतः	८	१	९	येन सुपत्नाअपते	८	७	१६
युयुराजान रुचिचर्पणी ६	१	३५	येकेचुगममहिनोअहिमा ४	८	१६	येतेवृणोवृपभासंद्भ २	२	४	२०	येनचष्टेवर्णोमिजोअर्थमा ६	१	३	२२
युयनिश्रपरिपाथ ८	७	१३	येअग्न्यतामनमाशयुमादु ४	७	२८	येतैशक्रासु शुचय.शुचि ४	४	५	८	येनयतेतोव्यागवे	६	१	७

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
येनंतोकायतनयाय	४ ३ १३	येनेमाक्षिश्वाच्यवना	२ ६ ७	येराधासिददलक्ष्या	५ २ २२	येसोमास परावति	५ २ २२	येसोमास परावति	५ २ २२
येनंदीधमरुत	२ ४ ३	येपाकशुसविहर्तृपदैः	५ ७ ४	येवध्वश्चन्द्रं वहुतुं	८ ३ २६	येस्तोतृभ्योगोअग्रा	८ ३ २६	येस्तोतृभ्योगोअग्रा	८ ३ २६
येनचौराप्रप्रिषी	८ ७ ३	येपातयन्तेअजमसिर्गिरि	६ ४ ४	येवाजिनपरिपश्यन्ति	२ ३ ९	येस्तोतृभ्योगोअग्रां	२ ३ ९	येस्तोतृभ्योगोअग्रां	२ ३ ९
येनमानासिश्चितयतउत्सा	२ ४ ११	येपायवोमामतेय	२ २ २	येवायवद्भद्रमार्दनासु	५ ६ १४	येस्यामनोर्विजियास्ते	५ ६ १४	येस्यामनोर्विजियास्ते	५ ६ १४
येनबुद्धोनशवसा	४ ७ १६	येपायवोमामतेयं	३ ४ ४	येवविधतुपाथैवा	४ ३ ९	येहृत्तेसहमाना	४ ३ ९	येहृत्तेसहमाना	४ ३ ९
येनवसांमयुतंनसुशधैत. ६	४ ३ ३	येपृपतीभिर्ऋष्टिभिः	१ ३ ३	येवादसस्त्यधिना	५ ६ ३०	येहरीमेधयोक्त्यामदन्तः	५ ६ ३०	येहरीमेधयोक्त्यामदन्तः	५ ६ ३०
येनासमुद्रमस्तजोमहीर	५ ७ २६	येभिः सूर्यमुपसमन्दसान	४ ६ १	येवृक्कणासोअधिक्षमि	३ ३ १	योअम्रितन्वो३ दमे	३ ३ १	योअम्रितन्वो३ दमे	३ ३ १
येनसिधुमहीरप.	६ १ १	येभिस्तिस्र परावतं	५ ८ २	येक्षुआघोरदर्पस.	१ १ ३६	योअग्निदेववीतये	१ १ ३६	योअग्निदेववीतये	१ १ ३६
येनसूर्यज्योतिषा	७ ८ १२	येभ्योमातामधुमत्	८ २ ३	येपामउमेषुपृथिवी	१ ३ १३	योअग्निदेववीतये	१ ३ १३	योअग्निदेववीतये	१ ३ १३
येनाकुल्याधिरोचने	१ १ ३७	येभ्योहोत्राप्रथमा	८ २ ४	येपामर्णोनसप्रथ.	६ २ ९	योअग्नि देव्यान्नाहनः	६ २ ९	योअग्नि देव्यान्नाहनः	६ २ ९
येनादशग्वमधिगु	६ १ १	येमहोरजसोविदु.	१ ३ ३६	येपामावाधक्कुरिमयः	६ २ ९	योअग्नि क्रव्यात्प्रविवेक्ष	६ २ ९	योअग्नि क्रव्यात्प्रविवेक्ष	६ २ ९
येनानवब्रह्मद्व्यह	७ ५ १७	येमर्धान. क्षितीना	३ ४ ४	येपामिळाघृतहस्ता	५ ३ २२	योअग्नि सुसमानुपः	५ ३ २२	योअग्नि सुसमानुपः	५ ३ २२
येनापावककुक्षसा	१ ४ ८	येमेषचाशतद्वु.	४ १ १०	येपाश्रियाधिरोर्दसी	४ ३ ३८	योअग्नीपोमाहुविषा	४ ३ ३८	योअग्नीपोमाहुविषा	४ ३ ३८
येनावतुर्वशंयदुं	५ ८ २१	येयजत्रायईडया.	१ १ २७	येसत्यासौहविरदं	७ ६ १८	योअत्यद्वमस्यते	७ ६ १८	योअत्यद्वमस्यते	७ ६ १८
येनद्रोहविषाकृवी	८ ८ १७	येयशेनुदक्षिणयासमक्ताः ८	२ १	येसंविनु. सुत्यसवस्य	७ ७ ७	योअदधाज्जोतिषि	७ ७ ७	योअदधाज्जोतिषि	७ ७ ७
येनद्रोहविषाकृवी	८ ८ ३२	येयुध्यन्तेप्रधनेपु	८ ८ १२	येसोमास. परावति	६ ६ २२	योअद्विभिर्प्रथमजाऋता ५	६ ६ २२	योअद्विभिर्प्रथमजाऋता ५	६ ६ २२



मन्त्र-	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ.
---------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	----------

मंत्र-	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र-	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र-	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र-	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र-	अष्ट. अ. वर्गः
योमर्त्येष्वधृतऋतावां	३ ४ १५	योराजभ्यऋतुभिभ्यो	२ ७ ८	योवाघतेददतिसुनरवसु	१ ३ २०	योवः सुनोत्यभिपित्वेअह्नाइ	७ ६ ५		
योम्रापाकेनमनसुचरतं	५ ७ ६	योराजाचर्षणीनां	५ ६ ७	योवाचाविवाचोमृद्रवाच	७ ७ ९	योवः सेनानीर्महूत-	७ ८ ५		
योमायातुयावृधानेत्याह	५ ७ ८	योरायोऽनुवनिर्महान्	१ १ १	योवाभश्चिनामनसोजवी	१ ८ १३	योव्यतोरैरफणयत्	५ ७ ७		
योमित्रायवक्ष्याया	२ १ २६	योरायोऽनुवनिर्महान्	३ ३ ३	योवासुख्यचन्तम्	६ २ २८	योव्यसंजाह्वाणेन	१ ७ १२		
योमृळ्यातिचक्रुर्षेचिदा	५ ६ ९	योरेवान्योऽर्धमीवहा	१ १ ३४	योवामृजवेकमणाय	५ १ १४	योहुत्वाहुिमरिणात्सु	२ ६ ७		
योमैधेननाशत	४ ३ २७	योरोहितौवाजिनौवाजि	४ २ ७	योविश्वतः सुप्रतीकः	१ ६ ३१	योह्रवांमधुनोदति	५ ८ ४		
योमैराजन्त्युज्योवा	२ ७ १०	योवरेवृजनेविश्वयाविभु	२ ७ १	योविश्वस्यजगतः प्राण	१ ७ १२	योहुव्यान्वैरयतामनुर्हितः	६ १ ३३		
योमैशताचविश्रुतिचगो	४ १ २१	योवर्धनुज्योपधीनायोऽनुपां	७ ७ १	योविश्वदयतेवसु	६ ७ १४	योहुस्यवारथिरुवस्तुवृक्षा	५ ५ १६		
योमैहिरण्यसंहदाः	५ ८ ८	योवांगतुमनसतक्षदेत	५ ५ ६	योविश्वान्युसिधृता	६ ३ ६	योहोतासीत्यग्रमः	८ ४ १०		
योयजातियजतुहृत्	६ २ ३८	योवायुज्ञे यज्ञमग्नौ	२ २ २१	योविश्वमिद्विपश्यति	३ ४ १०	योतेश्वानौयमरक्षितारौ	७ ६ १६		
योयज्ञस्यस्रसाधनः	८ १ १९	योवानासत्यावृषि-	५ ८ २७	योविश्वमिद्विपश्यति	८ ८ ४५	रक्षणेओअग्नेतव	३ ४ २२		
योयज्ञोविश्रुतस्तुभिः	८ ७ १८	योवांपरिजमासुवृत्	७ ८ १५	योवृत्रायसिनुमत्रा	२ ७ १२	रक्षासुनोअररूप-	६ ८ १९		
योऋक्षासिनिज्वर्तति	८ ८ ४५	योवायुज्ञेभिरावृत्-	६ २ २८	योवेदिष्टोअन्यधिपु	५ ७ ७	रक्षोहणवृजानिमा	८ ४ ५		
योऋजासिबिमेषार्थिवा	४ ८ ७	योवायुज्ञोनासत्याहृवि	५ ५ १७	योवेदिवाघतक्षुना	४ ८ १५	रक्षोहविश्वचर्षणि-	६ ७ १६		
योऋथस्त्वोद्विता	२ ६ ८	योवांरजास्यश्चिना	६ ५ २०	योवोवृताभ्योअकृणोत्	७ ७ २५	रुण्व संदष्टैपितुमान्	८ २ ८		
योऋधिवोरयितम्	४ ७ १६	योवांरथोऽनुपतीअस्तिवो	५ ५ १८	योवः शिवतंसोरसु-	७ ६ ५	रथनुमास्तेवय	४ ३ २०		

मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्र.	अष्ट. अ. वर्ग.
रथयांतुहुकोह	७ ८ १८	रथोनयात शिकभिः	२ २ ९	राजतमध्वराणां	१ १ २	रायस्पृधिस्वधावः	१ ३ १०
रथयुंजतेमुक्ते शुभेसुख	४ १	रथोयोवाधिवन्धुर	६ २ ५	राजानावनेभिदुहा	२ ८ ७	रायावयंससुवांसोमदे	३ ७ १८
रथयेचकु सुदृतनरेष्टा	३ ७	रदस्योवरुणः सूर्याय	५ ६ ९	राजानोनप्रशस्तिभि	६ ७ ३४	रायाहिरण्ययामति	५ ५ ९
रथयेचकुः सुदृतेसुचेतस	३ ७	रपत्कविरिंद्राकसातौ	२ ४ १७	राजामिधामिरीयते	७ २ ४	रायेयुंजजतुरोदेसीमे	५ ६ १२
रथवाममुगायसुं	५ ८	रपद्वध्वीरप्याचु	७ ६ ९	राजाराष्ट्राणापेक्षोनदीनां	५ ३ २६	रायोधारास्याधुणे	४ ८ २१
रथहिरण्यवंधुर	३ ७	रमध्वमेवचसेसोम्यायु	३ २ १२	राजासमुद्रं नद्योऽवि	७ ३ १३	रायोवृक्षः सगर्भेनोवसूनां	१ ७ ४
रथहिरण्यवधुर	५ ८	रथिनीचित्रासुरोन	१ ५ १०	राजासिधूनामवसिष्ट	७ ३ २५	रायोवृक्षः सगर्भेनोवसूनां	८ ७ २७
रथवाहिनद्विरेस्त्रनाम	५ १	रथिनैय पितृवित्तो	१ ५ १९	राजासिधूनापवत्तेपति	७ ३ १८	राधिसर्वनेपुनः	३ ३ ३
रथानानयेऽरा	८ ३ १२	रथिदेवोदुहितरोविमा	३ ८ २	राजैवहिजनिभि कयेल्ये	५ २ २४	रासिष्युरासिमित्र	२ ६ ५
रथानावमुतनो	२ २	रथिनैश्चित्रस्यधितं	६ ७ २३	राजोनुतेवरुणस्य	१ ६ १९	रिशादेसु सत्येतिरिवंधा	४ ८ ११
रथिरासोहरयोयेतेजुसि	६ ४ १७	रथिसुक्षत्रस्वपुलमायु	१ ८ ११	राजोनुतेवरुणस्य	७ ३ २४	रुजाह्वहचिद्वक्षसु	७ ४ १
रथीतमकृपावन्	४ ८ २१	रथेह्वयमतिभिर्गुणियानां	५ ४ ६	रातियद्वर्माक्षसहर्वामहे	६ ७ ७	रुद्रस्ययेमीळदुपु सति	५ १ ७
रथीवृकश्याक्षौअभिश्चि	४ ४ २७	रुद्रमीरिवयच्छतमध्वरौ	६ ३ १७	रात्रीभिरस्माअहमि	७ ६ ७	रुद्राणामेतिप्रदिशोविचक्ष	१ ७ १३
रथेतिष्ठयतिवाजिनं	५ १ २०	रसतेमित्रोअर्थमा	७ १ ४०	रात्रीव्यव्यदायती	८ ७ १४	रुवर्तिमीमोर्ध्वपम	७ २ २४
रथेनपृथुपाजसा	३ ७ २२	रुसाय्यु पर्यसा	७ ४ १३	राय संसुद्राश्चतुर	६ ८ २३	रुवर्द्धसास्वतीश्रुत्यागात्	१ ८ १
रथेष्टायाध्वयन्व	५ ७ ३२	राकामहृहवासुष्टीहुवेर	७ १ ५	रायस्कांमोवज्रहस्तसुदक्षि	३ ३ १७	रूपरूपप्रतिरूपोवमृव	४ ७ ३३

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग.
रूपं रूपं मधवावो भवीति	३	३०	वृच्यते वां क्रुहसः	१	३३	वनस्पते वसुजोपदेवा	५
रेभुदवजनुपापूवः	८	४	वज्रमेको विभाति हस्तगा	६	३६	वनस्पते वीङ्गो हि मयाः	४
रेवतीर्न सधमादं	१	३०	वज्रयश्चक्रसूहनाय	८	५	वनस्पते शतवल्गो विरोह	३
रेवद्वयोदधाथे	२	२१	वज्रेण हि वृत्रहवृत्र	८	११	वनीवानो मम दत्तासु.	८
रेवाद्देवतस्तोता	५	१९	वज्रासुनो सहसो नो विहो	४	५	वनेन वा योन्य धायि	७
रेभ्यासीदनुदेयी	८	२१	वज्राहि सुनो अस्त्रासद्धा	४	५	वने सुतद्धो वया	२
रोदसी आवदता	१	७	वधीदिदो वरशिखसु	४	३३	वने मपूर्वोर्यो	१
रोहिच्छावासुमदं शुलं	१	२१	वधीर्हि दस्युधनिर्घनेन	१	३	वने पुजायुर्मत्तपु	१
रोहितं मे पाकस्थामा	५	७	वधीं वृत्रं वज्रेण मंदसानः	२	३५	वने पुव्यं त्रितरिक्षतानु	४
वंदस्व मारुतगुणं	१	१७	वधूरियपतिमिच्छयेति	४	८	वनोति हि सुन्वन्	२
वंसगेवपूयार्थिवाता	८	१	वधेन दस्युं प्रहिचातयस्व	३	८	वन्वन्नवातो अग्नि	७
वंस्वदिश्वाचार्याणि प्रचेत	५	२३	वधेदुः शंसां अप	१	६	वपति मस्तो मिहुं	३
वंस्वानुवायार्थपुरु	६	२१	वनस्पतिरसृजन्नु	२	५	वपुर्नुतं चिह्नितुं पेचिदत्र	५
वृक्ष्यंती वेदाग्नीगति	५	१९	वनस्पतिं पवमानु	६	७	वप्रीभि पुत्रममुवो	३
वचोद्विधप्रसन्नानि	६	२४	वनस्पतेरशुनया	८	२	व्यंघ्रवा सुतावतः	६
वचो बिद्वच्च सुदीर्यती	६	७	वनस्पते वसुजोपदेवान्	२	८	व्यंघ्रति अग्निमसि	३

अष्ट. अ. वर्ग.	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग.	अष्ट. अ. वर्ग.
६	व्यंघ्रति अपूर्व्य	५	२
६	व्यंघ्रति त्वेद्व	७	३५
२	व्यंघ्रिद्विवाज रितारः सु	१	४
१	व्यजये मत्वया युजावृत	१	४
६	व्यतं दद्वस्त्रो मेभिः	७	२२
४	व्यतं पुभिः पुरुहूतसुख्यैः	१	१७
३	व्यतं दद्व सत्राजु आवृणीम	५	१४
८	व्यते अमनुक्यैर्विधेम	५	११
२	व्यते अमे सुमिधा विधेम	४	३०
१	व्यते अघर रिमा हि कर्म	१	२२
२	व्यते अस्व वृत्रहन्	३	२५
७	व्यते अस्व वृत्रहन्	८	१८
४	व्यते अस्यार्मि दद्युः प्रहृतौ	५	१
३	व्यते तं दद्वये च देवा	३	६
४	व्यते तं दद्वये च नरः	६	३
३	व्यते वयं दद्विद्वि	३	३

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
वृयनामप्रवामाघृतस्य	३ ८ १०	वृयमिद्रत्वायव	८ ७ २१	वरीष्टोवस्यदक्षिणाभियू	४ ७ १	वपदतेविष्णव्वासवाकृणो	५ ६ २४
वृयमित्रस्यावमि	४ ४	वृयमिद्रत्वेसर्चा	३ ६ २७	वरुणोसिबोर्धयमा	६ ६ २	वपदतेविष्णव्वासवाकृणो	५ ६ २५
वृयनोवृक्तगर्हिप	६ २	वृयमुत्वागृहपतेजनानां	४ ५ २०	वरुणवोरिशदसं	४ ४ २	वसाराजानं वसुतिजनानां	३ ६ २४
वृयंअरेभिरस्तेभि	१ १	वृयमुत्वाददिदर्थोः	५ ७ २०	वरुण प्रायितायुवत्	१ १ २	वसिष्ठास. पितृवत्	८ २ १४
वृयलोमघतेतन	८ १	वृयमुत्वादिवसुते	६ ४ ४४	वर्येथेथमिमातपं.	६ ५ १९	वसिष्ठहवरुणोनाव्याधा	५ ६ १०
वृयहितेभमेन्महि	१ १	वृयमुत्वापथस्पते	४ ८ १७	वर्धतीमारप पुन्वा	१ ५ १	वसिष्ठाहिमियेथ्य	१ २ २०
वृयहित्वायधुमतं	६ २	वृयमुत्वाभपूर्य	६ २ १	वर्धैवासुषुष्टुत	६ १ ११	वसुरमिर्वसुअवा.	४ १ १६
वृयहित्वाहवामहे	६ २	वृयमुत्वाशतक्रतो	६ ६ १७	वर्धायुजुडतसोमुहं	४ ७ १०	वसुयसुपतिर्हिक्	६ ३ ४०
वृयहिगृहचमिहेविपुन्य	६ ६	वृयमेनमिदारा	६ ४ ४९	वर्धान्यपूर्वोःक्षपो	१ ५ १४	वसुनचित्रमहसं	८ ७ ५
वृयं सपुर्णाउपसिदु	८ ३	वृयश्चित्तेपतग्रिण	१ ४	वर्धान्यविश्वमस्तं.सुजो	४ ६ ३	वसुतावाचकृपे	८ ३ ५
वृयममेग्रेअंता	२ ५	वृयाद्दमेजुमयस्ते	१ ४ २५	वर्पेतुतेविभावरि	४ ४ २९	वसुदापुरुमत	२ ३ १
वृयममेयजुयामत्वोतां	३ ८	वृयोनेयेश्रेणीं पसुरोजसा	४ ३ २४	वर्पिष्ठक्षत्राउरुक्षसानरा	६ ७ १	वसोरिद्रचसुपति	१ १ १८
वृयममेग्रेस्यश्रेष्ठा	२ ४	वृयोनेयुक्षसुपलादा	७ ८ २४	वृवक्षद्वोअमित	३ ५ १७	वस्योद्वासिसेपितुः	५ ७ ११
वृयमिदं सुदाननः	६ ६	वृराहुयेद्वैवृतासोहिरण्यै.	४ ३ २५	वृवक्षुरस्यकेतवं.	६ १ २	वस्वतिभमेसंदष्टि	४ ५ २५
वृयमित्राययौ	३ ३	वृरितोधातमोभव	६ ७ १६	वृवाजासीमनदतीरदं	२ ८ १५	वहतिसीमरुणासो	५ १ ५
वृयमिद्रत्वायन	५ ३	वृरिष्ठेनद्वद्वयुरेधाः	४ ७ ३१	वृवासोनेयेस्यजास्तवसु.२	४ ३	वहतुस्वामनोयुजः	३ ७ २४

मन्त्र

वहवृत्वारयेष्टां

वहवृत्समिन्द्रयासिन्याक

वहिष्ठेभिर्विहरन्या

वह्नियसविदयस

वाचसुभिन्नावरुणाविराव

वाचस्पतिं विश्वकर्माण

वाचमष्टापदीमहं

वाचोजुतु कवीना

वाजुयान्नितुरया

वाजिनीवतीसूर्यस्योषा

वाजितमायसयसे

वाजीवाजेषुधीयते

वाजैभिर्नोवाजसाता

वाजैवाजेवतवाजिनो

वाजेषुसासहिर्भव

वाजोऽनुते शवसस्यालत

अष्ट. अ. वर्गः

६ ३ ९

३ ५ १३

१ ४ ३६

४ ३ १६

८ ३ १६

६ ५ २८

७ २ १५

२ ५ २९

५ २२

८ ६ १९

३ १ २९

१ ७ ३१

५ ४

३ २ २२

१ ७

मन्त्र

वाज्यसिवाजिनिना

वातुआवातुमेपजं

वातैस्त्वियोमस्तोवर्पनि

वातस्युपस्मन्नीजिता

वातस्युजुर्मेहिमानं

वातस्ययुक्तान्स्युजश्चिद

वातस्याश्वोवायो सखा

वातसो नयेधुनय

वातैवाजुर्वानुधेवरीति

वातोपधूतद्विपितः

वाममृधसवितवामसूशो

वामस्यहिमचेतसः

वामनोअस्त्वयमन्

वामवर्मन्तथादुरे

वामीवामस्यधूतय

वायुऽक्थेभिर्जरेते

अष्ट. अ. वर्गः

८ १ १८

८ ८ ४४

४ ३ २१

३ ८ २१

८ ८ २६

१ ३०

७ २४

३ १२

८ ४

४ २१

१ १५

६ ६

६ ६

३ ६

४ ८

१ १

मन्त्र

वायुवायाहिदशत

वायुवायाहिवीतये

वायुविद्रश्चेतय

वायुविद्रश्शुष्मिणा

वायुविद्रश्सुन्वत

वायुरस्माउपमयत्

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

वायुर्नयोनियुत्वा

अष्ट. अ. वर्गः

१ १ ३

४ ३ ५

१ १ ३

३ ७ २३

१ १ ४

८ ७ २४

७ ३ २४

२ १ २३

१ १ ३

६ २ ३०

२ ८ ७

३ ७ २४

३ ७ २३

६ ७ ७

३ २ २१

८ ४ २८

मन्त्र

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

वावसानाविवस्वतः

मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः
वाहिष्ठेवाह्वानां	६ २ २९	चितिष्ठस्वमस्तोविद्विष	५ ७ ८	विदुष्टेअस्वीयस्य	२ १ २०	विशुद्धस्वाभिधवः	५ ८ २२	अष्ट. अ. वर्गः	
विप्रोशनासोपिब्वचः	७ ७ १८	वितेवज्रासोअस्थि	१ ५ ३०	विदुष्टेविद्यासुवनानि	३ ७ १८	विशुद्रयामस्त.	३ ३ २६		
विद्यत्वावोक्तजातय	२ ५ ११	वितेविद्यवार्तजुतासोअ	५ ५ ८	विद्वहानिचिदद्विच	४ ७ २२	विशुन्नयापत्नीद्विषो	८ ५ २		
विह्रतोदुरिवापूरु	७ १ २४	वित्वक्षणा समतौचक्रमासु	२ ५ २	विद्यातेअद्वेष्टा	७ ८ ८२	विशुन्महसोनरोअइर्मदि	३ ३ १४		
विचक्रमेष्टुिचीमेपणता	५ ६ २५	वित्वदापोनपर्वतस्वपुष्टात्	४ ६ १८	विद्यासंपित्वसूतशूरभो	६ २ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	५ ५ १७		
विचिद्धृन्नस्यदोधत	५ ८ १०	वित्वाततस्तेमियुना	१ ५ २०	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
विचेदुच्छलश्रिनाडयासो.	५ ५ १९	वित्वा नरं पुत्रा	५ १४	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
विजनोन्मथावा.शिलिपा	५ ३ २	विदयस्व्युनष्ट	६ ५ ३४	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
विजुयुगारध्याया	५ १ २	विदयदीसुरमारुणमहे	३ २ ६	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
विजानीरण्योन्येचदस्यव	५ ४ १०	विदतीमन्नरौ	१ ५ ११	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
विजिहीष्यवनस्पते	४ ४ २०	विदाचिन्महातोयेवपुवा	४ २ १५	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
विजेपुर्द्धिद्वच	८ ३ १८	विदादिवोविष्यन्दिमुक्यै	४ २ २६	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
विज्योतिपावृहताभस्य	३ ८ १५	विदादेवाजधाना	४ ३ ७	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
नितचयुररुणधुमिरथो	५ १ ४	विद्वानासोजन्मनोवाजर	३ ७ ३	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
नितन्यतेधियोअम्माअपा	४ ३ १	विदुष्टिध्यादिवोजनि	५ ३ २५	विद्याहितेपूरावयं	६ ५ २६	विद्वोअक्षेव्युनानि	८ २ २२		
नितर्तयेतमघान्विपुश्रि	५ ७ १०	विदुर्गोविद्विप पूर	१ ३ २२	विद्युतोष्योति पतिंसुलि	५ ३ २३	विद्युतोष्योति पतिंसुलि	५ ३ २३		

मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
विपश्चितेपर्वमानाय	७	३ २०	विभिन्नापुरंशुयथा	८	२ १५	वियद्वेद्वेधविपः	६	६ २३	विरादसुभ्राद
विपानेसापुशुतादोशुचान	३	१ १५	विभिन्नां चरतुपक्तयासह	६	२ ३६	वियद्वारसिपर्वतस्य	३	६	विरागिसुत्रावर्णयोः
विपिप्रोरहिमायस्यद्वहः	४	६ १०	विभुप्रभुप्रथममेहना	२	७ २	वियद्वाचक्रीस्तासोभरते	५	१ १०	विरायओणोदुरः
विपुष्पारंशुयानुद	४	८ १८	विभुतरातिविप्रवित्रसो	६	१ २९	वियस्यतेत्रयसुनस्यो	८	६ १८	विरूपासुहृदपयः
विपृक्षोअभेममयवर्जो	१	५ १९	विभुपञ्चमप्रभुयौअनुव	४	५ १८	वियस्यतेप्रथिव्यापाजो	५	२	विविप्रोरहिमायस्यद्वहः
विपृच्छामिपुण्यां ननुवा	१	८ २२	विभ्राज्ज्योतिपास्वः	६	७ १	वियजानातिजसुरि	४	३ २७	विवातजूलोअतसेपुतिष्ठते
विप्रविप्रसोवसे	५	८ ३६	विभ्राज्ज्योतिपास्वः	८	८ २८	वियासुजतिसमनं	५	४	विवृक्षान्हन्युतहन्तिरक्ष
विप्रहोतरिमद्वह	६	३ ३७	विभ्राजमानपसामुपस्था	५	५ ५	वियेच्यतत्युतासप्यत	१	५ ११	विवृत्रपर्वद्वेयोयुः
विप्रयतांदेवजुष्टं	८	२ २१	विभ्राद्वयुहपिपुसुलोमं	८	८ २८	वियेतंअक्षेसेतिरेअनीकं	५	१ २४	विवेपयन्माधियणजुजान
विप्रस्यवास्तुवत सहसो	६	१ ३१	विभ्राद्वयुहसुयुतं	८	८ २८	वियेदुष्टुशुखंमासमादहः	५	१०	विव्यकथमहिनावृपत्र
विप्रायुद्रेपमांशुपुष्करू	५	२ २	विमच्छयायरश्चाना	२	७ ९	वियेअजातेसुमसास	१	६	विशविशमघवापरि
विप्रसो नमन्मभिः	८	३ १२	विमृद्धीकावतेमनं	१	२ १६	वियोसमेयुम्यांसयती	७	२ १९	विराकुविविशपतिमानु
विप्रैभिर्विप्रसंय	४	३ ५	विमेकणोपतयतोविचक्षुः	४	५ ११	वियोरजास्यमिमीत्सुक	४	५	विराकुविविशपतिमानु
विभुमकारं वचामहे	१	२ ५	विमैशुशुप्रतयति	३	३ २८	वियोररुप्याक्रपिभिः	३	६	विराकुविविशपतिशब्दती
विभुमकसिचित्रमानो	१	२ २३	वियतिरोयुरुणमच्युतं	१	४ २१	वियोवीरुसुरोधं	१	५ ११	विशांगोपाथस्य
विभावदिवसुः सुः परिक्षि	२	८ २१	वियदुस्थायजुतो	२	२ ९	विरक्षोविमृधोजहि	८	८ १०	विशारजानुमद्वुतं

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग	मन्त्र	अष्ट. अ. वर्ग
विश्वामासामभयानां	८ ४ २५	विश्वमस्यानामचक्षसे	१ ४ ४	विश्वोदुतत्वर्पावय	२ ५ २८	विश्वारूपण्याविशान्	६ ८ १५		
विश्वोयदद्वेष्टुमि	१ ५ १३	विश्वमिरसवन्सुतं	१ १ ३१	विश्वोद्वेपासिजुहिचाववा	६ ४ २२	विश्वारोधासिप्रवतः	३ ६ ७		
विश्वोविश्वोद्वेष्टुमध्वरेषु	४ ८ ५	विश्वोद्वेष्टुमध्वरेषु	१ ५ ७	विश्वोधासिनिविश्वचक्षुः	७ ३ १२	विश्वोवसुरभितशोगृणा	८ ७ २७		
विश्वोविश्वोवोअतिथि	६ ५ २१	विश्वस्याजुमिभुवनाय	८ ४ १२	विश्वानरस्वस्पति	६ ५ १	विश्वोवसुसोमगन्धर्वमार्प	८ ७ २७		
विश्वोवसुसुवन्तिथिनर	२ ८ २१	विश्वस्मादस्वर्देष्टो	७ १ ५	विश्वानिदेवसवितः	४ ४ २५	विश्वोवसुसिंसुजयन्	६ ८ १९		
विश्वयतासुर्विया	२ ५ २२	विश्वस्यात्सीमधुमौ	३ १ ५	विश्वानिदेवीसुवना	३ ६ २५	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वयतामृतावृध	१ १ २४	विश्वस्याजोअदितिः	७ ८ ९	विश्वानिनोदुर्गेहाजातवे	३ ८ १९	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वयतामृतावृध	२ २ १०	विश्वस्यकेतुसुवन्स्यु	७ ८ २८	विश्वानिभुद्रामरुतोरथेषु	२ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वपश्यतोविमृथातनू	६ १ ४०	विश्वस्यराजपवते	७ ३ १	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वप्रतीचीसप्रथाउद	५ ५ २५	विश्वस्यहिष्णुष्टयेद्वेवजुध्वः	२ ८ २	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वसुलमधवाना	२ ७ ३	विश्वस्यहिप्रचितसा	४ ४ ४	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वकर्मन्धुविर्पा	८ ३ १६	विश्वस्यहिप्रणजनीवनं	१ ४ ४	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वकर्मविर्मनाः	८ ३ १७	विश्वस्यहिप्रणित	७ ४ ४	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वजितेधनजिते	८ ३ १८	विश्वोवसुसिंसुवन्स्यु	७ ४ ४	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वतश्चक्षुस्त	८ ३ १९	विश्वोवसुसिंसुवन्स्यु	७ ४ ४	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		
विश्वदानीसुमनसस्या	४ ८ १४	विश्वोवसुसिंसुवन्स्यु	७ ४ ४	विश्वानिनिश्चमनस	३ ४ २	विश्वोवसुसिंसुजयन्	४ ८ २		

[illegible]

मंत्र	अष्ट, अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट अ वर्गः	मंत्र	अष्ट, अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट, अ. वर्गः	
विष्वक्पुत्रमभ्युपनिषत्	४	२	२६	वीर्यपुत्रमभ्युपनिषत्	८	८	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
विष्वक्पुत्रमभ्युपनिषत्	८	७	२६	वीर्यपुत्रमभ्युपनिषत्	४	१	२६	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र
विहृत्स्वामिद्रुपुत्रा	८	६	१३	वीर्यपुत्रमभ्युपनिषत्	२	५	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
विहृत्स्वामिद्रुपुत्रा	८	४	१	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	४	४	४९	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र
विहृत्स्वामिद्रुपुत्रा	३	७	२४	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	५	१५	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
विहृत्स्वामिद्रुपुत्रा	१	७	२८	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	७	३३	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
वीतिहोत्रावकाये	४	१	१९	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	७	१९	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
वीतिहोत्रावकाये	६	२	३९	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	६	३३	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
वीतिहोत्रावकाये	७	४	१	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	४	१३	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
वीतीयेदेवमतौदुवलेत्	४	५	३०	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	४	३५	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
वीद्र्यासिद्रिव्यानि	७	७	२९	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	३	९	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
वीर्यपुत्रमभ्युपनिषत्	३	३	३१	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	६	३३	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	
वीर्यपुत्रमभ्युपनिषत्	८	५	२५	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	५	६	५	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र
वीरिर्भोत्रान्वनवत्	२	७	४	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	८	६	१४	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र
वीर्यपुत्रमभ्युपनिषत्	१	१	११	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	६	८	११	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र
वीर्यपुत्रमभ्युपनिषत्	१	५	१५	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र	६	१	३७	वृषणस्तेभ्यमीर्यपुत्र

मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग.
वृषसिद्धिवोवृषभःपृथि	४	७	२०	वृष्णोऽस्तोपिभूम्यस्यग	४	२	१४	वेपिहध्वरीयतां	४	५	२
वृषलोतांसुनोवुले	६	३	९	वेत्याहिनिर्गतीनां	६	२	१९	वेपीद्वस्यदूत्य	३	५	९
वृषासोमद्युमोऽसि	७	१	३६	वेत्याहिबेधोअध्वन.	४	५	२१	वेयुश्चस्थुतनरा	६	२	२८
वृषासंभोजर्जः	४	८	१	वेत्याहिबेधोअध्वन	६	२	१९	वैश्वानरतवतत्सुत्यमस्तु	१	७	६
वृषास्यसिभानुनां	७	२	१	वेल्यवृजनिवान्वाअतिरुष्ट	४	२	२४	वैश्वानरतवतानिवातानि	४	५	६
वृषास्यसिरार्धसे	४	२	५	वेल्यध्वयुःपृथिभीरजिष्टे.	६	७	७	वैश्वानरतवधामान्याच	२	८	२१
वृषेवयथापरिकोचं	७	३	१	वेदंमामोयुतवत.	१	२	१७	वैश्वानरस्यदंसनाभ्योवृह	२	८	२१
वृषोऽभि समिध्यते	३	१	३०	वेदुयस्त्रीणिद्विधान्येषां	४	८	११	वैश्वानरस्यविमितानिच	४	५	९
वृषिर्थावारीत्यापा	४	४	६	वेदुवातस्यवर्तने	१	२	१७	वैश्वानरस्यसुमतोस्याम	१	७	६
वृष्टिंदिच.परिस्व	६	७	३१	वेदायोवीनांपदं	१	२	१७	वैश्वानरकृत्वयो	८	४	१२
वृष्टिद्वि शतघोरः	७	४	८	वेदुपदेयिर्धामाय	२	२	५	वैश्वानरमनसुग्निनिचा	३	१	२६
वृष्टिर्गोअर्पद्विग्याजिग	७	४	१४	वेधाअहसोअभिर्वि	१	५	१३	वैश्वानरविस्वहो	८	४	१२
वृष्ण.कोशं पवतेमध्व	२	६	१७	वेमिच्चापूपन्नजसे	५	७	३३	वैश्वानर.प्रलयानाकमारु	२	८	१९
वृष्णस्तेष्टृण्यंशव.	७	१	३६	वेरध्वरस्यदूत्यानि	३	५	७	वैश्वानरायधिपणामृताष्ट	२	८	१६
वृष्णेयस्तेष्टृणोअर्कमर्च	४	१	२९	वेपिहोत्रमुतपोऽंजनानां	७	५	३०	वैश्वानरायपृथुपाजसेवि	२	८	२०
वृष्णनाधायसुमखायवेध	१	६	६	वेपिहध्वरीयतां	३	५	९	वैश्वानरायमीहुये	३	५	१

अष्ट. अ.	वर्ग.	मंत्र	अष्ट. अ.	वर्ग.
१	४	२५	१	४
५	३	१२	५	३
५	३	१३	५	३
५	३	१४	५	३
७	७	५	७	७
३	३	१४	३	३
८	६	८	८	६
५	५	२६	५	२६
२	२	१९	२	१९
१	८	३	१	८
६	६	२१	६	२१
२	८	३	२	८
३	३	१२	३	१२
६	६	१९	६	१९
३	३	१६	३	१६
६	६	२०	६	२०
५	५	१	५	१

मंत्र	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
व्यं१ सेअधि शर्मतव	६ ४	शानः सूर्यवचक्षुः उदेतु	५ ३	शंसांमहर्भिर्दुं	३ ३	शतजीवशुद्रोवधमान	८ ८ १९
व्यानं छिद्रं पुराणा.	७ ७	शान सोमो भवतु ब्रह्मदा	५ ३	शसां सित्रस्य वरुणस्य धा	५ ५	शततैरा जमिपत्न सहस्र	१ २ १४
व्युच्छन्ती हिरुदिमभिः	१ ४	शनो अमित्रो अतिरिनीकोऽप	५ ३	शसां वाच्यो प्रतिमे	३ ३	शततैरि मिश्रुतय. सुवासै	५ ३ ९
व्युच्छादुहितदिवः	४ ४	शनो अज एकपादेवोऽस्तु	५ ३	शसे दुव्य सुदानव	५ ३	शतद्रासे वल्वद्वये	६ ४ ६
व्यु१ पाओवो दि विजाः कृते	५ ५	शनो अदिति भवतु द्योतिभिः	५ ३	शुकमय धूममारादपश्य	२ ३	शतधार दिवजसा	७ ४ १६
व्यु१ पाओव. पृथ्या ३ जनां	५ ५	शनो दिव सधितान्नयमाण	५ ३	शुकेर्मत्वास मिध	१ ३	शतन हृदकुतिभि.	७ १ ९
व्यु१ र्वती दिवो अंतां	१ १	शनो दिवा विधेवा भवतु	५ ३	शुग्धि पूधि प्रयसिच	१ ३	शतमेग दुभाना	६ ४ २७
व्यु१ दुदियु छिपामशोचा	५ ५	शनो दिवीर मिष्टये	७ ३	शुग्धि चानस्य सुभगप्रजा	३ ३	शतमेपान्वृक्यै चक्षुदान	१ ८ ११
व्यु१ छेणु ध्वसहिवां	८ ५	शनो धावा पृथिवी पर्व	५ ३	शुग्धी न हृदयत्वा	५ ७	शतमेपान्वृक्यै ममहान	१ ८ १६
व्यु१ तैरंशे महुतो महानि	२ ८	शनो धाता शमुघतानोक	६ ३	शुग्धी नो अत्यथक् पौरमा	५ ७	शतराज्ञो नाधमानस्य	२ १ ११
व्यु१ तेन्यो ध्रुवक्षमा	४ ४	शनो भग शमुन. शसोक	५ ३	शुग्ध्यु ३ पुरुषीपते	६ ३	शतवाय शुचीना	१ २ २८
व्यु१ तैवातगुणगं सुशुस्ति	३ ३	शनो भव चक्षसाश	७ ३	शचीभिर्न. शचीवसु	२ २	शतवाय दसुयु प्रतिवा	८ ५ २७
व्यु१ न हृद्राभी भवतां मर्वा	५ ५	शनो भव हृदया पीत हृदो	६ ३	शची विहृदु मर्वसे	१ ७	शतवाय स्य दशसिक्	२ ६ ११
व्यु१ न हृद्रो वसुभिर्देवो	५ ५	शनो भवतु वाजिनो हवेषु	५ ३	शची विहृदु मर्वसे	८ ३	शतवेषून्कृत्युन.	३ ४ २६
व्यु१ न कर्त्यवैते	१ ३	शनो सिन्ध शवक्ष्य	१ ३	शची वितस्तेषु दशकुशाकृताः	६ ३	शतश्रेता स उक्षणा	६ ४ २६
व्यु१ न सत्यस्य पतयो भवतु	५ ५	शरो दंसी सुवधवे	८ ३	शर्चा कर्तो पितर युवाना	७ ३	शतवो अंधा मासि	८ ५ ८

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
शतकृतमर्णवशाकिन्	३ ३ १५	शमुपुवामधुयुवा	५ ५ १४	शश्वतंहिप्रचेतसः	५ ५ १४	शिशुजज्ञानंहर्यते	५ ५ १४
शतधरसुस्समक्षीयमाण	३ १ २७	शशु पुरस्तादधु	३ ३ २९	शश्वतोहिशत्रवोरारधुष्टे	३ ३ २९	शिशुनवाजेन्यवर्धयति	३ ३ २९
शतधरवायुमुक्तं	८ ६ ३	शरस्वविदावृत्कस्यावृता	२ ५ १४	शाविगोशाचिपूजन	६ १ २४	शिशुनजातोवचक्रदुत्	७ ५ ३२
शतवधद्विपुस्तव	५ ५ १४	शरासु कुशरासो	३ ३ २९	शासइत्यामहासि	६ १ २४	श्रीतिकृतीति कावति	७ ५ ३२
शतमुजिस्समसिद्धिरे	६ ५ ३०	शधशर्धवपुषां	३ ३ २९	शासद्विदुं हि दुर्नर्यगात्	६ १ २४	श्रीरपावकशोचिप	७ ५ ३२
शतमहतिरिन्दिरे	५ ५ १४	शधोमारुतमुच्छस	३ ३ २९	शिक्षाणइद्रायआ	६ १ २४	श्रीर्णः शीर्णजगतस्तु	७ ५ ३२
शतमसुन्मयीनां	३ ३ २३	शर्यणावतिसोम	३ ३ २९	शिक्षाविभिदोअसौ	६ १ २४	शुभमानकृतयुभिः	७ ५ ३२
शतमिदुशरदो	३ ३ २३	शवसादासिधुत	३ ३ २९	शिक्षेयुमसौदितस्य	६ १ २४	शुभमानाकृतयुभिः	७ ५ ३२
शतानीकाहेतयो	३ ३ २३	शविष्ठनुआभरशरशवः	३ ३ २९	शिक्षेयुमिन्महयतेदिवेदि	६ १ २४	शुकेयुमेहरिमाण	७ ५ ३२
शतानीकवयजिगाति	३ ३ २३	शश क्षुरप्रत्यच	३ ३ २९	शिव कपोतहृपितोनो	३ ३ २९	शुकेअन्यघजुततेअन्य	७ ५ ३२
शतेनानोअभिष्टिभिः	३ ३ २३	शशमानस्यवानरः	३ ३ २९	शिवस्वष्टरिहागहि	३ ३ २९	शुक पवस्वदेवभ्यः सोम	७ ५ ३२
शतैरपदन्पण्यइंद्रात्र	३ ३ २३	शशमानस्यवामरः	३ ३ २९	शिवान सख्यासंतु	३ ३ २९	शुक शुक्रकुपोन	७ ५ ३२
शत्रुयतोअभिषेन	३ ३ २३	शशत्पुरोपाव्युवासद्व्य	३ ३ २९	शिशानोवृपभोयथा	३ ३ २९	शुक्रसाद्यगवशिरः	७ ५ ३२
शनैश्चिघतोअदिवः	३ ३ २३	शशद्विदुं पोप्रुथमिजिगा	३ ३ २९	शिशुजज्ञानहरिमुजंति	३ ३ २९	शुकेभिरगोरजआतनुवा	७ ५ ३२
शमभिरभिभिः करत्	३ ३ २३	शशद्विवः सुदानवः	३ ३ २९			शुचिमुकद्वहृस्पति	७ ५ ३२
						शुचिरपः सुयवसा	७ ५ ३२

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग								
शुचिरसिपुरुनिष्ठा	५	७	१८	शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	१६	शुन शेषोद्धवृभीतः	१	२	१५	शुगर्गाणीवेच्छुंगिणांसंदह	३	१	४
शुचिदेवेष्वर्षिता	२	२	११	शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	१८	शुअमधोदेववत	७	१	२४	शुंगेवनः प्रथमागतमर्वा	२	८	४
शुचिनयामक्रिरिस्त्वर्षि	२	८	१९	शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	२०	शुअनुतेनुमवर्धयत	२	६	३	शुणतजसिहह्वमिद्री	५	६	१७
शुचिनुस्तोमंनवजातम्	५	६	१५	शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	२४	शुअग्नौ शुष्म कुष्मीमर्ना	५	४	२३	शुणतंजरितुहव	६	६	७
शुचिः पावकच्यते	६	८	१४	शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	२६	शुअश्रवांसचिदश्विनापूरू	५	५	१७	शुणतुनकुजापलितिरः	४	२	१५
शुचिः पावकृवणोभे	२	५	२८	शुनहुवेममघवानु	३	३	७	शुण्णपिमुकुयववृत्रमिदं	१	७	१७	शुणवतपूणवयं	४	८	२०
शुचि पावकोयद्धुतः	७	२	२४	शुनहुवेममघवानु	३	३	१२	शुण्णसोयेतेकाद्रिवः	४	२	२	शुणवतुनोवृणः	३	३	२७
शुचि पुनानस्तान्वे	७	२	२५	शुनहुवेममघवानु	३	३	१३	शुण्मिन्तमजलतये	३	२	२२	शुणवंतुलोमंमस्तः	१	३	३०
शुचि प्मय साभञ्जित्	३	८	२२	शुनहुवेममघवानु	३	३	१४	शुण्मिन्तमोहितेमदं	२	४	२८	शुणवेवीरउग्रमुग्रदसायन्	४	७	३३
शुचीतिचक्रयात्मा	५	४	२४	शुनहुवेममघवानु	३	४	१६	शुण्मीवाधोनमस्तं	७	३	२४	शुणवेवृष्टेरिवस्तनः	४	८	३१
शुचीरोहव्यामस्ताः शुची	३	८	२४	शुनहुवेममघवानु	३	५	२५	शूरग्राम सर्ववीरः	७	३	२६	शुतयुदाकरसि	७	६	२८
पुनंनः फालाविकृपतुभू	३	८	२५	शुनहुवेममघवानु	३	५	२१	शूरस्येवुयुध्यते	३	३	२९	शोवारिवायौपूरु	५	७	१४
पुनंवाहा शुननः	३	८	२५	शुनहुवेममघवानु	३	७	२३	शूरान्वेयुधयो	३	३	१०	शेयुतुतद्वस्त्रस्मिन्योनौ	२	४	१६
शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	२	शुनहुवेममघवानु	३	८	१६	शूरोनयत्तुआयुधा	७	३	१	शेपेवर्षपुमात्रो	६	४	३४
शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	२	शुनहुवेममघवानु	३	८	१५	शूरोवाशूर्विनतेरर्षिः	४	६	१९	शोचाशोचिष्वदीद्विहि	६	४	३३
शुनहुवेममघवानुमिदं	३	२	११	शुनहुवेममघवानु	३	८	२	शुपूनेभिर्वृधोजुषाणः	७	६	१	शयद्वृत्रतसवनोतिवा	४	८	२७

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
श्यावाश्चस्यरेभतसथाशु	३ १९	श्रावयेदस्यकर्ण	३ १९	अधीनोअधोसदने	३ १९
श्यावाश्चस्यसुन्वतसथाशु	३ १८	श्रियसेकभासुभिः	३ १८	अधीनोअधोसदने	३ १८
श्यावाश्चस्यसुन्वत	३ २१	श्रियेकवोअधितनूपु	३ २१	अधीहवमिद्रमार्पण्य	३ २१
श्येनआत्तामदिति कुक्ष्यो	३ २५	श्रियेजात.श्रियआ	३ २५	अधीहवतिरश्रया	३ २५
श्येनाविवपतयोह्वयवत	३ १५	श्रियेतेपाडाडुवआ	३ १५	अधीहवविपिपानस्य	३ १५
श्येनोनयोनिंसदन	३ २६	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ २६	अधीहवविपिपानस्य	३ २६
अत्तैदधामिप्रथमार्य	३ ५	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ ५	अधीहवविपिपानस्य	३ ५
अद्वयाभि.समिधते	३ ५	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ ५	अधीहवविपिपानस्य	३ ५
अद्वोदेवायजमाना	३ ५	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ ५	अधीहवविपिपानस्य	३ ५
अद्वप्रातहवामहे	३ ५	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ ५	अधीहवविपिपानस्य	३ ५
अवच्छुर्कण्डयतेवसूनां	३ १७	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ १७	अधीहवविपिपानस्य	३ १७
अव.सुरिभ्योअमृतवसुत्व	३ १७	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ १७	अधीहवविपिपानस्य	३ १७
अवोवाजमिपसूर्जवहती	३ १७	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ १७	अधीहवविपिपानस्य	३ १७
आतमन्युजघनि	३ १७	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ १७	अधीहवविपिपानस्य	३ १७
आतंहविरोध्विदप्रयाहि	३ १७	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ १७	अधीहवविपिपानस्य	३ १७
आयतहवसूय	३ १७	श्रियेतेपुत्राडुवआ	३ १७	अधीहवविपिपानस्य	३ १७

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
संजयैराणस्तकेभिः सुतेगु	४ २ २३	संभावनायतत्सूर्यस्य	४ २ ८	संयन्मिथः पंरुधानासो	१ ८ २०	स साकृणोति केतुमा	३ ८ २४
सजानुवद्विर्जरेमाण	८ ४ २०	सभूया अताच्वसिरार्ध	५ ६ ४	संयस्मिन्विश्वसूनि	७ ६ १	स थितानस्तन्यतूरोचनि	४ ५ ८
सजानानाउपसीदन्न	१ ५ १७	संमग्नेवर्चसासृज	१ २ १२	संयस्तुमोवनयो	२ ५ १३	स आगमिद्विद्रोयोवसुना	४ २ ७
सतिष्ठं १ र्थआशिपे	६ ४ २५	संमोतपत्युभितं	१ ७ २१	संयादान्नियेमधुः	६ २ २२	स वानोयोनि सदनुप्रेष्टो	५ ६ २१
संतेपयांसिससु	१ ६ २२	समातपत्युभितं	७ ८ १	सवत्सद्वमार्तुभिः	७ ५ ८	स आर्वाक्षिमहिनुआ	७ ५ ३१
सत्रीपुविज्ञाविततामि	७ ४ २१	संमार्तुभिर्नशिबुं	७ ४ ३	सवत्सरक्षायानां	५ ७ ३	स आहुतो विरोचते	८ ६ २४
सदक्षेणमर्नसा	७ ७ १९	समिच्छोमलुयोर्भव	७ ७ १	सवत्सरीणपयउस्त्रियायाः	४ ८ १	स इज्जनेनसविशास	७ ७ ५
सदेवै. नोमतेवृषा	६ ८ १५	सुमील्ययङ्कुर्वनापयसंपत्तु	२ ३ १	सवत्कर्मणसामिपाहिनो	५ १ १३	स इत्तमोवयुनतंतन्वत्	४ ६ ११
संनः शिशिरीहिमुरिजोरि	५ ७ ३३	सयज्जनौ सुधनौ विश्वार्ध	४ २ ४	संवाज्ञानां सत्यासुहर्ता	५ १ ४	स इत्तुसविजानात्योतु	४ ५ ११
संजुवौचावहृषुन	१ २ १९	सयत्तद्वदमन्यव	३ ३ २५	सवोमदासोऽगमत	१ २ १	स इत्थेतिसुधितोऽकसि	३ ७ २७
संनोरायावृहुताविश्वपेना	१ ४ ५	संयादुपोवनामहे	३ ८ २४	ससमिधुवसेवृपन्	८ ८ ४९	स इत्सुदानु स्वर्वाकृतावे	५ १ ११
सुपदयमानाअमदक्षुभि	३ २ २	सयद्धनैतमन्युभिर्जना	५ ४ २६	ससोदस्समहोवसि	१ ३ ९	स इदुभि कर्णतम्	८ ६ १८
सपुपुन्रध्वनसिर	१ ३ २४	संयद्वयवसादः	७ ७ २६	ससृष्टधनसुमय	८ ३ १९	स इदस्तेवृमतिधादिसिष्य	४ ५ ३
सपूपनिवृणान्यु	४ ८ १९	सयन्मदोयशुभिण	१ २ २८	सुहोत्रसपूराचारीः	८ ४ २	स इदनायदभ्याय	८ १ २६
सप्रेरतेअनुवातस्य	८ ८ २६	संयन्महीभिथतीरपधमा	५ ६ १५	स. स्तोम्य सहव्य.	६ १ २१	स इदसंस्तुवीरवृ	८ ५ १४

मंत्र.

सहस्रोजोयोगहवे

सहस्रजान्मतिजन्यानिवि

सहस्रनेनमस्युभिर्वचस्तु

सहस्रानुपयसोराभ्या

सहस्रानोवसुष्कु

सहस्रुराय सुयतस्य

सहस्रहानिसमिथानि

सहस्रहस्तैः सनिपुमिभि

सहस्रपाहियकलीपीतरुनः

सहस्रमहोधिनिमेतो

सहस्रगोअण्योवन

सहस्रयोनसुरिपाद्

सहस्रभोनप्रतिवस्तुज्ञा.

सहस्रवृषाज्जयत्तापुगर्भ

सहस्रपानकेनमस्य

सहस्रस्येभिः सखिभिः

अष्ट. अ. वर्ग.

८ ६ २२

७ २७

४ १९

५ २१

५ २७

८ ५

४ १९

५ २२

६ १

६ १५

२ १४

३ २४

५ ४

७ २४

८ १७

९ २७

८ २

८ २

मंत्र

सहस्रधौवनलेअप्रतीतः

सहस्रधौवरजायत

सहस्रधौवरणा

सहस्रधौवतितुना

सहस्रधौपरिपलजे

सहस्रधौआनिपीदत

सहस्रधौआनिपीदत

सहस्रधौआशिपामहि

सहस्रधौसहस्रविश्वहस्याम

सहस्रधौस्तेविपुणावभासते

सहस्रधौस्त्वाववृमहे

सहस्रधौ कर्तुमिच्छत

सहस्रधौःसंव.संयच

सहस्रधौवहवाहसे

सहस्रधौअपचतुर्मभिः

सहस्रधौयज्ञसखिभिर्नववै

३ १६

७ २१

१ २४

२ २५

अष्ट. अ. वर्ग.

४ ६ १०

४ ८ ४

३ १ ७

८ २ ३३

६ ३ २६

१ २ ५

७ ५

६ २ १५

३ ४ ४

१ ४ ४

५ १०

८ २४

७ २१

१ २४

२ २५

मंत्र.

सखीयतामविता

सखीविष्णोवितुरविक्रम

सखीसखायमभ्या

सखीतद्वद्वजिनः

सखीणनोअहिद्वववात्र

सखीसोअमिस्तरुणश्चिद

सखीमघाजिरेकश्च

सखीरथस्यविज्जं

सखीमैभि सनितासरथे

सखीतद्वपणंरथमधि

सखीन.सुसु.शर्वसा

सखीनोद्वःसवितासहा

सखीनोयोगआशुवत्

सखीयस्तेदशति

सखीराजासत्यतिः

सखीवीरोनरिष्यति

अष्ट. अ. वर्ग.

३ ५ २४

६ ७ ५

३ ४ १२

१ १ २१

८ १ ३०

५ २ ५

७ ७

६ ३ १

७ ९

३ ६ ३

८ ५ २

८ ५ २६

६ ४ ४९

६ ३ २२

५ ८

३ ४ १३

७ १६

२ ७

५ २९

७ १०

३ ४ १४

कोशः

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
सजार्यमानः परुमे	२ २ १२	सतुर्वणिर्महौं अरेणु	१ ४ २१	सुत्वमिर्त्वा महेन्द्रि	४ ५ २३	सुत्रासोम अभवन्	३ ५ २२		
सजार्यमान परुमेव्योम	४ ५ १०	सतुव खाण्यध्वेषेनाग्नि	७ ५ २५	सुत्वमित्थावुयेवसि	४ ३ ८	सत्रितस्याधिसानवि	४ ८ २७		
सजार्यमान परुमेव्योम	५ २ ८	सतुश्च धिश्चुत्वा योदुवो	४ ७ ८	सुत्वमिद्वा उतवयं	४ ४ ११	सुत्रेह ज्ञाता विपितानमो	५ ३ २४		
सजिन्वते जठरे युग्रजश्चि	२ ८ १५	सतुश्चुर्ध्वं नूतनस्य	४ ६ १२	सुत्वमिद्वा वै अश्विना	४ ४ १२	सत्वं दक्षस्यावुको वुधो मू	५ ५ १७		
सजिह्वया चतुरनीकऋज	४ ३ २	सतुनो अग्निर्नयतु	३ ४ १३	सुत्वमुग्रस्य वृहत्	७ ५ २४	सत्वं न हृद्र धियस्तानो अङ्कः	४ २ १		
सुजरी द्विल्यैव सुभिः	४ ३ ३	सतुपवस्वपरिपार्थिवं	७ २ २८	सुत्वमृचुर्न पुवा हि चक्रुः	३ ७ २	सत्वं न हृद्र वज्रेभिः	४ १ २१		
सुजुदैवेभिर्नृपा नर्पातुं	५ ३ ३	सतुपवस्वपरिपार्थिवं	७ ५ १४	सुत्वामाशिय कृणुता	८ ५ २२	सत्वं न हृद्र सूर्ये सो अप्सु	४ ७ १९		
सुजुमित्रावरुणाभ्या	४ ३ ३	सते जानाति सुमर्तिय विष्टु	३ ४ २४	सुत्वा सुत्येभिर्महृतीमह	५ ५ २२	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ ५		
सुजुर्विश्वेभिर्द्वेभि	४ ३ ३	सते जीयस्तानमनसावोतः	३ १ १९	सुत्येनोत्तमिताभूमिः	८ ३ २०	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २१		
सुजोपसआदित्यैर्मोदय	३ ३ ७	सुतो नूतनकवयु सं	८ १ १४	सुत्राते अजुष्टयो	३ ३ १९	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २७		
सुजोपस्त्वा द्विचोनर	४ ५ १	सुतो होतान ऋत्विग्यः	३ ३ ३	सुत्रात्वं पुरुष्टु	४ १ १९	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २७		
सुजोपाद्वद्रवर्षेणुसोमं	३ ३ ७	सुतो होतानुष्वदा	१ ७ २२	सुत्रातदा सुस्त्व	४ ७ २२	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २७		
सुजोपाद्वद्रवर्षेणुसोमं	३ ३ ३	सुत्यं तद्विद्रावरुणा	३ ३ ३	सुत्राय दीर्घावर्षस्य	४ ३ ३	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २७		
सुजोपाधीरा पृदैरनु	१ ५ ९	सुत्यत सुर्वशेयद्वौ	३ ३ ३	सुत्राहणं दार्घ्यं	५ ५ २२	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २७		
सतत्कधी गीतस्त्यमसु	४ ५ ७	सुत्यत्वे पाजमन्तः	३ ३ ३	सुत्रासाह्वं वैरेण्यसहोदो	३ ३ ३	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २७		
सत. संत प्रतिमानं पुरोभू	३ २ ३	सुत्यमिस्तन्त्वावाच	४ ७ २	सुत्रासाहो जगमश्चो	३ ३ ३	सत्वं न हृद्रा कवाभिः	४ ७ २७		

[illegible]

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
सनात्सनीळाऽयवनीरिवा	१ ५ २	सनेमयेतज्जतिभि	२ ६ ६	सनोनिगुद्धिः पुरुहूतवेधः	४ ४ १४	सनोवस्वउपमासि	६ ५ १२
सनादक्षमुतक्तु	६ ७ २२	सनेमिकृष्या १ सदा	७ ५ ७	सनोनुणातृमो	५ २५ २५	सनोवाजायुश्चवसहृयेच	४ ६ ३
सनादक्षेष्टमसि	८ ४ ८	सनेमिचक्रमजंरविवा	२ ३ १६	सनोनेदिष्टदशा	२ १ १३	सनोवाजंत्ववितापुरुव	६ ४ ३
सनादेवतवराग्रो	१ ५ ३	सनेमित्वमसदा	७ ५ ८	सनीवोधिपुपुतासुगोपु	६ १२ १२	सतोविभावोचक्षगिनव	४ ५ ५
सनाद्विपरिभ्रुसा	१ ५ २	सनेमिसुख्यस्वपुस्यमानः	१ ५ २	सनीवोधिपुरोकाशुररा	४ १६ १६	सनोविश्वदिवोवसु	७ १ १४
सनापुराणमध्यैभि	३ ३ २५	सनेम्यसद्युयोतद्विहुं	५ ४ २३	सनीवोधिध्रुवीहव	४ १ १६	सनोविश्वान्याभर	६ ६ २६
सनामानाचिद्धसय	८ ३ ४	सनोअथवसुत्तये	७ १ १	सनीवोधिसहस्य	२ ५ २१	सनोविश्वान्याभर	१ २ १८
सनायुतेगोतमइद्र	१ ५ ३	सनोअर्पणवित्रवा	७ १ ३८	सनीभगायवायवे	७ १ १	सनोविश्वहोषुक्तु	६ ५ ११
सनायुवोनमसानव्यो	१ ५ ३	सनोअर्पणभिद्रुत्यं	७ १ ३	सनीभगायवायवे	७ १ १९	सनोविश्वेभिर्दुवेभिः	६ ५ १७
सनिंतु.सुसनिंत.	६ ४ ४	सनोजयोतीपिपूर्व्यं	६ ८ २६	सनोमदानोपते	५ ७ ७	सनोवृषपुत्रसुचरु	१ १ १४
सनिताविद्रोअर्धैद्विः	५ ७ २४	सनोदुराब्जासाव	१ २ २२	सनोमद्राभिरध्वरे	५ २१ २१	सनोवृष्टिदिवस्पति	२ ५ २७
सनितासिप्रवतोदुक्षुपे	५ ५ ३	सनोदेवदेवतते	७ ४ ६	सनोमहोक्वमिमान	२ २४ २४	सनोवेदोअभारथ	५ २ १८
सनिमित्रस्यपग्रथः	६ १ ३	सनोदेवेभि पवमान	७ ४ ३	सनोमित्रमहृस्व	३ ३८ ३८	सनोहरीणापते	७ ५ ८
सनीव्याभिर्जोदितार	४ ७ ४	सनोधीतीवरीष्टया	४ १ १७	सनोसुवोद्वेजोहृत्र	२ ६ २५	सपत्यतटभयोर्नुमामयो.	४ ६ २०
सनेमत्तसुसनिता	७ ८ १०	सनेनग्येभिर्दुप	१ २ १९	सनोराष्ट्राभार	५ २ २०	सपप्रधानोअभिपञ्चभूम	५ ५ १६
सनेमतेवसानन्यद्वद्र	४ ६ १०	सनोनिगुद्धिराष्टण	४ ७ २५	सनोरेवत्समिधानः	५ २ ११	सुपुर्ववोभरमाणाअभिहु	५ २ १

[illegible]

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
समनेववपुष्यतः	६ ४ ४१	समातरानदईशानः	७ २ २४	समावुयेवृजने	२ १ १५	समिधायस्तुकाहुति	४ ५ १		
समन्यायान्युपमयन्यु	२ ७ २२	समातराविचरेन्	७ २ १९	समानेअहुश्रिरवधगोहना	३ ४ ४	समिधायोनिसितीदाशु	६ १ ३१		
समन्युमी समदनस्यक	१ ७ ९	समातरासूर्येण	४ ७ ४	समानोअध्वास्वक्षोरवन्त	८ १ ३	समिद्धसमिसिधगिरा	४ ५ १८		
समन्युमर्त्याना	४ ५ ३२	समातरिआपुखवारै	१ ७ ३	समानोमंझःसमिति.	८ ४ ९	समिद्धश्रितसमिध्यसे	८ ८ ८		
समतोअग्नेस्वनीकोवान्	५ १ २७	समाननीकंघृणः	७ ५ ३३	समानोरजा	३ ३ २८	समिद्धस्यप्रमहसः	४ १ २२		
समर्धजानआयुभिः	७ १ १४	समानपूर्वोरभिर्वाकशा	८ ७ ७	समान्यावियुते	३ ३ २५	समिद्धस्यश्रयमाण पुर	३ १ ३		
समर्धजानआयुभिः प्रय	७ २ ११	समानवत्समभि	२ २ १५	समर्धजेतिरोअण्वामि	७ ५ १४	समिद्धासिर्वेनवस्तुर्णव	४ २ ८		
समर्धजानईन्द्रियायु	७ २ २३	समानवोसजात्य	३ ५ २०	समावर्तितिविधितोविगी	२ ८ ३	समिद्धेजुमौसुतईद्रसो	४ ७ १२		
समश्चिनोरवसानूत	४ ४ १७	समानऊर्वेअधिसंगतास.	५ ५ २३	समाहिनुद्धोअर्णो	६ ४ २३	समिद्धेजुमौसुतईद्रसो	४ ७ २६		
समश्चिनोरवसानूत	४ ४ १८	समानमेस्माअनपावृत्	८ ४ १४	समिचमधर्मश्चवत्	४ १ २७	समिद्धोअमभाहुत	४ १ २२		
समश्चिनोरवसानूत	४ २ १९	समानमंज्येया	३ १ ३८	समिचान्वृहुहसिंदव	४ ५ २९	समिद्धोअमभाहुत	४ १ २२		
समश्चिनोरवसानूतनेन	४ २ २२	समानमूल्यपुरुहूत	७ ८ २१	समित्समिस्तुमनाचोध्यु	२ ८ २२	समिद्धोअमभाहुत	४ १ २२		
समस्मिन्जायमानः	८ ५ ८	समानसेतुदुक	२ ३ २३	समिधामिदुवस्यत	६ ५ ३६	समिद्धोअमभाहुत	४ १ २२		
समस्मन्मन्यवेविना	५ ८ ४	समानयोजनोदिव्वां	१ २ ३१	समिधजातवेदसे	५ ३ ३७	समिद्धोअमभाहुत	४ १ २२		
समस्युहृदयः	७ ४ ३	समानवीआकृतिः	७ ८ ४९	समिधानउसन्त्यु	६ ३ ३७	समिद्धोअमभाहुत	४ १ २२		
समज्ञाभिश्चादुस्तिनि	५ २ १५	समावुपीपुदुळमो	३ ५ ९	समिधान.सहस्रजित्	४ १ २०	समिद्धोअमभाहुत	४ १ २२		

मंत्र.

समिध्यमानः प्रथमानुध

समिध्यमानोऽध्वरे

समिध्यमानोऽसुतस्वरा

समिद्वर्गदभसृण

समिद्वर्गमनसानेपिगो

समिद्वर्गयासमिपारंभेभ

समिद्वर्गोतवायुना

समिद्वर्गयगर्मनृवाह

समिद्वर्गपाजयत्

समिद्वर्गयोवृहती

समीचीनासथासते

समीचीनेऽभित्मना

समीरयंनसुरिजो

समीवृत्सनासुवृभिः

समीसखायोऽस्वरज

अष्ट. अ. वर्गः

३ १ १७

३ १ २८

१ २२

२ २७

२ १७

४ १५

७ १ १९

८ १ २३

५ २३

६ ४

६ ८

६ ७

७ ५

७ २५

७ ५

७ १

मंत्र

समीपुणरजतिभोजनंमु

समीरुमासोऽस्वरज

समुत्येमहृतरिप.

समुत्वाधीभिस्वरज

समुद्वर्ग्येष्ठा. सखिलस्य

समुद्वर्गमासामवतस्थेऽग्निः

समुद्वर्ग. सिधुरजो

समुद्वर्गद्वर्णवादाधि

समुद्वर्गद्वर्मासुदियति

समुद्वर्गद्वर्माधुमांउद्वर

समुद्वर्गद्वर्मापसरस.

समुद्वर्गद्वर्माशयते

समुद्वर्गद्वर्मासिधवोयादमा

समुद्वर्गद्वर्मानमणा

समुद्वर्गद्वर्मासुमामृजे

समुद्वर्गद्वर्मासमहि

अष्ट. अ. वर्गः

४ २

६ ३८

५ ८

७ २

४ १६

२ २४

८ २ १४

८ ४८

८ ७

८ १०

३ ३

३ ७

३ २

३ २०

३ २८

३ १८

३ १९

मंत्र

समुप्रयतिधीतर्यः

समुप्रियाजन्पतु

समुप्रियोऽय्यते

समुवोयज्ञमहयुजमोभिः

समुवोयज्ञमहयुजमोभिः

समुवोयज्ञमहयुजमोभिः

समज्यतेसुकर्मभि.

समज्यमानोद्वर्माभिः

समनमद्वर्माभिः

समेवपुच्छदयद्वर्माभिः

समोहेवायजानत

समोचिद्वर्माभिः

सम्यक्सम्यचोमहिषाः

सम्यक्सवन्तिसुरितोन

सम्राजोऽवावृपभादिव

सम्राजोऽवावृपभादिव

सम्राजोऽवावृपभादिव

सम्राजोऽवावृपभादिव

सम्राजोऽवावृपभादिव

अष्ट. अ. वर्गः

७ ७ ११

७ ५

७ ४ ११

७ ५

७ ४

७ ४ २६

७ २ २३

७ ८ २४

७ ५

७ १ १६

७ ३ २३

७ २ २९

७ ८ ११

७ ५

७ ४ १२

७ ३ २३

७ ७ २३

७ ६ २४

७ ७ १३

मंत्रः

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

सम्राजोऽय्युहधोयज्ञं

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग</
--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	-----------------

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
ससमुद्रोऽपीच्यः	३ ३ २७	ससुन्वेयोवर्षनां	७ ५ १९	सुहदासुपुहृतक्षियंतं	३ ५ १९	सुहदासुपुहृतक्षियंतं	३ ५ १९	सुहदासुपुहृतक्षियंतं	३ ५ १९
ससंगुणशवसातुक्तो	४ ७ ४	ससुष्टुमासकृतगणनं	३ ७ २६	सुहवासेनउपोवि	३ ७ २६	सुहवासेनउपोवि	३ ७ २६	सुहवासेनउपोवि	३ ७ २६
ससुपरीरभरत्	३ ३ २२	ससुष्टुमासस्तुभा	३ ५ १	सहव्यवाळमर्त्यः	३ ५ १	सहव्यवाळमर्त्यः	३ ५ १	सहव्यवाळमर्त्यः	३ ५ १
ससुपरीरमर्ति	३ ३ २१	ससुष्टुभिर्नरुदेभिर्जम्बा	३ ५ ७	सहश्रुतद्रोनाम	३ ५ ७	सहश्रुतद्रोनाम	३ ५ ७	सहश्रुतद्रोनाम	३ ५ ७
ससुन्येनयमतिबाधतश्चि	३ ७ ९	ससुनुसोतराशुचि	३ ७ ९	सहस्तोमा सुहृदस-	३ ७ ९	सहस्तोमा सुहृदस-	३ ७ ९	सहस्तोमा सुहृदस-	३ ७ ९
ससस्ययद्विद्युता	३ ५ ७	ससुन्यग्रतिपुरोनवद्वा	३ ५ ७	सहस्रणीथ शतधर-	३ ५ ७	सहस्रणीथ शतधर-	३ ५ ७	सहस्रणीथ शतधर-	३ ५ ७
ससतुल्याअरातय	३ २ २७	ससुन्येस्वरहिमभि	३ २ २७	सहस्रणीथा कुवयः	३ २ २७	सहस्रणीथा कुवयः	३ २ २७	सहस्रणीथा कुवयः	३ २ २७
ससनय सविनय	२ ७ २	ससुन्यपयूरुवरसि	२ ७ २	सहस्रदाग्रामणीमर्	२ ७ २	सहस्रदाग्रामणीमर्	२ ७ २	सहस्रदाग्रामणीमर्	२ ७ २
ससुस्तिरोविष्टः	२ २ ६	ससुवांसमिवमना	२ २ ६	सहस्रधापचदसा	२ २ ६	सहस्रधापचदसा	२ २ ६	सहस्रधापचदसा	२ २ ६
ससानालोडितसूर्यससान	२ २ १६	ससोमआमिश्रतमः	२ २ १६	सहस्रधारवृषभ	२ २ १६	सहस्रधारवृषभ	२ २ १६	सहस्रधारवृषभ	२ २ १६
ससुक्तुर्कतुचिदस्तुहो	५ ६ ७	ससुमातासस्तुपिता	५ ६ ७	सहस्रधार पवते	५ ६ ७	सहस्रधार पवते	५ ६ ७	सहस्रधार पवते	५ ६ ७
ससुक्तुर्गोविदुरं पणीनां	५ २ १२	स सौम्यः सहव्यः	५ २ १२	सहस्रधारेवताः	५ २ १२	सहस्रधारेवताः	५ २ १२	सहस्रधारेवताः	५ २ १२
ससुक्तु पुरोहितो	२ १ १४	सुत्यावानायवयसिस्वमे	२ १ १४	सहस्रधारेवतेसं	२ १ १४	सहस्रधारेवतेसं	२ १ १४	सहस्रधारेवतेसं	२ १ १४
ससुक्तुपूणिताय सुतेषु	६ ६ ३५	ससिमाविदुचरणे	६ ६ ३५	सहस्रधारेवितेते	६ ६ ३५	सहस्रधारेवितेते	६ ६ ३५	सहस्रधारेवितेते	६ ६ ३५
ससुत पीतयेवृषा	६ ८ २७	ससुश्चिद्वितुन्वं शुभं	६ ८ २७	सहस्रवाजमभिमातिपा	६ ८ २७	सहस्रवाजमभिमातिपा	६ ८ २७	सहस्रवाजमभिमातिपा	६ ८ २७
ससुन्वतद्वदः सूर्य	२ ६ २३	ससुश्चिद्विसृतिस्वेव्यं	२ ६ २३	सहस्रशीर्षोपुरुषः	२ ६ २३	सहस्रशीर्षोपुरुषः	२ ६ २३	सहस्रशीर्षोपुरुषः	२ ६ २३

मंत्रः

सहिक्षयेणक्षम्यस्यजन्मनः	अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र
सहिसेमोद्विष्यत्	४	१३	सहिरभाजस्तिभ्युगा	
सहिवद्वैदाभते	७	२	सहिष्माधन्वाक्षितं	
सहियुताविद्युतावेति	७	३	सहिष्माविष्वर्षणि	
सहियुभिर्जना	८	४	सहिसुलोयपूर्वचित्	
सहिद्रोदुरिपुवज्जयति	४	१	सहिसुस्यपदयो	
सहिष्मिर्हव्योअस्युत्र	४	१२	सहोतायस्योदसीविट्	
सहिपुरुचिदोजसा	४	५	सहोताविष्वपरिभूत्व	
सहियामार्जुपायुगा	४	१२	सहोतासेदुद्व्यं	
सहिरवानिदुद्युपै	४	२५	सहोभिर्विष्वपरि	
सहिविश्वातिपाथैवा	४	२५	सहोपुणोवज्रहस्ते	
सहिविश्वातिपाथैवा	४	२४	सहोपुणोवज्रहस्ते	
सहिवेदावसुधिति	३	७	सहोपुणोवज्रहस्ते	
सहिशार्जुनमारुतं	३	२४	सहोपुणोवज्रहस्ते	
सहिशुचि शतपत्र सशु	५	१३	सहोपुणोवज्रहस्ते	
सहिश्रवसु सवदनामि	१	२२	सहोपुणोवज्रहस्ते	

अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र
६	८	१०	साकवदतिवृहत्
३	८	२५	साकहिशुचिनाशुचि
३	१	१५	साकुरुक्षोमजयत्
४	१	१७	सातिर्नवोमवती सर्वती
१	६	१३	सातेअमरातमा
२	८	२७	सातेजीवातुस्ततस्
७	७	२०	साधुमृगुक्षिर्नवृहत्
५	८	१८	साधुमृगुक्षिर्नवृहत्
३	१	१८	साधुमृगुक्षिर्नवृहत्
५	८	२४	साधुमृगुक्षिर्नवृहत्
५	२	३०	साधुमृगुक्षिर्नवृहत्
६	२	२८	सानोअध्यामरदसु
३	१७		सानोअध्यामरदसु
३	१६		सानोअध्यामरदसु
५	१०		सानोअध्यामरदसु
६	१		सानोअध्यामरदसु

अष्ट	अ	वर्ग	मंत्र	अष्ट	अ	वर्ग
७	२	२७	सामासुलोक्ति परि	७	८	१२
२	५	२६	सावसुदयतीश्वराय	८	५	१
७	३	३	सावसुदयतीश्वराय	५	१	५
४	७	७	साविदसुनीरोमरुहस्ते	५	१	५
६	५	२२	सास्माअमयमस	५	१	५
७	७	१९	सास्माअमयमस	५	१	५
५	५	२२	सास्माअमयमस	५	१	५
५	५	१४	साहायेमतिमुष्टिहवृहव्य	५	१	५
५	५	२३	साहायेमतिमुष्टिहवृहव्य	५	१	५
८	२	१७	सिचलिनमसावत	५	१	५
८	१	१३	सिचलिनमसावत	५	१	५
८	७	१४	सिचलिनमसावत	५	१	५
४	४	२१	सिधुर्नक्षोद शिर्मावा	५	१	५
४	८	३१	सिधुर्नक्षोद शिर्मावा	५	१	५
३	५	१	सिधुर्नक्षोद शिर्मावा	५	१	५
८	१	२२	सिधुर्नक्षोद शिर्मावा	५	१	५

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः
--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------	---------------	--------

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
सुब्रह्माण्डेवर्तत	८ १ ३	सुवीर्युस्तव्यसुराव्यं	६ १ ६	सुसुदृशत्वाव्यं	६ १ ६	सुर्यचक्षुर्गच्छतुवाते	७ ६ २०		
सुमग्न सप्रयज्यवो	१ ६ १	सुदृद्योवतेतियत्र	२ ४ ४	सुसुदृशत्वाव्यं	४ ४ ८	सुर्याचक्षुर्मसौधाता	८ ८ ४८		
सुमग्नःसर्वजितु	६ १ ३	सुशसोवोधिगृणतेयवि	१ ३ ३	सुसुमिद्वयशोचिपे	३ २९ २९	सुर्याववदुहःप्रागात्	८ २० २२		
सुमग्नोदेवाःकृणुत	८ ३ ३	सुशिलेबृहतीमही	६ ३ ७	सुसुमिद्वोननावह	७ २५ २५	सुर्यायेद्वेभ्यः	८ ३ २३		
सुमग्लीरियंवधू	८ ३ ३	सुशेवोनोमृद्वयाकुं	६ ५ ५	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुयुग्मिभरक्ष सुधृता	३ ४ ३	सुपहासोमतानिते	३ ४ ८	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुयुग्वहतिप्रतिवा	३ ४ ३	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ २	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुर्योभातिथिगवे	६ ५ ६	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुसुक्मेहिमुपेगुसा	२ ५ २	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुसुक्कुलुमुतये	१ ५ १	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुविज्ञानचिक्किपुजेनो	५ ५ ५	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुवितत्यमनामहे	६ ५ ६	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुसिद्धवसुतिगुज	१ १ १	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुवीरस्तेजनिता	३ ५ ३	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुवीरयिमाग्न	४ ५ ४	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		
सुवीरोसोव्यधना	७ ५ ७	सुपुष्वासंक्रमवस्तदृच्छ	२ ३ १	सुसुक्वाकप्रथममात्	५ ३४ ३४	सुर्याविपमासजा	८ ५ १५		

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्गः
सेष्टमवोयमवयं	३ ७ १०	सोअपैद्वायपीतये	७ १ २५	सोमं पुनानोअव्यये	७ ५ २३	सोमाअसृष्टमाश्रवः	६ ८ १३
सेनैवसुष्टामेदधा	१ ५ १०	सोअस्यवज्रोहरितः	८ ५ ५	सोमं अथमोविविदे	८ ३ २७	सोमाअसृष्टमिदवः	६ ७ ३८
सेमन्न काममारुण	१ १ ३१	सोअस्यविदोमहिशर्म	७ ३ १४	सोमं सुतोधारयात्यं	७ ४ १९	सोमानुस्वरणं	१ १ ३४
सेमन्न सोममारुहि	३ ३ ३०	सोअंगिरसामुचर्था	२ ६ २५	सोमइदं सुतोअस्तु	६ ४ ५०	सोमार्पणजननारयीणां	८ ६ ६
सेमावैतुवपदकृति	५ २ १९	सोअंगिरोभिरगिरस्तमो	१ ७ ८	सोमउपुवाण सोवृभिः	७ ५ १३	सोमार्पणरजसोविमाने	८ ६ ६
सेमामसिद्धिप्रभृति	२ ७ १	सोचिन्नमुद्राक्षुमती	७ ६ ९	सोमएकैभ्यःपवते	८ ८ १२	सोमारुद्राधारयेथामसु	५ १ १८
सेहानउग्रपुतनाअभिदुहं	६ ३ १९	सोचिन्नवृद्धिर्गुह्यादेस्वा	७ ७ ९	सोमर्गभिर्द्वयं	१ ६ २१	सोमारुद्रायुवमेतान्यस्मै	५ १ १८
सेनार्नकिनसुविदत्रो	२ ६ १	सोचिन्नसख्यानयंहुन	८ १ ९	सोममन्यउपसदत्	४ ८ २३	सोमारुद्राविष्टुहंतुविपूची	५ १ १८
सोअमईजेशामेचमर्तं	४ ४ ३६	सोतुहि सोममाद्रिभिः	५ ७ १३	सोममिद्रावृहस्पती	३ ७ २५	सोमासोनयेसुतास्तुसांशे	४ ५ २
सोअमएनानमसाससि	५ ६ १६	सोवंचं सियुमरिणान्	२ ६ १६	सोमयासैमयोभुवः	१ ६ २०	सोमा पवतइदव	७ ५ २
सोअधिर्योवसुर्गणे	३ ८ २२	सोसंगवोधेनवः	७ ४ १७	सोमराजन्मक्यान.स्व	३ ६ २०	सोमैनादित्यावलिनु.	८ ३ २०
सोअग्रेअङ्गाहरिः	७ ३ २०	सोममन्यतेपपिवान्	८ ३ २०	सोमरांधिनाहृति	१ ६ २१	सोमोअर्पतिधर्णसिः	६ ८ १३
सोअङ्गाडाध्वरः	६ १ ३०	सोमराजानुमवसे	८ ७ २९	सोमस्युधारपवतेन	३ ६ २५	सोमोअसम्भ्यं	३ ४ ११
सोअमृतीनिमनवे	२ ६ २३	सोमःपवतेजनिता	७ ४ ६	सोमस्यमातृवसंवक्ष्यं	२ ८ १३	सोमोअगिरातिगातुवित्	३ ४ ११
सोअभियोनयवसः	८ ५ १५	सोम पुनानऊर्मिणा	७ ५ १०	सोमस्यमित्रावकुणा	६ ५ १७	सोमोददं धर्वाय	८ ३ २८
सोअर्णवोननघः	१ ४ १९	सोमःपुनानोअर्पति	६ ८ १	सोमस्यराजोवरुणस्य	८ ८ २५	सोमोदेवोनसूर्यः	७ १ ३२

[illegible]

मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्रः	अष्ट. अ. वर्ग
स्वामिबोमनवोद्वेवतीये	८ २ १४	स्वयंकुविध्वर्तरे	७ १ ४	स्वस्त्येवाजिभिश्चप्रणेतः	३ २ ४	स्वादुःपवस्वद्विद्यायु	७ ३ १०
स्युर्मनावाचउदियतिव	१ ८ ४	स्वयचित्समन्यतेदाहुरि	५ ७ ३२	स्वस्त्येवायुमुपप्रवामहे	४ ३ ७	स्वादोपितोमधोपितो	२ ५ ६
स्योनारुथिबिभव	१ २ ६	स्वयदधिभ्वेवर्षीयथा	४ ३ १७	स्वस्तिददित्वास्पति	८ ८ १०	स्वादोरमक्षिवयस सुमे	६ ४ ११
लोकैद्रप्सस्यधर्मतः	७ २ २९	स्वययजस्वदिविदेव	७ ३ ६	स्वस्तिनृद्वैवृद्धश्रवा	१ ३ १६	स्वादोरिथाविपुवतो	१ ६ ६
सुवेव्यस्यहरिणी	८ ५ ६	स्वयुरिद्रस्वाळसि	३ ३ ३	स्वस्तिनृपय्यासुधन्वसु	८ २ ५	स्वाध्वोदिवआसस	१ ५ १८
स्वधादेमैसुदुद्यायस्यधेनुः	२ ७ २३	स्वरतिरवासुतेनरः	६ ३ ७	स्वस्तिनोदिवोअमे	७ ३ ६	स्वाध्वो ३ विदुरादेवयंतो	५ २ १
स्वआयस्तुभ्यंदमवा	१ ५ १६	स्वजित्तमहिमंदानं	८ ८ २५	स्वस्तिनोमिमीतामश्रि	४ ३ ७	स्वायुधस्यतैसुतः	६ ८ २१
स्वमयौवोजमिभिः	६ १ ३०	स्वजुपेभरजुप्रस्य	२ १ २१	स्वस्तिपंथामनुचरेम	४ ३ ७	स्वायुधस्ववसंसुनीयं	८ १ ३
स्वमयोहिवार्य	१ २ २१	स्वर्णरमंतरिक्षाणि	८ २ ९	स्वस्तिमित्रावरणा	४ ३ ७	स्वायुध पवतेदेवः	७ ३ २२
स्वदस्वद्व्यासमिपो	३ ३ २७	स्वर्णवस्तोरुपसामरो	५ २ १३	स्वस्तिरिद्धिप्रपयेश्रेष्ठा	८ ५ ५	स्वायुध सोमृभिः	७ ४ ९
स्वधामनुश्रियनरः	६ १ ३७	स्वर्भाजोरधयदिद्रमाया	४ २ १२	स्वःस्वायुधायसेकृणु	२ ५ २६	स्वायुधासदृगिर्गणःसुनि	५ ४ २४
स्वध्वराकरतिजातवेदा	५ २ २३	स्वर्धेद्विसुहरी	३ ५ १७	स्वादवःसोमाआयाहि	५ ७ २२	स्वाद्वेवस्यामृतं	७ ४ ११
स्वध्वरासोमधुमंतोजम	३ ७ २१	स्वदृजहित्वामहमिद्र	७ ८ १४	स्वाद्विष्टयामदिष्टया	६ ७ १६	स्वाहकृतस्यतपतं	६ ३ १७
स्वनानयस्यभामासः	७ ५ ३१	स्वआयशसायातसर्वाक	५ ५ १६	स्वादुपसदःपितरोवयो	५ १ २०	स्वाहकृतान्यागक्षुप	२ २ ११
स्वनोनवोमवाज्रेज्यदृया	४ ४ ३३	स्वआसिधुःसुरथा	८ ३ ७	स्वादुकिञ्जलयमधुमाउताः	७ ७ ३०	स्वाहामयेवरुणायु	३ ८ २१
स्वमेनाभ्युप्यासुसुरि	२ ६ २६	स्वसास्वलेज्यार्यस्ये	२ १ ८	स्वादुधैशस्तुसंसुदे	६ १ २३	स्वाहायजंरुणेतुन	१ १ २५

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
स्विभायद्रनधितिरपुसा १	८ २५	ह्रयेजायेमनसातिष्ठोरे	८ ५	१ ह्रयंश्वत्सपतिचर्णसिद्धं	६ २	ह्रस्वेवशुक्तिमभिसंद्धीनं	२ ८	५	५
हतावृत्रमिद्रं शृणुवान	५ ३	१ ह्रयेदेवायुमिद्रापयं	२ ७	११ ह्रवपुपासुरोनक्षतथा	८ ३	५ ह्रादिद्वेवपतयोवनेदुप	६ ३	१५	१५
हंतानुत्रदक्षिणेन	५ ७	२३ ह्रयेनरोरुतोमुळतान	४ ३	२२ ह्रवतद्वदमहिमा	५ ३	१२ ह्रितोनससिरभि	७ २	२४	२४
हताहर्षथिवीसिमां	८ ६	२७ ह्रयेनरोरुतोमुळतान	४ ३	२३ ह्रवततत्वाह्व्यद्विवि	५ ३	१४ ह्रिनोतानोअधुर	७ ७	२६	२६
हतोनुकिमाससे	६ ५	३६ ह्रयोनविद्रांअयुजित्वयधु	४ ५	२८ ह्रविहंविप्सोमहि	७ ३	८ ह्रिन्वतिसुरसुखय.	७ २	१	१
ह्रसं शुचिपद्वसु	३ ७	१४ ह्रयोधुमकेतव.	६ ३	२९ ह्रविपाजोरोजपां	१ ३	३३ ह्रिन्वतिसुरसुखय पवमा	७ २	१४	१४
ह्रसाद्वक्त्रुणुय	३ ३	२० हरिंश्वजत्यरुपो	७ ३	२७ ह्रविष्कुणुध्वमगमत्	६ ५	१४ ह्रिन्वानासोरयाद्व	७ ७	३४	३४
ह्रसाद्वक्त्रुणिनो	३ १	४ हरिंहियोनिमभियेसुमस्वं	८ ५	५ ह्रविष्पावमजरंस्वावेदे	८ ४	१० ह्रिन्वानोवाचभिष्यति	७ १	३७	३७
ह्रसाविवपतयोअध्वगा	६ ३	१५ हरिं सृजान पृथ्वा	७ ३	५ ह्रवीमभिहवतेयोह्रविभि.	२ ३	१६ ह्रिन्वानोह्रैचुभिर्यत.	७ १	२१	२१
ह्रसासोयेवांमयुं	३ ७	२१ हरिंत्वतावचसास्यैस्य	८ ३	१२ ह्रवेस्वासुरउदिते	६ ३	९ ह्रिमेनांमिद्रसमवारयेयां	८ ६	४९	४९
ह्रसैरिवसिखिभिर्वावद	८ २	१५ हरिंमशाह्रैरिकेवाभाय	८ ५	६ ह्रवेस्वासुरभिरजरं	३ ८	१८ ह्रिमेवपुर्णसुपिताननि	८ २	१८	१८
ह्रतवशत्रून्यतेतच	६ ३	१५ ह्रीनुकरयद्वदस्य	२ ३	१ ह्रस्काराद्विद्युतस्पर्यतो	१ ३	१० ह्रिरण्यकर्णमिग्रीव	२ १	३२	३२
ह्रतवृत्रसुदानव	१ १	९ ह्रीनुतेद्वदवाजयता	२ ३	३ ह्रस्वच्युतेभिरद्विभिः	६ ७	३६ ह्रिरण्यकेशोरजसो	१ ५	२७	२७
ह्रतोवृत्रापयार्थो	४ ८	२८ ह्रीन्वस्ययावने	७ ७	९ ह्रस्वाभ्यादक्षशास्त्राभ्यां	८ ७	२५ ह्रिरण्यगर्भं समवर्ततात्रे	८ ७	३२	३२
ह्रत्वायेदेवाअसुरान्यदायं	८ १५	१५ ह्रीयस्वसुयुजाविमतावे.	८ ५	२६ ह्रस्तेदधानोनुम्या	१ ५	११ ह्रिरण्यत्सुह्रमधुवर्णोघत	४ ४	१८	१८
ह्रनोमैवाह्रित्वघ्रायद्व	२ ३	४ ह्रयंभुपसमर्चय	३ ३	८ ह्रस्तेनैवप्राज्ञाधिरस्या	८ ६	७ ह्रिरण्यदत्तशुचिचर्ण	३ ८	१४	१४

ऋक्सं.

॥ ८३ ॥

मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग	मंत्र	अष्ट. अ. वर्ग
हिरण्यतिर्णिगायोअस्य	४ ३ ३ १	हिरण्यरूप सहिरण्यसं	२ ७ २३	हृणीयमानोअपहि	३ ८ १५	होतारं चित्रयं	७ ५ २९
हिरण्यपाणिमूतये	१ २ ४	हिरण्यश्रुगोयोअस्यपादा	२ ३ १२	हृत्सुपीतासोयुध्यते	५ ७ १९	होतारत्वावृणीमहे	४ १ १२
हिरण्यपाणि सविता	१ ३ ७	हिरण्यस्तपःसवितर्यथा	८ ८ ७	हृदातुष्टेपुमनसोजेपू	८ २ २८	होतारविश्वेदसं	१ ३ २९
हिरण्यपाणि. सविता	३ ३ २६	हिरण्यहस्तमधिनारराणा	१ ८ १७	हृदिस्थयस्तआसते	७ ७ २१	होतारससजुहोत्रेयजिष्ठ	१ ४ २४
हिरण्ययीअरणीयं	८ ८ ४२	हिरण्यहस्तोअसुर	१ १ ३	हृति प्रक्षिणीनर्दभात्य	८ ८ २३	होत्रादुहंवरुणविभ्यदाय	८ १ १०
हिरण्ययीवांराभि.	५ ८ ६	हृद्दुकुण्वतीवसुपही	२ ३ १९	होताजनिष्टचेतनः	२ ५ २६	हृदनहित्वान्युपंत्यमयः	१ ४ १३
हिरण्ययेनपुरुष	३ ७ २०	हुवेव सुयोत्मान	२ ५ २४	होतादेवोअमर्त्यः	३ १ २९	हृदाद्वक्कृक्षयःसोमधाना	३ २ २०
हिरण्ययेनुरथेन	५ ८ ७	हुवेव सुनुसहसो	४ ५ ७	होताध्वयुगवयाअग्निमि	२ ३ ७	हृयामसित्वेदया	४ ७ १३
हिरण्ययेभिःपविभिः	१ ५ ८	हुवेवार्तस्वनंकवि	६ ७ ९	होतातिपत्तोमनो	१ ५ १२	हृयामिदेवोअयातु	५ ३ २५
हिरण्यरूपमुपतोव्युद्यौ	४ ३ ३१	हुवेवोदेवीमदिति	४ ८ ८	होतायक्षद्रुनिनो	२ २ ४	हृयाम्यमिग्रथमंस्वस्तये	१ ३ ६

इतिशाकलसंहितामंत्रकोशःसंपूर्णः ।

॥ ८३

॥ प्रशस्तिः ॥

जंब्वंतर्गतदक्षिणापथगतोगोदावरीदक्षिणेतद्विद्यतांतरालविलसत्क्षेत्रेपुनर्भर्गवे । यापूस्तत्रफिरंगभूपकलितागोमांतकाख्यापुरां
 स्रष्टुःसर्जनचातुरप्रथयतीवर्वर्तिसर्वोपरि ॥ १ ॥ ग्रामोस्तित्रयमुमहान्कमलानिवासोयंपेङ्गोइतिजनाःसमुदाहरति । योमक्तहेतुपरिपूरक
 देवसर्वैःश्रीमद्भिरधिजनहृच्छयैश्चजुष्टः ॥ २ ॥ यस्यातरेभगवतीप्रमुखाहिदेव्यःसूर्जस्वलारवळनाशमुखाश्चदेवाः । छायाश्रिताखिल
 मनोरथपूरणेनकल्पद्रुमाइवलसंलानिशप्रसन्नाः ॥ ३ ॥ तत्पश्चिमेपरिसरेपणशीतिवाद्याजातायदेकनिलयाःपणशीकराख्याः । आसंक्षिराद्
 रवळनाशपदारविंदसेवैकतानमनसोऽमलकीर्तिभाजः ॥ ४ ॥ तेष्वन्वयेष्टकरणेनसुशीलविद्यासंपद्धरेणविमलाचरणेनशश्वत् । श्रीशप्रसाद
 समवाततप.श्रुताब्धिगुर्वादरेणतिलकोऽजनिलक्ष्मणार्थः ॥ ५ ॥ भार्योपितनिजमनोनगुणैवसाध्वीभामेवकृष्णमवृणोदयसत्यभामा ।
 दापदाकजुष्टपतुःसुतपुत्रिपौत्रैर्धर्मैर्गणतौचिरमदभ्रसुखौप्रपंचे ॥ ६ ॥ तद्वर्ष्मजेषुपणशीकरवासुदेवशर्मजनिष्टचरमःसुरविप्रभक्तः । प्रथसम
 स्तूपतशाकलसंहिताख्यपारायणाध्ययनहोमविधानपूर्ण ॥ ७ ॥ तमावकन्निर्णयसागरेशःश्रेष्ठीतुकारामचतुर्वराख्यः (चौधरीत्युपनाम) ।
 शक्रेदगम्यष्टमुधाजु १८३२ केऽब्देसाधारणेबाहुलमासिपूर्णः ॥ ८ ॥ वर्णक्षोदकलाकलापकलनाच्छीमानभूज्जावजीक्षोणीमंडलवर्ति

मुद्रणकलाजीवातुरासीच्छनैः । धैर्यौदार्यगुणैरुदारयशसागांभीर्यतः सागरोयज्जो निर्णयसागरो विसृमरो वर्धते लोकोत्तरः ॥ ९ ॥ आस्तांतत्तनुजा
बुदारयशसौ दीपात्प्रदीपाविवज्येष्ठः पैतृकसद्गुणैः किल तु कारामो भवन्मंडितः । ईड्यस्तासदृशोऽनुजोऽपि समशीलः पांडुरंगाभिधः सौभ्रात्रेण विलो
भकौ जनमनः स्तोमो ह मय्यापुरि ॥ १० ॥ पितुरनंतरमात्मगुणैर्जनं प्रकुरुतामधिकं वशवर्तिनम् । विनयतो नयतो नयतोऽधिकोऽन्यइति
सागरजाग्यवृणोच्चतौ ॥ ११ ॥ स्वसैरिणीव च पलाकमले तिलो कवा दप्रगृह्णुमि वयावचलासतीसा । हृत्वा मुदा चिरमरीरमदुत्सवेन लुब्धा
प्रलोभकतदीयगुणैर्गुणज्ञा ॥ १२ ॥ ॥ इति शुभम् ॥

ग्रामादिकान् ग्रथमसंस्करणावशिष्टान् दोषान् प्रमार्ज्य बहुलेन परिश्रमेण ।
ऋक्संग्रहोऽयमधुना पुनरंकितो भूत्प्रीतोऽस्त्वेनेन भगवाञ्छ्रुतिशास्त्रविच्च ॥ १ ॥

अयंग्रंथः पणशीकरोपनामकेन विद्वद्भरलक्ष्मणशर्मतनुजनुपावासुदेवशर्मणा - आठल्ये कुलोद्भववैदिकप्रवरगणेशभट्टसाहाय्येन संस्कृतः ।

श्रेष्ठिपाण्डुरङ्ग जावजीभिः स्वीये निर्णयसागरमुद्रणालये मुद्रितः प्रकाशितश्च ।

(मुंबय्या कोलभाटवीथ्या. घ. नं. २६-२८,) शकः १८५२ सनाब्दः १९३०.

॥ विद्मद्भ्यर्थनम् ॥

॥ १ ॥

ऋग्वेदकल्पदु मशौनकादिग्राच्यदुपुष्पाणिधियाविविच्य ।
ऋक्संहिताद्यापरिकल्प्यमालांसमर्पयेद्वैदिककण्ठेनो ॥ १ ॥

वेदप्रास्ताविकम् ।

श्रीः ॥ ग्रणम्यवेदपुरुषवेदज्ञान्पारिकांक्षिणः ॥ ऋक्संहितायाहोमादेःकुर्वेप्रास्ताविकंक्वचित् ॥

ननु कोऽयंवेदोनाम । कथंवातस्यापौरुषेयत्वेनप्रामाण्यम् । केवातस्यविषयप्रयोजनसंवंधाधिकारिणः । नखल्वेतस्मिन्सर्वस्मिन्नसति
वेदेप्रवृत्तिः । अत्रोच्यते—इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपाययोग्योवेदयतिसवेदः । अलौकिकपदेनप्रत्यक्षानुमानेव्यावर्त्येते । अनु-
भूयमानस्यस्रक्चंदनवनितादेरिष्टप्राप्तिहेतुत्वमौषधादेरनिष्टपरिहारहेतुत्वंच प्रत्यक्षतःसिद्धम् । स्वेनानुभविष्यमाणस्य पुरुषांतरगतस्यच

तथात्वमनुमानगम्यम् । एवंतर्हि भाविजन्मतमप्यनुमानगम्यमिति चेन्न । तद्विशेषस्यानवगमात् । न खलु ज्योतिष्टोमादिरिष्टप्राप्तिहेतुः कलंजभक्षणवर्जनादिरनिष्टपरिहारहेतुरित्यनुमर्थं वेदव्यतिरेकेणानुमानसहस्रेणापि तार्किकशिरोमणिरप्यवगुंशकोति । तस्मादलौकि-
कोपायबोधकोवेदइतिलक्षणस्यनातिव्याप्तिः । अतएवोक्तं—‘प्रत्यक्षेणानुमित्यावायस्तूपायोनबुध्यते । एनंवदंतिवेदेनतस्माद्देदस्य वेदता ॥’ इति । स एवोपायो वेदस्यविषयः तद्वोधएव प्रयोजनं तद्वोधार्थं चाधिकारी तेनसहोपकार्योपकारकभावः संबंधः ।

अथवेदानामपौरुषेयत्वेनस्वतःप्रामाण्यमनूद्यते—वेदश्चिकेसंनिकर्षपुरुषाख्याः । नन्वस्तुपदानांपदपदार्थसंबंधस्यचनित्यत्वं वाक्यार्थप्रमितेश्चवाक्यजन्यतयाविधीनांप्रामाण्यं, तथाप्यानुपूर्वीरूपवेदानांनित्यत्वासंभवात्काठकादिसमाख्ययातत्कर्तृकत्वनिश्चयाच्च पौरुषेयत्वंसंभवति । पुरुषेचद्वोषसंबंधसंभावनयानप्रामाण्यंसंभवति । तथाहि । वेदःप्रागभावप्रतियोगितावच्छेदकधर्मवान् वाक्यत्वात् भारतवदित्यनुमानेनपौरुषेयत्वम् । नचसामान्यधर्मस्यप्रागभावप्रतियोगितानवच्छेदकत्वेनवेदत्वस्यातथात्वादसिद्धिरितिवाच्यम् । वेद-
गितावच्छेदकं कार्यधर्मवृत्तित्वात् घटत्ववदित्यनुमानेनवेदत्वस्यापितथात्वात् । अन्यथाघटादीनामपौरुषेयत्वप्रसंगः । वस्तुतोवेदत्वंप्रागभावप्रतियो-
समाख्या, बर्बरःप्रावाहणिरकामयतेत्याद्यनित्यसंयोगोप्युपपद्यते । तदुक्तं संनिष्कृष्टकालावेदादानींतनाइति । तत्रचास्मादीनांकर्तृत्वा-
संभवाव्यासादिवदीश्वरएवकर्ता । एवंच ‘त्रयोवेदाअजायंतेत्यभेद्वेदोवायोर्यजुर्वेदः’ इत्यादिदर्शनमुपपद्यते । अतो नस्वतःप्रामाण्य-
मितिचेत् । न । उक्तानुमानस्य वेदत्वंप्रागभावप्रतियोगितावच्छेदकं सामान्यधर्मत्वादित्यनुमानेनसत्यप्रतिपक्षितत्वात् । प्रतियोगिताव-

च्छेदकभेदाभावेन सकलघटप्रागभावैक्यप्रतियोग्युत्पत्तिनाश्रयत्वासंभवेनचनित्यत्वापत्तेः । इष्टापत्तौतूपन्नस्यपुनरुत्पत्तिप्रसंगः, प्रागभावनाशस्वीकारेघटात्पत्तिप्रसंगः । अवयवशस्तत्राशस्वीकारोनिरवयवत्वादेवायुक्तः । प्रतियोगिभेदेनाभावानात्वकल्पनेसंसर्गाभावान्योन्याभावयोरैक्यप्रसंगः । अतो नसामान्यधर्मस्यप्रागभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वम् । प्रथमानुमानमपि—वेदाःप्रागभावप्रतियोगितावच्छेदकधर्माभाववन्तोऽस्मर्यमाणकर्तृकत्वादात्मवदित्यन्वयिना, अस्मर्यमाणकर्तृकवाक्यत्वादितिव्यतिरेकिणाचसत्प्रतिपक्षितम् । वेदशून्यकालाभावेनवेदप्रागभावासिद्धेश्च । तथाहि । पूर्वकालो नवेदशून्यःकालत्वाद्वर्तमानकालवत् । पूर्वकालीनवेदाध्ययनंगुर्वध्ययनपूर्वकं वेदाध्ययनत्वादिदानींतनवेदाध्ययनवत् । वेदानपौरुषेयाःअस्मर्यमाणकर्तृकत्वादित्यनुमानेनापौरुषेयत्वसिद्धेश्च । एवं ‘वाचाविरूपनित्यया’ इति श्रुतिः । ‘स्वयंभूरेषभगवान्वेदोगीतस्त्वयापुरा । शिवाद्याक्रपिपर्यंताःस्मर्तारोऽस्यनकारकाः ॥’ इति स्मृतिश्चोपपद्यते । काठकादिसमाख्यातु श्रुतिस्मृतिविरोधात्प्रवचननिमित्तत्वेनोपपादनीया । ‘अभेर्ऋग्वेदः’ इत्यादिश्रुतिरप्यभिनाज्ञापितइतिव्याख्येया । अनित्यसंयोगोऽपि प्रवाहनित्यतामादायोपपादनीयः । प्रवाहनित्यत्वंचसजातीयप्रागभावसमव्याप्तसजातीयध्वंसकत्वरूपम् । यद्वाबहुक्षीरादिवाक्यवदस्यकथादिनाविधेयस्तुतिपरत्वेनोपपादनीया । अतोऽपौरुषेयावेदाइतिसिद्धवेदानांस्वतःप्रामाण्यम् । इतिगागाभट्टः ।

स्वाध्यायविषयेकिंचित्प्रस्तूयते—स्वाध्यायोऽध्येतव्यः । अत्रस्वाध्यायत्वं स्वशाखात्वम् । तत्र स्वत्वंचपरंपरयाध्ययनविषयत्वमनुष्ठानविषयत्वंच । तेन वेदत्रयांतर्गतैकैकशाखापरःस्वाध्यायशब्दः । तेनाध्ययनानुष्ठानयोः स्वरंपरपरपरिगृहीताध्ययनानुष्ठानविषयत्वोपपत्तिः । अधीतवेदस्यप्रयोजनवत्त्वंचेत्थमवसेयम् । विधीनां प्रवृत्तिजनकप्रवर्तनाज्ञानम्, अर्थवादानां ग्राह्यज्ञानं, मंत्राणां

विशिष्टार्थस्मरणं, नाम्नां कर्मभेदो गुणफलोपबंधः संकल्पलाघवंच, साम्नामक्षरामिव्यक्तिः, स्तोभानां सामकालपूर्तिः, उपनिषदां पार-
लौकिकफलकर्मप्रवृत्तिजनकशरीरव्यतिरिक्तजीवात्मज्ञानं, क्रमज्ञानादिच यथेष्टमूहनीयम् । एवमंगानामपिवेदोपकारकत्वम् । तच्च
शिक्षायाः स्वरादिनिश्चयद्वारा, कल्पस्य शाखांतरसंदिग्धविध्युपसंहारद्वारा-न्यायलब्धार्थतात्पर्यनिर्णयद्वाराच, व्याकरणस्य वैदिकोहवि-
ज्ञानद्वारा, निरुक्तनिघण्टोर्वैदिकशब्दज्ञानद्वारा, छंदसां वैदिकवाक्यपरिमाणद्वारा, ज्यौतिषस्य वैदिककर्मप्रयोगोपयोगितिभ्यक्षोदिज्ञा-
नद्वारा, अधीतवेदजन्यार्थज्ञानोपयोगित्वात्सिद्धं सांगोवेदोऽध्येयोनुष्ठेयानितदुदितानिकर्मणीति । तथाच ऋग्वेदस्यैवाखिलवेदाद्यत्वेना-
भ्यर्हितत्वाच्चतुर्गताकलसंहितामधिकृत्याध्ययनाध्यापनस्याहाकाराद्युपकर्त्र्यंभूयादितिनैकशोविद्वत्साहाय्येनप्रयतितमयाऽस्याःशोध-
नादिसंस्करणाय । योजितानिचार्षदैवतच्छंदांसिआमूलांततत्तत्सूक्तपत्राधःप्रदेशेषु()धनुश्चिह्नांतर्गततत्तच्छास्त्रार्थविलासभांजि । प्रत्यध्या-
यमतेतच्चतुर्गतेदेवतात्यागाःसूक्तपक्षेणभेदपक्षेणचदर्शिताः । तथाऋग्वेदकल्पद्रुमादिग्रंथेभ्योविद्वद्भ्यश्च यथावगतंसाहाकारनिर्णयप्रयो-
गिषुस्तंकयावच्छेदुषिपरिष्कृत्यसंशोधितम् । स्वाहाशब्दयोगेऋगंतस्वरस्योदात्तादुदात्तस्वरितत्वप्रतिपत्तिसौकर्यार्थमुगते *एतादृशंचस्वरितचिह्नकल्पितंतत्रतत्र । तेनैतादृशचिह्नद्वयहीनाःकेवल-॥-रेखाद्वययुजःशेषाऋचोऽनुदात्तान्ताभवन्ति । अर्धर्चादा-
वैकैवरेखेति कल्पितास्तत्रपरिपाटी । एवंविहितेष्वत्यंतश्रमपुरःसरंशोधने शरीरिमात्रसाधारणभ्रान्त्यादिसमुत्थंदोषजातं सौजन्यधुरीणैः

सारसृष्ट्यालुभिः परिशीलितमरालचातुरीकैर्विपश्चिद्वैरूपेक्ष्यमाणं कृतशोधनं चाशासानः सकलाध्येत्रध्यापकप्रयोजकादिसौकर्यमेत-
ङ्ग्याहसंभावयन्गुणिजनचक्षुर्धटापथगामितयैवसार्थकतां मन्यमानो गुणिजनपरितोपमवैतब्द्यापारात्प्रीयमाणोऽखिलजगन्नायकोविदधातु-
प्रमाणसिद्धांतविरुद्धमत्रयत्किंचनभून्मतिमाद्यदोपात् । मात्सर्यमुत्सार्यतदार्यचिन्ताः प्रसादमाधायविशोधयंतु ॥ इत्याशास्ते

विद्वदेकांतवशंवदः—

वा. ल. पणशीकरः ।

अत्रादर्शपुस्तकदातृनिर्देशः ।

- १ वे ॥ शा ॥ सं ॥ गणेशभट्टआठल्ये आलीवागइत्येतदेतंचमहतापरिश्रमेणतैरेवनिर्मितंस्वादाकारपुस्तकमेकं ।
- २ वे-॥ शा ॥ सं ॥ आत्मारामभटजी अळवणी सावंतवाडीइत्येतदेतंचस्वीयसंग्रहसंकाशीस्थजड्येप्रणीतं ।
- ३ वे ॥ शा ॥ सं ॥ रामचंद्र(बाबा)पाध्ये गुर्जरभालावलीइत्येतैः महामहोपाध्यायगोपालोपाध्यायप्रणीतंसंपाद्यदत्तं ।
- ४ वे ॥ शा ॥ सं ॥ बाबुरामचंद्रदीक्षितजडेवनारसइत्येतैःप्रहितऋग्वेदकल्पद्रुमादिकोशान्दौनकीयांश्चाकलय्यमुद्रितमासीत् ।

तच्चद्वैतीयैकेऽस्मिन्संस्करणे—

तदंतर्वर्तिमंत्रभागं वे ॥ रा ॥ गणेशभटजीआठल्येइत्येतेपांसाहाय्येनसर्वानुक्रमभाष्येणचपुनःसंशोध्यप्रकाशितोऽयंग्रंथइतिशम् ।

संहिताहोमेप्रमाणम् । तत्रादौसंहिताहोमेप्रमाणंफलंचप्रायश्चित्तप्रकरणेबृहदाश्वलायनस्मृतौ—‘श्रौताग्निरपिस्मार्तोभौप्रायश्चित्ताहुतीहुनेत् । संहितागणकृष्णान्दपावमान्यादिमिद्विजः॥स्मार्तोभावेदुकृत्वाग्नेंकुर्यादुत्तपनीयकर्म’ति॥श्रौताग्निरपीत्यपिनास्मार्तोभिमानपिस्मार्तोभौंकुर्यादितिप्रतीयते । प्रायश्चित्ताहुतीरित्यनेनपापनिवृत्तिफलकत्वंबोध्यते । उत्तपनीयकोनामआधानसुवोधिर्न्या—‘दग्धेज्वाग्निंसमारोप्यपुनर्देभेभुसंयुतं । पुनस्तद्वत्तृतीयोग्निःसप्तवोत्तपनीयकः’॥ इति । लौकिकमग्निंसंस्कारविशिष्टंकृत्वाकुर्याद्वोममितिशेषः । श्रुतावपि—‘यःसमिधायऽआहुतीयोवेदेनददाशमतोऽअग्नये’ । योनर्मसास्वध्वरः’॥ इतिमंत्रेस्वातंत्र्येणसंहिताहोमःप्रतीयते । तथाचमंत्रार्थः—अग्नये अग्नयर्थ । यः मर्तः—मनुष्यः । समिधा—पालाश्यादिसमिदाधानेन । आहुती—आहुत्या आज्यादिसाध्यया । यो वेदेन—संहितया तदंतर्गत-सर्वमंत्रकरणकहोमेनच । ददाश—परिचरतीति ॥ यद्यपीयंश्चुतिर्वेदेनेत्यस्यब्रह्मयज्ञाध्ययनेनेत्यर्थकरणेनपाकयज्ञप्रशंसाकरणपरतयायोजिता तथाप्युक्तार्थपरतयापियोजयितुंशक्यते बाधकाभावात्, वेदेनाग्नयेददाशेतिसमिधव्याहृतपदस्वारस्याच्चअथचश्रुतीनांविश्वतोमुखत्वात् । तेनोक्तार्थतात्पर्यनिर्णायिकापूर्वोदाहृताश्वलायनस्मृतिरप्यनुगृहीताभवति । एतच्छ्रुतिविहितसमिदाधानाद्युक्तकर्मफलं‘तस्येदर्वत’इत्यग्निमश्रुतौस्तुटं । तथाहि—‘तस्येदर्वतो’रंहयंतऽआशवस्तस्यद्याभित्तंमंयशः । नतमंहोदिवर्कृतंकुतश्चननमर्त्यंकुतंनशत्’ ॥ इति । मंत्रार्थः—तस्यैव आशवः—शीघ्रगंतारः । अर्वतः—अध्वाः । रंहयंते—वेगंकुर्वति । शत्रून्प्रसहंतइत्यर्थः । तस्यैवद्युभित्तमंयशः—दीप्ततमाकीर्तिश्चभवति । अपिच । तं देवकृतं—देवेषुविहिताकरणेनयत्कृतं । अंहः—पापं । कुतश्चन—कस्मादुपिहेतोः । ननशत्—नव्याप्नोति । अशत् नशत्

इतितन्नाम । नचमर्त्यकृतं—मनुष्येषुहिंसदितन्न । इत्येवंपापक्षयकामेनाभिष्टुश्रवाकार्येत्युक्तंभवति । अतःपापक्षयकामेनापिसंहिताहोमो विधेयइतियावत् । किंचोपाकर्मांगत्वेनापिसंख्यायनसूत्रे‘अत्यृचंवेदेनजुहुयादित्यादिनाऽनेकेहोमविधयोऽभिहिताः । तथाचसूत्रं—‘अक्षतसक्तूनांधानानांदधिघृतमिश्राणांप्रत्यृचंवेदेनजुहुयादितैहैकआहुःसूक्तानुवाकाद्याभिरितिवाध्यायार्षेयाद्यादिभिरितिमाह्वैकेयोऽथह-
साहकौपीतकिरप्रिमीळेपुरोहितमित्येकाकुंभकस्तद्व्रवीदावदंस्त्वशकुनेगुणानजमग्निनाधामंतेविश्वंगतानोयज्ञयज्ञियायोःस्वोऽवरणः
प्रतिचक्ष्वविचक्ष्वाग्नेयाहिमरुत्सखायत्तेराजन्धृतंहविरितिद्वृचास्तच्छंथोरावृणीमहइलेकाहुतशेषाद्धविःप्राश्रंती’ति ॥

एवंपराशरस्मृतौप्रायश्चित्तप्रकरणेद्वितीयाध्यायेपारायणांगत्वेनदशांशहोमोऽभिहितः । तथाहि—‘ब्रह्महानरकस्यांतेपांडुकुक्षीप्रजा-
यते । प्रायश्चित्तंप्रकुर्वीतसयत्पातकशांतये ॥ चत्वारःकलशाःकार्योऽपंचरत्नसमन्विताः । पंचपल्लवसंयुक्ताःसितवस्त्रेणवेष्टिताः । कषाय-
पंचकोपेतानानाविधफलान्विताःसर्वौषधिसमायुक्ताःस्थाप्याःप्रतिदिशंदिशं ॥ रूप्यमष्टदलंपद्मंमध्यकुंभोपरिन्यसेत् । तस्योपरिन्यसेहेवं
ब्रह्माणंचचतुर्मुखं ॥ पलार्धाधंप्रमाणेनसुवर्णेनविनिर्मितं । अर्चयेत्पुरुषसूक्तेनत्रिकालंप्रतिवासरं ॥ यजमानःशुभैर्गंधैःपुष्पैर्धूर्वैर्यथाविधि ।
पूर्वादिकुंभेषुततोब्राह्मणाब्रह्मचारिणः ॥ पाठयेयुःस्वकान्वेदाष्टवेदप्रभृतीन्शनैः । दशांशेनततोहोमोग्रहशंतिपुरःसरः ॥ मध्येकुंडेविधा-
तव्योघृताकैस्तिलव्रीहिभिः । द्वादशाहमिदंकर्मसमाप्यद्विजपुंगवः ॥ भद्रेपीठेयजमानमभिर्षिंचेद्यथाविधि । ततोदद्याद्यथाशक्तिगोभूहेम-
तिलादिकं ॥ ब्राह्मणेभ्यस्ततोदेयमाचार्याययथाविधि । आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवामरुद्गणाः ॥ ग्रीताःसर्वेव्यपोहंतुममपापंसुदारुणं ।
इत्युदीर्यमुहुर्मत्स्यातमाचार्यक्षमापयेत् ॥ एवंविधानेविहितेभ्येतकुष्ठंविनश्यति’ ॥ इति ॥ यद्यपिरुद्रकल्पद्रुमेलिखितकालिकापुराणे—

‘जपादशांशतोहोमस्तथाहोमात्तुतर्पणं । तर्पणस्य दशांशेन मार्जनं कथितं किल ॥ मार्जनस्य दशांशेन ब्राह्मणानपि भोजयेत् ॥ जपोर्चापूर्वकोहो-
मस्तर्पणं चाभिषेचनं ॥ भूदेवपूजनं पंचप्रकारोऽत्तर्पुः स्मर्यते ॥ होमाशक्तौ जपं कुर्वन् होमसंख्याचतुर्गुणं । एवं कृते तु मंत्रसंज्ञायते सिद्धि-
त्तमा’ ॥ इति वचनैः पुरश्चरणगंजपसामान्यदशांशहोमः कर्तव्य इति प्रतीयते तथापि—‘पाठयेयुः स्वकान्वेदादृग्वेदप्रभृतीन् शनैः । दशांशेन
अदशाष्टत्तिपारायणेष्वेवैकावृत्तिरूपदशांशेनेति फलितम् ॥ केचित्तु महार्णवादिग्रंथेषु ‘रूपरुद्रजपशेषोऽदशांशहोमो विधेयः । तत्संभव
राद्यंतमंत्रैर्वा दशांशसंख्यापूरणवदेकसंख्याकादिपारायणपक्षेऽप्याद्यादिमंत्रैस्तदशांशसंख्यापूरणीया । एवं कल्पनायां तत्र त्रयन्मूलतदेवात्रा-
न्वेषणीयमिति वदन्ति । महार्णवे तु ‘चतुर्पुत्राह्मणेषु ऋग्वेदप्रभृतिमंत्रब्राह्मणात्मके वेदचतुष्टयपारायणं कुर्वन् सुप्रतिदिनं पठितवेदभागदशांश-
संख्यया न्याहृतिभिर्होमः कार्य इत्युक्तं । कैश्चित्तु संहिताहोमांशेसाधकतयोपन्यस्तानि ऋग्विधानस्थानि—‘एपाहिं संहितावेदः सर्वब्रह्ममयी
निचूत् । उग्रेण तपसा दृष्टा विश्वामित्रेण धीमता ॥ होमांश्च जपयन्नांश्च नित्यं कुर्वन् तैत्तरीया’ इत्यादीनि वचनानि तान्युपक्रमोपसंहाराभ्यां गायत्री-
मंत्रहोमपराण्येव न तु संहिताहोमपराणि । कृत्स्नसंहिताया विश्वामित्रदृष्टत्वेन काव्यनुपलंभात् गायत्र्या स्तदृष्टत्वाच्च निचूदिति विशेषण-
श्रवणमात्रेण कृत्स्नसंहिताहोमपरतया पूर्वोक्तवचनानियोजयतां प्रमाद एवेति सुधियो विभावयन्तु ॥ इति ऋग्वेदकल्पद्रुमः ॥

१ पुरश्चिथा—पुत्रश्चिथा—मृ ।

प्रासंगिकविधिविषयनिर्णयसंग्रहः ।

मंत्रविनिर्णयः । 'ऋषिदेवतच्छंदांस्यनुक्रमिष्याम' इति सर्वानुक्रमपरिभाषायाः प्रणीतप्रथमनिर्देशात्तदुल्लिख्यते । ननु मंत्रब्राह्मणयो-
र्वेदाभिधेयत्वात्सर्वानुक्रमण्यो 'नह्येतज्ज्ञानमृते' इत्यादिज्ञानस्य मंत्रादावेवावश्यकत्वबोधनादैतरेयब्राह्मणे मंत्रभागसत्त्वेऽपि तत्प्रतीकोपादा-
नेन न्यार्थिकथनस्याकरणाच्चात्र नैव न्यार्थिकज्ञानस्योपयोग इति चेन्न सर्वानुक्रमण्यं ब्राह्मणां तर्गतं मंत्राणां मृष्याद्यकथनेऽपि 'अज्ञातव्यादिको मंत्रो-
दोपावह इति श्रुतिः' इति कल्पसारांस्तस्या बृहदेवतायां 'सौर्यो णि चैव सामानि सर्वाणि ब्राह्मणानि चै'त्यनेन देवतोक्त्या च छंदसस्तुस्वरूपसि-
द्धत्वेन च न्यार्थिकज्ञानस्यावश्यकत्वात् ब्राह्मणस्यानेकभागघटितत्वेन मंत्रभागस्यापि तदंतर्भूतत्वात् तत्र न्यार्थिकज्ञानस्योपयोगः । 'मंत्रातिरिक्तं
सूर्यदेवताकत्वं सिद्धम् । ऋषिस्तु तद्बृहद्वैतरेय उक्तप्राय एव । छंदस्तु लक्षणाकं तदेव । अनाक्रांतं तु 'अत्रानुक्तं गाथे' तिसूत्रात्गाथैवेति ।
मंत्रविषये तु विनियोजकवाक्यानुरोधेन देवताकल्पनीयैव । तदुक्तं निरुक्तोत्तरषष्ठे प्रथमाध्यायचतुर्थखंडे—'तदेनादिष्टदेवता मंत्रास्तेषु
देवतोपपत्तीक्षायदेवतः स यज्ञो वायज्ञांगं वातदेवता भवत्यथान्यत्र यज्ञात्प्राजापत्य इति याज्ञिका—नाराशंस्थ इति नैरुक्ता—अपि वा साकामदेवता
स्यात्—प्रायो देवता वाऽस्ति ह्याचारो बहुलं लोके देवदेवत्य—मतिथिदेवत्यं—पिष्टदेवत्यं यदैवतो मंत्र इति । एतदर्थस्तद्भाष्यादवगतं व्यः ।
अत्रापि संदेहे तु 'अनिरुक्तो वै प्रजापति' इति ब्राह्मणात्,—'मंत्रेषु ह्यनिरुक्तेषु देवतां कर्मतो वदेत् । मंत्रतः कर्म तत्रैव प्रजापतिरसंभवे' इति बृह-
देवतास्थवचनाच्च प्रजापतिरेवेति सिद्धमिष्टम् ॥ विशेषरूपेण न्यार्थिकज्ञानमज्ञानेऽनुकल्पमाह कल्पसारः—'ऋष्यादीनामविज्ञाने वा म-

देवादिकानृषीन् । गायत्र्यादीनिच्छंदांसि विष्णुदेवं च संस्मरेद्दि'ति । तत्र ऋषिज्ञानप्राप्त्ये उदाहरित्यमाणसर्ववाक्यसंप्रतिपत्तेर्नास्त्येव-
 संशयः । तत्र सूक्तविशेषे सर्वानुक्रमणी व्याख्या तु वचनद्वैधेन र्णानामनियमे प्राप्ते तन्नियः क्रियते — 'प्रतयाशव' इति सूक्ते 'प्रतेष्टा च त्वारि श-
 द्दविगणादशर्चा अकृष्टा माषाः प्रथमे — सिकता निवावरी द्वितीये — पृथग्यो जास्तृतीये त्रयश्चतुर्थे' इत्यत्र चतुर्थे दशर्चे पूर्वोक्ता ऋषिगणादश-
 व्योऽस्मीकथिताश्चतुर्थे भांगुगोत्रं कचिदप्रसिद्धम् । शिष्टासु पंचस्थुषिरत्रिरेव त्वत्येव चे गृत्समदः प्रसिद्धः इत्युक्तत्वात् सर्वानुक्रमभाष्ये नि-
 त्रय इति पदच्छेदेन व्याख्यानाच्च । वृचिकृता तु अत्रय इति पदच्छेदं कृत्वा चतुर्थे दशर्चे अत्रय इति नामान इति व्याख्यातं तदुप्रमाणाभावाद्-
 पेक्ष्यम् । तथा 'माप्रगामे' तिसूक्ते सर्वानुक्रमण्यां 'पराणि च त्वारिसूक्तान्युक्ता ऋषयः' इत्युक्तम् । अस्यार्थः — सुबन्धुमित्रा-बन्धुः श्रुत-
 बन्धुर्विप्रबन्धुः खयः ऋषयः । ते गौपायना एव न लौपायनाः सुबन्धोस्तत्कालमृत्तत्वेनाद्रष्टृत्वात् । अतएव सर्वानुक्रमण्यां च 'गौपायनान्बन्धा-
 दीन्पुरोहितांस्त्यक्त्वान्यौ मायाविनौ श्रेष्ठतमौ भवता पुरोदधे तमितरे कुद्धा अभिचेरुथतौ मायाविनौ सुबन्धोः प्राणानां चिक्षिपतुरथ हास्य भ्रातर-
 खयौ माप्रगामेति षट्पादं त्रयस्वत्ययनं जत्वा' इति — 'माप्रगामेत्युपक्रम्य चतुःसूक्तेष्वतः परम् । बन्धाद्याः ऋषयो ज्ञेया गौपायनसुता खय-
 इति । सर्वानुक्रमवृत्तिकारेण — अपरे त्विलादिना चतुर्णां द्रष्टृत्वमुक्तं नूलविरोधादसंगतमित्ति स्पष्टमेव । तथा चतुर्थाष्टके प्रथमाध्यायेऽ-
 नस्वतेति सूक्ते 'अनस्वता षड्रैवृष्णपौरुकुत्स्यौ द्वौ ज्यरुणत्रसदस्यूरानौ भारतश्चाश्वमेधौ लास्ति सोऽनुष्टुभ' इति सर्वानुक्रमणी । अस्यार्थः —
 षड्चात्मकं सूक्तं एतत्रयं न्यवस्थया अपश्यत् । तत्रेयं न्यवस्था — आद्यानां तिसृणामित्यध्याहृत्य त्रैवृष्णपौरुकुत्स्यौ ज्यरुणत्रसदस्यूरौ संभूय-

द्रष्टारौ अंत्यास्तिस्रइत्यावर्त्य द्वितीयांतत्वेनविपरिणमय्य ताःभारतोश्वमेधोऽपश्यदितियोजना । अंत्यास्तिस्रइत्यपरंप्रथमांतं अनुष्टु-
भइत्यत्रान्वेतीति । तथाचशौनकः आर्पानुक्रमण्यां—‘अनस्वतेतिसूक्तस्यत्रिवृष्णपुरुकुत्सजौ । त्र्यरुणत्रसदस्यूद्वावश्वमेधश्चभारतः ।
अंत्यानांतिष्ठणामासांपूर्वासामितरौसहे’ति । अतएवोभयत्रापिद्वावित्युक्तिरपिचरितार्था । यत्तु तद्वृत्तौ पण्णामपिऋषित्रयमितिव्या-
ख्यातं—यच्च तद्भाष्ये द्वेद्वेऋचौएकैकऋषिक्रमेणापश्यदिति—न्याख्यातं तत्पुस्तुततरमूलभूतशौनकोक्तऋष्यनुक्रमणीविरोधात् मंत्र-
छिगविरोधात् द्वावित्युक्तिविरोधात् इतरौसहेत्युक्तिविरोधाच्चानादेयम् । (ऋ. क.) इतिऋषिनिर्णयः ॥

ऋषिदैवतछंद ऊहनिर्णयः । तत्रजपहोमादौप्रयुज्यमानेषुसूक्तक्षुपूर्वदेवतोहःकार्यउतछंद ऊहतिविमर्शसर्वानुक्रमपरिभाषा-
रंभाएव—‘ऋषिदैवतछंदांस्यनुक्रमिष्यामः’ इत्यनुक्रमपरिग्रहाद्, बहुचगृह्यपरिशिष्टेपि—‘अथास्यमंत्राणामृषिदैवतछंदांसि’ इति-
तथैवागीकारात्, तथासांख्यायनसूत्रे—‘ऋषेर्यस्ययोमंत्रोयैवत्योयच्छंदस्तथातथातंतंमंत्रमनुब्रूयात्’ इतिक्रमनिर्देशात्, एवमाधुनिक-
याह्निकाचाराच्च ‘यद्यपिस्यात्स्वयं ब्रह्मात्रैलोक्याकर्पणक्षमः । तथापिलौकिकाचारमनसापिनलंघयेत् ॥’ इतिवचनाद्याह्निकाचारानुगृहीत-
देवताप्राथम्यबोधकवचनानां कर्मकांडविषयेप्राबल्याद्देवतायाः फलदातृत्वेनाभ्यर्हितत्वात्तत्राथम्ययुक्तंमत्वा । तथाश्रौतस्मार्तकर्मकांडो-
दधिपारदृशमिर्मद्वनारायणकौस्तुभकारशांतिरत्नहेमाद्रिपूर्वकमलाकरादिमहानिबंधकारधुरीणैर्लोकोद्दिधर्षयानैकशःप्रणीतप्रयोग-धर्मशा-
स्त्रादिग्रंथेष्वामुहिमालयंप्रथितेषु प्रसंगतः सूक्तमंत्रादिप्रयोगावसरेऋषिदैवतछंदःक्रमेणवसूक्तादीनांविनियोगादत्रसंहितायामस्माभि-
रपिसप्तएवक्रमआहतोऽस्ति ॥ इमंपक्षंप्राचीनानसहंते—तेषांमतेछंदःप्राथम्यएवाद्दरः । तथाचऋग्वेदकल्पद्रुमे—छंदःप्राथम्ये ‘आर्षेय-

छंदोदेवतावित्' इति सर्वानुक्रमजडहृतएव । अन्यान्युदाहरिष्यते । तथाहि निरुक्तभाष्योदाहृतसामवेदब्राह्मणे—'यो ह वा अविदिता र्षेय-
छंदोदेवता ब्राह्मणेन मन्त्रेण याजयति वा ध्यापयति वा स्थाणुं वच्छति गते वा पात्यते प्रमीयते वा पापीयान्भवति' इति । अथर्ववेदे—'गणकऋषिः
निचूद्रायत्रीछंदः गणपतिदेवता' इत्यादि । पारिजाते—'आर्षछंदोदेवतं च विनियोगस्तथैव च । वेदितव्यं प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विपश्चिता' इति ।
गोभिलोप्येवमाह—'आयात्वित्यनुवाकस्य सामदेवऋषिः स्मृतः । आनुष्टुभं भवेच्छंदो वाग्देवी देवता स्मृता' इति । मदनरत्ने कात्यायनः—
'आर्षछंदश्चैव त्वं विनियोगस्तथैव च । वेदितव्यं प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विशेषतः' इति । सांख्यायनसूत्रे—'ऋषीज्जुंदांसि देवताः श्रद्धामेधेच-
क्रमबोधन एव तात्पर्याच्च । तथा बृहदेवतायां—'नियमोयं जपे होमे ऋषिश्छंदोयदैवतं । अन्यथा चेत्प्रयुजानस्तत्फलं चात्र हीयते ॥ अर्थे-
प्सवः खल्वृषयश्छंदोभिर्देवताः पुरा । अभ्यधावन्नि ति छंदो मध्ये त्वाहुर्मनीषिणः ॥ ऋषिं प्रथमं ब्रूयाच्छंदस्तुतदन्तर । देवता मथ मंत्राणां-
कर्मस्वेव मिति श्रुतिः' इति ॥ आचार्यखंडे गृह्याधानप्रस्तावे—'ऋषिं छंदोदेवतं च विनियोगमनुकृमात् । अस्तृत्वापादिकं विप्रो जुहुयाद्वा-
जपेदपि ॥ यजेद्वा ध्यापयेद्वापि न लभेत्कर्मणां फलम्' इति । तथा रामवाजपेय्यांगुह्यकारोपि—'ऋषिमादौ प्रयुजीत छंदो मध्ये नियोज-
येत् । देवता मवसाने च मंत्रज्ञो मंत्रसिद्धय' इति । तथा श्रीवत्सगोत्रभास्करकृत महाशुद्रपद्धत्यां छंदोभाषायां—'वक्तव्यं छंदोमादौ तु तत्तत् ऋषिः प्र-
कीर्तितः । देवता विनियोगश्च तैत्तिरीयकपाठकैः' ॥ आश्वलायनानां तु ऋषिच्छंदोदेवतपूर्वको विनियोगः । तथा च परिभाषायां—'आप्ये-
यच्छंदोदेवता विद्याजनाध्यापनाभ्यां श्रेयोधिगच्छती'ति ॥ तथा वेदभाष्यकारैर्मार्गधाचार्यैरपि ऋग्भाष्योपोद्धातांते ऋषिच्छंदोदेवता वि-

चारःकृतः सुरुपकृत्वमितिसूक्तेएव ऋपिच्छंदसी इंद्रपृच्छेतितचतुर्थ्यामृचिलिंगदर्शनादिंद्रोदेवतेतिछंदएवपूर्वमुदाहृतम् । आत्वेतिसूक्ते-
ऋषिच्छंदोदेवताविनियोगाःपूर्ववत् । इत्यादिपुवहुपुस्यलेपुछंदएवपूर्वधृतम् । निरुक्तभाव्यकारोप्येवमेवाह ॥

अत्रेदंविचार्यते—किंश्रुतिस्मृत्यादीनांद्वैविध्यदर्शनाद्विकल्पः । सोपिशाखाभेदेनकांडभेदेनवाव्यवस्थितउतसर्वत्र । नतावदाद्यः ।
शाखांतरैत्तिरीयशाखायांनारायणोपनिपत्सु—‘गायत्र्यागायत्रीछंदोविश्वामित्रऋषिःसवितादेवता’ इति । छंदोभाषायां—‘वक्तव्यछंद
आदौतुततश्चर्षिःप्रकीर्तितः । देवताविनियोगश्चतैत्तिरीयकपाठकैः’ इतिविशिष्यक्रमवोधकश्रुतिस्मृत्यादिप्रमाणदर्शनेनसंदेहस्यैवाभावात् ।
नद्वितीयः । ‘योह्वाअविदिताप्येयच्छंदोदेवतत्राह्मणेनमंत्रेणयाजयतिवाभ्यापयतिवा’ इत्यादिनाकर्मकांडएवष्यर्गदिज्ञानेफलस्य—तद-
ज्ञानेप्रत्यवायस्यचामिधानात्कांडांतरस्यानुपस्थितेः । नतृतीयः । विरुद्धार्थकानांनिरवकाशानांप्रमाणानांपोडशिग्रहणाग्रहणवद्वैकल्पिक-
त्वस्यवक्तुंशक्यत्वेपिविरुद्धार्थकपदरहितानांप्रकृतेतथावक्तुमशक्यत्वात् । अतश्छंदःप्राथम्यबोधकश्रुत्यादीनांप्रमाणांतराणामपिसंग्राहक-
त्वपरतया एकवाक्यत्वलाभाच्छंदःप्राथम्यमेवोचितं । सर्वानुक्रमस्य—‘अनुक्रमिष्याम’ इत्यंतं सूक्तप्रतीकदीनिप्रदर्शयिष्यामइतिव्याख्येयं ।
अतएव सर्वानुक्रमभाष्यकारेणापि ‘एताननुक्रमिष्यामोव्याख्यास्याम’ इतिव्याख्यायअनेकार्थत्वाद्धातूनामित्युक्तं । देवतासारणमंतेवा-
कुर्याद्विदितबह्वचरुह्यपरिशिष्टवाक्यस्यकेषुचित्पुस्तकेष्वदर्शनात् । केषुचित्तुदेवतासारणेमेववाकुर्योदितिपाठदर्शनेनतस्यापिदेवताप्राथम्ये-
असाधकत्वात् । नचैवंविनिगमनाविरहः देवताप्राथम्यावगत्याविशेषेपिछंदोविषयेहेतुनिर्देशपूर्वकप्रथमादिपदघटितस्मृत्यवधृततात्पर्यक-
क्रमबोधकोक्तश्रुतेरेवविनिगमकत्वात् । ‘श्रुतिस्मृतिविरोधेतुस्मृतेस्सागोविधीयते । तथैवलौकिकंवाक्यंस्मृतिबाधेपरित्यजेत्’ इतिस्मृत्य-

ऋक्सं.

॥ ७ ॥

पेक्षयाश्रुतेर्बलवत्त्वात् देवताप्राथम्यबोधकश्रुत्यनुपलब्धेऽथ । देवताप्राथम्याभासकप्रमाणानांसंग्रहपरतयोन्नीतत्वात् । द्विविधाचारदर्शनेपि
श्रुत्यविरुद्धाचारस्य प्रामाणिकत्वेन 'अंधस्येवांधलमस्ये' तिन्यायेन परंपरागतां चारांतरस्याश्रद्धेयत्वात् । सर्वानुक्रमण्यादेवताप्राथम्यव्यवहार
दर्शनेपि 'तुहिहवैतच्छब्दविशिष्टान्युविदैवतच्छब्दांसि द्वित्रिचतुःपंचषट्सूक्तभांजियथासंख्यम्' इति परिभाषानुसारेण कचित्पूर्वसूक्तसाह-
चर्यात्प्रथमदेवता उत्तरत्रऋषिः । कचित्पूर्वत्रछंदः उत्तरत्रदेवता इति च । तदुदाहरणानि तु — 'प्राग्नेयेपंचाग्नेयोवत्सआग्नेयंनुप्रनृनंतृचमा-
त्स्यात्काण्वोऽष्टममंडलमाचिच्चतुर्विंशन्मेधातिथिमेध्यातिथी' । 'तुह्यादिशब्दाभावेपियथा' — 'परंगायत्रप्रागवत्सप्रेर्द्धविध्वानुक्तगोत्रः प्राज्या-
सौम्यं स्वादिष्टयादशमधुच्छंदाः' इत्यादिनि । तुह्यादिशब्दाभावेपियथा — 'परागायत्रप्रागवत्सप्रेर्द्धविध्वानुक्तगोत्रः प्राज्या-
वापृथिव्येकाद्वैर्यौत्वाष्ट्रयौवाद्वेराकासिनीवात्योरंत्यालिङ्गोक्तदेवता' । 'जागतमूर्ध्वप्रागुशनसः प्रदेवंदशवत्सप्रेर्द्धविध्वानुक्तगोत्रः प्राज्या-
यो नोवार्हस्पत्येवंवोमारुती' । 'वायोसैकागायत्रमुक्तादेवताः प्रउगेणाद्येतुचैत्यैर्द्रवायवीद्यावापृथिव्योरंत्यालिङ्गोक्तदेवता' । 'अस्यमैष्टौजागतं त्र्यनुष्टुवंतं द्या-
उपांत्यानुष्टुपपुरीष्येभ्योमिभ्यः' इति । 'तिस्रः षट्पार्जन्यं तुपर्जन्यं तुपर्जन्याय तृचंगाय त्रमेते कुमारधामेयोऽपश्यत्' इति । 'अयंस-
मिचारदर्शनात् ऋषिदैवतच्छब्दांसीत्यस्य संग्राहकत्वमेव न्याय्यं । यत्तु आश्रयायनानां देवताप्राथम्याभासकार्थवर्णनसर्वानुक्रमण्यां 'आश्व-
लायनानुक्रमानुसारेणानुक्रमिष्यामः खिलान्वर्जयित्वे' तिप्रतिज्ञाय 'इंद्रत्वात्तृचं विध्वानुक्तगोतमविरूपाः प्रत्यर्चमिंद्रमरुदमयोमिगायत्रम्'

ऋषिदैक्

॥ ७ ॥

इत्यादीनां एकादशपटले विंशतितमकांडस्याव्यभिचारेण पिदैव तच्छंदांसि प्रदर्शितानीति तद्बहुचानां श्रौतस्मार्तसूत्रकृदाश्वलायनमित्राश्वलायनपरं ननु बहुचश्रौतस्मार्तसूत्रकृद्बहुचाश्वलायनपरं। तथा च वृहदश्वलायनस्मृतौ—‘तपसा विदितं विप्रामयातावत्क्षणादिव। श्रौतस्य कर्मणः सिद्ध्यै श्रौतसूत्रं मया कृतम् ॥ त एतं मृदुगं भीरं भीरार्थं शिवप्रदे। सुदुर्ज्ञेयं युविदुषां मनसः प्रीतिवर्धने ॥ श्रौतस्येव च यद्भाष्यं मयैव च कृतं द्विजाः। गृहभाष्यं करिष्यं ति द्विजा इति न मे कृतं॥’ इति। उपनयनप्रकरणे यज्ञोपवीतविधिप्रकरणे च। ‘प्रत्यक्षरात्रिपिच्छंदोदैवांगान्यक्षराणि च। भूतेतत्वात्मवर्णाश्च स्थानं ज्ञात्वा जपेत्सदा’ ॥ तथा। ‘ऋग्यादिसर्वविज्ञाय तंत्रविन्मंत्रसूक्तयोः। यज्ञोपवीतमंत्रेण कुर्वाद्यज्ञोपवीतिनम् ॥ ब्रह्मास्याद्यज्ञसूत्रस्य सुनिर्गायत्रमीरितं। छंदः प्रजापतिर्देवओं कारोप्यथवा त्रिवृत्’ इति। एतेन सर्वानुक्रमण्यां भूयसाव्यपदेशेनाव्यभिचारेण च देवताप्राथम्योक्त्या छंदोपेक्षया देवतायाः प्राथम्यमिति वदंतो निरस्ताः। सत्येकस्मिन्वाधेकाधकसहस्रस्याप्यकिंचित्करत्नमिति न्यायेन भूयसाव्यपदेशस्यासाधकत्वात्। श्रुतिरूपसाधकस्य प्रमाणांतरानपेक्षस्य प्रागेवाभिहितत्वादित्यलं विस्तरेण ॥ श्रुतिस्तुतिप्रमाणानामेकवाक्यत्वकल्पनात्। सर्वेषां चाविरोधेन छंदः प्राथम्यमीरितम् ॥ १॥-इति-ऋ. क. छंदोदेवतोहकमनिर्णयः ॥

छन्दोनिर्णयः—इदानीं ऋग्विशेषेण ध्वनिकेन ध्वनित्वेन छंदोनिर्णयः—ननु छंदः प्रकरणे ‘गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् हतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यातिजगतीशिकर्षतिशिकर्ष्यल्यष्टीधृत्यतिधृतयश्चतुर्विंशलक्षरादीनि चतुरुत्तराण्यनूनाधिकैर्नैकेन निचृद्भुरिजौ द्वाभ्यां विराट्स्वराजा’ वित्युक्तं सर्वानुक्रमण्याम्। अस्यार्थः—चतुर्विंशलक्षरादि गायत्र्यादि छंदःसु एकैनाक्षरेण न्यूनन निचृत्-एकेनाधिकेन सुरिक् द्वाभ्यां न्यूनैर्विराट्-अधिकेन स्वरान् इति। तत्र द्वाभ्यां न्यूनैर्विराडित्यत्र द्वित्वविवक्षायां ‘वयंहिते अमन्मही’ लं तत्र गायत्री छंदसि त्र्यक्षरैः,—‘यत्र द्वाविवजघने’ ल्यत्रानुष्टुप्-

छंदसिचतुरक्षरैः,—‘इंद्रः सहस्रदात्रा’मित्यत्र गायत्रीछंदसिपंचाक्षरैः,—‘अस्माद्दुल्लुमुपमंस्वर्षा’मित्यत्र जगत्सांषड्भिः,—‘थायस्पृधिस्वधाव’ इतिसतोबृहतीपंचौसप्तभिः,—‘त्वमग्नेद्युभि’रिति जगत्सामष्टाक्षरैः,—‘सिषक्तुन’ इत्यादिषु त्र्यक्षरैर्नूतवे उक्तविराट् लक्षणानां क्रांतत्वेन छंदोहानिरिति चेन्न । द्वाभ्यामिति द्वित्वस्य त्र्याद्युपलक्षणत्वेनादोषात् । एवं च त्रिप्रभृतिभिर्क्षरैर्नूतवेपिविराट्त्वसिद्धिः । तथा च शौनकः छंदोनुक्रमण्याम्—‘अस्य वामस्य सूक्तस्य जगत्स्य ण्डिमा ऋचः । पंचपादं साकं जानांयद्वा त्रयेयमेव । सप्तार्धगर्भागैरीश्वतस्यानुष्टुबनुत्तमा । प्रस्तारपंक्तिस्तुविराट् द्वाचत्वारिंशद्युगस्यथा’ । साच ऋक् ‘तस्याः समुद्रां मुपजीवती’ तिसप्तत्रिंशदक्षराविराट् प्रस्तारपंक्तिरित्याह । चत्वारिंशदक्षरातु केवलापंक्तिरिति प्रातिशाख्यभाष्ये । सर्वाणुक्रमभाष्ये नूतवेवोक्तं तत्र प्रातिशाख्यभाष्ये—‘याः काश्चिद्बहुपादास्तु गायत्र्योद्गीनतांगताः अक्षरैर्बहुभिस्तास्तु गायत्र्युपधारये’ इत्यमि युक्तोक्तिरप्यत्रानुक्ता । आविक्यां शेतुनोपलक्षणं तथा विच्छंदसोभावादिति दिक् ॥

अथ देवतास्तुत्युपयोगिस्थानभक्तिरूपगुणनिर्णयः—(सचायमस्माभिरयोजितोपि निर्दिश्यते) तथा हि देवतास्तुतौ कर्मणि च ऋष्यादिव देवता संबंधि स्थाननामभक्तीनामनुसंधानं कर्तव्यम् । तथा बृहदेवतायाम्—‘स्थानं नामानि भक्तीश्च देवतायाः स्तुतौ स्तुतौ । संपादयन्नुपेक्षे तथां कांचिदिह संपद’मित्यत्र स्तुतौ स्तुताविति द्विर्निर्देशेन सूक्तभाजो—हविर्भाज—ऋग्भाजश्च भूयिष्ठाः काश्चिन्निपातभाज इति । ‘प्रातः सवनं वसंतोगायत्री त्रिष्टुत्तोभोरथंतरं सामे’त्यमिसंपत्सु—‘माघ्यं दिनं सवनं ग्रीष्मस्त्रिष्टुपंचदशस्तोमो बृहत्सामे’त्यादींश्च संपत्सु—‘वृतीयसवनं चर्वाजगीसप्तदशस्तोमो वैराजं सामये च देवगणाः समाभ्राता उत्तमे स्थाने’ इत्यादिसंपत्सु—यां कांचित्संपदमुपेक्ष्यापि स्थानभक्तिरूपसंपत्ति संपादनबोधकं संपादयन्नित्यनेन च तत्तदेवतास्थानादीनामनुसंधानस्य स्तुत्यादिकर्ममात्रे आवश्यकत्वं बोध्यते । तत्र च स्तुतिर्नाम

गुण्यवच्छिन्नगुणकीर्तनम् । गुण्यवच्छिन्नत्वंचगुणिनिवस्तुतोविद्यमानत्वम् । बृहदेवतायांतु—‘स्तुतिस्तुनाम्नारूपेणकर्मणावांघवेनचे’-
 लुक्तम् । ननुस्तुतौस्तुतावित्युक्त्यास्तुतिमात्रेस्थानाद्युत्कीर्तनस्यावश्यकत्वेपि कर्ममात्रेस्थानाद्युत्कीर्तनस्यनोपयोगइतिचेन्न । बृहदेवता-
 यामेवात्रे—‘विभागमिममेतेषांविभूतिस्यानसंभवम् । सम्यग्विज्ञायमंत्रेपुतंकुर्मसुयोजयेत् । अध्यापयन्नघीयानोमंत्रंचैवानुकीर्तयेत् ।
 स्थानंसालोक्यसायुज्यमेतेषामेवगच्छति’ इत्युक्त्याकर्ममात्रेस्थानाद्युत्कीर्तनस्यफलकथनेन स्तुतिपदस्यकर्ममात्रोपलक्षणत्वेन कर्ममात्रे
 स्थानाद्युत्कीर्तनस्यावश्यकत्वात् । एतेनस्तुतावित्यस्योपलक्षणत्वंनेतिवदंतोनिरस्ताः ।

स्थानादीनामनुत्कीर्तनेफलाभावउक्तोबृहदेवतायाम्—‘नहिकश्चिद्विज्ञाययाथातथ्येनदैवतम् । लौक्यानांवैदिकानांचकर्मणांफल-
 मश्नुते’ इति । याथातथ्यंनामदेवतायाःस्थानभक्तिरूपगुणोत्कीर्तनपूर्वकमनुसंधीयमानत्वम् । तत्रैव—‘तत्रतत्रयथावच्चमंत्रान्कर्मसुयोज-
 येत् । देवतायाःपरिज्ञानाच्चद्विकर्मसमृद्धयत’ इति । अत्रयथावदित्यस्थानभक्तिगुणपुरस्कारेणेत्यर्थः । तथाचोक्तप्रकारेणदेवतोत्कीर्त-
 नेनैवफलसिद्धिरितिनिष्कर्षः । अतएवच वेदभाष्येप्रथमाष्टकेसप्तमाध्याये ‘आमनीपेति’ ऋग्व्याख्यावसरेमध्यमस्थानसंवांघिनऋभव-
 इत्युक्तम् । तथा ‘आग्नेगिरोदिव’ इतिमंत्रव्याख्यायांपृथिवीस्थानोभिरितिचोक्तं सर्वानुक्रमण्यां—‘हिरण्यकेशोद्वादशाद्यौतचौत्रैष्टुभोष्णि-
 हौपूर्वोभयेवामध्यमाये’ ति । ‘हिरण्यकेशोरजसोविसार’ इतिवृचस्याऽप्रयेवामध्यमायेत्यनेनमध्यमस्थानविशेषणोत्कीर्तनेनान्यस्थान-
 गतोभिर्व्यावर्तितः । तस्मात्स्थानाद्युत्कीर्तनंश्रुत्यादिसंमतमिति नात्रतदुत्कीर्तनेविप्रतिपत्तयम् । तत्प्रकारश्च—‘भवद्भूतस्यभव्यस्य-
 जंगमस्यावरस्यच । अस्यैकेसूर्यमेवैकंप्रभवंप्रलयंविदुः १ असतश्चसतश्चैवयोनिरेषाप्रजापतिः । यदुक्षरंचवाच्यंचयथैतद्ब्रह्मशश्वतम् २

प्रायुवद्रात्रात्तरिक्षस्थानः—सूर्योद्युस्थानस्तासांमाहाभार्यादैककस्याअपि-

बहूनिनामधेयानिभवंती'ति, तत्रैव—'तिस्रएवदेवताइत्युक्तंपुरस्तात्तांभक्तिसाहचर्यंन्यात्यास्यामोर्थेनान्यभिभक्तीनी'त्यादि, 'अर्थे-
 स्थानस्तंप्रथमंन्यात्यास्याम' इत्यादि, 'अर्थेतान्यादित्यभिभक्तीन्यसौलोकस्तृतीयसवनमि'त्यादि, 'अथातोऽनुक्रमिष्यामोऽभिप्रथिषी-
 सामधिनीप्रथमागामिनौभवत' इतिनिरुक्ते 'तिस्रएवदेवता' इत्येतदर्थेप्रथमागामीभवती'त्यादि, 'अथातोऽनुक्रमिष्यामोऽभिप्रथिषी-
 क्त्वाद्धिप्रथममिधानस्तुतयोभवंलैकवामहानात्मादेवतास्तासांवायुःप्रथमागामीभवती'त्यादि, 'अथातोऽनुक्रमिष्यामोऽभिप्रथिषी-
 तद्विभूतयोन्यादेवतास्तदव्येतदचोक्तमिंद्रमिवंवरुणमग्निमाहुरितियथाभिधानत्वनुक्रमिष्याम' इतिसर्वानुक्रमण्यांचदर्शितःसएवक्रुदतर-
 त्ति सृणामितराःसर्वदेवताविभूतयःताश्चसर्वानुक्रमणीवृत्तिकारसंगृहीतस्त्रोकेषुप्रदर्शिताः। तेच—'अभ्यादिदेवपक्ष्यंतदेवतास्तसां-
 तत्रच—'अभ्यादिदेवीऋजुहुल्यंतःक्षितिगतोगणः। वाय्वादयोभगांताःस्युंतरिक्षस्थदेवताः। तेच—'अभ्यादिदेवपक्ष्यंतदेवताकांडमुच्यते'
 अभ्यादिदेवीऋजुहुल्यंतोऽभिगणःप्रथिवीस्थानोऽभिभक्तिः, यमदेवतायास्तुगणद्वयातर्भूतत्वेनसर्वत्रस्थानद्वयप्राप्तावपिबृहदेवताइति'। तत्र
 सूर्यगणोबुस्थानःसूर्यभक्तिः, इत्यनेन 'यस्मिन्बृक्ष' इतिसूक्तस्ययमदेवतायाःबुस्थानस्यविशिष्योत्तयासूक्तंतरसबंधयमदेवतायाअंतरिक्षस्थानमर्थोत्सिद्ध-
 मिति । इत्थंचसर्वानुक्रमणीभाव्यकारोक्तदिशाबृहदेवता—निरुक्त—सर्वानुक्रमणशुक्लानामेकवाक्यत्वलभ्यतइतिनपक्षान्तरावसरः ।

सर्वानुक्रमण्युक्त ‘एकैवामहानात्मे’ तिवाशब्दस्य पक्षान्तरनिरासार्थं भाष्यकारेणोक्तत्वात् । एतेन वा शब्दस्य विकल्पार्थकत्वेन द्वयोः-
पक्षयोः समत्वात् अंतिमपक्षाश्रये स्थानादीनां नोपयोग इति वदन्तो निरस्ताः । निरुक्तादिपुद्गेव ताकांडोक्तस्थानादिकथनवैयर्थ्यापत्तेश्च ।
संस्तविकदेवतानां स्थानादि निर्णयः । तथा चोक्तं निरुक्ते—‘अथास्य संस्तविका देवा इन्द्रः सोमोवरुणः पर्जन्यऋतव आर्मा वैष्णवं ह विर्नष्टृक्सं-
स्तविकी दाशतयी पुविद्यते ऽथाप्याम्ना पौष्णं ह विर्नु संस्तवस्तत्रैतां विभक्तिस्तु तिसृचमुदाहरंति’ । अत्र भाष्यम्—यैः सहाग्निः स्तूयते तद्यथा—
‘इन्द्रः सोम’ इत्येवमादयो मंत्राः स्वभावोपप्रदर्शनसंस्तवोदाहरणम् । अग्रे पूर्वनिपातादेवताद्वन्द्वमुख्यता । ‘अम इन्द्रश्चाशुपो दुरोणे’
इतीद्रेण सह अग्निः स्तूयते । ‘अग्नीषोमा विर्म सुमे’ इति सोमेन सह संस्तवः । ‘त्वं नो अभेवरुणस्व विद्वान्’ इति वरुणेन सह संस्तवः । ‘अग्नी-
पर्जन्याववर्तधियमे’ इति पर्जन्येन सह संस्तवः । ‘अग्ने देवाँ इहा वह’ इत्यृतुभिः सह संस्तवः । ‘अग्नाविष्णुसजोषसे ०० वाजे भिरागतं’
इति त्रिमितये धः । तुशब्दोऽवधारणार्थः । ऋक्संस्तविकी संस्तवयुक्ता । दाशतयीषु—दशमंडलावयवग्रविभागेन तायत इति दशतयोः ऋग्वेदः
तस्य शाखा दाशतय्यः तासु सर्वासंस्तविका पिह विष्य विनियुक्ता । दाशतयीषु—दशमंडलावयवग्रविभागेन तायत इति दशतयोः ऋग्वेदः
ननु दाशतयीषु । असंस्तवेन वा दाशतयीष्वपीत्युत्सर्गदर्शयति—‘एवमेतन्मया निपुणमन्विष्यन्त’ इति । अथाप्ययमपर उत्सर्गः—अथा-
प्याम्ना पौष्णं ह विरेवननु संस्तवः तस्मिंस्तु ह विधिः किंतु पृथक् पृथगेवाग्निः स्तूयते पूषा च । तत्र तस्मिन् संस्तवेऽग्निपूष्णोरेतं विभक्तिस्तु तिसृच-

मुदाहरंति नैरुक्ताः—‘पूषात्वेतच्छयावयतु ०० सुविदन्त्रियेभ्यः’, एवमिन्द्रविपये ‘अथैतानीन्द्रभक्तीनि’ इत्यादि । अथ संस्तविका देवता अभिः-
सोमो वरुण इत्यादि । तद्यथा—‘इंद्राग्नी अव’ इत्यग्निना सह संस्तवः । ‘इंद्रा सोमा समघशंसं’ इति सोमेन सह संस्तवः । ‘इंद्रा वरुणा युवं’
इति वरुणेन सह संस्तवः । ‘इंद्रानुपूषणा वयं’ मिति पूषणा सह संस्तवः । ‘इंद्रा मास्ये हवि’ रिति वृहस्पतिना सह संस्तवः । ‘विश्वं सत्यं मघवानां’
इति ब्रह्मणस्पतिना सह संस्तवः । ‘इंद्रा पर्वता वृहते’ ति पर्वतेन सह संस्तवः । ‘इंद्रा कुत्सा वहमाने’ विकुत्सेन सह संस्तवः । ‘इंद्रा विष्णुं हिता’
इति विष्णुना सह संस्तवः । ‘इंद्रवायू मे सुता’ इति वायुना सह संस्तवः । मित्रावरुणेत्येवमादिपुयाग्रथमयानि दिश्यते सामुख्यास्तुतिः ।
यावत्तीययानि दिष्टासाऽमुख्या । ‘आनो मित्रावरुणा’, ‘सोमा पूषणा जनना’, ‘सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे’ अभिनाचपूषणा मध्यस्थानेन च द्यु-
स्थानेन च संस्तव इति पार्थिवेन प्रतिषेधात् ऋचं नो दाहरति मृग्यमुदाहरणम् । ‘धर्तारो दिवऋभव’ इति पर्जन्येन सह संस्तवः । एवं सूर्ये विपये
‘अथैतान्यादित्यभक्तीनीत्यादियच्च किंचित्प्रवह्णितमादित्यकर्मवतः चंद्रमसावायुना संवत्सरेणे’ ति संस्तवः । ‘पूर्वापरं चरतो माययैता’ विति-
चंद्रमसा सह संस्तवः । ‘सप्तऋषयः प्रति हिता’ इति वायुना सह संस्तवः । ‘पंचपादं पितर’ मिति संवत्सरेण सह संस्तवः । इत्यादिना तत्रैवोक्तम् ।

गणत्रयानुक्तदेवतास्थानादिविचारः ।

याश्चोक्तगणत्रयबहिर्भूता देवताः स्वातंत्र्येण स्तूयन्ते नेतरदेवताभिः सह तासां स्थानादि निर्णयस्तु निरुक्ते सप्तमाध्याये एकादशखण्डे—‘एते-
ष्वेव स्थाने नव्युद्हेष्वतुल्यं स्तोमपृष्ठस्य भक्तिकोपमनुकरणीयं शरदनुष्टुबेकं विशस्तोमो वैराजं सामेति पृथिव्या यतनानि, हेमंतः पंक्तिखिणवस्तो-
मः शक्रं सामेयं तरिक्षाय तनानि, शिशिरो तिच्छंदाश्च खिणस्तोमो वैरवतं सामेति द्युभक्तीनि’ । अस्यार्थः—ऋतवश्च छंदांसि चस्तोमाश्च पृष्ठा-

निचक्रुच्छंदस्तोमपृष्ठतस्य ऋतुभक्तिकोषंछंदोभक्तिकोषस्तोमभक्तिकोषपृष्ठभक्तिकोषं च । तद्यथा—शरदुत्पुवेकविंशस्तोमवैराजं समा मेति पृथिव्यायतनानि । अनग्निलिङ्गोपि चेन्मंत्र एतेषामन्यतमः स्यात्सव्याभेय इति प्रतिपत्तव्यम् । एवमेवोत्तरयोरपि स्थानव्यूहयोः व्यूहो नाम वित्तरः । चांभजंत इति द्युभक्तीनि । भक्तियग्रहणालिकोपप्रदर्शनार्थम् । या एतेषां स्तुतिः सा स्तुतिसंक्रमणन्यायेन स्थानाधिपतेः सूर्यस्य स्तुतिरिति । तत्रैव त्रयोदशोखंडेऽपि ‘ऋग्भाजश्च भूयिष्ठा’ इत्युक्तम् । तत्र भूयिष्ठग्रहणाच्च दर्शयति या असमाभ्राताः संतिताऽप्युपेक्षितव्या इति । अथ यानि पृथिव्यायतनानि सत्त्वानि स्तुतिं लभंते तान्यतोऽनुक्रमिष्याम’ इत्युक्तम् । अत्रैव त्रैव नवमाध्याये अधिकरोति । पृथिव्यायतनानि पृथिव्याश्रयाणि सत्त्वानि द्रष्टव्यानि च तेषामप्यत्र विवक्षितत्वात् स्तुतिं लभंत इति समाभ्रातानि तान्यतः परम-
नुक्रमिष्यामो न्याख्यास्याम इति शेषः । पूर्वस्मादाग्नीगणाद्विलक्षणोऽयमध्यादिगण इति पृथगधिकारवचनं पृथिव्यायतनत्वाविशेषात् । परम-
लांगलकुपुंभकप्रभृतीनामप्यत्रैवांतर्भावः । तान्यपि स्तुतिं लभंत लक्षणं चेदमिति । तस्मिन्नेवाष्टमाध्याये पष्ठे खंडे निघंटुस्थप्रथमोपात्तद्वाद्यंत-
र्गत—नाराशंसपदं ‘नाराशंसो यज्ञ इति कात्यक्यो नराशंसिन्नासीनाः शंसंत्याग्निरिति शक्यं’ रिति व्याख्याय नवमाध्याये नवमेखंडे-
पृथिवीस्थानांतर्गतद्वितीयनाराशंसपदार्थमाह—‘येन नराः प्रशस्यंते स नाराशंसो मंत्रस्तथैषा भवती’ति । अत्र भाष्यम्—किमत्र मंत्रः स्तूयते ?
नेत्युच्यते—लक्षणं मंत्रः नराः स्तूयते । एवं तर्हि नराणामेव समाभ्रातृभावात् न, तेषां सामान्यस्तुल्यभावात् राज्ञां वस्तुत्पपत्तेः तेषा-
मपि च सामान्यस्तुतिर्नास्ति अस्ति त्वेकैकदेशेन केवांचित् । यतो भावयव्यं लक्षणीकृत्य नाराशंसो मंत्र उदाह्रियते तस्योदाहरणं ‘तस्य भाव-

यव्यप्राधान्यस्तुतिरेषाऋग्भवती'ति । बृहदेवतायामपि—'कर्मणिग्यामिः कथितानिराज्ञां दानानि चोच्चावचमध्यमानि । नाराशंसीरित्यु-
चस्ताः प्रतीयाद्यामिः स्तुतिर्दशतयीपुराज्ञाम्' । तत्रैव—'आदावंते तु ह्यपयः कीर्तयति प्रसंगतः । सूक्ते सिन्देवतात्वन्या अन्यास्त्वव्रभवंति च ।
सालोक्यात्साहचर्योद्भासंस्तवाद्यथापुनः । गणस्थानाङ्गिकितोवाकीर्त्यते तास्तु देवता' इति । एवं निरुक्ततद्वाप्यबृहदेवतादिप्रमाणैर्निर्णयः
कल्पनीयः । इत्थंच गणत्रययानुक्ते देवतानां कासांचित्प्रथमोपात्ते देवतानुरोधेन—कासांचिदनुष्टुपादि छंदः पर्यालोचनेन—कासांचित्पृथिव्या-
श्रयत्वेनाग्निभक्तित्वात्तदनुरोधेन—कासांचित्रराशंसंस्तूयमानराजग्रथृतीनां भावयव्यादितत्तद्भूषेण—गणत्रययानुकानां सामान्यनाराशं-
सपदेनाग्निगणान्तर्भूतत्वात्तदनुरोधेन—कासांचित्साहचर्येण सूक्ते देवतानुरोधेन च यथायं स्थानादिद्रष्टव्यमिति फलितम् । अत्रापि च—'अव-
शिष्टहिदेवतात्वमभावेव सर्वदेवतामिवादात्—अग्निर्वसर्वदेवता इति ह विज्ञायते', 'अग्निर्वेदेवतानां भूयिष्ठभागि'ति च—'अपरिग्रहंच-
प्रधानगामि' इति न्याय इति सप्तमाध्यायस्थानिरुक्तभाष्यकारेण सर्वदेवतानामग्निरुपपत्त्वो घनत्वा योऽग्निभक्तित्वे देवतानां इन्द्रादित्यभक्तित्वं
चाल्पश इति विवेकः ।

सर्वानुक्रमणीप्रोक्तस्थानादिका देवताः । ताश्च गणत्रययानुक्ताः सर्वानुक्रमणीप्रोक्ताः स्थानादिज्ञानार्थतत्कथनपुरःसरसंक्षेपेण
संगृह्यन्ते । तथा हि—'गणत्रये निबद्धे केनो को यो देवता गणः । सर्वानुक्रमणीप्रोक्तस्तत्स्थानं भक्तिरुच्यते १ अविदित्वा स्थानभक्तीनामंत्र-
मुदीरयेत् । यदितत्सकलं कर्म वैयर्थ्यातिनिश्चितम् २ अतः स्थानंच भक्तिश्च नाम च प्रोच्यते मया । पृथ्वीस्थानादग्निभागाः ऋश्यंते देवताः पुरा
३ निर्मेन्ध्या हवनीयाग्नीदक्षिणा सदसस्पतिः । रोमशावरुणानीच गुंगूरन्नंच देवता ४ उपाध्यायस्तथायूपो वामदेवः शुनोपि च । अग्नि-

श्रवतथातक्षावृषुर्माशशीयसी ५ ऋक्षश्चाश्वसिष्ठश्चतथाचैवोपमश्रवाः । अध्येतारः पावमान्योयजमानश्चंद्रपती ६ श्वानोवसुकोनिर्ऋ-
तिः सुवंधोर्जीवइत्यपि । वधूवासोयदभनाशः पुरुषः पणयस्तथा ७ धनदाताचैद्रलवः सपत्नीनाशनस्तथा । अलक्ष्मीनाशदुःस्वप्ननाशौ द्वौ-
चाथमायन्नः ८ दुधणोरथगोपाश्च हस्तत्राणं तथाकराः । अथराज्ञः प्रवक्ष्यामि देवतात्वमुपागतान् ९ स्वनयः सोमकोराजात्रसदस्युर्ऋणं-
रवाश्चासमातिः कशश्चाथतिरिदिः । पाकस्थामामिषिक्तश्चकुरंगश्च नृपः स्युतः १० रथवीतिश्चायमानः सुदासासंगकावुभौ । ऋक्षाश्च मेधौ राजानौ कुरुश्रवणइत्यपि ११ पुरु-
क्ष्यामियतः कर्मसफलं तद्विनानहि १२ अर्यमाचक्रतश्छंदं अंतरिक्षं चतुर्थकम् । स्वर्गस्थानान्सूर्यभक्तीन् प्रवक्ष्यामि विशेषतः १३ अत्माच-
परमात्मा च पृथ्निर्जज्ञस्तथाक्षरम् । मायाभेदोभाववृत्तौद्युः संज्ञानंतथैव च १४ इति गणत्रयानुक्तदेवतानां स्थानादिविचारः १५ आत्माच-
सर्वचैतदुपपद्यते महाभाग्यसत्त्वैश्वर्यादेव । तासां रूपं चतुर्विधं—पौरुषविध्यं—अपौरुषविध्यं—कर्मार्थात्मोभयविध्यं—सत्यमौभयविध्यंचेति
प्रकारैर्भिद्यते । ते च प्रकाराः—सूक्तभाक्त्व—हविर्भाक्त्व—सूक्तहविर्भयभाक्त्व—निपातभाक्त्वरूपाः । अथाकारचित्तनंदेवतानां मित्यादि । ता अपि पुनरनेक-
दशखंडेऽमिहिताः । याचसूक्तमेव भजते न हविः सासूक्तभागिनी । तथा च बृहदेवतायाम्—‘यस्यांवदत्यर्थवादात्साज्ञेयासूक्तभागिनी’ इति ।
तदुदाहरणानि—‘अयं वेनश्चोदयत्’ इति वेनदेवताकं अहविर्भागिनीत्यादि । ‘असुनीते’ इति द्वयोः असुनीतिः । ‘ऋतस्य हि शुरुधः’ इति तृ-
चस्य ऋतोदेवताः इति द्वेदेवतेन सूक्तभागिन्यौ न हविर्भागिन्यौ तयोस्तु यथानुगुणं सूक्तभागिनीष्वंतर्भावः । वाखादयः सूक्तभाजो हविर्भाजश्च

एताःसूक्तंभजंतेहविश्चेत्युभयभाजः। याश्चक्रुचं—अर्धर्चं—पादंबृचादिकंचप्राधान्येनभजंतेताःसर्वाःक्रुभभाजःप्राग्रेणेत्यर्थः। तानसूक्तभाजः किंनुहविर्भाजएव । निपातभाजस्त्वनेकदेवतायामृचिसंभवति । ताश्चकचित्समप्रधानाउपादीयते कचित्प्राधान्येन कचिदप्राधान्येनेत्येव मनेकविधानिपातभाजोज्ञेयाः तथाचवृहदेवतायाम्—‘यांस्तुस्तौतिप्रसंगेनसाविज्ञेयानिपातिनी’ति । विस्तरस्तुनिरुक्तभाष्यादवगन्तव्यः॥

लिंगोक्तदेवतानांनिर्णयः । तत्रलिंगंनामक्रुगर्थः सर्वानुक्रुमणीवृत्तौतथैवोक्तत्वात् । तेनउक्ताज्ञाता तात्पर्यानुरोधेनकल्प्ये-
तियावत् । तात्पर्यद्विकचित्साक्षात्—कचिद्विनियोगवशात्—तदनुगुणार्थकल्पनयावगंतव्यम् । एतन्निर्वचनफलमुवैश्वदेवसूक्तेषुसूक्त-
भेदप्रयोगेसर्वानुक्रुमण्यांलिंगोक्तदेवताकत्वोक्तावधिकारप्राप्तदेवतावाधनेमेव । अन्यथोक्तलिंगोक्तदेवतालक्षणस्याऽव्यावर्तकत्वेनतत्रत्र-
लिंगोक्तदेवतोक्तवैयर्थ्यापत्तेः । ताश्चद्विविधाः—देवताकांडपठिताः तद्वहिर्भूताश्च निपातभाक्त्वाद्वृहदेवतायांवैश्वदेवसूक्ते देवताकांड-
पठिताश्चतदानुपूर्विकाएव ननुमत्रपठिताःपर्यायभूताः । यथा—‘वाह्मियशस’ मितिमंत्रेवहेरुपादानेपिदेवताकांडेऽग्नित्वेनैवोपादानात्त-
दुनरोधेनसर्वानुक्रुमण्यामग्निरैवोपात्तोननुवह्यादिरूपेण । एवमन्यत्राप्युह्यम् । तद्वहिर्भूताअपिद्विविधाः—गणविशिष्टाःकैवल्यश्च । ताश्च-
सूक्तभाजोनसति । अन्येनिपातभाक्त्वादयःसर्वेधर्माःसंभवति । तथाचवृहदेवतायाम्—‘सप्तर्षयोवसवश्चापिदेवाअथार्वाणोभृगवःसोम-
सूर्याः । पथ्यास्वस्तीरोदसीचोक्तमंत्रेकुहूगुरदितिर्धेनुरध्या १ असुनीतिरिळाचाप्याविधातानुमतिर्हया । अगिरोमिःसहैताःस्युरुक्तमंत्रा-
श्चदेवताः २ वैश्वानरोहिमुपणोविवस्वान्प्रजापतिर्चौःसुधन्वानगोहः । अपान्नपादर्थमावातजूतिरिळस्पतिश्चापिरथस्पतिश्च ३ ऋभवः-
पर्जन्यःपर्वताम्राश्च (पत्नी) दक्षोभगोदेवपत्नीर्दिशश्च । आदित्यारुद्राःपितरोयथाध्यानिपातिनोवैश्वदेवपुसर्वे ४ इति ।

१।३।६। हयामि—आद्यालिंगोक्तदैवतपादा
 १।६।१२। इमंषोऽश—तत्रोमित्रोऽर्धचोऽलिंगोक्तदैवतः
 १।७।३३। ईळेपंचाधिकाधिनमाद्यौपादौलिंगोक्तदैवतौ
 २।१।२६। प्रसुसप्तमैत्रावरुणं त्वं त्वेऽलिंगोक्तदैवतौ
 २।२।३। अस्तुश्रौषळेकादश—वैश्वदेवमेतदेवमन्यासामपिसूक्त-
 प्रयोगेवैश्वदेवत्वं सूक्तभेदप्रयोगेयाल्लिंगं सादेवता
 २।६।२९। गणानामेकोना—नार्हस्पत्यास्तुष्टल्लिंगाः
 २।७।१५। अस्यमेऽष्टौ—अंत्याल्लिंगोक्तदैवता
 ३।५।१३। प्रत्यग्निः पंचल्लिंगोक्तदैवतत्वेके
 ४।१।२०। अग्ने (पावक) गायत्रमंत्याल्लिंगोक्तदैवता
 ४।२।२३। तं प्रब्रथा—अन्ये च क्रपयोऽष्टल्लिंगाः
 ४।७।३०। स्वादुरेकत्रिंशद्गर्गः पंचादौ सौम्योऽग्न्यूलर्धचोऽलिंगोक्त-

[देवतः]

लिंगोक्तदैवतास्थलनिर्देशः ।

४।८।४। यज्ञायज्ञाव्याधिका-मारुतौत्यास्तिश्रोवासांलिंगोक्त-
 [देवताः]
 ५।१।२२। जीमूतस्यैवैकोना—रथगोपाज्जगत्याल्लिंगोक्तदैवता
 ५।१।२३। पराः पंच्यादयोऽल्लिंगोक्तदैवताः
 ५।४।८। प्रातर्भोगंजगत्याद्याल्लिंगोक्तदैवताः
 ५।४।११। दधिकंदाधिकंजगत्याद्याल्लिंगोक्तदैवता
 ७।५।१५। परेयिवांसषोऽशयमोयामंषष्टील्लिंगोक्तदैवता
 ८।१।२३। प्रतारीतिदशर्चे—सप्तम्याल्लिंगोक्तदैवता
 ८।७।९। इमंनोनव-आद्यास्तिस्त्राग्नेरात्मस्तवः शिष्टायथानिपातं
 ८।७।२०। ईजानंशकपूतो—आद्याल्लिंगोक्तदैवता
 ८।८।२४। तुभ्येदंचतुष्कं—दृतीयाल्लिंगोक्तदैवता
 ८।८।४२। विष्णुस्त्वष्टागर्भार्थोशीर्ल्लिंगोक्तदैवतं

देवताविशेषदेवतांतरसमुच्चयः । अयंचपरिभाषयाप्राप्तः । तथाहि—‘प्रायेणैतरेमरुतोराज्ञांचदानस्तुतयः’ इतिसर्वानुक्रमणी ।
 अस्मार्थः—इंद्रदेवताकसूक्तघटकवहुसंत्राणां दानादिदेवताकमंत्रान्विहायप्रायेणमरुदेवताकत्वम् । तत्फलंतुसर्वैर्इंद्रदेवताकमंत्राणां
 मरुद्धितीयप्रापणम्—तदप्युक्तंसर्वानुक्रमणीभाष्ये—प्रायेणैतरेमरुतःस्तूयंतइतिवाक्यशेषः । परिभाषयं मरुद्धितीयप्रापणार्थमंतरेणापि-
 वचनं, तेन ‘सुरूपकृन्नमूतये’ ‘इंद्रायाहिचित्रभानो’ ‘योयजातियजातइत्’ ‘यज्ञेदिवोनृपदनेपृथिव्याः’ इत्यादींद्रदेवताकेपुपरिभाषाप्राप्त-
 मरुदेवतापिसिद्धा । प्रायेणेतरेनेन्द्रमात्रदेवताबोधकोक्तिसत्त्वे गुणविशिष्टोपादानेचमरुदभावनःसूच्यते । तद्यथा—‘तन्वगस्त्योमारुतं-
 ही’तिहिशब्दप्रापितमरुदेवताकसूक्तत्रयातर्गतसहस्रंतइतिद्वितीयसूक्तस्यार्धेद्रीत्यनेनइंद्रदेवताकत्वंबोधितं । तत्रसमुच्चायकचशब्दाभावेन-
 मरुदभावः । अतएव ‘आदहेत्येताःपणमारुतोवीरुचिदिंद्रेणैल्लैर्द्वौ’चे’तिमरुत्समुच्चायकचशब्दोपादानंसंगच्छते । एवं ‘जगृभमाष्टौसप्त-
 गुर्वैकुंठमिंद्रंष्टावविकुंठानामासुरींद्रतुल्यंपुत्रमिच्छंतीमहत्तपस्तेपेतस्याःस्वयमेवैन्द्रःपुत्रोजज्ञे’ इतिसर्वानुक्रमणीतिहासेवैकुंठेद्रमरुत्वादिंद्रे-
 चमरुद्धितीयदेवताभावःसिध्यति । अतएव ब्राह्मणनृतीयपंचिकायांपोडशखंडे ‘इंद्रवैदृजंजनिवांसनास्तुतेतिमन्यमानाःसर्वदेवता-
 आजहुस्तंमरुतएवस्वापयोनाजहुःप्राणवैमरुतःस्वापयःप्राणहैवंनाजहुस्तस्मादेपोच्युतःस्वापिमान्प्रागथःशस्यतआस्वापेस्वापिभिरिति’-
 ति । तदर्थोभाष्येदर्शितः—तथाहि—इंद्रोयदावृत्रंहतवान् तमिंद्रंसर्वदेवताअजहुःपरित्यक्तवत्यः । कीदृश्योदेवताः ? नास्तुतेति नहि-
 सितवानिंद्रइतिमन्यमानाः । वृत्रस्यातिप्रौढशरीरत्वात्प्रहारमात्रेणासौनमृतइतिदेवानांभीतिः । इतरदेवताभिःपरित्यक्तंतमिंद्रंमरुतएवाऽ
 जहुःनपरित्यक्तवतः तद्विशेषणंस्वापयइति । सुपुंसिकालेपिवर्तमानादित्यर्थः । स्वापिशब्दार्थःश्रुत्येवप्रदर्श्यते—‘प्राणावैदेहमभ्येवर्तमानाः

प्राणाएवस्वापयोमरुतःस्वापकालानुवर्तिनोवायवः' । प्राणानांतकालानुवृत्तिमार्थवर्णिकाःप्रश्नोत्तराभ्यामामनन्ति—'भगवन्नेतस्मिन्पुरुष-
कानिस्वपंतिकान्यस्मिन्जाग्रती'तिप्रश्नः 'प्राणाग्रयएवैतस्मिन्पुरुजाग्रती'त्युत्तरं एवंविधायस्मात्प्राणरूपामरुतएवैनमिंद्रतदानीनपरित्यक्त-
स्ति सोयंस्वापिमान् 'आस्वापेस्वापिभि'रित्ययंपादोस्मिन्प्रागाथेअत्रायते तस्मादयंस्वापिमान् । इत्थंइन्द्रनिहवाख्यंप्रागाथंशस्य पुनरपि-
प्रकारांतरेणप्रशंसति । अपिह अपिच । अतः एतत्प्रागाथंशंसनाद्ध्वंअस्मिन्मरुत्वतीयशस्त्रे यद्येद्रमेवछंदःइंद्रसंबंधेवछंदःशब्दोपलक्षितो-
मन्त्रःशंस्यतेतद्धसर्वं तदपिजातंमरुत्वतीयशस्त्रंभवति । एवचेत्यादिनातत्रयुक्तिरुच्यते 'आस्वापेस्वापिभि'रितिपादोपेतत्वेनस्वापिमानेप-
बृहदेवतायामपि—'इरांहणातियत्कालेमरुद्भिःसहितोवरे । स्वापिशब्दवाच्यानांमरुतांप्रतिपादकत्वादित्यर्थः । सोयंप्रागाथः शाखांतरेद्रष्टव्यः ।
महतारवेणशब्देनयुक्तः इरासुदंकंहणातिवर्षितितेनकारणेनर्षयइंद्रमनुवन् । तथातत्रैव—'रसात्रादिमभिरादायवायुनायंगतःसह । वर्ष-
लेवचयल्लोकेतेनेन्द्रइतिचसूतः' इति । निरुक्तेपि—'यदेनंप्राणैःसमैधंस्तादिंद्रस्येद्रत्वमिति विज्ञायते' । अस्यार्थः—तदिदमपरमिन्द्रस्येद्र-
त्वंब्राह्मणउच्यते—यदेनंमध्यतोवस्थितंशरीरस्यप्राणभावेनविष्टभ्येतारान्प्राणान्वागादीनितरप्राणवृत्तिमाहाभाग्यसंप्रदानेनयदहंविशिष्टो-
स्मित्वंताद्विशिष्टोसीत्येवमादिनाप्राणाधिदेवताःसमैधन्समदीपयन्संतानार्थतादिंद्रस्येद्रत्वमिति विज्ञायते । इंधेभूतानीतिकर्तैरि प्राणैरेनं-
समिधतेतिकर्मणि इत्यनेनैंद्रपदव्युत्पत्त्याइंद्रसमरुदवियोगएवयुक्तः । एवंचमरुताभिंद्रस्यग्रीत्याऽपरित्यक्तत्वात्प्राणिमात्रस्यजीवनहेतु-

त्वेनाप्यायकत्वात् इन्द्रपदव्युत्पत्त्यातदविद्योगवोधनाच्चइन्द्रदेवताकर्मत्राणां द्वितीयामरुदेवतानियतेतिसर्वमनवद्यम् । अन्यत्रतुविधिवोधितेन्द्रातिरिक्तेदेवताकसूक्तघटकानांकेपांचिदेवमंत्राणांमरुदेवताकत्वमाचार्योक्तमेव 'अतित्यमाप्रिमारुत' मित्यादि । दानस्तुतिस्तराज्ञामेवनेतरेषाम् । तेनयत्किंचित्संबंधितयादानस्तुत्यौत्तत्तन्नामकराजस्थानस्तूर्यमानत्वादेवता । इतिपरिभाषाप्रामद्वितीयामरुदेवताविचारः ।

इंद्रासोमादिविचारः। एवमिंद्रासोमदेवताकेराक्षोन्नसूक्तेपि इंद्रादिदेवताभिर्द्रासोमयोर्वाधेपरिक्षोन्नत्वगुणस्यावाधात्तद्गुणकत्वमिंद्रादिदेवतानांनिर्विवादम् । अतएवबृहदेयतायां—'पिबेद्रस्तौतिनेत्यंतरक्षोन्नामेयमुत्तरम् । रक्षोन्नामेयमित्युक्तंयत्स्वेतद्रक्षणेतिनु' इत्यादिवचनैर्गुणाभिधानंसंगच्छते । ननु 'इंद्रासोमातपत' मितिपचार्विशत्युच्चात्मकेइद्रसोमदेवताकराक्षोन्नसूक्ते 'प्रवर्तयदिवोअश्मान' मित्यारभ्यपंचानां 'प्रवर्तयेतिपंचैत्र्य' इत्यनेनेन्द्रदेवताकत्वमुक्तं तत्रपंचम्याः पूर्वार्धचस्यवसिष्ठाशीर्देवताकत्वंउत्तरार्धचस्यप्रथिव्यंतरिक्षदेवताकत्वस्यविशिष्योक्त्यावाधात् इंद्रदेवताकत्वविरहेणक्रमेणपंचत्वानुपपत्तिरितिचेन्न 'मानोरक्ष' इतिपंचमीविहाय 'इंद्रजही' त्यप्रिमायाःपष्ठयाग्रहणेनपंचत्वोपपादनेनाक्षतेः । अतएवैतत्प्रकरणस्थसर्वानुक्रमण्या 'अष्टमीपोळइयावैद्यौ' इत्युक्त्वापुनश्च 'मानोरक्ष' इतिपंचमीविहायव्यवधानेन 'इंद्रजही' त्यप्रिमपष्टीग्रहणरूपवैचित्र्यप्रदर्शनार्थं 'प्रवर्तयेतिपंचैत्र्य' इतिइन्द्रदेवताकत्वोक्तिःसंगच्छते।अन्यथाऋचांक्रमस्यविवक्षितत्वेलाघनात्स्थलांतरवत्सकृदुपादानमात्रेणैवतद्देवताकत्वेसिद्धेपुनरुपादानमसंगतंस्यात्। अतएव 'अस्तीदंपोळशाद्याचतुर्थीदशमीद्वादश्योनुष्टुभः पष्ठेकादश्युपालेचजगत्याःपंचम्युत्विग्भ्योवा' । चतुर्विंशतितमेखंडे 'उपालेसीतायैतेचानुष्टुभावाद्याचतुर्थीचेति' । पंचविंशतितमेखंडे 'त्वाममेगयौत्यापंचम्यौपंक्तीअग्र ओजिष्ठमं त्याचतुर्थ्यौचे' त्यादिस्थलांतरेउक्तवैचित्र्यस्याफाप्यभावेनपुनरुपादानाभावः ।

अतएवचबृहदेवतायां—‘प्रवर्तयेति पंचद्वयोद्रासोमीत्युत्तमा । ऋषिस्त्वाशिषआशस्तेमानोरक्षइतित्वुचि । दिविचैवपृथिव्यांचतथा-
पालनमात्मनः’ इत्युक्तम् । अत्रहिपंचानामिन्द्रदेवताकत्वं ‘मानोरक्ष’ इत्यस्याः पंचम्याः वसिष्ठाशीरादिदेवताकत्वं चोक्तं तस्या इन्द्रदेवता-
त्यनेनोत्तमायाः सप्तम्याएवेन्द्रासोमेदेवताकत्वमस्त्विति वाच्यम् । तत्रैव ‘ऐन्द्रासोमीत्युत्तमे’
विरोधात्साधकाभावाच्चेतिसर्वमनवद्यम् ।

भाववृत्तविचारः । अथ ‘नासदासी’ इत्यादि सूक्तेषु भाववृत्तदेवताऽभिहिता तस्याः स्वरूपं विचार्यते—‘नासत्सप्तप्रजापतिः परमेष्ठी-
भाववृत्तं’ इतिसर्वानुक्रमण्यं भाववृत्तशब्दः भावानां पदार्थानां वृत्तिः सृष्ट्यादिग्रहवृत्तिर्यस्यादिति व्युत्पत्त्या जगदुत्पत्तिस्थितिलयकर्तृपरः ।
सच विशेष्यनिर्णयः । तथाच ब्रह्मणो यदा विशेष्यत्वं तद्दानं पुंसकत्वम् । हर्येदाविशेष्यत्वं तदा पुंस्त्वम् । अतएव बृहदेवतायां—‘यथेदमग्ने-
नैवासीदसदप्यथवापिसत् । जज्ञेयथेदं सर्वतद्भाववृत्तं वदंति तु’ इति न पुंसकनिर्देशः । तत्रैव चान्यत्र—‘मायाभेदो भाववृत्तोऽसृजः संज्ञानंतथै-
व वृत्तो हरिः स्मृतः’ इति पुंनिर्देशश्च संगच्छते । सूक्तेषु भाववृत्तशब्दोऽर्थआद्यजतो नित्यनपुंसकः इति न कुत्रापि लिङ्गानुपपत्तिरिति दिक् ।

१ इति शब्देन विग्रहे भाववृत्तीति स्यात् । वृत्तशब्देन विग्रहे तु भाववृत्तेति स्यात् ।

अथ प्रक्रांतगुणविशिष्टदेवताकसूक्ते देवतांतराप्तौ गुणोच्चारणविचारः । तत्र 'नवममंडलपावमानसौम्य' मितिसर्वानुक्रमणी तस्या अयमर्थः—सोमः पवमानगुणकः । पृथक्पदोपादानमंडलातर्गतसोमापवादभूतदेवतांतरस्यापितदुणलाभार्थनतुमंडलांतर्गतआग्नी-
हपनेदृढतरप्रमाणाभावात् मंत्रालिङ्गविरोधाच्च । नल्लोकदेवताया एकएवगुणइति नियमः । 'देव्यो होतारौ प्रचेतसौ तिस्रो देव्यः सरस्वती-
काभारत्य' इत्यादौ वेकस्या अप्यनेकगुणदर्शनात् । तथा च दृढदेवतायां—'पवमानः स्तुतः सोमो नवमेमंडलर्षिभिः । पवमानवदाग्र्यस्तुसमि-
द्धइतिसस्तुताः' इत्युक्तम् । पवमानवत्यश्रुता आग्र्यश्चेति विग्रहः समिद्धइत्याद्यग्निभिः सस्तुता इत्यर्थः । तेन आग्नीदेवतानां पवमानगुणकत्वं-
स्पष्टमेवलभ्यते । तेन पवमानवदितिवतिप्रत्यया तमंगीकृत्य सोमो यथा पवमानमात्रगुणकः, एवमाग्नीदेवता अपीध्मादिमात्रगुणवत्यइति-
नगुणकत्वाभावपरंव्याख्या ननु प्रमाणाभावाच्चिर्युक्तित्वाच्चोपेक्ष्यम् । इति पवमानविशिष्टदेवताविचारः ।

अथ क्रमुगणस्य लिङ्गोक्तदेवतावाचकविभ्वशब्दस्वरूपविचारः । निधं दुस्यदेवताकिं नरमुपदव्याख्यावसरे निरुक्तोत्तरपदके पंच-
माध्याये षोडशखंडे विष्ट्रीशमीति मंत्रघटकक्रमुपदव्याख्यावसरे 'क्रमुर्विभ्वावाजइतिसुधन्वन आंगिरसस्य त्रयः पुत्रावभूदु' रित्यत्र विभ्वाइति
नंतः शब्दः । तथा चाष्टमाष्टके तृतीयाध्याये ऽष्टमे वर्गे 'दिवश्चिदावोमवत्तरेभ्य' इति मंत्रे विभ्वनाचिदिति तृतीयांतपददर्शनात् । अतएव
तृतीयाष्टके सप्तमाध्याये 'क्रमुतोरयिः प्रथमश्वस्तम' इति मंत्रत्रय्याख्यावसरे विभ्वमिस्तष्टः निभ्वतष्टइति व्याख्यातेवदभाष्ये । एवं विभ्वाइति-

प्रथमातं विभ्रानमिति द्वितीयातं विभ्रनइति चतुर्थ्यंतयथायतत्रतोह्यम् । एतेन दुर्गप्रणीत निरुक्तभाष्ये 'तेषां प्रथमोत्तमाभ्यां बहुवचि-
गमाभवंति न मध्यमेन विभ्र' इति तृतीयातसमानाधिकरणनिर्देशेन विभ्रशब्द आकारांत इति लभ्यते सलुलेखकप्रमाद इति स्पष्टमेव प्रतीयते ।
आकारांतत्वे हि उक्तविभ्रनेति पदविरोधः विभ्रमिस्तद्विषये विग्रहप्रदर्शनपर उक्तभाष्यविरोधश्चेति । इति विभ्रशब्दस्वरूपविचारः ।

रोदःशब्दः

अथ रोदःशब्दविचारः । अथ रोदःशब्दोदसीशब्दयोर्नपुंसकस्त्रीलिंगयोर्विचारः क्रियते । रुद्धात्प्रकृतिक असुम्प्रत्ययांतः-
सांतोनपुंसक एकः । तत्प्रकृतिकगौरादिङीपतस्त्वपरः स्त्रीलिंगः । वेदे कोशे चोभयोरपितथा दर्शनात् । तथा हि । 'न हित्वारोदसी उभे'-
'नित्तमे अस्य रोदसी' - 'नरोदसी अपदुंतघोराः' - इत्यादि मंत्रेषु द्यावापृथिवीवाचकः सांतोनपुंसकः । अतएव पदकाले द्विवचनांतत्वेन-
प्रगृह्यत्वादिति शब्दप्रयोगः संगच्छते । तस्य च द्यावापृथिवीदेवतावाचकस्य देवतोच्चारणकाले प्रथमांतस्य रोदसी इति स्वरूपं - अन्वाधानकाले-
द्वितीयांतस्य रोदसी इति । दौम्यादिद्रव्यत्यागकाले चतुर्थ्यंतस्य रोदोभ्यामिति । अतएव च एते पृष्ठानीति मंत्रोदसोरिति सप्तमीद्विवचनांत-
मुपपद्यते । ङीपंतत्रतत्रांतोदात्तस्वरव्यत्ययकल्पनाच्छांदसत्वेन पूर्वसवर्णादिकं रोदसोरित्यत्र ईकारलोपकल्पनं च स्यादिति महदेवगौरवम् ।
सांताश्रयणे तु न किंचित्कल्पनीयमिति महदेवलाघवम् । अमरकोशे पितृतीयकांडेनार्थवर्गे एकोनविंशदधिकद्विशतश्लोके - 'प्रसूरापि-
भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी चते' इति, । रामाश्रमकृत तट्टीकायामपि - 'द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी' । 'रोदश्च रोदसी चापि दि-
विभूमौ पृथक् पृथक् । सहप्रयोगे व्युभयोरोदः स्यादपि रोदसी' इति विग्रहः - इति दर्शनाच्च सांत एव ग्राह्यः । यस्तु । 'जोपद्यदीमसुर्यास च ध्ये-
नि पितस्तु कारोदसी' - 'सचामरुत्सुरोदसी' - 'मिम्यक्षये पुरोदसी' - 'अधसौ पुरोदसी' - इति चतुर्पदाहरणे पुईकारांत एकवचनांतः स तु सरु-

रुद्रीवाचकः—रुद्रस्त्रीवाचकः—विद्युद्वाचकश्चेतिनकायलुपपत्तिः । स्पष्टचेदंवेदभाष्ये—‘जोषद्यदीमसुर्यासचध्वै’ इति मंत्रव्याख्यावसरे ‘परा-
शुभ्राअयास’ इति मंत्रोदसी इत्यत्र द्यावापृथिवीवाचकत्वे ङीवंतस्यातोदात्तस्य वा छंदसीत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे द्विवचनांतत्वेन प्रकृतिभावः ।
मरुस्त्रियादिवाचकत्वे तु लुप्तसप्तम्यंतं ‘ईदूतौचसप्तम्यर्थे’ इति प्रगृह्यद्रष्टव्यमिति सुधीभिर्विभावीनीयं । इति ऋग्वेदकल्पद्रुमे रोदःशब्दनिर्णयः ॥

संहितास्थगायत्र्यादिच्छंदं सिसि । अथास्यांशकलसहितायां गायत्र्यादिच्छंदसामृगियत्ताबुमुत्सूनांप्रीत्यैतत्तत्संख्यानियमं-
दर्शयिष्ये । तत्र तावत्—गायत्र्येकोनपंचादशधिकचतुर्विंशतिशतानि २४४९ । उष्णिह एकचत्वारिंशदधिकशतत्रयं ३४१ ।
अनुष्टुभः पंचपंचाशदधिकान्यष्टौशतानि ८५५ । बृहत्येकाशीत्यधिकशतं १८१ । पंक्तयोद्वादशाधिकशतत्रयं ३१२ । त्रिष्टुभ-
स्त्रिपंचाशदधिकद्विचत्वारिंशच्छतानि ४२५३ । जगत्योऽष्टाचत्वारिंशदुत्तरत्रिंशताधिकसहस्रं १३४८ । अतिजगत्यः सप्तदश १७ ।
शक्यैकोनविंशतिः १९ । अतिशक्यैर्योनव ९ । अष्ट्यः षट् ६ । अत्यष्ट्यश्चतुरशीतिः ८४ । धृतीद्वे २ । अतिधृतिरेका १ ।
एकपदाः षट् ६ । द्विपदाः सप्ताशीतिः ८७ । ‘बार्हताः प्रगाथाः शतं १०० । विपरीतोचराश्चतुरधिकानवतिः ९४ । ककुभः पंच-
पंचाशत् ५५ । महाबार्हतैकः’ १ । एवं सर्वमिलित्वा सार्धशतद्वयं २५० । एते द्विचतुर्वा इति कृत्वा त एताद्विगुणाऽष्टचः पंच-
शतानि ५०० ॥ एवं सकलाः शाकलसंहितायां खिलरहितायामृचो व्युत्तरसप्तत्यधिकचतुःशताधिकदशसहस्राणि १०४७२ संख्येति ॥
यत्तु ‘ऋचादशसहस्राणि ऋचां पंचशतानि च ॥ ऋचामशीतिः पादश्चैतत्पारायणमुच्यते ॥’ इति कस्यचिद्वचनं तद्वालखिल्याभ्यामादि-

खिलसहितशकलसंहिताविषयमितिज्ञेयम् ॥ खिलरहितायास्तुपूर्वोक्तायाएवसंख्यायाःप्रतीतेः ॥ एवमत्रप्रथमाष्टकेऋचः १३७० द्वितीये ११५७ तृतीये १२०९ चतुर्थे १२६९ पंचमे १२६३ षष्ठे १६५० सप्तमे १२६३ अष्टमे १२९३ । एतत्संकलनं-पूर्वोक्तमेव । सूक्तसंख्यात्वनुक्रमण्यमेव 'तदेतत्सूक्तसहस्रं' इत्यादिनापठिता सापिबालखिल्यरहितायाएवघटते । तदित्यं-प्रथमाष्टके सूक्तानि १२१ द्वितीये ११९ तृतीये १२२ चतुर्थे १४० पंचमे १२९ षष्ठे १२४ सप्तमे ११६ अष्टमे १४६ एतत्संकलनंप्रागुक्तमेव ।

गायत्र्यादिछंदोभेदपरिगणनं-गायत्री८ पदपंक्तिः-उष्णिग्गर्भो-पादनिचृत्-अतिनिचृत्-यवमध्या-वर्धमाना-प्रतिष्ठा-हसीयसी । उष्णिक् ७ पुरउष्णिक्-ककुप्-ककुग्र्यंछुशिरा-तनुशिरा-पिपीलिकमध्या-अनुष्टुभो-उष्णिक् । अनुष्टुप् ६ महापदपंक्तिः-छतिः-पिपीलिकमध्या-काविराजः-नष्टरूपीविराजः । बृहती १० पुरस्ताद्बृहती-न्यंकुसारिणी-उरोबृहती-स्कंधोग्रीवी-उपरिष्ठाद्बृहती-विष्टारबृहती-ऊर्ध्वबृहती-पिपीलिकमध्या-विषमपदा-बृहती । पंक्तिः ७ विराट्-सतोबृहती-विपरीता-प्रस्तार-पंक्तिः-आस्तारपंक्तिः-संस्तारपंक्तिः-विष्टारपंक्तिः । त्रिष्टुप् १२ जगती-अमिसारिणी-विराट्स्थाना-विराटरूपा-ज्योतिष्मती-पुरस्ताज्ज्योतिः-मध्येज्योतिः-उपरिष्ठाज्ज्योतिः-महावृहती-यवमध्या-पंचयुत्तरा-विराट्पूर्वा । जगती ३ त्रिष्टुप्-महासतोबृहती-महापंक्तिः । प्रगाथाः ६ बार्हतः-काकुभः-महाबार्हतः-विपरीतोत्तरः-अनुष्टुभः-आनुष्टुप्सुखास्तृचाः इति ।

स्वाहावत्यक्षरः ।

मंत्रप्रतीकं.	अष्टकाध्यायवर्गः.	मंत्रप्रतीकं.	अष्टकाध्यायवर्गः.	मंत्रप्रतीकं.	अष्टकाध्यायवर्गः.
स्वाहायज्ञं कृणोत न	१ १ २५	आपूर्णोऽस्य कलशः*	३ २ ११	आयाह्वयऽआपरि०	६ ३ १२
ततमे अपस्तुतुतायते	१ ७ ३०	तिष्ठारथ आ	३ २ १७	स्वाहाकृतस्य तृपतं०	६ ३ १७
पुण्वतेमं रुत्वते०	२ २ ११	इंद्रः स्वाहपिवतु*	३ ३ १४	आदुतुतेऽअनु०	६ ४ ४२
स्वाहाकृतान्याग०	२ २ ११	स्वाहाग्रयेवरुणा०	३ ८ २१	विश्वेदेवाः स्वाहाकृतं०	६ ७ २५
पुरोगाऽअग्निदे०	२ ५ ९	आयाह्वमेस०	५ २ २	वेपिहोत्रमुतपोत्रं०	७ ५ ३०
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य	२ ५ २३	यथावः स्वाहा०	५ २ ४	मार्तलीकव्यैर्यमो०	७ ६ १४
तुभ्यं हिन्यानोव०	२ ७ २५	आचनोवहिः०	५ ४ २९	आमेवहुवरुण०	८ २ २२
आयाह्वमेसमि०	२ ८ २३	आनोयातमुप०	५ ८ २५	सद्योजातोव्यमिमीत०	८ ६ ९

निर्दिष्टेषु स्वाहावनमंत्रेष्वपि प्रदानाप्रदानार्थकस्वाहाकारभेदेन द्वैविध्यं परिकल्प्य—प्रदानार्थकस्वाहाकारवस्त्वेवांते पुनः स्वाहाकारोभास्त्वन्यत्रापेक्षित एवेति निर्णयजुहति केचन शिष्टास्तन्मतेन प्रदानार्थकस्वाहाकारघटितमंत्रप्रतीकमूर्ध्नि * ईदृक्पुष्पविन्यासः कृतः । तेनैव स्वाहाग्रयेवरुणाय ३।८।२१ आयाह्वयऽआपरि ६।३।१२ वेपिहोत्रमुतपोत्रं ७।५।३० इति मंत्रत्रयमेव प्रदानार्थकस्वाहाकारवत् तत्राप्याद्यो वैकल्पिक इति वदन्ति । तस्मादत्र तत्त्वनिर्णयाय—एकमेव करोष्वह्नारायणशास्त्रिदर्शितप्रयोगलाघवानुसारेण विचारः क्रियते ।

स्वाहाकारचन्मंत्रविचारः । अथऋगाग्रायेकतिपयेमंत्राः स्वाहाकारवन्तआज्ञास्तत्रसंशयः—किमेतेषांहोमेविनियोगः प्रदानार्थकस्वाहाकारांतरयुतानामुतकेवलानामिति । किंतावत्प्राप्तम् । न केवलानांहोमेविनियोगः संभवति । होमस्यत्यागात्मकतया, मंत्रमध्यपठितस्य च स्वाहाकारस्य मंत्रावयवतया प्रदानार्थत्वाभावादन्तेषु नः प्रदानार्थकस्वाहाकारः प्रयोक्तव्य इति । अतएव भगवान्जैमिनिः संकल्प-
क्रांते 'स्वाहाकृत्य' (अ. १४ पा. ४ सू. १८) 'वषट्' (१४।४।१९) इति सूत्राभ्यां क्रमेण 'स्वाहाकृत्यब्रह्मणा ते जुहोमि' 'स्वाहाकृत्यमि-
'वषट्ते जुहोमि' इत्यादावुपसर्जनत्वेनान्वितानां स्वाहाकाराणां मुख्यविशेष्यत्वाभावात् द्रव्यस्तुतिद्वारैव वाक्यार्थसमन्वयाद् प्रदानार्थत्वम् ।
स्वातंत्र्याविशेषाद् प्रदानार्थत्वं निर्णय तत्र तत्र प्रदानार्थकस्वाहाकारांतरप्रयोगं ब्रूते । इति प्राप्ते ब्रूमः—नऋगाग्राय पठिते पुस्वाहाकारवत्सु-
मंत्रेषु होमकालेषु नरन्यः स्वाहाकारः प्रयोक्तव्य इति । कुतः । पठति हि भगवानाश्वलायनः श्रौतसूत्रप्रथमाध्यायस्यैकादश्यां कंडिकायां—
'स्वाहाकारांतरैर्मंत्रैर्न चैन्मंत्रे पठितः' इति । व्याचख्यौ चैतद्वृत्तिकृन्नारायणः—'यत्र कापि स्वाहाकारो न पठितस्तदा ते स्वाहाकारः कर्तव्यः ।
यत्र कापि पठितश्चेत्स एव प्रदानार्थको भवति' इति । कारिकाकार-मंचनाचार्यप्रभृतिप्राचीनप्रयोगकाराश्चैव मे प्रतिपादयन्ति । शौन-
कियते तदापर्युदासन्यायेन स्वाहाकारघटितान्यहोमसाधनीभूतमंत्रत्वावच्छेदेना ते स्वाहाकारविधिरिति वक्तव्यम् । अथ होमसाधनीभू-
तमंत्रेष्वन्ते स्वाहाकारो वचनांतरेण प्राप्त इत्युच्यते तदानेन वचनेन स्वाहाकारवत्सुमंत्रेषु सप्रतिपिध्यत इत्यापत्तिः । अन्यथा वचनैवैवार्थोपपत्ति-

दुर्वारा । नन्वेव 'स्वाहाकृत्य' 'वषट्' इति संकर्षकांङ्स्थाधिकरणद्वयविरोधः । तत्र हीतर विशेषणतया न्वितार्थकस्वाहापदस्य प्रदानार्थत्वं
 निरस्यते पुनः स्वाहापदप्रयोगव्यवस्थापनात् । न । तस्याधलायनोक्तकर्मातिरिक्तकर्मविषयत्वात् । आधलायनप्रोक्तकर्मसूक्तसूत्रेण-
 तद्वाधात् । अतएवाग्निप्रोमस्यसौलोहनिहोत्रकांङ्पठितप्रवृत्ताहुतिहोमे 'स्वाहावाचे' इत्येकोमंत्रः । 'स्वाहावाचस्पतये' इति द्वितीयः ।
 एवमन्येषामेव होमंत्राः संति तत्रापि मंत्रपठितस्वाहाकारएव प्रदानार्थक इति मंत्राते प्रदानार्थकान्यस्वाहाकारं न प्रयुजंति । एवमयाञ्चेति-
 मंत्रेषु । अथर्वयुक्तांङ्पठितप्रवृत्ताहुतिहोमे तु, 'जुष्टोवाचोभूयास' इति मंत्रे स्वाहाकारसत्वेपि 'तस्मिन्माधाः स्वाहा—सरस्वत्या' इति मंत्राते-
 पुनः स्वाहाकारयोर्जनादरीदृश्यते कैशवादिप्राचीनप्रयोगेषु । एवं बगला मुख्यादितांत्रिकमंत्रेष्वपि—मंत्रमध्ये स्वाहाकारसत्वेपि मंत्राते पुनः-
 स्वाहाकारः प्रयोज्य इति तत्र विद्विषुक्तत्वात् । न चान्यस्वाहाकारस्य स्वस्थानच्युतनखकुण्डलादीनां कङ्कयनालंकरणादिकार्याक्षमत्वमिव न-
 प्रदानार्थत्वम् । अतएव यज्ञायज्ञीये सामनि इरापदस्य गिरापदस्थानएव निवेश आवृत्तिश्च कल्प्यत इति शङ्क्यम् । यत्र कापि स्थितस्य दीपस्येव पद-
 स्थाप्यर्थप्रकाशकत्वानपायात्, देहि ब्राह्मणाय—ब्राह्मणाय देहीत्यादि वाक्याभ्यामविशेषणवोधोपायानुभवाच्च । अतएव 'पुरस्तात्स्वाहाकारावाच-
 न्ये देवा उपरिष्ठात्स्वाहाकारावाचन्ये' इति शुक्ला उभयोरपि प्रदानार्थत्वमनूद्यते । एतेन मंत्रघटकादिमध्यपठितस्वाहाकाराते हुत्वा शेषमंत्रोनि-
 गदेनोच्चारणीय इति केषांचित्प्रलापो निरस्तः । न च सङ्कच्छतसु तत्र विशेषणतयोपस्थितार्थकस्य स्वाहाशब्दस्य कथं प्रधानतया प्रदानार्थवोधो-
 कत्वमिति वाच्यम् । 'नचेन्मन्त्रे पठितं' इति सूत्रबलादेव तादृशस्वाहाकारघटितमन्त्रे पुस्वाहापदस्यावृत्त्या प्रदानार्थवोधः कल्पनीय इति दिक् ॥

वासिष्ठविषयेविशेषः । इन्द्रोतिमिरितीमंवागसिष्ठानाधीरन्सर्वानुकमेवासिष्ठान्प्रतितच्छृण्वनिषेधमुलेनोपेयभूततदध्य-
यनप्रतिषेधात् । तथाहि—‘अंल्याअमिशपाथस्तावसिष्ठेविषयोनवसिष्ठाःशृण्वन्ति’ इति । अत्रभाव्यम्—इन्द्रपर्वतेतिसूक्तस्य अंल्याइन्द्रो-
तिमिरित्याद्याश्चतस्रऋचोऽमिशपाथार्थः । अमिशपाथोनामाऽप्रियशंसनरूपोऽर्थःप्रयोजनयासां । ताश्चवसिष्ठेवक्तव्यः । अतोवसिष्ठो-
न्नोत्पन्नास्तानशृण्वन्ति । लिङ्गर्थेलोटोरूपं । यदिष्टगुणुस्तदातेषांशिरःशतधामिद्येत । तदुक्तंबृहदेवतायां—‘शतधामिद्यतेमूर्धाकीर्तितेनश्रु-
तेनवा । तेषांवालाःप्रसीयन्ते’ इतीति । सकलसंहिताध्ययनादिकर्मफलसिद्धिस्त्वेषामेतद्वर्गविकलसहिताध्ययनादिनैवभवति । अत-
एवचरणव्यूहे—एकंशतसहस्रंवा द्विपञ्चाशत्सहस्रार्धमेतानिचतुर्दशपदानिवासिष्ठानांतद्व्यतिरिक्तानांतुएकंशतेत्यादिचतुर्दशांतानिपदानि-
गृहीत्वाइन्द्रोतिमिरित्याद्येकसप्ततिपदानिमिलित्वेतरेषांपञ्चाशीतिरितिपदसंख्याविभागःसंगच्छतइतिदिङ् ॥

पारायणहोमाचारंभकालः । श्रीः ॥ जपाधारंभकालस्तुपरशुरामेणोक्तः—‘वैशाखेश्रावणेमासेचाश्विनेमार्गशीर्षके । माघफा-
ल्गुनयोर्वापिसितेपक्षेऽशुभेदिने ॥ वेदारंभःप्रकर्तव्यःपुत्रपौत्रादिदृष्टये’ ॥ इति । ‘कार्तिकेस्वर्णलाभःस्यादि’तिकेचित् । वज्र्याणितु-
संग्रहे—‘अनध्यायतिथीन्सर्वान्निष्काष्टम्यौविदायच । इतरासुचकर्तव्योवेदारंभःशुभप्रदः ॥ अनध्यायेचसंध्यायामपरह्णिकथंचन ।
स्त्रियारजस्वलायांनुवेदारंभोनसिद्धिदः’ ॥ इति ॥ रत्नमालायां—‘सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराःसर्वकर्मसुभवंतिसिद्धिदा’इति ॥
निष्कामतयावेदाद्यनुष्ठानेतुयदाश्रद्धोत्पद्यतेतदैवारंभःकार्यः । ‘नश्वःश्चमुपासीतकोहिमनुष्यस्यश्रोत्रे’तिश्रुतेः श्वःकरवाणीलेवमुपास-
नाकालांतरप्रतीक्षानकार्यो । हियस्मान्मनुष्यस्यश्वःकालसंबन्धिजीवनंकोवेद—कोजानीयात् आयुषोऽस्थिरत्वादितिश्रुत्यर्थः । परशुरा-

मोपि—‘यदैवजायतेवित्तंचित्तंश्रद्धासमन्वितम् । तदैवपुण्यकालोयंयतोऽनित्यंहिजीवितम् ॥ अतःसर्वेषुकालेषुजपस्थारंभणंशुभम्’ इति ॥ दीपिकायामपि—‘ईश्वराधनार्थंवाअथवापापनुत्तये । यदिरुद्राद्यनुष्ठानंनमुहूर्तादिवित्तयेदि’ति ॥ काम्येतुदिनंसंशोध्यमेव ॥ एवमारंभोत्तरसंध्येनध्यायपातेपिजपहोमामिपेकादिकर्तव्यमेव । ‘ततोवेदादिमारभ्यसंततमधीयीतनास्यांतरानध्यायोनानास्यांतराजनन-मरणमशुचि (अशौचनेत्यर्थः) नंतराव्याहरेन्नांतराविरमेत्तन्निःप्राणानाम्याचम्याप्रणवंवाप्रविधाययावत्कालमधीयीतततःसर्वनिशानिशांतरंसलिलंलोप्यपरिदध्यात्’ । निशांतरं—संध्यानिशादीन्लोप्य—विहायसमापयेदित्यर्थः । इत्यादिविशेषोद्देश्यः ॥

चेदपारायणप्रयोगः । श्रीः ॥ पूर्वोक्तशुभेकालेपारायणदिनंनिश्चित्यतत्प्राग्दिनेकृतनित्यक्रियःशुक्लवासाःसपत्नीकोयजमानः पूजितेष्टदेवतोगोमयलिमेषुचौदेशेप्राङ्मुखोऽपविश्याचम्यप्राणानाम्यदेशकालौसंकीर्त्यअमुकगोत्रस्यामुकशर्मणोममकायिकादिसमस्तदो-पनिर्वर्हेणद्वाराऋग्वेदांतर्गतसब्राह्मणशालकलसंहितापारायणाधिकारार्थपडब्दचतुरव्दव्यब्दैकाव्दन्यतमपूर्वोत्तरांगसहितंसर्वप्रायश्चित्तंप्र-तिष्ठाच्छ्रुगोमूल्यरजतनिष्कपादप्रत्याग्रायेनकार्पाणैकगोमूल्यप्रत्याग्रायेनवाहमाचरिष्यामि इतिसंकल्प्योक्तप्रकारेणसर्वप्रायश्चित्तमाचरेत् ॥ पुनर्देशकालादुत्कीर्त्यममसमस्तपापक्षयद्वाराऋग्वेदांतर्गतसब्राह्मणशालकलसंहितापारायणाधिकारार्थमृग्विधानोक्तक्रमेणप्रणवा-दिजपमहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ प्रणवस्यपरब्रह्मपरमात्मागायत्रीव्याहृतीनांपरमेष्ठीप्रजापतिःप्रजापतिर्बृहतीगायत्र्या ० ॥ आपोहि-ष्ठेतिनवचैस्यांवरीपःमिधुद्वीपआणोगायत्रीपंचमीवर्धमानासप्तमीप्रतिष्ठाअत्येष्टेअनुष्टुभौ ॥ एतोन्विद्रमितिस्तिष्ठणामंगिरसस्तिरश्वीइंद्रो-ऽनुष्टुप् ॥ ऋतंचेतिवृचस्यमाधुच्छंदसोघर्मणोभाववृत्तिरनुष्टुप् ॥ शनइंद्राभीतिपंदशचैत्यसूक्तस्यैत्रावरुणिर्वसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ॥

स्वस्तिनोमिमीतेतिपंचानांस्वत्वात्रेयोविश्वेदेवास्त्रिष्टुबल्येद्वेअनुष्टुभौ । पावमानीनांछंदुष्यादिनवमेमंडलेआलोचनीयम् । शंवत्यादीनांपठः-
 कर्पिजलाधिकरणन्यायेनतिष्ठणांतिष्ठणामेवेतिकेचित् ॥ ऋग्विधाने—तर्पयित्वाद्भिराचार्यान्तृषींश्छंदांसिदेवताइत्यनेनाचार्यादीनां-
 देवतास्तृप्यंत्विति । ततोरोद्रमंत्राञ्जपेत् ॥ ऋद्रोयेतिनवर्चस्यधौरःकण्वोरुद्रोगायत्र्यंत्यानुष्टुपुलुतीयामैत्रावरुणी । ऋषयस्तृप्यंतु । ऋदांसिस्तृप्यंतु ।
 इत्येकादशर्वस्यसूक्तस्यांगिरसःकुत्सोरुद्रोजगल्येद्वेत्रिष्टुभौ । आतेपितरितिपंचदशर्वस्यसूक्तस्यशौनकोगुत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् । इमारुद्रायतवस-
 स्थिरधन्वनइतिचतुर्ऋचस्यमैत्रावरुणिवसिष्ठोरुद्रोजगल्यंत्यान्त्रिष्टुप् । ततोयुतसहस्रशतदशन्यतमयासंख्ययागायत्रीञ्जपेत् । इमारुद्राय-
 संकीर्त्येऋग्वेदांतर्गतब्राह्मणशाकलसंहितापारायणांगत्वेनगणपतिपूजनंस्वस्तिवाचनमावृकापूजनंनंदादीश्राद्धंग्रहयज्ञंचकरिष्य इतिसंक्लप्यो-
 क्तप्रकारेणकुर्यात् । एवंपूतोधिकारीभवति ॥ ततःपारायणदिनेकर्ताकृतनित्यक्रियोदभासनेप्राबुखउपविश्यपवित्रपाणिःप्राणानायम्य-
 तिसंहितायाःअंतेमहानाश्रुपनिषत्संहितायाऋग्वेदांतर्गतशाकलसंहितायाःपारायणमहंकरिष्ये । ऋत्विगद्वाराकरणेतुम्भृत्विजंवृत्वातंमधुप-
 क्केणाहयेत् । ततःपारायणकर्तादेवालयेस्वगृहेवागोमयोपलिप्तभूमौहस्तायामविस्तारोच्चावेदिंश्चत्वातदुपरिवसमिश्रांश्रुतिकांसंस्थाप्यतत्र-
 महीचौरित्यादिविधिनासुदण्डंकलशंसुश्रालितंपुष्पपल्लवमालाचंदनंकुंकुमादिभूषितंअतिष्ठाप्यतत्त्वायामीतितत्रवरुणमावाह्यसंपूज्य ॥ तत
 उत्तराग्रकुशकृतवत्सजान्वाकृतवेदंनक्षत्राणांशिरउपधानत्वेनकलशोपरिनिधायस्वस्त्ययनंपठेत् । स्वस्त्ययनंतादित्यमितिद्वयोऽन्यात्रेयोविश्वे-

देवादिष्टुपइतिऋद्वयंपठेत् ॥ तंतुर्ध्वाग्रपंचाशत्कुशनिर्मितं द्ध्वचप्रत्यग्रवेदोपरिप्रतिष्ठाप्यप्राणप्रतिष्ठापूर्वकब्रह्मजज्ञानमिति मंत्रेणावाह-
नाद्युपचारैः पूजयेत् । ब्रह्मदक्षिणभागे द्वितीयकलशोपरिप्रतिमायां सावित्रीपूजनमुक्तकैश्चित्तन्मूलाभावादुपेक्ष्यं । ततो गुं ब्राह्मणांश्च संपूज्य-
विष्णुस्मरेत् ॥ ततो देवतासंनिधौ दर्शने दर्भपाणिः प्राङ्मुखोऽपविश्याचम्य । अणवस्य परब्रह्म परमात्मा गायत्रीन्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजपतिः
प्रजापतिर्बृहती जपे वि० । ॐ भूर्भुवः स्वः इति जपित्वा ऋषिछंदआद्युच्चारणपूर्वकं अग्निमीळइत्यादिपारायणमारभेत । पूर्वोक्तविरामस्थले-
विरमेत् । प्रत्यग्रहर्द्वयपर्यंतं पठेत् । त्वरया समापनेच्छायां सार्धग्रहर्द्वयपर्यंतं पठेत् । कर्मसमाप्त्यंतं ब्रह्मचर्यमघः शयनं स्वल्पं हविष्याश-
नं च कार्यं । शक्तौ सत्यामुपोषणं ब्रह्मपूजनं प्रत्यग्रहसमाप्त्यंतं कार्यं । पतितरजस्वलादिसंभाषणं तत्समक्षमभ्ययनं च न कुर्यात् । आसमाप्तेर्नाश्री-
याद्यथाशक्ति वापः फलान्योदनं हविष्यमात्रमल्पं मुंजीत नोपरिशयीत न मैथुनं चरेत्पतितार्थैर्न संभाषेत नैतत्समीपे धीयतीति वाधाय नोक्तेः ।
ऋत्विक्कट्टे कपारायेण पारायणकारयित्रायेते नियमाः कार्याः । संहितां समाप्य महानाश्रीः पठित्वा ब्राह्मणं पठेत् । केवलसंहितापारायणे महा-
नाश्रीरेव पठेत् । आरण्यपंचकमध्ये प्रथमारण्यकत्रयस्थ ब्राह्मणा तर्गतत्वाद्ब्राह्मणसमाप्त्यनंतरं पाठः । महानाश्रीसंज्ञकं चतुर्थारण्यकं पूर्वोक्त-
ऋग्विधानवचनादेव संहिता समाप्त्यनंतरं मेव पठेत् । पंचमारण्यकस्य महो व्रतयज्ञसूत्ररूपत्वाद्दारण्यकत्रयानंतरं पाठः ॥ इति पारायणविधिः ॥



ऋक्संहिता होमपद्धतिः । श्रीवेदपुरुषाय नमः ॥ श्रौतस्मार्तेषु कर्मस्वखिलविगुणतानाशनेनेष्टसिद्धैरुद्रैर्ब्रह्मवधंसकल-
विधिभिर्दःकर्मिणोऽयं सरंति । ग्रन्थानां नंददेहः सकलमुनिजनधेय रूपः परेशो विष्णुर्ब्रह्मात्रवाच्यो निखिलजनहितः सर्वगः सर्व-
तोऽव्यात् ॥ १ ॥ ऋग्वेदे याशा कलाख्यास्तिशाखा तस्याः कुर्वे गुर्जरोपाह्वयो हम् । गोपालाख्यः पद्धतेशो न कीयान् ग्रंथान् दृष्ट्वा
होमजांशालिनीं च ॥ २ ॥ तत्र तावद्वेदपारायणफलमाह शौनकः—पारायणभ्यां द्वाभ्यां वाऽनश्नन्यः स तं पठेत् । अनुतेभ्यः-
पातकेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥ १ ॥ त्रिभिः पारायणैः शूद्रीगमनात्पातकाक्षरः । गंगाप्सु मज्जनाच्चैव मुच्यते नात्र संशयः ॥ २ ॥
तनात् । सप्तभिः प्राजापत्यस्य हीना चाराचबंधनात् ॥ ४ ॥ अष्टभिश्चांद्रायणाच्च गुरुतल्पगमात् तथा । रजस्वलासंगमाच्च मुच्यते-
पातकाक्षरः ॥ ५ ॥ नवभिस्तु सुरापानात्पातकान्मुच्यते तथा । असोमपानादशभिरेकादशभिर्ब्रह्मा ॥ ६ ॥ द्वादशभिः पूर्व-
जन्मकृतादिहापि जन्मनि ॥ पातकान्मुच्यते स्वर्गलोकं गच्छति शाश्वतम् ॥ ७ ॥ अग्निष्टोमादि क्रतुभिरिष्टं भवति तेन वै । वेदा-
ध्यायी सदैव स्यादपाम्नासत्यवाक्यशुचिः ॥ ८ ॥ अयं कामयते कामं तं वेदेन साधयेत् । असाध्यनास्तियत्किंचिद्ब्रह्मणो हि फलं-
महत् ॥ ९ ॥ इति वेदपारायणमहिमानं प्रदर्शय दानीं स्वाध्यायाभ्यासलक्षणानि वदन् तदंतरंगभूतं होमविधिमाह—तत्रादौ-
शरीरशुद्ध्यादिकमाह ॥ सिद्धमंत्रविधानेन जपैर्होमैर्द्विजोत्तमः । तपसा स्वर्गमाप्नोति तपसा विदते महत् ॥ १ ॥ तपोयुक्तस्य सि-
ध्यंति कर्माणि नियतात्मनः । विद्वेषणं संवननं विषमं रोगनाशनम् ॥ २ ॥ (विद्वेषणं इमां खनामीत्याद्यं इंद्रोतिभिरित्यादिसूक्त-

खंडंच । संवननंसंसमिदित्यादि । विषद्वंकंकतो न कंकत इत्यादि । रोगनाशनं अक्षीभ्यां त इत्यादि । उपलक्षणत्वाद न्याय्य-
 लक्ष्मीनाशनादीन्यूहानि ॥ येन येनार्थमृषिणाय दर्शदेवताः स्तुताः । ससकामः समृद्धश्च ते पाते पांथतथा ॥ ३ ॥ तानि-
 कर्माणि वक्ष्यामि विविधानि च कर्मणाम् । पुरश्चरणमादौ तु कर्मणां सिद्धिकारणम् ॥ ४ ॥ स्वाध्यायाभ्यसनस्यादौ प्राजापत्ये-
 च रोद्धिजः । केशश्मश्रुलोभनखान्वापयित्वा प्लुतः शुचिः ॥ ५ ॥ तिष्ठेदह निरात्रौ तु शुचिरासीत वाग्यतः । सत्यवादीपवित्राणि-
 जपेद्वा हृतयस्तथा ॥ ६ ॥ ॐकाराद्यास्तु ताजस्वासावित्रीचतुर्दित्युचम् । आपोहिष्ठेति स्रक्तं तु शुद्धवत्यो धर्मर्षणम् ॥ ७ ॥
 शंवत्यः स्वस्तिमत्यश्च पावमान्यस्तथैव च । सर्वत्रैतत्प्रयोक्तव्यमादावंते च कर्मणाम् ॥ ८ ॥ (शुद्धवत्याः शुचीवो हव्येत्यादयः ।
 अद्य मर्पणमुतं चेति स्रक्तम् । शंवत्यः शनं इंद्राग्नीत्यादयः । स्वस्तिमत्याः स्वस्तिनो भिमीतामित्यादयः । पावमान्यः स्वादिष्ठ-
 येत्यादयः) ॥ आसहस्रादाशताद्वादशां तमथवाजपेत् । ॐकारव्याहृतीस्ति स्रः सावित्रीमथवाऽयुतम् ॥ ९ ॥ (आपोहिष्ठे-
 त्यादिजप्यमंत्राणां शक्त्यपेक्षया सहस्रशतदशेत्यावृत्ति संख्या वेदितव्याः । यद्वाँकारव्याहृतिपूर्विकांसावित्रीमयुत संख्यायाज-
 स्वाजन्तरं किं कर्तव्यं तदाह) ॥ तर्पयित्वाद्भिराचार्या नृपीच्छंदां सिदेवताः । अपद्येत विरूपाक्षं रौद्रमंत्रगणं जपेत् ॥ १० ॥
 अनार्यैर्नाभिमापेत न शूद्रैर्नापि गर्हितैः । न रजस्वलयानार्यापतितैर्नात्यजैर्दुग्भिः ॥ ११ ॥ न देवब्राह्मणद्वेष्टानाचार्यगुरुनिदकैः ।
 न मातापितृविद्विष्टैर्नावमन्यैतकंचन ॥ १२ ॥ त्रिरात्रमेवोपवसेदादितः सर्वकर्मणाम् । त्रीणि नक्तानि वाकुर्यात्ततः कर्म समा-
 रमेत् ॥ १३ ॥ नित्यं प्रयोगिणां चैव प्रयोगादौ त्रतं व्यहम् । उपरिष्टादुपवसेत्कृत्वा सांत्तपनादिकम् ॥ १४ ॥ आयुष्याण्येव-

कर्माणिमंत्रयुक्तःसमारभेत् । सवासाःसशिरस्कोमुलात्वाभ्युक्ष्यजपेद्विजः ॥ १५ ॥ शुद्धवत्यस्तथावृत्यःपावमान्योऽधर्म-
णम् । एवंचिराहुत्यशुचिःप्राणायामान्समाचरेत् ॥ १६ ॥ ‘अवत्यआपोहिष्ठत्यादयः’ । त्रीनपडौद्वादशवापोद्दशाष्टा-
दशापिवा । आशताद्वायमेत्याणान्जपन्ब्रह्माधर्मपणम् ॥ १७ ॥ प्राणायामैर्दग्धदोषःशुक्लंवरधरःशुचिः । यथाविध्यपआ-
चम्यारोहेद्वैदर्भप्रस्तरम् ॥ १८ ॥ पवित्रपाणिःकृत्वानुपस्थंदक्षिणेत्तरम् । दिशोरेवांतरंग्रेक्ष्यानिमिषंछाद्यचक्षुषी ॥ १९ ॥
ऊँकारव्याहतीस्तिन्नःसावित्रींचतदित्यूचम् ॥ २० ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेचोत्थायचिराहुत्यपठेद्विजः । मध्यमांवृत्तिमास्थायननुतान-
ठेत् । सोच्चैरेवापराल्लेतुसंध्याकालउपारमेत् ॥ २१ ॥ पूर्वसंध्यांजपंस्तिष्ठेदुपासीतचपश्चिमाम् । नचांतराव्याहरेतविरमेद्वाकथंचन ॥ २२ ॥ क्रव्यादिसर्वविज्ञायपठेत्सुनियतःशुचिः । विरमेद्ब्राह्मणे-
विलंबिताम् ॥ २३ ॥ पूर्वासंध्यांजपंस्तिष्ठेदुपासीतचपश्चिमाम् । नचांतराव्याहरेतविरमेद्वाकथंचन ॥ २४ ॥ क्रव्यादिसर्वविज्ञायपठेत्सुनियतःशुचिः । विरमेद्ब्राह्मणे-
ग्रामिकामंतेननुसंवदेत् । अद्रंष्टुवंप्राप्तंनाधीयीतकदाचन ॥ २५ ॥ अनश्नन्संहितामेतांप्रातःप्रातर्दिनेदिने । आयुर्विधांधनंपुत्रान्गृहांश्चाभोज्यनुत्तमान्
नवाभोजिपायैश्चपरिसुच्यते ॥ २६ ॥ एतद्ब्रह्मजपञ्छद्ब्रात्रेक्षेतान्यांश्चतद्विधान् । ग्रेक्ष्याचम्योदंकपूतःपश्येद्रामयिभास्करो ॥ २७ ॥ (इत्थंसाधारण्येनस्वाध्या-
यधर्मानभिधायसंप्रतिहोमधर्मान्वकुमुपक्रमते) ॥ आदावेवतुसावित्र्याकर्मकुर्वीतशांतये । पुष्टयेधनलाभायपशुलाभायभूतये
॥ २८ ॥ एपाहिसंहितांदेवैःसर्वब्रह्ममयीनिच्छत् । उग्रणतपसादृष्टाविधामित्रेणधीमता ॥ २९ ॥ होमांश्चजपयज्ञांश्चनित्यंकुर्वी-
तवैतया । आज्यंद्रव्यमनादेशेशुहोतिप्रविधीयते ॥ ३० ॥ सर्वपापहरोहोमःप्रत्यूचंचतिलैःस्पृहतः । गुह्योक्तविधिनासर्वकर्म-

कुर्वीत तत्त्ववित् ॥ ३१ ॥ शक्त्या तु विप्राः संभोज्याः क्रकृत्सु सप्त संख्यया । वर्गाः प्रायः संख्या वामं डलावधि वा पुनः ॥ ३२ ॥
 अथैतस्य विवरणमिति—अनादेशे आज्यद्रव्यमित्यनेनासिन्संहिता होमे आज्यं होम्यद्रव्यं क्रतुमिति सिद्धम् ॥ सर्वपापहरो
 होमस्तिलैः स्मृत इति तिलहोमस्य सर्वपापहर्तृत्ववर्णनात्तिलद्रव्यं काम्यमित्यपि सिद्धं स्यात् ; तथा पिपापनाशनस्य सर्वस्याप्यपेक्षित-
 त्वात्तिला अपि नित्यप्राया एव ॥ तिलैराज्येन च होतव्यमित्यर्थः ॥ प्रत्युचमिति वदतां त्रविभागो ज्ञापित एव ॥ क्रकृत्शब्दश्चात्र
 छंदोवाची ॥ तेन यस्य छंदसोऽयानिर्दिष्टाक्षरसंख्या सायसिन्नवसाने पूर्यते तावत्पुत्र्यथाभिमीळ्य इति गायत्री क्रकृत् ॥ गायत्री छंदस-
 स्तु चतुर्विंशत्यक्षराणि तान्यभिमीळ्य इत्यारभ्य रत्नधातुमभित्यवसाने पूर्यते तस्माज्जाताः क्रकृत् ॥ एवमुष्णिगादिष्वपि द्रष्टव्यम् ॥
 क्रचोपि क्रविदेकावसाना भवति—क्रचिद्व्यवसानाः—क्रचिद्व्यवसाना अपि ॥ तत्रैकपदाद्विपदाश्चैकावसानाः—गायत्र्यादि-
 शक्यताः सर्वद्व्यवसानाः—अतिशक्त्याद्याः प्रायः सर्वद्व्यवसाना इति ॥ सर्वत्र क्रगंते स्वाहाकारं पठित्वा होतव्यं न चेन्मंत्रे पठित-
 इत्याद्याश्चालायनेनोक्तत्वात् ॥ यस्मिन्मंत्रे न पठितः स्वाहाकारो भवेद्यदि ॥ स्वाहातः स प्रयोक्तव्यो होमेषु प्रणवादिना इति कारिको-
 क्तेश्च प्रतिमंत्रमादौ प्रणवः पठ्य एव ॥ होमविधेरुपसाधनीभूतं कुंडकरणादिप्राचीनं तंत्रं सिष्टकृदादिप्रतीचीनं च गृह्योक्तविधिः

१ प्रयोगपद्धतिर्कर्मिस्त्रिज्ययोर्नित्यकाम्यत्वेन प्राधान्येनावश्यकत्वेन च सूत्रपादितेऽपि घृताकातिला एव प्राख्या इति मुख्य पक्षः । लभ्यते चात्र लेखस्यैव प्राचीन-
 प्रयोगपुस्तकेषु याज्ञिकमहाशायतारनिर्मितेषु । किंच सौकर्यसौलभ्यं सुज्ञाकचेति । अन्वाधानस्यागादैतथैव कीर्तनीयम् । अत्र युक्तयुक्तविचार परंपराधिगतश्चुतिसिद्धा-
 चारविशेषो याज्ञिकमंडनैः पद्धितैर्हृदयाल्लभि कार्यः ।

नैव कुर्यात् ॥ तत्त्वविदित्यनेनास्यहोमस्याधिकारिणं दर्शयति—यो वेदस्य लक्षणतोर्थतश्च तत्त्वज्ञानातिस एवात्राधिकारी नान्य-
इति ॥ ततः कर्मविरामे विप्राभोज्याः ॥ ते च शक्त्यपेक्षया ऋक् दक्षतर्गाध्यायमंडलसमसंख्याः ॥ ऋगादीनां संख्या त्वन्यत्र ज्ञे-
येति ॥ अथ होमकर्तुः फलं निरूपयन्नभिचारेण विधिविशेषमाह—सर्वकामसमृद्धयर्थपरंब्रह्मेदमुच्यते ॥ १ ॥
एवैव ग्रतिलोमोक्ता पच्छः शत्रुविनाशिनी । अक्षरग्रतिलोमेयमभिचारेषु शस्यते ॥ २ ॥ अक्षरग्रतिलोमेयं यस्मिन् युज्येत कर्मणि ।
तदमोघं विजानीयादेतद्वै ब्रह्मणो बलम् ॥ ३ ॥ व्याघातकेष्मासमिधोप्यक्षरग्रतिलोमया । जुहुयात्सार्पपतैलं विभीतक-
कृतसुवः ॥ ४ ॥ यद्दृच्छेत्पीडनं शत्रोरपि वोच्चाटनं पुनः । पच्छः संपीडयेच्छत्रून् वरुणं शश्रमापयेदिति ॥ ५ ॥ ॐ कारपूर्वाव्याहृत-
योमधुच्छंदस आदितः । सूक्तान्यं ते महानाश्रयः संहितासाऽमृता स्मृता ॥ १ ॥ अमृतत्वं यदुदेवाः पूर्वं संहितयानया । जपेदेनं-
शुचिर्नित्यममृतत्वं च गच्छति ॥ २ ॥ अत्रैव तु जपेन्मध्यपितृसूक्तान्यनेकशः । पित्र्यां तां संहितां विद्यात्पितृन् प्रीणाति चैतया ॥ ३ ॥
एवमेव समाहृत्य वायवीं संहितां भवेत् । रौद्रादित्यावैश्वदेवीयदैवत्यां च कामयेत् ॥ ४ ॥ कुर्वीत वास्तुशमनं मध्ये गोष्ठस्य धर्मवित् ।
पुण्यैर्गंधैश्चमत्यैश्च वानस्पत्यैस्तथौषधैः ॥ ५ ॥ वास्तुसर्वप्रतिकिरेत्सप्तधान्यैस्तथैव च । वास्तोष्पतिं यजेच्च त्रपायसे न बृहस्पतिम् ॥
६ ॥ औदुंबरपलाशैश्च बलिं प्रतिदिशं हरेत् । सूर्यो वायुर्यमः पितरो निर्ऋतिर्वरुणस्तथा ॥ ७ ॥ सोमो महेंद्र इत्येतादिभ्युदिग्देव-
ताः स्मृताः । दद्याद्दानं ब्राह्मणेभ्यः शिवं भवतु वास्तिव्यति ॥ (भवति वास्तुनिर्ज्ञतिपाठः) ॥ ३३ ॥ ऋषीणां मंत्रदृष्टेन प्रत्यक्षात्सि-
द्धिरिष्यते । सर्वत्र दक्षिणां दद्याद्दानं चार्कमसिद्धये ॥ ३४ ॥ न त्वेवा दक्षिणं कर्म किंचिदस्तीति शौनकः । भक्त्या हि पूर्णपात्रेण संमि-

ताप्यंतवो भवेत् ॥ ३५ ॥ तस्मात्स्वल्पापि दातव्या दक्षिणा कर्मसिद्धये । ऋषभैकादशाद्येन वा तु व्यते गुरुः ॥ ३६ ॥ धर्मज्ञे स-
त्यवादिनिब्रह्मदानं च दीयते । तदिदं परमं ब्रह्म गुह्यं पावनमद्भुतम् ॥ ३७ ॥ नाप्रशांता यदा तव्यं नापुत्राया तपस्विने । नासंवत्सरोपि-
ताय नाशिष्याया हिताय च ॥ ३८ ॥ य एते नैव विधिना वेदमभ्यस्यते द्विजः । स नरः सर्वदा पूतो मनःशुद्धिश्च जायते ॥ ३९ ॥ इति ॥

ऋक् संहिता होमप्रयोगः ॥ अथैतत्प्राचीनप्रयोगान्साधारणीं परिभाषां चानुसृत्य प्रयोगोलिख्यते ॥ तत्र वेदतत्त्वचित्तपो-
निष्ठः संहिता होमचिकीर्षुर्ब्राह्मणो होमदिनात्पूर्वचतुर्थे दिने नित्यकर्मणि निर्वर्त्या चम्यग्राणानाथम्यदेशकालौ संकीर्त्य करिष्यमा-
णऋग्वेदांतर्गतशाकलसंहिता होमेशरीरशुद्धिद्वाराधिकारसिद्धये ग्राजापत्यकृच्छ्रं तत्प्रत्याग्रायगोनिष्कयीभूतामुकपरिमाणद्रव्य-
दानेनाहमाचरिष्ये इति संकल्पयेत् ॥ ग्राजापत्यस्य गोभिन्नप्रत्याग्रायचिकीर्षायां तं वा ऊहयेत् ॥ ततो यानिकानीति मंत्रेण केशश्मश्रु-
लोमनखानि वापयित्वा विधिना स्वायात् ॥ ततो ब्रह्मकूर्चविधिनपंचगव्यपिबेदितिकेचिदाहुः ॥ ततस्तद्दिनं वाग्यतः शुचिस्तिष्ठ-
न्नीत्वा तथा विधया सीनो रार्त्तिनयेत् ॥ ततः श्वोभूते स्नानादिकृतनित्यक्रियः प्रणवव्याहृतिपूर्विकांसावित्रीजम्बावह्न्यमाणान्मंत्रा-
न्जपेत् ॥ ते च आपो हिष्ठेति सूक्तं शुचीवो हव्या अग्निः शुचित्रततमः उदग्रे शुचय इत्येवं तिस्रः एतो न्विद्रमिति सप्तश्च ऋतंचेति सूक्तं
शंन इंद्राग्नीति सूक्तं स्वास्ति नो भिमीतेति सूक्तं शेषं स्वादिष्टयेत्यारभ्य क्षीरं सर्पिर्मधूदकमित्यंताः पावमान्यो देशो चरषट्शतान्युचति
एते मंत्राः शक्तेन सह सावृत्याजप्याः तावदशक्तेन तु शतावृत्या तत्राप्यशक्तेन पुनर्दशावृत्येति ॥ एवमशक्तौ प्रणवव्याहृतिपूर्विकां
गायत्रीमधुतसंख्यया जपेत् ॥ केचिन्मंत्रजपगायत्रीजपयोः समुच्चयमाहुः ॥ तन्न ॥ वाक्यमूलेऽथ वेति पदेन गायत्रीजपस्य-

पाश्चिक्त्वद्योतनात् ॥ ततः आचार्यास्तर्पयामि ऋषीस्तर्पयामि देवतास्तर्पयामि छंदांसितर्पयामीति जलेन तर्पयित्वा रुद्रं शरणा-
गतोऽसीति भावयन् रुद्रं देवत्यमंत्रं गणं जपेत् ॥ ते च मंत्राः कद्रुद्रायेति नवर्चस्कृतं इमारुद्रायेत्येकादशर्चस्कृतं आते पितरिति पंच-
पित्वाऽनार्यशूद्रगर्हतरजस्रलास्त्रीपतितां त्यज देवब्राह्मणद्वेष्टुर्वाचार्यो नैदं कमातापितुं द्रष्टुमिः सह संभाषणादिवर्जयेत् न च कमप्य-
विशेषो विधिर्मूलत एव बोध्यः होमविधानस्यैवात्र प्रतिज्ञातत्वाच्च न लिखितं नैतदवयवम् ॥
एवं त्रिरात्राचीर्णत्रतश्च द्रतारानुक्कल्यादिनिर्णीते पुण्ये दिने संभृत संभारः कर्ता स्वासने शुचौ देशे चोपविश्या च मनप्राणायामान्कु-
त्वा देशकालौ संकीर्त्याऽभुक्रगोत्रस्याभुक्रशर्मणो मम पूर्वजन्मे हजन्मसंचितसकलपापनिवर्हणद्वारा भीष्टकामसिद्ध्यर्थं श्रीवेदपुर-
षांतर्गतसावित्रीप्रजापतिग्रीत्यर्थं च क्रग्वेदांतर्गतशाकलसंहितायाः प्रत्यूचं तिलाज्यद्रव्यहोमं करिष्यहति संकल्प्य तदंगगणपति-
पूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नदीश्राद्धं च करिष्ये । ग्रहानुक्कल्यार्थं ग्रहयज्ञं आचार्यादिवरणं च करिष्यहति संकल्पयेत् ॥ स्वयंहो-
मचिकीर्षार्थं ब्रह्मादीनेव वृणुयान्नत्वाचार्यं ॥ किंच ॥ श्रीकामः शांतिकामो वाग्रहयज्ञं समाचरेत् ॥ तथा नैतद्वैतविसिध्यंतिकर्माणि-

१ देवताछंद शब्दयोः प्रथमाविभक्तिस्त्रीकारे वृत्त्यंतिक्रियाविज्ञेया ।

निखिलान्यपीतिवचनां द्रह्यज्ञसमुच्चयेच्छायां प्रजापतिग्रीत्यर्थमित्येतद्ग्रहयज्ञपुरःसरम्रितिसंकल्पवाक्ये ऊहयेत् ॥ ततो गणेश-
पूजनादिनां दीश्राद्धांतं कृत्वा आचार्यादीन् दृत्वा स्वयंहोमपक्षे ब्रह्मादीनेव वा दृत्वा मधुपर्कादिना पूजयेत् ॥ तत आचार्यः पवनपावन-
भूशुद्ध्यादि विधिनात्मानं पावयित्वा मंगलतूर्यादिघोषेण होममंडपं प्रविश्य सूर्यपविर्करणपंचगव्यप्रोक्षणादिदेवयजनं रक्षस्वेत्यंते
हेमाद्राद्युक्तीत्यामंडपपूजां कुर्यात् ॥ यथोक्तमंडपाभावपक्षे मंडपपूजापि नाविधेया ॥ ततो द्विहस्तपरिमितनिर्मितकुंडात्स्थंडिला-
स्थाप्य प्रथमकलशोपर्यापलान्मापावधिहेमनिर्मितायां सावित्रीप्रतिमाया मध्युत्तारणविधिसंस्कृतायां सावित्रीमावाहयेद्वं ॥ त-
त्सविदुर्विधा मित्रः सविता गाथी सा वित्र्या वाहने विनियोगः ॐ तत्सवितु ० ग्रचो दयात् भूर्भुवः स्वः सावित्री सांगां सपरिचारां सा-
युधां सशक्तिका मस्यां सुवर्णप्रतिमाया मावाहयामीत्यावाह्य तदस्त्वित्यादिना प्रतिष्ठापयेत् ॥ ततो द्वितीयकलशे पंचाशद्भिः कुशै-
र्वत्सजानुसदृशं वेदं कृत्वा तं निधाय तदुपरि प्रागुक्तपरिमाणं सौचर्णं ब्रह्मप्रतिमां मवस्थाप्य तत्र ब्रह्माणमावाहयेदनेन मंत्रेण ॥ ब्रह्म-

१ ग्रहयज्ञे समिचर्वाज्यहोमसमुल्ल्यत्वात् हुतमिष्टचरो प्रधानयागादूर्ध्वकर्तव्यमिष्टकृदर्थमवदयत्वात् तस्य च यावदागसमाप्तिपशुषितत्वेनाधार्यत्वाद्ग्रहयज्ञस्य
पार्थक्यमुचितम् । यद्वाऽन्वाधानवाक्ये समितिलज्ज्यैरिति वदेत् । अथवा लक्षहोमकोटिहोमादाविवग्रहहोमोत्तरचरो लिष्टकृतहुनेत् । अतोपितिलै लिष्टकृद्धोमो
भिन्न । एतत्सर्वं श्रीमद्वक्त्रमलाकरचरणैः श्वातिरलेऽयुतहोमप्रयोगेऽसुस्पष्टमुपपादितम् । किंच यथोक्तमंडपे कूटमंडपे वा ग्रहयज्ञे वाऽसुहोमादौ च पार्थक्येन सपादिते ग्रह-
दिक्पालवल्लिदानादौ हुतमिष्टग्रहणाच्चारवलंबनमपिस्यात् । पौष्टिकत्वादस्य कर्मणो बलिदानाभावेपिनक्षति ।

जशानगांतमोवामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहनेविनियोगः ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं ० विवः भूर्भुवः स्वः ब्रह्माणंसांसपरिवारमित्याद्या-
वाह्यध्यायेत् ॥ यथा ॥ एहो हिसर्वाधिपते सुरेन्द्रलोकेन सार्धं पितृदेवताभिः । सर्वस्य धातास्य मितप्रभावो विशाध्वरं नः सततं हिताय
॥ १ ॥ हंसारुढं चतुर्वक्त्रं शूलं रक्तवर्णकं । लंगोदरं च जटिलं चतुर्बाहुं प्रजापतिं ॥ २ ॥ अक्षमालादर्भं मुष्टिभूर्ध्वो धोदक्षिणे करे ।
सुर्वकं मंडलं वामकरे सावित्रि संयुतं ॥ ३ ॥ पद्मयोनिं च तुर्मूर्तिं वेदावासं पितामहं । यज्ञाध्यक्षं चतुर्वक्त्रं तस्यैतुभ्यं नमो नमः ॥ ४ ॥
इत्थं ध्यात्वा सावित्रीं ब्रह्माणं च कांडानुसमयेन पदार्थानुसमयेन वा षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ एतावत्कर्माचार्यसद्भावेऽपि यजमान-
एव कुर्यादितिकेपां चिदाशयः ॥ अथाचार्यः कुंडे स्थंडिले वा तत्तदुक्तसंस्कारकरणपूर्वकमग्निस्थापनाग्निसंस्काराग्निध्यानान्युक्त-
मार्गेण कृत्वा ग्रहयज्ञपक्षे कुंडादीशान्यामुक्तलक्षणयां ग्रहवेदां स्वर्यादिग्रहान् तदधिदेवतास्तत्रत्यधिदेवताः क्रतुसाहुण्यदेवताः क्रतु-
संरक्षकदेवताश्चावाह्यसंपूज्य तदीशान्यां कलशेषवरुणं स्थापनपूर्वकं संपूज्य ये रंति कमागत्यान्वादध्यात् ॥ तद्यथा ॥ समिद्धयंत्रयं-
वादाय देशकालौ स्मृत्वा स न वग्रहमखक्रजवेदांतर्गतशकलसंहिताहोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ॥ ग्रहयज्ञाकरणपक्षे-
सनवग्रहमखद्वितीनोच्चार्य किंतु क्रग्वेदांतर्गतेत्यादिकरिष्य इत्थं तमेवोच्चारयेत् ॥ ततोऽसिन्नन्वाहितेऽग्नौ विद्यादिचक्षुषी आज्ये-
नेत्यंतमुक्त्वा ग्रहयज्ञपक्षे स्वर्यादिग्रहान् अष्टोत्तरशताष्टाविंशत्यष्टान्यतमसंख्याभिः अर्कोदिजातीयसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः तदधि-
देवतास्तत्रत्यधिदेवताश्चैतरेव द्रव्यैः तरुयूनसंख्याहुतिभिः गणपत्यादि क्रतुसाहुण्यदेवताः इन्द्रादि क्रतुसंरक्षकदेवताश्चैतरेव द्रव्यैः-
ततोऽपि न्यूनसंख्याहुतिभिरिति ॥ ग्रहयज्ञाकरणपक्षे त्वेदनिर्दिश्यैवात्र प्रधानं—अग्निं १ सोमं २ विश्वान्देवान् ३ ब्रह्माणं ४

ऋषीन् ५ ऋग्वेदं ६ यजुर्वेदं ७ सामवेदं ८ सावित्रीं ९ ब्रह्माणं १० श्रद्धां ११ मेधां १२ प्रज्ञां १३ धारणां १४ सदसस्पतिं १५
 अनुमतिं १६ छंदांस्पृषीन् १७ श्रियं १८ हियं १९ सवितारं २० शतर्विनः २१ माध्यमान् २२ गुत्समदं २३ विश्वामित्रं २४
 वामदेवं २५ अत्रिं २६ भरद्वाजं २७ जामदग्न्यं २८ गौतमं २९ वसिष्ठं ३० प्रगाथान् ३१ पावमानीः ३२ क्षुद्रसूक्तान् ३३
 महासूक्तान् ३४ महानास्त्रीं ३५ उपनिषदं ३६ हव्यवाहं ३७ एतादेवतास्तिलाज्याभ्यामैककयाहुत्यायक्ष्ये ॥ पुन-
 रत्रप्रधानं—अग्निनववारं ९ वायुं ३ इंद्रवायू ३ मित्रावरुणौ ३ अश्विनौ ३ इंद्रं ३ विश्वान्देवान् ३ सरस्वतीं ३ इंद्रं २३
 मरुतः १ इंद्रमरुतः १ मरुतः २ इंद्रं ५१ अग्निं ५ निर्मथ्याहवनीयावन्नी १ अग्निं ६ समिद्ध-
 मग्निं १ तनूनपातं १ नराशंसं १ इळं १ बर्हिषं १ देवीद्वारः १ उषासानक्ते १ दैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ सरस्वतीळाभारतीः १
 त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ विश्वान्देवान् १२ इंद्रं १ मरुतः १ त्वष्टारं १ अग्निं १ इंद्रं १ मित्रावरुणौ १
 द्रविणोदसमग्निं ४ अश्विनौ १ अग्निं १ इंद्रं ९ इंद्रावरुणौ ९ ब्रह्मणस्पतिं ३ इंद्रसोमब्रह्मणस्पतीन् १ दक्षिणेंद्रसोमब्रह्म-
 णस्पतीन् १ सदसस्पतिं ३ नराशंसं १ अग्रामरुतः ९ [१] ऋभून् ८ इंद्राग्नी ६ अश्विनौ ४ सवितारं ४ अग्निं २ देवीः १

१-अत्रान्वाधाने ऐभिरग्रहत्यादिवैश्वदेवसूक्तेषु 'वैश्वदेवत्सूक्तमेदप्रयोग' इतिसर्वानुक्रममवष्टभ्यदेवताविभागंकेचिदिच्छतितत्सपाक्षिकत्वाद्विस्तृतिशंक्याव
 नास्माभिर्मध्यसमावेशा कृतः । अथचेद्रेदप्रयोगएवसौरस्यमन्यमानास्तदाटिप्पनेनिवेक्षितादेवताआलोच्यतत्रतत्रान्वाधानेसबध्योह्या । २-इध्मवा । ३-मेदपक्षे
 अग्निं २ विश्वान्देवान् १ अग्निं ९ (एव १२) । ४-इतश्चतुर्णामपिवासदसस्पति ।

11 又 11

इंद्राणीवरुणान्यग्रायीः १ द्यावापृथिव्यौ २ पृथिवीं १ विष्णुं ६ वायुं १ इंद्रवायु २ मित्रावरुणौ ३ मरुतः ३ विश्वान्देवान् ३ पूषणं ३ अपः ७ अश्वपः १ अग्निं १ कम् १ अग्निं १ सवितारं ३ वरुणं ३१ अग्निं २२ देवान् १ उद्धखलं २ उद्धखलमुसले २ ग्राजापतिहरिश्चंद्रं १ इंद्रं २३ अधिनौ ३ उपसं ३ अग्निं १८ इंद्रं ३० [१५/२] अधिनौ १२ अग्निं १३२ इंद्रं ५७ [१६/५] उपसं २० सूर्यं १३ इंद्रं ७२ अग्निं ९ वैश्वानरमग्निं ७ अग्निं ५ इंद्रं ३८ [१६/४] मरुतः १५ अश्वान्देवान् ३ वरुणमित्रावरुणः ३ सवितारं १ अग्निं १२ यूपं २ अग्निं ६ मरुतः ४० ब्रह्मणस्पतिं ८ वरुणमित्रावरुणः ३ देवाग्रिन् १ अग्निं ७ अग्निमित्रवरुणादितिसिंधुपृथिवीद्याः १ [६] उपसं २३ उपसं १५ अधिनौ ३ अग्नीषोमौ १२ अग्निं ७ वैश्वानरमग्निं ३ जातवेदसमग्निं १ इंद्रं ५८ विश्वान्देवान् २९ इंद्राग्नी २१ क्रधून् १४ द्यावापृथिव्यश्वधिनः १ अधिनौ २४

१-मरुतानिद्रइतिकेचित् । २-भगभक्त्येत्यस्याभोगोवा । ३-अधिषवणचर्मदेवतावा । ४-मे. प. विश्वान्देवान् ४ इंद्राण्यौ १ विश्वान्देवान् ४ अदितिं १ विश्वान्देवान् ९ (एवं १९) । ५-यद्वैवत्यंवासूक्तमितिपक्षेभिरवदेवता । ६-द्वैविरूपइत्यारभ्यजातवेदसइत्यतद्ब्रह्मोमिर्विकल्पेन । ७-मे. प. विश्वान्देवान् १ रोदसी १ विश्वान्देवान् १ अग्निरोदसी. १ विश्वान्देवान् ३ इंद्रोदसी. १ सूर्यरोदसी १ विश्वान्देवान् १ विष्णुरग्निरोदसी १ विश्वान्देवान् १ (एवं २९) ।

[७] उपोरात्री १ उपसं १९ रुद्रं ११ सूर्यं ६ अश्विनौ ८३ इंद्रं १५ [८] विश्वान्देवान् १५ उपसं २६ खनयं ७
 भावयन् ५ रोमशां १ भावयन् १ अग्निं १९ इंद्रं ५ इंद्रं १ इंद्रं २७ इंद्रावर्तेद्रान् १ इंद्रं ७ वायुं ९ इंद्रवायू ५
 वायुं १ मित्रावरुणौ ५ सूर्यरोदसीमित्रवरुणरुद्रद्राभ्ययमभगसोमान् १ देवमरुदशिमित्रवरुणमघवतः १ [९] मित्रावरुणौ ३
 पूषणं ४ विश्वान्देवान् १ मित्रावरुणौ १ अश्विनौ ३ इंद्रं १ अग्निं १ मरुतः १ इंद्राग्नी १ बृहस्पतिं १ विश्वान्देवान् १
 अग्निं २६ समिद्धमग्निं १ तनूनपातं १ नराशंसं १ इलं १ बर्हिषं १ देवीद्वारः १ उपासानक्ते १ दैव्यैहोतारौप्रचेतसौ १
 सरस्वतीळामारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ इंद्रं १ अग्निं ४३ मित्रं १ मित्रावरुणौ १९ विष्णुं ६ इंद्रा-
 विष्णू ३ विष्णुं ८ अश्विनौ १२ [१०] द्यावापृथिव्यौ १० ऋभून् १४ अथं ३५ विश्वान्देवान् ४१ वाक्ससुद्राक्ष-
 रायः १ शक्रधूमसोमौ १ अग्निवायुसूर्यान् १ वाचं ९ सूर्यं २ कालचक्रं १ सरस्वतीं १ साध्यान् १ सूर्यं १ सरस्वतं १
 मरुत्वंतमिद्रं १५ [११] मरुतः १५ इंद्रं १ मरुतः २० इंद्रं १३ मरुतः २ मरुत्वंतमिद्रं ४ मरुतः ३ इंद्रं ४५ रतिं ६
 अश्विनौ ३९ [१२] द्यावापृथिव्यौ ११ विश्वान्देवान् ११ अन्नं ११ समिद्धमग्निं १ तनूनपातं १ इलं १ बर्हिषं १
 देवीद्वारः १ उपासानक्ते १ दैव्यैहोतारौप्रचेतसौ १ सरस्वतीळामारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं ८

१-मे. प. रुद्रमरुत १ उपासानक्ते १ विश्वान्देवान् १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् १ मित्रवरुणसिंधून् १ विश्वान्देवान् २ मित्रावरुणौ २ विश्वान्देवान्-
 (एव १५) । २-पर्जन्याग्नीवा । ३-मे. प. विश्वान्देवान् ४ अहिर्बुध्न्य १ त्वष्टारं १ इंद्रं १ मरुत २ विश्वान्देवान् २ (एव ११) ।

बृहस्पतिं ८ अप्वणस्यन् १६ अग्निं २९ समिद्धमग्निं १ नराशंसं १ इळं १ वहिषं १ देवीर्दारः १ उपासानक्ते १ दैव्यौ-
 होतागौप्रचेतसौ १ सरस्वतीकाभारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं ४९ [१७, १३] इन्द्रं १ २६ ब्रह्म-
 णस्पतिं १ बृहस्पतिं ३ ब्रह्मणस्पतिं १ बृहस्पतिं १ ब्रह्मणस्पतिं १ ब्रह्मणस्पतिं ५ ब्रह्मणस्पतिं १
 मरुतः १ विश्वान्देवान् ७ द्यावापृथिव्यौ १ इन्द्रं ५ इन्द्रासोमौ १ इन्द्रं १ सरस्वतीन्द्रौ १ ब्रह्म-
 रुद्रं १५ मरुतः १५ अपावपातं १५ इन्द्रं ३ इन्द्रं १ मरुतः १ त्वष्टारं १ अग्निं १ इन्द्रं १ इन्द्रासोमौ १ इन्द्रं १
 अध्विनौ १ अग्निं १ सवितारं ११ अध्विनौ ८ सोमापृथिव्यौ ५ सोमापृथिव्यौ ३ शङ्खतं ६ अग्निं २३ वैश्वानरमग्निं २६ समिद्धमग्निं ३
 अध्विनौ ३ इन्द्रं ३ विश्वान्देवान् ३ सरस्वतीं ३ द्यावापृथिव्यौ ३ शङ्खतं ६ अग्निं २३ वैश्वानरमग्निं २६ समिद्धमग्निं ३
 तनूनपातं १ इळं १ वहिषं १ देवीर्दारः १ उपासानक्ते १ दैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ सरस्वतीकाभारतीः १ त्वष्टारं १ वन-
 स्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं ३३ [२२, १६] ग्रपं ५ ग्रपान् ५ ब्रध्ननं १ अग्निं २७ इन्द्राग्नी ९ अग्निं ४२ विश्वान्देवान् १

१-मे. प. विश्वान्देवान् ६ वरुण १ (एव ७) । २-मे. प. मित्रावरुणौ १ विश्वान्देवान् २ द्यावापृथिवी १ इन्द्रं १ (एव ७) ।
 ३-इन्द्रमित्यादीनामपणास्तु विशेषणं वा । ४-हविर्धानावा । ५-अत्यग्नि प्रकारवैसृज्योरन्यासाद्यावापृथिव्यादीनानि पातादस्यते अतस्तयोर्लिंगेकादेवता पाक्षिका ।

अग्निं ३ विश्वान्देवान् १ अग्निं ८ पुरीष्याग्नीन् १ अग्निं १४ अग्नीन्द्रौ १ अग्निं १ वैश्वानरमग्निं ३ मरुतः ३ आत्मानं २ उपाध्यायं १
 अग्निं ३७ [१७] इन्द्रं ६१ नदीः ३ विश्वामित्रं १ नदीः १ इन्द्रं २ विश्वामित्रं १ नदीः १ विश्वामित्रं १ नदीः ३ इन्द्रं १५३
 [६३] ११८] इन्द्रापर्वतौ १ इन्द्रं १ ससर्पर्विवाचं २ रथांगानि ४ इन्द्रं ४ विश्वान्देवान् ५८ [४१] १९] अश्विनौ ९ मित्रं ९
 ऋभून् ४ इन्द्रभून् ३ उपसं ७ इन्द्रावरुणौ ३ बृहस्पतिं ३ पूषणं ३ सवितारं ३ सोमं ३ मित्रावरुणौ ३ अग्निं १ अश्विवरुणौ ४
 अग्निं ३५ रुद्रं १ अग्निं १५ रक्षोहणमग्निं १५ [२०] वैश्वानरमग्निं १५ अग्निं ७४ सोमकं २ अश्विनौ २ इन्द्रं ४२
 वामदेवं १ इन्द्रं २ इन्द्रवामदेवौ १ वामदेवं ३ इन्द्रं ८० [७४] २१] इन्द्रमात्मानं ३ इयेनं ९ इन्द्रं १८ इन्द्रोपसौ ३ इन्द्रं ५०
 इन्द्राश्वौ २ [२२] ऋभून् ४८ द्यावापृथिव्यौ १ दधिक्रावाणं १९ सूर्यं १ इन्द्रावरुणौ ११ त्रसदस्युं ६ इन्द्रावरुणौ ४
 अश्विनौ २१ वायुं १ इन्द्रवायू ६ वायुं १ इन्द्रवायू ३ वायुं ५ इन्द्राबृहस्पती ६ बृहस्पतिं ९ इन्द्राबृहस्पती २ [२३] उपसं १८

१-प्रवोवाजाइत्यस्याआवायाअयतेयोनिरित्यस्याश्चक्रविक्रिवा । २-मे. प. अग्निं १ विश्वान्देवान् २ द्यावापृथिवी १ विश्वान्देवान् १ सूर्यद्यावापृथिवी १
 द्यावापृथिवी २ द्या १ विश्वान्देवान् १ सवितारं १ विश्वान्देवान् २ विष्णु १ इन्द्रं १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् ५ अग्निं १ विश्वान्देवान् २२ संवत्सरादित्यान् ३
 सिंधून् १ सवितारं १ विश्वान्देवान् ६ अग्निं २ (एवं ५८) । ३-मे. प. अग्निं ३ सवितवरुणमित्रान् १ सूर्यं १ (एवं ५) । अन्यश्विन १ सूर्यं १ उपसं १
 अश्व्युपस १ सूर्यं १ प्रत्यमीतिसूक्तद्वयेत्रायपाक्षिकोदेवताविभागः । ४-कथामहामितिसूक्तल्लिखणाश्रुतवादेवता । ५-इयेनदेवतायाअष्टर्चत्वेअश्वेतामित्यस्या-
 इन्द्रदेवतापाक्षिकी । ६-अत्रत्रवायुजेतिपंचवैसूक्तेन्द्रासोमौवादेवते ।

सवितारं १ २ विश्वान्देवान् १० द्यावापृथिव्यौ ७ क्षेत्रपतिं ३ शुनं १ शुनासीरौ १ सीतां १ शुनासीरौ १ अग्निं ३७ मरुदुद्रविष्णून् १
अग्निं २० समिद्धमग्निं १ नाराशंसं १ इलं १ बहिषं १ देवीद्वारः १ उपासानक्ते १ दैव्यो होतारौ प्रचेतसौ १ सरस्वती-
कामारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं १ २७ [२०. १२४] विश्वान्देवान् १ अग्निं ५ इंद्राग्नी १ अग्निं ६
इंद्रं २६ ऋणंचयेद्रौ ४ इंद्रं ८ इंद्रोक्तसौ १ इंद्रं ६८ [१६. २५] सूर्यं १ अग्निं ४ विश्वान्देवान् ३० रुद्रं १ विश्वा-
न्देवान् ५६ देवपत्नीः २ [२६] विश्वान्देवान् २५ इंद्रवायू १ वायुं १ इंद्रवायू २ विश्वान्देवान् ८ मरुतः ९१ अग्ना-

ऋग्योमप.

१-मे प. विश्वान्देवान् ७ अग्निं १ उपस १ विश्वान्देवान् १ (एवं १०) । २-उग्रमयातमिल्यादिपादौ कुत्सदैवत्यौ उशनोदैवत्यौवा । उशनयत्सहस्यैरिति-
पादस्योशनोदैवतावा । ३-मे प मित्रावरुणौ १ विश्वान्देवान् १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् १ मरुत १ विश्वान्देवान् १ उपासानक्ते १ विश्वान्देवान् २ अग्निं १
विश्वान्देवान् २ मरुत १ विश्वान्देवान् १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् १ (एवं २०)-विश्वान्देवान् २ सवितारं १ इंद्रं १
वायुं १ सोमं १ इंद्रं १ बृहस्पतिं ३ मरुत १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् २ सरस्वतीं १ बृहस्पतिं १ अग्निं ३ विश्वान्देवान् १ अश्विनौ १ (एवं १८)-नदीं १ द्यावापृथिवी १
अग्निं १ सूर्यं १ अग्निं १ धर्मं १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् २ मरुत १ विश्वान्देवान् २ अश्विनौ १ (एवं १८)-नदीं १ द्यावापृथिवी १
विश्वान्देवान् ६ अप १ (एवं ११)-विश्वान्देवान् १ सूर्यं १ अग्निं १ विश्वान्देवान् २ सुतभर १ अग्निं ३ विश्वान्देवान् १ अश्विनौ १ (एवं १५)-इंद्रसूर्यौ १ (एवं १७)-इंद्रं २
मित्रावरुणानीन् १ (एवं ७)-वैद्युतमग्निं १ उपस १ इंद्रसूर्यौ १ अग्निं २ (एवं ५)-विश्वान्देवान् १ सूर्यं ३ विश्वान्देवान् १
विश्वान्देवान् १ सवितारं २ (एवं ५)-अग्निं २ विश्वान्देवान् १ इंद्रवायू १ वायुं १ इंद्रवायू २ विश्वान्देवान् ८ (एवं १५) ।

मरुतः ८ मरुतः ४ तंरतमहिर्धौशशीयसीं ४ पुरुमीहं १ तंरतं १ मरुतः ६ रथवीति ३ मित्रावरुणौ ५९ [५० । २७]
 अश्विनौ ४८ उपसं १६ सवितारं १४ पर्जन्यं १० पृथिवीं ३ वरुणं ८ इंद्राग्नी ६ मरुतः ९ अग्निं ५४ [५१ । २८] वैश्वा-
 नरमग्निं २१ अग्निं १८ [२९] इंद्रं ६४ विश्वान्देवान् १ इंद्रं १ विश्वान्देवान् १ इंद्रं ५५ चायमानं १ गाः १ गवैर्द्वौ १
 गाः ५ गवैर्द्वौ १ [३०] इंद्रं १२८ बृहत्क्षानं ३ इंद्रं १४ सोमं ५ इंद्रं १४ देवभूमिद्रान् १ इंद्रं १ अस्तोकं ४ रथं ३ दुंदुभिं २
 दुंदुभीर्द्वौ १ [३१] अग्निं १० मरुतः ५ पूषणं ४ मरुतः ३ विश्वान्देवान् ३ पूषणं ३२ इंद्रावरुणौ ६ पूषणं ४ इंद्राग्नी २५
 सरस्वतीं १४ [३२] अश्विनौ २२ उपसं १२ मरुतः ११ मित्रावरुणौ ११ इंद्रावरुणौ ११ इंद्राविष्णू ८ द्यावापृथिव्यौ ६
 सवितारं ६ इंद्रासोमौ ५ बृहस्पतिं ३ सोमारुद्रौ ४ वर्म १ धनुः १ ज्यां १ धनुःकोटिं १ ह्युधिं १ सारथिरश्मीन् १
 अश्वान् १ रथं १ रथगोपान् १ ब्राह्मणपितृसोमद्यावापृथिवीपूषणः १ इषून् २ प्रतोदं १ हस्तत्राणं १ इषून् २ युद्धभू-
 मिकवचब्रह्मणस्पत्यदितीः १ वर्मसोमवरुणान् १ देवब्रह्माणि १ अग्निं २५ [३३] समिद्धमग्निं १ नराशंसं १ इळं १ बर्हिषं १
 देवीर्द्वारः १ उपासानक्ते १ दैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ सरस्वतीकाभारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं २०

१-मे ५ विश्वान्देवान् १ अग्निं १ अहोरात्रे १ वायु १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् १ सरस्वतीं १ पूषण १ अग्निं त्वष्टारौ १ रुद्र १ मरुत २ विष्णु १
 विश्वान्देवान् २ (एवं १५)-विश्वान्देवान् १ सूर्य १ द्यावापृथिवी १ मरुत २ इंद्र १ अप १ सवितार १ अग्नि १ अश्विनौ १ विश्वान्देवान्
 ५ (एवं १५)-सूर्य २ विश्वान्देवान् १० अग्नि १ सोम १ विश्वान्देवान् २ (एवं १६)-विश्वान्देवान् २ सोम १ विश्वान्देवान् ८ अग्नि १ विश्वान्देवान्
 ३ अभिपर्जन्यौ १ विश्वान्देवान् १ (एवं १७) ।

वैश्वानरमग्निं १६ अग्निं ३३ वैश्वानरमग्निं ३ अग्निं ३७ इंद्रं २१ सुदासं ४ इंद्रं १२२ [११, ३४] वसिष्ठपुत्रान् ९
 वसिष्ठं ५ विश्वान्देवान् १५ अहिं १ अहिर्बुध्न्यं १ विश्वान्देवान् ४० [२३, ३५] सवितारं ६ वाजिनः २ विश्वा-
 न्देवान् १४ अग्नीद्रमित्रावरुणाश्चिभगपूषन्नक्षत्राणस्पतिसोमरुद्रान् १ भगं ५ उपसं १ विश्वान्देवान् ११ दधिक्राश्वयोमिभ-
 गेंद्रविष्णुपूषन्नक्षत्राणस्पत्यादित्यद्यावापृथिव्यपः १ नदीः १ आदित्यान् ६ द्यावापृथिव्यौ ३ वास्तोष्पतिं ४ ऋभून् ४ अपः ४ मित्रावरुणौ १
 अग्निं १ विश्वान्देवान् १ नदीः १ आदित्यान् ६ द्यावापृथिव्यौ ३ वास्तोष्पतिं ४ ऋभून् ४ अपः ४ मित्रावरुणौ १
 [३६] सूर्यं १ मित्रावरुणौ १८ सूर्यं ३ मित्रावरुणौ ३ सूर्यं ४ सूर्यमित्रावरुणान् १ मित्रावरुणौ १७ मरुतः ४९ रुद्रं १
 सूर्यं ३ मित्रावरुणौ ३ अश्विनौ ५६ उपसं ४० [३४, ३७] इंद्रावरुणौ ३ इंद्रावरुणौ १ इंद्रावरुणौ १४ आदित्यान् १०
 इंद्रवायू १ वायुं १ इंद्रवायू ४ वायुं १ इंद्रवायू १ वायुं १ इंद्राग्नी २० सरस्वतीं २ सरस्वतीं १ सरस्वतीं ६
 सरस्वतीं ३ इंद्रं १ बृहस्पतिं १ इंद्राब्रह्मणस्पती १ बृहस्पतिं ५ इंद्राब्रह्मणस्पती १ इंद्राबृहस्पती १ इंद्रं ६ इंद्राबृहस्पती १

१-मे प. देवान् १ अप १ इंद्रं २ यज्ञं ३ देवान् २ वरुणं १ देवान् ३ अग्निं १ अपानपातं १ अहिं १ अहिर्बुध्न्यं १ देवान् २ देवपत्नीत्वष्टार १
 त्वष्टारं १ विश्वान्देवान् ४ (एवं २५) । २-मे. प. विश्वान्देवान् ३ इंद्रार्यमणौ १ रुद्रं १ नदी १ मरुत १ विश्वान्देवान् १ विष्णुमरुत १ (एवं ९)-
 ऋभून् २ इंद्रं ६ (एवं ८)-विश्वान्देवान् १ वायुपूषणौ १ विश्वान्देवान् ५ (एवं ७)-विश्वान्देवान् १ अग्निं १ देवान् १ अग्निं ३ (एवं ६)-
 वान् १ यज्ञ १ विश्वान्देवान् २ अग्निं १ दधिक्राश्वयोमिभगेंद्रविष्णुपूषन्नक्षत्राणस्पत्यादित्यद्यावापृथिव्यपः १ (एवं ६) ।

विष्णुं ३ इंद्राविष्णू ३ विष्णुं ८ [३८] पर्जन्यं ९ मंझकान् १० इंद्रासोमौ ७ इंद्रं १ सोमं १ अग्निं १ विश्वान्देवान् १
 सोमं २ अग्निं १ इंद्रासोमौ १ इंद्रं १ ग्राव्यः १ मरुतः १ इंद्रं ४ वसिष्ठाशीः पृथिव्यंतरिक्षाणि १ इंद्रासोमौ २ इंद्रं २९
 आसंगमात्मानं ४ आसंगे १ इंद्रं ४० विमिदुं २ इंद्रं २० पाकस्थामानं ४ इंद्रं १८ कुरुंगं ३ [३९] अश्विनौ ३६ अश्विकशून् १
 कशुं २ इंद्रं ४५ तिरिदिंरं ३ मरुतः ३६ अश्विनौ ५० अग्निं १० [४०] इंद्रं १२१ आदित्यान् ३ अदितिं १ आदित्यान् १
 अदितिं २ अश्विनौ १ अग्निस्वर्यानिलान् १ आदित्यान् १३ अग्निं ३३ आदित्यान् २ त्रसदस्युं २ मरुतः २६ [४१] इंद्रं १६
 चित्रं २ अश्विनौ १८ अग्निं ३० इंद्रं २७ वरुं ३ मित्रावरुणौ ९ विश्वान्देवान् ३ मित्रावरुणौ १२ अश्विनौ १९ वायुं ६
 विश्वान्देवान् ४१ यज्ञं २ यजमानं २ दंपती ५ दंपत्याग्निः ९ [४२] इंद्रं ६७ अश्विनौ २४ इंद्रं १४ इंद्राग्नी १०
 अग्निं १० इंद्राग्नी १२ वरुणं १३ अश्विनौ ३ अग्निं ६३ अग्नीद्रौ १ इंद्रं ६१ [४३] पृथुश्रवसं ४ वायुं ४ पृथुश्रवसं ३
 वायुं १ पृथुश्रवसं १ आदित्यान् १३ आदित्योषसः ५ सोमं १५ अग्निं २० इंद्रं ४१ देवान् १ इंद्रं ३९ आदित्यान् ९

१-शौनकीयमतेषु इंद्रं ११९ वास्तोष्पतीद्रौ १ इंद्रं १ इतिविशेषः । २-अत्र २७ विद्योत्तरं वज्रसूक्ते मे. प. सोमं १ अग्निं १ त्वष्टारं १ इंद्रं १ रुद्रं १
 पूषणं १ विष्णुं १ अश्विनौ १ मित्रावरुणौ १ अश्विनौ १ (एवं १०) । ३-मे. प. इंद्रं २ यजमानं २ दंपती ५ यजमानपत्न्याग्निः १ पूषणं २ मित्रार्यमव-
 रुणान् १ अग्निं १ यजमान ४ (एवं १८) । ४-अत्रैकादशसूक्तान्मकालखिल्याध्यायस्यदेवतान्वाधानवुत्साया इंद्रं ५० विश्वान्देवान् २ इंद्रं १३ अग्नि-
 सूयौ १ अश्विनौ ४ विश्वान्देवान् ३ इंद्रावरुणौ ७ इतिक्रमः । परमभियुक्ता स्वाहाकारेनेमसुपयुजति ।

अदितिं ३ आदित्यान् ९ [४४] इदं १३ ऋक्षाश्चमेधौ ६ इदं १० विश्वदेववरुणान् १ वरुणं १ इदं २१ अग्निं ३३
अश्विनौ १८ अग्निं १२ श्रुतवर्णं ३ अग्निं १६ इदं ३३ सोमं ९ इदं ९ देवान् १ इदं १८ [१४५] विश्वान्देवान् ९ अग्निं ९
अश्विनौ २० इदं ९२ इदं भूच १ मरुतः १२ इदं २२ इन्द्रामरुतः १ इन्द्राबृहस्पती १ इदं ४८ [३७ । ४६] सुपर्णं १
वज्रं १ चाचं २ इदं १ मित्रावरुणौ ४ मित्रावरुणादित्यान् १ आदित्यान् १ अश्विनौ २ वायुं २ सूर्यं २ उपसं १
पवमानं १ गां २ अग्निं ३५ अग्नमरुतः १ पवमानसोमं ४० समिद्धमग्निं १ तनूनपातं १ इलं १ बर्हिषं १ देवीर्द्वारः १
उपासानक्ते १ दैव्यैर्होतारौ प्रचेतसौ १ सरस्वतीळाभारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ पवमानसोमं ५१५
[४७।४८।४९] अग्निपवमानं ३ पवमानसोमं ३१ अग्निपवमानं ५ पवमानसोमं ३ पवमानसोमं २ पवमानसोमं
४९८ [५०।५१।५२] अग्निं ५५ [३५ । ५३] इदं ३ अपः ९ यमं १ यमीं १ यमं १ यमीं १ यमं ३ यमीं ३ यमं १
यमीं १ यमं १ यमीं १ अग्निं १८ हविर्धानं ५ यमं ५ अंगिरः पित्रथर्वभृगुसोमान् १ यमं ३ यमश्चानौ ३ यमं ४
पितृन् १४ अग्निं १४ सरण्युं २ पूषणं ४ सरस्वतीं ३ अपः ५ मृत्युं ४ धातारं १ त्वष्टारं १ पितृमेधं ८ [५४]
अवसीपोमान् १ अपः ७ अग्निं १८ इदं २५ अश्विनौ ३ सोमं ११ पूषणं ९ इदं २५ वसुक्रं १ इदं ३ वसुक्रं १ इदं १
वसुक्रं १ इदं १ वसुक्रं १ इदं १ वसुक्रं १ इदं ८ अपः १५ विश्वान्देवान् ११ इदं ९ [५५] विश्वान्देवान् १ इदं २

१-मे. प. विश्वान्देवान् ३ अर्यमवरुणौ १ विश्वान्देवान् ५ (एवं ९) । २-मे. प. विश्वान्देवान् ९ अश्रुत्यगर्भाश्रमां १ उषोमी १ (एवं ११) ।

कुरुश्रवणं २ उपमश्रवसं ४ अक्षान् १ अक्षकितवं १ अक्षान् १ अक्षकितवं २ अक्षान् १ कृपिं १
 अक्षकितवं १ विश्वान्देवान् २८ सूर्य १२ इंद्रं ५ अश्विनौ ३१ इंद्रं ३३ अग्निं २२ [१२ । ५६] वैकुण्ठमिंद्रं ३७
 अग्निं १ देवान् १ अग्निं १ देवान् १ अग्निं १ देवान् १ अग्निं १ देवान् ६ अग्निं ३ देवान् २ अग्निं ६
 इंद्रं १४ विश्वान्देवान् १३ मनः १२ मित्रं ३ निर्ऋतिसोमौ १ असुनीतिं २ पृथिवीध्वतरिक्षसोमपृथ्यास्वस्तीः १
 द्यावापृथिव्यौ २ इंद्रद्यावापृथिवी १ असमातिं ४ इंद्रं १ असमातिं १ जीवं ५ हस्तं १ विश्वान्देवान् ३४ [१७ । ५७]
 सार्वर्णिं ४ विश्वान्देवान् १४ पृथ्यास्वस्तिनी २ विश्वान्देवान् ४८ बृहस्पतिं २४ अग्निं १२ समिद्धमग्निं १ नराशंसं १ इळं १
 बर्हिषं १ देवीर्दारः १ उपासानक्ते १ दैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ सरस्वतीळाभारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १
 ज्ञानं ११ [५८] देवान् ९ इंद्रं १७ नदीः ९ ग्राव्यः ८ मरुतः १६ अग्निं १४ विश्वकर्माणं १४ मन्युं १४ सोमं ५ सूर्यो-
 विवाहं ११ देवान् १ सोमार्कौ १ चंद्रमसं १ सूर्योसावित्री ९ वधूवासः २ दंपतीराजयक्ष्महणं १ सूर्योसावित्री १६ [५९]

१-मे, प. विश्वान्देवान् ३ उपासमग्निं २ विश्वान्देवान् ९ (एव १४) । विश्वान्देवान् १३ सवितार १ (एव १४) । २-अत्र ७ विश्वोतर मे प.
 इंद्र, १ अग्निं १ विश्वान्देवान् ३ सोम १ (एव १३) । ३-रुद्र २ अश्विनौ ३ रुद्र २ विश्वान्देवान् १ वास्तोष्पतिरुद्रौ १ वास्तोष्पस्त्री १ अगिरस १
 इंद्र ३ अग्निं १ नासत्येद्रान् १ सोमं १ अग्निं १ आदित्यनाभानेदिष्टौ १ नाभानेदिष्टघेनू १ अग्निं १ इन्द्राभी १ इंद्रं १ मित्रावरुणनाभानेदिष्टान् १ वरुण १
 मित्रावरुणौ २ देवान् १ (एव २७) ॥ ४-मे. प. अगिरस ६ विश्वान्देवान् १ सावर्णिं ४ (एव ११) । ५-विश्वान्देवान् ९ द्यौ १ विश्वान्देवान् ४

ऋक्सं.

॥ ३१ ॥

इंद्रं २३ रक्षोहणमग्निं २५ सूर्यवैश्वानरौ १९ इंद्रं ४ इंद्रासोमौ १ इंद्रं १३ पुरुषं १६ अग्निं १५ विश्वान्देवान् ३० ग्राव्याः
१४ [६०] उर्वशीं १ पुरुवरसं १ उर्वशीं १ पुरुवरसं १ उर्वशीं ३ पुरुवरसं १ उर्वशीं १ पुरु-
रवसं १ उर्वशीं १ पुरुवरसं २ उर्वशीं १ पुरुवरसं १ इंद्रं १३ ओषधीः २३ देवान् १२ इंद्रं १२ विश्वान्देवान् २४ द्रुघणं
१२ इंद्रं ३ बृहस्पतिं १ इंद्रं ७ अप्वादेवीं १ मरुतः १ इंद्रं २२ [६१] अश्विनौ ११ दक्षिणां ११ सरमां १ पणीन् १ सरमां १
पणीन् १ सरमां १ पणीन् १ सरमां १ पणीन् २ विश्वान्देवान् ७ समिद्धमग्निं १ तनूनपातं १ इळं १
बर्हिषं १ देवीर्द्वारः १ उषासानक्ते १ दैव्यौहोतारैर्ग्रेचेतसौ १ सरस्वतीकाभारतीः १ त्वष्टारं १ वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १

पथ्यास्तुतिं २ विश्वान्देवान् १ (एवं १७) । विश्वान्देवान् ४ आदित्यार्यमण १ विश्वान्देवान् ३ नदी १ विश्वान्देवान् ४ यावापृथिव्यौ १ विश्वान्देवान् ३
(एवं १७) । विश्वान्देवान् ४ मित्रावरुणौ १ गा १ विश्वान्देवान् १ यावापृथिव्यौ १ विश्वान्देवान् ३ अश्विनौ १ विश्वान्देवान् ३ (एवं १५) । विश्वान्-
देवान् ६ अग्नीषोमौ १ विश्वान्देवान् ८ (एवं १५) । १-इंद्राणीष्टयाकपीनादेवतातेत्वित्यं-इंद्राणी १ इंद्रं ५ इंद्राणीं २ इंद्रं २ इंद्राणीं २ इंद्रं १ दृषाकर्षिं १
इंद्रं ४ दृषाकर्षिं ४ इंद्रं १ एवंविभर्जति तद्भाष्यविरुद्ध । २-विश्वान्देवान् १ अग्निं ३ विश्वान्देवान् ३ इंद्रं १ विश्वान्देवान् ७ यावापृथिवी १ विश्वान्देवान् ६
इंद्रं १ विश्वान्देवान् १ यावापृथिवी १ इंद्रं १ विश्वान्देवान् ४ (एवं ३०) । ३-मे. प. बृहस्पतिं ३ देवान् ४ अग्निं ५ (एवं १२) । ४-मे. प.
विश्वान्देवान् १० इंद्रादिती० १ इंद्रं १ ऋत्विज १२ (एवं २४) ।

इन्द्रं ३० विश्वान्देवान् १० अग्निं ९ इन्द्रं ९ धनान्नदानं ९ रक्षोहणमग्निं ९ 'एन्द्रलब्धं' १३ [६२] इन्द्रं ९ प्रजापतिं १०
 अग्निं ८ वेनं ८ अग्निं ४ वरुणं १ सोमं १ वरुणं २ सोमैद्रौ १ आंभृणीवाचं ८ विश्वान्देवान् ८ रात्रिं ८ विश्वान्देवान् ९
 भाववृत्तिं १४ इन्द्रं ३ अश्विनौ २ इन्द्रं २ द्युभूम्यश्विनः १ मित्रावरुणौ ६ इन्द्रं ११ गोर्धेन्द्रं ३ यमं ७ केक्षयग्निसूर्यवायून् ७
 विश्वान्देवान् ७ इन्द्रं ६ सवितारं ३ देवगंधर्व १ विश्वावसुं ३ अग्निं ७ विश्वान्देवान् ५ अग्निं ८ [६३] अश्विनौ ६
 इन्द्रं ६ सपत्नीनाशनं ६ अरण्यानीं ६ इन्द्रं १० सवितारं ५ अग्निं ५ श्रद्धां ५ इन्द्रं १० भाववृत्तिं ५ अलक्ष्मीनाशनं १
 ब्रह्मणस्पतिं २ अलक्ष्मीनाशनं १ विश्वान्देवान् १ अग्निं ५ विश्वान्देवान् ५ सूर्यं ५ शचीं ६ इन्द्रं ५ इन्द्राग्नी ५ प्रजापतिं ६
 यक्ष्महृणं ६ दुःस्वप्ननाशनं ५ विश्वान्देवान् ५ सपत्ननाशनं ५ इन्द्रं २ सोमवरुणबृहस्पत्यनुमतिधातृविधातृन् १ इन्द्रं १ वायुं ४ गाः
 ४ सूर्यं ४ इन्द्रं ४ उषसं ४ राजानं ११ ग्राव्याः ४ ऋभून् १ अग्निं ३ मायामेदं ३ तार्क्ष्यं ३ इन्द्रं ६ विश्वान्देवान् ३ बृहस्पतिं ३
 यजमानं १ यजमानपत्नीं १ होतारं १ विष्णुत्वष्टृप्रजापतिधातृन् १ सिनीवालिसरसत्यश्विनः १ अश्विनौ १ आदित्यान् ३
 वायुं ३ अग्निं ५ जातवेदसमग्निं ३ सूर्यं ३ भाववृत्तिं ३ अग्निं १ संज्ञानं ३ ॥ (एवमत्रसकलाऋचः १०४७२ द्विसप्तत्युत्तर-

१-मे प. विश्वान्देवान् ३ परमात्मानमिन्द्रं २ यज्ञपरमात्मानं० २ मध्यमावाच १ गायत्र्यादिच्छदसि १ विश्वान्देवान् १ (एवं १०) । २-मे. प.
 अग्निं १ विश्वान्देवान् ४ अग्निं १ विश्वान्देवान् १ इन्द्रं १ विश्वान्देवान् १ (एवं ९) । ३-मे प. देवान् १ वात ३ विश्वान्देवान् १ अप २ (एव ७) ।
 ४-मे. प. विश्वान्देवान् ३ यम १ विश्वान्देवान् १ (एव ५) ।

चतुःशताधिकदशसहस्राणि) अग्रिनववारमित्यादिसंज्ञानंत्रिवारंचतिलाज्याभ्यां (धृताक्ततिलैर्वा) अद्यप्रभृत्यष्टदिनावधिदिनक्र-
मेणप्रतिदिनंशाकलसंहिताप्रथमद्वितीयाद्यष्टकमेणाष्टाध्यायमंत्रैर्यक्ष्ये ॥ ब्रह्मादिमंडलदेवताश्चदशदशाहुतिभिस्तैरेवद्रव्यैः ॥
सर्वहोमांतोषेणस्विष्टकृतमग्निमिधमसन्नहनेनरुद्रमित्यादियक्ष्यइत्यंतेसमिधावग्रावदध्यात् ॥ सकलहोमदिनावध्वंयंतरापेक्षा-
यांतमेववान्वाधानवाक्येकीर्तयेत् ॥ ततःपरिसमूहनाद्यश्चर्चनांतंविधायेधमाधानादिकुर्यात् ॥ आचार्यस्यहोमकर्तृत्वेत्यागं-
यजमानःकुर्यात् ॥ एवंचक्षुषीहृत्वाकरिष्यमाणहोमेप्रत्याहुतित्यागंकर्तुमसमर्थोयजमानश्चेदिहैवत्यागंकुर्यात् ॥ सचैवम् ॥ इम-
उपकल्पितेतिलाज्यद्रव्येऽन्वाधानोक्तसंख्यावदानपर्याप्तेऽन्वाधानोक्तदेवताभ्योनममेतिपुष्पाक्षतजलमुत्पृजेदिति ॥ प्रत्यव-
दानंत्यागकरणेशक्तश्चेत्त्रतत्रैवतत्तदेवतानामचतुर्याविभक्त्यात्यजेदिति ॥ अथाचार्योन्यश्चैकक्रत्वित्येवमुभौतिलाज्ययोः
प्रतिद्रव्यमेकावदानंप्रणवाद्येनस्वाहाकारंतेनमंत्रेणप्रतिमंत्रंजुहुयाताम् ॥ तत्राज्यंक्षुवविलपरिमितमाचार्येणहोतव्यं ॥ अन्येन-
ऋत्विजामध्यमानाभिकांगुष्ठयोगलक्षणयामृगीसुद्रयातिलाहोतव्याः ॥ ग्रहयज्ञसमुच्चयक्षेत्र्याद्युद्देशेनार्कोदिजातीयसमिच्चर्वा-
ज्यान्यन्वाधानोक्तसंख्ययात्यक्त्वातद्धोमेऋत्विजोयोजयेत् ॥ ग्रहहोमांतेआचार्येत्विजौतिलाज्येअभ्यादिहव्यवाहांतसप्तत्रिं-
शदेवताभ्यःप्रणवाद्यैःस्वाहांतेर्नाममंत्रैर्हुत्वाग्निमीळइत्यादिशाकलसंहितामंत्रैर्वाणामृषिदैवतच्छंदोर्थान्जानंतौशुचीप्रसन्ना-
त्मानौजुहुयाताम् ॥ तत्रापि वेदार्थानामनभ्यस्तशास्त्रस्यदुर्ज्ञेयत्वादर्थज्ञानाभावेपियाजनाध्यापनादौप्रत्यवायाभावः किंतुमं-
त्रोक्तफलाल्पत्वमेव ॥ ऋषिदैवतच्छन्दसामपरिज्ञानेतुमंत्रोक्तफलहानिर्दोषश्चश्रूयते-एताभ्यामेवानेवंविदोयातयामानिच्छंदा-

सिभवंतिस्थाणुवच्छेतिगतेवापात्यतेप्रमीयतेवापीयान्भवतीतिविज्ञायतइति ॥ तथामंत्रदेवताविदएवहविदेवाअपिस्त्रीकुर्व-
 तिनत्वतथाविधस्येत्याहशौनकः ॥ मंत्राणांदेवताविद्यःप्रयुक्तकर्मकहिंचित् ॥ जुयंतैतस्यदेवासोहविनादेवताविदः ॥ इत्यादि ॥
 देवताविदइत्यृषिच्छंदसोरप्युपलक्षणं तयोरपिज्ञानस्यावश्यकत्वात् ॥ आकरेप्युष्यादिसर्वविज्ञायेत्यादिस्पष्टं ॥ तस्मादपिदेव-
 तच्छंदसांपरिज्ञानमवश्यतयाकर्तव्यं ॥ ऋष्यादिपरिज्ञानंचसर्वानुक्रमविदांसुलभं ॥ सर्वानुक्रमण्यविदांतुमत्कृतसर्वानुक्रमा-
 दनुयायिष्वक्तप्रतीकऋक्संख्यऋपिदेवतच्छंदःप्रयोगावलोकनवतांसुगममेवेति ॥ एवमग्निमीळइत्यारभ्यसमानीवइत्यंतंप्रत्यु-
 चमुक्तद्रव्याभ्यांहोमंकुर्याताम् ॥ ऋक्सवरूपंतुप्रागेवदर्शितमिति नपुनरिहलिरुयतइति ॥ इत्थंचप्रतिदिनंनियमिताध्यायमंत्रैर्हो-
 मंकृत्वाभूर्धानंदिवइत्यनेन(धामंतइत्यनयाऋचाया) पूर्णाहुतिंचहुत्वाग्नेःपरिसमूहनपयुक्षणार्चनानिकृत्वायजमानऋत्विजश्चह-
 विष्याशनादिव्रतिनोभवेयुः ॥ शक्ताश्चेदुपवसेयुरपि ॥ ततःश्वोभूतेस्नानादिनित्यकर्माणिविधायवाहितदेवताःसंपूज्याग्नेःसमी-
 पमागत्याचम्यप्राणानाथम्यदेशकालौस्मृत्वासिद्धुवेदांतर्गतशकलसंहिताहोमकर्मण्यद्यपूर्वक्रमागताष्टाध्यायमंत्रैर्विहितहोमं
 करिष्यइतिसंकल्प्याग्निध्यात्वापरिसमूहनपयुक्षणाभ्यर्चनानिकृत्वा क्रमप्राप्ताष्टाध्यायमंत्रैरुक्तद्रव्यहोमंकृत्वावशिष्टपूर्वदिनव-
 त्कुर्यात् ॥ एवमनुदिनंयावच्छाकलसंहिताहोमसमाप्तिदिनमूह्यम् ॥ सकलहोमसमाप्तौशेषेणसिष्टकृतहुत्वारज्जुग्रहरणादि-
 प्रायश्चित्तहोमांतैर्द्रादिलोकपालेभ्यःपलाशपर्णेष्वांतुंबरपर्णेपुवाबलीन्दच्चाऽऽवाहितदेवताभ्यःक्षेत्रपालायचबलीन्दद्यात् ॥
 ततःसम्राट्पूर्वैरित्यादिमंत्रैःपूर्णहुतिंहुत्वाऋद्धिकामउक्तमंत्रैर्वसोर्धारांचहुत्वापूर्णपात्रविमोकाशुपस्थानविभृतिवदनांतैसा-

वित्रीप्रजापत्याद्याचाहितदेवतास्तत्तन्मंत्रैर्यथाविभवंसंपूज्यसंप्राथ्यग्निःपश्चिमतआचार्यसंपूज्यगोरूपांततुष्टिकद्रव्यरूपांचाद-
क्षिणांदत्त्वातथैवब्रह्मादीन्यथाविभवंसंपूज्यतत्तदनुरूपांदक्षिणांदत्त्वातत्तदुचितस्तुतिवाक्यैःक्षमापयेत् ॥ ततोऽग्निसंपूज्यसा-
वित्र्यादिदेवतापीठान्याचार्यादिहस्तेप्रतिपाद्याग्निविष्यशकलसंहिताऋक्सूक्तवर्गाध्यायमंडलसंख्यान्यतमसंख्ययास्वश-
क्त्यनुसृतयान्नाह्वणभोजनसंकल्पकर्मसाहुण्यतयैविष्णुसंस्मृत्यसकलकर्मेश्वरार्पणंक्रुर्यात् ॥ इतिसंहिताहोमप्रयोगः ॥
अथाभिचारादिकर्मणिप्रतिलोमाक्षरोच्चारणमंत्रैर्विमीतकसुवेणसर्षपतैलहोमादिविधिप्रयोगोमूलएवस्फुटतरोतोत्रमयानविवि-
च्यतइतिदिक् ॥ अथसंहिताहोमकरणाशक्तस्यानुकल्पाःकैश्चिदुच्यंते ॥ तेच यथा ॥ सूक्तादिभूताभिर्ऋग्भिर्जुह्यादित्येकः१
अनुवाकाद्याभिर्जुह्यादितिद्वितीयः २ अध्यायाद्याभिर्जुह्यादितितीतीयः ३ मंडलाद्याद्यंत्यभूताभिर्ऋग्भिर्वाहोतव्यमिति-
चतुर्थः ४ इत्येवंचत्वारोनुकल्पाअशक्तप्रत्युपतिष्ठते ॥ अत्रमूलानिमांइकेयसांख्यायनादिसूत्राण्याकारादेवोपलब्धव्यानिविस्त-
रमीत्यानात्रलिखामहे ॥ सूक्तादिज्ञानंतदियत्ताज्ञानंचसर्वानुक्रमपरिश्रमवतांसुलभतरं ॥ सूक्तानुवाकादिभूतऋग्वेदोमप्रयो-
गोपिप्राग्वदुभेयइत्यलंविस्तरेण ॥ प्राचांमार्गान्स्वीयबुद्ध्यावबुध्यग्नोक्तंत्वसिन्वस्त्ववस्तुप्रबुद्धा ॥ सद्भिःसारंग्राह्यमत्राप्यसारं
हेयंयस्मादेवसद्धर्मएव ॥१॥ धृत्वामनसीष्टदुहंशरणंचरणंबुजन्मकंसारेः॥गुर्जरगोपालाख्योप्यकार्षमेतन्धुदर्थमार्याणाम् ॥ २ ॥
॥ इतिऋक्संहिताहोमपद्धतिःसमाप्ता ॥

संहिताहोमांगमृषितर्पणं । तच्च 'तर्पयित्वाह्निराचार्यान्धीन्छन्दांसिदेवताः' इतिशौनकीयपरिभाषातो विशेषविधानाभावाच्च
 आचार्यास्तार्पयामि ऋधीस्तार्पयामि देवतास्तार्पयामि छन्दांसितर्पयामीत्येवतर्पणकुर्वतिशिष्टास्तद्वेवास्तामिरय्यकारिप्रयोगे ॥ अथकेचननि-
 दिष्टप्रमाणतएवसंहितार्पित्वेवतछन्दांसितर्पयति तदर्थमयमुपन्यासः ॥ तत्रादौसुमंतुजैमिनीत्यादियेचान्येआचार्यास्ताइत्यंतानाचार्यास्तार्प-
 यित्वा ॥ ऋषितर्पणंकुर्यात् । मधुछंदसंतर्पयामि । जेतारं । मेधातिथिं ॥ १ ॥ शुनःशेषं । हिरण्यस्तूपं ॥ २ ॥ कण्वं । प्रस्कण्वं ॥ ३ ॥ सव्यं ।
 नोधां ॥ ४ ॥ पराशरं । गोतमं ॥ ५ ॥ कुत्सं ॥ ६ ॥ कदयपं । ऋआश्रावरीषसहदेवभयमानसुराधसः । त्रितं ॥ ७ ॥ कक्षीवंतं ॥ ८ ॥ (प्रथ-
 माष्टकः) ॥ ॥ भावयव्यं । रोमशां । परुच्छेपं ॥ १ ॥ दीर्घतमस ॥ २ ॥ इंद्रं । मरुतः । अगस्त्यं ॥ ३ ॥ लोपामुद्रां । ब्रह्मचारिणं ॥ ४ ॥
 गुत्समदं । सोमाहुतिं ॥ ५ ॥ ६ ॥ कूर्मं ॥ ७ ॥ विश्वामित्रं ॥ ८ ॥ (द्वितीयाष्टकः) ॥ ॥ ऋषभं । अत्कीलं । कतं । गाथिनं । देवश्रवादेवचातौ ।
 ॥ १ ॥ कुशिकं । नदीं । घोरं । प्रजापतिं ॥ २ ॥ ३ ॥ जमदग्निं । वामदेवं ॥ ४ ॥ अदितिं ॥ ५ ॥ ६ ॥ त्रसदस्युं । पुरु-
 मीह्वाजमीह्वौ ॥ ७ ॥ बुधगविष्टिरौ । कुमारं । वृशं । वसुश्रुतं । इषं ॥ ८ ॥ (तृतीयाष्टकः) ॥ ॥ गयं । सुतंभरं । धरुणं । पुंरुं ।
 द्वितंमृक्तवाहसं । वज्रिं । प्रयस्वतं । ससं । विश्वसामानं । द्युमं । विश्वचर्षणिं । बंधुं । शुतबंधुं । विप्रबंधुं । वसूयून् । अ-
 त्रिं । विश्ववारं । गौरिवीतिं । बभ्रुं । अक्स्युं । गातुं ॥ १ ॥ संवरणं । प्रभूवसुं । अवत्सारंसदापुणं । प्रतिक्षत्रं ॥ २ ॥ प्रतिरथं ।
 प्रतिमानुं । प्रतिप्रभं । स्वस्त्यात्रेयं । इयावाश्वं । शुतविदं ॥ ३ ॥ अर्चनानसं । रातहव्यं । यजतं । उरुचर्किं । बाहुदृक् । पौरं ।

अवस्युं । सप्तवर्धि । सत्यश्रवसं । एवयामरुतं । भरद्वाजं ॥ ४ ॥ वीतहव्यं ॥ ५ ॥ ६ ॥ सुहोत्रं । शुनहोत्रं । नरं । शयुं । गर्गं ॥ ७ ॥
 ऋक्षिन्वानं ॥ ८ ॥ (चतुर्थष्टकः) ॥ ॥ पायुं । वसिष्ठं ॥ १ ॥ २ ॥ शक्तिं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ मेघ्यातिथिं । आसंगं । शश्व-
 तीं । प्रियमेधं । देवातिथिं ॥ ७ ॥ ब्रह्मातिथिं । वत्सं । पुनर्वत्सं । सध्वंसं । शशकर्णं । अगाथं ॥ ८ ॥ (पंचमाष्टकः) ॥ ॥
 पर्वतं । नारदं । गोपूत्त्यश्वसूक्तिनौ । इरिबिठि । सोमर्हि ॥ १ ॥ विश्वमनसं । व्यश्वं । मनुं ॥ २ ॥ नीपातिथिं । सहस्रं वसुरोचिषं ।
 नोभाकं । विरूपं । त्रिशोकं ॥ ३ ॥ वशं । भर्गं । कलिं । मत्स्यं । मान्यं । मत्स्यान्जालनद्वात्र ॥ ४ ॥ पुरुहन्मानं । सुदीतिं ।
 हर्यतं । गौपवनं । कुरुसुतिं । कृद्धं । एकचून् । कुसीदिं ॥ ५ ॥ उशनसं । कृष्णं । विश्वकं । शुभ्रीकं । नृमेधपुरुमेधौ । अपालं ।
 श्रुतकक्षं । सुकक्षं । बिटुं । पूतदक्षं । तिरश्चीं । द्युतानं । रेभं ॥ ६ ॥ नृमेधं । नेमं । प्रयोगं । अग्निपावकं । अग्नीगृहपतियविष्ठयौ ।
 असितं । देवलं ॥ ७ ॥ दहच्युतं । इध्मवाहं । राहूगणं । बृहन्मतिं ॥ ८ ॥ (षष्ठाष्टकः) ॥ ॥ अयास्यं । कविं । सचज्यं ।
 अमहीयुं । निद्युविं ॥ १ ॥ भृगुं । शतवैखानसान् । पवित्रं । वत्सर्षिं । रेणुं । ऋपभं । हरिमंतं ॥ २ ॥ वसुं । वेनं । अकृष्टान्माषान् ।
 सिकतांनिवावरिं । पृश्निभोजान् ॥ ३ ॥ प्रतर्दनं । इंद्रप्रमतिं । वृषगणं । मन्युं । उपमन्युं । व्याघ्रपदं । कर्णश्चुतं । मृळीकं । वसु-
 कं ॥ ४ ॥ अंधीगुं । ययातिं । नहुषं । मनुं । द्वितं । शिखंडिन्यावत्सरसौ । अग्निं । चक्षुं । ऊरुं । ऊर्ध्वसद्धानं । कृतयशसं । ऋ-
 णंचयं । अग्नीन्धिष्यान् । त्र्यरुणत्रसदस्यून् । अनानतं । शिशुं ॥ ५ ॥ त्रिशिरसं । सिंधुद्वीपं । यमीं । यमं । हविर्धाने । विवस्व-
 तं । शंखं । दुमतं । संकुसुकं ॥ ६ ॥ मथितं । न्यवनं । विसुक्रतं । वसुक्रपत्नीं । कवषं ॥ ७ ॥ अक्षं । लुशं । अत्रितपसं ।

इन्द्रमुष्कवतं । घोषां । सुहस्यं ॥ ८ ॥ (सप्तमाष्टकः) ॥ ॥ सप्तगुं । वैकुण्ठमिन्द्रं । देवान् । अग्निं सौचीकं । बृहदुक्थं । अगस्त्य-
 स्यस्वसारं । नाभानेदिष्ठं ॥ १ ॥ गयं । वसुकर्णं । सुमित्रं ॥ २ ॥ बृहस्पतिं । अदितिं । सिधुदक्षं । जरत्कर्णसर्पं । स्युमरदिमं ।
 अग्निवैश्वानरं । सति । विश्वकर्माणं । सूर्यासावित्रीं ॥ ३ ॥ इंद्राणीं । वृषाकपिं । मूर्धन्वतं । नारायणं । अरुणं । शार्यातं । तान्वं ।
 अर्जुदंसर्पं ॥ ४ ॥ पुरुरुवसं । उर्वशीं । बरुं । सर्वहर्षिं । मिपजं । देवापिं । वम्रं । दुवस्युं । बुधं । मुद्रलं । अप्रतिरथं । अष्टकं ।
 दुर्भित्रं सुमित्रगुणं । सुमित्रं दुर्भित्रगुणं ॥ ५ ॥ भूतांशं । दिव्यं । दक्षिणां । पणीन् । सरमादेवशुनीं । जुहूब्रह्मजायां । ऊर्ध्वनाभानं ।
 परशुरामं । अष्टादंष्ट्रं । नभप्रभेदनं । शतप्रभेदनं । सध्रि । धर्मं । उपस्युतं । अभियुतं । अभियुपं । मिश्रुं । उरुक्षयं । इंद्रलवं ॥ ६ ॥
 बृहदिवं । हिरण्यगर्भं । चित्रमहसं । अभिवरुणसोमान् । वाचं । कुलमलबर्हिपं । अंहोसुचं । रात्रिं । विहन्यं । प्रजापतिपरमेष्ठिनं । यज्ञं ।
 सुकीर्तिं । शकपूतं । सुदासं । मांघातारं । गोधां । जूतिं । वातजूतिं । विप्रजूतिं । वृषाणकं । करिकतं । अभियुतं । एतशां । ऋष्यशृंगं ।
 अंगं । विश्वावसुदेवगंधर्वं । अग्नितापसं । जरितारं । द्रोणं । सारिस्तृकं । सांबमित्रं ॥ ७ ॥ सुपर्णं । ऊर्ध्वकृशानं । देवमुनिं । सुवेदसं ।
 पृथुं । अर्चतं । श्रद्धां । शासं । इंद्रमातारं । शिरिबिठं । केतुं । सुवनं । साधतं । शचीं । पूरणं । यक्ष्मनाशनं । रक्षोहणं । विवृहणं ।
 प्रचेतसं । कपोतं । अनिलं । शबर । विभ्राजं । इदतं । संवर्तं । शुवं । अभीवर्तं । ऊर्ध्वग्रावाणं । स्रुतुं । पतंगं । अरिष्टनेमिं । शिबिं ।
 काशिराजं । प्रतर्दनं । वसुमनसं । जयं । प्रथं । सप्रथं । तपुर्मूर्धानं । प्रजावंतं । त्वष्टारं । विष्णुं । सत्यधृतिं । उलं । श्येनं ।
 सर्पराक्षीं । अधमर्षणं । संवननं ॥ ८ ॥ (अष्टमाष्टकः) ॥ इत्यष्टितर्पणं ॥ ॥

संहिताहोमांगदेवतर्पणम् ॥ तवेत्थं ॥ अर्धितर्पयामि । सोमं । विश्वान्देवान् । ब्रह्माणं । ऋधीन् । ऋग्वेदं । यजुर्वेदं । सामवेदं । सावित्रीं । ब्रह्माणं । श्रद्धां । मेघां । प्रज्ञां । धारणां । सदसस्पतिं । अनुमतिं । छंदांस्यधीन् । श्रियं । सवितारं । शतर्विनः । माध्यमान् । गृत्समदं । विश्वामित्रं । वामदेवं । अग्निं । भरद्वाजं । जामदग्न्यं । गौतमं । वसिष्ठं । प्रगाथान् । पावमानीः ॥ शतसूक्तान् । महासूक्तान् । महानाग्नीं । उपनिषदं । हव्यवाहं । इति ३७ देवतास्तर्पयित्वा । ततःसंहितायादेवतास्तर्पयेत् ॥ ताश्च-अर्धितर्पयामि । वायुं । इंद्रावायू । मित्रावरुणौ । अश्विनौ । इंद्रं । विश्वान्देवान् । सरस्वतीं । मरुतः । अग्नीनिर्मथ्याहवनीयौ । अग्निमिध्मं (समिद्धंवा) । तनूनपातं । नराशंसं । इल्लं । बर्हिषं । देवीद्वारः । उषासानक्ते । दैव्यैर्होतारौप्रचेतसौ । सरस्वतीज्या-भारतीः । त्वष्टारं । वनस्पतिं । स्वाहाकृतीः । अभिद्रविणोदसं । इंद्रावरुणौ । ब्रह्मणस्पतिं । सोमं । दक्षिणां । सदसस्पतिं । अग्नमरुतः ॥ १ ॥ ऋभून् । सवितारं । देवीः । इंद्राणीवरुणान्यग्नायीः । द्यावापृथिव्यौ । पृथिवीं । देवान् (विष्णुंवा) । इंद्रमरु-त्वंतं । पूषणं । अपः । कं । भगं । उल्लूखलं । मुसलं । हरिश्चंद्रं प्रजापतिचर्मवा । उषसं ॥ २ ॥ रात्रिं । यूपं । अर्यमणं । आदित्यान् । रुद्रं ॥ ३ ॥ सूर्यं । अभिवैश्वानरं ॥ ४ ॥ अग्निमध्यमं ॥ ५ ॥ आदितिं । सिधुं । चां ॥ ६ ॥ अभिमुषसं । अभिष्टुचिं । अभिजातवेदसं ॥ ७ ॥ सूर्यरश्मीन् । वर्म ॥ ८ ॥ प्रथमाष्टकः ॥ ॥ रोमशां इंद्रुं । पर्वतं ॥ १ ॥ बृहस्पतिं ॥ २ ॥ अश्वं । वाक्समुद्राऽवक्षरान् । शकधूमं । संवत्सरसंशंकालचक्रं । साध्यान् । पर्जन्यं । सरस्वंतं ॥ ३ ॥ रतिं ॥ ४ ॥ अहिर्बुध्न्यं । अन्नं । वृणं ॥ ५ ॥ ६ ॥ राकां । सिनीवालीं । गुंवादिदेवताः । अपोनपातं ॥ ७ ॥ हविर्धानं । शकुंतं ॥ ८ ॥ द्वितीयाष्टकः ॥

॥ शृणुष्व । ब्रह्मन् । अग्नीन्पुरीष्यान् । उपाध्यायं । ऋत्विजः ॥ १ ॥ नदीः । विश्वामित्रं ॥ २ ॥ सप्तपरीवाचं । रथांगानि ॥ ३ ॥
 संवत्सरं । अभिरक्षोहणं ॥ ४ ॥ ५ ॥ आशिषः । वामदेवं । ऋतं । इंद्रमिवात्मानं वामदेवं । सुपर्णात्मानं वामदेवं ॥ ६ ॥ दधिक्रां ।
 ब्रह्मदस्युं ॥ ७ ॥ क्षेत्रपतिं । शुनं । शुनासीरौ । सीतां । गां । घृतं ॥ ८ ॥ तृतीयाष्टकः ॥ ॥ उशनसं । ऋणं चयं । कुत्सं ॥ १ ॥
 अत्रिं । भूमिं । सुतंभरं । देवपत्नीः ॥ २ ॥ अभिवैद्युतं । शशीयसीं । पुरुमीढं । तरंतं । रथवीतिं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ चायमानस-
 भ्यावर्तिनं । गाः ॥ ६ ॥ बृहंतक्षाण । प्रस्तोकं । रथं । दुंदुभिं ॥ ७ ॥ धेन्विषू । पृथ्नि । अहोरात्री ॥ ८ ॥ चतुर्थाष्टकः ॥ ॥
 वर्म । धनुः । ज्यां । आर्क्षीं । इधुधिं । सारथिं । रथगोपान् । ब्राह्मणपितृन् । प्रतोदं । हस्तान् । युद्धभूमिकवचानि ॥ १ ॥
 सुदासं ॥ २ ॥ वसिष्ठपुत्रपौत्रान् । वसिष्ठं ॥ ३ ॥ वाजिनः । वास्तोष्पतिं । प्रस्त्रापिनीं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ मंडूकान् । वसिष्ठाशिषः ।
 अंतरिक्षं । इंद्रासोमौ रक्षोहणौ । ग्रावाणं । अनिलं । आसंगं । विभिंदुं । पाकस्थामानं । कुरुंगं ॥ ७ ॥ अश्विकशून् । तिरिदिरं ।
 बरुं ॥ ८ ॥ पंचमाष्टकः ॥ ॥ १ ॥ यजमानं । दंपती ॥ २ ॥ ३ ॥ पृथुश्रवसं ॥ ४ ॥ ऋक्षाश्चमेधौ । हविषं । शुतवर्णं
 ॥ ५ ॥ ६ ॥ सुपर्णं । सूर्यप्रभां । पवमानं । पवमानसोमं ॥ ७ ॥ ८ ॥ षष्ठाष्टकः ॥ ॥ १ ॥ पवमानमग्निं । पावमान्यभ्येतार
 ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ यमं । यमीं । अंगिरःपित्रथर्वधृगून् । श्वानौ । सरण्युं । मृत्युं । धातार । पितृमेधं ॥ ६ ॥ वसुकं ।
 अश्वत्थागर्भाशमीं ॥ ७ ॥ कुरुश्रवणं । उपमश्रवसं । अक्षकृर्विअक्षकितवंच । अक्षान् ॥ ८ ॥ सप्तमाष्टकः ॥ ॥ वैकुण्ठमिंद्रं ।
 अभ्याख्यतंतुं । मनः । निरुहति । असुनीति । असमाति । जीवं । हस्तं । नासलौ । नाभानेदिष्टान् ॥ १ ॥ सार्वर्णि ।

ऋक्सं-

॥ ३६ ॥

नौरूपादिवं । ज्ञानं ॥ २ ॥ विश्वकर्माणं । मन्युं । सूर्याविवाहं । अर्कं । चंद्रमसं । मनुष्यविवाहाशिषः । वासः । यक्षमहणं ।
सूर्यासावित्रीं ॥ ३ ॥ वृषाकर्पिं । पुरुवं ॥ ४ ॥ उर्वशीं । पुरुरवसं । ओषधीः । द्रुघणं । अप्वां ॥ ५ ॥ यजमानान् । सरसादेव-
शुनीं । पणीन् । परमात्मानमिंद्रं । यज्ञं परमात्मानं । वाचमध्यमां । गायत्र्यादिच्छंदांसि । धनान्नदानं । इंद्रलवं ॥ ६ ॥ वेनं ।
आंशुणीवाचं । भववृत्तं । वातं । विश्वावसुंदेवगंधर्वं ॥ ७ ॥ सपत्न्याशिनीं । अरण्यानीं । श्रद्धां । अलक्ष्मीनाशिनीं । शचीं ।
दुःस्वप्नहनं । इंद्रं सपत्नहनं । अनुमतिमघवद्धावृविधातून् । राजानमभिषिक्तं । मयाभेदं । तादृश्यं । यजमानाशिषः । पत्न्यादिषं ।
होत्राशिषः । सर्पराक्षीं । संज्ञानं ॥ ८ ॥ अष्टमाष्टकः ॥ इतिसंहितास्येदेवतातर्पणं ॥ ततश्छंदसांतर्पणं ॥ गायत्रीतर्पयामि । उष्णिहं ।
अनुष्टुभं । वृहतीं । पंक्तिं । त्रिष्टुभं । जगतीं । अतिजगतीं । शक्करीं । अतिशक्करीं । अष्टिं । अत्यष्टिं । धृतिं । अतिधृतिं । इतिछंद-
॥

होत्राशिषः । सर्पराक्षीं । संज्ञानं ॥ ८ ॥ अष्टमाष्टकः ॥ इतिसंहितास्येदेवतातर्पणं । अतिशक्करीं । अष्टिं । अत्यष्टिं । धृतिं । अतिधृतिं । इतिछंद-
अनुष्टुभं । वृहतीं । पंक्तिं । त्रिष्टुभं । जगतीं । अतिजगतीं । शक्करीं । अतिशक्करीं । अष्टिं । अत्यष्टिं । धृतिं । अतिधृतिं । इतिछंद-
स्तर्पणं ॥ अत्र 'तर्पयित्वाङ्गिराचार्यानुष्टुभीं छंदांसि देवताः' इति शौनकाच्छंदस्तर्पणोत्तरं वा देवतातर्पणं कार्यम् ॥

देवताभेदपक्षेण ऋग्योमान्वाधानम् । अथ विधातरेण सूक्तमेदपक्षविभक्तदेवतान्वाधानं ॥ अत्र प्रधानं ॥ आदित्यादिनव-
ग्रहान् असुकद्रव्यैरसुकसंख्याकामिः ॥ पुनरत्र प्रधानं ॥ अग्निं सोमं विश्वान्देवान् ब्रह्माणं ऋग्वेदं यजुर्वेदं सामवेदं सावित्रीं
ब्रह्माणं श्रद्धां मेधां प्रज्ञां धारणां सदसस्पतिं अनुमतिं छंदांस्युषीन् श्रियं हियं सवितारं शतर्चिनः माध्यमान् गुत्समदं विश्वामित्रं
वामदेवं अग्निं भरद्वाजं जमदग्निं गौतमं वसिष्ठं प्रगाथान् पावमानीः क्षुद्रसूक्तान् महासूक्तान् महानाग्नीः उपनिषदं हव्यवाहं एताः सप्त-

१ महामहिमभियुक्तोद्धृतविधातरसूक्तमेदपक्षेणानेन प्रयोगादपरस्त्वागावसरेप्यनेनैव प्रयोगादरणीयः ।

त्रिंशत् ३ ७ प्रधानांगदेवताः घृतपुततिलद्रव्येण एकैक्याहुल्यायक्ष्ये ॥ पुनरत्रप्रधानं ॥ अग्निनववारं ९ वायुं ३ इंद्रवायू ३ मित्रावरुणौ
 ३ अश्विनौ ३ इंद्रं ३ विश्वान्देवान् ३ सरस्वतीं ३ इंद्रं २ ३ मरुतः १ इंद्रामरुतः १ मरुतः १ इंद्रामरुतः १ मरुतः २ इंद्रं ५१ अग्निं
 ५' अग्नीनिर्मथ्याहवनीयौ १ अग्निं ६ अग्निसमिद्धं (इक्ष्मंवा) १ अग्नितनूतपातं १ अग्नितराशंसं १ अग्निमिळं १ अग्निवर्हिषं १
 अग्निमूर्तीद्वीद्वारः १ अग्निमूर्तीउषासानके १ अग्नीद्वैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ अग्निमूर्तीः सरस्वतीळाभासतीदेवीः १ अग्नित्वष्टार १ अग्नि-
 वनस्पतिं १ अग्निमूर्तीः स्वाहाकृतीः (विश्वान्देवान्) १ अग्निदेवान् २ अग्नीन्द्रवायुबृहस्पतिमित्राग्निपूषभगादित्यमारुतगणान् १ देवान् १
 अग्निं १ अग्निदेवान् ४ देवाग्नीन्द्रवायुमित्रमूर्तिविशेषान् १ अग्निं १ अग्निदेवान् १ इंद्रतूर् १ मरुदतूर् १ त्वष्टृतूर् १ अमृततूर् १ इंद्रतूर् १ मित्रावरुणतूर्
 १ अग्निन्द्रविणोदसमृतुच १ अमृततूर् १ अमृततूर् १ इंद्रं ९ इंद्रावरुणौ ९ ब्रह्मणस्पतिं ३ इंद्रसोमब्रह्मणस्पतीन् १ दक्षिणेन्द्रसोमब्रह्मणस्पतीन्
 १ सदसस्पतिं ३ नराशंसं (सदसस्पतिवा) १ अग्नामरुतः ९ ॥ १ ॥ क्रभून् ८ इंद्राग्नी ६ अश्विनौ ४ सवितारं ४ अग्निं २
 देवीः १ इन्द्राणीवरुणान्यग्नायीः १ द्यावापृथिव्यौ २ पृथिवीं १ विष्णुं ६ वायुं १ इंद्रवायू २ मित्रावरुणौ ३ इंद्रं मरुतं ३ विश्वान्-
 न्देवान् ३ पूषणं ३ अपः ७ अबग्नीन् १ अग्निं १ कं १ अग्निं १ सवितार २ भगं १ वरुणं ३ १ अग्निं २ २ देवान् १ इंद्रं ४ उल्लख-
 लं २ उल्लखलमुसले २ हरिश्चंद्रं प्रजापतिं १ इंद्रं २ ३ अश्विनौ ३ उषसं ३ अग्निं १ ८ इंद्रं ३० [१५] ॥ २ ॥ अश्विनौ १ २ अग्निमित्र-
 वरुणरात्रिसवितूर् १ सवितारं १ अग्निं १ २ यूपं २ अग्निं ६ मरुतः ४० ब्रह्मणस्पतिं ८ वरुणमित्रार्यम्णः ३ आदित्यान् ३ वरुण-
 मित्रार्यम्णः ३ पूषणं १० रुद्रं २ रुद्रमित्रवरुणान् १ रुद्रं ३ सोमं ३ अमृत्युपसः २ अग्निं २ १ अग्निदेवान् १ अश्विनौ २ ५ [१५] ॥ ३ ॥

उषसं २० सूर्यं १३ इंद्रं ७२ अग्निं ९ अग्निवैश्वानरं ७ अग्निं ५ इंद्रं ३८ [१६] ॥ ४ ॥ मरुतः १५ अग्निं १२० अग्निमध्य-
मं ३ अग्निं ९ इंद्रं ५७ [१६] ॥ ५ ॥ मरुतः ३४ ऋतुदेवान् १ देवान् १ ऋगमित्रादितिदक्षमरुद्रणार्यमवरुणसोमाश्विसरस्वतीः १
वायुपृथिवीद्युग्रावाश्विनः १ इंद्रापूर्वणौ १ इंद्रपूषतादर्यबृहस्पतीन् १ मरुतः १ देवान् २ अदितिं १ वरुणमित्रार्यम्णाः ३ इंद्रमरुत्पूष-
भगान् १ पूषविष्णुमरुद्गणान् १ वायुसिध्वोषधीः १ रात्र्यहलोक्याः १ वनस्पतिसूर्यगाः १ मित्रवरुणार्यभेद्रुद्रहस्पतिविष्णून् १ सोमं
२३ उषसं १५ अश्विनौ ३ अग्नीवोमौ १२ अग्निं ७ देवाग्नीन् १ अग्निं ७ अग्निमित्रवरुणादितिसिधुपृथिवीद्याः (अग्निवा) १ ॥ ६ ॥
अग्निमौषसं ११ अग्निद्रविणोदसं ९ अग्निंशुचि ८ अग्निवैश्वानरं ३ अग्निजातवेदसं १ इंद्रमरुत्वंतं ३० इंद्रं २८ चंद्ररश्मिमरोदांसि १
रोदसी १ देवरोदांसि १ अग्नारोदांसि १ देवरोदांसि १ देववरुणार्यमरोदांसि १ देवरोदांसि १ इंद्रारोदांसि १ सूर्यरश्मिमरोदांसि १
इंद्रवरुणार्यमसवितुरोदांसि १ सूर्यरश्मिमरोदांसि १ देवरोदांसि १ अग्नारोदांसि १ वरुणारोदांसि १ आदित्यरोदांसि १ बृहस्पतिरोदां-
सि १ रोदसी १ मित्रवरुणादितिसिधुपृथिवीद्याः १ इंद्रमित्रवरुणाग्निमारुतशर्धोदितिः १ देवान् १ पितृद्यावापृथिवीः १ नराशंसापूर्वणौ १
बृहस्पतिं १ इंद्रं १ सवितुर्मित्रवरुणादितिसिधुपृथिवीद्याः १ आदित्यसुमतीः १ देवेन्द्रमरुददितिः १ इंद्राग्र्यमसवितुर्मित्रवरुणादि-
तिसिधुपृथिवीद्याः १ इंद्राग्नी २१ ऋभून् १४ शुपृथिव्यग्र्यश्चिमित्रवरुणादितिसिधुपृथिवीद्याः १ अश्विनौ २४ ॥ ७ ॥ उषासारात्री १
उषसं १८ उषोमित्रवरुणादितिसिधुपृथिवीद्याः १ रुद्रं ११ सूर्यं ६ अश्विनौ ८२ दुःस्वप्नतशनं १ इंद्रं १५ ॥ ८ ॥ रुद्रामरुतः १
उपासानके १ अग्निवाग्निवद्रपर्वतदेवान् १ अश्व्यपांनपादहोरात्राणि १ देवपूषाग्नीन् १ मित्रवरुणसिधून् १ मित्रवरुणदेवान् १ देवसंचं १

मित्रावरुणौ २ विश्वान्देवान् ४ मित्रावरुणौ १ उपसं २६ स्वनयदानं ७ स्वनयंभावयव्यं ५ रोमज्ञां १ स्वनयंभावयव्यं १ अग्निं १९
 इंद्रं ५ इंद्रं १ इंद्रं २७ इंद्रापर्वतैर्द्रान् १ इंद्रं ७ वायुं ९ इंद्रवायू ५ वायुं १ मित्रावरुणौ ५ सूर्यरोहसीमित्रावरुणरुद्रेद्राश्वर्यमभगसो-
 मान् १ देवैर्द्रमरुदग्निमित्रावरुणान् १ ॥ ९ ॥ मित्रावरुणौ ३ पूषणं ४ विश्वान्देवान् १ मित्रावरुणौ १ अश्विनौ ३ इंद्रं १ अग्निं १ मरुतः
 १ इंद्राग्नी १ बृहस्पतिं १ विश्वान्देवान् १ अग्निं २६ अग्निसमिद्ध १ अग्नितनूपातं १ अग्निराशंस १ अग्निमिळं १ अग्निवर्हिषं १
 अग्निमूर्तोर्देवीर्द्वारः १ अग्निमूर्तोर्उषासानक्ते १ अग्नीदैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ अग्निमूर्तीःसरस्वतीळाभारतीः १ अग्नित्वष्टारं १ अग्नि-
 वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ इंद्रं १ अग्निं ४३ मित्रं १ मित्रावरुणौ १९ विष्णुं ६ इंद्राविष्णू ३ विष्णुं ८ अश्विनौ १२ [६] ॥ १० ॥
 चावापृथिव्यौ १० ऋभून् १४ अश्वं ३५ आदित्यवाय्वग्नीन् १ सूर्यरथचक्राश्वान् १ आदित्यमंडलसप्तरश्मीन् १ परमेश्वरदुज्ञेयतां
 २ सशयोत्थापनं १ प्रश्नमादित्यविषयकं १ पृथिव्यादित्यष्टिहविरुपत्तीः १ शुप्रथिवीवृष्टीः १ आदित्यदेवान् १ आदित्यचक्रं १ संवत्सरचक्रं
 ३ सप्तर्तून् १ सूर्यरश्मीनांस्त्रीत्वपुरुषत्वज्ञानं १ आहुतिंगोरूपां १ अथादित्यव्यतिहारोपासकदुर्लभतां १ सोमसूर्यमंडलपरिभ्रमणानि
 १ जीवपरमात्मानौ १ आदित्यतद्रश्मीन् १ आदित्योपासनानुपासनप्रशंसानिर्दे १ अग्निवाच्यादित्यानांभ्वतरिक्षदवाधानज्ञानप्रशंसां १
 अक्षरप्रशंसां १ सूर्यगायत्रसामनी १ गोसविष्टधर्मान् १ गा २ वत्सगावौ १ शरीरजीवौ १ ब्रह्मसाक्षात्कार १ ज्ञानं १ शुप्रथिव्या-
 दित्यवृष्टीः १ प्रश्नपृथिव्याचंतादिविषयकं १ प्रतिवाक्यं १ आदित्यरश्मीन् १ परिदेवनंब्रह्मात्माननुभवनिमित्तं १ देहात्मजीवात्मा-
 नौ १ ब्रह्मात्मज्ञानाज्ञानप्रशंसानिर्दे १ गां १ वाचंमाध्यमिकां १ वागपाः १ शकधूसामोभौ १ अग्निसूर्यवायून् १ वाचं १ सूर्यं २

काल्चक्रंसंवत्सरस्थं १ सरस्वतीं १ साध्यान् १ पर्जन्याग्नीन् १ सरस्वतं १ इंद्रमरुतवंतं १५ ॥ ११ ॥ मरुतः १५ इंद्रं १ मरुतः २० इंद्रं १ ३ मरुतः २ इंद्रमरुतवंतं ४ मरुतः ३ इंद्रं ४५ रतिं ६ अश्विनौ ३९ [३३] ॥ १२ ॥ द्यावापृथिव्यौ ११ अग्निसवितृदेवान् १ मित्रार्यमवरुणदेवान् १ देवाग्निवरुणान् १ देव्यउपासानक्ताः १ अहिर्बुध्न्यसिध्वपांनपातः १ त्वष्ट्रद्वौ १ इंद्रं १ मरुदद्यावापृथिवीः १ मरुत्सेनाः १ अश्विपूपविष्णुवाय्विद्वान् १ देवदीधितिं १ अन्नं ११ अग्निसमिद्धं १ अग्निंतनूपातं १ अग्निमिळं १ अग्निवहिषं १ अग्निमूर्तीद्वीद्वारः १ अग्निमूर्तीउपासानक्ते १ अग्नीदैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ अग्नीमूर्तिःसरस्वतीळाभारतीः १ अग्नित्वष्टारं १ अग्निवनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं ८ बृहस्पतिं ८ अमृणसूर्यान् १६ अग्निं २९ अग्निसमिद्धं १ अग्निनराशंसं १ अग्निमिळं १ अग्निवहिषं १ अग्निमूर्तीद्वीद्वारः १ अग्निमूर्तीउपासानक्ते १ अग्नीदैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ अग्निमूर्तिःसरस्वतीळाभारतीः १ अग्नित्वष्टारं १ अग्निवनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं ४९ [३९] ॥ १३ ॥ इंद्रं १ २६ ब्रह्मणस्पतिं १ बृहस्पतिं ३ ब्रह्मणस्पतिं १ ब्रह्मणस्पतिं १ ब्रह्मणस्पतिं १ बृहस्पतिं ५ ब्रह्मणस्पतिं १ ॥ १४ ॥ बृहस्पतिं १ ब्रह्मणस्पतिं ८ बृहस्पतिं १ ब्रह्मणस्पतिं १ इंद्राब्रह्मणस्पती १ ब्रह्मणस्पतिं १ ३ आदित्यान् १ ७ वरुणं १ १ आदित्यमित्रावरुणान् १ देवान् १ देववसुमित्रवरुणादितींद्रमरुतः १ देवान् ३ वरुणं १ इंद्रं ५ इंद्रासोमौ १ इंद्रं १ सरस्वतीद्वौ १ बृहस्पतिं १ मरुतः १ मित्रावरुणौ १ देवान् १ इंद्रं १ त्वष्टि-ळाभगरोदःपूषाश्विनः १ उपासानक्ताद्यावापृथिवीः १ देवाहिर्बुध्न्याजैकपादिद्वान् १ विश्वान्देवान् १ द्यावापृथिव्यौ १ इंद्रं २ राकां २ सिनीवालीं २ गुंगूसिनीवालीराकासरस्वतींद्राणीवरुणानीः १ रुद्रं १५ मरुतः १५ अपांनपातं १५ इंद्रामधू १ मरुन्माधवान् १

त्वष्टृश्रुक्तौ १ अग्निशुची १ इंद्रानभसौ १ मित्रवरुणभस्यान् १ ॥१५॥ अग्निद्रविणोदसमिपंच १ अग्निद्रविणोदसमूर्जच १ अग्निद्रविणो-
 दसंसहंच १ अग्निद्रविणोदससहस्यंच १ अश्वितपान् १ अश्वितपस्यौ १ सवितारं ११ अश्विनौ ८ सोमापूषणौ ५ सोमपूपादितीः
 १ वायुं २ इंद्रवायू १ मित्रावरुणौ ३ अश्विनौ ३ इंद्रं ३ विश्वान्देवान् ३ सरस्वती ३ द्यावापृथिव्यौ ३ शकुंतं ६ अग्निं २३
 अग्निवैश्वानरं २६ अग्निसमिद्धं १ अग्निंतनूपातं १ अग्निमिळं १ अग्निवर्हिषं १ अग्निमूर्तीर्देवीर्द्वारः १ अग्निमूर्तीर्जषासानक्ते १
 अग्नीर्देव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ अग्निमूर्तीःसरस्वतीळाभारतीः १ अग्निंत्वष्टारं १ अग्निंवनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ अग्निं ३३ [२२] ॥१६॥
 यूपं ५ यूपान् २ विश्वान्देवान् १ यूपान् २ स्थाणुंछिन्नयूपमूलं १ अग्निं २७ इंद्राग्नी ९ अग्निं ४२ अम्युषोश्विदधिक्ताः १ अग्निं ३
 दधिक्ताम्युषोबृहस्पतिसवित्रश्विमित्रवरुणभगवसुरुद्रादित्यान् १ अग्निं ८ अग्नीन्पुरीष्यान् १ अग्निं १४ अग्नीर्द्वौ १ अग्निं १ अग्निवैश्वानरं ३
 मरुतः ३ परब्रह्म २ उपाध्यायवैश्वामित्र १ अग्निं २५ ऋत्विजः १ अग्निं ११ ॥१७॥ इंद्रं २२७ [१३७] ॥१८॥ इंद्रापर्वतौ १ इंद्रं १
 वाचंससर्परी २ रयांगानि ४ इंद्रं ४ अग्निं १ द्यावापृथिव्यौ ३ दिवं १ द्यावापृथिव्यौ ३ दिव १ द्यावापृथिव्यौ १ सवितार १
 त्वष्टृभून् १ मरुत्सरस्वतीः १ विष्णुं १ इंद्रं १ अश्विनौ १ देवेंद्रभून् १ अर्यमादितिदेववरुणान् १ अग्निपृथिवीचवप्सूर्योतरिक्षाणि
 १ पर्वतादितिमरुतः १ अग्निदेवान् १ अग्निं १ उषासाहनी १ अग्निं ९ अहोरात्रे १ द्यावापृथिव्यौ ४ द्विशः १ इंद्रं पतं ६ ॥१९॥ देवान्
 १ संवत्सरं २ संवत्सरादित्यान् १ सिंधुसंवत्सरेळासरस्वतीभारतीः १ सविच्छिपणे १ सवितृमित्रवरुणाबुरोदांसि १ अग्निवायु-
 सूर्यान् १ इंद्राग्निदेवान् १ इंद्रपूषाश्विदेवान् १ ओषधीद्रान् १ ओषधीमीतीः १ अग्निजिह्वाविश्वदेवान् १ अग्निप्रमतिं १ अश्विनौ ९

मित्रं ९ ऋभून् ४ इंद्रभून् ३ उषसं ७ इंद्रावरुणौ ३ बृहस्पति ३ पूषणं ३ सवितारं ३ सोमं ३ मित्रावरुणौ ३ अग्निं १
अमीवरुणौ ४ अग्निं ५ १ अग्निरक्षोहणं १ ५ ॥ २० ॥ अग्निर्वैश्वानरं १ ५ अग्निं ५ ८ उषोऽग्निसूर्यान् १ सवितवरुणमित्रदेवान् १ देवसूर्यान्
१ सूर्यं २ उषोऽग्न्यश्विनः १ सूर्यं १ उषसं १ अश्वयुषसः १ सूर्यं १ अग्निं ६ सोमकंसाहदेव्यं २ अश्विनौ २ इंद्रं ४ २ वामदेवं १
इंद्रं ६ ३ ॥ २१ ॥ ऋतदेवं ३ इंद्रं २ ३ श्वेनं सुपर्णात्मानं ८ इंद्रं १ इंद्रासोमौ ५ इंद्रं १ ३ इंद्रोषसौ ३ इंद्रं ४ ० इंद्राश्वौ २ ॥ २२ ॥ ऋभून् ४ ८
द्यावापृथिव्यौ १ दधिकां १ ९ सूर्यं १ इंद्रावरुणौ १ १ आत्मानं ६ इंद्रावरुणौ ४ अश्विनौ २ १ वायुं १ इंद्रवायू ६ वायुं १ इंद्र-
वायू ३ वायुं ५ इंद्राबृहस्पती ६ बृहस्पतिं ९ इंद्राबृहस्पती २ ॥ २३ ॥ उषसं १ ८ सवितारं १ ३ देवद्युभूमिवरुणमित्रान् १ देवान् १
अदितिसिंधुस्वस्त्युषासानक्ताः १ अर्यमवरुणाग्नीद्रविष्णून् १ पर्वतमरुद्भगवरुणमित्रान् १ रोदोहिर्बुध्न्यान् १ देवादितीन्द्रमित्रवरुणान्
१ अग्निं १ उषसं १ सवितृभगवरुणमित्रार्यमेद्वान् ७ द्यावापृथिव्यौ १ क्षेत्रपतिं ३ शुनं १ शुनासीरौ १ सीतां २ शुनासीरौ १
अग्निं ३ ७ मरुद्भद्राविष्णून् १ अग्निं २० अग्निसमिद्धं १ अग्निनराशंसं १ अग्निमिळं १ अग्निबर्हिषं १ अग्निमूर्तीर्देवीद्वोरः १ अग्नि-
मूर्ती उषासानक्ते १ अग्नीदैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ १ अग्निमूर्तीः सरस्वतीळाभारतीः १ अग्निं त्वष्टारं १ अग्निं वनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १
अग्निं १ २७ [१००] ॥ २४ ॥ मरुदश्विमित्रवरुणान् १ अग्निं ५ इंद्राग्नी १ अग्निं ६ इंद्रं ८ उशनद्वौ १ इंद्रं १ ७ ऋणंचयौ ४ इंद्रं ७
इंद्रकुत्सौशनसः १ इंद्राकुत्सौ १ इंद्रं ६ ८ [१६] ॥ २५ ॥ सूर्यं १ अग्निं ४ मित्रावरुणौ १ मित्रवरुणार्यमवाश्विद्रमरुद्भद्रान् १ अश्विरुद्रान् १
वाय्वग्निपूषभगान् १ मरुतः १ वायुदेवपत्नीः १ उषासानक्ते १ वास्तोष्पतित्वष्टृवाग्वनस्पत्योषधीः १ मेधादित्यान् १ अग्निंवैशुतं १

मरुद्गणभगोषधीद्युवनगिरीन् १ वाय्वपाः १ मरुतः १ मरुद्गणं १ मूर्ध्नि १ मरुद्वर्द्धिदुष्ट्यान् १ देवनिर्कृतीन् १ देवेषं १ भूम्युर्वक्ष्यौ १
 देवसंघं १ वरुणमित्रभगादितिवायून् १ अदितिमित्रवरुणान् १ सवितारं १ इंद्रं १ भगसवित्रिद्रान् १ इंद्रं मरुतवंतं १ बृहस्पतिं ३
 मरुतः १ रुद्रं १ ऋषिद्रपतीनदीसरस्वतीराकाः १ पर्जन्यं २ मरुतः १ पृथिव्यंतरिक्षवनस्पत्योषधीः १ देवान् १ अश्विनौ १ नदीः १
 द्यावापृथिव्यौ १ वायुं १ सोमं २ इंद्रं १ मां (अग्निवा) १ धर्मं १ अश्विनौ १ पूषवायू १ अभिजातवेदसंमरुतश्च १ सरस्वतीं १
 बृहस्पतिं (अग्निवा) १ अग्निं ३ देवान् १ अश्विनौ १ इंद्रं २ अग्निं ३ विद्यान्देवान् १ सूर्यं १ अग्निं (सूर्यवा) १ सूर्यं २
 मदं १ देवसंघं १ सुतंभरं १ अग्निं २ इंद्रोषआदित्यान् १ सूर्योषोनदीद्याः १ मेघद्वंगिरसः १ इंद्राग्नी १ अंगिरसः २ अंगिरः-
 सरमाः २ सूर्यं २ देवान् १ अंतर्थाभिणं १ अग्नीद्रवरुणमित्रदेवमारुतबलविष्णवश्विरुद्रदेवपत्नीपूषभगसरस्वतीः १ इंद्राग्निमित्रवरु-
 णादित्यादित्यपृथिवीद्युमरुतपर्वतान्विष्णुपूषब्रह्मणस्पतिभगसवितृन् १ विष्णुवायुसोमर्षश्चित्वष्टून् १ मरुतबलबृहस्पतिपूषवरुणमित्रार्य-
 म्णः १ पर्वतनदीभगादितिः १ देवपत्नीः २ ॥ २६ ॥ उषसं १ सूर्यरश्मीन् १ सूर्यं ३ सूर्योषःसूर्यरश्मीन् १ मित्रवरुणाग्नीन् १ अग्निवैद्युतं
 १ उषसः १ इंद्रद्रात्मसूर्यौ १ अग्निं १ अमासवितारौ १ सवितृभगौ १ पूषभगादितिसूर्येन्द्रविष्णुवरुणमित्रा-
 ग्नीन् १ सवितृनदीः १ देवमित्रवरुणान् १ सूर्यं २ देवदेवपत्नीः १ अमासवितारौ १ सवितारं १ अभिदेवान् ३ इंद्रवायू १ वायुं
 १ इंद्रवायू २ देवाश्वयुषोग्नीन् १ मित्रवरुणसोमविष्णवग्नीन् १ आदित्यवस्त्रिद्रवाय्वग्नीन् १ अश्विभगादितिपूषद्यावापृथिवीः १ वायु-
 सोमबृहस्पत्यादित्यान् १ देवाभ्यमुमुद्रान् १ मित्रवरुणरेवतीद्राभ्यदितिः १ सूर्योचंद्रमसौ १ मरुतः १ अमासमरुतः ८ मरुतः ४

शसीयसीं ४ पुरुमीह्वैददश्चि १ तरंतवैददश्चि १ मरुतः ६ रथवीतिदालभ्यं ३ मित्रावरुणौ ५९ [५०] ॥२७॥ अश्विनौ ४८ उषसं १६ सवितारं १४ पर्जन्यं १० पृथिवीं ३ वरुणं ८ इंद्राग्नी ६ मरुतः ९ अग्निं ५४ [५३] ॥२८॥ अग्निवैश्वानरं २१ अग्निं ९८ ॥२९॥ इंद्रं ६४ वरुणमित्रेन्द्रपूषविष्णवमिसवित्रोषधिपर्वतान् १ इंद्रं १ इंद्रदेवान् २१ इंद्रं ५५ दानं चायमानीयं १ गाः १ इंद्रं १ गाः ५ गर्वेद्रान् १ ॥ ३० ॥ इंद्रं १२८ वृं तुतक्षणं ३ इंद्रं १४ सोमं ५ इंद्रं १४ देवभूमिबृहस्पतींद्रान् १ इंद्रं १ दानं प्रास्तोकं ४ रथं ३ हुं डुभिं २ हुं डुभीह्वौ १ ॥ ३१ ॥ अग्निं १० मरुतः २ धेन्विषे १ इंद्रवरुणार्थमविष्णून् १ पूषणं ५ मरुतः २ द्यावाभूमी १ मित्रवरुणाग्नि-विश्वदेवान् १ अग्निं १ अहोरात्रे १ वायुं १ अश्विरथाश्विनः १ पर्जन्यवायुमरुतः १ सरस्वती १ पूषणं १ त्वष्ट्री १ रुद्रं १ मरुतः १ मरुद्गणं १ विष्णुं १ अहिर्बुध्न्यपर्वतसविष्टविश्वदेवभगान् १ विश्वान्देवान् १ विश्वान्देवान् १ देवादितिवरुणमित्राभ्यर्च्यमसवितृभगान् १ सूर्यदेवान् १ द्यावापृथिव्यौ १ मरुतः २ इंद्रं १ अपः १ सवितारं १ अग्निदेवान् १ अश्विनौ १ आदित्यवसुमरुद्भान् १ रुद्र-सरस्वतीविष्णुवाय्वभुविश्ववाजविधातृपर्जन्यान् १ सवित्रभगापांनपात्त्वष्टृपृथिवीः १ अहिर्बुध्न्याजैकपात्पृथिवीसमुद्रविश्वदेवान् १ देवपत्नीविश्वदेवान् १ सूर्यं २ आदितिवरुणमित्रार्थमभगान् १ आदित्यादितिः १ द्युष्टिव्यमित्रस्वादित्यादितिः १ देवान् ४ वरु-णमित्राग्नीन् १ इंद्रपृथिवीपूषभगादितिपंचजनान् १ देवान् १ अग्निं १ सोमं १ इंद्रादिदेवान् १ पंथानं १ अतियाजयागनिराकृतिं १ मरुदादित्यान् १ सोमं १ उपःसिंधुपर्वतपितृन् १ देवसूर्याग्नीन् १ इंद्रसरस्वतीपर्जन्योपध्यग्नीन् १ विश्वान्देवान् ४ पूषणं ३२ इंद्रापूषणौ ६ पूषणं ४ इंद्राग्नी २५ सरस्वतीं १४ ॥ ३२ ॥ अश्विनौ २२ उषसं १२ मरुतः ११ मित्रावरुणौ ११ इंद्रावरुणौ ११

इन्द्राविष्णू ८ द्यावापृथिव्यौ ६ सवितारं ६ इन्द्रासोमौ ५ बृहस्पतिं ३ सोमारुद्रौ ४ वर्म १ धनुः १ ज्यां १ आर्त्तौ १ इषुधिं १
 सारथिरश्मीन् १ अश्वान् १ रथं १ रथगोपान् १ ब्राह्मणपितृसोम्यद्युपृथिवीपूष्णः १ इषून् २ प्रतोदं १ हस्तत्राणं १ विपाक्तमुखवाणं
 २ युद्धभूमिब्रह्मणस्पत्यदितीः १ कवचसोमवरुणदेवान् १ देवब्रह्माणि १ अग्निं २५ ॥ ३३ ॥ अग्निसमिद्धं १ अग्निनराशंसं १
 अग्निमिळं १ अग्निबर्हिषं १ अग्निमूर्तीर्देवीद्वारः १ अग्निमूर्तीजपासानके १ अग्नीदैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ अग्निमूर्तीःसरस्वतीळाभारतीः
 १ अग्निंत्वष्टारं १ अग्निवनस्पतिं १ अग्निमूर्तीःस्वाहाकृतीः १ अग्निं २० अग्निवैश्वानरं १ ६ अग्निं ३३ अग्निवैश्वानरं ३ अग्निं ३७ इंद्रं २१
 दानंसौदासं ४ इंद्रं १ २२ [१, १] ॥ ३४ ॥ वसिष्ठपुत्रान् १ वसिष्ठं ५ देवान् १ अपः १ इंद्रं २ यज्ञं ३ देवान् २ वरुणं २ देवान् २ अग्निं १
 अग्निमपांनपातं १ अग्निमहिं १ अग्निमहिर्बुध्न्यं १ देवान् २ देवपत्नीत्वष्टृन् १ त्वष्टारं १ देवपत्नीद्युपृथिवीवरुणायीत्वष्टृन् १ पर्वताब्देव-
 पत्नयोषधीबुवनस्पत्यतरिक्षद्यानापृथिवीः १ द्युपृथिवीवरुणमरुतः १ इंद्रवरुणमित्राग्र्यवोषधीवृक्षान् १ इन्द्राग्निवरुणसोमपूषभगनराशंसपु-
 रधिरसत्यशंसार्यम्नः १ घातवरुणद्युपृथिव्यद्रिदेवस्तुतीः १ अग्निमित्रवरुणाश्विपुण्यकर्मवायून् १ द्युपृथिव्यंतरिक्षौपधिबृक्षेद्रान् १ इंद्रवसु-
 वरुणादित्यरुद्रत्वष्टृदेवपत्नीः १ सोमब्रह्मग्रावयज्ञूपमित्योषधिवेदीः १ सूर्यचतुर्दिक्पर्वततद्यपाः १ अदितिमरुद्विष्णुपूषभवित्रवायून् १
 सवित्रुषःपर्जन्यक्षेत्रपतीन् १ देवसरस्वतीष्वमिषाडूतिषाद्दिव्यपार्थिवाव्यान् १ सत्यपत्यश्वगोऋभुपितृन् १ अजैकपादहिर्बुध्न्यसमु-
 द्रापांनपात्युश्रीः १ आदित्यरुद्रवसुदेवान् १ देवयज्ञियमनुयजनदेवान् १ ॥ ३५ ॥ सूर्यपृथिव्यग्नीन् १ मित्रावरुणौ १ वायुधेनुपर्ज-
 न्यान् १ इन्द्रार्यमणौ १ रुद्रं १ सरस्वतीनदीः १ मरुद्वाचः १ भूमिपूषभगवान् १ मरुद्विष्णून् १ ऋभून् १ इंद्रं ५ सविष्टपर्व-

तैद्रेवान् १ सवितारं ६ वाजिनः २ अश्वयुषः पत्नीयजमानहोतृन् १ वह्निर्वायुपूष्णः १ वसून् १ विश्वदेवाग्निभगार्थीन्द्रान् १ मित्र-
वरुणैर्द्राश्वर्यमादितिविष्णुसरस्वतीमरुतः १ देवान् १ द्युपृथिवीवरुणमित्राग्निदेवान् १ देवसवितृन् १ मित्रवरुणद्युपृथिवीर्द्राश्वर्यमादि-
तिविष्णुसरस्वतीः १ वरुणमित्रार्यमादितीः १ विष्णुरुद्राश्विनः १ पूषसरस्वतीदेवपत्नीवायून् १ द्युपृथिवीवरुणमित्राग्निदेवान् १
अग्नीन्द्रमित्रवरुणाश्विभगपूषव्रह्मणस्पतिसोमरुद्रान् १ भगं ५ उपसं १ अंगिरः पर्जन्यनदीपत्नीयजमानान् १ अग्निं १ देवहोतृयज-
मानान् १ अग्निं १ अग्निमरुदिन्द्ररात्र्युषोमित्रवरुणान् १ अग्निदेवान् १ देवद्यावापृथिवीः १ यज्ञत्विग्मीन् १ देवाग्मीन् १ देवान् १
अग्निदेवान् १ दधिक्राश्व्युषोमिभगैर्द्विविष्णुपुषव्रह्मणस्पत्यादित्यद्युपृथिव्यप्सूर्यान् १ दधिक्रां ४ सवितारं ४ रुद्रं ४ अपः ४ ऋभून् ३
विश्वान्देवान् १ अपः ४ मित्रावरुणौ १ अग्निं १ विश्वान्देवान् १ नदीः १ आदित्यान् ६ द्यावापृथिव्यौ ३ वास्तोष्पतिं ४ इंद्रं ७
मरुतः ४९ रुद्रं १ ॥३६॥ सूर्यं १ मित्रावरुणौ १८ सूर्यं ३ मित्रावरुणौ १ सूर्यं ४ सूर्यमित्रवरुणान् १ मित्रावरुणौ १४ अदितिं
१० सूर्यं ३ मित्रावरुणौ ३ अश्विनौ ५६ उपसं ४० [३४] ॥३७॥ इंद्रावरुणौ ३० वरुणं २७ वायुं ४ इंद्रवायू ३ वायुं १ इंद्रवायू
१ वायुं १ इंद्रवायू ४ वायुं १ इंद्रवायू १ वायुं १ इंद्राग्मी २० सरस्वतीं २ सरस्वतं १ सरस्वतीं ६ सरस्वतं ३
इंद्रं १ बृहस्पतिं १ इंद्राव्रह्मणस्पती १ बृहस्पतिं ५ इंद्राव्रह्मणस्पती १ इंद्रावृहस्पती १ इंद्रं ६ इंद्रावृहस्पती १ विष्णुं ३ इंद्राविष्णू
३ विष्णुं ८ ॥३८॥ पर्जन्यं ९ मंडूकान् १० इंद्रासोमैरक्षोहणौ ७ इंद्रं १ सोमं १ अग्निं १ देवान् १ सोमं २ अग्निं १ इंद्रा-
सोमैरक्षोहणौ १ इंद्रं १ ग्रावणः १ मरुतः १ इंद्रं ४ वसिष्ठाशीः पृथिव्यन्तरिक्षाणि १ इंद्रं १ इंद्रासोमैरक्षोहणौ २ इंद्रं २९

आसंगं ५ इंद्रं ४० दानं वैभिद्वं २ इंद्रं २० दानं पाकस्थामीयं कौरयाणीयं ४ इंद्रं १४ पूरणं ४ दानं कोरंगं ३ ॥ ३९ ॥ अश्विनौ
 ३६ अश्विनौ दानकाशवचैदीयच १ दानं काशवं २ इंद्रं ४५ दानं तौरिदिरं पार्श्वीयं ३ मरुतः ३६ अश्विनौ ५० अग्निं १० ॥ ४० ॥
 इंद्रं १२१ आदित्यान् ७ अश्विनौ १ अग्निं सूर्यवायून् १ आदित्यान् १३ अग्निं ३३ आदित्यान् २ दानं त्रासदस्यवं २ मरुतः २६
 ॥ ४१ ॥ इंद्रं १६ दानं चैत्रं २ अश्विनौ १८ अग्निं ३० इंद्रं २७ दानं वारवसौ पामीय ३ मित्रावरुणौ ९ आदित्यश्चि मरुतः १
 मरुतः १ विष्णुं १ मित्रावरुणौ १२ अश्विनौ १९ वायु ६ मरुद्रक्षणस्पतिदेवान् १ अग्निदेवान् १ यज्ञं १ देवान् १ देवमरुद-
 दितीः १ मरुदिद्रावरुणादित्यान् १ वरुणादिदेवान् १ मरुद्विष्णवश्चि पूइद्रान् ४ मरुत्सवितृन् १ मरुदादिदेवान् ४ अर्यममित्रवरु-
 णान् १ देवान् ५ त्रयस्त्रिंशदेवान् १ वरुणमित्रार्यमेदेवपत्न्यग्नीन् ३ मरुतः १ सोम १ अग्निं १ त्वष्टार १ इंद्र १ रुद्र १ पूरणं १
 विष्णु १ अश्विनौ १ मित्रावरुणौ १ अग्नीन् १ विश्वान्देवान् ४ यज्ञयजमानौ ४ दंपती ५ दपत्याशिपः ९ ॥ ४२ ॥ इंद्र ६७
 अश्विनौ २४ इंद्रं १४ इंद्राग्नी १० अग्निं १० इंद्राग्नी १२ वरुण १३ अश्विनौ ३ अग्निं ६३ अग्नीद्वौ १ इंद्रं ६१ [२०] ॥ ४३ ॥
 दानं पार्थुश्रवस ४ वायुं ४ इंद्रं ३ वायुं १ इंद्रं १ आदित्यान् १३ आदित्योपसः ५ सोम १५ अग्निं २० इंद्रं ४१ देवान् १
 इंद्र ३९ आदित्यान् २१ ॥ ४४ ॥ इंद्रं १३ दानमाक्षीं च मेधीय ६ इंद्रं १० इंद्राग्निं विश्वेदेववरुणान् १ वरुणं १ इंद्रं २१ अग्निं ३३
 अश्विनौ १८ अग्निं १२ दानं श्रौतर्चणमाक्षीयं ३ अग्निं १६ इंद्रं ३३ सोमं ९ इंद्रं ९ देवान् १ इंद्र १८ [२] ॥ ४५ ॥ देवान् १
 वरुणमित्रार्यग्नः १ देवान् १ अर्यमवरुणौ १ देवान् २ इंद्रविष्णुमरुदश्विनः १ देवान् २ अग्निं ९ अश्विनौ २० इंद्रं ९२ इंद्रसून् १

मरुतः १२ इंद्रं २२ इंद्रामरुतः १ इंद्राबृहस्पती १ इंद्रं ५० [२६] ॥ ४६ ॥ वाचं देवीं २ इंद्रं १ मित्रावरुणौ ४ मित्र-
वरुणादित्यान् १ आदित्यान् १ अश्विनौ २ वायुं २ सूर्यं २ वषसं १ सोमंपवमानं १ गां २ अग्निं ३५ अग्नमरुतः १ सोमंपवमानं
४० अग्निसमिद्धंपवमानं १ अग्नितनूनपातंपवमानं १ अग्निमिच्छंपवमानं १ अग्निबर्हिंपवमानं १ अग्निमूर्तीर्देवीद्वारः पवमानं १
अग्निमूर्तीज्ज्वासानक्ते पवमान १ अग्नीदैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ पवमानं १ अग्निमूर्तीः सरस्वती काभारतीः पवमानं १ अग्नित्वष्टारंपवमानं १
अग्निवनस्पति पवमानं १ स्वाहाकृतीः १ सोमंपवमानं ५१५ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ अग्निंपवमानं ३ सोमंपवमानं १८ पूषणं-
पवमानं ३ सोमंपवमानं १० अग्निंपवमानं २ सवितारंपवमानं १ अग्निसवितारौ पवमानौ १ विश्वान्देवान् पवमानान् १ सोमंपवमानं
३ पावमान्यध्येतृन् पवमानान् २ सोमंपवमानं ४९८ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ अग्निं ५५ [३५] ॥ ५३ ॥ इंद्रं ३ अपः ९ यमं
१ यमीं १ यमं १ यमीं ३ यमं ३ यमीं १ यमं १ यमीं १ अग्निं १८ शकटेहविर्धानाख्ये ५ यमं ५ पितृनंगि-
रोथर्वभृगुनामकान् १ पितृन् ३ यमं ३ यमीं ३ यमं ४ पितृन् १४ अग्निं १४ सरण्यं २ पूषणं ४ सरस्वतीं ३ अपः ५ मृत्युं
४ धातारं १ त्वष्टारं १ पितृमेधं ७ प्रजापतिं १ ॥ ५४ ॥ अवग्नीषोमान् १ अपः ७ अग्निं १८ इंद्रं २५ अश्विनौ ३ सोमं ११
पूषणं ९ इंद्रं ४४ अग्निमपांनपातं १५ इंद्रामरुतः १ विश्वान्देवान् १ देवसंघं १ सवितृभगार्यमदेवान् १ देवमुविभ्ववाजान् १
देवान् १ हिरण्यगर्भं २ शमीमरणिकारणभूतां १ कण्वं २ इंद्रं ९ ॥ ५५ ॥ विश्वान्देवान् १ इंद्रं २ दानं कौरुश्रवणं त्रासदस्यवीयं २
१ असिन्नाग्निपवमानो गुणः ।

उपमश्रवसं ४ अक्षान् १ कितवनिदां ४ कितवाक्षनिदा १ अक्षनिदां १ अक्षान् २ कितवनिदां २ अक्षान् १ कृपिं १ अक्षनिदां १ अग्निद्यु-
 पृथिवीदेवावनानि १ द्युपृथिवीसिंधुपर्वतसूर्योपःसोमान् १ द्युपृथिव्युपोमीन् १ उपासामीन् १ उपासामीन् १ उपोम्यध्विनः १ सवितृधि-
 पणामीन् १ देवस्तोत्रसूर्योमीन् १ आदित्यामीन् १ इंद्रमित्रवरुणभगामिदेवान् १ आदित्यबृहस्पतिपूषाग्निभगामीन् १ आदित्यामीन् १
 मरुद्बुद्राग्निदेवान् १ देवान् १ उपोनक्ताद्युपृथिवीवरुणमित्रार्यमेद्रमरुपर्वतावादित्यातरिक्षस्वर्गान् १ द्युपृथिवीनिर्ऋतीः १ अदितिदेवाव-
 नानि १ ग्रावदेवावनानि १ इंद्रेकाबृहस्पती १ अश्विनौ १ मरुद्गणं १ सोमं १ देवान् ३ अग्निमित्रवरुणसवितृन् १ देवान् १ सवितार १
 सूर्यं १२ इंद्रं ५ अश्विनौ ३१ इंद्रं ३३ अग्निं २२ [१३] ॥५६॥ इंद्रवैकुण्ठं ३७ अग्निसौचीकं १ देवान् १ अग्निसौचीकं १ देवान् १
 अग्निसौचीकं १ देवान् १ अग्निसौचीकं १ देवान् १ अग्निसौचीकं ३ देवान् २ अग्निसौचीकं ६ इंद्रं १४
 अग्निवायुसूर्यान् १ पृथिवीदेवसूर्यान् १ स्तोमामिमानीदेवद्युधमेदेवादित्यान् १ अंगिरसः ३ बृहदुक्थं १ इंद्रं १ ततुमभ्याख्यं १
 मनआवर्तनं ३ सोमं १ मनआवर्तनं १२ निर्ऋतिं ३ निर्ऋतिसोमौ १ देवीमसुनीतिं २ पृथिवीद्वंतरिक्षसोमपूषस्तीः १ द्यावा-
 पृथिव्यौ २ इद्रधावापृथिवीः १ असमातिं ४ इंद्रं १ असमातिं १ अर्थसुबंधोर्जीविताह्वानरूपं ५ सुबंधोःस्पर्शनहेतुभूतादेवतां १
 रुद्रं २ अश्विनौ २ वास्तोष्पतिरुद्रसृष्टिं ३ रुद्रवास्तोष्पति १ वास्तोष्पत्यग्नी १ अंगिरसः १ इंद्रं ३ अग्निं १ नासत्येद्रान् १ सोमं १
 अग्निं १ आदित्यद्याः १ नाभानेदिष्टधेनू १ अग्निं १ इंद्राग्नी १ इंद्रं १ मित्रवरुणनाभानेदिष्टान् १ वरुणं १ मित्रावरुणौ १
 वरुणं १ देवान् १ ॥५७॥ अगिरसः ६ विद्यान्देवान् १ द्वांनमावर्णीयं ४ देवान् ८ इंद्राग्निमित्रवरुणभगद्युपृथिवीमरुतः १ द्यां १

देवान् ४ पथ्यास्वस्ति २ विश्वदेवादितिः १ देवान् २ नराशंसपूषामिसूर्यचंद्रमोमंद्रवायुषोरान्यश्विनः १ अग्निबृहस्पत्यजैकपादहिर-
 बुध्नान् १ पृथिव्यर्यमणौ १ अश्वान् १ वार्षिद्वपूष्णः १ एकविंशतिनद्युभुवनस्पतिपर्वताभिकृशान्वस्त्रतिष्यरुद्रान् १ नदीसरस्वती-
 १ होत्रायज्ञौ १ गयं १ विश्वदेवादितिः १ मरुतः १ मरुदिंद्रादिदेवरुणमित्रान् १ मरुददितिः १ द्यावापृथिव्यौ
 इंद्राग्नीषोमान् १ देवान् २ मित्रावरुणौ १ गां १ देवान् १ द्यावापृथिव्यौ १ पर्जन्येद्रवायुवरुणमित्रार्यमादितिपार्थिवव्यांतरिक्ष-
 देवान् १ ऋभुसोमान् १ देवान् १ अश्विनौ १ माध्यमिकवागजैकपातिसिध्वद्विश्वदेवसरस्वतीः १ देवान् १ देवानिद्रज्येष्ठान् १
 मरुतः १ इंद्रवस्वादित्यादितिरुद्रमरुत्वष्टृदेवपत्नीः १ अदितिद्युपृथिव्यग्नीद्रविष्णुमरुदादित्यवरुद्रसवितृन् १ सरस्वद्वरुणपूषवि-
 णुवाय्वश्विनः १ यज्ञदेवत्विगध्वर्वादिद्युपृथिवींद्रान् १ अग्नीषोमौ १ देवान् २ देववातपर्जन्यावोषध्यर्ग्यमाग्निवायुसूर्यान् १ सिध्वं-
 तरिक्षजैकपान्मेधाहिर्युधेदेवान् १ देवान् १ अग्न्यादित्यक्षेत्रपतीन् १ देवान् २ बृहस्पतिं २४ अग्निं १२ अग्निसमिद्धं १ अग्नि-
 नराशंसं १ अग्निसिद्धं १ अग्निवहिषं १ अग्निमूर्तीदेवीद्वारः १ अग्निमूर्तीउवासानक्ते १ अग्नीदैव्यौहोतारौप्रचेतसौ १ अग्निमूर्तीः-
 सरस्वतीळाभारतीः १ अग्निवष्टारं १ अग्निवनस्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ ज्ञानं ११ ॥ ५८ ॥ देवान् ९ इंद्रं १७ नदीः ९ ग्रावणः ८
 मरुतः १६ अग्निं १४ विश्वकर्माणं १४ मनुं १४ सोमं ५ सूर्याविवाहं ११ देवान् १ सोमाकौ १ चंद्रमसं १ विवाहमंत्रा-
 शिषः ९ वधूवासःसंस्पृशंनिदां २ दंपतियक्ष्मनाशं १ सूर्यासावित्रीं १६ ॥ ५९ ॥ इंद्रं २३ अग्निरक्षोहणं २५ सूर्यमग्निवैश्वानरं च १९

इंद्रं ४ सोमद्वौ १ इंद्रं १३ पुरुषं १६ अग्निं ३ अम्मरुं दिंदान् १ मरुद्वरुणमित्रार्यमैंदान् १ इंद्रासूर्यौ १ इंद्रं १ रुद्रं १ बृहस्पति सोमजाम्यथर्वदेवभृगून् १ शुप्रथिनीनराशंसयमादितिवृद्रविणोदक्रुभुरोदसीमरुद्विष्णून् १ अहिर्बुध्न्यसूर्य-
चंद्रमोक्षुप्रथिवीः १ पूषापांनपाद्वाय्वश्विनः १ अग्निदेवपत्न्यदितिचंद्रसूर्येदान् १ अंनिरोग्रावेद्वस्वदितिः १ द्यावापृथिव्यौ १ देवान् २ अर्यममित्रवरुणदेवजनरुद्रमरुदणान् १ सूर्यचंद्रमोहिर्बुध्न्याश्विनः १ मित्रवरुणाश्विनः १ अश्विपुषभगर्भान्नोदित्रह्मस्वादीन् १ इंद्रं १ सवित्रिंद्रमरुतः १ द्यावापृथिव्यौ १ इंद्रं १ देवस्तोत्र १ गोयाच्चां १ ग्राव्याः १४ ॥ ६० ॥ उर्वशी १ पुरु-
रुत्वस १ उर्वशी १ पुरुत्वसं २ उर्वशी १ पुरुत्वसं १ उर्वशी १ पुरुत्वसं १ उर्वशी १ उर्वशी १ उर्वशी १ पुरु-
रवसं १ उर्वशी १ पुरुत्वस २ उर्वशी १ पुरुत्वसं १ इंद्राश्वौ १३ औषधीः २३ बृहस्पतिमित्रवरुणपूषादित्यवस्विद्वान् १
बृहस्पतिं ३ देवान् २ बृहस्पतिं १ अग्निं ५ इंद्रं १२ इंद्रदेवसवित्रदितिः १ गवादितीः १ इंद्रादिती २ ऋत्विजः १२ द्रुवणं १२
इंद्रं ३ बृहस्पतिं १ इंद्रं ७ देवीमत्वां १ मरुतः १ इंद्रं २२ ॥ ६१ ॥ अश्विनौ ११ दक्षिणां ११ सरमां १ पणीनसुरान् १
सरमां १ पणीनसुरान् १ सरमां १ पणीनसुरान् १ सरमां १ पणीनसुरान् १ आदित्यवरुणवाय्वग्नि-
सोमापाः १ सोमवरुणमित्राग्निबृहस्पतिब्रह्मजायादानानि १ देवबृहस्पतिब्रह्मजायाः १ देवसप्तर्षिबृहस्पतिब्रह्मजायाः १ देवजुह्वहस्प-
तीन् १ देवमनुष्यराजबृहस्पतिब्रह्मजायादानानि १ देवबृहस्पतिब्रह्मजायावार्हस्पत्यज्ञान् १ अग्निंसमिद्धं १ अग्निंतनूपातं १ अग्निमिच्छं १
अग्निबर्हिषं १ अग्निमूर्तौ देवीद्वारः १ अग्निमूर्ती उपासानक्ते १ अग्नीदैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ १ अग्निमूर्तीः सरस्वती व्याभारतीः १ अग्नि-

त्वष्टारं १ अग्निवन्स्पतिं १ स्वाहाकृतीः १ इन्द्रं ३० अग्न्यादित्यवायुसूर्यरश्मीन् १ अग्निवायुसूर्यान् १ वेदिजायापतिदेवान् १ देवं-
मध्यमस्थानं १ वाचमाध्यमिकांचपरमात्मछंदःसोमग्रहान् १ यज्ञं २ ब्रह्मसर्वरूपांच १ छंदोयोगधिष्ण्यवागृत्विगिद्राद्यान् १ समाश्वसू-
र्यान् १ अग्निं ९ इन्द्रं ९ धनात्रदानं ९ अग्निरक्षोहणं ९ इन्द्रं २२ [१३] ॥ ६२ ॥ प्रजापति १० अग्निं ८ वेनं ८ अग्निं ४ वरुणं १
सोमं १ वरुणापाः २ इन्द्रं १ वाचमांशुणीं ८ देवार्थमभिन्नवरुणान् १ वरुणमित्रार्थम्पुनः ३ वरुणमित्रार्थम्पुनः ३ वरुणमित्रार्थम्पुनः ३ वरुणं ४ वरुणं १
वरुणमित्रार्थम्पुनः १ वरुणमित्रार्थमादित्यान् १ वसुमित्रवरुणार्थमाग्नीन् १ रात्रि ८ अग्निं १ इन्द्रमरुद्विष्ण्वस्यंतिरिक्षवायून् १ देवान् २
ह्युप्रथिव्यहोरात्र्यबोपधिदेवसोमान् १ अग्निं १ इन्द्राश्विबृहस्पतिदेवान् १ इन्द्रं १ इन्द्राश्विबृहस्पतिदेवान् १ इन्द्रं १ इन्द्राश्विबृहस्पतिदेवान् १
अश्विनौ २ इन्द्रं २ ह्युमूर्यश्विनः १ मित्रावरुणौ ६ इन्द्रं १४ यमं ७ अग्निमृगवृहस्पतिदेववाग्देवीः १ सोमाग्न्यादित्यविष्णुसूर्यब्रह्मवृहस्प-
तिन् १ इन्द्रवायुबृहस्पतीन् १ अर्यमबृहस्पतीन्द्रवायुविष्णुसरस्वतीसवितून् १ अग्निं ९ ॥ ६३ ॥ अश्विनौ ६ इन्द्रं ६ सपत्नीवाधनं ६
अरण्यानीं ६ इन्द्रं १० सवितारं ५ अग्निं ५ अश्वि ५ इन्द्रं १० भाववृत्तं ५ अलक्ष्मीनाशनं १ ब्रह्मणस्पतिं २ अलक्ष्मीनाशनं १
विश्वान्देवान् १ अग्निं ५ इन्द्रदेवान् २ इन्द्रमरुदेवान् १ देवान् २ सूर्यं ५ शचीं ६ इन्द्रं १० गर्भसमाधानं ६ यक्षमनाशनं ६ दुःस्व-
प्रनाशनं ५ देवान् ३ यमं १ देवान् १ सपत्नीनाशनं ५ इन्द्रं २ सोमवरुणबृहस्पत्यनुमतीन्द्रधातुविधातून् १ इन्द्रं १ वायुं ४ गाः ४
सूर्यं ४ इन्द्रं ४ उपसं ४ अभिषिक्तराजस्तुतिं ११ प्रावणः ४ ऋभून् १ अग्निं ३ मायाभेदं ३ ताक्ष्यं ३ इन्द्रं ६ धातुसवितुविष्णून् १

धातुसविष्टविष्णुमीन् १ धातुसविष्टविष्णुसूर्योन् १ बृहस्पतिं ३ पुत्रकामयजमानाशिपः १ पुत्रकामपत्न्याशिपः १ होत्राशिपः १ विष्णुत्वष्ट्रप्रजाविधातून् १ सिनीवालीसरस्वत्यश्विनः १ अश्विनौ १ अदितिं ३ वायुं ३ अग्निं ५ अग्निजातवेदसं ३ सूर्यं ३ भाव-
वृत्तिं ३ अग्निं १ संज्ञानं ३ ॥ ६४ ॥ इति शाकल्यसंहितामंत्रदेवतान्वाधानम् ॥

अनुवाकाद्युद्देवतान्वाधानम् ।

श्रीः ॥ अग्निं १ इंद्रं ३ अग्निं ४ ब्रह्मणस्पतिं ५ कं ६ अग्निं ८ अग्न्यश्विषसः ९ इंद्रं १० अग्निं १३ मरुतः १४
अग्निं १५ इंद्रं १६ अश्विनौ १७ इंद्रं १८ अग्निं १९ वायुं २० अग्निं २१ अश्विनौ २२ इंद्रं मरुतं २३ अश्विनौ २४ अग्निं २५
इंद्रं २६ ब्रह्मणस्पतिं २७ रुद्रं २८ अग्निं ३० इंद्रं ३१ अग्निं ३२ अग्निं ३५ इंद्रं ३६ ऋभून् ३७ वायुं ३८ अग्निं ४०
इंद्रं ४१ इंद्रसूर्यौ ४२ मरुतः ४३ अश्विनौ ४४ अग्निं ४६ इंद्रं ४८ विश्वान्देवान् ४९ अश्विनौ ५० अग्निं ५१
इंद्रं ५२ देवान् ५३ मरुतः ५४ अश्विनौ ५५ इंद्रवायू ५६ इंद्रं चतुः ६० यज्ञयजमानौ ६१ अग्निं ६३ इंद्रं ६५ मरुतः ६६
सोमं पवमानं सप्त ७३ अग्निं ७४ सरण्यूः ७५ अपोपोनपातंवा ७६ इंद्रं ७७ रुद्रं ७८ अग्निं ७९ सोमं ८० अग्निं ८१ वि-
श्वान्देवान् ८२ इंद्रं ८३ भाववृत्तिं ८४ इंद्रं ८५ ॥ इत्यनुवाकदेवताः पंचाशीतिः ॥

अनुवाकाद्युच्चाष्ट्यादयः ।

श्रीः ॥ अग्निमीळइत्यस्य वैश्वामित्रो मधुच्छंदा अभिर्गायत्री १ सुरूपकृन्मित्यस्य वैश्वामित्रो मधुच्छंदा इंद्रो गायत्री २ इंद्रसानसिमित्यस्य

वैश्वामित्रोमधुच्छदं द्रोगायत्री ३ अत्रिदूतमित्यस्य काण्वोमेधातिथिरभिर्गायत्री ४ सोमानमित्यस्य काण्वोमेधातिथिर्ब्रह्मणस्पतिर्गायत्री ५
 कस्य नूनमित्यस्याजीगर्तिः शुनः शेषः सकृन्निमोवैश्वामित्रो देवरातः क्विष्टुप् ६ त्वमग्ने प्रथम इत्यस्यांगिरसो हिरण्यस्तूपो मिर्जगती ७ प्रवोयह-
 मित्यस्य घौरः कण्वो मिर्जहती ८ अग्ने विवस्वदित्यस्य काण्वः प्रस्कण्वोभ्यश्च्युषसो बृहती ९ अभित्यमेवमित्यस्यांगिरसः सन्व्यइंद्रोजगती १०
 नूचित्सहो जा इत्यस्य गौतमो नोधा अभिर्जगती ११ पश्चान्तायुमित्यस्य शात्तयः पराशरो मिर्द्विपदा विराट् १२ उपप्रयंत इत्यस्य राहूगणो गौत-
 मो मिर्गायत्री १३ प्रये शुभंत इत्यस्य राहूगणो गौतमो मरुतोजगती १४ इमं स्तोममित्यस्यांगिरसः कुत्सो मिर्जगती १५ इंद्रं मित्रं वरुणमग्निमू-
 तय इत्यस्यांगिरसः कुत्स इंद्रोजगती १६ नासत्याभ्यामित्यस्य दैर्घतमसः कक्षीवानश्विनौ त्रिष्टुप् १७ कदित्या नूतित्यस्य दैर्घतमसः कक्षीवानग्निमू-
 चथ्यो दीर्घतमा अभिर्जगती २१ अवोध्यमिरित्यस्यौ चथ्यो दीर्घतमा अश्विनौ जगती २२ कया शुभेत्यस्य इंद्रं द्रोमरुत्वां त्रिष्टुप् २० वेदिषद इत्यस्यौ-
 जांसीत्यस्य मैत्रावरुणिरगस्त्योऽश्विनौ त्रिष्टुप् २४ त्वमग्ने बुभुमिरित्यस्य शौनको गृत्समदो मिर्जगती २५ योजात एवेत्यस्य शौनको गृत्समदं इंद्रं बि-
 भ्रुप् २६ गणानां त्वेत्यस्य शौनको गृत्समदो ब्रह्मणस्पतिर्जगती २७ आते पितरित्यस्य शौनको गृत्समदो रुद्रो निचू त्रिष्टुप् २८ सोमस्येत्यस्य
 गाथिनो विश्वामित्रो मित्रिष्टुप् २९ प्रवो देवायेत्यस्य वैश्वामित्र ऋषभो मित्रिष्टुप् ३० इंच्छंति त्वेत्यस्य गाथिनो विश्वामित्र इंद्रं बिष्टुप् ३१ इंद्रं-
 मतिरित्यस्य गाथिनो विश्वामित्र इंद्रं बिष्टुप् ३२ इमं मह इत्यस्य वैश्वामित्रो वाच्यो वा प्रजापतिरग्नि बिष्टुप् ३३ त्वांहम इत्यस्य गौतमो वामदेवो-
 भिरष्टिः ३४ भद्रं ते अम इत्यस्य गौतमो वामदेवो मित्रिष्टुप् ३५ यन्न इंद्र इत्यस्य गौतमो वामदेव इंद्रं बिष्टुप् ३६ प्र ऋभुभ्य इत्यस्य गौतमो वामदेव-

ऋभवस्त्रिष्टुप् ३ ७ अग्रपिबेत्यस्य गौतमोवाभदेवोवायुर्गायत्री ३८ अवोध्यग्निरित्यस्य त्रैयैर्बुधगविष्टिरावग्निस्त्रिष्टुप् ३९ प्रवेधसइत्यस्यांगि-
 रसोघरुणोभिस्त्रिष्टुप् ४० महिमहइत्यस्य प्राजापत्याः संवरणइंद्रस्त्रिष्टुप् ४१ विदादिवइत्यस्य त्रेयः सदापृणइंद्रसूर्यौ त्रिष्टुप् ४२ आरुद्रासइ-
 त्यस्य त्रेयः इयावाथोभरुतो जगती ४३ यदद्यस्य इत्यस्य त्रेयः पौरोध्विनावनुष्टुप् ४४ त्वंममइत्यस्य बार्हस्पत्योभरद्वाजोभिस्त्रिष्टुप् ४५ त्वम-
 भ्रेयज्ञानमित्यस्य बार्हस्पत्योभरद्वाजोभिर्गायत्री ४६ वृषामहइत्यस्य बार्हस्पत्योभरद्वाजइंद्रस्त्रिष्टुप् ४७ योरयिवइत्यस्य बार्हस्पत्यः शंयुरिंद्रोनु-
 ष्टुप् ४८ हुवेवोदेवीमित्यस्य भारद्वाजऋजिश्चोदेवास्त्रिष्टुप् ४९ स्तुपेनरेत्यस्य बार्हस्पत्योभरद्वाजोश्विनौ त्रिष्टुप् ५० अग्निनरइत्यस्य मैत्रा-
 वरुणिर्वसिष्ठोभिर्विराज्नुष्टुप् ५१ त्वेह्यदित्यस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठइंद्रस्त्रिष्टुप् ५२ प्रशुकैत्वित्यस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठोदेवाविराज्द्विपदा ५३
 कईन्यकाइत्यस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठोभरुतोविराज्द्विपदा ५४ अपस्वसुरित्यस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठोश्विनौ त्रिष्टुप् ५५ प्रवीरयेत्यस्य मैत्रावरुणि-
 र्वसिष्ठइंद्रवायू त्रिष्टुप् ५६ माचिदन्यदित्यस्य काण्वः प्रगाथइंद्रोबृहती ५७ महौइंद्रयइत्यस्य काण्वोवत्सइंद्रो गायत्री ५८ इंद्रः सुतेष्वित्यस्य
 काण्वोनारदइंद्रउष्णिक् ५९ वयमुत्वाभपूर्येत्यस्य काण्वः सोभरिर्इंद्रः ककुबुष्णिक् ६० योयजातीत्यस्य वैवस्वतोमनुर्यज्ञयजमानौ गायत्री ६१
 इमेविप्रस्येत्यस्यांगिरसोविरूपोभिर्गायत्री ६२ अम्रआयाहीत्यस्य प्रागाथोभर्गोभिर्बृहती ६३ योराजेत्यस्यांगिरसः पुरुहन्मेद्रोबृहती ६४
 आतूनइंद्रेत्यस्य काण्वः कुसीर्दीद्रो गायत्री ६५ गौर्धयतीत्यस्यांगिरसोबिंदुर्मरुतो गायत्री ६६ स्वादिष्टयेत्यस्य वैश्वामित्रोभघुच्छंदाः पवमानः
 सोभर्गायत्री ६७ पवस्वदक्षसाधनइत्यस्यागस्त्योदह्मच्युतः पवमानः सोभो गायत्री ६८ अयावीतीत्यस्यांगिरसोमर्हयुः पवमानः सोभो गायत्री
 ६९ प्रदेवमच्छेत्यस्य भालंदनोवत्सग्निरः पवमानः सोमो जगती ७० प्रतआशंवइत्यस्याकृष्टामाषाः पवमानः सोमो जगती ७१ अस्य प्रेयेत्यस्य मै-

त्रावरुणिर्वसिष्ठः पचमानः सोमबिष्टुप् ७२ सखायानीत्यस्य काण्वौ पर्वतनारदौ द्वे शिखिं हिन्यावप्सरसावृपिके वापचमानः सोमजणिक् ७३
 अमेबृहन्नित्यस्यास्त्यखितो मिबिष्टुप् ७४ त्वष्टादुहित्र इत्यस्यामायनो देवश्रवासरण्युत्रिष्टुप् ७५ प्रदेवत्रेत्यस्यैल्लवः कवषापोपोनपात्रिष्टुप्
 ७६ अच्छामंद्रमित्यस्यांगिरसः कृष्णंद्रो जगती ७७ इदमित्येत्यस्य मानवो नानेदिष्टो रुद्रबिष्टुप् ७८ भद्राअमेरित्यस्य वाग्र्यश्वः सुभि-
 त्रो मिर्जगती ७९ सत्येनोत्तमितेत्यस्य सूर्यासावित्री सोमोनुष्टुप् ८० संजागृवद्विरित्यस्य वैतहव्योरुणो मिर्जगती ८१ इंद्रह्येत्यस्य वांदनो दु-
 वत्युर्विश्वेदेवा जगती ८२ तमस्य द्यावापृथिवी इत्यस्य वैरूपः शतप्रभेदनंद्रो जगती ८३ नासदासीदित्यस्य प्रजापतिः परमेष्ठी भाववृत्तिबिष्टुप्
 ८४ शास इत्येत्यस्य भारद्वाजः शासंद्रोनुष्टुप् ८५ ॥ इत्यनुवाकाष्टचाष्ट्यादयः ॥



॥ अथऋग्विधानम् ॥

श्रीवेदपुरषायनमः ॥ ॐ स्वयंभुवेब्रह्मणेविश्वगोप्तेनमस्कृत्वामंत्रग्रन्थस्तथैव ॥ विवक्षुरस्मृग्विधानंपुराणपुरादृष्टमृषिमित्रदृग्भिः ॥ १ ॥
मंत्रेभ्योमंत्रदृग्भ्यश्चसमाग्रायातुपूर्वशः ॥ कर्मणामृषिदृष्टानांविधिप्रोवाचशौनकः ॥ २ ॥ ऋषिभिर्विधिधामंत्रादृष्टादृष्टप्रयोजनाः ॥ प्रयो-
जनायचोदिष्टास्तास्मिन्प्रदर्शिताः ॥ ३ ॥ नानार्थानिचकर्माणिशांसिपुष्ट्याश्रयाणिच ॥ सिद्धयश्चतपोमूलाःश्रद्धानस्यङ्कुर्वतः ॥ ४ ॥
स्तुत्यादयोयेविकाराःप्रदिष्टास्तथार्थवादाऋक्षसूक्तेषुचैव ॥ यैर्यैःकर्मैर्ऋषिभिर्देवताश्चतुष्टयतेतान्छृणुष्वोच्यमानान् ॥ ५ ॥ आयुःस्वर्गो
द्रविणंसूनवश्चचतुर्विधंप्रोक्तमाशास्यमग्ने ॥ अन्येकामाःशतशःसंप्रदिष्टाःसंतुवद्भिर्ऋषिभिर्देवताश्च ॥ ६ ॥ सिद्धामंत्राविविधाब्राह्मणस्य
फलंयच्छंतिविधिवत्प्रयुक्ताः ॥ सत्यतेषांसाधनंसंयमश्चशमस्तिक्षानसूयादमश्च ॥ ७ ॥ तस्माद्विजःप्रशांतात्माजपहोमपरायणः ॥
तपस्यध्ययनेयुक्तोभवेद्भूतानुकंपकः ॥ ८ ॥ क्षत्रियोबाहुवीर्येणतरेदापदमात्मनः ॥ धनेनवैश्यःशूद्रस्तुजपहोमैर्द्विजोत्तमः ॥ ९ ॥ तप-
सास्वर्गमाप्नोतितपसाविदतेमहत् ॥ तपोयुक्तस्यसिद्ध्यंतिकर्मणिनियतात्मनः ॥ १० ॥ विद्वेषणंसंवन्नंविपन्नंरोगनाशनं ॥ येनयेनार्थमृ-
षिणायदर्थंदेवताःस्तुताः ॥ ११ ॥ ससकामःसमृद्धश्चतेषांतेषांतथातथा ॥ तानिकर्माणिवक्ष्यामिविधानिचकर्मणाम् ॥ १२ ॥ पुरश्च-
रणमादौतुकर्मणांसिद्धिकारकम् ॥ स्वाध्यायाभ्यसनस्यादौप्राजापत्यंचरेद्विजः ॥ १३ ॥ केशश्मश्रुलोभनखान्वापयित्वापुनःशुचिः ॥ तिष्ठे-
दहनिरात्रौतुशुचिरासीतवाग्यतः ॥ १४ ॥ सत्यवादीपवित्राणिजपेद्ब्राह्मणस्तथा ॥ ॐ क्रोधायास्तुताजह्यासावित्रींचतदित्युचम् ॥ १५ ॥
आपोहिष्ठेतिस्मृक्तंशुद्धवत्योऽधमर्षणम् ॥ शंवलःस्वस्तिमत्यश्चपावनान्यस्तथैवच ॥ १६ ॥ सर्वत्रैतत्प्रयोक्तव्यमादावंतेचकर्मणाम् ॥

आसहसादाशताद्वादशांतिमथवाजयेत् ॥ १७ ॥ अकारं व्याहृतीस्तिष्ठः सावित्रीमथवायुतम् ॥ तर्पयित्वा हि राचायान्निषींशं द्वांसि देवताः ॥ १८ ॥ प्रपद्येत विरूपाक्षरौद्रमंत्रगणजपम् ॥ अनार्थैर्न च भाषेत न शूद्रैर्नोपि गार्हितैः ॥ १९ ॥ नरजस्वलयानार्योपतितैर्नोत्यजैर्नृभिः ॥ अन्ते द्वादशरात्रस्य स्थालीपाकं प्रकल्पयेत् ॥ २० ॥ नमादृषिपुत्रविद्विष्टैर्नोवमन्येत कंचन ॥ मंगलाचारयुक्तः स्याद्विरहोभ्युदयादपः (?) ॥ २१ ॥ न स्य पतयेत्तथा जुमतेयेपि च ॥ २२ ॥ धन्वंतरय इत्यन्या गंधर्वाप्सरसामपि ॥ दशमी ब्राह्मणस्यापरातु ब्रह्मणे स्मृता ॥ २३ ॥ अवसा-
थाविष्णोरंत्यासौ विष्टकृत्यपि ॥ आज्याहुतय एवादौ स्थालीपाके हुते पुनः ॥ २४ ॥ हुत्वा धितर्पयेद्विद्वान्पितृभ्यश्च प्रकल्पयेत् ॥ २५ ॥ सरस्वत्यै त-
विधानेन शुचिर्भुजीत वाग्यतः ॥ २६ ॥ कृच्छ्राणामेष सर्वेषां विधिरुक्तोऽनुपूर्वशः ॥ ग्राजापत्यातिकृच्छ्रस्य तथा सांतपनस्य च ॥ ततः शेषं
पराकस्य च कृच्छ्रस्य विधिं चां द्रायणस्य च ॥ एकेन शुद्धिमाप्नोति द्वाभ्यां पापैः प्रमुच्यते ॥ २७ ॥ त्रिभिः सिध्यंति मंत्राश्च मुच्यते चोपपातकैः ॥ २८ ॥ तस्य कृच्छ्रेण सर्वाणि पापानि प्रतिबाधते ॥ २९ ॥ अष्टाभिर्देवताः साक्षात्पश्येत वरदास्तथा ॥ ३० ॥
चां द्रायणं सहाद्यंत मेभिः कृच्छ्रैः समं स्मृतम् ॥ ३१ ॥ पंचभिः पातकैः सर्वदुष्कृतैश्च प्रमुच्यते ॥ ३२ ॥ त्रिमिश्रां द्रायणैः पूतो ब्रह्मलोकं समश्नुते ॥ ३३ ॥ अष्टाभिर्देवताः साक्षात्पश्येत वरदास्तथा ॥ ३४ ॥ अमावास्यां भुजीत होषां द्राय-
॥ ३३ ॥ एकैकं प्रासम श्रीयाज्यहानि त्रीणि पूर्ववत् ॥ ३४ ॥ त्र्यहं चोपवसेदं त्यमतिकृच्छ्रं चरन् द्विजः ॥ ३५ ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम् ॥ एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रः सांतपनः स्मृ-
णो विधिः ॥ कुक्कुटांडप्रमाणं तु मासं कुर्याद्वत् द्वितः ॥ ३५ ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम् ॥ एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रः सांतपनः स्मृ-

तः ॥ ३६ ॥ एवमेतज्यह्यैतं महासांतपनं त्रिदुः ॥ उपवासस्तु समाहं शिशुसांतपनं स्मृतम् ॥ ३७ ॥ तप्तकृच्छ्रं चरन्विमोजलक्षीरघृतानि-
 लात् ॥ अतिज्यहंपिबेदुष्णान्सकृत्स्नायी समाहितः ॥ ३८ ॥ नियतस्तु बिदापः प्राजापत्यविधिः स्मृतः ॥ यतिकृच्छ्रं वदं त्येतद्रहसामपनो-
 दनम् ॥ ३९ ॥ यत्तात्मनोऽप्रभक्तस्य द्वादशाहभोजनम् ॥ पराकोनामकृच्छ्रो यस्य सर्वपापप्रणोदनः ॥ ४० ॥ एकैकं ह्रासयेत्पिण्डं कृण्वे शुद्धे च
 वर्धयेत् ॥ उपस्पृशंस्त्रिपवणमेतच्चान्द्रायणं स्मृतम् ॥ ४१ ॥ एतमेव विधिं कृत्स्नमाचरेद्यवमध्यमे ॥ शुक्लपक्षादिनियतञ्चरं चान्द्रायणव्रतम्
 ॥ ४२ ॥ चतुरः प्रातरभ्रीयाद्विप्रः पिण्डान्कृताह्निकः ॥ चतुरोऽस्तामिते सूर्ये शिशुचान्द्रायणं स्मृतम् ॥ ४३ ॥ अष्टावष्टौ समभ्रीयात्पिण्डान्म-
 ध्यं दिने स्थिते ॥ नियतात्मा हविष्यस्य यतिचाद्रायणव्रतम् ॥ ४४ ॥ यथाकथंचिपिण्डानातिस्त्रोऽशीतीः समाहितः ॥ मासेनाश्रन्दहविष्यस्य चं-
 द्रस्यैतिसलोकताम् ॥ ४५ ॥ एतदुद्रास्तथादित्यावसवश्चाचरन्व्रतम् ॥ सर्वकुशलमोक्षाय मरुतश्चतुर्भिः सह ॥ ४६ ॥ यावकः सप्त रात्रेण पा-
 तव्यो नियतात्मना ॥ स्थानासनत्रिषवणैर्जपतापावमान्युचः ॥ ४७ ॥ एकैकं सप्त रात्रेण पुनरिति विधिवत्कृतः ॥ त्वगस्तु निपशितास्थीनि मे दोभजा-
 नमेव च ॥ ४८ ॥ एकैकं सप्त रात्रं तु त्वगादीनां विशोधनम् ॥ एभिर्ब्रतैर्विपूतात्मा कुर्यात्कर्माण्यतं द्रितः ॥ ४९ ॥ इष्यन्कामांस्ततः सर्वानवाप्नो-
 तिनसशयः ॥ कणापिण्याकृतक्राणमैकैकं शोधनं भवेत् ॥ ५० ॥ शुद्धात्मा कर्मबुद्धीतसत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ एवं शुद्धस्य कर्माणि मंत्रैर्वक्ष्या-
 मितद्यथा ॥ ५१ ॥ त्रिरात्रमेवोपवसेदादितः सर्वकर्मणाम् ॥ त्रीणि नक्तानि वा कुर्यात्ततः कर्मसमारभेत् ॥ ५२ ॥ नित्यप्रयोगिणां चैव प्रयो-
 गादौ व्रतं ज्यहम् ॥ उपरिष्ठादुपवसेत्कृत्वा वासानि पातकम् ॥ ५३ ॥ आशुष्याण्येव कर्माणि मंत्रयुक्तः समारभेत् ॥ शंवलः स्वस्तिमस्त्यञ्जयेत्
 त्रिद्वताश्रुचः ॥ ५४ ॥ अरण्ये वोदिते सूर्ये दिशं प्राप्या पराजिताम् ॥ आचीमथोत्तरां वापिशुचौ देशे समाहितः ॥ ५५ ॥ सवासाः सशिरस्को-

मुखात्वाभ्युक्ष्यजपेद्विजः ॥ शुद्धवत्यस्तथांज्वलः पावमान्योऽधमर्षणम् ॥ ५६ ॥ एवं त्रिराष्ट्रत्यशुचिः प्राणायामान्समाचरेत् ॥ त्रीन्षडष्टौ
 द्वादशवाषोडशाष्टादशपिवा ॥ ५७ ॥ आशताद्वायमेवाणान्जपन्ब्रह्माधमर्षणम् ॥ यावद्दामनसस्तुष्टिस्तावत्प्राणान्समायमेत् ॥ ५८ ॥
 यथायथामनस्तस्य दुष्कृतं कर्म गृह्णीति ॥ तथा तथा शरीरं तत्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥ ५९ ॥ प्राणायामैर्दग्धदोषः शुक्लांबरधरः शुचिः ॥ यथाविध्य-
 पञ्चाचम्य आरोहेद्दर्मप्रस्तरम् ॥ ६० ॥ पवित्रपाणिः कृत्वा तूपस्थं वैदक्षिणोत्तरम् ॥ दिशो रेवांतरं प्रेक्ष्या निमिषं छाद्य च क्षुभी ॥ ६१ ॥ ऊँकारं
 व्याहृती स्तिष्ठः सावित्रीं च तदित्युचम् ॥ मनसैता अनुदुल्लवे दादिसमुपक्रमेत् ॥ ६२ ॥ मंद्रमेव पठेत्प्रातरुच्चैर्मध्यं दिने पठेत् ॥ सोमैरेवापरा-
 ह्णे तु संध्याकाल उपासयेत् ॥ ६३ ॥ ब्राह्मे सुहृते चोत्थाय त्रिराष्ट्रत्यपठेद्विजः ॥ मध्यमां वृत्तिमास्थाय न द्रुतानं विलंघिताम् ॥ ६४ ॥ पूर्वोत्त-
 रं ध्यायन् पंक्तिषु पासीत च पश्चिमाम् ॥ न चांतरा व्याहरेत् विरमेद्वाक्यं च न ॥ ६५ ॥ विरमेद्ब्राह्मणे प्राप्ते कामं तेन तु संवदेत् ॥ शृद्रं दृष्ट्वैव संप्राप्तना-
 सयुत्रं नियतः शुचिः ॥ संहिताफलमाप्नोति ऋग्वेदस्य न संशयः ॥ ६६ ॥ एकादशगुणं ह्येतज्जपन्ब्रह्म सनातनम् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति पापैश्च
 परिसुच्यते ॥ ६७ ॥ अनश्रन्संहितामेतां प्रातः प्रातर्दिने दिने ॥ आयुर्विधांधनं पुत्रान्गृहांश्चाप्नोत्यनामयात् ॥ ७० ॥ एतद्ब्रह्म जपन्शूद्रा-
 द्यादेव जप्यविधिः स्मृतः ॥ ७१ ॥ मंद्रं जपो दशगुण उपांशुः स्याच्छतान्वितः ॥ सहस्रं मानसं वि-
 देवैः सर्वब्रह्ममयी निचूत् ॥ उग्रं तपसा दृष्टा विश्वामित्रेण धीमता ॥ ७२ ॥ होमांश्च जपयज्ञांश्च नित्यं कुर्वीत चैतया ॥ सर्वकामसमृद्धयर्थं पर-

ब्रह्मदमुच्यते ॥ ७५ ॥ एषैवप्रतिलोमोक्तापच्छःशत्रुविनाशिनी ॥ अक्षरप्रतिलोमेयमभिचारेपुशस्यते ॥ ७६ ॥ अक्षरप्रतिलोमेयंयस्मि-
 न्युज्येतकर्मणि ॥ तदमोघंविजानीयादेतद्वैब्रह्मणोवलम् ॥ ७७ ॥ व्याघातकेध्वमसमिधोह्यक्षरप्रतिलोमया ॥ जुहुयात्सार्पणैतैलवैभीतक-
 कृतस्तुचः ॥ ७८ ॥ यइच्छेत्पीडनंशत्रोरपिवोचाटनंपुनः ॥ पच्छःसंपीडयेच्छत्रून्चणशश्चप्रमापयेत् ॥ ७९ ॥ इतिपरिभाषा ॥ १ ॥
 ऋग्वेदाद्यसूक्तस्यविधिबध्याम्यतःपरम् ॥ यथाऋषिर्भुच्छंदाःकर्मतेनाकरोत्पुरा ॥ ८० ॥ शिरसाधारयेदग्निनियतःपरिवत्सरम् ॥
 चतुर्यप्राणकालीयोहुतशिष्टमदन्हविः ॥ ८१ ॥ जुह्वित्रिरुपतिष्ठंश्चसत्यवादीदिनेदिने ॥ व्रतकालेतुसंप्राप्तेआग्रयंनिर्वपेच्चरम् ॥ ८२ ॥ अन-
 मोध्यानमात्रोऽभिर्व्रतांतेऽस्योपतिष्ठति ॥ दहेयमितियंचेच्छेतदहलेयवपावकः ॥ ८३ ॥ अप्सव्यग्निर्ज्वलेयवतद्रतस्यमहात्मनः ॥ समर्घय-
 तितंचैष्टैःकामैर्वह्निःप्रयत्नतः ॥ ८४ ॥ अतःपरंरुचाःसप्तवाय्वाद्यायेप्रकीर्तिताः ॥ तान्जपन्प्रयतो नित्यामिष्टान्कामान्समभुते ॥ ८५ ॥
 मेधातिथावृषौपुनःसदस्सपतिमित्युचम् ॥ मेधाकामोजपेन्नित्यंजुहुयाच्चाज्यमेतया ॥ ८६ ॥ स्योनेतिपृथिवीनित्यंस्नात्वाविप्रःशुचिर्जपेत् ॥
 विंदतेमहतीभूमिसंपत्तामकंटकाम् ॥ ८७ ॥ इदंविष्णुरितीमासिःपंचभिःश्राद्धकर्मणि ॥ अंगुष्ठमग्रेऽवगाह्येत्तेनरक्षांसिनाघते ॥ ८८ ॥
 अंगुष्ठमात्रोभगवान्विष्णुःपर्यटतेमहीं ॥ राक्षसानांवधार्यायतच्छूद्रेप्रहरिष्यति ॥ ८९ ॥ अक्षय्यंचभवेदन्नश्रद्धाभक्तिसमन्वितम् ॥ तस्मा-
 च्छूद्रेऽपुसर्वेष्वज्यंगुष्ठग्रहणंस्तुतम् ॥ ९० ॥ सप्तजन्मकृतं पापं कृत्वा चाभक्ष्यमक्षणम् ॥ तद्विष्णोरित्यपांमध्ये सकृज्जप्त्वा विशुध्यति ॥ ९१ ॥
 अंबयोर्यंतिथाःप्रोक्तानवर्त्तत्वाभिषेचनीः ॥ आयुष्यस्ताःपरिश्रोक्तोभैषज्यःपापमोचनीः ॥ ९२ ॥ शुनःशेषमृषिवद्धःसंनिरुद्धोथवाजपेत् ॥
 मुच्यतेसर्वपापेभ्योगदीचाप्यगदोभवेत् ॥ ९३ ॥ यइच्छेच्छाश्वतान्कामानिद्रात्प्राप्येपुरंदरात् ॥ सपोडशमिरेवर्गिभिरिंद्रंस्तूयादिनेदिने

॥ १४ ॥ हैरण्यस्तपद्रत्यसूक्तं कर्मोभिसंस्तवम् ॥ तज्जपन्प्रयतः शत्रूनयन्नायुतिवाध्यते ॥ १५ ॥ आकृष्णेनेत्यचात्वेवयोर्नित्यं सूर्यमर्चति ॥
 प्रातर्मध्येऽस्तगंवापिसजीवेदगदः सुखी ॥ १६ ॥ आकृष्णेनेत्यचं चैतांध्यायन्निशिदिवौकसः ॥ अग्नौ ह्रस्वतया चाज्यं दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥
 ण्वोजगावृषिः ॥ अध्वन्यमेतद्विज्ञेयं परिपश्यपसेधनम् ॥ १७ ॥ रौद्रीभिः षड्विंशानंतुष्टूयाद्योदिनेदिने ॥ सनारीसाहितः शांतिं शंकरात्प्रा-
 पुयात्सदा ॥ १८ ॥ एतेनैव पडर्चनं जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ चरुचकल्पयेद्द्रौं प्रूतिकामोऽथ पर्वसु ॥ १९ ॥ उदित्युद्यंतमादित्यमुपतिष्ठेद्दि-
 नेदिने ॥ हृद्रोगनाशनं ह्येतत्परमारोग्यवर्धनम् ॥ २० ॥ द्विषंतमित्यथार्धं यं द्विष्यात्तं जपन्सरेत् ॥ आगस्कृत्सप्त रात्रेण विद्वेषमधिगच्छति
 ॥ २१ ॥ रोगैर्गृहीतोरोगी च प्रस्कण्वस्योत्तमं वृचम् ॥ आरोग्यमेतत्प्रयतो जपेन्नित्यमनेकशः ॥ २२ ॥ उत्तमस्तस्य चार्धं चोद्विषद्वैव इति स्मृतः ॥
 अस्तं व्रजति सूर्ये तु द्विषंतं प्रतिवाध्यते ॥ ओजस्तेजस्तथारोग्यं द्विषद्वैव प्रकीर्तितम् ॥ २३ ॥ नवपथेति सूक्तानि या निगमे पराशरः ॥ अयातीनां
 हरेत्प्राणान्छत्रं चैव नित्यं च ॥ २४ ॥ सौपर्णं निपवित्राणि सूक्तान्येकादश अभ्यसेत् ॥ वाञ्छन् पुत्रान्पशून्विचं स्वर्गमायुरनंघताम् ॥ २५ ॥
 आध्यात्मिकीः कइत्येता जपंस्तु सुसमाहितः ॥ प्राप्नुयात्स परं धाम विधं ज्योतिः सनातनम् ॥ २६ ॥ आनोभद्रीयमायुष्यं वैश्वदेवं जपन्मुनिः ॥
 सुमूर्धुरपि जन्वैतदीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥ २७ ॥ पितॄणां श्राद्धकाले तु मध्विते तत्तृचं पठेत् ॥ अधोराः पितरस्तस्य विशंति ज्योतिरुत्तमम् ॥ २८ ॥
 त्वंसोमेति च सूक्तेन पश्येच्चंद्रमुपोदितम् ॥ उपतिष्ठेत्समिप्याणि मांसिमांसिनं वनवम् ॥ २९ ॥ तन्मांसं तस्य दुःखं हि न जातु निविधं भवेत् ॥ गौतमेन

पुरादृष्टं नृलो न शिनमात्मनः ॥ १४ ॥ उद्यंतमुपतिष्ठेत्तपूणे चैतत्समाहितः ॥ वासांस्तपिसर्विदेतचंद्रत्यैतिसलोकताम् ॥ १५ ॥ धनकामो
 जपेन्नित्यमेतादितिनित्यशः ॥ स्नात्वाशुचिस्तुनियतइष्टधनमवाप्नुयात् ॥ १६ ॥ आयुरीप्सन्निसमितिकौत्ससूक्तंसदाभ्यसेत् ॥ आभ्या-
 हुतीश्च जुहुयात्पूज्यतः शुचिः ॥ १७ ॥ जपेदाष्टलनियतः ससाक्षादापदंतरेत् ॥ अपनः शोशुचदिति स्नात्वा मध्यं दिने नवौ ॥ १८ ॥
 शुचिकामो जिताहारः प्रत्यूचं जुहुयाद्धृतम् ॥ समिधोऽन्वहमिष्टौ वासूक्तेतदधापहम् ॥ १९ ॥ यथा मुंजादिवेपीका तथा पापात्प्रमुच्यते ॥ जात-
 वेदसइत्यादिसदास्वस्त्यने जपेत् ॥ २० ॥ दुर्गे पथि प्रयातस्य नास्मारिभ्यो भयं भवेत् ॥ राजकार्ये ध्यूथे वा अमिशस्तोऽप्यने कथा ॥ २१ ॥
 अशक्तोऽप्रतिभार्कार्ये भये प्राणांति कैथवा ॥ जातवेदस इत्येतां जपं स्तोभ्यः प्रमुच्यते ॥ २२ ॥ सिपाधयि घुरर्थं तु प्रस्थितो मनसा जपेत् ॥
 सिद्धार्थः स्वस्तिमानेति प्रसीयेत न चाध्वनि ॥ २३ ॥ कृतार्थः स्वगृहान्गच्छेतामेव सदाभ्यसेत् ॥ उदिते सवितर्येतां जपेदस्तंगते तथा
 ॥ २४ ॥ अहः स्वस्त्ययनं प्रातारात्रिस्वस्त्ययनं निशि ॥ व्युष्टायां जपेन्नित्यमेतांदुःस्वप्ननाशिनीम् ॥ २५ ॥ प्रमंदिने प्रसूयं त्यं जपेद्भ-
 प्रमोचनीम् ॥ इंद्रं च मनसा ध्यायेन्नारीगर्भं प्रमुंचति ॥ २६ ॥ आपत्सु सर्वकामो वा त्रितं नित्यं जपेदपि ॥ जपन्नित्द्रमिति स्नातो वै श्वदेवं तु सप्तकम्
 ॥ २७ ॥ मुच्यते जुहुयादाज्यं विश्वसादेव सौऽहसः ॥ शंतातीयं परसूक्तं पंचविंशकमुत्तमम् ॥ २८ ॥ नासत्यौ तु नमस्कृत्य परासृद्धिमाप्नु-
 यात् ॥ धर्मसंस्तवनं सूक्तं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २९ ॥ इमा इति जपेच्छ्वद्वौ द्रसूक्तं द्विजः शुचिः ॥ आयुर्विधां धनं पुत्रान् गृहान् आश्रित्य ना
 मयान् ॥ ३० ॥ वीतेष्वपत्यगोष्ठेषु दुःस्वप्नेति ब्र(?) मात्मनः ॥ मानो महंतमित्याभ्यां त्रिरात्रोपोषितः शुचिः ॥ ३१ ॥ औदुंबरीश्च जुहुयाद-
 धिमन्वाज्यसंस्कृताः ॥ सूक्तेन जुहुयादाज्यमादावंते च कर्मणाम् ॥ ३२ ॥ ऊर्ध्वबाहुस्तुक्तेन तुष्टावशतशो भवम् ॥ छित्त्वा सर्वान् नृ-

लुपाशान्जीवेद्रोगैर्विवर्जितः ॥ ३३ ॥ तिष्ठनुद्यंतमादित्यंसमित्पाणिः शुचिः सदा ॥ चित्रमित्युपतिष्ठेत सूक्तेनानेन भास्करम् ॥ ३४ ॥
 अतिस्त्वनेन चैतेन नित्यं मध्यं दिनेरविम् ॥ गृणानोपो हते क्षिप्रं प्राप्नोति च धनं युषी ॥ ३५ ॥ अधः स्वप्नस्येति जपे प्रातः प्रातर्दिने दिने ॥ दुः स्वप्नं
 जुदते क्षिप्रं न चास्याभोजनाद्भयम् ॥ ३६ ॥ उभे पुनामीति परारिपुत्रयस्तु प्रकीर्तिताः ॥ ताजपन्हंति रक्षांसि सपत्नान् अनियच्छति ॥ ३७ ॥
 निवर्त्य पंचयज्ञांश्च हत्वा चाग्निं कृताहिकः ॥ ये देवा सो दिव्यं नयाजपन्कामानवाप्नुयात् ॥ ३८ ॥ इंद्रा विष्णु नमस्कृत्य विष्णोर्नुकमिति त्रिभिः ॥
 समित्पाणिः शुचिर्भूत्वोपतिष्ठेत्तु दिने दिने ॥ ३९ ॥ धर्मबुद्धिधनं पुत्रानारोग्यं धर्मवर्धनम् ॥ प्राप्नोति च परं स्थानं ज्योतीरूपं सनातनम् ॥ ४० ॥
 आततायिनमायांतं दृष्ट्वा व्याघ्रमथो वृकम् ॥ नमागरन्निजपंक्तेभ्य एव प्रमुच्यते ॥ ४१ ॥ त्रिरात्रोपोषितो रात्रौ जपेदासूर्यदर्शनात् ॥ आप्लु-
 त्यप्रयतः सौरीरुपतिष्ठेद्दिवाकरम् ॥ ४२ ॥ पश्यंति तस्करानै न न चान्ये पापवृत्तयः ॥ एकशतानि त्रायेत तस्करेभ्यश्चरन्पथि ॥ ४३ ॥ स्तेयं
 कृत्वा द्विजो मोहाद्विरात्रोपोषितः शुचिः ॥ सूक्तं जप्त्वा स्यादमीयं क्षिप्रमुच्येत किं स्विषात् ॥ ४४ ॥ ज्ञातिपुत्रसुहृन्मित्रैर्यश्च राज्यां चिकीर्षति ॥
 नित्यं स नियतो भूत्वा सूक्तं तु मनाजपेत् ॥ ४५ ॥ कया शुभेति पैशुन्यं कृत्वा चार्थं नृपद्विजैः ॥ शुत्वा परं रहस्यं तु गुरोरप्याह शौनकः ॥ ४६ ॥
 इमं नु सोममित्येते द्वे ऋचौ प्रयतो जपेत् ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति किं चित्पातकं भवेत् ॥ ४७ ॥ पितुं न्वित्युपतिष्ठेत नित्यं मन्त्रमुपस्थितम् ॥ पूज-
 येदश न नित्यं मुंजीयाद्विष्णुस्सितम् ॥ ४८ ॥ नास्य स्यादज्ञो व्याधिर्विषमप्यन्नतामियात् ॥ विषं च पीत्वैतत्सूक्तं जपेत् विपनाशनम् ॥ ४९ ॥
 नावाग्यतस्तु मुंजीत नाशुर्चिर्न जुगुप्सितम् ॥ दद्याच्च पूजयेद्दिवजुह्याद्य शुचिः सदा ॥ ५० ॥ क्षुद्रयं नास्य किंचित्स्यान्नाज्ञं व्याधिमाप्नुयात् ॥
 उत्पथ्य प्रतिपन्नो यो भ्रष्टो वापि पथः क्वचित् ॥ ५१ ॥ पंथानं प्रतिपद्येत् कृत्वा वाकर्म गार्हितम् ॥ अग्नेन येति सूक्तेन प्रत्यृचं जुहुयाद्भृतम् ॥ ५२ ॥

जपंश्चप्रयतो नित्यमुपतिष्ठेत्तचानलम् ॥ स्नात्वाजपेदनवर्णनमस्त्यस्यबृहस्पतिम् ॥ ५३ ॥ वीरान्धनंचप्राप्नोतिसुश्लोक्यांकीर्तिमुच्छति ॥
कंकतो नोति यत्सूक्तं विपार्तः प्रयतो जपेत् ॥ ५४ ॥ विपनं क्रमते चास्य सर्पाहृष्टि विपादपि ॥ यत्कीटल्लासु विषं दंष्ट्रिवृश्चिकजं चयत् ॥ ५५ ॥
मौलं च कृत्रिमं चैव जपन्सर्वव्यपोहति ॥ धर्मबुद्धिं धनं पुत्रान्त्वौभाग्यं धनवर्धनम् ॥ ५६ ॥ आरोग्यं पुष्टिमायुष्यं पशून्विधांसहये शः ॥ त्रिरात्रो-
पितः स्नातः प्रयतश्चरितव्रतः ॥ ५७ ॥ प्राणायामशतं कृत्वोपतिष्ठेत्तशतक्रतुम् ॥ एकाहं करसंयुक्तः पादौ संधाय वागयतः ॥ ५८ ॥ योजातइ-
तिसूक्तेन ऋषिगृत्समदं सरन् ॥ शतकृत्वोजपेदिन्द्रमिन्द्रश्रेष्ठानि चांततः ॥ ५९ ॥ एकाहाह्नमते विचिं ब्यहस्तिस्त्रिंशत्तमाम् ॥ अहोमि-
स्त्रिभिरारोग्यं चतुर्भि रशनं बहु ॥ १६० ॥ पंचभिर्ब्रह्मवर्चस्यं बडिरायुः सुखावहम् ॥ सप्तमिस्तनयान्पुष्टिमष्टभिः प्राप्नुयात्सदा ॥ ६१ ॥
प्रियो भवति चैन्द्रस्य प्रियं धाम सगच्छति ॥ रिपुघ्नं दंष्ट्युशमनं रायस्पोषकरं परम् ॥ ६२ ॥ गणानामिति यत्सूक्तं तज्जपेत्सुखे वर्धनम् ॥ संध्ययोः
प्रयतस्त्वेतज्जपेन्नित्यं बृहस्पतिम् ॥ ६३ ॥ उपतिष्ठेत्सूक्तेन सर्वकामसमृद्धये ॥ यो मे राजन्नितीमां तु दुःस्वप्नशमनी मृचम् ॥ ६४ ॥ जप्त्वा ना-
शयति क्षिप्रं दुःस्वप्नं ब्राह्मणः शुचिः ॥ अहोरात्रमुपोष्यैकं नित्यतो ब्रह्मवित्तमः ॥ ६५ ॥ प्रजार्थं जुहुयादाव्यं चरुं वापयसि श्रुतम् ॥ राकामहमि-
तीमाभिः शृङ्खलाशुक्लस्य पंचभिः ॥ ६६ ॥ हविः शेषं स्वयं प्राशय विंदते महतीं प्रजाम् ॥ व्याघ्रिना योऽभिभूतः स्याद्द्वारेण प्राणहारिणा ॥ ६७ ॥
चतुर्दशीमुपोष्यैकां कृष्णस्य जुहुयाच्चरुम् ॥ आते सूक्तेन रौद्रेण प्रत्यृचं वागयतः शुचिः ॥ ६८ ॥ पूर्वमाज्याहुतीं हुत्वा अथोपस्थायांशं करम् ॥
हविः शेषेण वर्तेत एकांतरं सतं द्रितः ॥ ६९ ॥ पूर्णमासि जयेन्मृत्युरोगेभ्यश्च प्रमुच्यते ॥ अमिश्रयेत यो मोहात्कुर्याद्वाकर्म गार्हितम् ॥ १७० ॥
स्नात्वा शुंजन् जपेद्दमुधं वीत्युचमंतं द्रितः ॥ अश्वनिप्रस्थितो यस्तु पश्येच्छकुनिमुत्थितम् ॥ १७१ ॥ अप्रशस्तं प्रशस्तं वा स्थित्वेदं प्रयतो जपेत् ॥

कनिक्कद्विस्तृत्ताभ्यामुपतिष्ठेत्कृतस्वरम् ॥ ७२ ॥ शकुर्निवायसंवापिमृगदंष्ट्रिणमेववा ॥ अथहृष्टवृजस्रव्यमेतत्तत्करमोहनम् ॥ १७३ ॥
 इत्यृग्विधानेग्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ कल्याणवादीवान्योवानवारौतिनदृश्यते ॥ जपेदेवनमस्कृत्यसिद्धार्थःसनिवर्तते ॥ १७४ ॥
 नतस्यास्तिभयंकिंचिद्विद्वद्भ्योऽध्वनिनक्वचित् ॥ तस्यपिचदुर्गाणिस्वस्तिमांश्चसुखीभवेत् ॥ ७५ ॥ यस्यमुक्तंनजीर्थेतनतिष्ठेद्व्याकथंचन ॥ १७४ ॥
 ध्यात्वासोऽन्तरमन्नस्याप्यग्निरस्मीत्युचंजपेत् ॥ ७६ ॥ विश्वामित्रस्यसंवादनद्यतिक्रमणेजपेत् ॥ आप्लुत्याचम्यविधिवदुदकस्यांजलिंक्षिपेत् ॥ ७७ ॥ नमःस्वव्रज्यइत्येतद्योनित्यंहिसमाचरेत् ॥ तंनद्यःस्रोतसःपांतिस्वंपुत्रमिवमातरः ॥ ७८ ॥ भयंचास्यनविद्येतनदीतीरेवनेष्वपि ॥
 जलचरेभ्योभूतेभ्यःशीतोष्णैर्नचवाष्यते ॥ ७९ ॥ पूर्णांतितीर्षुःसरितरंमच्चमितिसंस्मरेत् ॥ ओष्वित्यूचमपांमध्येजपेद्योवैनदीतरन् ॥ १८० ॥ सद्गीघ्रंतीरमाप्नोतिगांधवाविंदतेद्विजः ॥ युक्तैर्नवरथेनाशुयोपांपारंतितीर्षति ॥ ८१ ॥ उद्वृज्मिरितीमांजुजपेतनियतःस्वयम् ॥
 अध्वानंप्रस्थितश्चैवमामद्रैरितिसंस्मरेत् ॥ ८२ ॥ कार्याण्यशेषतःकृत्वापुनरायातिवैगृहम् ॥ अदातारंसुपुष्टार्थसर्वदाविष्टचेतनम् ॥ ८३ ॥
 हत्वातद्धनमन्विच्छन्किंतेकृण्वंत्युचंजपेत् ॥ इन्द्रापर्वतेतिसूक्तमायुष्यद्राविणंस्तुतम् ॥ ८४ ॥ वार्गिन्द्रियप्रमूढोयोनविद्यांप्रतिपद्यते ॥ ८५ ॥
 यार्थान्यथार्थान्वायोनोवोत्तिकथंचन ॥ ८५ ॥ विद्यावाधितायस्यप्रणश्येतपुनःपुनः ॥ ससर्परीर्क्षचौजस्वाद्वामासौप्रतिपद्यते ॥ ८६ ॥
 अनसासंप्रयातस्तुस्थिरौगावावितिस्मरेत् ॥ चतस्रःकुशलेनैतिसिद्धार्थःस्थिरयानगः ॥ ८७ ॥ यानाक्षमपमंगंतदृष्ट्वाहुर्गपथिद्विजः ॥
 अभिव्यस्येतिजपेद्वचमक्षवलंदधत् ॥ ८८ ॥ कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांत्रिरात्रोपोषितःशुचिः ॥ इक्षिणप्रवणेदेशेऽश्मशानस्थःसमाहितः ॥ ८९ ॥
 रक्तोष्णीव्यसिपाणिश्चैवैत्वंकैध्मोऽनिलाशनः ॥ सप्ताहंजुहुयात्तैलंसार्वपलवणान्वितम् ॥ १९० ॥ समिधोराजवृक्षस्यवसिष्ठेविणीःपठन् ॥

यं द्विष्यन्तस्य कृत्वा तु शम्या केनाच्छतिं निशि ॥ ९१ ॥ अधिष्ठाय च तं कुर्व्याद्दृग्भिरश्रुतस्मिर्द्विजः ॥ उद्दिश्य नाम होमोयं स प्ररात्रं न जीवति ॥ ९२ ॥
 वसिष्ठानां तोहं तिब्रह्मतल्लुशि कोदितम् ॥ नास्य कश्चिद्वद्व्योऽस्ति जपतो जुह्वतोपि वा ॥ ९३ ॥ द्वाविंशकं जपेत्सूक्तमाध्यात्मिकमनुत्तमम् ॥
 पर्वसु प्रयतो नित्यमिष्टान्कामान्समश्नुते ॥ ९४ ॥ बृहस्पतिमजाश्वं सवितारं वभ्रुमेव च ॥ ऋतावृतौ दिनेदिनेत्यृचैः पंचमिरन्वहम् ॥ ९५ ॥
 बृहस्पत इति पंचाहं प्रत्यृचं जुहुयाद्भूतम् ॥ हुत्वा भिमर्चयित्वा तु गंधमाल्यैः सुधूपकैः ॥ ९६ ॥ एतावदेव ताः पंचकामैरर्चयति पंचमिः ॥ रत्नैरपत्यैः
 पशुभिर्मखैर्दोषेण चायुषा ॥ ९७ ॥ अथ वेदादिगीतायाः प्रसारं जननं विधिम् ॥ गायत्र्याः संप्रवक्ष्यामि धर्मकामार्थमोक्षदम् ॥ ९८ ॥ निलेनै-
 मित्तिके काम्ये त्रितये तु परायणम् ॥ गायत्र्याश्च परं नास्ति इह लोके परत्र च ॥ ९९ ॥ मेध्यान्नमितमुद्धौ नीत्रिः क्षानार्चनतत्परः ॥ जपे लक्षत्र-
 गंधीमाननन्यमानसक्रियः ॥ १०० ॥ कर्ममिर्यो जयेत्पञ्चात्कमशः स्वेच्छयापि वा ॥ यावत्कार्यं न कुर्वीता वल्लुपेन्न तद्भूतम् ॥ १ ॥ आदित्य-
 स्योदये स्नात्वा सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं धनं चलमतेष्टु वम् ॥ २ ॥ त्रिरात्रोपोषितः सम्यग्भूतं हुत्वा सहस्रशः ॥ सहस्रं लाभमाप्नो-
 तिराहुसूर्यसमागमे ॥ ३ ॥ पालाशसमिधांचैव घृताक्कानां हुताशने ॥ सहस्रं लाभमाप्नोति राहुसूर्यसमागमे ॥ ४ ॥ हुत्वा तु खादिरं वह्नौ स-
 धृतं रक्तचंदनम् ॥ सहस्रं ह्येव चाप्नोति राहुचंद्रसमागमे ॥ ५ ॥ रक्तचंदनमिश्रं तु सधृतं हव्यवाहने ॥ हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्रं गोधनं द्विजः
 ॥ ६ ॥ यस्यास्तु गौर्गोमेन गुट्टिकानां सहस्रशः ॥ हुत्वा तां गमवाप्नोति घृताक्कानां हुताशने ॥ ७ ॥ यवैरथां स्तिलैर्गैर्जान्महिषीर्यावकैस्त-
 था ॥ शालिवंडुलहोमेन कन्यालाभमवाप्नुयात् ॥ ८ ॥ जातीचंपककर्ककुसुमानां सहस्रशः ॥ हुत्वा वस्त्राण्यवाप्नोति घृताक्कानां हुताशने
 ॥ ९ ॥ सूर्यबिंबे जलमध्ये तोयं हुत्वा सहस्रशः ॥ सहस्रं प्राप्नुयाद्धैर्मरौष्यभिर्दुमये हुते ॥ १० ॥ अलक्ष्मीपापसयुक्तो मलव्याधि विनाशकैः ॥

मुच्येत्सहस्रजनेनस्त्रायाद्यस्तुजलेनैव ॥ ११ ॥ यादिशंसजनेनलोष्टेनसंप्रचारेत् ॥ चौराग्निमारुतोत्यानिभयानिनभवंतिवै ॥ १२ ॥
 क्षीराहारो जपेल्लक्षमपसृत्युन्व्यपोहति ॥ घृताशीप्राप्तुयान्यन्मेधांयहुविद्वानसंचयम् ॥ १३ ॥ हुत्वावेतसपत्राणिघृताक्तानिहुताशने ॥ लक्षाद्व-
 र्पापयदेवंसर्वभौमंनसंशयः ॥ १४ ॥ लक्ष्णेणभस्महोमस्यकृत्याहुत्तिष्ठतेजलात् ॥ आदित्याभिमुखःस्थित्वानाभिमात्रेजलेशुचिः ॥ १५ ॥
 तिलानालक्षहोमेनघृताक्तानांहुताशने ॥ सर्वकामसमृद्धात्मापरंस्थानमवाप्नुयात् ॥ १६ ॥ यवानालक्षहोमेनघृताक्तानांहुताशने ॥ सर्वका-
 मसमृद्धात्मापरंस्थानमवाप्नुयात् ॥ १७ ॥ घृतस्थाहुतिलक्ष्णेणसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ पंचगव्यांशनोर्लक्षंजपन्जातिस्सरोभवेत् ॥ १८ ॥
 तदेवह्यनलेहुत्वाप्राप्नोतिबहुशोधनम् ॥ अन्नाद्यहवनाग्नित्यमन्नाद्यंचभवेत्सदा ॥ १९ ॥ जुहुयात्सर्वसाध्यानामाहुत्ययुतसंख्यया ॥ रक्त-
 सिद्धार्थकान्हुत्वासर्वान्साधयतेरिपूम् ॥ २० ॥ लवणंमधुसंयुक्तंहुत्वासर्ववशीभवेत् ॥ हुत्वातुकरवीराणिरक्तानिजनयेज्ज्वरम् ॥ २१ ॥
 हुत्वावैभीतकं तैलं देशदेवप्रचारेत् ॥ हुत्वातुर्निवपत्राणिविद्वेपंजनयेन्नृणाम् ॥ २२ ॥ रक्तानांतंडुलानांतुघृताक्तानांहुताशने ॥ हुत्वावल-
 मवाप्नोतिशत्रुभिर्नसजीयते ॥ २३ ॥ प्रत्यानयनसिद्ध्यर्थमधुसर्पिःसमन्वितम् ॥ गव्यंक्षीरंप्रदीप्तेभौजुह्वतस्तत्प्रशाम्यति ॥ २४ ॥ ब्रह्मचा-
 रीमिताहारीयःसहस्रत्रयंजपेत् ॥ संवत्सरेणलभतेधनैश्वर्यनसंशयः ॥ २५ ॥ शमीवित्त्वपलाशानामर्कस्यतुविशेषतः ॥ पुष्पाणांसभिधां
 चैवहुत्वाहेममवाप्नुयात् ॥ २६ ॥ अत्रह्रज्यंबकदीनांयस्यायतनमाश्रितः ॥ जपेल्लक्षंनिराहारःसतस्यवरदोभवेत् ॥ २७ ॥ वित्वानाल-
 क्षहोमेनघृताक्तानांहुताशने ॥ परांश्रियमवाप्नोतियदिनअणूहाभवेत् ॥ २८ ॥ पद्यानांलक्षहोमेनघृताक्तानांहुताशने ॥ प्राप्नोतिराज्यम-
 खिलमसपत्नमकंटकम् ॥ २९ ॥ पंचविंशतिलक्ष्णेणदुधिक्षीरघृताशनः ॥ स्वदेहेसिद्ध्यतेजंतुःकौशिकस्यमंतयथा ॥ ३० ॥ एकहंपंच-

नन्वाग्नीषोमं गङ्गां रुनाञ्जनः ॥ एकाहं ब्रह्मणा त्वाशीगायत्री जप उच्यते ॥ ३१ ॥ शतेन गायत्र्या त्वात्वा शतमंतर्जले जपेत् ॥ शतेनापस्ततः
 पीत्वा नर्मपथैः प्रगुच्यते ॥ ३२ ॥ गोत्रः पितृत्रो मातृत्रो ब्रह्महा गुरुतत्पगः ॥ सुवर्णरत्नहारी च यश्च विप्रः सुरां पिवेत् ॥ ३३ ॥ अयाज्यया-
 नं कृत्वा कुर्यात्पुनः कर्म गतिं न ॥ न मीदेत्प्रतिगृह्णानो महीमपि ससागराम् ॥ ३४ ॥ ये चास्य दुःस्थिता लोके प्रहाः सूर्यादयो भुवि ॥ ते यांति सौम्य-
 तां यैर्जिप्रायेति न संशयः ॥ ३५ ॥ कृणुन्नेति जपन्सूक्तं रथो ब्रह्मसुमिर्वृतः ॥ अरातीनां हरेत्प्राणान् रक्षां स्यपि च नाशयेत् ॥ ३६ ॥ उपतिष्ठेत्तयो-
 रग्निपरीन्युतादिने दिने ॥ तं रश्मिस्त्रयं वृद्धिर्धियतो विथतो मुरः ॥ ३७ ॥ को अयेति तु सूक्तेन यो नित्यं शक्तिमर्थेति ॥ जपेद्वाथ न मरुकारैः श-
 न्तिनोऽरुणो ररात् ॥ ३८ ॥ त्वयेति वामदेव्ये न कुर्यात्स्वस्त्ययनं निदिशि ॥ जपेद्वा संधिवेला सुब्रह्मो तत्कुशिको दितम् ॥ ३९ ॥ हंसः शुचिपदित्यु-
 राशुपि निक्षेपिवाहम् ॥ अंतर्जले जपन्नेति त्रयणः सप्तशान्धतम् ॥ ४० ॥ कृषिं प्रपद्यमानस्तु स्यालीपाकं यथाविधि ॥ जुहुयात्क्षेत्रमध्येतु शु-
 नं त्रात्रानुगं नभिः ॥ ४१ ॥ यथा लिङ्गं तु विहरेद्वा गलं च कृषीवलः ॥ इन्द्राय च मरुद्भ्यश्च पर्जन्याय भगाय च ॥ ४२ ॥ पूज्णे धान्याय सीतायै
 शुनागौ रमाथो चरम ॥ गुह्या तु पुत्र्ये ता नित्यजे देनाश्च देयताः ॥ ४३ ॥ गंधमात्यो पद्महारेश्च फललाजा सुरासवैः ॥ प्रलापने प्रणयने खलसीतो प-
 दारयोः ॥ ४४ ॥ त्वागुत्र च पेत्रियं देयता विधिना शुचिः ॥ अमोत्रं कर्म भवति कृषिर्वर्धति मर्वदा ॥ ४५ ॥ क्षेत्रस्य पतिनेत्येतत्क्षेत्रपत्यं च
 त्रयेण ॥ क्षेत्रं सूत्रं द्विजो नित्यं ॥ इत्ते श्रेष्ठमुत्तमम् ॥ ४६ ॥ आरुह्ये पुत्रं च रुणाय जेदेता नमूकान् ॥ चित्रद्रुजैस्त्यनयास्तुत्वा चाशुपतिं सदा
 ॥ ४७ ॥ तान् ग्रन्थो गेयं गतीनां गायै रभोजयेत् ॥ अग्रगत्तः शान्तिपरः स्वयमेव कृषिं ब्रजेत् ॥ ४८ ॥ भूमिभंगे गवाहिं सातृण कीटादि-
 नानामग ॥ ऋते पुनः कृपां गन्तव्यं तेन युजति ॥ ४९ ॥ दान्यानां विशं भगं भोत्रिगेभ्यो निवेदयेत् ॥ विशं कृषादि रानेन कृषिदोषात्प्रमु-

च्यते ॥ २५० ॥ समुद्राद्वितिसूक्तेनयः सदा जुहुयाद्धृतम् ॥ पूर्वोक्तैर्नैव कल्पेन संयतात्मा जितेन्द्रियः ॥ ५१ ॥ विज्योतिषेति ज्वलेद्यन्त्रे-
च्छेज्जातवेदसि ॥ तमग्निः सर्वतः पाति मन्त्रेण द्रविणेन च ॥ ५२ ॥ विश्वानि न इति द्वाभ्यामृग्यां यो वह्निमर्चति ॥ सतरत्यापदः सर्वायशः
त्वं चातुपमं महत् ॥ ५३ ॥ हुत्वा वह्निमुपस्थाप्य प्राणार्थं हव्यवाहनम् ॥ अमेत्वमितिसूक्तेन धनमायुश्च वांछता ॥ ५४ ॥ यइच्छेद्विविधं वित्तं स-
न्यतः ॥ ५५ ॥ उच्छिष्टं च प्रदातव्यं भायार्थं पुत्रमिच्छता ॥ धेन्वाः सरूपवत्सायाः पयसा साधयेच्चरुम् ॥ ५७ ॥ अनुरूपं प्रजामस्यालभते ना-
त्र संशयः ॥ स्वस्त्यात्रेयं जपेन्नित्यं प्रातः प्रातः शुचिर्द्विजः ॥ ५८ ॥ एतत्स्वस्त्ययनं पुण्यं सर्वकल्मषनाशनम् ॥ सुहृदं ज्ञातिजैश्चैव गच्छतमनुमं-
त्रयेत् ॥ ५९ ॥ स्वस्ति पंथा मिति प्रोच्य स्वस्तिमान्त्रजतेऽध्वनिः ॥ विजिहीर्ष्व न स्पतेत दिदं व्यावनस्मृतम् ॥ ६० ॥ यज्ञ्यावयितुकामः स्याज्ज्याव-
॥ ६२ ॥ उदकं च्यावयेन्नैव गर्भोऽधक्यवते सुखम् ॥ अच्छावदेतिसूक्तं तु दृष्टिकामः प्रयोजयेत् ॥ ६३ ॥ निराहारः क्षिन्नवासा ह्यचिरेण प्रवर्षति ॥
हुत्वा युतं वैतसीनां क्षीराक्तानां हुताशने ॥ ६४ ॥ महद्वर्षमवाप्नोतिसूक्तेनाच्छावदेन हि ॥ यइच्छेद्वरदां देवीं श्रियं नित्यं कुले स्थिताम् ॥ ६५ ॥
सशुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाल्यमन्वहम् ॥ श्रियः पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ ६६ ॥ आवाहयेच्छ्रियं पद्मे पंचभिः क(न)न्यके पिवा(?) ॥
उपहारानुपहरेच्छुक्लान् भक्ष्यान्पयोदधि ॥ ६७ ॥ स्थालीपचित्तशालीनां पयसा संप्रकल्पयेत् ॥ चांद्रायणकृतात्मा तु प्रपद्येत यतः श्रियम् ॥ ६८ ॥
सर्वाषधीभिः फांताभिः स्नात्वा द्विः पावनैरपि ॥ उपैतुमां देवसख इति राज्ञोऽभिपेक्षनी ॥ ६९ ॥ मनसः काममित्येषापशुकामाभिपेक्षनी ॥ कर्दमेने-

तियः स्नायात्प्रजाकामः शुचित्रतः ॥ २७० ॥ अथ पूर्वमिति स्नायाद्राज्यकामः शुचित्रतः ॥ लोहिते चर्मणि स्नायाद्राष्ट्राणस्तु यथाविधि ॥ ७१ ॥
 राजकर्मणिवैयात्रेक्षत्रियस्त्वथरौरेवे ॥ वस्तचर्मणि वैश्यस्तु होमः श्रार्थस्त्वनंतरम् ॥ ७२ ॥ चंद्रमिति तु पद्मानि जुहुयात्सर्पिषा द्विजः ॥ आदि-
 त्यवर्ण इत्यनया बिल्वहोमो विधीयते ॥ ७३ ॥ बिल्वेष्म एव अग्निः स्यात्स्थालीश्वर जुहुया द्विजः ॥ दशसाहस्रिको होमः श्रीकामः प्रथमो विधिः
 ॥ ७४ ॥ हुत्वा तु प्रयुतं सम्यगनंतां विदत्ते श्रियम् ॥ अयुतं शतं कृत्वस्तु हुत्वा शुक्लानि सर्पिषा ॥ ७५ ॥ अनंतामव्यवच्छिन्नां शश्वतीं विदत्ते
 श्रियम् ॥ अशकौजप एवोक्तो दशसाहस्रिकावरः ॥ ७६ ॥ जस्वा तु प्रयुतं सम्यगनंतां विदत्ते श्रियम् ॥ अयुतं शतं कृत्वस्तु जस्वा श्रियमुपाश्रुते
 ॥ ७७ ॥ अप्सवे जुहुयात्त्रितयं पद्मान्ययुतशो निशि ॥ दध्ना श्रियं तूपरमेत्किलासत्वा द्विभेतवै ॥ ७८ ॥ बिल्वाशी विल्वनिलयो जुह्वन्वित्वा नि स-
 र्पिषा ॥ एकविंशतिरात्रेण परां सिद्धिं नियच्छति ॥ ७९ ॥ येन येन च कामेन जुहोति प्रयतः श्रियै ॥ पद्मान्यथापि बिल्वानि ससकामः समृद्ध्यति
 ॥ २८० ॥ न जातु कृपणोऽर्थया श्रियमावाहयेत्कचित् ॥ न यत्किंचन कामेन होमः कार्यः कथंचन ॥ ८१ ॥ महद्वा प्रार्थ्यमानेन राज्यकामेन वा
 पुनः ॥ वाचः परंप्रार्थयिता यन्नाद्युक्तः श्रियं यजेत् ॥ ८२ ॥ अमेत्वष्ट्रं च सूक्तेन जुहुयाद्राज्यमन्वहम् ॥ ओजस्विनीमवाप्नोति प्रजाधर्मवती शुभां
 ॥ ८३ ॥ अच्छान इत्युच्चादीं सुपतिष्ठे द्विभावसुम् ॥ प्रजां प्राप्य जयेच्छत्रूंस्तरेदुरिता निच ॥ ८४ ॥ आगाव इति सूक्तेन गोत्रगालोकमातरः ॥
 उपतिष्ठेद्भ्रजं तीक्ष्णय इच्छेत्ताः सदा क्षयाः ॥ ८५ ॥ त्वामिच्छीति प्रगायेन ह्युपतिष्ठेच्छतं क्रतुम् ॥ मध्याह्ने संध्योश्चैव जपन्धनमवाप्नुयात् ॥ ८६ ॥
 उपेति तिसृमीराद्गोदुंदुभीन्सस्पृशेद्गणे ॥ ओजो बलमवाप्नोति शत्रूंश्चैव नियच्छति ॥ ८७ ॥ पाणिना तुणमादाय यज्ञाय ज्ञेति योऽभ्यसेत् ॥
 सोऽधीतस्यास्य सूक्तस्य फलं प्राप्नोति नाटुणः ॥ ८८ ॥ सूक्ता ते च वृणंस्त्वमा विरिणे चोदके पिवा ॥ निक्षिपेत्तस्य ज्ञेन त्यक्तेऽन्यत्र भयावहम् ॥ ८९ ॥

एणपाणिजपन्सूक्तं रक्षोर्द्रं दस्युभिर्दृतः ॥ नभयं विदते किंचिद्रक्षोभ्योऽरिभ्य एव च ॥ २९० ॥ गृहात्प्रपद्यमानस्तुपंथानंधनकाम्यया ॥ जपे-
 त्सोच्चनियत्नेन नापि पंथासि तिज्जन् ॥ २९१ ॥ थेके च जमेत्यृचं त्वेतां व्यायन्निशि दिवौ कसः ॥ अग्नौ हुत्वा तया चाज्यं दीर्घमायुरवाप्नुयात् ॥ २९२ ॥
 वयसु त्वेति सूक्तं तु पौष्णं द्विणवर्धनम् ॥ नित्यं जपेच्छुचिर्भूत्वा यनं विदत्यभीप्सितम् ॥ २९३ ॥ यत्नं प्रभवेत्किंचिद्रव्यं गोद्विपदं धनम् ॥ नश्ये-
 द्वाच्चनियोमो हात्संपूषन्सजपेन्निशि ॥ २९४ ॥ इयमित्येतदाद्यंतं सूक्तं सारस्वतं द्विजः ॥ नित्यं जपेच्छुचिर्भूत्वा वाग्मी भवति बुद्धिमान् ॥ २९५ ॥
 संवामिति तु यत्सूक्तमष्टर्चैर्गुप्तं भक्तम् ॥ तज्जपन्प्रयतो नित्यमिष्टान्कामान्समश्नुते ॥ २९६ ॥ यो अद्रिभिस्तु यत्सूक्तं तत्सपत्ननिबर्हणम् ॥ २९७ ॥
 नमस्कृत्वा सपत्नान् स्तुते बहून् ॥ २९८ ॥ एनस्वीवाभि शस्तो वाकृत्वा कर्म विगर्हितं ॥ सोमार्द्रं जपेत्सूक्तं कृत्स्नमेनो व्यपोहति ॥ २९९ ॥ बृहस्पतिं
 स्याविर्विद्यथालिगमवेक्ष्य वै ॥ ऋग्भिः कर्माणि कुर्वीत स्वस्यांगानां यथा विधि ॥ ३०० ॥ यमेव देशं गच्छेत्तशत्रून्वाप्यनुमंत्रितः ॥ नाजित्वा विनिवर्तेत परं हि ब्रह्मणो बलम् ॥ ३०१ ॥ जीमूतसूक्त-
 असदृशानुमंत्रयेत् ॥ ३०२ ॥ यमेव देशं गच्छेत्तशत्रून्वाप्यनुमंत्रितः ॥ नाजित्वा विनिवर्तेत परं हि ब्रह्मणो बलम् ॥ ३०३ ॥ सर्वाण्यंगानि रक्ष्या-
 दव्ययं सुखम् ॥ सोमं निरुदति सूक्तेन जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ ३०४ ॥ प्राग्रथेयानिभिः सूक्तैः संध्ययोरर्जपमारभेत् ॥ ३०५ ॥ पुत्रानापुरथारोग्यं य इच्छे-
 क्षयम् ॥ ३०६ ॥ अभित्वायः प्रगाथेन नित्यमर्चति वज्रिणम् ॥ सश्रियं विपुलं मुंक्ते प्राप्नोति च धनायुषी ॥ ३०७ ॥ शंवतीः शनद्वद्राग्नी इत्येतां सततं जपेत् ॥ न-
 रक्षोभ्यो न भूतेभ्यो व्याधिभ्यो न भयं भवेत् ॥ ३०८ ॥ निर्वेष्टु कामो रोगातो भगसूक्तं सदाभ्यसेत् ॥ निवेशं विदते क्षिप्रं रोगेभ्यश्च प्रमुच्यते ॥ ३०९ ॥ इमा इति-
 जपेन्नित्यं रौद्रं सूक्तं द्विजः शुचिः ॥ तज्जपन्प्रजया विचैः स्वयंचैव त्रिरिष्यति ॥ ३१० ॥ जत्तितीर्षुरथो यस्तु शंकेत्सोलाः समागमे ॥ समुद्रज्येष्ठा इत्येतज्जपे-
 त्सूक्तं भयापहम् ॥ ३११ ॥ आदिश्वदेव ते सूक्तेरिपुन्ने रोगनाशने ॥ पठेत्प्रातः शुचिर्भूत्वारिपुरोगैः प्रमुच्यते ॥ ३१२ ॥ वास्तोष्पते प्रतीत्येतत्सूक्तं वास्तो-

व्यपतिजपम् ॥ स्नातः कृत्वा वैश्वदेवं परब्रह्मोदमुच्यते ॥ ३१० ॥ अमीव ह तिसूक्तेन भूतानि स्वापयेन्निशि ॥ न हि प्रस्वापनां किंचिदीदृशं विद्यते
 क्वचित् ॥ ११ ॥ संवाधे विषमे दुर्गो बद्धो वा निर्गतः क्वचित् ॥ पलायन्वाहृतीतो वा तस्करैः संजपेदिदम् ॥ १२ ॥ अमीव ह विश्ववती मुद्गत्या-
 न्याः प्रयोजयेत् ॥ सूक्तमेतज्जपेत्सर्वमिति मन्वेति शौनकः ॥ १३ ॥ त्रिरात्रं नियतोऽनश्नन् प्रयेत्पायसं चरुम् ॥ तेनाहुतिशतं पूर्णं जुहुयात्सर्षि-
 षाद्विजः ॥ १४ ॥ समुद्दिश्य महादेवं त्र्यम्बकं त्र्यम्बकेत्युवाच ॥ एतत्पर्वशतं कृत्वा जीवेद्वदशतं सुखी ॥ १५ ॥ तच्च क्षुरित्युवाच स्नात उपतिष्ठेद्विवा-
 करम् ॥ उद्यंतं मध्यगंचैव दीर्घमायुर्जिजीविषुः ॥ १६ ॥ रात्र्या अपरकाले यत्स्थाय प्रयतः शुचिः ॥ व्युपाइत्युपतिष्ठेत्पद्भिः सूक्तैः कृतां-
 जलिः ॥ १७ ॥ प्राप्नुयात्स हिरण्यादिना नारूपं धनं बहु ॥ अश्वान् च पुरुषान् चान्यं स्त्रियो वा सांख्यजाविकान् ॥ १८ ॥ ध्रुवा सुत्वा सुक्षितिषु जप-
 न्वद्धः प्रमुच्यते ॥ तिष्ठन् रात्रौ जपेदेना विपाशः सन् प्रमुच्यते ॥ १९ ॥ अहोरात्रं स्थितश्चैव मनश्चान्याद्विचेष्टितः ॥ अयः पाशाः स्फुटं त्यस्य दा-
 रुपाशास्तथैव च ॥ २० ॥ स्योनेति पृथिवीं देवीं प्रपद्येन्नियतः सदा ॥ जपेदेनां च तत्रापि भूमिपाशास्तमुच्यते ॥ २१ ॥ अगम्यागमने चैत-
 त्प्रायश्चित्तं विधीयते ॥ अन्यत्र गुरुतत्त्वाच्च तत्सात्पापास्तमुच्यते ॥ २२ ॥ द्वादशाहं संजानः स्वर्गोत्रागमने जपेत् ॥ अर्धमासं संजानः स-
 खिदारे पुंसं विशन् ॥ २३ ॥ इदमापः प्रवहत्यर्त्तिकं चेदृशं पुनः ॥ इति चैताजपेदापः प्रविश्यैतेषु कर्मसु ॥ २४ ॥ इंद्रा विष्णू नमस्कृत्य जुहु-
 यादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्ताभ्यां पर एताभ्यां यद्दृष्टेद्भूमिमात्मनः ॥ २५ ॥ आस्यदं विगाह्यांभः प्राज्युखः प्रयतः शुचिः ॥ सूक्ताभ्यां तिस्र एताभ्या-
 मुपतिष्ठेद्विवाकरम् ॥ २६ ॥ अनश्नता तु जपन् व्यष्टिकमेनयन्नतः ॥ पंचरात्रे व्यतीते तु महर्द्धर्षमवाप्नुयात् ॥ २७ ॥ योऽरिभिः संप्रपद्येत अभि-
 शस्येत वा मृषा ॥ उपोष्यैवं त्रिरात्रं स जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ २८ ॥ इद्रा सोमेति सूक्तं तु जपेच्चैतच्छतावरम् ॥ किंचिदद्याद्दिजेभ्यो तिसृणु-

तेसर्वशात्रवान् ॥ २९ ॥ यस्यलुप्येद्वत्तमोहाद्रात्यैर्वासंस्पृशेद्विजः ॥ उपोष्याज्यं च जुहुयात्त्वमभेव्रतपाइति ॥ ३० ॥ प्रसम्राजमितित्वे-
तजपन्नीक्षेद्विवाकरम् ॥ उद्यंतमुपतिष्ठेत्तस्नात्वास्नात्वादिनेदिने ॥ ३१ ॥ अभियुक्तो भवेद्यस्तु विवदेद्वापिकेनचित् ॥ निजित्यसगणान्शत्रू-
नुक्केण स्नात्वा वै प्रातरुत्थितः ॥ द्वौ भूमा जुपतिष्ठेत्तसत्रायतिभयात्स्वयम् ॥ ३२ ॥ वृचं जस्त्रायदित्येतस्नात्वाभ्यर्च्य पुरंदरम् ॥ ३३ ॥ नहीतियश्च-
सान्कामान्सं पूज्य वसुरोचिषः ॥ ३४ ॥ आद्यानि त्रीणि सूक्तानि पंच चाग्नेवृहन्मिति ॥ षट्स्थानानि सूक्तानि अग्निं न रइतीति च ॥ ३५ ॥ प्रकृता-
ब्रह्म जपतो नित्यमर्थसिद्धिः सदा भवेत् ॥ ३६ ॥ अग्निनेत्याश्विनं सूक्तं चतुर्विंशकमुत्तमम् ॥ जपेत्प्रातः शुचिर्भूत्वा नासत्यावर्च्य सुव्रतः ॥ ३७ ॥
सम्राप्नुयात्परासृद्धिं विष्णोर्जमेव च ॥ समिधेति जुहोत्यग्नौ सूक्तेन प्रत्यूचं घृतम् ॥ ३८ ॥ समृद्धिमतुलां प्राप्य समानां जीवते शतम् ॥ ३९ ॥
त्वारिंशकेनेदं शुकेनाद्येति वज्रिणम् ॥ ४० ॥ सख्यं लब्ध्वा मर्हेद्रेण सपत्न्यां स्तृणुते वहून् ॥ प्राश्रीयजपतो त्रास्ति प्रश्रुत्वा विधानतः ॥ ४१ ॥
तस्मात्पूर्वाह्निको ध्यायः स्मृतो यं रिप्रनाशनः ॥ वाशं महीति जस्त्राच प्राप्नोत्यारोग्यमेव च ॥ ४२ ॥ दुःस्वप्नघ्नीः पराजस्त्रा प्रातः पयैः प्रमुच्यते ॥
शनो भवेति द्वाभ्यां तु मुक्त्वा ब्रं प्रयतः शुचिः ॥ ४३ ॥ हृदये पाणिना स्पृष्ट्वा ज्योतीं विदग्दः सुखी ॥ यतो भयं विजानीयात्तस्यां दिशियतव्रतः
॥ ४४ ॥ शुचौ देशे मिमाधा यजुह्यादिद्रमर्च्य च ॥ यत इत्याज्यमुत्पूतं पङ्क्तिभिर्गंधान्निवेद्य च ॥ ४५ ॥ पायसं दधि मंथं वायूपांस्त्र्युपहार-
येत् ॥ अहोरात्रमुपोष्यैकं तिलान्वा घृतमेव वा ॥ ४६ ॥ उत्वामंदं त्विति स्नातो हुत्वा शत्रून् प्रमापयेत् ॥ वद्धो वाप्यवरुद्धो वा वाग्यतः प्रयतो जपेत्

॥ ४८ ॥ त्याश्रित्यादित्यदैवत्यंसद्योमुच्येतवंधनात् ॥ यद्वावस्तुजपेन्नित्यप्रगाथंनियतःशुचिः ॥ ४९ ॥ सकीर्तिमतुलंप्राप्यसर्वोन्कामा-
 न्समश्नुते ॥ त्वन्नोअग्रइतिसूक्तेनहुत्वाचर्योभिचृतेनतु ॥ ३५० ॥ पालितोविश्वतोदीप्ताप्राप्रयाद्वह्नितोरयिम् ॥ आतुसूक्तेनसततंधन्याचे-
 तुरंदरम् ॥ ५१ ॥ प्रसमित्पाणयेतस्मैधनंयच्छतिवृत्रहा ॥ कन्यावारितिसूक्तंतुसततंनियतो जपेत् ॥ ५२ ॥ त्वग्दोषिणीतथालोभ्रीक्षिप्रंत-
 स्मात्प्रमोचयेत् ॥ यदद्यकश्चेत्युदितेरवौस्तुत्वापुरंदरम् ॥ ५३ ॥ गुणत्रपोहतेरिप्रवंश्यंवाकुरुतेजगत् ॥ यद्वागितिदृचेनैत्यगौरयोऽर्चविसुत्र-
 तः ॥ ५४ ॥ तस्यनासंस्कृतावाणीमुखादुच्चार्यतेकचित् ॥ वणमहानितिदृष्ट्वाकर्ममुपतिष्ठेदचंपठन् ॥ ५५ ॥ ब्रुवन्नत्यनुतांवाणीनाल्लिपेदनुते-
 नसः ॥ पूर्णेचंद्रमसिब्योत्स्वामियंयेत्यनुसेवयेत् ॥ ५६ ॥ चंद्रदृष्टिस्त्वनिमिपोवर्षस्वीदृष्टिमान्भवेत् ॥ प्रजाहेतिजपन्द्वात्वानयोनिंप्रति-
 जायते ॥ ५७ ॥ मातेतिगामुपस्पृश्यजपन्मास्तुसमश्नुते ॥ वचोविदमितिर्वेतांजपन्वाचंसमश्नुते ॥ ५८ ॥ पावमानंपरंहेतन्नवमंडलं
 पठेत् ॥ स्नात्वाशुचिःशुचौदेशेसपवित्रःसकांचनः ॥ ५९ ॥ इष्टगृग्विधानेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ स्वादिष्टयेतिगायत्रीःपावमानी-
 जपेद्विजः ॥ पवित्राणांपवित्रंतुपावमानीर्कचो जपेत् ॥ ३६० ॥ प्रयतोऽप्सुनिमज्ज्याशुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ एतासांकीर्तनंपुण्यसारणंधार-
 णंतथा ॥ ६१ ॥ याथातथ्येनचज्ञात्वाब्रह्मलोकंसमश्नुते ॥ एतेषांतुयथोक्तांनांगुणवद्यद्यदुत्तरम् ॥ ६२ ॥ कीर्तनात्तुभवेत्पूतःस्मरणात्स्मर-
 तेपरम् ॥ धारणाद्ब्रह्माणमेतिपूतात्माविजितेंद्रियः ॥ ६३ ॥ याथातथ्येनचज्ञात्वाब्रह्मणोर्विदेतेपदम् ॥ श्रावयेद्देवताकृत्येनाह्मणान्भुजतोऽन्नतः
 ॥ ६४ ॥ ग्रीणातिदेवतांशम्यत्समर्धयतिकर्मवा ॥ पित्र्येपितृग्रीणयंतिश्राविताःप्रयतात्मना ॥ ६५ ॥ कृत्वादोपान्नुमहृतोव्यपेयादीन्ग्री-
 यचं ॥ जह्वातरत्समंदीयंप्रविश्यापक्यहाच्छुचिः ॥ ६६ ॥ अक्षर्यंचभवेदन्नंपितृभ्यःपरमंमधु ॥ यःपावमानीरध्येतिपूतात्माविजितेंद्रियः

॥ ६७ ॥ तस्य कामदुग्धाभूत्वोपतिष्ठति च धेनवः ॥ आयुर्बलं यशो वित्तं प्रजं कीर्तिमनामयम् ॥ ६८ ॥ स्वाध्यायं पुण्यमनुलूतः प्रप्नोति चाक्षयं ॥
अशक्तस्तु जपयुक्तोऽस्ति शैब्यैश्चैव न सीर्ज्यः ॥ ६९ ॥ सप्तविंशतिः प्रोक्ताः पवित्रस्य च याः पराः ॥ ऋचां द्विपष्टिः प्रोक्तं यं पवस्वैत्यृषिसत्तमैः
॥ ३७० ॥ सर्वकल्मषनाशाय पावनाय शिवाय च ॥ स्वादिष्टयेति सूक्तानां सप्तपष्टिरिहोदिताः ॥ ७१ ॥ दशोत्तराण्युच्यन्ते पवित्रस्यैव पावमानीः श-
तानि पट् ॥ एतल्लुहन्त्येनं मंत्रं घोरं मृत्युभयं हरेत् ॥ ७२ ॥ व्याधिभ्यः परिमोक्षं च लभते नात्र संशयः ॥ प्रतिगृह्याप्रतिग्राह्यं मुक्त्वा चान्विग-
र्हितम् ॥ ७३ ॥ जपं सारत्समं दीयं प्रविश्यापक्य ह्यहच्छुचिः ॥ पावमानं परं ह्येतद्रहस्यमपनोदनम् ॥ ७४ ॥ प्राणानात्म्यं च ध्यायेदं ते देवान्पितृ-
॥ ७५ ॥ गतिमिष्टामवाप्नोति विदुते चेहसिद्धयः ॥ नानानमिति सूक्तान्यतत्काले च जपेत्सकृत् ॥ ७६ ॥ जप्त्वा चैव परस्थानममृतत्वं च ग-
च्छति ॥ आपो हि ष्ठेति नियतः प्रयुजीत सदा द्विजः ॥ ७७ ॥ स्नानार्थं शुद्धिकामस्तु जपेत्तत्रिः समाहितः ॥ अस्तु चैव निमज्जित्वा त्रिः पठेत्तु स-
माहितः ॥ ७८ ॥ ब्रह्महातुकपालेन खटाङ्गीचीरसंवृतः ॥ चरेद्वा दशवर्षाणि स्वकर्मपरिकीर्तयन् ॥ ७९ ॥ अजपन्मनसैव तदापो हि ष्ठेति
संस्मरेत् ॥ ऊर्ध्वतुपंचमाद्वर्षजपेदेव सहस्रशः ॥ ८० ॥ अपरस्तु त्रिसहस्रोजपः स्यात्प्रत्यहं सदा ॥ पूर्णेतु द्वादशे वर्षे ब्राह्मणो विप्रश्च्यते
॥ ८१ ॥ समेत्य ब्राह्मणान् ब्रूयुरथ तं चरितं त्रयम् ॥ आचरितं भवेत्किंचिन्मिथ्यावादीपते पुनः ॥ ८२ ॥ दशवरा न्दशपरान् हन्यात्सममृतं वदन् ॥
ॐ भो इति वदेद्विभ्रनुज्ञातः शुचिर्जपेत् ॥ ८३ ॥ स्थालीपाकं च कुर्वीत सोमयेव तत्र चारिणे ॥ एवं समुच्यते पापात्सावित्री प्रतिपद्य च ॥ ८४ ॥
ब्रह्महातुपुराशक्रत्वाष्टहत्वाष्टपिप्रभुं ॥ सिंधुद्वीपस्तमेताभिरभिषिच्य व्यवमोचयत् ॥ ८५ ॥ ब्रह्मस्वंच गुरुद्रव्यं स्तेयं कृत्वा जपन्निमाः ॥

अनेनैवविधानेनषड्भिर्वर्षैःप्रमुच्यते ॥ ८७ ॥ ब्रह्महाचसुरापश्चनियमेनजपन्निमाः ॥ अनेनैवोपचारेणब्रह्मघ्नइवमुच्यते ॥ ८८ ॥
 ब्राह्मणस्यरुषोद्यम्यजेयेदेतान्निपात्यच ॥ त्र्यहंनिपात्योपवसेदेकाहमवगूर्यच ॥ ८९ ॥ शोणितंतुप्रहारेणोत्पाद्यसकथंचन ॥ त्रिरात्रमेवोप-
 वसेज्जपेतापिप्रसाद्यतम् ॥ ३९० ॥ प्रातरुत्थायसततंकुर्यान्मार्जनमात्मनः ॥ रात्रौकृतस्यपापस्याविज्ञातस्यापिनिष्कृतिः ॥ ९१ ॥ सायं-
 चनित्यमेताभिःकुर्यान्मार्जनमात्मनः ॥ दिवाकृतस्यपापस्याविज्ञातस्यापिनिष्कृतिः ॥ ९२ ॥ उपतिष्ठेतराजानंयमसूक्तेनवैद्विजः ॥ स्थाली-
 पाकंतुकुर्वीतपक्षयोर्यथैवदैवतम् ॥ ९३ ॥ अष्टम्यांचचतुर्दश्यांयजेतहविषायमम् ॥ परेधिवांसमितेतत्सूक्तमत्रप्रयोजयेत् ॥ ९४ ॥ पुरायुपःप्र-
 मीयेतनजातुसकथंचन ॥ प्रीयेत्तस्ययमोरामृतामृतिंचांतेप्रयच्छति ॥ ९५ ॥ धर्मराजायस्वाहेतिमंत्रांतेजुहुयाद्धविः ॥ वैशाखपौर्णमास्यांतु
 कर्मनित्यंप्रयोजयेत् ॥ ९६ ॥ अयनेपर्वसुज्ज्ञात्वायःप्रदद्यात्तिलोदकम् ॥ यमायसगणायैवतद्भयनसर्विदति ॥ ९७ ॥ नित्यमेवप्रपद्येतपरं-
 मृत्युलोकपद्भिजः ॥ नक्तमोजीमिताहारःपरिसवत्सरंसदा ॥ ९८ ॥ नैनंपुरायुषान्मृत्युर्नयेतससुतप्रजम् ॥ फलाहारोऽजपन्मृत्युंत्रिभिर्वरमिता-
 शनः ॥ ९९ ॥ पष्ठकालेतुसुंजीतफलमूलमथापिवा ॥ स्थानासनाभ्यांविहरेदुदकेशिशिरेवसन् ॥ १०० ॥ ग्रीष्मेपंचतपास्तुस्याद्वर्षास्व-
 आकाशकः ॥ एवंयुक्तोजयेन्मृत्युरोगेभ्यश्चप्रमुच्यते ॥ ११ ॥ आतुर्भार्यामपुत्रस्यसंतानार्थंमृतेपतौ ॥ देवरोन्वारुरुक्षंतीमुदीर्ष्वेतिनिव-
 र्तेयेत् ॥ १२ ॥ ऋतुकालेतुसंप्राप्तेधृताभ्यक्तोऽथवाग्यतः ॥ एकस्तुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ ३ ॥ दशारक्षंतुशांत्यर्थंभद्रंनइतिसंस्मरेत् ॥
 नित्यंजपेच्छुचिर्भूत्वाभानसर्विदेतुखम् ॥ ४ ॥ फलाहारोभवेन्मासंसांचापःपिवेत्ततः ॥ वायुमक्षोभवेन्मासंजपन्नेतत्सहस्रशः ॥ ५ ॥
 मनस्यैवास्यासिच्यतिसर्वकामाःसमीहिताः ॥ दिव्यान्पश्यतिगंधर्वांन्सिद्धान्पश्यतिचारणान् ॥ ६ ॥ अंतर्धानंब्रजलसालोकादाकाशगोभवे-

त ॥ दूरात्पश्यति दूराच्च शृणोति परमेष्ठिवत् ॥ ७ ॥ प्रदेवत्रेति नियतो जपे तमरुधन्वसु ॥ प्राणांति के भये प्राप्ते क्षिप्रमंभः स विंदति ॥ ८ ॥
 वैभीतकांस्तुत्रीनक्षान्धैः सममिवासायेत् ॥ पुषैरवकिरेचैवंस्थापयित्वा विहायसि ॥ ९ ॥ संहत्य पादौ तारां त्रितिष्ठन्नक्षस्तुतिं जपेत् ॥ प्रावे-
 जेतुमिच्छेत्तस्मिन्मूर्धनितं जपेत् ॥ व्युषाया मृदिते सूर्ये जपन्ना देवनं ब्रजेत् ॥ एतामेव जपेन्नित्यं जयत्यज्ञैर्न जीयते ॥ ११ ॥ यमेव
 वरुणस्य चक्षुः स इति नित्यशः ॥ १३ ॥ अस्यैव चोत्तमर्गे कायैर्नोभ्यः प्रमुच्यते ॥ तया ज्यं जुहुयान्नित्यमेनोभ्यो विप्रमुच्यते ॥ १४ ॥ दिव-
 स्परीति सूक्तं जुजपेच्छ्रद्धा समन्वितः ॥ सर्वत्र लभते श्रद्धां श्रद्धा कामः समाहितः ॥ १५ ॥ मा प्रगा मेति च जपेत्समूहो गहने पथि ॥ स्वस्तिमा-
 न्त्रजतेऽध्वानं विंदते च परं सुखम् ॥ १६ ॥ क्षीणायुरिति मन्येत यं कं वित्सुहृदं प्रियम् ॥ यत्तेयममिति स्नातस्तस्य मूर्ध्ना नमालभेत् ॥ १७ ॥ सह-
 चान्यमात्मानं च समालभेत् ॥ धृतेन सिंधुद्वीपस्य सूक्तैर्न च लेपयेत् ॥ १८ ॥ संविशन् शयने नित्यमेतन्मंत्रं जपेत्तवै ॥ पुत्रान्भार्याप्रियं
 मित्थेति मंत्रो यस्य सहस्रस निरुच्यते ॥ अर्धमासं हविष्यान्नमर्धमासं पयः पिबेत् ॥ १९ ॥ उपोष्य चापरं पक्षमरण्ये स्थं हिले शुचौ ॥ औदुंबरध्मं
 प्रज्वाल्य जुहुयात्पयवके धृतम् ॥ २० ॥ सुक्लुचौ च मसाश्चैव सर्वमौदुंबरं भवेत् ॥ हुत्वा हुतिसहस्रं तु तेन कामेन युज्यते ॥ २१ ॥ आभोगमेव
 कर्मैतज्जानीयात्सिद्धिमेव तु ॥ व्यर्थमव्यर्थमेवैतत्फलं चास्य प्रयच्छति ॥ २२ ॥ चतुष्पथे चान्न काम आदित्याभिमुखो धृतम् ॥ जुहुयाद्धनकाम-
 स्तु स हंसं भोजयेद्द्विजान् ॥ २३ ॥ पशुकामो जपेद्गोष्ठे जुहुयाद्वायुपोषितः ॥ विधिना तेन नियतः सहस्रं विंदते पशून् ॥ २४ ॥ लोहलोहित-

हेमानांकारयेद्विधृतंमणिम् ॥ सहस्रसमिधावैवसंपातामिहुतोभवेत् ॥ २७ ॥ हुत्वासहस्रसंपातंशिरसाधारेततम् ॥ पाणिनावाञ्चिर्नित्यं स-
 हस्रानुचरोभवेत् ॥ २८ ॥ परावतः स्वस्त्यनंक्षातकस्यविधीयते ॥ स्वर्गकामश्चतं नित्यजपेत्तनियतव्रतः ॥ २९ ॥ बृहस्पतेप्रथममितिनि-
 त्यं ज्ञानस्तुतिजपेत् ॥ ज्ञानवान्भवति श्रीमाननन्ताविदते श्रियम् ॥ ३० ॥ अलक्ष्मीनाशनार्थपुण्योभक्षोभवेन्नरः ॥ वयःसुपुर्णादित्येतांजप-
 न्वैर्विदते श्रियम् ॥ ३१ ॥ तमसाप्रावृतोयस्तुमन्येतात्मानमात्मनि ॥ अश्रियावापिसंयुक्तोजपन्नेतांप्रमुच्यते ॥ ३२ ॥ अक्षिणीप्रातरुत्थाय
 विष्टजीतैतयासदा ॥ चक्षुष्मान्भवति श्रीमाल्लक्ष्मीश्चापिप्रवर्धते ॥ ३३ ॥ नतंविदाथेत्येतांचजपन्विप्रःसमाहितः ॥ विहायकल्मषं सर्वं ब्रह्मा-
 भ्येतिसनातनम् ॥ ३४ ॥ अनयापर्वसुखात्वायः प्रदद्यात्तिलोदकम् ॥ यमायसगणायैवतद्भयंसनविदति ॥ ३५ ॥ यस्तेमन्योइतिसदाखपन्न-
 नेत्विमेजपेत् ॥ धृतेनामिहुतं द्वाभ्यां धारयेदायसंमणिम् ॥ ३६ ॥ जुहुयादायसंशंकुमाभ्यामेवचतुर्दशीम् ॥ खादिरेध्मसमिद्धेभौसपन्नान्प्रति-
 वाधते ॥ ३७ ॥ यथाहिपरमं ब्रह्मगुह्यं पावनमद्भुतम् ॥ तथासंवननं हृद्यनह्यस्माद्विद्यते परम् ॥ ३८ ॥ उपोष्यद्वादशाहानिजपन्नेतमृषिमुनिः ॥
 तन्मनाप्रयतः सस्याधिरहोभ्युदयादपः ॥ ३९ ॥ अंतैतुद्वादशाहस्य शुचौ देशे समाहितः ॥ पुंसः प्रतिकृतिं कुर्याद्भूमौ पांसुमयीं कृती ॥ ४० ॥
 तस्याहृदयदेशंतु समाक्रम्य जपेद्द्वयम् ॥ अमोघं कर्मजानीयादहोरात्रे गते सति ॥ ४१ ॥ ज्येष्ठेण धनिनैवैश्वर्यं चतूरात्रेण क्षत्रियम् ॥ राजानं पंचरा-
 त्रेण पण्डितेण द्विजोत्तमम् ॥ ४२ ॥ तपस्विनः सप्तरात्राजपेद्भुजितैवैवतम् ॥ अपि वोपोपितः स्नातो जपेदेतत्सदास्थितः ॥ ४३ ॥ यश्छेददशमा-
 नेतुं हीनं तु परिवर्जयेत् ॥ सहस्रसंपातहुतविल्वानां चूर्णमावपेत् ॥ ४४ ॥ उदपाने वंशेनेतुं जपं क्षिप्रमानयेत् ॥ मातर्योत्मनि पुत्रे पुपितृभ्रा-
 तृसु हस्तु च ॥ ४५ ॥ हृद्यमेतत्प्रयुजीत शिरसा धारयेत तम् ॥ सुमित्रं तु परिष्वज्य मूर्धन्याघ्राय चात्मजम् ॥ ४६ ॥ हृद्यमेतत्प्रयुजीत शाल्यार्थाय

ऋक्सं-

॥ ५८ ॥

ऋग्विधानं

॥ ५८ ॥

सुखाय च ॥ असंसिद्धे संवनने पांसुप्रतिष्ठाति पथि ॥ ४७ ॥ प्रज्वाल्य जुहुयादग्निघृतेन ब्राह्मणो यदि ॥ क्षत्रियस्त्वथ तैलेन सार्षपेण विशोषि च ॥ ४८ ॥ आयसीवाप्रतिष्ठाति मग्निमध्ये निधापयेत् ॥ तांच प्रज्वलितां मत्वा जुहुयात्तन्मनाः शुचिः ॥ ४९ ॥ उग्रेण महसाहन्यात्कुद्धश्च जुहुयाद्भृतम् ॥ यथायथा प्रज्वलिते हूयते जातवेदसि ॥ ४५० ॥ दीप्तां प्रतिष्ठाति विप्रस्तथा सवशमेष्यति ॥ इमं शानदग्धपांसूनां कुप्याद्वेदिं विलक्षणम् ॥ ५१ ॥ वैभीतके ध्मज्ज्वलिते लोहप्रतिष्ठाति न्यसेत् ॥ अर्धरात्रे स्थितै तैलं सार्षपं लवणां न्वितम् ॥ ५२ ॥ तत्र शरमयं कुप्यात्प्रस्तरं प्रति-लोमतः ॥ त्रिपुशंकुपुचासीनो जुहुयादुग्रदर्शनः ॥ ५३ ॥ सुक्तकेशो वधे प्रेप्सुरचिरेण ग्रसाधयेत् ॥ अथ वाभिचरे देनं जुहुयादात्मशोणितम् ॥ ५४ ॥ वशं नयति राजानं क्षिप्रं जनपदं पुरम् ॥ पुष्टिकर्मापि कर्तव्यं हृद्यै नैव यतात्मना ॥ ५५ ॥ अनागसि न कुर्वीत ब्राह्मणो विधसंयुतम् ॥ सरूपवत्सायागोऽथ प्रयसासाधयेच्चरुम् ॥ ५६ ॥ सहस्रसं पातहुतं पायसे वत्समग्रजम् ॥ सहस्रानुचरो वत्सः सस्याद्रोगैर्विवर्जितः ॥ ५७ ॥ गाश्चैव पाययेत्ताश्च भवंति व्याधिर्वर्जिताः ॥ पुत्रांश्च प्रार्थयेन्नित्यं प्रियातन्यांश्च सज्जनान् ॥ ५८ ॥ निरामयाश्च स्निग्धाश्च भवंति विगतज्वराः ॥ स्त्रियं चेदभिमन्येत तस्याः संवननं महत् ॥ ५९ ॥ ब्रीहीणां न खमिन्नानां तं दुलान् सूक्ष्मचूर्णितान् ॥ सहस्रसं पातहुतान् खेदयेत्कुशलो ग्निना ॥ ६० ॥ तेन प्रतिष्ठाति कुप्यात्तांध्यात्वा मनसा स्त्रियम् ॥ अक्तांसर्षपै तैलेन जुहुयादग्नश्च ताम् ॥ ६१ ॥ पादौ प्रथमतश्छिद्यात्फडित्यग्नौ निधापयेत् ॥ अथ जंघे जातु जी च ऊरू वा हूततः शिरः ॥ ६२ ॥ छित्त्वा हृदयं देशं तु हृदये खेनिवेशयेत् ॥ जपत्रेतद्यपि विप्रस्त्री वशं साधिगच्छति ॥ ६३ ॥ नैतत्परिगृहीता सुनसा ध्वीपुक्थंचन ॥ न धर्मत्रतशीला सुकुर्वीति द्विजसत्तमः ॥ ६४ ॥ कामं परिगृहीता सुहीनवर्णा सुयश्चरेत् ॥ पतिमस्यागुणी कुर्वन्पूर्वपश्चात्तु तां स्त्रियम् ॥ ६५ ॥ मुक्तां वा पायसं सद्यश्छेदयित्वा निधापयेत् ॥ तच्चूर्णं कृत्वा जाययै देयं संवननं स्मृतम् ॥ ६६ ॥ महावृक्ष-

फलान्येवमयुगमान्यभिसंनयेत् ॥ तेषां युगमानि भोजितस्वयमर्धा निशेषयेत् ॥ ६७ ॥ तानि दद्यादसिच्छेत्तुवशीकृतुं जपनृषिम् ॥ सुहृद्भूत्वासु-
 हृद्यस्य देयं संवननं स्मृतम् ॥ ६८ ॥ एकैकमभिरूपं तु हृद्यसूक्ताद्यतः पुनः ॥ कर्मोपित्वभिरूपाणि कुर्व्याद्यस्तु येच्छति ॥ ६९ ॥ पराकदास-
 स्याद्विधिहृद्यनोक्तं विदुर्बुधाः ॥ स्त्रीणां संवननं चैतत्पुंसामपि विधीयते ॥ ७० ॥ द्वेभ्येतुज्ञातिनामेव जपेनैव सदा युधि ॥ स्वादिरकारयेच्छं-
 कुं हृदि त्वंसं निवेशयेत् ॥ ७१ ॥ कृत्वा प्रतिष्ठां पूर्वां सुभिर्वा तथा तु वै ॥ इषुमन्यनुमं ज्यैवं संग्रामं संकल्पयेत् ॥ ७२ ॥ रिपुघ्नमेतज्जानी-
 यात्प्रयुक्तमपराजितम् ॥ पराकदासप्रभ्यार्थं हृद्यं संवननं स्मृतम् ॥ ७३ ॥ चिंतयन्मनसैवैतत्सूक्तं सिद्धिं नियच्छति ॥ सूर्यायै भाववृत्तं तु श्रावये-
 त्कन्यकापिता ॥ ७४ ॥ अनुरूपं सुसदृशं भर्तारं तेन विदति ॥ इमामिति जपेत्कन्यानामिमालभ्य नित्यशः ॥ ७५ ॥ एवमेव जपेद्भर्तादीर्धा-
 युः स भवेत्ततः ॥ स्त्रापयेद्भिरूपैश्च भ्राता कन्यापितापि वा ॥ ७६ ॥ शतं पुत्रवतीयावन्नच भर्त्रा विद्युज्यते ॥ सम्राज्ञीति जपेन्मूर्ध्नि कन्यामालभ्य
 नित्यशः ॥ ७७ ॥ यश्च शूरदेवरैर्नानां द्राचापि पूज्यते ॥ इन्द्राण्याकृतं संवा दं स्नाने सूक्तं प्रयोजयेत् ॥ ७८ ॥ नवगोत्तमयुतं पतिसौभाग्यपुत्रदम् ॥
 जलपुष्पोत्करयुते चित्रकुंभसमावृते ॥ ७९ ॥ कर्तव्योऽत्र तथा योगः सोमगंधर्ववह्निनाम् ॥ भगयाप्सरसां चैव यक्षाधिपतयेपि च ॥ ८० ॥
 इन्द्राण्यै देवपत्नीनारतिप्रद्युम्नयोस्तथा ॥ नदीसालिलसंपूर्णं पंचगव्यसमायुते ॥ ८१ ॥ हुत्वा भिक्षापयेत्कन्यां स्थितां देशे तु दक्षिणे ॥ प्रियंगुवटना-
 गानां कषायोद्धृष्टके रसम् ॥ ८२ ॥ संपाताभिर्दुतं कृत्वा सर्वोपधि समन्वितम् ॥ अभिमंज्य च सूक्तां तेन वभिश्च स्तुवीत वै ॥ ८३ ॥ एताभिरङ्घ्रिः पूर्ण-
 नभमिभिर्पंचेदुपोषिताम् ॥ याः पतिप्रियः स्त्रियस्तन्व्यः शाम्यंते नास्थिते न वै ॥ ८४ ॥ स्त्रापयेद्वाहनस्याङ्घ्रिर्विद्यायां विप्रवादिनीम् ॥ सूक्तादुपोद्धरे दे-
 नं न संशय इति तुष्टु चम् ॥ ८५ ॥ उपदिष्टेयमेकेषां पुंसः कर्मणि पौरुषे ॥ रक्षोहणं वाजिनमिसेतद्रक्षोहणं जपेत् ॥ ८६ ॥ अभिप्रज्वाल्य चैतेन स पतिष्ठेत्तानि

लशः ॥ आब्याहुतीश्च जुहुयात्तेन रक्षांसि वाधते ॥ ८७ ॥ एतद्रक्षो ह्यंशंतिः परमै पाप्रकीर्तिता ॥ हविष्पांतीयमेतत्तु सूक्तमत्र प्रयोजयेत् ॥ ८८ ॥
 गर्हितात्रात्तृयोगे च हविष्पांतीयमभ्यसेत् ॥ पवित्रं परमं ह्येतच्छातव्यं चाप्यभीक्ष्णशः ॥ ८९ ॥ आदित्ये ह्यष्टिमास्थाय पणमासात्रियतो भवेत् ॥
 देवयानं संपथानं पश्यत्यादित्यमंडले ॥ ९० ॥ विद्यावैश्वानरी चास्य स्वकायस्था प्रकाशते ॥ हविष्पांतीयमभ्यस्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ९१ ॥
 इंद्रं स्तवेति सूक्तजुषेच्छत्रुनिर्वहणम् ॥ पवित्राणां पवित्रं च गुहापावनमद्भुतम् ॥ ९२ ॥ शुक्रपक्षे शुभे वारे सुनक्षत्रे सुगोचरे ॥ द्वादश्यां पुत्रकामा च
 चरं कुर्वति वैष्णवम् ॥ ९३ ॥ दंपत्यो रूपवासः स्यादेकादश्यां सुरालये ॥ ऋग्भिः पौडशभिः सम्यगर्चयित्वा जनार्दनम् ॥ ९४ ॥ चरं पुरुषसूक्तेन श्रप-
 येत्पुत्रकाम्यया ॥ ग्रामुयाद्वैष्णवं पुत्रमचिरात्संतिक्षिप्य ॥ ९५ ॥ द्वादश द्वादशीः सम्यक्पयसा निर्वपेच्चरम् ॥ यः करोति ह्यस्य स्यात्ति विष्णोः
 परंपदम् ॥ ९६ ॥ हुत्वा त्रिविधवत्सम्यगृग्भिः पौडशभिर्वुधः ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा स्तवंताभिः प्रयोजयेत् ॥ ९७ ॥ केशवं मार्गशीर्षे तु पौ-
 पेनारायणं तथा ॥ माधवं माघमासे तु गोविंदं फाल्गुने पुनः ॥ ९८ ॥ चैत्रे चैव तथा विष्णुवैशाखे मधुसूदनम् ॥ ज्येष्ठे त्रिविक्रमं विद्यादापा देवाम-
 नं विदुः ॥ ९९ ॥ श्रावणे श्रीधरं विद्याधृपीकेशं ततः परे ॥ आश्विने पद्मनाभं तु दामोदरं च कार्तिके ॥ ५०० ॥ द्वादशैतानि नामानि ऋज्यश्रं-
 गोऽत्र बीजमुनिः ॥ पूजयेन्मासनामभिः सर्वान्कामान्समश्नुते ॥ ११ ॥ आयुष्मंतं सुतं सुते परामेधासमन्वितम् ॥ धनवंतं प्रजावंतं धार्भिकं सात्त्विकं
 तथा ॥ १२ ॥ समिधोऽथ तृक्षस्य हुत्वा भिजुहुयात्पुनः ॥ उपस्थानं हुताशस्य ध्यात्वा न्यर्मधुसूदनम् ॥ ३ ॥ हविर्होमं ततः कुर्यात्प्रत्यूचं वाग्य-
 तः शुचिः ॥ सूक्तेन जुहुयादाज्यमादावंते च पूर्ववत् ॥ ४ ॥ हविः शेषं नमस्कृतवानारीनारायणं पतिम् ॥ भक्षयित्वा हविः शेषं लब्धवाशीः स वि-
 शेःक्षणम् ॥ ५ ॥ ततस्तु कृत्वेदं कर्म कर्तव्यं द्विजतर्पणम् ॥ द्वितीयं स्त्रीनिर्वर्तेत यावद्गर्भं च विदति ॥ ६ ॥ अपुत्रास्तपुत्रावायाचकन्याः प्रसूयते ॥

क्षिप्रं साजनेत्युत्तमस्य शृंगोयथाब्रवीत् ॥ ७ ॥ अर्चनं संप्रवक्ष्यामि विष्णोरमिततेजसः ॥ यत्कृत्वा मुनयः सर्वे ब्रह्मनिर्वाणमाप्नुयुः ॥ ८ ॥
 अस्वमौहृदये सूर्ये स्थंडिले प्रतिमासु च ॥ पटस्वेते बुधरेः सम्यगर्चनं मुनिभिः स्मृतम् ॥ ९ ॥ अग्नौ क्रियावतां देवो दिवि देवो मनीषिणाम् ॥
 प्रतिमास्वरूपबुद्धीनां यो गिनां हृदये हरिः ॥ ५१० ॥ आपो ह्यायतनं तस्य तस्मात्तासु सदा हरिः ॥ तस्य सर्वगतत्वाच्च स्थंडिले भावितात्मनाम् ॥ ११ ॥
 दद्यात्पुरुषसूक्तेन यः पुरुषपाण्यप एव वा ॥ अर्चितं त्याज्यगदिदं तेन सर्वं चराचरम् ॥ १२ ॥ आनुष्टुभस्य सूक्तस्य त्रिष्टुवंतस्य देवता ॥ पुरुषोऽथ जग-
 द्वीजमृषिर्नारायणः स्मृतः ॥ १३ ॥ नारायणमहाबाहोऽशुण्डैकं महाप्रभो ॥ वक्ष्ये पुरुषसूक्तस्य विधानं त्वर्चनं प्रति ॥ १४ ॥ अग्नि कार्यज-
 पविर्धिस्तोत्रं चैव तदात्मकम् ॥ स्वात्वायथोक्तविधिना प्राञ्जुलः शुद्धमानसः ॥ १५ ॥ प्रथमां विन्यसेद्वाभे द्वितीयां दक्षिणे करे ॥ तृतीयां वाम-
 पादे तु चतुर्थीं दक्षिणे न्यसेत् ॥ १६ ॥ पंचमीं वामजानुनिषष्टीं वै दक्षिणे न्यसेत् ॥ सप्तमीं वामकुक्षौ तु अष्टमीं दक्षिणे न्यसेत् ॥ १७ ॥ नवमीं
 नाभिदेशे तु दशमीं हृदये न्यसेत् ॥ एकादशीं किंठदेशे द्वादशीं वामबाहुके ॥ १८ ॥ त्रयोदशीं दक्षिणे च आस्ये चैव चतुर्दशीम् ॥ अक्ष्णोः पंचदशीं
 चैव षोडशीं मूर्ध्नि विन्यसेत् ॥ १९ ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात्पूजासमारभेत् ॥ यथा देहे तथा देवे न्यासं कृत्वा विधानतः ॥ ५२० ॥ आद्य-
 यावाहये देवमृचा तु पुरुषोत्तमम् ॥ द्वितीयायां सनं दद्यात्पाद्यं चैव तृतीयया ॥ २१ ॥ अर्घ्यं च तु श्रयोदातव्यं पंचम्या च मनीष्यकम् ॥ पष्ठ्या स्नानं
 प्रकुर्वीत सप्तम्या मन्त्रमेव तु ॥ २२ ॥ यज्ञोपवीतमष्टम्या नवम्या चानुलेपनम् ॥ पुष्पं दशम्या दातव्यमेकादश्या तु धूपकम् ॥ २६ ॥ द्वादश्या
 दीपकं दद्यात्त्रयोदश्या निवेदनम् ॥ चतुर्दश्या नमस्कारं पंचदश्या प्रदक्षिणाम् ॥ २४ ॥ दक्षिणा तु यथाशक्ति षोडश्या च प्रदापयेत् ॥ स्नाने वस्त्रे च
 नैवेद्ये दद्यादाचमनीयकम् ॥ २५ ॥ ततः प्रदक्षिणा कृत्वा जपं कुर्यात्समाहितः ॥ यथाशक्ति जपित्वा तु सूक्तं तस्मै निवेदयेत् ॥ २६ ॥ देवस्य द-

क्षिणेपाश्चकुंडंखंडिलमेववा ॥ कारयेत्प्रथमेनैवद्वितीयेनतुप्रोक्षणम् ॥२७॥ तृतीययामिमादध्याच्चतुर्थ्याचसर्भिधनम् ॥ पंचम्याज्यस्यश्रप
णंचरोश्चश्रपणंतथा ॥ २८ ॥ षष्ठेनैवामिमध्येतुकरूपयेत्पद्ममासनम् ॥ चितयेद्देवदेशंकालानलसमग्रम् ॥२९॥ ततोर्गंधंचपुष्पंचधू-
पदीपनिवेदनम् ॥ अनुज्ञाप्यततःकुर्यात्सप्तम्यादियथाक्रमम् ॥५३०॥ समिधस्तावतीःपूर्वजुहुयादभिघारिताः ॥ ततोघृतेनजुहुयाच्चरुणाच
ततःपुनः ॥३१॥ एवंहुत्वाततश्चैवमनुज्ञाप्ययथाक्रमम् ॥ अग्नेर्भगवतस्तस्यसमीपेस्तोत्रमुच्चेरेत् ॥३२॥ जितंतेपुंडरीकाक्षनमस्तेविश्वभावन॥
सुत्रहण्यनमस्तेस्तुमहापुरुषपूर्वज ॥ ३३ ॥ नमोहिरण्यगर्भायप्रधानाव्यक्तरूपिणे ॥ ॐ नमोवासुदेवायशुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥
आनुमंताचगुणमायासमावृतः ॥३४॥ सर्वदाचरणद्वंद्वजामिशरणंतव ॥३५॥ एकस्त्वमसिलोकस्यस्रष्टासंहारकस्तथा ॥ ३४ ॥
चाकारोनायुधानिनचास्पदम् ॥ तथापिपुरुषाकारोभक्तानांत्वंप्रकाशसे ॥ त्वामेवशरणंप्राप्यनित्तरंतिमनीषिणः ॥ अध्यक्ष-
धंतेनचसाव्योसिकस्यचित् ॥ ३९ ॥ कार्याणाकारणंपूर्णवचसांवाच्यमुत्तमम् ॥ नैवाकंचित्परोक्षंतेनप्रत्यक्षोसिकस्यचित् ॥ नैवाकंचिदसा-
भीतोस्मिदेवेशसंसारेस्मिन्महाभये ॥ त्राहिमांपुंडरीकाक्षनजानेशरणंपरम् ॥ ४१ ॥ कालेष्वपिचसर्वेषुदिक्षुसर्वोसुचाच्युत ॥ शरीरेविगते-
वापिचर्ततेमेमहद्भयम् ॥४२॥ त्वत्पादकमलादन्यत्रमेजन्मांतरेष्वपि ॥ निमित्तंकुशलस्यास्ति येनगच्छामिसद्गतिम् ॥ ४३ ॥ विज्ञानंयदि-
दंश्राप्तंयदिदृष्टानमर्जितम् ॥ जन्मांतरेपिमेदेवमाभूदस्यपरिक्षयः ॥४४॥ दुर्गतावपिजातस्यत्वद्गतोमेमनोरथः ॥ यदिनाथंचविदेयतावता-
स्मिच्छतीसदा ॥४५॥ अकामकलुषंचित्तंममतेपादयोःस्थितम् ॥ कामयेविष्णुपादैस्तुसर्वजन्मसुकेवलम् ॥४६॥ पुरुषस्यहरेःसूक्तंस्वर्ग्यध-

न्ययशस्करम् ॥ आत्मज्ञानमिदं पुण्ययोगज्ञानमिदं परम् ॥ ४७ ॥ इत्येवमनयास्तुत्वास्तुत्वादेवं दिने दिने ॥ किं करोसीति चात्मानं देवायै
व निवेदयेत् ॥ ४८ ॥ फलाहारो भवेन्मासं पश्यत्यात्मानमात्मनि ॥ ४९ ॥ फलानि भुक्त्वोपवसेन्मासमासमिदं श्रवतेयेत् ॥ अरण्ये
निवसेन्नित्यं जपन्नेतद्विषयं ॥ ५० ॥ त्रिस्त्रिंशद्वर्षाणि पुण्यादसु समाहितः ॥ आदित्यमुपतिष्ठेत् सूक्तैर्नानैर्नित्यशः ॥ ५१ ॥
आव्याहृतीरेनैव बहु त्वैतं चितयेद्दृष्टिम् ॥ ऊर्ध्वमासात् फलाहारस्त्रिभिर्वर्षैर्जयेद्विष्णुम् ॥ ५२ ॥ तद्भक्तस्तन्मना युक्तो दशवर्षाण्यनन्यभाक् ॥
साक्षात्पश्यति तदेवं नारायणमनामयम् ॥ ५३ ॥ ग्राह्यमत्यन्तयत्नेन त्वष्टारं जगतोऽव्ययम् ॥ गृहस्थधर्मे वर्तेत न्यायवृत्तः समाहितः ॥ ५४ ॥
एतदेवं चितयेत् नारायणमनामयम् ॥ अर्धरात्रे त्यक्तनिद्रं ज्ञेयं चित्वा यशुचि वाग्यतः ॥ ५५ ॥ संप्रसुप्ते पुच्छेत् पुण्यं गुरुं जीतयोगवित् ॥ ऋज्वासीनः
समेदेशे निर्वर्तेशब्दवर्जिते ॥ ५६ ॥ सव्यं पादं दक्षिणस्यां जानुनिष्ठं पृथेयतः ॥ संहृत्य दक्षिणं पादं सव्ये जानुनियच्छति ॥ ५७ ॥ ब्रह्माज-
लिकृतः स्वस्थो योगसंमेलितेक्षणः ॥ ५८ ॥ तत्रात्मानं समाध्यादिन्द्रियाणि मनस्तथा ॥ न च बु-
ध्येत किंचान्यन्नपश्येच्छृणुयान्न च ॥ ५९ ॥ न नमस्येत्सदा योगं तदा प्राप्नोति स उच्यते ॥ हृद्येत मृपिमभ्यस्येत्पश्यन्नेव यथाश्रुति ॥ ५६० ॥
प्राणानान्यन्यचासीनो यावच्चित्तं तदपि तम् ॥ उच्छ्वसिष्यत्यधो नासिगमयित्वा मनस्तथा ॥ ६१ ॥ उच्छ्वसे देवमसक्तस्तन्मना योगमुन्नेयेत् ॥
एवं हि युज्यात्सामान्यं न पश्येच्छृणुयान्न च ॥ ६२ ॥ तदा क्षणैर्नियच्छेत्तद्दयादूर्ध्वमेव तु ॥ समौ तु जानूचास्यं च नासिकानयने भ्रुवौ ॥ ६३ ॥
भ्रुवोर्मध्ये परस्थानं तत्रैतद्धारयेत्स्थिरम् ॥ ललाटे देशे धार्याथ मूर्धनं गमयेत्ततः ॥ ६४ ॥ उच्छ्वसं श्रयथा कालं नाभितश्चोच्छ्वसेत्पुनः ॥ एतत्प-
रस्थानमुक्तं ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ ६५ ॥ एवं युक्तो महात्मा सन्महात्मानं प्रपद्यते ॥ यदि स्यात्सुकृती शुद्धो यद्वा पापपक्वतमः ॥ ६६ ॥ उप-

लभ्यपरं ब्रह्मगतिं द्वात्वाभवेच्छुचिः ॥ सर्वपापावबद्धशुद्धैस्तत्रयतो जयेत् ॥ ६७ ॥ अपि जिज्ञासनादेव गच्छेत्तत्परमांगतिम् ॥ धारणात्तुष्टु-
थक्कुर्याद्धर्मेणानेन नित्यशः ॥ ६८ ॥ आदित्ये भौचंद्रमासि वृक्षाग्रेषु च धारयेत् ॥ पर्वताग्रे समुद्रे वा यत्र वापि मनोरमेत् ॥ ६९ ॥ नत्वेव विव-
न्त्याप्यधारयितुं कथंचन ॥ बह्वत्र दुःखं जानीयात्प्रवृत्तं च सेनमरणे सति ॥ ५७० ॥ धार्मिकाणां कुलेषु ह्येव भ्रष्टो भिजायते ॥ मूर्ध्नि ब्रह्मसर्वि-
देत स एव ऋषिसत्तमः ॥ ७१ ॥ तदामूर्धः परं ज्योतिर्न क्षत्रपथमुन्नयेत् ॥ योगी योगेश्वरं प्राप्य निर्द्वन्द्वः परमात्मवित् ॥ ७२ ॥ सर्वत्रैवात्मना-
त्मानं पश्येद्दृष्टिपरायणः ॥ जपेनैव सदा ज्ञातः पवित्रमिदमुत्तमम् ॥ ७३ ॥ अपि पातकसंयुक्तः काले न सुकृती भवेत् ॥ येन येन च कामेन तत्सि-
द्धिं भवधारयेत् ॥ ७४ ॥ स सकामः स मृच्छः स्याच्छ्रद्धाधानस्य कुर्वतः ॥ होमं वाप्यथ वा जाप्यमुपहारमथोचरुम् ॥ ७५ ॥ कुर्वन्ति येन कामेन तत्सि-
व्यवस्थितम् ॥ ७७ ॥ ग्राह्यमलं तयन्नेन ब्रह्माभ्येतिसनातनम् ॥ ७६ ॥ पापेन विप्रमोक्षस्तु तत्सिद्धिं भवधारयेत् ॥ ७८ ॥ वेदगर्भशरीरेण सवै नारायणः
स्तुतः ॥ ब्रह्मेद्रुद्रपर्जन्या अन्नसूक्तेष्ववस्थिताः ॥ ७९ ॥ अन्नस्थमेतद्ब्रह्म जगत्स्थावरजंगमम् ॥ ८० ॥ वेदगर्भशरीरेण सवै नारायणः
॥ ५८० ॥ भक्तानुंकं पीभगवान्श्रूयते पुरुषोत्तमः ॥ पूजार्थं तस्य देवस्य वनात्स्वयमुपाहृतात् ॥ ८१ ॥ आरण्यकविधानेन निर्वपेत्प्रत्यहं चरुम् ॥
यावन्तो वापि शक्यं ते अह्ना सर्वान्समापयेत् ॥ ८२ ॥ आसहस्रात्तत्तच्छुद्धिव्यहोतुर्देवातिसः ॥ अपि वा चरुसाहस्रं तत्रैकेन निर्वपेत् ॥ ८३ ॥
ध्येयः सदा स विष्टमंडलमध्यवर्ती नारायणः सरसि जासन संनिविष्टः ॥ कैयूरवान्मकरकुण्डलवान्किरीटीहारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥ ८४ ॥

एतत्तुयः पठति केवलमेव सूक्तं नारायणस्य चरणविविधवंधौ ॥ पाठेतेन परमेण सनातनस्य स्थानं जगत्परमवर्जितमेति विष्णोः ॥ ८६ ॥
 हविषा भौजलेषु भैष्यैर्ध्यानं हृदये हरिम् ॥ यजंति सूर्यो नित्यं जपंति रविमंडले ॥ ८७ ॥ बिल्वपत्रं शमीपत्रं च गुंठारकस्य च ॥ मालती कुशपत्रं
 च सद्यस्तुष्टिकं रं हरेः ॥ ८८ ॥ यत्रैतत्पठ्यते किंचित्छाया न मनसैव तु ॥ संपाद्य तत्प्रसादाद्देवदेवस्य च क्रिणः ॥ ८९ ॥ पत्रैश्च पुष्पैश्च फलैश्च
 तैश्चैरक्षीतलब्धैश्च सदैव सस्तु ॥ भक्त्यैकलभ्यैरुपुषे पुराणे मुक्त्यै किमर्थं क्रियते तु यत्नः ॥ ९० ॥ इत्येवमुक्तः पुरुषस्य विष्णो रचो विधिर्विष्णु-
 कुमारनाम्ना ॥ मुक्त्येकमार्गं प्रति बोधनाय दृष्ट्वा विधानं त्विह नारदोक्तम् ॥ ९१ ॥ इत्युग्विधानेन तृतीयो व्यायः ॥ ३ ॥ ॥ या ओषधीः स्वस्त्य-
 यं न जपेत्तनियतव्रतः ॥ ओषधीश्च यजेन्नित्यं षण्मासानेव नित्यशः ॥ ९२ ॥ दृष्ट्वा शरदि वै रुद्रमोषधीश्च यजेत्तथा ॥ न भवं लामयास्तस्य त-
 था जीर्णोदिकानि च ॥ ९३ ॥ क्रियां तु सप्त रात्रेण सप्त ऋत्वः समाहितः ॥ प्रपद्येतौषधीर्विप्रः सूक्ते मेतज्जपन्सदा ॥ ९४ ॥ द्विषत्क्षेत्रादिहा ल-
 ङ्घ्यामिति विज्ञापयेत्तच्च ॥ स्वक्षेत्रे च रुणे वेष्ट्वा वंदेत द्विषदोषधीः ॥ ९५ ॥ वृष्टिकामो जिताहारः प्रपद्येत बृहस्पतिम् ॥ पायसेनोपहारेण होमेन च
 समन्वितः ॥ ९६ ॥ बृहस्पते प्रतीयेत दृष्टिकामः प्रयोजयेत् ॥ पर्जन्यं च नमस्कृत्वा वृष्टिं विंदति शोभनाम् ॥ ९७ ॥ सर्वत्र तु पराशांतिर्ज्ञेयो-
 प्रतिरथस्तृषिः ॥ यमेव देशं गच्छेत्तश्नुवाप्यनुमंत्रितः ॥ ९८ ॥ नाजित्वा विनिवर्तेत परं हि त्रह्मणो बलं ॥ सर्वकर्मैर्जपेदेतत्सर्वकामसमृद्धये
 ॥ ९९ ॥ संग्राममभ्युद्यतो वाराजा चैतत्प्रयोजयेत् ॥ सर्वोन्विजयते शत्रून् नृपराजीयते परैः ॥ १०० ॥ पथि स्वस्त्ययनं चैतत्तत्करेभ्यश्चर-
 न्पथि ॥ भूतोरगपि शाचेभ्यः सर्वेभ्यः परिरक्षति ॥ १ ॥ भूतांशस्य ऋषेः सूक्तं राजा कामः शुचिर्जपन् ॥ अनु रूपं प्राजामा शुलभते नान्न संशयः
 ॥ २ ॥ स्थालीपाकेन नासत्यावधि नोयुजजेद्विजः ॥ अनेनैव तु सूक्तेन हृत्वा ध्यानं नुमंत्रयेत् ॥ ३ ॥ पायसं कृत्वा संभ्रांसमोदनं दधिसक्तुकात् ॥

कुलमापांश्चकरंभांश्चफलानिविविधानिच ॥ ४ ॥ चित्रमाल्यशुभान्प्रधानन्नपानानियानिच ॥ भक्ष्यंभोज्यंचपेयंचसमाहृत्योदितेरवौ ॥
भूतांशमभ्यसेत्तावद्यावदस्तमितोरविः ॥ ५ ॥ अर्धरात्रेत्वत्क्रांतैततोऽश्विभ्यांनिवेदयेत् ॥ दीर्घायुषंसुरूपंचलभेत्युग्रंमुवर्चसम् ॥ ६ ॥
इतिसर्वत्रयत्रयोपतिष्ठति ॥ ८ ॥ पाप्मोपहतमात्मानंयोमन्येतविचक्षणः ॥ ७ ॥ नवाजदेवाइत्येतज्जपेत्तनियतव्रतः ॥ अत्रंवि-
चेद्वाक्कामोहुनेदांशुजपन्निमाः ॥ अहंरुद्रेभिरित्येतद्वाग्मीभवतिपूजितः ॥ ६१० ॥ नतमित्यष्टकंसूक्तैश्चैवैवजपन्मुनिः ॥ कृत्स्नंतुक्लमव-
नसाजपेद्वात्रीतिरात्रिषु ॥ स्थालीपाकेनरात्रिचयजेताहरहर्तिशि ॥ यःकामयेत्तनपुनर्जोयेयमितियोनिषु ॥ १२ ॥ सहस्रकृत्वोम-
वचरुंपयसिसंस्कृतम् ॥ सहस्रकृत्वस्त्वेतेनदिवाहोमोविधीयते ॥ १४ ॥ जुहुयान्निशिपूर्वस्मिन्भागोरात्रौसमाहितः ॥ १३ ॥ ऊर्ध्वसंवत्सराच्चै-
रात्रिर्भवतिशर्वरी ॥ विद्वापयीततादेवीवरदांस्वयमागतां ॥ १७ ॥ संवत्सरेऋतौमासिदिवसेस्मिन्क्षणेपिवा ॥ प्रयाणकालोभवितातववत्सेति
जः ॥ जुहन्नाज्यमनैनवसर्वांकामानवाप्नुयात् ॥ ६२० ॥ यांकल्पयंतीतिसदाजपेत्तनियतव्रतः ॥ नैनंकृत्यानिहिंसतिक्लृप्ताभिचरितानि
च ॥ २१ ॥ यमांगिरसकल्पैस्तुतद्विदोभिचरेत्तसः ॥ प्रत्यंगिरसकल्पेनसर्वास्तान्प्रतिवाधते ॥ २२ ॥ प्रत्यंगिरसविद्वांस्तुनरिष्येतकदा-

धन ॥ नैनं कृत्यानि हिंसांति ज्ञाता ज्ञाता निवाकचित् ॥ २३ ॥ अजानता जानता वा क्रुद्धेना धर्षितेन वा ॥ आकुण्ठवा दुर्गुक्कंवा नैनो विदति तद्वि-
 दम् ॥ २४ ॥ एवमेव जपेन्नित्यमृषिस्वस्त्ययनाय वै ॥ सर्वप्रायश्चित्तमेतदभाषत ऋषिः स्वयम् ॥ २५ ॥ स्वावराणां निवेशे पुनराणां तथैव च ॥
 आभाणां च गृहाणां च जपे तत्तमृषि सदा ॥ २६ ॥ जोतरूपमयं विद्वान्कारयेद्भिवृत्तमणिम् ॥ सहस्रसं पातहुतमृषिणा तेन ततः ॥ २७ ॥ प्रति-
 मुच्येत शिरसि ग्रीवायामथ वोरसि ॥ नैनं कृत्यानि हिंसांति ज्ञाता ज्ञाता नित्यानि च ॥ २८ ॥ अनेनैव तु सूक्तेन राज्ञां तु समलोहितम् ॥ कारयेत्
 मणिं विद्वान्स्तावदेवानुमंत्रणम् ॥ २९ ॥ संग्रामेषु ध्वजाग्राणि वादित्राण्यनुमंत्रयेत् ॥ आसना निचशय्याश्च यानानि विविधानि च ॥ ३० ॥
 तस्याभिचरते साक्षादंगिरां र्परिपि स्वयम् ॥ प्रत्यंगिरसकल्पेन सर्वतत्प्रतिवाधते ॥ ३१ ॥ अमानुषीरमिचरेऽत्कृत्याः सूक्तं जपन्निदम् ॥ मुच्यते स-
 र्वतो निष्ठां लिङ्गपुनर्मानुषाङ्गयम् ॥ ३२ ॥ तपस्वी नियतो दांतः प्रयोक्ता चेद्भवेदपि ॥ सर्वतरति शांतात्मा तपोहि सुमहद्वलम् ॥ ३३ ॥ आयुष्य-
 मायुर्वर्चस्यं सूक्तं दाक्षायणं महत् ॥ अलंकारं हिरण्यं वा प्राप्य दाक्षायणं जपेत् ॥ प्राप्तोऽसः श्रियमादत्ते बहु चान्नं समश्नुते ॥ ३४ ॥ नासदासीदि-
 ति जपेज्जुहुयादो गतत्परः ॥ प्रजापतेस्तु सायुज्यं द्वादशाब्दैः समश्नुते ॥ ३५ ॥ उत्तदेवा इति जपेदमया वीर्यतत्रतः ॥ घृतकुंभं निधायाथ जुहु-
 याज्जातर्वेदसि ॥ ३६ ॥ कुंभसपातमन्यसिन्कास्य पात्रे निधापयेत् ॥ योऽन्नाथ्यं लं चान्नं त्यात्स इदं संप्रकाशयेत् ॥ ३७ ॥ तेनाज्येनांगम-
 भ्यज्य शनैर्नैकं न्नभागं भवेत् ॥ रोगार्तस्याप्यनेनैव गान्नं भवं त्वाजपेदिदम् ॥ अजीर्णां भ्रोतृभ्यो जयीत सुखी भवति विज्वरः ॥ ३८ ॥ अमे अच्छावदे-
 स्वेतद्वनकामः प्रयोजयेत् ॥ नियतः सर्पिपाहुत्वा जपेद्युतशः पुनः ॥ ३९ ॥ खादि राणां हि स मिधां जुहुयाद्दशतीर्दश ॥ दशकृत्वः स दारेण
 रायस्योपेण पुण्यति ॥ ४० ॥ बिल्वोदुंबरपालाशैस्तथा रौहितिकैश्च यः ॥ जुहुयाद्धनकामस्तुरायस्योपेण पुण्यति ॥ ४१ ॥ वैभीतक्रेष्म-

वैल्वैश्च जुहुयादर्घमासकम् ॥ द्विषद्वेषणं तस्यांते सूक्तमेतत्प्रयोजयेत् ॥ ४२ ॥ द्विषंतं धनिं न हत्वा द्विषतो विदते धनम् ॥ अथ वा जल्पमेव स्याद्वाय-
स्पोषधनार्थिना ॥ ४३ ॥ अयमग्नेजरितेति जपेदग्निभये सति ॥ विधिना तर्पयित्वाग्निं पयोदधिधृतादिभिः ॥ ४४ ॥ स्वयंपातुं यावदिच्छेत्ता-
ना ॥ ४५ ॥ यदिसौम्यसि सोमाय त्वांपरिक्रीणाम्योषधिम् ॥ यदिवारुण्यसि वरुणाय त्वांपरिक्रीणाम्यहंततः ॥ ४६ ॥ अरण्यमेत्यपाठांतु क्रीणीयाद्यवसुष्टि-
कर्मयत्र करिष्यति ॥ ४७ ॥ वैश्वदेव्यसि विद्येभ्यः परिक्रीणाम्यहंततः ॥ ४८ ॥ क्षित्वासुमनसः पूर्वमोषध्या सह वीरुधैः ॥ ४९ ॥ वसुम्यश्चाथ रुदेभ्य
ठांस्विमामिति जपन्निह ॥ प्रातश्च पेषयेद्देनांसं सदिब्रह्मचारिणाम् ॥ ५० ॥ ग्रहेण त्वौषधीनां च सर्वत्रैष विधिर्भवेत् ॥ ५१ ॥ तदलाभे ब्रतवता कन्यया ब्राह्मणेन वा ॥ ५२ ॥ उत्त्वापयीताथ पा-
वेदुमंत्रिताम् ॥ ५३ ॥ इमामिति तु सूक्तेन शतकृत्वोद्गावरम् ॥ सपत्नीं बाधते तेन पतिश्चातीव मन्यते ॥ ५४ ॥ मूलमंत्रजपैरन्यैर्यापतिं जेतुमिच्छति ॥ ५५ ॥ पतिस्तु परिजल्पेनापाठमे-
तेन वैषिबेत् ॥ पयसा सप्त रात्रेण सपत्नीं तानि चूर्णमूलौषधान्यपि ॥ विनाशयेयुः पुरुषं तस्मान्नान्यत्समाचरेत् ॥ ५६ ॥ प्रियंवदाभर्तरीयाभर्तयस्याः परा-
यणम् ॥ वाक्चैव मधुराय स्याः पत्युः सवनं न महत् ॥ प्रियं भर्तारमासाद्य पिबेद्देवौषधीमिमाम् ॥ ५७ ॥ प्रियंवदां सुशीलां च धर्मपत्नीमनिदितां ॥
अवमन्येत यो मोहात्तमाहुः पुरुषाय मम ॥ ५८ ॥ अरण्यानीत्यरण्ये जुजपेत्सूक्तमनेकशः ॥ अरण्यार्नीनमस्तृत्वा आरण्यान् प्रतिबाधते ॥ ५९ ॥
श्रद्धासूक्तं जपेन्नित्यं श्रद्धाकामः समाहितः ॥ सर्वत्र लभते श्रद्धां मेधासूक्तं तथैव च ॥ ६० ॥ ब्राह्मीमासाद्य सूक्ते द्वे जपेत्तनियतव्रतः ॥ तां पि-

वेतयथाशक्त्याज्यहोतिसिद्धिर्नियच्छति ॥ ६१ ॥ शंखपुष्पीतुपयसात्राह्नीपुष्पाणिसर्पिषा ॥ शतावरीचपयसावचामद्भिर्घृतैर्नवा ॥ ६२ ॥
 सूक्ताभ्यामनुमंत्राभ्यामैकैकांतुज्यहंपिबेत् ॥ श्रद्धामेधांस्तृतिपुष्टिबलंक्षमीचर्विदति ॥ ६३ ॥ सिद्धिप्राप्नोतिपरमां दीर्घमायुःसमश्रुते ॥
 अथवामनसाध्यायेत्सूक्तं सिद्धिर्नियच्छति ॥ ६४ ॥ शासइत्यासपन्नसंप्राप्तेविजिगीषतः ॥ प्रयोक्तव्यंतुशुचिनाजुहुयात्तत्रसिद्धयः ॥ ६५ ॥
 अथवाजव्यमेवस्यात्संप्राप्तमभिगच्छतः ॥ शासइत्येतियोहंतुशंस्तान्स्तुविवाधते ॥ ६६ ॥ अलक्ष्मीनाशनार्थंतुजपेन्नित्यं शिरिर्विठम् ॥
 अपामार्गमयींशाखांसदभौसहवीरुधैः ॥ ६७ ॥ गृहीत्वात्मानं पावयेदधश्चोर्ध्वं च नित्यशः ॥ आज्यं वानेन जुहुयात्सहस्रं दशतीर्दश ॥ ज्येहेणनु-
 दतेदेहादलक्ष्मींशतवार्षिकीम् ॥ ६८ ॥ चांद्रायणं च रज्रेतत्सूक्तं सिद्धिं करं जपेत् ॥ अलक्ष्मीर्नुदतेदेहादपि वर्षं सहस्रिकी ॥ ६९ ॥ गृहीतं य-
 क्ष्मणादर्मान्गृहीत्वा संस्पृशन्जपेत् ॥ मुंचामित्वाहविधेति यक्ष्माणमपकर्षति ॥ ६७० ॥ समिद्धमग्निं जुहुयादाज्येनैव यथाविधि ॥ संपात-
 मान्येन न येत्संपातैश्च पयःपिबेत् ॥ ७१ ॥ संपातभाजने सर्पिश्चूर्णतत्र निधापयेत् ॥ तत्रास्यभोजनीयं स्यात्पानीयं चानुमंत्रितम् ॥ ७२ ॥
 स्वादिराणि च काष्ठानि चूर्णकृत्वा साहांबुभिः ॥ साधयीतरसं चैषां मध्वाज्याभ्यां पिबेत्सह ॥ ७३ ॥ मुंचामित्वाहविधेति तत्र तत्र प्रयोजयेत् ॥
 यक्ष्माणमपकर्षति शरीरारोग्यकर्मणा ॥ ७४ ॥ यस्यागर्भः प्रसीयेत तत्राग्नौ जुहुयाद्धविः ॥ ब्रह्मणाग्निः संविदान इत्याज्येन यथाविधि ॥ ७५ ॥
 आज्यशेषेण चाभ्यज्यगर्भिणीं प्रसवेत्ततः ॥ पिबेदेवाज्यशेषं तु जीवन्तस्याः प्रजायते ॥ ७६ ॥ जातानि चेत्प्रमीयेरत्राज्यं कृत्वा अनुमंत्रितम् ॥
 जुहुयाद्ब्रह्माभिरितिसंपातान्न न येन्मणौ ॥ ७७ ॥ मर्णितुन्निवृत्ते सूत्रे वा सयेद्वा ससासह ॥ न्यग्रोधं गुंगया तत्र शुक्लोदितवेष्टितम् ॥ ७८ ॥
 तं साविज्ययुतेनैवानुमंत्र्या यथाविधि ॥ संपातैरयुतेनैव ब्रह्मणेति च संस्तुतम् ॥ ७९ ॥ उपरिष्ठाच्च साविज्या तावदेवानुमंत्रणम् ॥ सर्वैः स्वस्त्यनै-

अथैवजपेदमिहुतमणिम् ॥ ६८० ॥ शिरसाधारयेन्नारीप्रयतागभिणीसती ॥ दृतीयेगर्भमासेतुमणिमेतंसमासजेत् ॥ पुष्पवतीपरंनारीगौः
 सवत्साचरेद्यथा ॥ ८१ ॥ बहुपानीययवसान्वत्सेनपिवतासह ॥ जातस्यलुक्कुमारस्यकंठेतमणिमासजेत् ॥ ८२ ॥ आज्यशेषंपुरस्कृत्यत-
 मभ्यज्यकुमारकम् ॥ हुत्वास्वस्त्ययनैरेवक्षीपुमांसंप्रसूयते ॥ ८३ ॥ ऊर्ध्ववर्षात्स्वस्त्ययनंपुनरेवविधीयते ॥ पुनःस्तनप्रदानार्थंश्रद्धासूक्तेन
 पाययेत् ॥ ८४ ॥ मेघासूक्तेनचैवैतलिपट्ठनीहिमयंकृतम् ॥ मधुमिश्रजातरूपमेधावीतेनजायते ॥ ८५ ॥ शतवर्षाणिजीवेतत्रियतेनपुरा-
 युपः ॥ स्मृतमेवचतस्यस्यात्वपमासाक्षततःपरं ॥ ८६ ॥ आज्यंसंस्कृत्यजुहुयादक्षीभ्यांतइतिद्विजः ॥ पाणिनातुष्टृताक्तेनमूर्धानंसंस्पृशे-
 ततः ॥ ८७ ॥ कर्णेनित्रेचचुबुकंनसिकांचैवसंस्पृशेत् ॥ एवमेवजपेन्नित्ययक्ष्मणोविप्रमुच्यते ॥ ८८ ॥ पूर्वोक्तेनैवकल्पेनयक्ष्मनाशन-
 माचरेत् ॥ होमैश्चैवजपैश्चैवयक्ष्मनाशनमाचरेत् ॥ ८९ ॥ अपेहीतिजपेत्सूक्तंशुचिर्दुःस्वप्ननाशनम् ॥ देवाःकपोतइतिलुकपोतस्यप्रवेशने
 ॥ ६९० ॥ सूक्तेनजुहुयादाज्ययमदूतद्वतंविदुः ॥ सपत्न्यंप्रयुंजीतऋषभंजपहोमयोः ॥ ९१ ॥ येनेदमितिवैनित्यजपेतनियतव्रतः ॥
 समाधिंमनसस्तेनविदतेनैवमुह्यति ॥ ९२ ॥ मयोभूर्वातइतिलुगवांस्वस्त्ययनंजपेत् ॥ यवानांतुष्टृताक्तांकारीपेभ्रासमाहितः ॥ ९३ ॥
 जुहुयाद्रोष्टमव्येतुदधिमध्वाज्यसंस्कृतात् ॥ राजानमभिमिच्येतपुण्येणश्रवणेनवा ॥ ९४ ॥ पौष्णसावित्रसौम्याश्विरोहिण्यामुत्तरासुच ॥
 हुत्वाभिंराजलिगाभिःसावित्र्याप्रयतःशुचिः ॥ ९५ ॥ महाव्याहृतिमिश्रैवसंपातामिहुतोभवेत् ॥ सर्वौषधिरसैःरुद्धेनैदीनांसलिलेनच
 ॥ ९६ ॥ व्याघ्रचर्मण्यथासीनमासंचामभिमिच्यच ॥ तिष्ठन्प्रत्यङ्मुखोब्रूयाज्यत्वंपृथिवीमिमाम् ॥ ९७ ॥ धर्मस्तेनखिलोराजन्यवर्धतांपाल-
 यप्रजाः ॥ वर्धत्वंचश्रियैपुष्ट्यैजयायाभ्युदयायच ॥ ९८ ॥ राजानःसंतुतेगोत्रेततोऽप्रतिरथंजपेत् ॥ वैद्याग्रंतुभवेच्चर्मसमिदौदुंबरीभवेत्

॥ ९९ ॥ त्रिरेनमभिषिच्यैवंदुंदुभीनमिमंत्रयेत् ॥ प्राच्यांत्वादिशिवसवोह्यमिषिंचतुजेसे ॥ ७०० ॥ दक्षिणस्यांत्वादिशिरुद्राअ-
 मिषिंचतुष्टये ॥ प्रतीच्यांत्वादिरयादित्यामिषिंचतुष्टये ॥ १ ॥ विश्वेदेवादीच्यांत्वाअमिषिंचतुष्टयेसे ॥ अमिषिच्यचराजा-
 नमाशीर्भिरमिमंत्रयेत् ॥ २ ॥ आत्वाहार्पमंतरेधीत्यथैनममिमंत्रयेत् ॥ पतंगमितिवैतिलंजपेदज्ञानभेदनम् ॥ ३ ॥ मायाभेदनमेत-
 द्द्विसर्वाभायाःप्रबाधते ॥ शांवरिर्मिद्वजालांवाभायामेतेनवारयेत् ॥ ४ ॥ अदृष्टानांचसत्त्वानांभायामेतेनबाधते ॥ लभूष्वितिस्वस्त्य-
 यनंजपेत्तनियतव्रतः ॥ ५ ॥ पुष्पंदृष्टातुयागर्भनगृहीयाद्वयोन्यिता ॥ विष्णुर्योनिनेजमेपयोनिस्तृष्ट्वाततो जपेत् ॥ ६ ॥ महित्री-
 णामवोस्त्वितिपथिस्वस्त्ययनंजपेत् ॥ प्राप्नयेत्तद्विषट्कंभ्यंजपेद्विष्यस्यनिष्ठुतिम् ॥ ७ ॥ आर्यगौःसार्पराक्षीतुसर्पनेतेनबाधते ॥ पवि-
 त्राणांपवित्रंजपेदेवाधमर्पणम् ॥ ८ ॥ आपःप्रविश्ययश्चैतन्निःपठेतसमाहितः ॥ अथाश्वमेधावभृथस्तादृशंमनुरब्रवीत् ॥ ९ ॥ अशु-
 च्येवनिमज्जित्वात्रिःपठेदधमर्पणम् ॥ अथाश्वमेधावभृथाएवंतद्विषरब्रवीत् ॥ १० ॥ यथाश्वमेधःक्रतुराद्रसर्वपापप्रणोदनः ॥ तथाघ-
 मर्षणंसूक्तंसर्वपापप्रणोदनम् ॥ ११ ॥ सेनादारणमेतत्स्यान्नैहैस्त्वमितिशौनकः ॥ मनसाध्येयमेतत्तुमन्यतेशौनकस्तृषिः ॥ १२ ॥ संस-
 मिद्युवसेवृषणसौआवृकरणंमहत् ॥ ज्ञातिभेदेग्रयुंजीतनमिद्यतेकदाचन ॥ १३ ॥ कृतेभेदेतुसंज्ञानमेतत्संधिकरंजपेत् ॥ नतत्रभेदोभूयः
 स्याद्यत्रैतत्सतंतजपेत् ॥ १४ ॥ तच्छंयोरारवृणीमहइतिस्वस्त्ययनंजपेत् ॥ महानाश्रयःपरंब्रह्मशुक्रंज्योतिःसनातनम् ॥ १५ ॥ सपन्नश्च-
 पुण्याश्चपावमान्यःपराःस्मृताः ॥ दृष्टिकामोजपेच्चैताआपोहैताःसनातनाः ॥ १६ ॥ अकारपूर्वग्याहृतयोमधुच्छंदसआदितः ॥ सूक्ता-
 न्यतेमहानाश्रयःसंहितासाऽमृतास्मृता ॥ १७ ॥ अमृतत्वयुर्वेदाःपूर्वसंहितयानया ॥ जपेदेनाशुचिर्नित्यममृतत्वंसगच्छति ॥ १८ ॥

अत्रैवतुजोपेन्मध्येपितृसूक्तान्यनेकशः ॥ पित्र्यांतांसंहिताविद्यातिपत्तृणीणातिचैतया ॥ १९ ॥ एवमेवसमाहृत्यवाससीसंहिताभवेत् ॥
 रौद्रादित्यावैश्वदेवीयदेवत्यां चक्रमयेत् ॥ ७२० ॥ कुर्वीतवास्तुशमनंमध्येगोष्ठस्यधर्मवित् ॥ पुण्यैर्गर्धैश्चमाल्यैश्चवानस्पत्यैस्तथौषधैः
 ॥ २१ ॥ वास्तुसर्वप्रविकिरेत्सप्तधान्यैस्तथैव च ॥ वास्तोष्पतिंयजेच्चात्रपायसेनबृहस्पतिम् ॥ २२ ॥ औदुम्बरपलाशैश्चबलिंप्रतिदिशंहरेत् ॥
 सूर्योवायुर्यमःपितरोवरुणोनिर्ऋतिस्तथा ॥ २३ ॥ सोमोमहर्द्रह्येतादिक्षुदिग्देवताःस्थिताः ॥ दद्याद्दानंब्राह्मणेभ्यःशिवंभवतुवास्त्विति
 ॥ २४ ॥ प्रतिसंवत्सरंकार्यगृहेवैगृहमेधिना ॥ यद्येवंसविधंनान्यदनुक्तमपि किंचन ॥ २५ ॥ अभिमित्रमथोवायुंसूर्यमन्याश्चदेवताः ॥
 आराधयिषुर्योयोयामभिधत्तेतथात्रताम् ॥ २६ ॥ असिरूपेणसूक्तेनयथादिष्टंप्रयोजनम् ॥ ऋषीणांमंत्रद्वष्टेनप्रत्यक्षात्सिद्धिरिष्यते ॥ २७ ॥
 सर्वत्रदक्षिणांदद्याद्धनंवाकर्मसिद्धये ॥ नत्वेवादक्षिणंकर्मकिंचिदस्तीतिशौनकः ॥ २८ ॥ शक्त्याहिपूर्णेपात्रेणसंमिताप्यंततोभवेत् ॥
 तस्मात्सलपापिदातव्यादक्षिणाकर्मसिद्धये ॥ २९ ॥ ऋषभैकादशादद्याद्येनवातुष्यतेगुरुः ॥ धर्मज्ञेसत्यवादिनिब्रह्मदानंप्रदीयते ॥ ३० ॥
 तादिदंपरमंब्रह्मगुह्यंपावनमद्भुतम् ॥ नाप्रशांतायदातव्यंनापुत्रायातपस्विने ॥ नासंवत्सरोषितायनाशिष्यायाहिताय च ॥ ३१ ॥ इत्युग्वि-
 धानेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ नराणांभाग्यहीनानामृग्विधानमजानताम् ॥ ऋग्वेदःकल्पवृक्षोयंफलंनैवप्रयच्छति ॥ ३२ ॥ रत्नगर्भइवा-
 वासऋग्वेदःप्रतिभातिमे ॥ ऋग्विधानप्रदीपेनविनानैवप्रकाशते ॥ ३३ ॥ रत्नाकरइवोदारऋग्वेदोऽलंतदुस्तरः ॥ ऋग्विधानंमहापूतं
 विनानैवफलप्रदम् ॥ ३४ ॥ निधानंसर्वरत्नानामृग्वेदोऽब्रह्ममंदिरम् ॥ ऋग्विधानविधानेनधुवमेतदवाप्यते ॥ ३५ ॥ ऋग्वेदःपठितोत्येषनु
 णांभवतिनिष्फलः ॥ ऋग्विधानंविनातस्माद्ध्येयंतत्प्रयत्नतः ॥ ३६ ॥ सूक्ततत्त्वार्थकथनमृग्विधानमर्भैतियः ॥ ऋग्वेदोजायतेतस्यप्रसा-

दोस्तुल्लभानसः ॥ ३७ ॥ आयुष्यंसंपदोमूलंसद्यःकल्मषनाशनम् ॥ ऋग्विधानाभ्यनुष्ठानंशुभंकीर्तिकरं परम् ॥ ३८ ॥ ऋग्विधानेनसंयुक्त-
 मृग्वेदंवेत्तियोद्विजः ॥ धर्मार्थकाममोक्षणाभाश्रयःसमवेद्वुवम् ॥ ३९ ॥ वेदेषुप्रथमोवेदआयुर्वेदनिधिःप्रभुः ॥ ऋग्विधानस्यचाभ्यासाद-
 तीवपरितुष्यति ॥ ७४० ॥ शत्रुनाशमनस्तुष्टिसुहृज्जनसमागमान् ॥ ऋग्वेदःकुरुतेनित्यमृग्विधानेनतोषितः ॥ ४१ ॥ ऋग्वेदंवेत्तियः
 सांगमृग्विधानरतःसदा ॥ मनोरथादप्यधिकंभवेत्तस्यसमीहितम् ॥ ४२ ॥ कुलेजन्मनिशीलेवाप्रज्ञायासुद्यमेपिवा ॥ ऋग्विधानपरिज्ञाना-
 दुशंतिचरितार्थताम् ॥ ४३ ॥ तुष्यंतिदेवताःसर्वाःसंपद्यंतेविभूतयः ॥ दुराधयःप्रणश्यंतिनित्यमृग्विधिपाठिनाम् ॥ ७४४ ॥ नमः
 शौनकायनमःशौनकाय ॥ इत्यृग्विधानफलश्रुतिः ॥ ॥ ऋग्विधानंसमाप्तम् ॥

अथयामलाष्टकतंत्रेखिलोपनिषन्मंत्रसंहितास्वरूपम् ।

श्रीः ॥ पार्वत्युवाच ॥ शिवशंकरदेवेशपंचकृत्यपरायण ॥ स्वरूपमंगवेदानांश्रुतंस्वन्मुखतोमया ॥ १ ॥ इदानींश्रोतुमिच्छामि
 खिलान्युपखिलानिच ॥ महोपनिषदश्चैवयाश्चान्यामंत्रसंहिताः ॥ २ ॥ वेदानांसारभूतास्तुवदमेकरुणानिधे ॥ श्रीशिवउवाच ॥
 शृणुदेविप्रवक्ष्यामिखिलान्युपखिलानिच ॥ महोपनिषदोमंत्रसंहिताःसकलार्थदाः ॥ ३ ॥ पुराव्यासेनवेदेषुसंक्षिप्तेषुचतुर्ष्वपि ॥
 अनुवाकाष्टकाध्यायसूक्तवाक्यपदात्मसु ॥ ४ ॥ तत्रतत्रतुशिष्टानिन्यानिवाक्यानिंसंतिहि ॥ खिलानितानिचोच्यंतेखिलशिष्टानिन्यानिच
 ॥ ५ ॥ वाक्यान्युपखिलानीतिकथ्यंनेतानिभामिनि ॥ बालखिल्यंचराजन्यंलक्ष्मीसूक्तंचगारुडम् ॥ ६ ॥ स्वास्तिकंभौतिकंभौम-
 मायुष्यंप्राहमेवच ॥ ऋक्खिलानिप्रक्रीर्यंतेमहंतिवरवर्णिनि ॥ ७ ॥ पैशाचंरात्रिकांडंचत्रैवेण्यंस्वाप्नमेवच ॥ ऋक्संभूतान्युपखि-

लान्युदीर्यतिमहांतिवे ॥ ८ ॥ सत्याषाढ्यप्राच्यकाठ्यंकाठ्यंमौद्वल्यमेवच ॥ वैत्रपौडशकर्माण्यंनगवत्यंयजुःखिलम् ॥ ९ ॥ औधे-
 यमापत्तवीयमाप्तेयोमीयमेवच ॥ यजुर्वेदस्योपखिलान्युच्यतेवरवर्णिनि ॥ १० ॥ कौथुन्यंगौतमीयंचवानस्पत्यंयंतरम् ॥ वैराज्यं
 महासंमोहनंचैत्यमथर्वणखिलंमहत् ॥ ११ ॥ बृहदायंबृहद्रहसामवेदप्रकीर्त्यते ॥ आंगिरसमथर्वाख्यशिरसौत्क्यमरिग्रहम् ॥ १२ ॥
 तथाचैवोपनिषदोद्वात्रिशत्परिकीर्तिताः ॥ १४ ॥ ईशावास्यंचकेनाख्यंकठवह्याह्वयंततः ॥ अथर्वोपखिलान्येतान्युच्यतेसुमहांतिच ॥
 ॥ १५ ॥ प्रश्नाख्यंबृहदारण्यकमैतरेयतथैवच ॥ गर्भाख्यंचैकैकल्यंश्वेताथ्यतरमेवच ॥ १६ ॥ मुंडकंमांडुकंचैवछांदोग्यंतैत्तिरीयकम्
 शारीरंनारदंविद्वाख्यंमंत्रंचामृतविदुक् ॥ १७ ॥ ब्रह्माख्यंचैवजावालमथर्वशिरसंज्ञकम् ॥ १८ ॥ कालाग्निरुद्रहंसंचनारायणमतःपरम् ॥
 मैत्रेयंपरमहंसंछुरिकासंज्ञकंतथा ॥ कौपीतंकतापनीयमारुणीनामकंततः ॥ १९ ॥ मैत्रायणीयमाथर्वशिखासंज्ञतःपरम् ॥ २० ॥
 निपच्छब्दवाच्यानिदुहिमाद्रिजे ॥ २० ॥ मोक्षैकहेतुभूतानिचृणांश्रवणमात्रतः ॥ चतुर्वेदाद्यतोदन्वत्सुधारसनबंधनात् ॥ २१ ॥ एतान्युप-
 ससुद्धृतान्युपनिषद्ब्रह्मनिगिरिकन्यके ॥ संसारदुःखसंतापसंतप्ताखिलदेहिनाम् ॥ २२ ॥ महत्युपनिषत्प्रोक्ताजीवनौपधमालिका ॥
 अज्ञानांधतमोयुक्तसर्वलोकगृहस्थितम् ॥ २३ ॥ दीपिकोपनिषत्प्रोक्तामुक्तिप्रमार्गितुम् ॥ २४ ॥ द्वात्रिंशदेवतादेविमहोपनिषदःशुभाः
 ॥ २४ ॥ महत्यःसर्ववेदानांमातरःपरिकीर्तिताः ॥ यान्येवकीर्त्यतेब्रह्मतत्त्वतत्त्वविदांवरं ॥ २५ ॥ अपूर्णं ॥ इत्यादिसंक्षेपः ॥
 इतिश्रीमद्यामलाष्टकतंत्रेखिलोपनिषन्मंत्रसंहितास्वरूपकथनंनामत्रयोदशःपटलः ॥

॥ अथ प्रथमाष्टकप्रारंभः ॥

॥ अथ सर्वानुक्रमपरिभाषा ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीवेदपुरुषायनमः ॥ हरिः ॐम् ॥ अथ ऋग्वेदाम्नाये शाकलके सूक्तप्रतीक ऋक्संख्य ऋषिदैवतच्छंदां
स्यनुक्रमिष्यामोऽयथोपदेशं न ह्येतज्ज्ञानमृतैश्रौतस्मार्तकर्मप्रसिद्धिर्मन्त्राणांब्राह्मणार्थेच्छंदोदैवतविद्याजनाध्यापनाभ्यां
श्रेयोधिगच्छत्येताभ्यामेवानेवंविदोयातयामानिच्छंदांसि भवति स्थाणुवच्छंतिर्गते वा पात्यते प्रमीयते वा पापीयान् भवती
ति विज्ञायते ॥ १ ॥ अथ ऋग्वेदः शतर्चिन आद्ये मंडलं लेख्यं शुद्रसूक्तमहासूक्तमध्यमेषु माध्यमाः क्वचित्कथंचिदविशेषितं ब्रह्म ऋ
षिमस्त्रियमनुक्तगोत्रमांगिरसं विद्याद्यस्य वाक्यं स ऋषिर्यति नोच्यते सा देवता यदक्षरपरिमाणं तच्छंदोऽर्थेऽस्य ऋषयो देव
ता नृच्छंदोभिरभ्यधावंस्तिष्ठन्ऽएव देवताः क्षित्यंतरिक्षद्युस्थानाऽअग्निर्वायुः सूर्य इत्येवं व्याहृतयः प्रोक्ता व्यस्ताः समस्तानां प्र
जापति (रांपतु प्रजापति) रोंकारः सर्वदेवतः पारमेष्ठ्योर्वाब्राह्मणो देव आध्यात्मिकस्तत्तत्स्थानाऽअन्यास्ता द्विभूतयः कर्मपृथ
क्त्वा द्विपृथगभिधानस्तुतयो भवत्यैकैव वामहानात्मा देवता स सूर्य इत्याचक्षते सहिसर्वभूतात्मा तदुक्तमृषिणा—सूर्यऽआ
त्मा जगत्स्थुषश्चेति तद्विभूतयोऽन्या देवतास्तदप्येतद्वचोक्तं मिंद्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरितियथाभिधानं त्वनुक्रमिष्यामः
प्रायेणैद्रमरुतौ राज्ञांच दानस्तुतयः ॥ २ ॥ अथच्छंदांसि गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहतीपंक्तित्रिष्टुप्जगत्यतिजगतीशक्वर्थति
शक्वर्थेऽत्यटीधृत्यतिधृत्यश्चतुर्विंशत्यक्षरादीनि चतुरुत्तराण्यनूनाधिकेनैकेन निचृद्भुरिजौद्राभ्यां विराड्स्वराजौपादपूर

णार्थतुक्षमसंयोगैकाक्षरीभावान्व्यूहदाघेतुससवर्गं पादविशेषात्संज्ञाविशेषास्ताननुकामंतएवोदाहरिष्यामोविराड्पा
विराड्स्थानाश्चबह्वनाऽअपित्रिष्टुभऽएवेत्युद्देशस्तत्रशैकादशद्वादशाक्षराणां वैराजत्रैष्टुभजागताइतिसंज्ञाअनादेशो
ष्टाक्षराःपादाश्चतुष्पदाश्चर्चः ॥ ३ ॥ ग्रथमंछंदस्त्रिपदागायत्रीपंचकाश्चत्वारःषड्द्वैकश्चतुर्थश्चतुष्कोवापदपंक्तिःपद्सप्तै
मानाविपरीताप्रतिष्ठाद्वौषड्द्वैसप्तकश्चहसीयसी ॥ ४ ॥ द्वितीयमुष्णिक्त्रिपदांत्योद्वादशकआद्यश्चेत्पुरउष्णिज्ज
ध्यमश्चेत्ककुपत्रैष्टुभजागतचतुष्काःककुबन्त्यकुशिरैकादशिनोःपरःषड्द्वैस्तनुशिरां मध्येचेत्पिपीलिकमध्याऽऽद्यःपंच
कस्त्रयोष्टकाऽअनुष्टुवर्गभीचतुःसप्तकोष्णिगेव ॥ ५ ॥ तृतीयमनुष्टुपंचपंचर्काःषड्द्वैकोमहापदपंक्तिर्जागतावष्टकश्च
कृतिर्मध्येचेदष्टकःपिपीलिकमध्यानवकयोर्मध्येजागतः काविराणनववैराजत्रयोद्देशैर्नष्टरूपादशकास्त्रयोविराळेकादश
कावा ॥ ६ ॥ चतुर्थबृहतीतृतीयोद्वादशाद्यश्चेत्पुरस्ताद्बृहतीद्वितीयश्चेन्न्यकुसारिण्युरोबृहतीवास्कंधोऽपीवीवांत्यश्चेदु
परिष्टाद्बृहतीद्विनोर्मध्येदशकौविष्टारबृहतीत्रिजागतोर्ध्वबृहतीत्रयोदशिनोर्मध्येष्टकःपिपीलिकमध्यानवकाष्टेकादन्य
ष्टिनोविषमपदाचतुर्नवकाबृहत्येव ॥ ७ ॥ पंचमपंक्तिःपंचपदार्थचतुष्पदाविराड्दशकैर्युजौजागतौसतोबृहतीयुजौचे
द्विपरीताद्यौचेत्प्रस्तारपंक्तिरंत्यौचेदास्तारपंक्तिरामध्यामौचेद्विष्टारपंक्तिः ॥ ८ ॥ षष्ठित्रिष्टुपत्रैष्टु

भपदाद्वैतुजागतौयस्याः साजागतेजगतीत्रैष्टुभैष्टुवैराजौजागतौचाभिसारिणीनवकौवैराजस्त्रैष्टुभश्चद्वौवैराजौ
 नवकस्त्रैष्टुभश्चविराट्स्थानैकादशिनस्त्रयोष्टकश्चविराड्पाद्वादशिनस्त्रयोष्टकश्चज्योतिष्मतीयतोष्टकस्ततोज्योतिश्चत्वा
 रोष्टकाजागतश्चमहाबृहतीमध्येवेद्यवमध्याद्यौदशकावष्टकास्त्रयः पन्त्युत्तराविराट्पूर्वावा ॥ ९ ॥ सप्तमंजगतीजागतप
 दाष्टिनस्त्रयः स्वौचद्वौमहासतोबृहत्यष्टकौसप्तकः पङ्क्तौदशकोनवकश्चपळष्टकावामहापंक्तिः ॥ १० ॥ अथप्रगाथाबृह
 तीसतोबृहत्यौबार्हतः ककुप्चेत्पूर्वाकाकुभौमहाबृहतीमहासतोबृहत्यौमहावार्हतोबृहतीविपरीतेविपरीतोत्तरोनुष्टुब्गा
 यत्र्यौचानुष्टुभौऽनुष्टुम्मुखास्तुचाइत्युक्तेः ॥ ११ ॥ सूक्तसंख्यानुवर्ततान्यस्याः सूक्तसंख्यायाः ऋषिश्चान्यस्मादपेरवा
 विशिष्टस्तुहिहैवतच्छब्दविशिष्टान्यृषिदैवतच्छंदांसिद्वित्रिचतुः पंचपद्सूक्तमार्जि यथासंख्यमनिरुक्तासंख्याविंशति
 रनादेशेत्विद्रोदेवतात्रिष्टुप्छंदः प्रगाथावार्हताविशिकाद्विपदाविराजस्तदर्धमेकपदाद्विर्द्विपदास्त्वृचः समासनं त्ययुक्ष्वं
 त्याद्विपदैवमंडलादिष्वग्नेयमैद्रात्रिष्टुवंतस्यसूक्तस्यशेषाजगत्यादौगायत्रप्राग्घिर्णयस्तूपात् ॥ १२ ॥ (गोधाघो
 पाविश्ववारापालोपनिषन्निपत् । ब्रह्मजायाजुहूर्नामगस्त्यस्यस्वसादितिः ॥ इंद्राणीचेन्द्रमाताचसरमारोमशोर्वशी ।
 लोपासुद्राचनद्यश्चयमीनारीचशश्वती ॥ श्रीर्लक्षासार्पराज्ञीवाक्श्रद्धामेधाचक्षिणा । रात्रीसूर्याचसावित्रीब्रह्मवादि
 न्यईरिताः ॥ १३ ॥ पादाअतिजगत्यांतुत्रयोद्वादशकाः परौ । अष्टकौशक्करीपार्दाः सप्तैवाष्टाक्षराश्चते ॥ अतिशाक्कर

ऋक्सं.

अ. १ अ. १

॥ ३ ॥

पादौ द्वावा दितः षोडशाक्षरौ । जागतश्चाष्टकावष्टिपादाः षोडशकास्त्रयः ॥ अष्टकौ चात्यष्टिपादौ जागतौ चाष्टकास्त्रयः ।
जागतश्चाष्टकश्चाथ द्यूतिपादौ तु जागतौ ॥ पादास्त्रयोष्टकाश्चाथ षोडशाक्षरएव च । अष्टकश्चाथाति द्यूतौ जागतः षोडशा
क्षरः ॥ त्रयोष्टका जागतश्चतथैवाष्टक इत्यपि । परः सप्तकपादास्तु प्रसंगात्स्वयमीरिताः) ॥ १४ ॥ इति परिभाषा ॥
अग्निं न वमधुच्छंदावैश्वामित्रो वायो वायव्यै द्रवाय वैमित्रावरुणास्तृचा अश्विना द्वादशाश्विनैर्द्रवैश्च देवसारस्वता
नसिभिर्देहिगायंति द्वादशानुष्टुभं त्विन्द्रमष्टौ जेतामाधुच्छं दसौ शिंघ्रि द्वादशमेधातिथिः काण्व आश्वेयं मग्निनेति पादो
द्व्यभिदैवतो निर्मथ्या हवनीयाभ्यां सुसमिद्ध इतीधर्मः समिद्धो वाग्निस्तनूनपात्रांशं स इळो वहिर्देवीर्द्वार उयासान
कदिव्यौ होतारौ प्रचेतसौ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळा भारत्यस्त्वष्टावनस्पतिः स्वाहाकृतय इति प्रत्यूचं देवता एतदा
ग्रीष्मर्कमेतेनान्यान्युक्तदेवतान्येकादशकानित्वनाराशं सान्याग्रशब्दोक्तानित्वतनूनपात्यै भिवैश्वदेवमिन्द्रसोम
श्रुतव्यतत्रैद्रीमारुतीत्वाष्ट्याग्नेर्यैर्भीमैत्रावरुणी च तस्रो द्रविणो दस आश्विन्याग्नेयुदेवताः सर्वत्रात्वानवेंद्रावरु
णयोरैन्द्रावरुणयुवाकुपादनिचूतौ (इंद्रो हसीयसीवा) सोमानमिति पंचाक्षणस्पत्याश्चतुर्थ्यामिन्द्रश्च सोमश्च पंचम्यां
दक्षिणाचान्याः सादसस्पत्या नाराशंसीवात्याप्रतित्यमाग्निमारुतं ॥ १ ॥

॥

॥

मंडलं १

अनु. १

॥ ३ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीवेदपुराणायनमः ॥

हरिःओ३म् ॥ (मं. १ अ. १ सू. १) अग्निमीळेपरोहितयज्ञस्यदेवमत्विजं । होतारंरत्नधातमं ॥ अग्निःपूर्वोभिरक्रिये
भिरिच्छ्योनूतनैरुत । सदेवोऽएहवक्षति ॥ अग्निनारयिमश्रवत्पोषमेवदिवेदे । यज्ञसंवीरवत्तमं ॥ अग्नेययज्ञमध्वरं
विश्वतःपरिभूरसि । सऽइहेवेषुगच्छति ॥ अग्निर्होताकविक्रतुःसत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवोदेवेभिरागमत् ॥ १ ॥ यदुं
गदाशुषेत्वमग्नेभद्रंकरिष्यसि । तवेत्तत्सत्यमंगिरः ॥ उपत्वाग्नेदिवेदिवेदोषावस्तार्धियावयं । नमोभरंतुऽएमसि ॥ राजं
तमध्वराणांगोपामृतस्यदीदिविं । वर्धमानंस्वेदमे ॥ सनःपितेर्वसनवेग्नेसूपायनोभव । सचस्वानःस्वस्तये ॥ २ ॥ (१।१।२)
वायवायाहिदर्शतेमेसोमाऽअरंकृताः । तेषांपाहिश्रुधीहवं ॥ वार्यउक्थेभिर्जेरंतेत्वामच्छाजितारः । सतसोमाऽअ
हर्विदः ॥ वायोतवप्रपृचतीधेनाजिगातिद्राशुषे ॥ उरूचीसोमपीतये ॥ इन्द्रवायूद्भुमेसुताऽउपप्रयोभिरागतं । इंदवो
वामशान्तिहि⁺ ॥ वायुर्विद्रंश्चचेतथःसुतानांवाजिनीवसू । तावायांतमुपद्रवत्⁺ ॥ ३ ॥ वायुर्विद्रंश्चसुन्वतऽआयातमुप
निष्कृतं । मक्षि⁺त्थाधियानरा ॥ मित्रंहुवेपतदंक्ष्वरुणंचरिशार्दंसं । धियंघताचींसार्धता ॥ ऋतेनमित्रावरुणावृ

(१।१।१) अग्निमीळइतिनवर्चस्यसूक्तस्यवैश्वामित्रोमधुच्छदाअभिर्गोयत्री । (१।१।२) वायवायाहीतिनवर्चस्यसूक्तस्यवैश्वामित्रो
मधुच्छदाःआद्यतृचस्यवायुःद्वितीयतृचस्येन्द्रवायूतृतीयतृचस्यमित्रावरुणौगायत्री ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. १

॥ ४ ॥

मंडलं. १

अनु. २

॥ ४ ॥

तावृधावृतस्पृशा । कर्तुं वृंहंतमाशये ॥ कवीनो मित्रावरुणा तु विजाताऽर्क्षयो । दक्षं दधातेऽअपसं ॥ ४ ॥ (१।१।३)
अश्विनायज्वरीरिषोऽद्वत्पाणी शुभस्पती । पुरुभुजाचनस्यतं ॥ अश्विना पुरुदं सानराशवीरयाधिया । धिष्ययावन
तंगिरः ॥ दक्षायुवाकवः सुतानासत्यावृक्तवर्हिषः ॥ आयातरुद्रवर्तनी ॥ इद्राया हि चित्रमानो सुताऽइमे त्वायवः ।
अण्वीश्रुतनापूतासः ॥ इद्राया हि धिये पितो विप्रजतः सुतावतः । उपब्रह्माणि वाघतः ॥ इद्राया हि तु तु जानुऽउपब्रह्मा
णि हरिवः । सुतैर्दधिष्वनश्चनः ॥ ५ ॥ ओमासश्चर्पणी धृतो विभ्वे देवासऽआगत । द्वाभ्वांसो द्वाशुषः सुतं+ ॥ विभ्वे दे
वासोऽअसुरः सुतमागंतूर्णयः । उस्माऽइव स्वसराणि ॥ विभ्वे देवासोऽअसिधऽएहि माया सोऽअद्रुहः । मेधं जुषंत
वह्नयः । पावकानः सरस्वतीवाजे भिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टुधियावसुः ॥ चोदयित्री सुवतानां चेतं ती सुमतीनां । यज्ञं
दधे सरस्वती ॥ महोऽअर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना । धियो विश्वा विराजति ॥ ६ ॥ (१।२।१) सूरूपकुलुमतये सुदुर्घामिव
गोदुहं । जुहमासिधविधवि ॥ उपनः सवनागहि सोमस्य सोमपाः पिव । गोदाऽइ देवतोमदः ॥ अथ तेऽअंतमानां वि
द्याम सुमतीनां । मानोऽअतिव्यऽआगहि ॥ परे हि विग्रमस्वतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितं । यस्ते सखिभ्यऽआवरं ॥ उत्तं
(१।१।३) अश्विनायज्वरीरिति द्वादशर्चस्य सूक्तस्य वैधामित्रो मधुच्छंदाः आद्यतृचस्याधिनौ द्वितीयतृचस्येन्द्रः तृतीयतृचस्य विभ्वे देवाः
चतुर्थतृचस्य सरस्वती गायत्री । (१।२।१) सूरूपकुलुमिति दशर्चस्य सूक्तस्य वैधामित्रो मधुच्छंदा इन्द्रो गायत्री ।

वंतुनोनिद्रोनिर्न्यतश्चिदारत । दधानांद्रइहुवः ॥ ७ ॥ उतनःसुभगौऽअरिवोचेयुर्दस्मकृष्टयः । स्वामेदिंद्रस्यश
 भेणि ॥ एमाद्युमाशवैभरयज्ञश्रियंनुमार्दनं । पतयन्मंदयत्सखं ॥ अस्यपीत्वाशतकतोघनोवृत्राणामभवः । प्रावो
 वाजैषुवाजिनं ॥ तंत्वावाजैषुवाजिनंवाजयामःशतकतो । धनानामिंद्रसातये ॥ योरायोऽवनिर्महान्सुपारःसुन्वतः
 सखा । तस्माऽइंद्रायगायत ॥ ८ ॥ (१।२।२) आत्वेतानिर्षीदुर्तेद्रमभिप्रगायत । सखायःस्तोमवाहसः ॥ पुरुतमंपुरुणाभी
 शानंवार्याणां । इंद्रसोमेसचासुते⁺ ॥ सधनोयोगऽआभुवत्सरायेसपुरंध्यां । गमद्वाजैभिरासनः ॥ यस्यसंस्थेनघृणवतेह
 रीसमत्सुशत्रवः । तस्माऽइंद्रायगायत ॥ सुतपान्नैसुताऽइमेशुचयोयंतिवीतये । सोमसोदध्याशिरः ॥ ९ ॥ त्वंसु
 तस्यपीतयेसद्योबुद्धोऽअजायथाः । इंद्रज्यैष्ठ्यायसुक्रतो ॥ आत्वाविशंत्वाशवःसोमासऽइंद्रगिर्वणः । शतैसंतुप्रचेत
 से ॥ त्वांस्तोमाऽअवीवृधन्वामकथाशतकतो । त्वांवधनुनोगिरः ॥ अक्षितोतिःसनेदिमंवाजमिंद्रःसहस्रिणं । यस्मि
 न्विन्धानिपौस्या ॥ मानोमतीऽअभिद्रुहन्तनूनामिंद्रगिर्वणः । ईशानोयवयावधं⁺ ॥ १० ॥ (१।२।३) युंजंतिब्रह्मरूपं
 चरंतंपरितस्थुषः । रोचंतेरोचनादिवि⁺ ॥ युंजंत्यस्यकाम्याहुरीविपक्षसारथे । शोणाधृष्णनूनाहसा ॥ केतुकृणवन्नके

(१।२।२) आत्वेतेतिदशर्चस्यसूक्तस्यवैश्वामित्रोमधुच्छदांद्रदोगायत्री । (१।२।३) युंजंतीतिदशर्चस्यसूक्तस्यवैश्वामित्रोमधुच्छदां
 आद्यानां विसृणामिंद्रः ततः षण्णां मरुतः (वीळुचिदिंद्रेणेतिद्वयोरिंद्रश्चवा) दशम्या इंद्रो गायत्री ।

तवेपेशोमर्याऽअपेशसै । समषद्भिरजायथाः ॥ आदहस्वधामनपुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधानानामयज्ञियं ॥ वीलुचिदा
रुजलुभिर्गुहाचिदिद्रवह्निभिः । अविददृष्वियाऽअनु ॥ ११ ॥ देवयंतोयथामतिमच्छाविददृसुंगिरः । महामनू
षतश्रुतं ॥ इंद्रैःसंहिदक्षसेसंजगमानोऽअविभ्युषा । मंदूसमानवर्चसा ॥ अनवद्यैरभिद्युभिर्मखःसहस्वदर्वति । ग
णैरिंद्रैःस्युक्ताभ्यैः ॥ अतःपरिजमन्नागहिद्विवावरोचनादधि । समस्मिन्नजतेगिरः ॥ इतोवासातिमीमहेद्विवापा
थिवादधि । इंद्रमहोवारजसः ॥ १२ ॥ (१।२।४) इंद्रमिद्गाथिनोवृहदिंद्रमर्केभिरर्किणः । इंद्रवाणीरनूषत ॥ इंद्रऽइच्छ
योःसचासंमिश्रऽआवचोयुजा । इंद्रौवृज्रीहिरण्ययः ॥ इंद्रौदीर्घायुचक्षसऽआसूयैरोहयद्विवि । विगोभिरद्विमैरय
त ॥ इंद्रवाजेषुनोवसहस्रप्रधनेषुच । उग्रऽउग्राभिरूतिभिः ॥ इंद्रवयंमहाधुनऽइंद्रमर्भेहवामहे । युजैवृत्रेषुवज्रिणं
॥ १३ ॥ सनोवृषन्नमुंचरुंसत्रादावन्नपावृधि । अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥ तुंजेतुंजेयऽउत्तरेस्तोमाऽइंद्रस्यवज्रिणः । न
विधेऽअस्यसुष्टुतिं ॥ वृषायथेववंसगःकृष्टीरित्यत्योजसा । ईशानोऽअप्रतिष्कुतः ॥ यऽएकंश्वर्षणीनांवसूनामिरज्य
ति । इंद्रःपंचक्षितीनां ॥ इंद्रवोविश्वतस्यरिहवामहेजनेभ्यः । अस्माकमस्तुकेवलः ॥ १४ ॥ (१।३।१) इंद्रसानुसिं
रयिसजित्वानंसद्रासहं । वर्षिष्ठमतयैभर ॥ नियेनमुष्टिहृत्यानिवृत्रारुणधामहै । त्वोतासोन्यर्वता ॥ इंद्रत्वोतास
१ (१।२।४) इंद्रमिदितिदशर्चस्यसूक्तस्यवैश्वा ० मधुच्छदाइंद्रोगायत्री । (१।३।१) इंद्रेतिदशर्चस्यसूक्तस्यवैश्वा ० मधुच्छदाइंद्रोगायत्री ।

ऽआवयंवज्रघनाददीमहि । जयेमसंयुधिस्पृधः ॥ वयंशूरैभिरस्त्वभिरिद्रत्वयायुजावयं । सासह्यामपृतन्यतः+ ॥ म
 हौऽइंद्रः परश्चतुर्महित्वमस्तुवज्रिणे । द्यौर्नम्रथिनाशर्वः ॥ १५ ॥ समोहेवायऽआशतनरः स्तोक्तस्यसर्नितौ । विप्रा
 सोवाधियायर्वः ॥ यः कुक्षिः सौमपातमः समद्रऽइवपिन्वते । उर्वीरापोनकाकुदः ॥ एवाह्यस्यसुतविर्षीगोमती
 मही । पक्वाशाखानदाशुपे ॥ एवाहितेविभूतयऽऊतयऽइंद्रमावते । सद्यश्चित्संतिदाशुपे ॥ एवाह्यस्यकाम्यास्तोम
 ऽउक्थंचशंस्या । इंद्रायसोमपीतये ॥ १६ ॥ (१।३।२) इंद्रेहिमत्स्यंधसोविश्वेभिः सोमपर्वभिः । महौऽअभिष्टिरोजसा ॥
 एमैनंसृजतासुतेमंदिमिंद्रायमंदिने । चाक्किविश्वानिचक्रये ॥ मत्स्वासुशिग्रमंदिभिः स्तोमेभिविश्वचर्षणे । सचैषुसर्व
 नेष्वा+ ॥ अस्तुग्रमिंद्रतेगिरः प्रतित्वामुदहासत । अजोपावृषभंपतिं ॥ संचौदयचित्रमर्वाग्राधऽइंद्रवैरण्यं । असदिक्षे
 विमुप्रमु+ ॥ १७ ॥ अस्मान्तसुतत्रचोदयेंद्ररायेरभंस्वतः । तुर्विद्युन्नयशस्वतः ॥ संगोमदिंद्रवाजवदुस्मेपृथुश्रवोबृह
 त । विश्वायुर्धेह्याक्षितं ॥ अस्मेधेहिश्रवोबृहदयुग्नंसहस्रसार्तमं । इंद्रतारथिनीरियः ॥ वसोरिंद्रवसुपतिगीर्भिर्गुणंत
 ऋगमयं । होमगंतारमतये ॥ सुतेसुतेन्यौकसेवहृदुहृतऽएदुरिः । इंद्रायशूषमर्चति ॥ १८ ॥ (१।३।३) गायंतित्वा
 ऽगायत्रिणोर्चन्त्यर्कमर्किणः । ब्रह्माणस्त्वाशतक्रतुऽउद्रंशमिवयेमिरे ॥ यत्सानोः सानुमारुहर्भूयस्पृष्टकृत्वं । तदिंद्रो
 (१।३।२) इंद्रेहीतिदशर्चस्यसूक्तस्यवैश्वा० मधुच्छंदाइद्रोगायत्री । (१।३।३) गायंतीतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यवैश्वा० मधुच्छंदाइंद्रोनुष्टुप ।

कवसं.

अ. १ अ. १

॥ ६ ॥

ऽअर्थचेततियथेनवृष्णिरेजति ॥ युक्त्वाहिकेशिनाहरीवृषणाकक्ष्यप्रा । अथानऽइन्द्रसोमपागिराभुपश्रुतिचर ॥ एहि
स्तोमोऽअभिस्वराभिर्गुणीह्यारुच । ब्रह्मचनोवसोसचन्द्रयश्चवर्धय ॥ उक्थमिन्द्रायशंस्यवर्धनंपुरुनिष्पिधे । शक्रोय
आसुतेषुणोरारणत्सख्येर्बुच ॥ तमित्सखित्वैमहेतरायेतंसुवीर्धे । सशक्रऽउतर्नःशक्रुदिन्द्रोवसुदयमानः ॥ १९ ॥
सुविवृतंसुनिरजसिन्द्रत्वादतमिद्यशः । गवामपत्रजंवृधिक्षणुष्वराधोऽअद्रिवः ॥ नहिल्वारोदसीऽउभेऽऽक्षघायमाण
मिन्वतः । जेषःस्वर्वतीरपःसंगाऽअस्सभ्यधूनुहि ॥ आश्रुत्कर्णश्रुधीहवंनूचिदधिष्वमेगिरः । इन्द्रस्तोममिममर्क
ष्वायुजाश्चिदंते ॥ विद्वाहित्वावृपंतमंवाजेषुहवनश्रुतं । वृषंतमस्यहमहज्रतिसहस्रसार्तमां ॥ आतूर्नऽइन्द्रकौशिकमे
दसानःसुतंपिच । नव्यमायुःप्रसूतिरकधीसहस्रसामृषिं ॥ २० ॥ (१।३।४) इन्द्रंविश्वऽअवीवृधन्तसमद्रव्यचसंगिरः । रथीतंमरथीनांवाजांनोसत्पतिप
योजुष्टाभवंतुजुष्टयः ॥ २० ॥ (१।३।४) इन्द्रंविश्वऽअवीवृधन्तसमद्रव्यचसंगिरः । रथीतंमरथीनांवाजांनोसत्पतिप
ति ॥ सख्येतंऽइन्द्रवाजिनोमाभेमशवसस्पते । त्वामभिप्रणोनुमोजेतोरमपरजितं ॥ पूर्वाभिर्दुयुवाकविरभितौजाऽअजायत । इन्द्रोविश्वस्यकर्मणोधत्ता
तयः । यदीवाजस्यगोमंतःस्तोतृभ्योमंहतेमघं ॥ २१ ॥ (१।३।४) इन्द्रंविश्वऽअवीवृधन्तसमद्रव्यचसंगिरः । रथीतंमरथीनांवाजांनोसत्पतिप
वृज्जीपुरुष्टुतः ॥ त्वंवलस्यगोमतोपावरद्विवोविलं । त्वांदेवाऽअविभ्युपस्तुज्यमानासऽआविपुः ॥ त्वांहंशूररति
(१।३।४) इन्द्रंविश्वऽअवीवृधन्तसमद्रव्यचसंगिरः । रथीतंमरथीनांवाजांनोसत्पतिप

॥ ६ ॥

मंडलं १

अनु. ३

भिःप्रत्यायसिधुमावदन् । उपतिष्ठतर्गिर्वणोविदुष्टेतस्यकारवः ॥ मायाभिरिद्रमायिनृत्वंशुण्णमर्वातिरः । विदुष्टेत
स्यमेधिरास्तेषांश्रवांस्युत्तिर ॥ इन्द्रमीशानमोजसाभिस्तोमाऽअनूपत । सहस्रयस्यरातयऽउतवासतिभूयसीः ॥ २१ ॥
(१।४।१) अग्निदूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसं । अस्ययज्ञस्यसुक्रतु ॥ अग्निर्मग्निहवीमग्निःसदाहवतविश्वपतिम् ।
हव्यवाहंपुरुप्रियं ॥ अग्नेदेवोऽइहावहजज्ञानोवृक्तवहिषे । असिहोतानुऽईड्यः ॥ तौऽउरुशतोविबोधययदग्नेयासिदू
त्यै । देवैरासत्सिर्वहिषं ॥ घृताहवनदीदिवःप्रतिष्मरिपतोदह । अग्नेत्वंरक्षस्विनः ॥ अग्निनाग्निःसमिध्यतेकविर्गह
पतियुवा । हव्यवाइजुह्वास्यः ॥ २२ ॥ कविमग्निमुपस्तुहिसत्यधर्माणमध्वरे । देवममीवचार्तनं ॥ यस्त्वामग्नेहुविष्ण
तिदूतंदेवसपर्थति । तस्यस्मप्राविताभव ॥ योऽअग्निदेववीतयेहुविष्मोऽआविवासति । तस्मैपावकमृळय ॥ सनः
पावकदीदिवोऽग्नेदेवोऽइहावह । उपयज्ञंहविश्चनः ॥ सनःस्तवानुऽआभरगायत्रेणनवीयसा । रयिवीरवतीमिषं ॥ अग्ने
शूक्रेणशोचिपाविश्वोभिर्देवहूतिभिः । इमंस्तोमंजुषस्वनः ॥ २३ ॥ (१।४।२) सुसमिद्धोऽनार्वहदेवोऽअग्नेहुविष्म

(१।४।१) अग्निदूतमितिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यकाण्वोमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्निनाग्निरित्यस्यनिर्मथ्याहवनीयावमीदेवते । (१।४।२) सु
समिद्धइतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यकाण्वोमेधातिथिःप्रथमायाइध्मः (समिद्धोऽग्निर्वी) द्वितीयायास्तनूपातृतीयायानराशंसःचतुर्थ्याइळःपंच
म्यावर्हिःषष्ठ्यादेव्योद्वारःसप्तम्याउपासानक्ताअष्टम्यादैव्यौहोतारौ(प्रचेतसावितिगुणः) नवम्याःसरस्वतीळाभारत्यःदशम्यास्त्वष्ट्राएकाद

ऋक्सं.

अ. १ अ. १

॥ ७ ॥

ते । होतः पावकयक्षिच ॥ मधुमंतं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्यार्कणुहि वीतये ॥ नराशंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञऽउप
ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतं ॥ अग्ने सुखतमे रथे देवाँऽईक्षितऽआर्वह । असिहोता मनुहितः । स्तुणीतवर्हितरा नुपगृह्यत
सुपेशसास्मिन्यज्ञऽउपह्वये । इदं नो बहिरासदे ॥ तामुजिह्वाऽउपह्वये होतारा देव्या कवी । युज्ञं नो यक्षतामिमम् ॥ इ
त्तिविप्रलेधियः । देवेभिर्मनुष्यैः सोमपीतये ॥ इह त्वष्टारमग्निं विश्वरूपमुपह्वये । अस्माकमस्तु केव
ऽइदं वोमत्सरामादयिष्णवः । इन्द्रवायूश्च हस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगं । आदित्यान्मार्तंगं ॥ प्रवोत्रियंत
धृतपृष्ठामनोयुजो ये त्वावहति वल्लयः । इन्द्रसामध्वंश्चमपदः ॥ ईळते त्वामवस्यवः कण्वा सो वृत्कवर्हिपः । हविष्मतोऽअरुक्तः ॥
इयाव नस्पतिः द्वादश्याः स्वाहा कृतयो देवताः गायत्री छंदः (एतद्वा प्रीसूक्तं) । (१।४।३) ऐभिरम इति द्वादशर्चस्य सूक्तस्य काण्वो मेधातिथिर्विश्वे
देवा गायत्री । (वैश्वदेवं सूक्तं भेदप्रयोगे यल्लिङ्गं सा देवतेति पक्षे आद्ययोर्द्वयोरग्निः तृतीयाया विश्वे देवाः ततो नवानामग्निः एवं द्वादशर्चः) ।

मंडलं १

अनु. ४

॥ ७ ॥

सुजिह्वपायय ॥ येयजन्त्रायऽईड्यास्तेतेपिवंतुजिह्वया । मधोरग्नेवपद्वृति ॥ आर्कसूर्यस्यरोचनाद्विश्वान्देवाऽउपबुधः ।
 विप्रोहोतेहवक्षति ॥ विश्वेभिःसोम्यमध्वशऽइंद्रेणवायुना । पिबामित्रस्यधामभिः ॥ त्वंहोतामनुहितोऽग्नेयज्ञेयुसी
 दसि । सेमनोऽअध्वरंयज ॥ युक्ष्वाह्यारुपीरथेहुरितोदेवरोहितः । तामिद्वोऽइहावह ॥ २७ ॥ (१४१४) इंद्रसो
 मंपिबऽऋतुनात्वाविशंत्विदवः । मत्सरासस्तदोक्तसः ॥ मरुतःपिबतऽऋतुनापोत्राद्यज्ञंपुनीतन । युयंहिष्ठासुदानवः ॥
 अभियज्ञंरुणीहिनोग्रावोनेष्टःपिबऽऋतुना । त्वंहिरलुधाऽअसि ॥ अग्नेदेवोऽइहावहसादयायोनिपुत्रिषु । परिभूपपि
 बऽऋतुना ॥ ब्राह्मणादिंद्रगर्धसःपिवासोममूर्तुनु । तवेद्विसख्यमस्तृतं ॥ युवंदक्षधृतव्रतमित्रावरुणदुळभं ।
 ऋतुनोयज्ञमाशये ॥ २८ ॥ द्रुविणोदाद्रविणसोग्रावहस्तासोऽअध्वरे । युज्ञेपुदेवमीळते ॥ द्रुविणोदाददातुनोवसू
 नियानिऋण्विरे । देवपुतावनामहे ॥ द्रुविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत । नेष्ट्राहुतुभिरिष्यत ॥ यत्वातुरीयमनु
 भिर्द्रविणोदोयजामहे । अर्धस्मानोदुदिर्भव ॥ अध्विनापिबतमधुदीर्घग्रीशुचित्रता । ऋतुनायज्ञवाहसा ॥ गार्हपत्ये
 नसंत्यऽऋतुनोयज्ञनीरसि । देवान्देवयतेयज ॥ २९ ॥ (१४१५) आत्वावहतुहरोयुर्वर्पणंसोमपीतये । इंद्रत्वासूर

(१४१४) इंद्रसोममितिद्वादशर्वस्यसूक्तस्यकाण्वोमेधातिथिःआद्यानाषणाइंद्रोमरुतस्त्वष्टाम्रिर्द्रोमित्रावरुणौतत्तश्चतसृणाद्रविणोदा
 अभिःएकादश्याअध्विनौद्वादश्याअग्निर्गायत्री (ऋतुदेवताऽयताः) (१४१५) आत्वावहतंत्वितिनवर्वस्यसूक्तस्यकाण्वोमेधातिथिर्द्रोगायत्री ।

चक्षसः ॥ इमाधानाघृतस्रुवोहरीऽइहोर्पवक्षतः । इन्द्रं सुखतमेरथे ॥ इन्द्रं प्रातर्हवामहुऽइन्द्रं प्रयत्यच्चरे । इन्द्रं सोमस्य
पीतये ॥ उर्पनः सुतमार्गहिहरिं भिरिद्रकेशिभिः । सुते हित्वा हवामहे ॥ सेमनः स्तोममागह्युपेदं सर्वनंसुतं । गौरोनतृपितः
पिव ॥ ३० ॥ इमे सोमसऽइदं वः सुतासोऽअधिर्वहिर्पि । तोंऽइन्द्रसहसेपिव ॥ अयं ते स्तोमोऽअत्रियोहुद्विस्पृगस्तुशंतमः ।
अथासोमंसुतं पिव ॥ विश्वमित्सर्वनंसुतमिन्द्रोमदायगच्छति । वृत्रहासोमपीतये ॥ सेमनः काममापृणगोभिरश्वैः शतक्र
तो । स्त्वामत्वास्वार्थः ॥ ३१ ॥ (१।४।६) इन्द्रावरुणयोर्हंसस्त्राजोरवऽआवृणो । तानोमृळातऽइदृशे ॥ गंतारा
हिस्थोवसेह्वं विप्रस्यमावतः । धृतरारिचर्पणीनां ॥ अनुकामं तर्पयेथा मिन्द्रावरुणरायऽआ । तावानेदिष्ठमीमहे ॥ यु
वाकुहिशर्चानां युवाकुसुमतीनां । भूयामवाजुदानीं ॥ इन्द्रः सहस्रदाह्वावरुणः शंस्यानां । ऋतुर्भवत्युक्थ्यः ॥ ३२ ॥
तयोरिदवसावयसनेमनिचर्धीमहि । स्यादुत प्रेरचनं ॥ इन्द्रावरुणवामहं हुवेचित्रायुरार्धसे । अस्मान्सुजिग्युर्पस्कृतं ॥
इन्द्रावरुणनूजुवांसिर्पासंतीपुधीग्या । अस्मभ्यंशर्मयच्छतं ॥ प्रवामश्रोतुसुष्टुतिरिद्रावरुणयां हुवे । यामधार्थेसधस्तु
तिं ॥ ३३ ॥ (१।५।१) सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते । कुक्षीर्वतं यऽऔशिजः ॥ योरेवान्योऽअमीवहावसुवि

(१।४।६) इन्द्रावरुणयोरिति नवर्चस्य सूक्तस्य काण्वोमेधातिथिरिद्रावरुणैर्गायत्री । युवाकुहिद्वौ पादनिचूतो (इन्द्रः सहस्रेति हसीयसी
वा) । (१।५।१) सोमानमिति नवर्चस्य सूक्तस्य काण्वोमेधातिथिः आद्यानां तिसृणां ब्रह्मणस्पतिः चतुर्थ्या इन्द्रसोमब्रह्मणस्पतयः पंचम्या इन्द्रसोम

लुष्टिवर्धनः । सर्नःसिपक्तयस्तुरः+ ॥ मानःशंसोऽअररुपोधूर्तिःप्रणङ्मर्त्यस्य । रक्षोणोब्रह्मणस्पते ॥ सघावीरोनरि
 व्यतियमिन्द्रोब्रह्मणस्पतिः । सोमोहिनोतिमर्त्ये ॥ त्वंतंब्रह्मणस्पतेसोमऽइंद्रश्चमर्त्ये । दक्षिणापात्वंहसः ॥ ३४ ॥
 सदसस्पतिमभुतंप्रियमिन्द्रस्यकाम्यं । सनिमेधामयासिपं ॥ यस्माद्वितेनसिध्यतिवृजोविपश्चितश्चन । सधीनांयोगमि
 न्वति ॥ आहृन्नोतिह्वविष्कृतिंप्राचैकणोत्यध्वरं । होत्रादेवेपुगच्छति ॥ नराशंसंसुधृष्टममपश्यसप्रथस्तमं । द्विवोन
 सद्भमखसं ॥ ३५ ॥ (१५।२) प्रतिल्यंचारुमध्वरंगोपीथायुग्रह्यसे । मरुद्धिरग्नोऽआर्गहि ॥ नहिदेवोनमर्त्यमिहस्त
 वक्रतुपरः । मरुद्धि० ॥ येमहोरजसोविदुर्विभ्वेदेवासोऽअद्रुहः । मरुद्धि० ॥ यऽउग्राऽअर्कमानचुरनाधृष्टासऽओज
 सा । मरुद्धि० ॥ येशुआधोरर्वपसःसुक्षत्रासोरिशार्दसः । मरुद्धि० ॥ ३६ ॥ येनाकुस्याधिरोचनेदिर्विदेवासऽआस
 ते । मरुद्धि० ॥ यऽइंखयतिपर्वतान्तिरःसमुद्रमर्णवं । मरुद्धि० ॥ आयेतुन्वतिरश्मिस्तिरःसमुद्रमोजसा । मरु
 द्धि० ॥ अभित्वापूर्वपीतयेसजामिसोम्यमधु । मरुद्धि० ॥ ३७ ॥ ॥ इतिप्रथमाष्टकेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

ब्रह्मणस्पतयोदक्षिणाचततश्चतसृणांसदसस्पतिः (अव्यायानराशंसोवा) गायत्री । (१५।२) प्रतित्यमितिनवर्चस्यसूक्त्यकाण्वोमेधाति
 थिरआमारुतोगायत्री । इतिप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

॥ अथ प्रत्यध्यायगतैवतत्यागसंग्रहः ॥

प्रथमाष्टके सूक्तसंख्या १२१ ऋचः १३७०

प्रथमाध्याये वर्गाः ३७ सूक्तानि १९ ऋचः १९४ ॥ अथ त्यागः ॥ अग्नयइदंनमम ९ वायवइदं० ३ इंद्रवायुभ्यामिदं० ३ मित्रावरुणभ्यामिदं० ३ अश्विभ्यामिदं० ३ इंद्रायेदं० ३ विश्वेभ्योदेवेभ्यइदं० ३ सरस्वत्याइदं० ३ इंद्रायेदं० २ ३ मरुभ्यइदं० इंद्रमरुभ्यइदं० मरुभ्यइदं० इंद्रमरुभ्यइदं० २ इंद्रायेदं० ५ १ अग्नयइदं० ५ निर्मथ्याहवनीयाभ्यामग्निभ्यामिदं० अग्नयइदं० ६ इध्माय(समिद्धायवा) अग्नयइदं० तनूनपातइदं० नराशसायेदं० इळ्वायेदं० वहिपइदं० देवीभ्योद्वार्यइदं० उपासानक्ताभ्यामिदं० दैवीभ्याहोतृभ्याप्रचेतोभ्यामिदं० सरस्वतीळ्वाभारतीभ्यइदं० त्वष्टइदं० वनस्पतयइदं० स्वाहाकृतिभ्यइदं० विश्वेभ्योदेवेभ्यइदं० १ २ (अग्नयइदं० २ विश्वेभ्योदेवेभ्यइदं० अग्नयइदं० ९) इंद्रायेदं० मरुभ्यइदं० त्वष्टइदं० अग्नयइदं० इंद्रायेदं० मित्रावरुणाभ्यामिदं० द्रविणोदसेमयइदं० ४ अश्विभ्यामिदं० अग्नयइदं० इंद्रायेदं० ९ इंद्रावरुणाभ्यामिदं० ९ ब्रह्मणस्पतयइदं० ३ इंद्रसोमब्रह्मणस्पतिभ्यइदं० दक्षिणैद्रसोमब्रह्मणस्पतिभ्यइदं० सदसस्पतयइदं० ३ नराशंसाये (सदसस्पतयेवे)दं० अग्नमरुभ्यइदं० ९ ॥ इतिप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

१ इंद्राध्याम्यताऋदुदेवताद्वादश ।

अयमष्टावार्भमिहषळद्राग्रातयुजासैकाचतस्रआश्विन्यस्तथासावित्र्यआग्नेय्यौद्वेदेवीनामैकैकद्राणीवरुणा
 न्यग्रायीनांद्यावापृथिव्येपार्थिवीषड्वैष्णव्योऽतोदेवाद्वैवीवातीव्राश्चतुर्विंशतिर्वायव्यैकैकद्रवायव्योमैत्रावरुणमरु
 त्वतीयवैश्वदेवपौष्णास्तृचाःशिष्टाआभ्योल्याध्यर्धाग्नेय्यस्वंतःपुरउष्णिक्परानुष्टुपतिस्रश्चाल्याएकविंशीप्रतिष्ठा
 कस्यपंचोनाजीगर्तिःशुनःशेषःसकृन्निमोवैश्वामित्रोदेवरातोवारुणंतुत्रैष्टुभमादौकाय्याग्नेय्यौसावित्रस्तुचोगाय
 त्रौस्यांत्याभागीवार्थयच्चित्सैकावसिष्वदशाग्नेय्यंत्वश्वंसप्तोनागायत्रेत्यादैवीत्रिष्टुब्यत्रग्रावानवषळनुष्टुवादियच्चि
 द्धौल्लखल्यौपरेमौसल्यौचंप्रजापतेर्हरिश्चंद्रस्यांल्याचर्मप्रशंसावार्थयच्चित्ससपांक्तमावोद्व्यधिकास्माकंपादनिचू
 च्छश्वत्रिष्टुप्परौतृचावाश्विनौषस्यौत्वमग्नेद्व्यूनाहिरण्यस्तूपआग्नेयंत्रिष्टुवंत्याष्टमीषोळइयौचंद्रस्यपंचोना ॥ २ ॥
 हरिःॐ ॥ (१।५।३) अयंदेवायुजन्मनेस्तोमोविप्रेभिरासया । अकारिरत्नधातंसः ॥ यइंद्रायवचोयुजाततक्षुर्मनसाहरी ।
 शमीभिर्यज्ञमाशत ॥ तक्षन्नासत्याभ्यांपारिज्मानंसुखंरथं । तक्षन्धेनुंसवर्दुर्धाम् ॥ युवानापितरापुनःसत्यमंत्राऽऋज्य
 वः । ऋभवोविध्यंक्त ॥ संवोमदासोऽअमर्तेद्रेणचमरुत्वता । आदित्येभिश्चरार्जभिः ॥ १ ॥ उतत्यंचमंसंनवंत्व
 पुर्दुवस्यनिष्कृतं । अकर्तचतुरःपुनः ॥ तेनोरत्नानिधत्तनुत्रिरासाप्तानिसुन्वते । एकमेकंसुशुस्तिभिः ॥ अर्धारयंतवत्तु
 (१।५।३) अयंदेवायेत्यष्टर्चसूक्तस्यकाण्वोमेधातिथिर्ऋभोगायत्री ।

योभजंतसुकृत्या । आगंदेवेषुयज्ञिर्यम् ॥ २ ॥ (१।५।४) इहेंद्राग्नीऽउपह्वयेतयोरिस्तोममुद्रमसि । तामोमसोम
 पार्तमा ॥ तायज्ञेषुप्रशंसतेन्द्राग्नीशुभतानरः । ताराग्यत्रेषुगायत ॥ तामित्रस्यप्रशस्तयऽइंद्राग्नीताह्वामहे । सोमपा
 सोमपीतये ॥ उग्रासंताह्वामहऽउपेदंसर्वनंसुतम् । इन्द्राग्नीऽएहगच्छतां ॥ तामहांतासदुस्यतीऽइंद्राग्नीरक्षउज्जतं ।
 अर्पजाःसंत्वत्रिर्णः ॥ तेनसत्येनजागृतमधिप्रचेतुनेपदे । इंद्राग्नीशर्मयच्छतम् ॥ ३ ॥ (१।५।५) प्रातयुजाविबोधया
 ध्विनावेहगच्छताम् । अस्यसोमस्यपीतये ॥ यासुरथारथीतमोभादेवादिविस्पृशा । अश्विनाताह्वामहे ॥ यावांक
 शामधुमत्यध्विनासुनृतावती । तयायज्ञंमिमिक्षतम् ॥ नहिवामस्तिदूरकेयन्नारथेनगच्छथः । अश्विनांसोमिनो
 हम् ॥ ४ ॥ हिरण्यपाणिमतयेसवितारमुपह्वये । सचेत्तादेवतापुदं ॥ ४ ॥ अपानपातमवसेसवितारमुपस्तुहि । तस्यैव
 तान्युद्रमसि ॥ विभक्तारंहवामहेवसोश्चित्रस्यरार्धसः ॥ सवितारंनृचक्षसम् ॥ सखायुऽआनिर्षादतसवितास्तोम्योन
 नः । दातारार्धासिधुंभति । अग्नेपत्नीरिहावहदेवानामुशुतीरुप । त्वष्टारंसोमपीतये ॥ आग्नाऽअग्नऽइहावसेहोत्रां

(१।५।४) इहेंद्राग्नीइतिपठर्चस्यसूक्तस्यकाण्वोमेधातिथिरिन्द्राग्नीगायत्री । (१।५।५) प्रातयुजेत्येकविंशत्यृचस्यसूक्तस्यकाण्वोमेधा
 तिथिःआद्यानां चतसृणामधिनौततश्चतसृणांसविताततोद्वयोरग्निःततएकस्यादेव्यःततएकस्याइंद्राणीवरुणान्यभ्रात्यःततोद्वयोर्चावापृथि
 व्यौततएकस्याःपृथिवीततःपण्णांविष्णुः(अतोदेवाइत्यस्यादेवावा)गायत्री ।

यविष्टभारतीम् । वरून्त्रीधिषणां वह ॥ ५ ॥ अभिनोदेवीरवसामहः शर्मणानपत्नीः । अच्छिन्नपत्राः सचंतां ॥ इहे
 द्राणीमुपह्वयेवरुणानीं स्वस्तये । अग्रायींसोमयीतये ॥ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमं यज्ञं मिमिक्षतां । पिपतां नोभरीम
 मिः ॥ तयोरिद्धतवत्पयोविप्ररिंहंतिधीतिभिः । गंधर्वस्य ध्रुवपदे⁺ ॥ स्योनापृथिविभवानुक्षरानिवेशनी । यच्छानः
 शर्मसुप्रथः ॥ ६ ॥ अतोदेवाऽअवतुनोयतोविष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्तधामभिः ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निद
 धेपदम् । समूहमस्य पांसुरे⁺ ॥ त्रीणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः । अतो धर्मीणि धारयन् ॥ विष्णोः कर्मणि
 पश्यतयतोव्रतानिपस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ तद्विष्णोः परमपदं सदा पश्यंति सुरयः । दिवीवचक्षुराततम् ॥ तद्वि
 प्रसोविपन्यवौ जागवांसः समिधते । विष्णोर्यत्परमपदं⁺ ॥ ७ ॥ (१।५।६) तीत्राः सोमांसऽआगह्याशीर्वितः सुताऽइमे ।
 वायोतान्प्रस्थितान्पिब ॥ उभादेवादि विस्पृशेद्रवायूह्वामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ इन्द्रवायूमनोजुवाविप्रहवंतऽऊ

(१।५।६) तीत्राः सोमांसइतिचतुर्विंशत्यृचस्यसूक्तस्यकाण्वोभेधातिथिः आद्यायावायुः ततोद्वयोरिन्द्रवायूततस्त्रिस्तृणां मित्रावरुणौ तत
 स्त्रिस्तृणां मरुतः (मरुत्वानिन्द्रइतिकेचित्) ततस्त्रिस्तृणां विश्वेदेवाः ततस्त्रिस्तृणां पूषाततः सप्तानामापः ततएकस्याअग्निपः ततएकस्याअग्निः अ
 प्संतरिति पुरउष्णिक्अन्सुमइत्यनुष्टुपइदमापइत्याद्यास्त्रिस्तृणानुष्टुभः आपः पृणीतेतिप्रतिष्ठाशेषागायत्र्यः । (अश्यापइत्यत्रापृशब्दस्यपूर्वनि
 पातेप्राप्तद्वेधितिसूत्रादग्निशब्दस्यपूर्वनिपातः कृतः) ।

अक्सं.

अ. १ अ. २

॥ ११ ॥

तये । सहस्राक्षाद्यस्पती ॥ मित्रव्यं हवामहेवरुणं सोमपीतये । जुनानापतदक्षसा ॥ ऋतेनयावृतावृधवृतस्यज्यो
तिषस्पती । तामित्रावरुणाहुवे ॥ ८ ॥ वरुणः प्राविताशुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । कर्तानः सुरार्धसः ॥ मरुत्वं
बुत्रं सुदानवऽइंद्रेण सहसायुजा । मानो दुःशंसऽईशत ॥ विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्राहिष्टश्रिमातरः
॥ ९ ॥ जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्ण्या । यच्छुभं याथर्नारः ॥ हुस्काराद्धिद्युतस्पर्यतो जाताऽअवंतुनः ।
मरुतो मृळयंतुनः ॥ आपूर्णं चित्रवर्हिषमाधृणोधरुणो दिवः । आर्जानुष्टयथापशुम् ॥ पूषारार्जानुमाधृणिरपगृहं गुहाहि
तं । अविदच्चित्रवर्हिषम् ॥ उतो समह्यमिंदुभिः पक्ष्यकोऽअनुसेपिधत् । गोभिर्यवं न चर्कपत् ॥ १० ॥ अंबयोयंत्य
ध्वभिर्जामयोऽअध्वरीयतां । पुंचतीर्मधुनापर्यः ॥ अमूर्याऽउपसूर्येयाभिर्वासूर्यः सह । तानो हि न्वत्त्वध्वरम् ॥
अपो देवीरुपहये यन्नगावः पिवंति नः । सिंधुभ्यः कर्त्तुहविः ॥ अप्सर्वपुतरसुतमप्सुभेपजमुपामुतप्रशस्तये । देवाम
पुणीतभेपजं वरुथंत्ये इमम् । ज्योक्कसूर्येहृशे ॥ इदमापः प्रवहत्यत्किंचदुरितं मयि । पर्यस्वानमऽअर्गहितं मांसं सृजवर्चसा ॥ ११ ॥ आपः
शेषऽउतानृतम् ॥ आपोऽअद्यान्वचारिपरसेनसमगस्माहि । पर्यस्वानमऽअर्गहितं मांसं सृजवर्चसा ॥ ११ ॥

मंडलं १

अनु. ५

॥ ११ ॥

वर्चसासृजसंप्रजयासमारुधा । विद्युर्मैऽअस्यदेवाऽइन्द्रोविद्यात्सहऽऋषिभिः ॥ १२ ॥ (१६।१) कस्यनूनं
 कृतमस्यामृतानांमनामहेचारुदेवस्यनाम । कोनोमह्याऽअदितयेपुनर्दापितरंचहृशेयंमातरंच ॥ अग्नेर्वयंप्रथमस्या
 मृतानांमनामहेचारुदेवस्यनाम । सनोमह्याऽअदितयेपुनर्दापितरंचहृशेयंमातरंच ॥ अभित्वादेवसवितरीशानंवा
 र्षीणां । सदावन्भागमीमहे ॥ यश्चिद्धितइत्थाभगःशशमानःपुरानिदः । अद्भुषोहस्तयोर्दधे ॥ भगभक्तस्यतेवयमु
 दशेमतवावसा । मर्धानरायऽआरभे ॥ १३ ॥ नहितेक्षत्रंनसहोनमन्युवर्यश्चनामीपतर्यतऽआपुः । नेमाऽआपो
 ऽअनिमिषंचरतीनयेवातस्यप्रमिनंत्यभ्वं ॥ अबुधेराजावरुणोवनस्योर्ध्वस्तूर्पददतेपुतर्दक्षः । नीचीर्नाःस्थुरुपरिबुधऽ
 प्यपामसेऽअंतर्निहिताःकेतवःस्युः ॥ उरंहिराजावरुणश्चकारसूर्ययंपथाभन्वेतवाऽर्च । अपदेपादाप्रतिधातवेकरुताप
 वृकाहृदयाविधीश्चित् ॥ शतंतैराजन्मिभजःसहस्रमुवीर्गीभीरासुमतिष्टेऽअस्तु । वार्धस्वदूरेनिक्रितंपराचैःकृतंचिदेनः
 प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ अमीयऽऋक्षानिहितासऽउच्चानकुंदहश्रेकुहचिद्विवेयुः । अर्दब्धानिवरुणस्यव्रतानिविचारकशच्चंद्र
 मानर्कमेति ॥ १४ ॥ तत्त्वायामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशस्तेयर्जमानोहविर्भिः । अहेळमानोवरुणेहबोध्युरुशंसमान

(१६।१) कस्यनूनमितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्याजीर्गतिःशुनःशेषःसकृन्निमोवैश्वामित्रोदेवरातः आद्यायाःकःद्वितीयायाअग्निस्रतस्त्रिस्त-
 णांसविता (भगभक्तस्येत्यस्याभगोवा) नहितेक्षत्रमित्याद्यानांवरुणश्चिष्टुप् अभित्वेत्यादितिस्त्रोगायत्र्यः ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. २

१ १२ ॥

मंडलं १

अनु. ६

॥ १२ ॥

ऽआयुःप्रमोषीः ॥ तदिदं कृतं द्विवा मर्त्यमाहुस्तदयं केतो हृदऽआविचष्टे । शुनः शेषो यमहृद्भूतः सोऽअस्मान्नाजावरु
णोमुमोक्तु ॥ शुनः शेषो हृद्भूतस्त्रिग्वदित्यं दुपदेषु वद्धः । अवै नराजावरुणः ससृज्या द्विद्वौऽअदब्धो विमुमोक्ता
त्तमवरुणपाशं मस्मदवाधुमं विमध्यमं श्रथाय । अथावयमादित्यव्रते तवानां गसोऽअदितये स्याम ॥ १५ ॥ (१।६।२) यच्चि
द्धिते विशो यथाग्रदेववरुणव्रतं । मिनीमसिद्यविद्यवि ॥ मानोवधार्थहृत्तर्जिहीलानस्यरीरधः । माहृणानस्यमन्यवै ॥
विमृळीकार्यते मनोरथीरश्वं न संदितं । गीर्भिरुणसीमहि ॥ पुराहिमे विमन्यवः पतैति वस्यऽइष्टये । वयो न वसतीरुप ॥
कदाक्षत्रश्रियं नरमावरुणं करामहे । मृळीकार्यैरुचक्षसं ॥ १६ ॥ तदित्समानमाशाते वेनं तानप्रयुच्छतः । धृतव्रताय
दाशुषे ॥ वेदायोवीनापदमं तरेक्षेणपतेतां । वेदनावः समद्रियः ॥ वेदमासो धृतव्रतो द्वादशप्रजावतः । वेदायऽर्जप
जययसुक्नुः ॥ १७ ॥ अतो विश्वान्यस्तुताचिकित्योऽअभिपश्यति । कृता नियाचकृत्वा ॥ सनो विश्वाहासुक्नुरा
दित्यः सुपथाकरत् । प्रणऽआयूषितारिपत् ॥ विच्रद्वापिर्हरण्यं वरुणो वस्तनिर्णिजं । परिस्पशो निषेदिरे ॥ नयं
(१।६।२) यच्चिद्धित इत्येकार्षिं शतृचस्य सूक्तस्याजीगर्तिः शुनः शेषो वरुणो गायत्री ।

दिप्संतिदिप्स्योनद्रुहणोजनानां । नदेवमभिर्मातयः । उतयोमानुपेज्वायशश्चक्रेऽअसाम्या । अस्माकमदरेष्वा
 ॥ १८ ॥ परमियंतिधीतयोगावोनगव्यूतीरनु । इच्छंतीरुरुचक्षसं ॥ संजुवौचावहैपुनर्यतोमेमध्वाभृतं । हतैवक्षदं
 सेप्रियं+ ॥ दर्शनुविश्वदर्शतं दर्शरथमधिक्षमि । एताजुपतमेगिरः ॥ इममेवरुणश्रुधीहर्वमद्याचमृळय । त्वामवस्युरा
 चके ॥ त्वंविश्वस्यमेधिरदिवश्चगमश्चराजसि । सयामनिप्रतिश्रुधि ॥ उदुत्तमंमुमुग्धिनोविपाशमध्यमंचृत । अवाध
 मानिजीवसे ॥ १९ ॥ (११।६।३) वसिष्वाहिमिथेध्यवस्त्राण्यूजापते । सेमनोऽअध्वरंयज ॥ निनोहोतावरैण्यःसदाय
 विष्टमन्मभिः । अग्नेदिद्वितमतावचः ॥ आहिष्मोसनचैपितापर्यजत्यापथे । सखासख्येवरैण्यः ॥ आनोवह्रीरिशदं
 सोवरुणोमित्रोऽअर्यमा । सीदतुमनुपेयथा ॥ पूर्व्यहोतरस्यनोमंदस्वसख्यस्यच । इमाऽउपुश्रुधीगिरः ॥ २० ॥ य
 च्चिद्धिशश्वतातनादेवंदंव्यजामहे । त्वेऽइद्धूयतेहृविः ॥ प्रियोनोऽअस्तुविदपतिहोतामंद्रोवरैण्यः । प्रियाःस्वप्नयोव
 यं+ ॥ स्वप्नयोहिवार्थदेवासोदधिरेचनः । स्वप्नयोमनामहे ॥ अथानऽउभयेपाममृतमर्त्यानां । मिथःसंतुप्रशस्तयः ॥
 विश्वेभिरग्नेऽअग्निभिरिमंयज्ञमिदंवचः । चनोधाःसहसोयहो ॥ २१ ॥ (११।६।४) अश्वनत्वाचारंवरंतवंदध्याऽअग्निनमो

(११।६।३) वसिष्वेतिदशर्चस्यसूक्तस्याजीगर्तिःशुनःशेषोभिर्गायत्री । (११।६।४) अश्वनत्वेतित्रयोदशर्चस्यसूक्तस्याजीगर्तिःशुनःशेषो
 ऽभिर्गायत्री । नमोमहद्वाइत्यस्यादेवास्त्रिष्टुप ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. २

॥ १३ ॥

भिः । स॒वाजै॑तमध्व॒राणां ॥ स॒र्धानः॑ स॒नुः श॒र्वसा॑प॒थुर्प्र॒गामा॑स॒शेवः । मी॒ढाँऽअ॒स्माकं॑ वभू॒यात् ॥ स॒नो॒दुरा॑च्चासाच्च॒नि
म॒र्त्या॑ द॒द्यायोः । पा॒हिस॒दुमि॒द्वि॒श्वायुः ॥ इ॒ममु॒त्त्वम॒स्माकं॑ स॒निगा॑य॒न्नव्या॑सं । अ॒ग्ने॒दे॒वपु॒प्रवो॑चः ॥ आ॒नो॒भज॑पर॒
मे॒ष्वावा॑जे॒षुम॒ध्यमे॑षु । शि॒क्षाव॒स्वोऽअ॑न्तमस्य ॥ २२ ॥ वि॒भुक्ता॑सि॒चित्र॒मानो॑सि॒धौ॒र्माऽउ॒पाक॑ऽआ । स॒द्यो॒दाशु॑र्षे
क्ष॒रसि ॥ य॒म॒ग्नेप॒त्सुम॒र्त्यम॒वावा॑जे॒पय॑ज॒नाः । स॒यंता॑श॒श्वती॑रि॒पः ॥ न॒र्कि॒रस्य॑ स॒ह॒त्यर्प॑ये॒ताक॑र्यस्य॒चित् । वा॒जोऽअ
स्ति॒श्रवा॑र्यः ॥ स॒वाजै॑वि॒श्वच॑र्षि॒गिर॑र्वी॒द्धिर॑स्तु॒तरु॑ता । वि॒प्रेभि॑र॒स्तुस॑नि॒ता ॥ ज॒रावो॑ध॒तद्वि॒विशे॑वि॒शेय॑ज्ञि॒याय ।
स्तो॒मं॒रुद्रा॑य॒हशी॑कं ॥ २३ ॥ स॒नो॒महो॑ऽअ॒निमा॒नो॒धूम॑के॒तुः पुरु॑श्च॒न्द्रः । धि॒येवा॑जाय॒हिन्व॑तु ॥ स॒रेवो॑ऽइ॒ववि॑र॒पति॑दे॒
व्यः के॒तुः शृ॑णो॒तुनः । उ॒क्थै॒रग्नि॑र्व॒ह॒ज्ञानुः ॥ न॒मो॒मि॒ह॒भ्यो न॒मोऽअ॒र्भके॑भ्यो न॒मोयु॒वभ्यो न॒मोऽआ॑शि॒नेभ्यः । य॒जाम॑दे॒
वा॒न्यदि॑श॒कवा॑म॒माज्या॑र्यसः शंस॒मावृ॑क्षि॒देवाः ॥ २४ ॥ (१।६।५) य॒त्रग्रा॑र्वाप॒थुर्व॒भ्रऽऊ॒र्ध्वो॒भवं॑ति॒सोत॑वे । उ॒ल्ल॒खल॑सु
ल० ॥ य॒त्रम॑न्था॒वि॒व॒भ्रते॑र॒मी॒न्यमि॑त॒वाऽइ॒व । उ॒ल्ल॒खल॑ ॥ य॒च्चि॒द्वि॒त्वंगे॑ह॒र्गुह॑ऽउ॒ल्ल॒खल॑क॒यूज्य॑से । इ॒ह॒द्यु॒मत्त॑मं

(१।६।५) यत्रग्रावेति नवर्चस्य सूक्तस्याजीगर्तिः शुनः शेषः आद्यानां च तत्प्राणिभिः ततो द्वयो रल्लखलं ततो द्वयो रल्लखलमु सले अंत्यायाः
प्रजापतिर्हिरिचंद्रः (अधिपवणचर्म देवतावा) आद्याः पळनुष्टुभः अंत्याः स्तिसो गायत्रयः ।

मंडलं १

अनु. ६

॥ १३ ॥

वद्वज्यतामिवदुंदुभिः ॥ २५ ॥ उतस्मतेवनस्पतेवातोविवात्यग्रमित्र । अथोऽइंद्रायपातवेसुनुसोममुल्लखल ॥
 आयजीवाजसार्तमाताह्युच्चाविजर्भतः । हरीऽइवांधासिवप्सता ॥ तानोऽअद्यवनस्पतीऽकृष्वावृष्वेभिः सोत
 भिः । इंद्रायमधुमत्सुतम् ॥ उच्छिष्टं चम्वोर्भरसोमपुवित्रऽआसृज । निधेहिगोरधित्वचिः ॥ २६ ॥ (१।६।६)
 यच्चिद्धिसत्यसोमपाऽअनाशस्ताऽइवुस्मसि । आतूनंऽइंद्रशंसयगोष्वभेषुशुश्रिषुसहस्रेषुबुवीमघ ॥ शिप्रिन्वाजा
 नांपतेशचीवस्तवदंसना । आतूनं ॥ निष्वापयामिथूदशसस्तामबुध्यमाने ॥ आतूनं ॥ सुसंतुत्याऽअरा
 तयोबोधंतुशूरतर्यः । आतूनं ॥ समिद्रगर्दभंमृणुनवंतंपापयामया । आतूनं ॥ पततिकुंडुणाच्यादूरं
 वातोवनादधि । आतूनं ॥ सर्वपरिक्रोशंजहिजंभयाकृकदाश्वं । आतूनं ॥ २७ ॥ (१।६।७) आव
 ऽइंद्रंक्रियिथथावाजयंतःशतक्रतुं । मंहिष्ठंसिचऽइंदुभिः ॥ शतंवायःशुचीनांसहस्रवासमाशिरां । एदुनिम्रं
 नरीयते ॥ संयन्मदायशुष्मिणंऽएनाह्यस्योदरे । समुद्रोनव्यचोदधे ॥ अयमुतेसमत्सिकुपोतऽइवगर्भधि ।
 वचस्तच्चिन्नऽओहसे ॥ स्तोत्राधानांपतेगिर्वोहोवीर्यस्यते । विभृतिरस्तुसदृता ॥ २८ ॥ ऊर्ध्वस्तिष्ठानऽऊतयेस्मि

(१।६।६) यच्चिद्धिसत्येतिसप्तर्चससूक्तस्याजीगर्तिःशुनःशेषंद्रःपक्तिः । (१।६।७) आवइंद्रमितिद्वाविंशत्यृचस्यसूक्तस्याजी-
 गर्तिःशुनःशेषंद्रःसप्तर्चइत्यादिसृणमधिनौततस्तिष्ठणसुवागायत्रीअस्माकमितिपादनिचतृशश्वदिंद्रइतित्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. २

॥ १४ ॥

नवाजेशतक्रतो । समन्येषु ब्रवावहै ॥ योगेयोगे तव स्तंवाजे वाजे हवामहे । सखायऽइन्द्रमृतये ॥ आर्धागमद्यादिश्रव
त्सहस्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुपनोहवं ॥ अनुप्रबस्यौकसो हवेतु विप्रतिनरं । यंते पूर्वपिताहुवन् ॥ तत्वावयं विश्व
वाराराशस्महे पुरुहूत । सखे वसोजरितृभ्यः ॥ २९ ॥ अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपान्नां । सखे वज्रिन्तस्सखीना
मृ ॥ तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन्तस्सखीनाम् ॥ रेवतीर्नः सधमादुऽइन्द्रं संतुतिर्विवाजाः । आयुर्हवः शतक्रतुवाकामं जरि
तोयाभिर्मदेम ॥ आधृत्वा वात्मना सः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः । ऋणोरक्षन् चक्रयोः* ॥ आयुर्हवः शतक्रतुवाकामं जरि
तृणां । ऋणोरक्षन् शचीभिः ॥ ३० ॥ शश्वदिन्द्रः पोथुथद्विजिगाय नान दद्विः शश्वससिद्धिर्नानि । सनो हिरण्यरथं दं
सनावान्त्सर्नः सनितासनये सनो दात् ॥ आश्विना वश्ववत्ये पायातं शवीरया । गोमदस्त्रा हिरण्यरथं दं
नो हि वारथो दस्त्रावर्मत्यः । समुद्रेऽअश्विनेर्यते ॥ न्य१ इयस्य मर्धनि चक्रं रथस्ये मथुः । परिद्यामन्यदीयते ॥ कस्तं
त्वत्येभिरागहिवाजेभिर्दुहितादिवः । अस्मेरयिनिर्धारय ॥ ३१ ॥ (१७११) त्वमग्ने प्रथमोऽअंगिराऽऋषिर्दुवोदे
वानामभवः शिवः सखा । तव व्रते कवयो विद्युना पसोजयन्त मरुतोऽचारज हृद्यः । त्वमग्ने प्रथमोऽअंगिरस्तमः कुविर्देवा
(१७११) त्वमग्र इत्यष्टादशर्चस्य सूक्तस्यांगिरसो हिरण्यस्तूपो मिर्जगती अष्टमी षोडशं त्यास्त्रिष्टुभः ।

मंडलं १

अनु. ७

॥ १४ ॥

नां परैर्भूषसिद्धं । विभुर्विश्वस्मै सुर्वनाय मेधिरोद्धि माताशयुः कतिधा चिदायवे ॥ त्वमग्ने प्रथमो मातरि श्वनऽआविर्भ
वसुकृत्या विवस्वते । अरे जेतां रोदसी होतु द्यूयसं शोभारमयजोमहोवसो ॥ त्वमग्ने न विद्यार्मवाशयः पुरुरवसे सुकृते सु
कृतरः । श्वात्रेण यत्पित्रोर्मुच्यसे पर्यात्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः ॥ त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धनऽउद्धतस्तु चेभवासि श्रवाय्यः ।
यऽआहुतिं परि वेदावर्षद्धृतिमेकायुरग्ने विशऽआविर्वाससि ॥ ३२ ॥ त्वमग्ने वृजिनवर्तनि नरं सकर्मन्पिपर्षि विदधे वि
चर्षणे । यः शूरसाता परितक्मग्ने धनेदुग्ने भिश्चित्समृताहंसिभूर्यसः ॥ त्वमग्नेऽअमृतत्वर्जस्ते मर्तदधासि श्रवसे दिवे
दिवे । यस्तां तृषाणऽउभयायुजन्मनेमयः कृणोपि प्रयऽआर्चसुर्ये ॥ त्वनोऽअग्ने सनये धनानां यशसं कारुं कृणुहि स्तवा
नः । ऋध्यामकर्मपसानवैनदेवैर्द्यावापृथिवी प्रार्वतनः ॥ त्वनोऽअग्ने पित्रो रूपस्थऽआदेवो देवेष्वनवद्यजार्गुविः । तनु
कृद्धो धिप्रमतिश्चकारेव त्वं कल्याणवसुविश्वमोषिषे ॥ त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्त्वं यस्कुत्तवजामयो वयं । संत्वारा
यः शतिनः संसहृद्विणः सुवीर्यं ति व्रतपाम् दाम्य ॥ ३३ ॥ त्वमग्ने प्रथममायुमायवे देवाऽअकृण्वन्नहुं पस्य विप्रतिम् ।
इळामकृण्वन्मनुपस्य शार्सनीं पितुर्यत्पुत्रो मर्मकस्य जायते ॥ त्वनोऽअग्ने तव देवपायुर्भिर्मघोनोरक्षतन्वंश्च वद्यं । ज्ञाता
तो कस्य तनये गवामस्य निमेषं रक्षमाणस्तव व्रते ॥ त्वमग्ने यज्यवे पायुरंतरो निपुणार्यचतुरक्षऽइध्यसे । यो रातहव्यो ब्रु
कायुधायसे कीरेऽश्चिन्मंत्रमनसा वनोषितं ॥ त्वमग्नेऽउरुशंसाय वाघतैस्पाह्यदेवर्णः परमं वनोषितत् । आग्रस्य चित्य

ऋक्सं.

अ. १ अ. २

॥ १५ ॥

मतिरुच्यसे पिता प्रपाकं शास्त्रिप्रदिशो विदुष्टरः ॥ त्वमग्ने प्रयत दक्षिणं नरं वमं वस्युतं परिपासि विश्वतः । स्वादुक्षद्वायो
वसतौ स्योन कृज्जीवया जंयजते सोपमादिवः ॥ ३४ ॥ इमामग्ने शरणिमीमुपो नऽइममध्वानं यमगामदुरात् । अपिः
ह्यावहृदैव्यं जनमासादय वृहि पियक्षि च प्रियं ॥ मनुष्वदग्नेऽअगिरस्वर्दं गिरो ययाति वत्सदने पूर्ववच्छुचे । अच्छया
वस्योऽअस्मान्संनः सृज सुमत्या वाजवत्या ॥ ३५ ॥ (१।७।२) इन्द्रस्य नुवीर्योणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहि मन्वपस्तर्दु प्रवक्षणाऽअभिनृपर्वतानां ॥ अहन्नहि पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्थततक्ष । वाश्राऽइव धेनवः
स्यंदमानाऽअंजः समुद्रमवजग्मरार्पः ॥ वृषाय मर्णो वृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपि वत्सतस्य ॥ आसार्य कंमघवा दत्तवज्रम
हत्तेनं प्रथमजामहीनां ॥ यद्विद्राहं न्यथमजामहीनामान्मायिनामभिनाः प्रोतमायाः । आत्सूर्ये जनयन्ध्यामुपासतादी
पृष्टपृथिव्याः ॥ ३६ ॥ अयो जेवदुर्मदुऽआहि जुहे महवीरं तु विवाधर्मजीवं । नातरीदस्य समृत्तिवधानां संरुजानाः
पिपिपुऽइन्द्रशत्रुः ॥ अपादहस्तोऽअपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधिसानौ जघान । वृष्णो वधिः प्रतिमानं बुधं पन्पुरुत्रा वृत्रोऽअ
(१।७।२) इन्द्रस्य न्विति पंचदशर्चसमूक्तस्यागिरसो हिरण्यस्तूपदं त्रिष्टुप् ।

मंडलं १

अनु. ७

॥ १५ ॥

शयुर्द्व्यस्तः ॥ नृदंनभिन्नममयाशयानंमनोरुहाणाऽअतिर्युत्पार्षः । याश्चिद्वृत्रोर्महिनापर्यतिष्ठत्तासामहिःपत्सुतःशीघ्रं
 भूव ॥ नीचावयाऽअभवद्वृत्रपुत्रेद्रोऽअस्याऽअववर्धजभार । उत्तरासूरधरःपुत्रऽआसीद्वानुःशयेसहवत्सानधेनुः⁺ ॥
 अतिष्ठतीनामनिवेशनानांकाष्ठानांमध्येनिहितंशरीरं । वृत्रस्यनिर्णयविचरंत्यापोदीर्घतमऽआशयदिन्द्रशत्रुः ॥ ३७ ॥
 द्वासपत्नीराहिगोपाऽअतिष्ठन्निरुद्धाऽआपःपणिनेवगावः । अपांचिलमपिहितंयदासीद्वृत्रजघुन्वाऽअपतद्ववार ॥
 अश्व्योवारोऽअभवस्तदिन्द्रसूक्त्यत्वाप्रत्यहन्देवऽएकः । अजययोगाऽअर्जयःशूरसोममवास्तुजःसर्वेसप्तसिंधून् ॥ ना
 सैविविद्युन्नतन्यतुःसिषेधनयामिहमकिरद्भ्रातुर्निच । इन्द्रश्चयद्युधुधातेऽअहिश्चोत्तापरीभ्योमघवाविजिग्ये ॥ अर्हयो
 तारंक्रमपश्यऽइन्द्रहृदियत्तेजमुपोभीरगच्छत् । नवचयन्नवातिचक्षवतीःश्येनोनभीतोऽअतरोरजांसि ॥ इन्द्रोयातोव
 सितस्युराजाशर्मस्यचशृंगिणोवज्रवाहुः । सेदुराजाक्षयतिचर्पणीनामुरान्ननेमिःपरितावभूव ॥ ३८ ॥ इतिप्रथमाष्टके
 द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

. द्वितीयाध्याये वर्गाः ३८ सूक्तानि १३ ऋचः १८९ ॥ त्यागः ॥ ऋगुम्यइदं.८ इद्राग्निम्यामिदं.६ अथिम्यामिदं.४ सवित्र-
 इद ४ अग्नयइद २ देवीम्यइदं इद्राणीवरुणान्यग्नाधीम्यइदं. चावापृथिवीम्यामिदं.२ पृथिव्याइदं. विष्णवइद. (प्रथमायादेवे-
 म्योवा) ६ वायवइदं इन्द्रवायुम्यामिदं.२ मित्रावरुणाम्यामिदं.३ मरुद्भ्यः(मरुत्वतइद्रायवा)इदं.३ विश्वेम्योदेवेम्यइदं.३ पूष्णइदं.३

ऋक्सं.

अ. १ अ. ३

॥ १६ ॥

अश्वइदं. ७ अश्वयइदं. अश्वयइदं. कायेदं. अश्वयइदं. सवित्रइदं. ३ (अत्यायाभगायवा) वरुणायेदं. ३ १ अश्वयइदं. २ २ देवेभ्यइदं.
इन्द्रायेदं. ४ उद्वखलायेदं. २ उद्वखलमुसलाभ्यामिदं. २ प्रजापतयेहरिश्वाय (अधिपवणचर्मणे) वेदं. इन्द्रायेदं. २ ३ अधिभ्यामिदं. ३
उषसइदं. ३ अश्वयइदं. १८ इन्द्रायेदं. १५ ॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥
एतत्रिश्चिद्वादशाश्विनं नवम्येत्ये त्रिष्टुभौ ह्वयाम्येकादशसवित्रं नवमीजत्याद्याचसालिगोक्तैव तपादाप्रवोवि
शतिः कण्वोघौराश्रेयं प्रागार्थमूर्ध्वजपुयौ क्रीळं पंचोर्नामारुतं हिगायत्रं तु कछप्रयदशप्रागाथं तूत्तिष्ठाष्टौत्रा
ह्वाणसत्यं यं रक्षंति न ववरुणमित्रार्यम्णां मध्ये तु च आदित्येभ्यो गायत्रं हिंसं पूयन्दशपौष्णं कहुद्रायनवरौ द्रवृतीयामै
त्रावरुणीचां त्यस्तुचः सौम्योत्यानुद्रुवग्रेपठ्ठनाप्रस्कण्वः काण्वआश्रेयं तु प्रागार्थमाद्योद्धुचोऽभ्युपसार्चत्वमग्नेदशा
नुष्टुभर्मर्धचोत्योदैव एपोपंचोनाश्विनं तु गायत्रं ॥ ३ ॥
हरिः ओ ३ म॥ (१।७।३) एतायामोर्पगव्यं तु इन्द्रं स्माकं सुप्रमंति वावृधाति । अनामणः कविदादस्य रायोगवाकं तु पर
मावर्जतेनः ॥ उपेदुहं न दामप्रतीतं जुष्टानश्चेनोर्वसुतिपतामि । इन्द्रं नमस्यन्नुपमेभिर्ऋक्स्यैः स्तोतृभ्यो हव्योऽअस्तिया
मन् ॥ निसर्वसेनऽइपुर्ध्वोऽरसक्तसमर्थो गाऽर्धजतियस्युवाष्टि । चोष्क्यमार्णऽइन्द्रभूरिवाममापणिर्भूरस्मदधिप्रवृद्ध ॥
(१।७।३) एतायामेति पंचदशर्चस्य सूक्तस्यागिरसो हिरण्यस्तूप इन्द्रस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं.

अनु. ७

॥ १६ ॥

वधीहिंदस्युधनिर्धनेनँऽएकश्चरन्नुपशाकेभिरिन्द्र । धनोरधिषिषुणक्तेव्यायन्नयज्वानःसनकाःप्रेतिमीयुः ॥ पराचि
 च्छीर्षाववृजुस्तुइंद्रायज्वानोयज्वभिःसर्धमानाः । प्रयद्विवोहरिवःस्थातरुयनिरव्रतौऽअधमोरोदस्योः ॥ १ ॥ अयु
 युत्सन्ननवद्यस्यसेनामयातयंतक्षितयोनवग्वाः । वृषायुधोनवधयोनिरेष्टाःप्रवञ्चिरिंद्राच्चितयंतऽआयन् ॥ त्वमेताब्रुदु
 तोजक्षतश्चायौधयोरजसऽइंद्रपारे । अवादहोदिवऽआदस्युमुच्चाप्रसुन्वतःस्तुवतःशंसमावः ॥ चक्रणासःपरीणहंयुधि
 व्याहिरण्येनमणिनाशुंभमानाः । नहिंन्वानासस्तितिरुस्तऽइंद्रपरिस्वशौऽअदधात्सूर्येण ॥ परियदिंद्रोदसीऽउभेऽअबु
 भोजीर्महिनाविश्वतःसीम् । अमन्यमानौऽअभिमन्यमानैर्निब्रह्माभिरधमोदस्युमिंद्र ॥ नयेद्विवःपृथिव्याऽअंतमापुर्न
 मायाभिर्धनदांपर्यभूवन् । युजंवज्रवृषभश्चक्रऽइंद्रोनिज्योतिषातर्मसोगाऽअधुक्षत् ॥ २ ॥ अनुस्वधामक्षरन्नापौ
 ऽअस्यावर्धतमध्यऽआनाव्यानां । सग्रीचीनैनमनसातमिंद्रऽओजिष्ठेनहर्मनाहन्नभिघ्नून् ॥ न्याविध्यदिलीविशस्य
 इह्वाविशंगिणमभिनच्छुण्णमिंद्रः । यावत्तरोमघवन्यावदोजोवज्रेणशत्रुमवधीःपृतन्युन् ॥ अभिसिध्मोऽअजिगादस्यश
 त्रन्वितिमेनवृषेणापुरोभेत् । संवज्रेणासृजद्वृत्रमिंद्रःप्रस्वांमतिमतिरुच्छाशदानः ॥ आवःकुत्समिंद्रयास्मिन्चाक
 न्प्रावोयुध्यंतवृषभंशङ्खु । शफच्युतोरेणुर्नक्षतद्यामुच्छैत्रेयोनपाह्यायतस्थौ ॥ आवःशर्मंवृषभंतुद्रयासुक्षेत्रजेपेमघव

ऋक्सं.

अ. १ अ. ३

॥ १७ ॥

निष्ठुश्रूयां ॥ ज्योक्किदत्रतस्थिवांसोऽअकच्छन्नूयतामधरुवेदनाकः ॥ ३ ॥ (१७१४) त्रिश्चिन्नोऽअद्याभवतनवेदसावि
मुवायामऽउतरातिरंश्चना । युवोहिंयंत्रहिम्येववाससोभ्यायंसेन्याभवतमनीषिभिः ॥ त्रयःपवयोमधुवाहनेरथेसोमे
हनात्रिरघयंमधुनामिमिक्षतं । त्रिर्वाजवतीरियोऽअश्विनायुवंदोपाऽअस्मभ्यमुपसंश्चपिन्वतं ॥ त्रिर्वातिर्यंतत्रिरनु
ब्रतेजनेत्रिःसुप्राव्येत्रेधेवशिक्तं । त्रिर्नाद्यंवहतमश्विनायुवंत्रिःपृक्षोऽअसेऽअक्षरेवपिन्वतं ॥ त्रिर्नार्यिंवहतमश्वि
नायुवंत्रिर्देवतातात्रिरुतावतंधिर्यः । त्रिःसौभगत्वंत्रिरुतश्रवांसिनस्त्रिषंस्त्रेदुहितारुहद्रथं ॥ त्रिर्नाऽअश्वि
नोऽअश्विनायजतादिवेदेवपरित्रिधातुश्रुथिर्विशायतं । त्रिःसोनासत्यारथ्यापरावतंऽआत्मेववातःस्वसराणिगच्छ
तं ॥ त्रिरश्विनासिंधुभिःससमातुभिस्त्रयऽआहावास्त्रेधाहविकृत्तं । त्रिस्त्रःपृथिवीरुपरिंप्रवादिबोनाकर्क्षेद्युभिर्
कुभिहितं ॥ कं१त्रीचक्रात्रिवृत्तोरथस्यकं१त्रयोवंधुरोयेसनीळाः । कदायोगोवाजिनोरासभस्येनयज्ञंनसत्योपया
थः+ ॥ आनासत्यागच्छंतदूयतेहविर्मध्वःपिवतंमधुपेभिरासभिः । युवोहिंपूर्वसवितोपसोरथमतायचित्रंयतवतुमि
(१७१४) त्रिश्चिदितिद्वादशर्वस्यसूक्त्यांगिरसोहिरण्यस्तूपोधिनौजगतीनवम्यलेत्रिष्टुभौ ।

मंडलं

अनु. ९

॥ १७ ॥

व्यति ॥ आनासत्यान्निभिरेकादुशैरिहदेवेभिर्यातंमधुपेयमश्विना । प्रायुस्तारिष्टुनीरपांसिमृक्षतसेधतंद्वेपोभवतंसचा
 भुवा ॥ आनोऽअश्विनात्रिवृताथेनावाचंरयिवहतंसवीरं । शृण्वंतावामवसेजोहवीमिधुचेचनोभवतंवाजसातो
 ॥५॥ (१।७।५) हयाम्यग्निंप्रथमंस्वस्तयेहयामिमित्रावरुणाविहावसे । हयामिरात्रोर्जगतोनिवेशनीह्वयामिदेवंसवि
 तारमतये ॥ आकृणोनरजसावतैमानोनिवेशयन्नमृतंमतीच । हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपर्यन् ॥
 यातिदेवःप्रवतायात्युद्धतायातिशुभ्राभ्यांयजतोहरिभ्यां । ओदेवोयातिसवितापर्वावतोपविश्वोदुरितावार्धमानः ॥
 अभीर्धुतंकृशैर्निर्विश्वरूपंहिरण्यशम्यंयजतोवृंहतं । आस्थाद्रथंसविताचित्रभानुःकृष्णारजोसितविपीदधानः ॥ वि
 जनांश्छयावाःशैतिपादोऽअख्यन्नथंहिरण्यप्रचंगंवहतः । शश्वद्विशःसवितुदैव्यस्योपस्थेविश्वामुर्वनानितस्थुः ॥
 तिस्रोद्यावःसवितुर्दोऽउपस्थोऽएकाग्रमस्यभुर्वनेविरापाद् । आणिनरथ्यममृताधितस्थुरिहब्रवीतुयऽउतच्चिकेतत्
 ॥ ६ ॥ विसुपर्णोऽअंतरिक्षाण्यख्यन्नभीरवैपाऽअसुरःसुनीथः । केडुदानींसूर्यःकश्चिकेतकतमांघ्रांरश्मिरस्याततान ॥
 अष्टौव्यख्यत्कुम्भःपृथिव्यास्त्रीधन्वयोर्जनासप्तसिंधून् । हिरण्यश्वःसवितादेवऽआगादधद्रत्नादाशुपेवार्याणि ॥

(१।७।५) हयामीत्येकादशर्चस्वसूक्तसागिरसोहिरण्यस्तूपःसवितात्रिष्टुप् । आद्यायाश्चतुर्पुपादेपुक्रमेणाभिभिन्नावरुणरात्रिसविता-
 रोदेवताःआद्यानवम्यौजगत्यौ ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ३

॥ १८ ॥

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि रुभेद्या वा पृथिवीऽअन्तरीयते । अपामीवां वा धत्ते वेति सूर्यमभिकृष्णो न रजसा द्यामृणोति ॥
हिरण्यहस्तो असुरः सुनीयः सुमृत्कीकः स्ववां यात्वर्वाङ् । अपसेर्धत्रक्षसो यातुधानान स्याद्देवः प्रतिदोषं गुणानः ॥ अतेपं
धाः सवितः पर्व्यासो रेणवः सुकृताऽअन्तरिक्षे ॥ तेभिर्नोऽअद्य पाथिभिः सुगोभीरक्षाचनोऽअधिचब्रूहि देव ॥ ७ ॥ (१८।१)
प्रवोयुहं पुरुणां विशो देवयतीनां । अग्निसूक्तेभिर्वचोभिरामहेयंसीमिदुन्यईळते ॥ जनासोऽअग्निं दधिरे सहो बृधं हविष्म
तो विधेमते । सत्वं नोऽअद्य समनाऽइह विताभवा वा जेषु संत्य ॥ प्रत्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं । महस्ते सतो वि
चरंत्यर्चयो दिवि स्पृशंति भानवः ॥ देवासंस्त्वावरुणो मित्रोऽअर्यमा संदूतं प्रत्वा मिधते । विश्वंसोऽअग्ने जयति त्वया धनं च
सौ दुदाशमर्त्यः ॥ मंदो होता गृहपतिरग्ने दूतो विशामसि । त्वे विश्वा संगतानि वृता भ्रुवा यानि देवाऽअकृण्वत ॥ ८ ॥ त्वे
ऽइदमे सुभगे यविष्ठय विश्वमाह्वयते हविः । सत्वं नोऽअद्य समनाऽउता परं यक्षि देवन्त्सु वीर्यां ॥ तर्धे मिथ्यानमस्वि नऽउप
स्वराजमासते । होत्राभिरग्निं मनुषः समिधतेति त्रिर्वासोऽअतिस्निधः ॥ मन्तो वृत्रमर्तरो दसीऽअपऽउरुक्षया यचक्रिरे ।
भुवत्कण्वे वृषाद्यभ्याहुतः कंददभ्यो गविष्टिषु ॥ संसीदस्व महोऽअसिशो च स्वदेव वीतमः ॥ विधुमग्नेऽअरुपं मिथे ध्यस
जपशस्त दर्शतं ॥ यत्वा देवासो मनवे दधुरि हयजिष्ठं हव्यवाहन । यंकण्वो मे ध्याति धिर्धनस्पृतं यं घृपाय मुपस्तुतः ॥ ९ ॥

(१८।१) प्रवोय हविमिति विशत्य च स्य मृत्कस्य घौरः कण्वो मिः ऊर्ध्व ऊपुण इति द्वयोर्धूपः प्रगाथः (अथुजो बृहत्यः शुजः सतो बृहत्य इत्यर्थः)

मंडलं १

अनु. ८

॥ १८ ॥

यमग्निमेध्यातिथिः कण्वर्द्धघऽऽकृतादधि ॥ तस्य प्रोदीदियुस्तमिमाऽऽकृचस्तमग्निवर्धयामसि ॥ रायस्पर्धिस्वधावो
 स्लिहितेऽग्नेदेवेष्वार्यं ॥ त्वं वाजस्यश्रुत्यस्य राजसिनो मृळमहौऽअसि ॥ ऊर्ध्वऽऊर्धुणऽऊतयेति द्वादेवोनसंविता ।
 ऊर्ध्वो वाजस्यसर्निताय दुं जिभिर्वाघाद्भिर्विह्वयामहे ॥ ऊर्ध्वो नः पाद्बहसो निकुपु न विभ्वंसमत्रिणंदह । कृधीनऽऊर्ध्वो
 चरथाय जीवसैविदादेवेषु नो दुवः ॥ पाहि नोऽअग्ने रक्षसः पाहि धूर्ते रराजः । पाहिरीर्यतऽउत वाजियाँसतो बृहद्भानो
 यविष्ठ ॥ १० ॥ घृनेव विष्वग्विजह्यराज्यस्तपुर्जभयोऽअस्युक् । योमर्त्यः शिशीलेऽअत्युक्तमिमानुः सरिपुरीशत ॥
 अग्निर्वैवेसु वीर्यमग्निः कण्वायसौभगं । अग्निः प्रार्वन्मित्रो तमेध्यातिथिमग्निः साताऽउपस्तुतं ॥ अग्निना तुर्वशं यदु
 परावतऽउग्रादेवं हवामहे ॥ अग्निर्नयन्नर्ववास्त्वं बृहदंथ तुर्वीति दस्यवे सहः ॥ नित्वामग्ने मनुर्देधेज्योतिर्जायशश्च
 ते ॥ दूदित्य कण्वऽऽकृतजातऽउक्षितो यन्नमस्यंति कुष्टयः ॥ त्वेषा सोऽअग्ने रमवंतोऽअर्चयो भीमा सो न प्रतीतये ॥ रक्षस्वि
 नः सदमिद्या तु मावतो विभ्वंसमत्रिणंदह ॥ ११ ॥ (१।८।२) क्रीळ्वः शर्धो मारुतमनवर्णं रथेशुभं । कण्वाऽअभिप्र
 गायत ॥ येष्टुपतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिर्ऋजिभिः । अजायंत स्वभानवः ॥ इहे वः शृण्वऽएपां कशाहस्तैपयद्वदान् ।
 नियामन्विन्नमंजते ॥ प्रवः शर्धायुधृण्वये त्वेषु द्युस्नायशुष्मिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत ॥ प्रशंसा गोष्वथ क्रीळ्वं च्छर्धो मारुतं ।

(१।८।२) क्रीळ्वद्वतिपंचदशर्चस्य कृत्स्नघौरः कण्वो मरुतो गायत्री ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ३

॥ १९ ॥

जंभेरसस्यवावुधे ॥ १२ ॥ कावोवर्षिष्ठऽआनरोदिवश्चगमश्चधूतयः । यत्सीमंतंनर्धुन्य+ ॥ निवोयामायमानुषोदुधऽडु
ग्रायमन्यवे । जिहीतपर्वतोगिरिः+ ॥ येषामज्मेषुपृथिवीजुज्वोऽइवविस्पतिः ॥ मियायामेषुरेजते । स्थिरं हि जानमेषां
विच्छादीर्घपथुं मिहो न पतममृधं । उदुत्ये सुनवोगिरिः काष्ठाऽअज्मेव्वलत । वाश्राऽअभिजुयातवे ॥ १३ ॥ त्वं
न ॥ यद्धयातिमरुतः संहवुवतेध्वन्ना ॥ शृणोति कश्चिदेषां ॥ प्रयातशीर्भमागुभिः संतिकण्वेषुवोदुर्वः ॥ तत्रोषुमादया
ध्वै ॥ अस्ति हिष्मामदायवः स्मसिष्मावयमेषां । विश्वं चिदायुर्जीवसे ॥ १४ ॥ (११८।३) कर्द्धनूनं कधप्रियः पिता पुत्रं
नहस्तयोः । दधिच्येवृक्तवर्हिषः ॥ कनूनं कद्धोऽअर्थगंतादिवोनपृथिव्याः । क्वो गावोनरण्यंति ॥ क्वः सुम्नानव्यासि
मरुतः कसुविता । क्रोडु विश्वानिसौर्भगा ॥ यद्ययं पृथ्वाश्रिमातरोमर्तासः स्यातं । स्तोतावोऽअमृतः स्यात् ॥ मावोमगोन
यवसेजरिताभूदजोष्यः । पथायमस्यगादुप ॥ १५ ॥ मोषुणः परापरानिर्कृतिर्दुहणावधीत् । पृदीष्टवृष्ण्यासह+ ॥
सत्यं त्वेषाऽअर्मवंतो धन्वन्विचदारुद्रियासः । मिहैकृण्वंत्यवातां+ ॥ वाश्रेव विद्युन्मिमातिवत्संनमातासिषक्ति । यदेषां
बुधिरसर्जि ॥ दिवाचित्तमः कृण्वंति पर्जन्येनोदवाहेन । यत्पृथिवीव्युदंति ॥ अर्धस्वनान्मरुतां विश्वमासद्वापार्थिवं ।
(११८।३) कर्द्धनूनमिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य वौरः कण्वो मरुतो गायत्री ।

मंडलं ३

अनु- ८

॥ १९ ॥

अरैजंतप्रमानुषाः ॥ १६ ॥ मरुतोवीलुपाणिभिश्चित्रारोधस्वतीरनु । युतेमखिद्रयामभिः ॥ स्थिरावःसंतुनेमयोर
 थाऽअश्वासऽएषां । सुसंस्कृताऽअभीशवः ॥ अच्छावद्रुतनागिराजरायैब्रह्मणस्पतिं । अग्निमित्रंनदर्शितं ॥ मिमी
 हिश्लोकमास्यैर्पर्जन्यंऽइवतनः । गार्गगायत्रमुक्थ्यं* ॥ वंदस्वमारुतंगणत्वेर्पनस्युमर्किणं । अस्मेबृद्धाऽअसन्निह
 ॥ १७ ॥ (१८।१४) प्रयदित्थापरावतःशोचिर्नमानुमस्यथ । कस्युक्त्वामरुतःकस्यवर्षसाकंयथकंहधूतयः ॥
 स्थिरावःसंत्वायुधापराणुदैवीलूऽडुतप्रतिष्कभे । युष्माकमस्तुतविपीपनीयसीमामर्त्यस्यमायिनः ॥ पराहयत्स्थिरं
 धनरोवर्तयथागुरु । वियाथनवनिनःपृथिव्याव्याशाःपर्वतानां ॥ नहिवःशत्रुर्विविदेऽअधिद्यविनभूम्यांरिशादसः ।
 युष्माकमस्तुतविपीतनयूजारुद्रासोन्नृचिद्राघृषे ॥ प्रवेपयतिपर्वतान्विविचंतिवनस्पतीन् । प्रोऽआरतमरुतोदुर्भदा
 ऽइवदेवासःसर्वथाविशा ॥ १८ ॥ उपोरथेपुपृतीरयुग्ध्वंप्रष्टिर्वहतिरोहितः । आवोयामायपृथिवीचिदश्रोदवीभयं
 तमानुषाः ॥ आवोमक्षूतनायकंरुद्राऽअवोवृणीमहे । गंतानूनोर्वसायथापुरेत्थाकण्वायविभ्युषे ॥ युष्मेपितोमरु
 तोमर्त्येषितऽआयोनोऽअभ्युऽईपते । वितंयुयोतशर्वसाव्योर्जसावियुष्माकाभिरूतिभिः ॥ असांमिहिप्रयज्यवःकण्वद
 दप्रचेतसः । असांमिभिर्मरुतऽआनऽकृतिभिर्गतावृष्टिनविद्युतः ॥ असांम्योजौविभृथासुदानुवोसामिधूतयःशवः ।

(१८।१४) प्रयदित्थेतिदशर्चस्यसूक्तस्यघोरःकण्वोमरुतोवाहंतप्रगाथः (अयुजोबृहल्यःयुजःसतोबृहल्यः) ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ३

॥ २० ॥

ऋषिद्विषेमरुतःपरिमन्यवुडङ्गुनसृजतद्विषं ॥ १९ ॥ (१।८।५) उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेदेवयंतस्त्वमेहे । उपग्रयंतुमरु
तःसुदानवुडङ्गदंष्ट्राशुभंवासचा । त्वामिद्धिसहससुत्रमर्त्येऽपग्रतेधनैर्हिते । सुवीर्यमरुतऽआस्वभ्यंदधीतुयोवऽआ
चके⁺ ॥ प्रैतुब्रह्मणस्पतिःप्रद्व्येतुसुचता । तस्माऽइळासुवीरामार्यजामहेसुप्रवृत्तिमनेहसं ॥ २० ॥ तमिद्वौचेमाविदधेऽशुशुभंमंत्रदेवाऽअनेहसं । इमांचवाचंम
धत्तेऽअक्षितिश्चर्वः । तस्माऽइळासुवीरामार्यजामहेसुप्रवृत्तिमनेहसं ॥ २० ॥ तमिद्वौचेमाविदधेऽशुशुभंमंत्रदेवाऽअनेहसं । इमांचवाचंम
वरुणोमित्रोऽअर्यमादेवाऽओकांसिचक्रिरे⁺ ॥ २० ॥ तमिद्वौचेमाविदधेऽशुशुभंमंत्रदेवाऽअनेहसं । इमांचवाचंम
तिहर्षधानरोविश्वेद्धामावोऽअश्वत् ॥ कोदेवयंतमश्रवज्जनंकोवृक्तर्वहिषं । प्रप्रदाध्वान्पस्त्याभिरस्थितांतर्वावत्क्षयंद
धे ॥ उपक्षत्रं⁺चीतंहतिराजभिर्भयेचिचिस्तुक्षितिदधे । नास्यवर्तानर्तुरुतामहाधनेनार्भेऽअस्तिवज्रिणः ॥ २१ ॥
(१।८।६) ऋक्षंतिप्रचेतसोवरुणोमित्रोऽअर्यमा । नूचिदभ्यतेजनः ॥ यंवाहुतेवपिमृतिपांतिमर्त्यैरिषः । अरिष्टः
सर्वेऽएधते ॥ विदुर्गाविद्विषःपुरोमंत्रिराजानऽएषां । नयंतिदुरितातिरः⁺ ॥ सुगःपंथाऽअनृक्षरऽआदित्यासऽऋतंयुते ।
नात्रावखादोऽअस्तिवः ॥ यंयुशंनयथानरऽआदित्याऽऋजुनापथा । प्रवःसधीतयेनशत् ॥ २२ ॥ सरलंमर्त्योवसु
(१।८।५) उत्तिष्ठेत्यष्टर्वस्यसूक्तप्रचौरःकण्वोब्रह्मणस्पतिःप्रगाथः (अयुजोबृहत्याःयुजःसतोबृहत्याः) । (१।८।६) ऋक्षन्तीति
नवर्वस्यसूक्तस्यचौरःकण्वःआद्यानांतिष्ठणामंत्यानांतिष्ठणांचवरुणमित्रार्यमणस्पृतीयादितिष्ठणामादित्यागायत्री ।

मंडलं

अनु- ८

॥ २० ॥

विश्वतोऽकमुत्तमना ॥ अच्छागच्छत्यस्तुतः ॥ कथाराधामसखायुःस्तोमं मित्रस्यार्यम्णः । महिप्सरोवरुणस्य ॥ मावो
 घ्नंतं माशपंतं प्रतिवोचे देवयंतं । सुन्नैरिद्वऽआर्विवासे ॥ चतुरश्विदमाना द्विभीयादानीर्धातोः । नदुरुकार्यस्पृहये
 त ॥ २३ ॥ (१८१७) संपूषन्नध्वनस्तिरव्यहोविमुचोनपात् । सक्ष्वादेवप्रणस्परः⁺ ॥ योनःपूषन्नघोवृकौदुःशेवऽ
 आदिदेशति । अर्पस्मत्तपथोजहि ॥ अपत्यंपरिपंथिनमुपीवाणहुरश्चितं । दुरमधिस्रुतेरज ॥ त्वंतस्यद्वयाविनोघशंस
 स्यकस्यचित् । पृदाभितिष्ठतपुपिं ॥ आतत्तैदस्त्रमंतुमःपूषन्नवोवृणीमहे । येनपितृनचोदयः ॥ २४ ॥ अर्धानोविश्व
 सौभगाहिरण्यवाशीमत्तम । धर्मानिसुपर्णाकृधि ॥ अतिनःसश्चतोनयसुगानःसुपथकृणु । पूषन्निहकृतुंविदः ॥ अ
 भिसूयवसंनयुननवज्वारोऽअध्वने । पूषन्निहकृतुं० ॥ शुग्धिपृथिप्रयसिचशिशीहिग्रास्युदरं । पूषन्निहकृतुं० ॥
 नपपर्णमेथामसिसूक्तैरभिगृणीमसि । वसूनिदूस्ममीमहे ॥ २५ ॥ (१८१८) कद्रुद्रायप्रचेतसेमीहृष्टमायतव्यसे ।
 वोचमग्रंतमंहृदे⁺ ॥ यथानोऽआदितिःकर्त्तव्येनृभ्योयथागवे । यथतोकार्यरुद्रियं ॥ यथानोमित्रोवरुणोयथारुद्र
 श्विकेतति । यथाविश्वेसजोर्पसः ॥ गाथपतिमेधपतिरुद्रंजलापभेजं । तच्छंयोःसुन्नमीमहे ॥ यःशुकऽइवसूयोहि

(१८१७) संपूषन्निदिदशचस्यसूक्तस्यधौरःकण्वःपूषागायत्री । (१८१८) कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यसूक्तस्यधौरःकण्वोरुद्रस्तृती
 यायामित्रावरुणौचसप्तम्यादिवृचस्यसोमोगायत्र्यन्यानुष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ३

॥ २१ ॥

रण्यमिवरोचते । श्रेष्ठो देवानां वसुः ॥ २६ ॥ शनः कर्तृवर्तते सुगमे पायमेव्ये । दृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ अस्मे सोमश्चि-
मधिनिधेहि शतस्य नृणां । महिश्च वस्तु विनृणां ॥ मानः सोमपरिवाधो मारतयो जुहुरंत । आर्नऽइंदो वा जैभज ॥
यास्ते प्रजाऽअमृतस्य परस्मिन् धाम नृतस्य । मर्धानाभा सोमवेनऽआभूयतीः सोमवेदः ॥ २७ ॥ (११९।१) अग्ने विव-
स्वदुपसंश्चित्रं राधौऽअमर्त्य । आद्राशुपे जातवेदो वह्वात्वमद्या देवोऽर्चपुर्धुधः ॥ जुष्टो हि दुतोऽसि हव्यवाहनो मे रथीर-
ध्वराणां । स्रजूरन्धिर्यामपसासु वीर्यमस्मेधेहि शत्रो वृहत् ॥ अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियं । धूमकेतुं भाऽऋजीकिं
ष्टिषु ॥ स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृतभोजन । अग्ने त्रातारं ममृतं मिथेध्यजिष्ठं हव्यवाहन ॥ २८ ॥ सुशंसो वोधि-
गुणतेयं विष्णुमधुजिह्वः स्वाहुतः । प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनं ॥ होतारं विश्वेदसं संहित्वा विश-
इंधते । सऽआर्वहपुरुहूतं प्रचेतसो मे देवोऽइह द्रवत् ॥ सवितारं मपसं मध्विना भर्गमग्निं व्युष्टिपक्षपः । कर्णासस्त्वासु-
अग्ने पूर्वाऽअनूपसौ विभावसो दूरीदेध विश्वदर्शतः । असि ग्रामेष्वाविता पुरोहितो सियज्ञे पुमानुपः ॥ २९ ॥ नित्वा यज्ञस्य
(११९।१) अग्ने विवस्वदिति चतुर्दशर्चस्य मृक्तस्य काण्वः प्रस्कण्वो गिराधे अशुपश्च प्रगाथः (अयुजो बृहत्यः युजः सतो बृहत्यः)

मंडलं १

अनु. ९

॥ २१ ॥

सार्धनुमशेहोतारमत्विजं । मनुष्वदेवधीमहिप्रचेतसंजीरंदूतममर्त्यं ॥ यदेवानां मित्रमहः पुरोहितोतरोयासिदूत्यं ।
 सिंधोरिवप्रस्वनितासङ्क्रमयोभेन्नाजंतेऽर्चयः ॥ श्रुधिश्रुत्कर्णवह्निभिर्देवैरेसेसावर्भिः । आसीदंतुवह्निभिर्मित्रोऽ
 अर्थमाप्राप्त्यावाणोऽअध्वरं⁺ ॥ शृण्वंतुस्तोमंरुतःसुदानवोभिजिह्वाऽऋतावृधः । पिबंतुसोमंवरुणोधृतव्रतोऽध्वभ्या
 मषसांसजुः⁺ ॥ ३० ॥ (१९।२) त्वमग्नेवसूँऽरिहरुद्रोऽआदित्योऽवृत । यजस्वध्वरंजनंमनुजातंघृतपुषं ॥ श्रु
 ष्ठीवानोहिद्राशुपेदेवाऽअग्नेविचेतसः । तान्नोहिदश्वगिर्वणस्त्रयस्त्रिंशतमार्वाह ॥ प्रियमेधवर्दन्निवजातवेदोविरूपव
 त् । अंगिरस्वन्महिन्नतप्रस्कण्वस्यश्रुधीहवं ॥ महिकेरवऽऊतयेप्रियमेधाऽअहूपत । राजतमध्वराणामग्निशोक्नेणशो
 चिषा ॥ घृताहवनसंत्येमाऽवपुश्रुधीगिरः । याभिः कर्णवस्यसनवोहव्यंतेवेसेत्वा ॥ ३१ ॥ त्वांचित्रश्रवस्तमहवतेविश्रु
 जंतवः । शोचिष्केशंपुरुप्रियाग्नेहव्यायवोह्वे ॥ नित्वाहोतारमत्विजं दधिरेवसुवित्तमं । श्रुत्कर्णसप्रथंस्तमंविप्राऽअग्ने
 दिर्विष्टिषु ॥ आत्वाविप्राऽअचुच्यवुःसुतसोमाऽअभिप्रयः । बृहन्नाविभ्रतोहविरग्नेमर्तायद्राशुपे ॥ प्रातर्याणःसह
 स्कृतसोमपेयायंसत्य । इहाद्यदैव्यंजनंवाहिरासादयावसो ॥ अर्वांचिदैव्यंजनमग्नेयक्ष्वसहूतिभिः । अयंसोमःसुदान

(१९।२) त्वमग्नेवसूनिदिशस्यसूकस्यक्राण्वःप्रस्कण्वोभिरन्त्यायादेवाश्चानुष्टुप् ।

अ. १ अ. ३

॥ ३३ ॥

(११९।३) एवोवृषाः ॥

(११९।३) एवोऽपाइतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यकाण्वःप्रस्तुण्वोऽधिनौगायत्री ।
॥ ॥

112211

२.
मंजु.

ॐ
आहं

तृतीयाध्याये वर्गः ३५ सूक्तानि १४ ऋचः १७३ ॥ लागः ॥ इंद्रायेदं. १५ अधिम्यामिदं. १२ अग्निमित्रावरुणरात्रिसवितृम्यइदं. १ सवित्रइदं. १० अग्नयइदं. १२ यूपयेद २ अग्नयइदं. ६ मरुत्वइदं. ४० ब्रह्मणस्पतयइदं. ८ वरुणमित्रार्यमम्यइदं. ३ आदित्येम्यइदं. ३ वरुणमित्रार्यमम्यइदं ३ पूष्णइदं. १० रुद्रायेदं. २ मित्रावरुणरुदेम्यइदं. रुद्रायेदं. ३ सोमायेदं. ३ अग्नयइदं. २ अग्नयइदं. २ १ अग्निदेवेम्यइदं. अधिम्यामिदं. १५ ॥ इतिप्रथमेतृतीयोऽध्यायः ॥

अयंदशप्रागर्थंतुसहपोलशोपस्यंतूपश्चतुष्कमानुष्टुभंतूतुल्यंससोनासौर्थेनवाद्यागायत्र्यौत्यस्तृचोरोगग्नउपनिषदंत्योर्धर्चोद्विपमोऽभित्यंपंचोनासव्योद्विचिष्टुवंतंमंगिराइंद्रतुल्यंपुत्रमिच्छन्नम्यध्यायत्सव्यइतींद्रएवास्यपुत्रो जायतंत्यंसुत्रयोदश्यंत्येचिष्टुभौन्यूज्वेकादशाल्येचिष्टुभौमानोत्याचिष्टुषष्ठममीनवमीचदिवश्चिदष्टौजागतंह्योपप्रदप्रमंहिष्ठार्यनूचिन्नवनोधागौतमआग्नेयंहिचतुस्त्रिष्टुवंतंवयाइत्सप्तवैश्वानरीयंवह्निंपंचास्माइदुषोळश ॥४॥ हरिः ॐ३म् ॥ (१ । ९ । ४) अयंवांमधुमत्तमःसुतःसोमऽकृतावृधा । तमभ्विनापिवंततिरोऽअह्वयंचत्तरत्नानि द्वाशुपे ॥ त्रिवंधुरेणोत्रिवृतासुपेशसारथेनायातमभ्विना । कर्णासोवांब्रह्मकृण्वंत्यध्वरेतेषांसुशृणुतंहवं ॥ अभ्विनामधुमत्तमंपातंसोममृतावृधा । अथाद्यर्दस्त्रावसुविभ्रतारथेन्द्रांवासुपर्गच्छतं ॥ त्रिषधस्येवर्हिषिभ्विवेदसामध्वायज्ञं

(१ । ९ । ४) अथवामितिदशर्चस्यसूक्तस्यकाण्वःप्रस्कण्वोभ्विनोप्रगाथः (अयुजोबृहलयोयुजःसतोबृहलः) ।

भिमिक्षतं । कर्णवासां सुतसोमाऽभिद्यवोयवांहवतेऽअश्विना ॥ याभिः कर्णवमभिष्टिभिः प्रार्वतयुवमश्विना । ता
 भिः ॥ अर्वाचां सस्यो ध्वरुश्रियो वहतु सवने दुर्प । इषं पंचतासु कृते सुदानवऽआवर्हिः सीदतं नरा ॥ तेन नासत्यागतं
 रथेन सूर्यत्वचा । येन शश्वदुहथुदाशुषेव समध्वः सोमस्य पीतये ॥ उक्थेभिर्वागवसे पुरुवसूऽअकैश्च निह्वयामहे । शश्व
 त्कर्णवानां स दसि प्रियो हि कुसोमं पृथुरश्विना ॥ २ ॥ (११९।५) सहवामेन नऽउपो व्युच्छादुहित दिवः । सहद्युमेन बृ
 हुता विभारिराया देवि दास्वती ॥ अश्ववती गोमती विश्वसुविदो भूरिच्यवंतवस्तवे । उदीरय प्रतिमा सुवृताऽउषश्चोद्
 राधो मघोनां ॥ उवासोषाऽउच्छाच्च नु देवी जीरारथानां । येऽअस्याऽआचरणेषु दधिरे समदेन श्रवस्ववः ॥ उपोयेते प्र
 यामेषु युजते मनो दानार्थं सरयः । अत्राहुतत्कर्णवऽएषां कर्णवत मोनाम गृणाति नृणां ॥ आघायोषेव स नर्युषायाति प्रभु
 जती । जुरयती वृज नं पृद्ध दीयतऽउत्पातयति पक्षिणः ॥ ३ ॥ विवासुजति समनं व्युर्धिर्नः पदं न वेत्योदती । वयो न
 किष्टे पसिवांसऽआसते व्युष्टौ वाजिनीवति ॥ एपायुक्कपरावतः सूर्यस्योदयनादधि । शतरथेभिः सुभगोपाऽइयं विवा
 (११९।५) सहवामेनेति पोळशर्चस्य सूक्तस्य काण्वः प्रस्कण्व उवाः प्रगाथः (अयुजो बृहल्लोयुजः सतो बृहल्यः) ।

ल्यभिमानुषान् ॥ विश्वमस्यानानामचक्षसेजगज्ज्योतिष्कणोतिसुनरी । अपद्वेयोमघोनीदुहितादिवऽउषाऽउच्छदपु
 स्विधः ॥ उषऽआभाहिभानुनाचंद्रेणदुहितर्दिवः । आवहंतीभूर्यस्मभ्यंसौभंगव्युच्छंतीदिविष्टिषु ॥ विश्वस्यहिप्राण
 नंजीवनंत्वेवियदुच्छसिसूनरि । सानोरथैनबृहताविभावरिश्रुधिचिन्नामघेहवं ॥ ४ ॥ उषोवाजंहिवंस्वयश्चित्रोमानु
 षेजने । तेनावहसुकृतौऽअध्वरोऽउपयेत्वागणंतिवह्यः ॥ विश्वान्देवोऽआवहसोमपीतयेतरीक्षादुपस्त्वं । सास्मासु
 धागोमदश्चावदुक्थ्यमुषोवाजंसुवीर्यम् ॥ यस्यारुशतोऽअर्चयुःप्रतिभद्राऽअहक्षत । सानोरयिंविश्ववारंसुपेशसम
 षाददातुसुगम्यं ॥ येचिद्धित्वामृषयःपूर्वऽऊतयेजुहूरेवसेमहि । सानुःस्तोमांऽअभिगृणीहिराधसोपःशुक्लेणशोचिषां ॥
 उषोयदृद्यभानुनाविद्वारावृणवोदिवः । प्रनौयच्छतादवृकंपृथुच्छर्दिःप्रदेविगोमतीरिषः ॥ संनोरायाबृहताविश्वपेश
 सामिमिक्ष्वासमिळाभिरा । संद्यन्नेनविश्वतुरोषोमहिंसावजैर्वाजिनीवति ॥ ५ ॥ (१।९।६) उषोभद्रेभिरागहिदि
 वश्चिद्रोचनादधि । वहंत्वरुणस्संवऽउपत्वासोमिनोगंहं ॥ सुपेशंसंखरंथंयमध्यस्थाऽउपस्त्वं । तेनासुश्रवसंजनंप्रा
 वाद्यदुहितर्दिवः ॥ वयश्चित्तेपतत्रिणोद्विपच्चतुष्पदजुनि । उषःप्रारन्नतूरनुदिवोऽअंतेभ्यस्परि ॥ व्युच्छंतीहिरास्मि

(१।९।६) उषोभद्रेभिरितिचतुर्नक्तस्यसूक्तस्यकाण्वःप्रस्कण्वउषाअनुपु ।

अक्सं.

अ.१अ.६

॥ २४ ॥

मंडलं १

अनु.१०

॥ २४ ॥

भिर्विध्वमाभासिरोचनं । तांत्वामुपवस्यवोगीभिः कण्वाऽअहपत ॥ ६ ॥ (११९।७) उदुत्यजातेवेदसदुवहंतिके
तर्बः । हृशेविध्वयसूर्यम् ॥ अपत्येतायोयथानक्षत्रायत्यक्तुभिः । सूरायविध्वचक्षसे ॥ अहश्रमस्यकेतवोविरुमयो
जनोऽअनु । भ्राजंतोऽअययौयथा ॥ प्रत्यङ्घ्रिध्वदशतोज्योतिष्कदसिसूर्य । विध्वमाभासिरोचनं ॥ प्रत्यङ्घ्रिदेवा
नाविशः प्रत्यङ्घ्रिदेविमानुषान् ॥ प्रत्यङ्घ्रिध्वदशतोज्योतिष्कदसिसूर्य ॥ ७ ॥ येनापावकक्षसासुरण्यतंजनोऽअनु । त्वंवरुणपश्यसि ॥
विध्वमोपिरजस्पथ्वहामिमानोऽअक्तुभिः । पश्यन्जन्मानिसूर्य ॥ सप्तत्वाहारितोरथेवहंतिदेवसूर्य । शोचिष्केशविचक्ष
ण ॥ अयुक्तसप्तशंध्युवः सूरोरथस्यनर्यः । ताभिर्यातिस्वयुक्तिभिः ॥ उद्वयंतमस्यपरिज्योतिष्पश्यतुऽउत्तरं । देवं
देवत्रासूर्यमर्गन्मज्योतिरुत्तमं ॥ उद्यन्नद्यार्मित्रमहऽआरोहन्नृत्तरां दिवं । हृद्रोगममसूर्यहरिमाणं चनाशय ॥ शुक्लेषु
मेहरिमाणं रोपणाकासुदधमसि । अथोहारिद्रुवेषुमेहरिमाणं निदधमसि ॥ उदगादयमादित्योविध्वनसहसासह । द्वि
पंतमह्यं रंध्यन्मोऽअहं द्विषते रंध्यं ॥ ८ ॥ (११९।८) अभित्यमेपंपुरुहृतमग्मियमिंद्रगीभिर्मदतावस्वोऽअर्णवं । द्वि
यस्यद्यावोनविचरतिमानुषाभुजेमहिषमभिविप्रमर्चत ॥ अभिर्मवन्वत्स्वभिष्टिमूतयोरिक्ष्मांतविषीभिरावृतं । इन्द्रं
(११९।७) उदुत्यमिति त्रयोदशर्चस्यसूक्तस्य काण्वः प्रस्कण्वः सूर्यो गायत्री अत्याश्वतसोऽनुष्टुभः (अत्यस्तचोरो गान्न उपनिपदं लोधां चोद्विषन्न
इति गुणः) । (११९।९) अभित्यमिति पंचदशर्चस्यसूक्तस्य आगिरसः सव्यं इंद्रो जगती अत्येद्वे त्रिष्टुभौ ।

दक्षासऽऽक्रुभवौमदुच्युतैशुतक्रतुंजवनीसुनृतरुहत् ॥ त्वंगेत्रमंगिरोभ्योवृणोरपोतात्रयेशुतदुरेषुगातुवित् । ससेनचि
 द्विमदायावहोवस्वाजावर्द्रिवावसानस्यनृतेयन् ॥ त्वमपामपिधानावृणोरपाधारयःपर्वतेदाजुमद्रसु । वृत्रयदिद्रशव
 सार्वधीरहिमादित्सूर्यदिव्यारोहयोद्देशे ॥ त्वमायाभिरपमायिनौधमःस्वधाभिर्येऽअधिशुसावजुह्वत । त्वंपिप्रोर्दृम
 णःप्रारुजःपुरःप्रऽऽक्रुजिश्वानंदस्युहृत्यैष्याविथ ॥ ९ ॥ त्वंकुत्संशुष्णहृत्यैष्याविथारंघयोतिथिग्वायुशंबरम् । महांतंचि
 दर्बुदंनिक्रमीःपदासनादेवदस्युहृत्यायजज्ञिषे ॥ त्वेविश्वातविषीसंध्यग्निघृतातवराधःसोमपीथार्यहर्षते । तववज्रश्चि
 कितेवाहोर्हिंतोबृश्वाशत्रोरवविश्वानिवृण्व्या ॥ विजानीह्यार्यान्येचदस्यवोवर्हिर्भतेरंधयाशासदव्रतान् । शाकीभव
 यजमानस्यचोदितविश्वेत्तातेसधमादेषुचाकन ॥ अनुव्रतारंधयन्नपव्रतानाभूरिर्द्रःश्रधयन्ननाभुवः । वृद्धस्य
 चिद्धर्धतोद्यामिनक्षतःस्तवानोवघ्नोविजघानसंदिहः ॥ तक्षद्यत्तऽऽशनासहसासहोविरोदसीमज्मनाबाधतेशवः ।
 आत्वावार्तस्यनुमणोमनोयुजऽआपूर्थमाणमवहन्नाभिश्रवः ॥ १० ॥ मंदिष्ट्यदुशनैकाव्येसचाँऽइंद्रोवृंकूवंकुतराधिति
 षति । उग्रोययिर्निरपःस्रोतसासृजद्विशुष्णस्यहंहिताऽऐरयत्पुनरः ॥ आस्मारथं वृपपाणेषुतिष्ठसि शार्यातस्यप्रभृतायेषु
 मंदसे । इंद्रयथासुतसौमेषुचाकनौनर्वाणंश्लोकमारोहसेद्वि- ॥ अर्दद्राऽअभीमहृतेवचस्यवैकक्षीवतेवृचयामिद्रसु
 न्वते । मेनाभवोवृषणभ्यस्यसुक्रतोविश्वेत्तातेसर्वनेषुप्रवाच्या ॥ इंद्रोऽअश्रायिसुध्योनिरेकेषुजेषुस्तोमोदुयोनयूपः ।

अश्वयुर्गव्यरथयुर्वसुयुर्दुइन्द्रायः क्षयतिप्रयता⁺ ॥ इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुष्माय तव सेवाचि । अस्मिन्निद्रवृज
 ने सर्ववीराः स्मत्सुरिभिस्तव शर्मन्तस्याम ॥ ११ ॥ (१११०१२) त्वं सुमेधं महयास्व विदं शतं यस्य सन्ध्वः साकमीरते ।
 अत्यं नवाजं हवनस्य दुरथमद्रववृत्यामवसे सुवृत्किभिः ॥ सपर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषुवावृधे । इन्द्रो य
 महे स्वपस्य याधिया मंहिष्ठरातिं सहिपप्रिरंधसः ॥ सहिद्रो हुरिषुवव्रड ऊर्ध्वनिचंद्रुधो मदवृद्धो मनीषिभिः । इन्द्रो य
 हेत्यड अनृतस्थुरुतयः शुष्मा इन्द्रमवाताऽअहुतस्ववः ॥ आयं पूर्णातिदि वि सन्नवाहिषः समुद्रं न सन्ध्वः १ स्वाऽअभिष्टयः । इन्द्रो य
 यद्रुज्जीधपमाणोऽअंधसाभि नद्रुलस्य परिधौऽरिव त्रितः⁺ ॥ १२ ॥ पराधृणा चरति तित्विपेशवोपो वृत्वीरजसो बुधमाश
 यत् । वृत्रस्य च त्वपवणे दुर्गभिः श्वनो निजधंथ हन्वोरिद्रतन्युतु⁺ ॥ इदं न हित्वान्यपत्यमयो ब्रह्माणो इद्रतवयानिवर्धना ।
 त्वष्टा चित्ते युज्यं वावृधेशवस्ततः क्षवज्रमभिभूत्योजसं ॥ जघन्वौऽउहरीभिः संभृतकृतविद्रवृत्रमनुषेगातुयन्नपः । अयं
 च्छथाबाह्वोर्वज्रमाय समधारयो दिव्या सूर्यहृशे⁺ ॥ बृहत्स्वश्चंद्रमवद्यदुक्थ्य १ मर्कण्वतमियसरो हर्णदिवः । यन्मानु
 प्रधनाऽइन्द्रमतयः स्वर्नपाचो मरुतो मदन्ननु ॥ द्यौश्चिद्रुस्यामवोऽअहः स्वनादयो यवीन्द्रियसावज्रऽइन्द्रते । वृत्रस्य यद्रु
 (१११०१२) त्वं सुमेधमिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्यागिरसः सव्य इन्द्रो जगती त्रयोदश्ये त्रे विष्टुभौ ।

द्विधानस्यरोदसीमदेसुतस्यशयसाभिन्च्छिरः ॥ १३ ॥ यदिन्विद्रपृथिवीदशमुजिरहानिविश्वाततनैतकृष्टयः । अ
 त्राहतेमघवन्विश्रुतंसहोद्यामनुशर्वसावर्हणाभुवत् ॥ त्वमस्यपारेरजसोव्योमनःस्वभूत्योजाऽअवसेधुपन्मनः । चक्रुषे
 भूमिंप्रतिमानमोजसोपःस्वःपरिभूरेभ्यादिवं ॥ त्वंभुवःप्रतिमानंपृथिव्याऽऽकृष्ववीरस्यबृहतःपतिर्भूः । विश्वमाप्राऽ
 अंतरिक्षंमहित्वासत्यमज्जानकिरन्यस्त्वावान् ॥ नयस्यद्यावापृथिवीऽअनुव्यचो नसिंधवोरजसोऽअंतमानशुः । नोत
 स्ववृष्टिंमदेऽअस्ययुध्यं तऽएकौऽअन्यच्चकृपेविश्वमानुपक् ॥ आर्चन्नवमरुतःसस्मिन्नाजौविश्वेदुवासोऽअमदुन्ननुत्वा ।
 बृन्नस्यचर्द्धृष्टिमतावेधेननित्वमिद्रप्रत्यानंजघंथ ॥ १४ ॥ (१११०।३) न्यूऽपुवाचंप्रमहेभरामहेगिरऽइंद्रायसदने
 विवस्वतः । नूचिच्चिरत्नैससतामिवाविदुन्नदुष्टुतिर्द्रविणोदेबुशस्यते ॥ दुरोऽअश्वस्यदुरऽइंद्रगोरसिदुरोयवस्यवसुनऽइ
 नस्पतिः । शिक्षानरःप्रदिवोऽअकामकर्शनःसखासखिभ्यस्तमिदंगृणीमसि ॥ शचीवऽइंद्रपुरुकृद्ध्युमत्तमतेवेद्विदमभि
 तश्चेकितेवसु । अतःसंगृभ्याभिभूतऽआभर्मात्वायतोर्जरितुःकाममूनयीः ॥ एभिद्युभिःसमनोऽएभिरिदुभिर्निरुधा
 नोऽअर्मतिंगोभिर्भ्विना । इंद्रैणदस्युदुरयंतऽइंदुभिर्युतद्वपसःसमिपारभेमहि ॥ समिंदरायासमिपारभेमहिसंवाजे
 भिःपुरुश्चंद्रैरभिद्युभिः । संदेव्याग्रमत्यावीरशुष्मयागोऽअग्रयाश्वावत्यारभेमहि ॥ १५ ॥ तेत्वामदाऽअमदुन्तानिबु

(१११०।३) न्यूपुवाचमित्येकादशर्चस्यसूक्त्यागिरसःसव्यइंद्रोजगतीअत्येवेत्रिष्टुभौ ।

ष्याते सोमा सो वृत्रहृत्येषु सत्पते ॥ यत्कारवेदशब्दत्राण्यप्रतिबर्हिष्मते नि स हस्त्राणि बर्हयः ॥ युधायुधमुपवेदेषि धृष्ण्या
 परापुरंसमिदं हंस्यो जसा । नभ्यायादिद्रुसख्या परावर्तिनिबर्हयो नमुचिनाममायिनं ॥ त्वं करं जमतपण्यं वधीस्ते जिष्ठया
 तिथिग्वस्यवर्तनी । त्वं शतावर्गदस्याभि नपुरो नानुदः परेषु ताऽऽकुजिभ्वना ॥ त्वमेतान् जनराजो द्विदश बंधुना सश्रव
 सोपजग्मुषः । षष्टि स हस्त्रानवति नवश्रुतो निचुक्केण रथ्या दुष्पदा वृणक् ॥ त्वमाविथसुश्रवसंतवोति भिस्तवत्रामभिरिद्र
 तूर्वयाणं । त्वमसैकुत्समतिथिग्वमायुमहेराज्ञेयूनेऽअरंधनायः ॥ यऽउदृचीद्रदेवगोपाः सखायस्ते शिवर्तमाऽअसा
 म । त्वांस्तोषामत्वया सुवीरा द्राघीयऽआयुः प्रतरं दधानाः ॥ १६ ॥ (१११०१४) मानोऽअसिन्मधवन्पत्स्वंहसिन्
 हितेऽअंतःशर्वसः परीणशो । अकंदयो नद्योऽइरोरुवृद्धना कथानक्षोणीभियसासमारत ॥ अर्चोऽशकार्यशकिने शचीवते
 शण्वंतमिद्रमहयन्नभिष्टुहि । योधष्णुना शर्वसारोदसीऽउभे वृषवृषत्वावृषभोन्यं जते ॥ अर्चीदिवो बृहते शुष्यं वचः स्वक्ष
 त्रयस्य धृषतो धषन्मनः । बृहच्छ्रवाऽअसुरो बृहणा कुतः पुरो हरिभ्या वृषभोरथो हिषः ॥ त्वं दिवो बृहतः सानुकोपयो वत्सना
 धृषता शर्वरं भिनत् । यन्मायिनो बंदिनो मंदिना धषच्छितांगमस्तिमशनिं प्रतन्यसि । नियद्वृणाक्षिभ्वसनस्यमर्धनिशुष्ण
 स्वाचिद्रुदिनोरोरुवृद्धना । प्राचीने नमनसा बृहणा वताय दुद्याचिच्छृणवः कस्त्वापरि ॥ १७ ॥ त्वमाविथ नर्थतुर्व
 (१११०१४) मानोऽअस्मिन्नित्येकादश च स्यसूक्त्यांगिरसः सव्य इंद्रे जगती षष्ठ्यप्रथमं त्वम्येकादशसिष्टुभः ।

वि॒प॒तिर्वि॒धुवे॒धाः⁺ ॥ तं न॒व्यसी॒हृद॒ऽआजाय॑मान॒म॒स्मत्सु॒कीर्तिर्म॑धु॒जिह्व॑म॒द्याः । य॒म॒त्विजो॑वृ॒जने॒मानु॑पासः प्र॒यस्व॑
 त॒ऽआय॑वो॒जीर्ज॑नंत ॥ उ॒शि॒क्प॒वाव॒कोव॑स॒र्मानु॑पे॒प॒वरे॑ण्यो॒होता॑धा॒यि॒वि॒धु । द॒र्म॒नाग॑ह॒र्पति॑र्द॒म॒ऽओ॒ऽअ॒ग्निर्भु॑व॒द्रथि॑प॒ती
 र॒यीणां⁺ ॥ तं॒त्वाव॑यं॒पति॑म॒ग्नेर॒यीणां॑प्र॒शंसो॑म॒तिभि॑र्गो॒त॒मासः । आ॒शुन॑वा॒र्जभ॑रं॒म॒र्जय॑तः प्रा॒त॒र्म॒क्षूधि॑याव॒सु॒र्जग
 म्यात् ॥ २६ ॥ (११११४) अ॒स्माऽइ॒दुप्र॑त॒वसे॑त॒राय॑प्र॒योन॑ह॒र्मिस्तो॑मं॒माहि॑नाय । ऋ॒ची॒प॒माया॑धि॒गव॑ऽओ॒हुमि॑न्द्रा॒य॒त्र
 ह्मा॒णि॒रा॒त॒त॒मा ॥ अ॒स्माऽइ॒दुप्र॑यं॒ऽइ॒वप्र॑य॒सिभ॑रा॒भ्यां॒गं॒वाधे॑सुवृ॒क्ति । इ॒न्द्रा॒य॒हृदा॑म॒न॒साम॑नी॒पाप्र॑त्ता॒य॒पत्ये॑धि॒योम॑र्ज॒य
 त ॥ अ॒स्माऽइ॒दुत्य॑मु॒पमं॑स्व॒र्पाभ॑रा॒भ्यां॒ग॒प॒मास्ये॑न । गि॒र॒श्च॒गि॒र्वाह॑से॒सुवृ॒क्ती॑द्रा॒य॒वि॒श्वमि॒न्वमे॑धि॒राय ॥ अ॒स्माऽइ॒दु
 स्तो॑मं॒संहि॑नो॒मि॒रथं॑न॒त॒ष्टेव॑त॒त्ति॒नाय । गि॒र॒श्च॒गि॒र्वाह॑से॒सुवृ॒क्ती॑द्रा॒य॒वि॒श्वमि॒न्वमे॑धि॒राय ॥ अ॒स्माऽइ॒दु
 या॑क॒जु॒ह्वा॒इ॒स॒म॒जे । वी॒रं॒दानौ॑क॒सं॒वृ॒द्धै॒पु॒रां॒ग॒त॒श्रव॑सं॒द॒मार्ण॑ ॥ २७ ॥ अ॒स्माऽइ॒दुत्व॑ष्टा॒तक्ष॑द्र॒जं॒स्व॒प॒स्तमं॑स्व॒र्वा॒रणा
 य । वृ॒त्र॒स्य॑चि॒द्भि॒दद्ये॑न॒मर्मे॑तु॒जनी॑शान॒स्तु॒ज॒ता॒किये॑धाः⁺ ॥ अ॒स्ये॒दु॒मातुः॑स॒र्वने॑यु॒सद्यो॑म॒हः॒पितु॑प॒पि॒वाच्चा॑र्व॒न्ना । म॒प्रा
 य॒द्विष्णुः॑प॒च॒तंस॑ही॒यान्वि॑ध्य॒द्वरा॑हं॒तिरो॑ऽअ॒द्रि॒म॒स्ता । अ॒स्माऽइ॒दुग्रा॑श्चि॒द्वे॒वप॑त्नी॒रिं॒द्रा॒या॒कर्म॑हि॒हृत्य॑ऽऊ॒वुः । प॒रि॒द्या
 वा॒पृथि॒वीर्ज॑भ्र॒उ॒र्वीना॑स्य॒तेम॑हि॒मानं॑प॒रि॒ष्टः ॥ अ॒स्ये॒दे॒व॒प॒रि॒रि॒चेम॑हि॒त्वां॒दिव॑स्पृ॒थि॒व्याः॒प॒र्यु॒त॒रि॒क्षात् । स्व॒राळि॑द्रो॒द॒म॒ऽ
 नो॒वा॒ज॒मि॒न्निष्टु॑प् । (११११४) अ॒स्माइ॒द्वि॒ति॒पो॒ळश॑र्च॒स्यसू॑क्त॒स्यगौ॑त॒मो॒नोधा॑इ॒न्द्र॒स्त्रिष्टु॑प् ।

कक्सं.

अ. १ अ. ५

॥ २९ ॥

आविश्वर्गतः स्वरिरमत्रोवक्षेरणाय ॥ अयेदेवशवसाशुपतं विष्टुष्ट्रज्रेणवृत्रमिन्द्रः । गानव्राणाऽअवनीरमुचदुभिश्च
वोदावनेसचेताः ॥ २८ ॥ अयेदुल्वेषसरतंसिधवः परियद्वज्रेणसीमयच्छत् । ईशानकृद्वाशुपेदशस्यन्तुर्वीतयेगायं
तुर्वणिः कः ॥ अस्माऽइदुप्रभरातुतुजानोबुत्रायवज्रमीशानः कियेधाः । युधेयादिष्णानऽआयुधान्युधायमाणो निरिणातिशत्रू ॥ अयेदु
अयेदुप्रभहिपुव्याणि तुरस्यकर्मणि नव्यऽउक्थैः । उपोर्विनस्यजोगुवानऽओणिसद्योभुवह्रीयायनोधाः ॥ एवातेहारियोजनासुबुक्तीद्रवह्माणि
भियागिरयश्चदृढाद्यावाचभूमजनुषस्तुजेते । प्रैतशंसूर्येपस्पृधानंसौवर्ध्वे सुब्विमावर्दिन्द्रः ॥ अस्माऽइदुत्यद
नुदायेषामेकोयद्वृत्तेभूरेरीशानः । प्रैतशंसूर्येपस्पृधानंसौवर्ध्वे सुब्विमावर्दिन्द्रः ॥ एवातेहारियोजनासुबुक्तीद्रवह्माणि
गोतमासोऽअकन् । एषुविश्वेषेशसंधियेधाः प्रातर्मक्षधियावसुर्जगम्यात् ॥ २९ ॥ इतिप्रथमाष्टकेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
चतुर्थध्यायेवर्गाः २९ सूक्तानि १५ ऋचः १५२ ॥ लागः ॥ अश्विन्यामिदं १० उपसइदं २० सूर्यामिदं १३ इन्द्रायेदं ७२
अमयइदं ९ अमयैवैथानरायेदं ७ अमयइदं ५ इन्द्रायेदं १६ ॥ इतिप्रथमेचतुर्थः ॥
प्रससोनात्वंनववृष्णोपञ्चोनामारुतं त्रिष्टुवंतंपरमाग्नेयमैद्रात्पश्वादशपराशरः शात्स्योद्वैपदंतद्रयिर्वनेषुश्रीर्णन्धुक्रोवने
मैकादशोपप्रदशनिकाव्यारयिनोपप्रयंतोनवगोतमोराहृगणोगायत्रंतुजुषस्वपंचकातेकथाभित्वागायत्रंतुहिरण्यकेशो
द्वादशाद्यौतृचौत्रैष्टुभौष्णिहौपूर्वोभेयेवामध्यमार्येत्थापोल्लशैंद्रपां कंहियामित्यस्यानिपातिनोदध्यजमनुरथवाचेति ५

मंडलं १

अनु. ११

॥ २९ ॥

हरिः ओ३म् ॥ (१।११।५) प्रमन्महेशवसानार्थशृपमांगुणिवर्णसेऽंगिरस्वत् । सुवृक्तिभिःस्तुवतऽऋग्मि
यायार्चोमार्कनरेविश्रुताय ॥ प्रवोमहेमहिनमौभरध्वमांगुण्यैशवसानायसाम् । येनोन्ःपूर्वैपितरःपदुज्ञाऽअर्चतोऽ
अंगिरसोगाऽअर्विदन् ॥ इन्द्रस्थांगिरसांचैष्टौविदत्सरमातनयायधासि । बृहस्पतिर्भिन्नदद्रिविदद्वाःसमस्त्रियाभिर्वावा
शंतनरः ॥ ससुष्टुभासस्तुभासप्तविप्रैःस्वरेणाद्रिस्वयोऽनवगवैः । सरण्युभिःफलिगमिन्द्रशकवलंरवेणदरयोदशगवैः ॥
गुणानोऽअंगिरोभिर्दस्मविरुपसासूर्येणगोभिरंधः । विभूम्याऽअप्रथयऽइन्द्रसानुदिवोरजऽउपरमस्तभायः ॥ १ ॥
तदुग्रयक्षतममस्यकर्मदस्मस्यचारुतममस्तिदंसः । उपबृहरेयदुपराऽअपिन्वन्मध्वर्णसोनद्यश्चतस्रः ॥ द्विताविवब्रेसन
जासनीळेऽअयास्यस्तवमानेभिरकैः । भगोन्मेनैपरमेव्योमन्नाधारयद्रोदसीसुदंसाः ॥ सनादिवंपरिभूमाविरूपेपुनर्मु
वायुवतीस्वेभिरैवैः । कृष्णेभिरकोषारुशद्भिरवपुर्भिराचरतोऽअन्यान्या ॥ सनैमिसख्यंस्वपस्यमानःसनुदीधारशवं
सासुदंसाः । आमासुचिद्विषेपकमंतःपर्यःकृष्णासुरुशद्रोहिणीषु ॥ सनात्सनीळाऽअवनीरवाताव्रतारक्षतेऽअमृताः
सहोभिः । पुरुसहस्राजनयोनपत्नीदुर्वस्यतिस्वसारोऽअह्वयाणं ॥ २ ॥ सनायुवोन्मसानव्योऽअकैर्वसूयवोमृतयोद
स्मदद्भुः । पतन्पत्नीरुशतीरुशतैस्पृशंतित्वाशवसावन्मनीषाः+ ॥ सनादेवतवरायोभस्तौनक्षीर्यतेनोपदस्यंतिदस्म ।

(१।११।५) प्रमन्महइतित्रयोदशर्चसूक्तस्यगौतमोवाङ्मद्रिष्टुम् ।

द्युमौऽअसिक्तुमौऽइंद्रधीरःशिक्षाशचीवुःसर्वनःशचीभिः ॥ सनायतेगोतमऽइंद्रनव्यमत्तक्षद्रहहरियोजनाय । स
 नीथार्यनःशवसाननोधाःप्रातर्मक्षूधियावसुर्जगम्यात् ॥ ३ ॥ (११११६) त्वमहौऽइंद्रयोहृद्युभैर्धावजज्ञानःपृ
 थिवीऽअमेधाः । यद्धतेविश्वगिरयश्चिदभ्याहृद्भासःकिरणानैर्जन ॥ आयच्छरीऽइंद्रवित्रतावेरातेवज्रंजरितावा
 त्वंशुष्णवृजनेपृक्षऽआणौयूनेकुत्सायद्युमतेसचाहन् ॥ त्वंस्त्यऽइंद्रधृष्णुरेतान्वमृभुक्षानर्यस्त्वंपाद् । स
 वृषमणःपराचैर्विदस्यैर्योनावकृतोवृथापाद् ॥ त्वंहृत्यदिंद्रारिषण्यन्हृदस्यचिन्मतोनामजुष्टौ । यच्छर
 धैतेवर्धनेवजिच्छथिह्यमित्रान् ॥ ४ ॥ त्वंहृत्यदिंद्रससयुध्यनुरोवजिन्पुरुकुत्सायददः । तवस्वधावऽइयमासमर्यऽ
 ऊतिवर्जिष्वतसार्याभूत् । त्वंहृत्यदिंद्रससयुध्यनुरोवजिन्पुरुकुत्सायददः । बर्हिर्नयत्सुदासेवृथावर्गहोराजन्वर्षिः
 परवैकः । त्वंत्यात्रऽइंद्रदेवचित्रामिषमापोनपीपयुःपरिजमन् । ययाशूरप्रत्यसभ्ययंसित्मनमूर्जनविश्वधक्षरध्वै
 अकारितऽइंद्रगोतमेभिर्ब्रह्माण्योक्तानमसाहरेभ्यां । सुपेशंस्वाजमाभरानःप्रातर्मक्षूधियावसुर्जगम्यात् ॥ ५ ॥
 (११११७) वृष्णेशर्धायसुमत्वायवेधसेनोधःसुवृक्तिप्रभरामरुद्ध्यै । अपोनधीरोमर्नसासुहस्त्योगिरिःसमंजेविदधे
 (११११६) त्वमहानितिनवर्षसूक्तसर्गोतमोनोधाइंद्रक्षिष्ट ॥ (११११७) वृष्णेशर्धायेतिपचदशर्षसूक्तसर्गोतमोनोधागरुतो जगती अत्याशिष्ट ॥

प्वाभुवः ॥ तेज्जिरेदिवऽऽक्ष्वासऽऽक्ष्णोऽऽक्ष्मर्याऽऽसुराऽऽरेपसः । पावकासःशुचयःसूर्याऽऽवसत्वानोनद्र
 प्सिनोघोरवर्षसः ॥ युवानोरुद्राऽऽजराऽऽभोगधनोववक्षुरधिगावःपर्वताऽऽव । इह्वाचिद्विश्वाभुवनानिपाथिवाप्र
 च्यावयंतिदिव्यानिमज्मना ॥ चित्रैरंजिभिर्वपुष्व्यंजतेवक्षःसुरुक्मोऽऽधिपेतैरेशुभे । असेव्वेपांनिमिमृक्षुऽऽकृष्टयः
 साकंज्जिरेस्वधयादिवोनरः ॥ ईशानुकृतोऽधुनयोरिशार्दसोवातान्विद्युतस्तविपीभिरकत । दुहंत्यूधदिव्यानिधूत
 शोभंमपिन्वंतिपर्यसापरिंजयः ॥ ६ ॥ पिन्वत्यपोमरुतःसुदानवःपयोधृतवह्निदधेष्वाभुवः । अत्यंनमिहेविनय
 तिवाजिनमुत्संदुहतिस्तनयंतमक्षितं ॥ महिषासोमायिनश्चित्रभानवोगिरयोऽनस्वतवसोरघुज्यदः । मगाऽऽवहृस्तिनः
 खादथावनायदारुणीपुताविपीरयुग्धं ॥ सिंहाऽऽवनानदतिप्रचेतसःपिशाऽऽवसुपिशोविश्ववैदसः । क्षपोजिन्वतःपृ
 पतीभिऽऽर्कटिभिःसमित्सवाधःशवसाहिमन्यवः ॥ रोदसीऽऽवदतागणश्चियोन्पचःशूराःशवसाहिमन्यवः ॥ आवं
 धुरेवमतिर्नदर्शताविद्युन्नतस्थौमरुतोरथैयुवः ॥ विश्ववैदसोरयिभिःसमौकसःसंभिश्वासःस्तविपीभिविरपशिनः ।
 अस्तारऽऽपुदधिरेगभस्थोरनंतशुष्मावृषखादयोनरः ॥ ७ ॥ हिरण्ययैभिःपविभिःपयोवृधऽऽज्जिघंतऽऽपथ्योऽुन
 पर्वतान् । मखाऽऽयासःस्वसुतौधुवच्युतौद्रुकृतौमरुतोभ्राजदृष्टयः ॥ दृष्टुपावकंविनिर्विचर्षिणिरुद्रस्यसंजुहुवसां
 गृणीमसि । रजस्तुरैतवसमारुतंगणमृजीपिणंपुषणंसच्चतत्रिये ॥ प्रनूंसमृतःशर्वसाजनोऽऽतितस्थौवऽऽकृतीमरुतो

यमावत । अर्वंश्चिर्वाजं भरते धनान्नुभिरापृच्छयं क्रतुमाक्षेति पुष्यति ॥ चर्कृत्यं मरुतः पत्सु दुष्टं दुष्टं मंतं शुष्मं मधवं सुधत्तन ।
 धनस्थतं मुक्थं विश्वचर्षणिं लोकं पुष्ये मृतनयं शतं हिमाः । नृक्षिरं मरुतो वीरवैतमृतीषा हरयिस्मा सुधत्त । सहस्रिणं शति
 नैशशुवांसं प्रातर्मध्याध्यावसुर्जगम्यात् ॥ ८ ॥ (१११२१) पश्चान्तायुं गुहा च तंतं नमो युजानं नमो वहेतं ॥ सजोषाधीराः
 पदैरनुमन्नुपत्वासीदन्विभ्ये जन्त्राः ॥ क्रतस्य देवाऽअनुव्रता गर्भुवत्परिद्विद्योर्नभ्रम् ॥ वर्धती मार्पः पन्वा सुशिक्षिमतस्य
 योनागर्भे सुजातं ॥ पृष्टिर्नृण्वक्षितिर्न पृथ्वी गिरिर्न भुज्मक्षो दोनशंभु ॥ अत्योनाज्मन्तसर्गप्रतक्तः सिंघुर्नक्षो दुःकऽ
 ईवराते ॥ जामिः सिंधूनां चार्ते वस्वस्त्रामिभ्यान्नरा जावर्नन्यत्ति ॥ यद्वा तज्जतो वनाव्यस्यादृशि हं दातिरो मापृथिव्याः ॥
 श्वसित्यप्सु हंसो नसीदुं क्रत्वा चेतिष्ठो विशासुर्षुप ॥ सोमो न वेधाऽक्रतप्रजातः पशुर्न शिश्वविभुर्दुर्भाः ॥ ९ ॥
 (१११२२) रयिर्न चित्रासूरो न संहगायुर्न प्राणो नित्यो न सनुः ॥ तद्वानभूर्णिर्वर्नसिपक्तिपयो न धेनुः शुचिर्विभावा ॥
 दाधारक्षेमो को न रणवो यवो न पको जेताननां ॥ ऋषिर्न स्तुभ्वा विशुप्रशस्तो वाजी न प्रीतो वर्यो दधाति ॥ दुरो कशोचिः
 क्रतुर्न नित्यो जायेव यो नावरं विश्वसै ॥ चित्रो यदभ्रादृश्वेतो न विशुरथो न रुक्मी त्वेषः समत्सु ॥ सेने वसुष्टामं दधात्यस्तुर्न
 दिद्युच्चेय प्रतीका ॥ यमो हं जातो यमो जनिं त्वज्जारः कुनीनां पतिर्जनीनां ॥ तं वश्चराथं वयं वसत्यास्तं गवो न क्षेतऽइच्छं ॥
 (१११२१) पश्चानेति दशर्चस्य सूक्तस्य शाक्त्यः पराशरो भिद्विपदा विराद (१११२२) रयिर्नेति दशर्चस्य सूक्तस्य शाक्त्यः पराशरो भिद्विपदा विराद

सिंघुर्नक्षोदःप्रनीचैरौन्नवतगावःस्वर्हृशीके ॥ १० ॥ (१११२।३) वनेषुजायुर्मतेषुमित्रोवृणीतेश्राष्टिराजैवानु-
 प्रं ॥ क्षेमोनसाधुःक्रतुर्नभद्रोभुवत्स्वाधीहोताहव्यवाद् ॥ हस्तेदधानोनोन्मगाविश्वान्यभेदेवान्धादुहानिपीदन् ॥ विदं-
 तीमत्रनरोधिग्रंथाहृदायत्तष्टान्मंत्रोऽअशंसन् ॥ अजोनक्षाद्राधारयृथिर्वीतुस्तंभद्यांमंत्रैभिःसत्यैः ॥ प्रियापदानिपञ्चो-
 निपहिविश्वान्युरग्रेगुहागुहंगाः ॥ यऽईचिकेतुगुह्वाभवंतमायःससादुधारांमतस्य ॥ वियेचंतत्युतासपंतऽआदिद्वसू-
 निप्रववाचासै ॥ वियोवीरुत्सुरोधन्महिल्योतप्रजाऽउतप्रसूष्वंतः ॥ चित्तिरपादमेविश्वायुःसञ्जोवधीराःसंमार्यचक्रुः
 ॥ ११ ॥ (१११२।४) श्रीणञ्जुपस्थादिवंभुरण्युःस्यातुश्चरथमक्तून्वर्णोत् ॥ परियदैपामेकोविश्वेषांभुवद्देवोदेवानां
 महित्वा ॥ आदिचेविश्वेकतुंउपंतशुष्काद्यदैवजीवोजनिष्ठाः ॥ भजंतविश्वेदेवत्वंनामऽकृतंसपंतोऽअमृतमैवैः ॥
 कृतस्यप्रेषोऽकृतस्यधीतिर्विश्वायुर्विश्वेऽअपीसिचक्रुः ॥ यस्तुभ्यंदाशाद्योवातिशिक्षात्तस्मैचिकित्वात्रयिंदयस्व ॥
 होतानिपचोमनोरपत्येसचिद्व्यासांपतीरयीणां ॥ इच्छंतरेतोमिथस्तनूषंसंजानतस्वैर्दक्षैर्मूराः ॥ पितुर्नपुत्राःकतुंउपंत
 श्रोषन्येऽअस्यशासंतुरासः ॥ विरायऽऔर्णोदुरःपुरुशुःपिपेशनाकंस्तुभिर्दमूनाः ॥ १२ ॥ (१११२।५) शुक्रःशुशु-

(१११२।३) वनेष्वितिदशर्चस्यसूक्तस्यशात्तयःपराशरोमिर्द्विपदाविराद् । (१११२।४) श्रीणञ्जितिदशर्चस्यसूक्तस्यशात्तयः
 पराशरोमिर्द्विपदाविराद् । (१११२।५) शुक्रइतिदशर्चस्यसूक्तस्यशात्तयःपराशरोमिर्द्विपदाविराद् ।

यमावत । अर्वः प्रासमीचोदिवोनज्योतिः ॥ परिप्रजातः क्रत्वावभूथभुवोदेवानां पितापुत्रः सन् ॥ वेधाऽअहसोऽ
 धनस्य तं मक्त्रं निघ्नघ्नर्गनां स्वाह्मापितूनां ॥ जनेनशर्वऽआहूर्यः सन्मध्येनिषत्तोरण्वोदुरो ॥ पुत्रोनजातोरण्वोदुरो
 नैशशङ्कान्नीतोविशोवितारीत ॥ विशोयदह्वेनृभिः सनीळाऽअग्निदेवत्वाविश्वान्यस्याः ॥ नर्किष्टऽएताव्रताभिर्नितनृ
 भ्योयदेभ्यः श्रुष्टिचकथं ॥ तत्तुतेदंसोयदहन्त्समानैर्नृभिर्यद्युक्तोविवेरपांसि ॥ उधोनजारोविभावोसः संज्ञातरूपश्चिकै
 तदस्मै ॥ त्मनावहंतोदुरोव्युण्वन्नवतविश्वेस्वर्हृदीके ॥ १३ ॥ (११२।६) वनेमपूर्वीरयोमनीषाऽअग्निः सुशो
 कोविश्वान्यस्याः ॥ आदैव्यानिव्रताचिकित्वानामानुपस्यजनस्यजन्म ॥ गर्भयोऽअपांगर्भोवनांगर्भश्चस्थातांगर्भ
 श्ररथो ॥ अद्रौचिदस्माऽअंतदुरोणेविशानविश्वोऽअमृतः स्वाधीः ॥ सहिक्षपावोऽअग्नीरंयीणांदाशद्योऽअस्माऽअ
 रंसूक्तैः ॥ एताचिकित्वोभूमानिपाहिद्वानांजन्ममर्तोश्चविद्वान् ॥ वर्धान्यपूर्वीः क्षुपोविरूपाः स्यातुश्चरथमत्प्र
 वीतं ॥ अराधिहोतास्वर्गनिर्षत्तः कृण्वन्विश्वान्यपांसिसत्या ॥ गोषप्रशस्तिवनेषुधिपेभरंतविश्वेबलिंस्वर्णः ॥ वित्वा
 नरः पुरुत्रासंपर्यन्पितुर्नजिन्नेविदेभरंत ॥ साधुर्नगधुरस्तेवशूरोयातेवभीमस्त्वेपः समत्सु ॥ १४ ॥ (११२।७)
 उपप्रजिन्वञ्चशतीरुशतंपतिननित्यंजनयः सनीळाः । स्वसारः श्यावीमरुथीमजुप्रन्वित्रमुच्छंतीमुपसंगारवः ॥ वीळुचि
 (११२।६) वनेमेलेकादशर्चस्यसूक्तस्यशाक्त्यः पराशरोभिर्द्विपदाविराट् । (११२।७) उपप्रजिन्वन्निदिदशर्चस्यसूक्तस्यशाक्त्यः

दृ॒ष्ट्वा पि॒त॒र॒न॒ऽउ॒व॒थै॒र॒द्रि॒रु॒ज॒न्न॒गि॒र॒सो॒र॒वे॒ण । च॒क्रु॒र्दि॒वो॒बृ॒ह॒तो॒गा॒तु॒म॒स्मे॒ऽअ॒हः॒स्व॒र्वि॒वि॒दुः॒के॒तु॒म॒न्नाः⁺ ॥ द॒ध॒न्न॒त॒ध॒न॒
 य॒न्न॒स्य॒धी॒ति॒मा॒दि॒दु॒यो॒र्दि॒धि॒ष्वो॒ऽवि॒भृ॒न्नाः । अ॒र्त॒व्य॒ती॒र॒प॒सो॒यं॒त्य॒च्छो॒दे॒वा॒न्ज॒न्म॒प्र॒य॒सा॒व॒र्ध॒य॒तीः ॥ म॒थी॒द्य॒र्दी॒वि॒भृ॒तो
 मा॒त॒रि॒श्वो॒ग॒हे॒रु॒हे॒रु॒ये॒तो॒जे॒न्यो॒भू॒त । आ॒र्दी॒रा॒ज्ञे॒न॒स॒ही॒य॒से॒चा॒स॒न्ना॒द॒त्यं॑^१ भृ॒ग॒वा॒णो॒वि॒वा॒य ॥ म॒हे॒य॒त्पि॒त्र॒ऽई॒र॒सं॑दि॒वे
 क॒र॒वं॒त्स॒र॒त्प॒श॒न्य॑श्चि॒कित्वा॒न् । स॒ज॒द॒स्ना॒धृ॒प॒ता॒दि॒द्यु॒र्म॒स्मै॒स्वा॒यं॑दे॒वो॒दु॒हित॒रि॒त्वि॒षं॑धा॒त् ॥ १५ ॥ स्व॒ऽआ॒य॒स्तु॒भ्यं॑द
 म॒ऽअ॒वि॒भा॒ति॒न॒मो॒वा॒दा॒शो॒दु॒श॒तो॒ऽअ॒नु॒द्य॒न् । व॒धो॑ऽअ॒ग्ने॒व॒यो॒ऽअ॒स्य॒द्वि॒व॒हृ॒या॒सं॒द्रा॒या॒स॒र॒थं॑यं॒जु॒ना॒सि ॥ अ॒ग्नि॒वि॒भ्वा
 ऽअ॒भि॒पृ॒क्षः॒स॒चं॑ते॒स॒म॒द्रं॑न॒स्र॒व॒तः॒स॒प्त॒य॒ह्वीः । न॒जा॒मि॒भि॒र्वि॒चि॒किते॒व॒यो॒नो॒वि॒दा॒दे॒वे॒प॒प्र॒म॒तिं॑चि॒कित्वा॒न्⁺ ॥ आ॒य॒द्वि॒षे
 न॒प॒ति॑ते॒ज॒ऽआ॒नु॒द्द्यु॒चि॒रे॒तो॒नि॒र्पि॒क्तं॑चौ॒र॒भी॒कैः । अ॒ग्निः॒श॒र्ध॒म॒न॒व॒द्यु॒वा॒नं॒स्वा॒यं॑ज॒न॒य॒त्सु॒द॒य॒च्च ॥ म॒नो॒न॒यो॒ध्व॒नः॒स॒द्य
 ऽए॒त्ये॒कः॒स॒त्रा॒सू॒रो॒व॒स्व॒ऽई॒शे । रा॒जो॒ना॒मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒सु॒पा॒णी॒गो॒षु॒प्रि॒य॒म॒मृ॒तं॑र॒क्ष॒मा॒णा ॥ मा॒नो॑ऽअ॒ग्ने॒स॒व्या॒पि॒त्र्या॒णि॒प्र
 म॑र्षि॒ष्ठा॒ऽअ॒भि॒वि॒दु॒ष्क॒विः॒स॒न् । न॒भो॒न॒रू॒पं॑ज॒रि॒मा॒र्मि॒ना॒ति॒पू॒रा॒त॒स्या॒ऽअ॒भि॒श॒स्ते॒र॒धी॒हि ॥ १६ ॥ (१ । १२ । ८)
 नि॒का॒व्य॒वि॒ध॒सः॒श॒र्ध॒त॒स्कु॒ह॒स्ते॒द॒धानो॒न॒र्या॑पू॒रु॒णि । अ॒ग्नि॒र्भु॒व॒द्र॒यि॒प॒ती॒र॒यी॒णां॒स॒त्रा॒च॒क्रा॒णो॒ऽअ॒मृ॒ता॒नि॒वि॒भ्वा ॥ अ॒स्मे
 व॒त्सं॒प॒रि॒प॒तं॒नि॒दि॒न्नि॒च्छं॒तो॒वि॒श्वे॑ऽअ॒मृ॒ता॒ऽअ॒मू॒राः । श्र॒म॒यु॒वः॒प॒द॒व्यो॒धि॒यं॑धा॒स्त॒स्थुः॒प॒दे॒र्प॒मे॒चा॒र्वि॒भेः⁺ ॥ ति॒स्रो॒य॒द॒ग्ने
 प॒रा॒श॒रो॒मि॒न्नि॒ष्टु॒प् । (१ । १२ । ८) नि॒का॒व्ये॒ति॒द॒श॒र्च॒सू॒क्त॒स्य॒शा॒क्तयः॒प॒रा॒श॒रो॒मि॒न्नि॒ष्टु॒प् ।

शरदुस्त्वामिच्छुच्चिधृतेन शुचयः सपर्यान् । नामानिचिह्नधियेयुः श्रियान्यसूदयंततन्वः शुजताः ॥ आरोदसीबृहुती
वेविदानाः प्ररुद्रियाजश्चियेयुः श्रियांसः । विदन्मतोनेमधिताचिकित्वानग्निपदेपरमेतस्थिवांसं ॥ संजानानाऽउपसीद
न्नभिच्छुपलीवंतो नमस्यन्नमस्यन् । रिरिक्कांसस्तन्वः कृण्वतस्वाः सखासख्युर्निमिषिरक्षमाणाः ॥ १७ ॥ त्रिःसस्यदु
ह्यानि त्वेऽइत्पदार्विद्विहितायुः श्रियांसः । तेभीरक्षतेऽअमृतं सजोपाः पशून् च स्यादृन् चरथं च पाहि ॥ विद्धाँऽअग्नेवयुनां
निक्षितीनां व्यानुषकुलुरुधौ जीवसेधाः । अंतर्विद्धाँऽअध्वनो देवयानानतंद्रोदतोऽअभवो हविर्वाद् ॥ स्वाध्याँदिवऽ
आसस्य ह्वीरायादुरो व्यृतज्ञाऽअजानन् । विदद्व्यंसरमादृह्ममवयेनानुक्तं मानुषीभोजते विद् ॥ आयेविश्वस्वपत्या
नित्तुः कृण्वानासौऽअमृतत्वार्यगातुं । मल्लामहर्द्धिः पृथिवीवितस्थेमातापुत्रैरदितिर्धार्थसेवेः ॥ अधिश्रियं निदधू
श्चारुमस्मिन्द्वोयदुक्षीऽअमृताऽअकृण्वन् । अधक्षरं तिसिंधवो न सृष्टाः प्रनीचीरग्नेऽअरुषीरजानन् ॥ १८ ॥
(११२।९) रथिनयः पितृवित्तोर्वयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शशुः । स्योनशीरतिथिर्न प्रीणानो हतेव सङ्गविधतो
वितारीत् ॥ देवोनयः सविता सत्यमन्माक्रत्वा निपातिवृजना निविश्व ॥ पुरुप्रशस्तोऽअमतिर्न सत्यऽआत्मेव शोवो दिधि
षाय्यो भूत ॥ देवोनयः पृथिवीं विश्वर्धायाऽउपक्षेति हितमित्रो न राजा । पुरःसदः शर्मसदो न वीराऽअनवद्यापति जुष्टेव

(११२।९) रथिनैति दशर्वस्य सूक्तस्य शाक्त्यः पराशरो मिश्रिष्टुप् ।

नारी ॥ तंत्वानरोदमऽआनित्यमिद्धमग्नेसचतक्षितियुधवासु । अधिद्युम्ननिदधुर्भ्यस्मिन्भवाविश्वायुर्धरुणोरयीणां ॥
 विपृक्षोऽअग्नेमघवानोऽअश्व्युर्विसुरयोददतोविश्वमार्युः । सनेमवाजसमितेज्वर्योभागंदेवेषुश्रवसेदधानाः ॥ १९ ॥ ऋ
 तस्यहिधेनवोवावशानाःस्मदूधीःपीपयंतद्युर्भक्ताः । पुरावर्तःसुमतिर्भिक्षमाणाविसिधवःसमयासस्रुराद्रि ॥ त्वेऽअग्ने
 सुमतिर्भिक्षमाणादिविश्रवोदधिरयुज्ञियासः । नक्तोचचक्रुर्यसाविरूपेकृष्णंचवर्णमरुणंचसंधुः ॥ यात्रायेमर्तान्सु
 षूदोऽअग्नेतेत्याममघवानोवयंच । छायेवविश्वंमुवनंसिसध्यापप्रिवात्रोदसीऽअंतरिक्षं ॥ अर्वद्विरग्नेऽअर्वतोनुभिर्न
 न्वीरैर्वीरान्वनुयामात्वोर्ताः । ईशानासःपितृवित्तस्यरायोविसुर्यःशतहिमानोऽअश्व्युः । एतातैऽअग्रऽउच्यर्थानिवे
 धोजुष्टानिसंतुमनसेहृदेच । शक्रेमरायःसुधुरोयमंतेधिश्रवोदेवर्भक्तदधानाः ॥ २० ॥ (१११३१) उपप्रयंतोऽअध्वरं
 मंत्रवोचेमाग्र्ये । आरेऽअस्मेचशृण्वते ॥ यःस्त्रीहितीषुपुर्व्यःसंजगमानासुक्कृष्टिषु । अरक्षद्वाशुपेगयं ॥ उत्तुवंचतुजं
 तवऽउदुग्निर्वृत्रहार्जनि । धनंजयोरणेरणे ॥ यस्यदूतोऽअसिष्येवेषिहृव्यानिवीतये । दूस्मत्कृणोष्यध्वरम् ॥ तमि
 त्सुहृव्यमंगिरःसुदेवंसहसोयहो । जनाऽआहुःसुवर्हिषं ॥ २१ ॥ आचवहासितोऽइहदेवोऽउपप्रशस्तये । हृव्यासुश्वं
 द्रवीतये ॥ नयोरुपबिदरभ्यःशृण्वेरथस्यकञ्चन । यदग्नेयासिदुल्य* ॥ त्वोतौवाज्यहयोभिपूर्वस्मादपरः । प्रदाभ्यो

(१११३१) उपप्रयतइतिनवर्चस्यसूक्तस्यराहूणोगोतमोग्रिगयत्री ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ५

॥ ३४ ॥

ऽअग्नेऽअस्थात् ॥ उत द्युमत्सुवीर्यं बहुदशे विवाससि । देवेभ्यो देवदाशुषे ॥ २२ ॥ (१।१३।२) जुषस्व स प्रथस्तमं
वचो देवप्सरस्तमं । हव्या जुहानऽआसनि ॥ अथ तिऽअंगिरस्तमाग्नेवेधस्तमप्रियं । वोचेम ब्रह्मसानसि ॥ कस्ते जा
मिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः । को ह कस्मिन्नसि श्रितः ॥ त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रोऽअसि प्रियः । सखा सखिभ्यऽई
त्यः ॥ यजनो मित्रावरुणाय जा देवोऽऽकृतं बहत् । अग्नेयक्षिस्व दमं ॥ २३ ॥ (१।१३।३) कातऽउपेतिर्मनसो वरा
यमुवदशे शंतमा कामनीषा । को वायुनैः परिदक्षतऽआपकेन वा ते मनसा दाशेम । एह्यमऽइह होतानि पी दादब्धः सुपुरऽ
एता भवानः । अवतां त्वारोदसी विश्वमिन्वे यजामहे सौमनसाय देवान् ॥ प्रसु विश्वा ब्रक्षसो धक्ष्यग्ने भवाय ज्ञानामभि
शस्तिपावा । अथर्वहसोर्मपति हरिभ्यामातिथ्यमस्मै च कृमासु दान्ने ॥ प्रजावता वचसा वहिरासा च हुवे निच सत्सी हदे
वैः । वेषिहोत्रमुतपोत्रं यजत्र वोधि प्रयंतर्जनि तव सूनां ॥ यथा विप्रस्यमनुषो ह विभिर्देवोऽअयजः कविभिः कविः सन् ।
एवा होतः सत्यतत्त्वमद्याग्नेमं द्रया जुहो यजस्व ॥ २४ ॥ (१।१३।४) कथा दाशेम अग्नेयैः कास्मै देव जुष्टोच्यते भामिने
गीः । योमर्त्येष्वमृतं ऽऽकृता वा होता यजिष्ठऽइच्छुणोति देवान् ॥ योऽअध्वरेषु शंतमऽऽकृता वा होता तमनमो भिराकृणु
(१।१३।२) जुपस्वेति पचर्चस्य सूक्तस्य राहूगणो गोतमो भिराग्यत्री । (१।१३।३) कात इति पचर्चस्य सूक्तस्य राहूगणो गोतमो भिराकृणु
दुप् । (१।१३।४) कथा दाशेम इति पचर्चस्य सूक्तस्य राहूगणो गोतमो भिराग्यत्री । (१।१३।३) कात इति पचर्चस्य सूक्तस्य राहूगणो गोतमो भिराकृणु

॥ ३४ ॥

मंडलं. १

अनु. १३

ध्वं । अग्निर्द्वर्धतेऽप्यदेवान्सचावोधातिमनसायजाति ॥ सहिक्तुःसमर्थःससाधुभिन्नोभदद्भुतस्यरथीः । तमेधे
 पुप्रथमैर्देवयंतीर्विशुऽउपब्रुवतेदुस्समारीः ॥ सनोनृणानृतमोरिशार्दाऽअग्निगिरोवसावेतुधीति । तनाचयेमघवानःश
 विष्ठावाजप्रसूताऽइपर्यंतमन्म ॥ एवाग्निर्गोतमेभिऽर्कतावाविप्रेभिरस्तोष्टजातवेदाः । सऽएषुद्युम्नपीपयत्सवाजंसप
 ष्टियातिजोपमार्चिकित्वात् ॥ २५ ॥ (१११३।५) अभित्वागोतमागिराजातवेदोविचर्षणे । द्युम्नैरभिप्रणोनुमः ॥
 तमुत्वागोतमोगिरायस्काभोदुवस्यति । द्युम्नैः ॥ तमुत्वावाजसार्तमंगिरस्वद्धवामहे । द्युम्नैः ॥ तमुत्वावृत्रहं
 तमयोदस्यूरवधूनुपे । द्युम्नैः ॥ अवौचामरह्मणाऽअग्रयेमधुमद्वचः । द्युम्नैः ॥ २६ ॥ (१११३।६) हिरण्यके
 शोरजसोविसारेहिधुनिर्वातऽइवध्रजीमान् । शुचिभ्राजाऽउपसोनैवेदायशस्वतीरपस्युवोनसत्याः ॥ आतेसुपर्णाऽ
 अमिनन्तेऽएवैःकृष्णोनौनाववृपभोगदीदं । शिवाभिर्नस्मर्यमानाभिरागात्पततिमिहःस्तनयंत्यभ्रा ॥ यदीमतस्यप
 यसापियानोनयन्नतस्यपथिभीरजिष्ठैः । अर्थमामिन्नोवरुणःपरिज्मात्वचंपृंचंत्युपरस्ययोनौ । अग्नेवाजस्यगोमतेऽई
 शानःसहसोयहो । अस्मेधेहिजातवेदोमहिश्रवः ॥ सऽईधानोवसुक्कविरिग्रीळेन्योगिरा । रेवदुस्समर्थपुर्वणीकदी

(१११३।५) अभित्वेतिपचर्चस्यसूक्तस्यराहूणोगोतमोग्निर्गायत्री । (१११३।६) हिरण्यकेशइतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यराहूणो
 गोतमोग्निर्गायत्रीआद्यास्तिस्त्रोनुष्टुभःततस्त्रिषड्वण्हः (आद्यानातिष्टणसम्यमोग्निःपार्थिवोवा) ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ५

॥ ३५ ॥

दिहि ॥ क्षपोराजन्नतत्तनाग्नेवस्तोरुतोपसः । सतिग्मजंभरक्षसोदहप्रति ॥ २७ ॥ अवानोऽअमऽऊतिभिर्गायत्रस्य
प्रभर्मणि । विश्वासुधीपुवच्च ॥ आनोऽअग्नेरयिभरसत्रासाह्वरेण्यं । विश्वासुपुत्सुदुष्टरं ॥ आनोऽअग्नेसुचेतुनार
भिदासत्यातिदुरेपदीष्टसः । अस्माकमिदुधेभव ॥ सहस्राक्षोविचर्षणिरश्रीरक्षसिसेधति ॥ योनोऽअग्ने
॥ २८ ॥ (१।१३।७) इत्याहिसोमऽइन्मदेब्रह्माचकारवर्धनं । शर्विष्ठवज्रिन्नोजसापृथिव्यानिःशशाऽअहिमर्वन्न
नुस्वरान्यं ॥ सत्वामिदुद्धृपामदुःसोमःश्वेनाभृतःसुतः । येनावृत्रंनिरुध्योजयवज्रिन्नोजसार्चन्ननुं ॥ मेह्यभीहिद्यु
ष्णहिनतेवज्रोनिर्गसते । इन्द्रनुमंहितेशवोहनोवृत्रंजयाऽअपोर्वन्ननुं ॥ निरिन्द्रभूम्याऽअर्धिवृत्रंजयनिर्दिवः । सु
जामरुत्वतीरवजीवधन्याऽइमाऽअपोर्वन्ननुं ॥ इन्द्रोवृत्रस्यदोधतःसानुवज्रंणहीकृतः । अभिक्म्यावजिमतेपःसर्मायवो
दयन्नर्वन्ननुं ॥ २९ ॥ अधिसानौनिजिमतेवज्रेणशतपर्वणा । मंदानऽइन्द्रोऽअंधसःसखिभ्योगातुमिच्छत्यर्वन्ननुं ॥
इंद्रतुभ्यमिदंद्रिवोनृतं वज्रिन्वीर्यं । यद्धत्यंमायिनंमंगंतमत्वंमाययावधीरर्वन्ननुं ॥ वितेवज्रासोऽअस्थिरन्नवतिना
व्याइअनु । महत्तंऽइंद्रवीर्यंवाहोस्तेवलहितमर्वन्ननुं ॥ सहस्रसामर्चतपरिष्टोभतविशतिः ॥ शतैन्मन्वनोनवुरिन्द्रा
(१।१३।७) इत्याहीविपोडशर्चससूक्तस्यराहूगणोत्तमइन्द्रोत्तायादध्यजानुरथार्वाचपंक्तिः ।

मंडलं १

अनु. १३

॥ ३५ ॥

यत्रहोद्यतमर्चन्ननु० ॥ इन्द्रोवृत्रस्यतविर्षीनिरहुन्त्सहसासहः । महत्तदस्यपौर्त्यवृत्रंजघन्वाँऽअसृजदर्वन्ननु० ॥ ३० ॥
 इमेचित्तवमन्यवेपेतेभियसामही । यद्विद्रवज्जिन्नोजसावृत्रंमरुत्वोँऽअवधीरर्वन्ननु० ॥ नवेपसानतन्यतेद्रवृत्रोविर्षी
 भयत् । अभ्येनंवज्रऽआयसःसहस्रभृष्टिरायतार्चन्ननु० ॥ यद्ध्वत्रंतवचाशनिंजैणसमयोधयः । अहिमिंद्रजिघांसतो
 द्विवितेवद्वधेशवोर्वन्ननु० ॥ अभिष्टनेतेँऽअद्रिवोयत्थाजगच्चेरेजते । त्वष्टाचित्तवमन्यवऽइंद्रवेविज्यतेभियार्चन्ननु० ॥
 नहिनुयादधीमसींद्रकोवीर्योपरः । तस्मिन्नग्नमुतकर्तुंदेवाँऽओजाँसिसंदधुरर्वन्ननु० ॥ यामर्थवर्मनुष्पितादृध्यङ्घ्रिय
 मल्लत । तस्मिन्ब्रह्माणिपूर्वथेँऽउक्थासमगमतार्वन्ननु० ॥ ३१ ॥ इतिप्रथमाष्टकेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

पंचमाध्यायेवर्गः ३१ सूक्तानि १९ ऋचः १८५ ॥ त्यागः ॥ इद्रायेवं. २२ मरुत्वाइद १५ अग्नयइद. १२९ मध्यमायाग्नयइद. ३
 अग्नयइद. ९ इद्रायेद १६ ॥ इतिप्रथमेपचमोऽध्यायः ॥

इन्द्रोनवोपोषुषड्जगल्यंतमन्वावतिजागतमसाविविंशतिःषळनुष्टुभऽऔष्णिहपांक्तगायत्रैष्टुभास्तुचाःप्रगाथः
 प्रथेद्वादशमारुतंहंपंचम्यंत्येन्निष्टुभौमरुतोदशगायत्रंप्रत्वक्षसःषड्जागतमाविद्युन्मद्भिराद्यांत्येप्रस्तारपंक्तीपंच
 मीविराड्रूपानोदशवैश्वदेवंतुंपंचाद्याःसप्तमीचजगल्यःषष्ठीविराट्स्थानंऋजुनीतीनवगायत्रंमत्यानुष्टुपंत्वंसोम
 त्र्यधिकासौम्यंपंचम्यादिगायत्र्योद्वादशोष्णिक्चैताउत्याह्वनोपस्यंचतुर्जगत्यादिपळुष्णिगंतंतुचौत्यऽआश्वि

नोन्नीयोमौद्वादशाग्नीषोमीयमाद्यास्तिस्त्रोनुष्टुभंऽउपांत्यास्तिस्त्रोगायत्र्योऽष्टमीजगतीवेमंषोऽशकुत्सआग्नेयंतद्वित्रि
ष्टुवंतंपूर्वोदेवास्त्रयःपादादेवास्तन्नोमित्रोर्ध्वचोर्लिङ्गोक्तदेवतोयद्वैवत्यंवासूक्तम् ॥ ६ ॥

हरिःओ३म् ॥ (१।१३।८) इंद्रोमदायवावृधेशवसेवृत्रहानृभिः । तमिन्महत्स्वाजिषूतेमर्भेहवामहेसवाजेषुप्र
नोविपत् ॥ असिहिवीरसेन्योसिभूरिपराददिः ॥ असिदुन्नस्यचिद्वृधोयजमानायशिक्षसिसुन्यतेभूरितेवसु ॥ यदुदीर
तऽआजयोधृष्णवैधीयतेधना । युक्ष्वामदुच्युताहरीकंहनःकंवसौदधोस्मोऽईद्रवसौदधः ॥ कर्त्वामहोऽअनुष्वयंभी
मऽआवावृधेशवः । श्रियऽऋग्वऽउपाकयोर्निशिप्रीहारिवान्दधेहस्तयोर्वज्रमायसं ॥ आपप्रौपाथिर्वंरजोवद्वधेरोच
नादिवि । नत्वावाँऽईद्रक्श्चननजातोर्नजिष्यतेतिविश्ववक्षिथ ॥ १ ॥ योऽअयोर्मर्तभोजनंपराददातिदाशुषे ।
इंद्रोऽअस्मभ्यंशिक्षतुविर्भजाभूरितेवसुभक्षीयतवराधसः ॥ मदेमदेहिनोदुदिर्युथागवांमृजुऋतुः । संगृभायपूरुशतो
भयाहृस्त्यावसुशिशीहिरायऽआभर ॥ मादयस्वसुतेसचाशवसेशूरारधसे । विद्वाहित्वापुरूवसुमुपकामान्ससज्महे
थानोविताभव ॥ एतेतंऽईद्रजंतवोविश्वंपुष्यंतिवार्धं । अंतर्हिष्योजनानाम्योविद्रोऽअदाशुषांतेषांनोवेदुऽआभर
॥ २ ॥ (१।१३।९) उपोषुशृणुहीगिरोमघवन्मातथाऽइव । यदार्नःसुनृतावतःकरऽआदृथ्यासुऽइद्योजान्विदृते

(१।१३।८) इंद्रोमदायेतिनवर्चस्यसूक्तस्यराहूगणो गोतमइंद्रःपंक्तिः(१।१३।९)उपोष्वितिपठर्चस्यसूक्तस्यराहूगणो गोतमइंद्रःपंक्तिरत्याजगती

हरी ॥ अक्षन्नमीमदंतुह्यवप्रियाऽअधूपत । अस्तौपतस्वभानवोविप्रानविष्ठयामतीयोज्ञा० ॥ सुसंहशत्वावयमघवन्यं
दिपीमहि । प्रननंपूर्णधंधुरःस्तुतोयाहिवशोऽअनुयोज्ञा० ॥ सघातंवृषणंरथमधितिष्ठातिगोविदं । यःपात्रंहारियोज्ञ
नंपूर्णमिद्रुचिकेततियोज्ञा० ॥ युक्तोऽअस्तुदक्षिणऽउतसव्यःशतक्रतो । तेनजायामुपप्रियांमंदानोयाह्यधंसोयोज्ञा० ॥
युनज्जिमेतेब्रह्मणाकेशिनाहरीऽउपप्रयाहिदधिपेगभस्त्योः । उत्त्वासुतासौरभसाऽअमंदिषुःपूपण्वान्वज्जित्समपह्या
मदः ॥ ३ ॥ (१११३।१०) अर्थावतिप्रथमोगोषुगच्छतिसुप्रावीरिद्रमत्यस्तवोतिभिः । तमितृणक्षिवसुनाभवी
यसांसिधुमापोयथाभितोविचेतसः ॥ आपोनेदेवीरुपयंतिहोत्रियमवःपश्यंतिवितंतयथारजः । प्राचैर्देवासःप्रणयंति
देवयुं ब्रह्माप्रियंजोपयंतेवराऽइव ॥ अधिद्वयोरदधाऽउक्थ्यवचोयतस्त्रुचामिथुनायासपर्यतः । असंयत्तोव्रतेतेक्षेति
पुष्यतिभुद्राशुक्तिर्यजमानायसुन्वते⁺ ॥ आदंगिराःप्रथमंदधिरेवयऽइद्धाघ्नयःशम्यायेसुकृत्या । सर्वपणेःसमविदं
तुभोर्जनमर्थावतंगोमंतमापशुनरः ॥ यज्ञैरर्थवाप्रथमःपथस्तैततःसूर्योव्रतपावेनऽआजनि । आगाऽअजदुशनोका
व्यःसर्वायमस्यजातममृतंयजामहे ॥ बर्हिर्वायस्वपत्यायवृज्यतेकोवाश्लोकमाधोषतेद्विवि । प्रावायन्नवदतिकारुरु
क्थ्यवृस्तस्येदिद्रोऽअभिपित्वेषुरण्यति ॥ ४ ॥ (१११३।११) असाविसोमऽइद्रतेशविष्ठधृष्णवागंहि । आत्वापुण

(१११३।१०) अधावतीतिषडुचस्यसूक्तस्यराहूगणोत्तमंद्रोजगती । (१११३।११) असावीतिविंशत्युचस्यसूक्तस्यराहूगणोत्तमंद्राद्याः

किंचद्विरंजःसूर्योनरस्मिंभिः ॥ इन्द्रमिच्छरीवहृतोप्रतिघृष्टशवसे । ऋषीणाचस्तुतीरुपयज्ञंचमानुपाणां ॥ आतिष्ठ
 वृत्रहृत्रथैयुक्तातेब्रह्मणाहरी । अर्वाचीनसुतेमनोप्रावाकृणोलुवद्भुना ॥ इममिन्द्रसुतंपिवज्येष्ठममर्थमदं । शुक्रस्यत्वा
 भ्यक्षरन्धाराऽऽकृतस्यसादने ॥ इन्द्रायननमर्चतोक्थानिचब्रवीतन । सुताऽअमत्सुरिंदवोज्येष्ठनमस्यतासहः ॥ ५ ॥
 नकिंघ्नद्रथीतरोहरीयदिद्रयच्छसे । नकिंघ्नानुमज्जनानकिःस्वर्धऽआनशे ॥ यऽएकऽइद्विदयतेवसमतीयदाशुषे । यश्चिद्धित्वा
 नकिंघ्नद्रथीतरोहरीयदिद्रयच्छसे । नकिंघ्नानुमज्जनानकिःस्वर्धऽआनशे ॥ यऽएकऽइद्विदयतेवसमतीयदाशुषे । यश्चिद्धित्वा
 ईशानोऽअप्रतिष्कुतऽइंद्रोऽअंगं ॥ कदामर्तमराधसंपदाक्षुपमिवस्फुरत् । कदानःशुश्रवद्भिरऽइंद्रो ॥ यऽइंद्रेण
 ब्रुभ्यऽआसुतावोऽआविवासति । उग्रंतत्पत्यतेशवऽइंद्रो ॥ स्वादोरित्थाविषवतोमध्वःपिवंतिगौर्यैः । यऽइंद्रेण
 सयावरीर्वृष्णामदतिशोभसेवस्वीरनुस्वराज्यं ॥ ६ ॥ ताऽअस्यपृथानायुवःसोमंश्रीणंतिपृथयः । प्रियाऽइंद्रस्यधेनवो
 वज्रं हिन्वंतिसार्यकुं वस्वी ॥ ताऽअस्यनमसासहःसपर्यंतिप्रचेतसः । व्रतान्यस्यसश्चिरेपूरुणिपर्वचित्तयेवस्वी ॥ तद्विदच्छर्यणा
 इंद्रोदधीचोऽअस्थाभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघाननवतीर्नव ॥ इच्छन्नश्वस्ययच्छिरःपर्वतेष्वपश्रितं । तद्विदच्छर्यणा
 वति ॥ अत्राहुगोरमन्वतनामत्वष्टुरपीच्यं । इत्थाचंद्रमसोगहे ॥ ७ ॥ कोऽअद्ययुक्तेऽधरिगाऽकृतस्यशिमीवतोभा
 मिनोर्दुर्हणायून । आसन्निपून्हृत्स्वसोमयोभून्यऽएषांभृत्यामणधत्सज्जीवात् ॥ कऽईषतेतुज्यतेकोविभायकोमंसे
 पळनुष्टुभःसप्तन्याद्यास्तिस्त्रजःपक्षयःत्रयोदशाद्यास्तिस्त्रोगायत्र्यःषोडशाद्यास्तिस्त्रोभिष्टुभःअंशेद्वहृतीसतोबृहलौ ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ६

॥ ३७ ॥

संतमिंद्रकोऽंति । कस्तोकायकऽइभायोतरायेधिब्रवत्तन्येऽं कोजनय ॥ कोऽअग्निमीद्विहविपाघतेनस्त्रचायजाताऽक्र
 तुभिर्धुवेभिः । कसौदेवाऽआवहानाशुहोमकोमसतेवीतिहोत्रःसुदेवः⁺ ॥ त्वमंगप्रशंसिपोदेवःशविष्टमर्त्ये । नत्वदु
 न्योर्मघवन्नस्तिमर्द्धितेद्रववीमितेवर्चः ॥ मातेराधांसिमातऽकृतयौवसोस्मान्कदाचनदभन् । विश्वाचनऽउपमिमी
 हिमानुषवसूनिचर्षणिभ्यऽआ⁺ ॥ ८ ॥ (१११४१) प्रयेक्षुंभतेजनयो न सत्तयोयामेद्रुद्रस्यसनवःसुदंससः । रो
 दसीहिमरुतश्चक्रिरेवृधेमदतिवीराविदथेषुघृण्वयः ॥ तऽउक्षितासौमहिमानमाशतदिविरुद्रासोऽअधिचक्रिरेसदः ।
 अर्चतोऽअर्कजनयंतऽइंद्रियमधिश्रियौदधिरेषुश्रिमातरः ॥ गोमातरोयच्छुभयैतेऽअंजिभिस्तनूदुशुआदधिरिविरु
 क्तमतः । बार्धतेविश्वमभिमातिनमपवत्सोन्येषामनुरीयतेघृतं⁺ ॥ वियेआजंतेसुमखासऽक्रुष्टिभिःप्रच्यावयंतोऽअच्यु
 ताचिदोर्जसा । मनोजुवोयन्मरुतोरथेष्ववावृषत्रातासःपृषतीरयुगध्वं ॥ प्रयद्रथेषुपृषतीरयुगध्ववाजेऽअद्रिमरुतोरह्य
 तः । उतारुषस्यविष्वंतिधाराश्चर्मेवोदभिव्युदंतिभूम ॥ आवौवहंतुसप्तयोरघुष्यदोरघुपत्वानःप्रजिगातबाहुभिः ।
 सीदुताबर्हिरुरुवःसदस्क्रुतंमादयध्वंमरुतोमध्वोऽअंधसः ॥ ९ ॥ तैवधतस्वतवसोमहित्वनानाकतस्थुरुचक्रिरेसदः ।
 विष्णूर्यद्वावृद्धृपंगमदच्युतंवयो नसीदन्नधिबुहिषिप्रिये⁺ ॥ शूराऽइवेद्युयुधयो न जर्मयःश्रवस्यवोनपृतनासुयेतिरे ।

(१११४१) प्रयेक्षुंभंतइति द्वादशार्चस्य सूक्तस्य राहूगणो गोतमो मरुतो जगती पंचम्यले त्रिष्टुभौ ।

भयंते विभ्वाभुवनामरुद्धो राजानऽइव त्वेषसंहशो नरः ॥ त्वष्टाय ब्रजं सुकृतं हिरण्ययं सहस्रं भृष्टिं स्वपाऽअवर्तयत् ।
 धत्तऽइंद्रो नर्यपांसि कर्तुं वेहं नृवृत्रं निरपामौ जादयन्व ॥ ऊर्ध्वं नु नु द्रेव तं तं ओजसा दाहद्वाणां चिद्विभिदुर्विपर्वतं । धर्मं
 तोवाणं मरुतः सुदानवो मदे सोमस्य रण्यानि च क्रिरे ॥ जिह्वं नु नु द्रेव तं तया दिशसि च द्रुत्संगो तमायतूषणजे । आगच्छं
 तीमवसाचित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयंत धामभिः ॥ यावः शर्म शशमानाय संति त्रिधा तू निद्राशुषे च्छताधि । अस्म
 भ्यंतानि मरुतो विर्यं तर्गिनो धत्तवृषणः सुवीरं ॥ १० ॥ (११४।२) मरुतो यस्य हि क्षये पाथादिवो विमहसः । ससु
 गोपातमोजनः ॥ यज्ञैर्वीयज्ञवाहसो विप्रस्य वामतीनां । मरुतः शृणुताहव ॥ उत वायस्य वाजिनो नु विप्रम तक्षत । संगं
 तागो मतिव्रजे ॥ अस्य वीरस्य वृहिर्बिसुतः सोमो दिर्विष्टिषु । उक्थं मदंश्च शस्यते ॥ अस्य श्रोषंत्वाभुवो विभ्वायश्च वर्षणी
 रभि । सूरचि त्सल्लुषीरिषः ॥ ११ ॥ पूर्वभिर्हि दंदाशिमशुरभिर्मरुतो वयं । अवोभिश्च वर्षणीनां ॥ सुभगः सप्रयज्य
 वो मरुतोऽअस्तु मर्त्यः । यस्य प्रयसि पर्थ ॥ शशमानस्य वानरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्येव नतः ॥ यूयंत
 त्स्य शवसऽआविष्कर्तमहित्वना । विध्यंता विद्युतारक्षः ॥ गृहं ता गुह्यं तमो वियात विध्वमत्रिणं । ज्योतिष्कर्तयिदु
 इमसि ॥ १२ ॥ (११४।३) प्रत्वक्षसः प्रतवसो चिरपशिनो नानताऽअविथुराऽऋजीषिणः । जुष्टतमा सो नृतमा सो

(११४।२) मरुतो यस्येति दशर्चस्य सूक्तस्य गणो गोतमो मरुतो गायत्री । (११४।३) प्रत्वक्ष स इति षड्च सूक्तस्य गणो गोतमो

ऽअञ्जिभिर्व्यीनञ्जेकेचिदुच्चाऽईवस्तुभिः ॥ उपहरेपयदच्चिध्वयुयिवयऽइवमरुतःकेनचित्पथा । श्रोतंतिकोशाऽउप
 वोरथेष्वाघतंसुक्षतामधुवर्णमर्चते ॥ प्रैषामज्मेषुविथुरेवरेजतेभूमिर्यामेषुयज्जुंजतेशुभे । तेक्रीळयोधुनयोञ्चाजहृष्टयः
 स्वयंमहिल्वपनयंतधूतयः ॥ सहिस्वसृष्टपदश्चोयुवागणोऽयाऽईशानस्ताविधीभिरावृतः । असिसत्यऽऋणयावानेद्यो
 स्याधियःप्रविताथावृपागणः+ ॥ पितुःप्रह्वस्यजन्मनावदामसिसोमस्यजिह्वाप्रजिगातिचक्षसा । यदीमिंद्रशम्युक्ता
 णऽआशतादिन्नामानियुजिर्यानिदधिरे ॥ अत्रियसेकंभानुभिःसंभिमिक्षिरेतेरुद्दिमभिस्तऽऋक्भिःसुखादयः । तेवाशी
 मंतऽइष्मिणोऽअभीरवोविद्रेप्रियस्यमारुतस्यधाम्नः ॥ १३ ॥ (१११४१४) आविद्युन्मद्भिर्मरुतःस्वकैरथेभिर्यातऽ
 ऋष्टिमद्भिरश्वपणैः । आवर्षिष्ठयानऽइपावयोनपसतासुमायाः ॥ तैरुणेभिर्वरमापिशगैःशुभेकयातिरथतूभिर्ऋध्वैः ।
 रुक्मोनचित्रःस्वधितीवान्पुव्यारथस्यजंघनंतभूम ॥ अत्रियेकंवोऽअर्धितनूषवाशीर्मेधावनानकृणवंतऽऊर्ध्वा । युष्म
 भ्यंकंमरुतःसुजातास्तुविद्युन्नासौधनयंतेऽअद्रिं ॥ अहोनिगृध्राःपर्यावऽआगुरिमांधियंवार्याचदेवीं । ब्रह्मकृण्वं
 तोगोतमासोऽअकूरुध्वर्ननुद्रऽउत्सधिपिबध्वै ॥ एतत्त्यन्नयोजनमचेतिसस्वहृयन्मरुतोगतमोवः । पश्यन्निहरेण्यच
 क्रानयोदंष्ट्रान्विधावतोवराहं ॥ एपास्यावोमरुतोनुभ्रर्षीप्रतिष्टोभतिवाघतो नवाणी । अस्तौभयद्वृथासामनुस्वधांग
 मरुतो जगती । (१११४१४) आविद्युन्मद्भिरितिपटुचसूक्तस्यराहूणगोतमोमरुतबिपुपुआद्यालेप्रस्तारंपंक्तीपंचमीविराड्वापा ।

भस्त्योः ॥ १४ ॥ (१११४।५) आनोभद्राःऋतवोयंतुविश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः । देवानोयथासदमि
 कुधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ देवानाभद्रासुमतिर्ऋजूयतांदेवानांरातिरभिनोनिवर्ततां । देवानांसख्यमुप
 सेदिमावयंदेवानऽआयुःप्रतिरंतुजीवसे ॥ तान्पूर्वयानिविदाहमहेवयंभर्गमित्रमर्दित्तिदक्षमस्त्रिधं । अर्थमणवरुणसो
 ममध्विनासरस्वतीनःसुभगामर्यस्करत् ॥ तन्नोवातोमयोभुवानुभेषजंतन्मातापृथिवीतत्पितादौ । तद्भ्रावणःसोम
 सुतोमयोभुवस्तदध्विनाऋणुतंधिष्ण्यायुवं ॥ तमीशानंजगतस्तस्यपस्पतिंधियंजिन्वमवसेहमहेवयं । पृषानोयथावे
 दसामसंकुधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये ॥ १५ ॥ स्वस्तिनऽइंद्रोवृद्धश्रवाःस्वस्तिनःपृषाविश्ववेदाः । स्वस्तिनस्ताक्ष्यो
 ऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधालु ॥ पृषदध्वामरुतःपृश्निमातरःशुभंयार्वानोविदथेवृजर्मयः । अग्निजिह्वामन
 वःसूरचक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ॥ भद्रंकर्णेभिःऋणुयामदेवामद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु
 वांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवाहितंयदायुः ॥ शतमिन्नशरदोऽअतिदेवायत्रानश्चक्राजुरसंतनूनां । पुत्रासोयत्रपितरोभवन्ति
 मानोमध्यारीरिषतायुर्गतोः ॥ अदितिद्यौरदितिरर्क्षमर्दितिर्मातासपितासपुत्रः । विश्वेदेवाऽअदितिःपंचजनाऽ
 (१११४।५) आनोभद्राइतिदशर्चस्यसूक्तस्यराह्णगोतमोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् आद्याःपंचसप्तमीचजगल्यःषष्ठीविराट्स्थाना ।
 (सूक्तभेदप्रयोगपक्षेऽनुआद्यानांचतसृणांविश्वेदेवाःततएकस्याहंद्रापूपणौततश्चतसृणांविश्वेदेवाःततएकस्याअदितिःएवंदश) ।

अदितिर्जातमदितिर्जनित्वं ॥ १६ ॥ (१११४।६) ऋजुनीतीनोवरुणोमित्रोनेयतुविद्वान् । अर्यमाद्वैःसृजोषाः ॥
 तेहिबस्वोवसवानास्तेऽअग्रमूरामहोभिः । व्रतारक्षतेविश्वाहा ॥ तेऽअस्मभ्यंशर्मयंसन्नमृतामर्त्येभ्यः । वार्धमानाऽ
 अपृद्धिर्पः ॥ विनःपथःसुवितायचियंत्विद्रोमरुतः । पूषाभगोवंधासः ॥ उतनोधियोगोऽअग्राःपूषन्विष्णवेवयावः ।
 कर्तानःस्वस्तिमर्तः ॥ १७ ॥ मधुवाताऽऽकृतायेतेमधुक्षरंतिसिंधवः । माध्वीर्नःसुत्वोर्षधीः ॥ मधुनक्तमतोषसोमधु
 मत्पार्थिवंरजः । मधुदौरस्तुनःपिता⁺ ॥ मधुमात्रोवनस्पतिर्मधुमोऽअस्तुसूर्यः । माध्वीर्गवोभवतुनः ॥ शनोमि
 त्रःशंवरुणःशनोभवत्वर्थमा । शनोऽइंद्रोबृहस्पतिःशनोविष्णुरुरुक्रमः⁺ ॥ १८ ॥ (१११४।७) त्वंसोमप्रचिकितो
 मनीयात्वंरजिष्ठमनुनेषिपंथां । तवप्रणीतीपितरोनऽइंदोदेवेपुरत्नमभजंतधीराः ॥ त्वंसोमक्रतुभिःसुकर्तुर्भुस्त्वंदक्षैःसु
 दक्षौविश्ववेदाः । त्वंवृषांवृषत्वर्भिर्महिंत्वाद्युन्नेभिर्द्युभ्यभवनोचक्षाः ॥ राजोनोतेवरुणस्यव्रतानिबृहत्तभीरंतवसोमधा
 म । शुचिष्टमसिप्रियोनमित्रोदुक्षार्थोऽअर्यमेवासिसोम ॥ यातेधामनिदिविद्यापृथिव्यांयापर्वतेष्वोर्षधीष्वप्सु । ते

(१११४।६) ऋजुनीतीनहतिनर्चस्यसूक्तस्यराहूणगोतमोविश्वेदेवागायत्रीअंलानुष्टुप् । (वैश्वदेवसूक्तस्यसिन्धुमेदप्रयोग-
 करणाशक्यत्वात्रावानामपिविश्वेदेवाएव) । (१११४।७) त्वंसोमहतित्रयोविंशत्यृचस्यसूक्तस्यराहूणगोतमःसोमब्रिह्मपंचम्यादि-
 द्वादशगायत्र्यःसप्तदश्युष्णिग् ।

भिन्नोविश्वैःसुमनाऽअहंलज्जान्तसोमप्रतिहृव्यागृभाय ॥ त्वंसोमासिसर्पतिस्त्वरजोतवृत्रहा । त्वंभद्रोऽअसिक्
 तुः ॥ १९ ॥ त्वंचसोमनोवशोजीवातुंनमरामहे । प्रियस्तोत्रोवनस्पतिः ॥ त्वंसोममहेभगंव्यूनंऽऽकृतायते । दक्षद
 धासिजीवसे ॥ त्वनःसोमविश्वतोर्क्षारजन्नघायतः । नरिष्येत्त्वावतःसखा ॥ सोमयास्तैमयोभुवंऽऽकृतयःसंतिदाशु
 भे । ताभिन्नोविताभव ॥ इमंयज्ञमिदंचौजुषाणऽऽपगहि । सोमत्वंनोबृधेभव ॥ २० ॥ सोमगीभिर्ध्रुवयंवर्ध
 याभोवचोविदः । सुमळीकोनऽआविश ॥ गयस्फानोऽअमीवृहावसुवित्पुष्टिवर्धनः । सुमित्रःसोमनोभव ॥ सोम
 रारंधिन्नोहृदिगावोनयवसेष्वा । मर्येऽइवस्वऽओक्वे* ॥ यःसोमसख्येतर्वरारणदेवमर्त्यः । तंदक्षःसचतेकविः+ ॥
 उरुष्याणोऽअभिर्शस्तेःसोमनिपाह्यंहसः । सखासुशेर्वऽएधिनः ॥ २१ ॥ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्यं ।
 भवावाजस्यसंगधे+ ॥ आप्यायस्वमदिन्तमसोमविश्वेभिर्गुभिः । भवानःसुश्रवस्तमःसखावृधे+ ॥ संतेपयोसिसमु
 यंतुवाजाःसंवृष्यान्यभिमातिषाहः । आप्यायमानोऽअमृतायसोमद्विश्रवांस्युत्तमानिधिष्व ॥ यातेधामनिहृवि
 पायजंतितातेविश्वपरिभूरस्तुयज्ञं । गयस्फानःप्रतरणःसुवीरोवीरहाप्रचरासोमदुर्यौन ॥ सोमोधेनुंसोमोऽअर्वतमा
 शुंसोमोवीरंकर्मण्यददाति । सादन्यंविदुथ्यंसभयंपितृश्रवणंयोददाशस्मै ॥ २२ ॥ अपाहंयुसुपृतनासुपिप्रिस्वर्षा
 मप्सांवृजनस्यगोपां । भरेपुजांसुक्षितिसुश्रवंसजयंतत्त्वामनुमदेमसोम ॥ त्वमिमाऽओर्षधीःसोमविश्वस्वमपोऽअज

नयस्त्वंगाः । त्वमातंतथोर्वं । तारिक्ष्वज्योतिपावितमौववर्थ ॥ देवेननोमनसादेवसोमरायोभागंसहसावन्नभियुध्य ।
मात्वातनदीशिषेवीर्यस्योभयैभ्यःप्रचिकित्सागविष्टौ ॥ २३ ॥ (१११४१८) एताऽऽत्त्याऽऽपसःकेतुमकृतपूर्वेऽअ
र्धरजसोभानुमंजते । निष्कृण्वानाऽआयुधानीवधष्णवःप्रतिगावोरुधीर्यतिमातरः ॥ उदपसन्नरुणाभानवोवृथास्वा
गुजोऽअरुधीर्गाऽअयुक्षत । अक्रन्नषासोवयुनानिपूवथारुशतंभानुमरुधीरशिश्रयुः ॥ अर्चतिनारीरपसोनविष्टिभिः
समानेनयोजनेनापरावतः । इषुवहंतीःसुकृतेसुदानवेविश्वेदहयजमानायसुन्वते+ ॥ अधिपेशासिवपतेनूतूरिवापो
र्णतेवक्षऽऽपसेवर्जहं । ज्योतिर्विश्वसैभुवनायकृण्वतीगावोनव्रजंव्यु१पाऽअवर्तमः ॥ प्रत्यर्चीरुशदस्याऽअदर्शिंवि
तिष्ठतेवार्धतेकृष्णमभ्वं । स्वरुनपेशोविदथेव्वजन्निचत्रंदिवोदुहिताभानुमंश्रत् ॥ २४ ॥ अतारिष्मत्तमसस्पारमस्यो
पाऽऽच्छंतीवयुनाकृणोति । श्रियेच्छंदोनस्यतेविभातीसुप्रतीकासौमनसायजीगः ॥ भास्वतीनेत्रीसुनृतानांदिवस्त
वेदुहितागोतमेभिः । प्रजावतो नवतोऽअश्वबुध्यानुषोगोऽअग्रोऽऽपमासिवाजान् ॥ उषस्तमश्यायुशसंसुवीरंदासप्र
वर्गरयिमभ्वबुध्यं । सुदंससाश्रवसायाविभासिवाजप्रसूतासुभगेवहंतं ॥ विश्वानिदेवीभुवनाभिचक्ष्याप्रतीचीचक्षुरु
विंध्याविभाति । विश्वजीवंचरसेवोधंतीविश्वस्यवाचमविदन्मनायोः+ ॥ पुनःपुनर्जायमानापुराणीसमानंवर्णमभि

(१११४१८) एताऽऽत्त्याइत्यष्टादशचर्चसूक्त्यराहूणोगोतमउपाःअंत्यानांतिस्त्रिगुणमश्विनौआद्याश्चतस्रो जगत्याःततोष्टौत्रिष्टुभःअंत्याःषष्ठिगृहः

ऋक्सं.

अ. १ अ. ६

॥ ४१ ॥

शुभमाना । श्वन्नीवकुह्विजंऽआमिनामतस्यदेवीजरयंत्यायुः ॥ २५ ॥ व्यण्वतीदिवोऽअंतोऽअवोऽअपस्वसारं
सनृतर्थेयोति । प्रमिनीमनष्यायुगानियोपजारस्यचक्षसाविमति ॥ पशून्नाचित्रासुभगाप्रधानासिधुर्नक्षोर्दऽउर्वि
याव्यश्चैत् । अर्मिनीदैव्यानित्रतानिसूर्यस्यचेतिरुद्दिमिर्भृशाना ॥ उपस्ताच्छित्रमाभरासमर्थवाजिनीवति । येन
तोकंचतनयंचधामहे ॥ उपोऽअद्येहगोमत्यश्वावतिविभावरि । रेवदुसेव्यच्छसूततावति ॥ युक्षवाहिवाजिनीवत्य
श्वौऽअद्यारुणौऽर्षः । अथानोविश्वसौभंगान्यावह ॥ २६ ॥ अश्विनावतिरस्मदागोर्मदस्नाहिरण्यवत् । अर्वाग्र
धंसमनसानिचच्छतं ॥ यावित्थाश्लोकमादिवोज्योतिर्जनायचक्रथुः । आनुऽऊर्जवहतमश्विनायुवं ॥ एहदेवाम
योभुवाद्स्नाहिरण्यवर्तनी । उपर्धुधोवहंतुसोमपीतये ॥ २७ ॥ (१११४१९) अग्नीषोमाविमंसुमैश्रुणतंवृषणाहवं ।
प्रतिसृक्कानिहयतंभवतंदाशुपेमर्यः ॥ अग्नीषोमायोऽअद्यवामिदंवचःसपर्यति । तस्मैधत्तंसुवीर्यगवापोपस्वश्व्यं ।
अग्नीषोमायऽआहुतियोवांदाशद्भिविष्कृतिं । सप्रजयासुवीर्यविश्वमायुर्व्यश्वत् ॥ अग्नीषोमाचेतितद्धीर्यवायदमु
अधत्तं । युवंसिंधूर्भिरशस्तेरवद्यादग्नीषोमावमुंचतंगृभीतान् ॥ ॥ अन्यंदिवोमातुरिश्वजभारमभ्रादुन्यंपरिदयेनो
(१११४१९) अग्नीषोमावितिद्वादशर्चस्यसूक्तसराहूगणोगोतमग्नीषोमौत्रिष्टुप् आद्यास्तिस्त्रोनुष्टुभो (४१मीजगतीवा) नवम्यादितिस्त्रोगायज्यः ।

मंडलं ०

अनु. १

॥ ४१ ॥

ऽअद्रेः । अग्नीषोमाब्रह्मणावावृधानोर्यज्ञायचक्रशुल्लोकं ॥ २८ ॥ अग्नीषोमाहुविपःप्रस्थितस्यवीतंहर्षतंवृपणा
 जुषेथां । सुशर्माणास्वर्वसाहिभूतमर्थाधत्तयजमानायशंयोः ॥ योऽअग्नीषोमाहुविपसपर्यादैवद्रीचामनसायोघृतेन ।
 तस्यव्रतरंक्षतंपातमंहसोविशेजनयमहिशर्मयच्छतं ॥ अग्नीषोमासर्वेदसासहृतीवनतंगिरः । संदेवन्नावभूवशुः ॥
 अग्नीषोमावनेनवांयोवाघतेनदाशति । तस्मैदीदयतंवृहत् ॥ अग्नीषोमाविमानिनोर्युवंहव्याजुजोयतं । आयातमुप
 नःसर्वा ॥ अग्नीषोमापिपुतमर्वतोनुऽआप्यायंतामस्त्रियाहव्यसूदः । अस्मेवलनिमघवत्सुधत्तंकृणतंनोऽअध्वरंश्रुष्टि
 मंतं ॥ २९ ॥ (१११५१) इमंस्तोममर्हतेजातवेदसेरथमिवसंमहेमामनीपयां । भद्राहिनःप्रमतिरस्यसंसद्यग्नेस
 ख्येमारिपामावयंतव ॥ यस्मैत्वमायजसिससाधत्यनर्विक्षेतिदधतेसुवीर्यं । सतृतावनैनमश्नोत्यंहृतिरग्ने० ॥ शुकैर्मत्वा
 समिधंसाधयाधियस्त्वेदेवाहुविरंदृत्याहुतं । त्वमादित्योऽआवहृतान्द्युश्मस्यग्ने० ॥ भरमेधमंकृणवाभाहवीर्षितेचि
 तयंतःपर्वणापर्वणावयं । जीवातवेप्रतरंसाधयाधियोग्ने० ॥ विशांगोपाऽअस्यचरंतिजंतवोद्विपच्चयदुतचतुष्पदुकु
 भिः । चित्रःप्रकेतऽउपसौमर्होऽअस्यग्ने० ॥ ३० ॥ त्वमध्वर्युरुतहोतसिपूव्यःप्रशास्तापोतानुषापुरोहितः । वि

(१११५१) इमंस्तोममितिषोडशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोभिःपूर्वदेवाइत्यस्यादेवाअग्निश्चतन्नोमित्रइत्यार्धचसमित्रवरुणादितिर्सिंधु-
 पृथिवीद्यावोजगतीअत्येन्निष्टुभौ । (यदैवयंवासूक्तमितिपक्षेऽभिरेवदेवता) ।

श्वाविद्धाँऽआत्विज्याधीरपुष्यस्यग्ने० ॥ योविश्वतःसुप्रतीकःसदृङ्क्षुःसिदुरेचित्संतुळिद्रिवातिरोचसे । रात्र्याश्चिदंधो
 ऽअतिदेवपद्मस्यग्ने० ॥ पूर्वोदेवाभवतुसुन्वतोर्धोस्माकंशंसोऽअभ्यस्तुदुह्यः । तदाजनीतोतपुष्यतावचोभै० ॥
 वधैर्दुःशंसाँऽअपदुह्योजहिदुरेवायेऽअतिवाकेचिद्वृत्रिणः । अथायज्ञायगृणतेसुगंकृध्यग्ने० ॥ यदयुक्थाऽअरुषारो
 हितारथेवातज्जुतावृषभस्येवतेर्वः । आदिन्वसिवनिनोधूमकेतुनाग्ने० ॥ ३१ ॥ अर्धस्वनादुतविभ्युःपतन्निगोद्रप्सा
 यत्सेयवसादोव्यथिरन् । सुगतंतेतावकेभ्योरथेभ्योभै० ॥ अयंमित्रस्यवरुणस्यधायसेवयातांमरुतांहेळोऽअश्रुतः ।
 मळासुनोभूत्वेषांमनःपुनरग्ने० ॥ देवोदेवानामसिमित्रोऽअश्रुतोवसुर्वसूनामसिचारुध्वरे । शर्मन्त्स्यामतवसुप्रथं
 स्तमेग्ने० ॥ तत्तैभद्रयत्सर्भिष्ठःस्वेदमेसोमाहुतोजरसेमृळयत्तमः । दधांसिरत्नंद्रविणं च ददाशुयेभै० ॥ यसैत्वंसुद्रविणोददा
 शोनागास्त्वमदितेसर्वताता । यंभद्रेणशर्वसाचोदयासिप्रजावताराधसातेत्याम ॥ सत्वमग्नेसौभगत्वर्ह्यविद्वानस्माक
 मायुःप्रतिरेहदेव । तन्नोमित्रोवरुणोमामहंतामदितिःसिंधुःपृथिवीऽउतद्यौः॥ ३२ ॥ इतिप्रथमाष्टकेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
 पद्याध्यायेवर्गाः ३२ सूक्तानि १४ ऋचः १६३ ॥ त्यागः ॥ इंद्रायेदं. ४१ मरुद्वाइदं. ३४ विश्वेभ्योदेवेभ्यइदं. ४ इंद्रापूपभ्यामिदं. १
 विश्वेभ्योदेवेभ्यइदं. ४ अदित्याइदं. १ विश्वेदेवेभ्यइदं. ९ सोमायेदं. २३ उषसइदं. १५ अग्निभ्यामिदं. ३ अग्नीषोमाभ्यामिदं. १२ अग्नयइदं.
 ७ देवाग्निभ्यामिदं (देवेभ्योऽग्निभ्यइदं.) अग्नयइदं. ७ अग्निमित्रावरुणादितिःसिंधुपृथिवीभ्यइदं. १ ॥ इतिप्रथमेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

द्वेएकादशौपसायवाग्रयेऽप्रलथानवद्रविणोदसेपनोष्टौशुचयेगायत्रैश्वानरस्यतृचवैश्वानरीर्यजातवेदसएका
 जातवेदस्यमेतदादीन्येकभूयांसि सूक्तसहस्रमेतत्तुक्तयपार्षसयोवृषैकोनवापार्गिराऋज्राश्वानरीर्यजातवेदसएका
 मानसुराधर्मः प्रमंदिनएकादशकुत्सश्चतुस्त्रिष्टुवंतमाद्यागर्भस्त्राविण्युपनिर्दिमांतेत्यात्रिष्टुप्तत्तेष्टौयोनिर्नवचंद्र
 माएकोनास्यस्त्रितोवैश्वदेवंहिपांक्तमंत्यात्रिष्टुवष्टमीमहावृहतीयवमध्येंद्रंमित्रंसप्तत्रिष्टुवंतंयज्ञस्तृचयइंद्रा
 ग्रीसप्तोर्नैद्राग्रंतुविह्यष्टौतंतनवार्भवंतुपंचम्यंत्येत्यत्रिष्टुभौतक्षन्पंचांत्यात्रिष्टुवीळेपंचाधिकाश्विनमाद्यौपादौलिङ्गे
 कदेवतावंत्येत्यत्रिष्टुभौ ॥ ७ ॥

॥

॥

॥

॥

॥

हरिःओ३म् ॥ (१११५१२) द्वेविरूपेचरतुःस्वर्थेऽअन्यान्यवित्समुपधापयेते । हरिरन्यस्यांभवतिस्वधावान्छु
 क्रोऽअन्यस्याददशेसुवर्चाः ॥ दशेमंत्वष्टुर्जनयंतगर्भमर्तैद्रासोयुवतयोविभृत्रं । त्रिगमानीकंस्वयंशंसजनेषुविरोचमानं
 परिधीनयति ॥ त्रीणिजानापरिभृपंत्यस्यसमुद्रऽएकंदिव्येकमुप्सु । पूर्वामनुप्रदिशंपार्थिवानामुत्पृन्प्रशासद्विदधावन
 हु ॥ कऽइमंवोनिण्यमार्चिकेतवत्सोमातृजनयतस्वधाभिः । ब्रह्मीनांगर्भोऽअपसामपस्थान्महान्कविर्निश्चरतिस्वधा
 वान् ॥ आविष्ट्योवर्धतेचारुरासुजिह्वानोमूर्ध्वःस्वयंशाऽउपस्थे । उभेत्यष्टुर्विभ्यतुर्जायमानात्प्रतीचीसिंहंप्रतिजोषयेते

(१११५१२) द्वेविरूपेइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सउषोमित्रिष्टुप् । (इतआरभ्यजातवेदसइत्यंशुद्रोमिर्वा) ।

॥ १ ॥ उभेभद्रेजोपयेतेनमेनेगावोनवाश्राऽउपतस्थुरैवैः । सदक्षाणांदक्षपतिर्वभूवांजंतिथंदक्षिणतोहविभिः ॥ उद्यं
यभीतिसवितेर्वबाहूऽउभेसिचौयततेभीमऽक्रुंजन् । उच्छ्रुक्रमत्कमजतेसिमस्मान्नर्वामातृभ्योवर्सनाजहाति ॥ त्वेषरूपं
कृणुतऽउत्तरंयत्संपृचानःसर्दनेगोभिरद्भिः । कविर्वधंपरिममृज्यतेधीःसादेवतातासमितिर्वभूव ॥ उरुतेज्रयुःपर्येति
बुधंविरोचमानंमहिषस्यधाम् । विश्वेभिरमेस्वयंशोभिरिद्धोदब्धेभिःपायुभिःपाह्यास्मान् ॥ धन्वन्त्स्रोतःकृणुतेगा
तुमर्मिशुकैरूर्मिर्भिरभिनक्षतिक्षां । विश्वासनानिजठरेषुधत्तैर्नर्वासुचरतिप्रसूषु ॥ एवानोऽअग्नेसमिधावृधानोरेव
त्यावकृश्रवसेविर्भाहि । तन्नोमित्रोवरुणोमामहंतामदितिःसिंधुःपृथिवीऽउतद्यौः ॥ २ ॥ (१।१५।३) सप्रत्नया
सहसाजार्यमानःसद्यःकाव्यानिवळधत्तविश्वा । आपश्चमित्रंधिपणाचसाधन्देवाऽअग्निधारयन्द्रविणोदां ॥ सपूर्वं
यानिविदक्त्व्यतायोरिमाःप्रजाऽअजनयन्मनूनां । विवस्वताचक्षसाद्यामपश्चदेवा ॥ तमीळतप्रथमंयज्ञसाधंविश
ऽआरीराहुतमृजसानं । ऊर्जःपुत्रंभरंतंसप्रदानुदेवा ॥ समतरिश्वापुरुवारपुष्टिर्विदद्भ्रातुंतनयायस्वर्वित् । विशां
गोपार्जनितारोदस्योर्देवा ॥ नक्तोपासावर्णामेम्यनिधापयेतेशिशुमेकंसमीची । द्यावाक्षामारुक्मोऽअंतर्विर्भातिदु
वा ॥ ३ ॥ रायोबुध्नःसंगमनोवसूनांयज्ञस्यकेतुर्मन्मसाधनोवेः । अमतत्वंरक्षमाणासऽएनंदेवा ॥ नूचंपराचसर्दने

(१।१५।३) सप्रत्नयेतिनवर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोद्रविणोदाअग्निस्त्रिष्टुप् ।

रयीणां जातस्य च जायमानस्य चक्षां । सतश्च गोपां भवतश्च भूरेर्देवा ० ॥ द्रविणो दाद्रविणसस्तुरस्य द्रविणो दाः सनरस्य
 प्रयंसत् । द्रविणो दावीरवतीमिषं नो द्रविणो दारासते दीर्घमायुः ॥ एवानोऽअग्नेसमिधा वृधानो रेवत्यावकश्चर्वसे विभा
 हि । तन्नो मित्रो चरुणो मामहंतामर्दतिः सिंधुः पृथिवीऽवृतद्यौः ॥ ४ ॥ (१११५१४) अर्पनः शोशुचदुधमग्नेशुशु
 ग्यारयि । अर्पनः शोशुचदुधं ॥ सुक्षेत्रिया सुगातया र्वसया च यजामहे । अर्पनः ० ॥ प्रयद्भर्दिष्टऽएषां प्राप्ताकासश्च
 सुरयः । अर्पनः ० ॥ प्रयत्तेऽअग्नेसुरयो जायेमहि प्रतेवयं । अर्पनः ० ॥ प्रयदुग्नेः सहस्वतो विश्वतो यंतिमानवः । अर्प
 नः ० ॥ त्वं हि विश्वतो मुख विश्वतः परिभूरसि । अर्पनः ० ॥ द्विपो नो विश्वतो मुखार्तिना वेवपारय । अर्पनः ० ॥ सनः
 सिंधुमिव नावयाति पर्षस्त्वये । अर्पनः ० ॥ ५ ॥ (१११५१५) वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कुंभुर्वनानामभि
 श्रीः । इतो जातो विश्वमिदं विचष्टैवैश्वानरो यतते सूर्येण ॥ पृष्टो द्विविपृष्टोऽअग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वाऽओषधीराविवे
 श । वैश्वानरः सहसा पृष्टोऽअग्निः सनो दिवा सरिपः पातुनक्तं ॥ वैश्वानरतवतत्सत्यमस्त्वस्मात्त्रायो मघवानः सचंतां ।
 तन्नो मित्रो ० ॥ ६ ॥ (१११५१६) जातवेदसे सुनवामसो मरतीयतो निर्दहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गोणि विश्वा

(१११५१४) अपन इत्यष्टर्वस्य सूक्तस्य कुत्सः शुचिरभिर्गायत्री । (१११५१५) वैश्वानरस्येति तु चस्य सूक्तस्य कुत्सो वैश्वानरो मिषिष्टुप् ।
 (१११५१६) जातवेदस इत्येकर्वस्य सूक्तस्य मारीचः कश्यपो जातवेदा अभिष्टिष्टुप् ।

नावेवसिंधुदुरितात्यग्निः ॥ ७ ॥ (१।१५।७) सयोवृषावृण्वैभिः समौकामहोदिवः पृथिव्याश्चसमाह । सतीनसे
 त्वाहव्योभरेषुमरुत्यान्नोभवत्विद्रंऽङ्गती + ॥ यस्यानासः सूर्यस्येवयामोभरेभरेवृत्रहाशुष्मोऽस्ति । वृषन्तमः सखिभिः
 रोभिरंगिरस्तमोभद्रुषावृषभिः सखिभिः सखासन् । ऋग्भिर्भिकृग्मीगातुभिर्ज्यैष्टोमरु ॥ सोऽअंगि
 षाहोसासुहोऽअमित्रान् । सनीळेभिः श्रवस्यानिर्तूर्वन्मरु ॥ ८ ॥ समन्यमीः समदनस्यकर्तास्माकेभिर्नृभिः सूर्येसन
 ऽएकोमरु ॥ तमप्संतशर्वसऽउत्सवेषुनरोनरमवसेतधनाय । सोऽअंधेचित्तमसिज्योर्तेर्विदन्मरु ॥ समन्येनयम
 तिबार्धतश्चित्सदक्षिणसंगृभीताकृतानि । सकीरिणाचित्सनिताधनानिमरु ॥ ९ ॥ सग्रामेभिः सानेतासर्थेभिर्विदेविश्वो
 भिः कृष्टिभिर्नृद्य । सपौत्येभिरभिभूरशस्तीमरु ॥ १० ॥ सजामिभिर्यत्समजातिमीद्विजामिभिर्वापुरुहतऽएवैः ।
 अपांतोकस्यतनयस्यजेमरु ॥ सर्वज्रभृदस्यहाभीमऽउग्रः सहस्रचेताः शतनीथऽऋभ्यो । चक्षीपोनशर्वसापांचज
 (१।१५।७) सयोवृषेयेकोनावेशत्यृचस्यसूक्तस्यवार्षगिराक्राधां वरीपसहदेवभयमानसुरांधसदंक्षिष्टुप् । (इतआरभ्यमरुत्वा
 निद्रइतिकश्चित् । तत्र । सर्वानुकमादिभिरनाहतत्वात् ।)

न्योमरु० ॥ तस्यवज्रःकंदतिस्मत्स्वर्पादिवोनत्वेपोरवथःशिर्मावान् । तंसंचतेसनयुस्तंधननिमरु० ॥ यस्याजस्रंशवं
 सामानमक्वथंपरिभुजद्रोदसीविश्वतःसीं । सर्पारिपुत्कनुभिर्मदसानोमरु० ॥ नयस्यदेवादेवतानमर्तोऽआपश्चनशवं
 सोऽअंतमापुः । सप्ररिक्तात्वक्षसाक्षमोदिवश्चमरु० ॥ १० ॥ रोहिच्छयावासमदंशुल्लामीद्युक्षारायऽक्रुज्राश्वस्य । वृ
 षण्वंतविश्वतीधूर्धुरथंमुद्राचिकेतनार्हुषीषुविश्रु० ॥ एतस्यत्तऽइंद्रवृष्णऽउक्थंवापिगिराऽअभिरुणंतिराधः । क्रुज्रा
 श्वःप्रक्षिभिरंबरीपःसहदेवोभयमानःसुरार्धाः ॥ दस्यन्छिभ्यूऽश्वपुरुहूतऽएवैर्हत्वापृथिव्यांशर्वानिबर्हीत् । सनत्क्षेत्र
 सखिभिःश्वित्येभिःसनत्सूर्यसनदपःसुवज्रः ॥ विश्वाहेद्रोऽअधिवक्तानोऽअस्वपरिहृताःसनुयामवाजं । तन्नोमित्रो०
 ॥ ११ ॥ (१११५१८) प्रमदिनेपितुमर्चतावचोयःकृष्णगर्भानिरहन्नजिभ्वना । अवस्यवोवृषणंवज्रदक्षिणमरुत्वंतं
 सखायहवामहे ॥ योव्यंसंजाहृषाणेनमन्युनायःशंवर्योऽअहृन्पिप्रुमव्रतं । इंद्रोयःशृष्णमशुपुन्यावृणङ्मरु० ॥
 यस्यद्यावापृथिवीपौस्यमहद्यस्यव्रतेवरुणोयस्यसूर्यः । यस्येद्रस्यसिंधवःसश्चतिव्रतंमरु० ॥ योऽअश्वानांयोगवांगोपति
 र्वशीयऽअरितःकर्मेणिकर्मणिस्थिरः । वीळोश्चिदिंद्रोयोऽअसुन्वतोवधोमरु० ॥ योविश्वस्यजगतःप्राणतस्यतियोब्रह्म
 णेप्रथमोगाऽअर्विदत् । इंद्रोयोदस्यैरधरोऽअवातिरन्मरु० ॥ यःशूरेभिर्हव्योयश्चभीरुभिर्योधावर्द्धिहूयतेयश्चजिग्यु
 (१११५१८) प्रमदिनइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सइंद्रोजगतीअत्याश्चतस्रिष्टुभः । (आद्यागर्भेस्त्राविणीतिगुणः) ।

भिः । इंद्रयं विश्वाभुवनभिर्संदधुर्मरु० ॥ १२ ॥ रुद्राणामेति प्रदिश विचक्षणो रुद्रेभिर्योषातनुतेपुथुज्रयः । इंद्रम
नीषाऽअभ्यर्चति श्रुतं मरु० ॥ यद्वा मरुत्वः परमेसधस्थेयद्वा वमेवृजनेमादयसे । अतऽआचार्यह्यध्वरं नोऽअच्छत्वाया
ह्विश्चकृमासत्यराधः ॥ त्वार्येद्रसोर्मसुपुमासुदक्षत्वायाह्विश्चकृमाब्रह्मवाहः । अर्धानियुत्वः सर्गणो मरुर्ऋसिन्य
नोजुपस्व ॥ मरुस्तोत्रस्य वृजर्नस्य गोपावयमिंद्रेण सनुयामवाजं । आत्वासुशिग्रहरयो वहंतु शन्हुव्यानिप्रति
भरेमहोमहीमस्यस्तोत्रेधिषणा यत्तऽआनजे । तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिंद्रेवासः शर्वसामदन्ननु ॥ इमांते धियं प्र
सप्तविभ्रतिद्यावाक्षामागृथिर्वीदशतं वपुः । अस्मेसूर्या चंद्रमसाभिचक्षेत्रक्षेत्रमिंद्रचरतो वितर्तुरं ॥ तंस्मारथमघव
न्यावसांतये जैत्रं यं तेऽअनुमदामसंगमे । आजानंऽइंद्रमनसा पुरुद्वुतत्वाय श्र्योमघवन्छर्मयच्छनः ॥ वयं जयेमत्वयाय
जावृतमस्माकमशुदवाभरेभरे । अस्मभ्यमिंद्रवरिवः संगं कृधिग्रशत्रूणां मघवन्वृण्वरुज ॥ नानाहित्वाहवमानाज
नाऽइमे धनानां धर्तुर्वसा विपन्यवः । अस्माकं स्मारथमातिष्ठसातये जैत्रं ह्यिंद्रनिभृतं मनस्तव ॥ १४ ॥ गोजितावाहऽ
अर्मितक्रतुः सिमः कर्मन्कर्मन्छतर्मतिः खजंकुरः । अकल्पऽइंद्रः प्रतिमानमोजसाथाजना विह्वयं ते सियासर्वः ॥ उत्तैश
(१११५१९) इमां तइत्येकादशर्चस्य सूक्तस्य कुलस्य इंद्रो जगती अस्या त्रिष्टुप् ।

तान्मघवन्नृच्चभूर्यसुऽउत्सहस्राद्रिरिचेच्छुष्टिपुश्रवः । अमात्रत्वाधिषणातित्विपेमह्यधावुत्राणिजिघ्रसेपुरंदर ॥ त्रिवि-
ष्टिधावुप्रतिमानमोजसस्त्रिस्त्रोभूमीर्नृपतेव्रीणिरोचना । अतीदंविश्वंभुवनंवक्षिथाशत्रुर्द्रिजनुयासनादसि ॥ त्वां
देवेषुप्रथमंहवामहेत्वर्बभूयुपृतनासुसासहिः । सेमनःकारुमुपमन्युमुस्मिदुर्मिद्रःकृणोतुप्रसवेरथैपुरः+ ॥ त्वंजिगेथन
धनारुरोधिथामेभ्वाजामघवन्महत्सुच । त्वामग्रमवसेसंशिशीमस्यथानऽइंद्रहवनेषुचोदय ॥ विश्वाहेद्रोऽअधिवृक्ता
नोऽअस्त्वपरिहृताःसनुयामवाजै । तन्नोमित्रो० ॥ १५ ॥ (११५।१०) तत्तऽइंद्रियंपरंमंपराचैरधारयंतकवयःपुरे
दं । क्षमेदमन्यद्विव्यंन्यदस्यसमीपृच्यतेसमनेवकेतुः+ ॥ सधारयत्पृथिवींप्रथञ्चवज्रेणहृत्वानिरपःसंसर्ज । अह
न्नहिमभिनद्रौहिणंव्यहृन्व्यंसमघवाशचीभिः ॥ सजातूर्भमाश्रद्धधानऽओजःपुरोविभिंदन्नचरद्विदासीः । विद्वान्व
ज्रिन्दस्यवेहेतिमस्यार्थसहोवर्धयाद्युन्नमिद्र ॥ तदुच्चेषेमानुपेमायुगानिक्तीर्तेन्यमघवानामविभ्रत् । उपप्रयन्दस्यहत्या
यवज्जीयर्द्धसुनुःश्रवसेनामंदधे+ ॥ तदस्येदंपश्यताभूरिपृष्टंश्रदिंद्रस्यधत्तनवीर्याथ । सगाऽअविंदत्सोऽअविंदुदध्वान्स
ऽओषधीःसोऽअपःसवनानि ॥ १६ ॥ भूरिकर्मणेवृषभायवृष्णैसत्यद्युष्मायसुनवामसोमं । यऽआहत्यापरिपंथीवृक्ष
रोर्यज्वनोविभज्जेतिवेदः ॥ तदिंद्रप्रेववीर्यचक्रर्थयत्संतवज्रेणाबोधयोहिं । अनुत्वापत्नीर्हृषितंवयश्चविश्वेदेवासोऽ

(११५।१०) तत्तद्व्यष्ट्यर्चस्यसूक्तस्यकुत्सइन्द्रशिष्टम् ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ७

॥ ४६ ॥

अमदुन्नत्वा ॥ शुण्णं पिपुंकुयवंबुत्रमिद्रयदावधीर्विपुः शंबरस्य । विमुच्यावयोवसायाश्चान्दोषावस्तोर्वहीयसः प्रपित्वे ॥ योनिष्ट
ऽइन्द्रनिषदेऽअकारितमानिषीदस्वानो नार्या । देवासो मयुं दासस्यश्च म्रन्ते नऽआवक्षन्सुवितायुवर्ण ॥ ओत्येनरऽइ
द्रमतेर्येगुर्नचित्तान्सद्योऽअध्वनो जग्म्यात् । क्षीरेण स्नातः कुर्यवस्य योपे हूते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ॥ अवत्सर्नाभर
ते केतवे द्वाऽअवत्सर्नाभरते फेनमुदन् । अंजसी कुलिशी वीरपत्नी पयोहिन्वानाऽउदभिर्भरते ॥ युयोपनाभिरुपरस्या
योः प्रपूर्वाभिस्तिरेतराष्टिशूरः । अंजसी कुलिशी वीरपत्नी पयोहिन्वानाऽउदभिर्भरते ॥ प्रतियत्स्यानीथादंशिदस्योरो
कोनाच्छासदनं जानती गात् । अधस्मानो मघवन् च कृतादिन्मानो मघे वनिष्पपी परादाः ॥ १८ ॥ सत्वं नऽइन्द्रसूर्ये सोऽ
अस्वनागास्त्वऽआभजजीवशसे । मातरां भुजमारीरियो नः श्रद्धितं ते वहतऽइन्द्रियाय ॥ अर्धामन्ये श्रत्तेऽअस्माऽअ
धायिवृषाचोदस्वमहते धनीय । मानोऽअकृते पुरुहूतयो न विद्वध्भ्यो वर्यऽआसुतिं दाः ॥ मानो वधीरिद्रमापराद्वा
मानः प्रियाभोजनानि प्रमौषीः । आं डामानो मघवन् च कृनिर्भन्मानः पात्राभेत्सहजानुषाणि ॥ अर्वाङ्गे हि सोमकामं त्वा
हुरयंसुतस्तस्य पिवामदाय । उरुव्यर्चाजठरऽआर्घ्यस्वपितेर्वनः शृणुहि ह्यमानः ॥ १९ ॥ (११५११२) चंद्रमाऽ
(११५१११) योनिष्ट इति नवर्चस्य सूक्तस्य इन्द्रस्त्रिष्टुप् । (११५११२) चंद्रमा इत्येकोनविंशत्यृचस्य सूक्तस्यास्य स्त्रितो विश्वे देवाः
पंक्तिः अंत्या त्रिष्टुप् अष्टमी महाबृहती यवमध्या । (मृक्तभेदप्रयोगपक्षे तु आद्याया विश्वे देवाः द्वितीयाया रोदसी तृतीयाया विश्वे देवाः चतुर्थ्या अभि

॥ ४६ ॥

मंडलं. ३

अनु. १०

अ॒प्स्व॒तरा॒सु॒पर्णो॒र्धा॒वते॒द्वि॒वि । न॒वो॒हि॒र॒ण्यने॒मयः॒प॒दं॒वि॒दंति॒वि॒द्युतो॒वि॒त्तं॒मे॒ऽअ॒स्य॒रो॒दसी ॥ अ॒र्थ॒मि॒द्वा॒ऽऽ॒र्च॒ऽअ॒र्थि॒न
 ऽआ॒जा॒यायु॒वते॒पतिं॑ । तुं॒जा॒ते॒वृ॒ष्ण्यं॒पर्यः॒परि॒दा॒य॒रसं॒दु॒हे॒वि॒त्तं॑ ॥ मो॒पु॒दे॒वाऽअ॒दः॒स्व॒र्ग॒वपा॒दि॒दिव॒स्पर्श॑ । मा॒सो॒म्य
 स्थ॒शं॒मु॒वः॒शू॒नै॒भू॒मक॒दा॒च॒न॒वि॒त्तं॑ ॥ य॒ज्ञं॒पृ॒च्छा॒म्य॒वमं॒सत॒द्रु॒तो॒वि॒वो॒चति॑ । क॒ऽऽ॒कृतं॒प॒र्व्यं॒ग॒तं॒क॒स्ता॒द्वि॒भर्ति॑ नू॒तनो॒वि॒त्तं॑ ॥
 अ॒मी॒धे॒दे॒वाः॒स्थ॒न॒त्रि॒ज्वा॒रो॒च॒ने॒टि॒वः । क॒ऽऽ॒कृतं॒क॒द॒नृ॒तं॒क॒प्र॒ला॒व॒ऽआ॒हु॒ति॒वि॒त्तं॑ ॥ २० ॥ क॒ऽऽ॒कृत॒स्य॒ध॒र्ण॒सि॒क॒द्ध
 र॒ण॒स्य॒च॒क्ष॒णं । क॒र्द॒र्य॒ग्म॒णो॒म॒ह॒स्प॒था॒ति॒क्रा॒मे॒म॒दृ॒ढ्यो॒वि॒त्तं॑ ॥ अ॒हं॒सो॒ऽअ॒सि॒यः॒पु॒रा॒सु॒ते॒वदा॒मि॒का॒नि॒चि॒त् । तं॒मा॒व्यं
 त्या॒ध्यो॒ऽवृ॒को॒न॒तृ॒ण॒जं॒म॒गं॒वि॒त्तं॑ ॥ सं॒मा॒त॒प॒त्य॒भितः॒स॒प॒त्नी॑रि॒व॒प॒र्श॒वः । मू॒र्धो॒न॒शि॒श्रा॒व्य॒दंति॒मा॒ध्यः॒स्तो॒ता॒रं॒ते॒श॒त॒क्र
 तो॒वि॒त्तं॑ ॥ अ॒मी॒धे॒स॒स॒र॒र॒म॒य॒स्त॒त्रा॒मे॒ना॒भि॒रा॒त॒ता । त्रि॒त॒स्त॒द्वे॒दा॒स्यः॒स॒जा॒मि॒त्वा॒धे॒र॒भ॒ति॒वि॒त्तं॑ ॥ अ॒मी॒धे॒प॒ंचो॒क्ष॒णो
 म॒ध्य॒त॒स्थु॒र्म॒हो॒दि॒वः । दे॒व॒त्रा॒नु॒प्र॒वा॒च्यं॒स॒ध्री॒ची॒ना॒नि॒वा॒द्यु॒वि॒त्तं॑ ॥ २१ ॥ सु॒पर्णो॒ऽए॒त॒ऽअ॒स॒ते॒म॒ध्य॒ऽआ॒रो॒ध॒ने॒दि॒
 वः । ते॒सं॒ध॒ति॒प॒थो॒वृ॒कं॒त॒रं॒तं॒य॒ह्व॒ती॒र॒पो॒वि॒त्तं॑ ॥ न॒व्यं॒त॒दु॒क्थं॒हि॒तं॒दे॒वा॒सः॒सु॒प्र॒वा॒च॒नं । कृत॒म॒र्षे॒ति॒सिं॒ध॒वः॒स॒त्यं॒ता॒ता॒न
 सू॒र्यो॒वि॒त्तं॑ ॥ अ॒ग्ने॒त॒व॒त्य॒दु॒क्थं॒दे॒वे॒ष्व॒स॒त्या॒य्य॑ । स॒तः॒स॒तो॒म॒नु॒ष्व॒दा॒दे॒वा॒न्य॒क्षि॒वि॒दु॒ष्टो॒रो॒वि॒त्तं॑ ॥ स॒तो॒हो॒ता॒म॒नु॒ष्व॒दा

रो॒दस्यः॒त॒त॒स्ति॒सृ॒णा॒वि॒श्वे॒दे॒वाः॒अ॒ष्ट॒म्या॒इ॒द्रो॒दस्यः॒न॒व॒म्याः॒सू॒र्य॒र॒श्मि॒रो॒दस्यः॒द॒श॒म्या॒वि॒श्वे॒दे॒वाः॒एका॒द॒श्याः॒सू॒र्य॒र॒श्मि॒रो॒दस्यः॒द्वा॒द॒श्या॒वि॒श्वे॒दे॒
 वाः॒त॒तो॒द्वयो॒र॒भि॒रो॒दसी॒त॒त॒ए॒क॒स्या॒व॒रु॒णो॒दस्यः॒त॒तो॒द्वयो॒र्वि॒श्वे॒दे॒वाः॒त॒त॒ए॒क॒स्या॒रो॒दसी॒अ॒त्या॒या॒वि॒श्वे॒दे॒वाः । उ॒त्तर॒सू॒क्ते॒वि॒श्वे॒दे॒वा॒ए॒व) ।

देवोऽअच्छाविदुर्धरः । अग्निर्हव्यासुपूदतिदेवोदेवेपुमेधिरोवित्तं० ॥ ब्रह्माकृणोतिवरुणोगातुविदंतमीमहे । व्यूणो
 तिहृदामतिनव्यो जायतामंतवित्तं० ॥ २२ ॥ असौयः पंथाऽआदित्योदिविप्रवाच्यकृतः । नसदेवाऽअतिक्रमेतं
 तसिोनर्पश्यथवित्तं० ॥ त्रितः कूपेवहितोदेवान्हवतऽऊतये । तच्छुश्राववृहस्पतिः कृण्वन्नैहरणारुदुवित्तं० ॥ अरुणो
 मासकृद्धकः पथायंतददर्शहि । उज्जिहीतेनिचाय्यातयैवपृथ्यामयीवित्तं० ॥ एनांगेणवयमिंद्रवंतोभिव्यामवृजनेस
 र्ववीराः । तन्नोमित्रो० ॥ २३ ॥ (१११६१) इंद्रमित्रवरुणमग्निमतेयमारुतंशर्धोऽअदितिहवामहे । रथंनदुर्गो
 इंसवः सुदानवोविश्वस्मान्नोऽअंहसोनिष्पिपर्तन ॥ तऽआदित्याऽआगतासर्वतातयेभूतदेवावृत्रतूर्यपुशंसुर्वः । रथंन० ॥
 अवंतुनः पितरः सुप्रवाचनाऽउतदेवीदेवपुत्रेऽऋतावृधा । रथंन० ॥ नराशंसवाजिनंवाजयन्निहक्षयद्धीरपुपुर्णसंभ्ररी
 महे । रथंन० ॥ बृहस्पतेसदमिन्नः सुगंक्ताधिंशंयोर्यत्तेमनुहितंतदीमहे । रथंन० ॥ इंद्रंकुत्सोवृत्रहंशचीपतिक्रादेनि
 वाह्मऽऋपिरहदूतये । रथंन० ॥ देवैर्नोदेव्यादितिर्निपातुदेवस्त्रातात्रायतामप्रयुच्छन् । तन्नोमित्रो० ॥ २४ ॥
 (१११६२) यज्ञोदेवानांप्रत्येतिसुममार्दित्यासोभर्वतामृळयंतः । आवोर्वाचीसुमतिर्वृत्यादंहोश्चिद्यावरीवोवित्तं

(१११६१) इंद्रमित्रमितिसतर्चस्यसूक्त्यकुत्सोविश्वेदेवाजगतीअंयात्रिष्टुप् । (१११६२) यज्ञोदेवानामिति वृचस्यसूक्तस्य
 कुत्सोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ।

रासत् ॥ उपनोदेवाऽअवसागमंत्वंगिरसांसामभिःस्तुयमानाः । इन्द्रऽइन्द्रियैर्मरुतोमरुद्भिरादित्यैर्नोऽआदितिःशर्मयं
 सत् ॥ तन्नऽइन्द्रस्तद्धरुणस्तदग्निस्तदर्यमातःसविताचनोधात् । तन्नोमित्रो० ॥ २५ ॥ (१।१६।३) यऽइन्द्राग्नी
 चित्रतमोरथौवामभिविध्वानिभुवन्नानिचष्टे । तेनायतंसुरथतस्थिवांसाथसोमस्यपिवतंसुतस्य ॥ यार्वद्विदंभुवनंवि
 श्वमस्त्युरुव्यचावृमतांगभीरं । तावोऽअयंपातवेसोमोऽअस्त्वरमिन्द्राग्नीमनसेयुवभ्यां ॥ चक्राथेहिसुध्रुङ्गमं
 भद्रंसधीचीनावृत्रहणाऽउतस्थः । तार्विन्द्राग्नीसुध्र्यचानिषद्यावृष्णःसोमस्यवृपणावृपेथां ॥ समिद्धेष्वग्निष्वानजाना
 यतक्षुचावृहिरुतिस्तिराणा । तूत्रैःसोमैःपरिपिकेभिरुर्वारोऽग्नीसौमनसारययातं ॥ यानीन्द्राग्नीचक्रथुर्वीर्याणि यानि
 रूपाण्युतवृष्ण्यानि । यार्वीप्रत्नानिसुख्याशिवानितेभिःसोमस्यपिवतंसुतस्य ॥ २६ ॥ यदब्रवंप्रथमंवावृणानोऽयंसो
 मोऽअसुरैर्नोविहव्यः । तांसत्यांश्रद्धामभ्याहियातमथासोमस्यपिवतंसुतस्य ॥ यदिन्द्राग्नीमदथःस्वेदुरोणेयद्रुह्यणि रा
 जनिवायजत्रा । अतःपरिवृपणावाहियातमथा० ॥ यदिन्द्राग्नीयदुपतुर्वशेषुयद्बुध्वनुषुपरुपस्थः । अतःपरिवृपणा
 वाहियातमथा० ॥ यदिन्द्राग्नीऽअवमस्यापृथिव्यामध्यमस्यापरमस्यामतस्थः । अतःपरिवृपणावाहियातमथा० ॥
 यदिन्द्राग्नीपरमस्यापृथिव्यामध्यमस्यामवमस्यामतस्थः । अतःपरिवृपणावाहियातमथा० ॥ यदिन्द्राग्नीद्विविष्टोयत्यग्नि

(१।१६।३) यद्विन्द्राग्नीद्वितित्रयोदशचंसूक्तस्यकुत्सद्विन्द्राग्नीत्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ७

॥ ४८ ॥

मंडलं १

अनु. १६

॥ ४८ ॥

व्यायत्पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु । अतःपरिवृषणावाहियातमथा० ॥ यद्विद्राघ्रीऽजदितासूर्यस्यमर्धेदिवःस्वधर्यामादयेथे ।
अतःपरिवृषणावाहियातमथा० ॥ एवेंद्राघ्रीपपिवांसांसुतस्यविश्वस्मभ्यंसंजयंतंधनानि । तन्नोमित्रो० ॥ २७ ॥
(१११६।४) विह्वल्यमनसावस्यऽइच्छन्निद्राघ्रीज्ञासऽउतवासजातान् । नान्यायुवत्समतिरस्तिमह्यंस्वांधियंवाज
गंतीमतक्षं ॥ अश्रवंहिभूरिदावत्तरवांविजामातुरुतवाघास्यालात् । अथासोमस्यप्रयतीयुवभ्यामिन्द्राघ्रीस्तोमंजनया
मिनव्यं ॥ माच्छेन्नरश्मिरितिनाधमानाःपितृणांशक्तीरनयच्छमानाः । इन्द्राग्निभ्यांकंवृषणोमदंतिताह्यद्राघ्रीधिपणा
याऽउपस्थे ॥ युवाभ्यांदेवीधिषणामदुर्ग्येद्राघ्रीसोममुशतीसुनोति । तार्वश्विनाभद्रहस्तासुपाणीऽआधावतंमधुनाप
क्षमप्सु ॥ युवामिन्द्राघ्रीवसुनोविभागेतवस्तेमाशुश्रववृत्रहत्ये । तावासद्यावर्हिषियज्ञेऽअस्मिन्प्रचर्षणीमादयेथांसुत
स्य ॥ २८ ॥ प्रचर्षणिभ्यःपृतनाहवैषप्रघृथिव्यारिरिचाथेदिवश्च । प्रसिंधुभ्यःप्रगिरिभ्योमहित्वाप्रद्राघ्रीविश्वामुव
नात्यन्या ॥ आभरंतंशिक्षंतवज्रवाहूऽअस्मोऽइन्द्राघ्रीऽअवतुशचीभिः । इमेनुतेरश्मयःसूर्यस्येभिःसपित्वंपितरोऽन
आसन् ॥ पुरंदराशिक्षंतवज्रहस्तास्मोऽइन्द्राघ्रीऽअवतंभरेषु । तन्नोमित्रो० ॥ २९ ॥ (१११६।५) ततमेऽअपस्तदु
तायतेपुनःस्वादिष्ठाधीतिरुचथायशस्यते । अयंसमद्रऽइहविश्वदेव्यःस्वाहाकृतस्यसमुत्पणुतऽऋभवः ॥ आभोगयं
(१११६।४) विह्वल्यमित्यष्टर्चस्यसूक्त्यकुत्सइन्द्राघ्रीत्रिष्टुप् । (१११६।५) ततमइतिनवर्चः । सूक्त्यकुत्सऋभवोजगतीपंचम्यलोत्रिष्टुभौ ।

प्रयद्विच्छंतुऽप्रेतनापाकाः प्रांचोममकेचिद्वापयः । सौधन्वनासश्चरितस्यभमनागच्छतसविपुदुर्धुपोगहं ॥ तत्सवि
 तावोमृतवमासुवदगोह्यंयच्छवयैतुऽप्रेतन । त्यंचिचमसमसुरस्यभक्षणमेकंसंतमकृणुताचतुर्वयं ॥ विप्रीशमीतरणि
 त्वेनवाघतोमतीसुः संतोऽअमृतत्वमानशुः । सौधन्वनाऽऽक्रभवः सूरचक्षसः संवत्सरेसमपृच्यंतधीतिभिः ॥ क्षेत्रमिव
 विमसूस्तेजनेनेऽएकंपात्रमभवोजेहमानं । उपस्तुताऽउपमंनार्धमानाऽअमत्यैपुश्रवऽइच्छमानाः ॥ ३० ॥ आर्मनी
 पामंतारिक्षस्यतृभ्यः स्रुचैर्वधृतं जुहवामविद्वानां । तरणित्वायेपितुरस्यसश्चिरऽऽक्रभवोवार्जमरुहन्दिवोरजः ॥ ऋमुर्नऽइंद्रः
 शर्वसानवीयानुभुवाजैर्भिवसुभिर्वसुर्ददिः । युष्माकदेवाऽअवसाहनिप्रिये इ भित्तिष्ठेमपृत्सुतीरसुन्वतां ॥ निश्चर्मणऽऽक्रभ
 वोगार्मपिंशतसवत्सेनासृजतामातरंपुनः । सौधन्वनासः स्वपस्यानरोजिप्रीयुवानापितराकृणोतन ॥ वाजैर्भिर्नोवा
 जसातावविद्वद्युभूमोऽइंद्रचित्रमादर्पिरार्धः । तन्नोमित्रो ॥ ३१ ॥ (१।१६।६) तक्षत्रार्थसुवृतं विद्वानापसस्तक्ष
 नहरीऽइंद्रवाहावृषवसू । तक्षन्पितृभ्यामभवोयुवद्वयस्तक्षन्वत्सायमातरंसचाभुव ॥ आनोयुजायतक्षतऽऽक्रभमद्वयः
 ऋत्वेदक्षायसुप्रजावतीमिषं । यथाक्षयामसर्ववीरयाविशातन्नः शर्धायधासथास्विद्विचं ॥ आतक्षतसातिमस्मभ्यम
 भवः सातिरथायसातिमवतेनरः । सातिनोजैत्रांसमहेतविश्वहजामिमजासिंपृतनासुसक्षणि ॥ ऋभुक्षणमिंद्रमाहुवऽ

(१।१६।६) तक्षत्रयसिपिंचर्वसूक्तस्यकुत्सक्रमवोजगतीअलात्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ७

॥ ४९ ॥

ऊतयऽऋधृन्वाजोन्मरुतः सोमपीतये । उभामित्रावरुणाननमभ्विनातेनोहिन्वत्सुसातयेधियेजिषे- ॥ ऋधुर्भरायसं
शिशातुसातिसमर्थजिह्वार्जोऽअस्मोऽअविष्टु । तन्नोमित्रो ॥ ३२ ॥ (१११६।७) ईळेद्यावापृथिवीपूर्वाचित्तयेभिघ
र्मसुरुचंयामन्निष्टये । याभिर्भरेकारमंशायजिन्वथस्ताभिर्बुधुऽऊतिभिरभ्विनर्गतं ॥ युवोर्दानायसुभरऽअसृथ्यतो
रथमातस्थुवचंसनमंतवे । याभिर्धियोवंधः कर्मन्निष्टयेताभिः ॥ युवतासोदिव्यस्यप्रशासनेविशाक्षयथोऽअसृथ्यतो
ज्मना । याभिर्धेनुमस्वपिन्वथोनराताभिः ॥ याभिःपरिज्मातनयस्यमज्मनादिमातातुष्टुरणिर्विभूयति । याभि
स्त्रिमंतुरभवादिचक्षणस्ताभिः ॥ याभिरेभंनिवृतंसितमन्त्र्यऽउदंनमैरयतंस्वहृशे । याभिःकण्वंप्रसिषांसतमावतंता
भिः ॥ ३३ ॥ याभिरतंकंजसमानुमारणेभुज्युयाभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः । याभिःकर्कधुवय्यंचजिन्वथस्ताभिः ॥
याभिःशुचतिंधनसांसुषंसदंतसंधर्ममोम्यावंतमत्रये । याभिर्वीतिकांग्रसिताममुंचतंताभिः ॥ याभिःसिंधुमधुमंतमसंश्चतंवासिंहंयाभि
रावृजंघांश्रोणंचक्षसऽएतवेकृथः । याभिर्वीतिकांग्रसिताममुंचतंताभिः ॥ याभिःपृश्निगुणुरुकुत्समावतंताभिः ॥
रजरावजिन्वतं । याभिःकुत्संश्रुतंयन्यमावतंताभिः ॥ याभिःसिंधुमधुमंतमसंश्चतंवासिंहंयाभि
याभिर्वशमभ्यंप्रेणिमावतंताभिः ॥ ३४ ॥ याभिःसुदानूऽऔशिजायवणिजेदीर्घश्रवसेमधुकोशोऽअक्षरत् । कक्षी
(१११६।७) ईळेद्यावापृथिवीइतिपंचविंशत्यृचस्यसूक्तस्यकुत्सः आद्यायाद्यावापृथिव्यश्वधिनः शिष्टानामाश्विनौ जगती अंले द्वे त्रिष्टुभौ ।

मंडलं १

अनु. १६

॥ ४९ ॥

वतंस्तोतांयाभिरावतंताभि० ॥ याभीरसाक्षोदसोदःपिपिन्वथुरनश्वंयाभीरथमावतंजिपे । याभिस्त्रिशोकंऽउक्षि
 यांऽउदार्जतताभि० ॥ याभिःसूर्यपरियाथःपरावतिमंधातारुक्षेत्रपत्येष्वावतं । याभिविप्रभरद्वाजमावतंताभि० ॥
 याभिर्महामतिथिग्वंकशोजुवंदिवोदासंशंवरहृत्यऽआवतं । याभिःपुभिचेत्रसदस्यमावतंताभि० ॥ याभिर्वचंविपि
 पानमुपस्तुतंकुलियाभिर्वित्तजानिंदुवस्यथः । याभिव्यश्वमतपृथिमावतंताभि० ॥ ३५ ॥ याभिर्नराशयवेयाभिरत्र
 येयाभिःपूरामनवेगातुमीषथुः । याभिःशारीराजतंस्यूसरदमयेताभि० ॥ याभिःपठवर्जठरस्यमज्मनाग्निर्दीदेच्चि
 तऽइच्छेऽअज्मन्ना । याभिःशर्यातमवथोमहाधनेताभि० ॥ याभिःगिरोमनसानिरण्यथोग्रगच्छथोविवरेगोऽअर्ण
 सः । याभिर्मतंशूरमिषासमावतंताभि० ॥ याभिःपत्नीविमदार्यन्यहृथुराघवायाभिररुणीरक्षितं । याभिःसुदासंऽ
 ऊहथुःसुदेव्यंताभि० ॥ याभिःशततीभवथोददाशुपेभुजुंयाभिरवथोयाभिरधिगुं । ओम्यावतींसुभरामृतस्तुभं
 ताभि० ॥ ३६ ॥ याभिःकृशानुमसनेदुवस्यथोजवेयाभिर्यनोऽअवैतमावतं । मधुप्रियंभरथोयत्सरङ्गभ्यस्ताभि० ॥
 याभिर्नरंगोषयुधंनृपाह्वेक्षेत्रस्यसातातनयस्यजिन्वथः । याभीरथोऽअवथोयाभिरवैतस्ताभि० ॥ याभिःकुत्समार्जुनेयं
 शतकतूप्रतूर्वातिप्रचदुभीतिमावतं । याभिर्ध्वंसतिपुरुषंतिमावतंताभि० ॥ अमंस्वतीमश्विनावाचमुस्मेकृतंनोदद्यावृ

ऋक्सं.

अ. १ अ. ८

॥ ५० ॥

षणामनीपां । अद्यत्येवसेनिह्येवांष्टुधेचनोभवतुंवाजसातौ ॥
भिः । तन्नोमित्रो० ॥ ३७ ॥ ॥ इतिप्रथमाष्टकेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

सप्तमाध्याये वर्गाः ३७ सूक्तानि १८ ऋचः १७९ ॥ यागः ॥ उपसेम्यइदं. ११ द्रविणोदसेम्यइदं. ९ अग्नयेष्टुचयइदं. ८ अग्न-
येवैधानरायेद. ३ जातवेदसेम्यइदं. इद्रायेद. ५८ विश्वेभ्योदेवेभ्यइदं. २९ [भे. प. विश्वेभ्योदेवेभ्य. रोदसीभ्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य. अग्निरोदसीभ्य. २ वरुणरोदसीभ्य. विश्वेभ्योदेवेभ्य. २ रोदसीभ्या. सूर्यरश्मिरोदसीभ्य. विश्वेभ्योदेवेभ्य. अग्निरोद-
व्यग्न्यधिभ्यइदं. अध्विन्यामिद. २४ ॥ इतिप्रथमेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इदंविंशतिरुषस्यद्वितीयोर्ध्वचोरात्रेष्ट्रेमाएकादशरौद्रद्वित्रिष्टुवंतंचित्रं पद्मसौर्धनासत्याभ्यांपंचाधिककक्षीवा
नैर्धत्तमसंऽउशिकप्रसूतआश्विनं वैमध्वआवामेकादशवांरथंदशजातंकाराधद्वादशांत्याहुः स्वमनांशिन्याद्या
गायत्रीद्वितीयाककुसुंतीयाचतुर्थ्यौकाविराणनष्टरूप्यौपंचमीतनुशिरापृष्ठधरैरुष्णिग्विष्टारवृहतीकृतिर्विरा
इतिस्त्रोगायत्र्यः कदित्यापंचोनावैश्वदेवंवा ॥ ८ ॥

हरिः ३ ओम् (११६।८) इदंश्रेष्ठंज्योतिषांज्योतिरगाश्चित्रः प्रकृतोऽर्जनिष्टविभर्वा । यथाप्रसूतासवितुः सुवाय ॥
(११६।८) इदंश्रेष्ठमिति विशत्यृचस्यसूक्त्यङ्कुत्सउपाद्वितीयाया अर्धचोरात्रिस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं १

अनु. १६

॥ ५० ॥

ऽएवाराज्युपसेयोनिमरैक ॥ रुशद्वत्सारुशतीश्वेत्यागादरैरगुक्कुण्णोसदनान्यस्याः । समानवधुऽअमृतैऽअनूचीद्या
 वावर्णचरतऽआमिनाने ॥ समानोऽअध्वास्वचौरनंतस्तमन्यान्याचरतोद्वेवक्षिष्टे । नमैथेतेनतस्थतुःसमेकेनक्लोषा
 सासमनसाविरूपे ॥ भास्वतीनेत्रीसुनृतानामचैतिचित्राविदुरोनऽआवः । प्रार्थ्याजगद्धुनोरायोऽअख्यदुपाऽअजी
 गर्भुर्वनानिविश्वा ॥ जिह्मव्येऽचरितवेमघोन्याभोगर्यऽइष्टयेरायऽउत्वं । दृभ्रंपश्यन्धऽउर्विथाविचक्षऽउपा ॥
 ॥ १ ॥ क्षत्रार्थत्वंश्रवसेत्वंमहीयाऽइष्टयेत्वमर्थमिवत्वमित्यै । विसहशाजीविताभिप्रचक्षऽउपा ॥ एपादिवोदुहि
 ताप्रत्यदर्शिब्युच्छंतीयुवतिःशुक्रवासाः । विश्वस्येशानापाधिंवस्यवस्वऽउपोऽअद्येहसुभगेव्युच्छ ॥ परायतीनामन्वे
 तिपार्थऽआयतीनांप्रथमाशश्वतीनां । व्युच्छंतीजीवमुदीरयंत्युपामतंकचनबोधयंती ॥ उषोयदग्निंसमिधेचकर्धेवि
 यदावश्चक्षसासूर्यस्य । यन्मानुषान्यध्यमाणौऽअजीगस्तद्वेपुचकृषेभद्रमर्मः ॥ कियात्यायत्समयाभवातियाव्युष्यर्था
 श्रननंव्युच्छान् । अनुपूर्वाःकृपतेवावशानाम्रदीध्यानजोषमन्याभिरिति ॥ २ ॥ ईयुष्टेयेपूर्वतरामपश्यन्व्युच्छंतीमु
 पसमर्त्यासः । अस्माभिर्ननुप्रतिचक्ष्याभूदोतेयतिथेऽअपरीषुपश्यन् ॥ यावयैपाऽकृतपाऽकृतेजाःसुम्नावरीसुनृता
 ईरयती । सुमंगलीर्विभ्रतीद्वेवर्षीतिमिहाद्योपःश्रेष्ठतमाव्युच्छ ॥ शश्वत्पुरोपाव्युवासेद्व्यथोऽअद्येद्व्यवोमघोर्नी ।
 अथोव्युच्छादुत्तरौऽअनुद्यूनजरामृताचरतिस्वधाभिः ॥ व्यभिभिर्दिवऽआतास्वद्यौदपक्कुण्णांनिर्णिजैद्व्यावः ।

ऋक्सं.

अ. १ अ. ८

॥ ५१ ॥

प्रवोधयैत्यरुणेभिरभ्वैरोषार्यातिसुयुजारथेन ॥ आवहतीपोष्यावार्याणिचित्रकैतुंकुणुतेचैकिताना । इयुषीणामुपमा
शश्वतीनांविभातीनांप्रथमोषाव्यभ्वैत् ॥ ३ ॥ उदीर्ध्वजीवोऽअसुर्नऽआगादपप्रागात्तमऽआज्योतिरेति । आरैकपं
श्रुणतेमधोन्यस्मेऽआयुर्निदिदीहिप्रजावत् ॥ स्युर्मनावाचऽउदियतिवह्निःस्त्वानोरेभऽउषसोविभातीः । आरैकपं
दुर्केताऽअभ्वदाऽअभ्रवत्सोमसुत्वा ॥ मातादेवानामदितेर्नीकयज्ञस्यैकैतुद्वहतीविभाहि । वायोरेवसनुतानामु
च्छानोजनेजनयविश्ववारे ॥ यच्चित्रममऽउषसोवहतीजानायशशमानायभद्रं । तन्नोमित्रो० ॥ ४ ॥ (१।१६।९)
इमारुद्रायतवसेकपदिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः । यथाशमसीद्विपदेचतुष्पदेविश्वपुष्टंग्रामेऽअस्मिन्ननातुरं ॥ म
ळानोरुद्रोतनोमर्यस्कुधिक्षयद्वीरायनमसाविधेमते । यच्छंचयोश्चमनुरायेजेपितातदव्यामतवर्हरुप्रणीतिषु ॥ अद्या
मतेसुमतिदेवयज्ययाक्षयद्वीरस्यतवर्हरुमीद्विः । सुन्नायन्निद्विशोऽअस्माकुमाचुरारिपवीराजुहवामतेहविः+ ॥ त्वेष
वयंरुद्रयज्ञसाध्वंकुक्विमवसेनिह्वियामहे । आरेऽअस्मदैव्यंहेळोऽअस्यतुसुमतिमिद्वयमस्यावृणीमहे ॥ द्विवोवराहम
रुषंकपदिनेत्वेषंरूपंनमसानिह्वियामहे । हस्तेविश्वंरेषजावार्याणिशर्मवर्मच्छदिरस्मभ्यंचयंसत् ॥ ५ ॥ इदंपित्रेमरुतामुच्यते

(१।१६।९) इमारुद्रायेकादशर्चस्यसूक्त्युत्सोरुद्रोजगतीअलेद्वेत्रिष्टुभौ ।

मंडलं १

अनु- १६

॥ ५१ ॥

वचःस्वादोःस्वादीयोरुद्रायवर्धनं । रास्वाचनोऽअमृतमर्तभोजनंत्मनेतोकायुतनयायमृळ ॥ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भ
 कंमानुऽउक्षतमुतमानंऽउक्षितं । मानोवधीःपितरभोतमातरमानःप्रियास्तन्वोरुद्वरीरिषः ॥ मानस्तोकेतनयेमानंऽआयौ
 मानोगोषमानोऽअश्वेषुरीरिषः । वीरान्मानोऽअभामितोवधीर्हुविष्मंतःसदृमिच्चिहवामहे ॥ उपतेस्तोमान्पशुपाऽइ
 वाकरंरास्वापितर्मरुतांसुन्नमस्मे । भद्राहितेसुमतिर्भूळयत्तमार्थावयमवऽइत्तेवृणीमहे ॥ आरेतेगोघ्नमतपूरुपद्मक्षय
 द्वीरसुन्नमस्मेतेऽअस्तु । मळाचनोऽअधिचब्रूहिदेवार्धाचनःशर्मयच्छद्विचर्हीः ॥ अवोचामनमोऽअस्माऽअवस्यवःशृणो
 तुनोहवैरुद्रोमरुत्वान् । तन्नोमित्रो० ॥ ६ ॥ (११६।१०) चित्रंदेवानामुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः ।
 आप्राद्यावापृथिवीऽअंतरिक्षंसूर्येऽआत्माजगत्स्तस्युषश्च ॥ सूर्योदेवीमुपसरोचमानांमर्योनयोपमभ्येतिपश्चात् ।
 यत्रानरोदेवयंतोयुगानिवितन्वतेप्रतिभद्रायभद्रं ॥ भद्राऽअर्थाहुरितःसूर्यस्यचित्राऽएतंगाऽअनुमाद्यासः । नम
 संतोदिवऽआपृष्टमस्थःपरिद्यावापृथिवीर्यतिसद्यः+ ॥ तत्सूर्यस्यदेवत्वतन्महित्वंमध्याकतोर्वितंतंसर्जभार । यदेद
 युक्तहुरितःसुधस्यादाद्रात्रीवासस्तनुतेसिमसै ॥ तन्मित्रस्यवरुणस्याभिचक्षेसूर्योरूपंकृणुतेद्योरुपस्थे । अनंतमन्यदु
 शंस्यपाजःकृष्णमन्यद्धुरितःसंभरंति ॥ अद्यादेवाऽउदितसूर्यस्यनिरंहसःपिपुतानिरवुद्यात् । तन्नोमित्रो० ॥ ७ ॥

(११६।१०) चित्रंदेवानामितिषड्वचस्यसूक्तस्यकुत्सःसूर्यब्रिष्टुम् ।

(१११७।१)

नसत्याभ्यावहिरिवप्रवृज्जेस्तोमोऽइयमर्थ्यभियैववार्तः । यावर्भगायविमृदार्पजायंसेनाजुर्वान्युहतर
 अैन ॥ वीळुपत्तमभिराशुहेमभिर्वादेवानावाजतिभिःशाशदाना । तद्रासर्भोनासत्यासहस्रमाजायमस्यप्रधनेजिगाय ॥
 तुगोहभ्युर्मभिनोदमेधेरयिनकाश्चिन्ममवाँऽअवाहाः । तर्महथुनौभिरात्मन्वतीभिरतरिक्षपृष्ठिरपोदकाभिः ॥
 सःक्षपस्त्रिरहोतिव्रजिन्सत्याभ्युर्महथुःपतंगैः । समुद्रस्यधन्वन्नार्द्रस्यपारेत्रिभीरथैःशतपद्भिःषळ्ध्वैः ॥ ति
 भणेतदवीरयेथामनास्थानेऽअग्रभणेसमुद्रे । यदभ्विनाऽऊहथुर्भ्युमस्तंशुतारित्रानावमातस्थिवांसं ॥ अनारं
 नादुदथुःश्वेतमर्ध्वमघायायशश्वदित्स्वस्ति । तद्वाँदात्रमर्हिकीर्तेन्यंभूतपैदोवाजीसदुमिद्धव्योऽअर्यः ॥ ८ ॥ यर्मभ्वि
 वृतेपज्जियायकक्षीवतेऽअरदतंपुरंधिं । कारोतराच्छफादध्वस्यवृष्णःशतंकुंभोऽअसिंचतंसुरायाः ॥ युवंनरास्तु
 येषांपितुमतीमूर्जमस्माऽअधत्तं । ऋवीसेऽअत्रिमभ्विनावनीतुमुन्निन्यथुःसर्वगणंस्वस्ति ॥ हिमेनाग्निघ्नंसमवार
 चारुभंचक्रथुजिह्ववारं । क्षरन्नापोनपायनायरायेसहस्रायुतृप्यतेगोतमस्य ॥ जुजुरुर्बोनासत्योतवन्निप्रामुंचतंद्रापि
 मिवच्यवानात् । प्रातिरतंजहितस्यार्दुदद्यादित्यतिमकृणुतंकनीनां ॥ ९ ॥ तद्वाँनरांशस्यराध्वंचाभिष्टिमन्नासत्या
 वरुथं । यद्विद्वांसानिधिमिवायर्गूढमुदर्शतापथर्वदनाय ॥ तद्वाँनरासनयेदंसऽअग्रमाविष्कृणोमितन्यतुर्नवृष्टिं ।

(१११७।१)

नासत्याभ्यामितिपंचलिङ्गः । यस्यसूक्तस्यदैर्घतमसःकक्षीवानश्विनौत्रिष्टुप् ।

दृश्यङ्गुह्यन्मध्वाथर्वणोवामश्वस्यशीष्णीप्रयदीमवाच ॥ अजोहवीन्नासत्याकरावामहेयामन्पुरुभुजापुरंधिः । श्रुतं
 च्छासुरिववधिमत्याहिरण्यहस्तमश्विनावदत्तं ॥ आस्रोवृकस्यवर्तिकामभीकियुवनरानासत्यामुमुक्तं । उतोक्विपुरुमु
 जायुचंहुक्कृपमाणमकृणुतंविचक्षे ॥ चरित्रंहिवेरिवाच्छेदिपर्णमाजाखेलस्यपरितक्म्यायां । सद्योजंघामायसींविदपला
 धैधनैहितेसर्तवेप्रत्यधत्तं ॥ १० ॥ शतमेपान्वृक्येचक्षुदानमज्राश्वंतपितांधंकार । तस्माऽअक्षीनासत्याविचक्षुऽ
 आर्धत्तंदक्षाभिषजावनर्वन् ॥ आवारथंदुहितासूर्यस्यकार्ण्मवातिष्ठदर्वताजयती । विश्वेदेवाऽअन्वमन्यतहृद्भिःस
 मुश्रियानासत्यासचेथे ॥ यदयातंदिवोदासायवर्तिभरद्वाजायाश्विनाहयता । रेवदुवाहसचनोरथोवांवृपभश्चशिशु
 मारश्चयुक्ता ॥ रयिसुक्षत्रंस्वपत्यमायुःसुवीर्यनासत्यावहता । आजह्वावींसमनसोपवाजैस्त्रिरहोभागंदर्धतीमयातं ॥
 परिविष्टंजाहुंपविश्वतःसींसुगेभिर्नक्तमूहथुरजोभिः । विभिंदुनानासत्यारथेनविपर्वतोऽअजरयूऽअयातं ॥ ११ ॥
 एकस्यावस्तौरावतरणायवशमश्विनासनयैसहसा । निरहतंदुच्छुनाऽइंद्रवंतापृथुश्रवसोवृण्णावरतीः ॥ शरस्यचि
 दार्चकस्यावतादानीचादुच्चार्यकथुःपातवेवाः । शयवेचिन्नासत्याशचीभिर्जसुरयेस्तूर्यपिष्यथुर्गा ॥ अवस्यतेस्तुवते
 कृष्णिणायऽऽक्रज्यूतेनासत्याशचीभिः । पशुंननष्टमिवदर्शनायविष्णाप्वददथुर्विश्वकाय ॥ दशरात्रीरशिवेनानवद्यून
 वनजंशथितमस्त्वैतः । विप्रुतरेभमुदनिप्रवृक्तमुन्निन्यथुःसोममिवस्रवेण ॥ प्रवांदंसांस्यश्विनाववोचमस्यपतिःस्यां

सुगवः सुवीरः । उतपश्यन्नश्रुवन्दीर्घमायुरस्तमिवेज्जस्मिमाणं जग्म्यां ॥ १२ ॥ (११७१२) मध्वः सोमं स्यादभ्विना
मदाय प्रत्नो होता विवासेत्वां । बहिष्मतीरातिर्विश्रिता गीरिपायतनासत्योपवाजैः ॥ योर्वा मभ्विना मनसो जवीयात्र
शः स्वध्वो विशऽआजिगति । ये नु गच्छथः सुकृतो दुरोणं ते न नरावतिरस्मभ्यं यातं ॥ ऋषिनरा वंहसः पांचजन्यमवीसा
दन्निमुचथो गणेन । मिनं तादस्योराशिवस्य मायाऽअनुपर्ववृषणाचोदयता ॥ अश्वं न गह्वर्मभ्विनादुरैवैर्कृषिं नरावृषणारे
भमप्सु । संतारिणीथो विप्रतुंदसो भिनर्वाजूर्यतिपुव्याकृतानि ॥ सुपृष्यांसं न निर्कृते रूपस्थे सुयुनं दस्त्रातमसि क्षियंतं ।
शुभेरुक्मं न दर्शतं निखातुमुहं पथुरभ्विना वंदनाय ॥ १३ ॥ तद्वानरा शंस्यं पज्जियेण कक्षीवतानासत्यापरिजमन् । श
फादश्वस्य वाजिनो जनयशतं कुंभोऽअसिंचतुं मधूनां ॥ युवं नरास्तुवते कृष्णिपायं विष्णाप्यंददधुर्विश्वकाय । घोषयै
चित्पितृपदे दुरोणे पतिर्जूर्यत्याऽअभ्विनावदत्तं ॥ युवं दयावायुरुशतीमदत्तं महः क्षोणस्य मभ्विना कण्वाय । प्रवाच्यंतं द्रुप
णाकृतं वांयन्नार्पिदाय श्रवोऽअध्यघत्तं ॥ पूरुवपीस्य भ्विना दधानानि पेदवऽऊहथुराशुमश्वं । सुहस्रसां वाजिनमप्रतीत
महिहर्नैश्रवस्यं शतरुत्रं ॥ एतानि वांश्रवस्य सुदानन्नह्वागं पसदं नरोदस्योः । यद्वोपज्रासोऽअभ्विना हवते यातमिपाचं
विदुर्पेचवाजं ॥ १४ ॥ सुनोर्मनिनाभ्विना गुणानावाजं विप्राय भुरणारदता । अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधानां संविदपलं ना

(११७१२) मध्वः सोमस्येति पंचविंशत्युचस्य सूक्तस्य दैर्घ्यतमसः कक्षीवानभ्विनो त्रिष्टुप् ।

सत्यारिणीतं ॥ कुहुयांतासुष्टुतिकाव्यस्यदिवोनपातावृषणाशयुत्रा । हिरण्यस्येवकुलशुनिखातमुदूपथुर्दशमेऽअश्वि-
नाहन् ॥ युवंच्यवर्नमश्विनाजरंतपुनर्युवर्नचक्रथुःशुचीभिः । युवोरथंदुहितासूर्यस्यसहश्रियानासत्यावृणीत ॥ युवं
तुग्रायपव्यैभिरेवैःपुनर्मन्यावभवंतयुवाना । युवंभुज्युमर्णसोनिःसमुद्राद्विभिरूहशुक्रैर्भिरश्वैः ॥ अजोहवीदश्वि
नातौश्रयोवांग्रोहःसमुद्रमव्यथिर्जगन्वान् । निष्टर्महथुःसुयुजारथैनमनोजवसावृषणास्वस्ति+ ॥ १५ ॥ अजोहवीद
श्विनावर्तिकावामास्त्रोयत्सीममुंचतंवृकस्य । विजयुपाययथुःसान्वर्देजुतंविष्वाचोऽअहतंविपेण ॥ श्रुतंमेपान्बुक्व्ये
मामहानंतमःप्रणीतमशिवेनपित्रा । आक्षीऽऽक्रुज्राश्वैऽअश्विनावधत्तंज्योतिरंधार्यचक्रथुर्विचक्षे ॥ श्रुनमंधायभरमह
युत्सावृकीरश्विनावृषणानरेति । जारःकनीनऽइवचक्षदानऽऽक्रुज्राश्वःश्रुतमेकचमेपान् ॥ महीवामतिरश्विनामयो
भूरुतस्त्रामधिष्ण्यासंरिणीथः । अथयुवामिदहयपुरंधिरागच्छतंसंवृषणाववोभिः ॥ अर्धेनुंदस्त्रास्तथैवविपक्ताम
पिन्वतंशयवैऽअश्विनागां । युवंशचीभिर्विमदायजायान्यहथुःपुरुमित्रस्ययोषां ॥ १६ ॥ यंवृक्केणाश्विनावपतेपंदु
हंतामनुषायदस्त्रा । अभिदस्युवकुरेणाधमंतोरुज्योतिश्चक्रथुरायीथ ॥ आथर्वणायाश्विनादधीचेभ्यंशिरःप्रत्यैरयतं ।
सवांमधुप्रवौचहतायन्त्वाष्ट्रयदस्त्रावपिकृश्यंवां ॥ सदाकवीसुमतिमाचक्रंवांविश्वधियोऽअश्विनाप्रावतंमे । अस्मे
यिनोसत्यावृहंतमवत्यसाचंश्रुत्यैरराथां ॥ हिरण्यहस्तमश्विनारणापुत्रंनरावधिमत्याऽअदत्तं । त्रिधाहृश्यावमश्वि

नाविकस्तुमुज्जीवसंऽऐरयतंसुदानू ॥ एतानि वामश्विनावीर्योणिप्रपृथ्याण्यायवोचन् । ब्रह्मकृण्वंतो वृषणायुव
भ्यांसुवीरांसो विदथमावदेम ॥ १७ ॥ (१ । १७ । ३) आवांरथोऽअश्विनाश्येनपत्वासुमृत्कीकःस्ववांयात्वर्वाङ् ।
योमर्त्यस्यमनसोजवीयान्निवंधूरोवृषणावार्तरंहाः ॥ त्रिवंधुरेण त्रिवृत्तारथेन त्रिचक्रेण सुवृत्तार्यातमर्वाक् । पिन्वे
तंगाजिन्वतमर्वतो नोवर्धतमश्विनावीरमस्मे⁺ ॥ प्रवद्यामनासुवृत्तारथेन दस्त्रा विमंशृणुतं श्लोकमद्रं । किमंगवांप्रत्य
वर्तिगमिष्ठाहुर्विप्रांसोऽअश्विनापुराजाः⁺ ॥ आवांश्येनासोऽअश्विनावहतुरथैयुक्तासंऽआशवःपतंगाः । येऽअसुरो
द्विव्यासोनगृध्राऽअभिप्रयोऽनासत्यावहति ॥ आवांरथयुवतिस्तिष्ठदन्नजुद्धीर्नरादुहितासूर्यस्य । परिवामश्वान्वपुषः
पतंगावयौवहंत्वरुषाऽअभीकै ॥ १८ ॥ उद्वंदनमैरतंदंसनोभिरुद्रेभंदस्त्रावृषणाशचीभिः । निष्टौड्यंपारयथःसमु
द्रात्पुनश्चयवानंचक्रथुर्युवानं ॥ युवमन्नयेवनीतायतशमूर्जमोमानमश्विनावधत्तं । युवंकण्वायापिरिप्तायचक्षुःप्रत्यध
त्तंसुष्ठुतिं जुषाणा⁺ ॥ युवंधेनुंशयवेनाधितायापिन्वतमश्विनापृथ्वीयं । अमुंचतवर्तिकामंहसोनिःप्रतिजघां विरूप
लायाऽअधत्तं ॥ युवंश्वेतंपेदवऽइंद्रजुतमहिहर्नमश्विनादत्तमश्वं । जोहन्नमर्योऽअभिभूतिमग्रंसहस्रां वृषणवीड्वंगं ॥
तावांनरास्वर्वसेसुजाताहवामहेऽअश्विनानार्धमानाः । आनुऽउपवसुमतारथेन गिरो जुषाणासुवितार्ययातं ॥ आश्ये

(१ । १७ । ३) आवांरथ इत्येकादशचक्षुस्तस्यैर्धतमसः कक्षीवानश्विनौ त्रिष्टुप् ।

नस्यज्वसानूतनेनास्मेयातं नासत्यासृजोपाः । हवेहिवाग्निमश्विनारातहव्यः शश्वत्तमायाऽवपसोव्युष्टौ ॥ १९ ॥ (११७१४)
आवांरथैपुरुमायंमनोजुवंजीराश्वयज्ञियज्जीवसेहुवे । सहस्रकेतुवनिनंशतद्वसुश्रुटीवानवरोधामभिप्रयः ॥ ऊर्ध्वो
धीतिः प्रत्यस्यप्रयामन्यधागिशास्मन्समयंतऽआदिशः । स्वदाभिघर्मप्रतिगंत्यतयऽआवाग्मजनीरथमश्विनारुहत् ॥
संयन्मिथः पस्पृधानासोऽअगमंतशुभे मखाऽअमिताजायवोरणे । युवोरहप्रवणेचैकितेरथोयदश्विनावहथः सरिमावरं ॥
युवंभज्युभुरमाणं विभिर्गतं स्वयुकिभिर्निवहतापितृभ्यऽआ । आसिष्टवर्तिष्वपणा विजेन्यं दिवोदासायमहिचेतिवाम
वः ॥ युवोरश्विनावपुपेयुवायुजंरथंवाणीधेमनुरस्यशर्द्धं । आवांपतित्वं सख्यायजग्मुपीयोपावृणीतजेन्यायुवांपती ॥
॥ २० ॥ युवंरेमंपरैधूतेरुष्यथोहिमेनघर्मपरितप्तमन्त्रये । युवंशयोरेवसंपिप्यथुर्गविप्रदीर्घेणवंदनस्तार्ययुषा ॥ यु
वंदंनंनिर्ऋतं जरण्यथारथंनदंसाकरणासमिन्वथः । क्षेत्रादाविप्रंजनथो विपन्ययाप्रवामत्रविधुतेदंसर्नाभुवत् ॥ अग
च्छतं कृपमाणं परावर्तिपितुः स्वस्यत्यजस्रानिवाधितं । सर्वतीरितऽऊतीर्युवोरहचित्राऽअभीकेऽअभवन्नभिष्टयः ॥
उतस्यावांमधुमन्मार्क्षिकारपन्मदेसोमस्यौशिजोहुवन्यति । युवंदधीचोमनऽआविवासथोयाशिरः प्रतिवामश्वयंवदत् ॥
युवंपेदेवैपुरुवारमश्विनास्पृधांश्वेतंरुतारंदुवस्यथः । शरैरभिद्युपृतनासुदुष्टरचकृत्यमिन्द्रमिवचर्पणीसहं ॥ २१ ॥

(११७१४) आवारथमिति दशर्चस्य मूक्तस्यैर्धतमसः कक्षीवानश्विनौ जगती ।

(१।१७।५) काराधद्धोत्राश्विनावांकोवांजोर्षऽउभयोः । कथाविधात्यप्रचेताः ॥ विद्वांसाविहुरःपृच्छेदविद्धानि
 त्थापरोऽअचेताः । नूचिन्नुमतेऽअक्नौ ॥ ताविद्वांसाहवामहेवांतानोविद्वांसामन्मवोचेतमद्य । प्रार्चयमानोयुवा
 कुः ॥ विपृच्छामिपाक्याइनेद्वान्वर्षदृकृतस्याङ्गुतस्यदस्त्रा । पातंचसह्यसोयुवंचरभ्यसोनः ॥ प्रयाघोपेभृगवाणेनशो
 भेययावाचायजतिपज्जियोवां । प्रैपयुर्नविद्धान् ॥ २२ ॥ श्रुतंगायत्रंतकवानस्याहंचिद्धिरिरेभाश्विनावां । आक्षी
 शुभस्यतीदन् ॥ युवंह्यास्तमहोरन्युवंवायन्निरतंतसतं । तानोवसूमुखोपास्यातंपातंनोवृकादघायोः ॥ माकस्मैधा
 तमभ्यमित्रिणैनोमाकुत्रानोगहेभ्योर्धेनवौगुः । स्तनाभुजोऽअशिथीः ॥ दुह्वीयन्मित्रिधितयेयुवाकुरायेचनोमिमीतं
 वाजवत्यै ॥ इपेचनोमिमीतंधेनूमत्यै ॥ अश्विनोरसनंरथमनश्वंवाजिनीवतोः । तेनाहंभूरिचाकन ॥ अयंसमहमात
 नूह्यातेजनोऽअनु । सोमपेयंसुखोरथः ॥ अधस्वमस्यनिर्विदेभुजतश्चरेवतः । उभातावस्त्रिनश्यतः ॥ २३ ॥ (१।१८।१)
 कद्वित्थानैःपात्रदेवयुतांश्रवद्दिरोऽअंगिरसांनुरण्यन् । प्रयदानुडिशऽआहर्भ्यस्योरुसतेऽअध्वर्येयजत्रः ॥ स्तंभीद्भू

(१।१७।५) काराधदिदिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यदैर्घतमसःकक्षीवानश्विनौआद्यागायत्रीद्वितीयाकुरुत्तीयाकाविरादचतुर्थीनष्टरूपी
 पंचमीतनुशिरापष्टगुण्णिक्सप्तमीविष्टारवृहस्पतीकृतिर्नवमीविरादंत्यास्तिस्त्रोगायत्र्यः (अंत्यादुःस्वप्ननाशिनी) । (१।१८।१)
 कद्वित्थेतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यदैर्घतमसःकक्षीवानिन्द्रस्त्रिष्टुप् (विश्वेदेवावा) ।

द्यांसधरुणंप्रुपायहभुवाजायद्रविणंनरोगोः । अनुस्वजामंहिषश्चक्षतत्रामेनामश्वस्यपरिमातरंगोः⁺ ॥ नक्षच्चवमरुणीः
 पृथ्वीराइतुरोविशामंगिरसामनुद्युन् । तक्षद्वज्रंनियुतंतस्तंभद्व्यांचतुष्यदेनर्यायद्विपादे ॥ अस्यमदेस्वर्धदाऽऽक्रतायापी
 वृतमस्त्रियाणामनीकं । यद्धप्रसंगेत्रिककुन्निवर्तदपद्रुहोभानुषस्यदुरैवः ॥ तुभ्यंपययत्पितरावनीतारार्धःसुरतस्तु
 रणेभुरण्यू । शुचियत्तरेक्वणऽआर्यजंतसवर्धुधायाःपर्यऽउस्त्रियायाः ॥ २४ ॥ अधप्रजज्ञेतरणिमत्तुप्ररोच्यस्याऽउप
 सोनसूरः । इंदुर्येभिराष्टस्वेदुहव्यैःस्रुवेणसिंचन्जराभिधामं ॥ स्वध्मायद्रुनर्धितिरपस्यात्सुरोऽअध्वरेपरिरोधना
 गोः । यद्धप्रभासिकृत्व्योऽअनुद्यननर्विशेषैतुरार्यं ॥ अष्टामहोदिवऽआदोहरौऽइहद्युन्नासाहमभियोधानऽउत्सं ।
 हरियत्तेमंदिनंदुक्षन्वृधेगोरभसमाद्रिभिर्वाताप्यं ॥ त्वमायंसंप्रतिवर्तयोगोद्विवोऽअश्मानमुपनीतमृन्वा । कुत्सायय
 त्रपुरुहृतवन्वच्छुष्णमनंतैःपरियासिवधैः⁺ ॥ पुरायत्सूरस्तमसोऽअपीतिस्तमद्रिवःफलिंगेहेतिमस्य । शुष्णस्यचित्प
 रंहितंयदोजोदिवस्यरिसुग्रथितंतदादः ॥ २५ ॥ अनुत्वामहीपार्जसीऽअचुकेद्यावाक्षाममदतामिद्रुर्कमेन् । त्वंबृत्र
 माशयानंसिरासुमहोवज्रेणसिष्वपोवराहं ॥ त्वमिद्रनयोर्योऽअवोनन्तिष्ठावातस्यसुजोवहिष्ठान् । यत्तेकाव्यऽउश
 नांमंदिनंदाद्रुहणंपार्यतक्षवज्रं ॥ त्वंसुरोहुरितोरामयोनुभर्च्चक्रमेतशोनायमिद्र । प्रास्यपारंनवतिनाव्यानाम
 पिर्कृतमवर्तयोर्यज्युन् ॥ त्वनोऽअस्याऽइद्रुहणायाःपाहिर्वज्रिवोदुरितादुभीके । प्रनोवाजान्नथ्योइअश्वबुध्यानिषे

यं धि श्रवसे सुनृतयि ॥ मासातेऽअस्मत्सुमतिर्विदसुद्वाजप्रमहः समिषो वरंत । आनो भजमधवन्गोष्वयोर्योमंहं छास्ते सधु
मादः स्याम ॥ २६ ॥ ॥ इति प्रथमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

अष्टमाध्यायेवर्गाः २६ सूक्तानि ९ ऋचः १३५ ॥ त्यागः ॥ उपोरात्रिन्यामिदं. उषसइदं. १८ उपोमित्रावरुणादितिसिधुपृथिवी-
द्युम्यइदं. रुद्रायेदं. ११ सूर्यायेदं. ६ अश्विन्यामिदं. ८३ इंद्रायेदं १५ ॥ इति प्रथमेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ इति प्रथमाष्टकः समाप्तः ॥

॥ अथ द्वितीयाष्टकप्रारंभः ॥

ॐ प्रवो वैश्वदेवमावो विराडूँ पृथुः ससोनो पस्यतू पाउच्छंती प्रातारलैँ सप्तस्वनयस्यादानस्तुतिरुपजगत्यावमंदानि
 तिकक्षीवान्दानतुष्टः पंचभिर्मिवयव्यंतुष्टावौत्ये अनुष्टुभौ भावयव्यरोमशयोदं पत्योः संवादौ शिमेकादशपरुच्छे
 पौदैवो दासिराग्नेयंतु पारुच्छेपंसर्वमात्यटतत्रातिधृतिः पष्ठयं जायताद्यैयंत्वमेकादशपष्ठ्यद्वीप्रप्रवोतिशक्रया
 वष्टिरं त्यैद्रयाहिदशां त्यात्रिष्टुविंद्रायसप्तत्वयावयंपड्युवंतमैद्रापार्वतोर्ध्वचैउभेसप्तादौ त्रिष्टुसिन्नोनुष्टुभोगायत्री
 धृतिरष्टिरात्वापड्यायव्यंत्वं त्याष्टिः स्तीर्णनवचतुर्ध्याद्याः पंचैद्व्यश्चोपां त्ये अष्टीप्रसुतसमैत्रावरुणं त्वं त्ये लिंगोक्तदेव
 ते अं त्यात्रिष्टुप् ॥ १ ॥

हरिः ३ ओम् ॥ (११८।२) प्रवः पातैर्घुमन्यवौ धोयज्ञं रुद्राय मीढुपैभरध्वं । द्विवोऽअस्तोष्यसुरस्यवीरैरपूध्येव
 मरुतोरोदस्योः ॥ पत्नीवपूर्वहृतिं वाबृध्याऽडुपासानक्तपुरुधाविदने । स्तरीनात्कंव्युतंवसानासूयैस्वश्रियासुदृशी
 हिरण्यैः ॥ ममत्तुनः परिज्मावसहर्ममत्तुवातोऽअपांवृण्वान् । शिशीतिमिंद्रापर्वतायुवनस्तन्नोविश्वेवरिवस्यंतुदेवाः+ ॥
 उत त्यामैयशसांश्वेतनायैव्यंतापांतौ शिजोहुवधै । प्रचोनपांतमपांकृणुध्वं प्रमातरारस्मिनस्यायोः+ ॥ आवौरुवण्यु

(११८।२) प्रवः पातमिति पचदशर्चस्यसूक्तस्यैर्धतमसः कक्षीवान्निश्वेदेवास्त्रिष्टुपपचमीपष्टुधौ विराडूँपे । (भेदप्रयोगपक्षे तु आद्या
 नापण्णाक्रमेण रुद्रमरुत उपपासानक्ताविश्वेदेवाश्विनौ विश्वेदेवा मित्रावरुणासिधोदेवताः ततो द्वयोर्विश्वेदेवाः ततो द्वयोर्मित्रावरुणौ अंत्यपंचा
 नाविश्वेदेवाः एवं १५) ।

मौशिजोहुवध्यैघोषैवशंसमर्जुनस्यनंशे । प्रवःपुष्णेदावनऽर्धोऽअच्छावोचेयवसुतातिमग्नेः⁺ ॥ १ ॥ श्रुतंमैमित्रावरु
णाहवेमोतश्रुतंसदनेविश्वतःसीं । श्रोतुनःश्रोतुरातिःसुश्रोतुःसुक्षेत्रासिंधुराक्षिः⁺ ॥ सुषेसावावरुणमित्रातिर्गवांश
तापक्षयमिषुपुत्रे । श्रुतरथेप्रियरथेदधानाःसद्यःपुष्टिर्निरुधानासोऽअगमन् ॥ अस्यस्तुषेर्महिमघस्यराधःसर्चासनेमन
हुपःसवीराः । जनोयःपुत्रेभ्योवाजिनीवानश्वावतोरथिनोमह्यसुरिः⁺ ॥ जनोयोमित्रावरुणाविभृगुगपोनवांसुनोत्य
क्षणयाधुक् । स्वयंसयधमंहदयेनिर्धत्तऽआपयद्दीहोत्राभिर्कृतावा ॥ सत्राधतो नहुषोदंसुजतःशर्धस्तरोनरांगर्तश्रवाः ।
विसृष्टरातिर्यातिबाह्वसृत्वाविश्वसुपुत्सुसदमिच्छूरः ॥ २ ॥ अधगमंतानहुषोहवसुरेःश्रोताराजानोऽअमृतस्यमंद्राः ।
नभोजुवोयक्षिरवस्यराधःप्रशस्तयेमहिनारथवते ॥ एतंशर्धधामयस्यसुरेरित्यवोचन्दशतयस्यनंशे । द्युम्नानियेषुवसु
तातीरारन्विश्वैस्सन्वंतुप्रभथेषवाजै ॥ मंदामहेदशतयस्यधासेर्द्वित्यंपंचविभ्रतोयंत्यक्षा । किमिष्टार्धऽइष्टरश्मिरेतऽ
ईशानासस्तरुपऽक्रंजतेनन् ॥ हिरण्यकर्णमणिग्रीवमर्णस्तन्नोविश्वैर्विरवस्यंतुदेवाः । अर्योर्गिरःसद्यऽआजगमुषीरो
स्त्राश्चाकंसुभयेष्वस्मे⁺ ॥ चत्वारोमामशशरैस्त्रिशिवस्त्रयोर्राज्ञऽआयवसस्यजिष्णोः । रथोवांमित्रावरुणादीर्घाप्साः
स्यूर्मगमस्तिःसूरोनाद्यौत् ॥ ३ ॥ (१।१८।३) पृथूरथोदक्षिणायाऽअयोज्यैर्नदेवासोऽअमृतासोऽअस्थुः । कृष्णाड

(१।१८।३) पृथूरथइतित्रयोदशर्चस्यसूक्तस्यैर्ध्वतमसःकक्षीवानुषाखिपुप् ।

दस्थादुर्याङ् विहायाश्चिक्त्संतीमानुपायक्षयाय ॥ पूर्वविश्वसाक्षुर्वनादत्रोधिजयंतीवाजंवृहतीसनुत्री । उच्चाव्य
 ख्यद्युवतिः पुनर्भूरोपाऽअगन्प्रथमापूर्वहूतौ ॥ यदृद्यभागं विभजासि नृभ्यऽउपोदेविमर्त्यत्रासुजाते । देवो नोऽअत्रस
 वितादमूनोऽअनागसोवोचति सूर्याय ॥ गृहं गृहमहनायात्यच्छादिवेदेवेऽअधिनामादधाना । सिषासंतीद्योतनाश
 श्वदागादग्रमग्रमिद्धं जतेवसूनां ॥ भगस्य स्वसारुणस्य जामिरुपः सुतुते प्रथमार्जरस्व । पश्चासदध्यायोऽअघस्य धाता
 जयेमंतं दक्षिणयारथेन ॥ ४ ॥ उदीरतांसनुताऽउरपुरंधीरुदुमयः शुशुचानासोऽअस्युः । स्याहर्वि सूनि तमसापगूढा
 विष्कृण्वंत्युपसौविभातीः⁺ ॥ अपान्यदेत्यभ्यर्च्य न्यदेति विपुरुषेऽअहनीसंचरेते । परिक्षितोत्तमोऽअन्यागुहकरद्यौ
 दुपाः शोशुचतारथेन ॥ सहशीरुद्यसहशीरिदुश्चोदीर्घसंचतेवरुणस्य धाम । अनवद्यास्त्रिशतं योजनान्येकैकाक्रतुं परिंयं
 तिसद्यः⁺ ॥ जानत्यहः प्रथमस्य नाम शुक्राकृष्णादजनिष्टि ध्वती ची । ऋतस्य योपानमिनाति धामाहरहर्निष्कृतमाचरं
 ती ॥ कन्येव तन्व इ शशदानोऽएपि देवि देवमिर्धमाणं । संसर्यमाना युवतिः परस्ताद्वा विर्विक्षांसि कृणुपे विभाती⁺
 ॥ ५ ॥ सुसंकाशामातृमृष्टेव योपाविस्तन्वं कृणुपे हृशेकं । भद्रात्वमुपोवितुरव्युच्छनतत्तेऽअन्याऽउपसौ न शत ॥ अ
 श्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारायतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य । पराचयंति पुनराचयंति भद्रानामवहमानाऽउपासः ॥ ऋत
 स्य रश्मिर्मन्युच्छमाना भद्रं भद्रं कुर्वन्मस्मा सुधेहि । उपो नोऽअद्य सुहृद्व्युच्छास्मासुरायोमघवत्सुचस्युः ॥ ६ ॥

(११८१४) उपाऽवच्छेतीसमिधानेऽग्र्याऽउद्यन्तसूर्येऽउर्वियाज्योतिरश्रेत् । देवोऽनोऽअत्रसवितान्वर्थप्रासावीहि
 पत्प्रचतुष्पदित्यै⁺ ॥ अमिनतीदैव्यानिव्रतानिप्रमिनतीमन्ययुगानि । ईयुधीणामुपमाशश्वतीनामायतीनांप्रथमो
 षाव्यद्यौत् ॥ एपादिवोदुहिताग्रत्यदशिज्योतिर्वसानासमनापुरस्तात् । ऋतस्यंपथामन्वेतिसाधुप्रजानतीवनदिशोमि
 नाति ॥ उपोऽअदशिंशुंध्योनवक्षोनोधाऽइवाविरकृतप्रियाणि । अद्वासन्नससतोवोधयतीशश्वत्तमागात्पुनरेयुषी
 णां ॥ पूर्वेऽअर्धेरजसोऽअह्यस्यगवांजनिज्यकृतप्रकेतुं । व्युग्रथतेवितरंवर्येयऽओभापण्तीपित्रोरुपस्थां ॥ ७ ॥
 एवेदेपापुरुतमादृशेकंनाजामिनपरिवृणक्तिजामिं । अरेपसातन्वाइशाशदानानाभिदीपतनमहोविभाती⁺ ॥ अत्रा
 तेवंपुंसऽएतिप्रतीचीर्गतरुगिवसनयेधनानां । जायेवपत्यऽउशतीसुवासाऽउपाहुस्त्रेवनिरीणीतेऽअप्सः ॥ स्वसास्व
 स्त्रेज्यार्यस्यैयोनिमारैर्गपैत्यस्याःप्रतिचक्ष्येव । व्युच्छंतीरश्मिभिःसूर्यस्याज्यैकेसमनगाऽइवब्राः⁺ ॥ आसांपूर्वीसामहं
 सुस्वसणामपरापूर्वामभ्येतिपश्चात् । ताःप्रब्रुवन्नव्यसीर्ननमस्मेरेवदुच्छंतुसुदिनाऽउपासः ॥ प्रवोधयोषःपृणतोम
 द्योन्यबुध्यमानाःपणयःससंतु । रेवदुच्छमघर्द्धोमघोनरेवत्सोत्रेसूनेतेजार्यती ॥ ८ ॥ अवेयमवैद्युवतिःपुरस्ताद्युक्ते
 गवामरुणानामनीकं । विनूनमच्छादसतिप्रकेतुर्गंहगृहमुपतिष्ठतेऽअग्निः⁺ ॥ उत्तेवर्यश्चिद्वसतेरपसन्नरश्चयेपितुभा
 खिष्टुप् ।

(११८१४) उपावच्छेतीतित्रयोदशसूक्तस्यैर्धतमसःकक्षीवानुपाखिष्टुप् ।

ज्ञोऽप्युद्यौ । अमासतेर्वहसिभूरिवाममुयोदेविदाशुपेमर्त्यौय ॥ अस्तोद्वंस्तोम्याब्रह्मणामेवोद्वध्वमुशतीरुपासः । युष्मा
 कैदेवीरवसासनेमसहस्रिणवशतिनचवाजं ॥ ९ ॥ (१११८१५) प्रातारलप्रातरित्वादधातितं चिकित्वाग्रप्रतिपृह्यानिध
 स्ते । तेनप्रजावर्धयमानऽआरूरायस्योपैणसचतेसुवीरः ॥ सुगुरसत्सुहिरण्यः स्वश्वोवहदसैवयुऽइन्द्रोदधाति । यस्त्वा
 धंतं वसुनाप्रातरित्वोमक्षीजयेवपदिमुत्सिनाति ॥ आर्यमद्यसुकृतप्रातरिच्छन्निष्टेः पुत्रवसुमतारथेन । अंशोः सतंपायय
 मत्सरस्यक्षयद्वीरं वर्धयसुवृताभिः ॥ उपक्षरतिसिंधवोमयोमुर्वऽईजानंचयुक्ष्यमाणंचधेनवः । पुणतंचपपुर्निचश्रवस्य
 वौघृतस्यधाराऽउपयंतिविश्वतः ॥ नार्कस्यपृष्ठेऽअर्धितिष्ठतिश्रितोयः पुणातिसहदेवेपुगच्छति । तस्माऽआपोघृतमर्ष
 तिसिंधवस्तस्माऽइयंदक्षिणापिन्यतेसदा ॥ दक्षिणावतामिद्विमानिचित्रादक्षिणावतां द्विसूर्यसः । दक्षिणावतोऽ
 अमृतं भजते दक्षिणावतः प्रतितरंतुऽआयुः ॥ मापणतोदुरितमेनऽआरन्माजरीरिपुः सूर्यः सुव्रतासः । अन्यस्तेषांपरिधि
 रस्तुकाश्चिदपुणंतमभिसंयंतुशोकाः ॥ १० ॥ (१११८१६) अमंदान्तस्तोमान्प्रभरेमनीपासिंधावर्धिक्षियतोभाव्यस्य ।

(१११८१५) प्रातारन्नमितिसप्तर्चससूक्तस्यैर्धतमसः कक्षीवान्स्वनयस्यदानस्तुतिस्त्रिष्टुप्चतुर्थोपचम्यौजगत्सौ । (स्वनयनाश्रारा
 ब्रह्मोदानस्तुतिरतः स्वनयोदेवता) । (१११८१६) अमंदानितिसप्तर्चससूक्तस्यैर्धतमसः कक्षीवानृषिः आगधितेत्यस्य भावयव्यः क्रपिः रो
 मशः देवताजपोपमइत्यस्य रोमशाः क्रपिः कस्वनयोदेवता त्रिष्टुप् अत्येद्वेऽनुष्टुभौ । (स्वनयएवभावयव्यशब्देनोच्यते रोमशास्वनयभायोअत्ये

योमैसहस्रमभिभीतसवानुतूराजाश्रवंऽङ्गच्छमानः ॥ शतराज्ञोनाधमानस्यनिष्काच्छतमश्वान्प्रयतान्सद्यऽआर्दं ।
 शतंकक्षीवोऽअसुरस्यगोनीद्विश्रवोजरमाततान ॥ उपमाश्यावाःस्वनयेनदुत्तावधूमतोदशरथासोऽअस्थुः । षष्टिः
 सहस्रमनगव्यमागात्सनत्कक्षीवोऽअभित्वेऽअहो ॥ चत्वारिंशदशरथस्यशोणाःसहस्रस्याग्नेश्रेणिनयंति । मदृच्यु
 तःकृशनावतोऽअत्यान्कक्षीवंतुऽउदमृक्षंतपज्राः ॥ पूर्वामनुप्रयतिमाददेवस्त्रीन्युक्तोऽअष्टावरिर्धायसोगाः । सुबंध
 वोयेविश्याऽङ्गवव्राऽअनस्वंतुःश्रवऽएषंतपज्राः ॥ आगधितापरिगधितायाकशीकेवजंगहे । ददतिमह्ययादुरीयाशं ॥ ११ ॥
 नांभोज्याशता ॥ उपोपमेपरमृशमामेदुभ्राणिमन्यथाः । सर्वाहमस्मिरोमशागंधारीणामिवाविका ॥ ११ ॥
 (११९।१) अग्निहोतारंमन्येदास्वंतवसुसुसंहसोजातवैदसंविप्रंनजातवैदसं । यऽङ्गुर्ध्वयास्वध्वरोदेवोदेवाच्योक्नु
 पा । द्यतस्यविभ्राष्टिमनुवष्टिशोचिषाजुहोतारंनस्यसर्पिषः ॥ यजिष्ठत्वायजमानाहुवेमज्येष्ठमंगिरसांविप्रमन्मभिर्विप्रै
 भिःशुकुमन्मभिः । परिज्मानमिवद्याहोतारंचर्पणीनां । शोचिष्केशंशृण्वंयमिमाविशःप्रावतुजुतयेविशः ॥ सहिपुरु
 चिदोर्जसारुक्मर्मादीद्यानोभवतिद्रुहंतरःपरशुर्नद्रुहंतरः । वीलुचिद्यास्यसमृतौश्रुवद्वनैवयत्स्थिरं । निष्पहमाणोय

अग्निहोतारमित्ये
 (११९।१) अग्निहोतारमित्ये

द्वेनृचौतयोःपरस्परसंवादः आद्याभिःपंचभिर्दानतुष्टःकक्षीवान्भावयव्यमस्तौततश्चसएवदेवता । (११९।१) अग्निहोतारमित्ये

कादशार्चस्यसूक्तस्यद्वौदासिःपरुच्छेपोऽग्निरस्याष्टिःपष्ठयति द्यतिः ।

मतेनार्यतेधन्वासहानार्यते ॥ इहार्चिदस्माऽअनुदुर्गथाविदेतेजिष्ठाभिरणिभिर्दार्ष्ट्यवस्ययेदाष्ट्यवसे । प्रयःपुरुणि
गाहतेतक्षद्वेनैवशोचिषा । स्थिराचिदज्ञानिरिणाल्योजसानिस्थिराणिचिदोजसा ॥ तमस्यपक्षमुपरासुधीमहिनक्त्यः
सुदर्शतरोदिवातरादप्रायुषेदिवातरात् । आदस्यायुर्ग्रभणवद्द्वीलुशर्मनसूनवे । भक्तमभक्तमवोच्यन्तोऽअजराऽअन्न
योच्यन्तोऽअजराः ॥ १२ ॥ सहिशर्धोनमारुतंतुविष्वणिरमस्वतीपूर्वरास्विष्टनिरार्तेनास्विष्टनिः । आदङ्गव्यान्याद्
दिर्यज्ञस्यकेतुरहणा । अर्धसास्याहर्षेतोहर्षीवतोविश्वेजुपंतपंथानरःशुभेनपंथा ॥ द्वितायदीकीस्तासोऽअभिद्यवोनम
स्यंतऽउपवोचैतभृगवोमश्रंतोदाशाभृगवः । अग्निरीशेवसूनांशुचिर्योधिरिषां । प्रियोऽअपिर्धाऽवनिपीष्टमेधिरऽआ
वनिपीष्टमेधिरः ॥ विश्वासांत्वाविशांपातिहवामहेसर्वीसांसमानंदंपतिभुजेसत्यगिर्वाहसंभुजे । अतिथिमानुपाणांपि
तुर्नयस्यासया । अमीचविश्वेऽअमृतासऽआवयोहव्यादेवेष्वावयः ॥ त्वमग्नेसहसासहन्तमःशुभ्मिन्तमोजायसेदेव
तातयेरयिर्नदेवतातये । शुभ्मिन्तमोहितेमोदधुम्निन्तमऽउतक्रतुः । अर्धस्मातेपरिचरंत्यजरश्रुष्टीवानोनार्जर ॥
प्रवोमहेसहसासहस्वतऽउपबुधेषुषेनाग्नेस्तोमोवभृत्वग्रये । प्रतियदीहृविष्मान्विश्वासुक्षासुजोगुवे । अग्नेरेभोजं
रतऽऋषणांजूर्णिहंतऽऋषणां ॥ सनोनेदिष्टं ददंशानऽआभराग्नेदेवेभिःसर्चनाःसुचेतुनामहोरायःसुचेतुना । महि

शविष्ठनस्कृधिसंचक्षैर्भुजेऽअस्यै । माहिस्सोतुभ्यौमघवन्त्सवीर्यमथीरुग्रोनश्वसा ॥ १३ ॥ (११९।२) अयंजाय
तमनुबोधरीमणिहोतायजिष्ठऽउशिजामनुव्रतमग्निःस्वमनुव्रतं । विश्वश्रुष्टिःसखीयतेरयिरिवश्रवस्यते । अदब्धोहोता
निषदद्विळस्पदेपरिवीतऽइळस्पदे⁺ ॥ तंयज्ञसाधमपिवातयामस्यतस्यपथानमसाहुविष्मतादेवताताहुविष्मता । सनं
ऽऊर्जामुपाभृत्ययाकृपानर्जयति । यंमतिरिश्वामनवेपरावतोद्वंभाःपरावतः ॥ एवेनसद्यःपर्यतिपाथिवंसुहृर्गरेतो
वृषभःकर्निकद्वद्धेद्रेतःकर्निकदत् । शतंचक्षणोऽअक्षभेद्वोवनेषुतुर्वणिः । सद्रोदधानऽउपरेषसानुष्वग्निःपरेषसानु
षु ॥ ससुक्रतुःपूरोहितोदमेदमेग्निर्यज्ञस्याध्वरस्यचेततिकृत्वायज्ञस्यचेतति । कृत्वविधाऽईषूयतेविश्वजातानिपस्पशे । सहि
यतोघृतश्रीरतिथिरजायतवह्निर्वेधाऽअजायत ॥ कृत्वायदस्यतविषीषुपंचतेरवेणमरुतानमोज्यैषिरायनमोज्या । सहि
ष्मादानमिन्वतिवसूनांचमज्मना । सनस्त्रासतेदुरितादभिहृतःशंसोदघादभिहृतः ॥ १४ ॥ विश्वोविहायाऽअरतिवसुदं
धेहस्तेदक्षिणेतरणिर्नाशिअथच्छवस्ययानांशिश्रथत् । विश्वस्माऽइदिपुध्यतेदेवत्राहुव्यमोहिषे । विश्वस्माऽइत्सुकृतेवारं
मृण्वत्यग्निद्वारान्वृण्वति ॥ समानुषेवृजनेशंतमोहितोऽग्निर्यज्ञेषुजेन्योनविश्रपतिःप्रियोयज्ञेषुविश्रपतिः । सहव्यामा
नुषाणामिळाकृतानिपत्यते । सनस्त्रासतेवरुणस्यधूतर्महोदेवस्यधूतः⁺ ॥ अग्निहोतारमीळतेवसुधितिप्रियंचेतिष्ठमरु

(११९।२) अयंजायतेत्यष्टर्चसमुक्तस्यदेवोदासिःपरुच्छेपोग्निरत्यष्टिः ।

तिन्योरिरेहव्यवाहून्योरिरे । विश्वायुविश्ववैदसहोतरंयजतंक्वि । देवासोरण्वमवसेवसयवोगीर्भरण्ववसयवः ॥ १५ ॥ (११९।३) यंत्वरथमिद्रमेधसातेपाकासंतमिपरिप्रणयसिप्रानवद्यनयसि । सद्यश्चित्तमभिष्टयेकरोव
 शश्चवाजिनं । सास्माकमनद्यतुजानवेधसाभिमावाचनवेधसां ॥ सःश्रुधियःस्नापृतनासकासुचिद्वृक्षाव्यऽइंद्रभरं
 हृतयेनृभिरसिप्रतूतयेनृभिः । यःशूरैःस्वः१सर्नितायोविप्रैर्वाजंतरुता । तमीशानासऽइरधंतवाजिनंपूक्षमलंनवाजि
 नं ॥ दुस्मोहिष्मावृषणंपिन्वसित्वचंकांचिद्यावीररुरुशूरमल्यंपरिवृणक्षिमल्यं । इंद्रोततुभ्यंतद्विवेतद्रुद्रायस्वयशसे ।
 मित्रायवोचंवणायसप्रथःसुमृळीकार्यसप्रथः ॥ अस्माकंवऽइंद्रमुश्मसीष्टयेसखायंविश्वायुग्रासंह्युजंवाजेपुग्रासंह्यु
 जं । अस्माकंब्रह्मोतयेवापत्सुपुकासुचित् । नहिल्याशत्रुःस्तरेतस्त्वणोपियंविश्वंशत्रुस्तणोपियं ॥ निपूनमातिमतिकयं
 स्यचित्तेजिष्ठाभिरणिभिर्नोतिभिरुग्राभिरुग्रोतिभिः । नेपिणोयथापुराणेनाःशूरमन्यसे । विश्वनिपूरोरपपिर्वाह्नि
 रासावाह्नौऽअच्छ ॥ १६ ॥ प्रतद्वौचेयंभव्यायेंदेवेहव्योनयऽइषवान्सन्मरेजतिरक्षोहामन्मरेजति । स्वयंसोऽअस्मदा
 निदोवधैरजेतदुर्मतिं । अवस्रवेदधशंसोवतरमर्वक्षुद्रमिवस्रवेत् ॥ वनेमतद्धोत्रयाचितंत्यावनेमरयिरेयिवःसुवीर्यैर
 ण्वंसंतसुवीर्यं । दुर्मन्मानंसमंतुभिरेमिषापृचीमहि । आसत्याभिरैर्द्रद्युमहतिभिर्यजंवद्युमहतिभिः ॥ प्रग्रावोऽअ

(११९।३) यत्वरथमित्येकादशसूक्तस्यद्वैवोदासिःपरुच्छेपइंद्रःपृष्ठाइदुरत्यष्टिःअष्टमीनवम्यावतिशक्योवेकादश्यष्टिः ।

स्मेस्वयंशोभिरुतीपरिवर्गं द्रुमतीनां दरीमन्दुर्मतीनां । स्वयंसारिष्ययैयानं उपेष्टुः । हृतेमसन्नवक्षतिक्षि
 त्वाजर्णिर्वक्षति ॥ त्वनं द्रुमरायापरीणसायाहिपथोऽनेहसापरोयाह्यक्षसा । सचस्वनः पराकऽआसचस्वास्तमी
 कऽआ । पाहिनोदूरादारादुभिष्टिभिः सदापाह्यभिष्टिभिः ॥ त्वनं द्रुमरायातरूपसोयं चित्त्वामहिमासक्षदवसेमेहेमि
 त्रनावसे । ओजिष्ठत्रातरवितारथं कंचिदमर्त्य । अन्यमसद्विरिषेः कंचिद्विवोरिर्क्षतंचिदद्विवः ॥ पाहिनं द्रुमरा
 द्रुतस्त्रिधौवयातासदुमिदुर्मतीनां देवः सन्दुर्मतीनां ॥ हुंतापापस्य रक्षसं स्त्राताविप्रस्यमावतः । अधाहित्वाजनिताजी
 जेनद्वसोरक्षोहणैतवाजीजनद्वसो ॥ १७ ॥ (११९१४) एन्द्रयाद्युपनः परावतोनायमच्छविदथानीवसत्यतिरस्त्ररा
 जेवसत्पतिः । हवामहेत्वावयं प्रयस्वतः सुतेसचा । पुत्रासोनपितरं वाजसातयेमं हिष्ठवाजसातये ॥ पिवासोममिन्द्रसुवान
 माद्रिभिः कोशेन सित्तमवतं वंसगस्तातृषाणोनवंसगः । मदायह्यतायतेतु विष्टमायुधायसे । अत्वायच्छनुहुरितोन
 सूर्यमहाविश्वेवसूर्य ॥ आविद्विवोनिहितुगुहानिधिवेनगर्भपरिवीतमश्मन्यनंतेऽन्तरश्मनि । ब्रजं वज्रीगवामिवसिषा
 सन्नं गिरस्तमः । अपावृणोदिपुऽइन्द्रः परीवृताद्वरऽइषः परीवृताः ॥ दाहृणाणोवज्रमिद्रोगभस्त्योः क्षेद्रवतिगमसनाय
 संनयदहिहत्यायसंनयत् । संविब्यानऽओजसाशवोभिरिद्रमज्मना । तष्टेववृक्षं वनिनोनिवृश्चसिपरश्वेवनिवृश्चसि ॥

(११९१४) एन्द्रयाहीति दशर्चस्य सूक्तस्य दैवोदासिः परुच्छेप इन्द्रोद्यतिरंत्यात्रिष्टुप् । (अप्रितिलेवप्रयोगः साधुः) ।

त्वं वृथानघं ऽ इन्द्रसतवेच्छां समद्रमसुजोरथां ऽ इव वाजयतोरथां ऽ इव । इतऽ ऊतीरं युंजत समानमर्थमक्षितं । धेनूरेव मनवे
 विश्वदोहसोजनय विश्वदोहसः ॥ १८ ॥ इमां ते वाचं वसूयंतं ऽ आयवोरथं न धीरः स्वर्पाऽ अतक्षिषुः सन्नायत्वा मतक्षिषुः ।
 शुभंतो जेन्ययथा वा जेषु विप्रवाजिनं । अत्यमिव शर्वसे सा ते ये धना विश्वा धनानि सा तथे ॥ मिनत्पुरो न वति मिद्रपूरे वेदिवो
 दासाय माहि दाशुपे वृतो वज्रेण दाशुपे वृतो । अतिथिं वायशं वरं गिर रुद्रो ऽ अवा भरत् । महो धनानि दयमानऽ ओजसा वि
 श्वा धनान्यो जसा ॥ इन्द्रः समत्सुयजमानमार्थं ग्रावद्विषु शतमूतिरा जिषु स्वभीह्विवाजिषु । मनवे शासदव्रतान्त्वचं कृ
 ष्णामरं धयत् । दक्षन्न विश्वं तत्प्राणमौपतिन्यं शसानमौषति ॥ सूरश्चक्रं प्रवृहज्जातऽ ओजसा प्रपित्वे वाजमरुणो मुषाय
 तीशानऽ आमुषायति । उशनाय त्परावतो जगन्न तये कवे । सुम्नानि विश्वामनुपेव तुर्वणि रह्वा विश्वे वतुर्वणिः ॥ सनोन
 व्येभिर्वृषकर्मश्चक्यैः पुरां दत्तः पायुभिः पाहि शग्मैः । दिवो दासेभिर्द्रुस्तर्वा नो वा वृधीथाऽ अहो भिरिवृद्यौः ॥ १९ ॥
 (११९१५) इन्द्राय हि द्यौरसुरोऽ अनन्न त्रे द्राय मही पृथिवी वरी मभिर्द्युम्नसां तावरी मभिः । इन्द्रं विश्वे सजोष सो देवा सो
 दधिरे पुरः । इन्द्राय विश्वासर्वना निमानुपारातानि संतमानुषा ॥ विश्वेषु हि त्वासर्वनेषु तं जेतैः समानमेकं वृषमण्यवः पृथक्
 स्वः स निष्यवः पृथक् । तं त्वाना वं न पर्षणिं शूयस्य धुरिधीमहि । इन्द्रं न युजैश्चितथं तऽ आयवः स्तोमैर्भिरिन्द्रमायवः ॥ वि

(११९१५) इद्राय हीतिसप्त चस्य सूक्तस्य देवो दासिः परुच्छेप इद्रो त्याष्टिः ।

वितद्वौचैरधद्वितातः पश्यतिरदिमभिः । सघाविद्वेऽअन्विद्रौगवेपर्णेवंधुक्षिद्ध्यौगवेपर्णः ॥ नूऽइत्थातेपर्वथाचप्रया
 च्यंयदंगिरोभ्योवृणोरपब्रजमिन्द्रशिखन्नपव्रजं । ऐभ्यः समान्यादिशास्मभ्यंजेप्रियोत्तिच । सुन्वद्भ्योरंधयाकंचिदव्रतं
 हृणायतंचिदव्रतं ॥ संयज्जनान्कर्तुभिः शूरऽईक्षयद्धनेहितैरुपंतश्रवस्यवः प्रयक्षंतश्रवस्यवः । तस्माऽआयुः प्रजाव
 दिद्वाधेऽअर्चयोजसा । इन्द्रऽओक्वंधिधिपंतधीतयोदेवोऽअच्छानधीतर्यः ॥ युवंतमिद्रापर्वतापुरोयुधायो नः पृत
 न्यादपुतं तमिद्धंतवज्रैणतं तमिद्धंतं । दूरेचत्तार्यच्छन्त्सुह्रहं नयदिनक्षत् । अस्माकुंशन्नपरिशूरविश्वतोदुर्मादपीष्टवि
 श्वतः ॥ २१ ॥ (११९।७) उभेपुनामिरोदसीऽऽकृतेनद्रुहोदहामिसंमहीरनिद्राः । अभिब्लग्ययन्नहुताऽअमित्रो
 वैलस्थानं परितुह्याऽअशेरन् ॥ अभिब्लग्याचिदद्रिवः ग्रीर्षया तुमतीनां । छिंधिवदरिणापदामहवतूरिणापदां ॥
 अवासांमधवन्जहिशर्षोया तुमतीनां । वैलस्थानकेऽअर्मकेमहावैलस्थेऽअर्मके ॥ यासांति सः पंचाशतोभिब्लैर्गुरपाव
 पः । तत्सुतैमनायतितुक्त्सुतैमनायति ॥ पिशंगभृष्टिमंभृणं पिशाचिमिद्रसंमृण । सर्वरक्षोनिर्वह्य ॥ अवर्महऽईद्र
 दाहृहिश्रुधीनः शूगोचहिद्यौः क्षानभीर्षोऽअद्रिवोघुणाश्वभीर्षोऽअद्रिवः । शुष्मिन्तमोहिशुष्मिर्भुधैरुग्नेभिरियसे । अ
 पूरुपन्नोऽअप्रतीतशूरसत्त्वभिस्त्रिसप्तैः शूरसत्त्वभिः ॥ वनोतिहिसुन्वन्क्षयंपरीणसः सुन्वानोहिष्मायजत्यवद्विपोदेवा

(११९।७) उभेपुनामीति सप्तर्चस्य सूक्तस्य देवोदासिः परुच्छेपइद्राद्यात्रिषुपुद्वितीयादिति सोनुष्टुभः पचमीगायत्रीपष्ठीद्युतिः सप्तम्यष्टिः

नामवद्विषः । सुन्वानऽइत्तिषासतिसहस्रावाज्यवृतः । सुन्वानयेद्रौदत्याभुवर्गयिददात्याभुवै ॥ २२ ॥ (१२०११)
 आत्वाजुवोरारह्णाऽअभिप्रयोवायोवहृत्विहृत्पर्वपीतयेसोमस्यपर्वपीतये । ऊर्ध्वतिऽअनुसुनृतामनस्तिष्ठतुजानती ।
 नित्रुत्वतारथेनायाद्विद्रावनेवायोमखस्यद्रावने ॥ मंदंतुत्वामंदिनोवायुविंदोस्मत्क्राणासःसुकृताऽअभिद्यवोगोभिः
 क्राणाऽअभिद्यवः । यद्धक्राणाऽइरुध्यैदक्षंसचैतऽऊतयः । सग्रीचीनानिनुतौद्रावनेधियुऽपब्रुवतऽईधियः ॥ वायुयु
 केरोहितावायुरेकरुणावायूरथैऽअजिराधुरिवोद्धेवाहिष्ठाधुरिवोद्धेवे । प्रवोधयापुरंधिंजारऽआसंसतीमिव । प्रचक्षयरो
 दसीवासयोपसःश्रवसेवासयोपसः ॥ तुभ्यमपासःशुचयःपरावर्तिभद्रावस्त्रातन्वतेदंसुरक्षिमपुचित्रानव्येषुरक्षिमेषु ।
 तुभ्यधेनुःसंवदुघाविश्ववसूनिदोहते । अजनयोमरुतोवक्षणाभ्योद्विषऽआवक्षणाभ्यः ॥ तुभ्यंशुक्रासःशुचयस्तुर
 ण्यवोमदेपन्नाऽइपणंतमूर्ण्यपाभिपंतमूर्ण्यः । त्वांत्सारीदसमानोभर्गमीद्वेतक्कवीथे । त्वंविश्वस्माद्भुवनात्पासिधर्म
 णासुर्यात्पासिधर्मेणा ॥ त्वनोवायवेयामपूव्यःसोमानांप्रथमःपीतिमहंसिसुतानांपीतिमहंसि । उतोविहुत्मेतीनांवि
 शांववर्जुषीणां । विश्वाऽइत्तैधेनवोदुहऽआशिर्गंधतंदुहतऽआशिरेम ॥ २३ ॥ (१२०१२) स्त्रीर्णवहिरिति नवर्चससूक्त
 (१२०११) आत्वाजुवदतिपडुचससूक्तस्यैवोदासिःपरुच्छेपोवायुरत्यष्टिरत्याष्टिः । (१२०१२) स्त्रीर्णवहिरिति नवर्चससूक्त

वीतयेसहस्रेणनियुतानियुत्वतेशतिनीभिर्नियुत्वते । तुभ्यहिपूर्वपीतयेदेवादवायेमिरे । प्रतैसुतासोमधुमंतोऽअस्थि
 रन्मदयिक्तत्वेऽअस्थिरन् ॥ तुभ्यायंसोमःपरिपूतोऽअद्रिभिःस्पार्हावसानःपरिकोशमर्पतिशुक्रावसानोऽअर्पति ।
 तवायंभागऽआयुषसोमोदेवेषुहूयते । वहवायोनिन्युतोयाह्यस्सयुर्जुपाणोयाह्यस्सयुः⁺ ॥ आनोनिन्युद्भिःशुतिनीभिर्
 ध्वरंसहस्रिणीभिरुपयाहिवीतयेवायोहव्यानिवीतये । तवायंभागऽऋत्वियःसरदिमःसूर्येसचा । अध्वर्युभिर्भरमाणा
 ऽअयंसतवायोशुक्राऽअयंसत ॥ आवारथोनियुत्वान्वक्षदर्वसेभिप्रयांसिसुर्धितानिवीतयेवायोहव्यानिवीतये । पिब
 तंमध्वोऽअंधसःपूर्वपेयंहिवांहितं । वायवाचंद्रेणराधसागर्तमिंद्रश्चराधसागर्तं ॥ आवांधियोववृत्तुरध्वरोऽउपेममि
 दुममृजंतवाजिनमाशुमल्यंनवाजिनं । तेषापिक्तमस्सयुऽआनोर्गंतमिहोत्या । इंद्रवायूसुतानामद्रिभिर्युवंमदायवा
 जदायुवं⁺ ॥ २४ ॥ इमेवांसोमाऽअस्वासुताऽइहाध्वर्युभिर्भरमाणाऽअयंसतवायोशुक्राऽअयंसत । एतेवामभ्यसृक्ष
 ततिरःपुवित्रमाशवः । युवायवोतिरोमण्यव्यथासोमसोऽअत्यव्यथा ॥ अतिवायोससतोयाहिशर्भतोयत्रावावदति
 तत्रगच्छतंगहमिंद्रश्चगच्छतं । विसूनुताददेशेरीयतेघृतमापूर्णयानियुतोयाथोऽअध्वरमिंद्रश्चयाथोऽअच्वर⁺ ॥ अत्राहुत
 ईहेथेमध्वऽआहुतिमभ्वत्थमुपतिष्ठंतजायवोस्मेतैसलुजायवः । साकंगवःसुर्वतेपच्यतेयवोनेतैवायऽउपदस्यतिधेनवो
 नापदस्यतिधेनवः ॥ इमेयेतेसुवायोवाहोऽजसोतर्नदीतेपतयत्युक्षणोमहित्राधंतऽउक्षणः । धन्वन्विद्येऽअनाशवोजीरा

श्चिदगिरौकसः । सूर्यस्येवरश्मयोदुर्नियंतवोहस्तयोर्दुर्नियंतवः ॥ २५ ॥ (१।२०।३) प्रसुज्येष्टं निचिराभ्यांवृहन्नमो
 हव्यंमतिंभरतामृळयद्वास्वादिष्टंमृळयद्भ्यां । तासञ्चाजाघृतासुतीयज्ञेयज्ञऽउपस्तुता । अथैनोःक्षत्रंनकुतंश्चनानाधुपैदेव
 त्वंनूचिदाधुपै ॥ अदर्शिगतुरुरवेवरीयसीपंथाऽऽकृतस्यसम्यंस्तरिमाभिश्चक्षुर्भगस्यरश्मिभिः । द्युक्षंमित्रस्यसादनमर्थ
 म्णोवरुणस्यच । अथादधातेवृहदुक्थ्यं१वयंऽउपस्तृत्यवृहद्वयः । ज्योतिष्मतीमदितिधारयत्क्षितिस्वर्वतीमासचेते
 द्विवेदिवेजागवांसद्विवेदिवे । ज्योतिष्मत्क्षत्रमाशातेऽआदित्यादानुनस्पती । मित्रस्तयोर्वरुणोयातयज्जनोर्यमायातु
 यजनः ॥ अयंमित्रायवरुणायशंतमःसोमोभूत्ववपानेष्वामगोदेवोदेवेष्वाभगः । तंदेवासोऽजुषेरतुविश्वेऽअद्यासजोष
 सः । तथाराजानाकरथोयदीमहऽऽकृतावानायदीमहे ॥ योमित्रायवरुणायविघ्नजनोनर्वाणंतंपरिपातोऽअंहसोद्वा
 श्वांसंमर्तमंहसः । तमर्थमाभिरक्षत्यृज्यंतमनुव्रतं । उक्थैर्यऽएनोःपरिभूपतिव्रतंस्तोमैराभूयतिव्रतं+ ॥ नमोद्विवेबु
 हूतेरोदसीभ्यामित्रायवोचंवरुणायमीहुषेसुमुळीकार्यमीहुषे । इंद्रमग्निमुपस्तुहिद्युक्षमर्थमणंभगं । ज्योग्जीवंतःप्रज

(१।२०।३) प्रसुज्येष्टमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य दैवोदासि. परुच्छेपो मित्रावरुणौ नमो दिव इत्यस्यारोदसी मित्रावरुणे द्वाभ्यर्थमभगसोमा
 देवताः ऊती देवानामित्यस्या देवमरुद्गमि मित्रावरुणमवन्तो देवता अत्यष्टिः अंत्यात्रिष्टुप् ।

न्महःसत्रैराजैः पुरुतु चमौणिहं मित्रं नवमैत्रावरुणं हि जागंतमैत्र्याद्या युवंससयजामहे चतुष्कं विष्णोः षड्विष्णवां हि
 प्रवोजागंतं त्वैद्रश्चाद्यास्तु चौभवं चावोधिषळाश्विनं त्वं त्ये त्रिष्टुभौ ॥ २ ॥
 हरिः ३ ओम् (१२०१४) सुषमाया तमाद्रिभिर्गोश्रीतामत्सराऽइमे सोमा सोमत्सराऽइमे । आराजानादि विस्पृशास्मन्नागं
 तमुपनः । इमे वा मित्रावरुणागवाशिरः सोमाः शुक्रागवाशिरः ॥ इमऽआयातमिदं वः सोमा सोदध्याशिरः सुता सोदध्या
 शिरः । उत वा मषसो वधिसाकं सूर्यस्य रश्मिभिः । सुतो मित्राय च रुणा यपीतये चारुं कृताय पीतये ॥ तां वा धेनुं न वासरीमं शु
 दुहं त्याद्रिभिः सोमं दुहं त्याद्रिभिः । अस्मन्नागं तु मुपनो वा सोम पीतये । अयं वा मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोमऽआपीतये
 सुतः⁺ ॥ १ ॥ (१२०१५) प्रप्रपूष्णस्तु विजातस्य शस्यते महित्वमस्य तव सोनतं दते स्तोत्रमस्य नतं दते । अर्चामि सुन्नयन्नहमं
 त्यांति मयो भुवं । विश्वस्य यो मनऽआयुये मखो देवऽआयुये मखः⁺ ॥ प्रहित्वा पूषन्नजिरं नयामनि स्तोमेभिः कृण्वऽऋ
 णवो यथा मृधऽउच्छोनपीरो मृधः । हुवेयत्त्वा मयो भुवं देवं सख्याय मर्त्यः । अस्माकं मां षान्द्वन्निनस्काधिवा जेषु द्युमि
 नस्काधि ॥ यस्य ते पूषन्सख्येर्विपन्यवः क्रत्वा चित्संतो वसा बुभुजिरऽइति क्रत्वा बुभुजिरे । तामनुत्वा नवीयसीं नियुतं
 रायऽईमहे । अहं लमानऽउरुशंससरी भववा जेवा जेसरी भव ॥ अस्याऽऊषुणऽउपसातये भवो हेलमानोरारि वाऽअजा

(१२०१४) सुपुमेति त्वचस्य सूक्तस्य दैवो दासिः परच्छेपो मित्रावरुणावतिशक्नोतीति चतुर्नचस्य सूक्तस्य

श्वश्रवस्यतामजाश्व । ओपुत्वाववृतीमहिस्तोमैर्भिदस्साधुभिः । नहिल्वापूपन्नतिमन्यऽआधुणेनतेसख्यमपह्नुवे⁺ ॥
 २ ॥ (११२०१६) असुश्रौपद्पुरोऽअग्निधियादधऽआनुतच्छर्धोदिव्यवृणीमहऽइद्रवायूवृणीमहे । यद्धक्राणा
 विवस्वतिनाभांसदायिनव्यसी । अधप्रसून्ऽउपयंतुधीतयोदेवोऽअच्छानधीतयः ॥ यद्धल्यन्मित्रावरुणावृतादध्या
 द्रुदाधेऽअनृतस्वेनमन्युनादक्षस्यस्वेनमन्युना । युवोरित्थाधिसद्मास्वपश्यामहिरण्यथं । धीभिश्चनमनसास्वेभिर्एक्षभिः
 सोमस्यस्वेभिर्एक्षभिः ॥ युवांस्तोमैर्भिदेवयंतोऽअश्विनाश्रावर्यतऽइवृश्लोकमायवौयुवांहव्याभ्याइयवः । युवोर्विश्वा
 ऽअधिअत्र्यःपृक्षश्चब्रिश्चवेदसा । प्रपायंतैवांपवयोहिरण्ययेरथेदसाहिरण्यथे ॥ अचेतिदस्त्राव्युनाकमृण्वथोयंजते
 वारंययुजोदिर्विष्टिष्वध्वस्मानोदिर्विष्टिषु । अर्धिवांस्यामवंधुरेर्धेदसाहिरण्यये । पथेवयंतोवनुशासतारजोजसाशा
 सतारजः ॥ शचीभिर्नःशचीवसूदिवानकंदशस्यतं । मावोरातिरुपदसत्कदाचुनास्मद्भासिःकदाचन⁺ ॥ ३ ॥ वृपन्नि

देवोदासिःपरुच्छेपःपूपात्यष्टिः । (११२०१६) अस्तुश्रौपडिलेकादशचैस्यसूक्तस्यदैवोदासिःपरुच्छेपआद्याविश्वेदेवाःद्वितीयाया
 मित्रावरुणौतृतीयादितिमृणामाश्विनौपष्टयाइद्रःसप्तम्याअग्निरष्टम्यामरुतोनवम्याइन्द्राभीदशम्यावृहस्पतिरत्यायाविश्वेदेवाअत्यष्टिःपंचमी
 पुनृत्यत्यात्रिष्टुप् । (वैश्वेदेवमेतत्सूक्तम् । अत्रप्रलेकंदेवताविभागस्तत्त्वाकरएवपठितः । अवयैवदिशासर्वत्रापिवैश्वेदेवसूक्तेदेवताविभागः
 कृतोऽन्यदतिहितमनुज्ञा । यथाह—एवमन्यासामपिसूक्तप्रयोगैवैश्वेदेववं सूक्तमेदप्रयोगेतुयल्लिंगासादेवतेति ।)

द्रवृषपाणासु इदं वऽइमे सुताऽआर्द्रिषु तासऽउद्भिदऽसु । तेषां मंदं तु दावनेमहे चित्राय राधसे । गी
 र्भिर्गिरिर्वाहुः सत्वमानऽआर्गहि सुमृलीको नऽआर्गहि ॥ ओषणोऽअग्ने शृणु हित्व मीळितो देवेभ्यो ब्रवसियज्ञियेभ्यो राज
 भ्यो यज्ञियेभ्यः । यद्धृत्यामं गिरोभ्यो धेनुं देवाऽअदत्तन । वितानुहेऽअर्यमाकर्तरी सचाँऽएष तां वेदमे सचाँ ॥ मोषुवो
 ऽअस्मदभितानि पौस्यासनाभूवन् द्युन्ना निमोतज रिरुस्सत्परोतज रिरिषुः । यद्धश्चित्रयुगे युगे न व्यंघो पादमर्त्यं । अस्मा
 सुतन्मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरं ॥ दध्यङ्गमे जनुपुं पूवोऽअंगिराः प्रियमेधः कण्वोऽअत्रिर्मनुर्विदुस्ते मे पूर्वमे नुर्वि
 दुः । तेषां देवेष्वायतिरस्माकं तेषु नाभयः । तेषां पुदे न म ह्या न मे गिरैर्द्राघ्नीऽआनमे गिरा⁺ ॥ होता यक्षह्वनि नो वं त वार्य
 बृहस्पतिर्यजति वेनऽउक्षभिः पुरुवारैर्भिरुक्षभिः । जगन्मादुरऽआदिशं श्लोकमद्रे रधत्सना । अधारय दुरैर्दानि सुक्र
 तुः पुरुसङ्गा नि सुक्रतुः ॥ ये देवा सो दिव्ये कादशस्थ पृथिव्या मध्ये कादशस्थ । असुक्षितो महि नैकादशस्थ ते देवा सो यज्ञ
 मिमं जुषध्वं ॥ ४ ॥ (१२११) वेदि पदे प्रियर्धमाय सुद्युते धासि मि व प्रभरा यो नि मन्त्रये । वस्त्रेणे व वासया मन्मना
 शुचिं ज्योती रं शुक्रवर्णं तमो हनं ॥ अभिद्विजन्मार्नि वृदन्न मृत्यु ते सं वत्स रे वा बहु जग्धमी पुनः । अन्यस्यासा जिह्वया जे
 न्यो वृषान्यश्न्ये न वनि नो मृष्ट वारणः⁺ ॥ कृष्णप्रतौ विविजेऽअस्य सक्षिताऽउभा तरे तेऽअभिमातरा शिशुं । प्राचा जिह्वं

(१२११) वेदिषट् इति त्रयोदश च सूर्यसूक्तस्यौ च ऋयोदीर्घतमा अग्निर्जगती अत्येद्वे त्रिष्टुभौ दशमी त्रिष्टुब्वा ।

ध्वस्यैतत्तृपुच्युतमासाच्यंकुपयंवर्धनंपितुः⁺ ॥ ममध्वोऽमनवेमानवस्यतेरघुदुर्वः कृष्णसीतासऽकुजुर्वः । असमनाऽ
 अजिरासोरघुष्यदोवातजूताऽऽपयुज्यंतऽआशवः ॥ आदस्यतेध्वस्यैतोवृथरेतेकृष्णमभ्यंमहिवर्पः करिक्तः । यत्सी
 महीमवनिग्राभिमर्मुशदभिश्चसस्तनयन्नैतिनानदत् ॥ ५ ॥ भूपन्नयोधिबन्धपुनन्नतेवृषेवपत्नीरभ्यैतिरोरुवत् ।
 ओजायमानस्तन्वश्चशृभलेभीमोनशृंगादविधावदुर्गृभिः ॥ ससंस्तिरोविष्टिरः संगभायतिजानन्नेवजानतीनित्यऽआ
 शये । पुनर्वर्धतेऽअपियंतिदेव्यमन्यद्वर्पः पित्रोः कृण्वतेसचो ॥ तमद्रुर्वः केशिनीः संहिरैभिरऽऽर्ध्वस्तस्थर्मन्त्रयीः प्राय
 वेपुर्नः । तासांजराग्रमंचन्नैतिनानददसंपरंजनयन्जीवमस्तंतं ॥ अधीवासं परैमातूरिहन्नहवुविग्रेभिः सत्त्वभिर्यातिवि
 ज्रयः । वयोदधत्पुद्वतेरेरिहत्सदानुदयेनीसचतेवर्तनीरहं ॥ अस्माकमेमेमघवत्सुदीदुह्यधुश्वसीवान्वृपभोदमूनाः ।
 अवास्याशिञ्जुमतीरदीदेवमेवयुत्सुपरिजभुराणः ॥ ६ ॥ इदमेमेसुधितंदुर्धितादधिप्रियादुचिन्मन्मनः प्रेयोऽअस्तुते ।
 यत्तैश्चक्रंतन्योऽरोचतेशुचितेनास्मभ्यैवनसेरल्लमात्वं⁺ ॥ रथायनावमुतनौगहायनित्यारित्रांपदतींऽरास्यन्ने । अस्मा
 कंवीराऽऽवृतनौमुधोनोजनौश्चयापारयाच्छर्मयाचं ॥ अभीनोऽअग्नऽउक्थमिजुगुर्याद्यावाक्षामासिंधवश्चस्वर्गताः ।
 गव्यंयव्यंयंतौदीर्घाहेवंवरमरुण्योवरंत ॥ ७ ॥ (१।२१।२) वळित्थातद्वपुषेधादिदर्शतेदवस्यभर्गः सहसोयतोजनं ।
 (१।२१।२) वळित्थेतित्रयोदशर्चस्यसूक्तसौचय्योदीर्घतमाअभिर्जगतीअलेद्वेन्निष्टभौ ।

यदीमुपुहरेतेसाधतेमतिकृतस्यधेनाऽअनयंतसस्रुतः ॥ पृक्षोवपुःपितुमात्रित्यऽआशयेद्वितीयमाससाशिवसुमातुषु ।
 तृतीयमस्यपृषभस्यदोहसेदशप्रमातिजनयंतयोषणः ॥ निर्यदौबुध्नान्महिपस्यवर्षसऽईशानासःशर्वसाकृतसरयः । यदी
 मनुप्रदिवोमध्वऽआधेवगुह्रासंतमातरिश्वामथायति ॥ प्रयत्पुःपरमात्रीयतेपर्यापृक्षुधोवीरुधोदसुरोहति । यदी
 दस्यजनुषंयदिन्वत्तऽआदिद्यविष्टोऽअभवद्वृणाशुचिः ॥ आदिन्मातृराविशद्यास्वाशुचिरहिंस्यमानऽअविंयाविवावृ
 धे । अनुयत्पूर्वाऽअरुहत्सनाजुवोनिनव्यसीष्ववरासुधावते ॥ ८ ॥ आदिद्धोतरिवृणतेदिविष्टिषुभगमिवपपृचाना
 संऽक्रंजते । देवान्यत्कत्वमिज्मनापुरुष्टोमर्तंसंविश्वधावेतिधावसे ॥ वियदस्याद्यजतोवातचोदितोह्वारोनवक्काज
 रणाऽअनाकृतः । तस्यपत्नमन्दुक्षुषःकृष्णजंहसःशुचिजन्मनोरजऽआव्यध्वनः ॥ रथोनयातःशिकभिःकृतोद्यामंगेभि
 ररुषोभिरायते । आदस्यतेकृष्णासोदक्षिसुरयःशूरस्वेवपेथादीपतेवयः ॥ त्वषाह्येवरुणोधतवतोमित्रःशाशुद्रेऽअ
 र्यमासदानवः । यत्सीमनकृतुनाविश्वथाविभुराक्षनेभिःपरिभूरजायथाः ॥ त्वमशेषशशमानायसुन्वतेरत्नयविष्टदेव
 तातिमिन्वसि । तंत्वानुनव्यसहसोयुवन्वयंगमकारेमहिरत्नधीमहि ॥ अस्मेरयिनस्वर्धदभूनसंगंधंनपपृचासिध
 र्णीसं । रश्मौऽरिवयोयमतिजन्मनीऽउभेदेवानांशंसमतऽआचसकृतुः ॥ उत्तनःसुद्योत्माजीराश्वोहोतामंद्रःशृणवच्चं
 द्ररथः । सनोनेष्वेषतमैरमूरोभिवांसुवितंवस्योऽअच्छ ॥ अस्ताव्यग्निःशिमीवह्निरकैःसास्त्राज्यायप्रतरंदधानः ।

अमीचयेमधवानोवयंचमिहंनसूरोऽअतिनिष्टन्धुः ॥ ९ ॥ (१२१३) समिद्धोऽअग्नेऽआवहदेवोऽअद्यतस्तुचे ।
 तंतुतनुष्वपर्थ्यसुतसौमायद्राशुपे ॥ द्यूतवतमुपमासिमधुमंततनूनपात् । यज्ञंविप्रस्यमार्वतःशशमानस्यद्राशुपः ॥
 शुचिःपावकोऽअर्द्धतोमध्वायज्ञंमिमिक्षति । नराशंसखिरादिवोदेवेषुयज्ञियः ॥ इल्लितोऽअग्नेऽआवहदेवचित्रमिह
 प्रियं । इयंहित्वाभतिर्ममाच्छासिह्वच्यते ॥ स्तृणानासोयतस्तुचोवर्हिर्यज्ञेस्वध्वरे । वृंजेदेवव्यचस्तममिन्द्रायशर्मस
 प्रथः ॥ विश्रयंतामृतावृधःप्रयैदेवेभ्योमहीः । पावकासःपुरुस्पृहोद्वारोदेवीरसश्चतः ॥ १० ॥ अभंदमानेऽउपके
 नकोषासासुपेशसा । युह्वीऽऽकृतस्यमातरासीदंतांवर्हिरासुमत् ॥ मंद्रजिह्वाजुगवर्णीहोतारोदेव्याकवी । यज्ञंनोय
 क्षतामिमंसिधमद्यादिविस्पृशं ॥ शुचिर्देवेवर्षिताहोत्रामरुत्सभारती । इळासरस्वतीमहीवर्हिःसींदतुयज्ञियाः ॥ त
 नस्तुरीपमभ्रुतंपुरुवारंपुरुत्मना । त्वष्टापोषायविष्यतुरायेनाभनोऽअस्मयुः ॥ अवसुजज्ञपुत्समनादेवान्यक्षिवनस्य
 ते । अग्निर्हव्यासुपूदतिदेवोदेवेषुमोर्धरः ॥ पूषण्वतैमरुत्वतेविश्वदेवायवायवे । स्वाहागायत्रवेपसेहव्यमिन्द्रायकर्त
 न ॥ स्वाहाकृतान्यागृह्यपहव्यानिवीतये । इंद्रागहिश्रुधीहवत्वांहवतेऽअध्वरे ॥ ११ ॥ (१२१४) प्रतव्यसी

(११२१३) समिद्धोअग्नेइतित्रयोदशस्यसूक्तस्यौचय्योदीर्घतमाऋषिःइध्मास्तनूपात्रराशंसइळोवर्हिर्देवीद्वारउपासानकादेव्यौहोतारौ
 सरस्वतीळाभारत्यस्त्वष्टावनस्पतिःस्वाहाकृतयइतिक्रमेणदेवताःअंत्यायाइंद्रोनुष्टुप् । (१२१४) प्रतव्यसीमित्यष्टस्यसूक्तस्यौचय्यो

ऋक्सं.

अ. २ अ. २

॥ १३ ॥

नव्यसीधीतिमुग्रयेवाचोमतिंसहसःसनवैभरे । अपानपाद्योवसुभिःसहप्रियोहोतापृथिव्यांन्यसीदहृत्वियः । सजायं
मानःपरमेव्योमन्याविरिभ्रिभवन्मातरिभ्वने । अस्यकृत्वासमिधानस्यमज्मनाप्रद्यावाशोचिःपृथिवीऽअरोचयत् ॥
राः ॥ यमैरिरेभृगवोविश्ववेदसंनाभापृथिव्याभुवनस्यमज्मना । अग्निर्तंगीभिर्हनुहिस्वऽआदमेयऽएकोवस्वोवरुणो
नराजति ॥ नयोवरायमरुतामिवस्वनःसेनैवसष्टादिव्यायथाशानिः । अग्निर्जैभैस्तिगितैरिन्तिभर्वतियोधोनशत्रन्त्सव
नान्यृजते ॥ कुविन्नोऽअग्निरुचयस्ववीरस्रुक्कुविद्वसुभिःकाममावरत् । चोदःकुवितुतुज्यात्सातयेधियःशुचिप्रती
कंतमयाधियारुणे ॥ घृतप्रतीकंवऽकृतस्यधर्षदमग्निमित्रंनसमिधानऽकृजते । इंधानोऽअकोविदथैपुदीर्घच्छक्रवर्णा
मुर्दुनोयंसतेधियं ॥ अग्रयुच्छन्नग्रयुच्छन्नैरग्नौशिर्वेभिर्नःपायुभिःपाहिशग्मैः । अर्दब्धेभिरहृपितेभिरिष्टेनिमिषद्भिः
परिपाहिनोजाः+ ॥ १२ ॥ (१।२।१५) एतिप्रहोताव्रतमस्यमाययोर्ध्वोर्दधानःशुचिपेशसंधियं । अभिब्रुवचःक्रम
तेदक्षिणावृतोयाऽअस्यधामग्रथमंहनिंसते ॥ अभीमतस्यदोहनाऽअनूपतयोनौदेवस्यसदनेपरिवृताः । अपामपस्थेवि
भृतोयदावसदधस्वधाऽअधयद्याभिरायते ॥ शुयूषतःसर्वयसातदिद्वपुःसमानमर्धवितरित्रतामिथः । आर्दीभगोन
दीर्घतमाअग्निर्जगतीअंत्याविष्टुप् । (१।२।१५) एतीतिसप्तर्चस्यसूक्तस्योदीर्घतमाअग्निर्जगती ।

मंडलं १

अनु. २१

॥ १३ ॥

हव्यः समस्मदावोद्धुर्नरस्मीन्त्समयंस्तसारथिः ॥ यमीद्वासर्वयसासपर्यतः समानेयोनामिथुनासमोकसा । दिवानन
 कैपलितोयुवाजनिपूरुचरन्नजरोमानुषायुगा⁺ ॥ तमीहिन्वतिधीतयोदशुविशोदेवंमतीसऽऽतयेहवामहे । धनोर
 धिप्रवत्सऽआसऽऽकण्वत्यभिब्रजद्भिर्वयुनानवाधित ॥ त्वंह्यग्नेदिव्यस्यराजसित्वं पार्थिवस्यपशुपाऽईवुत्तना । एर्नतऽ
 एतेबृहतीऽअभिभ्रियाहिरण्ययीवक्करीबुहिराशाते ॥ अग्नेजुषस्वप्रतिहृतद्वचोमद्रुस्वधावऽऽकृतजातसुकृतो । योवि
 श्वतः प्रत्यङ्मुखः सिदर्शतोरण्वः संहृष्टौपितुमौऽईवक्षयः ॥ १३ ॥ (१।२।१६) तंपृच्छतासजगामासवेदुसाचिकित्वाऽईय
 तेसान्वीयते । तस्मिन्त्संतिप्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः सवार्जस्यशवसः शुष्मिणस्पतिः ॥ तमितृच्छंतिनसिमोविपृच्छतिस्वे
 नेवधीरोमनसायदग्रभीत । नमृष्यतेप्रथमंनारंपर्वचोस्यकत्वासचतेऽअग्रद्वपितः ॥ तमिह्च्छंतिजुह्वस्तमर्वतीवि
 श्वान्येकः शृणवद्वचांसिमे । पुरुषैस्ततुरिर्यज्ञसाधनोच्छिद्रोतिः शिशुरादत्तसंरभः ॥ उपस्थार्थंचरतियत्समारतसद्यो
 जातस्तत्सारयुज्येभिः । अभिश्वांतंमृशतेनाद्यैर्मदेयदूर्गच्छत्युशतीरपिष्ठितं⁺ ॥ सईमगोऽअप्यौवनगुरुपत्वच्युपम
 स्यानिर्धायि । व्यब्रवीद्वयुनामर्त्यैभ्योशिर्विद्वोऽऽकृतचिद्धिसत्यः⁺ ॥ १४ ॥ (१।२।१७) त्रिमूर्धनससरश्चिमगृणी
 पेनूनमग्निपित्रोरुपस्थे । निषत्तमस्यचरतोभ्रुवस्यविश्वविद्वोरोचनार्पप्रियांसं ॥ उक्षामहोऽअभिवक्षऽएनेऽअजरस्त
 (१।२।१६) तपृच्छतेतिपचर्वस्यसूक्तस्यौचथ्योदीर्घतमाअभिर्जगतीअत्यात्रिष्टुप् । (१।२।१७) त्रिमूर्धनमितिपंचर्वस्यसूक्तस्यौचथ्यो

ऋक्सं.

अ. २ अ. २

॥ १४ ॥

स्थावितऽक्रतिर्ऋवः । उव्याः पदो नि दधातिसानौरिहं त्यधोऽअरुपासोऽअस्य
नूविचरतः सुमेके । अनपवृज्योऽअध्वनो मिमाने विश्वान्केतोऽअधि महोदधाने
रक्षमाणाऽअजुयं । सिषासंतः पर्यपश्यंत सिंधुमाविरेभ्योऽअभवत्सूर्योऽनन् ।
महोऽअभीयजीवसे । पुरुत्राय दभ्वत्सूरैभ्यो गभैभ्यो मधवा विश्वदर्शतः ॥ १५ ॥ (१२१८) कथा तेऽअग्ने श चर्यंतऽआ
योर्देदाशुवर्जिभिराशुषाणाः । उभेयत्तो केतनये दधानाऽऋतस्य सार्मन्नं चर्यंत देवाः ।
हिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः । पीयति त्वोऽअनु त्वो गृणाति वंदारुस्ते त्वं वंदेऽअग्ने ॥
धंदुरितादरक्षन् । ररक्षतान्त्सुकृतो विश्ववे द्वादित्सु त इन्द्रिपवो नाहं देभुः ॥
मूर्चयति द्रुयेन । मंत्रो गुरुः पुनरस्तु सोऽअस्माऽअनु मृक्षीष्ट त्वं दुरुक्तैः ।
ह्रयेन । अतः पाहिस्तव मानस्तु वंत मग्ने मार्किनो दुरिताय धायीः ॥ १६ ॥ (१२१९)
तारं विश्वाप्सु विश्वेद्व्यं । नियं दुधुर्मनुष्या सुविधुस्वर्णं चित्रं वपुषे विभारं ॥
स्य चाकन् । जुषंत विश्वान्यस्य कर्मोपस्तुतिं भरमाणस्य कारोः ।
दीर्घतमा अभिब्रिह्य । (१२१८) कथा त इति पंचस्य सूक्तस्यौ चथ्यो दीर्घतमा अभिब्रिह्य । (१२१९) मथी च दीप्ति पंचस्य सूक्त

मंडलं. १

अनु. २१

॥ १४ ॥

सः । प्रसूनयंतगभयैतड्डृष्टावश्वसोनस्थौरारहणाः⁺ ॥ पुरुणिदुस्मोनिरेणातिजभैराद्रौचतेवनडआविभार्वा ।
 आदस्यवातोडअनुवातिशोचिरस्तुनशयोमसनामनुधून्⁺ ॥ नयंरिपवोनरिषण्यवोगभेसंतरेपणारेपयंति । अंधाडअ
 पुश्यानदभन्नभिख्यानित्यासड्डेप्रेतारोडअरक्षन् ॥ १७ ॥ (११२११०) महःसरायडएपतेपतिर्दन्निनडइनस्यव
 सुनःपुदडआ । उपध्रजैतमद्रयोविधन्नित्⁺ ॥ सयोवृषानरानरोदस्योःश्रवोभिरस्तिजीवयीतसर्गः । प्रयःसंस्त्राणःशि
 श्रीतयोनौ ॥ आयःपुरंनार्मिणीमदीदेदत्यःकविर्नभन्योडेनार्वा । सूरोनरुरुक्कान्छतात्मा ॥ अभिद्विजन्मात्रीरोच
 नानिबिश्वारजसिथुचानोडअस्थात् । होतायजिष्ठोडअपांसधस्थे ॥ अयंसहोतायोद्विजन्माविश्वाद्दधेवार्योणिश्रव
 स्या । मर्तयोडअस्मैसुतुकोदुदार्य ॥ १८ ॥ (११२१११) पुरुत्वाद्वाश्वान्वोचेरिरन्नेतवस्विदा । तोदस्येवशरण
 डआमहस्य ॥ व्यडनिनस्यधनिनःप्रहृषेचिदररुषः । कृदाचनप्रजिगतोडअदेवयोः ॥ सचंद्रोविप्रमर्त्योमहोव्राधन्त
 मोद्वि । प्रप्रेत्तेडअग्नेवनुषःस्याम ॥ १९ ॥ (११२११२) मित्रंनयंशिम्यागोषुगव्यवःस्वाधोविदधेडअप्सुजीर्जनन् ।
 अरेजेतारोदसीपार्जसागिराप्रतिप्रियंयजंतजनुषामवः ॥ यद्धृत्यद्वपुरुमीह्रस्यसोमिनःप्रमित्रासोनदधिरेश्वामुवः ।

स्यौचथ्योदीर्घतमाअभिस्त्रिष्टुप् । (११२११०) महःसरायइतिपंचस्यसूक्तस्यौचथ्योदीर्घतमाअग्निर्विराट् । (११२१११) पुरुत्वेतिव
 चस्यसूक्तस्यौचथ्योदीर्घतमाअभिरुष्णिक् । (११२११२) मित्रंनयमितिनवचस्यसूक्तस्यौचथ्योदीर्घतमामित्रावरुणाद्यायामित्रोजगती ।

अधुऋतुं विदत्तं गतुमर्चतः उत श्रुतं वृषणापस्त्यावतः ॥ अवाँ भूषन्क्षितयो जन्मरोदस्योः प्रवाच्यं वृषणादक्षसेमहे ।
यदीमताय भरथो यद्वैते प्रहोत्रया शिम्यावीथोऽअचरं⁺ ॥ प्रसाक्षितिरसुरयामहिप्रियऽऋतावानावृतमाघौषथोवृहत् ।
युवंद्विवोवृहतोदक्षमाभुवंगांनधुर्युपयुजाथेऽअपः⁺ ॥ महीऽअत्रमहिनावारमृण्वथोरेणवस्तुजऽआसन्नन्धेनवः । स्वरं
तितऽऽर्षपरतातिसूर्यमानिसुर्चऽऽषस्तक्कवीरिव ॥ २० ॥ आवाँमतायकुंशिनैरनूषतमित्रयत्रवरुणगतुमर्चथः ।
अवत्मनांसजतं पिन्वतं धियोयुवंविप्रस्यमन्मनामिरज्यथः ॥ योवाँयज्ञैः शशमानो हृदाशतिकुविहोतावर्जतिमन्मसाधं
नः । उपाहुतंगच्छथोवीथोऽअध्वरमच्छागिरः सुमतिगंतमस्मयू⁺ ॥ युवाँयज्ञैः प्रथमागोभिंरंजतऽऋतावानामनसो न
प्रयुक्क्षिषु । भरंतिवाँमन्मनासंयतागिरो हृप्यतामनसारेवदाशथे ॥ रेवद्वयौ दधाथे रेवदाशथे नरमायाभिरितऽऊ
तिमार्हिनं । नवाँद्यावोहभिर्नोतसिंधवो न देवत्वं पणयो नानश्चुर्मधं⁺ ॥ २१ ॥ (१२११३) युवंवस्त्राणि पीवसाव
साथेयुवोरच्छिद्रामंतवो हसर्गाः । अवाँतिरतमृतानि विश्वऽऋतेन मित्रावरुणासचेथे ॥ एतच्चनत्वो विधिं केतदेषां स
त्योमंत्रः कविशस्तऽऋधावान् । त्रिरश्रिहंति चतुरश्रि रुद्रो देवनिदो ह प्रथमाऽअर्जून ॥ अपादेति प्रथमापद्धतीनां कस्त
द्वाँमित्रावरुणाचिकेत । गर्भो भारं भरतृत्याचिदस्यऽऋतं पिपत्यं नृन्ति नारीत् ॥ प्रयंतमित्यरिं जारं कुनीनां पश्यामसिनो

(१२११३) युवंवस्त्राणीतिसप्तर्चस्यसूक्तसौ च श्योदीर्घतमामित्रावरुणौ त्रिष्टुप् ।

प॒नि॒प॒द्य॒मानं । अ॒न॒व॒पृ॒ण॒ण॒वि॒त॒ता॒व॒सा॒नं॑ प्रि॒यं मि॒त्र॒स्य॒व॒रु॒ण॒स्य॒ध॒ाम ॥ अ॒न॒श्वो॒जा॒तोऽअ॒न॒भी॒शु॒र॒वा॒क॒नि॒क॒द॒प॒त॒य॒द॒ध्व॒
 सा॒नुः । अ॒चि॒त्तं॒ब्र॒ह्म॒जु॒षु॒र्यु॒वा॒नः॒प्र॒मि॒त्रे॒ध॒ाम॒व॒रु॒ण॒ग॒ण॒तः ॥ आ॒धे॒न॒वो॒मा॒म॒ते॒य॒म॒व॒ती॒ब्र॒ह्मा॒ग्रि॒यं पी॒प॒य॒न्स॒स्मि॒न्न॒ध॒न॒ ।
 पि॒त्यो॒भि॒क्षे॒त॒व॒यु॒ना॒नि॒वि॒द्वा॒ना॒सा॒वि॒वा॒स॒न्न॒दि॒ति॒मु॒रु॒ये॒त् ॥ आ॒वा॒मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒हु॒व्य॒जु॒ष्टि॒न॒म॒सा॒दे॒वा॒व॒व॒सा॒व॒वृ॒त्यां ।
 अ॒स्मा॒कं॒ब्र॒ह्म॒पृ॒त॒ना॒सु॒स॒ह्याऽअ॒स्मा॒कं॒वृ॒ष्टि॒र्दि॒व्या॒सु॒पा॒रा ॥ २२ ॥ (११२११४) य॒जा॒म॒हे॒वा॒म॒हः॒स॒जो॒षा॒हु॒व्ये॒भि॒र्मि॒त्रा॒व॒रु॒
 णा॒न॒मो॒भिः । धृ॒तै॒र्धृ॒त॒स्त्रुऽअ॒ध॒य॒द्व॒म॒स्मेऽअ॒ध्व॒र्य॒वो॒न॒धी॒ति॒भि॒र्भ॒र॒ति ॥ प्र॒स्तु॒ति॒र्वा॒धा॒म॒न॒प्र॒यु॒कि॒र॒या॒मि॒मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒सु॒वृ॒
 क्तिः । अ॒न॒क्ति॒य॒द्वौ॒वि॒द॒थे॒षु॒हो॒ता॒स॒न्न॒वा॒स॒रि॒र्षे॒ष॒णा॒वि॒र्य॒क्षन् ॥ पी॒पा॒य॒धे॒न॒ुर॒दि॒ति॒क्र॒ता॒य॒ज॒ना॒य॒मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒ह॒वि॒दे॒ ।
 हि॒नो॒ति॒य॒द्वौ॒वि॒द॒थे॒स॒प॒र्य॒न्त्स॒रा॒त॒ह॒व्यो॒मा॒नु॒षो॒न॒हो॒ता॒ ॥ उ॒त॒वा॒वि॒क्षु॒म॒द्या॒स्व॒धो॒गा॒वऽआ॒र्प॒श्च॒पी॒प॒य॒न्ते॒दे॒वीः । उ॒तो॒नो॒ऽ
 अ॒स्य॒पू॒र्व्यः॒प॒ति॒र्द॒न्वी॒तं॒पा॒तं॒प॒र्य॒सऽउ॒स्त्रि॒या॒याः ॥ २३ ॥ (११२११५) वि॒ष्णो॒नु॒कं॒वी॒र्यो॒णि॒ग्र॒वो॒च॒यः॒पा॒र्थि॒वा॒नि॒वि॒
 म॒मे॒र॒जा॒सि । योऽअ॒स्मि॒न्भा॒यु॒दु॒त्तरं॒स॒ध॒स्थं॒वि॒च॒क्र॒मा॒ण॒स्त्रे॒धो॒रु॒गा॒यः+ ॥ प्र॒त॒द्वि॒ष्णुः॒स्त॒व॒ते॒वी॒र्ये॒ण॒म॒गो॒न॒भी॒मः॒कु॒च॒रो॒गि॒
 रि॒ष्टाः । य॒स्यो॒रु॒षु॒त्रि॒षु॒वि॒क्र॒म॒णे॒ष्व॒धि॒क्षि॒यं॒ति॒भु॒व॒ना॒नि॒वि॒श्वा ॥ प्र॒वि॒ष्ण॒वि॒श॒प॒मे॒तु॒म॒न्म॒गि॒रि॒क्षि॒तं॒ऽउ॒रु॒गा॒या॒य॒वृ॒ष्णे ।

(११२११४) य॒जा॒म॒ह॒ति॒च॒तु॒र्गैः॒च॒स्य॒सू॒क्त॒स्यौ॒च॒थ्यो॒दी॒र्घ॒त॒मा॒मि॒त्रा॒व॒रु॒णौ॒त्रि॒ष्टुप् । (११२११५) वि॒ष्णो॒नु॒क॒मि॒ति॒ष॒ट्च॒स्य॒सू॒क्त॒
 स्यौ॒च॒थ्यो॒दी॒र्घ॒त॒मा॒वि॒ष्णु॒स्त्रि॒ष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. २

॥ १६ ॥

मंडलं १

अनु. २१

॥ १६ ॥

यऽइदं दीर्घप्रयतंसस्थमेकोविममेत्रिभिरित्यदेभिः ॥ यस्यत्रीपर्णामधुनापुदान्वक्षीयमाणाः स्वधयामदति । यऽर्चन्नि
धातुपृथिवीमुतद्यामेकोदाधारभुवनानिचिन्वा ॥ तदस्यप्रियमभिपार्थोऽअश्यांनरोयत्रदेवयवोमदति । उरुकमस्यसहिबं
धुरित्याविष्णोःपदेपरमेमच्चऽउत्सः ॥ तावांवास्तून्युष्मसिगमद्यैयत्रगावोभूरिश्रृंगाऽअयासः । अत्राहृतदुरुगायस्य
वृष्णःपरमंपदमवभातिभूरि ॥ २४ ॥ (१।२।१।१६) प्रवःपांतमंधसोधिचायतेमहेश्वरायविष्णवेचार्चत । यासानुनि
यप्रतिधीयमानमिच्छुशानोरस्तुरसनामुरुच्यर्थः ॥ त्वेषमित्यासमरणंशिमीवतोरिद्राविष्णुसुतुपावामुरुच्यति । यामर्त्यो
रंपरंपितुर्नामंतृतीयमधिरोचनेदिवः+ ॥ तत्तदिदस्यपांस्वैरणीमसीनस्यत्रातुरवृकस्यमीह्वः । यःपांश्चिवानिचिभि
द्विगामभिरुरुकमिष्टोरुगायार्जवीवसे ॥ इदंइदस्यक्रमणेस्वहृशोभिरुगायमर्त्योभुरण्यति । तृतीयमस्यनकिरादधर्ष
तिवयश्चनपतयंतःपतत्रिणः ॥ चतुर्भिःसाकनवत्तिचनार्मभिश्चक्रंनवृत्तंव्यर्तोऽरवीविपत् । बृहच्छरीरोविमिमानुऽक्रक
भिर्युवाकुमारःप्रत्येत्याह्वं+ ॥ २५ ॥ (१।२।१।१७) भवामित्रो नशेव्योघृतासुतिर्विभूतद्युऽएवयाऽर्दसप्रथाः ।
(१।२।१।१६) प्रवःपांतमितिपटुचस्यसूक्तस्यौचथ्योदीर्घतमाआद्यानांतिस्त्रुणाभिद्राविष्णुतत्तस्त्रिणंविष्णुर्जगती । (१।२।१।१७)
भवामित्रइतिपंचर्चस्त्रुणांविष्णुर्जगती ।

अधातेविष्णोविदुपाचिदर्थःस्तोमोयज्ञश्चाधोह्रुविष्मता ॥ यःपूव्यायवेधसेनवीथसेसमज्जानयेविष्णविददाशति
 योजातमस्यमहृतोमहिब्रवत्सेदुश्रवोभिर्युज्यचिदुभ्यसत् ॥ तमुत्तोतारःपूर्य्ययथाविदऽकृतस्यगर्भजनुपापिपतेन
 आस्यजानंतोनामचिद्विवक्तनमहस्तेविष्णोसुमतिर्भजामहे ॥ तमस्यराजावरुणस्तमश्चिनाकृतुसचंतमारुतस्यवेधसः
 दाधारदक्षमुत्तममहर्विद्व्रजंचविष्णुःसखिवोऽअपोर्णते ॥ आयोविवायसचथायदैव्यऽइंद्रायविष्णुःसुकुतेसुकुत्तरः ।
 वेधाऽअजिन्वत्रिपथ्यऽअर्धमुतस्यभागेयजमानमभजत् ॥ २६ ॥ (१२२।१) अबोध्यामिज्मऽउदेतिसूर्योव्यु
 पाश्चद्रामह्यावोऽअर्चिषा । आयुक्षातामश्विनायातवेरथंप्रासावीहेवःसविताजगत्पृथक् । यद्यंजाथेवृषणमश्विनारथं
 घृतेर्ननोमधुनाक्षत्रमुक्षतं । अस्माकंब्रह्मपृतनासुजिन्वतंवयंधनाशूरसाताभजेमहि ॥ अर्वाङ्ब्रिचकोर्मधुवाहनोरथो
 जीराभ्योऽअश्विनोर्यातुसुष्टुतः । त्रिवंधुरोमधवाविश्वसौभगःशंनऽआवक्षाद्विपदेचतुष्पदे ॥ आनऽऊर्जवहतमश्विना
 युवंमधुमत्यानःकशयामिमिक्षतं । प्रायुस्तारिष्टंनीरपांसिमृक्षतंसंधतंद्वेयोभवंतंसचामुवा ॥ युवंहुगर्भजगतीषुघत्थोयु
 वनिश्वेषुभुवनेष्वंतः । युवमग्निचवृषणावपश्चवनसर्तौऽरश्विनावैरयेथां ॥ युवंहस्थोभिषजांभेषेभिरथोहस्थोरथ्याइ
 राथ्येभिः । अथोहक्षत्रमर्धघत्थऽउग्रायोवाहविष्मान्मनसादुदाश ॥ २७ ॥ ॥ इतिद्वितीयाष्टकेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥

(१२२।१) अबोध्यामिरितिपट्टचस्यसूक्तस्योचथ्योदीर्घतमाअश्विनौजगत्संलेद्वेनिष्ठुभौ ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ३

॥ १७ ॥

दशमाध्याये वर्गाः २७ सूक्तानि २१ ऋचः १४३ ॥

भ्यामिदं. अधिभ्यामिदं. ३ इन्द्रयेदं. अग्नयइदं. मरुद्भ्यइदं. इन्द्राग्निभ्यामिदं. ३

इच्मायेदं. तनूनपातइदं. नराशंसायेदं. इळ्यायेदं. बर्हिपइदं. देवीभ्योदेवेभ्यइदं. ४

भ्यामिदं. सरस्वतीव्वाभारतीभ्यइदं. त्वष्ट्रइदं. वनस्पतयइदं. स्वाहाकृतीभ्यइदं. उधासानक्ताभ्यामिदं. ४

विष्णवइदं. ६ इन्द्राविष्णुभ्यामिदं. ३ विष्णवइदं. ८ अधिभ्यामिदं. ६ ॥ इति द्वितीये द्वितीयः ॥ २ ॥

वसूअंत्यानुष्टुप्प्रद्यावापंचद्यावापृथिवीयंतुजागतंतुतेहि किमुश्रेष्ठः पठूनाभवं त्रिष्टुवंतमानोद्व्यधिकाश्वस्तुतिस्तु

तृतीयापष्ठौजगत्तयैचक्रंदः ससो नोस्यद्विपंचाशदल्पस्तवंतेतसंशयोत्थापनप्रश्नप्रतिवाक्यान्यत्रप्रायेणज्ञान

मोक्षाक्षरप्रशंसार्चपंचपादंसाकंजानांयद्वायत्रेयंसशिंकेससार्धगर्भगौरिरितिजगत्पुतदंतुवैश्वदेवंतस्याःस

सूर्योवायुश्चकेशिनश्चत्वारिवाग्वार्चइंद्रंमित्रं सौर्योद्वादशेतिसंवत्सरसंस्थकालचक्रवर्णनयस्तेसरस्वत्यैयज्ञेनसा

त्यस्तृचोगस्त्यस्यचशिष्टाइंद्रस्यैकादशीचमरुतांस्त्विद्रोदेवता ॥ ३ ॥

॥ १७ ॥

मंडलं १

अनु. २२

॥ १७ ॥

॥

॥

हरिः३ओम् ॥ (१।२।२) वसूरुद्रापुरुमंतूवृधंतादशस्यतनोवृपणावभिष्टौ । दस्राह्यदेवणऽऔचथ्योवांप्रयत्स
 स्राथेऽअकवाभिरूती+ ॥ कोवांदाशत्सुमतथैचिदस्येवसयथेनमसापदेगोः । जिगतमसरेवतीःपुरंधीःकामप्रेणेव
 मन्साचरंता ॥ युक्तोह्यद्धतौग्यार्यपेरुर्विमध्यैऽअर्णसोधार्यपञ्जः । उर्पवामवःशरणंमियुश्रोनाज्मपतयद्भिरेवैः ॥
 उपस्तुतिरौचथ्यमुरुण्येन्मामामिमपत्त्रिणीविदुग्धां । मामामेधोदशतयश्चितोधाक्प्रयद्धावृद्धस्मनिखादतिक्षां+ ॥
 नमगरन्नद्धौमातृतमाद्रासायदींसुसमुब्धमवाधुः । शिरोयदस्यत्रैतनोवित्तक्षत्स्वयंदासऽउरोऽअंसावपिग्ध ॥ दूर्धत
 मामामतेयोजुजुर्वान्दशमेयुगे । अपामर्थैयुतोर्नव्रह्माभंवतिसारथिः ॥ १ ॥ (१।२।३) प्रद्यावायुजैःपृथिवीऽ
 ऋतावृधामहीस्तुपेविदथैपप्रचेतसा । देवेभिर्गदेवपुत्रेसुदंसंसेत्थाधियावार्याणिप्रभूरतः ॥ उतमन्येपितुर्दुहुमनो
 मातुर्महिस्वतवस्तद्धवीमभिः । सुरतसापितराभूमचक्रतुरुप्रजायाऽअमृतंवरीमभिः ॥ तेसनवःस्वर्पसःसुदंससो
 महीजन्तुर्मातरापूर्वचित्तये । स्थातुश्चसत्यंजगतश्चधर्मणिपत्रस्वपाथःपदमद्धयाविनः ॥ तेमायिनोममिरेसुप्रचेतसो
 जामीसयौनीमिथुनासमौकसा । नव्येनव्यंतंतुमातन्यतेद्विसमुद्रेऽअंतःकवयःसुदीतयः ॥ तद्राधौऽअद्यसवि

(१।२।२) वसूरुद्रादितिपदृचस्यसूक्तस्यौचथ्योदीर्घतमाअश्विनोत्रिषुवंत्यानुष्टुप् । (१।२।३) प्रद्यावायुजैरितिपचर्चस्यसूक्त
 स्यौचथ्योदीर्घतमाद्यावापृथिव्यौजगती ।

ऋक्सं.

अ. २४. ३

॥१८॥

तुर्वरेण्यवयं देवस्य प्रसवेर्मनामहे । असम्यग्वावापृथिवी सुचेतुनारयिधत्तं वसुमंतं शतृग्विनं ॥ ३ ॥ (१।२२।४)
तेहिद्यावापृथिवी विश्वद्यौ भुवऽऋतावरीरजसो धारयत्कवी । सृजन्मनीधिषणोऽअंतरायते देवो देवी धर्मणा सूर्यः शुचिः ॥
उरुव्यचसमहिनीऽअसश्चता पिता माता च भुवनानिरक्षतः । सुष्टुष्टमेव पृष्येऽनरोदसी पितायत्सीमभिरूपैरवासयत् ॥
सवाहिः पुत्रः पित्रोः पवित्रवान्पुनाति धीरो भुवनानि मायया । धेनुं च पृश्निवृषभं सुरेतसं विश्वाहा शुकंपयोऽअस्य दुक्षत ॥
अयं देवानामपसां पस्तमो योजजानरोदसी विश्वशं भुवा । वियोममेरजसी सुकृतयया जरेभिः स्कंभनेभिः समानुचे ॥
तेनैरगुणानेर्महिनीमहि श्रवः क्षत्रं द्यावापृथिवी धासथो बृहत् । येनाभिः कृष्टीस्ततनाम विश्वहापुनाय्यमोजोऽअस्मेसमि ॥
न्यतं ॥ ३ ॥ (१।२२।५) किमु श्रेष्ठः कियं विष्टो नऽआर्जगन्किमयते दुर्त्यं कद्यदूचिम । ननिदिमचमसंयोमहाकु
लोमैश्चातुर्दुणऽइह्मृतिर्मूदिम ॥ एकं चमसंचतुरः कृणोत न तद्वो देवाऽअब्रुवंत ह्यऽआगमं । सौधन्वनायद्येवाकर्ष्यथ
साकंदैर्वैज्ञियासो भविष्यथ ॥ अग्निं दूतं प्रतियदबवीत नाश्वः कर्त्तारथऽउते ह कर्त्तव्यः । धेनुः कर्त्वा युवशा कर्त्वा द्वातानि
आतुरनुवः कृत्येर्मसि ॥ चक्रुवांसऽऋभवस्तदपृच्छतु केदं भद्यस्य दूतो नऽआर्जगन् । शुदावाख्यच्चमसंचतुरः कृताना
(१।२२।४) तेहीति पंचर्वसूक्तस्यौ चथ्यो दीर्घतमा द्यावापृथिव्यौ जगती । (१।२२।५) किमु श्रेष्ठ इति चतुर्दशर्वसूक्तस्यौ चथ्यो
दीर्घतमा ऋभवो जगत्यां त्रिष्टुप् ।

मंडलं १

अनु. २ः

॥१८॥

दि॒त्त्व॒ष्टा॒ग्रा॒स्व॒त॒र्न्यो॒न॒जे ॥ ह॒न॒मै॒नो॒ऽइ॒ति॒त्वा॒ष्टा॒य॒द॒ब्र॒वी॒च्च॒म॒सं॒ये॒दे॒व॒पा॒न॒मा॒नी॒दि॒पुः । अ॒न्या॒ना॒मा॒नि॒कृ॒ण्व॒ते॒सु॒ते॒स॒र्वा
 अ॒न्यैरे॒ना॒न्क॒न्या॒इ॒ नाम॒भिः॒स्पर॒त् ॥ ४ ॥ इ॒न्द्रो॒हरी॒शु॒जे॒ऽअ॒ग्नि॒ना॒र॒थं॒बृ॒ह॒स्प॒ति॒र्वि॒श्व॒रू॒पा॒मु॒पा॒ज॒त । ऋ॒भु॒र्वि॒भ्वा॒वा
 जो॒द्वो॒ऽअ॒ग॒च्छ॒त॒स्व॒प॒सो॒य॒ज्ञि॒यं॒भा॒ग॒मै॒त॒न ॥ नि॒श्व॒र्मे॒णो॒ग॒म॒रि॒णी॒त॒धी॒ति॒भिर्या॒ज॒रं॒ता॒यु॒व॒शा॒ता॒कृ॒णो॒त॒न । सौ॒ध॒न्व
 ना॒ऽअ॒श्व॒ाद॒श्व॒म॒त॒क्ष॒त॒य॒क्त्वा॒र॒थ॒मु॒प॒दे॒वो॒ऽअ॒था॒त॒न ॥ इ॒द॒मु॒दु॒कं॒पि॒ब॒ते॒त्य॒ब्र॒वी॒त॒ने॒द॒वा॒धा॒पि॒व॒ता॒मु॒ज॒ने॒र्ज॒नं । सौ॒ध॒न्व
 ना॒य॒द्रि॒त॒न्ने॒व॒ह॒र्य॒थ॒तृ॒ती॒ये॒घ्रा॒स॒र्व॒ने॒मा॒द॒या॒ध्वै ॥ आ॒पो॒भू॒यि॒ष्टा॒ऽइ॒त्ये॒को॒ऽअ॒ब्र॒वी॒दु॒मि॒भू॒यि॒ष्ट॒ऽइ॒त्य॒न्यो॒ऽअ॒ब्र॒वी॒त् । व॒ध॒र्य
 ती॒बृ॒हु॒भ्यः॒प्रै॒को॒ऽअ॒ब्र॒वी॒ह॒ता॒व॒द॒त॒श्च॒म॒सो॒ऽअ॒पि॒श॒त ॥ श्रो॒णा॒मे॒कं॒ऽउ॒दु॒कं॒ग॒म॒वा॒ज॒ति॒मां॒स॒मे॒कः॒पि॒श॒ति॒स॒न॒या॒भृ॒तं ।
 आ॒नि॒ष्चु॒चः॒श॒कृ॒दे॒को॒ऽअ॒प॒भ॒र॒त्कि॒स्वि॒त्पु॒त्रे॒भ्यः॒पि॒तरा॒ऽउ॒प॒व॒तुः ॥ ५ ॥ उ॒द्व॒त्स्व॒स्मा॒ऽअ॒कृ॒णो॒त॒ना॒तृ॒णं॒नि॒व॒त्स्व॒पः॒स्व
 प॒स्य॒या॒न॒रः । अ॒गो॒ह्य॒स्य॒य॒द॒स॒स्त॒ना॒ग॒हे॒त॒द्वे॒द॒मृ॒भ॒वो॒ना॒नु॒ग॒च्छ॒थ ॥ सं॒मी॒ल्य॒य॒क्षु॒र्व॒ना॒प॒र्य॒स॒र्प॒त॒क॒स्वि॒त्ता॒त्या॒पि॒तरा॒व॒ऽ
 आ॒स॒तुः । अ॒श॒प॒त॒यः॒क॒र॒स्त्वं॒व॒ऽआ॒दु॒दे॒यः॒प्रा॒ब्र॒वी॒त्यो॒त॒सो॒ऽअ॒ब्र॒वी॒त॒न ॥ स॒प॒प्यांसं॒ऽऋ॒भ॒व॒स्त॒द॒पृ॒च्छ॒ता॒गो॒ह्य॒क॒ऽइ॒दं॒नो
 ऽअ॒व॒बू॒ध॒त् । श्वा॒नं॒व॒स्तो॒वो॒ध॒यि॒तार॒म॒ब्र॒वी॒त्सं॒व॒त्सर॒ऽइ॒द॒म॒द्या॒व्य॒ख्य॒त ॥ दि॒वा॒यां॒ति॒म॒रु॒तो॒भू॒म्या॒ग्नि॒र॒य॒वा॒तो॒ऽअं॒तरि
 क्षे॒ण॒या॒ति । अ॒ग्नि॒र्यो॒ति॒व॒रु॒णः॒स॒म॒द्रै॒र्यु॒ष्मो॒ऽइ॒च्छ॒न्तः॒श॒व॒सो॒न॒पा॒तः ॥ ६ ॥ (१ । २२ । ६) मा॒नो॒मि॒त्रो॒व॒रु॒णो॒ऽअ॒र्य

(१ । २२ । ६) मा॒नो॒मि॒त्र॒इ॒ति॒द्वा॒वि॒श॒त्य॒ च॒स्य॒सू॒क्तस्यो॒च॒थ्यो॒दी॒र्घ॒त॒मा॒अ॒श्वि॒ष्टु॒पृ॒ढी॒या॒प॒ष्ट्यो॒ज॒ग॒तौ । (अ॒श्व॒स्तु॒त्या॒धो॒दे॒व॒ता) ।

क्रक्सं.

अ. २ अ. ३

॥१९॥

मायुरिन्द्रऋभक्षामरुतः परित्यन् । यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तैः प्रवक्ष्यामो विदधे वीर्यणि ॥ यन्निणिजारे कणसा प्रावृ
तस्य रातिगृभीतां मुखतो नयति । सुम्राड्जो मेम्यद्विश्वरूप इद्रा पृणोः प्रियमप्येति पार्थः ॥ उपच्छागः पुरोऽअश्वेनवा
जिनो पृणो भागो नीयते विश्वेदेव्यः । अभिप्रियं यत्पुरोळाशमवता त्वष्टे देनसौ श्रवसाय जिन्वति ॥ यद्द्विविष्य मृतुशोदे
वयानं त्रिमांशुषाः पर्यश्वं नयति । तेन यज्ञेन स्वरं कृतेन स्थिष्टेन वृक्षणाऽआपृणध्वं ॥ ७ ॥ यूपव्रस्काऽउत ये र्यूपवाहा
मिंधोऽग्रविद्याभऽउत शंस्ता सुर्विप्रः । तेन यज्ञेन स्वरं कृतेन स्थिष्टेन वृक्षणाऽआपृणध्वं ॥ ७ ॥ यूपव्रस्काऽउत ये र्यूपवाहा
क्ष्णालयेऽअश्वयूपाय तक्षति । ये चार्वते पचनं संभरंत्युतोतेषामभिर्गूर्तिर्नऽइन्वतु ॥ उपप्रागात्सुमन्मेधायि मन्मेधाहा
नामाशाऽउपवीतपृष्ठः । अन्वेनं विप्राऽऋषयो मदंति देवानां पृष्टे च कुमासु बंधु ॥ यद्वाजिनो दामं सदानमवर्ततो याशीर्ष
ण्यारशुनारज्जुरस्य । यद्वाघास्य प्रभृतमास्ये ३ वृणं सर्वातातेऽअपि देवे ब्रह्मस्तु ॥ यदश्वस्य क्रविषो मक्षिका शयद्वा स्वरोस्व
धितौरिंसमस्ति । यद्भस्तयोऽशमितु र्यज्ञेषु सर्वातातेऽअपि देवे ब्रह्मस्तु ॥ यदश्वस्य क्रविषो मक्षिका शयद्वा स्वरोस्व
धोऽअस्ति । सुकृता तच्छमितारः कृण्वंतु तमेधं श्रुतपाकं पचंतु ॥ ८ ॥ यत्ते गात्रादग्निना पच्यमाना दुभिश्चालं निहतस्या
वृधावति । मातृभूम्या माश्रिषन्मावृणेषु देवेभ्यस्तदुशश्चोरा तमस्तु ॥ येषां जिनं परिपश्यंति पक्कं यऽईमाहुः सुरभिर्निहं
रेति । ये चार्वतो मांसं भिक्षामपासतऽउतोतेषामभिर्गूर्तिर्नऽइन्वतु ॥ यन्नीक्षणं मांसं पचन्त्याऽउखाया पात्राणि युष्णऽ

॥१९॥

मंडलं १

अनु. २२

आसेचनानि । ऊष्मण्यापिधानाचरूणामंकाःसूनाःपरिभूष्यन्ध्वं ॥ निःक्रमणंनिपदनंविवर्तनंयच्चपङ्क्तिशुभवर्तः । य
 च्छपपौयच्चघ्रासिंजघाससर्वातातेऽअपिदेवेष्वस्तु ॥ मात्वाग्निध्वनयीद्धुमगीधिमौखाभ्राजैत्यभिर्विक्तजग्धिः । इष्ट्वीत
 मभिर्गूर्तवर्पदृक्तुतंतदेवासःप्रतिगृभ्णत्यन्ध्वं ॥ ९ ॥ यदध्यायवासऽउपस्तृणत्यधीवासयाहिरण्यान्यस्मै । संदानमवर्त
 पङ्क्तिशंप्रियादेवेष्वायामयति ॥ यत्तेसादेमहसाशृक्कृतस्यपाण्ययीवाकशयावातुतोद । सुचेवताहुविषोऽअध्वरेषुसर्वा
 तातेब्रह्मणासूदयामि ॥ चतुस्त्रिंशद्भुजानिनोदेवचंधोर्वेक्कीरध्वस्यस्वर्धितिःसमेति । अच्छिद्रागात्रावयुनाकृणोतपरुष्य
 रुरनुष्टुभ्याविशस्त ॥ एकस्त्वष्टुरध्वस्याविशस्ताद्वायंताराभवतुस्तथऽऽकृतुः । यातेगात्राणामृतुथाकृणोमितातापिंडा
 नांप्रजुहोम्यशौ ॥ मात्वातपस्त्रियऽआत्मापियंतमास्वधितिस्तन्वः१आतिष्ठिपत्ते । मातेगभ्रुरविशस्तातिहार्यच्छिद्रा
 गात्राण्यसिनामिथूकः ॥ नवावऽएतन्धियसेनरिष्यसिदेवाऽइदैषिपथिभिःसगेभिः । हरीतयुंजापृषतीऽअभूतामुपा
 स्थाद्वाजीधुरिरासमस्य ॥ सुगन्धौनोवाजीस्वध्व्यंपुंसःपुत्रोऽउतविश्वापुर्बुध्नि । अनागास्त्वंनोऽअर्दितिःकृणोतुक्षत्र
 नोऽअश्वोवनतांहविष्मान् ॥ १० ॥ (१२२।७) यदक्कदःप्रथमंजार्यमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीपात् । इयेनस्य
 पक्षाहरिणस्यवाहऽउपस्तुल्यमहिजातंतेऽअवन् ॥ यमेनदुत्तंत्रितऽएनमायुनगिर्द्रंएणंप्रथमोऽअर्धतिष्ठत् । गंधर्वोऽ

(१२२।७) यदक्कदइतित्रयोदशचैर्यसूक्तसौचर्योदीर्घतमाअश्विष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ३

॥२०॥

अस्यरशनामगुग्णात्सुरादभ्वंसवो निरतष्ट ॥ असियमोऽअस्यादित्योऽअर्वचसित्रितोगुह्येनव्रतेन । असिसोमेनसम
याविपृक्तऽआहुसेत्रीणिद्विविधनानि ॥ त्रीणितऽआहुद्विविधनानित्रीण्युषुत्रीण्यंतःसमृद्धे । उतेर्वमेवरुणइच्छ
न्त्यर्वन्यत्रातऽआहुःपरमंजनित्र ॥ इमातेवाजिन्नवमार्जनीनामाशुफानांसनिनुनिधाना । अत्रातिभद्रारशनाऽअप
श्यमतस्ययाऽअभिरक्षतिगोपाः ॥ ११ ॥ आत्मानंतेमनसारादजानामवोद्विवापुतयंतंपतुंग । शिरोऽअपश्यपृथि
भिःसुगेभिर्रेणुभिर्जेहमानंपतुत्रि ॥ अत्रातेरूपमुत्तममपश्यंजिगीपमाणमिपऽआपदेगोः । शुदातेमतोऽअनुभोग
मानुकादिद्वसिष्टऽओषधीरजीगः ॥ अर्जुत्वारथोऽअनुमर्थोऽअर्वन्नगवोनुभगःकनीनो । अनुवातासुस्तवसुख्यमी
यरनुदेवाममिरेवीर्यते ॥ हिरण्यशृंगोयोऽअस्यपादामनोजवाऽअवरऽइंद्रऽआसीत् । देवाऽइदस्यहविरधमायुन्योऽ
अर्वतंप्रथमोऽअध्यतिष्ठत् ॥ ईर्मातासःसिलिकमध्यमासुःसंशूरणासोद्विष्यासोऽअर्थाः । हुंसाऽइवश्रेणिशोयंततेय
दाक्षिणुद्विष्यमज्जमन्धाः ॥ १२ ॥ तवशरीरंपतयिष्वर्वन्तवचित्वातऽइवधर्जीमान् । तवशृंगणिविष्ठितापुरुत्रा
रण्येषुजर्भुराणाचरन्ति ॥ उपप्रागाच्छसन्नंवाज्यवोदेवद्रीचामनसादीर्घ्यानः । अजःपुरोनीयतेनाभिरस्यानुपश्चात्कुव
योयंतिरेभाः ॥ उपप्रागात्परमंयत्सधस्थमवोऽअच्छापितरमातरंच । अद्यादेवान्युष्टतमोहिगम्याऽअथाद्यास्तेद्राशु

मंडलं. १

अनु- २ः

॥२०॥

षेवार्थेणि ॥ १३ ॥ (११२२।८) अस्यवामस्यपलितस्यहोतुस्तस्यभ्रातामध्यमोऽअस्यश्वः । तृतीयोभ्राताघृतपृष्ठो
 ऽअस्यात्रापश्यंविदपतिसप्तपुत्रं ॥ सप्तयुजंतिरथमेकचक्रमेकोऽअश्वोवहतिसप्तनामा । त्रिनाभिचक्रमजरमनर्वयत्रे
 माविश्वामुवनार्धितस्युः⁺ ॥ इमंरथमधियेसप्ततस्थुःसप्तचक्रंसप्तवंहुल्यश्वः । सप्तस्वासारोऽअभिसनवंतेयत्रगवानि
 हितासप्तनाम ॥ कोददर्शप्रथमंजार्यमानमस्यन्यंतंयदनस्याविर्भति । भूम्याऽअसुरसृगात्माकस्वित्कोविद्वांसमुपगा
 त्प्रष्टुमेतत् ॥ पाकःपृच्छामिमनुसाविजानन्देवानामेनानिहितापदानि । वृत्सेवृष्कयेर्धिसप्ततंतुन्वितलिरेकययऽओ
 त्वाऽह ॥ १४ ॥ अचिकित्वान्विकितुर्पश्चिदत्रकवीनृच्छामिविघ्ननेनविद्वान् । वियस्तस्तंभषळिमार्जस्यजस्यरूपे
 किमपिस्विदेकं ॥ इहब्रवीतुयऽईमंगवेदास्यवामस्यनिहितंपदवेः । शीर्ष्णःक्षीरंदुहतेगावोऽअस्यवव्रिवसानाऽउदुकं

(११२२।८) अस्यवामस्येतिद्विपंचाशहचस्यसूक्तस्यौचध्योदीर्घतमाआद्यानामेकचत्वारिंशदृचांविश्वेदेवास्तस्याःसमुद्रादित्यवाक्स
 मुद्राश्चरापःशकमयमित्यस्याःशकधूमसोमौत्रयःकेशिनइत्यस्याअभिसूर्येवायवो (केशिनइतिगुणः) चत्वारिवागित्यस्यावाक्इंद्रमित्रमिति
 द्वयोःसूर्योद्वादशप्रथयइत्यस्याःकालचक्रं (अत्रसंवत्सरसंस्थंकालचक्रवर्णनं) यस्तइत्यस्याःसरस्वतीयज्ञेनेत्यस्याःसाध्याःसमानमित्यस्याः
 सूर्यः (पर्जन्याभीवा) दिव्यंमुपपर्णमित्यस्याःसरस्वान् (सूर्योवा) त्रिष्टुप् द्वादशीपंचदशीत्रयोविंशीएकोनत्रिंशीषट्त्रिंशेकचत्वारिं-
 शीचजगलः द्विचत्वारिंशीप्रस्तारपंक्तिःएकपंचादयनुष्टुप् ।

पदापुः ॥ मातापितरं मतऽआर्वभाजधीत्यग्नेमनसांसंहिजग्मे
 युः ॥ युक्तामातासीद्धुरिदक्षिणायाऽअतिष्ठहभौवृजनीष्वंतः ।
 तिस्रोमातृस्त्रीन्पितृन्विभ्रदेकंऽऊर्ध्वस्तस्थौनेमवग्लापयंति ॥ १५ ॥
 द्वादशारं न हितजरायुवर्षेति चक्रं परिचामतस्य ।
 पंचपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिवऽआहुः परेऽअर्धे पुरीषिणं ।
 पंचरिचक्रं परिवर्तमाने तस्मिन्नातस्थुर्भुवनानि विश्वा ।
 स नैमिचक्रमजरं विवृत्तऽउत्तानायां दशयुक्तावहंति ।
 जानांससथमाहुरेकजंपळिद्यमाऽऋषयो देवजाऽइति ॥ १६ ॥
 स्त्रियः सती स्तोऽर्धमेपुंसऽआहुः पश्यदक्षणात्रविचेतदंधः ।
 अवः परेण परऽएनावरेण पुदावत्संविभ्रती गौरुदस्थात् ॥
 अवंतः ॥ अवः परेण पितरं योऽअस्यानुवेदं परऽएनावरेण ।
 येऽअर्वाचस्तोऽउपराचऽआहुर्गैपराचस्तोऽउऽअर्वाचऽआहुः ।
 इन्द्रश्च याचक्रथुः सोमतानि धुरानयुक्ता रजसोवहंति ॥
 सार्वीभत्सुर्गर्भरसानि विद्धानमस्वतऽइदुपवाकमी
 अमी मे द्रुत्सोऽअनुगमपश्यद्विभ्रूव्यं त्रिषु योजनेषु ॥
 मंत्रयंते दिवोऽअमुष्यपृष्ठे विभ्रुविदुवाचमविभ्रमिन्वा
 आपुत्राऽअग्नेमिथुना सोऽअत्र सशतानि विंशतिश्चत
 अथेमेऽअन्यऽउपरि विचक्षणं ससचक्रे पठेरऽआहु
 तस्य नार्क्षस्तथ्यते भूरिभारः सनादेवनशीर्यते सनाभिः ॥
 सूर्यस्य च क्षुरजसैत्यावृतं तस्मिन्नापिता भुवनानि विश्वा ॥ साकं
 तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रजते विकृतानि रूपशः ॥
 कविर्यः पुत्रः स ईमाचिकेतयस्ता विजानात्सपितु
 साकृद्भीचीकं स्विदधं परां गात्कस्वित्सूते न हि च्युथे
 कवीर्यमानः कऽइह प्रवोच ह्वेमनः कुतोऽअधिप्रजातं ॥
 इन्द्रश्च याचक्रथुः सोमतानि धुरानयुक्ता रजसोवहंति ॥

द्वा सुपर्णासयुजासखायासमानं वृक्षं परिपश्यताते । तथोरन्यः पिप्लं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽअभिचाकशीति ॥ १७ ॥
 यत्रा सुपर्णाऽअमृतस्य भागमनिमेषं विदधाभिस्वरंति । इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः समाधीरः पाकमत्रा विवेश ॥ यस्मि
 न्बुक्षेम ध्वदः सुपर्णा निविशंते सुवते चाधि विश्वे । तस्येदाहुः पिप्लं स्वाद्वत्त्येतन्नोन्नशुद्यः पितरं न वेद ॥ यद्वा यत्रेऽअधि
 गायत्रमाहितं त्रैष्टुभाद्वा त्रैष्टुभं निरतक्षत । यद्वा जगज्जगत्याहितं पदं यऽइत्तद्विदुस्तेऽअमृतत्वमानशुः ॥ गायत्रेण प्रतिमि
 मीतेऽअर्कमर्केण सामत्रैष्टुभेन वाकं । वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा क्षरेण मिमते सप्तवाणीः ॥ जगतासिंधुं दिव्यस्तभाय द्रव्यं
 तरे सूर्यं पथं पश्यत् । गायत्रस्य स मिधं स्तिस्त्रऽआहुस्ततो महा प्ररिरे चे महित्वा ॥ १८ ॥ उपह्वये सुदुर्धाधेनु मेतां सुहस्तो
 गोधुगुतदो हृदेनां । श्रेष्ठं सर्वं स वितासा विपन्नो भीद्वो घर्मस्तदुष्प्रवोचं ॥ हिंक्रुण्वतीर्वसुपत्नीवसूनां वत्समिच्छंती मनसा
 भ्यागात् । दुहामश्विभ्यांऽपयोऽअद्भ्येयं सार्वर्धतां महते सौभगाय ॥ गौरमीमेदनु वत्सं मितं मूर्धनं हिङ्गु कृणोन्मात
 वाऽऽ । सुक्काणं घर्ममभिर्वा यशानामिमातिमायुं पयते पयोभिः ॥ अयं स शिक्ते येन गौरभीवृतामिमातिमायुं ध्वसनाव
 धिश्चिता । सा चित्तिभिर्निहिच कार्मर्त्यं विद्युद्भवती प्रतिवृत्रिमौहत् ॥ अनच्छयेतु रगतु जीवमेजङ्गु वं मध्यऽआपस्त्या
 नां । जीवो मत्स्यं चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येनासयोनिः ॥ १९ ॥ अपश्यं गोपामनिपद्यमानमाच पराच पथिभिश्चरं
 तं । सप्तग्रीचीः सविषूचीर्वसानऽआवरीवति मुनेन वृतः ॥ यऽईचकार न सोऽअस्य वेदुऽय ईदुर्दृशं हिरुगि श्रुतस्मात् ।

कृत्स्नं.

अ. २ अ. ३

॥ २२ ॥

समातुर्योनापरिवीतोऽअंतर्वहुप्रजानिर्कृतिमाविवेश ॥ द्यौर्मपिताजनिता नानाभिरन्नवंभेमातापृथिवीमहीयं । उत्तान
योश्चस्वोऽयोनिरंतरत्रापिता दुहितुर्गर्भमाधात् ॥ पृच्छामित्वा परमतं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः । पृच्छा
मित्वा वृणोऽअर्धस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम ॥ इयं वेदिः परोऽअंतः पृथिव्याऽअयं युज्ञो भुवनस्य नाभिः । पृच्छा
सोमो वृणोऽअर्धस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ॥ २० ॥ सुसार्धं गर्भभुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठति प्रादिशा विधर्मणि । अयं
तेधीति भिर्मनसा तो विपश्चितः परिभुवः परिभवंति विश्वतः ॥ न विजानामि यदि वेदमस्मिनि ण्यः संनद्धो मनसा चरामि ।
युदामागन् प्रथमजाऽऽकृतस्यादि द्वाचोऽअश्नुवे भागमस्याः ॥ अपाङ्ग्याङ्गेति स्वधया गृभीतो मर्त्यो मर्त्येनास योनिः ।
ताशश्च ताविपूचीना वियंतान्यन्न्यंचिक्वुर्न निचिक्वुर्न्यन् ॥ ऋचोऽअक्षरे परमेव्यो मन्यस्मिन्देवाऽअधिविश्वे निवे
दुः । यस्तन्न वेद किमु चाकारिष्यति यऽइत्तद्विदुस्तऽइमे समासते ॥ सयवसाङ्गवती हि भूयाऽअथो वयं भगवंतः स्याम ।
अच्छि तृणमभ्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरती ॥ २१ ॥ गौरी मिमायसलिलानि तक्षत्यैकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
रत्यक्षरं तद्विश्वमुपजीवति ॥ शुक्रमर्थं धूममारादपश्यं विपवता परऽएनावरेण । वृक्षाणं पृथिमपचंत वीरास्तानि धर्माणि
प्रथमान्यासन् ॥ त्रयः केशिनऽऽकृतुथा विचक्षते संवत्सरे वपत्तऽएक एषां । विश्वमेकोऽअभिचष्टे शचीभिर्घ्राजिरेकस्य

मंडलं १

अनु. २२

॥ २२ ॥

ददृशेनरूपं ॥ चत्वारिवाक्परिमातापदानितानिचिदुब्राह्मणायेमनीपिणः । गुह्यात्रीणिनिहितानेगयंतितुरीयंवाचो
 मनुष्यावदंति ॥ इंद्रमित्रवरुणमग्निमार्हुरथोदिव्यःससुपर्णो गरुत्मान् । एकंसद्विप्रावहुधावदंत्याग्नेयमंतारिश्चान
 माहुः ॥ २२ ॥ कृष्णंनियानंहरेयःसुपर्णोऽअपोवसानादिवमुत्पतंति । तऽआववृत्रन्तसदनाहृतस्यादिद्धतेनपृथिवी
 व्युद्यते ॥ द्वादशप्रधश्चक्रमेकंत्रीणिनभ्यानिकऽउतच्चिकेत । तस्मिन्साकंत्रिशतानशुकवोपिताःषष्टिर्नचलाचला
 सः ॥ यस्तेस्तनःशशयोयोमयोभूर्येनविश्वापुष्यसिवायीणि । योरब्रुधावसविद्याःसुदत्रःसरस्वतितमिहधातवेकः ॥
 यत्नेनयज्ञमयजंतदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् । तेहनाकंमहिमानःसचतयत्रपूर्वसाध्याःसंतिदेवाः^{१२} ॥ समान
 मेतदुदकमुच्चैत्यवुचाहंभिः । भूमिपुर्जन्याजिन्वंतिदिवंजिन्वंत्यग्नयः ॥ दिव्यंसुपर्णवायुसंवृहंतमपांगभैर्दशतमोर्षधी
 नां । अभीपतोबृष्टिभिस्तर्पयंतंसरस्वंतमवसेजोहवीमि ॥ २३ ॥ (१।२३।१) कयाशूभासर्वयसःसनीलाःसमान्या
 मरुतःसंभिमिश्रुः । कयामतीकुतऽएतासऽएतेर्चितिशुभंमृषणोवसया^१ ॥ कस्यब्रह्माणिजुजुपुयुवानःकोऽअध्वरेमरु
 तऽआववर्त । श्येनोऽईवव्रजतोऽअंतरिक्षेकेनमहामनसारिरमाम ॥ कुतस्त्वमिंद्रमाहिनःसन्नेकोयासिसत्पतेकिंतऽ

(१।२३।१) कयाशुभेतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यवृतीयाद्यथुचामेकादशीवर्ज्यानांमरुतःत्रयोदश्यादितिस्थणामगस्त्यःशिष्टानामिंद्रऋषिः
 सर्वसूक्तस्यमरुत्वानिद्रोदेवतात्रिष्टुछदः ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ३

॥ २३ ॥

इत्था । संपृच्छसेसमराणः शुभानैवोचेत्तन्नोहरिवोयत्तेऽस्मे+
दिः । आशासतेप्रतिहर्त्युक्थेमाहरीवहतस्तानोऽअच्छ ॥ अतोवयमंतमेभियुजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः १ शुभं २ इयतिप्रथतोमेऽअ
महोभिरतोऽउपयुज्महेन्विदस्वधामनुहिनोवधुर्थ ॥ २४ ॥ कः १ स्यावोमरुतः स्वधासीद्यन्मामेकंसमर्धत्ताहिहत्ये ।
हिकुणवासाशविष्टेद्रुक्त्वामरुतोयद्वशाम ॥ भूरिचकर्थयुज्येभिरस्मेसमानोभिवृषभपौस्वेभिः । भूरीणि
श्वश्चद्राः सुगाऽअपश्चकरवज्रबाहुः ॥ अनुत्तमातैमघवन्नकिर्नुनत्वावोऽअस्तिदेवताविदानः । अहमेतामनवेवि
तोयानिकरिव्याकृणाहिप्रवृद्ध ॥ एकस्यचिन्मेविभ्वः १ स्त्वोजोयानुदधृष्वान्कृणवैमनीषा । नजायमानोनशतेनजा
यानिच्यवमिद्रऽइदीशऽएषां ॥ २५ ॥ अमदन्मामरुतः स्तोमोऽअत्रयन्मेनरः श्रुत्यं ब्रह्मचक्र । इन्द्रायवृष्णे सुमखायम
हंसख्येसखायस्तन्वैतनूभिः ॥ एवेदेतेप्रतिमारोचमानाऽअनेष्टुः श्रवऽएपोदर्धानाः । संचक्ष्यामरुतश्चंद्रवर्णाऽअच्छां
तनवैदामऽऋतानां ॥ आर्यहुवस्याहुवसेनकारुरसान्वेकेमान्यस्यमेधा । मन्मानिचित्राऽअपिवातयंतऽएषांभू
ओषुर्वतमरुतोविप्रमच्छेमाब्रह्मणिजरिता

॥ २३ ॥

मंडलं १

अनु. २३

वोऽअर्चत् ॥ एषवःस्तोमोमरुतऽइयंगीमीन्द्रार्यस्यमान्यस्यक्रोः । एपायासीष्टतन्वेवयाविद्यामेपंवृजनंजीरदानुं ॥
॥ २६ ॥ इतिद्वितीयाष्टकेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

एकादशाध्याये वर्गाः २६ सूक्तानि ८ ऋचः १३२ ॥ त्यागः ॥ अश्विम्यामिदं. ६ द्यावापृथिवीम्यामिदं १० ऋगुम्यइदं १४ अथायेदं.
३५ विश्वेभ्योदेवेभ्यइदं. ४१ वाक्समुद्राक्षरोब्धइदं. (वागब्धइतिवा). शकधूमसोमाभ्यामिदं. केर्यग्निसूर्यवायुम्यइदं. वाचइदं सूययिदं. २
कालचक्रायेदं. सरस्वत्याइदं. साव्येभ्यइदं पर्जन्याग्निम्यामिदं. सरस्वतइदं मरुत्वत. इद्रायेदं. १५ ॥ इतिद्वितीयेतृतीयः ॥ ३ ॥

तद्वगस्त्योमारुतंहिद्वित्रिष्टुवंतमित्रावरुणयोर्दीक्षितयोर्बुधशीमप्सरसंहृद्वासतीवरकुंभेरोपतत्ततोगस्त्यव
सिष्ठावजायेतांसहस्रमेकादशाद्यैर्दीयज्ञायज्ञादशत्रिष्टुवंतमहोष्टौद्वितीयाविराणननूनंपंचागस्त्येनैर्द्रहविपिम
रुतामुद्यतंद्रागस्त्ययोःसंवादऐंद्रस्तत्राद्यातृतीयाचेंद्रवाक्यंचतुर्थीचादौबृहतीतिसोनुष्टुभःप्रतिवःपणमारुतं
तुंचतस्मौल्यामरुत्वतीयाश्चित्रस्तृचंगायत्रंगायत्ससोनोत्वंराजादशमत्सिपळातुष्टुभंतुत्रिष्टुवंतत्वाद्यास्कंधोग्री
वीर्वामत्सिनआचर्षणिप्राःपंचयज्ञस्यापूर्वीःषड्जायापत्योर्लोपामुद्रायाअगस्त्यस्यचक्षुचाभ्यौरत्यर्थसंवादंश्रु
त्वांतेवासीब्रह्मचर्यित्येबुहल्यादीअपश्यद्युवोर्दशाश्विनवैकडुनवाभूदिदमष्टौपष्ठत्येत्रिष्टुभौतंतुंजाथांपद ॥ ४ ॥

हरिःओम् ॥ (१।२३।२) तन्नवोचामरभसायजन्मनेपूर्वमहित्वंष्टुषभस्यकेतवे । ऐधेवयामन्मरुतस्तुविष्वणो
 युधेर्वशक्रास्तविपाणिर्कतन ॥ नित्यंनसुंमधुविभ्रतुऽउपुकीळंतिक्लीकाविदथेषुष्टुष्वयः । नक्षतिरुद्राऽअवसानमस्वि
 ननमर्धतिस्वर्वसोहविष्कृतं ॥ यस्माऽऊर्मासोऽअमृताऽअरासतरायस्पोषं चहुविषाददाथुषे । उक्षंत्यसैमरुतौहिताऽ
 निहृस्व्याचित्रोवोयामःप्रयतास्वृष्टिषु ॥ यत्त्वेपयामानदयत्तुपर्वतान्दिवोवापुष्टंनर्याऽअध्रजन् । भयंतेविश्वामवना
 यतेवनस्पतीरथीयतीवृजिहीतुऽओषधिः ॥ १ ॥ यूयंनऽउग्रामरुतःसुचेतुनारिह्यगमाःसुमतिपिपर्तन । यत्रावोहि
 द्रुद्रदतिक्रिविदतीरिणातिपुश्वःसुधितेववृहणा ॥ प्रस्कंभदैष्णाऽअनवभ्राधसोलातुणासौविदथेषुसुष्टुताः । अर्च
 त्यर्कमदिरस्वपीतयेविदुर्वीरस्यप्रथमानिपौस्या ॥ शतभुजिभिस्तमभिर्हुतेरघातपभ्रीरक्षतामरुतोयमावत । जनंयमु
 ग्रास्तवसोविरश्चिनःप्राथनांशसात्तनयस्यपुष्टिषु ॥ विश्वनिभद्रामरुतोरथेषुवोमिथस्पृधैवतविषाण्याहिता । असे
 ताःपुविषुक्षुराऽअधिवयोनपुक्षान्व्यनुश्रियोधिरे ॥ २ ॥ महांतोमहविश्वोइविभूतयोदूरेहशोयेदिव्याऽइवस्तुभिः । असे
 (१।२३।२) तन्नवोचामेतिपंचदशर्चस्यसूक्त्यमैत्रावरुणिरगस्त्योमरुतो जगत्यत्येद्वे त्रिष्टुभौ ।

मन्द्राः सुजिह्वाः स्वरितारऽआसभिः संमिश्राऽइंद्रैः सरतः परिष्टुभः ॥ तद्वः सुजातामरुतो महित्वनंदीर्घवोदात्रमदितेरि
 वव्रतं । इंद्रश्चनत्यजसाविह्नुणा तितज्जनययस्मै सुकृतेऽअराध्वं ॥ तद्वो जामित्वमरुतः परैर्युगे परुयच्छंसममृतासऽआ
 वत । अयाधियामनेवैश्रुष्टिमाव्यासाकनरोदुसनेराचिकित्रिरे ॥ येन दीर्घमरुतः शशवा मयुष्माकै नुपरीणसातुरासः ।
 आयत्ततनं नृजने जनासऽएभिर्भ्यश्चेभिस्तदुभीष्टमद्यां ॥ एषवः स्तोमो मरुतऽइयंगीर्मीदार्थस्य मान्यस्य कारोः । एषायां
 सीष्टतन्वेव्यां विद्यामे पंबूजनं जीरदनुं ॥ ३ ॥ (१२३३) सहस्रं तऽइंद्रो तयो नः सहस्रमिषो हरिवोगर्तमाः । सह
 संरायो मादयध्वै सहस्रिणऽउपनोयंतु वाजाः ॥ आनो वोभिर्मरुतो यां त्वच्छाज्येधेभिर्वा विहृद्वैः सुमायाः । अधयदैयां
 नियुतः परमाः समद्रस्य चिद्धनयंतपरे ॥ मिम्यक्षये पुषु धिता घृताची हिरण्यनिर्णिगुप रानऽऋष्टिः । गुहा चरंती मनु
 षो न योषा सुभावंती विदुष्यै वसंवाक् ॥ पराशुभ्राऽअयासौ यव्यासाधारण्ये वमरुतो मिमिक्षुः । नरोदसीऽअर्पनुदंत
 धोराज्जुपंतवृधंसख्याय देवाः ॥ जोषद्यदीमसुर्यास च धै विपितस्तु कारोदसीनमणाः । आसर्गेव विधुतोरथंगात्वे प्र
 तीकानभसो नेत्या ॥ ४ ॥ आस्थापयंत युवति युवानः शुभे निमिश्रां विदथैषु पञ्चा । अर्को यद्वो मरुतो हविष्मान्गार्यद्वा
 शंसुतसो मोदुवस्यन् ॥ प्रतं विवकिमवम्यो यऽएषां मरुतां महिमासत्योऽअस्ति । सचायदीं वृषमणाऽअहं युः स्थिरा

(१२३३) सहस्रं तद्वैकादशर्चस्य सूक्त्यमैत्रावरुणिरगस्त्यो मरुता आद्या इन्द्रश्चिष्टुप् ।

कक्सं.

अ. २ अ. ४

॥ २५ ॥

मंडलं

अनु. २

॥ २५ ॥

चिज्जनीर्वहते सुभागाः* ॥ पांतिमित्रावरुणाववुद्याच्चयतऽईमर्यमोऽअप्रशस्तान् । वृतच्यवतेऽअच्युताध्रुवाणिवावृध
ईमरुतोदातिवारः ॥ नहीनुवोमरुतोऽअत्यसेऽआरात्ताच्चिच्छवसोऽअंतमापुः । तेधणुनाशवसाशशुवासोणोनद्वेषो
वःस्तोमोमरुतऽइयंगीमीद्वार्यस्यमान्यस्यकारोः । एषार्यासीष्टतन्वेव्याविद्यामेषवृजनंजीरदानुं ॥ ५ ॥ (१।२३।४) एष
यज्ञार्यज्ञावःसमनानुतुर्वणिर्धियंविद्योदेव्याऽउदधिध्वे । आवोर्वार्चःसुवितायरोदस्योमहववृत्यामवसेसुवृकिभिः ॥
वब्रासोनयेस्वजाःस्वतवसऽइषंस्वरभिजार्यतुधूतयः । सहस्रियासोऽअपांनोर्मर्चऽआसागावोवंधासोनोक्षणः ॥ सोमा
सोनयेसुतास्तुसांशवोहृत्सुपीतासोदुवसोनासते । ऐषामसैषुरभिणीवरारभेहस्तेशुरवादिश्चकृतिश्चसंदधे ॥ अवस्वयु
कादिवऽआवृथाययुरमर्त्याःकशयाचोदतत्मना । अरेणवस्तुविजाताऽअच्युतुर्दृढानिचिन्मरुतोभ्राजहृष्टयः ॥
कोवोतमैरुतऽकृष्टिविद्युतोरेर्जतित्मनाहन्वेवजिह्वा । धन्वच्युतऽइषांनयामनिपुरुषाऽअहून्योऽनैतशः ॥ ६ ॥
कस्विदस्यरजसोमहस्परंकावरंमरुतोयस्मिन्नायुय । यक्ष्यावथयिथुरेवसंहितव्याद्रिणापतथत्वेपमर्णवं* ॥ सातिर्न
वोमवतीस्वर्वतीत्वेपाविपाकामरुतःपिपिष्वती । भद्रावोरुतिःपृणतोनदक्षिणापृथुज्ययीऽअसुर्येवजंजती ॥ प्रतिष्टो
(१।२३।४) यज्ञायज्ञेतिदशर्चस्यसृक्तस्यमैत्रावरुणिरगस्त्योमरुतो जगती अंलास्तिस्रिष्टुभः ।

भंति॒सि॒ध॒वः॒प॒वि॒भ्यो॒य॒द॒ध्रि॒यां॒वा॒च॒मु॒दी॒र॒य॑ति । अ॒व॒स॒य॑त॒वि॒द्युतः॑ पृ॒थि॒व्या॑य॒दी॒ध॒त॑म॒रुतः॑ प्र॒वृ॒ण्व॑यंति ॥ अ॒सू॒त॒पृ॒श्न॒म॑
 ह॒ते॒र॒ण॒य॒त्वे॒ष॒म॒या॒सौ॑ म॒रु॒ता॒म॒नी॒कं । ते॒स॒प्स॒रा॒सौ॒ज॒न॒य॑ता॒भ्य॒मा॒दि॒त्स्व॒धा॒र्मि॒पि॒रा॑य॒प॒र्य॑यन् ॥ ए॒ष॒वः॒स्तो॒मो॒म॒रु॒तऽइ॒
 यं॒गी॒र्मा॒दा॒र्य॑स्य॒मा॒न्य॑स्य॒का॒रोः । ए॒षा॒या॒सी॒ष्ट॒त॒न्वे॒व॒यां॒वि॒द्या॒मे॒ष॒वृ॒ज॒नै॒जी॒र॒द॒नुं ॥ ७ ॥ (११२३।५) म॒ह॒श्चि॒त्त्व॒मि॒द्र॒
 य॒तऽए॒ता॒न्म॒ह॒श्चि॒द॒सि॒त्य॒ज॒सो॒व॒रू॒ता । स॒नो॒वि॒धो॒म॒रु॒तां॑ चि॒क्रि॒त्वा॒न्स॒न्ना॒व॒नु॒ज्व॒त॒व॒हि॒प्रे॒ष्ठा ॥ अ॒यु॒क्र॒ान्तऽइ॒द्र॒वि॒श्व॒कृ॒
 षी॒र्वि॒द्वा॒ना॒सो॒नि॒ष्पि॒धो॒म॒र्त्य॒त्रा । म॒रु॒तां॑ पृ॒त्स॒ति॒ह॑स॒माना॒स्व॒र्मा॒ह्वि॒स्य॒प्र॒ध॒न॒स्य॒सा॒तौ⁺ ॥ अ॒भ्य॒कृ॒सा॒तऽइ॒द्रऽक्र॒ष्टि॒र॒स्मे॒स॒ने॒
 म्य॒भ्य॑म॒रु॒तो॒जु॒न॑न्ति । अ॒ग्नि॒श्चि॒द्धि॒ष्मा॒त॒से॒ष्टु॒शु॒क्ला॒ना॒पो॒न॒द्वी॒पं॒द॒ध॒ति॒प्र॒या॑सि ॥ त्वं॒तू॒नऽइ॒द्र॒त॒र॒यि॒द्वा॒ओ॒जि॒ष्ठ॒या॒द॒क्षि॑
 ण॒ये॒व॒रा॒तिं । स्तु॒त॒श्च॒या॒स्तै॒च॒क॒न॑त॒वा॒योः॒स्त॒न॒न॒म॒र्ध्वः॒पी॒प॒य॑त॒वा॒जैः ॥ त्वे॒रा॒यऽइ॒द्र॒तो॒श॒त॑माः प्र॒णे॒ता॒रः॒क॒स्य॑चि॒ह॒ता॒योः ।
 ते॒षु॒णो॒म॒रु॒तो॒मृ॒ळ॒य॑तु॒ये॒स्मा॒पु॒रा॒गा॒त॒य॑ती॒व॒दे॒वाः⁺ ॥ ८ ॥ प्र॒ति॒प्र॒या॒ही॒द्र॒मी॒ह्रि॒पो॒न॒न्म॒हः॒पा॒थि॒वे॒स॒द॑ने॒य॒त॒स्व । अ॒ध॒य॒दे॒
 पां॑पृ॒थु॒वृ॒धा॒सऽए॒ता॒स्ती॒र्थे॒ना॒र्यः॒पौ॒स्या॒नि॒त॒स्युः⁺ ॥ प्र॒ति॒घो॒रा॒णा॒मे॒ता॒ना॒म॒या॒सौ॑ म॒रु॒तां॑ शृ॒ण्वऽआ॒य॒ता॒मु॒प॒बि॒दः । ये॒म
 ल्य॑पृ॒त॒ना॒य॑त॒मू॒मै॒र्क॒णा॒वा॒न॑न॒प॒त॒य॑त॒स॒र्गैः ॥ त्वं॒मा॒नै॒भ्यऽइ॒द्र॒वि॒श्व॒ज॒न्या॒र॒वा॒मृ॒क्षिः॒शु॒रु॒धो॒गो॒ऽअ॒ग्राः । स्त॒व॒ने॒भिः॒स्त॒व

(११२३।५) म॒ह॒श्चि॒दित्य॑ष्ट॒र्च॒स्य॒सू॒क्त॒स्य॒मै॒त्रा॒व॒रु॒णि॒र॒ग॒स्त॒इ॒द्र॒स्त्रि॒ष्टु॒प॒द्वि॒ती॒या॒वि॒रा॒द ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ४

॥२६॥

सेदेवदेवैर्विद्यामेषंवृजनं जीरदनु ॥ ९ ॥ (१।२३।६) ननु नमस्ति नो श्वः कस्तद्वेदयदभ्रुतं । अन्यस्यचित्तमभिसं
चरेण्यमृताधीतीं विनश्यति ॥ किं नऽइन्द्रजिघांसासि भ्रातरो मरुतस्तव । तेभिः कल्पस्वसाधुयामानः समरणेवधीः ॥
तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते न वावहे ॥ त्वमीशिषेव सुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्टः । इन्द्रत्वं मरुद्भिः संवदस्वाधुग्रा
ज्ञानऽऋतुथाहवर्षि ॥ १० ॥ (१।२३।७) प्रतिवऽएनानमसाहमेमिसक्तेन भिक्षुसुमतिं तुराणां । रुराणतो मरुतो
वेद्याभिनिर्हेळो धृत्तविमुचश्चमश्चान् ॥ एषवः स्तोमो मरुतो नमस्वान्हृदा तष्टो मनसा धावि देवाः । उपेमार्या तु मनसा जु
पाणायं हि घानमसऽइन्द्रधांसः ॥ सुतासो नो मरुतो मृळयंतु तस्तुतो मधवाशं भविष्ठः । ऊर्ध्वानः संतुकोभ्याव नान्यहा
नि विभ्रामरुतो जिगीषाः ॥ अस्मादहंते विषादीपमाणऽइन्द्राक्षियामरुतो रेजमानः । युष्मभ्यंहव्यानि शितान्यासन्ता
भिः स्थविरः सहोदाः ॥ त्वं पाहीन्द्रसहीयसो न्भवामरुद्भिरवयातहेळाः । सुप्रकेतोभिः सासहिर्धानो विद्यामेषंवृजनं
(१।२३।६) ननु नमिति पंचर्षस्य सूक्तस्य प्रथम तृतीया चतुर्थीनामृचाभिर्द्रो गस्त्यो द्वितीया पंचम्यो रगस्त्य ऋषिर्द्रो देवता आद्यहृती
तत्तस्ति सोऽनुभौ त्या त्रिष्टुप् । (१।२३।७) प्रतिव इति षड्चस्य सूक्तस्यागस्त्यो मरुतः अंत्यानां च तत्सृणामरुत्वानिं द्रस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं. १

अनु. २ः

॥२६॥

जीरदानुं ॥ ११ ॥ (१।२३।८) चित्रोवोस्तुयामश्चित्रऽजृतीसुदानवः । मरुतोऽअहिमानवः ॥ आरेसारवःसु
 दानवोमरुतऽअंजृतीशरुः । आरेऽअहमायमस्यथ ॥ तृणस्कंदस्यनुविशःपरिचुंफसुदानवः । ऊर्ध्वान्नःकर्तजीवसे
 ॥ १२ ॥ (१।२३।९) गायत्सामनमन्यथवेरचामतद्वावृधानंस्वर्त । गवोधिनवोवर्हिष्यदन्धाऽआयत्सद्वा
 नद्विष्यंविवासान् ॥ अर्चद्वावृषभिःस्वेदुहव्यैर्मगेनाश्रोऽअतियजुर्गयात् । प्रमदयुर्मनागूतहोताभरतेमयोमिथुना
 यजन्नः ॥ नक्षद्धोतापरिसर्वामितायन्भरद्भमाशरदःप्रथिव्याः । कंददश्वोनयमानोरुवद्भरतदूतोनरोदसीचरद्वा
 क् ॥ ताकूर्मापतरास्मैप्रच्यैलानिदेवयंतोभरते । जुजोषदिद्रोदस्मवर्चानासत्येवसुग्भ्योरथेष्टाः ॥ तमुष्टुहोद्वयोह
 सत्वायःशूरोमधवायोरथेष्टाः । प्रतीचश्चिद्योधीयान्वृषणान्ववृषश्चित्तमसोविहता ॥ १३ ॥ प्रयदित्यामहिना
 नृभ्योऽअस्त्यारोदसीकश्येद्वनासै । संविष्यऽइद्रोवृज्जनभूमाभतिस्वधावोऽओपशमिवृधां ॥ समस्तुत्वाशूरसता
 मुराणंप्रथितंमंपरितंसयध्वै । सजोषसऽइंद्रंमदेक्षोणीःसूरचिद्येऽअनुमदतिवाजैः ॥ एवाहितेशंसवनासमुद्रऽआ
 पोयत्तऽआसुमदतिद्वीः । विश्वतिऽअनुजोष्याभूजोःसूरश्चिद्यद्विषावेविजनां ॥ असांमयथासुषखायऽएन
 स्वभिष्टयोनुरांनशंसैः । असद्यथानुऽइद्रोवदनेष्टासुरोऽनकर्मनयमानऽवृक्था ॥ विषर्धसोनुरांनशंसैरस्माकांसदिं

(१।२३।१४) चित्रोवइतिवृचस्यसूक्तसमैत्रावरुणिरास्योमरुतोगायत्री । (१।२३।९) गायत्सामेतित्रयोदशसूक्तस्यमैत्रावरुणि

द्रोवज्रहस्तः । मित्रायुवोनपूर्णतिष्ठुशिष्टौमध्यायुवउपशिक्षितियज्ञैः+ ॥ १४ ॥ यज्ञोहिष्मैद्रुकश्चिद्वृधन्बुहुराणश्चिन्म
 नसापरियन् । तीर्थेनाच्छातातृषाणमोकोदीर्घोनसिध्रमाकृणोत्यध्वा ॥ मोषण्डइन्द्रात्रपुत्सुदेवैरस्तिहिष्मतिशुष्मिन्न
 आनौवदृत्याः सुवितायदेवविद्यामेषंबुजंजीरदानुं ॥ १५ ॥ (१।२३।१०) एषःस्तोमंडइन्द्रुभ्यमस्मेऽएतेनगातुंहरिवोविदोनः ।
 त्वंसत्यतिर्मघवानस्तस्मैत्रस्त्वसत्योवसवानः सहोदाः+ ॥ दनोविशंडइन्द्रमुध्रवाचः ससयत्पुरःशर्मशारद्वीदत् ।
 ऋणोरपोऽअनवद्याणायूनेवृत्रंपुरुकुत्सायरंधीः ॥ अज्रावृत्तंडइन्द्रशूरपत्नीद्याचयोभिः पुरुहूतननुं । रक्षोऽअग्निमशुषं
 तूर्वयाणंसिंहोनदमेऽअर्पासिवस्तोः ॥ शेषुहूतंडइन्द्रशूरपत्नीद्याचयोभिः पुरुहूतननुं । रक्षोऽअग्निमशुषं
 वहमानाऽअर्पत्य ॥ १६ ॥ जघन्वाऽइन्द्रमित्रैरुन्वोदप्रवृद्धोहरिवोऽअदाश्न । असूरश्चक्रंवृहताद्रुभीकुभिस्पृधो
 धिभ्रेत् ॥ सनातातंडइन्द्रनव्याऽआगुः सहोनभोर्विरणायपूर्वीः । करत्तिस्रोमघवादानुचिन्नानिर्दुर्योणेकुयवाचम
 रगस्यइंद्रस्त्रिष्टुप् । (१।२३।१०) त्वंराजेतिदशर्चससूक्तस्यमैत्रावरुणिरगस्यइंद्रस्त्रिष्टुप् ॥

त्वं धुनि र्निद्रुधुनि मतीर्ऋणोरपः सीरान स्रयतीः । प्रयत्समुद्रमतिशूरपर्यपर्यातुर्वशुयं दुस्वस्ति ॥ त्वमस्माकमिन्द्रवि
 श्वयस्याऽअवृक्तमोनरां नृपाता । सनो विश्वासांस्पधसंहोदाविद्यामेपंवृजनजीरदानुं ॥ १७ ॥ (१।२३।११) म
 त्स्यपायितेमहः पात्रस्येव हरिवोमत्सरोमदः । वृपतिवृष्णऽइंदुर्वाजीसहस्रसार्तमः ॥ आनस्तेगंतुमत्सरोवृपामद्वोचरे
 पयः । सहावाऽइंद्रसानसिः पृतनापालमर्त्यः ॥ त्वंहिशूरः सनिताचोदयोमनुषोरथं । सहावांदस्युमव्रतमोषः पात्रं नशो
 चिपां ॥ मुपायसूर्यकवेचक्रमीशानऽओर्जसा । वहुशुष्णांयवधंकुत्संवातस्याश्वैः ॥ शुष्मिन्तमोहितेमवोद्युम्निन्तमऽ
 उतक्रतुः । वृत्रघ्नावरिवोविदामंसीष्टाऽअश्वसार्तमः ॥ यथापूर्वैभ्योजरित्भ्यऽइंद्रमयऽइवापोनृत्यतेवभूय । ता
 मनुत्वामिविदंजोहवीमिविद्यामेपंवृजनजीरदानुं ॥ १८ ॥ (१।२३।१२) मत्सिनोवस्यऽइष्टयऽइंद्रमिंद्रोवृपाविश्र
 क्रघायमणऽइन्वसिशत्रुमंतिनविंदसि ॥ तस्मिन्नावेशयागिरोयऽएकश्चर्यणीनां । अनुस्वधायमूय्यतेयवंनचर्कपृष्ठपां ॥
 यस्य विश्वा निहस्तेयोः पंचक्षितीनां वसु । स्याशयस्वयोऽअस्मभृग्दिव्येवाद्यानिर्जहि ॥ असुन्वतंसमंजहिदूणाशुयोनते
 मयः । अस्मभ्यमस्यवेदं न दक्षिंसुरिश्चिदोहते ॥ आवोयस्यद्विवर्हसोर्केपुसानुपगसत् । आजानिद्रस्येवोप्रावोवाजेषु

(१।२३।११) मत्स्यपाथीतिपट्टच्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिरगस्त्यइंद्रोनुपुषाद्यास्कं वोत्रीवाअत्यात्रिष्टुप् । (१।२३।१२) मत्सि
 नदसिपट्टच्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिरगस्त्यइंद्रोनुपुषाद्यात्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ४

॥ २८ ॥

वाजिनं ॥ यथापूर्वैभ्योजरितभ्यऽइंद्रमयऽइवापोनतृष्यतेवभूथ । तामनुत्वानि विदंजोहवीमि विद्यामेषं वृजं नजीरदं
नुं ॥ १९ ॥ (१।२३।१३) आचर्षणिप्राद्वपभोजनानं राजा कृष्टीनां पुरुहूतऽइंद्रः । स्तुतः श्रवस्य स्रवसोपमद्रिग्यु
क्त्वाहरीवृषणायाह्यवाङ् ॥ येतेवृषणोवृषभासऽइंद्रब्रह्मयुजोवृषरथासोऽअर्थाः । तौऽआतिष्ठतेभिरायाह्यवाङ्
चाहिप्रवतोपमद्रिक् ॥ अयंयज्ञोदेव्याऽअयंमिथैऽइमाब्रह्माण्ययमिंद्रसोमः । युक्त्वावृषभ्यांवृषभक्षितीनां हरिभ्यां
नजीरदानुं ॥ २० ॥ (१।२३।१४) यद्धस्यात्ऽइंद्रश्चाष्टिरस्त्रियावभूथजरितभ्यऽजृती । मानः कामं महयं
तुमाधुग्विश्वातेऽअद्यापयर्पिऽआयोः ॥ नद्याराजेंद्रऽआदभन्नोयानुस्वसाराकृणवंतयो नै । आपश्चिदस्मै सुतु
काऽअवेपुन्गमन्नऽइंद्रः सख्यावयंश्च ॥ जेतानृभिरिंद्रः पृसुशरः श्रोताहवंनाधमानस्यकारोः । प्रभर्तोरथं द्राशुर्पऽउ
तेविवाचिसत्राकुरोयजमस्यशंसः ॥ एवानृभिरिंद्रः सुश्रवस्यामखादः पृक्षोऽअभिमित्रिणोभूत् । समर्पऽइषः स्तव
(१।२३।१३) आचर्षणिप्राद्वतिपंचर्चस्यसूक्तस्यैत्रावरुणिरास्त्यइंद्रखिद्रुप् । (१।२३।१४) यद्धस्यातइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यैत्रावरुणि

॥ २८ ॥

मंडलं १

अनु. :

विद्यामेषंवृजनंजीरदानुं ॥ २१ ॥ (१।२३।१५) पूर्वीरहंशरदःशश्रमाणाद्रोपावस्तोरुपसोजरयंतीः । मिनातिश्रि
 र्थजरिमातनूनामथ्यनुपलीर्वृपणोजगम्युः ॥ येचिद्धिपूर्वोऽकृतसापुऽआसन्त्साकंदेवेभिरवदन्नतानि । तेचिदवासुर्न
 हंतमापुःसमनुपलीर्वृपभिर्जगम्युः ॥ नमृपांश्रांतयदवतिदेवाविधाऽइत्स्पृधोऽअभ्यश्रवाव । जयावेदत्रशतनीथमा
 जिंयत्संभ्यंचमिथुनावभ्यजाव ॥ नदस्यमारुधतःकामऽआगन्धितऽआजतोऽअमुतःकुतश्चित् । लोपांमुद्रावृपणंनी
 रिणातिधीरमधीराधयतिश्वसंतं ॥ इमंनुसोममंतितोहृत्सुपीतमुपब्रुवे । यत्सीमार्गश्चक्रमातत्सुमृळतुपुलुकामोहिम
 ल्यैः ॥ अगस्त्यःखनमानःखनित्रैःप्रजामपत्यंवलमिच्छमानः । उभौवर्णावृपिरुद्रःपुपोषसत्यादेवेष्वशिषोजगाम
 ॥ २२ ॥ (१।२४।१) युवोरजांसिसुयमासोऽअश्वारथोयद्वांपर्यणीसिदीयत् । हिरण्ययांवांपवयःप्रुपायन्मध्वःपि
 वंताऽउषसःसचेथे ॥ युवमत्यस्यावनक्षथोयद्विपत्मतोनर्थस्यप्रयज्योः । स्वसायद्वाविश्वगूर्तीभरतिवाजायेष्टेमधुपा
 विषेच ॥ युवंपयऽउस्त्रियायामधत्तंपक्कमामायामवपूर्वगोः । अंतर्हृनिनोवामृतपसूह्वारोनशुचिर्जतेहृविष्मान् ॥
 युवंहृधर्ममधुमंतमत्रयेपोनक्षोदोवृणीतमेषे । तद्धानरावश्विनापश्वऽइष्टीरथ्येवचक्राप्रतियंतिमध्वः ॥ आवांदानाय

रगस्त्यदंद्रस्त्रिष्टुप । (१।२३।१५) पूर्वीरहमितिपटुचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिरागस्त्यःआद्ययोर्द्वयोर्लोपांमुद्राक्रषिकांलयोर्द्वयोरगस्त्यांतेवासी
 ब्रह्मचारीऋषिःसर्वासांरतिर्देवतान्निष्टुपंचमीदृदवी । (१।२४।१) युवोरजांसीतिदर्शसूक्तस्यमैत्रावरुणिरागस्त्योश्विनौत्रिष्टुप ।

ऋक्सं.

अ. २७. ४

॥२९॥

मंडलं १

अनु. २६

॥२९॥

वदृतीयदस्त्रागोरोहेणतौऽयोनजिभिः । अपःक्षोणीसचतेमाहिनावांजुर्वामक्षुरंहसोयजत्रा ॥ २३ ॥ नियद्युवेथेनि
युतः सुदानुऽउर्पस्वधाभिः सृजथः पुरंधि । मेषद्वेषदतो न सरिरामहेददे सुव्रतो न वाजं ॥ वयंचिच्छिवांजरितारः सत्या
द्यन्विरुद्रस्य प्रस्रवणस्य सातौ । अधाचिच्छिष्माश्विना वनिद्यापाथो हिष्मा वृषणा वंति देवं ॥ यवांचिच्छिष्माश्विनावनु
थो मनुषो न होता । धत्तंसुरिभ्यऽउत वास्वभ्यं न स त्यारयिषा चः स्याम ॥ तं वारं थै वयमद्याहु वे मुस्तो मै रश्विना सुविताय
नव्यं । अरिष्टनेमिं परिद्यामि यानं विद्या मे षं वृजनं जीरदानुं ॥ २४ ॥ (१।२४।२) कदुप्रेष्ठा विषारं यीणामध्वर्यताय
दिव्या सोऽअर्त्याः । मनोजुवो वृषणो वीतपृष्ठाऽएहस्वराजोऽअश्विना वंहतु ॥ आवा मध्वांसः शुचयः पयस्पावातरंहसो
वितायगम्याः । वृष्णः स्थातारामनसो जवीयानहं पूर्वो यजतो धिष्ण्यायः+ ॥ इहेहजाता समवावशीता मरे पसातु न्वा इ
नामभिः स्वैः । जिष्णुर्वीमन्यः सुमखस्य सरिद्विवोऽअन्यः सुभर्गः पुत्रऽऊहे ॥ प्रवां निचेरुः ककुहो वशोऽअनुपिशंगरूपः
सदनानिगम्याः । हरीऽअन्यस्य पीपयंतवाजैर्मथराजोऽस्यश्विना विधोषैः ॥ २५ ॥ प्रवां शरद्धान्वपुभोननिःषाद्रपूर्वा
(१।२४।२) कदुप्रेष्ठावितिनवस्य सूक्तस्य भैत्रावरुणिरागस्योश्विनौ त्रिष्टुप् ।

रिषश्चरतिमर्च्यऽङ्गणन् । एवैरन्यस्यपीपयैतवाजैर्वपतीरूध्वानुद्यौनऽधार्गुः ॥ असर्जिवांस्थविरावेधसागीर्वाह्निऽअ
 ध्विनात्रेधाक्षरैती । उपस्तुतावचतुर्नाधमानंयामन्नयामन्ष्टुतंहवमे ॥ उतस्यावांरुशतोवप्ससोगीस्त्रिवर्हिषिसदसि
 पिव्वतेनून् । वृषावांमेघोवृपणापीपायगोर्नसेक्रेमनुषोदशस्यन् ॥ युवांपेवाध्विनापुरेधिरग्निमयानर्जतेहविष्मा
 न् । हुवेयद्वावरिवस्यागृणानोविद्यामेषंबुजर्जरीरदानुं ॥ २६ ॥ (१२४।३) अर्धद्विदंवयुनमोषुभूषतारथोवृष
 ण्वान्मदतामनीषिणः । धियंजिन्वाधिष्ण्याविशपलावसूद्विवोनपातासुकृतेशुचिब्रता ॥ इद्रतमाहिधिष्ण्यामरुत्तमा
 दुस्त्रादंसिष्टार्थ्यार्थीतमा । पूर्णैरथंवहेथेमध्वऽआचिर्ततेनद्रांश्चसमुपयाथोऽअध्विना ॥ किमत्रदस्त्राकृणुथःकिमा
 सार्थेजनोयःकश्चिदहविर्महीयते । अतिकमिष्टंजुरतंपणेरसंज्योतिर्विप्रायकृणुतंवचस्यवे ॥ जंभयतमभितोरायंतःशु
 नोहृतंमृधोविदथुस्तान्यध्विना । वाचवाचंजरितूरुलिनीकृतमुभाशंसनासत्यावतंमम ॥ युवमेतंचक्रथुःसिंधुषुष्टवमा
 त्मन्वंतंपक्षिणैतौग्यायकं । येनदेववामनंसानिरूहथुःसुपसुनीपेतथुःक्षोदसोमहः ॥ २७ ॥ अवविजंतौत्र्यमप्स्वं
 तरनारंभणेतमसिप्रविजं । चतस्रोनावोजलस्यजुष्टाऽउद्विभ्यामिपिताःपारयंति ॥ कःस्विहृक्षोनिष्ठितोमध्यऽ
 अर्णसोयंतौत्र्योनाधितःपर्ययस्वजत् । पूर्णामगस्यपतरोरिवारभुऽउद्विनाऽऊहथुःश्रोमतायकं ॥ तद्वानरानास

(१२४।३) अभूदिदमित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिरगस्त्योध्विनौजगतीपष्ठत्येवप्रभौ ।

त्यावनुष्याद्यद्दामानांसुचथमवोचन् । अस्मादद्यसदसः सोम्यादाविद्यामेपंबुजर्नजीरदानुं ॥ २८ ॥ (१।२४।४)
 तंतुंजाथांमनसोयोजवीयाञ्जिवधुरोवृषणायस्त्रिचक्रः । येनोपयाथः सुकृतोदुरोणं त्रिधातुनापतथोविर्नपुणैः + ॥
 द्रथोवर्ततेयद्वाभिक्षांयत्तिष्ठथः कर्तुमंतानुपक्षे । वर्युवपुष्यासचतामियंगीद्विचोदुहित्रोषसासचेथे ॥ आतिष्ठतंसुवृत्तयो
 रथोवामनुब्रतानिवर्ततेहविष्मान् । येनरानासत्येष्यथैवतिथ्यास्तनयायुत्तमनेच ॥ मावांबुकोमाबुकीरादधर्षिन्मा
 परिर्वक्तुमतातिधक्तं । अयंवाभागेनिहितइयंगीर्दस्वाविमेवांनिधयोमर्धूनां ॥ युवांगोर्तमः पुरुमीहोऽअत्रिदस्त्राह
 वृतेवसेहविष्मान् । दिशंनदिष्टामृजयेवयंतामेहवंनासत्योर्पयातं ॥ अतारिष्मतमसस्पारमस्यप्रतिवांस्तोमोऽअश्वि
 नावधायि । एहयातंपथिभिर्देवयानैर्विद्यामेपंबुजर्नजीरदानुं ॥ २९ ॥ इतिद्वितीयाष्टकेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
 द्वादशाध्याये वर्गाः २९ सूक्तानि १८ ऋचः १४२ ॥ त्यागः ॥ मरुच्चइदं. १५ इन्द्रयेदं. मरुच्चइदं. २० इन्द्रयेदं. १३ रुद्रमरुच्च-
 इदं. २ मरुच्चतइन्द्रयेदं. ४ मरुच्चइदं. ३ इन्द्रयेदं. ४५ रत्याइदं. ६ अध्विम्यामिदं. ३३ ॥ इतिद्वितीयेचतुर्थः ॥ ४ ॥
 तावांकतरैकादशद्यावापृथिवीयमानोवैश्वदेवंपितुंन्वन्नस्तुतिर्गायत्रैत्वाद्यानुष्टुब्गभोतृतीयांत्येपंचमयाद्याश्चत
 सोनुष्टुभोत्याबृहतीवासमिद्धआग्नियोश्चनयाष्टावाग्नेयमनर्वाणंवाहस्यत्यंककतः षोडशोपनिषदसृणसैर्यथानु
 (१।२४।४) तंतुंजाथामितिपडुचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिरास्त्योश्चिनौत्रिष्टुप् ।

द्रुभंविषशंकावानगस्त्यः प्राब्रवीद्दशग्याद्याश्च तिस्रोमहापंचकयोर्महावृहतीचय आंगिरसः शौनहोत्रोभूत्वाभार्ग
 वः शौनको भवत्सगृत्समदो द्वितीयं मंडलमपश्यत्त्वमग्ने जागतं तु यज्ञेन सप्तो नासमिद्ध एकादश प्रसप्समी जगती हु
 वेन वसो माहुतिर्भोर्गोहोताष्टवानुष्टुभमिमांभे गायत्रं हि श्रेष्ठं षड्वाजयन्निवांत्यानुष्टुप् ॥ १ ॥
 हरिः ३ ओम् ॥ (१२४।५) तावामद्य ताव परं हुवे मोच्छंत्यामपसिवाहिं रुक्थैः । नासत्याकुहचित्संतावयो दिवो न

पातासु दास्तराय ॥ अस्मेऽऊषु वृषणामादयेथा मुत्पुर्णा हितमम्यो मर्दता । श्रुतं मेऽअच्छोक्तिभिर्मतीनामेष्टानानि
 चैताराचर्कणैः ॥ श्रियेपूप्त्रिपुक्ते वेदेवानासं सत्यावहं तु सर्यायाः । वृच्यं तैवांकुहाऽअप्सु जाता युगाज्जणैर्ववरुणस्य भू
 रैः ॥ अस्मेसावांमाध्वीरातिरंस्तुस्तोमं हि नो तं मान्यस्य कारोः । अनुयद्वा श्रवस्या सुदानुसूवीर्यीय चर्पणयो मर्दति ॥ ए
 षवांस्तोमोऽअश्विनावकारिमानेभिर्मघवाना सुवृत्ति । यातं वर्तिस्तनया युत्सने चागस्त्येनासत्या मर्दता ॥ अतारिष्मत्
 मसस्यारमस्य प्रतिवांस्तोमोऽअश्विनावधायि । एहया तं पृथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदनुं ॥ १ ॥ (१२४।६)
 कृतरापूर्वी कतरा परायोः कथाजाते कवयः कोविदे । विश्वं तमना विभृतो यद्भूनाम विवर्ततेऽअहनी च क्रियेव ॥ भूर्गुदेऽ
 अचरं तीचरं तं पृङ्गं भूमपदी दधाते । नित्यं न सुनुं पित्रो रपस्थे द्यावा रक्षतं पृथिवी नोऽअभ्वात् ॥ अने हो दात्र मर्दिते रनुर्व

(१२४।५) तावामिति षड्वचस्य सूक्तस्यैत्रावरुणिरगस्त्योश्चिनौ त्रिष्टुप् । (१२४।६) कतरयेकादश वचस्य सूक्तस्यैत्रावरुणिरगस्त्यो

वाऽइवेरते ॥ ६ ॥ त्वेपितोमुहानां देवानां मनो हितं । अकारि चारुकेतुना तवाहिमवसावधीत् ॥ यदुदोपितोऽअजं
गन्निवस्वपर्वतानां । अत्राचिन्नोमधोपितोरभक्षार्यगम्याः ॥ यदुपासोषधीनां पारिशामि शर्महे । वातापेपीवुऽइन्द्रं
तं त्वाव्यं पितोवचोभिर्गवो न हव्या सुदृढिम । देवेभ्यस्त्वासधुमादमसभ्यत्वासधुमादं ॥ ७ ॥ (१२४।९) सर्मि
षः ॥ आजुह्वानो न दुर्इड्यो देवाऽआवक्षियज्ञियान् । अग्रे स हस्रसाऽअसि ॥ प्राचीनं बहिरोजसा स हस्रवीरमस्तृणन् ।
यत्रादित्याविरार्जथ ॥ विराट्सन्नाडिभ्यः प्रभ्वीर्वह्वीश्च भूर्यसीश्च याः । दुरोधृतान्यक्षरन् ॥ ८ ॥ सुरुक्मेहि सुपेश
साधिश्चियाविरार्जतः । उषासावेहसीदतां ॥ प्रथमाहि सुवाचसा होतारदिव्याकवी । यज्ञनौयक्षतामिमं ॥ भारती
कूसरस्वतियावः सर्वाऽउपब्रुवे । तानश्चोदयतश्चिये ॥ त्वष्टारूपाणि हि प्रभुः पशून्विश्वान्समानजे । तेषानः स्फाति
मायज ॥ उपत्मन्यावनस्पते पाथो देवेभ्यः सृज । अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् ॥ पुरोगाऽअग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते ।
(१२४।९) समिद्धइत्येकादशर्चससूक्तस्य मैत्रावरुणिरगस्त्यइभस्तनूनापदिष्ठावर्हिर्देवीर्द्वारउषासानक्तादेव्यो होतारौ सरस्वतीका
भारत्यस्त्वष्टावनस्पतिस्वाहाकृतय इति क्रमेण देवताः गायत्रीच्छंदः ।

स्वाहाकृतीशुरोचते ॥ ९ ॥ (१२४।१०) अग्नेनयऽसुपथार्थायेऽअस्मान्विश्वानिदेववयुनानि विद्वान् । ययोध्यं
 स्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठातेनमऽउत्किंविधेम ॥ अग्नेत्वंपरयानव्योऽअस्मान्त्वस्तिभिरतिदुर्गाणि विश्वा । पूश्चपृथ्वी
 बहुलानऽउर्वीभवातोकायतनयायशंयोः⁺ ॥ अग्नेत्वमसद्युयोच्यमीवाऽअर्नश्नित्राऽअभ्यर्मतकधीः । पुनरस्मभ्यंसु
 वितारयदेवक्षांविश्वेभिरमृतैर्भिर्यजत्र ॥ पाहिनोऽअग्नेपायुभिरजस्रैरुताप्रियेसदनुऽआशुशुक्रान् । मातैर्भयंजरितारंय
 विष्णुनंविदुन्मापरंसहस्वः ॥ मानोऽअग्नेवसृजोऽअघार्याविष्यवैरिपवेदुच्छुनाशै । मादृत्यतेदशतेमादतेनोमारीषते
 सहसावुन्परदाः ॥ १० ॥ विघृत्वावोऽऽकृतजातयंसदृणानोऽअग्नेतन्वेऽइवरूथं । विश्वाद्रिक्शोरुतवानिनित्सोरभि
 ह्रुतामसिहिदैवविष्पद् ॥ त्वतोऽअग्नऽउभयान्विविद्वान्वेपिप्रपित्वेमनुषोयजत्र । अभिपित्वेमनवेशास्योभूर्मर्मजे
 न्यऽउवृशिग्भिर्नाक्रः⁺ ॥ अवोचामनिवचनान्यस्मिन्मानस्यसनुःसहसानेऽअग्नौ । वयंसहस्रमृषिभिःसनेमविद्यामेपंब्रु
 जनैर्जीरदनुं ॥ ११ ॥ (१२४।११) अनर्वाणंवृषभंमद्रजिह्वंबृहस्पतिवर्धयानव्यमर्कैः । गाथान्यःसुरुचोयस्यदे
 वाऽआशुण्वंतिनर्वमानस्यमर्तौः ॥ तमत्वियाऽउपवाचःसचंतेसर्गोनयोदेवयतामसर्जि । बृहस्पतिःसह्यजोवरांसिवि
 भ्वाभवत्समंतेमातरिश्वा ॥ उपस्तुतिनर्मसुऽउद्यतिंचश्लोकंयंसत्सवितेवप्रवाह । अस्यकत्वाहुन्योऽइयोऽअस्तिमगोन
 (१२४।१०) अग्नेनेत्यष्टर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिगस्योभिबिष्टुप् । (१२४।११) अनर्वाणमित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिगस्यो

कक्से.

अ. २ अ. ५

॥ ३ ॥

मंडलं १

अनु. २४

॥ ३ ॥

भीमोऽअरक्षस्तुर्विष्मान् ॥ अस्यश्लोकोद्वितीयतेष्टिव्यामत्योनयंसद्यक्षश्चिचैताः । मगाणांनहेतुशोधंतिचेमाबुह
स्पतेरहिंमार्योऽअभिद्युन् ॥ गेत्वादेवोन्निकमन्यमानाःपापाभद्रमुपजीर्वतिपज्जाः । नदब्धेइअनुददासिवामंबुहस्प
तेचयसऽइयिरां ॥ १२ ॥ स्रैतुःसयवसोनपथादुनिंयंतुःपरिप्रीतो नमित्रः । सविद्वोऽउभयंचष्टेऽअंतर्बुहस्पतिस्तरऽआप
अपोर्णवतोऽअस्थुः ॥ संयस्तुभोवनथोनयंतिसुद्रंनस्रवतोरोधचक्राः । सविद्वोऽउभयंचष्टेऽअंतर्बुहस्पतिस्तरऽआप
नुं ॥ १३ ॥ (११२४।१२) कंकतो न कंकतोथोसती न कंकतः । सनःस्तुतोवीरवृद्धातुगोमद्विद्यामेषंबुजनंजीरदा
नहंत्यायत्यथोहंतिपरायती । अथोऽअवमृतीहृत्यथोपिनष्टिपिपती ॥ शरासःकुशरासोदुर्भासःसैर्याऽउत । मौजा
ऽअहृष्टवैरिणाःसर्वेसाकंन्यलिप्सत ॥ निगावोर्गोष्ठेऽअसदन्निमगासोऽअविक्षत । निकेतवोजनानान्येहृष्टाऽअलि
प्सत ॥ एतऽउत्येप्रत्यहश्रन्यदुषंतस्कराऽइव । अहृष्टाविश्वहृष्टाःप्रतिबुद्धाऽअभूतन ॥ १४ ॥ द्यौर्वःपितामृथिवी
मातासोमोऽआतादितिःस्वसा । अहृष्टाविश्वहृष्टाःस्तिष्ठतेत्यतासुकं ॥ येऽअस्यायेऽअंग्याःसचीकायेप्रकंकताः । अहं
वृहस्पतिस्त्रिष्टुप् । (११२४।१२) कंकतइतिपोळशर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिररास्त्वोमृणसूर्याअनुष्टुप्दशस्याद्यास्तिस्रोमहापंक्तयस्त्रयोदशी

न्यः ॥ उदपप्तदुसौसूर्यः पुरुषविश्वानिजर्वन् । आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वहृद्योऽअहृष्टहा ॥ सूर्ये विषमासजा मिह तिसूरा
 वतो गोहे । सोचिन्ननमरातिनो वयं मरामारेऽअस्य योजनं हरिष्ठा मधुत्वामधुलाचकार ॥ १५ ॥ इयत्ति काशकुंतिका सका
 जं घासते विपं । सोचिन्ननमराति ० ॥ त्रिःसप्तविंश्लिंगका विपस्य पुष्पमक्षन् । ताश्चिन्ननमरंति ० ॥ नवानानवतीनां विष
 स्यरोपुपीणां । सर्वोसामग्रभंनमारे ० ॥ त्रिःसप्तमथुर्यैः सप्तस्वसारोऽअग्रुवः । तास्तैर्विपं विजिश्चिरऽउदकं कुंभिनीरिव ॥
 इयत्तकः कुंभकस्तकं भिनइयदमना । ततो विपं प्रवावृत्ते पराचीरनुसंवर्तः ॥ कुंभकस्तदब्रवीद्भिरेः प्रवर्तमानकः । वृश्चिक
 स्यारसं विपमरं संवृश्चिकेते विपं ॥ १६ ॥ (इति शातर्चिनं प्रथमं मंडलं ॥ अत्र सूक्तानि १९१) ॥ ॥ परिशिष्टं ॥ मा
 धिभेर्नमरिष्यसि पारित्वा पापमि सवर्तः । घने न हन्मि वृश्चिकमहिं दे न गतं ॥ आदित्यरथवेगेन विष्णुबोहुवलेन च । गुरु
 उपक्ष निपातेन भूमिर्गच्छमहायशाः ॥ गुरुडस्य जातमात्रेण त्रयो लोकाः प्रकंपिताः । प्रकंपितामही सर्वा स शैलवनकान
 ना ॥ गगनं नष्टं च द्रार्कं ज्योतिप न प्रकाशते । देवताभयभीताश्चमारुतो न सुवार्यतिमारुतो न सुवार्यत्योनमः ॥ भोसर्पभ
 द्रभद्रते दूरं गच्छमहायशाः । जनमेजयस्य ज्ञातेऽआस्तीकवचनं स्मरं ॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः स पौननिवर्तते । शत
 धाभिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्षफलं रथ ॥ नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि । नमोऽसुनर्मदेतुभ्यं त्राहि मां विपसर्पतः ॥

महावृहती (विपत्रसूक्तं) ।

योर्जरत्कारुणाजातोर्जरत्कन्यामहायशः । तस्यसर्पापभद्रुतेदुरगच्छमहायशः ॥ १ ॥ (२।१।१) त्वमग्नेद्यु
 भिस्त्वमाद्युशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्मनस्परि । त्ववनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वनृणांनुपतेजायसेशुचिः ॥ तवामेहोत्रं तव
 पोत्रमत्विद्यं तवनेष्टृत्वमग्निहंतायतः । तवप्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्माचासि गृहपतिश्च नोदमे ॥ त्वमग्नऽद्रोक्षो वृषभः स
 तामसित्वं विष्णुरुगुरागो नमस्यः । त्वंब्रह्मरयिविद्वह्यणस्पते त्वं विधत्तः स च संपुरंध्या ॥ त्वमग्नेराजावरुणो धृतरात्रस्त्वं
 मित्रो भवसि दुस्मर्द्धिः । त्वमर्घ्यमास तर्पति र्यस्य संभुजं त्वमंशो विदधे देवभाज्युः⁺ ॥ त्वमग्ने त्वष्टा विधत्ते सुवीर्यं तव ग्रा
 वो मित्रमहः स जात्यै । त्वमाशुहेमारिरेष्वश्व्यं त्वनरांशर्धोऽसि पुरुवसुः ॥ १७ ॥ त्वमग्ने रुद्रोऽअसुरो महो दिवस्त्वं
 शर्धो मारुतं पूक्षऽईशिपे । त्वं वा तैरुणैर्योसि शंगयस्त्वं पूषा विधत्तः पसिनुत्मना ॥ त्वमग्ने रुद्रविणोदाऽअरंकृते त्वंदेवः
 स वितारं ब्रूधाऽअसि । त्वं भगोनृपते वस्वऽईशिपे त्वं पायुर्दमेयस्ते विधत् ॥ त्वमग्ने दमऽआविशपतिं विशस्त्वां राजा
 नं सुविदन्नमृजते । त्वं विश्वानि स्वनीकपत्यसे त्वं सहस्राणि शता दशप्रति ॥ त्वमग्ने पितरमिष्टिभिर्नरस्त्वां भ्रात्रा य
 शम्यात नरुचं । त्वंपुत्रो भवसि यस्ते विधुत्त्वं सर्वासु शर्वः पास्याधुर्यः ॥ त्वमग्नऽक्रभुराके नमस्यस्त्वं वाजस्यक्षुमतो
 रायऽईशिपे । त्वं विभास्यनुदक्षिदा वने त्वं विशिधुरसि यज्ञमातनिः ॥ १८ ॥ त्वमग्नेऽअदितिं देवदाशुपे त्वंहोत्राभारती

(२।१।१) (अथगात्समेद्वितीये मंडले चतस्रोऽनुवाकाः) ॥ त्वमग्रइति पौलशस्य सूक्तस्य शौनको गुत्समदोभिर्जगती ।

वर्धसगिरा । त्वमिळाशुतहिमासिदक्षसेत्वंवृत्रहावसुपतेसरस्वती ॥ त्वमग्नेसुधृतऽउत्तमंवयस्तवस्याहेवर्णऽआसंह
 शिश्रियः । तंवाजःप्रतरणोबृहन्नसित्वर्यिर्वह्लोविश्वतस्पृथुः⁺ ॥ त्वामग्नादित्यासऽआस्यं^१त्वांजिह्वांशुचयश्च
 क्रिरेकवे । त्वांरतिपाचोऽअध्वरेषुसश्चिरेत्वेदेवाहविरदंत्याहुतं ॥ त्वेऽअग्नेविश्वेऽअमृतासोऽअहुहऽआसादेवाहवि
 रदंत्याहुतं । त्वयामर्तासःस्वदंतऽआसुर्तित्वंगर्भोवीरुधांजशिपेशुर्चिः ॥ त्वंतान्संचप्रतिचासिमज्जनान्नेसुजातप्रचदे
 वरिच्यसे । पृक्षोयदन्नमहिनावितेभुवदनुद्यावापृथिवीरोदसीऽउभे⁺ ॥ येल्लोतृभ्योगोऽअग्रामश्वपेशसमभैरातिसुपस
 जंतिंसूरयः । अस्मान्चतांश्चप्रहिनेपिवस्यऽआवृहद्वदेमविदथैसवीराः ॥ १९ ॥ (२।१।२) यज्ञेनवर्धतजातवैदसम्
 म्रियजध्वंहविपातनागिरा । सुमिधानंसुप्रयसंस्वर्णरंष्ट्राक्षहोतारंबुजनेषुधूर्षदं ॥ अभित्वानक्तीरुषसोववाशिरेभेवत्संन
 स्वसरेषुधेनवः । द्विवऽइवेदरतिमानुपायुगाक्षपौभासिपुरुवारसंयतः ॥ तंदेवानुध्वेरजसःसुदंसंसदिवस्पृथिव्योररति
 न्येरिरे । रथमिववेद्यंशुक्रशोचिपमग्निमित्रनक्षतिषुप्रशंस्यं ॥ तमुक्षमाणंरजसिस्वऽआदमेचंद्रमिवसुरुचंह्वारऽआद
 धुः । पृश्न्याःपतरंचितयंतमक्षभिःपृथोनपायुंजनसीऽउभेऽअनु ॥ सहोत्ताविश्वंपरिभूत्वध्वरंतमुह्व्यैर्मनुषऽक्रजते
 गिरा । हिरिशिप्रोवृधसानासुजभूरुह्यौनस्तृभिश्चितयद्रोदसीऽअनु ॥ २० ॥ सनौरेवत्समिधानःस्वस्तयेसंददुस्वात्र

(२।१।२) यज्ञेनेतित्रयोदशर्वस्यसूक्तस्यशौनकोपुत्समदोभिर्जगती ।

यिमस्मासुदीदिहि । आनः कृणुष्वसुवितायरोदसीऽअग्नेह्व्यामनुषोदेववीतये ॥ दानोऽअग्नेबृहतोदाः सहस्रिणोऽदु
 रो नवाजं श्रुत्याऽअपावृधि । प्राचीद्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि स्वर्गं शुक्रमपसो विदिद्युतुः ॥ सऽईधानऽउषसो राभ्याऽ
 अनुस्वर्गं दीदेद रुषेभानुना । होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश्चारुरायवे ॥ एवानोऽअग्नेऽअमृतैषु
 पूव्यधीष्णीपायबृहद्वेवेषुमानुषा । दुहानाधेनुर्बृजनैषु कारेवेत्सनाशतिनं पुरुरुपमिषणि ॥ वयमग्नेऽअर्वतावासुवीर्यं
 ब्रह्मणा वाचितये माजनोऽअति । अस्माकं द्युन्नमधिपंचकृष्टिषूच्चास्वर्गं शुशुचीतदुष्टरं ॥ सनोवो धिसहस्यप्रशंस्योच
 स्मिन्सुजाताऽऽइषयंतसूर्यः । यममेयज्ञमुपयंति वाजिनो नित्येतो केदी दिवा संस्वेदमे ॥ उभयांसो जातवेदः स्याम ते स्तो
 तारोऽअग्नेऽसूर्यश्च शर्मणि । वस्वो रायः पुरुश्चंद्रस्यभूर्यसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्निधनः ॥ ये स्तोतृभ्यो गोऽअग्रामश्वपेश
 समग्ने रातिमुपसृजंति सूर्यः । अस्मान् च तांश्च प्रहिनेष्विवस्यऽआवृहद्देम विदथे सुविराः ॥ २१ ॥ (२।१।३) समिद्धो
 ऽअग्निर्निहितः पृथिव्यां प्रत्यङ्गविश्वानि भुवनान्यस्थात् । होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान्यर्जत्वग्भिरहेन ॥ नरा
 शंसः प्रतिधामान्यं जन्ति स्रोदिवः प्रतिमहास्वर्चिः । घृतमुषामनं साह्व्यमंदन्मूर्धन्यज्ञस्य समनं कृदेवान् ॥ ईळितोऽ

(२।१।३) समिद्धो अग्निरित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य शौनको गुत्समद्विध्मो नराशंस इत्येव हिंदीद्वार उषासानक्तद्वेव्यौ होतारौ सरस्वती व्या
 भारत्यस्त्वष्टा वनस्पतिस्वाहाकृतय इति क्रमेण देवतास्त्रिष्टुप षष्ठीसप्तम्यौ जगत्यौ ।

अग्नेर्मनसानोऽअहं देवान्यक्षिमानुपात्पूर्वोऽअद्य । सऽआर्वहमरुतां गार्धोऽअच्युतमिन्द्रं नरोवहिपदयजन् ॥ देवव
 हिवर्धमानं सवीरं स्तीर्णराये सुभरं वेद्यसां । घृतेनां कं वसवः सीदते दं विभ्वे देवाऽआदित्याय क्षियांसः ॥ विश्रयंता मुर्वि
 या हूयमाना द्द्वारो देवीः सुप्रायणानमोभिः । व्यचस्वती विप्रथंता मज्ज्या वर्णपुनानाय शसं सवीरं ॥ २२ ॥ साध्वपांसि
 सनतानऽउक्षितेऽउपासानक्तो वय्येवरण्विते । तंतुतं सं वयती समीचीयज्ञस्यपेशः सुदुधे पर्यस्वती ॥ देव्या होतारा प्रथ
 मा विदुष्टरऽऋजुयक्षतः समचावपुष्टरा । देवान्यजंता वृतुथा समजतो नार्भा पृथिव्याऽअधिसा नु पुत्रिपुं ॥ सरस्वती
 साधयंती धियं नऽइळा देवी भारती विश्वतूतिः । तिस्रो देवीः स्वधया विहिरेदमच्छिद्रं पां तु शरणं निपद्य ॥ पिशंगरूपः सुभ
 रो वयोधाः श्रुष्टी वीरो जायते देवकर्मः । प्रजां त्वष्टा विष्यतु नार्भिमसेऽअथो देवानामन्यैतु पाथः ॥ वनस्पतिरवसजन्नु
 पथादुभिर्हृविः सृदयाति प्रधीभिः । त्रिधा समकं नयतु प्रजानन्दे वेभ्यो दैव्यः शमितो प हव्यं ॥ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य यो
 निर्धृतोऽश्रितो घृतं त्वं स्वधाम । अनुज्वधमार्वहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यं ॥ २३ ॥ (२।१।४) ह्रुवेवः सुद्यो
 त्मानं सुवृक्किं विशाममिमतं थि सुप्रयसं । मित्रऽइव यो दिधि पाथ्यो भूहवऽआदेव जने जात वेदाः ॥ इमं विधंतोऽअपांस
 धस्येद्वितादधुर्भगवो विक्ष्वा इयोः । एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमो देवानां मिश्ररतिर्जीराश्वः ॥ अग्निदेवासो मारुपीषु विष्णु

(२।१।४) ह्रुवेव इति नवर्चस्य सूक्तस्य मार्गवः सोमाहुतिरभिच्छिष्टम् ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ५

॥ ३६ ॥

प्रियधुःक्षेप्यंतोनमित्रं । सदीदयदुशतीरुम्याऽआदुक्षाथ्योयोदास्वतेदमऽआ- ॥ अस्यण्वास्वत्येवपुष्टिःसंहृष्टिरस्य
हियानस्यदक्षोः । वियोभरिभ्रदोषधीषुजिह्वामत्योनरथ्योदोधवीतिवारान् ॥ आयन्मेऽअर्भवुनदुःपनंतोशि
गभ्योनाभिमीतवर्णं । सचित्रेर्णचिकितेरसुभासार्जुवर्णयोमुहुरायुवाभूत् ॥ २४ ॥ आयोवनातातृषाणोनभातिवा
र्णपथारथ्येवस्वानीत् । कृष्णाध्वातपूरण्वक्षिकेतदौरिवुस्यमानोनभोभिः ॥ सयोव्यस्थादुभिदक्षदुर्वोपशुनैतिस्वयुर
अस्मेऽअशेस्यंद्धरिवृहंतक्षुमंतवार्जस्वपत्यंरयिंदाः ॥ नृतेपूर्वस्यावसोऽअधीतौतृतीयेविदथेमन्मशंसि ।
रसोऽअभिमातिषाहुःसत्स्वरिभ्योगृणतेतद्वयोधाः ॥ २५ ॥ (२।१।५) होताजनिष्टचेतनःपितापितृभ्यऽउत्तये । सुवी
न्जेन्यंवसुशकर्मवाजिनोयमं ॥ त्वयायथागृत्समदासोऽअग्नेगुहावन्चतऽउत्तयेविदथेमन्मशंसि ।
दधन्वेवायदीमनवोचद्रक्षाणिधेरुतत् । परिविश्वानिकाव्यानेमिश्रकर्मिवाभवत् ॥ मनुष्वदैव्यमष्टमंपोताविश्वंतादिन्वति ॥
तुनार्जनि । विद्धोऽअस्यव्रताभ्रवावयाऽइवानुरोहते ॥ ताऽअस्यवर्णमायुवोनेष्टुःसंचतधेनवः । साकंहिथुर्विनाशुर्विःप्रशास्ताक्र
स्वसारोयाऽइदंययुः+ ॥ यदीमातुरुपस्वसाघृतंभरंत्यस्थित । तासामध्वयुरागतौयवौवृष्टीर्वमोदते ॥ स्वःस्वायुधा
(२।१।५) होताजनिष्टेष्टर्चस्यसूक्त्यभार्गवःसोमाहुतिरभिरुष्टुप् ।

मंडलं २

अनु. १

॥ ३६ ॥

यसेकृणतामत्विगत्विजै । स्तोमंयज्ञंचादर्वनेमाररिमावयं ॥ यथाविद्धाऽअंकरद्विध्वेभ्योयजतेभ्यः । अयमभ्येत्वेऽ
 अपिययज्ञंचक्रुमावयं⁺ ॥ २६ ॥ (२।१।६) इमामैऽअग्नेसमिधमिमापुसद्वेनेः । इमाऽउपुश्रुधीगिरः ॥ अया
 तेऽअग्नेविधेमोर्जोऽनपादश्वमिष्टे । एनासुक्तेनसुजात ॥ तंत्वागीभिर्गिर्विणसंद्रविणस्युंद्रविणोदः । सपर्येमसपर्यवः ॥
 सर्वोधिंसरिर्मघवावसुपतेवसुदावन् । युयोध्य^१सद्वेयसि ॥ सनोवृष्टिदिवस्परिसनोवाजमनर्वाण । सनःसहस्रिणी
 रिपः ॥ ईळांनायावस्येयविष्टदूतनोगिरा । यजिष्ठहोतरगहि ॥ अंतर्ह्यग्नऽईयसेविद्वान्जन्मोभयाकवे । दूतोजन्ये
 वमित्र्यः ॥ सविद्धोऽआर्चपिप्रयोयक्षिचिकित्वऽआनुषक् । आचासिन्सत्सिर्वहिषि ॥ २७ ॥ (२।१।७) श्रेष्ठय
 विष्टभारताग्नेद्युमंतमार्भर । वसोपुरुस्पृहुरधि⁺ ॥ मानोऽअरातिरीशतदेवस्यमर्त्यस्यच । पर्षितस्याऽउतद्विपः⁺ ॥
 विश्वाऽउतत्वयाव्यंधाराऽउदन्याऽइव । अर्तेगाहेमहिद्विषः ॥ शुचिःपावकंवद्योग्नेबृहद्विरोचसे । त्वंघृतेभिराहुतः ॥
 त्वंनोऽअसिभारताग्नेवशाभिरुक्षभिः । अष्टार्यदीभिराहुतः ॥ द्वेन्नःसर्पिरासुतिःप्रलोहोतावरेण्यः । सहसस्पुत्रोऽअश्रुतः
 ॥ २८ ॥ (२।१।८) वाजयन्निवनूरथान्योगौऽअग्नेरुपस्तुहि । युशस्तमस्यमीहृषः ॥ यःसुनीथोददाशुपेजूर्योऽजर्यन्न

(२।१।६) इमामइत्यष्टवस्यसूक्त्यभार्गवःसोमाहुतिरगिर्यात्री । (२।१।७) श्रेष्ठमितिपट्टचस्यसूक्त्यभार्गवःसोमाहुतिरभि
 र्यात्री । (२।१।८) वाजयन्निपट्टचस्यसूक्त्यशौनकोगुत्समदोग्निरगिर्यात्र्यंयानुष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २अ. ६

॥३७॥

रिं । चारुप्रतीकऽआहुतः ॥ यऽलश्रियादमेवाद्रोषोषसंप्रशस्यते । यस्यव्रतं न मीर्यते ॥ आयः स्वर्णभानुना चित्रो वि
भास्यर्चिषा । अंजानोऽअजैरैरभि ॥ अत्रिमनुस्वरज्यमग्निमुक्थानि वावृधुः । विश्वाऽअधिश्चिरो दधे ॥ अग्नेरिन्द्रस्य
सोमस्य देवानामिति भिर्वचं । अरिष्यंतः सचेमह्नाभिष्यामपृतन्यतः ॥ २९ ॥ इति द्वितीयाष्टके पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

त्रयोदशाध्याये वर्गाः २९ सूक्तानि १६ ऋचः १५९ ॥ त्यागः ॥ अधिम्यामिदं. ६ द्यावापृथिवीभ्यामिदं. ११ विश्वेभ्यो देवेभ्यः. ११
इळ्यायेदं. ४ अहयेबुध्यायेदं. त्वष्ट्रइदं. इंद्रायेदं. मरुद्भ्यइदं. २ विश्वेभ्यो देवेभ्यः. ११ अन्नायेदं. ११ समिद्धायाग्रयइदं. तनूनपातइदं.
वर्हिषइदं. देवीभ्यो द्वाभ्यइदं. उपासानक्ताभ्या. दैवीभ्या होतृभ्या प्रचेतोभ्यामिदं. सरस्वतीळाभारतीभ्यइदं. त्वष्ट्रइदं. वनस्पतयइदं.
वर्हिषइदं. अग्नयइदं. ८ बृहस्पतयइदं. ८ असृणसूर्येभ्यइदं. १६ अग्नयइदं. २९ समिद्धायाग्रयइदं. नराशंसायेदं. इळ्यायेदं.
स्वाहाकृतीभ्यइदं. देवीभ्यो द्वाभ्यइदं. उपासानक्ताभ्यामिदं. दैवीभ्या होतृभ्या प्रचेतोभ्यामिदं. सरस्वतीळाभारतीभ्यइदं. त्वष्ट्रइदं. वनस्पतयइदं.
निहोताजो ह्रन्ः शुधिसैकैर्विराट्स्थानमृतं त्यो योजातः पंचो न ऋतुः सप्तो नां त्यात्रिष्टुवध्वचो ह्वा दशं प्रघदशम
वोनवां त्यात्रिष्टुसदसै द्वित्रिष्टुवंतं प्रातरपायि वचंते सनो विराडुपाविश्वजिते पदत्रिष्टुवंतं त्रिकडुकपुचतुर्कम
व्याघ्रतिशक्रमं त्याष्टिर्वागणानामेको नाब्राह्मणस्पत्यं हवाहस्पत्यास्तुष्टलिंगाः पंचदश्यंत्ये त्रिष्टुभौ ॥ १ ॥

मंडलं २

अनु. १

॥३७॥

हरिः३ओम् ॥ (२।१।९) निहोताहोतृपदनेविदानस्त्वेपोदीदिवोऽअसदत्सुदक्षः । अदग्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठःसह
 संभरःशुचिजिह्वोऽअग्निः+ ॥ त्वंदुतस्त्वमुनःपरस्पास्वंवस्यऽआवृषभप्रणेता । अग्नेतोक्तस्यनस्तनेतनूनमप्रयुच्छ
 न्दीर्घद्वोधिगोपाः+ ॥ विधेमतेपरमेजन्मन्मन्नेविधेमस्तोमैरवरैसुधस्थे । यस्माद्योनेरुदारिथायजेतंप्रत्वेहृवीपिजुहुरेसमि
 छे ॥ अग्नेयजस्वहृविषायजीयान्छुष्टीदेष्णमभिगृणीहिराधः । त्वंह्यसिरधिपतीरयीणांत्वंशुक्रस्यवचसोमनोता ॥ उ-
 भयंतेनक्षीयतेवसव्यंदिवाद्वेदेजायमानस्यदस्म । कृधिक्षुमतंजरितारंमग्नेकृधिपतिंस्वपत्यस्यरायः+ ॥ सैनानीकेनसु
 विदत्रोऽअस्मेयष्टदिवोऽआर्यजिष्ठःस्वस्ति । अदग्धोगोपाऽउतनःपरस्पाऽअग्नेद्युमदुतरेवर्द्धिदीहि ॥ १ ॥ (२।१।१०)
 जोहूत्रोऽअग्निःप्रथमःपितेवेलस्पदेमनुषायत्समिद्धः । श्रियंवसानोऽअमृतोविचेतामर्मजन्यःश्रवस्य१ःसवाजी+ ॥
 श्रयाऽअग्निश्चित्रभानुहर्वमेविश्वामिर्गीभिर्मृतोविचेताः । इयावारथंवहतोरोहितावोतारुपाहचक्रेविभृन्नः ॥ उत्ताना
 यामजनयन्सुपूतंभुवदग्निःपुरुषेशसगर्भः । शिरिणायांचिदुक्तुनामहोभिरपरीवृतोवसतिप्रचेताः ॥ जिघर्म्यग्निहृवि
 षाघतेनप्रतिक्षियंतंभुवनानिविश्वा । पृथुतिरश्चावयसावृहंतंव्यचिष्टमन्नैरभुसंहशानं ॥ आविश्वतःप्रत्यंचजिघर्म्यरक्ष
 सामनसातज्जुषेत । मर्यश्रीःस्पृहयद्वर्णोऽअग्निर्नाभिमृशेतृन्वाइजभुराणः ॥ ज्ञेयाभागंसहसानोवरैणत्वादूतासोमनु
 (२।१।९) निहोतेतिषडुचस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदोमिस्त्रिष्टुप् । (२।१।१०) जोहूत्रइतिषडुचस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदोमिस्त्रिष्टुप् ।

वद्धदेम । अनूनमग्निं जुह्वावचस्यामधृचधनसाजोहवीमि ॥ २ ॥ (२।१।११) अग्नीहवमिन्द्रमारिपण्यः स्यामते द्वा
वनेवसूनां । इमाहित्वामूर्जोवर्धयति वसूवः सिधवोनक्षरतः ॥ सृजोमहीरिद्रयाऽअपिन्वः परिष्ठिताऽअहिनाशूरपू
वीः । अमर्त्यचिहासं मन्यमानमवाभिनदुवधैर्वावृधानः⁺ ॥ उक्थेऽप्यिदं शूरयेषु चाकन्तलोभेऽप्यिदं शूरयेषु च । तुभ्ये
देताया सुमंदसानः प्रवायवैसिन्नतेन शुभ्राः⁺ ॥ शुभ्रं नुते शुभ्रमवर्धयतः शुभ्रं वज्रं बाहोर्दधानाः । शुभ्रस्त्वमिन्द्रवावृधा
नोऽअस्मे दासीर्विशुः सूर्येण सहाः ॥ गुहाहितं गुह्यं गृह्णमस्वपीवृतं मायिनैक्षियंतं । उतोऽअपोद्यातं स्तब्धांसमहन्नाहंशू
रवीर्येण ॥ ३ ॥ स्तवानुतऽइंद्रपूव्यामहान्युतस्तवामनूतनाकृतानि । स्तवावज्रं बाहोर्दधानाः शूरसूर्यस्य केतू⁺ ॥ ह
रीनुतऽइंद्रवाजयताघृतश्चतुर्दश्वरमस्वार्थं । विसमनाभूमिरप्रथिष्टारं स्तपर्वतश्चित्सरिष्यन्⁺ ॥ निपर्वतः साद्यप्रयुच्छ
न्त्समातृभिर्वावशानोऽअकान् । दूरेपारेवाणीवर्धयंतऽइंद्रेपिताधमर्निपप्रथन्नि⁺ ॥ इन्द्रोमहांसिंधुमाशयानं मायाविनं
बुध्रमस्फुरन्निः । अरेजेतां रोदसीभियाने कनिक्कदतो वृष्णोऽअस्य वज्रात् ॥ अरोरवीहृष्णोऽअस्य वज्रोमानुषं यन्मानु
पोनिज्जवीत् । निमायिनोदानवस्य मायाऽअपादयत्यपि वान्त्सुतस्य ॥ ४ ॥ पिवापि वेदिंद्रशूरसोमं दंतुत्वामंदिनः
सुतासः । पुणतस्ते कुक्षीवर्धयन्ति तथा सुतः पौरऽइंद्रमाव ॥ त्वेऽइंद्राप्यभूमविप्राधिं वनेमऽकृतया सपंतः । अवस्यवो

(२।१।११) शुधीहवमित्येकविंशत्यृचस्य सूक्तस्य शौनको गृत्सम इन्द्रो विराट्स्थाना अंसा त्रिष्टुप् ।

धीमहिप्रशस्तिं सद्यस्तौ रायो द्वावनेत्याम ॥ स्याम ते तं ऽइदमेतं ऽइदमेतं ऽइदमेतं ऽइदमेतं । शुष्मिन्तमं यंचाकनमिदे
 वास्मे रायिं सिवीरवंतं ॥ रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्धं ऽइदमारुतं नः । सजोपसोये च मंदसानाः प्रवायवः पांत्यग्रं
 ऽइत्युयेतैरुत्रोक्तेभिर्वसुमन्तपत्सोमैपाहिद्रुह्यादिद्र । अस्मान्सुपुत्स्वातरुत्रावर्धयोधां वृहद्भिरुक्तेः ॥ ५ ॥ ब्रह्म
 सानखिकद्रुकेषु पाहि सोममिद्र । प्रदोषु वृच्छुश्रुषु ग्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिं ॥ धिष्वा शर्वः शूरयेन वृत्रमवा
 भिनद्वा नुमौर्णवाभं । अपावृणो ज्योतिरायौ निर्व्यतः सार्द्धिदस्युरिद्र ॥ सनेमयेतं ऽकृतिभिस्तं तोविश्वः स्पृधुऽआ
 र्धेण दस्युन् । अस्मभ्यं तत्त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरधयः साख्यस्य त्रितायं ॥ अस्य सुवानस्य मंदिनस्त्रितस्य न्यदुं दवावधानोऽअ
 स्तः । अवर्तयत्सूर्यो न च कंभिन द्रुलमिद्रोऽअंगिरस्वान् ॥ नूनं साते प्रतिवरं जरित्रे दुहीयद्विद्रुदक्षिणामघोनी । शिक्षा
 स्तोतृभ्यो मातिघग्भगो नो बृहद्वदेम विदथै सुवीराः ॥ ६ ॥ (२।२।१) योजातऽएव प्रथमो मर्नस्वान्देवो देवान्कतुना
 पर्यभूषत् । यस्य शुष्माद्रो दसीऽअभ्यसेतान् म्णस्य मह्नासर्जनासुऽइद्रः ॥ यः पृथिवीं व्यर्थमाना मद्दह्यः पर्वतान् प्रकुपि
 तौऽअरम्णात् । योऽअंतर्दक्षिं विममेवरी यो यो चामस्तं भ्रातृसर्जनासुऽइद्रः ॥ यो हत्वा हि मरिणात्सप्तसिं धून्यो गाऽउदा
 (२।२।१) यो जात इति पंचदश रथसूक्तस्य शौनको गुत्सम इन्द्र बिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ६

॥ ३९ ॥

जदपुधावलस्य । योऽअश्मनो रतरग्निजानसं वृक्समत्सर्जनासऽइंद्रः ॥ येनेमाविश्वाच्यवनाकृतानियोदासंवर्णम
धरं गुहाकः । श्वभीवयो जग्गीवो लक्षमाददूर्यः पुष्टानिसः ॥ यंस्मापृच्छंति कुहसेति धोरमुते माहुर्नोऽस्तीत्येनं । सो
अर्यः पुष्टीर्विजऽइवामिनातिश्रदस्मै धत्तसः ॥ ७ ॥ यो रध्रस्य चोदितायः क्रुशस्यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः । युक्त
ब्राणो यो विता सुशिप्रः सुतसो मस्यसः ॥ यस्याश्वासः प्रदिशियस्य गावो यस्य ग्रामायस्य विश्वे रथासः । यः सूर्ययऽउषसं
जजानु योऽअपां नेता स र्जतासः ॥ यं क्रंदसी संयती विह्वयेते परे वरऽउभयोऽअभित्राः । समानं चिद्रथमातस्थिवांसा ना
ना हवेते सः ॥ यस्मान्नऽऽकृते विजयं ते जनो सोयं युध्यमानाऽअवसेहवते । यो विश्वस्य प्रतिमानं वभूव योऽअच्युतच्युत्सः ॥
यः शश्वतो महो नो दधानानमन्यमानान्छर्वी जघान । यः शर्धते नानुददाति श्रद्धां यो दस्यो हृतासः ॥ ८ ॥ यः शंवरं
पर्वते बुधियं तं च त्वारिं श्यां शरद्यन्वविदत् । ओजायमानं योऽअहिं जघान दानुं शयानं सः ॥ यः सप्त रश्मिर्दृषभस्तु वि
ष्मान्वा सृजत्सर्तवे ससिं धूत् । यो रौहिणमस्फुरद्ब्रज्जवाहुर्वाह्यमारो हतं सः ॥ द्यावा चिदस्मै पृथिवी न मेते शुष्मा चिदस्य
पर्वता भयंते । यः सोमपानि चितो वज्रवाहुर्वावर्जस्तः सः ॥ यः सुन्वतं पर्वतियः पर्वतं यः शंसंतं यः शशमानमती । यस्य
ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमो यस्येन्द्राधः सः ॥ यः सुन्वते पर्वते दुध्रऽआचिद्वाजं दर्पिं सकिलासिसुत्यः । वयं तंऽइंद्रविश्वहप्रिया

मंडलं २

अनु. २

॥ ३९ ॥

सःसुवीरासोविदथमावदेम ॥ ९ ॥ (२।२।२) ऋतुर्जनिनीत्रीतस्याऽअपस्परिमक्ष्जातऽआर्विशुद्यासुवर्धते । तदाह
 नाऽअभवत्पिप्युषीपयोशोःपीयूषप्रथमंतदुक्थ्यं ॥ सुध्रीमायतिपरिविभ्रतीःपयोविश्वरूपायप्रभरतभोजनं । समा
 नोऽअर्धाप्रवतामनुष्यदुयस्ताकृणोःप्रथमसास्युकथ्यः* ॥ अन्वेकोवदतियद्दातितद्रूपामिनन्तदपाऽएकऽईयते । वि
 श्वाऽएकस्यविनुदंस्तिक्षतेयस्ता० ॥ प्रजाभ्यःपुष्टिंविभजतऽआसतेरयिर्मिवपुष्टंभवतमायते । अंसिन्वन्दंष्टैःपितु
 रत्तिभोजनंयस्ता० ॥ अधोऽकृणोःपृथिवींसहशोदिवेयोधौतीनामहिहृन्नारिणकपथः । तंत्वास्तोमेभिरुदभिर्नवाजिनंदे
 वंदेवाऽअजन्तसास्युकथ्यः* ॥ १० ॥ योभोजनंचदयसेचवर्धनमाद्रिदाशुष्कंमधुमहुदोहिथ । सशेवधिनिदधिपेविवस्वति
 विश्वस्यैकऽईशिषेसा० ॥ यःपुष्टिपणीश्चप्रस्वश्चधर्मणाधिदानेव्यवनीरधारयः । यश्चासमाऽअर्जनोद्विद्युतोद्विवऽव
 रूवाऽअभितःसा० ॥ योनामरंसहवसुनिहंतवेपक्षायचद्रासवैशायचावहः । ऊर्जयंत्याऽअपरिविष्टमास्यमतेवाद्यपु
 रूक्ता० ॥ शतंवायस्यदशसाकमाद्यऽएकस्यश्रष्टैयद्धचोदमार्विथ । अरजौदस्यन्तसुनन्दभीतयेसुप्राव्योऽअभवः
 सा० ॥ विश्वेदुनरोधनाऽअस्यपौस्यदुदुरसैदधिरैकृत्ववेधनं । पळस्तन्नाविष्टिरःपंचसंहशःपरिपरोऽअभवःसा० ॥
 ॥ ११ ॥ सुप्रवाचनंतवरवीर्यीयदेकैकंनकर्तुनाविंदसेवसु । जातूधिरस्यप्रवयःसहस्वतोयाचकथंसेद्विभ्वास्युकथ्यः* ॥

(२।२।२) ऋतुर्जनिनीत्रीतयोदशर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगुत्समदइदो जगत्यात्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ६

॥ ४० ॥

अरमयः सरपसस्तरायकंतुर्वीत्येचवव्यायचस्रति । नीचासंतमुदनयः परावृज्ज्मांधंश्रोणंश्रवयुन्त्सा० ॥ असभ्यतद्व
सोदानायराधः समर्थयस्वबहुतेवसब्धं । इन्द्रयच्चित्रश्रवस्याऽअनुद्यन्बहद्वदेमविदथेसवीराः ॥ १२ ॥ (२।२।३)
अध्वर्यवोभरतेद्रायसोमामन्त्रेभिःसिंचतामद्यमंधः । कामीहिवीरःसदमस्यपीतिजुहोतुवृष्णेतिदिदेषवष्टि ॥ अध्वर्य
वोयोऽअपोर्वत्रिवांसंवृज्जधानाशन्येववृक्षं । तस्माऽएतंभरततद्वशायैऽएषऽइंद्रोऽअहतिपीतिमस्य ॥ अध्वर्यवोयोह
भीकंजधानुयोगाऽउदाजदपहिवलंवः । तस्माऽएतमंतरिक्षेनवातमिंद्रसोमैरोष्युतजूनवस्रैः ॥ अध्वर्यवोयोह
ननवचखांसनवृत्तिचवाहन् । योऽअर्बुदुमवनीचाववाधेतमिंद्रसोमस्यभूथेहिनोत ॥ अध्वर्यवोयोऽउरणंजया
णमशुषंयोव्यंसं । यःपिमुनमुचिंयोरुधिकांतस्माऽइंद्रायांधसोजुहोत ॥ अध्वर्यवोयोःशतंशर्वरस्यपुरोविभेदादमनेवपू
वीः । योवृचिर्नःशतमिंद्रःसहस्रमपार्वपृद्धरतासोममस्रै ॥ १३ ॥ अध्वर्यवोयोःशतमासहस्रभूम्याऽउपस्थेवपज्जघ
न्वान् । कुत्सस्यायोरेतिथिग्वस्यवीराज्यावृणभरतासोममस्रै ॥ अध्वर्यवोयोःशतमासहस्रभूम्याऽउपस्थेवपज्जघ
द्रै । गर्भस्तिपूतंभरतश्रुतायेंद्रायसोमंयज्यवोजुहोत ॥ अध्वर्यवःकर्तनश्रुष्टिमस्रैवनेनिपूतंवन्ऽउन्नयध्वं । जुषाणोह
स्यमुभिवाविशेवऽइंद्रायसोमंमदिरंजुहोत ॥ अध्वर्यवःपयसोध्वयागोःसोमैर्भिरिपुणताभोजमिद्रं । वेदाहमस्यनिभृतं
(२।२।३) अध्वर्यववतिद्वादशर्वस्यसूक्तस्यशौनकोगुत्समद्वंद्वस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं २

अनु. २

॥ ४० ॥

मऽएतद्वित्तंतभूयोयजतश्चिकेत ॥ अध्वर्यवोयोदिव्यस्यवस्वोयःपार्थिवस्यक्षम्यस्यराजा । तमूर्दूरंनपृणतावेनद्रुंसोमे
भिस्तदपोवोऽअस्तु ॥ असभ्यंतद्वसोदुनायराधुःसर्मथयस्वबहुतेवसव्यं । इंद्रयच्चित्रश्रवस्याऽअनुधन्बहृद्देभविदथे
सवीराः ॥ १४ ॥ (२।२।४) प्रघान्वस्यमहुतोमहानिसत्यासत्यास्यकरणानिवोचं । त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्यमदेऽअ
हिमिद्रौजघान ॥ अवंशेद्यामस्तभायद्वहंतमारोदसीऽअपृणतंतरिक्षं । सधारयत्यृथिवींप्रथच्चसोमस्यतामदऽइंद्रश्चका
र ॥ सन्नैवप्राचोविर्मिमायमानैर्वज्रेणखान्यतृणन्नदीनां । वृथासृजत्पथिभिर्दोषयाधैःसोमस्य० ॥ सप्रबोह्वन्परिगत्या
दभीतेर्विष्वमधागायुधमिद्धेऽअग्नौ । संगोभिरश्वैरसृजद्रथैभिःसोमस्य० ॥ सऽईमहीधुनिमेतोरग्नात्सोऽअस्त्रावून
पारयत्स्वस्ति । तऽउत्तायर्गयिमभिप्रतस्थुःसोमस्य० ॥ १५ ॥ सोदंचंसिंधुमरिणान्महित्वावज्रेणानऽउपसःसपि
पेप । अजवसौजविनींभिर्विवृश्चन्त्सोमस्य० ॥ सविद्वोऽअपगोहंकनीनामाविर्भवन्नदतिष्ठत्परावृक् । प्रतिश्रोणःस्था
र्द्धगर्गचष्टसोमस्य० ॥ भिनद्धलमंगिरोभिर्गृणानोविपर्वतस्यदंहितान्यैरत् । रिणग्रोधांसिकृत्रिमाण्येषांसोमस्य० ॥
स्वर्मेनाभ्युप्याचुर्मुर्धुनिचजघंथदस्यंप्रदभीतिमावः । रंभीच्चिदन्नविविदेहिरण्यंसोमस्य० ॥ नूनंसाते० ॥ १६ ॥
(२।२।५) प्रवःसतांज्येष्ठतमायसुष्टुतिमग्नाविवसमिधानेहविर्भरे । इंद्रमजुर्जयत्तमुक्षितंसनाद्युवानमर्वसेहवामहे ॥

(२।२।४) प्रधान्वितिदशर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदंद्द्रक्षिष्णुम् । (२।२।५) प्रवःसतामितिनवर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदंद्द्रो

यस्मादिन्द्राद्ब्रह्मतः किंचनेमते विश्वान्यस्मिन्संभूता धीवीर्या । जठरोसोर्मतन्वी इ सहो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि कर्तुं ॥ न
क्षोणीभ्यां परिभ्रूत इन्द्रियनसमृद्धैः पर्वतैरिन्द्रतेरथः । नते वज्रमन्वश्रोति कश्चन यदा शुभिः पतसि योर्जना पुरु ॥ विश्वे
स्मै यजता यध्वं वेक्तुं भरति वृषभाय सञ्चते । वृषाय जस्वहृषि विदुष्टरः पिबेद्द्रुसोर्म वृषभेण भातुना ॥ वृष्णः कोशः पवते
मध्वऽऽहुर्मिष्वृषभाज्ञाय वृषभाय पातवे । वृषणा ध्वर्युर्वृषभासोऽअद्रयो वृषणं सोर्म वृषभाय सुष्वति ॥ १७ ॥ वृषते वज्रऽऽहु
तते वृषारथो वृषणा हरी वृषभाण्यायुधा । वृष्णो मदस्य वृषभत्वमीशिषऽइन्द्रो सोर्मस्य वृषभस्य तृणुहि ॥ प्रतेना वंन समने
वचस्यु वं ब्रह्मणा यामि सवने बुधा धृपिः । कुविन्नोऽअस्य च सोनि बोधिषिन्द्रमुत्संन वसुनः सिचामहे ॥ पुरा संवाधा दुभ्या
वृत्स्वनो धेनुर्न वत्सं यवस्य पिप्युषी । सकृत्सुते सुमतिभिः शतक्रतो संपत्नीभिर्न वृषणो न सीमाहि ॥ ननं साते ० ॥ १८ ॥
(२।२।६) तदसैनव्यमंगिरस्वदर्चतु शुष्माय दस्य प्रत्नयो दीरते । विश्वा यज्ञोत्रा सह सापरी वृता मदसोर्मस्य हं हितान्यैर
यत् ॥ सधृतयो ह प्रथमायुधार्थसऽओजो मिमानो महिमानुमातिरत् । शूरो यो युत्सु तन्वंपरिव्यत शीर्षणि घामहिना प्र
त्यमुंचत ॥ अधा कृणोः प्रथमं वीर्यं महद्यदस्याग्ने ब्रह्मणा शुष्ममैरयः । रथे धेनुर्यध्वेन विच्युताः प्रजीरयः सिस्वते सञ्च्य
कथुर्थक् ॥ अधायो विश्वा भुवनानि भिज्मने शानकृत्त्वयाऽअभ्यवर्धत । आद्रोदसी ज्योतिषा वहिरात नोत्सी व्यन्तमा
जगत्संत्वा त्रिष्टुप् । (२।२।६) तदस्मा इति न चर्चस्य सूक्तस्य शौनको गृत्सम इन्द्रो जगत्संत्वे त्रिष्टुभौ ।

सि॒दुधि॒ता॒स॒म॒व्य॒यत् ॥ स॒प्रा॒ची॒ना॒न्य॒व॒ता॒न॒दं॒हु॒दो॒ज॒सा॒ध॒रा॒ची॒न॒म॒कृ॒णो॒दु॒पा॒म॒पः । अ॒ध॒र॒य॒त्पृ॒थि॒र्वी॒वि॒श्व॒धा॒य॒स॒म॒स्त
 भ्रा॒न्मा॒य॒या॒द्या॒म॒व॒स्त्र॒सः ॥ १९ ॥ सा॒स्मा॒ऽअ॒रं॒वा॒हु॒भ्या॒यं॒पि॒ता॒कृ॒णो॒द्वि॒श्व॒स्मा॒दा॒ज॒नु॒पो॒वे॒द॒स॒स्परि॑ । ये॒नो॒पृ॒थि॒व्या॒नि
 क्रि॒र्वि॒श॒य॒धै॒व॒ज्रे॒ण॒हृ॒त्प॒वृ॒ण॒क्तु॒वि॒ष्व॒र्णिः ॥ अ॒मा॒जू॒रि॒व॒पि॒त्रोः॒स॒र्चा॒स॒ती॒स॒मा॒ना॒दा॒स॒द॒स॒स्त्वा॒भि॒ये॒भर्ग॑ । कृ॒धि॒प्र॒के॒त॒मु
 प॒मा॒स्या॒भ॒र॒द॒द्धि॒भा॒गं॒त॒न्वो॒ऽये॒न॒मा॒म॒हः ॥ भो॒जं॒त्वा॒मि॒द्र॒व॒यं॒हु॒वे॒म॒द॒दि॒द्वि॒मि॒द्रा॒पां॒सि॒वा॒जा॒न् । अ॒वि॒ह्वी॑द्र॒चि॒त्र॒या॒न॒ज
 ती॒ष्ण॒धि॒वृ॒ष॒न्नि॒द्र॒व॒स्य॒सो॒नः ॥ नूनं॒सा॒ते॒प्र० ॥ २० ॥ (२।२।७) प्रा॒ता॒र॒थो॒न॒वो॒यो॒जि॒स॒स्त्रि॒श्र॒तु॒र्यु॒ग॒स्त्रि॒क॒शः॒स॒स्र
 त्रि॒मः । द॒शो॒रि॒त्रो॒म॒न॒व्यः॒स्व॒र्षाः॒स॒ऽइ॒ष्टि॒भि॒र्मि॒ति॒भी॒रं॒हो॑भू॒त् ॥ सा॒स्मा॒ऽअ॒रं॒प्र॒थ॒मं॒स॒द्वि॒ती॒र्य॒मु॒तो॒तृ॒ती॒र्य॒म॒नु॒षः॒स॒हो॒ता॑ ।
 अ॒न्य॒स्या॒ग॒र्भ॑म॒न्य॒ऽर्ज॒नं॒त॒सो॒ऽअ॒न्ये॒भिः॒स॒च॒ते॒जे॒न्यो॒वृ॒षा ॥ ह॒री॒नु॒कं॒र॒थ॒ऽइ॒द्र॒स्य॒यो॒ज॒मा॒थै॒स॒के॒न॒व॒च॒सा॒न॒वे॒न । मो॒घु
 त्वा॒म॒त्र॒व॒ह॒वो॒हि॒वि॒प्रा॒नि॒री॒र॒म॒न्य॒ज॒मा॒ना॒सो॒ऽअ॒न्ये ॥ आ॒द्वा॒भ्यां॒ह॒रि॑भ्या॒मि॒द्र॒या॒ह्या॒च॒तु॒र्भि॑रा॒प॒ड्भि॒र्य॒मानः॑ । आ॒ष्टा॒भि
 र्द॒श॒भिः॒सो॒म॒पे॒य॒म॒यं॒स॒तः॒सु॒म॒ख॒मा॒मृ॒ध॒स्कः ॥ आ॒र्वि॒श॒त्या॒त्रि॒श॒ता॒या॒ह्य॒वा॒डा॒च॒त्वा॒रि॑श॒ता॒ह॒रि॑भिर्यु॒जानः॑ । आ॒प॑चा॒श
 तो॒स॒र॒थे॒भि॒रि॒द्रा॒ष॒ष्ट्या॒स॒स॒त्या॒सो॒म॒पे॒यं ॥ २१ ॥ आ॒शी॒त्या॒न॒व॒त्या॒या॒ह्य॒वा॒ङ्ग॒श॒ते॒न॒ह॒रि॑भिरु॒ह्य॒मानः॑ । अ॒यं॒हि॒ते॒शु॒न
 हो॒त्रे॒पु॒सो॒म॒ऽइ॒द्र॒त्वा॒या॒प॒रि॑षि॒क्रो॒म॒दा॒य ॥ म॒म॒ब्र॒ह्मै॒द्र॒या॒ह्य॒च्छा॒वि॒श्व॒ा॒ह॒री॒धुरि॑धि॒व्वा॒र॒थ॒स्य । पु॒रु॒त्रा॒हि॒वि॒ह॒व्यो॒व॒भृ॒था

(२।२।७) प्रा॒ता॒र॒थ॒इ॒ति॒न॒व॒च॒स्य॒सू॒क्त॒स्य॒शौ॒न॒को॒गृ॒त्स॒म॒दं॒इ॒द्र॒क्षि॒ष्टुप् ।

स्मिन्धूरसर्वनेमादयस्व ॥ नमऽइद्रेणसख्यंविद्योषदुस्मभ्यमस्यदक्षिणादुहीत । उपज्येष्ठेवरूथेगभस्तौप्रायेप्रयेजिगी
 वांसःस्याम ॥ नूनंसाते० ॥ २२ ॥ (२।२।८) अपाव्यस्यांधसोमदायमनीषिणःसुवानस्यप्रयसः । यस्मिन्निद्रःप्र
 राण्यच्छाप्रयासिचनदीनांचक्रमंत ॥ सोऽअप्रतीनिमनवेपुरूणीद्रौदाशद्वाशुषेहंतिवृत्रं । अर्जनयत्सूयैविदद्वाऽअक्तु
 नाह्वावयुनानिसाधत् ॥ समाहिनुऽइद्रेऽअर्णोऽअपांप्रैरयदहिहाच्छासमुद्रं । सद्योयोनुभ्योऽअतसाव्योभृत्पस्पृधाने
 भ्यःसूर्यस्यसातौ+ ॥ ससुन्वतऽइद्रःसूर्यमादेवोरिणञ्जत्यीयस्तवान् । आयद्रयिगुहदवद्यमस्मैभरुदंशैर्तेशोदशस्यन्+
 ॥ २३ ॥ सरंधयत्सदिवःसारथयेशुष्णमशुषंकुयंवंकुत्साय । दिवोदासायनवृत्तिचनवैदुःपुरोव्यैरच्छंवस्य ॥ एवा
 तऽइद्रेचथमहेमश्रवस्यानत्मनोवाजयंतः । अद्यामतत्सासमाशुषाणाननमोवधरदेवस्यपीयोः+ ॥ एवातेगुत्समदाः
 शूरमन्मविस्यवोनवयुनानितक्षुः । ब्रह्मण्यतऽइद्रेतेनवीयऽइपमूर्जसुक्षितिसुस्रमशुः ॥ नूनंसाते० ॥ २४ ॥ (२।२।९)
 वयंतेवयऽइद्रविद्धिषुणःप्रभरामहेवाजयुनरथं । विपन्यवोदीर्ध्यतोमनीयासुस्रमिर्यक्षतस्त्वावतोनन्+ ॥ त्वंनऽइद्र
 त्वाभिरूतीत्वायतोऽअभिष्टिपासिजनान् । त्वमिनोद्वाशुषोवरूथेत्वाधीरभियोनक्षतित्वा ॥ सनोयुवद्रेजोह्वत्रःसखा
 (२।२।८) अपाव्यस्येतिनवर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगुत्समदइद्रविष्टुप् । (२।२।९) वयंतइतिनवर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगुत्समदइद्रविष्टुप्

शिवोनरामस्तुपाता । यःशंसंतयःशशमानमतीपचंतचस्तुवंतचप्रणेपत् ॥ तमुस्तुपइंद्रतंगुणीपेयसिन्परावोवृधुः
 शशदुश्च । सवस्वःकामपीपरदियानोब्रह्मण्यतो नूतनस्यायोः+ ॥ सोऽअंगिरसामूचथजुज्वान्ब्रह्मातूतोदिंद्रोगातु
 मिष्णान् । मुष्णन्नपसःसूर्येणस्तवानश्रस्यचिच्छिश्रथपुर्व्याणि ॥ २५ ॥ सहश्रुतइंद्रोनामदेवऽऊर्ध्वोभुवन्मनुषेऽ
 स्मृतमः । अवप्रियमर्शसानस्यसाह्वान्छिरोभरद्वासस्यस्वधावान् ॥ सवृत्रहेंद्रःकृष्णयोनीःपुरंदरोदासीरैरयद्वि । अ
 जनयन्मनवेक्षामपथसन्नाशसंयजमानस्यतूतोत् ॥ तस्मैतवस्य१मनुदायिसत्रेद्रायदेवेभिरणसातौ । प्रतियदस्यवज्रं
 बाहोर्धुहृत्वीदस्यन्पुर्ऽआयसीर्नितरीत् ॥ नूनंसाते० ॥ २६ ॥ (२।२।१०) विश्वजितेधनजितेस्वजितेसत्राजितेनजि
 तंऽउर्वराजिते । अश्वजितेगोजितेऽअजितेभरेंद्रायसोमंयजतायहर्षतं+ ॥ अभिभुवेभिभुंगार्यवन्वतेषाह्वायसहमानाय
 वेधसे । तुविग्रयेवह्वेदुष्टरीतवेसत्रासहि नमऽइंद्रायवोचत ॥ सत्रासाहोर्जनभक्षोर्जनसहश्चवनोयुधोऽअनजोपसु
 क्षितः । वृत्तंचयःसहुरिर्विर्वाहितइंद्रस्यवोचंप्रकृतानिर्वीर्या* ॥ अनानदोर्वृषभोदोधतोवधोर्गभीरऽऽक्रुज्वोऽअसम
 पकाव्यः । रध्रचोदःश्रयनोवीळितस्पथुरेंद्रःसुयज्ञऽउपसःस्वर्जनत् ॥ यज्ञेनगतुमसुरैविविद्रेधिरेधियैहिन्यानाऽउ
 शिजौमनीपिर्णः । अभिस्वरानिपदागाऽअवस्यवुऽइंद्रेहिन्यानाद्रविणान्याशत ॥ इंद्रश्रेष्ठानिद्रविणानिधेहिचिसि
 वृतीयाविराडूपा । (२।२।१०) विश्वजितइतिपट्टचस्यसूक्तस्यशौनकोगुत्समदइंद्रो जगलंत्यात्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ६

॥४३॥

दक्षस्य सुभगत्वमस्मे । पोषरयीणामरीष्टितनूनां स्वाज्ञानं वाचः सुदिनत्वमह्नां ॥ २७ ॥ (२।२।११) त्रिकं
केषु महिषो यवा शिरं पुविशुष्मस्तपस्तोममपि वद्विष्णुना सुतं यथा वशत् । सऽईममाद्रुमाहिर्कर्मकतवेमहा मुरुसैनसश्च हे
वो देवं सत्यमिन्द्रं सत्यऽइंदुः ॥ अधत्विर्षीमोऽअभ्योजसां क्रिविद्युधाभं वदारो देसीऽअपृणदस्य मज्जनाप्रवावृधे । अध
ताराधः सुवते कास्यं वसुसैनं ॥ साकं जातः क्रतुना साकमोजसा वक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः । अध
णक्षपः । भुवद्विर्ध्वमभ्यादेवमोजसा विदादूर्जं शतकं पुर्विदादिप ॥ २८ ॥ (२।३।१) गृणानो त्वागुणपतिं हवाम
हे कविकवीनामुपमश्रवस्तमं । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणं ब्रह्मणस्तऽआनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं ॥ देवाश्च तेऽअसुर्यप्रचे
तसो बृहस्पते यज्ञियं भागमानशुः । उसाऽइव सूयोज्योतिषामहो विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि ॥ आविवाध्यापरिरा
पुस्तमां सिचज्योतिष्मं तं रथमतस्त्यतिष्ठसि । बृहस्पते भीमर्मभिर्बुधं न रक्षो हर्णगोत्रभिर्दस्वविदं ॥ सुनीतिभिर्नयसि
(२।२।११) त्रिकं क्रेष्विति चतुर्के च स्य सूक्तस्य शौनको गृत्समदं इंद्राद्याष्टिस्ततो द्वे अतिशक्यं वत्याष्टिर्वा । (२।३।१) गणानामित्ये
को न विंशत्युच्यते सूक्तस्य शौनको गृत्समदः आद्यापंचमी नवम्येकादशी सप्तदशं तानां ब्रह्मणस्पतिः शिष्टानां बृहस्पतिर्जगती पंचदश्ये त्रिष्टुभौ ।

मंडलं २

अनु. ३

॥४३॥

रि॒तंकु॒तश्च॒नन॒रा॒तय॒स्ति॒रु॒न॒द्र॒य॒वि॒नः । वि॒श्वाऽइ॒द॒सा॒ङ्क॒र॒सो॒वि॒वा॒ध॒से॒य॒सु॒गो॒पा॒र॒क्ष॒सि॒ब्रह्म॒ण॒स्प॒ते ॥ २९ ॥
 त्व॒नो॒गो॒पाः॒प॒थि॒कृ॒द्धि॒च॒क्षु॒ण॒स्त॒व॒त्र॒ता॒य॒म॒ति॒भि॒र्ज॒रा॒म॒हे । बृ॒ह॒स्प॒ते॒यो॒नो॒ऽअ॒भि॒हृ॒रो॒द॒धे॒स्वा॒त॒म॒र्तु॒दु॒च्छु॒ना॒ह॒र॒स्व॒ती ॥
 उ॒त॒वा॒यो॒नो॒म॒र्च॒या॒द॒ना॒ग॒सो॒रा॒ती॒वा॒म॒तैः॒सा॒नु॒को॒वृ॒कः । बृ॒ह॒स्प॒ते॒ऽअ॒प॒त॒व॒र्त॒या॒प॒थः॒सु॒ग॒नो॒ऽअ॒स्यै॒दे॒व॒वी॒त॒ये॒कृ॒धि ॥
 त्रा॒ता॒र॒त्वा॒त॒नू॒ना॒ह॒वा॒म॒हे॒व॒स्प॒त॒र॒धि॒व॒क्ता॒र॒म॒स्यु॒ । बृ॒ह॒स्प॒ते॒दे॒व॒नि॒दो॒नि॒र्ब॒ह्य॒मा॒दु॒रे॒वाऽउ॒च॒र॒सु॒भ्र॒मु॒न्न॒श॒न् ॥ त्व॒या॒व॒यं
 सु॒वृ॒धा॒ब्र॒ह्म॒ण॒स्प॒ते॒स्पा॒हा॒व॒सु॒म॒नु॒ष्या॒द॒दी॒म॒हि । या॒नो॒दू॒रे॒त॒ज्जि॒तो॒याऽअ॒रा॒त॒यो॒भि॒सं॒ति॒जं॒भ॒या॒ताऽअ॒न॒म्र॒सः ॥ त्व॒या॒व॒
 य॒मु॒त्त॒मं॒धी॒म॒हे॒व॒यो॒बृ॒ह॒स्प॒ते॒प॒प्रि॒णा॒स॒स्त्रि॒ना॒यु॒जा । मा॒नो॒दूः॒शं॒सो॒ऽअ॒भि॒दि॒प्सु॒री॒श॒त॒प्र॒सु॒शं॒सा॒म॒ति॒भि॒स्त्ता॒रि॒षी॒म॒हि ॥ ३० ॥
 अ॒ना॒नु॒दो॒वृ॒ष॒भो॒जि॒म॒रा॒ह्वं॒नि॒ष्ट॒सा॒श॒वृ॒त॒ना॒सु॒सा॒सि॒हिः । अ॒सि॒स॒त्यऽऽकृ॒ण॒या॒ब्र॒ह्म॒ण॒स्प॒तऽउ॒ग्र॒स्य॒चि॒द्मि॒ता॒वी॒लु॒ह॒षि॒
 णः ॥ अ॒दे॒वे॒न॒म॒न॒सा॒यो॒रि॒ष॒ण्य॒ते॒शा॒सा॒म॒ग्नो॒म॒न्य॒मा॒नो॒जि॒घा॒स॒ति । बृ॒ह॒स्प॒ते॒मा॒प्र॒ण॒क्त॒स्य॒नो॒ब॒धो॒नि॒क॒र्म॒न्यु॒दु॒रे॒व॒स्य॒श॒
 र्था॒ऽइ॒व ॥ ते॒जि॒ष्ठ॒या॒त॒प॒नी॒र॒क्ष॒स॒स्त॒प॒थे॒त्वा॒नि॒दे॒र्धि॒रे॒हृ॒ष्ट॒वी॒र्यं । वि॒श्वाऽइ॒द॒र्यो॒ऽअ॒भि॒दि॒प्सो॒ऽमृ॒धो॒बृ॒ह॒स्प॒ति॒र्वि॒व॒व॒ह्रा॒
 ऽअ॒र्द॒य ॥ बृ॒ह॒स्प॒ते॒ऽअ॒ति॒य॒द॒र्यो॒ऽअ॒र्हा॒ह्यु॒म॒द्भि॒भा॒ति॒क्र॒तु॒म॒ज्ज॒ने॒षु । य॒द्दी॒द॒य॒च्छ॒व॒सऽऽक॒त॒प्र॒जा॒त॒त॒द॒सा॒सु॒द्रा॒वि॒णं॒धे॒हि
 चि॒त्रं ॥ ३१ ॥ मा॒नः॒स्ते॒ने॒भ्यो॒येऽअ॒भि॒दु॒ह॒स्प॒दे॒नि॒रा॒मि॒णो॒रि॒प॒वो॒न्नै॒षु॒जा॒गृ॒धुः । आ॒दे॒वा॒ना॒मो॒हे॒ते॒वि॒त्र॒यो॒हृ॒दि॒बृ॒ह॒स्प

11

हरिः३ओम् ॥ (२।३।२) सेसामविद्धिप्रभृतिंयऽईशियेयाविधेमनवयामहागिरा । यथानोमीढ्वान्तस्तवतेसखात
वृहस्पतेसीर्षधःसोतनोमति⁺ ॥ योनंत्वान्यनमन्योजसोतादर्भन्युनाशंवराणिवि । प्राच्यावयुदच्युताब्रह्मणस्पति
राचाविशुद्धसुमंतविपर्वतं ॥ तदेवानंदेवतमायकत्वमश्रमश्रन्दृह्याब्रदंतवीक्रिता । उद्गाऽअजदभिनुद्ब्रह्मणावलमगूह
त्तमोव्यचक्षयुत्स्वः* ॥ अइमास्यमवतंब्रह्मणस्पतिर्मधुधारमभियमोजसार्तृणत् । तमेवविश्वेपिरेस्वईशौवहुसाकंसि
सिचुस्तमद्रिणं ॥ सनाताकाचिन्नुर्वनाभवीत्वामाङ्गिःशुरङ्गिदुरोवरंतवः । अर्यतंताचरतोऽअन्यदन्यदिद्याचका
रवयुनाब्रह्मणस्पतिः ॥ १ ॥ अभिनक्षतोऽअभियेतमानंशुनिधिपणीनांपरमंगुहाहितं । तेविद्वांसःप्रतिचक्ष्यानृतापु
नर्यतऽउऽआयुतदुदीयुराविशं ॥ ऋतावानःप्रतिचक्ष्यानृतापुनरातऽआतस्युःकवयोमहस्पथः । तेब्राहुभ्याधमितम
शिमइमनिनकिष्योऽअस्त्यरणोजुहुहितं⁺ ॥ ऋतव्येनक्षिप्रैणब्रह्मणस्पतिर्यत्रवष्टिप्रतदंश्रोतिधन्वना । तस्यसाध्वीरे
पवोयाभिरस्यतिनचक्षसोहृशयेकर्णयोनयः ॥ ससैनयःसर्विनयःपुरोहितःससुष्टुतःसयुधिब्रह्मणस्पतिः । चाक्षमोयद्वा
जंभरतेमतीधनादित्सूर्यस्तपतितप्यतुर्वथा ॥ विमुप्रमुप्रथमंसेहनावतोबृहस्पतैःसुविदत्राणिराध्या । इमासातानिबे
न्यस्ववाजिनोयेनजनाऽउभर्येभुजतेविशः ॥ २ ॥ योर्वरेवृजनेविश्वथाविमुमुहासुरणवःशर्वसावविक्षिथ । सदेवोदेवान्प्रति
(२।३।२)सेमामितिबोळशर्चस्यसूक्त्यशौनकोगुत्समदोब्रह्मणस्पतिःप्रथमादशम्योबृहस्पतिर्द्वादशैन्द्राब्रह्मणस्पतीजगतीद्वादशयंलेत्रिष्टुभौ ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ७

॥ ४५ ॥

मंडलं २

अनु. ३

॥ ४५ ॥

पप्रथेपथुविश्वेदुतापरिभ्रब्रह्मणस्पतिः ॥ विश्वसत्यमघवानायुवोरिदापश्चनग्रमिनंतिव्रतवां । अच्छद्द्राब्रह्मणस्पतीह्रवि
नोन्नयुजेववाजिनाजिगातं ॥ उताशिष्टाऽअनुश्रुष्वंतिवह्वयः सभेयोविप्रोभरतेमतीधना । वीळुक्षेपाऽअनुवशऽऋणमांडु
चाभजन्महीवरीतिः शर्वसासरुपृथक् ॥ ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथावशं सत्योमन्युमीहिकर्माकरिष्यतः । योगाऽउदाजत्सादिवेवि
नस्त्वंयदीशानोब्रह्मणावोर्भिमहवै ॥ ब्रह्मणस्पतेस्यमस्यविश्वहारायः स्वामरभ्योऽवयस्वतः । वीरेषुवीराऽउपपुंनिधि
सुतेयंयुजैः सुवीराः ॥ ३ ॥ (२।३।३) इंधानोऽअग्निर्वनवद्धनुष्यतः कृतब्रह्माशुयवद्रातहव्यऽइत् । जातेनजातमातिसप्रसे
यंयुजैः ॥ सिंधुर्नक्षोदः शिमीवोऽऋणस्पतिः ॥ वीरेर्भिर्वीरान्वनवद्धनुष्यतः कृतब्रह्माशुयवद्रातहव्यऽइत् । जातेनजातमातिसप्रसे
तिदिव्याऽअसृच्यतः ससत्त्वभिः प्रथमोगोषुगच्छति । अग्नेरिवप्रसितिर्नाह्वतवियंयुजैः ॥ तोकंचतस्यतनयंचवर्धतेयं
च्छिद्राशर्मदधिरेपुरुणि । देवानांसुस्नेसुभगः सऽएधतेयंयुजैः ॥ ४ ॥ (२।३।४) ऋजुरिच्छसौवनद्धनुष्यतोदेवयन्निद
(२।३।३) इंधानइतिपचर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगुत्समदोब्रह्मणस्पतिर्जगती । (२।३।४) ऋजुरिदितिचतुर्कचस्यसूक्तस्यशौनको

ध्ववृत्रतूयै । हविष्कृणुष्वसभगोयथासि ब्रह्मणस्पतेरवऽआवृणीमहे ॥ सऽइज्जनेनसविशासजन्मनासपुत्रवार्जभरतेध
 नानृभिः । देवानांयःपितरमाविवासतिश्रद्धार्मनाहविषाब्रह्मणस्पतिं ॥ योऽअस्मैहृद्व्यर्धवद्भिरविधत्तं प्राचानयति
 ब्रह्मणस्पतिः । उरुव्यतीमंहसोरक्षतीरिषोऽहोश्चिदस्माऽउरुचक्रिरद्भुतः ॥ ५ ॥ (२।३।५) इमागिरऽआदित्येभ्योऽधृतस्त्रुः
 सनाद्राजभ्योजुहोमि । शृणोतुमित्रोऽअर्थमाभगोनस्तुविजातोवरुणोदक्षोऽअंशः ॥ इमंस्तोमंसकृतवोमेऽअद्यमित्रो
 ऽअर्थमावरुणोजुषंत । आदित्यासःशुचयोधारपूताऽअवृजिनाऽअनुवद्याऽअरिष्टाः ॥ तऽआदित्यासऽउरवौगभीरा
 ऽअदब्धासोदिप्संतोभूर्यक्षाः । अंतःपश्यंतिवृजिनोतसाधुसर्वराजभ्यःपरमाचिदंति ॥ धारयंतऽआदित्यासोजग-
 त्स्यादेवाविश्वस्यभुवनस्यगोपाः । दीर्घाधियोरक्षमाणाऽअसुर्यमतावानश्चर्यमानाऽऽकृणानि ॥ विद्यामादित्याऽअवसो
 वोऽअस्यदर्धमभ्यऽआचिन्मयोभु । युष्माकंमित्रावरुणाप्रणीतौपरिश्वभ्रैवदुरितानिवृज्यां ॥ ६ ॥ सुगोहिवोऽ
 अर्थमन्मित्रपंथाऽअनृक्षरोवरुणसाधुरस्ति । तेनादित्याऽअधिवोचतानोयच्छतानोदुष्परिहंतुशर्म ॥ पिपेतुनोऽअदि
 तीराजपुत्रातिद्वेपांस्यर्यमासुरेभिः । बृहन्मित्रस्वरुणस्यशर्मोपस्यामपुरुवीराऽअरिष्टाः ॥ तिस्रोभूमीधारयन्त्राऽरुत
 द्यून्त्रीणित्रताविदथेऽअंतरेषां । ऋतेनादित्यामहिबोमहित्वतर्दयमन्वरुणमित्रचारु ॥ त्रीरोचनादिव्याधारयंतहिर-
 युत्समदोत्रक्षणस्पतिर्जगती । (२।३।५) इमागिरइतिसप्तदशर्चस्यसूक्तस्यगात्समदः कूर्मआदित्याबिष्टुप् ।

पय्याः शुचयो धारपूताः । अस्वमजोऽनिमिषाऽदब्धाऽउरुशसाऽऋजवेमर्त्या ॥ त्वं विश्वेषांवरुणासिराजायेच दे-
 वाऽअसुरयेचमर्ताः । शतं नो रास्वशरदो विक्षेद्यामयूषि सुधितानि पूर्वा ॥ ७ ॥ न दक्षिणा विचिकितेन सव्या न प्राची
 धयंति पुष्टयश्च नित्याः । सरेवान्यातिप्रथमो रथेन वसुधा विदथेऽबुप्रशस्तः+ ॥ शुचिरपः सयवसाऽदब्धऽउपक्षेतिवृ-
 ष्वयः सुवीरः । न किष्टं म्रत्यंति न दुराद्यऽआदित्यानां भवति प्रणीतौ ॥ अदिते मित्रवरुणो तमृळयद्वो वयं च क्रुमाकञ्चि-
 दागः । उर्वेद्यामभयं ज्योतिरिद्रमानो दीर्घाऽअभिर्न शन्तमिन्नाः ॥ उभेऽअस्मै पीपयतः समीची द्विवोष्टि सुभगो नाम
 पुष्यन् । उभाक्षया वाजयन्त्यातिपुत्सू भावधौ भवतः साधूऽअस्मै ॥ यवो मायाऽअभिद्रुहयजत्राः पाशाऽआदित्यारि-
 पवे विचृताः । अश्वीवतोऽअतिरपरेऽनारिष्टाऽउरावाशमन्त्स्याम ॥ माहं मघो नो वरुण प्रियस्य भरिदाह्मऽआविदं शू-
 मापेः । मारायोरजन्त्स्यमादवस्थां बह्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ८ ॥ (२।३।६) इदं कवेरादित्यस्य स्वराजो विश्वानि
 संत्यभ्यस्तुमह्ना । अतियोमं द्यौजथाय देवः सुकीर्तिर्भिक्षेवरुणस्य भूरेः ॥ तव व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यावरुणतुष्टुवां-
 सः । उपार्थनऽउपसांगो मतीनामभ्योनजरे माणाऽअनुद्यन्+ ॥ तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नु रशंसस्य वरुणप्रणेतः । यूयं
 (२।३।६) इदं कवेरित्येकादशार्चस्य सूक्तस्य गार्त्तमदः क्रमो वरुणस्त्रिष्टुप् । (दशमीतुः स्वप्रनाशिनी त्रिष्वपि सूक्तेषु पाक्षिको गृत्समदोऽस्येव) ।

नः पुत्राऽअदितेरदब्धाऽअभिक्षमध्वं युज्याये देवाः ॥ प्रसीमादित्योऽअंसुजद्विधत्तौऽऽकृतसिंधवोरुणस्ययंति । नश्रं
म्यंतिनविमुचंत्येतेवयोनर्पसूरध्रुवापरिज्मन् ॥ विमच्छथायरशनामिवागंऽऽकृध्यामतेवरुणखामतस्य । मातंतुइच्छेद्विव
यंतोधिर्भेममात्राशार्थपसः पुरऽऽकृतोः⁺ ॥ ९ ॥ अपोसुम्यक्षवरुणभियंसंत्सन्नाळुतावोनुमागृभाय । दामेववत्साद्धि
मुग्धं हौनहित्वद्वारेनिमिषश्चनेशे ॥ मानोवधैर्वरुणयेतंऽइष्टावेनः कृण्वंतंमसुरभ्रीणंति । माज्योतिषः प्रवसथानिग
न्मविपूमुधः शिश्रथोजीवसेनः ॥ नर्मः पुरातैवरुणेतननमतापुर्तुविजातब्रवाम । त्वेहिकंपर्वतेनश्रितान्यप्रच्युतानि
दूळभव्रतानि ॥ परंऽऽकृणासावीरध्रमत्कृतानिमाहंरजन्नन्यकृतेनभोजं । अब्युष्टाऽइक्षुभूर्यसीरुषासऽआनोजीवान्व
रुणतासुशाधि ॥ योमेराज्जन्युज्योवासखावास्वमैभयंभीरवेमह्यमाह । स्तेनोवायोदिप्सतिनोवृकोवात्वंतस्माद्वरुणपा
ह्यस्मान्⁺ ॥ माहं० ॥ १० ॥ (२।३।७) धृतव्रताऽआदित्याऽइषिराऽआरेमत्कर्तरहसूरिवागः । शृण्वतोवोरुणमित्रदेवा
भद्रस्यविद्रोऽअवसेहुवेवः ॥ ययं देवाः प्रमतिर्ययमोजोयुयं द्वेषांसिसनुतयुयोत । अभिक्षत्तारोऽअभिचक्ष्मध्वमद्याचनो
मळयतापुर्चं ॥ किमनूर्वः कृणवामापरेण किंसनेनवसवऽआप्येन । युयं नोमित्रावरुणादितेचस्वस्तिभिर्द्रामरुतोदधात ॥
हृये देवाययमिद्रापयः स्थतेमृळतनाधमानायमह्यं । मावोरथोमध्यमवाळतेभन्मायुष्मावत्स्वापिषुश्रमिष्म ॥ प्रवऽएको

(२।३।७) धृतव्रताइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यगार्त्समदः कृमोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् । (भेदप्रयोगे—आद्यानांषण्णाविश्वेदेवाः अत्यायावरुणः) ।

कक्सं.

अ. २ अ. ७

॥४७॥

मिमधुधयागोयन्मापितेवकित्वंशशास । आरेपाशाऽआरेऽअघानिदेवामामाधिपुत्रेविमिवग्रभीष्ट ॥ अर्वाचोऽअद्या
भवतायजत्राऽआवोहादिभयमानोव्ययेयं । त्राध्वनोदेवानिजुरोवृकस्यत्राध्वकृतदिवपदोयजत्राः ॥ माहं ॥ ११ ॥
(२।३।८) ऋतं देवाय कृण्वते स वित्राऽइंद्रयाहिघ्नो नरं मंतुऽआर्पः । अहरहयात्यकुरपां कियत्वा प्रथमः सर्गऽआसां ॥ ११ ॥
क्षेधावत्रायप्रवधंजभार । मिहवसानऽउपहीमदुद्रोत्तिग्माधुघोऽअजयच्छत्रमिद्रं ॥ बृहस्पतेतपपाश्रेवविध्यवृकद्वरसो
ऽअसुरस्यवीरान् । यथाजघंधृषुतापुराधिदेवाजहिशत्रुमस्माकमिद्र ॥ अर्वाक्षिपदिवोऽअश्मानमुच्चायेनशत्रुमंसानो
निजूर्वाः । लोकस्यसातौतनयस्यभूरैस्मोऽअर्धकृणुतादिद्रगोर्वा ॥ १२ ॥ ग्रहिकतुबृहथोयं वनुथोरधस्यस्थोयजमानस्य
चौदौ । इंद्रासोमायुवमस्मोऽअविष्टमस्मिन्भयस्यैकृणुतमुलोकं + ॥ नर्मातमन्नश्रमन्नोततंद्रन्नवोचाममासुनोतेतिसो
यै । योमैपणाद्योददुद्योनिवोधाद्योमासुनंतमुपगोभिरायत् ॥ सरस्वतित्वमस्मोऽअविहिमरुत्वतीधृपतीजेषिशन्नू ।
त्यंचिच्छेदंतविषीयमाणमिद्रोहतिवृषभंशंडिकानां ॥ योनः सनुत्यऽउतवाजिघ्रुर्भिरव्यायतंतिगितेनविध्य । बृ
हस्पतऽआयुधैर्षिशन्नूदुहेरीषंतपारधेहिराजन् ॥ अस्माकैभिः सत्वभिः शूरशूरैर्वीर्याकृधियानितेत्त्वर्वाणि । ज्योगं
(२।३।८) ऋतं देवायेत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदइंद्रः पृष्ठयाइद्रासोमोअष्टम्याः सरस्वतीनवम्याबृहस्पतिरेकादश्यामरुतस्त्रिष्टु

॥४७॥

मंडलं २

अनु. ३

भूवन्ननुधूपितासोहृत्वीतेषामाभरणोवसूनि ॥ तंवःशर्धमास्तं सुन्नयुगिरोपब्रुवेनमसादैव्यंजनं । यथारथिसर्ववीरन
 शमहाऽअपत्यसाचंश्रुत्यदिवेदिवे ॥ १३ ॥ (२।३।९) अस्माकमित्रावरुणावतरंथमादित्यैरुद्रैर्वसुभिःसचाभुवा ।
 प्रयद्वयोनपसुन्वस्मन्सरिंश्रवस्वोहृषीवंतोवन्नर्षदः ॥ अर्धस्मानऽउदवतासजोपसोरथं देवासोऽअभिविक्षुर्वाजंयु ।
 यदाशवःपद्याभिस्तिन्नोरजःपृथिव्याःसानौजघनंतपाणिभिः ॥ उतस्यनऽइंद्रोविश्वचर्षणिर्दिवःशर्धेनमारुतेनसूक
 तैः । अनुनुस्थान्यवृकाभिरूतिभीरुथमहेसनयेवार्जसातये ॥ उतस्यदेवोभुर्वनस्यसुक्षणिस्त्वष्टाम्नाभिःसजोपाजुवद्र
 शं । इच्छाभगोबृहद्विवोतरोदसीपुपापुरंधिरश्विनावधापती ॥ उतत्येदेवीसुभगेमिथुहशोपासानक्ताजगतामपीजुवा ।
 सुपेयद्वापृथिविनव्यसावचःस्थानुश्चवयुस्त्रिवयाऽउपस्तिरे ॥ उतवःशंसमृशजामिवइमस्यहिर्बुधोइजएकपादुत ।
 त्रितऽर्कमुक्षाःसविताचनोदधेपांनपादाशुहेमाधियाशभि ॥ एतावोवइम्युर्धतायजत्राऽअतक्षज्ञायवोनव्यसंसं । श्र
 वस्यवोवार्जचक्रानाःससिर्नरथ्योऽअहधीतिर्मर्याः ॥ १४ ॥ (२।३।१०) अस्मैद्यावापृथिवीऽऋतायतोभूतमवि
 बंलाजगती । (२।३।९) अस्माकमिति सप्तर्षसूक्त्यशौनकोगृत्समदोविश्वेदेवाजगत्यान्निष्टुप् । (भेदपक्षे—आद्यायामित्रावरुणौ
 द्वितीयाचतुर्थीपंचमीनाविश्वेदेवाःतृतीयायाजपानक्तावद्यावापृथिवीसप्तम्याइंद्रः) । (२।३।१०) अस्यामइत्यष्टर्षसूक्त्यशौनको
 राकासरस्वतीद्राणीवरुणान्योजगतीअत्यास्तिन्नोनुष्टुभः ।

त्रीवचसःसिर्षासतः । ययोरायुःप्रतरतेऽइदंपुरऽपस्तुतेवसुयुर्वामहोदधे ॥ मानोगुह्यारिपऽआयोरहन्दभन्मानं
हृदुहानांघेनुपिप्युपीमसश्चतै । मानोविधौःसुख्याविद्धितस्यनःसुन्नायुतामनसातत्त्वमेहे ॥ अहेळतामनसाश्रुष्टिमाव
शृणोतुनःसुभगावोधतुत्तना । सीव्यत्वपःसूच्याच्छिद्यमानयादतुवीरंशतदायमक्थ्य* ॥ राकामहंसहवांसुष्टुतीह्वे
सोयाभिर्ददसिद्राशुषेवसूनि । तार्भिर्नोऽअद्यसमनाऽउपागहिसहस्रपोपसुभगेरराणा ॥ यास्तेराकसुमतर्यःसपेश
नामसिस्वसा । जूपस्वहव्यमाहुतंप्रजादेविदिदिहिनः ॥ यासंवाहुःस्वंगरिःसुषूमावहुसूवरी । तस्यैविस्पत्यैह्विःसि
नीवाल्यैजुहोतन ॥ यागंगर्यासिनीवालीयाराकायासरस्वती । इन्द्राणीमहऽद्रुतयेवरुणानीस्वस्त्यै ॥ १५ ॥ (२।४।१)
आतेपितमरुतासुन्नमेतमानःसूर्यस्वसंहशैयुयोथाः । अभिनोवीरोऽअर्वतिक्षमेतप्रजायेमहिरुद्रप्रजाभिः ॥ त्वादत्ते
भीरुद्रशंतमेभिःशतंहिमाऽअशीयभेषुजेभिः । व्यशस्महेषोवितरंव्यहोव्यमीवाश्चातयस्वाविपूचीः ॥ श्रेष्ठैजातस्वरु
द्रश्रियासितवस्तमस्तवसांवज्रवाहो । पथिणःपारमंहसःस्वस्तिविश्वऽअभीतीरपसोयुयोधि ॥ मात्वारुद्रचुकुधामान
मौभिर्मादुष्टुतीवृषभमासहती । उन्नोवीरोऽअर्षयभेषुजेभिर्पक्तमंत्वाभिपजांशृणोमि ॥ हवीमभिर्हवतेयोह्विभिर्व
(२।४।१) आतेपितरितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदोरुद्रोजगलंलात्रिष्टुप् ।

स्तोमैभीरुद्रंदिपीय । ऋदूदरःसुहवोमानोऽस्यैवभ्रुःसुशिग्रोरीरधन्मनाथै ॥ १६ ॥ उन्माममंदवृपभोमरुत्वान्व
 क्षीयसावयसानार्धमानं । घृणीवच्छायामरपाऽअशीयाविवासेयंरुद्रस्यसन्ना ॥ केश्यतेरुद्रमृळयाकूहस्तोयोऽअस्ति
 भेषजो जलपः । अपभर्तारपसोदैव्यस्याभीनुमवृपभक्षमीथाः ॥ प्रवञ्चवैवृपभार्ग्यध्वतीचेमहोमहीमुष्टिभीरया
 मि । नमस्याकल्मलीकिननमोभिर्गुणीमासित्वेपरुद्रस्यनाम ॥ स्थिरेभिरंगैःपुरुषरूपऽउग्रोवभ्रुःशूक्रेभिःपिपिशेहिर
 ण्यैः । ईशानादस्यभुवनस्यभूरेनवाऽउग्रोपद्रुद्रादस्यैः ॥ अहंनिवभर्षिसार्यकानिधन्वाहंघ्निकंयजतंविश्वरूपं । अहं
 घ्नितदंयसेविश्वमभ्वंनवाऽओजीयोरुद्रत्वदस्ति ॥ १७ ॥ सुहिश्रुतंगतिसदयुवानंगनभीममुपहृलुमुग्रं । मळाजरि
 त्रेरुद्रस्तवानोन्यतेऽअस्मान्निवपंतुसेनाः ॥ कुमारश्चित्पितरंवंदमानंप्रतिनानामरुद्रोपयंतं । भूरेर्दुतारंसत्पतंगृणीपे
 स्तुतस्त्वंभेषजारास्यस्मे ॥ यावौभेषजामरुतःशुचीनियाशंतमावृपणोयामयोभु । यानिमनुरवृणीतापितानस्ताशंच
 योश्चरुद्रस्यवदिम ॥ परिणोहेतीरुद्रस्यवृज्याःपरित्वेपस्यदुर्मतिर्महीगात् । अवस्थिरामघवर्ज्यस्तनुष्वमीदृस्तोकायतनं
 यायमृळ ॥ एवावभ्योवृषभचेकितानयथादेवनहृणीपेनहंसि । हवन्शुन्नोरुद्रहवोधिबृहद्वदेमविदथैसुवीराः ॥ १८ ॥

(२।४।२) धारावराभरुतोधृष्वजोसोमगानभीमास्ताविपीभिरुचिनः । अग्नयोनश्शुचानाऽऋजीपिणोभृमिधर्मतो

।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ७

॥४९॥

मंडलं २

अनु. ४

॥४९॥

अपुगाऽअवृण्वत ॥ द्यावोनस्तृभिश्चितयंतखादिनोव्य॥ अत्रियानद्युतयंतवृष्टयः । रुद्रोयद्वोमरुतोरुक्मवक्षसोवृषा
जनिपृश्न्याः शुक्रऽऊर्धनि ॥ उक्षतेऽअश्वोऽअत्वाऽइवाजिषुनुदस्यकर्णैस्तुरयंतऽआशुभिः । हिरण्यशिग्रामरुतोदवि
ध्वतः पृक्षयाथपृषतीभिः समन्यवः ॥ पृक्षेताविश्वामुवनववक्षिरेमित्रायवासदुमाजीरदानवः । पृषदश्वसोऽअनवश्च
राधसऽऋजिप्यासोनवयुनेषुधूर्षदः ॥ इधन्वभिर्धेनुभीरश्वाधूमिरध्वस्मभिः पृथिभिर्भ्राजिहृष्टयः । आहुंसासोनस्व
सराणिगंतनुमधोर्मदायमरुतः समन्यवः ॥ १९ ॥ आनोब्रह्माणिमरुतः समन्यवोनुरानंशंसः सर्वनानिगंतन । अश्वो
मिवपिप्यतधेनुमूर्धनिकर्ताधिर्यजतित्रेवाजपेक्षसं ॥ तनोदातमरुतोवाजिनरथऽआपानंब्रह्मचितयद्विवेदेवे । इषं
स्तोतृभ्योवृजनेपुकारवसनिमेधामरिंहंदुष्टरंसहः ॥ यद्यंजतेमरुतोरुक्मवक्षसोश्वाब्रधेषुभगऽआसुदानवः । धेनुर्नशि
श्चेस्वसरेषुपिन्वतेजनायरातहविवेमेहीमिषं ॥ योनोमरुतोवृकतातिमर्त्योरिपुर्दधेवसवोरक्षतारिषः । धेनुर्नशि
क्रियाभितमर्वरुद्राऽअशसोहंतनावधः ॥ चित्रतद्वोमरुतोयामचेकितेपृश्न्यायदूधूरप्यापयोदुहुः । वर्तयंततपुषाच
स्यरुद्रियास्त्रितंजरायजुरतामदाभ्याः ॥ २० ॥ तान्वोमहोमरुतऽएवयाज्ञोविष्णोरिषस्यप्रभथेहवामहे । यद्वानिदेनवमान
नृककुहान्यतस्तुचोब्रह्मण्यंतः शंस्यारधऽईमहे ॥ तेदशग्वाः प्रथमायुश्मृहिरेतनोहिन्यंतुषसोव्यष्टिषु । हिरण्यवर्णा
गैरपार्णुतेमहोज्योतिपाशुचतागोऽअर्णसा ॥ तेक्षोणीभिररुणेभिर्नाजिभीरुद्राऽऋतस्यसदनेषुवावृधुः । निमेधमाना

ऽअत्येनपार्जसासुश्रुद्रवर्णदधिरेसुपेशं ॥ तौऽइयानोमहिर्वरूथमतयुऽउपधेदुनानमसागृणीमसि । त्रितोनयान्यंच
 होतृनुभिष्टयऽआवर्तदवरान्वक्रियावसे ॥ ययारुध्रंपारयथात्यहोययानिदोमंचथंवदितारं । अर्वाचीसामरुतोयाव
 ऽऊतिरोषुवाश्रेवसुमतिजिगातु ॥ २१ ॥ (२।४।३) उपैमसृक्षिवाजुयुर्वचस्यांचनोदीतनाद्योगिरोमि । अपानंपो
 दाशुहेमकुवित्सुपेशसस्करतिजोषिषुद्धि ॥ इमंस्वस्मैहृदऽआसुतष्टंमंत्रवोचेमकुविदस्यवेदत् । अपानंपादसर्थस्यम
 ह्नाविभ्वान्यर्थोभुवनाजान ॥ समन्यायंत्युपयंत्यन्याःसमानमर्वनद्यःपुणंति । तमशुचिंशुचयोदीद्विवांसमपानपातं
 परितस्थुरापः ॥ तमसेरायुवतयोयुवानमर्मज्यमानाःपरियंत्यपः । सशुक्रेभिःशिक्रभीरेवदुस्मेदीदायानिध्मोघृतनि
 णिगप्सु⁺ ॥ असैतिस्रोऽअव्यथ्यायुनारीद्वेवायदेवीर्दिधिपत्यन्नं । कृताऽइवोपहिप्रसर्सेऽअप्सुसपीयूषंधयतिपूर्वसू
 नां ॥ २२ ॥ अश्वस्यात्रजनिमास्यचस्वर्द्रुहोरिषःसंपृचःपाहिसुरीन् । आमासुपुषुपरोऽअप्रमण्यंनारातयोविनश्रानृ
 तानि ॥ स्वऽआदमेसुदुघायस्यधेनुःस्वधांपीपायसुभवन्नमसि । सोऽअपानंपादूर्जयन्नप्सवै^१तर्वसुदेयायविघतेविभा
 ति ॥ योऽअप्स्वाशुचिनादैव्येनऽऋतावाजस्रऽउर्वियाविभाति । वयाऽइदुन्याभुवनान्यस्यप्रजायंतेवीरुधश्चप्रजा
 भिः ॥ अपानंपादाह्यथादुपस्थंजिह्वानामध्वोर्विद्युतंवसानः । तस्यज्येधमहिमानंवहतीर्हिरण्यवर्णाःपरिचंतियुहीः⁺ ॥

(२।४।३) उपैमितिपचदशर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदोषानपात्रिष्टुप् ।

हिरण्यरूपः स हिरण्यसंहगपांनपात्सेदु हिरण्यवर्णः । हिरण्ययात्परियो नो निषद्या हिरण्यदाददुत्यन्नमस्मै ॥ २३ ॥ तदस्या
नीकमुतचारुनामपीच्छ्यवर्धतेनसुरपां । यमिधतेयुवतयः समित्था हिरण्यवर्णघृतमन्नमस्य ॥ अस्मैवहुनामवमायसख्ये
यज्ञैर्विधेमनमसाहविभिः । संसानमार्जिमदिधिमिबिस्मैदधाम्यन्नैः परिवदऽक्रग्भिः + ॥ सऽईवृषजनयत्तासुगर्भस
ऽईशिञ्जुर्धयति तैरिंहति । सोऽअपांनपादनभिम्लतवर्णोन्यस्येवहतुन्वाविवेष ॥ अस्मिन्पदेपरमेतस्थिवांसमध्वस्मभि
विधहादीदुवांसं । आपोनज्जैघृतमन्नवहतीः स्वयमक्तैः परिदीयतियह्वीः + ॥ अयांसममेसुक्षितिजनायांसमुमध्वस्मभि
सुवृक्तिं । विधंतऽद्रंयदवतिदेवावहहृदेमविदथैसुवीराः ॥ २४ ॥ (२।४।४) तुभ्यंहिन्वानोवसिष्टगाऽअपोधुक्षन्त्सी
मर्विभिरद्रिभिर्नरः । पिबेद्रस्वाहाप्रहुतवपद्रुतहोत्रादासोमप्रथमोयऽईशेषे ॥ यज्ञैः संभिश्चाः पृषतीभिकृष्टिभिर्यामं
नृभ्रासोऽअंजिषुप्रियाऽउत । आसद्यावर्हिर्धृत्तहोत्रादासोमप्रथमोयऽईशेषे ॥ यज्ञैः संभिश्चाः पृषतीभिकृष्टिभिर्यामं
ननिवर्हिषसदनारणेश्वर । अयामंदस्वजुजुषाणोऽअंधसस्वष्ट्वेभिर्जनिभिः समर्पणः ॥ आर्वक्षिदेवोऽइहविप्रय
क्षिचोशन्तेनिषदायोनिषुत्रिषु । प्रतीवीहिप्रस्थितसोम्यमधुपिवाग्नीध्रात्तवभागस्यतृण्युहि ॥ एषस्यतेतुन्वानुमृग्यवर्ध
नः सहऽओजःप्रदिर्विवाहोर्हितः । तुभ्यंसुतोमधवन्तुभ्यमाभूतस्त्वमस्यब्राह्मणादातुपपिब ॥ जुषेथांयज्ञबोधंतुहवस्य
(२।४।४) तुभ्यमितिपडचस्यसूक्त्यशौनकोगुत्समदः इंद्रोमरुतस्त्वष्टामिन्द्रोमित्रावरुणावितिक्रमेणदेवताजगती । (एताक्रतुदेवताः) ।

मेसुतोहोतानिविदःपुर्व्याऽनु । अच्छरार्जानानमेऽत्यावृतं प्रशास्त्रादार्पितं तस्योभ्यं भु ॥ २५ ॥ द्वितीये सप्तमः ॥
 पचदशाभ्याये वर्गाः २५ सूक्तानि १३ ऋच. १३७ ॥ त्यागः ॥ बृहस्पतयइद. ब्रह्मणस्पतयइद. ८ बृहस्पतय ब्रह्मणस्पतय. इंद्राब्रह्मणस्प
 तिम्या ब्रह्मणस्पत १३ आदित्येभ्य. १७ वरुणाय. ११ विश्वेभ्यो देवेभ्य. ७ [मे. विश्वे. ६ वरुणा १] वरुणाय इंद्रायैद ५ इंद्रासोमाभ्या इंद्रायै.
 सरस्वती इंद्राभ्या. बृहस्पतय. इंद्रायै. मरुद्भ्य. विश्वान्दे. ७ [मे. मित्रावरुणाभ्या. विश्वेभ्यो देवेभ्य. इंद्रायै विश्वेभ्यो देवेभ्य. उवासानत्ताभ्या.
 विश्वेभ्यो देवेभ्य २] द्यावापृथिवीभ्या इंद्रायै २ राकायाइ २ सिनीवाल्या २ गुंयसिनीवालीराकासरस्वती द्वाणीवरुणानीभ्य. रुद्रायै. १५
 मरुद्भ्य. १५ अपानज्येभ्य. १५ इंद्रायै. मरुद्भ्य त्वष्ट्रे अग्नय इंद्रायै. मित्रावरुणाभ्याभि. ॥ इति द्वितीये सप्तमः ॥ ७ ॥

मंदस्वो दुष्यएकादशसावित्रावाणेवाष्टावाश्विनसोमापूषणापद्सोमापौष्णमंत्योर्ध्वोचोप्यदितेर्वयोसैकागाय
 त्रमुक्ता देवताः प्रउगेणोद्येतु तृचैत्येन्द्रवायवीद्यावापृथिव्योत्यस्तु चोहविर्धानोवातृतीयः पादोवाग्नेयोवितमेनुष्टु
 भौबृहतीचक्रनिऋतदत्तृचंप्रदक्षिणिज्जागतं मध्येतिशक्रयष्टिवैताभ्यामृषिरध्वनिवाश्यमानं शकुंतं तुष्टावकुशिक
 स्त्वैपीरथिरेन्द्रतुल्यं पुत्रमिच्छन् ब्रह्मचर्यं च चारंतस्येन्द्रएवगाथीपुत्रोजज्ञेगाधिनोविश्वामित्रः सतृतीयं मंडलमपश्य
 त्सोमस्य न्यधिकावैश्वानरायपंचोनावैश्वानरीयंतुजागतंतुवैश्वानरायैकादशसमित्समिदाप्रियः प्रत्यग्निः प्रकार
 वइत्याग्नेययोरन्यासामपि निपातोदृश्यते ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

१ इतः षट् ऋतुदेवताः ।

हरिः ओम् (२।४।५) मंदस्वहोत्रादनुजोपमं धंसोर्ध्ववः सपणावध्यासिचं । तस्मादुतं भरततद्वशोदुदिहोत्रात्सोमं द्रवि० ॥ मेघं तु ते वह्नयो ये भिरियसो रपण्यन्वीळ्य स्वावनस्पते । आयूयाधृणोऽअभिर्यात्वं नेष्ट्रात्सोमं द्रवि० ॥ अपां यूर्यं नुवाहणं रथं युजाथामिहवां विमोचनं । पंकहवीं पिमधूना हि कंगतमथासोमं पिवतं वाजिनीवसूः ॥ अर्वाचमद्य जमन् ॥ आशुभिश्चिद्यान्विमुचाति नूनमरीरमुदतमानं चिदेतोः । अपर्पश्चिदस्य ब्रतऽआनिमृग्याऽअयं चिद्धातोरमते पारं गत ॥ पुनः समव्याद्वितं तवर्थं तीमध्याकर्तो न्यधाच्छक्मधीरः । उत्सहायाऽस्याह्वं ११ रूर्ध्वरमतिः सविता देवऽआगा (२।४।५) मन्दस्वेति पडुचस्य सूक्तस्य शौनको गुत्समदः आद्यानां च तस्य णाद्रविणोदाः पंचम्या आधिनौ पसुया अग्निर्जगती । (२।४।६) उदुष्य इत्येकादशर्चस्य सूक्तस्य शौनको गुत्समदः सविता त्रिष्टुप् ।

त् ॥ नानौकासिदुर्गोविश्वमायुर्वितिष्ठतेप्रभवःशोकोऽग्नेः । ज्येष्ठमातासनवेभागमाधादन्वस्यकेतमिपितंसवित्रा
 ॥ २ ॥ समाववर्तिविष्टितोजिगीषुर्विश्वेषां कामश्चरताममाभूत् । शश्वोऽअपोविकृतंहित्व्यागादनुव्रतंसवितुदैव्यस्य ॥
 त्वयाहितमप्यमप्सुभागंधन्यामृगयसोवितस्थुः । वनानिबिभ्योनकिरस्यतानिव्रतादेवस्यसवितुर्भिंनन्ति ॥ याद्रा
 ध्यंश्वरुणोयोनिमप्यमनिशितंनिमिपिजर्भुराणः । विश्वोमातीडोव्रजमापद्युर्गत्यशोजन्मानिसविताव्याकः ॥ नय
 स्येद्रोवरुणोनमित्रोव्रतमर्थ्यमानमिनतिरुद्रः । नारातयस्तमिदंस्वस्तिहुदेवंसवितारंनमोभिः ॥ भगंधियंवाजयंतःपु
 रंधिनरांशोमास्पतिर्नोऽअव्याः । आयेवामस्यसंग्रथरथीणां प्रियादेवस्यसवितुःस्थाम ॥ अस्मभ्यंतहिबोऽअद्भ्यःपृ
 थिव्यास्त्वयादुत्तं काम्यं राधुऽआगात् । शंयत्तोतृभ्यऽआपयेभवात्युरुशंसायसवितर्जिरे ॥ ३ ॥ (२।४।७) आ
 वाणेवतदिदर्थेजरेथेगृध्रेववृक्षंनिधिमंतमच्छ । ब्रह्माणेवविदथऽउक्थशासादुतेवहव्याजन्यापुरुत्रा ॥ प्रातर्यावर्णार
 थ्येववीराजेवयमावरमासचेथे । मेनेऽइवतन्वाइंशुंभमानेदंपतीवक्रतुविद्वानेषु ॥ शृंगेवनःप्रथमार्गतमवर्कशफा
 विवजर्भुराणातरोभिः । चक्रवाकेवप्रतिवस्तोरुस्त्रावर्चायांतरथ्येवशक्रा ॥ नावेवनःपारयतंयुगेवनभ्येवनऽउपधीव
 प्रधीव । श्वानेवनोऽअरिषण्यातनूनांखंगलेवविस्सःपातमुस्मान् ॥ वातेवाजुर्नान्धेवरीतिरक्षीऽइवचक्षुपायातमर्वा

(२।४।७) आवाणेवेलष्टर्चस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदोधिर्नौत्रिष्टुप् ।

क् । हस्ताविवतन्वे इ शंभविष्ठापादेवनयतं वस्योऽअच्छं ॥ ४ ॥ ओष्ठाविवमध्वास्त्रेवर्दतास्तनाविवपिप्यतं जीवसे
नः । नासैवनस्तन्वोरक्षिताराकर्णाविवसुश्रुताभूतमस्मे⁺ ॥ हस्तेवशक्तिमभिसंददीनः क्षामेवनः समजंतरजांसि ।
इमागिरौऽअश्विनायुष्मयंतीः क्षणेत्रेणैवस्वाधिते संशिशतं ॥ एतानि वामश्विनावर्धनानि ब्रह्मस्तोमं गृत्समदासौऽअक्र
न् । तानिनराजुजुषाणोपयातंवृहद्देमविदथे सुवीराः ॥ ५ ॥ (२।४।८) सोमापूषणाजननारयीणां जननाद्विवो
जननागृथिव्याः । जातौ विश्वस्य भुवर्नस्य गोपौ देवाऽअकृण्वन्नमृतस्य नाभिं ॥ इमौ देवौ जायमानौ जुषते मौतमांसि गू
हतामजुष्टा । आभ्यामिंद्रः पक्कमामास्वतः सोमापूषभ्यां जनदुस्त्रियासु ॥ सोमापूषणारजसो विमानं सप्तचक्रं रथमवि
श्वमिन्वं । विपुवृतं मनसा युज्यमानं तं जिन्यथो वृषणापंचरश्मि ॥ दिव्यं न्यः सदर्नं चक्रऽउच्चापृथिव्यामन्योऽअध्यं
तरिक्षे । तावस्मभ्यं पुरुवारं पुरुधुरायस्पों विष्यतां नाभिमस्मे⁺ ॥ विश्वान्यन्यो भुवनाज्जान विश्वमन्योऽअभिच
क्षाणऽएति । सोमापूषणावर्तं धियमेयवाभ्यां विश्वाः पृतनाजयेम ॥ धिर्यपूषाजिन्वतु विश्वमिन्वोरयिंसोमोरयिपति
र्दधातु । अर्वातु देव्यार्दि तिरनर्वावृहद्देमविदथे सुवीराः ॥ ६ ॥ (२।४।९) वायो ये ते स हस्त्रिणो रथास्ते भिरागहि ।

(२।४।८) सोमापूषणेति पठुचस्य सूक्तस्य शौनको गृत्समदः सोमापूषणौ अंत्यायाः सोमपूषादित्यास्त्रिष्टुप् । (२।४।९) वायो इत्येकविंशत्यस्य
सूक्तस्य शौनको गृत्समदः आद्योर्द्वयोर्वायुस्तृतीयाया इंद्रवायूचतुर्थ्यादिति स्त्राणां मित्रावरुणो सप्तम्यादिति स्त्राणामश्विनौ दशम्यादिति स्त्राणामि

नियुत्वान्तसोमपीतये ॥ नियुत्वान्वायुवागह्ययंशुक्रोऽअयामिते । गंतसिसुन्वतो गंहं ॥ शुक्रस्याद्यगवाशिरऽइंद्र
 वायू नियुवतः । आयतं पिवंत नरा ॥ अयं वा मित्रावरुणासुतः सोमं ऽकृता वृधा । ममेदिह श्रुतं हवं ॥ राजानावर्नभि
 द्रुहध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूणऽआसाते ॥ ७ ॥ तासु चार्जाघृता सुतीऽआदित्यादानुनस्पती । सचेतेऽअनवह्वरं ॥
 गोमदूषुनासत्याश्वावद्यातमश्विना । वर्तीरुद्रानुपाय्यं ॥ नयत्यरोनांतरऽआदुर्धर्षद्वृषवसू । दुःशंसो मर्त्यो रिपुः ॥
 तानऽआवोह्वमश्विनारुयिं पिशंगसंहशं । धिष्ययावरिवोविदं ॥ इंद्रोऽअंगमहद्भयमभीपदपचुच्यवत् । सहस्थिरो
 विचर्षणिः ॥ ८ ॥ इंद्रश्चमळ्यातिनो ननः पश्चादुधं न शत् । भद्रं भवति नः पुरः ॥ इंद्रऽआशाभ्युसरिसर्वाभ्योऽअ
 भयं करत् । जेता शत्रून्विचर्षणिः ॥ विश्वेदेवासुऽआगतशृणुतामंऽइमं हवं । एदं वह्निर्निधीदत् ॥ तीव्रो वोमधुमोऽ
 अयं शुनहोत्रेषु मत्सरः । एतं पिवतु काम्यं ॥ इंद्रज्येष्ठामरुद्रणादेवांसः पूर्परातयः । विश्वे समश्रुता हवं ॥ ९ ॥ अंबित
 मेनदीतमेदेवितमेसरस्वति । अप्रशस्ताऽइव स्मसिप्रशस्तिमं वनस्कृधि ॥ त्वे विश्वासरस्वति श्रितायूषिदेव्यां । शुन
 होत्रेषु मत्स्वप्रजादेविदिदिहिनः ॥ इमा ब्रह्मासरस्वति जपस्व वाजिनीवति । याते मन्मगुत्समदाऽकृतावरिप्रियादेवेषु
 जुहति ॥ प्रेतोयुशस्यं शुंभुवायुवामिदावृणीमहे । अग्निं च हव्यवाहनं ॥ द्यावर्नः पृथिवीऽइमं सिधमद्यादि विस्पृशं ।

द्रः त्रयोदश्यादि तिसृणा विश्वेदेवाः षोडश्यादि तिसृणा सरस्वती अत्याना तिसृणा द्यावापृथिवी (हविर्धानावा) गायत्री अंबितमद्भति द्वे अनुष्टुभौ

यज्ञदेवेषु च्छतां ॥ आवाप्त्यर्थमहुहादेवाः सीदंतु यज्ञियाः । इहाद्यसोमपीतये ॥ १० ॥ (२।४।१०) कनिकद
 ऽउद्धधीन्मासुपुणोमात्वाविदुषुमान्वीरोऽस्ता । पित्र्यामनुप्रदिशं कनिकदत्सुमंगलोभद्रवादीवदेह ॥ मात्वाद्येन
 क्षिण्तोगहाणसुमंगलोभद्रवादीशकुते । मानःस्तेनऽईशतमाधशंसोबृहद्देमविदथेसुवीराः ॥ ११ ॥ (२।४।११)
 उद्गातेवशकुनेसामगायसिब्रह्मपुत्रऽइवसवनेषुशंससि । उभेवाचौवदतिसामगाऽइवगायत्रं चैष्टुभंचानुराजति ॥
 नःशकुनेपुण्यमावद ॥ आवदंस्त्वशकुनेभद्रमावदतुष्णीमासीनःसुमतिंचिकिञ्चिनः । यदुत्पत्तुवदसिकर्करिथथाबृह
 द्देमविदथेसुवीराः ॥ १२ ॥ (इतिगार्त्समद्वितीयमंडलसमाप्तं अत्रसूक्तानि ४३) (परिशिष्टं ॥ भद्रवददक्षिणतोभ
 द्रमुत्तरतोवद । भद्रंपुरस्तान्नोवदभद्रं पश्चात्कापिजल ॥ भद्रंभद्रंनऽआवदभद्रंनःसर्वतोवद ॥ असपलःपुरस्तान्नःशिवंदक्षि
 इमाब्रह्मेतिब्रूहती । (२।४।१०) कनिकददितितृचस्यसूक्तस्यशौनकोगृत्समदःशकुतस्त्रिष्टुप् । (२।४।११) प्रदक्षिणिदितितृचस्यसूक्तस्य
 शौनकोगृत्समदःशकुतो जगती द्वितीयातिशकरी अष्टिर्वा ।

णतस्कृधि । अभयंसततंपश्चाद्भद्रमुत्तरतोगृहे ॥ यौवनानिमहयसिजिगुयामिवदुंदुभिः । शुकुंतकप्रदक्षिणंशतपत्रा
 भिनोवद ॥ आवदुस्त्वं० ॥ इतिपरिक्षिप्यं॥ १॥ (३।१।१) सोमस्यमातृवंसंवक्ष्यमेवहिचकर्थविदथेयजथै । देवोऽअच्छा
 दीर्घद्युजेऽअद्रिशमायेऽअग्नेतन्वंचुपस्व ॥ प्रांचयज्ञंचकृमवर्धतांगीःसमिद्धिरग्निर्मसादुवस्यन् । दिवःशशासुर्वि
 द्याकवीनांगुत्सायचित्तवसेगातुमीषुः ॥ मयोदधेमधिरेःपूतदक्षोदिवःसुवंधुर्जनुषापृथिव्याः । अविदद्भुदशतमस्व्वं
 तदुवासौऽअग्निमपसिस्वसृणां ॥ अर्वधयन्सुभगंसस्यह्वीःश्वेतंजज्ञानमरुपमहित्वा । शिशुनजातमभ्यारुरभ्वा
 देवासौऽअग्निजनिमन्यपुष्यन् ॥ शुक्रेभिरैरैरजऽआततन्वान्कपुं पुनानःकृविभिःपुविज्ञैः । शोचिर्वसानःपर्यायुर
 पांश्रियौमिमीतेवृहतीरनूनाः ॥ १३ ॥ वज्राजासीमनदतीरदब्धादिवोयह्वीरवसानाऽअनघाः । सनाऽअत्रयुवतयः
 सयौनीरेकुंगर्भदधिरसप्तवाणीः ॥ स्त्रीर्णाऽअस्यसंहतोविश्वरूपपाघृतस्ययोनौस्त्रवथेमधूनां । अस्थुरव्रधेनवःपिन्वमा
 नामहीदुस्स्यमातरासमीची ॥ वज्राणःसूनोसहस्रोव्यद्यौदधानःशुक्रारभसावपूषि । श्रोतंतिधारामधुनोघृतस्यवृ
 षायत्रवावृधेकाव्येन ॥ पितुश्चिदूर्ध्वनुषाविवेदव्यस्यधारऽअसृजद्विधेनाः । गुहाचरंतसखिभिःशिवेभिर्दिवोयह्वी
 भिर्नगुर्हावभूव ॥ पितुश्चगर्भजनिनुश्चवज्रेपूर्वीरेकोऽअधयत्यीप्यानाः । वृष्णेसपत्नीशुचयेसवधूऽउभेऽअस्मैमनुष्ये३

अथैश्वामित्रेवृतीयेमडलेपचानुवाकाः (३।१।१) सोमस्यमेतित्रयोविशत्यृचस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोभिस्त्रिष्टुप ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ८

॥ ५४ ॥

निपाहि ॥ १४ ॥ उरैर्महाँऽअनिवाधेववर्धपोऽअग्निशसःसंहिपूर्वीः । ऋतस्योनावशयद्मूनाजामीनामशिरप
सिस्वसृणां ॥ अक्रोनवन्त्रिःसमिथेमहीनादिदृक्षेयःसनवेभाऽऋजीकः । उदुस्त्रियाजनितायोजानापांगभोन्नृतमोय
ह्वोऽअग्निः+ ॥ अपांगर्भेदर्शतमोर्षधीनांवनानाजानसभगाविरूपं । देवासश्चिन्मनसासंहिजग्मुःपनिष्ठजातंतवसंदुव
स्यन् ॥ बृहत्ऽइद्भानवोभाऽऋजीकमग्निं संचतविद्युतो नशुक्राः । गुह्ववृद्धंसदसिस्वेऽअंतरपारऽऋर्वेऽअमृतं दुहानाः ॥
ईळेचत्वायजमानोहृविभिर्भीरीळेसखित्वंसुमतिनिकांमः । द्वैरवोमिमीहिंसंजग्निरेरक्षाचनोदम्येभिरनीकैः ॥ १५ ॥
उपक्षेतारस्तवसुप्रणीतेद्येविश्वानिधन्यादर्धानाः । सुरतसाश्रवसातुंजमानाऽअभिव्यामपृतनार्थैरेवान् ॥ आदेवानां
मभवःकेतुरग्नेमंद्रोविश्वानिकाव्यानिविद्वान् । प्रतिमर्तोऽअवासयोदमूनाऽअनुदेवात्रथिरोयसिसाधन् ॥ आदेवानां
नौगहिसख्येभिःशिवेर्भर्महान्महीभिरूतिभिःसरण्यन् । द्यूतप्रतीकऽऽर्वियाव्यद्यौदृग्निर्विश्वानिकाव्यानिविद्वान् ॥ निदुरो
अग्नेजनिमासनोनिप्रव्यायनूतनानिवोचं । अस्मेरथिर्वहुलंसतरुंसुवाचैर्भाग्यशसंकुधीनः ॥ एतातेऽ
अहितोजातवेदाविश्वानिभिरिध्यतेऽअर्जस्रः । मह्यंतिवृष्णेसर्वनाकृतेमाजन्मजन्मन्निहितोजातवेदाः ॥ जन्मन्जन्म
न्त्वनोदेवत्राधेहिसुक्तोरराणः । प्रयसिहोतर्बृहतीरिषोनोग्रेमहिद्रविणमायजस्व ॥ इळामग्नेपुरुदंसंसानिगोःशश्वन्न

॥ ५४ ॥

मंडलं ३

अनु. १

मंहवमानायसाध । स्यान्नःसुनुस्तर्नयोविजावाग्नेसातेसुमतिर्भूत्वस्मे⁺ ॥ १६ ॥ (३।१।२) वैश्वानरार्यधिषणामृ
 तावृधैघृतंनपूतमग्नयेजनामसि । क्षिताहोतरंमनुषश्चवाघतोधिथारथंनकुलिशःसमृण्वति ॥ सरोचयज्जनुषारोदसी
 ऽउभेसमात्रोरभवत्पुत्रऽईच्छ्यः । हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितोदूळभोविशामतिथिर्विभावसुः ॥ क्रत्वादक्षस्यतरुषोविधर्म
 णदेवासोऽअग्निर्जनयंतचित्तिभिः । रुरुचानंभानुनाज्योतिषामहामत्यंनवाजंसनिव्यन्नपञ्जवे ॥ आमंद्रस्यसनिव्यतोव
 रेण्यंघृणीमहेऽअहंयंवाजसमिधं । रातिंभृगूणामशिर्जकविक्रतुमग्निराजंतंदिव्येनशोचिषा ॥ अग्निंसुन्नायदधिरेपुरोज
 नावाजश्रवसमिहवृक्तवर्हिषः । यत्तस्मैचःसरुचैविश्वदेव्यंरुद्रंयज्ञानांसाधदिष्टिमपसां ॥ १७ ॥ पार्वकशोचेतवहिक्ष
 गंपरिहोतर्ग्यज्ञेषुवृक्तवर्हिषोनरः । अग्नेदुर्वऽइच्छमानासऽआप्यमुपासतेद्रविणंघेहितेभ्यः ॥ आरोदसीऽअपृणदा
 स्वर्महज्जातयदेनमपसोऽअधारयन् । सोऽअध्वरायपरिणीयतेकविरत्योनवाजसातयेचनोहितः ॥ नमस्यतंहव्यदा
 तिस्वध्वरंदुवस्यतदभ्यंजातवेदसं । रथीर्कृतस्यबृहतोविचर्षणिरग्निर्देवानामभवत्पुरोहितः ॥ तिस्रोयुहस्यसमिधःप
 रिज्मनोभेरपुनस्तुशिशोऽअमृत्यवः । तासामेकामदधुर्मर्त्येभुजमुलोकमुद्रेऽउर्यजामिमीयतुः ॥ विशांक्रविंविदपतिमानु
 धीरिषुःसंसीमकृण्वन्त्स्वर्धातिनतेजसे । सऽउद्धतौनिवतोयातिवेषत्सगर्भेभुभुवनेषुदीधरत् ॥ १८ ॥ सजिन्वतेजठरे

(३।१।२) वैश्वानरायेतिपंचदशर्चसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोवैश्वानरोभिर्जगती ।

ऋक्सं.

अ. २ अ. ८

॥५५॥

मंडलं ३

अनु. १

॥५५॥

शुप्रजज्ञिवान्वृषोचित्रेषुनानदुन्नसिंहः । वैश्वानरः पृथुपाजाऽअमर्त्योवसरत्नादयमानोविदाशुषे ॥ वैश्वानरः प्रलथाना
कमारुहदिवस्पृष्टंभंदमानः सुमन्मभिः । सपूर्ववज्जनयन्जतवेधनंसमानमज्मंपर्येतिजागृविः ॥ ऋतावान्ययज्ञियंविप्र
मूर्ध्निस्वर्हशंकेतुंदिवोरोचनस्यामुषुर्बुधं । अग्निमूर्धानंदिवोऽअग्रतिष्ठकुतंभीमहेनमसावाजिनंवहत् ॥ शुर्विनयामन्नि
चिमद्वयाविनंदमूनसमकथंविश्वचर्षणिं । रथेनचित्रंवपुषायदर्शतंमनुहिंसदमिद्रायऽईमहे ॥ १९ ॥ (३।१।३)
वैश्वानरायपृथुपाजसेविपोरत्नाविधंतधरणेषुगातवे । अग्निहिंदेवाऽअमृतोदुवस्यत्यथाधर्माणिसनतानदूदुषत् ॥ अं
तदुतोरोदसीदुस्मऽईयतेहोतानिषत्तोमनुषः पुरोहितः । क्षयंवहंतपरिभूषतिद्युभिर्देवेभिरग्निरीषितोद्यियावसुः ॥ केतुंय
ज्ञानाविदथस्यसाधनंविप्रासोऽअग्निमहयंतचित्तिभिः । अपांसियस्मिन्नाधिदुधुगिरस्तास्मिन्सुम्नानियजमानऽआच
के ॥ पितायज्ञानामसुरोविपुश्चित्ताविमानमग्निर्वयुनंचवाघतां । आर्विवेशरोदसीभूरिवर्षसापुरुप्रियोभंदतेधामभिः
कविः + ॥ चंद्रमग्निंचंद्रथंहरिव्रतवैश्वानरमपुषदंस्वविदं । विगाहत्तूर्णतविषीभिरावृतंभूगणंदेवासऽइहसुश्रियदधुः
॥ २० ॥ अग्निदेवेभिर्मनुषश्चजंतुभिस्तन्वानोयज्ञंरूपेणसंधिया । रथीरंतीयतेसाधदितिभिर्जीरोदमूनाऽअभिज्ञ
(३।१।३) वैश्वानरायेत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोवैश्वानरोऽभिजगती ।

स्ति॒चा॒त॒नः । अ॒ग्रे॒ज॒र॒स्व॒स्व॒प॒त्य॒ऽआ॒यु॒न्य॒जो॒र्पि॒न्च॒स्व॒स॒मि॒यो॒दि॒दी॒हि॒नः । व॒यो॒सि॒जि॒न्च॒बृ॒ह॒त॒श्च॒जा॒गृ॒व॒ऽउ॒शि॒गृ॒दे॒वा॒ना॒
 म॒सि॒स॒क्र॒तु॒र्वि॒पा॒+ ॥ वि॒श॒प॒ति॒य॒ह्म॒ति॒थि॒न॒रः॒स॒दा॒य॒न्ता॒र॒धी॒ना॒मु॒शि॒जं॒च॒वा॒घ॒तां । अ॒ध्व॒रा॒णां॒चे॒त॒न॒जा॒त॒वै॒द॒सं॒प्र॒शंस॑ति
 न॒म॒सा॒ज॒ति॒भि॒र्बृ॒धे+ ॥ वि॒भा॒वो॒दे॒वः॒सुर॑णः॒प॒रि॒क्षि॒ती॒र॒ग्नि॒र्व॒भू॒व॒श॒व॒सा॒स॒म॒द्र॒थः । त॒स्य॒व्र॒ता॒नि॒भूरि॑यो॒वि॒णो॒व॒य॒मु॒प॒भू॒ये
 म॒द॒म॒ऽआ॒सु॒बु॒क्ति॒भिः ॥ वै॒श्व॒ना॒र॒त॒व॒धा॒मा॒न्या॒च॒क्रे॒भे॒भिः॒स्व॒र्वि॒द॒भ॒वो॒वि॒च॒क्षण॑ । ज्ञा॒त॒ऽआ॒र्प॒णो॒भु॒व॒ना॒नि॒रो॒द॒सी॒ऽअ॒
 भे॒ता॒वि॒श्वो॒परि॒भूरि॑सि॒त्म॒नां ॥ वै॒श्व॒ना॒र॒स्य॒दं॒स॒ना॒भ्यो॒वृ॒ह॒द॒रि॒णा॒दे॒कः॒स्व॒प॒स्य॒या॒कु॒विः । उ॒भा॒पि॒तरा॑म॒ह॒य॒न्न॒जा॒य॒ता॒ग्नि॒
 द्यौ॒र्वा॒यु॒थि॒वी॒भूरि॑रे॒त॒सा ॥ २१ ॥ (३।१।४) स॒मि॒त्स॒मि॒त्सु॒म॒नो॒बो॒ध्य॒स्मै॒शु॒चा॒शु॒चा॒सु॒म॒ति॒रा॒सि॒व॒स्वः । आ॒दे॒व॒दे॒वा॒
 न्य॒ज॒थ॒या॒य॒व॒क्षि॒स॒खा॒स॒खी॒न्त्सु॒म॒ना॒य॒क्ष्य॒न्ते ॥ यं॒दे॒वा॒स॒स्त्रि॒र॒ह॒न्ना॒य॒ज॑ते॒दि॒वे॒दि॒वे॒रु॒णो॒मि॒त्रो॒ऽअ॒ग्निः । से॒मं॒य॒ज्ञं॒म॒धु॒म॑न्तं
 कृ॒धी॒न॒स्त॒नू॒न॒पा॒दृ॒त॒यो॒नि॒वि॒ध॑न्तं ॥ प्र॒दी॒र्धि॒ति॒र्वि॒श्व॒वा॒रा॒जि॒गा॒ति॒हो॒ता॒र॒मि॒ळः॒प्र॒थ॒मं॒य॒ज॒ध्वै । अ॒च्छ॒ान॒मो॒भि॒वृ॒ष॒भ॒वं॒द॒
 ध्यै॒स॒दे॒वा॒न्य॒क्ष॒दि॒पि॒तो॒य॒जी॒थान् ॥ ऊ॒र्ध्वो॒र्वा॒गा॒तु॒र॒ध्व॒रे॒ऽअ॒कार्य॑ध्वौ॒शो॒र्ची॒षि॒प्र॒स्थि॒ता॒र॒जांसि॑ । दि॒वो॒वा॒ना॒भा॒न्य॒सा॒द्वि॒
 हो॒ता॒स्तृ॒णी॒मा॒हि॒दे॒व॒व्य॒चा॒वि॒ब॒र्हिः+ ॥ स॒स॒हो॒त्रा॒णि॒म॒न॒सा॒वृ॒णा॒ना॒ऽइ॒न्व॑तो॒वि॒श्व॒प्र॒ति॒य॒न्न॒तेन॑ । न॒पे॒श॒सो॒वि॒द॒थै॒षु॒प्र॒जा॒

(३।१।४) समित्समिदित्येकादशर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रद्रध्मस्तनूपादिळोबर्हिर्वीद्वारउघासानक्तादेव्योहोतारौसरस्वती
 कामारत्यस्त्वष्टावनस्पतिस्वाहाकृतयइतिक्रमेणदेवताबिष्टुम् ।

ताऽअभीष्टं मयज्ञं विचरंत पूर्वाः+ ॥ २२ ॥ आभंदमानेऽउषसाऽउपाकेऽउतस्मयेतेतन्वाऽविरूपे । यथानोमित्रोवरु
 णोजुषोषदिन्द्रोमरुत्वाऽउतवामहोभिः ॥ दैव्याहोतराप्रथमान्यजेसप्तपक्षासःस्वधयामदंति । ऋतंशंसतऽऋतमित्त
 कृत्स्नोदेवीर्वहिरंदसंदनु ॥ तन्नस्तुरीपमधपोषयिषुदेवत्वष्ट्रविराणःस्यस्व । यतोवीरःकर्मण्यःसुदक्षोयुक्तावाजा
 यतेदेवकामः ॥ वनस्पतेर्वसुजोपदेवानग्निहविःशमितासूदयाति । सेदुहोतासत्यतरोयजाति यथादेवानां जानमानि
 वेद ॥ आयाह्यमेसमिधानोऽअर्वाङ्जिःद्रेणदेवैःसरथंतुरेभिः । वहिर्नऽआस्तामदितिःसुपुत्रास्वाहादेवाऽअमृतामादयं
 तां ॥ २३ ॥ (३।१।५) प्रत्यगिरुषसश्चेकितानोबोधिविप्रःपटुवीःकवीनां । पृथुपाजादेवयज्ञिःसमिद्धोपद्वारातमं
 सोवहिरावः ॥ प्रेङ्गश्चिर्वोवृधेस्तोमेभिर्गाभिःस्तोतृणानमस्यऽउक्थैः । पूर्वाऽऋतस्यसंहशश्चकानःसंदुतोऽअधौदुषसो
 विरोके+ ॥ अर्धाव्यग्निर्मानुषीषुविश्वऽपांगभोमित्रऽऋतेनसार्धन् । आहर्त्यतोयजतःसान्वस्यादधुदुविप्रोहव्योमती
 नां+ ॥ मित्रोऽअग्निर्भवतियत्समिद्धोमित्रोहोतावरुणोजातवेदाः । मित्रोऽअध्वर्युरेभिरोदमूनामित्रःसिधूनामुतपर्व
 (३।१।५) प्रत्यग्निरित्येकादशर्वस्यसूक्तस्यगाथिनोविधाभिमित्रोअग्निष्टुप् (प्रत्यग्निःप्रकारवःसूक्तयोरन्यासांघावापृथिव्यादीनांनि
 पाताद्वर्यतेअवस्तायोर्होतादेवताःपाक्षिकाः) ।

तानां ॥ पातिप्रियंरिपोऽअग्रपद्वेःपातियुह्वश्चरणंसूर्यस्य । पातिनाभासस्रशीर्षाणमग्निःपातिदेवानांमुपमादम्ब्वः
 ॥ २४ ॥ ऋमुश्चक्रुऽईड्यंचारुनामविश्वानिदेवोवयुनानिविद्वान् । ससस्यचर्मधृतवदवेस्तादिदुग्भीरक्षत्यप्रयुच्छन् ॥
 आयोनिमग्निर्धृतवतमस्थायुप्रगाणमुशंतमुशानः । दीद्यानःशुचिर्क्रुष्वःपवकःपुनःपुनर्मातरानव्यसीकः ॥ सद्यो
 ज्ञातऽओषधीभिर्ववक्षेयद्दिविर्धतिप्रस्वोद्यतेन । आपऽइवप्रवताशुर्भमानाऽउरुष्यदग्निःपित्रोरुपस्थे ॥ उदुष्टतःसमिधा
 यत्नोऽअद्यौद्वर्भन्दिद्वोऽअधिनाभापृथिव्याः । मित्रोऽअग्निरीड्योमातरिश्वादुतोर्वक्षद्यजथायदेवान् ॥ उदस्तंभीत्स
 मिधानाकर्मव्योऽग्निर्भवन्ननुत्तमोरोचनानां । यद्भीभृगुभ्यःपरिमातरिश्वागुहासंतहव्यवाहंसमीधे ॥ इळामग्ने० ॥ २५ ॥
 (३।१।६) प्रकारवोमननावच्यमानादेवुद्दीचीनयतदेवयंतः । दुक्षिणावाङ्गाजिनीप्राच्येतिहुविर्भरत्यग्रयेधताची ॥ आ
 रोदसीऽअपृणाजायमानऽउतप्ररिक्थाऽअधनुप्रयज्यो । दिवश्चिदग्नेमहिनापृथिव्यावच्यंततिवह्नयःससर्जिह्वाः ॥ द्यौ
 श्रत्वापृथिवीयज्ञियासोनिहोतरंसादयंतदमाय । यद्दिविशोमानुधीदेवयंतीःप्रयस्वतीरीळतेशुक्रमर्चिः ॥ महान्स
 धस्थेभ्रुवऽआनिर्पत्तोन्तर्द्यावामार्हिनेहर्षमाणः । आस्केसपत्नीऽअजरेऽअमृक्केसवदुधेऽउरुगायस्यधेनू ॥ ब्रतातेऽअ
 नेमहुतोमहानितवक्त्वारोदसीऽआतंतथ । त्वंदूतोऽअभवोजायमानस्त्वेनेतावृषभचर्षणीनां ॥ २६ ॥ ऋतस्यवाक्के

(३।१।६) प्रकारवइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यागाथिनोविश्वामित्रोभिस्त्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. २४. ८

॥५७॥

शिनायोग्याभिर्धृतसुवारोहिताधुरिधिष्व । अथावहदेवान्देवविश्वान्स्वधराकृणुहिजातेवेदः ॥ द्विवश्विदातेरुचयं
तरोकाऽउषोर्विभातीरनुभासिपूर्वीः । अपोयदमऽउशुशुग्वनेषुहोतुर्मद्रस्यपनयतदेवाः+ ॥ उरौवायेऽअंतरिक्षेमदति
द्विवोवायेरोचनेसतिदेवाः । ऊमावायेसुहवासोयजत्राऽआयेमिरेरथोऽअग्नेऽअर्वाः ॥ ऐभिरेग्नेसरथंयाह्यवाङ्मना
रथंवाविभवोह्यर्वाः । पत्नीवतस्त्रिशतंत्रीश्चदेवाननुष्वधमावहमादयस्व ॥ सहोतायस्यरोदसीचिदुवीयुजंयज्ञमभिष्टु
धेगृणीतः । गार्चीऽअध्वरेवतस्थतुःसुमेकेऽऋतावरीऽऋतजोतस्यसत्ये+ ॥ इळांमग्नेपुरुदंसंसनिगोःशश्वत्तमंहवमा
नायसाध । स्यान्नःसुनुस्तनयोविजावाग्नेसातेसुमतिर्भूत्वस्मे+ ॥ २७ ॥ इतिद्वितीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥
पोडशाध्याये वर्गाः २७ सूक्तानि १३ ऋचः १४० ॥ यागः ॥ द्रविणोदसेग्नयइषायेदं. द्रविणोदसेग्नयऊजयि. द्रविणोदसेग्नयसहाये.
द्रविणोदसेग्नयसहत्याये. अध्विन्यातपस अग्नयेतपस्याये. सवित्र ११ अध्विन्या ८ सोमापूषणाभ्या. ५ सोमापूषणादितिभ्य. वायव.
२ इद्रवायुभ्या. मित्रावरुणाभ्या. ३ अध्विन्या. ३ इंद्राये. ३ विश्वेभ्योदेवेभ्य. ३ सरस्वत्याइ ३ द्यावापृथिवीभ्या. ३ शंजुताये. ६
अग्नय. २३ वैश्वानरायग्नय २६ समिद्धायाग्नय. तनूनपात इळाये. बर्हिष देवीभ्योद्वार्ष्य. उपासानक्ताभ्या. देवीभ्याहोतुभ्याप्रचेतो-
भ्यामि. सरस्वतीळाभारतीभ्य. त्वष्ट्रइ. वनस्पतय. स्वाहाकृतिभ्य अग्नयइदं. २२ ॥ इतिद्वितीयेऽष्टमः ॥ (१ इतश्चद् ऋतुदेवताः ।)

॥ द्वितीयाष्टकः समाप्तः ॥

मंडलं ३

अनु. १

॥५७॥

॥ इति द्वितीयोऽष्टकः समाप्तः ॥

॥ अथ तृतीयाष्टकप्रारंभः ॥

श्रीः ॥ प्रयंऽजंतिपूयस्तुतिः पृथ्वाद्याभिर्नहवौल्यात्रश्चन्यष्टमैवैश्वदेवीवातृतीयासप्तम्यावनुष्टुभौसखायोनव
 वाहंतं त्रिष्टुवंतं त्वाभग्नौष्णिहमग्निहोतागायत्रं त्विन्द्राग्नीऐन्द्राग्रं प्रवः सप्तऋषभस्त्वानुष्टुभमाहोताविपाजसंका
 त्योत्कीलस्त्वयमग्निः षट्प्रागाथंसमिध्यमानः पंचकतवैश्वामित्रस्तुभवानोग्निहोतारं गाथीहाग्निमुपसमाद्यां त्ये
 वैश्वदेव्योविमंनउपाद्ये अनुष्टुभौ विरांडपासतोबृहतीचां त्यायंसउपां त्यानुष्टुपुरीष्येभ्योग्निभ्यो निर्मथितो देवश्च
 वादेववातश्चभारतौ तृतीयासतोबृहत्यग्नसहस्वागायत्रमाद्यानुष्टुवन्नेदिवैराजमुपां त्याग्नेर्द्रवैश्वानरं नववृचौ
 वैश्वानरीयंमारुतौ जागतौ दृचआत्मस्तुतिर्वापूर्वात्मगीतां त्योपाध्यायस्तुतिः प्रवः पंचोनागायत्रं त्वृतव्यावाद्याग्ने
 जुपस्वपदं तृतीयाद्युष्णिक् त्रिष्टुपजगत्योस्तीदं पौळशाद्याचतुर्थोदशमीद्वादश्यानुष्टुभः पष्ठ्येकादश्यापां त्येचजग
 त्यः पंचमृत्युत्विग्भ्योवा ॥ १ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 श्रीगणे शायनमः ॥ हरिः ३ ओम् ॥ (३।१।७) प्रयऽआरुः शितिपृष्ठस्वधासेरामातरां विविशुः सप्तवर्णाः । परि
 क्षितापितरासंचरते प्रसंक्षीते दीर्घमायुः प्रयक्षे ॥ दिवक्षसो धेनवो वृष्णोऽश्वदेवीरातस्थौ मधुमद्वहतीः । ऋतस्यत्वा
 सदसि क्षेमयंतं पर्येकाचरति चतुर्निगौः ॥ आसीमरो हत्सुयमाभवतीः पतिंश्चिकित्वात्रयि विदंयीणां । प्रनीलपृष्ठोऽअ

(३।१।७) प्रयज्जारुरित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य गाथिनो विश्वामित्रो मिशिष्टुप् ।

तसस्यधासेस्ताऽअवासयत्पुरुधप्रतीकः ॥ महित्वाष्ट्रमर्जयतीरजुर्थस्तभूयमानंवहतोवहति । व्यंगेभिर्दिद्युतानःसध
 स्थऽएकाभिवरोदसीऽआर्विवेश ॥ ज्ञानतिवृष्णोऽअरुषस्यशेवमतब्रध्नस्यशासनैरंगति । द्विवोरुचःसुरुचोरोचमानाऽ
 इळायेषांगण्यामार्हिनागीः⁺ ॥ १ ॥ उतोपितृभ्यांप्रविदानघोषमहोमहर्द्ध्यामनयंतशूषं । उक्षाहयत्रपरिधानमस्योरनु
 स्वंधामजरितुर्ववक्ष ॥ अध्वर्युभिःपंचभिःसप्तविप्राःप्रियंरक्षतेनिहितंपदंवेः । प्रांचोमदंत्युक्षणोऽअजुयदेवादेवानाम
 नूहिब्रतागुः⁺ ॥ दैव्याहोतारप्रथमानर्थजेसप्तपक्षासःस्वधर्यामदंति । ऋतंशंसतऽऋतमित्तऽआहूरनुब्रतंत्रतपादीध्या
 नाः ॥ ब्रुपायंतैमहेऽअत्यायपूर्ववृष्णेचित्रायरश्मयःसुयामाः । देवहोतर्मद्रतरश्चिकित्वान्महोदेवान्नोदसीऽएहवक्षि ॥
 पक्षप्रयजोद्रविणःसुवार्चःसुकेतवऽउषसोरिवदूषुः । उतोर्चिदग्नेमहिनापृथिव्याःकृतंचिदेनःसंमेहदशस्य ॥ इळासग्ने
 पुरुदंसंसनिंगोःशंभ्वत्समंहवमानायसाध । स्यान्नःसुनुस्तनयोविजावाग्नेसातेसुमतिर्भूत्वस्मे⁺ ॥ २ ॥ (३।१।८) अं
 जंतित्वामध्वरेदेवयंतोवनस्पतेमधुनादैव्येन । यदूर्ध्वस्तिष्ठाद्भविणेहयत्ताद्यद्वाक्षयोमातुरस्याऽउपस्थे ॥ सर्भिर्ऋस्यश्र
 येमाणःपुरस्ताद्ब्रह्मवन्वानोऽअजरंसुवीरं । आरेऽअस्मदभतिंवाधमानऽउच्छ्रयस्वमहतेसौभगाय ॥ उच्छ्रयस्ववनस्पते

(३।१।८) अंजंतीत्येकादशशर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोयूपःपष्ठ्यादिपंचानायूपाः (अष्टम्याविश्वेदेवावा) अंत्यायात्राश्चनखिष्टुप्
 वृत्तीयासप्तम्यावनुष्टुभौ ।

वर्ष्मन्पृथिव्याऽअधि । सुमितीमीयमानोवर्चोधायाज्ञवाहसे ॥ शुवसुवासाःपरिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवतिजा
यमानः । तंधीरांसःकवयऽउन्नयंतिस्वाद्योऽमनसादेवयंतः ॥ जातोजायतेसुदिनत्वेऽअह्नोसमर्यऽआविदथेवर्धमा
नः । पुनर्तिधीराऽअपसोमनीषादेवयाविप्रऽउदियतिवाचं ॥ ३ ॥ यान्योनरोदेवयंतोनिम्युर्वनस्यतेस्वर्धतिवर्त
तक्ष । तेदेवासःस्वरवस्तस्थिवांसःप्रजावदुस्मोर्दिधिपतुर्ल ॥ येवृक्कासोऽअधिक्षमिनिमित्तासोयतस्त्वचः । तेनोच्यंतु
वार्धदेवत्राक्षेत्रसार्धसः ॥ आदित्यारुद्रावर्षवःसुनीथाद्यावाक्षामापृथिवीऽअंतरिक्षं । सजोर्षसोयज्ञमंवंतुदेवाऽऊर्ध्व
कृण्वंत्वच्चरस्यकेतुं ॥ हुंसाऽइवश्रेणिशोयतानाःशुक्रावसानाःस्वरवो नऽआर्गुः । उन्नीयमानाःकविभिःपुस्तहिवा
देवानामपियंतिपार्थः ॥ शृंगानीवेच्छंगिणांसंदहश्रेचपालवंतःस्वरवःपृथिव्यां । वाघर्द्धिर्वाविह्वेशोर्षमाणाऽअस्मा
ऽअवंतुपुतनाज्येषु ॥ वनस्पतेशतवल्शोविरोहसहस्रवल्शविवयंरहेम । यंत्वामयंस्वर्धितिस्तेजमानःप्रणिनायमहुते
सौभगाय ॥ ४ ॥ (३।१।९) सखायस्त्वाववृमहेदेवंमतीसऽऊतये । अपानपातंसुभगसुदीर्दितिसुप्रतूर्तिमनेहसं ॥
कार्यमानोवनात्वंयन्मातृजगन्नपः । नतत्तेऽअग्नेप्रमृषेनिवर्तनंयद्वरेसन्निहाभवः ॥ अर्तितृष्टवंवक्षिथायैवसमनाऽअ
सि । प्रप्रान्येयंतिपर्यन्यऽआसतेयेषांसख्येऽअसिश्रितः ॥ इयिवांसमतिस्त्रिधःशश्वतीरतिसश्रतः । अन्वीमविंद

(३।१।९) सखायइतिनवर्चसूक्तस्यगाथिनोविद्याभिन्नोभिर्बृहत्तयात्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ३.अ. १

॥ ३ ॥

त्रिचिरासोऽअद्भुहोऽसुसिंहमिवश्रितं+ ॥ ससुवांसमिवत्सनाग्निमिथातिरोहितं । ऐतन्नयन्मातरिश्वापरवतोदेवे
भ्योमश्रितंपरि ॥ ५ ॥ तंत्वामर्तोऽअगृभ्णतदेवेभ्योहव्यवाहन । विश्वान्यद्यज्ञोऽअग्निपासिमानुषतवृकत्वायवि
वृकशोचिषं । आहुंदूतमजिरंमृलमीड्यश्रष्टीदुवंसपर्यत ॥ त्वायंदग्नेपशवःसमासतेसमिद्धमपिशर्वरे+ ॥ आजुहोतास्वध्वंशरीरंपा
औक्षन्धुतैरस्तृणन्वाहिरस्माऽआदिद्धोतारंन्यसादयंत ॥ ६ ॥ (३।१।१०) त्वामग्नेमनीषिणःसन्नाजंचर्षणीनां ।
दुवंमर्तोऽसद्वंथतेसमध्वरे+ ॥ त्वायज्ञेष्वृत्विजमग्नेहातारमीळते । गोपाऽऋतस्यदीदिहिस्वेदमे
समिधाजातवैदसे । सोऽअग्नेधत्तेसुवीर्यसंपुष्यति ॥ सकेतुरध्वराणामग्निदेवेभिरागमत् । अंजानःससहोतृभिर्हविष्म
ते ॥ प्रहोत्रेपर्व्यवचोमयेभरताबृहत् । विपांज्योतीषिविभ्रतेनवेधसे ॥ ७ ॥ अग्निवर्धतुनोगिर्यतोजायतऽऋक्थ्यः ।
महेवाजायद्रविणायदर्शतः+ ॥ अग्नेयजिह्वोऽअध्वरेदेवान्देवयतेयज । होतमंदोविराजस्यतिस्त्रिधः ॥ सनःपावक
दीदिहिद्युमदुस्मेसुवीर्यं । भवांस्तोतृभ्योऽअंतमःस्वस्तये ॥ तंत्वाविप्राविपन्यवोजागवांसःसमिधते । हव्यवाहमम
त्यंसहोबृधं ॥ ८ ॥ (३।१।११) अग्निहोतापुरोहितोध्वरस्यविचर्षणिः । सर्वेदयज्ञमानुषक्+ ॥ सहव्यवाळमर्त्यं
(३।१।१०) त्वामग्नेदतिनवर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोभिरुष्णिक् । (३।१।११) अग्निहोतिनवर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोभिरु

मंडलं. ३

अनु. १

॥ ३ ॥

ऽउशिगदूतश्चनोहितः । अग्निर्धियासमृण्वति ॥ अग्निर्धियासचैततिकेतुर्यज्ञस्यपूर्य्यः । अर्थह्यस्यतरणि ॥ अग्निं सनु
 सनं श्रुतं सहसोजातवेदसं । वह्निं देवाऽअकृण्वत ॥ अदभ्यः पुरऽएता विशामग्निमनुपीणां । तूर्णिरयः सदानवः
 ॥ ९ ॥ साह्वान्विभ्वाऽअभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस्तु विश्वस्तमः ॥ अभिप्रयांसिवाहसादाभ्वोऽअश्रोति
 मर्त्यः । क्षयपावकशोचिपः ॥ परिविभ्वा नि सुधिताग्नेरश्याममन्मभिः । विप्रसोजातवेदसः ॥ अग्ने विभ्वा नि वार्या
 वाजैषु स नि यामहे । त्वेदेवासऽएरिरे ॥ १० ॥ (३।१।१२) इंद्राग्नीऽआगतं सुतं गीर्भिनभो वरेण्यं । अस्वपतं वि
 ये पिता ॥ इंद्राग्नीज रितुः सचायज्ञो जिगाति चेतनः । अयापतमिमंसुतं ॥ इंद्रमग्निं किञ्चिच्छदायज्ञस्य जूत्यावृणे ।
 तासोमस्येह तृपतां ॥ तोशावृत्रहणा हुवे सजित्वानापरजिता । इंद्राग्नीवाजसातमा ॥ प्रवामर्चैत्युक्थिनो नीधाविदो
 जरितारः । इंद्राग्नीऽइषऽआवृणे ॥ ११ ॥ इंद्राग्नीनवति पुरोदासपत्नी रधूनुतं । साकमेकैकन कर्मणा ॥ इंद्राग्नीऽअप
 मस्य युपप्रथं तिधीतयः । क्रतस्य पथ्याऽनु ॥ इंद्राग्नीतविपाणिवांसधस्थानि प्रयांसिच । युवोरसूयं हितं ॥ इंद्राग्नी
 रोचनाद्विवः परिवाजेषु भूषथः । तद्वर्चं चेति प्रवीर्यं ॥ १२ ॥ (३।२।१) प्रवोदेवायाग्ने चर्हिष्ठमर्चांसै । गर्महेवे
 भिरासनो यजिष्ठो वहिरासदत् ॥ क्रतावायस्य रोदसीदक्षंसचैतऽऊतयः । हविष्मंतस्तर्भोऽते तंसं निष्यंतो वसे ॥ सयं
 यत्री । (३।१।२२) इंद्राग्नी इति नवर्चस्य क्रुत्स गायि नो विश्वा मित्रं इंद्राग्नी गायत्री । (३।२।१) प्रवोदेवायेति सप्तर्चस्य सुक्रस्य वैश्वा मित्रं रूपमो

ताविप्रऽएपांसयज्ञानमथाहिपः । अग्निं तं वोदुवस्यतदातायोवन्तितामघं ॥ सनः शर्मणि वीतयेभिर्धेच्छतुशतमा । य
 तौ नः प्रुष्णवृद्धसुदिविक्षितिभ्योऽअप्स्वा ॥ द्वादिवांसमपूर्व्यवस्वीभिरस्यधीतिभिः । ऋक्काणोऽअग्निमिधतेहोतारं
 विरपतिं विशां ॥ एतनो बह्वन्नविषऽउक्थेदुदेवहृतमः । शर्नः शोचामरुद्धुधोऽग्ने सहस्रसातमः ॥ नूनो रास्वसहस्रवत्तोक
 तमः सवेधाः ॥ द्युमदग्ने सुवीर्यवर्षिष्ठमनुपक्षितं ॥ १३ ॥ (३।२।२) आहोतामं द्रो विदथान्यस्थात्सत्यो यज्वत्तोक
 स्तुभ्यं चेतेते सहस्वः । विद्धोऽआर्वक्षिविदुपो निषत्सिमध्यऽआवर्हि रूतये यजत्र ॥ अयामिते नमऽउक्किं जुषस्वऽऋताव
 स्य पथ्याभिरच्छे । यत्सीमं जंति पर्व्यहविर्भिरावंधुरेव तस्थतुदुरोणे ॥ मित्रश्चतुभ्यं वरुणः सहस्वोऽग्ने विभ्वैर्मरुतः सुन्नम
 पसद्य । यजिष्ठे नमर्नसायक्षिदेवानस्यैधतामन्मना विप्रोऽअग्ने ॥ वयं तेऽअघररिमाहिकाममुत्तानहस्तानमसो
 त्वंदेहि सहस्रिणरग्निं नो द्रो घेणवचसासत्यमग्ने ॥ त्वद्धिपुत्रसहसो विपवीं देवस्य यंत्यतो विवाजाः ।
 सुरथस्य वोधिसर्वतदग्नेऽअमृतस्वदेह ॥ १४ ॥ (३।२।३) विपार्जसापुशुनाशोऽनुवाधस्वद्विपोरक्षसोऽअमी
 मिरनुष्टुप । (३।२।२) आहोतेतिसप्तर्चस्य सूक्तस्यैवामित्रत्रयभो मिबिष्टुप् । (३।२।३) विपार्जसेतिसप्तर्चस्य सूक्तस्य कात्यवत्कीलो मिबिष्टुप् ।

वाः । सुशर्मणोबृहत्तःशर्मणस्यामग्नेरहंसुहवस्यप्रणीतौ । त्वनोऽअस्याऽउपसोन्वुष्टौत्वंसुरऽजदितेवोधिगोपाः । ज
 न्मैवनिर्त्यतनयंजुषस्वस्तोर्ममेऽअग्नेतन्वासुजात ॥ त्वनंचक्षवृपभानुपूर्वीःकृष्णास्वग्नेऽअरुपोविभाहि । वसोनेपिचप
 षिचाल्यंहःकृधीनोरायऽउशिजोयविष्ठ ॥ अपह्नोऽअग्नेवृपभोदिदीहिपुरोविश्वाःसौभगासंजिगीवान् । यज्ञस्यनेताग्र
 धमस्यपायोजीतवेदोबृहत्तःसुप्रणीते ॥ अच्छिद्राशर्मजरितःपूरुर्णिदेवोऽअच्छादीद्यानःसुमेधाः । रथोनसस्त्रिरभि
 वक्षिवाजमग्नेत्वंरोदसीनःसुमेकै ॥ प्रपीपयवृपभजिन्ववाजानग्नेत्वंरोदसीनःसुदोघै । द्वेवेभिर्देवसूरुचारुचानोमानो
 मर्तस्यदुर्मतिःपरिष्ठात् ॥ इळामग्ने० ॥ १५ ॥ (३।२।४) अयमग्निःसुवीर्यस्येशमहःसौभगस्य । रायऽईशेस्वपत्य
 स्यगोर्मतऽईशेवृत्रहथानां ॥ इमंनरोमरुतःसश्चतावृधंयस्मिन्नायःशेवृधासः । अभियेसंतिपृतनासुदुह्योविश्वाहाशञ्जु
 मादुसुः+ ॥ सत्वंनोरायःशिशीहिमीद्वोऽअग्नेसुवीर्यस्य । तुर्विद्युन्नवार्पिष्ठस्यप्रजावतो नमीवस्यशुष्मिणः ॥ चक्रियो
 विश्वाभुवनाभिसासिह्मिश्चकिंदेवेष्वानुवः । आद्वेषुयतंतऽआसुवीर्यऽआशंसंउतनणां+ ॥ मानोऽअग्नेर्मतयेमावीर
 तायैरिदधः । मागोतायैसहसस्सुत्रमानिदपद्वेषांस्याकृधि ॥ शुग्धिवाजस्यसुभगप्रजावतोर्बृहत्तोऽअध्वरे । संराया

(३।२।४) अयमग्निरितिपठचस्यसूक्तस्यकाल्यउत्कीलोभिःआद्यातृतीयापचम्योबृहत्याःद्वितीयाचतुर्थीषष्ठयःसतोबृहत्याः ।

कृत्स्नं.

अ. ३ अ. १

॥ ५ ॥

भयसासृजमयोभुनातुर्विद्युन्नयशस्वता ॥ १६ ॥ (३।२।५) समिध्यमानः प्रथमानुधर्मासमक्लुभिरज्यते विश्ववा
रः । शोचिष्केशो घृतनिर्णिकपावकः सुयशोऽअभिर्यजथायदेवान्+ ॥ यथायजोहोत्रमग्नेपृथिव्याथादिवोजातवेद
ऽअग्ने । एवानेन हविषायक्षिदेवान्भनष्वद्यज्ञप्रतिरेममद्य+ ॥ त्रीण्यायुषितवजातवेदस्त्रिष्वऽआजानीरुपसस्ते
दः । त्वांदूतमरतिहव्यवाहेदेवाऽअकृण्वन्नमृतस्यनाभिं ॥ यस्त्वद्धोतापूर्वोऽअग्नेयजीयान्द्रुताचसत्तास्वधयाचशंभुः ।
तस्यानुधर्मप्रयजाचिकित्वोथानोधाऽअध्वरं देववीतौ ॥ १७ ॥ (३।२।६) भवानोऽअग्नेसुमनाऽउपेतौ सखैवसख्यै
रस्य । तपोवसोचिकितानोऽअचित्तान्वितेतिष्ठतामजराऽअयासः ॥ इध्मेनाग्नऽइच्छमानो घृतेन जुहोभिहव्यतरं सेवला
य । यावदीशे ब्रह्मणा वंदमानऽइमां धियं शतसेयाय देवी+ ॥ उच्छोचिषा सहसस्पुत्रस्तु तोवृहद्वयः शशमाने बुधेहि । २
वदमे विश्वामित्रे पृथग्योर्मज्जमातेतन्वं भूरिकृत्वं ॥ कृधिरत्नं सुसनिर्तुर्नानां सधेदग्नेभवसियत्सभिद्धः । स्तोतुर्दुरोणे
(३।२।५) समिध्यमान इति पंचस्य सूक्तस्यैव धामित्रः कतो मिबिष्टु ।

मिबिष्टु ।

(३।२।६) भवान इति पंचस्य सूक्तस्यैव धामित्रः कतो

मंडलं ३

अनु. २

॥ ५ ॥

सभगस्यरेवत्सप्राकुरत्वादधिषेवपूँषि ॥ १८ ॥ (३।२।७) अग्निहोतारं प्रवृणोमिधेगुत्सं कर्वाँध्वविदममूरं ।
 सनोयक्षदेवतातायजीयात्रायेवाजयवनतेमघानि ॥ प्रतोऽग्नेहृविष्मतीमियर्भ्यच्छासुद्युम्नारातिनीधुताचीं ॥ प्रदु-
 क्षिणिदेवतातिमुराणः संरातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत् ॥ सतेजीयसामनसात्वोत्तं डुतश्चिश्चस्वपत्यस्यशिक्षोः । अग्नैरायोनु-
 तमस्यप्रभूतौभूयामतेसुष्टुतयश्चस्वः ॥ भूरीणिहित्वेदधिरैऽअनीकामैदेवस्ययज्यवोजनासः । सऽआवहदेवतातिंय-
 विष्टशर्धोयदृद्यदिव्यंयजासि ॥ यत्त्वाहोतारमनजन्मिधेनिपादयतोयजथायदेवाः । सत्वंनोऽग्नेवितेहवोध्यधिश्र-
 वांसिधेहिनस्तनूयु ॥ १९ ॥ (३।२।८) अग्निमपसमंभिवनादधिकां व्युष्टिषुहवतेवाहिरुक्थैः । संज्योतिषेनः शृण्वं-
 तुदेवाः सजोपसोऽअध्वरंवावशानाः⁺ ॥ अग्नेव्रीतिवाजिनात्रीपधस्थातिस्रस्तेजिह्वाऽऽकृतजातपूर्वीः । तिस्रऽऽर्ततन्वो-
 देववातास्ताभिर्नः पाहिरिगोऽअग्रयुच्छन् । अग्नेभूरीणितर्वजातवेदोदेवस्वधावोमृतस्यनामं । याश्चमायामायिनांवि-
 श्वमिन्वत्येपूर्वीः संदधुः पृष्टवंधो ॥ अग्निर्नेताभगऽइवक्षितीनांदैर्धानांदेवऽऽकृतपाऽऽकृतावां । सर्वत्रहासनयोविश्वेदेवाः
 पर्पद्भिश्चातिदुरितागणंतं ॥ इधिकामग्निमपसंचदुर्वीबृहस्पतिसवितारंचदेवं । अश्विनामित्रावरुणाभगंचवसूद्राऽ

(३।२।७) अग्निहोतारमितिपचर्चसूक्तस्यकौशिकोगाथ्यमिच्छिद्युपु । (३।२।८) अग्निमुपसमितपचर्चसूक्तस्यकौशिको-
 गाथ्यमिः आद्यांलयोर्विश्वेदेवाच्छिद्युपु ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. १

॥ ६ ॥

मंडलं ३

अनु. २

॥ ६ ॥

आदित्याँऽइहहवे ॥ २० ॥ (३।२।९) इमंनोयज्ञममृतेषुधेहीमाहव्याजातवेदोजुषस्व । स्लोकानामग्नेमेदसोघृत
स्यहोतःप्रार्थानप्रथमोनिषद्य ॥ घृतवतःपावकतेस्तोकाश्चोतंतिमेदसः । स्वधर्मन्देववीतयेयंश्रेष्ठनोधेहिवायं ॥ तुभ्यं
स्लोकार्घृतश्चुतोमेविप्रायसंत्य । ऋषिःश्रेष्ठःसमिधसेयज्ञस्यप्राविताभवं ॥ ओजिष्ठतेमध्यतोमेदुऽउज्झृतं प्रतेवयंददामहे । ओ
ग्नेमेदसोघृतस्य । कविशस्तोबृहताभानुनागाहव्याजुषस्वमेधिर ॥ २१ ॥ (३।२।१०) अयंसोऽअग्निर्यस्मिन्सोममिद्रः सुतंदधे
जठरेवावशानः । सहस्रिणंवाजमत्यंनसमिंससवान्सन्सूयसेजातवेदः ॥ अग्नेयत्तैदिविवर्चःपृथिव्यायदोषधीष्व
स्वार्यजत्र । येनांतरिक्षमूर्वातंत्येपःसभानुरणवोचक्षाः ॥ अग्नेदिवोऽअर्णमच्छाजिगास्यच्छादेवोऽऊचिषेधि
क्षमदुहो नमीवाऽइषोमहीः+ ॥ इळामग्ने० ॥ २२ ॥ (३।२।११) निर्मथितःसुधितुऽआसधस्येयुवाकविरध्वरस्य
(३।२।१९) इमंनइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यकौशिकोगाथ्यग्निःआद्यात्रिष्टुप्द्वितीयावतीथेनुहुभौचतुर्थीविराड्पात्यासतोबृहती ।
(३।२।१०) अयंसइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यकौशिकोगाथ्यग्निरुपात्यायाःपुरीष्यामयस्त्रिष्टुप्चतुर्थनुष्टुप् । (३।२।११) निर्मथितइति
पंचर्चस्यसूक्तस्यभारतौदेवश्रवोदेववातावभिस्त्रिष्टुप्चतीयासतोबृहती ।

प्रणेता । जूर्यत्स्वग्निरजरोवनेष्वत्रादधेऽअमृतंजातवेदाः ॥ अमथिष्टांभारतारेवदुग्निदेवश्रवादेववातःसुदक्ष ॥ अ
 ग्नेविपश्यबृहताभिरायेषानेनेताभवतादनुद्यन् ॥ दशक्षिपःपृथ्वीसीमजीजनन्सुजातंमातृप्रियं । अग्निस्तुहिदेव
 वातदेवश्रवोयोजनानामसङ्क्षी ॥ नित्वादेधेवरऽआपृथिव्याऽइळायास्पदेसुदिनत्वेऽअह्ना । हृषद्वत्यामानुषऽआप
 यायांसरस्वत्यांरेवदग्नेदीहि ॥ इळामग्ने० ॥ २३ ॥ (३।२।१२) अग्नेसहस्वपुर्तनाऽअभिर्मातीरपास्य । दुष्टरस्तरञ्चरा
 तीर्वचोधायाज्ञवाहसे ॥ अग्नऽऽइळासमिध्यसेवीतिहोत्रोऽअमर्त्यः । जुषस्वसूनोऽअध्वरं ॥ अग्नेद्युम्नेनजागृवेसहसःसू
 नवाहुत । एदंबर्हिःसंदोमम ॥ अग्नेविश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महयागिरः । युज्ञेषुयऽर्चचायवः ॥ अग्नेदादाशुषैरयिवीरवं
 तंपरीणसं । शिश्रीहिर्नःसूनुमर्तः ॥ २४ ॥ (३।२।१३) अग्नेदिवःसनुरसिप्रचेतास्तनापृथिव्याऽउत्तविश्ववेदाः । ऋधग्दे
 वोऽऽइहयजाचिकित्वः ॥ अग्निःसनोतिवीर्याणिविद्वान्सनोतिवाजममृतायभ्रपन् । सनोदेवोऽएहवहापुरुक्षो ॥ अग्नि
 र्द्यावापृथिवीविश्वजन्येऽआभातिदेवीऽअमृतेऽअमूरः । क्षयन्वाजैःपुरुश्वद्रोनमोभिः ॥ अग्नऽऽइंद्रश्चद्राशुषौदुरोणेसता
 वतोयज्ञमिहोपयातं । अमर्धतासोमपेयायदेवा ॥ अग्नेऽअपांसमिध्यसेदुरोणेनित्यःसूनोसहसोजातवेदः । सुधस्थां

(३।२।१२) अग्नेसहस्वेतिपचर्चस्यसूक्त्यागाथिनोविश्वामित्रोभिर्गायत्रीआद्यानुष्टुप् । (३।२।१३) अग्नेदिवइतिपचर्चस्यसूक्त्या
 गाथिनोविश्वामित्रोभिश्चतुर्थ्याइंद्राम्रीविराट् ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. १

॥ ७ ॥

निमहयमानऽकृती+ ॥ २५ ॥ (३।२।१४) वैश्वानरमनसाग्निनिचाय्याहविष्मतोऽनुषत्यस्वविदं । सदानुदेवं
रथिरवस्यवोगीर्भिरण्वंशुशिकासोहवामहे ॥ तंशुभ्रमाग्निमवसेहवामहेवैश्वानरमातरिश्वानमकथ्यं । बृहस्पतिमनु
षोदेवतातयेविषंश्रोतारमतिथिरधुष्यदं ॥ अश्वोनकंदन्जनिभिःसमिध्यतेवैश्वानरःकुशिकेभिर्व्युगे । सनोऽअग्निः
सर्वीर्यस्वभ्यंदधातुरलममृतेषुजागृविः ॥ अग्निश्रियोमरुतोविश्वकृष्टयऽआत्वेषमग्रमवऽईमहेवयं । बृहदुक्षोमरुतो
विश्ववेदसःप्रवेपयतिपर्वतोऽअदाभ्याः ॥ २६ ॥ ब्रातं ब्रातंगणंगणंसुशस्तिभिर्ग्रेभर्ममरुतामोर्जऽईमहे । पुषदश्वासो
यावृषनिर्णिजःसिंहानहेषकृतवःसुदानवः ॥ २७ ॥ अग्निरस्मिजन्मनाजातवेदाघतमेचक्षुरमृतमऽआसन् । अर्कस्त्रिधातुर
ऽअनवभ्ररधसोगंतरोयज्ञंविदथैषधीराः ॥ त्रिभिःपवित्रैरपुषोर्ध्वं कृहदामतिज्योतिरनुग्रजानन् । वर्षिषुरलमकृतस्व
जसोविमानोजस्रोघुमोहविरस्मिनाम ॥ शतधारमुत्समक्षीयमाणंविपश्चितं पितरंवक्तवानां । मेळिमदंतं पित्रोरुपस्थेतरं
धाभिरादिह्यावापृथिवीपर्यपश्यत् ॥ २८ ॥ (३।२।१५) प्रवोवार्जाऽअभिर्घवोहविष्मतोघृताच्या । देवान्निजागतिमुन्नयुः+ ॥
(३।२।१४) वैश्वानरमिति नवर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविद्यामित्रःआद्यानांतिष्ठणंवैश्वानरोमित्रश्चतुर्थ्यदितिष्ठणामरुतःसप्तम्यष्टम्योरात्मा
अंलायाऽपाभ्यायःआद्याःषट्जगलोल्यास्तिस्त्रिष्टुभः । (३।२।१५) प्रवोवाजाइतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविद्यामित्रोमिःआद्याया

॥ ७ ॥

मंडलं ३

अनु. २

ईळेऽअग्निविपश्चित्गिरायज्ञस्यसार्धनं । श्रुष्टीवानधितावनं ॥ अग्नेशुकेमतेवयंयमदेवस्यवाजिनः । अतिद्वेषांसित
 रेम ॥ समिध्यमानोऽअध्वरेऽग्निःपावकऽईड्यः । शोचिर्केशस्तमीमहे ॥ पृथुपाजाऽअमर्त्योघृतनिर्णिक्रस्वाहुतः ।
 अग्निर्ज्ञस्यहव्यवाद् ॥ २८ ॥ तंसबाधोयतस्तृचऽइत्थाधियायज्ञवतः । आचक्रुरग्निमतये ॥ होतदेवोऽअमर्त्यः
 पुरस्तादेतिमायया । विदथानिप्रचोदयन् ॥ वाजीवाजेषुधीयतेध्वरेषुप्रणीयते । विप्रोयज्ञस्यसार्धनः ॥ धियाचक्रैव
 रेण्योभतानांगर्भमादधे । दक्षस्यपितरंतना ॥ नित्वादधेवरैण्युदक्षस्येळासहस्कृत । अग्नेसुदीतिमुशिजं ॥ २९ ॥
 अग्निंयतुरमसुरमतस्ययोगेवनुषः । विप्रावाजैःसमिधते ॥ ऊर्जोनर्पातमध्वरेदीदिवांसमुपद्यवि । अग्निमीळेकविक्रं
 तुं ॥ ईळेन्योनमस्यस्तिरस्तमांसिदशतः । समग्निरिध्यतेवृषा ॥ वृषोऽअग्निःसमिध्यतेभ्वोनदेववाहनः । तंहविर्भत
 ऽईळते ॥ वृषणंत्वावयंवृषन्वृषणःसमिधीमहि । अग्नेदीद्यंतवृहत् ॥ ३० ॥ (३।२।१६) अग्नेजुषस्वनोहृविःपुरो
 ळाशजातवेदः । प्रातःसावोर्धियावसो ॥ पुरोळाऽअग्नेपचतस्तुभ्यवाघापरिष्कृतः । तंजुषस्वयविष्ठ्य ॥ अग्नेवीहिपु
 रोळाशमाहुतंतितरोऽअह्वं । सहसःसूनुरस्यध्वरेहितः ॥ माध्यदिनेसर्वनेजातवेदःपुरोळाशमिहकवेजुषस्व । अग्नेय
 ह्वस्यतवभागधेयंनप्रमिनंतिविदथेषुधीराः ॥ अग्नेतृतीयेसर्वनेहिकानिपःपुरोळाशंसहसःसुनवाहुतं । अथादेवेव्वध्वरं
 कतवोवागायत्री । (३।२।१६) अग्नेजुषस्वतिपद्वचस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोभिर्गायत्रीवृतीयोष्णिक्चतुर्थोत्रिष्टुपंचमीजगती ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. १

॥ ८ ॥

विपन्ययाधारलेवंतममृतैषु जागृवि ॥ अग्नेवृधानऽआहुतिपुरोळाशं जातवेदः । जुषस्वतिरोऽअह्वं ॥ ३१ ॥ (३।२।१७)
अस्तीदमधिमथनमस्तिप्रजननं कृतं । एतां विष्पत्नीमाभराग्निमथामपूर्वथा ॥ अरण्योर्निहितोजातवैद्वागर्भेऽइव सुधि
तोगर्भिणीषु । द्विवेदवऽईड्यो जागवद्भिर्विष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः + ॥ उत्तानायामवभराचिकित्वान्सद्यः प्रवीता
वृषणं जजान । अरुषस्तू पोरुशदस्य पाजऽइळायास्पुत्रो वयुने जनिष्ट ॥ इळायास्त्वापदेवयं नाभो पृथिव्याऽअधि । जा
तवेदो निधीमह्यग्नेह्वयाय वोह्वे ॥ मथतानरः कविमद्वयं तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकं । यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्तादग्निं नरो ज
नयता सुशेवं ॥ ३२ ॥ यद्रीमंथंति बाहुभिर्विरोचते श्वो न वाज्यरूपो वनेष्वा । चित्रो नयामन्नाश्विनो रनिवृतः परिवृण
त्स्य इमं नुस्तृणादहन् ॥ जातोऽअग्नीरोचते चोक्तानो वाजीविप्रः कविशस्तः सुदारुः । यंदेवासऽईड्यं विश्वविदहव्यवा
हमदधुरध्वरेषु ॥ सीदहोतः स्वऽउलोको चिकित्वान्सादयायज्ञं सुकृतस्य योनौ । देवावीद्वान्हुविषाय जास्यग्नेवृहद्यज
मानेव योधाः ॥ कुणोर्तधमं वृषणं सखायो संधंतऽइत न वाजमच्छ । अयमग्निः पृतनाषादसुवीरो येन देवासोऽअसंहंत
दस्यन् ॥ अयं ते योनिर्ऋत्विग्यो यतो जातोऽअरोचथाः । तं जानन्नग्नेऽआसीदार्थानो वर्धया गिरः ॥ ३३ ॥ तनूनयो

(३।२।१७) अस्तीदमिति वोळशर्चस्य सूक्तस्य गायित्रीविश्वामित्रोभिबिहृष्ट (पंचम्याकृत्विजोवा) आद्यचतुर्थीदशमीद्वादशयोनुष्टु
भः षष्ठ्येकादशीपंचदशयोजगत्स्यः ।

मंडलं ३

अनु. २

॥ ८ ॥

दुच्यतेगर्भेऽआसुरो नरांशसौ भवति यद्भिजायते । मातरि श्वायदभिमीतमातरि वातस्य सर्गोऽअभवत्सरीमणि ॥ सुनि-
 र्मथानिर्मथितः सुनिधानिहितः कविः । अग्नेस्वध्वराकृणु देवान् देवयतेयज ॥ अजीजनन्नमृतं मर्त्या सोऽस्त्रे माणतरणिं वी-
 लुर्जभं । दशस्वसरोऽअयुर्वः समीचीः पुमांसं जातमभिसंरंभंते ॥ प्रसप्तहोता स न कादरो च तमातुरुपस्थेयदशौ च दूध-
 नि । न निर्मिषतिसरणो द्विवेदिवेयदसुरस्य जठरादजायत ॥ अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद्वि-
 दुः । द्युम्नवद्ब्रह्मकुशिकासऽएरिरेऽएकऽएको दमेऽअग्निं समीधिरे ॥ यदुद्यत्वा प्रयति युजेऽअस्मिन्होतश्चिकित्त्वोर्चणी-
 महीह । भ्रुवर्मया भ्रुवमुताशमिष्ठाः प्रजानन्विद्धोऽउरपयाहि सोमं ॥ ३४ ॥ ॥ इति तृतीयाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

तृतीयाष्टके सूक्तानि १२२ ऋचः १२०९

सप्तदशाध्याये वर्गाः ३४ सूक्तानि २३ ऋचः १७६ ॥ त्याग ॥ अग्नय इदं ११ यूपयेदं ५ यूपेर्म्यं ५ त्रश्चनाय १ अग्नय.
 २७ इंद्राग्निम्या. ९ अग्नय. ४२ विश्वेभ्यो देवेभ्य अग्नय ३ विश्वेभ्यो देवेभ्य. अग्नय ८ पुरीषेभ्योऽग्निम्य. अग्नय. १४ अग्नीद्राम्यामि.
 अग्नय वैश्वानरायाम्नय. ३ मरुद्भ्योऽग्निम्य ३ आत्मन. २ उपाध्यायाये अग्नय ३७ ॥ इति तृतीयप्रथमः ॥ १ ॥ (१ आदित्यारुद्रा-
 इत्यास्याष्टम्या विश्वे देवता ।)

इच्छंति ह्यधिकैर्द्रशासत्कुशिको विश्वामित्र एव वा श्रुतो रेंद्र सोमं न्यूना प्रपर्वतानां स सोना संवादो न दीभिर्विश्वामित्रस्योत्तितीर्षोस्तत्र न दीवाक्यं चतुर्थं षष्ठ्यष्टमी दशम्यः षष्ठी सप्तम्योस्त्विन्द्रस्तुतिरित्यानुष्टुबिन्द्रः पूरिभेदेकादशतिष्ठतिः सवैश्वामित्रो वाच्यो वाद्वा वातौ नवैकोपीन्द्रमतिर्नव ॥ १ ॥

॥ हरिः ओम् ॥ (३।३।१) इच्छंति त्वा सोम्यासः सखायः सन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि । तिति क्षतेऽअभिशांस्तिजनां नाभिं द्रुत्व दाकश्च न हि प्रकृतः⁺ ॥ न ते दरे परमाचिन्द्रजां स्यातु प्रयाहि हरि वो हरिभ्यां । स्थिराय वृष्णे सर्वनाकृते मायुकाश्रवाणः समिधानेऽअग्नौ⁺ ॥ इन्द्रः सुशिप्रो मधवातरुत्रो महाव्रातस्तु विकर्मिर्गधावान् । यदुग्रो धावाधि तोमर्थे षुक्कं^१ त्याते वृषभवीर्याणि ॥ त्वंहिष्माच्यावयुञ्ज्युता न्येको वृत्राचरसि जिघ्रमानः । तव द्यावापृथिवी पर्वता सोऽनुव्रता यनिमिते वतस्थुः ॥ उता भये पुरुहूतश्रवो भिरेको हृद्धमवदो वृत्रहासन् । इमे चिदिन्द्रो दसीऽअपारे यत्संगभणामधवन्काशिरिते ॥ १ ॥ प्रसूनेऽइन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्रतेवज्रः प्रमणञ्जैतुशन्नू । जहि प्रतीचोऽअनचः पराचो विश्वसृत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ यस्यै धायुरदधाम त्यायाभक्तं चिज्रजते गृह्यं^१ सुसः । भद्रातेऽइन्द्र सुमतिर्घताची सहस्रदाना पुरुहूतरातिः⁺ ॥ (३।३।१) इच्छंति त्वेति द्वाविंशत्युच्यत्सूक्तस्य गाथिनो विश्वामित्र इन्द्रश्चिष्टुप् ।

सहर्दानुपुरुहृतक्षिपतमहस्तामिद्रुसंपिणकुणारं । अभिवृत्रवर्धमानंपियारुमपादमिद्रतवसाजघंथ ॥ निसा
मनामिपिरामिद्रभूमिमहीमपारांसदेनससत्थ । अस्तग्नाह्यावृपभोऽअंतरिक्षमपुन्त्वापुस्वयेहप्रसूताः ॥ अलातणो
बलऽइंद्रव्रजोगोःपुराहृतोर्भयमानोव्यार । सुगान्पथोऽअकृणोन्निरजेगाःप्रावन्वाणीःपुरुहृतंघमंतीः ॥ २ ॥
एकोद्वेवसुमतीसमीचीऽइंद्रऽआपमौपृथिवीमतघां । उतांतरिक्षादभिनःसमीकऽइपोरथीसयुजःशूरवाजान् ॥ दि
शःसूर्योनर्मिनातिप्रदिष्टादिवेदिवेहयैश्वप्रसूताः । संयदानळध्वनऽआदिदधैर्विभोचनंकृणुतेतत्त्वस्य ॥ दिदक्षंतऽउ
पसोयामन्नकोर्विवस्वत्यामहिचित्रमनीकं । विश्वेजानंतिमहिनायदागादिद्रस्यकर्मसुकृतापूरुणि ॥ महिज्योतिर्निहि
तंवक्षणास्वामापकंचरतिचित्रतीगौः । विश्वस्वाद्वासंभृतमस्त्रियांयत्सीमिद्रोऽअदधाद्भोजनाय ॥ इंद्रदह्यामको
शाऽअभूवन्युजायशिक्षगृणतेसखिभ्यः । दुर्मायवोदुरेवामर्त्यासोनिपुणिणोरिपवोहंत्वासः ॥ ३ ॥ संघोपःशृण्वेवमैर
मित्रैर्जहीन्येष्वशानितपिष्ठां । बृश्चेमधस्ताद्विरुजासहस्वजहिरक्षोमघवन्नंघयस्व ॥ उद्धुरक्षःसहमूलमिद्रवृश्चामभ्यंप्र
त्यग्रशृणीहि । आकीर्वतःसल्लूकंचकथन्नह्याद्विपेतपुपिंहितमस्य ॥ स्वस्तयेवाजिभिश्चप्रणेतःसंयन्महीरिपऽआसत्सि
पूर्वीः । रायोवंतारोबृहृतःस्यामासेऽअस्तुभगऽइंद्रप्रजावान् ॥ आनोभरभगमिद्रद्युमतंनितेदुष्णस्यधीमहिप्रेके ।
ऊर्वऽइवप्रथेकामोऽअस्मेतमापृणवसुपतेवसूनां ॥ इमंकाममंदयागोभिरश्वैश्चंद्रवतारार्धसापप्रथश्च । स्वयवौमति

ऋक्सं.

अ. ३ अ. २

॥ १० ॥

मंडलं ३

अनु. ३

॥ १० ॥

भिस्तुभ्यंविप्राऽइंद्रायवाहःकुशिकासौऽअक्रन् ॥ आनोगोत्रादहहिगोपतेगाःसमुस्मभ्यंसनययंतुवार्जाः । दिवक्षाऽ
असिष्टपभसत्यशुष्मोस्मभ्यंसुर्मधवन्बोधिगोदाः+ ॥ शुनहुवेममधवान्मिद्रमस्मिन्भरेवृतमंवाजसातौ । शृण्वंतमुग्रम्
तथैसमत्सुमंतं वृत्राणिसंजितंधनानां ॥ ४ ॥ (३।३।२) शासद्वहिदुहितुर्नह्यंगाद्विद्वोऽऽकृतस्यदीधितिसपर्यन् ।
पितायत्रदुहितुःसेकमंजन्तंसंशुभ्येनमनसादधन्वे+ ॥ नजामयेतान्वोरिक्थमारैक्चकार्गर्भसनिनुनिधानं । यदी
मातरोजनयंतुवाहिमन्यःकृतसुकुतोऽन्यऽक्रुधन्+ ॥ अभिजैत्रीरसचतस्पृधानंमहिज्योतिस्तमसोनिर्जानन् । यदी
भोमह्याजातमेषामहीप्रवृद्धयैश्चस्ययुज्ञैः+ ॥ अभिजैत्रीरसचतस्पृधानंमहिज्योतिस्तमसोनिर्जानन् । यदी
त्युदायज्ञपासःपतिर्गवामभवदेकऽइंद्रः ॥ वीळौसतीरभिधीराऽअतृदन्याचाहिन्यमनसासविप्राः । तंजानुतीःप्र
न्यथ्यामृतस्यप्रजानञ्जितानमसाविवेश ॥ ५ ॥ विदद्यदीसुरमारुणमद्रेमहिपार्थःपूर्वसृज्यकः । अग्रनयत्सपद्यक्षरा
णामच्छारचंप्रथमाजानुतीगात् ॥ अगच्छदुविप्रतमःसखीयन्नसूदयत्सुकृतेगर्भमाद्रिः । ससानमर्योयुर्वभिर्भस्वन्नथा
भवदंगिराःसद्योऽअर्चन् ॥ सतःसतःप्रतिमानंपुरोभूविश्ववेदुजनिमाहंतिशुष्णं । प्रणोदिवःपदुवीर्गव्युर्वन्तस्खास
खीऽरमुंचन्निरवृधात्+ ॥ निर्गव्यतामनसासेदुरकैःकृण्वानासौऽअमृतत्वार्यगातुं । इदंचिन्नसदंनभ्यैर्पायेनमासौऽ
(३।३।२) शासद्वहिरितिद्वाविंशत्यृचस्यसूक्तस्यैषीराथिःकुशिकइंद्रस्त्रिष्टुप् ।

असिपासन्नतेन ॥ संप्रत्यमानाऽअमदश्चभिस्वंपयःप्रबलस्यरेतसोदुर्घनाः । विरोदसीऽअतपद्धोषऽएषांजातेनिष्ठाम
 ददुर्गोषुवीरान् ॥ ६ ॥ सजातेभिर्वृत्रहासेदुहृद्वैरुदुखियाऽअसृजदिद्रौऽअकैः । उरुच्यस्मैधृतवद्भरतीमधुस्वाद्वा
 दुदुहृजेन्यागौः ॥ पित्रेचिच्छक्रुःसदनुंसमसैमहित्वयीमत्सुकृतोविहिल्यन् । विष्कभ्रंतःस्कभनेनाजनित्रीऽआसी
 नाऽऊर्ध्वरभंसविभिन्वन् ॥ महीयदिधिषणाशिश्नयेधात्सद्योवृधैविभ्वैरोदस्योः । गिरोयस्मिन्ननवद्याःसमीचीवि
 श्वाऽइद्रायतविषीरनुत्ताः ॥ मह्यातैसख्यंवंशिमशुकीरावृद्धेनियुतौयतिपर्वीः । महिस्तोत्रमवऽआगन्मसरेरुसाकंसुमे
 घवन्वोधिगोपाः ॥ महिक्षेत्रपुरुथंद्रंविविद्वानादित्सोखभ्यश्चरथंसमैरत् । इंद्रोवृभिरजनदीद्यानःसाकंसूर्यमषसंगा
 तुमग्निं ॥ ७ ॥ अपाश्चिदेपविभ्योऽइर्मूनाःप्रसध्रीचीरसृजद्विश्चश्चद्राः । मध्वःपुनानाःकविभिःपवित्रैद्युभिर्हिन्वंत्य
 कुभिर्धनुत्रीः ॥ अनुकृष्णेवसुधितीजिहातेऽउभेसूर्यस्यमंहनायजत्रे । परियत्तैमहिमानंवृजद्यैसखायऽइंद्रकाम्याऽ
 ऋजिष्याः ॥ पतिर्भववृत्रहन्त्सनुतानांगिराविश्वार्यवृषभोवयोधाः । आनोर्गहिसख्येभिःशिवेभिर्महान्महीभिरू
 तिभिःसरण्यन् ॥ तमैगिरस्वन्नमसासपर्यन्नव्यंकृणोमिसन्यसेपुराजां । दुह्रोवियाहिवहुलाऽअदेवीःस्वश्चनोमघव
 न्त्सातयेधाः ॥ मिहःपावुकाःप्रतताऽअभूवन्त्स्वस्तिनःपिष्टहिपारमासां । इंद्रत्वंरथिरःपाहिनोरिषोमक्षमक्षकृणहि
 गोजितोनः ॥ अर्देदिष्टवृत्रहागोपतिर्गाऽअंतःकृष्णोऽअरुवैर्धर्मभिर्गात् । प्रसूततादिशमानऽकृतेनदुरश्चविश्वोऽअ

वृणोदपुस्वाः+ ॥ शुनहुवेममघवानमिदं० ॥ ८ ॥ (३।३।३) इन्द्रसोमसोमपतेपिवेममाध्यंदिनसर्वनंचारुयते ।
 प्रमुथ्याशिप्रेमघवन्नृजीषिन्विमुच्यहरीऽइहमादयस्व ॥ गवाशिरंमंथिनमिन्द्रशुकंपिवासोमरिमातेमदाय ।
 तामारुतेनागणेनसजोषारुद्रैस्तपदावृषस्व ॥ येतेशुष्मयेताविषीमवर्धेन्नर्धैतइन्द्रमरुतस्तऽओजः । माध्यंदिनेसर्वनेव
 अहस्तापिवारुद्रेभिःसर्गणःसुशिप्र ॥ तऽइहवस्यमधुमद्विप्रुऽइन्द्रस्यशर्धोमरुतोयऽआसन् । येभिर्वृत्रस्येषितोविवेदा
 मर्मणोमन्यमानस्यमर्म ॥ मनुष्वादिद्रुसर्वनंजुषाणःपिवासोमंशश्वतेवीर्योय । सऽआववृत्स्वहयश्वयज्ञैःसंरण्याभिर्पोऽ
 अर्णोसिसर्षि ॥ ९ ॥ त्वमपोयद्धवृत्रंजघन्वोऽअत्याऽइवप्रासृजःसर्तुवाजौ । शयानमिन्द्रचरतावेनवत्रिवांसंपरिदु
 वीरदेवं ॥ यजामऽइन्नमसावृद्धमिदंवृहतेमष्वमजरंयुवानं । यस्यप्रियेममतुर्यज्ञिर्यस्यनरोदसीमहिमानंममाते ॥ इं
 द्रस्यकर्मसुकृतापुरूणिव्रतानिदेवानमिनंतिविश्वे । द्वाधारयःपृथिवीद्यामतेमांजजानसूर्यमृषसंसंसाः ॥ अद्रौघसत्यं
 तवतन्महित्वंसद्योयज्जातोऽअपिवोहसोमं । नद्यावऽइन्द्रतवसस्तऽओजोनाहानमार्साःशरदोवरत ॥ त्वंसद्योऽअपि
 वोजातऽइन्द्रमदायसोमंपरमेव्योमन् । यद्धद्यावापृथिवीऽआविवेशीरथाभवःपर्व्यःकारुधायाः ॥ १० ॥ अहन्नाहिप
 रिशयानमर्णऽओजायमानंनुविजाततव्यान् । नर्तेमहित्वमनुभूदधद्यौर्यदुन्ययास्फियाइक्षामवस्थाः ॥ यज्ञोहितंऽ
 (३।३।३) इन्द्रसोममितिसतदशर्वस्यसूक्तस्यगाधिनोविश्वामित्रइन्द्रब्रिहस्प ।

इन्द्रवर्धनोभूदुतप्रियःसुतसोमोमियेधः । यज्ञेनयज्ञमवयज्ञियःसन्त्यज्ञस्तेवज्रमहिहृत्यऽथावत् ॥ यज्ञेनद्रमवसाचक्रेऽ
 अवर्गैर्नसन्नायनव्यसेववृत्तां । यःस्तोमेभिर्वावृधेपुर्व्योभियोर्मध्यमेभिरुतनूतनेभिः ॥ विवेपयन्माधिपणाज्जानस्ता
 वैपरापायादिद्रुमहः । अंहसोयत्रपीपरद्यथानोनावेवयांतमभयेहवन्ते ॥ आपूर्णोऽअस्यकलशःस्वाहासेकैवकोशंसिसि
 चेपिवधै । समुप्रियाऽआववृत्रन्मदायप्रदक्षिणिदुभिसोमासऽइंद्रं ॥ नत्वागभीरःपुरुहूतसिंधुर्नाद्रयःपरिपंतोवरंत ।
 इत्थासखिभ्यऽइषितोयदिद्राहृहंचिदरुजोभव्यमर्व ॥ शुनंहुवेम० ॥ ११ ॥ (३।३।४) प्रपर्वतानामुशुतीऽउप
 स्थादभ्वेऽइवविषितेहासमाने । गावेवशुभ्रेमातररिह्णविपाट्छुतुद्रीपर्यसाजवेते ॥ इंद्रेपितेप्रसवंभिक्षमाणेऽअ
 च्छासमद्रंरथैवयाथः । समाराणेऽऊर्मिभिःपिन्वमानेऽअन्यावामन्यामथेतिशुभ्रे ॥ अच्छासिंधुमातुतमामयासं
 विपाशमूर्वासुभर्गामगन्म । वत्समिवमातरांसरिह्णसेमानंयोनिमनुसंचरंती ॥ एनावयंपर्यसापिन्वमानाऽअनूयो
 निंदेवकृतंचरंतीः । नवर्तयेप्रसवःसर्गतक्तःकिंयुर्विप्रोन्नद्योजोहवीति ॥ रमध्वमेवचसेसोम्यायऽऊक्तावरीरुपमुहते
 मेवैः । प्रसिंधूमच्छाबृहतीर्माणीषावस्युरहेकुशिकस्यसूनुः+ ॥ १२ ॥ इन्द्रोऽअस्माऽअरदुद्रज्रबाहुरपाहन्वृत्रंपरिधि

(३।३।४) प्रपर्वतानामितित्रयोदशर्चस्यसूक्त्यगाधिनोविश्वामित्रःचतुर्थीषष्ठ्यष्टमीदशमीनानदीकृषकानद्योदेवताःएनावयमेतद्वच
 आतेकारोरितिस्तिस्पर्णाविश्वामित्रोदेवताइन्द्रोअस्मानितिद्वयोर्दिद्रब्धिपुंव्यानुष्टुप् ।

नदीनां । देवोनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवेयामऽर्वाः+ ॥ एतद्वचो जरितमार्गिमुष्टाऽआयत्ते घोषानुत्तरायुगानि । एव्येषु
 विवर्ज्येण परिषदौ जघानायन्नापोयनमिच्छमानाः ॥ ओषुस्वसारः कार्वे शृणोतययौ वौ दुरादनसारथेन । निषूनमध्वं भव
 कारोप्रतिनोजुपस्मानो निकः पुरुषत्रानमस्ते ॥ आते कारो शृणवामावचो सिययाथ दुरादनसारथेन । नितेन सैपी
 तासुपराऽअधोऽअक्षाः सिधवः स्रोत्याभिः ॥ १३ ॥ यदुंगत्वा भरताः संतरेयुर्गव्यन्यामऽइपितऽइद्रजूलः । अर्षादह्य
 प्यानेवयोषामर्ययेवकन्याश्वचैते ॥ १४ ॥ अतरिषुर्भरतागव्यवः समभक्तविप्रः सुमतिनदीनां । अर्षादह्य
 सवः सर्गेतक्तऽआवोवृणे सुमतिं यज्ञियानां ॥ उद्वऽऊर्मिः शम्याहुं त्वापो योक्त्राणि मुंचत । मादुं कृतौ व्येन साश्रयौ शूनमा
 तीः सुराधाऽआवक्षणाः पणध्वं यातशीभं ॥ उद्वऽऊर्मिः शम्याहुं त्वापो योक्त्राणि मुंचत । मादुं कृतौ व्येन साश्रयौ शूनमा
 रतां ॥ १४ ॥ (३।३।५) इन्द्रः पूर्भिदातिरुद्रासमकैर्विदद्वसुदधमानो विशन्नू । बर्हाजूलस्तन्वावावृधानोभूरिदात्र
 ऽआपृणद्रोदसीऽउभे+ ॥ मुखस्य ते तविपस्य प्रजतिमिर्यमिवाचमृताय भूषन् । इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्रमायिनाममिनाद्वर्षणीतिः । अहन्व्यं समशध्वनेष्वविधेनांऽअकृ
 नामतपूर्वयावां ॥ इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्रमायिनाममिनाद्वर्षणीतिः । अहन्व्यं समशध्वनेष्वविधेनांऽअकृ
 णोद्राम्यणां ॥ इन्द्रः स्वर्षाजिनयन्नहानिजिगायोशिग्भिः पृतनाऽअभिष्टिः । प्रारोचयन्मनवेके तुमह्णामाविद्वज्योतिवृ
 (३।३।५) इन्द्रः पूर्भिरत्येकादशं स्यूक्तस्य गाथिनो विश्वामित्र इन्द्रस्त्रिष्टुप् ।

हुतेरणांय ॥ इन्द्रस्तुजोवर्हणाऽआविवेशनवदधानोनर्यापूरुणि । अचैतयद्धिर्यऽइमार्जरित्रेमेमवर्णमतिरच्छक्रमासा
 ॥ १५ ॥ महोमहानिपनयंत्यस्यैद्रस्यकर्मसुहृतापूरुणि । वृजनेनवृजिनान्संपिपेपमायाभिर्दस्यूरभिभूत्योजाः ॥ य
 धद्रौमहावरिवश्चकारदेवेभ्यः सत्पतिश्चरणिप्राः । विवस्वतःसर्दनेऽअस्यतानिविप्रोऽउक्थेभिः कवयोगृणंति ॥ सत्रा
 साहंवरेण्यंसहोदांससुवांसंस्वरपश्चदेवीः । ससानयःपृथिवीद्यामतेमामिंद्रमदंत्यनुधीरणासः ॥ ससानात्याऽउत्तसूय
 ससानेद्रःससानपुरुभोजसंगां । हिरण्ययमतभोगंससानहृत्वीदस्यन्यार्यवर्णमावत् ॥ इन्द्रोऽओषधीरसनोदहानिवन
 स्यतीरसनोदुतरिक्षं । विभेदवलंनुदेविवाचोथाभवदमिताभिक्तूनां ॥ श्रुनंहुवेम० ॥ १६ ॥ (३।३।६) तिष्ठा
 हरीरथऽआयुज्यमानायाहिवायुर्ननियुतोनोऽअच्छ । पिवास्थधोऽअभिसृष्टोऽअस्मेऽइन्द्रस्वाहारिमातेमदाय ॥ उपो
 जिरापुरुरुहूतायसस्त्रीहरीरथस्यध्रुव्यायुनज्मि । द्रवद्यथासंभृतंविश्वतश्चिदुपेभ्यज्ञमावहातऽइंद्र ॥ उपोनयस्ववृषणा
 तपूष्पोतेमवत्ववृषभस्वधावः । असेतामन्धविमुचेहशोणादिवेदेवेसदृशीरद्धिधानाः ॥ ब्रह्मणातेब्रह्मयुजायुनज्मि
 हरीसखायासधमादऽआशू । स्थिरंधसखभिद्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वोऽउपयाहिंसोमं ॥ मातेहरीवृषणावीतपृष्ठानि
 रीरमन्यजमानासोऽअन्ये । अत्यायाहिशश्वतोवयंतेरंसुतेभिः कृणवामसोमैः ॥ १७ ॥ तवायंसोमस्त्वमेह्यवाङ्शश्व

(३।३।६) तिष्ठाहरीदलेकादशर्चस्यसूक्तस्यगायिनोवश्चा।मंत्रइन्द्रक्षिप्रुप् ।

ऋक्सं-

अ. ३ अ. २

॥ १३ ॥

मंडलं ३

अनु. ३

॥ १३ ॥

तमसुमनाऽअस्यपाहि । अस्मिन्यश्वेर्बहिष्यानिषद्यादधिष्वेमंजतरऽइदमिन्द्र ॥ स्त्रीणैर्वेबहिः सुतऽइद्रसोमः कृताधाना
ऽअत्तवेतेहरिभ्यां । तदोक्तसेपुरुशकायवृणोमरुत्वतेतुभ्यराताहवींषि ॥ इमंनरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिद्रुगोभिर्मधु
मंतमकन । तस्यागत्यासुमनाऽऋग्वपाहिप्रजानन्विद्रान्पथ्या इ अनुस्वाः+ ॥ यौऽआभजोमरुतऽइद्रसोमेयेत्वामवध
न्नभवन्गणस्ते । तेभिरेतसजोषावावशानो इ मेः पिवजिह्वयासोममिन्द्र ॥ इन्द्रपिवस्वधयाचित्सुतस्याग्नेर्वोपाहिजिह्वया
यजत्र । अध्वर्योर्वप्रयतंशक्रहस्ताहोतुर्वायुं शंहविषो जुषस्व ॥ शूनंहुवेम० ॥ १८ ॥ (३।३।७) इमामभुप्रभृतिंसा
तयेधाः शश्वच्छश्वदूतिभिर्यादमानः । सुतेसुतेवावृधेवर्धनेभिर्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतोभूत्+ ॥ इन्द्रायसोमाः प्रदिवो
विदानाऽऋभुर्येभिर्वृषपर्वविहायाः । प्रयम्यमानान्प्रतिपृग्भायेंद्रपिववृषधूतस्यवृष्णः ॥ पिवावर्धस्वतवधासुतास
ऽइद्रसोमासः प्रथमाऽउतेमे । यथार्पिवः पूव्याऽइद्रसोमाऽएवापहिपन्योऽअद्यानवीयान् ॥ महोऽअमत्रोवृजनेविर
पश्युऽग्रंशर्वः पत्यतेधृष्णवोर्जः । नाहविव्याचपृथिवीचनैन्यतोमासोऽहर्ध्वममंदन् ॥ महोऽउग्रोवावृधेवीयायसमा
चार्पः समुद्रंरथ्येवजगमुः ॥ अर्तश्चिदिन्द्रः सदर्सोवरीयान्यद्रींसोमः पूणतिदुग्धोऽअंशुः+ ॥ १९ ॥ प्रयत्सिधंवः प्रसंवयथाय
(३।३।७) इमामूष्वित्येकादशर्चस्यसूक्तसगाथिनोविश्वामित्रद्रोदशम्याआगिरसोधोरदंद्रंक्षिपुर् । समुद्रेणसिंधवोयादमानाऽ

इन्द्रायसोमं सुषुतं भरंतः । अंशुर्दुहंति हस्तिनो भरिर्त्रैमध्वः पुनर्तिधारयापवित्रैः ॥ हृदाऽइव कक्षयः सोमधानाः समीवि
 व्याचसवनापूरुणि । अन्नायदिन्द्रः प्रथमाव्याशवुत्रं जघन्वोऽअवृणीत सोमं ॥ आतूर्भरमाकिरेतत्परिष्ठाद्विद्याहित्वा
 वसुपतिं वसूनां । इन्द्रयत्ते माहि नंदत्रमस्त्यसभ्यं तर्ज्यैश्वर्यं धि ॥ अस्मे प्रययि धिमघवन्नृजीषिभिर्द्रायायो विश्ववारस्य भूरेः ।
 अस्मे शतं शरदौ जीवसैधाऽअस्मेऽवीरान्छश्वतऽइन्द्रशिप्रिन् ॥ शुनं हुवेम० ॥ २० ॥ (३।३।८) वार्त्रहत्यायश्च वसेपुं
 तनायाह्वाय च । इन्द्रत्वावर्तयामसि ॥ अर्वाचीनं सुतेमनंऽउत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्रकृण्वंतु वाघतः ॥ नामनि ते शतक्र
 तो विश्वाभिर्गीभिरीमहे । इन्द्राभिमातिषाहो ॥ पुरुष्टुतस्य धामभिः शूतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥ इन्द्रवृत्रा
 यंहंत वे पुरुहूतमुपबुवे । भर्षुवार्जसातये ॥ २१ ॥ वाजेषु सासहिर्भवत्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्रवृत्राय हंतवे ॥ द्युम्नेषु
 पृतनाज्यैऽपुत्सु तूर्पश्रवः सुच । इन्द्रसाक्ष्वाभिर्मातिषु ॥ शुष्मिन्तं मेनऽऊतयैद्युम्निर्पाहि जागृविं । इन्द्रसोमं शतक्रतो ॥
 इन्द्रियाणि शतक्रतो याते जनैषु पंचसु । इन्द्रतानि तऽआवृणे ॥ अर्गन्निन्द्रश्रवो बह्व्युन्नंदधिष्वदुष्टरं । उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥
 अर्वावतो नऽआगृह्यथो शक्रपरावतः । उलोको यस्तैऽअद्रिवऽइन्द्रहततऽआगृहि ॥ २२ ॥ (३।३।९) अभितष्टे वदी

(३।३।८) वार्त्रहत्यायेत्येकादशर्चस्य सूक्तस्य गायितो विश्वाभिर्त्रैमध्वेन्द्रो गायत्री अंशुर्दुह ॥ (३।३।९) अमितेष्टे वेति दशर्चस्य सूक्तस्य
 वैश्वामित्रः प्रजापतिर्दिद्विष्टुप् (वाच्यः प्रजापतिर्वो विश्वाभिर्त्रोवा) ।

नकुसं.

अ. ३ अ. २

। १४ ॥

धयामनीषामत्योनवाजीसुधुरोजिहानः । अभिप्रियाणिममृशत्पराणिकुवीडरिच्छासि ॥ सुसुमंघाः ॥ इनोतपृच्छ
जनिमाकवीनामनोघृतःसुकृतस्तक्षतृधां । इमाऽर्पनेप्रण्योऽवर्धमानानोवाताऽअधनुधर्मणिगमन् ॥ निषीमिदत्रगु
ह्यादधानाऽउत्तक्षत्रायरोदसीसमंजन् । समात्राभिर्मिरेयेमुहूर्वीऽअंतर्महीसमृतेधायसेधुः ॥ आतिष्ठतंपरिविध्वेऽ
अभूपन्थियोवसानश्चरतिस्वरोचिः । महत्तद्वृणोऽअसुरस्यनामाविश्वधीभिःक्षत्रंराजानाप्रदिवोदधाथे ॥ अर्धतपूर्वोवृषभोज्या
यानिमाऽअस्यशुरुधःसंतिपूर्वाः । दिवोनपाताविदर्थस्यधीभिःक्षत्रंराजानाप्रदिवोदधाथे ॥ २३ ॥ त्रीणिराजाना
विदथैपुरुणिपरिविश्वानिभूषथःसदांसि । अपश्यमत्रमनसाजगन्वान्त्रतेगंधर्वाऽअपिवायुर्केशान् ॥ तदिश्वस्यवृषभ
स्यधेनोरानामभिर्मिरेसकस्यंगोः । अन्यदन्यदस्युर्ववसानानिमायिनोममिरूपमस्मिन् ॥ तदिश्वस्यसवितुर्नकिं
मैहिरण्यथीममतियामशिअत्र । आसुष्टुतीरोदसीविश्वमिन्वेऽअपीवयोषाजनमानिवब्रे ॥ युवंप्रलस्यसाधथोमहोय
इदंमतिहृदऽआवच्यमानाच्छापतिस्तोमतष्टाजिगति । याजार्गविर्विदथैशस्यमानेद्रुयत्तेजायतेविद्धितस्य ॥ दिव
श्चिदाप्युवायमानुविजार्गविर्विदथैशस्यमाना । भद्रावस्त्राण्यर्जुनावसानासेयमसेसनजापित्र्याधीः ॥ यमाचि
(३।४।१) इदंमतिरितिनवचस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रइन्द्रबिष्टुप् ।

मंडलं ३

अनु. ४

॥ १४ ॥

दत्रयमसूरसूतजिह्वायाऽअग्रपतदाह्यथात् । वपूषिजातामिथुनासचेततमोहनातपुषुबुधऽएता ॥ नकिरेषानिंदिता
मत्येषयेऽअस्माकंपितरोगोषुयोधाः । इद्रऽएपां ह्रितामाहिनावानुहोत्राणिससृजेदंसनावान् ॥ सखाह्यत्रसखिभिर्न
वगैरभिज्ञासत्वभिर्गाऽअनुगमन् । सत्यतदिन्द्रोदशभिर्दशगैःसूर्यविवेदुतमसिस्त्रियंतं ॥ २५ ॥ इन्द्रोमधसंभृतमस्त्रिया
यांपृद्धिवेदशफवन्नमेगोः । गुहाहितगुह्यगुह्यमप्सुहस्तैर्दधेदक्षिणेदक्षिणावान् ॥ ज्योतिर्वृणीततमसोविज्ञानज्ञारेस्या
मदुरितादुभीकै । इमागिरःसोमपाःसोमवृद्धजुषस्वैद्रपुरुतमस्यकारोः⁺ ॥ ज्योतिर्यज्ञायरोदसीऽअनुष्यादुरेस्यामदु
रितस्यभूरेः । भूरिचिच्छिचुजतोमत्यस्यसुप्रारसौवसवोवर्हणावत् ॥ शूनं० ॥ २६ ॥ इति तृतीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अष्टादशाध्याये वर्गः २६ सूक्तानि १० ऋचः १३७ ॥ त्यागः ॥ इन्द्रायेदं. ६१ नदीम्य. ३ विश्वामित्रा. नदीम्य. इन्द्राये. २
विश्वामित्राये. नदीम्य. विश्वामित्राये. नदीम्य. ३ इन्द्राये. ६३ ॥ तृतीये द्वितीयः ॥ २ ॥

इंद्रत्वागायत्रं ह्यातून उपन आयाह्यष्टावयंते पंचवार्हतत्वा मद्र्युधमस्य मरुत्वान्त्सद्यो हंशं सामहामिन्द्रः स्वाहा च वर्षणी धृतं
द्वादशांघ्रां त्यौतौ चौ जागत गायत्रौ धाना वंत मष्टौ पूर्वा र्ध गायत्रं षष्ठी जगती द्रापर्वता चतुर्विंशति राद्यै द्रापावर्ती पंचदश्या
दि द्वे वाचे ससर्पयै च तस्रो रथा गस्तु तयौ त्या अभिशा पार्था स्ता वसिष्ठे पिण्यो न वसिष्ठाः शृण्वंति दशमी षोडशौ जगत्या
त्रयोदशी गायत्री द्वादशी विंशती द्वाविंशत्यो नुष्टुभौ ष्टादशी वृहती मंमहे द्याधिकोऽक्रगोत्रः प्रजापतिर्हि वैश्वदेवं होषसः ॥ १ ॥

॥ हरिःओम् ॥ (३।४।२) इंद्रत्वावृषभं वयं सुते सोमो हवामहे । सपाहिमध्वोऽअंधसः ॥ इंद्रं क्रतुविदं सुतं सोमं
 हर्यपुरुषुत । पिबावृषस्वतावृषिं ॥ इंद्रप्रणो धिता वानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिरस्त्वानविश्यते ॥ इंद्रसोमाः सुताऽ
 इमे तव प्रयं तिस्रपते । क्षयं चंद्रासुऽइंदवः ॥ दुधिष्वाजठरे सुतं सोमं मिद्रवरेण्यं । तव द्युक्षासुऽइंदवः ॥ १ ॥ निर्वेणः
 पाहिर्नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इंद्रत्वादातमिद्यशः ॥ अभिद्युम्नानि वनिनऽइंद्रं सचंतेऽअक्षिता । पीत्वी सोमस्य वा
 वृधे ॥ अर्वावर्तोनऽअर्गहिपरावर्तश्च वृत्रहन् । इमा जुषस्वनो गिरः ॥ यदंतरापरावर्तमर्वावर्तं च हूयसे । इंद्रे हततऽ
 आर्गहि ॥ २ ॥ (३।४।३) आतूनं इंद्रमद्व्यग्धुवानः सोमपीतये । हरिभ्यां याह्याद्विवः ॥ सत्तो होतानऽऋत्विर्यस्ति
 स्तिरे बर्हिर्ननुषक् । अयुज्रन्प्रातरद्रयः ॥ इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियंतऽआबर्हिः सीद । वीहिशूरपुरोळाशं ॥ रारं धिस
 वनेषुणऽएषु स्तोमेषु वृत्रहन् । उक्थेष्विद्रगिर्वेणः ॥ मतयः सोमपामुरं रिहंति शर्वसस्पतिं । इंद्रं वत्सं नमातरः ॥ ३ ॥
 समंदस्वाह्यं सोराधं सेतुन्वामहे । नस्तोतारं निदेकरः ॥ वयमिंद्रत्वाय वोहूविष्मं तोजरा महे । उत त्वमस्मयुर्वसो ॥
 मारेऽअस्मद्विमुचो हरिं प्रियावाड्याहि । इंद्रं स्वधावो मत्सेवह ॥ अर्वाचंत्वासुखे रथे वहतामिंद्रकेशिना । घृतस्त्वबू
 नु

(३।४।२) इंद्रत्वेति नवर्चस्य सूक्तस्य गाथिनो विश्वामित्रद्रो गायत्री । (३।४।३) आतूनं इंद्रेति नवर्चस्य सूक्तस्य गाथिनो विश्वामित्र
 इंद्रो गायत्री ।

हिरासदे ॥ ४ ॥ (३।४।४) उपनःसुतमागहिसोममिन्द्रगवाशिरं । हरिभ्यांयस्तेऽअस्मयुः⁺ ॥ तमिन्द्रमदुभागहिव
 हिंघांयावभिःसुतं । कुविश्वस्यतृणवः ॥ इन्द्रमिथागिरोममाच्छोगुरिपिताऽइतः । आवृतेसोमपीतये ॥ इन्द्रसोमं
 स्यपीतयेस्तोमैरिहहवामहे । उक्थेभिःकुविद्रागमत् ॥ इन्द्रसोमाःसुताऽइमेतान्दधिष्वशतकतो । जुठरेवाजिनीवसो
 ॥ ५ ॥ विद्मार्हत्वाधनंजयवाजेषुदधृषकवे । अधातेसुन्नमीमहे ॥ इममिन्द्रगवाशिरंयवाशिरंचनःपिव । आगत्यावृ
 षभिःसुतं⁺ ॥ तुभ्येदिन्द्रस्वऽओक्वेइसोमचोदामिपीतये । एषारंजुतेहृदि⁺ ॥ त्वांसुतस्यपीतयेप्रबामिन्द्रहवामहे ।
 कुशिकासौऽअवस्यवः ॥ ६ ॥ (३।४।५) आयाह्यर्वाङ्मुपवंधुरेष्टास्तवेदनुप्रदिवःसोमयेयं । प्रियासखायाविमचोष
 बर्हिस्त्वामिमेहव्यवाहोहवंते ॥ आयाहिपर्वीरतिचर्षणीरोऽअर्थऽआशिषऽउपनोहरिभ्यां । इमार्हत्वामतिभिर्जोहवीमिघ
 द्वाऽइन्द्रहवैतेसख्यंजुषाणाः⁺ ॥ आनोयज्ञंनमोवृधंसजोपाऽइन्द्रदेवहरिभिर्योहितूयं । अंहर्हत्वामतिभिर्जोहवीमिघ
 तप्रथाःसधमादेमधूनां ॥ आचत्वामेतावृषणावहातोहरीसखायासुधुरास्वंगा । धानावदिन्द्रःसर्वनंजुषाणःसखास
 ख्युःश्रृणवद्वंदनानि ॥ कुविन्मागोपांकरसेजनस्यकुविद्राजनंमघवन्नृजीपिन । कुविन्मऽऽक्रयिपिपांसंसुतस्यकुविन्मे
 वस्वोऽअमृतस्याशिक्षाः ॥ आत्वाबृहतोहरयोयुजानाऽअर्वागिन्द्रसधमादेवहंतु । प्रयेद्वितादिवऽक्रंजंत्याताःसुसंमृ
 (३।४।४) उपनइतिनवर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रद्रोगायत्री । (३।४।५) आयाह्यर्वाङ्मुख्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रद्रंजिष्ठपु ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ३

॥ १६ ॥

द्यासोवृषभस्यमराः+ ॥ इन्द्रपिवृषधृतस्यवृष्णाऽआयतेत्येनऽउशतेजभारं । यस्यमदेच्यावयसिप्रकृष्टीर्यस्यमदेऽअप
गोत्राववर्थ ॥ शुनंहुवेम० ॥ ५ ॥ (३।४।६) अयंतेऽअस्तुहयतःसोमऽआहरीभिःसुतः । जुषाणऽइन्द्रहरिभिर्नऽ
आगृह्यातिष्ठहरितरथं ॥ हयंनुषसमर्चयःसूर्यहयवरोचयः । विद्रोश्चक्रित्वान्हयंश्ववर्धसऽइन्द्रविश्वऽअभिश्चियः ॥
द्यामिन्द्रोहरिधायसंपृथिवीहरिवर्षसं । अधारयद्धरितोर्ध्वरिभोजनंययोरंतहरिश्चरत् ॥ इन्द्रोहयतमजुनंवज्रशुकैरभीवृतं ॥
तिरोचनं । हयंश्वोहरितंधत्तऽआयुधमावज्रबाहोर्हर्ष ॥ (३।४।७) आमंद्रैरिन्द्रहरिभिर्याहिमधूररोमभिः । अपावृणोद्धरिभिरिन्द्रै
भिःसुतमुत्ताहरिभिराजत ॥ ८ ॥ (३।४।७) वृत्रखादोवलंरुजःपूरादुर्मोऽअपामजः । स्यातारथस्यहयोरिभस्वरऽइन्द्रोहृह्वाविदारुजः+ ॥
शिनोतिधन्वेवृत्तोऽइहि ॥ वृत्रखादोवलंरुजःपूरादुर्मोऽअपामजः । स्यातारथस्यहयोरिभस्वरऽइन्द्रोहृह्वाविदारुजः+ ॥
गंभीरोऽउर्ध्वोऽरिवक्रतुं पुष्यसिगाऽइव । प्रसुगोपायवसंधेनवायथाहृदकुल्याऽइवाशत ॥ आनस्तुजंरयिभरांशंनम्र
तिजानुते । वृक्षंपकंफलमंकीवधूनुर्हीदंसंपारण्वसु ॥ स्वयुरिन्द्रस्वराळसिस्माद्विष्टिःस्वर्यशस्तरः । सर्वावृधानऽओज
सापुरुष्टुतभर्वाःसुश्रवस्तमः ॥ ९ ॥ (३।४।८) युध्मस्यतेवृषभस्यस्वरजऽउग्रस्ययूनःस्थविरस्यघृष्वैः । अजूर्यतो
(३।४।६) अयंतइतिपंचर्वस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रइन्द्रोबृहती । (३।४।७) आमंद्रैरितिपंचर्वस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्र
इन्द्रोबृहती । (३।४।८) युध्मस्यतइतिपंचर्वस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रइन्द्रोबृहती । (३।४।७) आमंद्रैरितिपंचर्वस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्र

॥ १६ ॥

मंडलं ३

अनु. ४

वज्रिणोर्वीर्याङ्गीन्द्रश्रुतस्यमहूतोमहानि ॥ महोऽअसिमहिषवृष्ण्यैर्भिर्धनस्पृदुग्रसहमानोऽअन्यान् । एकोविश्वस्यभु
 वनस्यराजासयोधयाचक्षययाचजनान् ॥ प्रमात्राभीरिरिचरोचमानःप्रदेवेर्भिर्विश्वतोऽअप्रतीतः । प्रमज्मनोदिवऽ
 इन्द्रःपृथिव्याःप्रोरोर्महोऽअंतरिक्षाहजीपी+ ॥ उरुणभीरंजनुषाभ्युग्रंविश्वव्यचसमवतर्मतीनां । इन्द्रसोमासःप्रदिवि
 सुतासःसमुद्रंनस्रवत्तुऽआविशति ॥ यंसोममिन्द्रपृथिवीद्यावाग्भनमाताविभूतस्त्वाया । ततैहिन्वतितमुतेमृजंत्यध्व
 र्यवोवृषभपातवाऽर्च ॥ १० ॥ (३।४।९) मरुत्वोऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमपिबवृत्रहारूरविद्वान् । जहिशत्रूरपमृधौनुद
 ध्वऽऊर्मित्वंराजासिप्रदिवःसुतानां ॥ उतऽऽक्रतुर्भिक्रतुपाःपाहिसोममिन्द्रदेवेभिःसखिभिःसुतनः । योऽआभजोमरुतोयेत्वा
 स्वाथाभयंकृणुहिविश्वतोऽनः ॥ उतऽऽक्रतुर्भिक्रतुपाःपाहिसोममिन्द्रदेवेभिःसखिभिःसुतनः । योऽआभजोमरुतोयेत्वा
 न्वहन्वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः ॥ यत्वाहिहृत्यैमघवृत्रवर्धन्येशावरेहरिवोयेगविद्यौ । यत्वाननमनमदतिविप्राःपिबेद्रसो
 मंसगणोमरुद्भिः ॥ मरुत्वतंवृषभंवावृधानमकवारिदिव्यंशासमिद्रं । विश्वासाहमवसेनूतनायोग्रंसहोदामिहतंहुवेम
 ॥ ११ ॥ (३।४।१०) सद्योहजातोवृषभःकुनीनुःप्रभर्तुमावदंधसःसुतस्य । साधोःपिबप्रतिकामंयथतिरसांशिरःप्रथ
 मंसोम्यस्य ॥ यज्जायथास्तदहरस्यकामेशोःपीयूषमपिवोगिरिष्ठां । ततैमातापरियोषाजनित्रीमहःपितुर्दमऽआसिचद

(३।४।९) मरुत्वोऽइतिपंचसूक्तस्यगाथिनोविधामित्रइन्द्रबिष्टुप् । (३।४।१०) सद्योहजातइतिपंचसूक्तस्यगाथिनो

अत्रे ॥ उपस्थायमातरमन्नमैदृतिगममपश्यदुभिसोममूधः । प्रयावयन्नचरद्भृत्सोऽअन्यान्महानिचक्रेपुरुधप्रतीकः ॥ ७-
 अस्तुराषाळभिर्भूत्योजायथावशंतन्वंचक्रऽएषः । त्वष्टारमिद्रेजनुषाभिर्भूयामुष्यासोममपिवच्चमूधे ॥ शुनंहुवेम०
 ॥ १२ ॥ (३।४।११) शंसामहामिदंयस्मिन्विश्वऽआकृष्टयःसोमपाःकाममव्यन् । शंसकतुंघिषणेविश्वतष्टघनंवृ
 त्ताणोजनयंतदेवाः+ ॥ यंनुनकिःप्रतनासुस्वरार्जद्वितातरतिवृत्तमंहरिष्ठां । इनतमःसत्त्वभिर्योहिशूषैःपृथुज्जयाऽअमि
 नादायुर्दस्योः ॥ सहावापत्सुतरणिर्नावीव्यानुशीरोदसीमेहनावान् । भगोनकारेहव्योमतीनांपितेवचारुःसुहवोवयो
 धाः+ ॥ धृतादिवोरजसस्पष्टऽऊर्ध्वोरथोनवायुर्वसुभिर्नियुत्वान् । क्षपांवस्तार्जनितासूर्यस्यविभकाभागंघिषणेववा
 जै ॥ शुनंहुवेम० ॥ १३ ॥ (३।४।१२) इंद्रःस्वाहापिवतुयस्यसोमऽआगत्यातुसौवृषभोमरुत्वान् । ओरुव्यचाः
 पृणतामेभिरन्नैरास्यहृविस्तन्वः१कर्ममृध्याः ॥ आतेसपर्युजवसेयुनज्मिययोरनुप्रदिवःश्रष्टिमावः । इहत्वाधेयुर्हर
 यःसुशिप्रपिवात्व१स्यसुषुतस्यचारोः ॥ गोभिमिमिधुंदधिरसुपारमिदंज्यैष्ठ्यायुधायसेगुणानाः । मंदानःसोमैपपिवा
 ऽऋजीषिन्समस्मभ्यपुरुधागाऽइषण्य ॥ इमंकर्ममंदयागोभिरन्वैश्वद्रवताराधसापप्रथश्च । स्वयवोमतिभिस्तुभ्यंवि
 विद्यामित्रइंद्रखिष्टुप् । (३।४।११) शंसामहामितिपंचर्वस्यसूक्तस्यगाथिनोविद्यामित्रइंद्रखिष्टुप् । (३।४।१२) इंद्रःस्वाहेति
 पंचर्वस्यसूक्तस्यगाथिनोविद्यामित्रइंद्रखिष्टुप् ।

प्राऽइंद्राव्याहःकुशिकासोऽअक्रन् ॥ शुनंहुवेम० ॥ १४ ॥ (३।४।१३) च॒र्वणी॒धृतं॑म॒घवान॑म॒क्वथ्य॑मिंद्र॒गिरो॑बु
 ह॒तीर॒भ्यनू॑त । वा॒वृ॒धानं॑पु॒रुहू॑तं॒सुबु॑किभिर॒मर्त्य॑ज॒रमाणं॑दि॒वे ॥ श॒त॒क्र॒तुम॑र्ण॒वशा॑कि॒नंन॑र॒गिरो॑मऽइंद्र॒मुप॑यंति
 वि॒श्वतः॑ । वा॒ज॒स॒र्निपू॑भिर्दुं॒तूणि॑म॒सुरै॑धाम॒साच॑म॒भिषा॑च॒स्ववि॑द ॥ आ॒क॒रेव॑सोर्ज॒रिता॑प॒नस्य॑ते॒नेह॑सः॒स्तुभ॑ऽइंद्रो॒दुव
 स्य॑ति । वि॒वस्व॑तःस॒दन्ऽआ॑हिर्पि॒प्रिये॑स॒त्रासा॑हंम॒भिमा॑ति॒हनं॑स्तुहि ॥ न॒णा॒मु॒त्वानृ॑तंमं॒गीभि॑रु॒क्थैर॑भि॒प्रवी॑र॒मर्च॑ता॒स
 बा॑धः । संस॒ह॑से॒पुरु॑मा॒योर्ज॑हीते॒नमो॑ऽअस्य॒प्रदि॑वऽए॒कऽई॒शे ॥ प॒र्वीर॑स्यनि॒ष्पिधो॑म॒त्येषु॑रु॒वसू॑निपृ॒थिवी॑वि॒भर्ति॑ ।
 इं॒द्राय॑द्याव॒ऽओष॑धी॒रुता॑पो॒रथि॑र॒क्षंति॑जी॒रयो॑वनानि ॥ १५ ॥ तु॒भ्यं॒ब्रह्मा॑णि॒गिरं॑इंद्र॒तुभ्य॑स॒त्राद॑धि॒रह॑रि॒वोज॑षस्व ।
 वो॒ध्याइ॑ पिर॒वसो॑नृ॒तन॑स्य॒सखै॑वसो॒ज॒रितु॑भ्योव॒योधाः॑ ॥ इं॒द्रम॑रुत्वऽइ॒हपा॑हि॒सोमं॑यथा॒शार्य॑तेऽअ॒पिबः॑स॒तस्य॑ । तव॒प्र
 णी॑ती॒तव॑शूर॒शर्म॑न्ना॒विवा॑सं॒तिक॑वयः॒सुय॑ज्ञाः⁺ ॥ स॒र्वाव॑शानऽइ॒हपा॑हि॒सोमं॑रु॒द्भिर्द्रु॑स॒खिभिः॑सु॒तनः॑ । जा॒तंय॑त्त्वा
 प॒रिदे॑वाऽअ॒भूष॑न्महे॒भरा॑यपु॒रुहू॑तवि॒श्वे ॥ अ॒मृत्यै॑मरुतऽआ॒पिरे॑षोमं॒दुन्नि॑द्रम॒नुदा॑ति॒वाराः॑ । ते॒भिःसा॑कं॒पिब॑तुवृ॒त्रखा
 दःसु॑तं॒सोमं॑दा॒शुषः॑स्वे॒सध॑स्यै ॥ इ॒दं ह्य॒न्यो॒जसा॑सु॒तरा॑धानांप॒ते । पि॒बात्व॑मृ॒त्य॒र्गि॒वणः॑ ॥ य॒स्तेऽअ॒नु॒स्वधा॑म॒सत्सु॑तेनि

(३।४।१३) च॒र्वणी॒धृत॑मि॒ति॒द्वा॒दश॑र्च॒स्यसू॑रु॒सगा॑थि॒नोवि॑धा॒मित्र॑द्र॒क्षिपु॑आ॒द्यास्ति॒स्रोज॑गलःअं॒त्यास्ति॒स्रोगा॑यज्यः ।

यच्छतन्वं । सत्त्वाममत्तुसोम्यं ॥ प्रतेऽअश्रोतुकुक्षयोः प्रद्वज्जहणाशिरः । प्रबाहूशरार्धसे ॥ १६ ॥ (३।४।१४)
 धानावतंकरंभिणमपपवंतमक्थिनं । इन्द्रप्रातर्जुषस्वनः ॥ पुरोळाशंपचत्यंजुषस्वेन्द्रागुरस्वच । तुभ्यंहव्यानिस्सिद्धते ॥
 पुरोळाशंचनोघसोजोषयासिगिरंश्चनः । वधुशूरिवयोपणां ॥ पुरोळाशंसनश्रुतप्रातःसावेजुषस्वनः । इन्द्रक्रतुहितेबृह
 नः ॥ माध्यंदिनस्यसर्वनस्यधानाः पुरोळाशमिन्द्रकृष्वेहचारं । प्रयत्तोताजरितातूण्यथोवृषायमाणऽउपगीभिरीह
 ॥ १७ ॥ तृतीयैधानाःसर्वनेपुरुष्टुतपुरोळाशमाहुतमामहस्वनः । अपूपमद्भिसर्गणोमुरुद्भिःसोमंपिववृत्रहाशरविद्वान् ॥ प्र
 तिधानाभरततूयमस्मैपुरोळाशवीरतमायनूणां । द्विवेदिवेसदृशीरेन्द्रतुभ्यंवर्धेतुत्वासोमपेयायधृष्णो ॥ १८ ॥
 (३।४।१५) इन्द्रापर्वताबृहदारथेनवामीरिषऽआवहतंसुवीराः । वीतंहव्यान्यध्वरेबुदेवावर्धेथांगीभिरिळयामदता ॥
 तिष्ठासुकमघवन्मापरगाःसोमस्यनुत्वासुतस्ययक्षि । पितुर्नपुत्रःसिचमारभेतऽइन्द्रस्वादिक्षयागिराशचीवः ॥ शंसो
 (३।४।१४) धानावतमित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यगार्थिनोविद्याभिन्नइन्द्रस्त्रिष्टुप्प्राद्याश्चतस्रोगायत्र्यःषष्ठीजगती । (३।४।१५) इन्द्रापर्वते
 तिचतुर्विंशत्यचस्यसूक्तस्यगार्थिनोविद्याभिन्नक्रपिरिन्द्रोदेवताप्राद्याइन्द्रापर्वतोपचदद्यादिद्वयोःससर्परीवाकृततश्चतस्रणारंथांगानित्रिष्टुप्
 शमीषोळइयोजगलौद्वादशीद्विविंशेयुष्टुमःत्रयोदशीगायत्रीअष्टादशीबृहती ।

वाध्वयोर्प्रतिमेगृणीहीद्रायवाहः कृणवावजुष्टं । एदं वहिर्जमानस्यसीदाथाचभूदुक्थमिद्रायशस्तं ॥ जायेदस्तमघव-
 न्त्सेदुयोनस्तदिच्चायुक्काहरयोवहतु । यदाकदाचसुनवामसोममग्निद्वादूतो धन्वात्यच्छं ॥ परयाहिमघवन्नाचयाही-
 द्रन्नातरुभयत्रातेऽर्थे । यत्रारथस्यबृहतोनिधानंविमोचनंवाजिनोरासमस्य ॥ १९ ॥ अपाःसोममस्तमिद्रुप्रयाहि-
 कल्याणीर्जायासुरणंहेतै । यत्रारथस्यबृहतोनिधानंविमोचनंवाजिनोदक्षिणावत् ॥ इमेभोजाऽअंगिरसोविरूपाद्रि-
 वस्पुत्रासोऽअसुरस्यवीराः । विश्वामित्रायुददतोमघानिसहस्रसावेप्रतिरंतुऽआयुः ॥ रूपंरूपमघवाचोभवतीतिमायाः
 कृण्वानस्तन्वं१परिस्वां । त्रिर्यद्विवःपरिमुहूर्तमागात्स्वैर्भैरनृतुपाऽऽकृतावा ॥ महोऽऽक्रुषिर्देवजादेवजतोस्तन्नात्सिंधु-
 मर्णवंनृचक्षाः । विश्वामित्रोयदवहत्सुदासमाग्रियायतकुशिकेभिर्द्रः ॥ हुंसाऽईवकृणुथश्लोकमद्रिभिर्मदंतोगीभिर-
 ध्वरेसुतेसचा । देवेभिर्विप्राऽऽऽपयोनृचक्षसोविपिवध्वंकुशिकाःसोम्यमधु ॥ २० ॥ उपप्रतंकुशिकाश्चेतयध्वमध्वरा-
 येप्रमुचतासुदासः । राजावृत्रंजघनत्सागपागुदुगथायजातेवरऽआपृथिव्याः ॥ यऽइमेरोदसीऽऽभेऽअहमिद्रुमतुष्ट-
 वं । विश्वामित्रस्यरक्षतिब्रह्मेदंभारतंजनं ॥ विश्वामित्राऽअरासतब्रह्मेद्रायवृजिणे । कर्द्विन्नःसुरार्धसः ॥ कितैकृण्वं-
 तिकीर्कटेपुगावोनाशिरदुहेनतंपतिघर्म । अनोभ्रप्रमंगदस्यवेदेनैचाशाखंमघवंत्रंधयानः ॥ ससर्परीरमंतित्रार्धमा-
 नाबृहन्मिमायजमदग्निदत्ता । आसूर्यस्यदुहितातंतानश्रवोदेवज्वमतमजुर्थं ॥ २१ ॥ ससर्परीरंभरत्तयमेभ्योधि-

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ३

॥ १९ ॥

अवःपांचजन्यासुक्कृष्टिषु । सापक्ष्याइ नव्यमायुर्दधानायांमैपलस्तिजमदुशयोदुः ॥ स्थिरौगावौभवतांवीलुरक्षोमेषा
विर्वहिमायुगंविशारि । इंद्रःपातुत्यैददतांशरीतोररिष्टनेमऽअभिनःसचस्व ॥ बलं धेहितनुषुनोवलमिद्वानुलुत्सुनः ।
वीळितवीळयस्वमायामादुस्मादवजीहिपोनः ॥ अयमस्मान्वनस्यतिर्माचहामाचरीरिपत् । स्वस्त्यागेहेभ्यऽआवसाऽ
आविमोचनात् ॥ २२ ॥ इंद्रोतिभिर्वहुलाभिर्नोऽअद्ययाच्छृष्टाभिर्मघवन्धूरजिन्व । योनोद्वेष्ट्यर्धरःसस्यदीष्ट्यमुद्धि
ष्मस्तमुप्राणोजहातु ॥ परशुचिदितपतिंशिवलंचिद्विष्टश्चति । उखाचिदिद्वयेषतीप्रयस्ताफेनमस्यति ॥ नसायकस्यचि
कितेजनासोलोधंनयंतिपशुमन्यमानाः । नार्वाजिनवाजिनाहासयंतिनगर्दभंपुरोऽअर्वाञ्जयंति ॥ इमऽइन्द्रभरतस्य
पुत्राऽअपपित्वांचिकितुर्नप्रपित्वं । हिन्यंत्यश्वमरणंनित्यंज्यावाजंपरिणयंत्याजौ+ ॥ २३ ॥ (३।५।१) इमंमहेविद्वत्था
यशपंशश्वत्कुत्वऽइड्यायुग्रजंभ्रुः । शृणोतुनोदम्यैभिरनीकैःशृणोत्वमिद्वित्यैरजस्रः ॥ महिमहेद्विवेऽअर्चापृथिव्यैका
(३।५।१) इमंमहइतिद्वाविशत्यचस्यसूक्तस्यवैद्यामित्रःप्रजापतिर्विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् । (सूक्तभेदप्रयोगपक्षेदेवताः क्रमेण—अग्निः १
विश्वेदेवाः २ द्यावापृथिवी १ विश्वे. १ सूर्यद्यावापृथिव्यः १ द्यावापृथिवी २ द्यौः १ विश्वेदेवाः १ सविता १ विश्वे. २ विष्णुः
१ इंद्रः १ अधिनौ १ विश्वेदेवाः ५ अग्निः १ एवं २२ ॥ उत्तरसूक्तेअखिलाअपिविश्वेदेवाः) ।

मंडलं ३

अनु. ५

॥ १९ ॥

मोमऽइच्छन्चरतिप्रज्ञानम् । यथोर्हस्तोभेविदथेषुदेवाःसपर्यवोमादयंतसचायोः⁺ ॥ युवोर्ऋतरोदसीसत्यमस्तुमहेषुणः
 सुवितायुप्रभूतं । इदंदिवेनमोऽअग्नेपृथिव्यैसपर्यामिप्रयसायामिरत्नं ॥ उतोहिवांपृथ्व्याऽआविद्रिऽऋतावरीरोदसी
 सत्यवाचः । नरश्चिद्वांसमिथेश्वरसातौववदिरपृथिविविविदानाः ॥ कोऽअद्भवेदुक्ऽइहप्रवोचद्देवोऽअच्छापथ्याइ
 कासमेति । दहंश्रऽएषामवमासदांसिपरेपृथागुह्येषुव्रतेषु ॥ २४ ॥ कविर्नचक्षाऽअभिषीमचष्टऽऋतस्ययोनौविधृते
 मदती । नानाचक्रातेसदनंयथावेःसमानेनऋतुनासंविदाने⁺ ॥ समान्यावियुतेदूरेऽअतेध्रुवेपदेतस्थतुर्जांगरूके । उ
 तस्वसारायुवतीभवतीऽआदुब्रुवातेमिथुनानिनामं ॥ विश्वेदेतेजनिमांसंविचिकोमहोदेवान्विचरतीनव्यथेते । एजे
 ऋवंपत्यतेविश्वमेकंचरत्पतत्रिविषुणंविजातं⁺ ॥ सनापुराणमध्येग्यारान्महःपितुर्जनिर्तुर्जामितन्नः । देवासोयत्रपनि
 तारऽएवैरुरौपथिव्युतेतस्थुरंतः⁺ ॥ इमंस्तोभंरोदसीप्रब्रवीम्यदूदराःशृणवन्नग्निजिह्वाः । मित्रःसन्नाजोवरुणोयुवान
 ऽआदित्यासःकवयःपप्रथानाः⁺ ॥ २५ ॥ हिरण्यपाणिःसवितासुजिह्वस्त्रिरादिवोविदथेपत्यमानः । देवेषुचसवितः
 श्लोकमश्रेरादुस्सभ्यमाशुवसर्वतातं ॥ सुकृत्सुपाणिःस्ववोऽऋतावादेवस्त्वष्टावसेतानिनोधात् । पृषण्वंतऽऋभवोमा
 दयध्वमूर्धवाणोऽअध्वरमतष्ट ॥ विद्युद्रथामरुतऽऋष्टिमंतोदिवोमर्याऽऋतर्जाताऽअयासः । सरस्वतीशृणवन्त्य
 न्नियोसोधातारुथिसुहवीरतुरासः ॥ विष्णुस्तोमासःपुरुदुस्समर्काभगस्येवकारिणोयामनिमग्न । उरुक्रमःकंकुहोयस्य

कृक्सं.

अ. ३ अ. ३

॥ २० ॥

पूर्वीर्नर्मधति युवतयोजनित्रीः ॥ इन्द्रो विश्वैर्विद्यैः पत्यमानऽउभेऽआपयौरोदसीमहित्वा । परंदरो वृत्रहा धव्णवेषः
संगृभ्यान्ऽआभराभूरिपथः+ ॥ २६ ॥ नासत्यामे पितरं वंधुपृच्छासजात्यमश्विनोश्चारुनाम । युवं हि स्थोरयिदौ नो
रयीणां दानं रक्षेऽअकवैरदब्धा ॥ अयमाणोऽअदितिर्यज्ञिया सोदब्धानि वरुणस्य ब्रतानि । सर्वऽऽक्रुमुभिः पुरुहूतप्रिये
भिरिमां धियं सा तये तक्षतानः ॥ महत्तदः कवयश्चारुनाम यद्धेवा भवथ विश्वऽइद्रे । युयोतनोऽअनपत्यानि गंतोः
प्रजावाज्ञः पशुमोऽअस्तु गातुः+ ॥ देवानां दूतः पुरुध प्रसूतो नागा न्नो वोचतु सर्वताता । शृणोतु नः प्रथिवी द्यौरुतापः सूर्यो
नक्षत्रैरुर्वृतरिक्षं ॥ शृण्वंतु नो वृषणः पर्वता सोमवक्षेमासऽइळयामदतः । आदित्यैर्नोऽअदितिः शृणोतु यच्छंतु नो म
रुतः शर्मभृदं+ ॥ सदासुगः पितुमोऽअस्तु पंथामध्वा देवाऽओषधीः संपिपृक्त । भगो मेऽअग्ने सख्ये नमृध्याऽउद्रायोऽअ
इयांसदं नंपुरुक्षोः+ ॥ स्वदस्व हव्यासमिपो दिदीह्य सार्धं क्संभिमीहि श्रवांसि । विध्वोऽअग्ने पत्सु तान् जेषि शन्न ह्रावि
श्वासमना दीदिहीनः ॥ २७ ॥ (३।५।२) उपसः पूर्वाऽअधय द्याषुर्महद्विजज्ञेऽअक्षरं पदेगोः । ब्रता देवानां सुपुत्र
भूषन्महदेवानां मसुरत्वमेकं ॥ मोघूणोऽअत्र जुहुरंत देवामापूर्वेऽअग्ने पितरः पदज्ञाः । पुराण्योः सन्नोः केतुरंतमहदे० ॥
विभेऽपुत्रापतयं तिका माः शम्यच्छादीद्ये पुर्व्याणि । सभिं ज्ञेऽअमावृतमिदं देमहदे० ॥ समानो राजा विभृतः पुरुत्रा
(३।५।२) उपस इति द्वाविंशत्युचस्य सूक्तस्य वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ।

॥ २० ॥

मंडलं ३

अनु. ५

शये शयासु प्रयुतो वनानु । अन्यावत्संभरति क्षेति मातामहहे ॥ आक्षिपूवस्वपराऽअनरुत्सद्योजातासुतरुणीष्वंतः ।
 अंतर्वतीः सुवतेऽअप्रवीतामहहे ॥ २८ ॥ शयुः परस्तादधनुर्द्विमातावधनश्चरति वत्सऽएकः । मित्रस्य तावरुणस्य ब्र-
 तानिमहहे ॥ द्विमाताहोताविदथेषु सद्याळन्वभ्रंचरति क्षेति वृध्नः । प्रणयानिरण्यवाचोभरतेमहहे ॥ शूरस्येव यु-
 ध्यतोऽअंतमस्य प्रतीचीनंददशे विश्वमायत् । अंतर्मतिश्चरति निष्पिधं गोर्महहे ॥ निर्वेति पलितो दूतऽआस्वतर्महो
 श्ररतिरोचनेन । वपूषि विचंद्रभि नो विचष्टेमहहे ॥ विष्णुर्गोपाः परं मपति पाथः प्रिया धामान्यमृतादर्धानः । अग्नि-
 प्राविश्वामुर्वनानि वेदमहहे ॥ २९ ॥ नानाचक्रातेयम्या इव पूषितयोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत् । इयावीचयदरुपी च-
 स्वसारौ महहे ॥ माताचयत्रदुहिताचधेनूस्वदुर्धेधापयैते समीची । ऋतस्य ते सदर्सीळेऽअंतर्महहे ॥ अन्यस्या-
 वत्संरिहृती मिमाय कया भुवानि दधे नुरुधः । ऋतस्य सापर्यसापि न्वतेळां महहे ॥ पद्यावस्ते पुरुरुपावपूष्यध्वान्त-
 स्थौत्र्यविरोरिहाणा । ऋतस्य सद्मविचराभि विद्वान्महहे ॥ पदेऽईव निहिते दुसेऽअंतस्तयोरन्यद्रुह्यमाविरन्यत् ।
 सग्नीचीनापथ्या इ साविषूची महहे ॥ ३० ॥ आधेनवौ धुनयंतामग्निं श्वीः सवर्दुर्धाः शशयाऽअप्रदुग्धाः । नव्या न-
 व्यायुवतयो भवैतीर्महहे ॥ यदुन्या सुवृषभोरोरचीतिसोऽअन्यस्मिन् युथे निधातिरेतः । सहि क्षपावान्सभगः सरा-
 जां महहे ॥ वीरस्य नुस्वर्ध्यजनासः प्रनुवौ चामविदुरस्य देवाः । पौह्यायुक्ताः पंचपंचावहंति महहे ॥ देवस्त्वष्टास

वि॒तावि॒श्वरूपः॑ पु॒षोर्ष॒प्रजाः॑ पु॒रुधा॑ज॒जान । इ॒माच॑वि॒श्वाभु॑व॒नान्य॑स्यम॒हद् ॥ म॒हीस॑मैर॒च्चम्व॑स॒मीची॑ऽउ॒भेते॑ऽअ॒स्य
वसु॑नान्यृ॒ष्टे । श्र॒ण्वेवी॑रोवि॒दमा॑नोवसू॒निम॒हद् ॥ इ॒माच॑नःपृथि॒र्वीवि॒श्वधा॑याऽउ॒पक्षे॑तिहि॒तमि॒त्रो न॑राजा । ए॒क॒
दःश॑र्म॒सदो॑नवी॒राम॒हद् ॥ नि॒ष्पि॒ध्वरी॑स्त॒डोष॑धीरु॒तापो॑रयि॒तऽइ॒न्द्रपृथि॑वीवि॒भर्ति॑ । ए॒क॒
हद् ॥ ३१ ॥ इति॑तृतीयाष्टकेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
ए॒क॒नवि॑शाध्याये वर्गाः ३१ सूक्तानि ०८
रथागे॒म्यः १०

॥
१ इन्द्राय. ४ विश्वान्देवान् ४४ [मे प अग्नय. विश्वेभ्यो देवेभ्यः ९० इंद्रापर्वाभाष्या. १ इंद्राये
विश्वेभ्यो देवेभ्यः. २ द्रवङ् विश्वेभ्यो देवेभ्यः सवित्रइह सिने

नताष्टौप्रमेषद्भेनुर्नवाश्विनमित्रोमंत्रचतुर्गायत्र्यंतमिहेहवःसमार्द्धः
द्रावरुणवाहस्पत्यपौष्णसावित्रसौम्यमैत्रा
पितृमनुष्यान्प्रेक्षन् ॥ ४४ ॥ इति वृत्तीयेतृतीयः ॥ ३ ॥

श्रीविंशतिरक्ष्यतिजगतीधृतिरुपाद्याश्चतस्रोवारुण्यश्चर्वायोमर्त्येष्वारौद्रिकृणुष्वपंचोनाराक्षोघ्न॥१॥

॥ हरिःओम् ॥ (३।५।३) नतामिनंतिमायिनो नधीराव्रतादेवानां प्रथमाध्रुवाणि । नरोदसीऽअदुहवेद्याभिर्न
 पर्वतानि नभैतस्थिवांसः ॥ षड्वारोऽएकोऽअर्चन्विभर्त्यतं वार्षष्टमुपगवऽआगुः । तिस्रो महीरुपरास्तथ्युरत्यागुह्राङ्गे
 निहितेदर्यका ॥ त्रिपाजस्योर्वृषभो विश्वरूपऽउत त्र्यधापुरुधप्रजावान् । त्र्यनीकः पत्यते माहिनावान्त्सरेतो धावृषभः
 शश्वतीनां ॥ अभीकऽआसापदुवीरवो ध्यादित्यानामद्वे चारुनाम । आपश्चिदस्माऽअरमंत देवीः पृथग्रजैतीः परिषीम
 वृंजन् ॥ त्रीषधस्यासिंधवस्त्रिः कवीनाम तत्रिमाता विदथेषु सच्चाद् । ऋतावरीयोषणास्त्रिस्त्रोऽअप्यास्त्रिरादिवो विदथे
 पत्यमानाः ॥ त्रिरादिवः सवितर्वार्याणि द्विदेवऽआसुव त्रिर्नोऽअहः । त्रिधातुरायऽआसुवावसूनि भगत्रातर्धिषणे
 सातथेधाः ॥ त्रिरादिवः सविता सौषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी । आपश्चिदस्यरोदसीचिदुर्वीरक्षं तसवि
 तुः सवार्य ॥ त्रिरुत्तमादूणशरोचनानि त्रयो राजं त्यसुरस्य वीराः । ऋतावानऽइपिरादूळभासस्त्रिरादिवो विदथे संतुडे
 वाः ॥ १ ॥ (३।५।४) प्रमेविविक्कोऽअविदन्मनीपां धेनुं चरतीं प्रयुतामगोपां । सद्यश्चिद्यादुदुहेभूरिधासेरिद्रुस्तदग्निः

(३।५।३) नतामिनंतीत्यष्टर्चसूक्तस्य गाथिनो विश्वामित्रो विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् (भेदपक्षे विभागः क्रमेण — विश्वेदेवाः १ सवत्सरादित्याः
 सिंधवः १ सविता १ विश्वेदेवाः २ एवमष्टौ) । (३।५।४) प्रमेविविक्कानिति पङ्क्त्यसूक्तस्य गाथिनो विश्वामित्रो विश्वेदेवास्त्रिष्टुप्
 (भेदपक्षे विश्वेदेवाः ४ अग्निः २ एवपद) ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ४

॥ २२ ॥

पनि॒तारो॑ऽअस्याः ॥ इ॒न्द्रः सु॒पषा॑वृष॒णासु॑हस्ता॒दिवो॑न॒ग्रीताः॑ श॒शयं॑ दु॒दुहे । वि॒श्वेय॑द॒स्यार॑णय॒तदे॒वाः प्र॒वोत्र॑वसवः सु॒श्रु
म॒दयां ॥ या॒जाम॑यो॒वृष्णो॑ऽइच्छ॒तिश॑क्ति॒नम॑स्य॒तीजा॑नते॒गर्भ॑मस्मिन् । अ॒च्छा॒पत्रं॑ धे॒नवो॑वाव॒शाना॑म॒हश्च॑र॒तिवि॒श्रुतं॑
पू॒षि ॥ अ॒च्छा॒विव॑स्मि॒रोद॑सीसु॒मेके॒ग्रावो॑यु॒जानो॑ऽअ॒ध्वरे॑मनीषा । इ॒माऽउ॒त्तेम॑ने॒वेभ्यो॑र॒वारा॑ऽऊ॒र्ध्वाभ॑वंति॒दर्श॑तं
जा॒त्राः ॥ या॒तेजि॒ह्वा॒मधु॑मतीसु॒म॒धाऽअ॒ग्नेदे॒वेपू॒च्यत॑ऽउ॒रूची । त॒येह॑वि॒श्वोऽअ॒वसे॑य॒जत्रा॑नासा॒दय॑पा॒यया॑चाम॒धूनि ॥
(३।५।५) धे॒नुः प्र॒लस्य॑काम्यं दु॒हना॑तः प॒त्रश्च॑र॒तिदा॑क्षिणायाः । आ॒द्योत॑नि॒वह॑तिशु॒भ्रया॑मोषसः स्तोमो॑ऽअ॒श्विना॑व
जी॒गः ॥ सु॒युग्व॑हंति॒प्रति॑वाम॒तेनो॑र्ध्वाभ॑वंति॒पित॑रे॒वमे॒धाः । ज॒रेथा॑मस्मा॒द्विप॑णे॒मनी॑षांयु॒वोर॑व॒श्चकु॑मा॒यात॑म॒वाक् ॥
सु॒युग्मि॑र॒श्चैः सु॒वृता॑रथेन॒दस्त्रा॑वि॒मंश्र॑णुतं॒श्लोक॑म॒द्रः । कि॒मंग॑वा॒प्रत्य॑वर्त्त॒गमि॑ष्टाहु॒विप्रो॑सोऽअ॒श्विना॑पुरा॒जाः ॥ आ
प॒रुचि॑द॒श्विनार॑जा॒स्यांग॑पोवा॒मघ॑वाना॒जने॑षु । ए॒हया॑त॒पथि॑भिर्दे॒वयानै॑र्द॒स्त्रावि॑मेवा॒निध॑योम॒धूनां ॥ तिरः
कः सु॒खं शि॑वंवा॒युवो॑र्ध॒नरा॑द्रवि॒णज॒ह्वाव्यां । पु॒नः कृ॒ण्वानाः॑ सु॒ख्याशि॒वानि॑म॒ध्वाभ॑दे॒मस॒हस॑मानाः ॥ ३ ॥ पुरा॑णमो
(३।५।५) धे॒नुः प्र॒लस्ये॑ति॒नव॑र्चस्य॒सूक्त॑स्यगा॒थिनो॑वि॒द्यामि॒त्रोश्चि॑नौत्रिष्टुप् ।

॥ २२ ॥

मंडलं ३

अनु. ५

युनायुवंसुदक्षानियुद्धिश्चसजोपसायुवाना । नासत्यातिरोऽअह्वंजुषाणासोमंपिवतमस्त्रिधासुदानू ॥ अश्विनापारि
 वामिपःपुरुचरीर्युर्गीभिर्यतमानाऽअमृधाः । रथोहवामृतजाऽअद्रिजूतःपरिद्यावापृथिवीयातिसद्यः⁺ ॥ अश्विना
 मधुयुत्तमोयुवाकःसोमंसांतामार्गतंदुरोणे । रथोहवाभूरिवर्षःकरिक्तसुतावतोनिष्कृतमार्गमिष्ठः ॥ ४ ॥ (३।५।६)
 मित्रोजनान्यातयतिब्रुवाणोमित्रोदाधारपृथिवीमतृधां । मित्रःकृष्टीरनिमिपाभिचष्टेमित्रार्यहृद्व्यंघृतवज्रुहोत ॥ प्रस
 मित्रमर्तोऽअस्तुप्रयस्वान्यस्तऽआदित्यशिक्षतिव्रतेन । नहन्यतेनजीयतेत्वोतोनैनमंहोऽअश्रोत्यंतितोनदूरात्⁺ ॥
 अनमीवामऽइच्छामदंतोमितर्जवोवर्षमन्नापृथिव्याः । आदित्यस्यव्रतमुपक्षियंतौवयंमित्रस्यसुमतौस्याम ॥ अयं
 मित्रोर्नमस्यःसुशेवोराजासुक्षुन्नोऽअजनिष्टवेधाः । तस्यवयंसुमतौयज्ञियस्यापिभुद्रसौमनसेस्याम ॥ महोऽआदि
 त्योर्नमसोपसद्योयातयज्जनोऽगुणतेसशेवः । तस्माऽएतत्पन्यतमायुजुष्टमग्नौमित्रार्यहृविराजुहोत ॥ ५ ॥ मित्रस्य
 चर्षणीधृतोवोदेवस्यसानसि । द्युमन्त्रिचित्रश्रवस्तमं ॥ अभियोमहिनादिवमित्रोवभूवसप्रथाः । अभिश्रवोभिःपृथि
 वी⁺ ॥ मित्रायपंचयेमिरेजनाऽअभिष्टिशवसे । सदेवान्विश्वान्विभर्ति ॥ मित्रोदेवेष्वायुपजनार्थवृक्तवर्हिषे । इयंऽ

(३।५।६) मित्रोजनानितिनवर्चस्यसूक्तस्यगाथिनोविश्वामित्रोमित्रास्त्रिष्टुप् अस्याश्चतस्रोगायत्र्यः ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ४

॥ २३ ॥

इष्टव्रताऽअकः ॥ ६ ॥ (३।५।७) इहेहवोमनसावंधुतानरऽउशिजो जगुरभितानिवेदसा । याभिर्मायाभिः प्रति
जृतिवर्षसः सौधन्वनायज्ञियं भागमानशः ॥ याभिः शचीभिश्च मसाऽअपिशतययाधियागामरिणीतु चर्मणः । येन ह
रीमनसानिरतक्षतेन देवत्वमृभवः समानशः ॥ इन्द्रसख्यमभवः समानशुर्मनोर्नपतोऽअपसोदधन्विरे । सौधन्व
नासोऽअमृतत्वमेरिरे विद्वीशमीभिः सकृतः सुकृतया ॥ इद्रेण याथसरथं सुते सचाँऽअथोवशानां भवथासहश्रिया । सौधन्व
वः प्रतिमै सुकृतानि वाघतः सौधन्वनाऽऋभवो वीर्याणि च ॥ इन्द्रऽऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममावृष स्वागभं
स्त्योः । धियेषितो मघवन्दाशुषो गेहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वानुभिः ॥ इन्द्रऽऋभुमान्वाजवान्मत्स्वेहनोऽसिन्त्सर्वनेश
च्या पुरुष्टुत । इमानितुभ्यं स्वसराणि ये मिरेव्रता देवानां मनुष्यधर्मैभिः ॥ इन्द्रऽऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निहस्तोर्मजरि
तुरुपयाहियज्ञियं । शतं केतेभिरिषिरेभिरायवै सहस्रणीथोऽअध्वरस्य होमनि ॥ ७ ॥ (३।५।८) उपोवाजेन वाजि
निमचैताः स्तोमं जुषस्व गणतो मघोनि । पुराणी देवियुवतिः पुरंधिरनुव्रतं चरसि सिध्वारे ॥ उपोदेव्यमर्त्या विभाहिचं
द्रं थासु नृताऽईरयती । आत्वा वंहतु सुयमासोऽअश्वारिण्यवर्णा पृथुपाजसो ये ॥ उषः प्रतीची सुवनानि विध्वोर्ध्वानि
(३।५।७) इहेहव इति सप्तर्चस्य सूक्त्यगाधि नो विधा मित्रऋभवः अंत्यानाति स्तृणा मिद्रऋभवो जगती । (३।५।८) उपोवाजेनेति
सप्तर्चस्य सूक्त्यगाधि नो विधा मित्र उपाखिष्टुप् ।

मंडलं ३

अनु. ५

॥ २३ ॥

ष्टस्यमृतस्यकेतुः । समानमर्थचरणीयमानाचक्रमिवनव्यस्यावदुत्सव ॥ अवस्यमेवचिन्वतीमघोन्युपायातिस्वसंरस्य
 पत्नी । स्वर्जनेतीसुभगासुदंसाऽआंताद्विवःपयथऽआपृथिव्याः⁺ ॥ अच्छोवोदेवीमपसंविभातीप्रवोभरध्वनमसा
 सुवृत्तिं । ऊर्ध्वमधुधादिविपाजोऽअश्रेयरोचनारुरुचेरणवसंहक् ॥ क्रुतावरीद्विवोऽअर्कैरवोध्यारेवतीरोदसीचित्रम
 स्यात् । आयुतीमन्नऽवृषसंविभातीवाममेपिद्रविणंभिक्षमाणः ॥ क्रुतस्यवृध्नऽवृषसमिपण्यन्वृषामहीरोदसीऽआविवे
 श । महीमित्रस्यवरुणस्यमायाचंद्रेवभाजुंविदेधेपुरुत्रा⁺ ॥ ८ ॥ (३।५।९) इमाऽर्धवांपुरुतमोरयीयन्ध्वत्तममवसे
 तुज्याऽअभूवन् । कृत्यदिद्रावरुणायशौवायेनस्मासिनंभरथःसखिभ्यः ॥ अयमुवांपुरुतमोरयीयन्ध्वत्तममवसे
 जोहवीति । सजोपाविंद्रावरुणामरुद्धिद्विवापृथिव्याशृणुतंहवमे ॥ अस्मेतदिद्रावरुणावसुज्यादुस्मेरयिर्मरुतःसर्ववी
 रः । अस्मान्वरुन्नीःशरणैरंवत्वस्मान्होत्राभारतीदक्षिणाभिः ॥ बृहस्पतेजुषस्वनोहुव्यानिविश्वदेव्य । रास्वरत्नानि
 द्वाशुपे ॥ शुचिमर्कैर्वृहुस्पतिमध्वरेपुनमस्यत । अनाम्योजऽआचके ॥ ९ ॥ वृषभंर्चयणीनांविश्वरूपमदाभ्यं । बृहु

(३।५।९) इमाउवामित्यष्टादशर्चस्यसूक्तसगाथिनोविश्वामित्रः (अत्युचस्यजमदग्निर्वा) आद्यतिसृणामिंद्रावरुणौचतुर्थ्यादिति
 सृणावृहस्पतिःइयतइत्यादितिसृणांपूपातत्सवितुरित्यादितिसृणासवितासोमइत्यादितिसृणासोमआनइत्यादितिसृणांमित्रावरुणौदेवताः
 आद्यास्तिस्रस्त्रिष्टुभःशिश्टाःपञ्चदशगायत्र्यः ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ४

॥ २४ ॥

स्पतिर्वरेण्यं ॥ इयंते पूषन्नाष्टुणे सुष्टुतिर्देवनव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ॥ तां जुषस्व गिरं मम वाजयंती मवाधियं ।
वधयुरिव योषणां ॥ यो विश्वाभि विपश्यति भुवनानां च पश्यति । स नः पषाविता भुवत् ॥ तत्संविदुर्वरेण्यं भगो देवस्य
धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १० ॥ देवस्य संविदुर्वयं वाजयंतुः पुरंध्या । भगस्य रातिभीमहे ॥ देवनरः स वि
तां विप्राय सैः सुबुक्तिभिः । नमस्यंति धियोषिताः ॥ सोमो जिगाति गतु विदेवानो मेति निष्कृतं । अस्माकमायुर्वधयन्नभिमातीः सहमानः ।
सोमः सधस्यमासदत् ॥ आनो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यं तिमुक्षतं । मध्वारजांसि सुकतू ॥ पृतंसो ममृता वृधा ॥ ११ ॥ (इति वैश्वा
राजथः । द्राघिक्षाभिः शुचित्रता ॥ गणानां जमदग्निना यो नो ब्रुतस्य सीदतं । पृतंसो ममृता वृधा ॥ ११ ॥) (इति वैश्वा
मित्रं तृतीयं मंडलं समाप्तं अत्र सूक्तानि ६२) (४।१।१) त्वां ह्यग्ने सदमि त्समन्यवो देवासो देवमरति न्यैरिरि इति कृतवान्ये
रिरे । अमर्त्यं यजतमर्त्येष्वामा देवं जनत प्रचेतसं विश्वमा देवं जनत प्रचेतसं ॥ सभ्यारं वरुणमग्नेऽर्वावृत्स्व देवां
अच्छा सुमती यज्ञव न संज्येष्ठं यज्ञव न सं । ऋतावानमादित्यं चर्षणी धृतं राजानं चर्षणी धुवं ॥ सखे सखायमभ्यावृत्स्वां शु
वामदेवे चतुर्थे मंडले पंचानुवाकाः (३।१।१) त्वां ह्यग्ने इति विशत्य च सूक्तस्य गौतमो वामदेवो मिद्वितीयादि चतसृणामभिवरुणौ
त्रिष्टुप् आद्यास्ति स्रः क्रमेणाख्यति जगती धृतयः ।

मंडलं ४

अनु- १

॥ २४

नचक्रं रथैर्वरं ह्यासम्यदस्मरं ह्या । अग्नेमृळीकंवरुणसचापिदोमरुत्सुविश्वभानुषु । लोकार्थतुजे शुचानशंकुश्च्युस्म
भ्यंदस्मशंकुधि ॥ त्वनोऽअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेळोर्वयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवह्निर्तमः शोशुचानोविश्वादेपांसिप्र
मुमुग्ध्यसत् ॥ सत्वनोऽअग्नेवमोर्भवतीनेर्दिष्टोऽअस्याऽउपसोन्वुष्टौ । अर्वयश्चनोवरुणरणीवीहिमृळीकंसहवो
नऽएधि ॥ १२ ॥ अस्यश्रेष्ठासुभगस्यसंहदेवस्यचित्रतमामर्त्येषु । शुचिधृतंनत्तममर्थायाः स्पाहर्देवस्यमहर्नवधे
नोः ॥ त्रिरस्यतार्परमासीत्सत्यास्पाहर्देवस्यजनिमान्यग्नेः । अनंतेऽअंतःपरीवीतऽआगाच्छुचिःशुक्रोऽअयोरोरु
चानः ॥ सदूतोविश्वेदभिर्वाष्टिसद्माहोताहिरण्यरथोरंसुजिह्वः । रोहिदंश्चोपपुष्योविभावासादरुणवःपितृमतीवसंस
त् ॥ सचैतयन्मनुषोयज्ञवैधूःप्रतंमह्यारंशनयानयति । सक्षैत्यस्यदुर्यसुसाधन्देवोमर्तस्यसधनित्वमाप ॥ सतूनोऽ
अग्निर्नयतुप्रजानन्नच्छारब्देवभक्त्यंदस्य । धियायद्विष्वेऽअमृताऽअकृण्वन्धौप्यिताजनितासत्यमुक्षन् ॥ १३ ॥
सजायतप्रथमःपस्त्यासुमहोवुधेरजसोऽअस्ययोनौ । अपादशीर्षागूहमनोऽअंतायोयुवानोवृषभस्यनीळे ॥ प्रशध
ऽआर्तप्रथमंविपुन्योऽऽकृतस्ययोनौवृषभस्यनीळे । स्पाहोयुवावपुष्योविभावांसप्तप्रियासौजनयंतवृष्णौ ॥ अस्माकमजं
पितरौमनुष्याऽअभिप्रसेदुर्कृतमाशुपाणाः । अन्नम्रजाःसुदुघाविवेऽअंतरुद्वाऽअजन्नपसौहुवानाः ॥ तेर्मृजत
दह्वांसोऽअद्वितदेपामन्येऽअभितोविवोचन् । पुश्वयंत्रासोऽअभिकारमर्चन्विदंतज्योतिश्चकृपतंधीभिः ॥ तेगंथ्य

तामनसाहृद्रमब्धंगायेमानंपरिषुतमद्रि । हृडंनरोवचसदैव्यनव्रजंगोमंतमशिजोविवजुः ॥ १४ ॥ तेमन्वतप्रथमं
नामधेनोस्त्रिःसप्तमातुःपरमाणिविदन् । तज्जानतीरभ्यनूषतब्राऽआविभुवदरुणीर्यशसागोः+ ॥ नेशत्तसोदुधितरो
ज्ञादिद्रलैधारयतद्युभक्तं । विश्वेविश्वसुदुर्यासुदेवामित्रधियेवरुणसत्यमस्तु ॥ आदित्यश्चाबुबुधानाव्यख्य
श्वभरसंयजिष्ठं । शुच्यधोऽअतृणन्नगवामंधोनपतंपरिषिक्तमंशोः+ ॥ विश्वेषामदितिर्यज्ञियानांविश्वेषामतिथिमानु
षाणां । अग्निदेवानामवऽआवृणानःसुमृळीकोभवतुजातेवेदाः ॥ १५ ॥ (४।१।२) योमत्यैष्वमृतऽकृतावदेवो
देवेष्वरतिर्निधायि । होतायजिष्ठोमह्वाशुचयैहव्यैरमिर्मनुषऽईरयधै ॥ इहत्वंसूनोसहसोनोऽअद्यजातोजातोऽडुभ
योऽअंतरमे । दूतऽईयसेयुयुजानऽकृष्वऽकृजुमृकान्वृषणःशुक्रौश्च ॥ अत्यावृधृक्षरोहिताघृतस्त्रुऽकृतस्यमन्येमनसा
जविष्ठा । अंतरीयसेऽअरुषायुजानोयुष्मौश्चदेवान्विशऽआचमतीन् ॥ अर्यमणवरुणमित्रमेषामिन्द्राविष्णूमरुतोऽ
अभिनोत । स्वश्वोऽअमेसरथःसुराधाऽएदुवहसुहविपेजनाय ॥ गोमोऽअग्नेर्विमोऽअश्वीयज्ञोनवत्सखासदुमिदप्रम
व्यः । इळावोऽएषोऽअसुरप्रजावन्दीर्घोरयिःपृथुवृक्षःसुभावान् ॥ १६ ॥ यस्तऽइधमंभरत्सिष्विदुनोमधानेनवा
(४।१।२) योमत्यैष्वितिर्विशत्यृचस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवोभिस्त्रिष्टुप् ।

तुतपतेत्वाया । भुवस्तस्यस्वतवोः पायुरंशे विश्वस्मात्सीमघायुतऽउरुष्य ॥ यस्तेभरादग्निंयतेचिदन्नं निशिपन्मंद्रमतिं
धिमुदीरत् । आदेवयुरिनर्धतेदुरोणेतस्मिन्निघ्नौघोऽस्तुदास्वान् ॥ यस्त्वादोपायऽउपसिंशंसांस्त्रियंवात्वाक्कुणवं
तेहृविष्मान् । अश्वो नस्वेदमऽआहेभ्यावान्तमहंसः पीपरोद्वाभ्वासं ॥ यस्तुभ्यमग्नेऽअमृतंयदाशुह्रुवस्त्वेकृणवत्यत
स्तुक् । नसरयाशंशमानोवियोपन्नैनुमंहः परिवरदधायोः ॥ यस्यत्वमग्नेऽअध्वरंजुजोपोदेवोमर्तस्यसुधितंरराणः ।
प्रतिदंसद्धोत्रासायविधासांमयस्यविधतोवृधासं ॥ १७ ॥ चित्तिमचित्तिंचिनवद्विविद्वान्पृष्टेववीतावृजिनाचमर्तान् ।
रायेचनः स्वपत्यायदेवदित्तिं चरास्वादिति मुरुष्य ॥ कविंशशासुः कवयोदन्धानि धारयंतो दुर्गस्वायोः । अतस्त्वंह
र्योऽअग्नऽएतान्पडिः पश्येरक्षुतोऽअर्यऽएवैः ॥ त्वमग्नेवाघतैसुप्रणीतिः सुतसोमायविधतेर्यविष्ठ । रत्नंभरशशमानाय
घृष्वेपथुश्चंद्रमवसेचर्पणिग्राः ॥ अधोह्रियद्वयमग्नेत्वायापडिर्हस्तेभिश्चक्रमातनूभिः । रथंनकंतोऽअपसाभूरिजोऽक्रंतं
धेमुः सुर्ध्वऽआशुषाणाः ॥ अधामातुरुपसः सप्तविप्राजायेमहिप्रथमावेधसोनून् । दिवस्पुत्राऽअंगिरसोभवेमाद्रिरु
जमधुनिनैशुचंतः ॥ १८ ॥ अधायथानः पितरः परासः प्रत्नासोऽअग्नऽऽकृतमाशुषाणाः । शुचीदयन्दीधितिमुक्थ्य
शासः क्षामाभिंदंतोऽअरुणीरपव्रन् ॥ सुकर्मोणः सुरुचोदेवयंतो योनदेवाजनिमाधमंतः । शुचंतोऽअग्निर्वबुधंतऽइंद्र
मूर्गव्यं परिषदंतोऽअगमन् ॥ आयुर्धेवैक्षुमर्तिपश्वोऽअरुहवैवानांयजनिमाल्युग्र । मर्तानां चिदुर्वशीरकृप्रन्वृधेचिदु

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ४

॥ २६ ॥

मंडलं ४

अनु. १

॥ २६ ॥

यं ऽउपरस्यायोः+ ॥ अकर्मतेस्वपसोऽअधूमऽऋतमवसन्नयसो विभातीः । अतूनमग्निं पुरुधा सुध्रं देवस्य ममृजतश्चा
रुचधुः ॥ एतातेऽअग्नऽउचथानिवेधो वो चामकवयेता जुपस्व । उच्छो च स्वकृणु हिवस्य सो नो महोरायः पुरुवारप्रयं धि
॥ १९ ॥ (४।१।३) आवो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः । अग्निं पुरातनयितोरचित्ताद्विरण्यरूपमवसे
कृणुध्वं ॥ अयं यो निश्चक्रुमायं वयं ते जायेवपत्यऽउशती सुवार्साः । अर्वाचीनः पारिवीतो निषीदेमाऽउते स्वपाकप्रतीचीः+ ॥
आशुण्वतेऽअहपितायुमन्मनश्चक्षेसे सुमृळी कार्यवेधः । देवाय शस्तिममृताय शंसगावेव सोतामधुबुधमीळे+ ॥
इरुणा युत्वमग्ने कथादिवेगहसे कन्नऽआगः । कदातेऽउक्थासंधमाद्यानि कदमं वतिसख्यागहेते ॥ त्वंचि
वृधसानोऽअग्ने कदाताय प्रतवसे शुभं ये । परिज्मनेनासत्यायुक्षेत्रवः कदमे रुद्राय नमे+ ॥ कथामहे पुष्टिं भराय पष्णे कडु
द्रायु सुमखाय हविर्दे । कद्विण्वऽउरुगाया यरे तो ब्रवः कदमे शरवे बृहत्सै+ ॥ कथा शर्धाय मरुतां मातय कथासुरे बृहते पु
मत्पकमग्ने । प्रतिब्रवोर्दितये तुरायुसा धादिवो जातवेदश्चिकित्वा न+ ॥ ऋतेनऽऋतं निर्यतमीळऽआगो रामासचामधु
(४।१।३) आवो राजानमिति पोडशर्चस्य सुक्तस्य गौतमो वामदेव आद्या रुद्रो द्वितीयादीनामग्निविष्टुप् ।

न । अस्पदमानोऽअचरद्वयोधावृषाशुकुंडुहुहुप्रश्रिरूढः ॥ २१ ॥ ऋतेनाद्रिव्यसन्निभदंतःसमंगिरसोनवंतगोभिः ।
 शुननरःपरिषदन्नपासमाविःस्वरभवज्जातेऽअग्नौ ॥ ऋतेनदेवीरमुताऽअमृताऽअमृताऽअर्णोभिरापोमधुमद्भिरग्ने । वाजीनस
 गेभुप्रस्तुमानःप्रसदमित्स्ववितवेदधन्युः ॥ माकस्ययक्षंसदमिद्धुरोगामावेशस्यप्रमिनतोमापेः । माआतुरग्नेऽअनृजो
 कृणवेमासख्युर्दक्षैरिपोभुजेम ॥ रक्षणोऽअग्नेतवरक्षणेभीरारक्षाणःसुमखप्रीणानः । प्रतिष्फुरविरुजवीडंहोजहिरक्षो
 महिचिद्वाचुधानं ॥ एभिर्भवसमनाऽअग्नेऽअर्कैरिमान्स्पृशमन्मभिःशूरवाजान् । उतब्रह्माण्यंगिरोजुषस्वसतेश्नास्ति
 दुववाताजरेत ॥ एताविर्वाविदुषेतुभ्यवेधोनीथान्यग्नेनिण्यावचांसि । निवचनाकवयेकाव्यान्यशंसिपमतिभिर्विप्र
 ऽउक्थैः ॥ २२ ॥ (४।१।४) कृणुष्वपाजुःप्रसितिनपृथ्वीयाहिराजेवामवाऽइभेन । तूष्वीमनुप्रसितिद्रुणानोस्तां
 सिविध्यरक्षसस्तर्पिष्ठैः ॥ तवन्नमासऽआशुयापंतत्यनुस्पृशधृपताशोशुचानः । तपूष्यग्नेजुहोपतगानसंदितोविसृज
 विष्वगुल्काः ॥ प्रतिस्पृशोविसृजतूर्णितमोभवापायुर्विशोऽअस्याऽअदब्धः । योनोदरेऽअधशंसोयोऽअत्यग्नेमाकि
 ह्व्यथिरादंधर्षीत् ॥ उदग्नेतिष्ठप्रत्यातनुष्वन्यमित्राऽओषतात्तिग्महेते । योनोऽअरातिसमिधानचक्रेनीचातंधक्ष्यत
 संनशुष्कं ॥ ऊर्ध्वोर्भवप्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्वदैव्यान्यग्ने । अवस्थिरातनुहियातुजूनंजामिमज्जामिप्रमृणीहि

(४।१।४) कृणुष्वेतिपचदशचंसूक्तस्यगौतमोवामदेवोरक्षोद्वाग्निस्त्रिष्टुप् ।

शत्रून् ॥ २३ ॥ सतेजानाति सुमतिर्यविष्ठयऽईवते ब्रह्मणे गतुमैरत् । विश्वान्यसैसादिना निरायो ह्युन्नान्ययो विदुरो
ऽअभिद्यौत् ॥ सेदमेऽअस्तु सुभगः सुदानुर्यस्त्वानित्येन ह विषायऽउक्थैः । पिप्रौषति स्वऽआयुऽपि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदि
नानां ॥ इह त्वाभ्या चरेदुप त्मन्दोपावस्तर्दीद्विवांसमनुद्युत् ॥ क्रीळतस्त्वासमनसः सपेमाभिद्युन्नातस्थिवांसो ज
गजुजौषत् ॥ २४ ॥ महोरुजा भिवंधुतावचो भिस्तन्मापितुर्गते मादन्वियाय । त्वनोऽअस्य वर्चसश्चिकिद्धि होत र्यवि
ष्ठयव्यंसधन्यऽस्त्वोतास्तव प्रणीत्य इयामवाजान् । उभाशंसासूदयसत्यतातेनुष्ठयाकृणु ह्यहायण ॥ अयतैऽअग्नेस
मिधा विधेम प्रतिस्तोमैश्च्यमानं गृभाय । दह्याशसौरक्षसः पाह्यऽस्मान्द्रुहो निदोमिन्नमहोऽअवघात् ॥ २५ ॥ इति
तृतीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

विंशाध्यायेवर्गाः २५ सूक्तानि ११ ऋचः १३५ ॥ त्यागः ॥ विश्वेभ्योदेवेभ्यः १४ [भे ५. विश्वेभ्यो. १ संवत्सरादित्येभ्यः ३ सिंधुभ्यः सवित्र. विश्वेभ्योदेवेभ्यः ६ अग्नयः २ एव १४] अश्विम्यामि. ९ मित्राय. ९ ऋसुभ्यः ४ इंद्रं ऋसुभ्यः ३ उषसः ७ इंद्रावरुणाम्यामि. ३ बृहस्पतयः ३ पूष्णइ. ३ सवित्र. ३ सोमाये. ३ मित्रावरुणाम्या. ३ अग्नयः अग्नीवरुणाम्या. ४ अग्नयः ३५ रुद्राये. अग्नयः १५ रक्षोघ्नेभ्यः १५ ॥ इतितृतीयेचतुर्यः ॥ ४ ॥

वैश्वानराय वैश्वानरीर्यमूर्ध्वज्वेकादशायमिहादौ जगतीं पंचानुष्टुभोदूतं वोष्टौ गायत्रं त्वग्नेमृळाग्नेतमद्यपदपांक्तं पंचमीमहापदपंक्तिरत्योष्णिक्चतुर्थीषष्ठ्युपांत्यावाससभ्याः पंचकौमुख्यौ तृतीयः सप्तकोनवकश्चाष्टम्याः पंचकः पादश्चतुष्कः सप्तकश्चैष्टुभश्च भद्रं पञ्चस्त्वांप्रत्यग्निः पंचलिंगोक्तैव तत्वेकैप्रत्यग्निरग्निर्होता दशगायत्रमृषिर्वोधदिति द्वाभ्यां सोमकं साहदेव्यमभ्यवदत्पराभ्यामस्याश्विनावायुरयाचर्तासत्यः सैकैर्द्रवं महौ असिन्म्यामेकपदां यंपथाः सप्तोनासंवादं इंद्रादिति वामदेवानां ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ हरिः ओम् (४।१।५) वैश्वानरायमीहृषेसजोषाः कथादाशेमाग्नये बृहद्भाः । अनूनेन वृहतावक्षथेनोपस्तभाय दुपमिन्नरोधः ॥ मार्निदतयऽइमांमह्यरातिदेवोद्वौमर्त्यायस्वधावान् । पाकायगुत्सोऽमृतोविचेतवैश्वानरोनृत

(४।१।५) वैश्वानरायेति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवो वैश्वानरो मिच्छिष्टुप् ।

मोयुहोऽअग्निः⁺ ॥ सामद्विवहृमहिंतिग्मभृष्टिः सुहृरेतावृषभस्तुविष्मान् । पदंनगोरपगूढं विविद्वानग्निर्मह्यप्रेदुवो
 चन्मनीषां⁺ ॥ प्रतोऽअग्निर्वैभसस्तिग्मजंभस्तपिष्ठेनशोचिषायःसुरार्धाः । प्रयेमिनंतिवरुणस्यधामप्रियामित्रस्यचेत
 तोध्रुवाणि ॥ अत्रातरोनयोषणोव्यंतःपतिरिपोनजनयोदुरेवाः । प्रापासःसंतोऽअनुताऽअसत्याऽइदंपदमजनताग
 भीरं⁺ ॥ १ ॥ इदंमैऽअग्नेकियतेपावकामिनतेगुरुभारंनमन्म । बृहदधाथधृषतागभीरंयुहं पृष्ठप्रयसासस्रधातु ॥
 तमिन्वेडुवसमनासमानमभिक्रत्वापुनतीधीतिरक्ष्याः । ससस्यचर्मन्नाधिरुपेऽआरुपितुंजवारु ॥ प्रवाच्यं
 वचसःकिंमैऽअस्यगुहाहितमुपनिणिग्वदंति । यदुन्निर्याणामपवारिवव्रन्पातिप्रियरूपोऽअग्रपदंवेः⁺ ॥ इदमुत्यन्म
 हिमहामनीकंयदुन्निर्यासचतपर्व्यगौः । ऋतस्यपदेऽअग्निदीद्यानंगुहारघुष्यद्रुयद्विवेद ॥ अर्धद्युतानःपित्रोःसच्चा
 सामनुतगुह्यंचारुपृश्नेः । मातुष्पदेपरमेऽअतिपह्लोवृष्णःशोचिषःप्रयतस्यजिह्वा⁺ ॥ २ ॥ ऋतवोचेनमसापृच्छ्यमान
 स्तवाशसाजातवेदोयदीदं । त्वमस्यक्षयसियद्धविर्ध्वदिवियदुद्रविणंयतृधिव्यां⁺ ॥ किनोऽअस्यद्रविणंकङ्कुरलांविनो
 वोचोजातवेदश्चिकित्वान् । गुहाध्वनःपरमंयज्ञोऽअस्यरेकुपदंननिदानाऽअगन्म ॥ कामर्यादोवयुनाकङ्कवाममच्छा
 गमेमरघवोनवाजं । कदानोदेवीरमृतस्यपत्नीःसूरोवर्णेनततनन्नपासः ॥ अनिरेणवचसाफल्येनप्रतीत्येनकृधुनातपा
 सः । अधातेऽअग्नेकिमिहावदंत्यनायुधासऽआसतासचंतां ॥ अस्यश्रियेसमिधानस्यवृष्णोवसोरनीकंदमऽआरुरोच ।

रुशद्वसानःसुहृशीकरूपःक्षितिर्नरायापुरुवारोऽअद्यौत् ॥ ३ ॥ (४।१।६) ऊर्ध्वऽऊरुणोऽअध्वरस्यहोतरग्रेतिष्ठद्वंता
 तायजीयान् । त्वंहिविश्वमभ्यसिमन्मप्रवेधसश्चित्तिरसिमनीपां ॥ अमूरोहोतान्यसादिविक्ष्वग्निर्मद्रोविदथेषुप्र
 वेताः । ऊर्ध्वभानुंसवितेवाश्रेन्मेतेवधुमस्तभायदुपधां ॥ यतासुजूर्णीरातिनीघताचीप्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः ।
 उदुस्वरुनवजानाक्रःपृथ्वोऽअनकिमुधितःसुमेकः ॥ स्त्रीणवर्हिषिसमिधानेऽअग्नाऽऊर्ध्वोऽअच्ययुजुपाणोऽअस्था
 त् । पर्यग्निःपशुपानहोतान्निविष्ट्वेतिप्रदिवऽउराणः ॥ परित्मनामितदुरेतिहोताग्निर्मद्रोमधुवचाऽकृतावा । द्रवत्य
 स्यवाजिनो नशोकाभयैतेविश्वामुर्वनायदभ्याद् ॥ ४ ॥ भद्रातैऽअग्नेस्वनीकसंहघोरस्यसतोविषुणस्यचारुः । नय
 तैशोचित्तमसावरैतुनध्वस्मानस्तन्वीइरेपऽआधुः ॥ नयस्यसातुर्जनैतोरवारिनमातरापितरानूचिदिष्टौ । अर्धमि
 त्रोनसुधितःपावकोइग्निर्दीदायमानुषीषुविक्षु ॥ द्विपंचजीजनन्त्सवसानाःस्वसारोऽअग्निमानुषीषुविक्षु । उपबुधं
 मथयोइ नदंतशुक्रंस्वासंपरशुंनतिग्मं ॥ तवत्येऽअग्नेहुरितोघृतस्मारोहितासऽकृज्वंचःस्वंचः । अरुपासोवृषणऽकृजु
 मष्काऽआदेवतातिमहंतदस्माः ॥ येहृत्येतैसहमानाऽअयासस्त्येषासोऽअग्नेऽअर्चयश्चरंति । स्येनासोनदुवसना
 सोऽअर्थतुविष्वणसोमारुतंनशर्धः ॥ अकारिब्रह्मसमिधानुभ्यंशंसात्युक्थंयजतेव्यूधाः । होतारमग्निमनुपोनिषेदु

(४।१।६) ऊर्ध्वऊरुणइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवाग्मदेवोमिच्छिष्टुर् ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ५

॥ २९ ॥

नमस्यंतं ऽ उशिजः शंसमायोः ॥ ५ ॥ (४११७) अयमिह प्रथमोऽपि धातुभिर्होता यजिष्ठोऽअध्वरेष्वीज्यः । यम
मवानो भृगवो विरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशोविशे ॥ अग्रे कर्तुं ऽ आनुषंगमुर्वदेवस्य चेतनं । अध्याह्निवाजगृध्रिरेमर्तो
सो विरुच्यीज्यं ॥ ऋतावानं विचेतसं प्रथ्यतो द्यामिव स्तुभिः । विश्वेषामध्वराणां हस्तो रं दमेदमे ॥ आशुं दूतं विवस्वतो
शोचिष्यं यजिष्ठं ससधामभिः ॥ ६ ॥ तं शश्वतीषु मातृपुवनं ऽ आवीतमश्रितं । महोऽअग्निर्मसारात्तहव्यो वेरध्वराय सदमिह तावा ॥ वेरध्वर
ससस्ययद्विद्युतात्सिन्धूध्नतस्य धामन्नयत देवाः । महां ऽ अग्निर्मसारात्तहव्यो वेरध्वराय सदमिह तावा ॥ कृष्णं तु
स्य दूत्यानि विद्वान्भेऽअंतारोदसीसंचिकित्वात् । दूतं ऽ ईयसे प्रदिवं ऽ उराणो विदुष्टरो दिवऽ आरोधनानि ॥ कृष्णं तु
एमरुशतः पुरोभाश्च रिष्ण्वं चिर्वपुषामिदेकं । यदप्रवीता दधते हृग्भसु द्याश्चिजातो भवसीदुदूतः ॥ सद्योजातस्य दह
शानमोजो यदस्य वातोऽअनुवाति शोचिः । वृणां किंति गमामतु सेषु जिह्वां स्थिराचि दशादयते विजंभैः ॥ तृषु यदन्ना तृषु
णाववक्षतुं दूतं कृणुते युहोऽअग्निः । वातस्य मेळिंसंचते निजूर्वन्नाशुं नवाजयते हिन्वेऽअर्वा ॥ ७ ॥ (४११८) दूतं
(४११७) अयमिहेत्येकादश चर्चस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवो मिस्त्रिष्टुप् आद्याजगती द्वितीयाद्याः पंचानुष्टुभः । (४११८) दूतं वदत्यष्टर्च

॥ २९ ॥

मंडलं ४

अनु. १

वौविश्वेदसंहव्यवाहुमर्त्यं । यजिष्ठमृजसेगिरा⁺ ॥ सहिवेदुवसुधितिमहोऽआरोधनंदिवः । सदेवाँऽएहवक्षति ॥
 सवेददेवऽआनमदेवाँऽकृतायतेदमे । दातिप्रियाणिचिद्धसु ॥ सहोतासेदुदूथचिकित्वाँऽअंतरीयते । विद्धोऽआरो
 धनंदिवः⁺ ॥ तस्यामयेऽअग्रयेददाशुहव्यदातिभिः । यऽईपुष्यतऽइधृते ॥ तेरायातेसुवीचैःससां सोविशृण्वरे ।
 येऽअन्नादधिरेदुवः ॥ अस्मेरायौदिवेदिवेसंचरंतुपुरुस्पृहः । अस्मेवाजांसऽईरतां ॥ सविप्रश्चर्यणीनांशवसामानुपा
 णां । अतिक्षिप्रवविध्यति ॥ ८ ॥ (४।१।९) अग्नेमळमहोऽअसियऽईमादेवयुंजनं । इयेथवहिरासदं ॥ समानु
 षीषुदूळभोविश्रुग्रावीरमर्त्यः । दूतोविश्वेषांभुवत् ॥ ससद्मपरिणीयतेहोतामंद्रोदिविष्टिषु । उतपोतानिपीदति ॥
 उतन्नाऽअग्निरेध्वरऽउतो गहपतिर्दमे । उतब्रह्मानिपीदति ॥ वेषिह्यध्वरीयतामुपवक्ताजनां । हव्याचमानुपाणां ॥
 वेषीह्रस्यदूत्ययस्यजुजोषोऽअध्वरं । हव्यंमर्तस्यवोह्वे ॥ अस्माकंजोष्यध्वरमस्माकंयज्ञमंगिरः । अस्माकंशृ
 णुधीहवै ॥ परितेदूळभोरथोसाँऽअश्रोतुविश्वतः । येनरक्षसिद्राथुर्यः ॥ ९ ॥ (४।१।१०) अग्नेतमद्याध्वनस्तो
 मैःकतुंभमंद्रहृदिस्पृशं । ऋध्यामातऽओहेः ॥ अध्राह्यमेकतौर्भद्रस्यदक्षस्यसाधोः । रथीऋतस्यबृहत्तोवभूथ ॥

(४।१।९) अग्नेमृक्येष्टर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवोभिर्गायत्री । (४।१।१०) अग्नेतमद्येष्टर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवोभिःपद
 पंक्तिःपंचमीमहापदपंक्तिःअंशेद्वेउष्णिहौ ।

एभिर्नोऽअकैर्भवानोऽअर्वाङ्स्वर्णज्योतिः । अग्नेविश्वेभिःसमनाऽअनीकैः ॥ आभिष्टेऽअद्यगीभिर्गणंतोऽग्रेदा
 शैम । प्रतोदिवोनस्तनयंतिशुष्माः ॥ तवस्वादुष्टाग्नेसंहृष्टिरिदानीदहऽइदानीदहोऽचिदुक्तोः । श्रियेरुक्मोनरोचतऽउ
 प्रोक्तं ॥ घृतंनपतंतनूरेपाःशुचिहिरण्यं । ततैरुक्मोनरोचतस्वधावः ॥ कृतंचिच्छिष्मासनेमिद्वेयोऽग्रेऽइनोषिम
 तौत् । इत्थायर्जमानादतावः ॥ शिवानःसख्यासंतुन्नात्राग्नेदेवेषुयुष्मे । सानोनाभिःसर्दनेसस्मिन्नधून् ॥ १० ॥
 (४।२।१) भद्रंतेऽअग्नेसहसिन्ननीकमुपाकऽआरोचतेसूर्यस्य । रुशहृशेददशेनक्तयाचिदरुक्षितंहृशऽआरूपेऽ
 अन्नं ॥ विषाह्यग्नेगृणतेर्मनीषांखंवेपसालुविजातस्तवानः । विश्वेभिर्भ्यद्रावनःशुक्रदेवैस्तन्नोरास्वसुमहोभूरिमन्म ॥
 त्वदग्नेकाव्यात्वन्मनीषास्त्वदुक्थाजायंतेराध्यानि । त्वदेतिद्रविणंवीरपैशाऽइत्थाधिपेदाशुपेमर्त्याय ॥ त्वद्वाजीर्वा
 जंभरोविहायाऽअभिष्टिकृजायतेसत्यशुष्मः । त्वद्रथिर्देवजूलोमथोभुस्त्वदाशुर्जुवांऽअग्नेऽअर्वा ॥ त्वामग्नेप्रथमंदे
 वयंतोदेवंमर्तोऽअमृतमंद्रजिह्वं । द्वेयोयुतमार्वावासंतिधीभिर्दमूनसंगहृपतिममूरं ॥ आरेऽअस्मदमतिमारेऽअहंऽआ
 रेविश्वोदुर्मर्तियज्ञिपासि । दोषाशिवःसंहसःसूनोऽअग्नेयंदेवऽआचित्सचसेस्वस्ति ॥ ११ ॥ (४।२।२) यस्त्वा
 मग्नेऽइनधेयतस्त्रुक्त्रिस्तेऽअन्नंक्रुणवत्सस्मिन्नहन् । ससद्युर्ध्वैरभ्यस्तुप्रसक्षत्तवृक्त्वाजातवेदश्चिकित्वान् ॥ इधमय

(४।२।१) भद्रंतइतिपठूचस्यासूक्तलगौतमोवामदेवोभिस्त्रिष्टुप् । (४।२।२) यस्त्वामग्नेइतिपठूचस्यासूक्तलगौतमोवामदेवोभिस्त्रिष्टुप् ।

स्तद्द्वंजभरं च्छश्रमाणो महोऽग्नेऽअनीकमासपर्यन् । सद्धानः प्रतितोषामपासं पुष्यत्रयि संचते मन्त्रमित्रान् ॥ अग्निरीशो
बृहत्क्षत्रियस्याग्निर्वाजस्य परमस्य रायः । दधाति रत्नं विधेयविष्टो व्यानुषङ्गाल्याय स्वधावान् ॥ यच्चिद्धिते पुरुषत्राय
विष्ठाचित्तिभिश्च कृमाकच्चिदागः । कृधीष्व१सोऽअदितेरनागान्वेनासि शिश्रथो विष्वगग्ने ॥ महश्चिदद्मऽएनसोऽअ
भीकऽऊर्वाह्वानामुतमर्त्यानां । माते सखायः सदुमिद्रिषामयच्छातो कायतनयाय शंयोः⁺ ॥ यथा हृत्य द्वसवोगैर्यैचि
त्यदिपिताममुचताय जत्राः । एवोष्व१सन्मुचताव्यंहः प्रतारिभे प्रतरन्ऽआयुः ॥ १२ ॥ (४।२।३) प्रत्यग्निरुपसा
मग्रमख्यद्विभातीनां सुमनारत्नधेयं । यातमश्विना सुकृतो दुरोणमुत्सूयोज्योतिषा देवऽएति ॥ ऊर्ध्वभानुं सविता देवो
ऽअश्रेद्भ्रं सन्दर्विध्वज्जविपो न सत्वा । अनुव्रतं वरुणो यति मित्रो यत्सूर्यदिव्यारोहयति ॥ यंसीमकृण्वन्तमसे विष्टुचे भ्रुवक्षे
माऽअनवस्यंतोऽअर्थं । तंसूर्यहुरितः ससयुह्वीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहति ॥ वहिष्ठेभिर्विहरन्त्यासितं तु मवव्ययन्नासितं
देववर्त्म । दर्विध्वतो रसमयः सूर्यस्य च मेवावाधूस्तमोऽअप्यव१तः⁺ ॥ अनयतोऽअनिवद्धः कथायं न्यङ्कुतानो वपद्यतेन ।
कथायातिस्वध्याको ददर्शी दिवः स्कंभः समृतः पातिनाकं ॥ १३ ॥ (४।२।४) प्रत्यग्निरुषसो जातवैदाऽअख्यद्वेवोरोच

(४।२।३) प्रत्यग्निरिति पंचर्यस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवो ग्निस्त्रिष्टुप् । (४।२।४) प्रत्यग्निरुषस इति पंचर्यस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवो-
ग्निस्त्रिष्टुप् (अनयोः सूक्तयोः केचिदाचार्यो लिङ्गो ऋदेवता आहुताश्च आद्यसूक्ते आद्यानातिस्तृणामग्निः चतुर्थ्याः सवितुवरुणमित्राः पंचम्याः

मानामहोभिः । आनासत्योरुगायार्थेनेमंयज्ञमुपनोयातुमच्छ ॥ ऊर्ध्वकेतुसवितादेवोऽश्रेज्योतिर्विश्वस्यैशुवनाय
 कुण्वन् । आग्नाद्यावापृथिवीऽन्तरिक्षं विसूर्यो रश्मिभिर्योतिः ॥ आवहृत्यरुणीज्योतिषागान्महीचित्रारश्मिभि
 र्यो । इमेहिवांमधेयायसोमाऽअस्मिन्यज्ञेवृषणामादयेथां ॥ अनायतो० ॥ १४ ॥ (४।२।५) अग्निहोतानोऽअ
 ध्वरेवाजीसन्परिणीयते । देवोदेवेषुयज्ञियः ॥ परित्रिविधं ध्वरं यात्यग्नीरथीरिव । आदेवेषुप्रयोदधत् ॥ परिवाजप
 तिकविरग्निह्वयान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि द्वागुषे ॥ अयंयः संजये पुरोदैववाते समिध्यते । द्युमोऽअमित्रदंभनः ॥
 अस्थधावीरऽईवतो मेरीशीतमर्त्यः । तिग्मजं भस्यमीह्विषः ॥ १५ ॥ तमर्वितुनसान् सिमरुषं नदिवः शिशुं । मर्मज्यं तैदिवोद
 ने ॥ बोधद्यन्माहरिभ्यांकुमारः साहदेव्यः । अच्छानहूतऽउदरं ॥ उतत्यार्थजताहरीकुमारात्साहदेव्यात् । प्रयंता
 सद्यऽआदेदे ॥ एषवां देवावभिनान् कुमारः साहदेव्यः । दीर्घायुरस्तु सोमकः ॥ तंयुवं देवावभिनान् कुमारं साहदेव्यं ।
 दीर्घायुषं कृणोतन ॥ १६ ॥ (४।२।६) आसत्योयां तुमधवाँऽऋजीषीद्वत्त्वस्य हरयुऽउत्पनः । तस्माऽइदं धः सुषुमा
 सूर्यः । अपरसूक्तेक्रमेण अग्न्यग्निः सूर्य उषा अश्वयुषसः सूर्य इत्येव ज्ञेयाः । (४।२।५) अग्निहोतेति दशर्चस्य सूक्तस्य गौतमो वा मदेवो-
 मिः सप्तम्यष्टम्योः सोमः अत्ययोरग्निनौ गायत्री । (४।२।६) आसत्योयात्त्वित्येकं विशत्यवस्य सूक्तस्य गौतमो वा मदेव इदं किष्टुप् ।

सुदक्षमिहाभिपित्वंकरतेगृणानः⁺ ॥ अवस्यशूराध्वनोनांतेसिन्नोऽअद्यसर्वनेमंदध्यै । शंसात्युक्थमश्रुमशनेववेधाश्चिकि-
तुषेऽअसुर्ययमन्म ॥ कविर्ननिष्यंविदथानिसाधुनृषायत्सेकंविपिपानोऽअर्चोत् । दिवऽइत्थाजीजनत्ससकारुन
होचिच्छक्रवृत्तुनागणतः ॥ स्वर्ग्येदिसुदृशीकमकर्महिज्योतीरुरुच्यर्ध्वस्तोः । अंधातमांसिदुर्धिताविचक्षेनृभ्यश्च
कारनृतेमोऽअभिष्टौ ॥ ववक्षऽइंद्रोऽअर्भितमृजीव्युभेऽआपप्रौरोदसीमहित्वा । अतश्चिदस्यमहिमाविरैच्यभियो
विश्वामुर्वनावभूव ॥ १७ ॥ विश्वानिशक्रोनर्योणिविद्वानपोरिरेचसखिभिर्निकामैः । अदमानंचिद्येवैभिर्दुर्वचोभि
व्रजंगोर्मतमशिशोविवंबुः ॥ अपोवृत्रवंत्रिवांसंपराहुन्प्रावत्तेवज्रं पृथिवीसचैताः । प्राणीसिसमद्रियाण्यैनोःपतिर्भव
न्छर्वसाशूरघृणो ॥ अपोयदद्रिपुरुहूतददराविर्भुवत्सरमापवृत्ते । सनोनेतावाजमादर्षिभूरैर्गोत्रारुजन्नंगिरोभिर्गु-
णानः⁺ ॥ अच्छाकर्विर्नृमणोऽअभिष्टौस्वर्षतामघवन्नाधमानं । ऊतिभिस्तर्भिपणोद्युन्नहूतौनिमायावानब्रह्मादस्यु-
रर्त ॥ आदस्युह्नामनसायाह्यस्तंभुवत्तेकुत्सःसख्यनिकामः । स्वयोनौनिषदत्संरूपाविर्वाचिकित्सदृत्चिद्धनारी
॥ १८ ॥ यासिकुत्सेनसरथमवस्युस्तोदोवातस्युह्योरीशानः । ऋज्रावाजंनगध्वंयुधूपन्कुरियदहुन्पार्ययभूषात् ॥
कुत्सायशृणामशुभंनिर्वहीःप्रपित्वेऽअह्नःकुर्यंवसहस्रा । सद्योदस्यनृमृणकुत्सेनप्रसूरैश्चक्रवृहतादुभीके ॥ त्वंपिप्रमु
गंयशशुवांसंमजिन्ध्वनेवैदथिनायंरधीः । पंचाशत्कुष्णानिवपःसहस्रात्कनपुरोजरिमाविर्ददः ॥ सूरऽउप्योकेतन्वभूद

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ५

॥ ३२ ॥

मंडलं ४

अनु. २

॥ ३२ ॥

धानो विद्यते चेत्त्यमुतस्य वर्षः । मगोनहस्तीति विषीमुषाणः सिंहो न भीमऽआयुधानि विभ्रत ॥ इदं कामावस्यतोऽअगम
न्त्स्वर्मीहिनसर्वनेचकानाः । श्रुवस्यवः शशमानासऽउक्थैरो न रण्वासुहशीवपुष्टिः ॥ १९ ॥ तमिदुऽइंद्रसुहवंहुवे
मयस्ताचकारनर्यापुरुषेण । यो मावते जरित्रे गार्ध्याचिन्मक्षवाजं भरति स्याहर्गधाः ॥ तिग्मायदुं तरशनिः पतातिकस्मि
को वाजसार्ता । त्वामनुग्रमतिमाजगन्मोरुशंसो जरित्रे विश्वस्यः ॥ भुवो वितावामदेवस्य धीनां भुवः सर्वावृ
आजौ । द्यावोनद्यद्वैरभिसंतोऽअर्थः क्षपो मदेमशरदश्च पूर्वाः ॥ एभिर्द्यभिरिन्द्रत्वायुभिर्द्वामघवद्भिर्मघवन्विश्वं
चिद्यथानः सख्यावियोषुदसन्नऽउग्रो वितातनपाः ॥ नूह्रुतऽइदुनूगणानऽइषं जरित्रे नद्योऽनपीपेः । अकारिते हरि
वो ब्रह्मनव्यं धिया स्यामर्थः सदासाः ॥ २० ॥ (४।२।७) त्वंमहोऽइदुतुर्भ्यहृक्षाऽअनुक्षत्रं मुहना मन्यतद्यौः । त्वं
वृत्रं शर्वसाजघ्नवान्त्सुजः सिधैरहिनाजग्रसानान् ॥ त्वंमहोऽइदुतुर्भ्यहृक्षाऽअनुक्षत्रं मुहना मन्यतद्यौः । त्वं
तसुर्भ्यः पर्वताऽआर्दुधन्वानिसुरयंतुऽआपः ॥ भिनद्धिरिशवसावज्रमिष्णन्नाविष्णुण्वानः सहसानऽओजः । वधी
दुत्रवज्रैणमंदसानः सर्वापो जवसाहुतवृष्णीः ॥ सुवीरस्ते जनिता मन्यतद्यौरिंद्रस्य कृतो स्वपस्तमोभूत । यऽइज्जानस्वर्थ
(४।२।७) त्वंमहानिलोकं विशत्यृचस्य स्रक्तस्य गौतमो वामदेव इन्द्रं विपुष् अस्मिन्म्यामित्येकपदाविराट् ।

सवज्रभर्नपच्युतंसदसोनभूम ॥ यऽएकऽइक्यावयतिप्रभूमाराजाकृष्टीनांपुरुहुतऽइंद्रः । सत्यमेनमनुविश्वेमदतिरा
 तिदेवस्यगृणतोमघोर्नः ॥ २१ ॥ सत्रासोमाऽअभवन्नस्यविश्वसत्रामदासोबृहतोमदिष्टाः । सत्राभेवोवसुपतिर्वसूना
 दन्नेविश्वऽअधियाऽइंद्रकृष्टीः⁺ ॥ त्वमधप्रथमंजायमानोमेविश्वऽअधियाऽइंद्रकृष्टीः । त्वंप्रतिप्रवतऽआशर्यान्म
 हिंवज्रेणमघवन्निवृश्चः ॥ सत्राहणंदाधृपितुस्वामिंद्रमहामपारंघृपभंसवज्रं । हंतायोवृत्रंसनितोतवाजंदातामघानिमघवा
 सराधाः ॥ अयंवृतश्चातयतेसमीचीर्यऽआजिषुमघवांशृण्वऽएकः । अयंवाजंभरतियसनोत्यस्यप्रियासःसख्येस्याम ॥
 अयंशृण्वेऽअधजयेन्नतमघयमतप्रकृणुतेयुधागाः । यदासत्यंकृणुतेमन्युमिंद्रोविश्वंहृदंभयतऽएजंदस्मात् ॥ २२ ॥
 सभिद्रोगाऽअजयत्संहिरण्यासमंश्वियामघवायोहंपूर्वाः । एभिर्वृभिर्वृतमोऽअस्यशार्कैराथोविभुक्तासंभरश्चवस्वः ॥ कि
 यत्स्विदिद्रोऽअर्थेतिमातुःकियत्पितुर्जनितुर्योजानं । योऽअस्यशृण्वममुहुकैरियतिवातो नजतःसूनर्यद्भिरभ्रैः⁺ ॥ क्षि
 यंतत्वमर्क्षयंतकृणोतीर्यतिरेणुमघवासमोहं । विभंजनुरशनिमोऽइवद्यौरुतस्तोतारंमघवावसौधात् ॥ अयंचक्रमिप
 णत्सूर्यस्येतंशरीरमत्ससुमाणं । आकृण्वऽइजुहुराणोजिघतित्वचोवृध्रेजसोऽअस्ययोनौ ॥ असिक्नयांयजमानोन
 होता ॥ २३ ॥ गव्यंतऽइंद्रसख्यायविप्राऽअश्वायंतोवृषणंवाजयंतः । जनीयंतोजनिदामिक्षितोतिमाच्यावयामोव
 तेनकोर्यं ॥ ब्रातानोवोधिदईशानऽआपिरभिख्यातामर्द्धितासोभ्यानां । सर्वापितापितृतमःपितृणांकर्तृमुलोकमुश

ऋक्सं.

अ. ३. अ. ५

॥ ३३ ॥

तेवयोधाः+

तऽइन्द्र

॥ ३३ ॥

मंडलं. ४

अनु. २

॥ ३३ ॥

एवानुऽइन्द्रो मघवा विरश्नीकरस्त्याचर्षणीधुदनुर्वा । त्वं राजा जुनुषा धेह्यस्तेऽधिश्चवो माहि न्यजं रित्रे+ ॥ नृष्टुतऽ
इन्द्रो ॥ २४ ॥ (४।२।८) अयं पंथाऽअनुवित्तः पुराणो यतो देवाऽऽदजायंता वेष्ट्रे । अतश्चिदाजनिषीष्टप्रवृद्धो मामा
ऽऋधं कृण्वुधं स हसं मा सो जभारं शरदंश्च पूर्वा । त्वष्टुर्गहेऽअपि वत्सो ममिद्रः शतधन्यं च भवोः सुतस्य ॥ किं स
ना गुहं किरिद्रं माता वीर्येणान्युष्टं । अथो देवस्थात्स्वयमत्कुं वसानुऽआरोदसीऽअपुणा ज्ञायमानः ॥ २५ ॥ एताऽअर्षत्यल
ला भवतीर्कुता वरीरिव संक्रोशमानाः । एता विपृच्छ किमिदं भनंति कामपोऽअद्रिं परिधिं रुजंति ॥ किमु ग्विदस्मै नि
विदो भनंते द्रस्यावृधां दिधि पंतुऽआपः । ममैतान्पत्रोर्महतावुधेन वृत्रजघ्न्योऽअसृजद्वि सिंघून् ॥ मम च न त्वायुवतिः
(४।२।८) अयं पंथा इति त्रयोदश च स्य सूक्तस्य गौतमो वा मदेव ऋषिः आद्याया इन्द्र ऋषिः नहीन्वस्येत्यादिसार्धतिसृणामदिति ऋषिका
आद्याया नाम देवो देवता नाहमत इत्यादि पंचार्धार्चानां मत्यानां पणामृचां चेद्रो देवतानहीन्वस्येति सार्धतिसृणामदेवो देवतान्निष्टुप् ।

परासममच्चनत्वाकुषवाजगारं । मर्मच्चिदापःशिशवेममृज्युर्मर्मच्चिदिन्द्रःसहसोदतिष्ठत् ॥ मर्मच्चनतैमघवन्व्यसोनि
 विविध्वोऽअपहनूजधानं । अधानिविद्धऽउत्तरोवभुवान्छिरोदासस्यसंपिणवधेनं ॥ गृष्टिःससूवस्थविरंतवागार्मनाधु
 ब्यंबृषभंतुघ्नमिंद्रं । अरीह्वत्संचरथायमातास्वयंगतुतुन्वऽइच्छमानं ॥ उतमातामहिपमन्ववेनदुमीत्वाजहतपुत्रदे
 वाः । अथाज्रवीद्वृत्रमिंद्रोहनिष्यन्सखेविष्णोवितुरंविक्रमस्व ॥ कस्तेमातरंविधवामचक्रच्छुयुं कस्त्वामजिघांसच्चरं
 तं । कस्तेदुवोऽअर्धिमार्डिकिऽअसीद्यत्पाक्षिणाःपितरंपादुगृह्यं ॥ अवर्त्याशुनंऽआंत्राणिपेचेनदेवेषुविचिदेमर्द्धितारं ।
 अपर्दयंजायामर्महीयमानामधामेदयेनोमध्वार्जभार ॥ २६ ॥ इतितृतीयाष्टकेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

एकविंशाध्यायेवर्गाः २६ सूक्तानि १४ ऋचः १४८ ॥ त्यागः ॥ वैश्वानरायाम्नय १५ अग्नयः ६१ सवितृवरुणमित्रेभ्यः० सूर्या-
 ये ३ अग्नयश्चिभ्यः सूर्यायेः उषसः अश्वेषुभ्यः सूर्यायेः अग्नयः ६ सोमकायेः २ अश्विभ्याः २ इंद्रायेः ४२ वामदेवायेः इंद्रायेः २
 इंद्रवामदेवाभ्याः वामदेवायेः ३ इंद्राये ६ ॥ इतितृतीयेपंचमः ॥ ५ ॥

एवैकादशानआयातुंयनःऋथोपांत्यस्तिस्मऋतुदेव्योवाकासुष्टुतिरुपांत्यानुष्टुपुंकोअद्याष्टावहंमनुःसप्ताद्याभिस्ति
 सुभिरिंद्रमिवात्मानमृषिस्तुष्टावैद्रोवात्मानंपरानवाष्टौचाक्ष्येनस्तुतिर्भिर्भनुपंचांत्याशकरीत्वायुर्जेद्रासोमवानः

स्तुतो न किञ्च तु विंशतिं दिवश्चितु च उषस्य श्वायत्रं ह्यष्टम्यं ते अनुष्टुभौ कथापंचोना भीषु पादनि चृदा तूनश्च तु विंश
 तिरं त्याभ्यामैन्द्राभ्यौ स्तुतौ ॥ १ ॥
 ॥ हरिः ओम् ॥ (४।२।९) एवात्वा मिद्रवज्जिन्नत्र विभ्वे देवासः सहवासऽऊमाः । महामभेरोदसी वृद्धमृष्वं निरे
 क्मिद्वृणते वृत्रहत्ये ॥ अर्वास्तु जंतुजिब्रयो न देवा भुवः सखा किं द्रसत्ययोनिः । अहन्नहि परिशयानुमर्णः प्रवर्तनी ररदो वि
 श्वधेनाः ॥ अर्तुण्युवंतं विर्यतम बुध्यमानं सुषुपाणिमिद्र । सप्तप्रतिप्रवर्तं आशयानुमहि वज्रेण विरिणाऽअपर्व
 न् ॥ अक्षोदयच्छर्वसाक्षामवृध्वं वाणवा तस्त विधीमिद्रिद्रः । हृह्बान्यौ भ्रादुशमानऽओजोवाभिनत्कुभः पर्वतानां ॥
 अभिप्रदद्रुर्जनयो न गर्भरथाऽइव प्रययुः साकमद्रयः । अर्तपयो विसृतं ऽउजऽऊर्मिन्त्वं वृत्तोऽअरिणाऽइंद्रसिधून् ॥ १ ॥
 त्वं महीमवानि विश्वधेनां तुर्वीते ये वय्यायुक्षरंती । अरंमयो नमसैजदणैः सुतरणोऽअकृणोरिंद्रसिधून् ॥ १ ॥
 नवकाध्वसाऽअपि न्वद्युवतीर्क्षतुज्ञाः । धन्या न्यज्राऽअपृणकृतपाणोऽअधोगोरिंद्रसिधून् ॥ प्रायुवो नमन्वो इं
 रदंश्च गर्तौ वृत्रं जघ्नवोऽअसज्जिद्रिद्रसिधून् । परिष्ठिताऽअतृणद्वद्धधानाः सीराऽइंद्रः स्रवि तवेष्टुथिव्या ॥ पूर्वोरुषसः श
 म्भुवोऽअद्वानं निवेशनाद्धरिवऽआजमर्थ । व्यंघोऽअख्यदहिमादद्वानो निभूदुखच्छित्समरंतपर्व ॥ प्रतेपूर्वीणि करं
 (४।२।९) एवात्वामित्येकादश च ससूक्तस्य गौतमो वासदेव इन्द्रस्त्रिष्टुप् ।

णानिप्रविद्धोऽआहविदुपेकरांसि । यथायथावृण्व्यानिस्वगतोपासिराजन्नयार्थिवेपीः ॥ नृष्टुतऽइंद्र० ॥ २ ॥
 (४।२।१०) आनऽइंद्रोदुरादानेऽआसादभिष्टिकृदवसेयासदुग्रः । ओजिष्ठेभिर्नपतिर्वज्रबाहुः संगेसमत्सुतुर्वणिः
 पृतन्यून⁺ ॥ आनऽइंद्रोहरिंभिर्यात्वच्छार्वाचीनोवसेराधसेच । तिष्ठतिवज्रीमघवाविरुद्धीमंयज्ञमनुनोवाजसातो ॥
 इमंयज्ञंत्वमस्माकमिंद्रपुरोदधत्सनिष्यसिः क्रतुनः । श्वघ्रीववज्रिन्त्सनयेधनानांत्वयावयमयऽआजिजयेम ॥ उशन्नपु
 णः समनाऽउपाकेसोमस्यनुसुषुतस्यस्वधावः । पाऽइंद्रप्रतिभृतस्यमध्वः समंधसाममदः पृष्ठेन ॥ वियोरररश्वाऽक्रपिभि
 र्नेवभिर्वृक्षोनपक्कः सृण्योनजेता । मर्योनयोर्पोमभिमन्यमानोच्छाविविक्मिपुरुहुतमिंद्रं ॥ ३ ॥ गिरिर्नयः स्वर्तवोऽक्र
 ष्वऽइंद्रः सनादेवसहसेजातऽउग्रः । आदतोवज्रंस्थविरेनभीमऽउद्रेवकोशं वसुनान्यृष्टं ॥ नयस्यवर्ताजनुपान्वस्तिन
 राधसऽआमरीतामघस्य । उद्धावृपाणस्तविपीवऽउग्रास्मभ्यंदद्धिपुरुहूतरायः⁺ ॥ ईक्षरायः क्षयस्यचर्षणीनामतव्रजमे
 पवर्तासिगोना । शिक्षानरः समिधेषुप्रहावान्वस्वोराशिर्मभिनेतासिभूरं ॥ कयातच्छृण्वेशच्याशाचिषोययाकृणोतिमु
 हुकार्चिहृष्वः । पुरुदाशुषेविचिषिष्ठोऽअंहोथादधातिद्रविणंजरित्रे⁺ ॥ मानोमर्धुराभरादद्धितन्नः प्रदाशुपेदातवेभूरिय
 त्ते । नव्येदेष्णेशस्तेऽअस्मिन्तऽउक्थेप्रब्रवामवयमिंद्रस्तुतः ॥ नृष्टुतऽइंद्र० ॥ ४ ॥ (४।२।११) आयात्विद्रोव
 (४।२।१०) आनइंद्रइत्येकादशार्चसूक्तस्यगौतमोवाग्मदेवइंद्रब्रिष्टुप् । (४।२।११) आयात्विद्रइत्येकादशार्चसूक्तस्यगौतमो

स्तुतौ न किञ्चन

तिरं त्याभ्य इहस्तुतः सधमादस्तुशूरः । वावृधानस्ताविषीयस्य पूर्वाद्यो न क्षत्रमभिधति पुष्यात् ॥ तस्येदिहस्तं वथ वृष्ण्या
 ॥ इन्द्रिधुमस्तु विराधसो नृत् । यस्य क्रतुर्विदुष्योऽनसुधादसाह्वान्तरुत्रोऽभ्यास्ति कृष्टीः ॥ आयान्तिवद्रोदिवऽआ
 पृथिव्यामक्षुपमद्रादुतवापुरीपात् । स्वर्णरादवसेनो मरुत्वान्परावतो वासदनाहृतस्य ॥ स्थुरस्वरायो बहुतोयऽइशेत
 मुष्टवामविदयोष्विन्द्र । योवायुनाजयति गोमतीपृष्ठधृष्ण्यायानयति वस्योऽअच्छ ॥ उपयोनमोनमसिस्तभायन्नियतिवा
 चंजनयन्यजध्वै । कंजसानः पुरुवारऽउकथैरेदं कृष्णीतसर्दनेपुहोता ॥ ५ ॥ धिपायदिधिपण्यंतः सरण्यान्तसदतोऽ
 आद्रिमाशिजस्यगोहे । आदुरोषाः पारस्यस्य होता योनो महान्तस्वरणेषु वहिः ॥ सत्रायदी भावस्ववृष्णः सिषक्तिशुष्मः
 स्तुवतेभराय । गुहायदीमौ शिजस्यगोहे प्रयज्जिये प्रायसेमदाय ॥ विद्यद्रासिपर्वतस्य वृष्णवेपयो भिज्जिन्वेऽअपांजवी
 सि । विदद्गैरस्वगव्यस्यगोहे यदीवाजयसुध्योऽइवहति ॥ भद्रातेहस्तासु कृतोतपाणी प्रयंतारास्तुवतेराधऽइन्द्र । का
 त्वानः शग्धिरायो भक्षीयतेवसोदव्यस्य ॥ एवावस्वऽइन्द्रः सत्यः सन्धाहुतावृत्रं वरिचः पूरवेकः । पुरुष्टुतक्र
 तिशुभ्याचिन् । ब्रह्मस्तोममघवासोममक्यायोऽअश्मानं शवसाविभ्रदेति ॥ वृषावृषधिचतुरश्रिमस्यन्नमोवाहुभ्यान्त
 वामद्वंद्वं स्त्रिष्टुप । (४।३।१) यन्नद्वद्वद्वेकादशर्चस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवंद्वं स्त्रिष्टुप ।

मंडलं

अनु. ३

॥ ३५ ॥

तमःशचीवान् । श्रियेपरुणीमपमाणऽऊर्णयस्याःपर्वाणिसख्यार्यविव्ये⁺ ॥ योद्वोद्वततमोजायमानोमहोवाजैभि
 र्महद्भिश्चशुभैः । दधानोवज्राहोरुशंतद्यामभैरजयसभूम ॥ विश्वारोधासिप्रवतश्चपूर्वाद्यौर्कृष्वाज्जनिमन्त्रेजत्
 क्षाः । आमातराभरतिशुभ्यागोर्नवत्परिज्मन्नोनुवतवार्ताः ॥ तातूतऽइंद्रमहतोमहानिश्चेष्वित्सर्वनेपुत्राच्या ।
 यच्छूरधृष्णोघृपतादधृष्वानहिचञ्च्रेणऽवुसाचिवेपीः ॥ ७ ॥ तातूतैसत्यातुविनृम्णविश्वाप्रधेनवःसिषतेवृष्णऽऊर्ध्वः ।
 अधाहुत्वधृपमणोभियानाःप्रसिधवोजवसाचक्रमंत ॥ अत्राहतेहरिवस्ताऽउद्वीरवौभिरिंद्रस्तवंतस्वसारः । यत्सीम
 नप्रमचोवद्वधानादीर्घामनुप्रसितिस्यंदयध्वै ॥ पिपीळेऽअंशुर्मद्योनसिंधुरात्याशमीशशमानस्यशक्तिः । अस्मद्वक्शुशु
 चानस्ययभ्याऽआशुर्नरुदिमतुव्योजसंगोः⁺ ॥ अस्मेवर्षिष्ठाकृणुहिज्येष्ठांनृम्णानिसत्रासंहुरेसहसि । अस्मभ्यंवृत्रासह
 नानिरंधिजहिबर्धवर्धनुपोमर्त्यस्य ॥ अस्माकुमित्सुशृणुहित्वामिद्रास्मभ्यंचित्रौऽउपमाहिवाजान् । अस्मभ्यंविश्वाऽइष
 णःपुरंधीरस्माकुंसुमघवन्वोधिगोदाः⁺ ॥ नूष्टुतऽइंद्र० ॥ ८ ॥ (४१३२) कथामहामधुधत्कस्यहोतुर्यंरंजुपाणोऽअ
 भिसोममूर्धः । पिबन्नुशानोजुपमाणोऽअंधोववक्षऽकृष्वःशुचतेधनाय ॥ कोऽअस्यवीरःसंधुमादमापसमानंशसुमति
 मिःकोऽअस्य । कदस्यचित्राचिकितेकदूतीबुधेर्मुवच्छशमानस्ययज्योः ॥ कथाशृणोतिद्व्यूमानिर्मिद्रःकथाशृण्वन्नवसा

(४१३२) कथामहामित्येकादशचंस्यसूक्तलगौतमोवामदेवइन्द्रशिष्टुप् (अत्यानातिसृणांकतंदेवतावा) ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ६

॥ ३६ ॥

मस्यवेद । काऽअस्यपूर्वीरुपमातयोहकथैर्नमाहुःपपुरिजिन्ने । कथाऽसबाधःशशमानोऽअस्यनशदुभिद्रविणदी
ध्यानः । देवोर्भुवन्नवेदामऽकृतानांनमोजग्भ्वोऽअभियज्जुजोषत् ॥ कथाकदस्याऽउषसोव्युष्टौदेवोर्मस्यसख्यंजु
जोष । कथाकदस्यसख्यंसखिभ्योयेऽअस्मिन्कमंसयुजैतत्स्वे । ९ ॥ किमादमंत्रसख्यंसखिभ्यःकुदानुतेत्रात्रंयत्र
वाम । श्रियेसुहृशोवपुरस्यसर्गाःस्वर्णचित्रतममिषऽआगोः+ ॥ कुहंजिघांसन्ध्वरसमानिंद्रांतेतिक्वेतिगमातुजसेऽअ
नीका । ऋणचिद्यज्ञऽऋणयानऽउग्रोदुरेऽअज्ञाताऽउषसोवबाधे+ ॥ ऋतस्यहिशुरुधःसंतिपूर्वाऽऋतस्यधीतिर्धृजिनानि
हंति । ऋतेनदीर्घमिषणंतृक्षऽऋतेनगावऽऋतमार्विवेशुः ॥ ऋतस्यदृष्टाधेनूपरमेदुहाते ॥ दृदिहिर्वीरोर्गृणतेवसूनि सगोपतिर्निष्पिधानो जनासः ॥ सवृत्रहत्येहव्यःसऽइड्यःससुष्टु
षि । ऋतेनदीर्घमिषणंतृक्षऽऋतेनगावऽऋतमार्विवेशुः ॥ ऋतस्यदृष्टाधेनूपरमेदुहाते ॥ दृदिहिर्वीरोर्गृणतेवसूनि सगोपतिर्निष्पिधानो जनासः ॥ सवृत्रहत्येहव्यःसऽइड्यःससुष्टु
ऋतायपथ्वीर्बहुलेगभीरेऽऋतायधेनूपरमेदुहाते ॥ दृदिहिर्वीरोर्गृणतेवसूनि सगोपतिर्निष्पिधानो जनासः ॥ सवृत्रहत्येहव्यःसऽइड्यःससुष्टु
वाचीनरार्धसऽआववर्तत् । दृदिहिर्वीरोर्गृणतेवसूनि सगोपतिर्निष्पिधानो जनासः ॥ सवृत्रहत्येहव्यःसऽइड्यःससुष्टु
तऽइंद्रःसत्यरोधाः । सयामन्नामधवामत्यायत्रक्षण्यतेसुष्वयेवारिवोधात् ॥ तमिन्नरोविह्वयतेसमीकेरिक्कांसस्तन्वः
कृण्वत्त्रां । मिथोयत्यागमभ्यासोऽअगमन्नरस्तोकस्यतनयस्यसातौ+ ॥ ऋतयंतिक्षितयोयोगऽउग्राशुषाणासोमिथो
(४।३।३) कासुष्टुतिरित्येकादशर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवइंद्रस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं ४

अनु. ३

॥ ३६ ॥

ऽअर्णसातौ । संयद्विशोववृत्रंतयुध्माऽआदिन्नेमंऽइंद्रयंतेऽअभीके ॥ आदिद्धनेमंऽइंद्रियंजंतऽआदित्यक्तिःपुरोळा
 शरिरिच्यात् । आदित्सोमोविपपृच्यादसुष्वीनादिज्जुजोपवृषमंयजध्वै ॥ ११ ॥ कृणोत्यसैवारिवोयऽइत्येद्रायसोम
 मुशतेसुनोति । सुग्रीचीनेनमनसार्धिवेनन्तमित्सखायंकृणुतेसमत्सु ॥ यऽइंद्रायसनवत्सोममद्यपचात्पक्कीरुतभज्जा
 तिधानाः । प्रतमनायोरुचथानिहयन्तस्सिन्दधृष्टृषणंशुष्ममिंद्रः ॥ यदासमर्थव्यचेहघावादीर्घयदाजिमभ्यख्यद
 र्घः । अर्चिकृष्टृषणंपल्यच्छादुरोणऽआनिशितसोमसुद्धिः ॥ भूयसावत्सर्मचरत्कनीयोर्विक्रीतोऽअकानिधंपुनर्यन् ।
 सभूयसाकनीयोनारिरेचीहीनादक्ष्णविदुहंतिप्रवाणं ॥ कऽइमंदशभिर्ममंदक्रीणातिधेनुभिः । यदावृत्राणिजंघनद
 धेनमेपुनर्ददत् ॥ नूष्टुतऽईद्र० ॥ १२ ॥ (४।३।४) कोऽअद्यनयोदेवकामऽउशन्निद्रस्यख्यंजुजोप । कोवामहेव
 सेपाययुसमिद्धेऽअग्नौसुतसोमऽईहे ॥ कोनामवचसासोभ्यार्यमनायुर्वोभवतिवस्तऽउस्त्राः । कऽइंद्रस्ययुज्यंकःस
 खित्वंकोन्नात्रवष्टिकवयंकऽऊती ॥ कोदेवानामवोऽअद्यावृणीतेकऽआदित्योऽअदितिज्योतिरीहे । कस्याश्विना
 विद्रोऽअग्निःसुतस्यांशोःपिंवतिमनुसाविवेनं ॥ तस्माऽअग्निभरितःशर्मयंसज्योक्पदयात्सूर्यमुच्चरंतं । यऽइंद्रायसन
 वामेत्याहुनेनर्यायनृतमायनृणां ॥ नतंजिनंतिबहवोनद्वान्ऽउर्वेस्माऽअदितिःशर्मयंसत् । प्रियःसुकृत्प्रियऽइंद्रेम

(४।३।४) कोअवेत्यष्टवसूक्तस्यगौतमोवामदेवद्वस्त्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ६

॥ ३७ ॥

नायुःप्रियःसुप्रवीःप्रियोऽअस्यसोमी⁺ ॥ १३ ॥ सुप्रव्यःप्राशयाळेपवीरःसुव्यैःपक्तिंकृणुतेकेवलेंद्रः । नासुव्वेरापिनं
सखानजामिदुध्याव्योवहतेदर्वाचः ॥ नरेवतापणिनासख्यमिद्रोऽसुन्वतासुतपाःसंगृणीते । आस्यवेदःखिदतिहंते
नृगंविषुव्वयेपुक्तयेकेवलोलोभृत् ॥ इन्द्रं परेरेमध्यमासऽइन्द्रंयातोवसितासऽइन्द्रं । इन्द्रंक्षियतंउतयुध्यमानाऽइन्द्रंनरो
वाजयंतोहवते ॥ १४ ॥ (४।३।५) अहंमनुरभवसूर्यश्चाहंकक्षीवोऽऋषिरस्मिर्विषः । अहंकुत्समार्जुनेयन्यजेहंक
विरुशनापश्यतामा ॥ अहंशर्मिमददामार्योयाहंष्टुष्टिंदाशुषेमर्त्याय । अहमपोऽअनयंवावशानामदेवासोऽअनुकेत
मायन् ॥ अहंपुरोमंदसानोव्यैरुनर्वसाकनवतीःशंवरस्य । शततमवेश्यसर्वतातादिवोदासमतिथिग्वयदाव ॥ प्रसुष
विभ्योमरुतोविरस्तुप्रश्येनःश्येनेभ्यऽआशुपत्वा । अचक्रयायत्स्वधयासुपणोह्वयंभरुन्मनवेद्वजुष्टं ॥ भरुद्यद्विर
तोवेविजानःपथोरुणामनोजवाऽअसर्जि । तूर्ययौमर्धुनासोम्येनोतश्रवोविविदेश्येनोऽअत्र ॥ ऋजीपीश्येनोददमा
नोऽअंशुपरावतःशकुनोमंद्रमदं । सोमंभरद्वाहहाणोदेवानान्दिवोऽअमुष्मादुत्तराद्रादाय ॥ आदायश्येनोऽअंभर
(४।३।५) अहंमनुरितिसप्तर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवःआद्यानांतिष्ठणामात्मादेवताअंल्यानांचतसृणांश्येनस्त्रिष्टुप् (आद्यतृचेवा
मदेवैर्द्रयोर्क्वित्वविकल्पमाहुःकेचित्) ।

॥ ३७ ॥

मंडलं ४

अनु. ३

त्सोर्मसहस्रसर्वोऽयुतैवसाकं । अत्रापुरंधिरजह्वादरातीर्मेदेसोर्मस्यमराऽअमूरः ॥ १५ ॥ (४।३।६) गर्भेनुसन्न
 न्वेषामवेदमहंदेवानांजनिमानिविश्वा । शतंमापुरऽआयसीरक्षन्नधेनोजवसानिरदीयं ॥ नद्यासमामपजोपंज
 भाराभीमासित्वक्षसावीर्येण । ईर्मापुरंधिरजह्वादरातीरुतवातौऽअतरच्छुश्रुवानः ॥ अवयच्छेनोऽअस्वनीदधद्योर्वि
 यद्यद्विवातंऽऊहुःपुरंधिं । सृजद्यदस्माऽअवहक्षिपज्ज्यांकृशानुरस्त्रामर्नसामुरण्यन्+ ॥ ऋजिप्यऽईमिंद्रावतो नभुज्यु
 श्येनोजभारबृहतोऽअधिष्णोः । अंतःपतत्यतृच्यस्यपुर्णमध्यामनिप्रसितस्यतद्वेः+ ॥ अर्धश्वेतंकलशंगोर्भिरक्तमपि
 प्यानंमघवांशक्रमंघः । अच्वर्युभिःप्रयतंमध्वोऽअग्रमिंद्रोमदायुप्रतिधृत्पिबध्वैशूरोमदायुप्रतिधृत्पिबध्वै ॥ १६ ॥
 (४।३।७) त्वायुजातवतत्सोर्मसख्यऽइंद्रोऽअपोमर्नविसस्रुतस्कः । अहृन्नहिर्मरिणात्सससिधूनपावृणोदपिहितेवृषा
 नि ॥ त्वायुजानिखिद्रत्सूर्यस्येंद्रश्चक्रंसहसासद्यऽईदो । अधिष्णुनाबृहतावर्तमानंमहोद्गोऽअपविश्वायुधायि ॥ अ
 हृन्निन्द्रोऽअदहदृशिरिंदोपुरादस्यन्मध्यंदिनादुभीकै । दुर्गेदुरोणेकत्वानयातांपरुसहस्राशर्वानिर्वर्हीत् ॥ विव्वस्मा
 त्सीमधूमोऽइंद्रदस्यन्विशोदासीरकृणोरप्रशस्ताः । अर्वाधेयाममृणतुंनिशन्ननर्विन्देयामपचितिवधत्रैः ॥ एवासत्यंम

(४।३।६) गर्भेनितिपंचस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवाऽयेनखिद्रुवंत्याशकरी (परानवाष्टौवेत्युक्तमण्यामुकेरधश्चेतमित्यस्यापाक्षिकींद्रदेव
 तायदिश्येनदेवतायाअष्टर्वत्वंस्वीकृतंचेत्) । (४।३।७) त्वायुजेतिपंचस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवइंद्रखिद्रुप् (इंद्रासोमौवादेवते)

घवानायुवंतदिद्रश्चसोमोर्वमभ्यंगोः । आर्दहत्तमर्पहितान्यश्चारिरिचथुःक्षाश्चित्ततृदाना⁺ ॥ १७ ॥ (४।३।८)
 आनःस्तुतऽउपवाजेभिरूतीऽइंद्रयाहिहरिभिर्मदसानः । तिरश्चिदुर्यःसर्वनापूरुण्यागोर्भेर्गुणानःसत्यराधाः ॥ आ
 हिष्मायातिनयैश्चिकित्वान्हूयमानःसोतुभिरुपयज्ञं । स्वश्वोयोऽअभीरुर्मन्यमानःसुष्वाणेभिर्मदतिसंहवीरैः⁺ ॥ आ
 वयेदस्यकर्णवाजयध्यैजुष्टामनुप्रदिशंमदयध्यै । उद्धावृषाणोराधसेतुर्विष्मान्करन्नऽइंद्रःसुतीर्थोभयंच ॥ अच्छायो
 गंतानार्धमानमतीऽइत्थाविप्रंहवमानंगणंतं । उपत्मानिदधानोधुर्याइंशून्सहस्राणिशतानिवज्रवाहुः ॥ त्वोतासोमघ
 वक्षिद्रुविप्रावयंतैस्यामसरयौगणंतः । भेजानासोवृहद्विष्यरायऽआकार्यस्यदावनेपुरुक्षोः⁺ ॥ १८ ॥ (४।३।९)
 नकिरिद्रुत्वदुत्तरोनज्यार्योऽस्तिवृत्रहन् । नकिरेवायथात्वं⁺ ॥ सत्रातेऽअनुकुष्टयोविश्वार्चक्रेववावृतुः । सत्रामहोऽ
 असिश्रुतः⁺ ॥ विश्वेचनेदनात्वादिवासऽइंद्रयुधुः । यदहानकृमातिरः ॥ यत्रोतवाधि तेभ्यश्चक्रंकुत्साययुध्यते ।
 मषायऽइंद्रसूर्यं ॥ यत्रदेवोऽक्रघायतोविश्वोऽअयुध्यऽएकऽइत् । त्वमिंद्रवर्नूरहन् ॥ १९ ॥ यत्रोतमत्यार्यैकमरिणा
 ऽइंद्रसूर्यं । प्रावःशचीभिरेतंशं ॥ किमादुतासिबृत्रहन्मघवन्मन्युमत्तमः । अत्राहुदानुमातिरः ॥ एतच्छेदुतवीर्यं^१

(४।३।८) आनःस्तुतइतिपंचर्यस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवइंद्रबिष्टुप् । (४।३।९) नकिरिद्रेतिचतुर्विंशत्यृचस्यसूक्तस्यगौतमोवाम
 देवइन्द्रःचतुर्दश्यादितिष्टणामिद्रोपसौगायत्रीअष्टम्यत्येअनुष्टुभौ ।

मिन्द्रचकर्थपौस्थं । स्त्रियंयहुहणायुवंवधीर्दुहितरद्विवः ॥ द्विवश्चिद्धादुहितरमहान्महीयमानां । उपार्समिन्द्रसंपिण
 क् ॥ अपोषाऽअनसस्सरत्संपिष्टादहविभ्युपी । नियत्सींशिश्नयद्रुपा ॥ २० ॥ एतदस्याऽअनःशयेसुसंपिष्टंविपा
 द्या । ससारसीपरावतः ॥ उत्तसिंधुविवालयैवितस्थानामधिक्षमि । परिष्ठाऽइन्द्रमायया ॥ उत्तशुष्णस्यधृष्ण्याप्रमृ
 क्षोऽअभिवेदनं । पुरोयदस्यसंपिणक् ॥ उत्तदासंकौलितरंबृहतःपर्वतादाधं । अर्वाहन्निद्रशंबरं ॥ उत्तदासस्यवचि
 नःसहस्राणिशतावधीः । अधिपंचप्रधीर्डरिव ॥ २१ ॥ उत्तयंपुत्रमयुवःपरवृक्तंशतक्रतुः । उक्थेष्विद्रुऽआभजत् ॥
 उत्तयातुर्वशायद्रुऽअस्त्राताराशचीपतिः । इन्द्रोविद्वोऽअपारयत् ॥ उत्तयासद्यऽआर्यासुरयोरिन्द्रपारतः । अर्णोचि
 त्ररथावधीः ॥ अनुद्वार्जहितानयौधंश्रोणंचवृत्रहन् । नतत्सुन्नमष्टवे ॥ शतमम्भन्मयीनांपुरामिन्द्रोव्यास्यत् । दि
 वोदासायद्राशुषे ॥ २२ ॥ अस्वापयहृभीतयेसहस्रांश्चिशतंह्यैः । दासानामिन्द्रोमायया ॥ सधेदुतासिवृत्रहन्समा
 नऽइन्द्रगोपतिः । यस्ताविश्वानिचिच्युषे ॥ उत्तननयदिन्द्रियंकर्ष्याऽइन्द्रपौस्थं । अद्यानकिष्टदामिनत् ॥ वामंवा
 तऽआदुरेदेवोदाल्वर्यमा । वामंपुषावामंभगौवामंदेवःकरूळती ॥ २३ ॥ (४।३।१०) कयानश्चित्रऽआभुवदुतीस
 दावृधुःसखा । कथाशचिष्ठयावृता ॥ कस्त्वासत्योमदानांमहिष्ठोमत्सदंधसः । इह्वाचिद्वारुजेवसु ॥ अभीषुणःस

(४।३।१०) कयानइतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवइन्द्रोगायत्रीवृतीयापादनिचत् ।

स्त्रीनामविताजिरिपुणां । शतंभवास्युतिभिः ॥ अभीनऽआववृत्स्वचक्रंनवृत्तमर्वतः । नियुजिंश्चर्षणीनां⁺
 उतस्माहित्वामाहुरिन्मघवानंशचीपते । दातारमविदीधयुं ॥ उतस्मांसद्यऽइत्परिशशमानायसुन्वते । अधत्वेऽअधसूर्ये ॥ प्रवत्ता
 वसु ॥ नहिष्मते शतंचनराधोवरतऽआमुरः । नच्यौलानिकरिष्यतः⁺ ॥ अस्मोऽअवंतुते शतमस्मान्त्सहस्रमतयः । पूरुचिन्महसे
 श्वहेंद्रायापरीणसा । अस्मान्विश्वाभिरुतिभिः ॥ अस्मभ्यंतोऽअपावृधिव्रजोऽअस्तेऽवगोमतः । अस्मोऽअविष्टिवि
 ॥ २६ ॥ (४।३।११) आतूनऽइंद्रवृत्रहन्नस्माकमर्धमार्गहि । गव्युरश्वयुरीयते ॥ अस्माकमुत्तमंकृधिश्चवोदेवेषुसूर्य । नवाभिरिंद्रोतिभिः ॥
 त्रिणीष्वा । चित्रंकृणोष्युतये ॥ इन्ध्रेभिश्चिच्छरीयांसंहसिबाधंतमोजसा । भूमिश्चिद्धासितूतुजिराचिन्नचि
 त्वाभिर्नोनुमः । अस्मोऽअस्मोऽइदुदव ॥ सनश्चित्राभिरद्रिवोनवद्याभिरुतिभिः । सखिभिर्येत्वेसचा ॥ वयमिद्रत्वेसचावयं
 भयामोषुत्वावतःसखायऽइंद्रंगोमतः । युजोवाजायुघृष्वये ॥ त्वहेकऽईशिषऽइद्रवार्जस्यगोमतः । सनोयंधिमहीमि
 (४।३।११) आतूनइति चतुर्विंशत्यृचस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवइंद्रोत्ययोरिंद्राश्वौगायत्री ।

षं ॥ नत्वावरतेऽन्यथायदित्सिस्तुतोमघं । स्तोत्रभ्यऽइंद्रगिर्वणः ॥ अभित्वागोर्तमागिरानूपतप्रदावने । इंद्रवा
 जायघृष्वये ॥ प्रतेवोचामवीर्याइयामदसानऽआरुजः । पुरोदासीरभीत्य ॥ २८ ॥ तातेगुणंतिवेधसोयानिचकर्थ
 पौस्या । सुतेष्विंद्रगिर्वणः ॥ अवीवृधंतगतमाऽइंद्रत्वेस्तोमवाहसः । ऐधुधावीरवृद्धशः ॥ यच्चिद्धिशश्वतामसींद्रसा
 धारणस्त्वं । तत्त्वावयंहवामहे ॥ अर्वाचीनोर्वसोभवास्मेसुमत्स्वांधसः । सोमानामिंद्रसोमपाः ॥ अस्माकंत्वामतीना
 मास्तोमऽइंद्रयच्छतु । अर्वागावर्तयाहरी ॥ पुरोळाशंचनोघसौजोषयासेगिरश्चनः । वृधयुरिवयोर्षणां ॥ २९ ॥
 सहस्रं व्यतीनायुक्तानामिंद्रमीमहे । शतंसोमस्यत्वार्यः ॥ सहस्रातिशतावयंगवामाच्यवयामसि । अस्त्रारार्धऽएतु
 ते ॥ दशतेकलशानां हिरण्यानामधीमहि । भूरिदाऽअसिवृत्रहन् ॥ भूरिद्राभूरिदेहिनोमादुभ्यर्भर । भूरिघेदि
 द्रदित्ससि ॥ भूरिदाह्यसि श्रुतः पुरुत्राशूरवृत्रहन् । आनोभजस्वरार्धसि ॥ प्रतेवभूर्विचक्षणशंसमिगोपणोनपात् ।
 माभ्यांगाऽअनुशिश्नथः ॥ कनीनकेर्वविद्रधेनवेद्रुपदेऽअर्भके । वभ्रूयामेषुशोभेते ॥ अरमऽवृषयाम्णेरमनुस्रयाम्णे ।
 वभ्रूयामेष्वन्निधा ॥ ३० ॥ ॥ इति तृतीयाष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

द्वार्विशाध्यायेवर्गा. ३० सूक्तानि १४ ऋचः १५९ ॥ त्यागः ॥ इंद्रायेदं ५१ ऋताये ३ इंद्राये. २० आत्मन ३ सुपणत्मने
 स्येनाये. ८ इंद्राये इद्रासोमाभ्यामि ५ इंद्राये. १३ इंद्रोषसाभ्यामि ३ इंद्राये ५० इंद्राभ्याम्या. २ ॥ इति तृतीयेषष्ठः ॥ ६ ॥

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ७

॥ ४० ॥



अक्रमुभ्यएकादशार्भवाक्रमुर्विवेहोपनवानश्वोत्थात्रिष्टुपनोष्टौचतुरनुष्टुवंतमुतोहिदशदाधिकंहेद्यावापृ
थिव्याद्याशुपंठत्यानुष्टुब्दधिकाष्णःपंचचतस्रोत्याजगत्योत्थासौराद्राकोवामेकादशैद्रावरुणंतुमद्वितादशत्र
सदस्युःपौरुक्त्यःपळाद्याआत्मस्तवःकउश्रवत्सप्तपुरुमीढाजमीढौसौहोत्रौत्वाश्विनंहितवामेषस्यत्रिष्टुवंतमग्रं
वायव्याद्यैद्रवायवंतुगायत्रवायोचतुष्कमानुष्टुभैत्वाद्यावायव्यविहिपंचवायव्यमिदंवाषळैद्रावार्हस्पत्यंगायत्रं
यस्तस्तमैकादशवाहस्पत्यमत्येष्टौचोपांत्याजगती ॥ १ ॥
॥ हरिःओम् ॥ (४।४।१) प्रऽक्रमुभ्योदूतमिववाचमिष्यऽउपस्तिरेश्वैतरिधेनुमीळे । येवातज्जतास्तरणिभिरे
वैःपरिधांसद्योऽअपसौवभूवुः+ ॥ यदारमकन्नभर्वःपितृभ्यांपरिविष्टीवेषणादंसनोभिः । आदिहेवानामुपसव्यमोय
न्धीरांसःपृष्टिमवहन्मनायै ॥ पुनर्येचक्रुःपितरायुर्वानासनायैपैवज्जराशयाना । तेवाजोविभ्वोऽक्रभुरिद्वंतोमधु
प्सरसोनोवतुयज्ञं ॥ यत्संवत्समभवोगामरक्षन्त्यत्संवत्समभवोमाऽअपिशन् । यत्संवत्समभरन्भासोऽअस्यास्ताभिःश
मीभिरमृतत्वमशुः ॥ ज्येष्ठऽआहचमसाद्वाक्रेतिकनीयान्तीन्कृणवाभेत्याह । कुनिष्ठऽआहचतुरस्क्रेतित्वष्टऽक्रभव
स्तर्पनयद्वचोवः ॥ १ ॥ सत्यमूर्चुर्नरऽएवाहिचक्रुर्नुस्वधामभवौजग्मुरेतां । विश्वार्जमानाश्चमसौऽअहेवावेनत्त्वष्टा
(४।४।१) अक्रमुभ्यइत्येकादशार्चस्यऋगौतमोवामदेवऋभवलिष्टुर् ।

मंडलं ४

अनु. ४

॥ ४० ॥

चतुरौदहृन् ॥ द्वादशद्युन्यदगौह्यस्यातिथ्येरणन्नभर्वःससंतः । सक्षेत्राकृण्वन्नयंतसिन्धुन्धन्वातिष्ठन्नोपधीनि
 क्रमार्यः ॥ रथयेचक्रुःसुवृत्तनरेष्टायेधेनुर्विभ्वजुर्विभ्वरूपां । तडातक्षत्तुभवोरयिनःस्वर्षसःस्वर्षसःसुहस्ताः ॥ अ
 पोह्येषामजुपंतदेवाऽअभिकत्वामनसादीध्यानाः । वाजौदेवानामभवत्सुक्रमैद्रस्यऽक्रभुक्षावरुणस्यविभ्वा ॥ येहरी
 मेघयोक्थामदंतऽइंद्रायचक्रुःसुयुजायेऽअश्वा । तेरायस्पोषंद्रविणान्यसेधत्तऽक्रभवःक्षेमयंतोनमित्रं ॥ इदाह्वःपी
 तिमतवोमदधुर्नऽक्रतेऽश्रांतस्यसख्यायदेवाः । तेननमसेऽक्रभवोवधूनितीर्थेऽअस्मिन्सर्वनेदधात ॥ २ ॥ (४।४।२)
 क्रमुर्विभ्वावाजऽइंद्रौनोऽअच्छेमंयज्ञरत्नयोपयात । इदाहिवोधिषणादेव्यह्वामधात्पीतिसमदाऽअगमतावः ॥ वि
 दानासोजन्मनोवाजरत्नाऽऽतऽक्रतुर्भिक्रभवोमादयध्वं । संवोमदाऽअगमत्तसंपुरंधिःसुवीरामस्मेरयिमेरयध्वं ॥ अयं
 वीर्यज्ञऽक्रभवोकारियमार्मनुष्वत्स्रदिवौदधिध्वे । प्रवोच्छाजुजुपाणासौऽअस्थुरभूतविश्वेऽअप्रियोतवाजाः ॥ अमूढ
 वोविधतेरत्नधेयमिदानरोद्राद्युपेमर्त्याय । पिवतवाजाऽक्रभवोददेवोमार्हितुतीयंसर्वनमदाय ॥ आवाजायातोपनऽ
 क्रमुक्षामहोनेरोद्रविणसोरुणानाः । आर्वःपीतयोभिपित्वेऽअह्वमिमाऽअस्तनवृष्वऽइवगमन् ॥ ३ ॥ आर्नपातःशव
 सोयातनोपेमंयज्ञंनमसाहूयर्मानाः । सजोर्षसःसूर्योयस्यचस्थमध्वःपातरत्नधाऽइंद्रवंतः ॥ सुजोर्षाऽइंद्रवरुणेनसोमैस

(४।४।२) क्रमुर्विभ्वेत्येकादशर्चस्यसूक्त्यगौतमोवामदेवक्रभवश्चिद्रुप् ।

जोषाः पाहिगिर्वणोमरुद्भिः । अयेपाभिर्ऋतुपाभिः सजोषायासलीभीरल्लधाभिः सजोषाः ॥ सजोषसऽआदित्यैर्मोदयध्वं
 सजोषसऽऋभवः पर्वतेभिः । सजोषसोदैव्यनासवित्रासजोषसः सिंधुभीरल्लधेभिः ॥ येऽअश्विनयेपितरायऽऋतीधेनुतं
 तक्षुर्ऋभवोयेऽअर्था । येऽअसत्रायऽऋधयोदैसीयेविभ्योनरः स्वपत्यानिचक्रुः+ ॥ वेगोमंतंवाजवंतंसुवीरैर्यिधत्थवसु
 मंतंपुरुक्षुं । तेऽअग्नेपाऽऋभवोमंदसानाऽअस्मेधत्तयेचरातिगणंति ॥ नापाभूतनवौतीतृषामानिः शस्ताऽऋभवोयज्ञे
 ऽअस्मिन् । समिद्रणमदथसंमरुद्भिः संराजंभीरल्लधेयायदेवाः ॥ ४ ॥ (४।४।३) इहोपयातशवसोनपातः सौर्धन्व
 नाऽऋभवोमार्पभूत । अस्मिन्हवः सर्वनेरल्लधेयंगमंत्विद्रुमनुवोमदासः ॥ आगन्धमणामिहरल्लधेयमभूत्सोमस्यसुषुतस्य
 पीतिः । सुक्रुत्ययायत्स्वपत्ययाचैऽएकंविचक्रचमसंचतुर्धा ॥ व्यकृणोतचमसंचतुर्धासखेविशिक्षेत्यब्रवीत । अथैत
 वाजाऽअमृतस्यपंथांगणं देवानामृभवः सुहस्ताः ॥ किमयस्विच्चमसऽएयऽअस्यंकाव्येनचतुरोविचक्र । अथैत
 सर्वनंमदायपातऽऋभवोमधुनः सोम्यस्य ॥ शच्याकर्तुपितरायानाशच्याकर्तचमसंदेवपानं । अथोसुनुध्वं
 षेंद्रुवाहवृभवोवाजरत्नाः ॥ ५ ॥ योवः सुनोत्यभिपित्वेऽअल्लतीव्रवाजासः सर्वनंमदाय । तस्मैरयिर्मृभवः सर्ववीरमा
 तक्षतवृषणोमंदसानाः+ ॥ प्रातः सुतर्मपिवोहर्यश्वमाध्यंदिनंसर्वनंकेवलंते । समभुभिः पिवस्वरल्लधेभिः सखाँऽर्याँऽईन्द्र
 (४।४।३) इहोपेतिनवर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवऋभवब्रिष्टुप् ।

चक्रुषुसुकृत्या⁺ ॥ येदेवासोऽअभवतासुकृत्याश्येनाऽइवेदधिदिविनिपेद । तेरलधातशवसोनपातःसौधन्वनाऽअभ
 वतामृतासः ॥ यत्तृतीयंसर्वनरल्लधेयमर्कृणुध्वंस्वपस्यासुहस्ताः । तद्वभवःपरिषिकंवऽएतत्संमदैभिरिद्वियेभिःपिव
 ध्वं ॥ ६ ॥ (४।४।४) अनश्वोजातोऽअनभीशुरुक्थ्योऽइ रथस्त्रिचक्रःपरिवर्ततेरजः । महत्तद्वोदेव्यस्यप्रवाचनंघा
 मृभवःपृथिवीयच्चपुण्यथ ॥ रथयेचक्रःसुवृत्तंसुचेतसोविह्वरंतंमनसस्परिध्या । तौऽऊन्व^१स्यसर्वनस्यपीतयऽआवो
 वाजाऽक्रभवोवेदयामसि ॥ तद्वोवाचाऽक्रभवःसुप्रवाचनंदेवेषुविभवोऽअभवन्महित्वनं । जिब्रीयत्संतापितरासना
 जुरापुनर्युवानाचरथायतक्षथ ॥ एकंविचक्रमसंचतुर्वयंनिश्चर्मणोगामरिणीतधीतिभिः । अथादेवेष्वमृतत्वमानश
 श्रष्टीवाजाऽक्रभवस्तद्वऽउक्थ्यं ॥ क्रभूतोरयिःप्रथमश्रवस्तमोवार्जश्रुतासोयमर्जीजनन्नरः । विभ्वृतष्टोविदथैषुप्रवा
 च्योयंदेवासोवथासविचर्षणिः ॥ ७ ॥ सवाज्यर्वासऽक्रर्षिर्वचस्यासशूरोऽअस्तापृतनासुदुष्टरः । सरायस्योपंससुवी
 र्धदधेयंवाजोविभवौऽक्रभवोयमाविषुः ॥ श्रेष्ठवःपेशोऽअधिधायिदर्शतंस्तोमोवाजाऽक्रभवस्तंजुष्टन । धीरसोहि
 ष्ठाकवयौविपश्चित्तान्वऽएनाब्रह्मणानेदयामसि ॥ युयमस्मभ्यंधिषणाभ्यस्परिविद्वंसोविश्वानर्योणिभोजना । ह्य
 मंतंवाजंवृषशुष्ममुत्तमानोरयिर्मभवस्तक्षतावयः ॥ इहप्रजामिहरयिरराणाऽइहश्रवोवीरवत्क्षतानः । येनवयंचि

(४।४।४) अनश्वोजातइतिचवर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामेदेवक्रभवोजगलत्यात्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ७

। ४२ ॥

मंडलं ४

अनु. ४

॥ ४२ ॥

तयेमात्यन्यान्तंवाजैचित्रमृभवोददानः ॥ ८ ॥ (४।४।५) उपनोवाजाऽअध्वर्युमुक्षादेवायातपथिभिर्देवानैः ।
यथायज्ञमनुषोविश्वा इ सुदर्धिवर्षणाः सुदिनेष्वहो ॥ तेवोहृदेमनसेसंतुयज्ञाजुष्टसोऽअद्यधतर्निर्णिजोगुः । प्रवःसु
तासोहरयंतपर्णाः ऋतेदक्षायहर्षयंतपीताः+ ॥ त्रुद्रायदेवाहितंयथावःस्तोमोवाजाऽऋमुक्षणोददेवः । प्रवःसु
परसुविधुयुष्मेसचावृहादिवेपुसोमं ॥ पीवोऽअश्वाः शुचद्रथाहिभूतार्यः शिप्रावाजिनः सुनिष्काः । जुह्वेमनुष्वदु
नपातोनुवश्चेत्यग्रियंमदाय ॥ ऋमुमुमुक्षणोरयिवाजैवाजिन्तंयुजं । इन्द्रस्वंहवामहेसदासातममश्विनं ॥ ९ ॥
सेहभवोयमवथययमिंद्रश्चमर्त्यं । सधीभिरस्तुसनितामेधसातासोऽअर्वता ॥ विनोवाजाऽऋमुक्षणः पथाश्चितनयष्ट
वे । अस्मभ्यंसूरयःस्तुताविश्वाऽआशास्तरीपणि ॥ तनोवाजाऽऋमुक्षणऽइंद्रनासत्यारयिं । समश्वचर्पणिभ्यऽआप
रुशस्तऽमघत्तये ॥ १० ॥ (४।४।६) उत्तोहिवाद्रात्रासंतिपूर्वायापरुभ्यस्त्रसर्दस्युर्नितोशे । क्षेत्रासांददथुरुवरासां
घ्नंदस्युभ्योऽअभिभूतिमग्रं+ ॥ उत्तवाजिनंपुरुनिष्पिध्वानंदधिकामुददथुर्विश्वकृष्टिं । ऋजिप्यंश्येनंप्रषितप्सुमाशुं
चर्कृत्यमर्योनपत्तिंशरं ॥ यंसीमनुप्रवतेवृद्रवंतिविश्वः परुर्मदतिहर्षमाणः । पृडिगृध्यंतंमेधयुंनशूरंरथतुरंवातमिवध्र
(४।४।५) उपनइत्यष्टर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवऋभवस्त्रिष्टुप् अंत्याश्चतस्रोनुष्टुभः । (४।४।६) उत्तोहीतिदशर्चस्यसूक्तस्यगौतमो

वामदेवोद्विक्रावाद्याद्यावापृथिवीत्रिष्टुप् ।

जैतं ॥ यः स्मारुधानो गार्थासमस्तुतश्चरति गोपगच्छन् । आविर्कजीको विदथानि चिक्वत्तिरोऽअरतिपर्यापऽआ
 योः⁺ ॥ उत सैनं वस्त्रमर्थिनतायुमनुक्रोशति क्षितयोभरेषु । नीचार्यमानं जसुरिन्द्रयेनं श्रवश्चाच्छापशमच्चयुधं⁺ ॥ ११ ॥
 उत स्मासुप्रथमः सरिज्यन्निवेति श्रेणिभीरथानां । स्रजैकृणवानो जन्यो न शुभ्वारिणुरेरेहत्किरणं ददृश्वान्⁺ ॥ उतस्य
 वाजीसहुरिर्कृतावाशुश्रूषमाणस्तान्वासमर्थे । तुरयतीयुतुरयन्नृजिप्योधिभ्रुवोः किरतरेणुमंजन्⁺ ॥ उतस्मास्यतन्यतो
 रिवद्योर्कैघायतोऽअभियुजोभयते । यदासहस्रमभिपीमयोधीहूर्वल्लुः स्याभवति भीमऽक्कुंजन्⁺ ॥ उतस्मास्यपनयंति ज
 नाजतिर्कृष्टिप्रोऽअभिमूर्तिमाशोः । उतैनमाहुः समिधे वियंतः परादधिकाऽअसरत्सहस्रैः ॥ आदधिकाः शर्वसापंचक्रु
 ष्टीः सूर्येऽइव ज्योतिषा पस्तान । सहस्रसाः शतसावाज्यवर्षा पृणक्तुमध्वासमिमावर्चांसि ॥ १२ ॥ (४१४।७) आशु
 दधिकांतमुनुष्टवामादिवस्पृथिव्याऽउत च किराम । उच्छंतीर्मासपसः स्रुदयं त्वति विश्वनिदुरितानि पर्पन् ॥ महश्चर्क
 म्यवैतः क्रतुप्रादधिकाव्यः पुरुवारस्यवृष्णः । यंपुरुभ्यो दीदृवांसनाग्निदुधुर्मित्रावरुणाततुरिं ॥ योऽअश्वस्यदधिका
 व्नोऽअकरीत्समिधेऽअग्राऽउपसोव्युष्टौ । अनो गंसंतमर्दितः कृणोतुसमित्रेणवरुणेनासजोपाः ॥ दधिकाव्योऽइप
 ऽऊजोमहोयदमन्महिमरुतानामभद्रं । स्वस्त्येवरुणं मित्रमुग्निं हवामहऽइंद्रवज्रवाहुं ॥ इंद्रमिवेदभूये विह्वयंतऽउदीरा

(४१४।७) आशुमिति पटुचस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवो दधिकावाग्निपुवला नुष्टुप् ।

णाद्यज्ञमुपप्रयंतः । दधिकामसूदनंमर्त्यायददधुमित्रावरुणानोऽअन्धं ॥ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वंस्यवाजि
नः । सुरभिनेमुखाकरत्नणऽआधूषितारिपत् ॥ १३ ॥ (४।४।८) दधिक्राव्णऽइदुनुचर्किरामविश्वाऽइन्मामष
सःसूदयंतु । अपामग्नेरुषसःसूर्यस्यबृहस्पतेरांगिरसस्यजिष्णोः+ ॥ सत्वाभरिवोगविषोदुवन्यसच्छ्वस्यादिपऽउषसे
स्तुरण्यसत् । सत्योद्वोद्वरःपतंगरोदधिक्रावेपमूर्जस्वर्जनत् ॥ उतस्मास्यद्रवतस्तुरण्यतःपूर्णनेवेरनुवातिप्रगर्धिनः ।
इयेनस्यैवधर्जतोऽअंकुसंपरिदधिक्राव्णःसहोर्जातिरित्रतः ॥ उतस्यवाजीक्षिपुर्णितुरण्यतिग्रीवायांबद्धोऽअपिकक्षऽआ
सर्ति । कर्तुदधिक्राऽअनुसंतवीत्वत्पथामंकांस्यन्वापनीफणत् ॥ हंसःशुचिपद्मसुरंतरिक्षसद्धोतविदिषदतिथिर्दुरोण
सत् । नृषद्वरसहसद्व्योमसदुब्बागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतं ॥ १४ ॥ (४।४।९) इंद्राकोवावरुणासुन्नमाप
स्तोमोहविष्मोऽअमृतोनहोता । योवांहृदिऋतुमोऽअस्मदुक्तःपस्पशोदिद्रावरुणानमस्वान् ॥ इंद्राह्योवरुणाचक्रऽआ
पीदेवौमर्तःसख्यायुप्रयस्वान् । सहतिवृत्रासमिधेषुशन्नवोभिर्वामहद्भिःसप्रशृण्वे ॥ इंद्राहुरत्नंवरुणाधेष्टेथानृभ्यः
शशमानेभ्यस्ता । यद्रीसखायासख्यायुसोमैःसुतेभिःसुप्रयसामादयैते ॥ इंद्रायुंवरुणादिद्युर्मस्मिन्नोर्जिष्ठमुग्रानिव

(४।४।८) दधिक्राव्णइतिपचर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवोदधिक्रावाअंत्यायाःसूर्यस्त्रिष्टुप्अंत्याश्चतस्रोजगत्यः । (४।४।९) इंद्रा-
कोवामित्येकादशर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवइंद्रावरुणौत्रिष्टुप् ।

धिष्टवज्रं । योनौदुरेवोवृकतिर्दुर्भीतिस्तस्मिन्मिमाथामभिभूत्योजः ॥ इन्द्राद्युर्वरुणाभूतमस्याधियः प्रेतारवृषभेवधे
नोः । सानौदुहीयद्यवसेवगत्वीसहस्रधारापर्यसामहीगौः⁺ ॥ १५ ॥ लोकहितेनयऽउर्वरासुरोदृशीकेश्वरुणश्चपौ
स्ये । इन्द्रानोऽअत्रवरुणास्यातामवोभिर्दुस्सापरितकभ्यायां ॥ यूवामिच्छवसेपय्यायपरिभूतीगविपःस्वापी । वृणीम
हैसख्यार्यप्रियायुशूराभिहिष्ठापितरेवशंभू⁺ ॥ तावांधियोवसेवाजयतीराजिनर्जमुयुवयूःसुदानू । श्रियेनगावऽउप
सोममस्थुरिंद्रंगिरेवरुणंमेमनीपाऽअमह्युपद्रविणमिच्छर्मानाः । उपेमस्थुजोष्टारंऽइव
वस्वोरध्वीरिवश्रवसोभिक्षमाणाः ॥ अभ्यस्यत्सनारथ्यस्यपृष्टेर्नित्यस्वरायःपतयःस्याम । तार्चक्राणाऽऽकृतिभिर्नव्य
सीभिरस्त्राचार्योनियुतःसचंतां ॥ आनोबृहंताबृहतीभिरूतीऽइंद्रयातंवरुणवाजसातौ । यद्विद्यवःशृतनासुप्रकीळा
न्तस्यवांस्यामसनितारंऽआजेः⁺ ॥ १६ ॥ (४।४।१०) ममद्विताराष्ट्रक्षत्रियस्यविश्वयोर्विश्वेऽअमृतायथानः ।
ऋतुसचंतेवरुणस्यदेवाराजोमिच्छेत्पुंसस्यवज्रेः ॥ अहराजावरुणोमह्यंतान्यसूर्याणिप्रथमाधारयंत । ऋतुसचंते० ॥
अहमिंद्रोचरुणस्तेर्महित्वोर्वीगभीरेरजसीसमेकै । त्वष्टवुविश्वामुर्वनानिबिद्वान्त्समैर्युरोदसीधारयंच ॥ अहमपोऽअं
पिन्वमुक्षमाणाधारयंचदिवंसर्दनऽऋतस्य । ऋतेनपुत्रोऽअर्दितेर्ऋतावोतत्रिधातुप्रथयुद्विभूम ॥ मानरःस्वभवाजयंतो

(४।४।१०) ममद्वितेतिदशर्चस्यसूक्तस्यपैरुक्तस्यस्वसदस्युःआद्यानापणान्नसदस्युर्देवताअद्यानाचतस्तृणाभिर्द्रावरुणौत्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ७

॥ ४४ ॥

मां वृताः समरणे हवन्ते । कृणोभ्याजिमघवाहमिन्द्र इयमिरेणुमभिभूत्योजाः ॥ १७ ॥ अहंताविश्वचक्रं न किमदिव्यं
सहो वरतेऽप्रतीतं । यन्मासो मासो मदन्यदुक्थो भेभ्येते रजसीऽअपारे ॥ विदुष्टे विश्वामुर्वनानितस्यताग्रब्रवी
षिवरुणा यवेधः । त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान्त्ववृत्तोऽरिणाऽइन्द्रसिं धून् ॥ अस्माकमन्नपितरस्तऽआसन्त्ससऽऋष
णानमोभिः । अथाराजानं व्रसदस्युमस्याऽइन्द्रं वृत्रतुरं मर्धद्वं ॥ परुक्रुत्सानीहि वामदाशङ्खव्योभिरिन्द्रावरु
तां धेनुमिन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहाघत्तमनं पस्फुरंती ॥ १८ ॥ (४।४।११) कऽअश्रवत्कतुमोयज्ञियानां वृदारुदेवः ।
कतमोजुपाते । कस्य मां देवी ममृतेषु प्रोष्टाहृदि श्रेयामसुष्टुतिं सुहृत्वां ॥ कोर्मळाति कतमऽआर्गमिष्टो देवानां मुक्तमः शं
भविष्ठः । रथं कर्माहुर्द्रवदश्वमाशुयसूयस्य दुहिता वृणीत ॥ मक्षहिष्मागच्छथऽईवतोद्यानिद्रोनशक्तिं परितक्म्यायां ।
द्विवऽआजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शर्चिष्ठा ॥ कावां भूदुपमातिः कयानऽआश्विनागमथो ह्यमाना । को
ध्वा माध्वीमधुवां मुषायुन्यत्सीवां पृक्षोभरजैतपक्काः ॥ सिंधुर्हवारसयांसि च दश्वान्धणावयोरुषासः परिग्मन् । तदुजु
(४।४।११) कऽअश्रवदितिसप्तर्वस्यसूक्तस्य सौहोत्रौ पुरुमीह्वाजमीह्वावश्विनौ त्रिष्टुप् ।

मंडलं ४

अनु. ४

॥ ४४ ॥

वामजिरचैतिथानेयेनपतीभवथःसूर्यार्याः ॥ इहेह्यद्वासमनापपक्षेयमस्मेसुमतिर्वाजरत्ना । उरुज्यतैज्रितारैयुव
 हश्रितःकामौनासत्यायुवद्रिक् ॥ १९ ॥ (४।४।१२) तंवारथवयमद्याहुवेमपृथुअयमश्विनासंगतिगोः । यःसूर्या
 वहतिवधुरायुर्गिर्वीहसंपुरुतमवस्युं ॥ युवंश्रियमश्विनादेवतातादिवोनपातावनथःशचीभिः । युवोर्वपुरभिपृक्षःस
 चंतेवहैतियत्कहासोरथेवां ॥ कौवामद्याकरेतरातहव्यऽकृतयेवासुतयेयायवाकैः । ऋतस्यवावनुपैपव्यायुनमोयेमा
 नोऽअश्विनाववर्तत् ॥ हिरण्ययेनपुरुभरथेनेमयुजंनोसत्योपयातं । पिवाथऽइन्मधुनःसोम्यस्यदधथोरत्नविधतेजना
 य ॥ आनोयातंदिवोऽअच्छापृथिव्याहिरण्ययेनसवृतारथेन । मावामन्येनियमन्देवयंतःसंयद्देनाभिःपव्यावां ॥
 नूनोरधिपुरुवीरंवृहंतंदस्त्रामिमाथामभयेष्वस्मे । नरोयद्वामश्विनास्तोममार्वन्त्सधस्तुतिमाजमीह्वासोऽअगमन् ॥ इ
 हेह्यद्वां० ॥ २० ॥ (४।४।१३) एषस्यभानुरुदियतियुज्यतेरथःपरिज्जमादिवोऽअस्यसानवि । पक्षासोऽअस्मि
 न्मिथूनाऽअधित्रयोद्वतस्तुरीयोमधुनोविरक्षते ॥ उद्धापक्षासोमधुमंतऽईरेतरथाऽअश्वोसऽउषसोव्युष्टिषु । अपोर्ण
 वंतस्तमऽआपरीवृतंस्वर्णशुकंतन्वतऽआरजः ॥ मध्वःपिवतंमधूपेभिरासभिरुतग्रियंमधुनेयुजाथारथं । आवर्तानि
 मधुनाजिन्वथस्पथोद्वतैवहेथेमधुमंतमश्विना ॥ हुंसासोयेवांमधुमंतोऽअस्त्रिधोहिरण्यपर्णाऽउहुवऽउषर्बुधः । उद्द

(४।४।१२) तवामितिसप्तर्चस्यसूक्तस्यसौहोत्रौपुरुमीह्वाजमीह्वावधिनौत्रिष्टुप् । (४।४।१३) एषस्यइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यगौतमो

मुतोमंदिनोमंदिनिस्पृशोमध्वोनमक्षुःसर्वनानिगच्छथः ॥ स्वध्वरासोमधुमंतोऽअग्नयऽउस्त्राजरंतेप्रातिवस्तोरश्विनो ।
यक्षि कहेस्तस्तरणिर्विचक्षणःसोमं सुषावमधुमंतमद्रिभिः ॥ आकेनिपासोऽअहर्भिर्दिविध्वतःस्वर्णशुक्रंतुन्वत्ऽआर
रोयोऽअस्ति । येनसद्यःपरिरजोसियाथोहविष्मंतंरणिभोजमच्छे ॥ २१ ॥ (४।५।१) अग्रं पिवामधूनांसुतंवायो
दिविष्टिषु । त्वंहिपूर्वपाऽअसि ॥ शतेनानोऽअभिष्टिभिर्नियुत्वोऽइंद्रसारथिः । वायो सुतस्यंतुपतं ॥ आवासहसंह
रयऽइंद्रवायूऽअभिप्रयः । वहंतुसोमपीतये ॥ इंद्रवायूऽअयंसुतस्तंदेवैभिःसजोषसा । पिबंतं द्राशुषोगहे ॥ इह
ध्रुपार्जसाद्राश्वांसुमुपगच्छतं । इंद्रवायूऽइहागतं ॥ इंद्रवायूऽअयंसुतस्तंदेवैभिःसजोषसा । पिबंतं द्राशुषोगहे ॥ इह
प्रघाणमस्तुवामिंद्रवायूविमोचनं । इहवांसोमपीतये ॥ इहवांसोमपीतये ॥ २२ ॥ (४।५।२) वायोऽशुक्रोऽअयामितेमध्वोऽअग्रं दिवि
ष्टिषु । आयाहि सोमपीतये स्याहो देव नियुत्वता ॥ इंद्रवायवेषांसोमनापीतिमहथः । युवांहियंती देवो निम्नमापो
नसर्ध्वक् ॥ वायविंद्रश्चशुष्मिणा सरथं शवसस्पती । नियुत्वंतानऽकृतयऽआयातंसोमपीतये ॥ यावांसंति पुरुस्पृहो
वामदेवो धिनौ जगत्या त्रिष्टुप् । (४।५।१) अग्रं पिबेति सप्तर्चस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेव इंद्रवायू आद्यावायुरनुष्टुप् ।
शुक्र इति चतुर्कचस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेव इंद्रवायू आद्यावायुरनुष्टुप् । (४।५।२) वायो

नि॒युतो॑द्वाशु॒पेन॑रा । अ॒स्मेता॒र्यज्ञ॑वाहु॒सैद्र॑वाय॒निर्य॑च्छतं ॥ २३ ॥ (४।५।३) वि॒हिहो॒त्राऽअ॒वीता॑वि॒पोन॑रायो॒ऽअ॒
 र्यः । वा॒य॒वाचं॑द्रेण॒रथै॒नया॑हि॒सुत॑स्य॒पीत॑र्यै ॥ नि॒र्युवा॑णो॒ऽअ॒शस्ती॑र्नि॒युत्वो॑ऽइ॒न्द्रसार॑थिः । वा॒य॒वा० ॥ अ॒नु॒कृष्णे॑वसु॒
 धिती॑ये॒माते॑वि॒श्वेपे॑शसा । वा॒य॒वा० ॥ व॑ह॒तुत्वा॑मनो॒युजो॑यु॒क्तासो॑नव॒तिर्न॑व । वा॒य॒वा० ॥ वा॒यो॒शुतं॑हरी॒णांयु॑वस्व॒
 पो॒ष्याणां॑ । उ॒तवा॑तेसह॒स्त्रिणो॑रथ॒ऽआ॒यातु॑पा॒र्जसा ॥ २४ ॥ (४।५।४) इ॒दंवा॑मा॒स्येहु॑विःप्रि॒यमि॑न्द्राबृहस्पती ।
 उ॒क्थंम॑द॒श्चश॑स्यते ॥ अ॒यंवा॑प॒रि॒पिच्य॑तेसोम॒ऽइ॒न्द्राबृ॑हस्पती । चारु॒र्मदा॑य॒पीत॑र्यै ॥ आ॒न॒ऽइ॒न्द्राबृ॑हस्पतीगृहमि॒न्द्रश्च॑ग
 च्छतं । सोम॒पासो॑र्म॒पीत॑र्यै ॥ अ॒स्मेऽइ॒न्द्राबृ॑हस्पतीर्यि॒धं च॑त॒शत॑ग्विनं । अ॒भ्वाव॑तंसह॒स्त्रिणं॑ ॥ इ॒न्द्राबृ॑हस्पतीव॒यंस॑तेगी
 भि॒ह्वाम॑हे । अ॒स्यसो॑र्म॒स्यपी॑त॒र्यै ॥ सोम॑मि॒न्द्राबृ॑हस्पतीपि॒वंत॑दाशु॒भोग॑हे । मा॒दये॑था॒तदो॑कसा ॥ २५ ॥ (४।५।५)
 यस्त॑स्तंभ॒सह॑सावि॒ज्ज्मोऽअं॑तान्बृहस्पति॒स्त्रिप॑थ॒स्थोर॑वैण । तं॒प्र॒त्नास॑ऽऋषयोदी॒ध्यानाः॑प॒रोवि॑प्रा॒दधि॑र॒मं॒द्रजि॑ह्वं ॥ धु॒ने
 तयः॑सु॒प्रके॑तंम॒दतो॑बृहस्पते॒ऽअ॒भिये॑नस्त॒त्तमे॑ । पृ॒षंत॑स॒प्रम॑द॒ब्धम॑व॒र्चबृ॑हस्पते॒रक्ष॑ताद॒स्ययो॑निं ॥ बृहस्पते॒याप॑र॒माप॑राव
 दत्त॑ऽआ॒र्तऽऋ॒तुस्पृ॑शोनिषेदुः । तु॒भ्यं॒खा॒ताऽअ॒व॒ताऽअ॒द्रि॒दुग्ध॑म॒ध्वःश्चो॑तं॒त्यभि॑तो॒विर॑ष्णं ॥ बृहस्पतिः॒प्रथ॑मंजाय

(४।५।३) विहिहोत्रा इति पंचर्यस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवो वायुस्तुष्टु । (४।५।४) इदवामिति षडृचस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेव-
 इन्द्राबृहस्पती गायत्री । (४।५।५) यस्तस्तेभ्येकादश र्यस्य सूक्तस्य गौतमो वामदेवो बृहस्पतिरत्ययो द्वयो रिन्द्राबृहस्पती त्रिष्टुप् दशमी जगती ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ७

॥ ४६ ॥

मानोमहो ज्योतिषः परमेव्योमन् । ससास्यस्तु विजातो रवेण विसरस्मि रथमुत्तमांसि ॥
लंररोजफलिगरेण । बृहस्पतिरुस्रियाहव्यसूदुः कर्निकदुद्रावशतीरुदजत् ॥ २६ ॥ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णेय
शैर्विधेमनमसाहविभिः । बृहस्पते सुप्रजावीरवतो वयस्यामपतयोरयीणां ॥ सऽइद्राजाप्रतिजन्यानि विश्वाशुभे
णतस्थावभिर्वीर्येण । बृहस्पतियः सुभृतं विभर्ति वल्गयति वदते पूर्वभाजं ॥ सऽइत्क्षेति सुधितऽओकसिस्वेतस्माऽइळा
पिन्वते विश्वदानीम् । तस्मै विशः स्वयमेवानमते यास्मिन् ब्रह्मणो राजनि पूर्वऽएति ॥ अग्रतीतो जयति संधनो निप्रतिजन्या
न्युतया सजन्त्या । अवस्य वेयोवरिवः कृणोति ब्रह्मणो राजा तमवति देवाः ॥ इन्द्रश्च सोमं पिवतं बृहस्पते स्मिन्यज्ञे मं दसा
नावृषणवसू । आवां विशं श्रुत्वि देवः स्वाभुवोस्मे रयिं सर्ववीरं निचच्छतं ॥ बृहस्पतऽइद्रवर्धतनः सचासावा सुमतिर्भूत्वस्मे ।
अविष्टं धियो जिगतं पुरंधीर्जुस्तमर्यो वनुषामरतीः ॥ २७ ॥ इति तृतीयाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

त्रयोविंशाध्यायेवर्गाः २७ सूक्तानि १८ ऋचः १४४ ॥ त्यागः ॥ ऋसुभ्य. ४८ चाव्यापृथिवीभ्या. १ दधिक्राव्ण. १९ सूर्याये. १
इंद्रावरुणभ्या. ११ त्रसदस्यव. ६ इंद्रावरुणभ्या. ४ अश्विभ्या. २१ वायव. १ इंद्रवायुभ्या. ६ वायवे. इंद्रवायुभ्या. ३ वायव. ५
इंद्राबृहस्पतिभ्या. ६ बृहस्पतय. ९ इंद्राबृहस्पतिभ्या. २ ॥ इति तृतीये सप्तमः ॥ ७ ॥

मंडलं ४

अनु. ५

॥ ४६ ॥

इदमुपस्यतुप्रतिष्याससगायत्रैतदेवस्यसावित्रंतुजागतमभूदेवःपटत्रिष्टुवंतकोवोदशवैश्वदेवंत्रिगायत्र्यंतंतुम
हीसप्तद्यावापृथिवीयंक्षेत्रस्याष्टौतिस्रःक्षेत्रपत्याःशुनार्थैकापरापुरउग्निकंसात्याचशुनासीराभ्यामुपांत्येसीतायै
तेचानुष्टुर्भावाद्याचतुर्थीचसमुद्रादेकादशाम्रेयंजगत्यंतसैर्यवापंगव्यंवाधृतस्तुतिर्वानमोत्रिभ्योभौमोत्रिःपं
चमेमंडलेनुक्तगोत्रमात्रेयंविद्यात्पंक्यंतस्यचसूक्तस्यशेषमानुष्टुभमवोधिद्वादशबुधविष्टिरौकुमारंकुमारोवृशो
वाजानंभौवाशक्रयंतैकवीत्यृचोस्तुवृशएवंत्वममेवसुश्रुतआद्याविराट्तृतीयामारुतरौद्रावैष्णवीत्वाभग्नए
कादशसुसमिद्धायांप्रगायत्रमग्निंतदशपांक्तंस्वायइषःपंतम्यंतैत्वामग्नेसप्तजागतं ॥ १ ॥

॥ हरिःओम् ॥ (४।५।६) इदमत्यत्पुरुतमंपुरस्ताज्ज्योतिस्तमसोवयुनोवदस्थात् । नूनंदिवोदुहितरोविभाती
र्गांतुंक्लृणवन्नृषसोजनाय ॥ अस्थुरुचित्राऽउषसःपूरस्तांन्मिताऽईवस्वरवोध्वरेषु । व्यूत्रजस्यतमसोद्धारोच्छंतीरव्रन्धु
र्चयःपावकाः+ ॥ उच्छंतीरुद्यच्चितयंतभोजान्नाधोदेयायोषसोमघोनीः । अचित्रेऽअंतःपणयःससंत्वबुध्यमानास्तम
सोविमंध्ये ॥ कवित्सदेवीःसनयोनवौवायामौबभूयादुषसोवोऽअद्य । येनानवग्वेऽअंगिरेदशवेससास्थैरेवतीरेवदू
ष+ ॥ गृयंहिदैवीर्क्रतुगुग्मिरभ्रैःपरिप्रयाथभुवनानिसृष्टाः । प्रबोधयंतीरुपसःससंतद्विपाच्चतुष्पाच्चरथायजीवं+ ॥ १ ॥

(* जनानां क्रपेः पुत्रो जान इति सर्वा ० भाष्यं । जार इति सायणः ।) (४।५।६) इदमुत्पदित्येकादशर्वस्यसूक्तस्य गौतमो वा मे देव उपास्मिष्टुप् ।

कृक्सं.

अ. ३ अ. ८

॥ ४७ ॥

कस्विदासांकतमापुर्गणीययाविधानविदुर्कृमणां । शुभंयच्छुभ्राऽऽषसश्चरंतिनविज्ञायेतसहशीरजुर्थाः+ ॥ ताद्या
ताभद्राऽऽषसःपुरासुरभिष्टिद्युम्नाऽऽकृतजातसत्याः । यास्वीजानःशशमानऽऽकथैःस्तुवच्छंसंद्रविणंसद्यऽआप ॥ ता
ऽआचरंतिसमनापुरस्तात्समानतःसमनापप्रथानाः । ऋतस्यदेवीःसदसोबुधानागवानसर्गोऽऽषसोजरंते ॥ ताऽहं
वोदुहितरोविभातीःप्रजावंतंयच्छतास्मासुदेवी । गृह्णीरभ्वमसितंरुशद्भिःशुक्रास्तनूभिःशुचयोरुचानाः+ ॥ रथिंदि
हितरोविभातीरुपब्रुवऽऽषसोयज्ञैकेतुः । वयंस्यामयशसोजनेपुतह्यौश्चधत्तांपृथिवीचंदेवी+ ॥ तद्वोदिवोदु
तिष्यासनरीजनीव्यच्छंतीपरिस्वसुः । दिवोऽअदशीदुहिता+ ॥ अर्ध्ववच्चित्रारुषीमातागवामतावरी । सखाभूदुश्चि
नोरुषाः+ ॥ उतसखास्यध्वनोरुतमातागवामसि । उतोपोवस्वऽईशिषे ॥ यावयद्वेषसंत्वाचिकित्वित्सूनुतावरि ।
प्रतिस्तोमैरभुत्समहि ॥ प्रतिभुद्राऽअहक्षतगवासर्गानरमयः । ओषाऽअप्राऽऽरुज्रयः ॥ आपमुपीविभारिव्याव
ज्योतिषातमः । उषोऽअनुस्वधामव ॥ आद्यांतनोषिरदिमभिरांतरिक्षमुरुप्रियं । उपःशुकेणशोचिषा ॥ ३॥ (४।५।८)
तदेवस्यसवितुर्वर्धिमहद्दृणीमहेऽअसुरस्यप्रचेतसः । छदिर्धेनदुशुषेयच्छतिस्मनातन्नोमहोऽउदयान्देवोऽअकुभिः ॥
(४।५।७) प्रतिष्येति सप्तर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवउपागायत्री । (४।५।८) तदेवस्येति सप्तर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवः सवितोजगती ।

मंडलं ४

अनु. ५

॥ ४७ ॥

द्विवोधतमुवनस्यप्रजापतिःपिशङ्गंद्रापिप्रतिमुंचतेकुविः । विचक्षणःप्रथयन्नापणद्वैर्वर्जजनत्सवितासुभ्रमुक्थ्यं* ॥
 आप्राजौसिदिव्यानिपाथिवाश्लोकैदेवःकृणुतेस्वायधर्मेणे । प्रवाहऽअस्माक्सवितासवीमनिनिवेशयन्प्रसुवन्नकुभि
 र्जगत् ॥ अदाभ्योमुवनानिप्रचाकशद्रुतानिदेवःसविताभिरक्षते । प्रास्नाग्वाहमुवनस्यप्रजाभ्योधुतव्रतोमहोऽजम्
 स्यराजति ॥ त्रिरंतरिक्षंसवितामहित्वनात्रीरजांसिपरिभूस्त्रीणिरोचना । तिस्रोदिवःपृथिवीस्त्रिस्रऽइन्वतित्रिभिर्व्रतै
 रभिनोरक्षतित्मना ॥ बृहत्सुम्नःप्रसवीतानिवेशनोजगतःस्थानुरुभयस्ययोवशी । सनोदेवःसविताशर्मयच्छत्वस्मेक्षयो
 यत्रिवरूथमंहसः ॥ आगेन्देवऽऽक्रतुभिर्वधतुक्षयं दधातुनःसवितासुप्रजामिषं । सनःक्षपाभिरहंभिश्चजिन्वतुप्रजावतं
 रयिमस्मेसमिन्वतु ॥ ४ ॥ (४।५।९) अभूदेवःसवितावंद्योनुनऽइदानीमहंऽउपवाच्योनृभिः । वियोरत्नाभजति
 मानवेभ्यःश्रेष्ठनोऽअत्रद्रविणंयथादधत् ॥ देवेभ्योहिप्रधुमंयज्ञियेभ्योमृतत्वंसवासिभागमुत्तमं । आदिहामानंसवि
 तव्यूर्णपेनूचीनाजीवितामानुषेभ्यः ॥ अचिन्तीयच्चक्रुमादैव्येजनेर्नैर्दक्षैःप्रभृतीपूरुपत्वतां । देवेषुचसवितमार्तानुषेषु
 चत्वनोऽअत्रसुवतादनागसः ॥ नम्रमियेसवितुदैव्यस्यतद्यथाविश्वंमुवनंधारयिष्यति । यत्पृथिव्यावरिमन्नास्वंगारि
 र्वर्ष्मन्दिवःसुवर्तिसत्यमस्यतत् ॥ इन्द्रज्येष्ठान्वहन्त्यःपर्वतेभ्यःक्षयोऽएभ्यःसुवसिपस्यावतः । यथायथापतयंतोवि

(४।५।९) अभूदेवइतिपङ्चस्यसूक्तस्यगौतमोवाग्भट्टःसविताजगत्स्यात्रिष्टुप् ।

येमिरऽएवैवतस्थुःसवितःसुवायते ॥ येतेत्रिरहन्सवितःसुवासौदिवोदेवेसौभगमासुवन्ति । इन्द्रोद्यावापृथिवीसिंधुर
 क्रिरादित्यैर्नोऽदितिःशर्मयंसत् ॥ ५ ॥ (४।५।१०) कोवस्त्रातावसवःकोवल्ताद्यावाभूमीऽदितेन्नासीथां
 नः । सहीयसोवरुणमित्रमर्तात्कोवोध्वरेवारिवोधातिदेवाः ॥ प्रयेधामनिपव्याण्यर्चान्वयदुच्छान्वियोतारोऽअमू
 राः । विधातारोवितेदधुरजस्त्राऽऽकृतधीतयोरुरुचंतदुस्माः+ ॥ प्रपस्त्याइमर्दितिसिंधुमर्कैःस्वास्तिमीळेसख्यायदेवी ।
 उभेयथानोऽअहनीनिपातऽउपासानक्ताकरतामदब्धे ॥ व्यर्थमावरुणश्चेतिपंथामिपस्पतिःसुवितंगानुमग्निः । इन्द्रो
 विष्णुनवदुष्टुस्तवानाशर्मनोयंतमर्मवद्वरुथं ॥ आपर्वतस्यमरुतामवांसिदेवस्यत्रातुरेब्रिभगस्य । पात्पतिर्जन्यादंहसोनो
 मित्रोमित्रियादुतर्नऽउरुज्येत् ॥ ६ ॥ नूरोदसीऽअहिनावधुर्धेनस्तुवीतदेवीऽअप्येभिरिष्टैः । समुद्रंनसंचरणेसनिष्यवो
 धर्मस्वरसोनद्योइअपवन् ॥ देवैर्नोदिव्यादितिर्निपातुदेवस्त्रातात्रायतामप्रयुच्छन् । नहिमित्रस्यवरुणस्यधासिमहोम
 सिप्रमियंसान्वग्नेः+ ॥ अग्निरीशेवस्यस्याग्निर्महःसौभगस्य । तान्यस्मभ्यंरासते ॥ उपोमद्योन्यावहसूनुतेवार्या
 पुरु । अस्मभ्यंवाजिनीवति ॥ तत्सुनःसविताभगोवरुणोमित्रोऽअर्थमा । इन्द्रो नोराधुसागमत् ॥ ७ ॥ (४।५।११) मही
 (४।५।१०) कोवस्त्रातेतिदशर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवोविश्वेदेवास्त्रिष्टुपअंत्यास्त्रिष्टोगायज्यः । (भेदपक्षे-विश्वेदेवाः ७ अग्निः
 १ उपाः १ विश्वेदेवाः १ एवंदश) । (४।५।११) महीइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवोद्यावापृथिवीत्रिष्टुपअंत्यास्त्रिष्टोगायज्यः ।

द्यावापृथिवीऽद्भुतं ह्येष्टं च भवतां शुचर्यद्विरैकः । यत्सीधरिष्ठे बृहती विमिन्वन्नवच्छोक्षापप्रथानेभिरेवैः ॥ देवीदे-
 वेभिर्यजेते यजत्रैरमिनती तस्थतुरुक्षमाणे । ऋतावरीऽअद्भुतं देवपुत्रेयज्ञस्य नेत्री शुचर्यद्विरैकैः⁺ ॥ सऽइत्स्वपाभुवने
 प्वासयऽद्भुमे द्यावापृथिवीजानं । उर्वर्गभिरैरजसीसुमेकैऽअवंशे धीरः शच्यासमैरत् ॥ नूरोदसी बृहद्विन्नोवरूथैः प-
 र्त्वीवद्विरिपर्यंती सजोर्पाः । उरूचीविश्वेयजेनेति पातं धिया स्यामरथ्यः सदासाः⁺ ॥ प्रवांमहिद्यवीऽअभ्युपस्तुतिं भरा-
 महे । शुचीऽउपप्रशस्तये ॥ पुनानेतन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः । ऊह्याथे सनादृतं⁺ ॥ महीमित्रस्य साधथस्तंतीपि
 प्रतीऽऽकृतं । परियुजं निषेदथुः ॥ ८ ॥ (४।५।१२) क्षेत्रस्य पतिना वर्यहि तेनेव जयामसि । गामश्वपोपयित्वासनो
 मृळातीदृशौ ॥ क्षेत्रस्य पतेमधुमंतमामिधेनु रिवपयोऽअस्मासुधुश्च । मधुश्च तं घृतमिव सुपूतमतस्य नः पतयो मृळयंतु ॥
 मधुमतीरोपधीर्द्यावऽआपोमधुमन्नौ भवत्वंतरिक्षं । क्षेत्रस्य पतिर्मधुमन्नोऽअस्त्वरिष्यंतोऽअन्वेन चरेम ॥ शुनंवाहाः

(४।५।१२) क्षेत्रस्येत्यष्टर्वस्यसूक्तस्य गौतमो वामदेव आद्यानां तिसृणां क्षेत्रपतिर्देवता चतुर्थ्याः शुनः पंचम्यष्टम्योः शुनासीरौ पष्ठीसप्तम्योः
 सीता आद्या चतुर्थी पष्ठीसप्तम्योऽनुष्टुभः पंचमीपुरवणिकश्चोपास्त्रिष्टुभः (अत्र चतुर्थ्याः शुनोऽदंतः । तथा शुनासीरावित्यत्र केचिद्वाद्यादित्या
 वित्युच्चारयन्ति तत्र चतुरस्रं यतः वायुः शुनः सूर्य एवात्र सीरः शुनासीरौ वायुसूर्यौ वदंति । शुनासीर्यास्कंदद्रुमेनेसूर्यद्वौ तौ मन्यते शाकपूणि
 रिति शुनासीरस्वरूपेणौतकेनाचार्यमतदर्शनव्याजेन वैविध्यं प्रतिपादितं तस्मात्प्रकृतिभूतशुनासीरशब्देनोच्चारणयुक्तं) ।

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ८

॥ ४९ ॥

मंडलं ४

अनु. ५

॥ ४९ ॥

शुनंनरः शुनं कृषतुलंगलं । शुनं वरत्रावध्यं तां शुनमष्टा मुदिंगय ॥ शुनासीराविमांवाचै जुयेथां यदि विचक्रथुः पयः । ते
नेमा मुपसिंचतं ॥ अर्वाची सुभगे भवसी ते वंदामहेत्वा । सानः पयस्वती दुहा मुत्तरा मुत्तरां समो ॥ शुनं नः फाला विहृपंतु भूमिं शुमं कीनाशोऽ अभिर्यं तुवाहैः ।
शुनं पुर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मा सुधत्तं ॥ ९ ॥ (४१/५१३) समद्रादुर्मिर्मधुमोऽ उदार दुपां शुना सममृत
त्वमानद् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां ममृतस्य नाभिः ॥ वयं नाम प्रब्रवा माघतस्याऽ स्मिन्यन्ने धारयामानमो
अस्य । उपब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृंगो वमीद्वार एतत् ॥ चत्वारि शृंगत्रयोऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सोऽ
इन्द्र एतं सूर्य एतं जजान वेनादेकं स्वधशानिष्टतश्च ॥ एताऽ अर्धेति ह्यत्समद्राच्छतत्रजारि पुणानावचक्षे । घृतस्य धा
राऽ अर्धेति यमयो घृतस्य मगाऽ इव क्षिपणोरीपमणाः ॥ सिंधोरिव प्राध्वने शृघ्नना सो वातप्रमियः पतयंति यद्वाहाः । घृतस्य
धारोऽ अरुणेन वाजीकाष्ठभिर्दन्तभिः पिन्वमानः ॥ अभिप्रवतु समने वयोर्पाः कल्याण्यः १ः सयमाना सोऽ अग्निं । घृत
(४१/५१३) समद्रादूर्भिरित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य गौतमो वाग्देवो भिक्षिपुवंत्याजगती । (सूर्यो वाग्देवो वा घृतस्युतिर्वा देवता) ।

स्य॒धाराः॑स॒मिधौ॑नसंतताजु॒पाणो॑ह॒र्यति॒जाते॑व॒दाः ॥ क॒न्याऽइ॒वव॒हुतु॑मे॒तवाऽर्च॑अ॒न्य॒जानाऽअ॒भिचा॑कशीमि । यत्र
 सोमः॑स॒यते॑यत्र॒यज्ञो॑घृतस्य॒धाराऽअ॒भित॑प॒वंते ॥ अ॒भ्यर्ष॑तसुष्टु॒तिंगव्य॑मा॒जिम॒सासु॑भ॒द्राव॑ि॒णानि॑धत्त । इ॒मंय॒ज्ञंन॑य
 तदे॒वतानो॑घृतस्य॒धारा॑मधु॒मत्प॑वंते ॥ धा॒मन्ते॒विश्वं॑भुव॒नम॑धि॒श्रित॑मंतः॒समु॒द्रेहृद्यं॑तरा॒युपि॑ । अ॒पाम॑नी॒किस॑मि॒थेयऽ
 आ॒भृत॑स्त॒सम॑श्याम॒धुमंतं॑तऽ॒क्रुर्मि॑ ॥ ११ ॥ (इति॒वाम॑दे॒वंच॑तुर्थं॒मंडलं॑समाप्तं । अत्र॒सूक्तानि॑ ५८) ॥ (५।१।१) अ
 बो॒ध्यग्निः॑स॒मिधा॒जनानां॑प्रति॒धेनु॑मि॒वाय॒तीम॑पासं । यु॒ह्वाऽइ॒वप्र॑वया॒मुज्जि॑ह॒नाःप्र॒भान॑वः॒सिंघते॑नाक॒मच्छं ॥ अ॒वोधि॑
 होता॒युज॑था॒यदे॒वानु॑ध्वोऽअ॒ग्निःस॒मनाः॑प्रा॒तर॑स्थात् । स॒मिच्छ॑स्य॒रुश॑द॒दर्शि॑पाजो॒महान्दे॑वस्त॒मसो॑निर॒मोचि॑ ॥ यदी॒ग
 ण॑स्य॒रश॑नाम॒जीगः॑शु॒चिर॑क्षे॒शुचि॑भिर्गो॒भिर्गभिः॑ । आ॒दक्षि॑णायु॒ज्यते॑वा॒जय॑त्यु॒त्ताना॑मु॒ध्वोऽअ॒धय॑ज्जु॒ह्वभिः॑ ॥ अ॒ग्निम॑
 च्छ॒दे॒वय॑तांम॒नसि॑च॒क्षूषी॒वसू॒र्येसं॑चरंति । यदी॒सुवा॑तेऽउ॒पसा॑वि॒रूपे॑भ्वे॒तोवा॒जीजा॑यतेऽअ॒ग्नेऽअ॒ह्ना ॥ ज॒निष्ट॒हिजे॑
 न्योऽअ॒ग्नेऽअ॒ह्नाहि॑तो॒हितो॒ह्वंरु॑षोवनेषु । दमे॒दमे॑स॒सर॒ज्ञाद॑धानो॒ग्निर्हो॑तानि॒षसा॑दा॒यजी॑यान् ॥ अ॒ग्निर्हो॑तान्य॒सीदु॒द्य
 जी॒यानु॑प॒स्थेमा॒नुःसु॒रभाऽर्च॑लोके । यु॒वाक॒विःपु॒रुनि॑ष्ठऽ॒क्रता॑र्वा॒धर्ता॑र्क॒ष्टीना॑मु॒तम॑ध्यऽइ॒च्छः ॥ १२ ॥ प्र॒णुत्यं॑वि॒प्रम
 ध्वरे॑पु॒साधु॑म॒ग्निर्हो॑तार॒मीळ॑तेन॒मोभिः॑ । आ॒यस्त॑तान॒रोद॑सीऽ॒क्रते॑न॒नित्यं॑मृ॒जंति॒वाजि॑न॒धृतेन॑ ॥ मा॒ज्जीव्यो॑मृ॒ज्यते॑स्वे

आत्रेयेपंचमेमंडलेषडनुवाकाः । (५।१।१) अबोधोतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यात्रेयोबुधगविष्टिरावभिबिष्टुप् ।

दमूनाः कविप्रशस्तोऽतिथिः शिवोनः । सहस्रशृंगो वृषभस्तदोजा विश्वोऽग्नेः सहस्रप्रास्यन्यान् । प्रसद्योऽग्नेऽ
अत्येण्यन्यानां विर्यसैचारुतमो वभूथ । ईळन्यो वपुष्यो विभावप्रियो विशमतिथिर्मानुषीणां ॥ तुभ्यं भरति क्षितयो य
विष्टवलिर्मग्नेऽंति तदोतदूरात् । आभंदिष्ठस्य सुमतिचिकिद्भिर्बृहत्तेऽग्नेर्महिशमभद्रं ॥ आद्यरथं भानुमो भानु
रुष्टभायवृष्णो । गर्विष्ठिरो नमसास्तोममभौ दिवी वरुकममुह्यं चर्मश्रेत् ॥ अवीचामकुवये मेधायुवचौ वंदा
समुब्धं गुहाविभर्ति न ददाति पित्रे । अनीकमस्य नमिनज्जनसः पूरः पश्यंति निहितमर्तौ ॥ (५११२) कुमारं माता युवतिः
विभर्षिमाहिषीजजान । पूर्वाहिं गर्भः शरदो ववर्ध पश्यं जातं यदसूतमाता ॥ कमेतत्वं युवते कुमारं पेषी
शुधा मिमानं । दुदानोऽअस्माऽअमृतं विष्टक्लिंमामनिद्राः कृणवन्ननुक्थाः ॥ क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरंतं समद्युधं न पुरु
शोभमानं । न ताऽअगृभ्यन्नजनिष्ट हि पः पल्लिकीरिद्युवतयौ भवंति ॥ केममर्थं कवियं वत गोभिर्नयेषां गोपाऽअरणश्चिदा
स । यईजगभुरवते सृजं त्वाजातिपुंश्चऽउर्पनश्चिक्त्वान् ॥ वसं राजानं वसतिं जनानामरातयो निर्दधुर्मत्येषु । ब्रह्मा

(५११२) कुमारमिति द्वादशर्चस्य सूक्तस्य त्रेयः कुमारः क्रमेतं विज्योतिषे त्यनयोर्जानो वृशो मिस्त्रिषु अंत्याशकरी (पाक्षिको जारो
वृशः सर्वसूक्तेषु । अत्र सर्वानुक्रमभाष्ये जननाम्रक्पेः पुत्रो जानइत्येव निर्णोतम् । जरनाम्रक्पेः पुत्रो जारो वृश इति तु सायनभाष्यम् ।)

ण्यत्रैरवतंसृजंतुनिंदितारोनिंद्यासोभवंतु ॥ १४ ॥ शुर्नश्चिच्छेपंनिदिंतसहस्राद्यपादमुचोऽअशमिष्टहिपः । एवास्र
 दंभ्रेविमुमुग्धिपाशान्होर्तश्चिकित्वऽइहतूनिपद्य ॥ हृणीयमानोऽअपहिमदैयेःप्रमेदेवानाव्रतपाऽउवाच । इंद्रोविद्धौ
 ऽअनुहित्वाचचक्षतेनाहमग्नेऽअनुशिष्टऽआगां ॥ विज्योतिपाबृहुताभाल्यग्निरविर्विश्वानिकृणुतेमहित्वा । प्रादेवी
 मायाःसहतेदुरेवाःशिशीतिशृंगेरक्षसेविनिक्षे ॥ उतस्वानासोद्विर्विपत्वग्नेस्तिग्मायुधारक्षसेहतवाऽउ । मदैचिदस्यप्ररु
 जंतिभामानवरंतेपरिवाधोऽअदेवीः ॥ एतंतेस्तोमंतुविजातुविग्रोरथंनधीरःस्वपाऽअतक्षं । यदीदग्नेप्रतित्वंदेवहृथाः
 स्वर्वतीरपऽएनाजयेम ॥ तुविग्रीवौवृषभोर्वावृधानोश्चर्व१र्थःसर्मजातिवेदः । इतीममग्निममृताऽअवोचन्वहिष्मते
 मनवेशर्मयंसद्धविष्मतेमनवेशर्मयंसत् ॥ १५ ॥ (५।१।३) त्वमग्नेवरुणोजायसेयत्त्वंमित्रोभवसियत्समिद्धः । त्वे
 विभ्वैसहसस्पुत्रदेवास्त्वमिंद्रोदाशुपेमर्त्याय ॥ त्वमर्ग्यमाभवसियत्कुनीनामस्वधावगुह्यंविभर्षि । अजंतिमित्रंसु
 धितुंनगोभिर्यदंपतीसर्मनसाकृणोषि ॥ तवश्रियेमरुतोमर्जयंतुरुद्रयत्तेजनिमचारुचित्रं । पुंदयद्विष्णोरुपमंनिधायि
 तेनपासिगुह्यंनामगोनां ॥ तवश्रियासहशोदेवदेवाःपुरुदर्धानाऽअमृतंसंपत । होतारमग्निमनुषोनिषेदुर्दशस्थत्तंऽउ
 शिजःशंसमायोः⁺ ॥ नत्वज्जोतापूर्वोऽअग्नेयजीयान्नकाव्यैःपुरोऽअस्तिस्वधावः । विशश्चयस्याऽअतिथिर्भवसिसय

(५।१।३) त्वमग्रइतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्याग्नेयोवसुश्रुतोमिस्तृतीयायामरुद्रविष्णवस्त्रिष्टुवाद्याविराट् ।

ऋक्सं.

म. ३. अ. ८

॥ ५१ ॥

मंडलं. ५

अनु. १

॥ ५१ ॥

ज्ञेनवनवदेवमतीन् ॥ वयमेव नुयामत्वोतावसयवोहविषाबुध्यमानाः । वयंसमर्थेविदथेवहोवयंरायासहसस्पुत्रम
तीन् ॥ १६ ॥ योनऽआगोऽअभ्येनोभरात्यधीदधमघशंसेदधात । जहीचिकित्वोऽअभिज्ञस्तिमेतामज्ञेयोनोमर्चय
तिद्वयेन ॥ त्वामस्याव्युषिदेवपूर्वदुतं कृण्वानाऽअयजंतहव्यैः । संस्थेयदग्नेऽईयसेरयीणांदेवोमर्तैर्वसुभिरिध्यमानः ॥
अवस्पृधिपितरंयोधि विद्वान्पुत्रोयस्तैसहसःसूनऽऊहे । कदाचिकित्वोऽअभिचक्षसेनोमेकदोऽकृतचिद्यातयासे ॥
रिनामवंदमानोदधातिपितावसोयदितज्जोषयासे । कुविदेवस्यसहसाचकानःसुन्नमग्निर्वनतेवावृधानः ॥ भू
रितारंयविष्वान्यमेदुरितातिपर्थि । स्तेनाऽअहश्त्रिपवोजनासोशतेकेतावृजिनाऽअभूवन् ॥ त्वमंज
त्वामग्नेवसुपतिवसूनामभिप्रमदेऽअध्वरेभुराजन् । त्वयावाज्वाज्यतो जयेमाभिष्यामपृत्सुतीर्मर्त्यानां ॥ इमेयामासस्त्व
मिरुजर्ःपितानोविभुर्विभावांसुहृशीकोऽअस्मे । सगार्हपत्याःसमिषोदिदीह्यसद्वाभृक्समिमीहिअवासि ॥ हव्यवाळ
विंविपतिमानुषीणांशुचिपावकंघतपृष्ठमग्निं । निहोतारंविश्वविदंदधिवेसदेवेषुवनतेवार्षोणि ॥ जिघांक्
सजोपायतमानोरुद्दिमभिःसूर्यस्य । जुपस्वन्नःसमिधंजातवेदुऽआर्चदेवान्हविरद्यायवक्षि ॥ जुष्टोदमूनाऽअतिथिर्दु
(५११४) त्वाममहत्वेकादशर्चस्यसूक्त्यात्रेयवशुश्रुतोमिषिष्टुप् ।

रोणऽङ्गमनोयज्ञमुपयाहिचिद्वान् । विश्वाऽअग्नेऽअभियुजोविहत्याशत्रूयतामभराभोजनानि ॥ १८ ॥ वधेनदस्यु
 प्रहिचातयस्ववर्यः कृण्वानस्तान्वेदुस्वायै । पिपर्थित्सहसस्पुत्रदेवान्सोऽअग्नेपाहिचतमवाजेऽअस्मान् ॥ वयंतैऽअग्न
 ऽउवथैर्विधेमवयंहव्यैः पावकभद्रशोचे । अस्मेरयिर्विश्ववारिसमिन्वास्मेविश्वानिद्रविणानिधेहि ॥ अस्माकमग्नेऽअ
 ध्वरंजुषस्वसहसः सूनोत्रिषधस्थहव्यं । वयंदेवेषुसुकृतः स्यामशर्मणानस्त्रिवरूधेनपाहि ॥ विश्वानिनोदुर्गहाजातवेदुः
 सिधुननावादुरितातिपथि । अग्नेऽअत्रिवन्नमसागृणानोऽस्माकंयोध्यवितातनूनां ॥ यस्त्वाहुदाकीरिणामन्यमानोम
 र्त्यमत्योजोहवीमि । जातवेदोऽयशोऽअस्मासुधेहिप्रजाभिर्ग्रेऽअमृतत्वमदयां ॥ यस्मैत्वंसुकृतेजातवेदऽउलोकमग्ने
 कृण्वः स्योनं । अश्विनंसपुत्रिणवीरवंतंगोमंतरयिनशतेस्वस्ति ॥ १९ ॥ (५।१।५) सुसमिद्धायशोचिषेघृततीव्रंजु
 होतन । अग्नयेजातवेदसे ॥ नराशंसः सुषूदतीमंयज्ञमदाभ्यः । कविहिमधुहस्यः ॥ ईळितोऽअग्नऽआवहेद्विचित्रमि
 हप्रियं । सुखैरथैभिरुतयै ॥ ऊर्णम्वदाविप्रथस्वाभ्यर्कऽअनूषत । भवानः शुभ्रसातयै ॥ देवीद्वारोविश्रयध्वंसुप्रा
 युणानंऽऊतयै । प्रप्रयज्ञं पृणीतन ॥ २० ॥ सुप्रतीकेवयोवृधायुद्धीऽकृतस्यमातरां । दोषामपासमीमहे ॥ वार्तस्यप

(५।१।५) सुसमिद्धायेत्येकादशचर्चस्यसूक्तस्यात्रेयोवसुश्रुतः इभोनराशसइळोबहिर्देवीद्वारउषासानफादैव्यौहोतारौसरस्वतीळ्या-
 भारत्यस्त्वष्टावनस्पतिस्वाहाकृतयोगायत्री ।

त्सन्नीळितादैव्याहोतारामनुषः । इमंनोयज्ञमागतं ॥ इळासरस्वतीमहीतिस्रोदेवीर्मयोभुवः । बर्हिःसीदंत्वस्त्रिधः ॥
 शिवस्त्वष्टरिहागं हि विभुः पोषं ऽउत तमना । युज्ञेयज्ञेन ऽउदद्व ॥ यन्न वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्यानामानि । तन्न हव्यानि
 गामय ॥ स्वाहा न्नयेवरुणा यु स्वाहा द्रायमरुद्भ्यः । स्वाहा देवेभ्यो हविः+ ॥ २१ ॥ (५।१।६) अग्निं तमन्येयो वसुर
 स्तं यं यं ति धेनवः । अस्तमर्षत ऽआशवोस्तं नित्या सो वाजिन ऽइषं स्तोतुभ्य ऽआभर ॥ सो ऽअग्निर्यो वसुगुणे संयमायं ति धे
 नवः । समर्षतो रघुद्ववः संसुजातासः सुरयु ऽइषं ॥ अग्निर्हि वाजिनं विशेद दति विश्व चर्षणिः । अग्नीराये स्वाभुवं समी
 तोयति वार्यमिषं ॥ आते ऽअग्न ऽइधीमहि द्युमंतं देवाजरं । यद्ध स्याते पनीयसीसुमिद्वीदयति घवीषं ॥ आते ऽअग्न
 ऽऋचा हविः शुक्रस्य शोचिपस्पते । सुश्च द्रुदस्म विदपते हव्यवाद् तुभ्यं ह्वयतु ऽइषं ॥ २२ ॥ प्रोत्ये ऽअग्नयो ग्निपू विश्वं पु
 ष्यंति वार्यं । ते हि न्विरेत ऽइन्विरेत ऽइषण्यं त्यानुषगिषं ॥ तवत्ये ऽअग्ने ऽअर्चयो माहि ब्राधंत वाजिनः । ये पत्वभिः
 शुफानां ब्रजाभूरंत गोनामिषं ॥ नवानो ऽअग्न ऽआभर स्तोतुभ्यः सुक्षितीरिषः । ते स्यामय ऽआन चुस्त्वा दूता सोदमेदम
 ऽइषं ॥ उभे सुश्चं प्रसर्पिषो दर्वी श्रीणीष ऽआसनि । उतो न ऽउत्पुष्यो ऽउक्थे षुशवसस्पतु ऽइषं ॥ एवो ऽअग्निर्मजुयं
 मुर्गाभिर्भुजेभिरानुपक् । दधदुसे सुवीर्यं मृतत्यदाश्वभ्यमिषं ॥ २३ ॥ (५।१।७) सखायः संवः सम्यं च मिपं स्तो

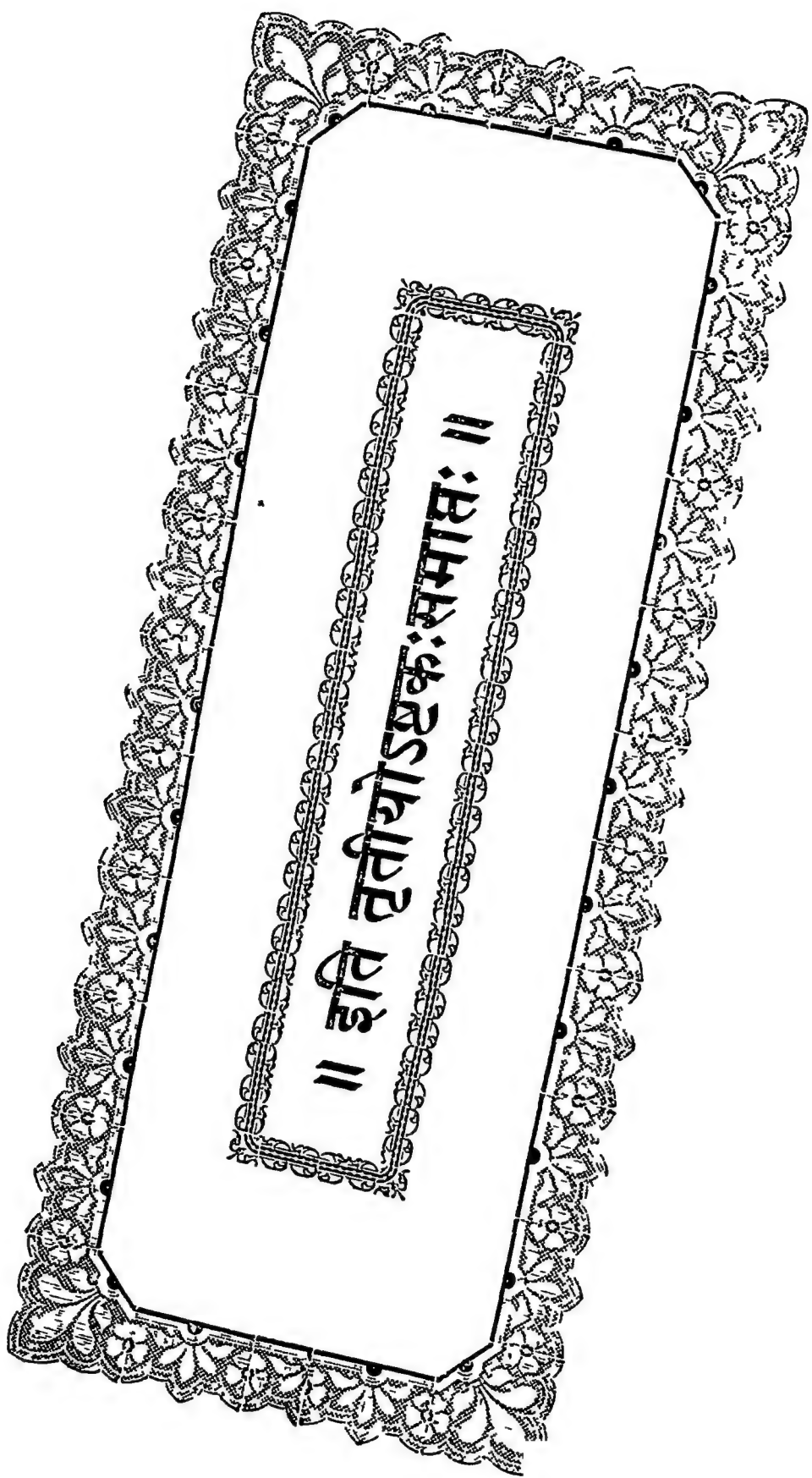
(५।१।६) अग्निं तमिदं शर्चसूक्तस्यात्रेयो वसुश्रुतोभिः पंक्तिः । (५।१।७) सखायः समितिदं शर्चसूक्तस्यात्रेयइपोभिरनुष्टुबं त्यापंक्तिः ।

मंचाग्रये । वर्षिष्ठायक्षितीनामर्जो नग्ने सहस्वते ॥ कुत्राचिद्यस्य सप्ततौरण्वानरो नृषदने । अहंतश्चिद्यमिधते सज्जन
 यतिजंतवः ॥ संयद्विषोवनमिहसंहव्यामानुषाणां । उतद्युन्नस्य शर्वसऽकृतस्य रक्षिममाददे ॥ सः स्माकृणोति केतु
 मानकंचिद्दूरऽआसते । पावकोयद्वनस्पती न्यस्माग्मिनाल्यजरः ॥ अर्वस्मयस्य वेपणेस्वेदपथिषु जुहति । अभीमह
 स्वर्जन्यं भूमापुष्टैरुरुहः ॥ २४ ॥ यं मर्त्यैः पुरुष्टह विद्विर्ध्वस्य धायसे । प्रस्वादं नपितुना मस्तताति चिदायवे ॥
 सहिष्माधन्वाक्षितं दातान दात्यापशुः । हिरिदमश्रुः शुचिदन्नमुरनिभृष्टविपिः ॥ शुचिः ष्मयस्माऽअत्रिवत्प्रस्वधि
 तीवरीयते । संपूरसूतमाताक्राणाय दानशे भगं ॥ आयस्ते सपिरासुते श्रेयमस्ति धायसे । ऐषुद्युन्नमत्तश्रवऽआचितं
 मर्त्येषुधाः ॥ इति चिन्मन्युमग्निजस्त्वादातमापशुददे । आदग्नेऽअपृणतोत्रिः सासह्याद्वस्यूनिषः सासह्यान्नन्
 ॥ २५ ॥ (५।१।८) त्वामग्नेऽकृतायवः समीधरे प्रत्नं प्रत्नासंऽकृतये सहस्कृत । पुरुश्चंद्रयजंतविश्वधा य संदमूनसंग
 हर्षति वरेण्यं ॥ त्वामग्नेऽअतिथिं पर्व्यविशः शोचिष्के शंगहर्षति निषेदिरे । बृहत्केतुं पुरु रूपधनस्पृतं सुशर्मणं स्ववसं जर
 द्विषं ॥ त्वामग्नेमानुपीरीळते विशो होत्रा विद्विचिर्विचिरत्नधातमं । गुह्रासंतं सुभगविश्वदर्शतं तु विष्वणसं सयजं घृतश्रि
 र्वं ॥ त्वामग्ने धर्णासं विश्वधा वृयं गीर्भिर्गणं तोनमसोपसेदिम । सनो जुपस्वसमिधानोऽअंगिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदी

(५।१।८) त्वाममकृतायव इति सप्तर्वस्य रूक्तात्रेय इषोभिर्जगती ।

तिभिः ॥ त्वमग्नेपुरुषोविशोविशेवयोदधासिम्रत्तथापुरुष्टुत । पुरुष्यद्वासहसाविराजसित्विषिः सातैतित्विषाणस्य
 नाद्युषे ॥ त्वमग्नेसमिधानंयविष्यदेवादूतंचक्रिरेहव्यवाहनं । उरुअयंसंघृतयोनिमाहुतंत्वेषंचक्षुर्देधिरेचोदयन्मति ॥
 त्वमग्नेप्रदिवऽआहुतंघृतैः सुन्नायवः सुषमिधासमीधिरे । सर्वावृधानऽओषधीभिरुक्षितोऽभिज्रयांसिपाथिवाविति
 छसे ॥ २६ ॥ इति तृतीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

चतुर्विंशाध्यायेवर्गः २६ सूक्तानि १६ ऋचः १५२ ॥ त्यागः ॥ उषसः १८ सवित्रः १३ विश्वेभ्योदेवेभ्यः १० [भे. प.
 विश्वेभ्यो. ७ अग्नयः उषसः विश्वेभ्योदेवेभ्यः.] द्यावापृथिवीभ्या. ७ क्षेत्रपतयः ३ शुनाये. शुनासीराभ्या. सीताया. २ शुनासीराभ्या.
 अग्नयः ३७ मरुदुद्रविष्णुभ्यः अग्नयः २० समिद्धायाग्नयः नराशंसाये. इळाये. बर्हिपद्. देवीभ्योद्दाम्यई. उषासानक्ताभ्या. दैवीभ्या-
 होतृभ्या. सरस्वतीळाभारतीभ्यः त्वष्ट्रः वनस्पतयः स्वाहाकृतिभ्यः अग्नयः २७ ॥ इति तृतीयेष्टमः ॥ ८ ॥



॥ इति तृतीयोऽष्टकः समाप्तः ॥

अथ चतुर्थाष्टकप्रारंभः ॥

अत्रामग्रेगयोत्यापंचम्यौपंक्तीअग्रओजिष्ठमंल्याचतुथ्याचजनस्यषट्सुतंभरोजागतं प्राग्रयेचतोगायत्रंत्वभिस्तो
 मेनप्रवेधेसंपंचांगिरसोधरणौबृहत्पूरुःपंत्यपंतह्यायज्ञैःप्रातर्मृक्त्वाहाद्वितोभ्यवस्थावविर्गायत्रावबुधुभौविरा
 डपायमग्नेचतुष्कप्रयस्वंतःपंत्यंतंहमनुष्वत्सर्षःप्रविश्वसामन्विश्वसामाग्नेद्युभोविश्वचर्षणिरग्नेत्वंगोपायना
 लापायनाविंधुःसुवंधुःश्रुतवंधुर्विप्रवंधुश्चैकचद्वैपदमच्छावोनववसूयवआनुष्टुभमग्नेगायत्रमंल्यावैश्वदेव्य
 नस्वंतापद्वैवृष्णःपौरुक्कुत्स्यौद्वैत्र्यरुणत्रसदस्यूरानौभारतश्चाश्वमेधौत्यास्तिस्रोनुष्टुभौनात्मात्मनेदद्यादि
 तिसर्वास्वत्रिकेचिदत्यैद्राद्रीसिमिद्धोविश्ववारात्रेयीत्रिष्टुजगतीत्रिष्टुवनुष्टुवगायत्र्यौत्र्ययमापंचोनागौरिवीतिः
 शाकत्यऐंद्रमुशानायदौशनसोवापादःक्वस्यवभृक्कणंचयोप्यत्रराजास्तुतंद्रोराथायससोनवस्युरुग्रमितिकौत्स्यौ
 शनसौवापादौपरैद्राकौत्स्यददद्वादशगतुः ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ हरिःओम् ॥ (५।१।९) त्वामग्नेहृविष्मंतोदेवंमर्तोसऽईळते । मन्येत्वाजातवैदसंसह
 व्यावक्ष्यानुपक्क⁺ ॥ अग्निर्होतादास्वतःक्षयस्यवृक्तवर्हिपः । संयुज्ञासश्चरंतिर्यसंवाजासःश्रवस्ववः ॥ उतस्मयंशिथुय
 थानवंजानिष्टारणी । धृतरुमानुपीणांविशामग्निस्वध्वरं⁺ ॥ उतस्मदुर्गुभीयसेपुत्रोनह्वार्याणां । पूरूयोदग्धासिवनाग्ने

(५।१।९) त्वामग्निदत्तिसप्तर्चस्यसूक्तस्यात्रेयोगयोमिरनुष्टुपंचमीसप्तम्यौपक्ती ।

अ. ४अ. १

11211

पुष्टनयवसे ॥ अर्धस्मयस्यार्चयः सम्यक् संयति धामिनः । यद्वीमहन्नितो दिव्यपुध्मा ते वधमति शिशोति श्मा तरीयथा ॥
तवाहमग्नऽहुतिभिर्मित्रस्य च प्रशस्तिभिः । द्वेषो युतो न दुरितातुर्या मम तर्पणां ॥ तनोऽअग्नेऽअभीनरो रयि स हस्वऽआ
भ्यमग्निगो । ग्रनो राया परीणसारत्तिस्वार्जाय पंथां ॥ १ ॥ (५।१।१०) अग्नऽओ जिष्ठमा भर्द्युममस्म
णामित्रो नय श्रियः ॥ त्वनोऽअग्नऽएषांगयं पुष्टिं च वर्धय । येस्तो मेभिः प्रसरयो न रोमधान्या न शुः+ ॥ त्वेऽअस्यर्धमा रुहत्का
रः शुभं त्यश्वराधसः । शुष्मेभिः शुष्मिणो नरो दिवश्चिधेषां बृहत्सु कीर्तिवार्धति त्मना ॥ तव त्येऽअग्नेऽअर्चयो भ्राजं तोयं
ति धृष्णया । परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः+ ॥ त्वनोऽअग्नेऽअंगिरः स्तुतस्त्वानऽआभर ॥ होतर्विभ्यास हरयि स्तोतृभ्यः स्तवसे च नऽउत्तै
शो विश्वाऽआशां स्तरीषणिं ॥ त्वनोऽअग्नेऽअंगिरः जन्स्य गोपाऽअर्जनिष्ठजा गृवि रग्निः सुदक्षः सुविताय न व्यसे
धिपुस्तुनो वधे+ ॥ २ ॥ (५।१।११) अग्नो जिष्ठमिदं तिसप्त च स्य सुकल्याणे
ताद विस्पृशद्यमद्विभाति भरतेभ्यः शुचिः ॥ यज्ञस्यैकुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नमि
(५।१।१०) अग्नो जिष्ठमिदं तिसप्त च स्य सुकल्याणे
सुतं भरो मिर्जगती ।

(५१११०) अम्रबोजिष्ठमितिसप्तर्चस्यसूक्त्यात्रेयोगयोमिनुष्टुप्चतुर्थीसप्तम्यौपंक्ती । (५११११) जनस्येतिपटुचस्यसूक्त्यात्रेयः
सुतंभरोभिर्जगती ।

सवर्हिषि॒सीद॒न्नि॒होता॒यज॒थाय॒सक॒तुः ॥ असं॒मृष्टो॒जाय॒सेमा॒त्रोः शु॒चिर्म॒द्रः क॒विरु॒दति॒ष्ठोवि॒वस्व॒तः । घृ॒तेन॒त्वाव॒धय॒न्न
 न्न॒ऽआहु॒तध॒मस्ते॒केतु॒रभ॒वद्वि॒विश्रि॒तः⁺ ॥ अ॒ग्निर्नो॒यज्ञ॒मुप॒वेतु॒साधु॒याग्नि॒रोवि॒भर॒तेग॒हेय॒हे । अ॒ग्निर्दू॒तोऽअ॒भव॒द्धव्य॒
 वा॒ह॒नो॒ग्निर्वृ॒णाना॒वृण॑ते॒क॒विक्र॑तुं ॥ तु॒भ्येद॒मग्ने॒मधु॒मत्त॒मंव॒चस्त्व॒भ्यमी॒पाऽइ॒यम॒स्तुशं॒हृदे । त्वांगि॒रःसिं॒धुमि॒वाव
 नी॒र्मही॒राप॒र्युण॑ति॒शव॑साव॒धैर्य॑तिच ॥ त्वा॒मग्ने॒ऽअंगि॒रसो॒गुहा॑हित॒मन्व॒विंद॑न्छि॒श्रिया॒णव॑ने॒वने । स॒जाय॑से॒मथ्य॒मानः॒स
 हो॒मह॒त्वामा॑हुः॒सह॑स॒स्पन्न॑मंगि॒रः ॥ ३ ॥ (५१।१२) प्रा॒ग्नये॑वृ॒हते॒यज्ञि॒याय॒ऽऽकृत॑स्य॒वृष्णे॒ऽअ॒सुरा॒यम॒न्म । घृ॒तं
 न॒य॒ज्ञऽआ॒स्ये॒ऽसु॒पूतं॑गि॒रंभ॒रेवृ॒षभा॒र्यप॒तीची॑⁺ ॥ ऋ॒तंचि॒कित्वा॒ऽऽकृत॑मि॒च्चि॒कित्वा॒तस्य॒धारा॒ऽअनु॑तं॒धिप॒वीः । नाहं॒या
 तुं॒सह॑सान॒द्वये॒नऽऽकृतं॑सं॒पा॒म्यरु॒पस्य॒वृष्णः॑ ॥ क॒र्या॒नोऽअ॒ग्नऽऽकृत॑य॒ज्ञेते॒नभु॒वो॒नवे॑दा॒ऽऽव॒च॒थस्य॒नव्यः॑ । वे॒दा॒मे॒दे॒वऽऽकृतं॑
 तु॒पाऽऽकृत॑ना॒नाहं॑प॒तिस॒नितु॒रस्य॒रायः॑⁺ ॥ के॒ते॒ऽअ॒ग्नेरि॒पवे॑वं॒धना॑सुः॒के॒पाय॑वः॒सनि॑पंत॒द्वमंतः॑ । के॒धा॒सि॒मग्ने॒ऽअनु॑तस्य॒पां
 ति॒कऽआ॒सतो॑व॒चसः॑सं॒तिगो॒पाः⁺ ॥ स॒खा॒यस्ते॒विषु॑णा॒ऽअ॒ग्नऽए॒तोशि॒वासः॑सं॒तोऽअ॒शि॒वाऽअ॒भूव॑न् । अ॒धूर्प॑तस्व॒यमे॒
 ते॒वचो॑भि॒र्कज्यू॒तेवृ॒जिना॑नि॒ब्रुव॑तः ॥ य॒स्ते॒ऽअ॒ग्नेन॑सा॒य॒ज्ञमी॑द्वि॒ऽऽकृतं॑स॒पात्य॒रुष॑स्य॒वृष्णः॑ । तस्य॒क्षयः॑प॒थुरा॒साधु॑रे॒तु
 प्र॒स॒स्त्रीणा॑स्य॒नहु॑षस्य॒शेषः॑ ॥ ४ ॥ (५१।१३) अ॒र्च॒तस्त्वा॒हवा॒महे॑र्च॒तःस॒मिधी॑महि । अ॒ग्ने॒ऽअर्च॑त॒ऽऽकृत॑ये ॥ अ॒ग्नेः

(५१।१२) प्रा॒ग्नय॑इति॒षड्व॒चस्य॒सूक्त॑स्या॒ग्नेयः॒सुत॑भरो॒ग्निच्छि॒ष्टुप् । (५१।१३) अ॒र्च॒तइ॒तिषड्व॒चस्य॒सूक्त॑स्या॒ग्नेयः॒सुत॑भरो॒ग्निर्गा॒यत्री ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. १

॥ ३ ॥

मंडलं ५

अनु. १

॥ ३ ॥

स्तोममनामहेसिधमद्यादिविस्पृशः । देवस्यद्रविणस्वः ॥ अग्निर्जुपतनोगिरोहोतायमानुषेष्वा । सयक्षद्वैव्यंजनं ॥
त्वमग्नेसप्रथाऽअसिजुष्टोहोतावरेण्यः । त्वयायुंशंवितन्वते ॥ त्वमग्नेवाजसातमंविप्रावर्धतिसुष्टुतं । सनोरास्वसुवी
नोऽअमर्त्यं । हव्यादेवेषुनोदधत् ॥ आरार्धश्चित्रमृजसे ॥ ५ ॥ (५।१।१४) अग्निस्तोमेनवोधयसमिधा
देवघृतश्रुता । अग्निहव्यायवोद्धवे ॥ अग्निर्जातोऽअरोचतम्रन्दस्यन्योतिषातमः । तंहिशश्वत्तुऽईळतेस्रुचा
मीळैन्यैकविंघतपृष्ठंसपर्यत । वेतुमेषुणवद्धवै ॥ अग्निघतेनवावृधुःस्तोमैभिर्विश्वचर्षणिं । अविदुद्गाऽअपःस्वः+ ॥ अग्नि
मिः+ ॥ ऋतेनऽऋतं धरुणधारयंतयज्ञस्यशाकेपरमेव्योमन् । घृतमसतोऽअसुरःसुशेवोरायोधृताधरुणोवस्वोऽअ
अंहोयुवस्तन्वस्तन्वतेविवयोमहदुष्टरंपव्याय । द्विवोधमन्धरुणसेदुपोनजातैरजातोऽअभियेननक्षुः+ ॥
प्रधानोजनंजनं धार्यसेचक्षसेच । वयोवयोजरसेयदधानुःपरित्मनाविषुरुपोजिगासि ॥ मातेवयङ्गरसेप
(५।१।१४) अग्निस्तोमेनेतिपटुचस्रस्रुक्सात्रेयःसुतंभरोमिर्गायत्री । (५।२।१) प्रवेधसइतिपंचस्रस्रुक्सांगिरसोधरुणोऽअग्निस्त्रिष्टुप् ।

दोर्धरुणैदेवरायः । पदंनतायुर्गुहादधानोमहोरायेचितयन्नत्रिमस्पः ॥ ७ ॥ (५।२।२२) बृहद्वयोहिभानवेचोदवा
 याम्नये । यंमित्रंनप्रशस्तिभिर्मतीसोदधिरेपुरः⁺ ॥ सहिद्युभिर्जनानांहोतादक्षस्यबाह्वोः । विह्व्यमशिरानुयग्भगोन
 वारमृण्वति ॥ अस्यस्तोमेमघोनःसख्येवद्वशोचिपः । विश्वायसिन्नुविष्वणिसमर्थेऽशुष्ममादुधुः⁺ ॥ अधाह्यम्रऽएपां
 सुवीर्यस्यमंहना । तमिद्यहंनरोदसीपरिश्रवोवभूवतुः ॥ नूनऽएहिवार्यमग्नेगृणानऽआभर । येवयंयेचसुरयःस्वस्ति
 धामहेसचोतैधिपूत्सुनोबुधे⁺ ॥ ८ ॥ (५।२।३) आयज्ञैर्देवमर्त्यैऽइत्थातव्यासमतये । अग्निंकृतेस्वच्वरेपूरुरीळी
 तार्वसे ॥ अस्यहिस्वयंशस्तरऽआसाविधर्मन्मन्यसे । तंनार्कचित्रशोचिपमंद्रंपरोर्मनीषया ॥ अस्यवासाऽर्चऽअर्चिषा
 यऽआयुक्ततुजागिरा । दिवोनयस्यरेतसावहच्छोचैत्यर्चयः ॥ अस्यकत्वाविचैतसोदुस्मास्यवसुरथऽआ । अधाविश्वो
 सहव्योमिर्विशुप्रशंस्यते ॥ नूनऽइद्धिवार्यमासासंचंतसुरयः । ऊर्जोनपादुभिर्ष्टयेपाहिशग्धिस्वस्तयऽजुतैधिपूत्सुनोबु
 धे⁺ ॥ ९ ॥ (५।२।४) प्रातरग्निःपुरुप्रियोविशस्तवेतातिथिः । विश्वानियोऽअमर्त्योहव्यामर्तेषुरण्यति ॥ द्विता
 यमकवाहसेस्वस्यादक्षस्यमंहना । इंदुंसधत्तऽआनुषक्स्तोताचिचेऽअमर्त्य ॥ तंवोद्रीघायुशोचिषगिराहुवेमघोना ।

(५।२।२) बृहद्वयइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यात्रेयःपूरुरभिरनुष्टुप्अंत्यापत्तिः । (५।२।३) आयज्ञैरितिपंचर्चस्यसूक्तस्यात्रेयःपूरुरभिरनु-
 ष्टुप्अंत्यापत्तिः । (५।२।४) प्रातरभिरितिपंचर्चस्यसूक्तस्यात्रेयोमृक्कवाहद्वितोभिरनुष्टुप्अंत्यापत्तिः ।

अ.४.अ. १

॥ ४ ॥

अरिष्टोयेषां रथोर्व्यश्वदावन्नीयते ॥ चित्रावायेषु दीर्घातिरासन्नकथापांति ये । स्त्रीणवर्हिः स्वर्णरेश्रवांसिदधिरपरि ॥
धेमपंचाशतं दुदुरश्वानां सधस्तुति । ह्यमदग्नेमहिश्रवोबृहद्वृद्धिमघोनानवदमृतनुणां ॥ १० ॥ (५।२।५) अम्भ
आश्वैत्रेयस्य जंतवो ह्यमर्द्धतक्रुष्टयः । उपस्थे मातुर्विच्छे ॥ जुहुरे विचितयतो निमिषनम्णां पति । आहृत्वां पुरं विविशुः ॥
न्यषजोनतिग्माः सुसंशिता वृक्ष्यो वक्षणेऽस्थाः ॥ ११ ॥ (५।२।६) यमग्ने वाजसातमत्वं चिन्मन्यसे रयिं । तन्नो गी
भिः श्रवाय्यदेवत्राप नयायुजं ॥ येऽग्नेनेरयं तिते बृद्धाऽऽग्रस्य शर्वसः । अपहृषोऽपहृरो न्यव्रतस्य सश्चिरे ॥ होता
रं त्वावृणीमहे ग्ने दक्षस्य सार्धनं । यज्ञेषु पुर्व्यगिरा प्रयस्वंतो हवामहे ॥ इत्था यथा तऽज्रतये सहसा वन्दिदेवदे ॥ होता
हि । अग्नेमनुष्वदं गिरो देवान् देवयते यज ॥ त्वंहिमानुषे जने ग्ने सुप्रीतऽइध्यसे । सुर्वस्वायं त्यानपसुजातसर्पिरासु

(५।२।५) अभ्यवस्था इति पंचरचस्य सूक्तस्यात्रेयो वविरग्निः आद्यो द्वे गायत्र्यौ तृतीया चतुर्थ्या वदुष्टुभौ पंचमी विराड् रूपा । (५।२।६) यमम
इति चतुर्कचस्य सूक्तस्यात्रेयः प्रयस्वंतो गिरा वदुष्टुपञ्चम्या पंक्तिः । (५।२।७) मनुष्वदिति चतुर्कचस्य सूक्तस्यात्रेयः सप्तो गिरा वदुष्टुपञ्चम्या पंक्तिः ।

मंडलं. ५

अनु. २

॥ ४ ॥

ते ॥ त्वांविश्वेसजोपसोद्वयासौदुतमकत । सपर्यतस्त्वाकवेयज्ञेपुद्वेवभीळते ॥ देवंवोदेवयज्ययाग्निमीळीतमर्त्यः ।
 समिद्धःशुक्रदीदिह्यतस्ययोनिमासदःससस्ययोनिमासदः ॥ १३ ॥ (५।२।८) प्रविश्वसामन्नत्रिवदचोपावकशो
 चिपे । योऽअध्वरेण्वीड्योहोतामद्रतमोविशिः ॥ न्यग्निजातयदसंघातादेवमत्विजं । प्रयज्ञऽएत्वानुपगद्यादेव
 व्यचस्तमः ॥ चिकित्विन्मनसत्वादेवमर्तोसऽकृतये । वरेण्यस्यतेवसऽइयानासोऽअमन्महि ॥ अग्नेचिकिद्धः१स्यन
 ऽइदंवचःसहस्य । तंत्वांसुशिप्रदंपतेस्तोमेवर्धत्यन्नयोगीभिःशुभंत्यन्नयः ॥ १४ ॥ (५।२।९) अग्नेसहंतमाभरद्युन्न
 स्यप्रासहारयिं । विश्वायश्चर्षणीरभ्याऽसावाजेषुसासहत् ॥ तमग्नेपुतनापहृयिंसहस्वऽआभर । त्वंहिसत्योऽअर्जु
 तोद्रातावार्जस्यगोमंतः ॥ विश्वेहित्वासजोपसोजनासोवृक्तवर्हिपः । होतांसस्रसुप्रियंव्यंतिवार्थीपुरुः ॥ सहिष्मा
 विश्वचर्षणिरभिर्मातिसहोदुधे । अग्नऽएषुक्षयेष्वारेयन्नःशुक्रदीदिहिद्युमर्पावकदीदिहि ॥ १५ ॥ (५।२।१०) अग्नेत्वं
 नोऽअंतमऽइतत्राताशिवोभवावरूढ्यः ॥ वसुरग्निर्वसुश्रवाऽअच्छानक्षिद्युमत्तमंरयिंदाः ॥ सनोवोधिश्श्रुधीहवमुरुज्या

(५।२।८) प्रविश्वसामन्नितिचतुर्कंचस्यसूक्तस्यात्रेयोविश्वसामाग्निरनुष्टुप्अंलापक्तिः । (५।२।९) अग्नेसहंतमितिचतुर्कंचस्य
 सूक्तस्यात्रेयोद्युन्नोविश्वचर्षणिरग्निरनुष्टुप्अंलापक्तिः । (५।२।१०) अग्नेत्वनइतिचतुर्कंचस्यसूक्तस्यगौपायनालौपायनावानंधुःसुवंधुः
 श्रुतवधुर्विप्रवधुश्चक्रमेणयोऽग्निर्द्विपदाविराट् ।

णोऽअघायतःसमस्मात् ॥ तंत्वाशोचिष्ठदीदिवःसुन्नार्थनूनमीमहेसखिभ्यः ॥ १६ ॥ (५।२।११) अच्छावोऽअग्निमवसे
 देवंगासिनोवसुः । रासंपुत्रऽऋषणामतावर्षतिद्विषः⁺ ॥ सहिसत्योयंपूर्वेचिद्देवासंश्चिद्यमीधिरे । होतारंमंद्रजि
 ह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुं ॥ सनोधीतीवारिष्ठयाश्रेष्ठयाचसुमत्या । अग्नेरायोर्दिदीहिनःसुवृत्किर्भिवरेण्य ॥ अग्निर्देवे
 भुराजत्याग्निर्मतेष्वाविशन् । अग्निर्नोहव्यवाहनोऽग्निधीभिःसंपर्यत ॥ अग्निस्तुविश्रवस्तमंतुविब्रह्माणमुत्तमं । अतूतं
 आवयत्यर्पतिपुत्रंददातिदाशुषे ॥ १७ ॥ अग्निर्देदातिसर्पतिंसासाह्योयुधानृभिः । अग्निरत्यैरघुष्यदंजेतारमपराजि
 तं ॥ यद्वर्गाहिष्ठतद्ग्नयेवृहदर्चविभावसो । मर्हिषीवत्वद्रुयिस्त्वद्वाजाऽउदरीरते ॥ तर्वद्युमंतोऽअर्चयोग्रावैवोच्यतेबह
 व । उतोतेतन्यतुर्थथास्वानोऽअर्तुत्मनादिवः⁺ ॥ एवोऽअग्निर्वसयवःसहसानंवंदिम । सनोविश्वाऽअतिद्विषःपृष
 न्नावेर्वसुक्तुः ॥ १८ ॥ (५।२।१२) अग्नेपावकरोचिषामंद्रयादिवजिह्वा । आदेवान्वक्षियक्षिच ॥ तंत्वाधृतस्त
 वीमहेचित्रमानोस्वर्दशं । देवोऽआवीतयेवह ॥ वीतिर्होत्रंत्वाकवेद्युमंतंसमिधीमहि । अग्नेवहतमध्वरे⁺ ॥ अग्नेवि
 श्वेभिरागहिदेवेभिर्हव्यदातये । होतारंत्वावृणीमहे ॥ यजमानायसुन्वतऽआग्नेसुवीर्यवह । देवैरासत्सिबर्हिषि

(५।२।११) अच्छावइतिनवर्चस्यसूक्तस्यात्रेयोवसूयवोभिरनुष्टुप । (५।२।१२) अग्नेपावकेतिनवर्चस्यसूक्तस्यात्रेयोवसूयवोभि
 रंत्यायाविश्वेदेवागायत्री ।

॥ १९ ॥ समिधानःसहस्रजिदग्नेधर्माणिपुष्यसि । देवानांदुतडुक्थ्यः* ॥ न्यग्निंजातवदसंहोत्रवाह्यविष्ट्वं ।
 दधातादेवमृत्विजं ॥ प्रयज्ञऽएत्वानुषगद्यादेवव्यचक्ष्मः । स्तुणीतबर्हिंरासदे ॥ एदंमरुतोऽअश्विनामित्रःसीदंतुव
 रुणः । देवासःसर्वेयाविशा ॥ २० ॥ (५।२।१३) अनस्वतासत्यतिर्माहेमेगावाचेतिष्टोऽअसुरोमघोनः । त्रष्टु
 णोऽअग्नेदशभिःसहस्रैर्वैश्वानर्यरुणश्चिकेत ॥ योमेशुताचविशुतिचगोनाहरीचयुक्तासधुराददाति । वैश्वानरसु
 पुतोवावृधानोग्नेयच्छत्र्यरुणायशर्म ॥ एवातेऽअग्नेसुमतिचक्रानोनिविष्टायनवमंत्रसदस्युः । योमेगिरस्तुविजातस्यप
 र्धीचुक्तेनाभित्र्यरुणोगणार्ति ॥ योमऽइतिप्रवोचत्यश्वमेधायसुरये । ददहचासनियतेददन्मेधामृतायते ॥ यस्यमा
 परुपाःशतमुद्धर्षयत्युक्षणः । अश्वमेधस्यदानाःसोमाऽइवत्र्याशिरः ॥ इंद्राग्नीशतुदाव्यश्वमेधेसुवीर्यं । क्षत्रधारयतं
 बृहद्विद्विसूर्यमिवाजरं ॥ २१ ॥ (५।२।१४) सर्मिद्धोऽअग्निर्द्विद्विशोचिरश्रेष्ठत्यङ्गुषसमुर्वियाविभाति । एतिप्रा

(५।२।१३) अनस्वतेतिषडृचस्यसूक्तस्यत्रैवृष्णक्यरुणःपौरुक्त्स्यस्वसदस्युर्भारतोश्वमेधश्चैतेऽक्रषयोऽभिरंत्यायाइंद्राग्नीत्रिष्टुप अंत्या
 स्तिसोनुष्टुभः । (अस्मिन्सूक्तेभौमोत्रिरेवदेवतेतिकेचित् अन्यथायोमेशताचविशुतिचगोनामित्यादिदाहृक्रियायाअनुपपत्तेः । नैतदन्ये
 मन्यन्तेआत्माध्यासपक्षस्वीकारेणतथाप्युपपत्तेः) । (५।२।१४) समिद्धइतिषडृचस्यसूक्तस्यात्रेयीविश्ववाराःऋषिकाभिः आद्याःक्रमेणत्रि
 ष्टुजगतीत्रिष्टुवनुष्टुभःअंत्येद्वागायत्र्यौ ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. १

॥ ६ ॥

चीविश्ववारानमोभिर्देवाँऽईळानाहुविषाघतार्ची ॥ समिध्यमानोऽमृतस्यराजसिहविष्णुण्वतंसचसेस्वस्तये । विश्वं
श्वंसर्धत्तेद्रविण्यमिन्यस्यातिथ्यमग्नेनिचक्षुऽइत्पुः ॥ अग्नेशर्धमहुतेसौभगायतवद्युम्नान्युत्तमानंसंतु । संजास्प
त्यसुयममाकृणुष्वशत्रूयतामभितिसामहोसि ॥ समिद्धस्यप्रमहसोमेवेदुतवश्रियं । वृषभोद्युम्नवौऽअसिसमध्वरेष्वि
ध्वंहव्यवाहनं ॥ २२ ॥ (५।२।१५) अर्यमामनुषोदेवतातृत्रीरोचनादिव्याधारयंत । अर्चितत्वामरुतःपूतदक्षा
स्त्वमेपासृषिरिंद्रासिधीरः ॥ अनुयदामरुतोमंदसानमार्चिर्निद्रपपिवांसंसुतस्य । आदत्तवज्रमभियदहिहन्नपोयुह्वीर
सृजुत्सर्तवाऽउं ॥ उत्तब्रह्माणोमरुतोमेऽअस्यद्रुःसोमस्यसुषुतस्यपेयाः । तद्धिह्व्यंमनुषेगाऽअविदुदहन्नहिपपिवाँऽइ
द्रौऽअस्य ॥ आद्रोदसीवितरंविष्कभायत्संविव्यानाश्चिद्भियसेमंगकः । जिगीर्तिमिद्रौऽअपजगुराणःप्रतिश्वसंतमवदा
नवंहन ॥ अधुक्रत्वामधवन्तुभ्यं देवाऽअनुविश्वेऽअददुःसोमपेयं । यत्सूर्यस्यहरितःपतंतीःपूरःसतीरुपराऽएतंशे
कः+ ॥ २३ ॥ नवयदस्यनवतिचभोगान्त्साकंजैणमधवाविवृश्चत् । अर्चतींद्रमरुतःसधस्यैष्टुभेनवचसाबाधत्
द्यां+ ॥ सखासख्येऽअपचत्तयमग्निरस्यक्रत्वामहिषात्रीशुतानि । त्रीसाकमिद्रोमनुषःसरांसिसुतोपिबद्धन्नहत्यायसो
(५।२।१५) अर्यमेतिपंचदशस्यसूक्तस्यशाक्योगौरीवितिरिद्रः (उशनायदितिपादस्योशनावा) त्रिष्टप् ।

मंडलं ५

अनु. २

॥ ६ ॥

मै ॥ त्रीयच्छतामहिषाणामघोमास्त्रीसरासिमघवासोम्यापाः । कारंनविश्वेऽअहंतेदेवाभरमिद्राययदहिजधानं ॥
 उशनायत्सहस्यैत्रयातंगहमिद्रज्जुवानेभिरश्वैः । वन्वानोऽअत्रसरथययाथकुत्सेनदैवैरवनोर्हुशुष्णं ॥ प्रान्यच्चक्रम
 बृहःसूर्यस्यकुत्सयान्यद्वारैर्वोयातवेकः । अनासोदस्यूऽरमृणोवधेननिदुर्योणऽआवृणङ्मध्रवाचः ॥ २४ ॥ स्तोमास
 स्वागौरिवीतेरवधन्नरंधयोवैदधिनायपिमु । आत्वामजिश्वासख्यायचक्रपचन्यकीरपिबःसोममस्य ॥ नवगवासःसुत
 सोमासऽइंद्रदशगवासोऽअभ्यर्चयकैः । गव्यंचिदूर्ध्वमपिधानवंतंतंचिन्नरःशशमानाऽअपव्रन् ॥ कथोनुतेपरिचरा
 णिविद्वान्वीर्यामघवन्याचकथं । याचोनुनव्याकुणवःशविष्ठप्रेदुतातेविदथेषुब्रवाम ॥ एताविश्वाचकुर्वोऽइंद्रभूर्यपरी
 तोजनुषवीर्येण । याचिन्नुवज्रिन्कुणवोदधन्वान्नतेवतातविष्याऽअस्तितस्याः ॥ इंद्रब्रह्मक्रियमाणानुपस्वयातेशवि
 ष्ठनव्याऽअकर्म । वस्त्रेवभद्रासुहृतावसूर्यथंनधीरःस्वपाऽअतक्षं ॥ २५ ॥ (५।२।१६) कऽस्यवीरःकोऽअपश्य
 दिंद्रसुखरथमीयमानंहारिभ्यां । योरायावज्रीसुतसोममिच्छन्तदोकोगतापुरुहूतऽकृती ॥ अवाचचक्षपदमस्यस्व
 रुग्रनिधातुरन्वायमिच्छन् । अपृच्छमन्योऽवृत्ततमऽआहुरिंद्रनरोबुधानाऽअशेम ॥ प्रनुवयंसतेयातेकृतानिंद्रब्रवा
 मयानिनोऽनुजोषः । वेददविद्वान्छणवच्चविद्वान्वहतेयमघवासर्वसेनः ॥ स्थिरमनश्चकृपेजातऽइंद्रवेपीदेकोयुधयेभू

ऋक्सं.

अ.४अ. १

॥ ७ ॥

यसश्चित् । अश्मानं चिच्छवसादिद्युतो विविदोगवामवमस्रियाणां ॥ पुरोयत्त्वं परमऽअजनिष्ठाः परावतिश्रुत्यनाम
विभ्रत् । अर्तश्चिदिन्द्रादभयंतदेवा विभ्रऽअपोऽअजयद्वा सपत्नीः ॥ २६ ॥ तुभ्येदेते मरुतः सुशेवाऽअर्धत्यूकसुन्व
त्यधः । आहिमोहानमपऽआशयानं प्रमायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः ॥ विप्रमृधोजनुषादानमिन्वन्नहन्गवामघवन्तंसचका
नः । अत्रादासस्य नमुचेः शिरोयदवतयो मनवे गालुमिच्छन् ॥ युजं हि मामकृथाऽआदिदिन्द्रशिरोदासस्य नमुचेर्मथा
यन् । अश्मानं चित्स्वर्ध्ववर्तमानं प्रचक्रिये वरोदसी मरुद्भ्यः ॥ स्त्रियो हि दुसऽआयुधानि च क्रेकिमाकरन्नवलाऽअस्य
सेनाः । अंतर्ह्यख्यदुभेऽअस्य धेनेऽअथोपमैद्युधयेदस्युमिन्द्रः ॥ समन्नगावो भितोनवते हेहवत्सैर्वियुतायदासन् । सं
ताऽइन्द्रोऽअसृजदस्य शकैर्यद्रीसोमासुः सुषुताऽअमंदन् ॥ २७ ॥ यद्रीसोमावभृधुताऽअमंदन्नरोरवीदृषभः सादने
षु । पुरंदरः पपिवाँऽइन्द्रोऽअस्य पुनर्गवामददादुस्त्रियाणां ॥ भद्रमिंदरुशमाऽअग्नेऽअक्रन्गवांचत्वारिदतः सहस्रा । सं
ऋणंचयस्य प्रयतामघानि प्रत्यग्रभीष्मनृतमस्य नणां ॥ सुपेशं सार्वसृजं त्यस्तं गवांसहस्रैरुशमासोऽअग्ने । तीव्राऽइन्द्र
जीरधुरज्यमानो बभूवुश्चत्वार्यसनत्सहस्रा ॥ औच्छत्सारात्री परि तक्म्यायोऽऋणंचये राजनिरुशमानां । अत्योनवा
मममंदुःसुतासोक्तो व्युहौ परि तक्म्यायाः ॥ चतुःसहस्रं गव्यस्य पृथ्वः प्रत्यग्रभीष्मरुशमैष्वग्ने । धर्मश्च तसः प्रवृजेयऽ

मंडलं ५

अनु. २

॥ ७ ॥

आसीदयस्सयस्तम्बादामविप्राः ॥ २८ ॥ (५।२।१७) इन्द्रोरथायप्रवर्तकृणोति यममध्यस्थान्मघवावाजयंत । यथे
 वपुश्चोव्युनोति गोपाऽअरिष्टोयातिप्रथमःसिपासन् ॥ आपद्रवहरिवोमाविनेनःपिशंगरातेऽअभिनःसचस्व । नहि
 त्वदिद्रवस्योऽअन्यदस्त्यमेनोऽश्रिज्जनिवतश्चकर्थ ॥ उद्यत्सहःसहसऽआजनिष्टदेदिष्टऽइंद्रऽइंद्रियाणिविश्वा । प्राचो
 दयत्सुदुर्घावेत्रेऽअंतर्विज्योतिपासंववृत्तमोवः ॥ अनवस्तेरथमभ्वायतक्षन्त्वष्टावज्रपुरुहृतद्युमंत । ब्रह्माणऽइंद्रम
 ह्यंतोऽअकैरवर्धयन्नहयेहंतवाऽर्च ॥ वृष्णेयत्तेवृषणोऽअर्कमर्चा निद्रुग्रावाणोऽअदितिःसजोर्पाः । अनश्वासोयेपव
 योरथाऽइंद्रैद्रपिताऽअभ्यवर्ततदस्यून् ॥ २९ ॥ प्रतेपूर्वाणि करणानिवोचंप्रनूतनामघवन्याचकर्थ । शक्तीवोयद्विभरा
 रोदसीऽउभेजयन्नपोमनेवेदानुचित्राः ॥ तदिन्नतेकरणंदस्मविप्राहिंयद्ब्रह्मजोऽअन्नाभिमीथाः । शुष्णस्यचित्परि
 मायाऽअगुग्णाःप्रपित्वंयन्नपदस्यूऽरसेधः ॥ त्वमपोयदेवतुर्वशायारमयःसुदुर्घाःपारऽइंद्र । उग्रमेयातमवहोहृकुत्सं
 संह्रयद्दामशनारंतदेवाः* ॥ इंद्राकुत्सावहमानारथेनाचामत्याऽअपिकर्णेवहंतु । निःपीमञ्चोधमथोनिःपधस्थान्म
 घोनोहृदोवैरथस्तमसि ॥ वातस्ययुक्तान्सुयुजश्चिदभ्वान्कविश्चिदेपोऽअजगन्नवस्युः । विश्वेतेऽअन्नमरुतःसर्वायऽ

(५।२।१७) इन्द्रोरथायेतित्रयोदशचैत्यसूक्त्यात्रेयोवस्युरिंद्र (उग्रमेयातमित्यादिपादैकुत्सदैवस्यौलशनोदैवलौवा) नवन्या
 इद्राकुत्सौत्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ.४अ.१

॥ ८ ॥

इंद्रब्रह्माणिताविषीमवर्धन् ॥ ३० ॥ सूरश्चिद्रथंपरितक्म्यायांपूर्वैकरदुपरंजजूवांसं । भरश्चक्रमेतशःसंरिणातिपरो
दधत्सनिष्यतिकर्तुनः ॥ आयंजनाऽअभिक्षेजगामेंद्रःसखायंसुतसौममिच्छन् । वदुन्यावावोद्विभ्रियातेयस्यजीर
मन्वर्थवश्चरति ॥ येचाकर्नतचाकर्नतनूतेमतीऽअमृतमोतेऽअंहऽआरन् । वावंधियज्यूरुततेषुधेह्योजोजनेष्वेषुते
स्याम ॥ ३१ ॥ (५।२।१८) अर्ददुरुत्समसृजोविलानित्वमर्णवान्वद्वधानोऽअरम्णाः । महांतमिंद्रपर्वतंविषद्वः
सृजोविधाराऽअवदानवंहन् ॥ त्वमुत्सोऽक्रतुर्भेवद्वधानोऽअरंहऽऊधःपर्वतस्यवज्रिन् । अहिंचिदुग्रप्रयुतंशयानंज
घन्वोऽइंद्रतविषीमधत्थाः ॥ त्यस्यचिन्महतोनिर्मगस्यवर्जधानतविषीभिर्दिद्रः । यऽएकऽइदप्रतिमन्यमानऽआर्द
स्मादुन्योऽअजनिष्टतव्यान् ॥ त्यंचिदेषांस्वधयामर्दतमिहोनपातंसुवृधतमोगां । वृषप्रभमोदानुवस्यभामंवज्रेणवज्री
निजघानशुष्णी ॥ त्यंचिदस्यक्रतुर्भिर्निपत्तममर्णोविददिदस्यमर्ष । यदींसुक्षत्रप्रभृतामदस्ययुतंसंतमसिहृम्यधाः+ ॥
त्यंचिदित्थाकर्त्यंशयानमसर्थतमसिवावृधानं । तंचिन्मंदानोवृषभःसुतस्योच्चैरिद्रोऽअपगूर्योजघान ॥ ३२ ॥ उ
द्यादिद्रोमहृतेदानवायवधूर्यमिष्टसहोऽअप्रतीतं । यदीवज्रस्यप्रभृतौदुदामविश्वस्यजंतोरधमंचकार ॥ त्यंचिदर्णमधु
पंशयानमसिन्वव्रंमह्याददुग्रः । अपादमंत्रमहृतावधेननिर्दुर्गोणऽआवृणज्जघ्राचं ॥ कोऽअस्यशुष्मंतविषीवरात
(५।२।१८) अर्ददुरुत्समितिद्वादशचंस्यूक्तस्यान्नेयोगातुरिद्रस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं ५

अनु. २

॥ ८ ॥

ऽएकोधनाभरतेऽअप्रतीतः । इमेचिदस्यज्यसोनुदेवीऽइंद्रस्यौजसोभियसाजिहाते ॥ न्यस्मैदेवीस्वार्धितिजिहीतऽइंद्राद्यगानुरुशतीवयेमे । संयदोजोयुवतेविश्वमाभिरनुस्वधाक्षितयोनमत ॥ एकंनुत्वात्पतिपांचन्यजातंशृणोमियशसंजनैषु । तमेजगृभ्यऽआशसोनविष्टंदोषावस्तोर्हवमानासऽइंद्र ॥ एवाहित्वामृतुथायातयंतंमघाविप्रेभ्योददंतंशृणोमि । कित्तब्रह्माणोर्गृहतेसखायोयेत्वायानिद्रुधुःकारममिद्र ॥ ३३ ॥ इतिचतुर्थाष्टकप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

चतुर्थाष्टकेष्टकानि १३० ऋचः १२६९

पंचविंशाध्यायेवर्गाः ३३ सूक्तानि २४ ऋचः १६८ ॥ त्यागः ॥ अग्नयइद.१०० विश्वेभ्योदेवेभ्य. अग्नय.५ इंद्राग्निभ्या. अग्नय ६ इंद्राये.८ उशनइंद्राभ्या. इंद्राये १७ ऋगंचयेद्राभ्या.४ इंद्राये.७ इंद्रकुत्सोशनोभ्य इंद्रकुत्साभ्या. इंद्राये.१६ ॥ इतिचतुर्थप्रथमः ॥

महिदशमाजापत्यःसंवरणोजातशत्रुनवत्रिष्टुवंतयस्तेष्टौप्रभूवसुरंगिरसःपंत्यंतंसागमत्पदुतृतीयाजगतींसंभानुनापंचात्रिरुरोराऽनुष्टुभयदिद्रपंत्यंतमायाहिनवत्र्युष्णिगाद्यंत्यानुष्टुम्मध्येचसासौरीतदादीतिहासःस्तुतिकर्मत्वादत्रिरवदेवःकोनुविंशतिर्वैश्वदेवंतत्पोळइत्याद्यतिजगत्यांवत्यैकपदाप्रशंतमाब्धूनैकादशीरौद्र्याधेन

कृकसे.

अ. ४ अ. २

॥ ९ ॥

वक्ष्यन्तैतयोरुपायैकपदातं प्रलथापंचोनाकाश्यपोवत्सारो न्येचक्रषयो हृष्टलिंगाद्वित्रिष्टुवंतं विदा एकादशसदाष्ट
णो हयोष्टौ प्रतिक्षत्रौ त्योऽष्टु चोदेवपत्नीस्तवौ त्यात्रिष्टुपद्वितीयाच ॥ १ ॥
॥ हरिः ओम् ॥ (५।३।१) महिमहेतवसे दीव्येन निद्रयेत्थातवसेऽतर्व्यान् । योऽअस्मै सुमाते वाजं सातौस्तु
तोजने समर्थश्चिकेत ॥ सत्वं नऽइन्द्रधियसानोऽअकहेराणां वृषन्योऽक्रमश्रेः । याऽइत्थामघवन्ननुजोषवक्षोऽअभिप्रायः
संक्षिजनात् ॥ न ते तं नऽइन्द्राभ्यर्च्य स्महृष्यायुक्तसोऽअब्रह्मताय दसेन् । तत्क्षेसूर्याय चिदोक्तसिखे वृषासमत्सु दासस्य नाम चित् ॥ वयं ते तं नऽइ
द्रये च नरः शर्धौ जज्ञानायाताश्चरथाः । आस्मान् जगम्याद हि शृभसत्वा भगोन हव्यः प्रभथेष्वचारुः ॥ १ ॥ वयं ते तं नऽइ
द्रत्वे ह्यो जौ नृमृगानि च नृतमानोऽअमर्तः । स नऽएनीव सवानोरयिं द्राः प्रार्थः स्तुषे तु विमघस्य दानं ॥ एवानं नऽइन्द्रोतिभि
रवपाहिर्गणतः शूरकारुन् । उत त्वचं ददतो वाजं सातौ पि प्रीहि मध्वः सुष्ठु तस्य चारोः ॥ उत ते मा पौरुकृतस्यस्यसरेत्स्वस
दस्यो हि रणि नोरराणाः । वहतु मा दशद्वये तांसोऽअस्यै रिक्षितस्य कर्तुभिर्नु संश्रे ॥ उत ते मा मारुताश्चस्य शोणाः कृत्वा
मघा सो विदधस्य रातौ । सहस्रमिच्यवतानो ददानऽआनूकमयो वपुषे नाचैत् ॥ उत ते मा ध्वन्यस्य जुष्टालिभमण्यस्य सूरु
(५।३।१) महिमह इति दशर्चस्य सूक्तस्य प्राजापत्यः संवरण इन्द्रादिष्टुप ।

मंडलं ५

अनु. ३

॥ ९ ॥

चोयतांनाः । महारायः संवरणस्य ऽऋषेर्व्रजं नगावः प्रयता ऽअपि मन् ॥ २ ॥ (५।३।२) अजातशत्रुमजरास्वर्वत्य
 नुस्वधार्मितादुस्समीयते । सुनोतनपचतब्रह्मवाहसेपुरुष्टुतार्यप्रतरंदधातन ॥ आयः सोमै नजठरमपिप्रतामंदतमघवा
 मध्वो ऽअंधसः । यदीमगायहंतवेमहावधः सहस्रभृष्टिमशनविधयमत् ॥ यो ऽअसैघ्रंसडतवाय ऽऊधनि सोमै सुनो
 ति भवति द्यमो ऽअह । अपापशुक्रस्तनुष्टिंमूहतितनूष्टुभ्रमघवायः कवासखः⁺ ॥ यस्यावधीत्पितरं यस्वमातरं यस्वश
 क्रोभ्रातरं नातं ऽईषते । वेतीद्वस्यप्रयतायतं करो न किल्बिषादीषते वस्व ऽआकुरः⁺ ॥ नपंचभिर्दशभिर्वष्ट्यारभं नानु
 तासचते पुष्यताचन । जिनातिवेदमयाहंति वाधुनिरादेव युंभंजति गोमतिव्रजे⁺ ॥ ३ ॥ वित्वक्ष्णः समृतौ च क्रमास
 जो सुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः । इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्थः ॥ समीपणे रजति भोजनं मु
 पे विद्राशुषे भजति सुनरं वसु । दुर्गे च न धियते विश्व ऽआपुरुजनो यो ऽअस्य तविषीमर्जुक्रुधत् ॥ संयजनौ सुधनौ विश्वश
 र्धसाववेदिद्रोमघवागोषुशुभिषु । युजं ह्यन्यमकृतप्रवेपन्युदुर्गव्यं सृजते सत्त्वभिर्धुनिः ॥ सहस्रसामाग्निवेशिगुणी
 पे शस्त्रिमम ऽउपमांके तु मर्यः । तस्मा ऽआपः संयतः पीपयंत तास्मिन्धुत्रममवत्त्वेषमस्तु ॥ ४ ॥ (५।३।३) यस्तेसाधिष्ठो

(५।३।२) अजातशत्रुमिति नवर्चस्य सूक्तस्य प्राजापत्यः सवरण इन्द्रो जगत्यां त्राष्टिपु । (५।३।३) यस्तेसाधिष्ठ इत्यष्ट्यसूक्तस्या-
 गिरसः प्रभूवसुरिन्द्रो नुदुवंत्यापंक्तिः ।

वसऽइन्द्रकृतुष्टमाभर । अस्मभ्यं चर्षणीसहस्रं सिवाजैषु दुष्टरं ॥ यद्विद्रते च तन्नो यच्छूरसंति तिस्रः । यद्वापंचक्षितीना
मवस्तुनऽआभर ॥ आतेवो वेरं यं वृषन्तमस्य हूमेहे । वृषजृतिहिं ज्ञिषऽआभूभिर्द्रतुर्वणिः ॥ वृषाहासिराधसे
जज्ञिषे वृष्णि ते शवः । स्वधन्ते धपन्मनः सत्राहमिन्द्रपौत्र्यं ॥ त्वं तमिन्द्रमर्त्यममित्रयंतमद्रिवः । सर्वथा शतक्रतो निचा
हिरावसस्पते ॥ ५ ॥ त्वामिन्द्रं न हन्तमजना सो वृत्कर्वहिषः । उग्रं पूर्वाषु पुर्व्यहवते वाजसातये ॥ अस्माकमिन्द्रदुष्टरं पु
रोयावानमाजिषु । स्यावानं धनेने वाजयंतमवारथं ॥ अस्माकमिन्द्रे हि नोरथमवापुरंध्या । वयं शविष्ववार्थं दिवि श्र
वो दधीमहि दिवि स्तोममनामेहे ॥ ६ ॥ (५।३।४) सऽआगमदिद्रो यो वसूनां चिकेत दातुं दामनोरयीणां । धन्वचरो
नवं सगस्तृषाणश्च कमानः पिबतु दुग्धमंशुं + ॥ आते हनृहरिवः शूरशिप्रेरुहत्सो मोनपवतस्य पूष्टे । अनुत्वारजन्नवतो न
हिन्वन्गीभिर्मदमपुरुहत्विश्वे ॥ चक्रं न वृत्तं पुरुहत्सो मोनपवतस्य पूष्टे । अनुत्वारजन्नवतो न
कुविन्नस्तौ षन्मघवन्पुरुषसुः ॥ एषया वै जरिता तऽइंद्रयति वाचं बृहदाशुषाणः । प्रसव्ये न मघवन् यंसिरायः प्रदक्षिणि
रैरयोमाविषेनः ॥ वृषा त्वावृषणं वर्धतु द्यौ वृषावृषभ्यां वसे हरिभ्यां । सनो वृषावृषरथः सुशिप्रवृषक्रतो वृषावज्जिन्म
रेधाः ॥ योरोहितावाजिनौ वाजिनीवाञ्चिभिः शतैः सचमानावदिष्ट । यूने सर्मसै क्षितयो न मंतां श्रुतरथाय मरुतो दुवो
(५।३।४) सआगमदिति पंडुचस्य सूक्तस्यागिरसः प्रभूवसुरिन्द्रं क्षिपुष्वतीयाजगती ।

या⁺ ॥ ७ ॥ (५।३।५) संभानुनायततेसूर्यस्याजुह्वानोघृतपृष्ठःस्वर्चाः । तस्माऽअमृताऽउषसोऽन्युच्छान्यऽइंद्रा
 यसुनवामेत्याह ॥ समिद्धाग्निवनवत्स्तीर्णविर्हियुक्तम्रावासुतसौमोजराते । आवाणोयस्यैगिरिवंदुल्ययदध्वयुर्हविषाव
 सिंधु ॥ वधूरियंपतिमिच्छत्येति यऽईवहातेमहिषीमिपिरां । आस्यश्रवस्याद्रथऽआचघोषात्पुरुसहस्रापरिवर्तयाते ॥
 नसराजव्यथतेयस्मिन्निद्रस्तीव्रसोमंपिवतिगोसखायं । आसत्वनैरजतिहंतिवृत्रक्षेतिक्षितीःसुभगोनामपुण्यन् ॥ पु
 ष्यात्क्षेमैऽअभियोगेभवात्युभेवृतौसंयतीसंजयाति । प्रियःसूर्यप्रियोऽअन्नाभवातियऽइंद्रायसुतसौमोददाशत् ॥ ८ ॥
 (५।३।६) उरोष्टंइंद्रराधसोविभ्वीरातिःशतकृतो । अर्धानोविश्वचर्षणेद्युन्नासुक्षत्रमंहय ॥ यदीमिंद्रश्च
 वाय्यमिपंशविष्टदधिपे । पृथग्दीर्घश्रुत्तमंहिरण्यवर्णदुष्टरं ॥ शुष्मासोयेतैऽअद्रिवोमेहनोकेतुसायः । उभादेवाव
 भिष्टयेद्विवश्चग्मश्चराजथः ॥ एतोनोऽअस्यकस्यचिद्वक्षस्यतववृत्रहन् । अस्मभ्यंनृगणामाभरास्मभ्यंनृमणस्यसे ॥
 नूतंऽआभिरभिष्टिभिस्तवशर्मन्छतकृतो । इंद्रस्यामसुगोपाः⁺ ॥ ९ ॥ (५।३।७) यदिद्रचित्र
 मेहनास्तित्वादातमद्रिवः । राधुस्तन्नोविदद्वसउभयाहृत्याभर ॥ यन्मन्यसेवरेण्यमिंद्रद्युक्षंतदाभर । विद्याम

(५।३।५) सभानुनेतिपचर्चस्यसूक्तस्यभौमोत्रिर्द्रस्त्रिष्टुप् । (५।३।६) उरोष्टइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यभौमोत्रिर्द्रोनुष्टुप् । (५।३।७)
 यदिद्रेतिपचर्चस्यसूक्तस्यभौमोत्रिर्द्रोनुष्टुपापक्तिः ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. २

। ११ ॥

तस्यतेवयमकूपारस्यद्रावने ॥ यत्तेदित्सुप्रराधं मनोऽस्ति श्रुतं बहत् । तेन हृद्वाचिदद्रिवऽआवाजं दर्शितये
महिष्ठवोमघोनां राजानं चर्षणीनां । इन्द्रमुपग्रस्तये पूर्वाभिर्जुषे गिरः ॥ अस्माऽइत्काव्यं च ऽउक्थमिन्द्राय शस्यं ।
तस्माऽउब्रह्मवाहसे गिरौ वर्धुत्य त्रयो गिरः श्रुभंत्यत्रयः ॥ १० ॥ (५।३।८) आयाहाद्रिभिः सुतंसोमसोमपतेपिव ।
वृषं त्रिद्रुवृषं भिवृत्रहंतम ॥ वृषाया वा वृषामदो वृषासोमोऽअयंसुतः । वृषं त्रिद्रु ॥ वृषा त्वावृषणं हुवेवाञ्जिन्वित्राभिरू
तिभिः । वृषं त्रिद्रु ॥ ऋजीषीवज्रीवृषभस्तुराषाद्रच्छुभीराजो वृत्रहासोमपावा । अक्षेत्रविद्यथामग्धो भुव नान्यदीधयुः ॥ ११ ॥
वृषं त्रिद्रुवृषं भिवृत्रहंतम ॥ यत्त्वा सूर्यस्वभानस्तमसा विध्यदासुरः । अक्षेत्रविद्यथामग्धो भुव नान्यदीधयुः ॥ ११ ॥
स्वर्भानोरघयदिद्रमायाऽअवो दिवो वर्तमानाऽअवाहन् । गृहसूर्यतमसापत्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणा विददत्रिः ॥ ११ ॥
मंतवसंतमत्रऽइरस्याद्रुग्धोभियसानिगरीत् । त्वमित्रोऽअसित्यराधास्तौ मेहावतं वरुणश्च राजा ॥ आणो ब्रह्मायुयु
नूस्तमसा विध्यदासुरः । अत्रिः सूर्यस्य दिवि च क्षराधा त्वर्भानोरपमायाऽअक्षुत् ॥ यंवै सूर्यस्वर्भानो
(५।३।८) आयाहीति नवर्चस्य सूक्तस्य भौमोत्रिः आद्यानां च तस्य नाम त्रिदेवता आद्यास्ति स उष्णिहः पच-
म्यं तेऽनुष्टुभौ शिष्टास्त्रिष्टुभः । (५।३।९) कोनुवामिति विशत्य च सूक्तस्य भौमोत्रिर्विधेदेवास्त्रिष्टुष्टुषोडशी सप्तदश्यावति जगत्या वं लैकपदा ।
॥ ११ ॥

मंडलं ५

अनु- ३

॥ ११ ॥

निद्वोर्वामहःपार्थिवस्यवादे । ऋतस्यवासदसित्रासीथानोयज्ञायतेवापशुपोनवाजान् ॥ तेनोमित्रोवरुणोऽअर्थमायु
 रिन्द्रऋभक्षामरुतौजुयंत । नमोभिर्वायेदधेतसुबृत्किस्तोमरुद्रार्थमीहुपसजोपाः ॥ आवांयेष्ठाश्विनाहुवध्यैवातस्यप
 त्सत्रथ्यस्यपटौ । उतवादिवोऽअसुरायुमन्मप्रांर्धासीवयज्यवेभरध्वं ॥ प्रसक्षणोदिव्यःकण्वहोतात्रितोदिवःसजोपा
 वातौऽअग्निः । पृषाभर्गःप्रभथेविश्वभौजाऽआजिनर्जगुराश्वश्वतमाः ॥ प्रवोरयिंयुक्ताश्वभरध्वंरायऽएपेवसेदधी
 तधीः । सुशेवऽएवैरौशिजस्यहोतायेवऽएवामरुतस्तुराणां ॥ १३ ॥ प्रवोवायुरंथयुजंकृणुध्वंप्रदेवंविप्रनितारंम
 क्रैः । इषुथ्यवऽऋतसापःपुरंधीर्वस्वीनोऽअत्रपत्नीराधिघेधुः ॥ उर्पवऽएपेवंचोभिःशैपैःप्रयुह्वीदिवश्चितयंद्भिरकैः । उ
 पासानक्तोविदुषीवविश्वमाहोवहतोमर्त्यययुजं ॥ अभिवोऽअर्चोपोज्यावतो नन्वास्तोषपतित्वष्टरंराणः । धन्यास
 जोषाधिपणानमोभिर्वनस्पतौऽरोषधीरायऽएषे ॥ तुजेनस्तनेपर्वताःसंतुस्वैतवोयेवसवोनवीराः । पुनितऽआस्योयंज
 तःसदानोवर्धाःशंसनयोऽअभिष्टौ ॥ वृष्णोऽअस्तोपिभूम्यस्यगर्भत्रितोनर्पातमपांसुबृत्किः । गणीतेऽअग्निरेतरीनश
 पैःशोचिष्केशोनिर्णिणातिवर्ना ॥ १४ ॥ कथामहेरुद्रियायत्रवामकद्रायेचिकितुयेभर्गाय । आपऽओर्पधीरुतनोवंतु

(भेदपक्षे—मित्रावरुणौ १ विश्वेदेवाः १ अश्विनौ १ विश्वेदेवाः १ मरुतः १ विश्वेदेवाः १ उवासानक्ते १ विश्वेदेवाः २ अग्निः १
 विश्वेदेवाः २ मरुतः १ विश्वेदेवाः १ भूमिः १ विश्वेदेवाः ३ भूमिः १ विश्वेदेवाः १ एवं २० ।

द्यौर्वनागिरयोबुधकैशाः ॥ शुणोत्तुनऽऊर्जापतिर्गिरःसनभस्तरायौऽइषिरःपरिज्मा । शुण्वत्वापःपुरेनशुभ्राःपरिस्त्रु
चोवबुहाणस्याद्रेः ॥ विदाचिन्नुमहांतोयेवऽएवाब्रवामदस्मावर्यदधानाः । वयश्चनसुभ्यः१ आवयंतिक्षुभामर्तमनुय
तंवधुस्तैः+ ॥ आदैव्यानिपाथैवानिजन्मापश्चाच्छासुर्मखायवोचं । वधंताद्यावोगिरिश्चद्राग्राऽउदावधंतामभिषाता
ऽअर्णोः ॥ पदेपदेमेजरिमानिधांथिवरूत्रीवाशुक्रायापायुभिश्च । सिषकुमातामहीरसानःसत्सरिभिर्ऋजुहस्तऽऋजु
वर्निः ॥ १५ ॥ कथादांशेनमससुदानूनेवयामरुतोऽअच्छौकौप्रश्रवसोमरुतोऽअच्छौकौ । मानोर्हिबुधयोर्विषधा
दुस्माकंभूदुपमातिवर्निः ॥ इतिचिन्नुप्रजायैपशुमत्यैदेवासोवर्ततेमत्यौवऽआदेवासोवर्ततेमत्यौवः । अत्राशिवांतन्वो
धासिमस्याजरांचिन्मेनिर्ऋतिर्जग्रसीत ॥ तावोदेवाःसुमतिमूर्जयतीमिषमश्यामवसवःशसगोः । सानःसुदानुर्मळयं
तीदेवीप्रतिद्रवतीसुवितायगम्याः ॥ अभिनऽइळापृथस्यमातासन्नदीभिर्ऋर्वशीवागुणानु । उर्वशीवाबुहद्विवागुणाना
भूषण्वानाप्रभथस्यायोः+ ॥ सिषकुनऽऊर्जव्यस्यपृष्टेः+ ॥ १६ ॥ (५।३।१०) प्रशंतमावरुणंदीधितीगीभिर्भ्रंभग
मार्दितिननमश्याः । पृषद्योनिःपंचहोताशृणोत्वतूर्तपथाऽअसुरेमयोभुः+ ॥ प्रतिमेस्तोममार्दितिर्जगृभ्यात्सुनुनमा
(५।३।१०) प्रशंतमेत्यष्टादशचर्चस्यसूक्तस्यभौमोत्रिविधेदेवाःएकादश्यारुद्रबिष्टुप्सप्तदशेकपदा । (भेदपक्षे—विश्वेदेवाः २ सविता १
इंद्रः १ विश्वेदेवाः १ इंद्रः १ बृहस्पतिः ३ मरुतः १ रुद्रः १ विश्वेदेवाः १ पर्जन्यः २ मरुतः १ विश्वेदेवाः २ अश्विनौ १ एवं १८) ।

ताहृद्यं सुशेवं । ब्रह्मप्रियं देवाहितं यदस्य हं मित्रैर्वरुणैर्यन्मयो भुः ॥ उदीरय कृवितं मं कवीनामुनत्तैनमभि मध्वाघृतेन ।
 सनो वसूनि प्रयता हितानि चंद्राणि देवः सविता सुवाति ॥ समिद्रणो मनसानेपि गोभिः संसरिर्भिर्हिरवः संस्वस्ति । संब्रह्म
 णा देवाहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्यायज्ञिर्यानां ॥ देवो भगः सवितारायोऽंशुऽइंद्रो बृत्रस्य संजितो धनानां । ऋभक्षा
 वार्जऽवृतवापुरं धिरवतुनोऽमृतासस्तुरासः ॥ १७ ॥ मरुत्वतोऽप्रतीतस्य जिष्णोरजूर्यतः प्रब्रवामाकृतानि । न ते
 पूर्वैर्मधवन्नापरा सो न वीर्यं नूतनः कश्चनाप ॥ उपस्तुहि प्रथमं ब्रधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानां । यः शंसते स्तुवते शंभे
 विष्ठः पुरुवसुरागमज्जो हुवानं ॥ तवोतिभिः सचमानाऽअरिष्टा बृहस्पते मधवानः सुवीराः ॥ येऽअश्वदाऽवृतवासंति गो
 दा ये वस्त्रदाः सुभगास्ते पुरार्यः ॥ विसर्माणं कृणुहि वित्तमैपां ये भूजतेऽअपृणतो नऽवकथैः । अपवतान् प्रसवे वा वृधानां च
 ह्याद्विपुः सूर्यो द्यावयस्व ॥ यऽओ हते रक्षसो देववीता वचक्रे भिस्तं रूतो नियात । यो वः शर्मो शशमानस्य निदोत्तच्छया
 न्कामान् करते सिञ्चिद्वानः ॥ १८ ॥ तमुष्टु ह्रियः स्विपुः सुधन्या यो विध्वंस्य क्षयति भेषजस्य । यक्ष्वा महसौ मनसा यरु
 द्रं नमो भिर्देवमसुरंदुवस्य ॥ दर्मूनसोऽअपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्यतृष्टाः । सरस्वती बृहद्ब्रह्मवोतराकादशस्य
 तीर्विरिव संतुष्टाः ॥ प्रसूमेहे सुशरणार्थमेधां गिरिभरे न व्यसी जायमानां । यऽआहुना दुहितुर्वक्षणां सुरूपामिनानोऽ
 अकृणो दिदंनः ॥ प्रसुष्टुतिः स्तुनयंतं रुवंतं मिळस्पतिं जरितनं नमश्वाः । योऽअब्दिमोऽवदनिमोऽइत्यतिप्रविद्युतारोदं

सीऽबुक्षमाणः ॥ एषः स्तोमोमारुतं शर्धोऽअच्छा रुद्रस्य सन्धुवन्यूरुदद्याः । कामोरयेहवतेमास्वस्युर्पस्तुहि पृषदश्वौ
 ऽअयासः ॥ प्रैषः स्तोमः पृथिवीमंतरिक्षं वनस्पतीं ऽरोषधीरायेऽअद्याः । देवो देवः सहवो भूतुमह्यमानो मातापृथिवीदु
 र्मतौ धातु ॥ उरौ देवाऽअनिबाधे स्याम ॥ समन्विनो रवसानूतनेनमयो भुवः सुप्रणीतीगमेम । आनोरविं वहत मोतवीरा
 नाविश्वान्यमृतासौ भगानि ॥ १९ ॥ (५।३।११) आधेनवः पर्यसातूर्णर्थः ऽअर्मर्धतीरुपनोयंतुमध्वा । महोराये
 बृहतीः सप्तविप्रो मयो भुवो जरिताजो हवीति ॥ आसुष्टुतीनर्मसावर्तयध्वैद्यावावाजाय पृथिवीऽअमृध्रे । पितामाताम
 भुवचाः सहस्ताभरे भरेनोयशसावविष्टां ॥ अध्वर्यवश्चक्रुवांसोमधूनि प्रवायवै भरतचारुशुकं । होतैवनः प्रथमः पक्ष्यस्य
 देवमध्वोरिमातेमदाय ॥ दशक्षिपोयुं जतेवाहूऽअद्रिंसोमस्ययाशमितारासहस्ता । मध्वोरसंसुगभस्तिर्गिरिष्ठांचनि
 श्वददुदुहेशुकमंशुः⁺ ॥ असाविते जुजुपाणाय सोमः कत्वेदक्षाय बृहतेमदाय । हरीरथैः सुधुरायो गेऽअर्वागिन्द्रिप्रियाकृ
 णुहि ह्यमानः ॥ २० ॥ आनो महीमरभतिसजोपाशो देवीनर्मसारातहव्यां । मधोर्मदाय बृहतीमृतज्ञामाग्नेवहपथि
 भिर्देवयानैः ॥ अंजंति यं प्रथयंतो न विप्रान्वपावंतं नाभिनातपंतः । पितुर्न पुत्रऽउपसिप्रेष्ठऽआधुर्मोऽअग्निमतयन्नसादि ॥

(५।३।११) आधेनव इति सप्तदशर्वस्य सूक्तस्य भौमो त्रिविधे देवास्त्रिषु षोडशेकपदाविराद् (भेदपक्षे)—नदी १ द्यावापृथिवी १ वायुः १
 सोमः १ इंद्रः १ अग्निः १ घर्मः १ अश्विनौ १ विश्वेदेवाः २ सरस्वती १ बृहस्पतिः १ अग्निः ३ विश्वेदेवाः १ अश्विनौ १ एवं १७ ।

अच्छामहीबृहतीशतमागीर्दूतो न गत्वश्विना हवध्वै । मयो भुवांसरथाय तमर्वागंतं निधिधुरं मणिर्ननाभि ॥ प्रतव्य
 सो नमऽउक्तिरुस्याहंपूष्णऽउत वायो रंदिक्षि । यारार्धसाचो वितारामतीनां यावार्जस्य द्रविणो दाऽउत तमन् ॥ आनाम
 भिर्मरुतो वक्षि विश्वानारूपेभिर्जात वेदो हुवानः । यज्ञं गिरौ जरितुः सुष्टु त्वि च विश्वे गंतमरुतो विश्वऽकृती ॥ २१ ॥ आ
 नो दिवो बृहतः पर्वता दासरं स्वतीयजता गंतु यज्ञं । हवदेवी जुषाणा घृताचीं शुग्मानो वाचं मुशतीं शृणोतु ॥ आवेधसं
 नीलं पृष्ठं बृहंतं बृहस्पतिं सदेने सा दयध्वं । सा दद्यौ निंदमऽआदीं दिवांसं हिरण्यवर्णमरुपसं पेम ॥ आर्धर्णसिर्वहर्दि वोरारो
 णो विश्वेभिर्गत्वोमभि हुवानः । श्रावसानऽओपधीरमृध्रस्त्रिधा तु शृंगो बृपभो वयो धाः ॥ मातुष्यदे परमे शुक्रऽआयो
 विपन्यवोरारोस्पिरासोऽअगमन् । सशेव्यं नमसारा तहं व्याः शिशुं मृजं त्यायवोनवासे ॥ बृहद्वयो बृहते तुभ्यमग्ने धिया
 जुरो मिथुनासः संचत । देवो देवः सुहवो भूतमह्यं मानो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् ॥ वरौ देवाऽअनिवाधे स्याम ॥ सम
 श्विनो रवसानूतने नमयो भुवांसु प्रणीती गमेम । आनोरयि वंहत मोतवीरान विश्वान्यमृतासौ भगानि ॥ २२ ॥ (५।३।१२)
 तंप्रत्नथा पूर्वथा विश्वे मथा ज्येष्ठतां त्वि वहिषदं स्वविदं । प्रतीची नं वृजनं दोहसे गिरां शुजयं तुमनया सुवधंसे ॥ श्रिये सुह

(५।३।१२) तत्र त्रयेति पचदशर्चस्य सूक्तस्य काश्यपो वत्सरो विश्वे देवा जगलं द्वे त्रिष्टुभौ (भेदपक्षे—इंद्रः २ अग्निः १ सूर्यः १
 अग्निः १ विश्वे देवाः १ सूर्यः १ अग्निः १ सूर्यः १ अग्निः २ सुतं भरः २ विश्वे देवाः २ सुतं भरः १ अग्निः २ एवं १५) ।

श्रुवस.

अ. ४ अ. २

॥ १४ ॥

शीरुपरस्ययाः स्वविरोचमानः ककुभांमचोदते । सुगोपाऽअसिनदभायसुक्रतोपरोमायाभिर्कृतऽआसनमते ॥ अत्यं
हविःसचतेसच्चधातुचारिष्टगातुःसहोतासहोभरिः । प्रसर्त्तणोऽअनुवर्हिद्वपाशिशुर्मध्येयुवाजोविस्त्रुहाहितः+ ॥ प्र
संजष्टेसुयुजोयामक्षिप्येनीचीरमुष्मैयम्यऽकृतावृधः । सुयंतुभिःसर्वशासैरभीष्टभिःक्रिविर्नामानिप्रवणेमुपायति ॥ अत्यं
॥ २३ ॥ यादगेवदहशेताहगुच्यतेसंच्छाययादधिरेसिधयाप्स्वा । महीमसभ्यमुरुपामरुज्रयोवृहत्सवीरमनपच्युतं
सहः ॥ वेत्यग्रुर्जनिवान्वाऽअतिस्पृधःसमर्थतामनसासूर्यःकविः । ग्रंसंरक्षतंपरिविश्वतोयमस्माकंशर्मवनवत्स्वाव
सुः ॥ ज्यायौसमस्ययुतुनस्यकेतुनऽकपिस्वरंचरतियासुनामते । यादस्मिन्धायितमपस्ययाविदुद्यऽउस्वयंवहतेसोऽ
अंकरत् ॥ समुद्रमासामवतस्थेऽअग्निमानरिष्यतिसर्वनयसिन्नायता । अत्रानहादिक्रवणस्यरेजेतेयत्रामतिविद्यते
पूतवंधनी ॥ सहिक्षत्रस्यमनसस्यचित्तिभिरेवावदस्ययजतस्यसध्रेः । अवत्सारस्यस्पृणवामरपर्वभिःशर्विष्ठवाजैविदुपा
चिदर्थं ॥ २४ ॥ इयेनऽआसामदितिःकक्ष्योऽमदोविश्ववारस्ययजतस्यमायिनः । समन्यमन्यमर्थयंत्येवेविदुर्विपा
णपरिपानमंतिते+ ॥ सदापणोर्यजतोविद्विषौवधीद्वाहुवृकःश्रुतवित्तयौवःसचा । उभासवराप्रत्येतिभातिचयर्दोग
णंभर्जतेसुप्रयावभिः ॥ सुतंभरोयर्जमानस्यसत्पतिर्विश्वांसामूधुःसधियामूदंचनः । भरुजेनूरसवच्छिथ्रियेपयोनुबु

मंडल

अनु.

॥ १४ ॥

वाणोऽअथैतिनस्वपन्⁺ ॥ योजागारतमृचःकामयतेयोजागारतमसामानियंति । योजागारतमयसोमऽआहुतवाह
 मस्मिसुख्येन्योकाः ॥ अग्निर्जागारतमृचःकामयतेग्निर्जागारतमसामानियंति । अग्निर्जागारतमयसोमऽआहुतवाह
 मस्मिसुख्येन्योकाः ॥ २५ ॥ (परिशिष्टं ॥ जागर्पित्वंभुवनेजातेवदोजागर्पियत्रयजतेहविष्मान् । इदंहविःश्रद्धा
 नोजुहोमितेनपासिगुह्यंनामगोनीं ॥ (५।४।१) विदादिवोविष्यन्नद्रिमकथैरायत्याऽउपसोऽअर्चिनोगुः । अपावृ
 तत्रजिनीरुत्स्वर्गाद्विदुरोमाजुषीद्वेवऽआवः ॥ विसूर्योऽअमतिनश्रियंसादोर्वाद्गवांमाताजानुतीगत् । धन्वर्णसोनद्यः
 खादोऽअर्णाःस्थूणैवसुमिताहंहतद्यौः⁺ ॥ अस्माऽउक्थायपर्वतस्यगर्भोमहीनांजनुपैपव्यायं । विपर्वतोर्जिहोतसा
 धतद्यौराविवांसतोदसयंतभूमं ॥ सूक्तेर्भिवोवचोभिर्दुवजुष्टैरिंद्रान्वभृमीऽअवसेहुवध्यै । उक्थेभिर्हिष्मकवयःसुय
 ज्ञाऽआविवांसतोमरुतोयजति ॥ एतोन्वभृद्यसुध्योऽभुवामप्रदुच्छुनामिनवामावरीयः । आरेद्वेषांसिसनतर्द्धा
 यामप्रांचोयजमानमच्छं ॥ २६ ॥ एताधियंक्वणवामासखायोपयामातोऽऋणतव्रजंगोः । ययामनुर्विशिशिप्रंजिगाय
 ययवाणिग्वंकुरापापुरीषं ॥ अनूनोदन्नहस्तयतोऽअद्विरार्चन्येनदशमासोनर्वगाः । ऋतयतीसरमागाऽअविंदद्विन्वा

(५।४।१) विदादिवइत्येकादशर्चसूक्तसात्रेयःसदाष्टणोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् । (भेदपक्षे—इद्रसूर्यो १ विश्वेदेवाः २ इंद्राग्नी १ विश्वेदेवाः
 ६ आपः १ एवं १ १ । अत्रसूक्तेसदाष्टणपैयजतइत्यादिलिंगोक्तत्रपिभिःसमुच्चयइतिकेचित् ।)

ऋक्सं.

अ. ४ अ. २

॥ १५ ॥

मंडलं ५

अनु. ४

॥ १५ ॥

निसत्यांगिराश्चकार ॥ विश्वेऽस्याव्युषिमाहिनायाः संयज्ञोभिरंगिरसो नवत । उत्संऽआसां परमेसधस्यऽऽकृतस्य पथा
सरमाविदुज्ञाः ॥ आसूयौ चानुससाध्वः क्षेत्र्यदस्यो विधादीर्घयाथे । रघुः श्येनः पतयदंधोऽअच्छायुर्वाकविदीदय
ज्ञोषुगच्छन् ॥ आसूयौऽअरुहच्छुक्रमणोयुक्तयज्ञरितो वीतपृष्ठाः । उज्ञाननावमनयंतु धीराऽआशृण्वतो रापोऽअर्वा
गतिष्ठन् ॥ धियंवोऽअप्सुर्दधिर्ष्वर्षाययातर्न्दशमासो नवग्वाः । अयाधियास्यामदेवगोपाऽअयाधियातुतुर्यामा
त्यहः ॥ २७ ॥ (५।४।२) हयो न विद्वोऽअयुजिस्वयंधुरितां वहामि प्रतरणीमवस्युर्व । नास्यावदिमविमुचंनावृतं पु
नर्विद्वान्पथः पुरऽएतऽऽकृजुर्नैषति ॥ अम्रऽइंद्रवरुणमित्रदेवाः शर्धः प्रयंतमारुतो तर्विष्णो । उमानासत्या रुद्रोऽअध
माः पषाभगः सरस्वती जुषंत ॥ इंद्राग्नीमित्रावरुणादितिस्वः पृथिवीं द्यामरुतः पर्वतोऽअपः । हुवेविष्णुपुषणं ब्रह्मणस्प
तिभगं नृशंसं सवितारं मतये ॥ उत नो विष्णुरुतवातोऽअसिधो द्रविणो दाऽउत सोमो मयस्करत् । उतऽऽकृभवऽउतराये
नोऽअश्विनो तत्वष्टोतविभ्वानुमंसते ॥ उत त्यज्ञोमारुतं शर्धऽआगमदि विक्षयं जतं वहिरासदे । बृहस्पतिः शर्मपूषोत
नोयमद्वरुथ्यं वरुणो मित्रोऽअर्यमा ॥ उत त्येनः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नर्द्यं स्वामणे भुवन् । भगो विभुक्ताश
(५।४।२) हयो नेत्यष्टर्चस्य सूक्तस्यात्रेयः प्रतिशत्रो विश्वेदेवा जगती सप्तम्यष्टम्यो देवपत्न्यः द्वितीयां लोत्रिष्ठभौ । (भेदपक्षे—विश्वेदेवाः ६
देवपत्न्यः २ एवं ८) ।

वसावसागमदुरुव्यचाऽदितिःश्रोतुमेह्वं ॥ देवानांपत्नीरुशतीरंवतुनःप्राचंतुनस्तुजयेवाजसातये । याःपार्थिवा
सोयाऽअपामपित्रतेतानोदेवीःसुहवाःशर्मयच्छत ॥ उतम्राव्यतुदेवपत्नीरिंद्राण्यभ्राव्यश्विनीराट् । आरोदसीवरु
णानीशृणोतुव्यंतुदेवीर्यऽऽऽनुजनीनां ॥ २८ ॥ ॥ इतिचतुर्थोऽष्टकेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

पर्व्विशाख्यायेवर्गाः २८ सूक्तानि १४ ऋचः १४६ ॥ त्यागः ॥ इद्रायेदं ५२ सूर्याये अत्रय. ४ विश्वेभ्योदेवेभ्य. ३०
[भे. प. मित्रावरुणाम्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य. अश्विम्या विश्वेभ्योदेवेभ्य. उपासानक्ताम्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य. २
अग्नय. विश्वेभ्योदेवेभ्य. २ मरुद्भ्य. विश्वेभ्योदेवेभ्य. भूम्याइ विश्वेभ्योदेवेभ्य ३ सवित्र. इंद्राये. विश्वेभ्योदेवेभ्य.
इद्राये. बृहस्पतय. ३ मरुद्भ्य] रुद्राये विश्वेभ्योदेवेभ्य. ५६ [भे. प. विश्वेभ्यो. पर्जन्याये. २ मरुद्भ्य. विश्वेभ्योदेवेभ्य
२ अश्विम्या. नद्याइ. द्यावापृथिवीभ्या. वायव. सोमाये. इंद्राये. अग्नय घर्माये. अश्विम्या विश्वेभ्योदेवेभ्य. २ सरस्वत्या बृहस्पतय.
अग्नय. ३ विश्वेभ्योदेवेभ्य. अश्विम्या. इंद्राये २ अग्नय सूर्याये अग्नय. विश्वेभ्योदेवेभ्य सूर्याये. अग्नय. सूर्याये. २ विश्वेभ्योदेवेभ्य. २
सुतभराये. अग्नय. २ इंद्रसूर्याम्यामि. विश्वेभ्योदेवेभ्य. २ इद्राग्निम्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य. ६ अद्भ्यइ. विश्वे. ६] देवानापत्नीभ्य. २ ॥
इतिचतुर्थेद्वितीयः ॥

प्रयुजतीसप्तप्रतिरथःकटुपंचप्रतिभानुर्जागतंदेवंवःप्रतिभौत्यातृणपाणिर्विश्वःस्वस्त्यात्रेयःपंकत्यंतमज्ञेपंचोना
चतुर्थ्यैद्रवायवीवायव्यैकद्रवायव्यौचतस्रोगायत्र्यःपलुण्हस्तिस्त्रोजगल्यस्त्रिष्टुभोर्वात्येअनुष्टुभौप्रश्यावाश्व

ऋक्सं.

अ.४.अ. ३

॥ १६ ॥

ज्यूनोऽद्यावाश्वोमारुतंहतंपंक्तिः षष्ठ्येचकोवेदपोळशकुब्जहृत्यनुष्टुप्पुरउष्णिक्कुप्सतोबृहत्यौगायत्रीसतो
बृहतीककुभौगायत्रीसतोबृहत्यौककुप्सतोबृहतीप्रशार्धायंपंचोनाजागतमुपात्यात्रिष्टुप्प्रयज्यवोदशांत्यात्रिष्टुव
शेनववार्हतंतृतीयासप्तस्यौसतोबृहत्यावारुद्रासोष्टौद्वित्रिष्टुवंतमुप्रवस्त्रिष्टुवंतमीळेद्विजगत्यंतमाशेयंचवाके
शशीयसीपंचभ्यनुष्टुप्प्रवमीसतोबृहत्युतेननवश्रुतविन्मैत्रावरुणैवतत् ॥ ३ ॥
॥ हरिःॐम् ॥ ॥ (५।४।३) प्रयुंजतीदिवऽएतिब्रवाणामहीमातादुह्निवोर्धयंती ॥
नीषापितृभ्यऽआसदनेजोहुवाना ॥ अजिरासस्तदपऽईयमानाऽआतस्थिवांसोऽअमृतस्यनाभिं ॥ आविवांसतीयुवतिर्भे
विश्वतःसीपरिद्यावापृथिवीयंतिपंथाः ॥ उक्षासमद्रोऽअरुषःसुपर्णःपूर्वस्ययोनिपितुराविवेश ॥ अनंतासंऽउरवो
श्चिरश्चरंतिपरिसद्योऽअंतांन् ॥ चत्वारऽईविभ्रतिक्षेमयंतोदशगर्भैश्चरसंधापयंते ॥ मध्येदिवोनिहितःपृ
थुर्वपुर्निवचनंजनासश्चरंतिपृथस्तस्थुरापः ॥ त्रिधातवःपरमाऽअस्यगर्भो
(५।४।३) प्रयुंजतीतिसप्तर्चस्यसूक्त्यात्रेयःप्रतिरथोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् । (भेदपक्षे-उषाः १ सूर्यरश्मयः १ सूर्यः ३ विश्वेदेवाः १
मित्रावरुणाग्रयः १ एवं ७) ।

मंडलं. ५

अनु. ४

॥ १६ ॥

यम्याङ्गुसबधू ॥ वितेन्यतेधियोऽअस्माऽअपांसिवस्त्रापुत्रायमातरैवयंति । उपप्रक्षेष्टृणोमोदमानादिवस्त्रावध्वो
 यंत्यच्छ ॥ तदस्तुमित्रावरुणातदग्नेशयोरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं । अशीमहिं गाधमतप्रतिष्ठानमोदिवेष्टुहतेसादनाय
 ॥ १ ॥ (५।४।४) कदुप्रियायधाम्नेमनामहेस्वक्षत्रायस्वयशसेमहेवयं । अमेन्यस्यरजसोयदुश्चऽऑऽअपोवृणा
 नावितनोतिमायिनी ॥ ताऽअलतवयुनवीरवक्षणसमान्यावृतयाविश्वमारजः । अपोऽअपाचीरपराऽअपैजतेप्रपूर्वा
 भिस्तिरतेदेवयुर्जनः ॥ आग्रावभिरहन्त्रेभिरक्तुभिर्वरिष्ठवज्रमाजिघतिमायिनि । शतवायस्यप्रचरन्त्स्वेदमेसंवतयं
 तोविचवर्तयुन्नहा ॥ तामस्यरीतिपरशोरिवप्रत्यनीकमख्यंभजेऽअस्यवर्षसः । सचायदिपितुमंतमिवक्षयरलंघाति
 भरहूतयेविशे ॥ सजिह्वयाचतुरनीकऽक्रंजतेचारुवसानोवरुणोयतन्नारि । नतस्यविघ्नपुरुपुत्वतावयंयतोभगःसवि
 तादातिवार्ध ॥ २ ॥ (५।४।५) देववौऽअद्यसवितारमेपेभर्गचरल्विभजतमायोः । आर्वानरापुरुभुजाववृत्याद्वि
 वेदिवेचिदध्विनासखीयन् ॥ प्रतिप्रयाणमसुरस्यविद्वान्तसूक्तैर्दुवंसवितारदुवस्य । उपब्रुवीतनमसाविजानन्येष्ठं
 रल्विभजतमायोः ॥ अदुन्नयादयेतेवार्यणिपूपाभगोऽअदितिर्वस्तऽउन्नः । इन्द्रोविष्णुर्वरुणोमित्रोऽअग्निरहानिम

(५।४।४) कदुप्रियायेतिपंचर्वस्यसूक्तस्यात्रेयःप्रतिभानुर्विश्वेदेवाजगती (भेदपक्षे—विद्युतोमिः १ उषाः १ इंद्रसूर्यौ १ अग्निः २ एवं ५) ।

(५।४।५) देववदितिपंचर्वस्यसूक्तस्यात्रेयःप्रतिप्रभुर्विश्वेदेवास्त्रिष्टुप्अत्यावृणपाणिः (भेदपक्षे—विश्वेदेवाः १ सूर्यः १ विश्वेदेवाः ३ एवं ५) ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ३

॥ १७ ॥

द्राज्जनयंतदुस्माः* ॥ तन्नोऽअनुर्वासिपितावरूथंतत्सिधवऽइषयंतोऽअनुगमन् । उपयद्मोचैऽअध्वरस्यहोतरायः स्या
मपतयोवाजर्हताः ॥ प्रयेवसुभ्युऽईवदानमोदुर्येमित्रेवरुणेसक्तवाचः । अवैत्वर्धकृणुतावरीयोदिवस्पृथिव्योरवसा
मदेम ॥ ३ ॥ परिशिष्टं ॥ सूक्तंतेतृणान्यग्नावरण्येवोदुकेपिवा ॥ यस्तृणैरध्ययनंतदधीतस्तृणानिभवतेभव ॥ वा
पीकूपतडागानांसमुद्रगच्छस्वाहा ॥ ॥ (५।४।६) विश्वोदेवस्यनेतुर्मतोवुरीतसख्यं । विश्वोरायऽईषुध्यतिद्यु
मंर्दुणीतपुष्यसे ॥ तेतेदेवनेतयेचेमौऽअनुशसे । तेरायातेह्याइपृचेसचेमहिसचथैः* ॥ अतोऽनऽआननतिथीनतःप
वीर्दशस्यत । आरेविश्वपथेष्ठांदिपोयुयोतुयूयुविः ॥ यत्रवाहिरभिहितोदुद्रवद्रोण्यःपशुः । नमर्णावीरपस्योर्णाधीरे
वसनिता ॥ एषतेदेवनेतारथस्पतिःशंरयिः । शंरायेशंस्वस्त्यऽइषःस्तुतोमनामहेदेवस्तुतोमनामहे ॥ ४ ॥ (५।४।७)
अमेसुतस्यपीतयेविश्वरूमेभिरागहि । देवेभिर्हव्यदातये ॥ ऋतधीतयऽआगतसत्यधर्माणोऽअध्वरं । अग्नेःपिचतजि
(५।४।६) विश्वोदेवस्येतिपंचर्चस्यसूक्तस्यस्वस्त्यात्रेयोविश्वेदेवाअनुष्टुपंअंतापंक्तिः । (भेदपक्षे—सविता २ विश्वेदेवाः १ सविता २
एवं ५) (५।४।७) अमेसुतस्येतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यस्वस्त्यात्रेयोविश्वेदेवाश्चतुर्थोपष्ठीसप्तमीनामिन्द्रवायूपंचम्यावायुःआद्याश्चतस्रो
गायज्यःपंचम्यादिपल्लुष्णिहःएकादश्यादिति सौजगल्यः (त्रिष्टुभोवा) अत्येद्वेअनुष्टुभौ । (भेदपक्षे—अग्निः २ विश्वेदेवाः १ इन्द्रवायू १ वायुः
१ इन्द्रवायू २ अग्निः ३ विश्वेदेवाः ५ एवं १५) ।

मंडलं ५

अनु. ४

॥ १७

ह्वया ॥ विप्रैर्भिर्विप्रसंत्यप्रातर्यावभिरागहि । देवेभिः सोमपीतये ॥ अयं सोमश्चमू सुतोऽमत्रेपरिषिच्यते । प्रियऽइं
 द्रायवायवै ॥ वायवायाहिवीतयै जुषाणो हव्यदातये । पिबासुतस्यांधसोऽभिप्रयः ॥ ५ ॥ इंद्रश्चवायवेषां सुतानो
 पीतिर्महथः । तान्जुषेथामरेपसाविभिप्रयः ॥ सुताऽइंद्रायायवे सोमा सो दध्याशिरः । निम्नं नयति सिंधवोभिप्रयः ॥
 सजूर्विश्वेभिर्देवेभिर्भिरभ्विभ्यामुषसासजूर् ॥ आर्याह्यग्नेऽअत्रिवत्सुतेरेण ॥ सजूर्मित्रावरुणाभ्यांसजूर्सोमै न विष्णुना ।
 आर्याह्यग्नेऽअत्रिवत्सुतेरेण ॥ सजूर्दित्यैर्वसुभिः सजूर्दिद्रेण वायुना । आर्याह्यग्नेऽअत्रिवत्सुतेरेण ॥ ६ ॥ स्वस्ति
 नोमिमीतामभ्विनाभगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषाऽअसुरो दधातुनः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥ स्वस्ति
 धैवायुमुपब्रवामहै सोमै स्वस्ति भुवनस्य स्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगं स्वस्तये स्वस्तयेऽआदित्या सो भवंतुनः ॥ विश्वे देवा
 नोऽअद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुं निः स्वस्तये । देवाऽअवंतु भवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पातवंहसः ॥ स्वस्ति मित्रावरुणा
 स्वस्ति पथ्येरेवति । स्वस्ति नऽइंद्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नोऽअदिते कृधि ॥ स्वस्ति पथामनुचरे मसूर्या चंद्रमसा विव । पुनर्ददता
 म्रता जानता संगमिमहि ॥ ७ ॥ (परिशिष्टं ॥ ॥ स्वस्त्ययं न ता धर्म्यमरिष्टेनेमि महद्भूतं वायु सं देवतानां । असुरघ्नमि
 द्रं सखंसमत्सु बृहद्यशो नावमिवारुहेम ॥ अंहो मुचमांगिरसंगयं च स्वस्त्यात्रेयं मनसा च ता क्षयै । प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये

कृत्स्नं.

अ. ४ अ. ३

॥ १८ ॥

स्वस्तिर्वाधेऽन्वभयं नोऽस्तु ॥) (५।४।८) प्रश्यावाश्च धृष्ण्याचार्यमरुद्भिर्ऋक्भिः । येऽर्द्रो घर्मनुष्वधंश्च वोम
दैतियुज्ञियाः ॥ ते हि स्थिरस्य शर्वसः सर्वायः संति धृष्ण्या । ते यामन्ना धृषद्वि नुस्मना पांति शश्वतः ॥ ते स्पृद्रा सो नो क्ष
णो ति ऋक् दंति शर्वरीः ॥ मरुता मध्यामहौ द्विविक्षमा च मनमहे ॥ मरुत्सु वो दधीमहि त्सो मयं संच धृष्ण्या । विश्वे ये मानुषा
कमैरायुधानरंऽक्रुष्वाऽक्रुष्टीरं सुक्षत । अन्वे नोऽअहं विद्युतो मरुतो जज्ञंतीरिवमानुरर्तमनो दिवः ॥ ८ ॥ आरु
पाधिवायऽउरावंतरिक्षऽआ । वृजनेवानदीनां सधस्येवामहो दिवः ॥ शार्धो मारुतमुच्छंससत्यशवसमृभ्वसं । ये वा वृधंत
तेशु भेनरः प्रस्पृद्रा युजतु तमना ॥ उत स्म ते परुषण्यामूर्णो वसतशं ध्रुवः । उत पुव्यारथानामाद्विभिंदत्यो जसा ॥ आपथ
शो विपथयो तं स्पथाऽअनुपथाः । एतेभिर्मह्यं नाम भिर्युशं विष्टारऽओहते ॥ ९ ॥ अधानरो न्यो हुते धानियुतंऽओहते ।
अध्यापारविताऽइति चित्रारूपाणि दश्या ॥ छंदः स्तुभः कुभं न्यवऽउत्समाकीरिणो नृनुः । ते मे केचिन्नतायवऽऊमाऽआ
सन्दृशित्विपे ॥ यऽक्रुष्वाऽक्रुष्टि विद्युतः कवयः संति वेधसः । तमृषे मारुतं गणं नमस्यारमया गिरा ॥ अच्छंऽक्रुपे
मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणा । दिवो वा धृष्णवऽओजसास्तु ता धीभि र्षिषण्यत ॥ दूर्मन्वानऽएषां देवाऽअच्छानवृक्ष
(५।४।८) प्रश्यावाधेति सप्तदशर्चस्य मूक्त्या त्रयः श्यावाश्चो मरुतो नुष्टपृष्ठीपोऽङ्गी सप्तदशः पंक्तयः ।

मंडलं ।

अनु. ४

॥ १८ ॥

णा । दानासचेतसुरिभिर्यामंश्रुतेभिरंजिभिः ॥ प्रयेमैवंध्वेपेगावोचंतसुरयःपृश्निवोचंतमातरं । अधापितरमिष्मिणं
 रुद्रवौचंतशिकसः ॥ सप्तमैससशाकिनऽएकमेकाशताददुः । यमुनायामार्धिश्रुतमुद्राघोगव्यमृजेनिराधोऽअश्व्यंमु
 जे ॥ १० ॥ (५१४।९) कोवेदुजानेमपांकोवापुरासुन्नेष्वसमरुतां । यद्युयुञ्जेकिलास्यः ॥ ऐतात्रथैपुतस्थुपःकः
 शुश्रावकथार्ययुः । कस्मैससुःसुदासेऽअन्यापयऽइळाभिष्टुष्टयःसह ॥ तेमऽआहुर्यऽआययुरुपद्युभिर्विभिर्मदे । न
 रोमयीऽअरेपसऽइमान्पश्यन्निष्ठुहि ॥ येऽअंजिपुयेवाशीपुस्वर्भानवःस्रक्षुरुक्मेपुखादिपु । श्रायारथैपुधन्वसु ॥
 युष्माकंस्मारथोऽअनुमुदेदधेमरुतोजीरदानवः । दृष्टीद्यावोयतीरिव ॥ ११ ॥ आयेनरःसुदानवोदद्राशुपेदिवःको
 शमचुच्यबुः । विपर्जन्यसृजतिरोदसीऽअनुधन्वनायंतिवृष्टयः ॥ ततृदनाःसिंधवःक्षोदसारजःप्रसंसुधेनवोयथा ।
 स्यनाऽअर्वाऽइवाध्वनोविमोचनेवियद्वर्ततऽएन्यः ॥ आयांतमरुतोदिवऽआंतरिक्षादुमादुत । मावस्थातपरावतः ॥
 मावोरसानंतभाकुभाकुमर्मावःसिंधुनिरीरमत् । मावःपरिष्ठात्सुरयुःपुरीपिण्यसेऽइत्सुन्नमस्तुवः ॥ तंवःशर्धरथा
 नांत्वेपंगंमारुतंनव्यसीनां । अनुप्रयंतिवृष्टयः ॥ १२ ॥ शर्धशर्धवऽएपांवातांतगंगंगंसुशस्तिभिः । अनुकामे

(५१४।९) कोवेदतिपोळशर्चससूक्तसात्रेयःइयावाश्चोमरुतः क्रमेणककुपूबृहलनुष्टुपुरजणिककुपुसतोबृहतीसतोबृहतीगायत्रीसतो
 बृहतीककुब्जगायत्रीसतोबृहतीसतोबृहतीककुपुसतोबृहलः ।

ऋक्सं.

अ.४अ. ३

॥१९॥

मंडलं ५

अनु. ४

मधीतिभिः ॥ कस्माऽअद्यसुजातायरातहव्यायप्रययुः । एनायामेनमरुतः ॥ अतीयामनिदस्तिरःस्वस्तिभिर्हिह्वत्वावद्यमरातीः ।
ध्वेऽअक्षितं । अस्मभ्यंतच्छत्तनयद्वुऽइमहेराधोविश्वायुसौभगं ॥ सुदेवःसमहासतिसुवीरोनरोमरुतःसमर्त्यः । यंत्रायध्वेस्यामेतं ॥
स्तुहिभोजान्त्वुवतोऽअस्ययामनिरण्णावोनयवसे । युतःपूर्वोऽइवसर्खाऽरनुहयगिरागुणीहिकामिनः ॥ यंत्रायध्वेस्यामेतं ॥
(५।४।१०) प्रशार्धायमारुतायस्वर्भानवऽइमांवाचमनजापर्वतच्युते । धर्मस्तुभेदिवऽआपृष्ठयज्वनेद्युम्रश्रवसेमहिंन
नापारिजयः ॥ प्रवोमरुतस्तविपाऽउदन्यवोवयोवृधोऽअश्वयुजःपरिजयः । संविद्युतादधतिवाशतित्रितःस्वरंत्यापोव
मारभसाऽउदोजसः ॥ व्यक्नुद्राव्यहानिशिकसोव्यंरुतरिक्षंविर्जासिधूतयः । अण्डयाचिन्मुहुराहदुनीवृत्तस्तनयद
दुर्गाणिमरुतोनाहरिष्यथ ॥ तद्वीर्यवोमरुतोमहित्वनंदीर्घतंतानसूर्योनयोजनं । एतानयामेऽअग्भीतशोचिपोनश्व
सञ्चक्षुरिवयंतमनुनेषथासुगं ॥ १४ ॥ अत्राजिशर्धोमरुतोयदर्णसंमोपथाबृक्षकंपनेववेधसः । अर्धस्मानोऽअरमत्तिसजोप
(५।४।१०) प्रशार्धयेतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यात्रेयःश्यावाश्वोमरुतोजगतीचतुर्दशीत्रिष्टुप् ।

॥१९॥

ऽऽकृषिवायंराजनंवासुपूदथ ॥ नियुत्वतोत्रामजितोयथानरोर्यमणोनमरुतःकवंधिनः । पितृव्युत्संयदिनासोऽथ
 स्वरन्व्युदंतिपृथिवीमध्वोऽअंधसा ॥ प्रवत्वतीयंपृथिवीमरुद्भ्यःप्रवत्वतीद्यौर्भवतिप्रयद्भ्यः । प्रवत्वतीःपथ्याऽअंतरि
 क्ष्याःप्रवत्वतःपर्वताजीरदानवः ॥ यन्मरुतःसभरसःस्वर्णरुःसूर्यऽजदितेमदथादिवोनरः । नवोर्ध्वाःश्रथयंताहुसिद्ध
 तःमद्योऽअस्याध्वनःपारमंश्रुथ ॥ १५ ॥ असेषुवऽऽकृष्टयःपत्सुखादयोवक्षःसुरुक्मामरुतोरथेशुभः । अग्निभ्राजसो
 विद्युतोगर्भस्त्योःशिप्राःश्रीपसुवितताहिरण्ययीः ॥ तनाकमर्योऽअर्गभीतशोचिंपरुशत्पिप्लंमरुतोविधूनुथः । समं
 च्यंतवृजनातित्विपंतयत्स्वरतिघोषंविततमृतायवः ॥ युष्मादत्तस्यमरुतोविचेतसोरायःस्यामरुथ्योऽवयस्वतः । नयो
 युच्छतितिप्न्योऽयथादिवोऽस्मोररंतमरुतःसहृक्षिणं ॥ युयंरयिमरुतःस्पार्हवीरंययमृषिमवथसामविप्रं । युयमवतंभ
 रतायवाजययंधत्थराजनंश्रुष्टिमंतं ॥ तद्वोयामिद्रविणंसद्यऽजतयोयेनास्वर्णततनमनूरभि । इदंसुमेमरुतोहर्यता
 वचोयस्यतरमतरंसाशुतंहिमाः ॥ १६ ॥ (५।४।११) प्रयज्यवोमरुतोभ्राजहृष्टयोबृहद्वयोदधिरुरुक्मवक्षसः । ई
 रतेऽअर्धैःसुयमैभिराशुभिःशुभंयातामनूरथाऽअवृत्सत ॥ स्वयंदधिध्वेतर्विपीयथाविद्वहन्महांतऽजर्वियाविराज
 थ । उतातरिक्षंममिरेव्योजसाशुभं० ॥ साकंजाताःसुभ्वःसाकमुक्षिताःश्रियेच्चिदाप्रतुरंवाधुर्नरः । विरोकिणःसूर्य

(५।४।११) प्रयज्यवद्वतिदशर्चस्यसूक्तसात्रेयःइयावाश्रोमरुतो जगलंस्यान्निष्ठुप् ।

श्रवसं.

अ. ४ अ. ३

॥ २० ॥

स्येवरुमयुःशुभं० ॥ आभषेण्यवोमरुतोमहित्वनंदिदक्षेण्यसूर्यस्येवचक्षणं । उतोऽअस्माँऽअमृतत्वेदधातनुशुभं० ॥
उदीरयथामरुतःसमुद्रतोययंबुध्रिर्वर्षयथापुरीपिणः । नवोदस्त्राऽउपदस्यंतिधेनवःशुभं० ॥ १७ ॥ यदश्वान्धुषुष
तीरयुग्धंविहिरण्ययान्प्रत्यक्तोऽअमुग्धं । विश्वाऽइत्सृष्टोमरुतोव्यस्यशुभं० ॥ यत्पर्वमरुतोयच्चनूतनंयदुद्यतेवसवोयच्चशस्यते । विश्व
रुतोगच्छथेदुतत् । उतद्यावापृथिवीयाथनापरिशुभं० ॥ मूळतनोमरुतोमार्वाधिष्ठनास्मभ्यंशमवहुलंविद्यतन । अधिस्तोत्रस्यसत्यस्यागतनुशु
भं० ॥ ययमस्मान्नयतवस्योऽअच्छानिरंहतिभ्योमरुतोगृणानाः । जुषध्वनोहुव्यदाति यजत्रावयंस्यामपतयोरयीणां
॥ १८ ॥ (५।४।१२) अग्नेशर्धतुमागणं पिष्टरुक्मेभिर्जिभिः । विशोऽअद्यमरुतामवह्वयेदिवश्चिद्रोचनादधि ॥
यथाचिन्मन्यसेहृदातदिन्मेजगमुराशसः । येतेनेदिष्टुहवनान्यागमन्तान्वर्धभीमसंहशः ॥ मीहुर्मतीवपृथिवीपराह
तामदत्तेत्यस्मदा । ऋक्षोनवोमरुतःशिमीबोऽअमोदुध्रोगौरिवभीमयुः ॥ नियेरिणंत्योजसावृथागावोनदुधुरः ।
अरमानंचित्त्वर्धपर्वतंगिरिप्रच्यावयंतियार्मभिः ॥ उत्तिष्ठनूनमेषांस्तोमैःसमुक्षितानां । मरुतांपुरुतममपूव्यगवांस
गमिवह्वये ॥ १९ ॥ युङ्ध्वंह्यरुपीरथेयुङ्ध्वंरथेषुरोहितः । युङ्ध्वंहरीऽअजिराधुरिवोह्वेर्वहिष्ठाधुरिवोह्वे ॥ उत
(५।४।१२) अमेशर्धतमिति नवर्चस्यसूक्तस्यात्रेयः श्यावाश्वोमरुतोबृहतीवृतीयासप्तम्यौसतोबृहद्व्यौ ।

मंडलं ५

अनु. ४

॥ २० ॥

स्यवाज्यरूपस्तुविज्वर्णिरिहस्मधाधिदर्शतः । मावोयामेपुमरुतश्चिरंकरुतरेथेपुचोदत ॥ रथंनुमारुतंवयंश्रवस्युमा
 हुवामहे । आर्यस्मिन्तस्थौसुरणानिचिञ्चतीसर्चामरुत्सुरोदसी+ ॥ तंवःशर्धरेथुर्भत्वेपंपनस्युमाहुवे । यस्मिन्सुजा
 तासुभर्गामहूयतेसर्चामरुत्सुमीहुधी+ ॥ २० ॥ (५।५।१) आरुद्रासऽइंद्रवंतःसजोपसोहिरण्यरथाःसुवितायंगं
 तन । इयंवोऽअस्मत्प्रतिहयतेमतिस्तृणजेनद्विवऽउत्साऽउदन्यवे ॥ वाशीमंतऽऋष्टिमंतौमनीपिणःसुधन्वानऽइयुमं
 तोनिपंगिर्णः । स्वर्थास्थसूरथाःपृश्निमातरःस्वायुधामरुतोयाथनाशुभं ॥ धूनुथद्यांपर्वतान्दाशुपेवसुनिवोवनोजिहते
 यामनोभिया । कोपयथपृथिवीपृश्निमातरःशुभेयदुद्राःप्रपतीरयुग्धं ॥ वातत्विपोमरुतोवर्पनिर्णिजोयुमाऽइवसुस
 दृशःसुपेशसः । पिशंगांश्वाऽअरुणाश्वाऽअरेपसःप्रत्वक्षसोमहिनाद्यौरिवोरवः ॥ पुरुद्रप्साऽअजिमंतःसुदानवस्त्वेष
 संहशोऽअनवभ्ररधसः । सुजातासोजनुपारुक्मवक्षसोद्विवोऽअर्काऽअमृतंनामभेजिरे ॥ २१ ॥ ऋष्टयोवोमरुतोऽ
 अंसयोरधिसहुऽओजोवाहोर्गोचलंहितं । नमणाशीर्पस्वायुधारथेषुवोविश्वावःश्रीरधितनूतपिपिशे ॥ गोमदश्वावद्वथ
 वत्सुवीरंचंद्रवद्राधोमरुतोददानः । प्रशस्तिनःकृणुतरुद्रियासोभक्षीयवोर्वसोदैव्यस्य ॥ ह्येनरोमरुतोमळतानस्तुवी

(५।५।१) आरुद्रासइत्यष्टर्वस्यसूक्तस्यात्रेयःइयावाश्वोमरुतो जगत्संलेद्धे त्रिष्टुभौ ।

मघासोऽअमृताऽऽकृतज्ञाः । सत्यंश्रुतः कर्वयोयुवानोबृहत्तिर्योबृहदुक्षमाणाः ॥ २२ ॥ (५।५।२) तमुन्नंतर्विषी
 मंतमेपांस्तुषेगणंमारुतंगव्यसीनां । यऽआश्वश्वाऽअमवद्वहंतऽउत्तेशिरेऽअमृतस्यस्वराजः ॥ त्वेषंगंतवसंखादिह
 स्तंधुनिव्रतंमायिनंदातिवारं । मयोभुवोयेऽअमितामहिवावंदस्वविप्रलुविराधसोन्न⁺ ॥ आवोयंतूदवाहासोऽअद्य
 बृष्टियेविश्वेश्वरुतोऽनुंति । अयंयोऽअग्निर्मरुतःसमिद्धऽएतंजुषध्वंकवयोयुवानः ॥ यूयंराजानमिर्युजनायविश्वतष्टं
 जनयथायजन्नाः । शुष्मदेतिमुष्टिहावाहुज्जतोयुष्मत्सदंश्वोमरुतःसुवीरः ॥ अराऽइवेदचरमाऽअहेवप्रजायंतेऽअकं
 वामहोभिः । पृश्नेःपुत्राऽउपमासोरभिष्टाःस्वयामत्यामरुतःसमिमिधुः ॥ यत्प्रायासिष्टपृषतीभिरश्वैर्वीलुपविभिर्मरु
 तोरथैभिः । क्षोदंतऽआपोरिणतेवनान्यवोस्त्रियोवृषभःकंदतुद्यौः⁺ ॥ प्रथिष्टयामन्युथिर्वीचिदेपांभतेवगर्भस्वमिच्छ
 वोधुः । वातान्द्व्यश्वान्धर्यायुयुज्रोवपस्वेदचक्रिरुद्रियासः ॥ ह्येनरो० ॥ २३ ॥ (५।५।३) प्रवःस्पळकन्त्सुवितायद्राव
 नेर्चीदिवेप्रपृथिव्याऽऽकृतभरे । उक्षंतेऽअश्वान्तरुपंतऽआरजोनुस्वभानुंश्रथयंतेऽअर्णवैः⁺ ॥ अमादेपांभियसाभूमिरेज
 तिनौनपूणार्क्षरतिव्यर्थीर्यती । दुरेहशोयेचितयंतऽएमभिरंतर्मेहेविदथेयतिरेनरः ॥ गवामिवश्रियसेशंगमुत्तमंसूर्योन
 चक्षूरजसोविसर्जने । अत्याऽइवसुभ्व⁺क्षारंवस्थनमर्योऽइवश्रियसेचेतथानरः ॥ कोवौमहांतिमहुतामुदंश्रवत्कस्का
 (५।५।२) तमुन्ननमित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यात्रेयःश्यावाश्वोमरुतोऽनुंतिगलंत्या
 (५।५।३) प्रवःस्पळित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यात्रेयःश्यावाश्वोमरुतोऽनुंतिगलंत्या

व्यामरुतःकोहृपौस्या । युयंहृभूमिंकिरणंनरेजथप्रयद्भरध्वेसुवितायदावने ॥ अर्थाऽइवेदरूपासःसर्वधवःशूराऽइवप्रयु-
 धःप्रोतयुयुधुः । मर्याऽइवसवृधौवावृधुर्नरःसूर्यस्यचक्षुःप्रमिनंतिवृष्टिभिः ॥ तेऽअज्येष्ठाऽअकनिष्ठासऽइन्द्रिदोमंध्य
 मासोमहंसाविर्वावृधुः । सुजातासौजनुपाष्टश्रिमातरोदिवोमर्याऽआनोऽअच्छाजिगातन ॥ वयोनयेश्रेणीःपुसुरोजसां
 तान्दिवोबृहत्तःसानुनस्यरि । अर्थासऽएषामभयेयथाविदुःप्रपर्वतस्यनभूर्चुच्यवुः ॥ मिर्मातुद्यौरादेतिर्वितयेनःसं
 दानुचित्राऽउपसोयतंतां । आचुच्यवुर्दिव्यंकोशमेतऽक्रयैरुद्रस्यमरुतोगुणानाः⁺ ॥२४॥ (५।५।४) ईळेऽअग्निस्वव
 संनमोभिरिहप्रसत्तोविचयत्कृतनः । रथैरिवप्रभरेवाजयद्भिःप्रदक्षिणिन्मरुतांस्तोममृध्यां ॥ आयेतस्थुःपृथतीपुश्रुता
 सुसुखेषुर्द्रामरुतोरथेषु । वनाचिदुग्राजिहतेनिर्वोभियापृथिवीचिद्रेजतेपर्वतश्चित् ॥ पर्वतश्चिन्महिबुद्धोर्विभायद्दि
 वश्चित्सानुरेजतस्वनेवः । यत्कीळथमरुतऽकृष्टिमंतऽआपऽइवसर्प्यचोधवध्वे ॥ वराऽइवैवैवतासोहिरण्यैरभि
 स्वधाभिस्तन्यःपिपिश्रे । श्रियेश्रेयांसस्तवसोरथेषुसन्नामहोसिचकिरेतनूयु ॥ अज्येष्ठासोऽअकनिष्ठासऽएतेसंश्चा
 तरोवावृधुःसौभगाय । युवापितास्वपारुद्रऽएषांसुदुघाष्टश्रिःसुदिनामरुद्भ्यः ॥ यदुत्तमेमरुतोमध्यमेवायद्वावमेसुभ
 गासोद्विषिष्ठ । अतो नोरुद्राऽउतवान्व^१स्याग्नेविच्चाह्विषोयद्यजाम ॥ अग्निश्चयन्मरुतोविश्ववेदसोद्विवोवहध्वऽउत्त
 त्रिष्टुप् । (५।५।४) ईळेअग्निमितष्टर्चस्यसूक्तस्यात्रेयःश्यावाधोमरुतस्त्रिष्टुबल्येद्वेजगत्पौ । (आभेयचवेत्यनुक्रमण्युक्तेरग्रामरुतोवा) ।

रादधिष्णुभिः । तेमँदसानाधुनयोरिशादसोवामंधत्तयजमानायसुन्वते+ ॥ अग्नेमुरुहिः शुभयस्त्रिऋकभिः सोमं पिव
मँदसानोर्गेणाश्रिभिः । पावकेभिर्विभ्वमिन्वेभिरायुभिर्वैश्वानरप्रदिवाकेतुनासजूः+ ॥ २५ ॥ (५।५।५) केषानरः
अष्टतमायऽएकंऽएकऽआयय । परमस्थाः परावर्तः ॥ केशोव्याः क्काइभीशवः कथंशोककथारयय । पृष्ठेसदोनसोर्य
मः ॥ जुधनेचोदंऽएषां विसक्थानिनरोयसुः । पुत्रकृथेनजनयः ॥ परवीरासऽएतनमर्यसोभद्रजानयः । अश्रित
पोयथासथ ॥ सनत्साभ्व्यपुशुमुत्तगव्यंशतावयं । श्यावार्धस्तुताययादोर्वीरायोपवर्बुहत् ॥ २६ ॥ उत्तत्वास्त्रीशशी
यसीपुंसोभवतिवस्यसी । अदेवत्रादराधसः ॥ वियाजानातिजसुरिं वितृष्यंतं विकामिनं । देवत्राकृणुतेमनः ॥ उत
द्यानेमोऽअस्तुतः पुमौऽइतिब्रुवेपणिः । सवैरदेयऽइत्समः+ ॥ उतमेरपद्युवतिर्ममदुषीप्रतिश्यावार्यवर्तिनं । विरोहि
तापुरुमीह्वार्ययेमतुर्विप्रायदीर्घयशसे ॥ योमेधेननांशतंवैददश्विर्यथाददत् । तुरंतऽइवमंहनो ॥ २७ ॥ यऽईवहंत
ऽआशुभिः पिवतोमदिरंमधु । अत्रश्रवांसिदधिरे ॥ येषांश्रियाधिरोदसीविभ्राजतेरथेष्व ॥ द्विविरुक्मऽइवोपरि ॥

(५।५।५) केषानरइत्येकोनविंशत्यृचस्यसूक्तस्यश्यावार्धः आद्यानांचतसृण्यार्इवहंतइत्यादिपणांचमरुतःपंचम्यादिचतसृणांतरंत
महिषीशशीयसी उतमेरपदित्यस्याःपुरुमीह्वार्योमेधेनूनामित्यस्यास्तरतःएतंमेस्तोममित्यादितिसृणारथवीतिर्गायत्रीपंचम्यनुष्टुपनवमीसतो
बृहती । (अत्रत्यौपुरुमीह्वारंतौवैददश्वी रथवीतिर्दार्भ्यः) ।

शुभासमारुतोगणस्त्वेपरथोऽअनैद्यः । शुभयावाप्रतिष्कृतः ॥ कोवेदननमेषायत्रामदतिधूतयः । ऋतज्जाताऽअरेप
 सः ॥ ययमर्तविपन्यवःप्रणेतारऽइत्याधिया । श्रोतारोयामहृतिषु ॥ २८ ॥ तेनोवसूनि काम्यापुरुश्चंद्रारिशादसः ।
 आर्यज्ञियासोववृत्तन ॥ एतंमेस्तोममूर्ध्वेद्राभ्यायपरवह । गिरोदेविरथीरिव ॥ उतमेवोचतादितिसुतसोमेरथवी
 तौ । नकामोऽअपवेतिमे ॥ एषक्षैतिरथवीतिर्मघवागोमतीरनु । पर्वतेष्वपश्चितः ॥ २९ ॥ (५।५।६) ऋतेनऽऋ
 तमपिहितंध्रुवंवासूर्यस्यत्रविमुचंत्यश्वाङ् । दशशुतासुहर्तस्थुस्तदेकदेवानांश्रेष्ठवपुषामपश्यं ॥ तत्सुवांमित्रावरु
 णामहित्वमीर्मातस्थुपीरहंभिर्दुदुहे । विश्वाःपिन्वयःस्वसरस्यधेनाऽअनुवामेकःपुविराववर्त ॥ अधारयतंपृथि
 वीमुतद्यामित्रराजानावरुणामहौभिः । वर्धयत्तमोपधीःपिन्वतंगाऽअवबृष्टिंसृजतंजीरदानू ॥ आवामश्वासःसुयु
 जोवहंतुयतरदमयऽउपयंत्यर्वाक् । दृतस्यनिर्णिगनुवर्ततेवासुपसिधवःप्रदिविक्षरंति ॥ अनुश्रुताममतिवर्धदुर्वी
 वाहिरिवयजुपारक्षमाणा । नमस्वंताघृतदृक्षाधिगतेमित्रासाधेवरुणेळास्वंतः+ ॥ ३० ॥ अक्रविहस्तासुकृतेपरस्यायं
 त्रासाधेवरुणेळास्वंतः । राजानाक्षत्रमहणीयमानासहस्रस्थूणांविभृथःसहद्वौ+ ॥ हिरण्यनिर्णिगयोऽअस्यस्थूणावि
 भ्राजतेदिव्यश्वाजनीव । भद्रेक्षेत्रेनिर्मितातिल्विलेवासेनममच्चोऽअधिगत्यस्य ॥ हिरण्यरूपमुपसोव्युष्टावयःस्थू

(५।५।६) ऋतेनऽऋतमिति नवर्चसमूकस्यात्रेयःश्रुतविन्मित्रावरुणौत्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ४३. ४

॥ २३ ॥

णमुदितसूर्यस्य । आरोहथोवरुणमित्रगर्तमत्तश्चक्षथेऽर्दितिर्दितिच ॥ यद्वहिंछनातिविधेसुदानऽअच्छिद्रुशर्मभु
वमस्यगोपा । तेननोमित्रावरुणावविष्टसिषांसतोजिगीवांसःस्याम ॥ ३१ ॥ इतिचतुर्थाष्टकेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
विश्वेभ्योदेवेभ्यः ३१ सूक्तानि १६ ऋचः १६१ ॥ त्यागः ॥ विश्वेभ्योदेवेभ्यः २५ [भे. ५. उषसइ. सूर्यरश्मिभ्यः सूर्याये. ३
भ्योदेवे. सवित्र. २ अमय. २ विश्वेभ्योदेवेभ्यः.] इद्रवायुभ्या. अमय २ विश्वेभ्यो. सूर्याये. विश्वेभ्योदेवेभ्यः. ३ सवित्र. २ विश्वे-
मरुद्भ्यः ४ तरंतमहिष्याशसीयस्याइ. ४ पुरुमीह्राये. तरंताये. मरुद्भ्यः ६ रथवीतयः. ३ मित्रावरुणाभ्या. ९ ॥ इतिचतुर्थेऽध्यायः ८
ऋतस्यसप्तार्चनानाजागतैवरुणंपंक्तयंतंलुयश्चिकेतषड्रातहव्यआचिकितानानुष्टुभंतुबळित्थापंचयजतःप्रवोगा
यत्रत्रीरोचनाचतुष्कमुरुचर्किःपुरुषागागायंत्रत्वांनस्तृचंबाहुवृक्तआमित्रऔष्णिह्यदद्यदशपौरआश्विनंतदा
ननुष्टुभंतुकूष्ठःप्रतिनवावस्युःपांक्तमाभातिपंचान्निःप्रातर्यावाणाश्विनौनर्वससवधिर्युष्णिगादिचतुर्थीत्रिष्टुप्
त्रंजुजागततत्सवितुर्नवगायत्रमाद्यानुष्टुबच्छदशात्रिःपार्जन्यमुपाद्यास्तिस्त्रोजगल्यजपात्यानुष्टुबळित्थातृचंपा
र्थिवमानुष्टुभंप्रसन्नाजेष्टौवारुणमिंद्राग्नीषळैद्राग्रमानुष्टुभंविराट्पूर्वतंप्रवोनैववयामरुन्मारुतमतिजागतैर्बाह्व
स्पत्योभरद्वार्जःषष्ठमंडलमपश्यत्स्वह्यग्नेससोना ॥ १ ॥

॥ २३ ॥

मंडलं ।
अनु. ५

॥ हरिःओम् ॥ (५।५।७) ऋतस्यगोपावर्धितिष्ठथोरथंसत्यधर्माणापरमेव्योमनि । यमत्रमित्रावरुणावथोयुवं
तस्मैष्टिर्मधुमत्पिन्वतेदिवः⁺ ॥ सन्मार्जावस्यभुवनस्यराजथोमित्रावरुणाविदथेस्वर्दशा । वृष्टिंवारार्थोऽमृतत्व
मीमहेद्यावापृथिवीविचरंतितन्यवः ॥ सन्मार्जाऽलुग्रावृषभादिवस्पतीपृथिव्यामित्रावरुणाविचर्षणी । चित्रेभिर्गच्छैरुप
तिष्ठथोरवंधावर्षयथोऽअसुरस्यमायया ॥ मायावाँमित्रावरुणादिविथ्रितासूर्योज्योतिश्चरतिचित्रमायुधं । तमन्त्रेण
बुध्यागूहथोदिविपर्जन्यद्रुप्सामधुमंतऽईरते ॥ रथंयुंजतेमरुतःशुभेसुखंशूरोनमित्रावरुणागर्विष्टिषु । रजौसिचित्रा
विचरंतितन्यवोदिवःसन्मार्जापर्यसानऽउक्षतं ॥ वाचंसुर्मित्रावरुणाविरवतीपर्जन्यश्चित्रावदतित्विषीमती । अन्त्रा
वसतमरुतःसुमाययाद्यावर्षयतमरुणामरेपसं ॥ धर्मेणामित्रावरुणाविपश्चिताव्रतारक्षेथेऽअसुरस्यमायया । ऋतेन
विश्वंभुवनंविराजथःसूर्यमाधत्थोदिविचित्र्यरथं ॥ १ ॥ (५।५।८) वरुणवोरिशादंसमचाभिर्नहवामहे । परित्र
जेवबाह्वोर्जगन्वासास्वर्णरं ॥ तावाहवोसुचेतुनाप्रयंतमस्माऽअर्चते । शेवंहिजार्थवाविश्वसुक्षासुजोगुवे ॥ यन्ननम
इयांगतिमित्रस्यथायांपथा । अस्यप्रियस्यशर्मण्यहिंसानस्यसश्चिरे⁺ ॥ युवाभ्यामित्रावरुणोपमर्धेयामचा । यद्धक्षये

(५।५।७) ऋतस्यगोपावितिसप्तर्वस्यसूक्तस्यात्रेयोर्वचनानामित्रावरुणौजगती । (५।५।८) वरुणंवदतिसप्तर्वस्यसूक्तस्यार्चनाना
मित्रावरुणावनुष्टुबंत्यापंक्तिः ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ४

॥ २४ ॥

म॒घोनां॑स्तो॒त॒णांच॑स्प॒र्धसे ॥ आ॒नो॑मि॒त्रसु॒दु॒गति॑भिर्वरुणश्चस॒धस्य॑ऽआ । स्वे॒क्ष्ये॒म॒घोनां॑स॒खीनां॑च॒वृध॑से ॥ यु॒वंनो॑येषु॒व
रु॒णक्ष॑त्रं॒बृह॑र्च॒विभ॑धः । उ॒रु॒णो॒वा॒जसा॑तये॒कृता॑रा॒थेऽस्व॑स्तये । भि॒राप॑न्नि॒धो॒वत॑न॒रावि॑त्र॒ताव॑र्च॒नान॑सं ॥ २ ॥ (५।५।९) य॒श्चि॒के॒त॒स॒स॒क्रतु॑दे॒वत्रा॑स॒ब्रवी॑तुनः । वरु॒णो॒यस्य॑दर्श॒तोमि॑त्रो
वा॒व॒न॒ते॒गिरः॑ ॥ ता॒हि॒श्रे॒ष्ठव॑र्च॒सारा॑जा॒नादी॑र्ध॒श्रु॒त्तमा॑ । ता॒स॒त्प॒तीऽकृ॒तावृ॑ध॒ऽकृ॒तावा॑ना॒जने॑जने ॥ ता॒वा॒मि॒या॒नो॒वसे॑पू
र्वाऽउ॒प॒ब्रु॒वे॒सचा॑ । स्व॒र्धा॒सः॒सु॒चे॒तु॒नावा॑जो॒ऽअ॒भि॒प्र॒दा॒वने॑ ॥ मि॒त्रोऽअं॒हो॒श्चि॒दा॒दु॒रु॒क्षया॑य॒गातु॑व॒नते॑ । मि॒त्रस्य॑हि॒प्र॒तूर्ध्व
तः॒सु॒म॒ति॒रस्ति॑वि॒धतः॑+ । व॒यंमि॑त्र॒स्याव॑सि॒स्याम॑स॒प्रथ॑स्तमे । अ॒ने॒ह॒स॒स्त्वो॒तयः॑स॒त्राव॑रु॒णशे॑षसः ॥ यु॒वांमि॑त्रे॒मंज॑नं॒यते॑
श्रुः॒सं॒च॒न॒यथः॑ । मा॒म॒घो॒नःप॑रि॒ख्यतं॑मो॒ऽअ॒स्माक॑मु॒षीणां॑गो॒पी॒थेन॑ऽउ॒रु॒ष्यतं॑ ॥ ३ ॥ (५।५।१०) आ॒चि॒कि॒ता॒नसु॑
ऋ॒तृ॒दे॒वौम॑र्त॒रि॒शा॒दसा॑ । वरु॒णा॒यऽकृ॒तपै॑श॒से॒दधी॑त॒प्रय॑से॒महे॑+ ॥ ता॒हि॒क्ष॒त्रम॑वि॒हुतं॑सु॒म्यग॑सु॒यमा॑शा॒ते । अ॒र्ध॒व्र॒ते॒व
मा॒नु॒षंस्व॑र्ण॒धा॒यि॒दर्श॑तं+ ॥ ता॒वा॒मे॒षे॒रथा॑ना॒मूर्वा॑गव्य॒तिमे॑षां । रा॒तह॑व्यस्यसु॒ष्टुतिं॑दु॒ध॒क॒स्तोमै॑म॒नाम॑हे ॥ अ॒घ्रा॒हि
का॒व्यायु॑वं॒दक्ष॑स्य॒पुभि॑र॒भ्रु॒ता । नि॒के॒तु॒ना॒जना॑नां॒चि॒के॒थे॒पू॒त॒दक्ष॑सा ॥ त॒दु॒तं॒पृ॒थि॒वि॒बृ॒ह॒च्छ॒वऽए॒पऽकृ॑षीणां । ज॒य॒सा
(५।५।९) य॒श्चि॒के॒ते॒ति॒प॒ट्च॑त्यसू॒क्त॒स्यात्रे॒यो॒रा॒तह॑व्योमि॒त्राव॑रु॒णाव॑सु॒ब्रु॒वत्या॑प॒क्तिः । (५।५।१०) आ॒चि॒कि॒ता॒ने॒ति॒प॒ट्च॑त्य

॥ २४ ॥

मंडलं ५

अनु. ५

नावरपृथ्वितिक्षरं त्रियामभिः ॥ आयद्धामीयचक्षुसाभिन्नवयंचसरयः । व्यचिष्टेवहुपाय्येयतेमहिस्वरान्ये ॥ ४ ॥
 (५।५।११) बळित्थादेवनिष्कृतमार्दित्यायजतंवृहत् । वरुणमित्रार्यमन्वर्षेष्टं त्रामाशाथे ॥ आयद्योनिं हिरण्ययं
 वरुणमित्रसदंथः । धृतरार्चर्षणीनायंतं सुमंत्रं रिशादसा ॥ विश्वे हि विश्वे देवसो वरुणो मित्रोऽर्यमा । व्रतापदेवसश्चि
 रेपांतिमल्यैरिषः⁺ ॥ ते हि सत्याऽऽकृतस्पृशऽऽकृतावानो जने जने । सुनीथासः सुदानवो होश्चिदुरुचक्रयः ॥ कोनुवामि
 त्रास्तुलो वरुणो वातनूनां । तत्सुवामेपते मतिरत्रिभ्यऽएपते मतिः⁺ ॥ ५ ॥ (५।५।१२) प्रवो मित्रार्यगायतवरुणा
 यविपागिरा । महिक्षत्रावृतंवृहत् ॥ सम्राजायाघृतयोनी मित्रश्चोभावरुणश्च । देवादेवेषु प्रशस्ता⁺ ॥ तानः शक्तं पा
 र्थिवस्य महोरायो दिव्यस्य । महिं वां क्षत्रं देवेषु ॥ ऋतं मते न स पते पिरंदक्षमाशाते । अद्भुहदेवौ वर्धते ॥ वृष्टिद्यावारीत्या
 पेस्पतीदानुमत्याः । बृहंतं गतमाशाते ॥ ६ ॥ (५।५।१३) त्रीरोचनावरुणत्रिंऽरुतद्यन्त्रीणि मित्रधारयथोरजांसि । वा
 ब्रुधानावमर्तिक्षत्रियस्यानुव्रतरक्षमाणवज्रुर्ध⁺ ॥ इरावतीर्वरुणधेनवो वां मधुमद्वांसि धवो मित्रदुहे । त्रयस्तस्थुर्वृष
 भासस्ति सुणाधिपणानारेतो धाविद्युमंतः ॥ प्रातर्देवीमर्दितं जोहवीमि मध्यं दिनुऽउदितं सूर्यस्य । राधेमित्रावरुणा

(५।५।११) बळित्थादेवेति पंचर्चस्य सूक्तस्यात्रेयोजतो मित्रावरुणावनुष्टुप् । (५।५।१२) प्रवो मित्रार्येति पंचर्चस्य सूक्तस्यात्रेयो
 यजतो मित्रावरुणौ गायत्री । (५।५।१३) त्रीरोचनेति चतुर्चस्य सूक्तस्यात्रेयउरुचक्रिर्मित्रावरुणौ त्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ४७.

॥ २५॥

मंडलं ५

अनु. ६

॥ २५॥

सर्वतातेल्लोकायुतनयायशोः ॥ चाधृतांरारजसोरोचनस्योतादित्यादिव्यापार्थिवस्य । नवादेवाऽअमृताऽआमि
नतिप्रतानिमित्रावरुणाध्रुवाणि ॥ ७ ॥ (५।५।१४) पुरुरुणाविध्यस्त्यवौनूनवोरुण । मित्रवंसिवांसुमतिं ॥
तावांसिम्यगदुह्वाणेषमश्यामध्वसे । वयतेरुद्रास्याम ॥ पातंनोरुद्रापायुभिर्भुतत्रायेथांसुत्रात्रा । तुर्यामदस्यन्तू
मित्रबर्हणा । उपेमंचारुमध्वरं ॥ विश्वसोर्मस्यपीतये ॥ ८ ॥ (५।५।१५) आनोऽंगतरिशदसावरुण । तुर्यामदस्यन्तू
वरुणमित्रदाशुषः । अस्यसोर्मस्यपीतये ॥ ९ ॥ (५।५।१६) आमित्रेवरुणेवयंगीभिर्भुमोऽअत्रिवत् । उपनःसुतमागंतं
सदतंसोर्मपीतये ॥ ब्रतेनस्थोध्रुवक्षेमार्धमणायातयर्जना । निवर्हिषे ॥ मित्रश्चनोवरुणश्चजुषेतायुशमिष्टये । निवर्हिषि
हिर्षिसदतांसोर्म ॥ १० ॥ (५।६।१) यदुद्यस्थःपरावतियदवावत्यध्विना । यद्वपुरुपुरुभुजायदंतरिक्षऽआगंतं ॥ निव
इहत्यापुरुभुतमापुरुदंसांसिबिभ्रता । वरस्यायाम्यध्रिगृहुवेतुविष्टमाभुजे ॥ इमान्यद्वपुषेवपुश्वंकरथस्ययेमशुः । पर्य
(५।५।१४) पुरुरुणेतिचतुर्कचस्यसूक्त्यात्रेयउरुचकिर्मित्रावरुणौगायत्री । (५।५।१५) आनोऽंगतमितिवचस्यसूक्त्यात्रेयोवा
दुष्टकोमित्रावरुणौगायत्री । (५।५।१६) आमित्रइतिवचस्यसूक्त्यात्रेयोवाहुष्टकोमित्रावरुणादुणिक् । (५।६।१) यदुद्यस्थइतिदशर्च
स्यसूक्त्यात्रेयःपैरोध्विनावनुष्टुप् ।

॥ २५॥

न्यानाहुषायुगामह्वारजांसिदीयथः ॥ तदुपुवामेनाकृतंविश्वायद्भामनुष्टे ॥ नानाजातावरपसासमस्मेवंधुमेयथुः ॥
आयद्वौस्यारथंतिष्ठद्रघुष्यदंसदा । परैवामरुपावयोधुणावरंतऽआतपः ॥ ११ ॥ युवोरत्रिंश्विकेततिनरासुभनेचे
तसा । धर्मयद्भामरेपसनासत्यास्त्राभुरण्यति ॥ उग्रोवांककुहोयुयिःशृण्वेयामेपुसंतनिः । यद्भानंदसौभिरश्विनान्न
राववर्तति ॥ मध्वंऽऊषुमधूयुवारुद्रासिपक्तिपिप्युषी । यत्समुद्रातिपर्यथःपुक्काःपुक्षोभरंतवां ॥ सत्यमिद्वाऽर्चेऽअश्वि
नायुवामाहुर्मयोभुवा । तायामन्यामहृतमायामन्नामृळयत्तमा ॥ इमाब्रह्माणिवर्धनाश्विभ्यांसंतुशंतमा । यातक्षो
मरथोऽइवार्वोचामबह्वर्मः ॥ १२ ॥ (५।६।२) कूर्धोदेवावश्विनाद्यादिवोर्मनावसू । तच्छ्ववथोवृषण्वसऽअत्रि
र्वामाविवासति ॥ कुहृत्याकुहनुश्रुतादिविदेवानासत्या । कस्मिन्नार्यतथोजनेकोवांनदीनांसचा ॥ कंयाशःकंहग
च्छथःकमच्छायुजाथेरथं । कस्यब्रह्माणिरण्यथोवयवामुदमसीष्टये ॥ पौरंविच्छुदुमुतुपौरपौरायजिन्वथः । यदीगु
भीततातयेसिंहमिवद्रुहस्पदे⁺ ॥ प्रच्यवानाज्जुजुरुपौवव्रिमत्कनमुचथः । युवायदीकृथःपुनराकाममृण्वेवध्वः⁺ ॥ १३ ॥
अस्तिहिवामिहस्तोतास्मसिंवांसंहशिथ्रये । नूश्रुतंमऽआगतमवोभिर्वाजिनीवसू ॥ कोवामुचपुरुणामावन्नेमर्त्यानां ।
कोविप्रोविप्रवाहसाकोयज्ञैर्वाजिनीवसू ॥ आवांशुरथानायेष्टोयात्वश्विना । पुरुचिदस्युस्तिरऽआंग्रयोमर्त्येज्वा⁺ ॥

(५।६।२) कूर्धोदेवावितिदशर्चस्यसूक्तयात्रेयःपौरोश्विनानुष्टुप् ।

शमषुर्वांमधूयुवासाकमस्तुचकृतिः । अर्वाचीनाविचेतसाविभिः श्येनेर्वदीयतं ॥ अश्विनायद्ब्रूकहिचिच्छ्रयातमि
मंहव । वस्वीरूषुवांभुजःपुंचंति सुवांपृचः ॥ १४ ॥ (५।६।३) प्रतियितमंरथंवृषणंवसुवाहनं । स्तोतावामश्वि
नावृषिः स्तोमैनुप्रतिभूषतिमाध्वीममश्रुतंहवं ॥ अत्यायातमश्विनातिरोविश्वोऽअहंसना । दस्त्राहिरण्यवर्तनीसुषुम्ना
सिंधुवाहसामाध्वी० ॥ आनोरत्नानि विभ्रंतावश्विनागच्छंतयुवं । रुद्राहिरण्यवर्तनीजुषाणावाजिनीवसमाध्वी० ॥
सुष्टुभौवांवृषणवसरथेवाणीच्याहिता । उत्तर्वाकक्रुहोमगःपृक्षः कृणोतिवापुषोमाध्वी० ॥ बोधिन्मनसारथ्येषिराहवन्
श्रुता । विभिश्चयवानमश्विनानियाथोऽअद्वयाविनंमाध्वी० ॥ १५ ॥ आवांनरामनोयुजोश्वोऽप्रषितः प्रषितः प्रषितः ।
वयौवहंतुपीतयैसहसुन्नोभिरश्विनामाध्वी० ॥ अश्विनावेहगच्छंतनासत्यामविवेनतं । तिरश्चिदययापरिवर्तयितम
दाभ्यामाध्वी० ॥ अस्मिन्यज्ञेऽअंदाभ्याजरितारंशुभस्पती । अवस्युर्मश्विनायवंगणंतमुपभूषथोमाध्वी० ॥ अभूदु
षारुशत्पशुराग्निरधायत्विर्यः । अयौजिवांवृषणवसरथोदस्त्रावमत्योमाध्वी० ॥ १६ ॥ (५।६।४) आभात्यग्निरु
षसामनीकमुद्विप्राणांदेवयावाचोऽअस्थुः । अर्वाचाननंरथेहयातंपीषिवांसमश्विनाघर्ममच्छं ॥ नसंस्कृतंप्रभिमीतो
गमिष्ठांतिनूनमश्विनोपस्तुतेह । दिवाभित्वेवसार्गमिष्टाप्रत्यवर्तितद्राशुषेभंविष्टा ॥ उतायातंसंगेप्रातरहोमंभ्यं

दि॒नऽउ॒दि॒तासूर्य॑स्य । दि॒वान॑क्त॒मव॑सा॒शत॑मे॒नने॑दानो॒पीति॑र॒श्विना॑त॒तान ॥ इ॒दं हि॒वा॒प्रदि॑वि॒स्थान॑मो॒केऽइ॒मेग॑हाऽअ॒
 श्विने॑दं॒दुरो॑णं । आ॒नो॒दि॒वोबृ॑ह॒तःप॑र्व॒तादा॒ज्यो॒यात॑मि॒षमूर्ज॑व॒हता ॥ स॒म॒श्विनो॑र॒वसानू॑त॒नेन॑म॒योसु॑वा॒सुप्र॑णी॒तीग॑मे
 म । आ॒नो॒र॒थि॒व॒ह॒त॒मोत॑वी॒राना॑वि॒श्वान्य॑मृ॒तासौ॑भ॒गानि ॥ १७ ॥ (५।६।५) प्रा॒त॒र्या॒वा॒णप्र॑थ॒माय॑ज॒ध्वं॒परा॑गृ
 ध्रा॒दर॑रु॒पःपि॒वातः॑ । प्रा॒तर्हि॑य॒ज्ञम॒श्विना॑दु॒धाते॑प्र॒शंस॑ति॒कुव॑र्यःपूर्व॒भार्जः॑ ॥ प्रा॒त॒र्यैज॒ध्वम॒श्विना॑हि॒नोत॑न॒साय॑म॒स्तिदे॒
 व॒याऽअ॒र्जु॒ष्टं । उ॒तान्यो॑ऽअ॒स॒द्यज॑ते॒विचा॒वःपूर्वः॑पूर्वो॒यज॑मानो॒वनी॑यान् ॥ हि॒र॒ण्य॒त्वज्ज॑धु॒वणो॑घृ॒तस्तू॒ःपृ॒क्षोव॑हृ॒न्नार॑थो
 वर्त॑ते॒वां । म॒नोज॑वाऽअ॒श्विना॑वा॒तं॒हृ॒येना॑ति॒याथो॑दु॒रित॑नि॒विश्वा॑ ॥ योभू॑र्यि॒ष्टंना॑स॒त्याभ्या॑वि॒श्वे॒षच॑नि॒ष्टं॒पित्वो॑र॒रते॑
 वि॒भागे॑ । स॒तो॒क॒र्मस्य॑पी॒पर॒च्छर्मा॑भि॒रन्ध्र॑भा॒सुःस॒दुमि॑तु॒र्यात् ॥ स॒म॒श्विनो॑ ॥ १८ ॥ (५।६।६) अ॒श्विना॑वे
 ह॒गच्छ॑तं॒नास॑त्या॒मावि॑वे॒नतं॑ । हुंसा॒र्वि॒वप॑त॒तमा॑सु॒तोऽउ॒र्य ॥ अ॒श्विना॑ह॒रिणा॑वि॒वगौ॑रा॒वि॒द्यानू॑य॒वसं॑ । हुंसा॒र्विव॑ ॥
 अ॒श्विना॑वा॒जिनी॑व॒सूज॑येथा॒यज्ञ॑मि॒ष्टये॑ । हुंसा॒र्विव॑ ॥ अ॒त्रि॒र्य॒द्वा॒मव॑रो॒ह॒न्म॒त्रीस॒मजो॑ह॒वी॒त्राध॑माने॒वयो॑षा । इ॒येन॑स्य
 चि॒ज्जव॑सा॒नूत॑ने॒नाग॑च्छ॒तम॒श्विना॑श॒तमे॑न ॥ १९ ॥ वि॒जि॒ही॒ष्वन॑स्प॒तेयो॑निःसू॒र्य॒त्याऽइ॒व । श्रु॒तमे॑ऽअ॒श्विना॑ह॒वसं॑

(५।६।५) प्रा॒त॒र्या॒वा॒णेति॑प॒च॒र्चस्य॑सू॒क्त्यभौ॑मो॒त्रिर॒श्विनो॑त्रि॒ष्टुप् । (५।६।६) अ॒श्विना॑वि॒तिन॑व॒र्चस्य॑सू॒क्त्यात्रे॒यःस॑प्र॒व॒त्रि
 र॒श्विना॑व॒नुष्टुप्॒आद्या॑स्ति॒स्रउ॒ष्णिह॒श्चतु॑र्या॒त्रि॒ष्टुप् (पंच॑म्यादि॒पंच॑ग॒र्भस्या॑वि॒ण्यउ॒पनि॑प॒दः) ।

सर्वध्विचमुचतं ॥ भीतायनाधमानायुःकृष्येससर्वध्वये । मायाभिरश्विनायुवंबुधं संचविचांचथः ॥ यथावातःपुष्करि
 णीसमिगयतिसर्वतः । एवातेगर्भेऽएजनुनिरैतुदशमास्यः । यथावातोयथावनंयथासमद्रुऽएजति । एवात्वंदशमास्य
 सहावैहिजरायुणा ॥ दशमासान्छशयानःकुमारोऽअधिमातरि । निरैतुजीवोऽअक्षतोजीवोजीवत्याऽअर्ध ॥ २० ॥
 नीथेशौचद्रुथैव्यौच्छौदुहितादिवः । साव्युच्छसहीयसिसत्य ॥ सानोऽअद्याभरुदसव्युच्छादुहितदिवः । योव्यौच्छः
 सहीयसिसत्य ॥ अभियेत्वाविभाविरस्तोमैर्गणंतिवह्यः । मधैर्मधोनिसुश्रियोदामन्वतःसुरातयःसुजति ॥ योव्यौच्छः
 क्षितैर्गणाऽइमेछदयतिमघत्तये । परिचिद्धद्वयोदधुदत्तोराधोऽअहयसुजति ॥ २१ ॥ ऐषुधावीरवद्यशऽउषोमघो
 निसरिषु । येनोराधांस्यहयामघवानोऽअरसतसुजा ॥ तेभ्योद्यम्वहद्यशऽउषोमघोन्यावह । येनोराधांस्यभ्याग
 व्याभजतसरयुःसुजा ॥ एतनोगोर्मतीरिपऽआवहादुहितादिवः । साकसूर्यस्यरदिमभिःशुकैःशोचस्त्रिभिःसुजा ॥
 न्युच्छादुहितादिवोमाचिरंतनुथाऽअर्पः । नेत्वास्तेनयथारिपुतपातिसुरोऽअचिषासुजा ॥ २२ ॥ (५।६।८) द्युतधामानंबृहतीमतेनऽऋतावरीमरूणस्पु
 तुमहसि । यास्तोतृभ्योविभावयुच्छंतीनप्रमीयसेसुजा ॥ २३ ॥ (५।६।८) द्युतधामानमितिषड्वचस्यसूक्तस्यात्रेयःसत्यश्रवाऽपाःगंक्तिः । (५।६।८) द्युतधामानंबृहतीमतेनऽऋतावरीमरूणस्पु

विभ्रती । देवीमुपसंस्वरावहृतीप्रतिप्रसोसोमतिभिर्जरते ॥ एपाजनं दर्शतावोधयतीसुगान्पथः कृण्वतीयात्यग्रे । बृह
 द्वाबृहतीविश्वमिन्वोषाज्योतिर्यच्छत्यग्रेऽअह्ना ॥ एषागोभिरुणेभिर्युजानासंधतीरधिमग्रायुचक्रे । पथोरदंतीसुवि
 तायदेवीपुरुष्टुताविश्ववाराविभ्रति ॥ एषाव्येनीभवतिद्विवहोऽआविष्कृण्वानातन्वंपुरस्तात् । ऋतस्यपंथामन्वैतिसा
 धुप्रजानतीवनदिशौमिनाति ॥ एषाशुञ्चानतन्वोविद्वानोर्ध्ववस्त्रातीहृशयेनोऽअस्थात् । अपदेयोवार्धमानातमांस्युपा
 दिवोदुहिताज्योतिषागात् ॥ एषाप्रतीचीदुहितादिवोनन्योपैवभद्रानिरिणीतेऽअप्सः । व्यण्वतीद्राशुपेवार्योणिपुन
 ज्योतिर्युवतिः पूर्वार्थाकः ॥ २३ ॥ (५।६।९) यंजतेमर्नऽउतयुंजतेधियोविप्राविप्रस्यबृहतोविपश्चितः । विहोत्रादधेवतु
 नाविदेकऽइन्महीदेवस्यसवितुः परिष्टुतिः ॥ विश्वरूपाणिप्रतिमुंचतेकृविः प्रासावीङ्गद्रं द्विपदेचतुष्पदे । विनाकमख्य
 त्सवितावरेण्योर्नुप्रयाणमुषसोविराजति ॥ यस्यप्रयाणमन्वन्यऽइद्युर्देवादेवस्यमहिमानमोजसा । यः पार्थिवानिवि
 ममेसऽएतेशोरजांसिदेवः सवितामहित्वना ॥ उतर्यासिसवितस्त्रीणिरोचनोतसूर्यस्यरश्मिभिः समुच्यसि । उतरा
 त्रीमुभयतः परीयसऽउतमित्रोभवसिदेवधर्मभिः ॥ उतोशेषेप्रसवस्यत्वमेकऽइदुतपपाभवसिदेवयामभिः । उतेदंवि
 भ्वंसुर्वनं विराजसिद्यावाभ्वस्तेसवितुः स्तोममानशे ॥ २४ ॥ (५।६।१०) तत्सवितुर्वृणीमहेवयंदेवस्यभोजनं । श्रे

(५।६।९) युजतेमर्नइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यात्रेयः । (५।६।१०) तत्सवितु रिति न चर्चस्यसूक्तस्यात्रेयः इयावाश्वः

ऋक्सं.

अ.४ अ. ४

॥ २८ ॥

सर्वधातमं तु भगवन्मही ॥ अस्य हि स्वयं शस्त्रं सवितुः कञ्चनप्रियं । नमिनंति स्वराज्यं ॥ सहिरत्नानि दातुं सुखा
तिसवितुः भगः । तं भागं चित्रमीमहे ॥ अद्यानो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगं । परादुःस्वम्यसुव ॥ विश्वानि देव
सवितुः रितानि परासुव । यद्भद्रं तन्नऽआसुव ॥ २५ ॥ अनागसोऽदितये देवस्य सवितुः सवे । विश्वावा मामनिधीम
हि ॥ आविश्वदेवं सत्यं तिसृकैरद्यावृणीमहे । सत्यसंवसवितारं ॥ यऽइमेऽष्टभेऽअहनी पुरऽएत्यप्रयुच्छन् । स्वाधी
देवः सवितुः ॥ यऽइमा विश्वाजातान्याश्रावयति श्लोकैः । प्रचसुवा तिसवितारं ॥ २६ ॥ (५।६।११) अच्छा
वदतु वसंती भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विनास । कर्त्तिकदद्वपुर्भोजी रदानुरेतो दधात्योषधीषु गभी ॥ विश्वान् हंत्युतहं
तिरक्षसो विश्वं विभायुर्भुवनं महाधातुः । उतानागाऽईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हंति दुष्कृतः ॥ रथीव कशया
श्वोऽअभिपक्षिपन्नाविर्दुतान् कृणुते वर्ष्मैऽअहं । दुरासि हस्यस्तनयाऽउर्दरते यत्पर्जन्यः कृणुते वर्ष्मैऽअनभः ॥ प्रवाता
ते पृथिवी नन्नमीति यस्य ब्रते शफज्ज भुरीति । यस्य व्रतऽओषधीर्विश्वरूपाः सनः पर्जन्यमहि शर्मयच्छ ॥ २७ ॥ द्विवो
नो बृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्रपिन्वतु वृष्णोऽअर्धस्य धाराः । अर्वाङ्घ्रिः ते नस्तनयिषु नेह्यपो निषिचन्नसुरः पितानः ॥ अभिक्रंद
सविता गायत्री आद्यानुष्टुप । (५।६।११) अच्छावदेति दशर्चस्य सूक्तस्य भौमोत्रिः पर्जन्यस्त्रिष्टुपद्वितीयादिति सौजगल्यो नवम्यनुष्टुप ।

मंडलं. ५

अनु. ६

॥ २८ ॥

स्तनयगर्भमाधाऽउदुन्वतापरिदीयारथेन । हतिसुकर्षवितुन्यंचसमाभंवतुदतौनिपादाः ॥ महांतुकोशमुदचानि
 विचस्यंदांकल्याविषिताःपुरस्तात् । घृतेनद्यावापृथिवीव्युंधिसुप्रपाणंभवत्वद्भयाभ्यः ॥ यत्पर्जन्यकनिकदत्स्तनय
 नंहंसिदुष्कृतः । प्रतीदंविश्वंमोदतेयत्किंचपृथिव्यामाधि ॥ अर्चयिर्विषमुदुषुगृभायाकृध्वान्यत्येतवाऽउ । अर्जीजन
 ऽओषधीर्भोजनायकमुतप्रजाभ्योविदोमनीषां ॥ २८ ॥ (५।६।१२) वळित्यापर्वतानांखिद्रंविभर्षिग्रथिवि ।
 प्रयाभूर्मिप्रवत्वतिमुह्नाजिनोर्षिमहिनि ॥ स्तोमांसस्त्वाविचारिणिप्रतिष्टोभंत्यक्तुभिः । प्रयावाजंनहेषंतंपेरुमस्यस्यजु
 नि ॥ इह्वाचिद्यावनस्पतीन्क्षमयादर्धव्योजसा । यत्तेऽअभ्रस्यविद्युतोदिवोवर्षतिवृष्टयः ॥ २९ ॥ (परिशिष्टं ॥
 वर्षतुतेविभावरिदिवोऽअभ्रस्यविद्युतः । रोहंतुसर्वबीजान्यवब्रह्माद्विषोऽजहि ॥) (५।६।१३) प्रसम्राजैवहृदचा
 गभीरंब्रह्मप्रियंवरुणायश्रुताय । वियोजयानंशमितेवचमोपस्तिरेपृथिवीसूर्याय ॥ वनेषुव्यंशुतरिक्षंततानवाजमवैत्स
 पर्यऽउस्त्रियासु । ह्रस्वुकृतंवरुणोऽअस्वभृन्निद्विसूर्यमदधात्सोममदौ ॥ नीचीनवारंवरुणःकवंधंप्रसंसर्जरोदसीऽ
 अंतरिक्षं । तेनविश्वस्यमुर्वनस्यराजायवंनवृष्टिर्व्युनत्तिभूमं ॥ उनत्तिभूर्मिपृथिवीमृतद्यांयदादुग्धंवरुणोवध्यादित् ।
 समन्त्रेणवसतुपर्वतासस्ताविषीयंतःश्रथयंतवीराः ॥ इमामभ्यासरस्यश्रुतस्यमूर्हीमायांवरुणस्यप्रवोचं । मानेनेवतस्थि

(५।६।१२) वळित्येतिउचस्यसूक्तस्यभौमोत्रिःपृथिव्यनुष्टुप् । (५।६।१३) प्रसम्राजइत्यष्टर्यस्यसूक्तस्यभौमोत्रिर्वरुणखिष्टुप् ।

वोऽअंतरेक्षेवियोमेषुथिवीसूर्येण ॥ ३० ॥ इमामनुकृत्रितमस्यमायांमहीदेवस्यनकिरादर्धर्ष । एक्यदुहानपणंत्ये
नीरासिंचतीरवनयःसमुद्रं ॥ अर्यम्यंदरुणमित्र्यवासत्वायवासदुमिद्भारंवा । वेश्वानित्यंवरुणारणंवायत्सीमार्ग
श्चक्रुमाशिश्नस्तत् ॥ कितवरोधेरेरिपुर्नदीवियद्वाधागत्यमतयन्नविद्म । सर्वाताविष्यशिथिरेवदेवाधातेस्यामव
रुणप्रियासः ॥ ३१ ॥ (५।६।१४) इन्द्राग्नीयमवथऽसुभवाजेषुमर्त्य । इह्वाचित्तमर्त्येदतिद्यान्नावाणीरिवन्नितः ॥
यापृत्तनासुदुःखानाजेषुश्रुभ्या । यार्पंचर्षणीरशीन्द्राग्नीताहवामहे ॥ तयोर्दिशेर्दुःखवित्तमादिद्युन्मघो
नोः । प्रतिदुष्टाग्न्भस्त्योर्गीवांवृत्रघ्नऽएषते ॥ तावामेपेरथानामिन्द्राग्नीहवामहे । पतीतुरस्यराधसोविद्वासागिर्वणस्त
मा ॥ तावृधंतावनुद्यन्मर्तीयदेवावदभा । अहताचित्पुरोदुर्धेशेवदेवावर्षते ॥ एवेंद्राग्निभ्यामहविहव्यंशब्धंघृतंनप
तमर्दिभिः । तासरिपुश्रवोवृहद्वर्षिगणत्सुदिधृतमिर्पगणत्दिधृतं ॥ ३२ ॥ (५।६।१५) प्रवोमहेमतयोंयंतुविष्णो
वेमरुत्वतेगिरिजाऽएवयामरुत् । प्रशर्धायप्रयज्यवेसुखादयैतवसेभंददिष्टयेधुनित्रतायशर्वसे ॥ प्रयेजातामहिनायेच
नुस्वयंप्रविन्नान्ब्रुवतऽएवयामरुत् । कत्यातद्वोमरुतोनाधुपेशवोदानामह्नातदैषामधृष्टासोनाद्रयः ॥ प्रयेदिवोबृह
(५।६।१४) इन्द्राग्नीयमितिपटुचस्यसूक्तस्यभौमोऽरिन्द्राग्न्यनुपुअंलाविराद्रपूर्वपंचयुत्तरावा । (५।६।१५) प्रवोमहइतिन-

वर्चस्यसूक्तस्यात्रेयएवयामरुन्मरुतोतिजगती ।

तः शृण्विरगिरासुशुक्लानः सुभ्यऽएवयामरुत । नयेपामिरीमधश्चऽइष्टऽआऽअग्नयो नस्वर्विद्युतः प्रस्यं द्रासो धुनीनां ॥
 सचक्रमे महतो निरुक्रमः समानस्मात्सदसऽएवयामरुत । अदायुक्तमना स्वादधिष्णुभिर्विषधसो विमहसो जिगति
 शेवधोद्युभिः ॥ स्वनोनयोर्मात्रेजयद्वृषात्वेपोयचित्तविषऽएवयामरुत । येनासहैतऽकृतस्वरोचिपः स्थारैरुमानो हि
 ण्यया स्वायुधासऽइष्मिर्णः ॥ ३३ ॥ अपारोवोर्मात्रेजशवसरत्वेपशवौचलेवयामरुत । स्थातारो हि प्रसितौ
 संहृदि स्थनतेनऽवरुच्यतानिदः शुशुक्लानां गयः ॥ तेऽब्रह्मः सुमेखाऽअग्नयो यथातु विद्युन्माऽअवेवयामरुत । दी
 र्धपथुप्रथे सद्वापार्थिवं येपामज्मेष्वा महः शर्धास्यद्भुतै नसा ॥ अद्वेपो नो मरुतो गानुमेतं न श्रोता हवैज रितुरेवयामरुत ॥
 विष्णोर्महः समन्यवोयुयोत न स्मद्भ्योऽनदंसनापद्वेपांसि सन्तः ॥ गतानोयुर्नेयन्त्रियाः सशमिश्रोता हवैमरुक्षऽएव
 यामरुत । ज्येष्ठारो न पर्वता सोऽव्योमनियं तस्य प्रचेतसः स्मार्तदुर्धतेवो निदः ॥ ३४ ॥ (इत्यात्रेयं पञ्चमं मंडलं समाप्तम् ॥
 अत्र सूक्तानि ८७) ॥ ३५ ॥ (परिशिष्टं ॥ हिरण्यवर्णाऽहिरणी सुवर्णैरजतः कृणं । चंद्राऽहिरण्यमथीलक्ष्मीं जातवे
 दोमऽआवह ॥ तांमऽआवह जातवेदोऽक्ष्मीमनपगामिनीं । अस्यां हिरण्यं विदेयं गामभ्यं पुरुषानुहं ॥ अश्वपुर्वारं यमध्यां
 हस्तिनादप्रमोदिनीं । अश्वं देवीमुपह्वये श्रीमदी देवीं सुपतां । क्वांसोऽस्मितां हिरण्यग्राकारां माद्रज्वलंतीं तृप्तां तर्पयतीं ।
 पद्मे स्थिता पुद्गवर्णं तां मिहोपह्वये अश्वं ॥ चंद्रां प्रभासां यशसां च वतीं श्रियं लोके देवेषु धामुद्रां । तां पुद्गिनीं भीमं शरणम् ॥

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ४

॥ ३० ॥

प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनयतां त्वां वृणे ॥ १ ॥ आदित्यवर्णं तपसोर्धिजातो वनस्पतिस्तर्वद्वृक्षोऽथ विल्वः । तस्य फलानि तपसानु-
दंतुमायातरायाश्च ब्राह्म्याऽअलक्ष्मीः ॥ उपैतुमां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्टेऽस्मिन्कीर्तिर्मृज्जिदुदानु-
मे ॥ ध्रुत्पिपासामलं ज्येष्ठामलक्ष्मीर्नाशयाम्यहं । अयूतिर्मसमृद्धिं च सर्वानिर्णुदमे गृह्णात् ॥ गंधद्वारां दुराधर्षानित्यपु-
ष्टां करीरिणीं । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं ॥ मनसः काममाकूतिवाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य म-
यि श्रिः श्रयतां यशः ॥ २ ॥ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सैभ वृकर्द्धम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीं । आपः स्रजैतु-
स्त्रिधा धानि चिह्नीत वस मे गहे । निचंद्रेयीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं युष्टिं सुवर्णाहिं समालिनीं । अपः स्रजैतु-
ह ॥ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीं मनपगामिनीं । आर्द्रां युः करिणीं युष्टिं पिगलां पद्ममालिनीं । चंद्राहिरण्यं प्रभूतं पावो दास्योऽन्विदेयं पुरुषानुहं ॥ ३ ॥ यः शु-
चिः प्रयतो भूत्वा जुहुयां दाज्यमन्वहं । सूर्यं च दशर्चं च श्रुः कर्मः स ततं जपेत् ॥ पद्मानने पद्मऽऊरूपद्माक्षीं पद्मासंभवे ।
तन्मे भुजसि पद्माक्षीये न सौख्यं लभाम्यहं ॥ सूक्तं पंचदशर्चं च श्रुः कर्मः स ततं जपेत् ॥ पद्मानने पद्मऽऊरूपद्माक्षीं पद्मासंभवे ।
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलयताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकले त्वपादपुष्पं मयि संनिधत्स्व ॥ पुत्रपौत्रध-
नं धान्यं हस्त्यश्वादिगवैरथ । प्रजानां भवसीमां ताऽआयुष्मं तं करोतु मे ॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः । धनमिन्द्रो बृ-

मंडलं ६

अनु. ६

॥ ३० ॥

हृस्पतिर्वरुणं धनमस्तुते ॥ देवनेत्यसोभं पितृसोभं पितृवृत्रहा । सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं दत्तु सोमिनः ॥ नक्रोधेन
च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवं तिष्ठतं पुण्यानां भक्तानां श्रीधूक्तं जपेत ॥ सरसि जनिलये सरोजहस्ते धवलतरंग
शुकगंधमाल्यशोभे । भगवति हरिवृद्धभेमनोजेत्रिभुवनभूतिकारि प्रसीद मह्यं ॥ विष्णुपद्माक्षमांद्रेवा माधवी माधवाप्रि
यां । लक्ष्मीप्रियसखी देवानामय च्युतवल्लभां ॥ महालक्ष्मीचंद्रविष्णुपद्मी चधीमहि । तन्नोलक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ ४ ॥
श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यसाविधाच्छोभमानं हृयते । ध्यान्यं धनं पुशुं वहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ ५ ॥
इति परिशिष्टं ॥ ६ ॥ (६।१।१) त्वंह्यग्ने प्रथमो मोतास्याधि योऽभयोदस्म होता । त्वानारः प्रथमं देवयंतो महोराय
सहो विश्वस्य सहसे सह्रद्यै ॥ अथा होतान्य सीद्वेयजीया निरुस्पद इपयन्नीज्यः सन् । तं त्वानरः प्रथमं देवपावंतं विश्वहां
चित्तयंतोऽअनुगमन् ॥ बृते वयंतं बहुभिर्वसव्यैः स्वेरायिं गावांसोऽअनुगमन् । रुशंतमुग्निं देशंतं रृतं वेपावंतं विश्वहां
दीदिवं सं ॥ पूर्वं देवस्य नमसा व्यंतः श्रवस्य वः श्रवऽआपन्नमृक् । नामानि चिद्वधिरयेयज्ञिया निभद्रायतिरणयंतं सह
दे ॥ त्वां वर्धति क्षितयः पृथिव्यां तां रायऽब्रभ्य सोजनानां । त्वंत्रातातरेणेचेत्योभ्रः पिता माता सदमिन्मातृपाणां

॥ ३५ ॥ सप्तम्यध्यायः । (६।१।१८)

भारद्वाजपट्टमंडल ३३ :

सदेम ॥ तंत्वावयंसुधोऽनव्यमशेसुन्नायवऽईमहेदेवयंतः । त्वंविशोऽअनयोदीद्यानोदिवोऽअग्नेबृहतारोचनेन ।
 विशांक्रविंविशपतिशर्धतीनांनितोशनंनृषभं चर्षणीनां । अतीपणिमिषयंतंपावकंरजन्तमग्निंयजतंरथीणां ॥ सोऽअ
 नऽईजेशशमेचमतोयस्तऽअजुइसमिधाहव्यदाति । यऽआहुतेपरिवेदानमोभिर्विश्वेत्सवामादधतेत्वोतः ॥ सोऽअ
 उदतेमहिमहेविधेमनपोऽभिरशसमिधोतहव्यैः । वेदोसूनोसहसोगीर्भिरुक्थैरातेभद्रायांसुमतौर्यतेम ॥ अस्मां
 सीविभासाश्रचोभिश्चश्रवस्यस्तुरुत्रः । बृहद्भिर्वाजैःस्यविरेभिरुक्थैरातेभद्रायांसुमतौर्यतेम ॥ आयस्ततथरोद
 भरितोकायुतनयायपुश्वः । पूर्वीरिषोबृहतीरारेऽअघाऽअस्मेभद्रासौश्रवसान्संतु ॥ नृवदंसोसदुमिद्धह्यस्मे
 जन्वसुतातेऽअद्यां । पूरुणिहित्वेपुरुवारसंत्यग्नेवसुविधेतैराजन्तिव ॥ ३६ ॥ इतिचतुर्थ्येकचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
 अष्टाविंशाध्याये वर्गाः ३६ सूक्तानि २६ ऋचः १७७ ॥ त्यागः ॥ मित्रावरुणाभ्या. ५० अश्विभ्या. ४८ उपस. १६ सवित्र. १४
 पर्जन्याये. १० पृथिव्या. ३ वरुणाये. ८ इन्द्राग्निभ्या. ६ मरुद्भ्य ९ अग्नय. १३ ॥ इतिचतुर्थचतुर्थः ॥
 त्वंह्येकादशानुष्टुभंशक्रयंतमग्नेऽद्यौयथाहोतुर्वेससंप्रनव्यसामूर्धानैर्वैश्वानरीयंहिद्विजगत्यंतपृक्षस्यांत्यान्निष्टु
 बहश्चपुरोवोद्विपदांतयजस्वपमधैत्वद्विश्वाभ्यायानुष्टुभंशक्रयंतमिममूष्वेकोनावीतहव्यऋषिर्वाजागतंया

नदशम्यास्तृतीयापंचदशैक्योपप्लवतिशक्त्यनुष्टुब्धहत्याउपात्यैत्वमग्नेष्टाचत्वारिंशद्वायव्यवर्धमानाद्यापथी
चसप्तविंशत्यनुष्टुप्त्रिष्टुप्पूर्वैर्चांले ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ हरिःओम् ॥ (६।१।२) त्वंहिक्षैतवृद्यशोभेमित्रोन्नपत्यसे । त्वंविचर्षणेपुत्रोवसोपाष्टिनपुत्र्यसि ॥ त्वांहिष्मा
चर्षणयौयुजेभिर्गीभिरीळते । त्वावाजीयात्यवृकोरजस्तूत्रिंश्वचर्षणिः ॥ सजोपस्त्वादिबोनरोयज्ञस्यकितुमिधते ।
यज्ज्ञस्यमानुषोजनःसुन्नायुर्जुह्वेऽअध्वरे ॥ ऋधद्यस्तेसदानवेधियामर्तःशशमते । ऊतीपवृहतोद्विचोद्विपोऽअहोनत
रति ॥ समिधायस्तऽआहुतिनिशितिमत्योनशत् ॥ वयार्धतंसपुत्र्यतिक्षयमग्नेशतायुषं ॥ १ ॥ न्येपस्तेधूमऽऋण्यति
द्विविपन्धुऽऋततः । सूरोनहिद्युतात्वंकृपापावकरोचसे ॥ अधाहिविध्वीज्योसिप्रियोनोऽअतिभिः । रुणवःपूरी
वज्रैःसुनूर्नत्रययत्यैः ॥ ऋत्वाहिद्रोणेऽअज्यसेग्नेवाजीनकृत्व्यः । परिजमेवस्वधाग्नेन्योनबुर्धःशिशुः ॥ त्वंल
ब्धिदच्युताग्नेपशुर्नयवसे । धामाहुयत्तेऽअजरवर्नावृश्चतिशिक्षसः ॥ वेपिह्यध्वरोयतामग्नेहोतादमेविशां । समृधोवि
स्पतेकृणुजपस्वहृद्व्यमंगिरः ॥ अच्छानोमित्रमहोदेवदेवानग्नेवोचःसुमतिरोदस्योः । व्रीहिस्यस्तिषुक्षितिदिवोनन्दि

(६।१।२) त्वंहिक्षैतवदित्येकादशार्चस्यसूक्तस्यवाहस्पत्योभ २६ ओऽमित्रिष्टुष्टुवत्याशकरी ।

ऋक्सं.

अ.४अ.५

॥३२॥

मंडलं ६

अनु. १

॥३२॥

षोऽअंहांसिदुरितार्तेमृतातेरमृतावसातेरम ॥ २ ॥ (६।१।३) अग्नेसक्षेपहतपाऽकृतेजाऽउरुज्योतिर्नशतेदेवयुष्टे ।
यत्वंमित्रेणवरुणःसजोषादेवपासित्यजसामर्तमहः ॥ इजेयज्ञेभिःशशमेशमीभिरुधद्वारायाग्नयेददाश । एवाचनतंय
शसामजुष्टिर्नाहोमर्तेनशतेनग्रहसिः ॥ सुरोनयस्यहशतिरेपाभीमायदेतिशुचतस्तऽआधीः । हेपस्वतःशुरुधोनायम
कोःकुत्राचिद्रणोवसतिर्वनेजाः+ ॥ तिमंचिदेममहिर्वोऽअस्यभसदभ्वोनयमसानऽआसा । विजेहमानःपरशुर्न
जिह्वांद्रविर्नद्रावयतिदारुधक्षत् ॥ सऽइदस्तेवप्रतिधादसिष्यन्छिशीततेजोयसोनधारो । चित्रध्रजतिररुतियोऽअ
कोर्वेर्नद्रुपद्वारधुपत्मजंहाः ॥ ३ ॥ सऽइरेभोनप्रतिवस्तऽउक्षाःशोचिपरारपीतिमित्रमहाः । नक्तंयऽइमरुषोयोदि
वाननमर्त्योऽअरुषोयोदिवानन्+ ॥ द्विवोनयस्यविधुतोर्नवीनोद्धृपारुक्षऽओषधीषुनूतोत् । घृणानयोध्रजसापत्मेनाय
न्नारोदसीवसुनादंसुपत्नी ॥ धार्योभिर्वाचोयुज्येभिरकैर्विद्युन्नदविद्योत्स्वेभिःशुष्मैः । शधौवायोमरुताततक्षऽक्रमुर्न
त्वेपोरभसानोऽअद्यौत् ॥ ४ ॥ (६।१।४) यथाहोतमनुपोदेवतातायज्ञेभिःसूनोसहसोयजसि । एवानोऽअद्यस
मनासमानानुशन्नऽउशतोवक्षिदेवान्+ ॥ सनोविभार्वाचक्षणिर्नवस्तोरगिर्वदारुवेद्यश्चनोधात् । विश्वायुर्योऽअद्यस
तोमर्त्येषूपर्भुम्भूदतिथिर्जातवेदाः ॥ द्यावोनयस्यपनयंत्यभ्वासांसिचस्तेसूयोनशुक्रः । वियऽइनोत्यजरःपावकोश्च
(६।१।३) अग्नेसक्षेपदेत्यष्टर्वस्यसूक्तस्यवार्हस्पत्योभरद्वाजोऽभिखिष्टुर् । (६।१।४) यथाहोतरित्यष्टर्वस्यसूक्तस्यवार्हस्पत्योभरद्वाजोऽभि-

स्याच्चिच्छिन्नश्चतुष्टयार्ण ॥ वृद्धाहिसूत्रोऽस्यैवसद्वाचकेऽअग्निर्जनुपाज्मात्रं । सत्वंनऽऊर्जसनऽऊर्जधाराजैवजेर
 वृकैर्क्षेप्यतः ॥ नितिक्रियोवार्णमन्त्रमत्तिवायुर्नारष्ट्रयत्नेत्यक्न । तुर्यामयस्तऽआदिशामरातीरस्योनहुतःपततः
 परिहृतः ॥ ५ ॥ आसुर्योनभानुमङ्गिरैर्कैरग्नेततंथरोदसीविभासा । चित्रोर्नयत्परितमास्यकःशोचिपापत्मेन्नोशिजो
 नदीर्यन् । त्वाहिमृद्रतममकशोर्कैर्ववृमहेमहिनःश्रोण्यग्ने । इन्द्रंनत्याशवसादेवतावायुपुणंतिराधसानुत्तमाः ॥ नूनो
 ऽअग्नेवृकैभिःस्वस्तिवेपिरायःपथिभिःपर्ष्यहः । तासुरिभ्योगुणतेरसिसुम्रमदेनशतहिमाःसुवीराः ॥ ६ ॥ (६।१।५)
 हुवेवःसुनुंसहस्रोयुवानमद्रौघवाचंमतिभिर्यविष्ठ । यऽइच्चतिद्रविणानिप्रचेताविश्ववाराणिपुरुवारोऽअध्रुकः ॥ त्वे
 वसूनिपुर्वणीकहोतद्वोपावस्तोरोरैरयक्षियासः । क्षामैवविश्वामुर्वनानियस्मिन्ससौभगानिदधिरैपावके ॥ त्वंविश्व
 प्रदिवःसीदऽआसुक्रत्वार्थीरभवोवार्याणां । अतऽइनोपिविधुतेचिकित्वाव्यानुपगजातवेदोवसूनि ॥ योनःसनुत्यो
 ऽअभिदासदग्नेयोऽअंतरोमित्रमहोवनूज्यात् । तमजरेभिर्वृषभित्तवस्वैस्तपातपिष्ठतपसातपस्वान् ॥ यस्तैयज्ञेनसमि
 धायऽउक्थैर्कैर्भिःसूनोसहसोददाशत् । समत्येज्वमृतप्रचेतारायाद्युन्नेनश्रवंसाविभाति ॥ सतत्कृधीपितस्तूर्यमग्ने
 स्पृधौबाधस्वसहसासहस्वान् । यच्छस्यसेद्युभिर्कोवचोभित्तजुपस्वजरितुर्घोपिमन्म ॥ अश्यामंतंकार्ममग्नेतवोतीऽ
 क्षिष्टुप् । (६।१।५) हुवेवइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यवाहैरग्नोभरद्वाजोऽअग्निष्टिष्टुप् ।

अद्यामरुधिरयिवःसुवीरं । अद्यामवाजमभिवाजयंतोद्यामद्युम्नमजराजरेते ॥ ७ ॥ (६।१।६) प्रनव्यसासहसःसुनुम
 च्छायसेनगतुमवऽइच्छमानः । बृश्चद्वनं कृष्णयामंरुशतंवीतीहोतारंदिव्यंजिगाति ॥ सःश्वितानस्तन्यतूरौचनस्थाऽ
 अजरोभिर्नानंदद्विर्यविष्ठः । यःपविकःपुरुतमःपुरुणिपथून्यग्रिरनुयातिभवेन् ॥ वितेविष्ववातजूतासोऽअग्नेभामा
 सःशुचेशुचयश्चरति । तुविस्त्रक्षासोदिव्यानवगवानवनंतिघृषतारुजंतः ॥ येतेशुक्रासःशुचयःशुचिष्मःक्षांवपतिवि
 षितासोऽअर्वाः । अर्धभ्रमस्तऽउर्वियाविभतियातर्यमानोऽअधिसानुपृश्नेः ॥ अर्धजिह्वापापतीतिप्रवृष्णोऽगोपयुधो
 नाशनिःसृजाना । शूरस्येवप्रसितिःक्षातिरमेदुर्वतुर्भामोदयेतेवनानि ॥ आभानुनापार्थिवानिज्रयांसिमहस्तोदस्यघृ
 षतातंतथ । सर्वाधुस्वार्यभयासहोभिःस्पृधौवनुष्यन्वनुषोनिर्जूर्व ॥ सार्धित्रिचित्रचितयंतमस्मेचित्रक्षत्रचित्रतमंवयो
 धां । चंद्रयिंपुरुवीरंवृहंतंचंद्रचंद्राभिर्गुणतेयुवस्व ॥ ८ ॥ (६।१।७) मूर्धानंदिवोऽअरुतिपृथिव्यावैश्वानरमतऽ
 आज्ञातमग्निं । कविंसस्वाजमतिथिंजनानामासन्नापात्रंजनयंतदेवाः+ ॥ त्वद्विप्रोजायेतेवाज्यमेत्त्वह्नीरासोऽअभिमातिषाहः ।
 संनवंत । वैश्वानरंरथ्यमध्वराणायज्ञस्यकेतुंजनयंतदेवाः+ ॥ त्वद्विप्रोजायेतेवाज्यमेत्त्वह्नीरासोऽअभिमातिषाहः ।
 वैश्वानरत्वमस्मासुधेहि वसूनि राजन्स्पृहयाध्याणि ॥ त्वांविश्वेऽअमृतजायमानंशिशुंनदेवाऽअभिसंनवंते । तवक्रतु
 . (६।१।६) प्रनव्यसेतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यवाहसत्योभरद्वाजोऽग्निस्त्रिष्टुप्(६।१।७) मूर्धानमिति सप्तर्चस्यसूक्तस्यवाहसत्योभरद्वाजोवैश्वानर

भिरमृतत्वमायन्वैश्वानर्यत्पित्रोर्दीदैः ॥ वैश्वानरतत्रतानिब्रतानिमहान्यग्नेनकिरादधर्षं । यज्ञायमानःपित्रोरूप
स्येविंदःकेतुंवृनुनेज्बहौ ॥ वैश्वानरस्यविभिंतानिचक्षसासानूनिदिवोऽअमृतस्यकेतुना । तस्येदुविश्वामुवनार्धिर्मधं
भिरमृतत्वमायन्वैश्वानरोविदिवोरोचनाकृतिः । परियोविश्वामुवनानिप
स्येविंदःकेतुंवृनुनेज्बहौ ॥ विद्योऽअमृतस्यकेतुर्वैश्वानरोविदिवोरोचनाकृतिः । प्रयुवांचविदथाजातेवदेसः । व्यं
निवयाऽइवरुरुहुःसप्तविमुहः ॥ विद्योऽअमृतस्यकेतुर्वैश्वानरोविदिवोरोचनाकृतिः । प्रयुवांचविदथाजातेवदेसः । व्यं
प्रथेदब्धोगोपाऽअमृतस्यरक्षिता ॥ ९ ॥ (६।१।८) पृक्षस्यवृणोऽअरुपस्यूहःप्रयुवांचविदथाजातेवदेसः । व्यं
वैश्वानुरार्यमितिन्यसीशुचिःसोमऽइवपवतेचारुग्रये ॥ सजायमानःपरमेव्योमनिब्रतान्यग्नेनिब्रतपाऽअरक्षत । व्यं
तरिक्षममिमीतसुकुतुवैश्वानरोमहिनाकारकस्पृशत् ॥ अपामपत्येमहिपाऽअगृष्णातविशोरजानमुपतस्थुऽऊग्नि
विचर्मणीवधिपणेऽअवर्तयद्वैश्वानरोविश्वमघत्तृष्णयं ॥ युगेयुगेविदध्यंगणद्ध्योर्ग्रेरियिशसंधेहिन्नव्यसी । वयंजयेम
यं । आद्रतोऽअग्निर्मभरद्विवस्वतोवैश्वानरोमातरिश्वोपरावतः ॥ अस्माकमेमेमघवत्सुधार्यानीमिक्षमजंसुवीक्ष्य । रक्षाचनोदु
पव्येवराजन्नघंसेमजरनीचानिवृश्चानिनंतेजसा ॥ अस्माकमेमेमघवत्सुधार्यानीमिक्षमजंसुवीक्ष्य । रक्षाचनोदु

स्त्रिपुचत्येद्वेजगत्यौ ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ५

॥ ३४ ॥

शुंशर्धोऽअग्नेवैश्वानरप्रचतारीःस्तवानः ॥ १० ॥ (६।१।९) अहश्चकृष्णमहर्जुनंचविवर्तेतेरजसीवेद्याभिः । वै
श्वानरोजायमानोनराजावतिरज्योतिषाग्निस्तमसि ॥ नाहंतुनविजानाभ्योतुनयवयतिसमरेतमानाः । कस्यस्वि
त्पुत्रऽइहवक्त्वानिपरोवद्वाल्यवरेणपित्रा ॥ सऽइत्तंतुसविजानाभ्योतुसवक्त्वान्युतथावदाति । यऽईचिकेतदुमृत
सोर्मत्यस्तन्वाइवर्धमानः ॥ ध्रुवंज्योतिर्निहितंहृदयेकंमनोजविष्ठपतयत्स्वंतः । विश्वेदेवाःसमनसःसकेताऽएकंक्रतु
मभिविद्यतिसाधु ॥ विमेकर्णोपतयतोविचक्षुर्वीइदंज्योतिर्हृदयऽआहितंयत् । विमेमनश्चरतिदूरऽआधीःकिंस्विदु
क्ष्यामिकिमनूर्मनिष्ये ॥ विश्वेदेवाऽअनमस्यन्भियानास्वामग्नेतमसितस्थिवांसं । वैश्वानरोवततयेनोर्मत्योवततये
नः ॥ ११ ॥ (६।१।१०) पुरोवोमंद्रदिव्यंसुवृत्किंप्रयतियज्ञेऽअग्निमध्वरेदधिध्वं । पुरऽउक्थेभिःसहिनोविभावा
स्वध्वराकर्करीजातैवेदाः ॥ तमुद्युमःपुर्वणीकहोतरग्नेऽअग्निभिर्मनुषऽइधानः । स्तोमंयमस्मैमतेवशंपयंतनयुचिमत
यःपवंते ॥ पीपायसःश्रवसामत्येषुयोऽअग्नयेदुदाशुविप्रऽउक्थैः । चित्राभित्तमुतिभिश्चित्रशोचिर्ब्रजस्यसातागोर्मतो
(६।१।९) अहश्चकृष्णमितिसप्तर्वस्यसूक्तस्यबार्हस्पत्योभरद्वाजोवैश्वानरोमित्रिष्टुप् । (६।१।१०) पुरोवद्वतिसप्तर्वस्यसूक्तस्य

॥ ३४ ॥

मंडलं. ६

अनु. १

दधाति ॥ आयःपप्रौजायमानऽउर्वीदूरेदृशाभासाकृष्णाध्वा । अधवहुचित्तमऽऊर्यायास्तिरःशोचिपाददृशेषाव-
 कः+ ॥ नूनश्चित्रं पुरुवाजाभिरूतीऽअग्नेरयिमघवद्वाश्वधेहि । येरार्धसाश्रवसाचात्यन्यान्सुवीर्यंभिश्चाभिसंतिजना-
 न् ॥ इमंयज्ञंचनौधाऽअग्नऽउशन्यंतऽआसानोजुहुतेहृविष्मान् । भरद्वाजेपुदधिपेसुवृक्तिमवीर्याजंस्वगधस्यसातौ+ ॥
 विद्वेषासीनुहिवर्धयेळांमेदमशुतहिमाःसुवीराः ॥ १२ ॥ (६।१।११) यजस्वहोतरिपितोयजीयानमेवाधोमरुतां
 नप्रयुक्ति । आनोमित्रावरुणानासत्याद्यावाहोत्रायपृथिवीववृत्याः ॥ त्वंहोतामंद्रतमोनोऽअध्रुगंतद्वोविदथामर्त्यं
 पु । पावकयाजुह्वाइवाहिरासाग्नेयजस्वतन्वं+ तवस्वां+ ॥ धन्याचिद्धित्वेधिपणावष्टिप्रदेवान्जन्मयणतेयजध्वै । वे-
 पिष्ठोऽअंगिरसायद्धविप्रोमधुच्छंदोभनतिरेभऽइष्टौ+ ॥ अदिद्युतत्स्वर्पाकोविभावग्नेयजस्वरोदसीऽउरूची । आधु-
 नयनमसारातहव्याऽअंजंतिषुप्रयसंपंचजनाः ॥ बृजेह्यन्नमसावाहिरावयामिसुग्धतवतीसुवृक्तिः । अम्यक्षिसद्वास-
 दनेपृथिव्याऽअश्रायिपुनःसूर्येनचक्षुः ॥ दुशस्यानःपुर्वणीकहोतद्वेवेभिर्ग्रेऽअग्निभिरिधानः । रायःसूनोसहसोवाव-
 सानाऽअर्तिस्रसेमवृजन्ननांहः ॥ १३ ॥ (६।१।१२) मध्येहोतादुरोणेवर्हिपोराळ्यग्निस्तोदस्यरोदसीयजध्वै । अयं
 ससन्नःसहसऽऽकृतावादूरात्सूर्योनशोचिर्पाततान ॥ आयस्मिन्त्वेस्वर्पाकेयजत्रयधद्राजन्त्सर्वततेवनुद्यौः । त्रिपध-

(६।१।११) यजस्वहोतरिपिपडुचसूक्तस्यवाहंस्यलोभरद्वाजोऽग्निस्त्रिष्टुप् । (६।१।१२) मध्येहोतेतिपडुचस्यसूक्तस्यवाहंस्यलो

स्थस्ततुरुषोनर्जहोह्व्यामधानिमानुषयजध्वे ॥ तेजिष्ठायास्यारतिर्वेनेरादतोदोऽअध्वन्नवृधसानोऽअद्यौत । अद्रोघो
नद्रवितार्चेततित्मन्नमर्त्योवृत्रोऽओषधीषु ॥ सास्माकैर्भिरतरीनश्रुषैरग्निष्टवेदमुऽआजातवेदाः । द्रुन्नोवन्वन्कत्वाना
वोऽसःपितेवजारयारियज्ञैः+ ॥ अधस्मास्यपनयतिभासोवृथायत्तक्षदनुयातिपृथ्वी । सद्योयस्पंद्रोविषितोधवीयान
पोनतायुरतिधन्वाराद् ॥ सत्वंनोऽअर्वन्निदायाविश्वेभिरग्नेऽअग्निभिरिधानः । वेषिरागोविर्यासिदुच्छुनामदेमश
तर्हिमाःसुवीराः ॥ १४ ॥ (६।१।१३) त्वद्विश्वांसुभगसौभगान्यग्नेविर्यंतिवनिनोवयाः । श्रष्टीरयिर्वाजोवृत्रतू
र्ध्वदिवोवृष्टिरीज्योरीतिरपां+ ॥ त्वंभगोनोऽआहिरर्त्तमिपेरिजमेवक्षयसिदुस्मर्वर्चाः । अग्नेमित्रोनवृहुतऽक्रतस्यासि
क्षत्तावामस्यदेवभूरैः ॥ ससत्पतिःशर्वसाहंतिवृत्रमग्नेविप्रोविपणेर्भर्तिवाजं । यत्वंप्रचेतऽक्रतजातरायासजोषानज्वा
पांहिनोषि ॥ यस्तेसूनोसहसोगीर्भिरुक्थैर्यज्ञैर्भर्तोनिशितिवेद्यानद् । विश्वंसदेवप्रतिवारमग्नेधत्तेधान्यं१पत्यतेवस
व्यैः* ॥ तानृभ्यऽआसौश्रवसासुवीराग्नेसूनोसहसःपृथ्व्यसेधाः । कुणोषियच्छवसाभूरिपृथ्वोवयोवृकायारयेजसु
रये ॥ वृक्षासूनोसहसोनोविहायाऽअग्नेतोक्तनयंवाजिनोदाः । विश्वाभिर्गीर्भिरभिपतिमश्यामदेमशुतर्हिमाः
सुवीराः ॥ १५ ॥ (६।१।१४) अग्रायोमर्त्योदुवोधिंयजुजोषधीतिभिः । भसन्नुपपृथ्व्यऽइषंबुरीतावसे ॥
भरद्वाजोऽग्निस्त्रिष्टुप् । (६।१।१३) त्वद्विश्वेतिपृचस्यसूक्तस्यवाहस्पत्योभरद्वाजोऽग्निस्त्रिष्टुप् । (६।१।१४) अमायइतिपृचस्यसूक्तस्य

ऽअग्निरिच्छिप्रचैताऽअग्निर्वैधस्तमऽऋषिः । अग्निहोतारमीलतेयज्ञेपमनुषोविशः ॥ नानाह्यग्नेवसेस्पधैतेरायौ
 ऽऋषः । तूर्वतोदस्युमायवौव्रतैःसीक्षंतोऽअव्रतं ॥ अग्निरप्सामृतीपहवीरंददातिसत्पतिं । यस्यन्नसैतिशवसः
 संचक्षिशत्रवोभिया ॥ अग्निहिंविद्वाननिदोदेवोमर्तमुरुज्यति । सुहावायस्यावृतेरयिर्वाज्ञेष्ववृतः ॥ अच्छानोमि
 न्नमहोदेवदेवानग्नेवोचःसुमतिरोदस्योः । वीहिस्वस्तिंसुक्षितिद्विनन्दिनोऽअहंसिदुरितार्तेमतातेरमतवावसातरे
 म ॥ १६ ॥ (६।१।१५) इममथुवोऽअतिथिमुपबुधंविश्वसांविशापतिमृजसेगिरा । वेतीहिजोनुपाकच्चिदाशु
 चिज्योर्किदत्तिगर्भोयदच्युतं ॥ मित्रनयंसुधितंभृगवोदधुर्वनस्पतावीड्यमध्वशौचिपं । सत्वंसुग्रीतोवीतहव्येऽअद्भु
 तप्रशस्तिभिर्महयसेद्विवेदे ॥ सत्वंदक्षस्यावृकोबुधोभूर्यःपरस्यांतेरस्यतरुपः । रायःसूनोसहसोमत्येष्वच्छदित्यच्छ
 वीतहव्यायसप्रथोभरद्वाजायसप्रथः ॥ द्युतानंवोऽअतिथिस्वर्णमग्निहोतारंमनुपःस्वध्वरं । विप्रंनद्युक्षर्वचसंसुवृकि
 भिर्हव्यवाहमरुतिदेवमृजसे ॥ पावकयायश्चितयत्याकृपाक्षामन्नुरुचऽउपसोनभानुना । तूर्वन्नयामन्नेतेशस्यनूरणऽ
 आयोघणेनतत्पृणोऽअजरः ॥ १७ ॥ अग्निमग्निवःसमिधादुवस्यतप्रियंप्रियवोऽअतिथिगुणीपणि । उपवोगीभिर्

बार्हस्पत्योभरद्वाजोऽअग्निरनुष्टुबत्याशकरी । (६।१।१५) इममृज्विलोकोनविशत्यचस्यसूक्तस्यागिरसोवीतहव्यो (भरद्वाजोवा) मिजं
 गतीवृतीयापंचदशौशकयौपष्ठयतिशकरीसप्तदश्यनुष्टुपअष्टादशीवृहतीदशम्याद्याःपचपोडदयेकोनविंशीचत्रिष्टुभः ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ५

॥ ३६ ॥

मृतं विचासत देवो देवे पवनं ते हि वार्य देवो देवे पवनं ते हि नो दुर्वः ॥ सर्भिर्द्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचि पावकं पुरोऽध्वरे
ध्रुवं । विप्रं होतारं पुरुवारं मृदुहं कविं सुश्रैरीं महिजातवे दसं ॥ त्वां दूतमग्नेऽअमृतं युगे युगे हव्यवाहं धिरे पायुमील्यं । दे
वासंश्च मतो सश्च जायं विविमुं विरपति नमसा निर्येदिरे ॥ विभूषन्नमऽउभयोऽअनुज्जता दूतो देवानां रजसी समीयसे । दे
यत्ते धीतिं युमतिमावृणी महर्धस्मान् स्त्रिवरूथः शिवो भव ॥ तं सुप्रतीकं सहस्रं स्वं च मर्विद्धां सो विदुष्टं रं सपेम । सयं क्षुद्धि
श्ववयुनानि विद्वान्प्रहव्यमग्नि रमृतैषु वोचत् ॥ १८ ॥ तमग्ने पास्युत तं पिपयिस्तुऽआनं कुवये शूरधीतिं । यज्ञस्य वा
निर्दिष्टो दितं वा तमितृणक्षिशर्व सो त राया ॥ त्वमग्ने वनुष्यतो निपाहित्वमुनः सहसा वन्नवद्यात् । संत्वाध्वसन्व
दभ्यैतु पाथः संरयिः स्पृहयार्थः सहस्री ॥ अग्निर्होता गृहपतिः सराजः विश्वविदुजनिमाजातवेदाः । देवानां मुतयोम
त्यो नायर्जिष्ठः स प्रयजतामतावा ॥ अग्ने यदुद्यविशोऽअध्वरस्य होतः पावकशो चे वेष्टं हियज्वा । ऋतार्यजासि महिना
वियद्भूहव्यावहय विष्टया तैऽअद्य ॥ अभिप्रयांसि सुधिं तानि हि ख्यो नित्वा दधीत रोदसी यजध्वै । अर्वा नो मघवन्वा
जसा तावग्ने विश्वानि दुरिता तरे मता तरे मतवावसातरेम ॥ १९ ॥ अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरूपां वतं प्रथमः सीद यो न ।
कुलायि नं धृतवंतं स वित्रे यज्ञं न यजमानाय साधु ॥ इममुत्थमं थर्ववदग्निं थं थति वेधसः । यमं कथं तमानं यन्नमूरं स्या
व्याभ्यः ॥ जनिष्या देववीतये सर्वताता स्वस्तये । आ देवान् वक्ष्यमुताऽऽकृता वृधो यज्ञं देवेषु पि स्पृशः ॥ वयमुत्वा गृह

मंडलं ६

अनु. १

॥ ३६ ॥

(६।२।१)

पतेजनामग्नेऽकर्मसमिधावहंत । अस्थरिनोगाहंपत्यानि संतुतिर्मेनस्तेजसांशिशधि ॥ २० ॥ (६।२।१)
 आदेवान्वक्षियक्षि
 सनोमंद्राभिर्ध्वरेजिह्वाभिर्यजामहः । आदेवान्वक्षियक्षि
 त्वमग्नेयज्ञानाहोताविश्वेषाहितः । देवभिर्मानुषेजने ॥ सनोमंद्राभिर्ध्वरेजिह्वाभिर्यजामहः । आदेवान्वक्षियक्षि
 पतेजनामग्नेऽकर्मसमिधावहंत । अस्थरिनोगाहंपत्यानि संतुतिर्मेनस्तेजसांशिशधि ॥ २० ॥ (६।२।१)
 आदेवान्वक्षियक्षि
 त्वमग्नेयज्ञानाहोताविश्वेषाहितः । देवभिर्मानुषेजने ॥ सनोमंद्राभिर्ध्वरेजिह्वाभिर्यजामहः । आदेवान्वक्षियक्षि
 पतेजनामग्नेऽकर्मसमिधावहंत । अस्थरिनोगाहंपत्यानि संतुतिर्मेनस्तेजसांशिशधि ॥ २० ॥ (६।२।१)
 आदेवान्वक्षियक्षि

(६।२।१)

त्वमग्नेयज्ञाना

ऋक्सं.

अ.४अ. ५

॥ ३७ ॥

णवसे ॥ न॒हि॒ते॒पू॒र्त॒म॒क्षि॒प॒श्रु॒व॒न्ने॒मा॒नां॒व॒सो । अ॒था॒दु॒वो॒न॒व॒से ॥ आ॒ग्नि॒र॒गा॒मि॒भार॒तो॒वृ॒त्र॒हा॒पु॒रु॒चे॒त॒नः । दि॒वो॒दा
स॒स्य॒स॒र्प॒तिः ॥ स॒हि॒वि॒श्व॒ाति॒पा॒धि॒वा॒र॒धि॒दा॒श॒न्म॒हि॒त्वा । व॒न्व॒न्न॒वा॒तो॒ऽअ॒स्त॒तः ॥ २४ ॥ स॒प्र॒ल॒व॒न्न॒वी॒थ॒य॒सा॒मे॒द्यु
न्ने॒न॒सं॒य॒ता । ब॒ह॒त॒तं॒थ॒भा॒नु॒ना । प्र॒वः॒स॒खा॒यो॒ऽअ॒ग्रे॒स्तो॒मं॒य॒ज्ञं॒च॒धृ॒ष्ण॒या । अ॒र्च॒गा॒य॒च॒वे॒ध॒से । स॒हि॒यो॒मा॒नु॒षा॒य
ग॒ासी॒दु॒द्धो॒ता॒क॒वि॒क॒तुः । दू॒त॒श्च॒ह॒व्य॒वा॒हनः ॥ ता॒रा॒जा॒ना॒शु॒चि॒व॒त्र॒ता॒दि॒त्या॒न्मा॒रु॒तं॒ग॒णं । व॒सो॒य॒क्षी॒ह॒रो॒द॒सी ॥ व॒र्षो
ते॒ऽअ॒ग्ने॒सं॒ह॒ष्टि॒रि॒प॒य॒ते॒म॒र्त्या॒य । ऊ॒र्जो॒न॒पा॒दु॒मृ॒त॒स्य ॥ २५ ॥ क॒त्वा॒दा॒ऽअ॒स्त॒श्रे॒ष्ठो॒द्य॒त्वा॒व॒न्व॒न्त्स॒रे॒क्णाः । म॒र्ते॒ऽआ॒ना
शो॒चि॒षा॒या॒स॒द्वि॒श्वं॒य॒त्रि॒णं । अ॒ग्नि॒र्नो॒व॒न॒ते॒र॒धि॒+ ॥ सु॒वी॒रं॒र॒वि॒मा॒भ॒र॒जा॒त॒वे॒दो॒वि॒च॒र्ष॒णे । अ॒ग्नि॒स्ति॒ग्मे॒न
त्वं॒नः॒पा॒ह्यं॒हो॒जा॒त॒वे॒दो॒ऽअ॒घा॒य॒तः । र॒क्षा॒णो॒ब्र॒ह्म॒ण॒स्क्वे ॥ २६ ॥ यो॒नो॒ऽअ॒ग्ने॒दु॒रे॒व॒ऽआ॒म॒र्तो॒व॒धा॒य॒दा॒श॒ति ॥ त॒स्मा
न्नः॒पा॒ह्यं॒ह॒सः ॥ त्वं॒तं॒दे॒व॒जि॒ह्वा॒प॒रि॒वा॒ध॒स्व॒दु॒कृ॒तं । म॒र्तो॒यो॒नो॒जि॒घा॒स॒ति ॥ भ॒र॒द्वा॒जा॒य॒स॒प्र॒थः॒श॒र्म॒य॒च्छ॒स॒ह॒त्य ।
अ॒ग्ने॒व॒रे॒ण्यं॒व॒सुं ॥ अ॒ग्नि॒वृ॒त्रा॒णि॒ज॒घ॒न॒द्र॒वि॒ण॒स्य॒वि॒प॒न्य॒या । स॒र्मि॒द्धः॒शु॒क्र॒ऽआ॒हु॒तः ॥ ग॒र्भे॒मा॒तुः॒पि॒तु॒ष्पि॒ता॒वि॒दि॒द्यु॒ता
नो॒ऽअ॒क्ष॒रे । सी॒द॒न्न॒त॒स्य॒यो॒नि॒मा॒+ ॥ २७ ॥ ब्र॒ह्म॒प्र॒जा॒व॒दा॒भ॒र॒जा॒त॒वे॒दो॒वि॒च॒र्ष॒णे । अ॒ग्ने॒य॒ही॒द॒य॒हि॒वि॒+ ॥ उप॒त्वा॒र
प॒व॒सं॒ह॒शं॒प्र॒य॒स्व॒तः॒स॒ह॒स्कृ॒त । अ॒ग्ने॒स॒स॒ज्म॒हे॒गि॒रः ॥ उप॒छा॒या॒मि॒व॒घृ॒णे॒र॒ग॒न्म॒श॒र्म॒ते॒व्यं । अ॒ग्ने॒हि॒र॒ण्य॒सं॒ह॒शः ॥ य॒ऽऽ॒व॒

॥ ३७ ॥

मंडलं ६

अनु. २

अऽइवशर्युह्यातिमशृङ्गो न वंसङः । अग्नेपुरोरोजिथ ॥ आयं हस्तेन ख्वादि नं शिष्टुं जातं न विञ्चति । विशामग्निस्वध्व
 २८ ॥ प्रदेवं देववीतये भरतावसवित्तमं । आस्वेयोनौ निषीदतु ॥ अजातं जातवैदसि प्रियं शिशुतातिथिं ।
 अजानो या ह्यावह्नाभिप्रयांसि वीत
 २९ ॥ वीतीयो देवं मर्तो दु
 ३० ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३१ ॥ येनावसुन्याभृ
 ३२ ॥ इति

इति

अग्नेयुक्ष्वाहिये तवाश्वसो देवसाधवः । शोचाविभाहजर ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३३ ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३४ ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३५ ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३६ ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३७ ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३८ ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ३९ ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह
 ४० ॥ अतोऽअग्रऽक्रुचाहविह

॥

एकोत्रिंशत्प्रायेवर्गाः ३० सूक्तानि १५ ऋचः १६० ॥ त्यागः ॥ अग्रयः ४१ वैश्वानरायाग्रय २१ अग्रयः ९८ ॥ इति

चतुर्थेऽपचमः ॥

पिवपंचो नैत्रैष्टुभां द्विपदांतं तमुष्टुहिमहान्ससो नौ चोर्न विपिप्रोर्विराळिमा उद्वादर्शनवम्येकादशौ वैश्वदेव्यौ य

एकएकादशसुतद्दशवपायातेन वश्रुधीनोष्टौ किमस्यां त्याचायमानस्याभ्यावर्तितो दानस्तुतिरागावोगव्यं द्वि

तीर्यैद्रीचां त्यश्चपादौ त्यानुष्टुब्जागतस्तृचो द्वितीयादिः ॥ १ ॥

ऋक्सं.

अ.४अ.६

॥३८॥

॥ हरिःओम् ॥ (६।२।२) पिवासोममभियमुतदंऊर्ध्वगव्यमहिगुणानऽईद्र । वियोधृष्णोवार्धपोवज्रहस्तवि
श्वोवृत्रममित्रियाशवौभिः ॥ सऽईपाहियऽऋजीपीतरुत्रोयःशिप्रवान्वृपभोयोमतीनां । योगोत्रभिङ्गज्रभृद्योहरिष्ठाः
सऽईद्रचित्रोऽअभितृधिवाजान् ॥ एवापाहिप्रलथामंदतुत्वाश्रुधिब्रह्मवावृधस्वोतगीर्भिः । आविःसूर्यैकृणहिपीपि
हीपोजहिशत्रूरभिगाऽईद्रतृधि ॥ तेत्वामदोवृहद्विद्रस्वधावऽइमेपीताऽउक्षयंतद्युमतं । महामनूनंतवसंविभ्रतिमत्स
रासोजहंपंतप्रसाहं ॥ येभिःसूर्यमुपसंमदसानोवासयोपदृहानिद्रेत् । महामद्रिपरिगाऽईद्रसंतनुत्थाऽअच्युतंसद
सस्परिस्वात् ॥ १ ॥ तवक्रत्वातवृतइंसनाभिरामासुपकंशच्यानिदीधः । औणोर्दुरऽउस्त्रियाभ्योविदृहोदुवाद्वाऽ
असृजोऽअंगिरस्वान् ॥ प्रमाश्रुक्षामहिदंसोव्युर्वीसुपद्यामज्जोवृहद्विद्रस्तभायः । अधारयोरोदसीदेवपुत्रेप्रलेमातरा
युहीऽऋतस्य ॥ अधत्वाविश्वेपरऽईद्रदेवाऽएकतवसंदधिरेभराय । अदेवोयदुभ्योहिष्टदेवान्त्वर्पातावृणतऽईद्रम
त्र ॥ अधद्यौश्चिस्तेऽअपसानुवज्राद्वितानमज्जियसास्वस्यमन्योः । आहियदिद्रोऽअभ्योहसानंनिचिद्विश्वायुःशयथेज
घानं ॥ अधत्वष्टतिमहऽउग्रवज्रसहस्रभृष्टिववृतच्छताश्रि । निकाममरमणसंयेननवतमहिंसंषिणगृजीपिन् ॥ २ ॥
वर्धन्यंविश्वेमरुतःसजोपाःपचच्छतमहिपोऽईद्रतुभ्यं । पूपाविण्णस्त्रीणि सरासिधावन्वृत्रहणमदिरमंशुमस्मै ॥ आ
(६।२।२) पिवासोममितिपंचदशर्चससूक्तस्यवर्हस्पत्योभरद्वाजइद्रसिष्टुत्रत्याद्विपदान्निष्टुप् ।

॥३८॥

मंडलं ६

अनु. २

क्षोद्रोमहिषुतंनदीनां परिष्ठितमसृजऽभिम्पां । तासामनुग्रवतऽङ्गप्रथांप्रादैयोनीचीरपसःसमृद्रं ॥ पुवाताविश्वो
 चक्रुवांसमिद्रंमहामग्रमज्जुर्गसहोदां । सुवीरत्वास्वायुधंसुवज्रमाब्रह्मनव्युभवसेववृत्त्यात् ॥ सनोवाजायश्रवसऽङ्गपेच
 रायेधैहिद्युमतऽङ्गद्विप्रांन् । भुरद्वाजिनवतऽङ्गद्वसुरीन्द्रविचसैधिपायैर्नऽङ्ग ॥ अयावाजैदेवहिंसनेमदेमशत
 हिमाःसुवीराः ॥ ३ ॥ (६।२।३) तमुष्टुह्रियोऽअभिभूत्योजावुन्वन्नवातःपुरुहूतऽङ्गद्वः । अपाह्णमुग्रसहमानमाभि
 र्गीर्भिवैधवृषभंचर्पणीनां ॥ सयुधमःसत्वाखजकृत्समद्वतुविबुधोर्नदन्मोऽङ्गजीपी । वृहद्रेणश्रवणेनोमानुपीणामे
 कःकृष्टीनामभवत्सहावो ॥ त्वंहनुत्यदमायोदस्यैरेकःकृष्टीरेवनोरायीय । अस्तिस्त्रिवीथैर्भुतर्तऽङ्गद्वनस्विदस्तिह
 तथाविवोचः ॥ सदिक्षितैतुविजातस्यमन्येसहःसहिष्ठतुरतस्तुरस्य । हन्त्रच्युतच्युद्वस्मेपयैतमूणोःपुरोविदुरोऽअस्यविश्वोः ॥ ४ ॥
 तन्नःप्रलंसख्यमस्तुयुष्मेऽङ्गत्थावद्विर्वलमंगिरोभिः । हन्त्रच्युतच्युद्वस्मेपयैतमूणोःपुरोविदुरोऽअभवत्समत्सु ॥ सम
 सहिधीभिर्हव्योऽअस्यग्रऽङ्गानकृन्महृतिवृत्रतूयै । सतोक्सातातनेयेसवज्रीर्वितंतुसाय्योऽअभवत्समत्सु ॥ सयोनमहेनमि
 ज्मनाजनिमानुषाणाममर्त्येनानाम्नातिप्रसन्नै । सद्यन्नेनसशवसेतरायासवीर्येणनुतमःसमोकाः ॥ सयोनमहेनमि
 ध्वजनोभूत्समंतुनामाच्युर्धुनिच । वृणक्विपप्रुशंवैरशुष्णमिद्रःपुरांच्यौलायशयथायनूचित् ॥ उदावतात्वक्षसाप

(६।२।३) तमुष्टुहीतिपचदशर्वस्यसूक्तस्यवार्हस्पत्योभारद्वाजइद्रबिष्टुप ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ६

॥ ३९ ॥

मंडलं ६

अनु. २

॥ ३९ ॥

न्यसाचवृत्रहत्यायर्थमिदं त्रिष्टुप् । धिष्ववज्रं हस्तऽआर्दक्षिणत्राभिप्रमदपुरुदन्नमायाः+ ॥ अग्निर्नशुष्कं वनमिदं हेतीर
क्षोनिर्वक्ष्यशनिर्नभीमा । गभीरयऽऋष्वयायोरुरो जाध्वानयदु रितान् भयञ्च ॥ ५ ॥ आसहस्रं पथिभिर्निद्रायातुनि
द्युन्नतुविवाजैर्भिरवाक् । ग्राहिर्नोसहसोयस्य नूचिदेवऽईशे पुरुहृतयोतोः ॥ प्रतुविद्युन्नस्यस्थविरस्य धृष्वेर्दिवोर
शेमहिमापृथिव्याः । नास्यशत्रुर्न प्रतिमानमस्तिन प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः ॥ प्रतत्तेऽअद्याकरणं कृतं भूकुत्सं यदायु
मतिथिगवर्मसै । पुरुसहस्रानि शिशोऽअभिक्षामुत्तर्वयाणं धृषुतानिनेथ ॥ अनुत्वाहिष्टेऽअधेदेवदेवामदन्विष्वेकवित
मं कवीनां । करोयत्र वारिवो वाधिताय दिवेजनाय तन्वैगुणानः+ ॥ अनुद्यावापृथिवी तत्तऽओजोर्मत्या जिहतऽइन्द्रदे
तद्विचर्होऽअमिनः सह्योभिः । अस्मद्यवावृधेवीर्ययोः पृथुः सुकृतः कर्तुर्भिर्भूत ॥ ६ ॥ (६।२।४) महोऽइन्द्रो नवदार्चर्षिणाऽऽ
मजरं युवानं । अपह्नि न शर्वसा शशुवांसं सद्यश्चिद्यो वावृधेऽअसामि ॥ पृथुः कर्त्ता बहुलागर्भस्तीऽअस्मद्य १ क्समिमीहि
अवांसि । यथेव पश्वः पशुपादमूनाऽअस्मोऽईद्राभ्याववृत्स्वाजौ+ ॥ तंवऽइन्द्रं चितिनमस्य शकैरिह न नंवाजयंतो हुवेम ।
यथा चित्पूर्वैर्जरितारंऽआसुरनैद्याऽअनवद्याऽआरिष्टाः ॥ धृतव्रतो धनुदाः सोमवृद्धः सहिवा मस्य वसुनः पुरुक्षुः । संजग्मिरे
(६।२।४) महोऽइन्द्र इति त्रयोदशर्चस्य सूक्तस्य बार्हस्पत्यो भरद्वाज इन्द्रस्त्रिष्टुप् ।

पथ्याइ रायोऽअस्मिन्समेदनेसिंधवोयार्दमानाः ॥ ७ ॥ शर्विष्ठेनऽआभरशूरशवऽओजिष्ठमोजोऽअभिशृतऽउग्रं ।
 विश्वद्युम्नावृण्यमानुपाणामसभ्यदाहरिवोमादयधै ॥ यस्तेमदःपृतनाषाळमृष्टइंद्रतंनऽआभरशुवांसं । येन
 लोकस्यतनयस्यसातौमंसीमंहिजिगीवासस्त्वोताः ॥ आनोभ्रवृपणंशुष्ममिंद्रधनस्पृतंशुशुवांसंसुदक्षं । येनवंसामपृ
 तेनासुशत्रन्तवोतिभिरुतजामीऽरजामीन् ॥ आतेऽशुष्मोवृपभऽएतुपश्चादोत्तरादधरादापरस्तात् । आविश्वतोऽअ
 भिसमत्ववाङ्मिंद्रद्युग्रंस्वर्वज्रेह्यस्मे ॥ नवत्तंइंद्रनृत्तमाभिरुतीवंसीमहिवांसंश्रोमतेभिः । ईक्षेहिवस्वऽउभयस्वराज
 न्धारत्वंमहिस्थरंवृहंतं ॥ मरुत्वंतंवृषभंवावृध्यानमकवारिंदिव्यंशासमिंद्रं । विश्वासाहमवसेनूतनायुग्रंसहोदामिहतं
 हुवेम ॥ जनैवाञ्जिन्महिचिन्मन्यमानमेभ्योवृभ्योरंधयायेष्वस्मि । अधाहित्वापृथिव्यांशूरसातौहवामहेतनयेगोष्व
 ष्णु ॥ वयंतंऽएभिःपुरुहूतसख्यैःशत्रोःशत्रोरुत्तरऽइत्स्याम । प्रंतोवृत्राण्यभयानिशूररायामदेमबृहतात्वोताः ॥ ८ ॥
 (६।२।५) द्यौर्नयऽईद्राभिभ्रमार्यस्तस्यौरयिःशर्वसापृत्सुजनान् । तंनःसहस्रंभरमुर्वरासांदृष्टिस्तेनोसहसोवृत्रतुरं ॥
 द्विवोनतुभ्यमान्वदसुत्रासुर्वदेवेभिर्धायिविश्वं । अहिंयद्रुत्रमपोवत्रिवांसहस्रजृषिष्विष्णुनासचानः ॥ तूर्वञ्जोजी
 यान्तवसस्तवीयान्कृतव्रह्मद्रौवृद्धमहाः । राजाभवन्मधुनःसोम्यस्यविश्वसांयत्परांदुर्लभावत् ॥ शतैरपद्रन्पण्यऽ

(६।२।५) द्यौर्नयइतित्रयोदशर्चसूक्तखबाहस्योभरद्वाजइद्रबिष्टुस्सममीविरादपंक्तिः ।

इन्द्रात्रदशौणयेकवयुर्कसातौ । वधैःशुष्णस्याशुषस्यमायाःपित्वोनारिरेचीत्किंचनप्र⁺ ॥ महोद्बुहोऽअपविश्वायुधाधि
वज्रस्ययत्पतनेपादिशुष्णः । उरुषसरथसार्थयेकारिद्रुःकुत्सायसूर्यस्यसातौ⁺ ॥ ९ ॥ प्रश्येनोनर्मदिरमंशुमस्मेशिरो
दासस्यनमुचेमथायन् । प्रावन्नमीसाप्यंसतपणयायासमिषासंस्वस्ति⁺ ॥ विपियोरहिमायस्यहुबाःपुरोवज्रिच्छव
सानर्ददः । सुदामन्तद्रेक्वणोऽअप्रमव्यमजिश्चनेदान्द्राशुषेदाः ॥ सर्वेतुसुदशमायदशौणिंतूतुजिमिद्रःस्वभिष्टिसु
स्तः । आतुग्रंशश्वदिभंद्योतनायमातुर्नसीमुपसृजाऽइयद्यै ॥ सईस्पृधोवनतेऽअप्रतीतोविश्वद्वज्रवृहणंगभस्तौ ।
तिष्ठच्छरीऽअध्यस्तेवर्गैवचोयुजावहतऽइंद्रमष्व⁺ ॥ सनेमेतेवसानव्यऽइद्रुप्रपूर्वस्तवतऽएनायज्ञैः । ससयत्पुरःश
मशारदीर्धन्दासीःपुरुकुत्सायुशिक्षन् ॥ त्वंबुधऽइद्रपव्योर्भूर्वरिवस्यन्नशनेकाव्याय । परानववास्त्वमनुदेयमेहेपि
त्रेर्ददाथस्वन्नपातं ॥ त्वंधुनिर्दिद्रुनिमतीक्रणोरपःसीरानस्वर्वतीः । प्रयत्समुद्रमतिशूरपथिपारयातुर्वशंगदुस्वस्ति⁺ ॥
तवहृत्यदिद्रुविश्वमाजौसस्तौधुनीचुमुरीयाहसिष्वप् । द्वीदयदित्तुभ्यंसोमभिःसुवन्दभीतिरिध्मभृतिःपक्वथ्य१कैः⁺
॥ १० ॥ (६।२।६) इमाऽर्त्तत्वापुरुतमस्यकारोर्हव्यवीरहव्याहवन्ते । धियोरथेषामजरुनवीयोरधिर्विभूतिरीयते
वचस्या⁺ ॥ तमुस्तुषऽइंद्रयोविदानो गिर्वाहसंगीभिर्यज्ञवृद्धं । यस्यदिवमर्तिमहापृथिव्याःपुरुमायस्यरिरिचेमहि
(६।२।६) इमावत्वेतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यबाह्विस्पत्योभरद्वाजइंद्रो नवम्येकादशयोर्विश्वेदेवाविष्टुप् ।

त्वं ॥ सऽइत्तमोवयुनंतं तन्यत्सूर्येणवयुनंवच्चकार । कुदातेमतीऽअमृतस्यधामेयक्षंतोनभिंनतिस्वधावः ॥ यस्ताचका
 रसकुहस्त्रिदिंद्रः कमाजनचरतिकासुविधु । कस्तेयज्ञोमनसंशंवरायकोऽअर्केऽइद्रक्तमःसहोता ॥ इदाहितेवविपतः
 पुराजाःप्रत्नासऽआसुःपुरुक्त्सखायः । येमध्यमासऽवृतनूतनासऽवतावमस्यपुरुहूतवोधि ॥ ११ ॥ तंपच्छंतोवरा
 सःपराणिप्रत्नातऽइंद्रश्रुत्यानुयेमुः । अर्चामसिवीरब्रह्मवाहोयादेवविघ्नतात्त्वामहांतं ॥ अभित्वापाजोरक्षसोवितस्थ
 माहंजज्ञानमभितत्सुतिष्ठ । तवमूलेनयुज्यैनसख्यावज्रेणधृणोऽअपतानुदस्व ॥ सनुश्रुधींद्रनूतनस्यब्रह्मण्यतोवीर
 कारुधायः । त्वं ह्याइपिःप्रदिविपितृणांशश्वद्धभयसुहवऽएष्टौ ॥ प्रोतयेवरुणमित्रमिंद्रमरुतःकृष्णवर्सेनोऽअद्य ।
 प्रपूषणंविष्णुमग्निपुरांधिसवितारमोषधीःपर्वतोश्च ॥ इमऽवत्वापुरुशाकप्रयज्योजरितारोऽअभ्यर्चत्यैकः । श्रुधीहव
 माहुवतोहुवानोतत्वार्वोऽअन्योऽअमृतत्वदस्ति ॥ नूमऽआवाचमुपयाहिविद्वान्विभ्येभिःसूनोसहसोयजत्रैः । येऽअ
 ग्निजिह्वाऽकृतसापऽआसुर्येमनुचक्रुर्परंदसाय ॥ सनोवोधिपुरऽएतासगेपतदुर्गुपयिक्किद्विदानः । येऽअश्रमासऽवर
 वोवहिष्ठास्तेभिर्नऽइंद्राभिर्वक्षिवाजं ॥ १२ ॥ (६।२।७) यऽएकऽइद्धव्यश्चर्षणीनामिंद्रतंगीभिर्भ्यर्चऽआभिः ।
 यःपत्यतेवृषभोवृष्ण्यावान्सत्यःसत्वापुरुमायःसहस्वान् ॥ तमुनःपूर्वपितरोनवग्वाःसप्तविप्रसोऽअभिवाजयंतः ।

(६।२।७) यएकइदित्येकादशर्चस्यसूक्तस्यवाहंस्पत्योभरद्वाजइंद्रकिष्टुम् ।

नक्षद्वाभंततुरिपर्वतेष्टामद्रौघवाचंमतिभिःशर्विष्ठं ॥ तमीमहूऽइंद्रमस्यरायःपुरुवीरस्यनवतःपुरुक्षोः । योऽअस्कृधो
 युरजरःस्वर्वान्तमाभरहरिवोमादयध्यै ॥ तन्नोविवौचोयदितेपुराचिज्जरितारंऽआनशुःसुम्नमिंद्र । कस्तैभागःकिंव
 यौदुधाखिद्धःपुरुहृतपुरुवसोसुरभः⁺ ॥ तंपृच्छंतीवअहस्तरथेष्टामिंद्रवेपीवक्करीयस्यनूगीः । त्रुविग्राभंतुविकुमिरभो
 दांगानुमिषेनक्षतेतुम्नमच्छ ॥ १३ ॥ अयाहृत्यंमाययावावृधानंमनोजुवास्वतवःपर्वतेन । अच्युताचिद्वीळितास्वोजो
 रूजोविद्वृद्धाधृषताविरश्निन् ॥ तंवौधियानव्यस्याशर्विष्ठंप्रलवत्परितंसयध्यै । सनौवक्षदनिमानःसवह्येद्रोविश्वा
 न्यतिदुर्गहाणि ॥ आजनायद्रुहणेपार्थिवानिदिव्यानिदीपयोंतरिक्षा । तपवृषन्विश्वतःशोचिषातान्ब्रह्माद्विषेशोच
 यक्षामपथ्य ॥ भुवोजनस्यदिव्यस्यराजापार्थिवस्यजगतस्त्वेषसंहक् । धिष्ववज्रंदक्षिणऽइंद्रहस्तेविश्वोऽअजुयदयसे
 विमायाः⁺ ॥ आसंयतेमिंद्रणःस्वस्तिशत्रुतूर्य्ययबृहतीममृधां । ययादासान्यार्य्यणिवृत्राकरोवज्रिन्सुतुकानाहुषा
 णि ॥ सनोनिशुभिःपुरुहृतवेधोविश्ववाराभिरागहिप्रयज्यो । नयाऽअदेवोवरतेनदेवऽआभिर्याहितूयमामद्वाद्रिक्⁺
 ॥ १४ ॥ (६।२।८) सुतऽइत्स्वनिभिःशऽइंद्रसोमेस्तोमेब्रह्मणिशस्यमानऽउक्थे । यद्वार्य्युक्ताभ्यामघवन्हरिभ्यांविश्वद्र
 ज्वाहोर्गिद्रयासि ॥ यद्वारिदिविपार्य्येसुष्विमिंद्रवृत्रहत्येवसिशूरसातौ । यद्वादक्षस्यविभ्युषोऽअविभ्यदरंधयःशर्धतऽ

(६।२।८) सुतइदितिदशर्वसूक्तस्यबार्हस्पत्योभरद्वाजइंद्रबिष्टुप् ।

इन्द्ररूपं ॥ पातासुतमिन्द्रोऽस्तुसोमप्रनेनीरुग्रोजरितारमती । कर्तावीरायसुष्वयऽउलोकंदातावसुवतेकीरये
 चित् ॥ गतेथातिसवनाहारिभ्यावृत्रिर्वज्रपिःसोमदुर्दिगाः । कर्तावीरनर्यसर्ववीरंश्रोताहवंगुणतःस्तोमवाहाः ॥ अ
 सैवयंगद्वावानतद्विष्मऽइन्द्रायोनःप्रदिवोऽअपस्कः । सुतेसोमेस्तुमसिशंसदुक्थेद्रायब्रह्मवर्धनयथासत् ॥ १५ ॥
 सौवर्ग्यहिचक्रपेवर्धनानितावत्तऽइन्द्रमतिभिर्विष्मः । सुतेसोमेस्तुपाःशंतमानिरांद्वाक्रियास्वक्षणाभिनयज्ञैः ॥ समद
 ब्रह्माणिहिचक्रपेवर्धनानितावत्तऽइन्द्रमतिभिर्विष्मः । सुतेसोमेस्तुपाःशंतमानिरांद्वाक्रियास्वक्षणाभिनयज्ञैः ॥ समद
 सनोवोधिपुरोळाशंरराणःपिवातुसोमंगोऽक्रजीकमिन्द्र । एद्वर्हिर्जमानस्यसीदोरुंरुंघित्वायुतऽउलोकं ॥ तं वःसखायुःसं
 स्वाह्यनृजोपमुग्रप्रत्यायज्ञासंऽइमेऽअश्रुवतु । प्रमेहवासःपुरुहूतमसेऽआत्वेयंधीरवसऽइन्द्रयम्याः ॥ एवेदिंद्रःसुतेऽअस्ता
 यथासुतपुसोमेभिरीपृणताभोजमिन्द्र । क्वचित्तस्माऽअसतिनोभरेयनसुष्विमिन्द्रोवसेमुधाति ॥ १६ ॥ (६।३।१) वृषा
 विसोमैभरद्राजेपुक्षयदिन्मघोनः । असद्यथाजरित्रऽउतसरिरिद्रोरायोविश्ववारस्यदाता ॥ १६ ॥ (६।३।१) वृषा
 मद्रऽइन्द्रेऽलोकेऽउक्थयासचासोमेषुसुतपाऽक्रजीपी । अर्चय्योमघवानृभ्यऽउक्थैर्द्युक्षोरजागिरामक्षितोतिः ॥ अक्षोनच
 रिवीरोनयोविचेताःश्रोताहवंगुणतऽउव्यूतिः । वसुःशसनंरंकारुधायावाजीस्तुतोविदथेदातिवाजं ॥ अक्षोनच
 ऋयोःशूरवृहन्प्रतेमहारीरिचरोदस्योः । वृक्षस्यनुतेपुरुहूतवयाव्यूतयोरुहुरिद्रपूर्वीः ॥ शचीवतस्तेपुरुशाकशा

(६।३।१) वृषामदइतिदशर्वस्यसूक्त्यवाहस्यलोभरद्वाजइन्द्रबिष्टुः ।

कागवा॑मिव॒सूतयः॑ सं॒चर॑णीः । व॒त्सानां॑ न॒तंत॑यस्त॒ऽइंद्र॑दाम॒न्वतो॑ऽअ॒द्रामा॑नः सु॒दाम॑न् ॥ अ॒न्यदु॒द्यक॑र्व॒रम॒न्यदु॒श्वोसे॑
 च॒सन्मु॒हुरा॒चक्रि॑रिंद्रः । मि॒त्रो नो॑ऽअ॒न्नवरु॑णश्च॒पूषा॑र्यो व॒शस्य॑प॒र्येता॑स्ति ॥ १७ ॥ वि॒त्वदा॑पो न॒पर्व॑तस्य॒पष्ठादु॒क्थेभि॑रि
 द्रा॒नय॑तय॒ज्ञैः । तं॒त्वाभिः॑ सु॒ष्टुति॑भिर्व॒जय॑त॒ऽअजि॑न॒जग्मु॑र्गि॒र्वोहो॑ऽअ॒श्व्याः ॥ न॒यंज॑रं॒तिशु॑र॒द्रो न॒मासा॑न॒द्याव॑ऽइंद्र॑म
 व॒कृश॑र्यंति । बृ॒ह॒स्य॑चि॒द्ध॑र्ध॒ताम॑स्य॒तनूः॑ स्तो॒मैर्भिरु॑क्थैश्च॒शस्य॑मा॒ना ॥ न॒वीळ॑वे॒नम॑ते॒नस्थि॑रा॒यन॑श॒र्धेते॑द॒स्युज्ज॑ताय॒स्त
 वान् । अ॒ज्राऽइंद्र॑स्य॒गिर॑र्यश्चि॒हृष्वा॑गं॒भीरो॑चि॒द्धव॑ति॒गाध॑म॒स्मै ॥ गं॒भीरे॑ण॒नऽउ॒रुणा॑म॒न्त्रिन्प्रे॑षो॒यंधि॑सु॒तपा॑व॒न्वाजा॑
 न । स्या॑ऽऊ॒ष्टुऽऊ॒र्ध्वऽऊ॒तीऽअ॑रि॒पण्य॑न्न॒कोव्यु॑ष्टौ॒परि॑त॒कम्या॑यां ॥ स॒च॒स्वना॑य॒मव॑सेऽअ॒भीक॑ऽइ॒तोवा॑ता॒मिद्र॑पा॒हिरि॑
 षः । अ॒माचै॑न॒मरण्ये॑पा॒हिरि॑षो॒मदे॑म॒शुता॑हि॒माःस॒वीराः॑ ॥ १८ ॥ (६।३।२) या॒तऽऊ॒तिर॑व॒माया॑प॒रमा॑या॒मध्य॑मे
 द्र॒शुष्मि॑न्न॒स्ति । ताभि॑रू॒ष्टुवृ॒त्रह॑त्यै॒वीर्न॑ऽए॒भिश्च॑वा॒जैर्म॑हा॒न्नऽउ॒ग्र ॥ आ॒भिःस्पृ॑धो॒मिथु॑ती॒ररि॑षण्य॒न्नमि॑त्र॒स्यव्य॑थया॒म
 न्यु॒मिद्र॑ । आ॒भिर्वि॑श्वा॒ऽअभियु॑जो॒विपू॑ची॒रार्थ॑य॒विशो॑व॒तारी॑र्दासीः ॥ इं॒द्रजा॑म॒र्यऽउ॒तये॑जा॒मयो॑र्वा॒चीना॑सो॒वनु॑षो॒यु
 य॒ज्रे । त्वमे॑षां॒विथु॑रा॒शवा॑सि॒जहि॑वृ॒ष्ण्या॑नि॒कृणु॑ही॒परा॑चः ॥ शू॒रोवा॑शू॒रं व॑न॒ते शरी॑रै॒स्तनू॑रु॒चातरु॑षि॒यत्कृ॑ण्वैते । तो॒के
 वा॒गोप॑त॒नये॒यदु॑प्सु॒विक्र॑द॒सीऽउ॒र्वरा॑सु॒ब्रवै॑ते ॥ न॒हि॒त्वाशू॑रो॒नतू॑रो॒नधू॑ष्णु॒र्नत्वा॑यो॒धोम॑न्य॒मानो॑यु॒योध॑ । इं॒द्रन॑कि॒ष्ठाप॑

(६।३।२) यात॒ऽऊति॑रि॒तिन॑व॒र्चस्य॑सू॒क्तस्य॑बा॒ह्वस्य॑तो॒भर॑द्वा॒जं इं॒द्रश्चि॑ष्टु ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ६

॥ ४३ ॥

मंडलं ६
अनु. ३

स्याममहिनेप्रेक्षाः । प्रार्तर्दनिःक्षत्रश्रीरस्तुश्रेष्ठोघनेवृत्राणांसनयेधनानां ॥ २२ ॥ (६।३।४) किमस्यमदेकिम्वस्य
पीताविद्रुःकिमस्यसख्येचकार । रणावायेनिषदिक्वितेऽअस्यपुराविद्विदेकिमनूतनासः ॥ सदेस्यमदेसदस्यपीतावि
द्रुःसदेस्यसख्येचकार । रणावायेनिषदिसत्तेऽअस्यपुराविद्विदेसदुनूतनासः ॥ नहिनुतेमहिमनःसमस्यनर्मधवन्मघ
वज्रस्ययत्तेनिहतस्यशुष्मात्स्वनाच्चिदिद्रपरमोदुदारं ॥ वधीदिद्रोवरशिखस्यशेषोभ्यावतिनैचायमानायशिक्षन् । वृ
चीवतुःशरवेपत्यमानाःपात्राभिदानान्यथान्यायन् ॥ यस्यागाविवरुषासूयवस्यऽअंतरूषुचरतोरैरहाणा । ससंज
चायमानोददातिदूणाशेयंदक्षिणापार्थवानाम् ॥ इयोऽअग्नेरुथिनोविशतिगावधूमतोमघवामह्यंसमाद् । अभ्यावती
यैत्वस्मे । प्रजावतीःपुरुषाऽइहस्युरिद्रायपर्वोरुषसोदुहनाः ॥ २४ ॥ (६।३।५) आगावोऽअग्मन्नतम्रमक्रन्तसीदंतुगोष्ठेरण
(६।३।४) किमस्यमदइत्यष्टर्वस्यसूक्तस्यबाह्रस्पत्योभरद्वाजइद्रःअंस्यायाश्चायमानोराजात्रिष्टुप्(चायमानस्यराज्ञोदानस्तुतिः) (६।३।५)
आगावइत्यष्टर्वस्यसूक्तस्यबाह्रस्पत्योभरद्वाजोर्गौक्षिष्टुप् (द्वितीयायाइंद्रांस्त्र्योपादस्यच) द्वितीयाद्यास्त्रिजगल्योत्यानुष्टुप् ।

॥ ४३ ॥

भूयोभूयो रयिमिदं स्वर्धयन्नाभिः खिल्ये निदधाति देवयुं ॥ नतानंशं तिनदं भाति तस्करो नासां मामिन्नो व्यथिरादर्धय
 त्ति । देवोश्च याभिर्न जेतुं ददाति च ज्योतिः सच ते गोपतिः सह ॥ नताऽअर्धैरेणुककाटोऽअश्रुतेन संस्कृतत्रमुपयंति
 ताऽअभि । उरुगायमभयं तस्य ताऽअनुगावो मर्तस्य विचरंति यज्वनः ॥ गावो भगो गावऽइन्द्रो मेऽअच्छान्गावः सोमस्य
 प्रथमस्य भक्षः । इमा या गावः सजनासऽइन्द्रऽइच्छामीच्छुदामनंसा चिदिन्द्रं ॥ गृयं गोवो मे दयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सु
 प्रतीकं । भद्रं दृष्टुं कृणुथा भद्रवाचो बह्वो वयं ऽउच्यते सुभासु ॥ प्रजावतीः सयव संरिशतीः शुद्धाऽअपः सुप्रपाणे पिवंतीः ।
 मावसे नऽइदं शतमाघशसुः परं वो हेतीरुद्रस्य वृज्याः ॥ उपेदमुपपचनमासु गोपूपृच्यतां । उपेदऽऋपभस्य रेतस्युपैद्रुतव
 वीर्यैः ॥ २५ ॥ इति चतुर्थी एके पद्योऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥

विश्वेभ्यो देवेभ्यः । इन्द्रायै ५५

त्रिंशत्पादवर्गाः २५ सूक्तानि १२ ऋचः १३२ ॥ त्यागः ॥ इन्द्रायै ६४ विश्वेभ्यो देवेभ्यः । इन्द्रायै ५५

चायमानाये गोम्यद् गवैर्द्राम्या गोम्यः ५ गवैर्द्राम्या गोम्यः ५ इति चतुर्थे पद्यः ॥
 इन्द्रं पद्भ्यः पंचाभ्यैः सुहोत्रस्तु चतुर्थी शक्कर्यपूव्यां योजिष्ठः शुनहोत्रस्तु संचत्वेकदानरस्तु सत्रार्वागपान्मंद्र
 स्वैर्द्रपिवाहेळमानः प्रत्यसै चतुष्कमानुष्टुभैर्दृत्यंतं यस्यौणिहं धोरयि चश्चतुर्विंशतिः शंयुर्वीहस्पत्यौ ह्यादौ पळनु
 शुभस्ति स्रश्च विराजो मध्यमैव वासौ य आनयत्रयस्त्रिंशद्वायत्रै पुरुतममतिनि चृदधिबुधुः पादनि चृदं त्यानुष्टुपतृचं

त्येबृबुस्तक्षादैवतैत्वामिच्छिषलूनाप्रागाथस्वादुरेकत्रिशङ्कगैःपंचादौसौम्योगव्यूत्यर्धचौलिंगोक्तदैवतःप्रस्तो
 कइतित्रिष्टुर्वनुष्टुवगायत्रीद्विपदासार्जयस्यप्रस्तोकस्यदानस्तुतिःपरौतचौरथदुंडुभिदैवत्यवैद्रौत्योर्धचौयुजा
 नोबृहतीत्रिष्टुवद्विपदादिवस्थथिव्याजगती ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ हरिःओम् ॥ (६।३।६) इंद्रो नरःसख्यार्यसेपुर्महोयंतःसुमतयेचकानाः । महोहिद्रातावज्रहस्तोऽअस्तिम
 हामुर्ण्वमवसेयजध्वं ॥ आयस्मिन्हस्तेनर्यामिमिक्षुरारथैहिरण्ययेरथेष्ठाः । आरुमयोगभस्त्योःस्थुरयोराध्वन्नश्वार्
 सोवृषणोयुजानाः⁺ ॥ श्रियेतेपादादुवऽआमिमिक्षुर्वज्रीशर्वसादक्षिणावान् । वसानोऽअत्कंसुरभिदृशेकंस्व
 ण्नृतविषिरोबभूथ ॥ ससोमऽआमिश्लतमःसुतोभृद्यस्मिन्पुक्तिःपुच्यतेसंतिधानाः । इंद्रंनरःस्तुवंतौब्रह्मकाराऽबु
 क्थाशंसंतोदेववाततमाः ॥ नतेऽअंतःशर्वसोधाय्यस्यवितुर्वावधेऽरोदसीमहित्वा । आतासरिःपृणतितूतुजानोयुथे
 वाप्सुसमीर्जमानऽकुती⁺ ॥ एवेदिंद्रःसुहवऽऋग्वोऽअस्ततीऽअनूतीहिरिशिप्रःसत्वा । एवाहिजातोऽअसंमाल्योजाःपु
 रूचब्रूत्राह्नतिनिदस्यून् ॥ १ ॥ (६।३।७) भूयऽइद्धावृधेर्वर्यायैऽएकोऽअजूर्योदयतेवसूनि । प्ररिरिचेद्विवऽइंद्रःपृथि
 व्याऽअर्धमिदस्यप्रतिरोदसीऽबुभे⁺ ॥ अधामन्येबृहदसुधमस्ययानिद्राधारनकिरामिनाति । द्विवेदिवेसूयीदशतोभू

(६।३।६) इंद्रंवइतिपठृचस्यसूक्तस्यवार्हस्पत्योभरद्वाजइंद्रस्त्रिष्टुप् । (६।३।७) भूयइतिपचर्चस्यसूक्तस्यवार्हस्पत्योभरद्वाजइंद्रस्त्रिष्टुप् ।

द्विसन्धान्युर्विधायसूक्तनुर्धात् ॥ अद्याचिन्नचित्तदपोनदीनांयदाभ्योऽअरदोगातुमिंद्र । निर्वर्षताऽअद्वासदोनसेदस्त्व
 यादृहानिसुक्रतोरजांसि ॥ सत्यमित्तन्नत्वावाँऽअन्योऽअस्तींद्रदेवोनमत्योँन्यायान् । अहृन्नाहिँपरिशयानमर्णोवाँसु
 जोऽअपोऽअच्छांसमंद्र+ ॥ त्वमपोविदुरोविपूचीरिंद्रहृमरुजःपर्वतस्य । राजाभवोजगतश्चर्पणीनांसांकंसूर्यजनय
 न्धामपासँ ॥ २ ॥ (६।३।८) अभूरेकौरयिपतेरयीणामाहस्तेयोरधिथाऽइंद्रकृष्टीः । वितोकेऽअसुतनयेचसूरेवो
 चंतचर्पणयोविवाचः ॥ त्वद्भियेद्रुपायिवा निविश्वाच्युताचिक्त्यावयंतैरजांसि । द्यावाक्षामापर्वतासोवनानि विविश्वहृ
 ङ्भयतेऽअजमन्नातै ॥ त्वंकुत्सेनाभिश्चुण्णमिंद्राशुपंशुध्यकुयवंगविष्टौ । दशप्रपित्वेऽअधसूर्यस्यमुपायश्चक्रमविवेरपां
 सि ॥ त्वंशतान्यवशंवस्यपुरौजघंथाप्रतीनिदस्योः । अक्षिष्यन्नश्च्यशाचीवोदिवोदासायसुन्वतेसुतक्रेभरद्वाजाय
 गुणतेवसूनि ॥ ससेत्यसत्वनमहृतेरणायुरथमातिष्ठतुविनृम्णभीमं । याहिप्रपश्चिन्नवसोपमद्रिक्प्रचंश्रुतश्चावयचर्पणि
 भ्यः ॥ ३ ॥ (६।३।९) अपूर्व्यापुरुतमान्यस्मैहेवीरायंतवसेतुरायं । विरश्चिनैवज्जिणेशंतमानिवचाँस्यासास्थ
 विरायतक्षं ॥ समातरासूर्येणाकवीनामर्वासयद्रुजदद्रिगुणानः । स्वाधीभिर्ऋक्भिरवावशानऽउदुस्त्रियाणामसृजश्चि

(६।३।८) अभूरेकइतिपचर्चसूक्तस्यभारद्वाजःसुहोत्रइद्रक्षिपुप्चतुर्थाशकरी (सुहोत्र.शुनहोत्रोनरोगंक्वजिन्वाइत्येतेकपयोबृह
 स्पतेःपौत्राजतदौण्यतेर्भरतस्यपौत्राइतिविपयेइतिहासःश्रूयते) । (६।३।९) अपूर्व्येतिपचर्चसूक्तस्यभारद्वाजःसुहोत्रइंद्रक्षिपुप् ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ७

॥४५॥

मंडलं ६

अनु. ३

॥४५॥

दानं ॥ सवाहं भिर्क्रकभिर्गोषु शश्वन्मि तल्लुभिः पुरुकृत्वा जिगाय । पुरः पुरोहासविभिः सखीयन् हृह्णारुरोजकुविभिः
कुविः सन् ॥ सनीव्याभिर्जिरितारमच्छामहोवाजैर्भिर्महर्द्धिश्च शुभैः । पुरुवीरभिर्वृषभक्षितीनामार्गिर्वणः सुविताय
प्रयाहि ॥ ससर्गेण शवसातक्तोऽथ तैरपऽइंद्रो दक्षिणतस्तुराषाद् । इत्थासृजानाऽअनपावुर्दध्यदिवेदे विविविषुरप्रम
व्यं ॥ ४ ॥ (६।३।१०) यऽओजिष्ठऽइंद्रतंसुनो दामदो वृषस्वभिष्टिर्दास्वान् । सौवर्ध्ययो वनवत्स्वश्वो वृत्रास
मत्सुसासहदुमित्रान् ॥ त्वाहीं इद्रावसे विवाचो हवते चर्षणयः शूरसातौ । त्वं विप्रैर्भिविपणौ रंशायस्वोतऽइत्सनिता
वाजमर्षी ॥ त्वंतोऽइंद्रो भयाऽअमित्रान्दासा वृत्राण्यार्थं च शूर । वधीर्वने वसुधेते भिरत्कैरापुत्सुदंषि नानृतम ॥
सत्वं नऽइंद्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधेभूः । स्वर्पताय द्धयामसित्वायुर्धत्तेनेमधि तापुत्सुशूर ॥ नूनं नऽइ
द्रापरार्थं च स्याभवा मृच्छीकऽरुतनोऽअभिष्टौ । इत्थागणंतो महिनस्य शर्भेन्द्रविष्यामपार्थे गोषतमाः ॥ ५ ॥ (६।३।११)
संचत्वे जग्मुर्गिरंऽइंद्रपर्वीर्विचत्वर्द्यति विभ्वो मनीषाः । पुराननं च सुतयऽऽर्षाणां पस्पधऽइंद्रेऽअध्युक्थार्का ॥ पुरु
हूतोयः पुरुगर्तऽऽक्रभ्वोऽएकः पुरुप्रशस्तोऽअस्ति यज्ञैः । रथोनमहे शर्वसे युजानो इस्माभिरिद्रोऽअनुमाद्यो भूत् । नयं हि
संति धीतयो न वाणी र्द्रं न क्षंती दुर्भिवर्धयतीः । यद्वेस्तोतारः शतं यत्सहस्रं गतिगिर्वणसंशतदस्म ॥ अस्माऽएतहि
(६।३।१०) यओजिष्ठ इति पंचर्वस्य सूक्तस्य भारद्वाजः शुनहोत्र इन्द्रस्त्रिष्टुप् । (६।३।११) सचत्व इति पंचर्वस्य सूक्तस्य भारद्वाजः शुनहोत्र-

व्युत्पन्नं मासाभिर्मिक्षऽइंद्रेन्ययामिसोमः । जन्मनधन्वन्नभिसंयदार्पः सत्रावावृद्धवर्धनानियज्ञैः ॥ अस्मांऽपुतन्मह्यो
गमस्मांऽइंद्रायस्तोत्रंमतिभिरवाचि । असद्यथामहतिवृत्रतूर्यऽइंद्रोविश्वायुरवितावृधश्च ॥ ६ ॥ (६।३।१२) क
दाभुवन्नथक्षयाणिब्रह्मकदास्तोत्रेसहस्रपोष्यदाः । कदास्तोमवासयोस्यरायाकदाधियःकरसिवाजर्ह्याः ॥ काहस्वि
त्तौदिद्रयन्नभिर्नन्वीरैर्वीरान्नीळ्यासेजयाजीन् । त्रिधातुगाऽअधिययासिगोष्विद्रद्युन्नस्वर्ध्वेह्यासे ॥ काहस्वित्त
दिद्रयज्जिरेत्रेविश्वप्सुब्रह्मकृणवःशविष्ठ । कदाधियोननियुतौयुवासेकदागोमघाहर्वनानिगच्छाः ॥ सगोमघाजर्हि
ऽअश्वश्चंद्रावाजश्रवसोऽअधिधेहिष्ठः । मानिरंशुकुदुधस्यघ्नोरागिरसान्ब्रह्मणाविप्रजिन्व ॥ ७ ॥ (६।३।१३) सत्राम
आचिच्छूरोयच्छक्रविदुरोगृणीपे । सत्रावाजानामभवोविभक्तयद्देवेपुधारयथाऽअसुर्थः ॥ अनुप्रयेजे
दासस्तवविश्वजन्याः सत्रारायोधयेपार्थिवासः । स्यमगृभेदुधयेवैतेचक्रतुवृजंत्यापिचृहृत्ये ॥ तंसुधीचोर्हृतयोवृण्यनि
जनऽओजोऽअस्यसत्रादधिरेऽअनुवीर्य । स्यमगृभेदुधयेवैतेचक्रतुवृजंत्यापिचृहृत्ये ॥ सत्रायस्वामुपसृजागृणानः
पौस्यानिनियुतःसश्रुर्द्रि । समुद्रंनसिंधवऽउक्थशुष्माऽउरुव्यचंसंगिरऽआविंशति ॥ सत्रामदासइतिपंचर्वसूक्तस्यभार

इन्द्रखिण्डुम् । (दा३)
दार्जो नरं इन्द्रखिण्डुम् ।

दाजोनरं द्रष्टुम् ।

पुरुश्चंद्रस्यत्वमिद्वस्वः । पतिर्वभूथासंमोजनानामेकोविश्वस्यभुवनस्यराजा ॥ सतुश्चिश्च्रुत्यायोदुवोयुधौनभूमाभि
 रायौऽअर्यः । असोयथानःशर्वसाचकानोयुगेयुगेवयसाचैकितानः ॥ ८ ॥ (६।३।१४) अर्वाग्रथंविश्ववारंतऽउग्रं
 द्रुक्तासोहरयोवहंतु । कीरिश्चिद्धित्वाहवतेस्वर्वाध्वीमहिंसधमादस्तेऽअद्य⁺ ॥ प्रोद्रोणेऽहरयःकर्मागमन्पुनानासऽ
 ऋज्यंतोऽअभूवन् । इन्द्रोऽनोऽअस्यपर्वःपपीयाद्युक्षोमदस्यसोम्यस्यराजा ॥ आसस्त्राणासःशवसानमच्छेद्रसुचकैरथ्या
 सोऽअर्वाः । अभिश्रवऽऋज्यंतोवहेयुर्नचिह्नवायोरमृतंविदस्येत् ॥ वारिष्ठोऽअस्यदक्षिणामियतीन्द्रोमघोनालुविकुर्मि
 तमः । यथावज्रिवःपरियास्यंहोमघाचधृष्णोदयसेविसरीन्⁺ ॥ इन्द्रोवार्जस्यस्यविरस्यदातैर्दोगीभिर्वधतांबृद्धमहाः ।
 इन्द्रोवृत्रंहनिष्ठोऽअस्तुसत्वातासरिःपृणतितूतुजानः ॥ ९ ॥ (६।३।१५) अपादितऽउदुनश्चित्रतमोमहीभर्ष्युम
 तीभिर्द्रहति । पन्यसीधीतिदैव्यस्ययामन्जनस्यरातिर्वनतेसुदानुः ॥ दुराच्चिदावसतोऽअस्यकर्णोघोषादिद्रस्यतन्यति
 ब्रुवाणः । एयमेनंदेवहूतिर्ववृत्यान्मद्बृगिन्द्रमियमच्यमाना ॥ तंवाधियापरमयापुराजामजरमिन्द्रमभ्यनूष्यकैः ।
 ब्रह्माचगिरोदधिरेसमस्मिन्महोश्चस्तोमोऽअधिवर्धुदिद्रे ॥ वर्धाचंयुज्ञऽउतसोमऽइन्द्रवर्धाद्ब्रह्मागिरिऽउक्कथाचमन्म ।
 वर्धाहिंनमपसोयामन्नक्तोर्वर्धन्मासाःशरदोद्यावऽइंद्रं ॥ एवार्जज्ञानंसहसेऽअसांमिवावृधानंरधसेचश्रुतार्य । महा
 (६।३।१४) अर्वाग्रथमितिपंचर्वस्यसूक्तस्यवाहस्पत्योभरद्वाजइंद्रस्त्रिष्टुप् । (६।३।१५) अपादितइतिपंचर्वस्यसूक्तस्यवाहस्पत्योभरद्वाज

ऋक्सं.

अ. ४४. ७

॥ ४७ ॥

जोषाः पाहिगिर्वणोमरुद्धिः ॥ १२ ॥ (६।३।१८) अहेळमानऽउपयाहियंस्तुभ्यंपवंतऽइदवःसुतारसः । गावोन
वज्रिन्त्स्वमोकोऽअच्छेद्रागहिप्रथमोयज्ञियानां ॥ यातेकाकुत्सुकृतायावारिप्राययाशश्वत्पिबसिमध्वऽऊर्भि । तया
वहरिवःस्थातरुग्रयस्येधिषेप्रदिविस्तेऽअन्नं ॥ सुतःसोमोऽअसुतादिद्रवस्यानयंश्रेयान्चिकितुषेरणाय । एतंपि
ऽउपयाहियंतेनविश्वास्तविषीरापृणस्व ॥ हयामसित्वेद्रयाह्यर्वाङरतेसोमस्तन्वेभवाति । शतक्रतोमादयस्वासुते
प्राप्सोऽअवपृत्तनासुप्रविधुः ॥ १३ ॥ (६।३।१९) प्रत्यस्मैपिषोषतेविश्वानिविदुषेभर । अरंगमायजग्मये
पश्चादध्वनेनरे ॥ एमेनंमृत्येतनसोमेभिःसोमपातमं । अमन्नेभिर्ऋजीपिणमिद्रसुतेभिरिदुभिः ॥ यदीसुतेभिरिदु
भिःसोमेभिःप्रतिभूषथ ॥ वेदाविश्वस्यमेधोरोधपत्तंमिदेषते ॥ अस्माऽअस्माऽइदंघसोध्वयोप्रभरासुतं । कुवित्सम
स्यजेन्यस्यशार्धतोमिशस्तोरवस्परत् ॥ १४ ॥ (६।३।२०) यस्यत्यच्छंवरंमदेदिवोदासायर्धयः । अयंससोमऽइद्र
तेसुतःपिब ॥ यस्यतीव्रसुतंमदंमध्यमंतंचरक्षसे । अयंस ॥ यस्यगाऽअंतरश्मनोमदेदृह्वाऽअवास्तुजः । अयंस ॥
(६।३।१८) अहेळमानहतिपंचर्यस्यसूक्तस्यवार्हस्पत्योभरद्वाजइद्रबिष्टुः । (६।३।१९) प्रत्यस्माइतिचतुर्कचस्यसूक्तस्यवार्ह-
स्पत्योभरद्वाजइद्रोमुबंलाबृहती । (६।३।२०) यस्यदितिचतुर्कचस्यसूक्तस्यवार्हस्पत्योभरद्वाजइद्रउष्णिक् ।

मंडलं ६

अनु. ३

॥ ४७ ॥

यस्यमंदानोऽंधसोमाघोनंदधिपेशवः । अयंस० ॥ १५ ॥ (६।४।१) योरयिवोरयितमोयोद्युमैद्युम्वत्तमः ।
 यःशुभस्तुविशमतेरायोदामार्मतीनां । सोमःसुतः० ॥ येनवृद्धेनशर्वसा
 सोमःसुतःसइंद्रतेस्तिस्वधापतेमदः ॥ तमिष्वस्यरोदसीदेवीशुष्मसपर्यतः ॥ १६ ॥ तद्वडुक्थस्यबर्हणेद्रायोपस्तरणी
 तरोनस्वाभिरूतिभिः । सोमःसुतः० ॥ तमिष्वस्यरोदसीदेवीशुष्मसपर्यतः ॥ १६ ॥ तद्वडुक्थस्यबर्हणेद्रायोपस्तरणी
 यवर्धयंतीक्षिः पतितुरस्यराधसः । अविद्वदक्षमित्रो नवीयान्पपानोदेवेभ्योवस्योऽअचैत् । ससवान्तसौ
 पणि । विपोनयस्योतयोविचद्रोहंतिस्क्षितः ॥ अविद्वदक्षमित्रो नवीयान्पपानोदेवेभ्योवस्योऽअचैत् । ससवान्तसौ
 लाभिधौतरीभिरुष्यापायुरभवत्सखिभ्यः ॥ ऋतस्यपृथिवेधाऽअपायिअियेमनांसिदेवासोऽअक्रन् । दधानोनाम
 महेवचौभिर्वपुर्दृशयेवन्योव्यावः ॥ द्युमत्तमंदक्षेष्टस्मेसेधाजनानंपर्वीररातीः । वर्षीयोवयःकृणुहिशचीभिर्धन
 स्यसातावृसोऽअविहि ॥ इंद्रतुभ्यमिन्मघवन्नभूमवयंदात्रेहरिवोमाविनेनः । नर्किरापिदहशेमर्त्यत्राकिमंगरध्रचोद
 नंत्वाहुः ॥ १७ ॥ माजस्वनेवृषभनोररीधामातेरेवतःसख्येरिपम । पूर्वीष्टइंद्रनिष्पधोजनेषुजह्यसुष्वीन्प्रबृहापृ
 णतः ॥ उदृन्नाणीवस्तनयन्त्रियुर्तद्वोराधांस्यभ्यानिगव्या । त्वमसिप्रदिवःकारुधायामात्वादामानुऽआदभन्मघो

(६।४।१) योरयिवदतिचतुर्वैशत्यृचस्यसूक्त्यत्राहस्पत्यःशयुरिंद्रबिष्टुवाद्याःषडनुष्टुभःसप्तम्यादितिस्त्रोविरादंपक्तयः । (तिसृष्वष्टम्ये
 वविराद्रसप्तमीनवन्यौतुत्रिष्टुभाविति केचित्) ।

नः ॥ अध्वर्योवीरप्रमहेसुतानमिन्द्रायभरसह्यस्रराजा । यःपर्व्याभिरुतनूतनाभिर्गोभिर्वीवृधेगृणतामृषीणां ॥ अ-
 स्वमदैपरुवपीसिविद्वानिन्द्रोवृत्राण्यप्रतीजघान । तमप्रहोषिमधुमंतमस्मैसोमवीरार्यशिप्रिणोपिवध्वै ॥ पातासुतामि-
 द्रौऽअस्तुसोमंहतावृत्रं वज्रैणमंदसानः । गतायंरंपरावर्तश्चिदच्छावसुधीनामविताकारुधायाः ॥ १८ ॥ इदं त्यत्पा-
 त्रमिद्रुपानमिन्द्रस्यप्रियममृतमपायि । मत्सद्यथासौमनसायदेवंव्य१स्मद्वैषोययवब्धंहः ॥ एनामैदानोजहिशूरशत्रू-
 न्जामिमजासिमधवल्लमित्रान् । अभिषेणोऽअभ्याइदेदिशानान्पराचऽइद्रुप्रमृणजहीच ॥ आसुष्माणोमधवन्निद्र-
 पृत्स्व१स्मभ्यंमहिर्वारिवःसुगंकः । अपातोक्त्यतनयस्यजेपऽइंद्रसूरिन्कृणहिस्मानोऽअर्ध+ ॥ आत्वाहरयोवृषणोयुजा-
 नावृषरथासोवृषरश्मयोत्याः । अस्मत्रांचोवृषणोवज्राहोवृष्णमदायसुयुजोवहंतु ॥ आतैवृषन्वृषणोद्रोणमस्थुष्टुत-
 मुषोनोर्मयोमदतः । इंद्रप्रतुभ्यंवृषभिःसुतानांवृष्णेभरंतिवृषभाग्रसोमं ॥ १९ ॥ वृषासिदिवोवृषभःपृथिव्यावृषा-
 सिंधूनांवृषभस्तिर्यानां । वृष्णैतऽइंद्रुवृषभपीपायस्वादूरसोमधूपयोवराय ॥ अयंदेवःसहसाजायमानऽइंद्रेणयुजाप-
 णिमस्तभायत् । अयंस्वस्यपितुरायुधानींदुरमुष्णादशिवस्यमायाः+ ॥ अयमकृणोदुपसःसुपर्बीरयंसूयऽअदधाज्यो-
 तिरंतः । अयंत्रिधातुदिविरोचनेषुत्रितेर्बुविंददुमृतंनिर्गृहं ॥ अयंघावापृथिवीविष्कभायदयंरथमयुनक्ससरहिम ।
 अयंगोषुशच्यापकमंतःसोमोदाधारदशयंत्रमुत्सं ॥ २० ॥ (परिशिष्टं ॥ चक्षुश्चश्रोत्रं च मनश्च वाक् क प्राणा पानौ दे-

हऽइदंशरीरं ॥ द्वौप्रत्यंचावनुलोमौविसर्गावेतत्त्वमन्येदशयंत्रमुत्सं ॥ नखश्चपृष्ठश्चकरोचवाहजंघेचोरुऽपुदरंशिरश्च ॥
रोमाणिमांसरुधिरंस्थिमज्जमेतच्छरीरंजलबुद्बुदोपमं ॥ भुवौललाटेचतथाचक्रुणोह्रनूकपोलौछुबुकस्तथाच । ओष्ठौ
चदंताश्चतथैवजिह्वामेतच्छरीरंमुखरत्नकोशं ॥ (६।४।२) यऽआनयत्परावतःसुनीतीतुर्वशयदु । इन्द्रःसनोयुवा
सखा ॥ अविप्रेचिद्वयोदधदनाशुनाचिदधैता । इन्द्रोजेतहितंधनं ॥ महीरस्यप्रणीतयःपूर्वोरुतप्रशस्तयः । नास्यक्षी
यंतऽङ्कतयः । सखायोब्रह्मवाहसेचैतप्रवगायत । सहिनःप्रमतिर्मही ॥ त्वमेकस्यवृत्रहन्नविताद्वयोरसि । एतेह
शेयथावयं ॥ २१ ॥ नयसीद्वतिद्विर्पःकृणोर्बुधुक्थशंसिनः । दुभिःसवीरऽउच्यसे ॥ ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसंगीभिःस
खायमग्निमयं । गांनदोहसेहुवे ॥ यस्यविन्वानिहस्तयोरुचुर्वसूनिनिद्रिता । वीरस्यपुतनापहः ॥ विदुह्वानिचिदद्वि
ब्रोजनानांशचीपते । बृहमायाऽअनानत ॥ तमुत्वासत्यसोमपाऽइदंवाजानापते । अहमहिश्वस्यवः ॥ २२ ॥
तमुत्वायःपुरासिंथयोर्वाननंहितेधने । हव्यःसःशुधीहवं ॥ धीभिरर्वीद्धिरर्वतोवाजौऽइन्द्रश्चाय्यान् । त्वयाजेष्महि
तंधनं ॥ अभूरुवीरगिर्वणोमहोऽइन्द्रधनेहिते । भैरवितंतसार्यः ॥ यातऽङ्कतिरमित्रहन्मुक्ष्वस्तमासति । तया
नोहिनुह्वीरथं ॥ सरथेनरथीतमोस्माकैनाभियुग्वना । जेयिजिष्णोहितंधनं ॥ २३ ॥ यऽएकऽइत्तमुद्रहिक्वृष्टीनांविच

(६।४।२) यआनयदिति त्रयविंशद्वचस्यसूक्तस्य बार्हस्पत्यः शंयुरिंद्रोत्यष्टचस्यबुद्धस्तथागत्री एकोनत्रिंशयतिनिचदृकविंशीपादनिच

र्षणिः । पतिर्जज्ञेवृषक्रतुः ॥ योगृणतामिदासिथापिरूतीशिवःसखा । सत्वंनऽइन्द्रमृळय ॥ धिष्ववज्रंगभस्त्योर
 क्षोहत्यायवज्रिवः । सासहीष्ठाऽअभिस्पृधः ॥ प्रत्नरंयीणांयुजंसखायंकीरिचोदनं । ब्रह्मवाहस्तमंहुवे ॥ सहिविश्वा
 निपाथिर्वोऽएकोवसूनिपत्यते । गिर्वणस्तमोऽअग्निगुः ॥ २४ ॥ सनोऽनियुद्धिरापृणकामंवाजेभिरुश्विभिः । गोम
 ङ्गिर्गोपतेधृषत् ॥ तद्वोगायसुतेसचोपुरुहुतायसत्वंने । शंयद्वेनशाकिनै ॥ नद्यावसुर्नियंमतेदुनंवाजस्यगोमंतः ।
 यत्सीसुपश्रवद्गिरः ॥ कुवित्संस्यप्रहिग्रजंगोमंतंदस्यहागमत् । शचीभिरुपनोवरत् ॥ इमाऽउत्वाशतक्रतोभिप्रणोनु
 बुर्गिरः । इन्द्रवत्संनमातरः ॥ २५ ॥ दुणाशंसख्यंतवगौरसिवीरगव्यते । अश्वोऽअश्वायतेभव ॥ समंदस्वाह्यंघ
 सोराधसेतन्वामहे । नस्तोतारंनिदेकरः ॥ इमाऽउत्वासुतेसुतेनक्षतेर्गिर्वणोगिरः । वृत्संगवोनधेनवः ॥ पुरुतमंपुरु
 णांस्तोतृणांविवाचि । वाजेभिवाजयतां ॥ अस्माकमिन्द्रभूतुतेस्तोमोवाहिष्ठोऽअंतमः । अस्मान्नायेमहेहिनु । अधि
 वृबुःपर्णीनांवापिष्ठेमुर्धन्नस्थात् । उरुःकक्षोनगांग्यः ॥ यस्यवायोर्विवद्रवद्भद्राऽरतिःसहस्रिणी । सद्योदुनानायमंहेते ॥
 तत्सुनोविश्वेऽअर्यऽआसदागुणंतिकारवः । वृबुंसंहस्रदातमंसूरिंसहस्रसातमं ॥ २६ ॥ (६।४।३) त्वामिद्धिहवा
 महेसातावाजस्यकारवः । त्वांवृत्रेव्विद्रुसत्पतिंनरस्वांकाष्ठास्वर्षतः ॥ सत्वंनश्चित्रवज्रहस्तधृष्णयामुहस्तवानोऽअ
 दंत्यानुष्टुप् । (६।४।३) त्वामिद्धीतिचतुर्दशर्चस्यसूक्तस्यबार्हस्पत्यःअथुरिन्द्रःअथुजोबृहत्यःअथुजःसतोबृहत्यः ।

द्विवः । गामश्चैरथ्यमिन्द्रमंकिरसुवाधाजुनजिगुषे ॥ यन्मन्त्राणां विचये निरिन्द्रतः प्रेत्य ॥ मन्त्रमुक्तुर्बुध्न्यान्त्य
 तेभवांसमत्सुनोद्युधे ॥ वार्धमेजानानृभेनेमन्युनागुमीतऽऽकृन्नीम । अस्माकंचोअग्निनामगुधनेतनृव्यप्युद्युधे ॥
 इन्द्रज्येष्ठनऽआभरुऽओजिष्ठपपुरिश्रवः । यन्मेमन्निववच्चरन्नेदेमीऽओभेर्गुजिगुषाः ॥ २७ ॥ त्वामग्रमन्नेनये
 णीमहुराजन्देवेपुहमेहे । विश्वासुनोविधुरापिन्दुनावमोमित्रान्त्सपतान्कृधि ॥ यद्विन्दुनाऽग्रीवाऽओजोनृगणचद्विष्टि
 पु । यद्वापंचक्षितीनांयुस्त्रमाभरमुत्राविश्यानिपोस्था ॥ यद्विन्दुनामगाननृयरागकृत्तृण्य ॥ अस्मभ्युन
 द्विरीहंसनपाह्यमित्रान्त्सुतुर्घणे ॥ इन्द्रंश्चिवालेगुगणंश्चिवन्धंभ्यास्तिमत् । छद्विन्दुमघर्त्यद्वमार्चयावयोत्तिगुमे
 भ्यः ॥ येमेव्यतामनमागदुमादुभुरभिप्रघ्नोतिधृणुया । अधस्मानोगघवद्विद्वगिणस्तनूपाऽअंतमोभव ॥ २८ ॥
 अधस्मानोद्युधेभवेद्रनायमवायुधि । यद्वन्तरिदोपतयतिपुणिनोद्विप्रन्निगममंगानः ॥ यद्वगर्गमन्नुन्योद्वितन्युतेमि
 याशर्मीपितृणां । अधस्मायच्छतन्येदुतनेचछद्विन्दुचित्तयावयुद्वेपः ॥ यद्विन्दुमगुऽअर्धतश्चोदयामिमाधुने । अस्मभ्युन
 ऽअध्वनिवृजिनेपुयिद्वेयोऽइवश्रवस्यतः ॥ मिधुऽरिचप्रवणऽओगुयावुतोयद्विल्लोभमनुष्यणि । आयेवयोनेवद्वेन
 त्वामभिपिगृहीतावाहोर्गोनि ॥ २९ ॥ (६।४।४) स्वादुःकिलायंमधुमाऽइतायंतीत्रःकिलायंमर्माऽइतायं ।

(६।४।४) स्वादुःकिलायमित्येकविंशद्वचस्यमूक्तम्यभारत्राजोर्गऽउद्रःआगानापचानामोऽगऽगुनीत्यन्वादेयभूमीद्रा.प्रग्नो कइत्यादि

उतोन्व॑स्यपि॒वांसि॑मिन्द्र॒नकश्च॑नसह॒तऽआहु॑वेषु ॥ अ॒यंस्वा॒दुरि॒हम॑दि॒ष्टऽआ॒सय॑स्य॒द्रोवृ॒त्रह॑त्य॒मम॑द । पुरु॒णिय॑श्च॒यौ
 ला॒शं॒र्वर॑स्य॒विन॑व॒तिन॑व॒चदे॒ह्योऽह॑न् ॥ अ॒यंमै॒पीत॑ऽउ॒दिय॑ति॒वाच॑म॒यम॑नी॒पामु॑श॒तीम॑जीगः । अ॒यंष॑ळु॒र्वरि॑मिमी
 त॒धीरो॑न॒याभ्यो॑भु॒र्वन॑क॒च्चनारे॑ ॥ अ॒यंस॑यो॒वरि॑माण॑पृ॒थिव्या॑व॒र्भाण॑दि॒वोऽअ॒कृ॒णोद॑यंसः । अ॒यंपी॒यूय॑त्ति॒सुप्र॑व
 त्सु॒सोमो॑दा॒धरो॑र्वि॒तर्क्षं॑ ॥ अ॒यंवि॑द॒च्चि॒त्रह॑शी॒कम॑र्णैःशु॒क्रस॑द्धाना॒मुष॑साम॒नीके॑ । अ॒यंम॒हान्म॑हु॒तास्कं॑भ॒नेनो॑द्या
 म॒स्तभ्रा॑द्वृ॒षभो॑म॒रुत्वा॑न् ॥ ३० ॥ धृ॒ष॒ति॒प॒व॒क॒ल॒शे॒सोम॑मि॒न्द्रवृ॒त्रहा॑शूर॒समे॑व॒सूनां॑ । मा॒य्यदि॑ने॒सर्व॑न्ऽआ॒वृ॒ष
 स्वर॑यि॒स्थानो॑र॒यिम॑स्मा॒सुधे॑हि ॥ इ॒न्द्र॒प्र॒णः॒पुरऽए॒तेर्व॑प॒श्यप्र॑नो॒नय॑प्र॒तरं॑व॒स्योऽअ॒च्छ । भ॒वा॒सु॒पा॒रोऽअ॑ति॒पा॒र॒यो॒नो
 भ॒वा॒सु॒नीति॑रु॒तवा॑म॒नीतिः॑ ॥ उ॒रु॒नो॒लो॒कम॑नु॒नेषि॑वि॒द्वान्त्स्व॑र्व॒ज्योति॑र॒भयं॑स्व॒स्ति । ऋ॒ष्या॒तऽइ॒न्द्र॒स्थवि॑र॒स्यचा॑हूऽ
 उ॒प॒स्थे॒याम॑श॒रणा॑वृ॒हता॑ ॥ वरि॑ष्ठेन॒ऽइ॒न्द्र॒वंधुरे॑धा॒वाहि॑ष्ठयोःश॒तावृ॒क्षभ्यो॑रा । इ॒ष॒मा॒व॒क्षी॒पां॒वर्षि॑ष्टा॒मान॑स्त॒ारीन्म॑घ॒व
 त्रा॒योऽअ॒र्यः ॥ इ॒न्द्र॒म॒ळम॑ह्य॒जीवा॑तुमि॒च्छचो॑द॒यधि॑यम॒यसो॑न॒धारी॑ । य॒त्किं॑चा॒हंत्वा॑शु॒रिदं॑वदा॒मि॒तज्जु॑प॒स्व॒कृ॒द्धिमा॑
 दे॒वव॑तं ॥ ३१ ॥ त्रा॒ता॒र॒मि॒न्द्रम॑वि॒तार॑मि॒न्द्र॒हव॑ह॒वेसु॑ह॒वंशूर॑मि॒न्द्र । ह्य॒या॒मि॒श॒क्रं॒पुरु॑हू॒तमि॑न्द्र॒वस्ति॑नो॒म॒घवा॑धा॒त्वि॒द्रः ॥

चतसृणाप्रस्तोकोवनस्पतइत्यादितिसृणांरथउपस्थासयेतिद्वयोर्दुदुभिःआमूरजइत्यस्यादुंदुभीर्दौत्रिष्टुप्, एकोनविंशीबृहतीत्रयोविंश्यनुष्टुप्
 चतुर्विंशीगायत्रीपंचविंशीद्विपदासप्तविंशीजगती ।

इन्द्रः सुत्रामास्ववौऽअवौभिः सुमृच्छीकोभयतुविश्ववेदाः । वार्धतांद्योऽअभयं कृणोतुमृवीर्यस्यपतयः स्याम ॥ तत्सव
 यंसुमतौ यज्ञियस्यार्पभद्रं तोमनमेस्याम । समन्नामास्ववौऽइंद्रोऽअस्मेऽआराजिह्वैः मनतं युजोतु ॥ अयत्वेऽउद्रम
 वतो नोभिर्गिरोवृक्षाणि नियुतो धवते । उरुनराध्रः सर्वनापुत्र्ययुषोमान् जिन्वयुमेममिंदूर ॥ कऽईत्सवृक्तः पूणात्को
 र्यजाते यदुग्रमिन्मयत्रा विश्वहावेत् । पादविचमृत्तं नून्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं गनीभिः ॥ ३२ ॥ अणुमेवीरऽउग्रमु
 ग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः । एधमानं द्विकुभयस्वराजोऽनोक्नुयते विशुऽइंद्रोऽमनन्यान् ॥ पराप्रवैषां मुख्या
 वृणक्ति विततुराणोऽअपरे भिरेति । अनानुभूती रत्रधून्या नः पथीरिद्रः शूरदस्तर्तरीति ॥ रूपं रूपं प्रति न्योनभूवतदस्य
 रूपं प्रति चक्षणाय । इंद्रोऽमायाभिः पुरुषं पड्यते युक्ताय स्वहरेयः श्रुतादग्रं ॥ युजानो ह रिता रथे भृगित्वष्टे हरजति ।
 स्पते प्रार्चि क्त्वा गविष्टा वितथामते ज रित्रऽइंद्रपथा ॥ ३३ ॥ द्विवेदे वेमुदशीरन्यमर्थं कृणाऽअसेधुदपमज्ञो नो जाः ।
 अहं द्रासावृषु भोर्वस्त्रयंतो दर्शने जेवचिन्तं शवं च ॥ प्रस्लोकऽउग्रुरार्धमस्तऽइंद्रदशकोशयूरीदं शवाजिनोदात् । द्विवेदा
 सादति शिखस्वराधः शान्वरं वसुप्रत्यग्रभीष्म ॥ दशाश्वान्दश कोशान्दश वस्त्रार्धभोजना । दशो हिरण्यपिंडान्दिवो
 दासादसानिप ॥ दशरथान्प्राप्यमतः शतंगाऽअर्थवभ्यः । अभ्युयः पायवेदात् ॥ महिराथो विभ्यजन्त्यं दधानान्भर

श्रवसं.

अ.४अ.८

॥५१॥

द्राजान्त्सार्जुयोऽअभ्ययष्ट ॥ ३४ ॥ वनस्पतेर्वीङ्गोहिभयाऽअस्मत्सखाप्रतरणःसुवीरः । गोभिःसंनद्धोऽअसिर्वी
कथस्वास्थातातेजयतुजेत्वानि ॥ दिवस्पृथिव्याःपर्योजऽउद्धृतंवनस्पतिभ्यःपर्याभृतंसहः । अपामोज्मानंपरिगो
णोदेवरथप्रतिहव्यागृभाय ॥ इन्द्रस्यवज्रोमरुतामनीकमित्रस्यगर्भोवरुणस्यनाभिः । सेमानोहव्यदतिंजुया
वीथोऽअपसेधशत्रून् ॥ आक्रंदयबलमोजोनऽआधानिहनिहिदुरिताबाधमानः । सडुडुभेसजूरिद्रेणदेवैदूराह
द्रस्यमष्टिरसिर्वीळयस्व ॥ आमूरजप्रत्यावर्त्येमाःकेतुमहूदुभिर्वावदीति । समश्वपर्णाश्चरतिनोनरोस्माकमिन्द्ररथि
नोजयतु ॥ ३५ ॥ इतिचतुर्थाष्टकेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

एकत्रिंशाध्यायेवर्गाः ३५ सूक्तानि १९ ऋचः १७६ ॥ त्यागः ॥ इन्द्रयेदं. १२८ बृबवेतक्षणह. ३ इन्द्राये. १४ सोमाये. ५
इन्द्राये. १४ देवभूमिबृहस्पतीदिभ्य. इन्द्राये. प्रस्तोकाये. ४ रथाये. ३ दुडुभ्या. २ दुडुभ्या. ३ इन्द्राये. १४ सोमाये. ५

यज्ञायज्ञाद्व्याधिकांशंयुस्तृणपाणिकंपृथुश्रिसूक्तंप्रगाथौबृहतीमहासतोबृहतीमहाबाहवर्तवर्तौप्रगाथावित्याग्ने
र्यःकाकुभःप्रगाथःपुरउर्णिगबृहत्यातिजगतीतिमारुत्यौत्यास्तिस्त्रोवांसंलिङ्गोक्तदेवताःकाकुभःप्रगाथःपुरउ
र्णिगबृहतीतिपौष्ण्योबृहतीमहाबृहतीयवमर्ध्यांत्यानुहुम्मारुत्यौत्याद्यावाभूम्योर्वापृथ्वीस्तुषेपंचोनक्रजिभ्वा

॥५१॥

मंडलं ६

अनु. ४

श्यावास्वरूपोवृषाद्यावाऽर्लुषोवृषा ॥ बृहद्भिरग्नेऽअर्चिभिःशुक्रेणदेवशोचिषा । भुरद्धाजेसमिधानोथविष्टरुवन्नः
 शुक्रदीदिहिद्युमत्पावकदीदिहि ॥ विश्वासांगृहपतिर्विशामसित्वमग्नेमानुषीणां । शतंपूर्भिर्थैविष्टपाहंहसःसमेद्धारं
 शतांहिमाःस्तौतृभ्योयेचददति ॥ त्वंनश्चित्रऽक्रत्यावसोराधासिचोदय । अस्यरायस्त्वमग्नेरथीरसिविदागाधंतुचेतु
 नः ॥ पर्षितोकंतनयपृष्टभिर्द्वमदब्धैरग्रयुत्वभिः । अग्नेहेळांसिदैव्यायुयोधिनोदेवानिह्वरांसिच ॥ २ ॥ आसंखायः
 सबर्दुधाधेनुर्मजध्वमुपनव्यसावचः । सजध्वमनपस्फुरां ॥ याशर्धायमारुतायस्वभानवेश्रवोमृत्युधुक्षत । यामृळी
 केमरुतांतुराणांयासुश्नैरेवयावरी ॥ भुरद्धाजायावधुक्षतद्विता । धेनुंचविश्वदैहसमिषंचविश्वभोजसं ॥ तंवऽइंद्रनस
 क्रतुंवरुणमिवमायिनं । अर्यमणंनमंद्रंसप्रभोजसंविष्णुनस्तुषऽआदिशे ॥ त्वेपंशर्धोनमारुंतुविष्वण्यनर्वाणंपूषणं
 संश्रथांशता । संसहस्राकारिपच्चर्षणिभ्यऽऑऽआविर्गुह्वावसूकरत्सुवेदानोवसूकरत् ॥ आमोपूषन्नपद्रवशंसिषंनुतैऽ
 अपिकुर्णऽआघृणे । अघाऽअर्योऽअरांतयः ॥ ३ ॥ माकंकुवीरमुद्रुहोवनस्पतिमशस्तीर्विहिनीनशः । मोतसूरोऽ
 अहंऽएवाचनग्रीवाऽआदधतेवेः⁺ ॥ हतैरिवतेवृकर्मस्तुसख्यं । अर्च्छिद्रस्यदधन्वतःसुपूर्णस्यदधन्वतः ॥ परोहिम

तोबृहतीएकादशीककुपद्वादशीसतोबृहतीत्रयोदशीपुरवष्णिक्चतुर्दशीबृहतीपंचदश्यतिजगतीषोडशीककुपसप्तदशीसतोबृहतीअष्टादशी
 पुरवष्णिक्एकोनविंशीबृहतीविंशीबृहतीएकविंशीमहाबृहतीयवमध्याद्वाविंशयनुष्टुप् । (प्रश्निसूक्तमिदं) ।

त्योरसिसमोद्वैरुतश्रिया । अभिल्यः पूनपुतनासुनस्त्वमवाननयथापुरा⁺ ॥ वामीत्रामस्यधृतयः प्रणीतिरस्तुमनु
 तो । देवस्वचामरुतोमर्त्यस्यवेजानस्यप्रयज्यवः ॥ सद्यश्चिग्रस्यचकृतिः परियांदेवोनेतिसूर्यः । त्वेपंगवोदधिरेनाम
 यज्ञिर्यमरुतोवृत्रहंशवो ज्येष्ठपुत्रहंशवः ॥ सकृद्धोरैराजायतसकृद्धूर्भिरजायत । पृथ्यादुग्धंसकृत्पयस्तदुन्योनानुजाय
 ते ॥ ४ ॥ परिशिष्टं ॥ सूक्ततेतृणान्युग्रावरण्येयोदुकेपिवा । यस्तृणैरभ्युयन्तदुधीतंस्तृणानिभयतेभव ॥ वा
 पीकूपतडागानांसमुद्रगच्छस्वार्हा ॥ (६।४।६) स्तोत्रेजनेसुव्रतंनव्यसीभिर्गीर्भमित्रावरुणासुव्रयंता । तऽअगं
 मंतुतऽइहृष्टुवंतुसुक्षत्रासोवरुणोमित्रोऽअग्निः⁺ ॥ विगोर्विग्रऽईत्र्यमधरेष्वदसक्तुमरुतियुवत्योः । दिवःशिशुसहसः
 सनुमग्निंयुज्ञस्यैकेतुमरुपयजधै ॥ अरुपस्यदुहितराविरूपेस्तुभिरन्यार्पिपित्रेसुरोऽअन्या । मिथस्तुराविचरतीपा
 वृकमन्मथुतनक्षतऽऋच्यमाने ॥ प्रवायुमच्छावृहतीर्मनीपावृहद्विचिंविथवारंरथमां । द्युतर्धामानियुतःपत्यमानः
 कविःकविर्मिथक्षसिप्रयज्यो ॥ समेवपुंरुछदयदृश्चिनोयोर्योविरुक्मान्मनसायुजानः । येननरानासत्येपयध्वंवृत्ति
 र्थाथस्तनयायत्मनेच ॥ ५ ॥ पर्जन्यवातावृषभापृथिव्याःपुरीपाणिजिन्वतमभ्यानि । सत्यंश्रुतःकवयोयस्यगीर्भज
 (६।४।६) स्तोत्रेजनमितिपचदशर्वस्यसूक्तसभारद्वाजाजिश्चाविश्वेदेवास्त्रिष्टुमत्यागफरी (इतश्चत्वारिवैथ । भेदपक्षे—विश्वेदेवाः १
 अग्निः १ अहोरात्रे १ वायुः १ अश्विनौ १ विश्वेदेवाः १ सरस्वती १ पूषा १ अमित्रघातौ १ रुद्रः १ मरुतः २ विष्णुः १ विश्वेदेवाः २ एवं १५)

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ८

॥ ५३ ॥

मंडलं ६

अनु. ५

॥ ५३ ॥

गतः स्यात्तर्जगदाकृणुध्वं ॥ पावीरवीकन्याचित्रायुः सरस्वतीवीरपत्नीधियं धात् । आभिराच्छिद्रं शरणं सजोषादुराध
र्षगुणते शर्मयंसत् ॥ पृथस्पथः परिपतिवचस्वाकामेन कृतोऽअभ्यानळकं । सनोरासच्छुरुधश्चंद्रायाधियं धियं सीषधा
तिप्रपूषा+ ॥ प्रथमभार्जयशंसवयोधांसुपाणिदेवं सुगभस्तिमृभ्वं । होतायक्षद्यजतं पुस्त्यानामग्निस्त्वष्टरं सुहवविभा
वा ॥ सुवनस्य पितरं गीर्भिराभीरुद्रं दिवावधयारुद्रमचौ । बृहंतंऽमृष्वमजरं सुपुन्रमृधघुवेमकुविनेषितासः ॥ ६ ॥
आशुवानः कवयो यज्ञिया सोमरुतोगंतगृणतोर्वरस्यां । अचित्रं चिच्छिजिन्वथावृधंतंऽइत्थानक्षंतोनरोऽअंगिरस्वत्+ ॥
प्रवीराय प्रतवसे तुरायाजयथेव पशुरक्षिरस्तं । सर्पिस्पृशतितन्विश्रुतस्यस्तभिर्ननाकवचनस्य विपः ॥ योरजोसिविम
मेपार्थिवानि त्रिश्चिद्विष्णुर्मनवे वाधिताय । तस्य ते शर्मन्नुपदुधमाने रायामदे मतन्वा इतनाच ॥ तन्नो हि बृधयोऽअग्नि
रुक्तत्पर्वतस्तत्सवितार्चनो धात् । तदोषधीभिरभिरातिपाचो भगः पुरंधिजिन्वतु प्ररागे+ ॥ नूनोरधिर्ध्वं चर्षणि प्रा
पुरुवीरं महऽकृतस्य गोपां । क्षयं दाता जरये न जनान्स्पृधोऽअदेवीरभिचक्रामा विशऽआदेवीरभ्य इश्रवाम ॥ ७ ॥
(६।५।१) हुवेवो देवीमादति नमो भिमृळीकायुवरुणं मित्रमग्निं । अभिक्षदार्मयमणं सुशेवं त्रावृन्देवान्त्सवितारं भर्ग
(६।५।१) हुवेव इति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य भारद्वाजकृजिन्वाविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् (भेदपक्षे-विश्वे. १ सूर्यः १ द्यावापृथिवी १ मरुतः
२ इंद्रः १ अपः १ सविता १ अग्निः १ अश्विनौ १ विश्वे ० ५ एवं १५) ।

च ॥ सुज्योतिषः सूर्यदक्षपितृननागास्त्वग्मुहोवीहिदेवान् । द्विजन्मानोयऽऽर्तमापः मृत्याः स्वर्वतोयजताऽअग्निजि-
 हाः⁺ ॥ उतद्यावापृथिवीक्षत्रमुच्यहृदौदसीशरणं सुपुत्रे । महम्हरथोवरिवोयथानोसोक्षयायधिपणेऽअनेहः⁺ ॥
 आनोरुद्रस्यसुनवोनमंतामद्याहतासोवसवोर्धृष्टाः । यद्रीमभैमधृतिवाहितान्मोत्राधेमरुतोऽअहोमदेवान्⁺ ॥ मिम्य
 क्षयेपुरोदसीनुदेवीसिर्षकिपयाऽअभ्यर्धयन्वा । श्रुत्वाहवैमरुतोयळ्याथभूमरिजंतेऽअर्धनिमयिक्ते ॥ ८ ॥ अभि
 त्वंवीरं गिर्विणसमचंद्रं ब्रह्मणाजरितुर्नवेन । श्रवदिरुचमुपचुस्तत्रानोरामद्वालाऽउपमहोपणानः⁺ ॥ ओमानमापो
 मानुषीरथं कुंधाततोकायुतर्नयायशयोः । ययंहिष्ठाभिगजोमातृत्माविश्वस्यस्यातुर्जगतोर्जनिनीः ॥ आनोदेवः न
 वितात्रायमाणोहिरण्यपाणिर्यजुतोजगम्यात् । योदत्रवोऽउपसोनप्रतीकं व्यूणुति द्वाशुपेवार्योणि ॥ उतत्वंसूनोसह
 सोनोऽअद्यादेवोऽअस्मिन्नध्वरेचवृत्त्याः । स्यामहंतेमदुमिद्रातोतर्वस्यामग्नेर्वसामवीरः ॥ उतत्यामेह्वमार्जग्यातना
 सत्याधीभिर्व्यवमंगविप्रा । अग्निं नमहस्तमसोमुसुकुंतूर्तनरादुरितादभीकं ॥ ९ ॥ तेनोरायोयुमतोवाजवतोऽता
 रौभूतनवर्तः पुरुक्षोः । दृशसंतोदिव्याः पार्थिवासोगोर्जताऽअयोमळताचदेवाः ॥ तेनोरुद्रः सरस्वतीसजोयमीतु
 ष्मंतोविष्णुर्मंतुवायुः । ऋभक्षावाजोदेव्योविधातापर्जन्यावातापिपितामिर्षनः ॥ उतस्यदेवः सच्चिताभगोनोपांन
 पादवतुदानुपप्रिः । त्वष्टादेवेभिर्जनिभिः सजोपाद्यादेवेभिः शुश्रिवीरसमुदः⁺ ॥ उतनोर्हिर्वृश्चः शृणोत्वजऽएकपाशु

ऋक्सं.

अ. ३ अ. ८

॥ ५४ ॥

धिवीसमृद्धः । विश्वेदेवाऽऽकृतावधौ हुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ताऽअवंतु ॥ एवानपातोममत्स्वधीभिर्भरद्वाजाऽअ
भ्यर्चय्युक्तैः । श्राहुतासोवसवो धृष्टा विश्वेस्तुतासो भूतायजत्राः ॥ १० ॥ (६।५।२) उदुत्यच्चक्षुर्महि मित्रयोरोऽएतिमित्रं
वरुणयोरदब्धं । ऋतस्यशुचिर्दशतमनीं करुमोनदिवऽउदिताव्यद्यौत ॥ वेदयस्वीणि विदथान्येपां देवानां जन्म
सनुतराचविर्मः । ऋजुमतेषु वृजिनाचपक्ष्यश्चभिचष्टेसूरोऽअर्थऽएवान् ॥ स्तुषऽउवोमहऽऽकृतस्यगोपानर्दिति मित्रंवरु
णंसुजातान् । अयमणं भगमदब्धधीतीनच्छावोचेसधन्यः पावकान् ॥ रिशादसः सर्पतोऽरदब्धान्महोराज्ञः सुवस
नस्यद्रावृन् । यूनः सुक्षत्रान्क्षयतो दिवो न नोदित्यान्याम्यर्दिति दुवोयु- ॥ द्यौ इक्षितः पृथिविमातरधुगग्नेऽथातवसवो
मळतानः । विश्वेऽआदित्याऽअदितेसजोषाऽअस्मभ्यं शर्मवहलं विर्यत ॥ ११ ॥ मानोवृकायवक्ये समस्माऽअघाय
तेरीरधतायजत्राः । युयं हि ह्यारथ्योनस्तनूनां युयं दक्षस्यवचसोवभू- ॥ मावऽएनोऽअन्यकृतं भुजेममातकमवसवो
यच्चयध्वे । विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वरीरिषीष्ट ॥ नमऽइदुमं नमऽआविवासे नमो दाधारपृथिवीमुत
द्यां । नमो देवेभ्यो नमऽईशऽएषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे ॥ ऋतस्यवोरथ्यः पूतदक्षानुतस्यपस्त्यसद्रोऽअदब्धान् ।
(६।५।२) उदुत्यदितिषोळशर्चस्यसूक्त्यभारद्वाजक्रजिन्वा विश्वेदेवास्त्रिष्टुप्त्रयोदश्याद्यास्त्रिषजष्णिहोत्यानुष्टुप् । (भेदपक्षे-सूर्यः २
विश्वेदेवाः १० अग्निः १ सोमः १ विश्वेदेवाः २ एवं १६) ।

मंडलं ६

अनु. ५

॥ ५४ ॥

तौऽआनमौभिरुचक्षसोनन्विभ्यऽआनमेमहोयजत्राः ॥ तेहिश्रेष्ठवर्चसस्तऽनस्तिरोविभ्यनिदुरितानयति ।
 सुक्षत्रासोवरुणोमित्रोऽअत्रिर्ऋतधीतयोवक्मराजसत्याः ॥ १२ ॥ तेनऽइन्द्रःपृथिवीक्षामवर्धन्पगभगोऽअदितिःपञ्च
 ता । सुशर्मणःस्ववसःसुनीथाभवतुनःसुत्रात्रार्सःसुगोपाः+ ॥ नृसन्नानदिव्यंनंशेदेवाभारद्वाजःसुमतिर्यातिहो
 ता । आसानेभिर्यजमानोमियेधैद्वानांजन्मवसूयुर्वन्द ॥ अपत्यंघृजिनंरिपुंस्तेनमग्नेदुराध्य । द्रविष्ठमस्यसप्तपेकृ
 धीसूगं+ ॥ ग्रावाणःसोमनोहिक्कसखित्वनार्यवावशुः । जहीन्यं१त्रिणपणिंवृकोहिपः+ ॥ ययंहिष्ठासुदानवऽइन्द्रज्ये
 ष्ठाऽअभिर्धवः । कर्तानोऽअध्वन्नासुगंगोपाऽअमा+ ॥ अपिपंथांमगन्महिस्वस्तिगामनेहसं । येनविभ्याःपरिद्विषो
 वृणक्तिविंदेवसु ॥ १३ ॥ (६।५।३) नतद्विवानपृथिव्यानुमन्येनयेननोतशभीभिराभिः । उजंतुतंसुभ्वं१ःप
 र्वातासोनिर्हीयतामतियाजस्ययष्टा+ ॥ अतिवायोमरुतोमन्यतेनोब्रह्मवायःक्रियमाणंनिनित्सात् । तपूषितस्मैवृजि
 नानिसंतुब्रह्माद्विर्पमभितंशोचतुर्धौः+ ॥ किमंगत्वात्रह्राणःसोमगोपांकिमंगत्वाहुरभिशस्तिपांनः । किमंगनःपश्यसि
 निद्यमानान्ब्रह्माद्विपेतपुणैहेतिर्मस्य ॥ अवंतुमामुपसोजार्यमानाऽअवंतुमासिंधवःपित्र्यमानाः । अवंतुमापर्वतासो
 (६।५।३) नतद्विवेति सप्तदशस्यसुकस्यभारद्वाजक्रजिथाविश्वेदेवास्त्रिपुसप्तम्यायाःपद्मगायत्र्यश्चतुर्दशीजगती । (भेदपक्षे-विश्वे-
 देवाः २ सोमः १ विश्वे ० ८ अग्निः १ विश्वे ० ३ अग्निपर्जन्यौ १ विश्वे ० १ गवं १७) ।

ऋक्सं.

अ. ४ अ. ८

॥ ५५ ॥

ध्रुवासोवतुमापितरोदेवहूतौ ॥ विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमचरंतं । तर्थाकरद्वसुपतिर्वसूनां देवाऽओह्रा
नोवसागमिष्ठः ॥ १४ ॥ इन्द्रोनेदिष्टमवसागमिष्ठः सरस्वतीसिंधुभिः पिबमाना । पर्जन्यो नऽओषधीभिर्मयो भुरग्निः
सुरांसः सुहवः पितेर्व ॥ विश्वे देवासऽआगतश्चणतामऽइमंहवै । एदं वहिर्निपीदत ॥ यो वो देवा घृतसुना हव्येन प्रतिभू
षति । तं विश्वऽउपगच्छथ ॥ उपनः सुनवोगिरः शृण्वं त्वमृतस्य ये । समूळीका भवंतु नः ॥ विश्वे देवाऽऋता वृधऽऋतु
भिर्हवनश्रुतः । जुषंतां युज्यं पर्यः ॥ १५ ॥ स्तोत्रमिदं मरुद्गणस्त्वष्टमान्मित्रोऽअर्यमा । इमा हव्या जुषंत नः ॥ इमं
नोऽअग्नेऽअध्वरंहोतर्वयुनशोर्यज । चिकित्वा न्देव्यं जनै ॥ विश्वे देवाः शृणुते मंहवै मे येऽअंतरिक्षे यऽउपद्याविष्ठ । येऽ
अग्निजिह्वाऽउत वायजत्राऽआसद्याऽसिन्वहिर्षिमादयध्वं ॥ विश्वे देवाः शृणुते मंहवै मे येऽअंतरिक्षे यऽउपद्याविष्ठ । येऽ
नम । मावोवचांसि पारिचक्ष्याणि वोचं सुन्नेष्विहोऽअंतमामदेम ॥ ये केचज्जामहि नोऽआहिमायादिवोजज्ञिरेऽअपांस
धस्ये । तेऽअस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षपऽउसाव रिवस्यंतु देवाः ॥ अग्नीपर्जन्याव तं धियमेऽसिन्वहेऽउहवासुष्टुतिनः ।
इळां मन्यो जनयुर्गर्भमन्यः प्रजावती रिषऽआर्धत्तमस्मे + ॥ स्त्रीणो वहिर्षसमिधानेऽअग्नौ सक्तेन महानमसा विवासे ।
अस्मिन्नोऽअद्याविदर्थे यजत्रा विश्वे देवाहुविर्षिमादयध्वं ॥ १६ ॥ (६।५।४) वयमुत्वापथस्पतेरथं न वार्जसातये ।
(६।५।४) वयमुत्वेति दशर्चस्य सूक्तस्य गार्हस्पत्यो भरद्वाजः पूपागायत्री अष्टम्यनुष्टुप् ।

मंडलं. ६

अनु. ५

॥ ५५ ॥

धियेपूषन्नयुग्महि ॥ अभिनोनयं सुवीरप्रयतदक्षिणं । वामंगहर्पतिनय ॥ आदित्संतचिदाष्टुणेपूषन्दानायचो
 दय । पुणेश्चिद्विद्वामनः ॥ विपथोवाजसातयेचिनुहि विमृथोजहि । साधतामुग्रनोधिर्यः ॥ परितंधिपणीनामार
 याहृदयाकवे । अथैमस्मभ्यरंधय ॥ १७ ॥ विपूषन्वा रयातुदपुणेरिच्छहृदिप्रियं । अथै० ॥ आरिखकिकिराकृणुप
 णीनांहृदयाकवे । अथै० ॥ यापूषन्वा चोदनीमारांविभष्योष्टुणे । तयासमस्यहृदयमारिखकिकिराकृणु ॥ यातेऽ
 अष्टागोऽओपुशाष्टुणेपशुसाधनी । तस्यास्तेसुन्नमीमहे ॥ उत्तनोगोपणिंधिर्यमथ्सार्वाजसामुत । नवत्कृणुहिवीत
 ये ॥ १८ ॥ (६।५।५) संपूषन्विदुपानययोऽअंजसानुशासति । यऽएवेदमित्तिवत् ॥ समुपणागमिमहियोग
 होऽअभिशासति । इमऽएवेतिचवत् ॥ पूषणश्चक्रनरिष्यतिनकोशोवपद्यते । नोऽअस्यव्यथतेपविः+ ॥ योऽअस्म
 ह्नुविपाविधुन्नतंपूषार्पिमृष्यते । प्रथमोर्विदतेवसु ॥ पूषागाऽअन्वेतुनःपपारक्षत्वर्धतः । पूषावाजसनोतुनः ॥ १९ ॥
 पूषन्ननुप्रगाऽईहियर्जमानस्यसुन्यतः । अस्माकंस्तुवतामृत+ ॥ मार्किर्नेशुन्माकीरिपुन्माकींसशारिकेवटे । अथा
 रिराभिरागहि ॥ शृण्वंतंपूषणंवयमियमनद्वेदसं । ईशानंरायऽईमहे ॥ पूषन्तवत्रतेवयंनरिष्येमकदाचन । स्तोता
 रस्तऽइहसंसि ॥ परिपूषापरस्तांरुस्तदधातुदक्षिणं । पुनर्नोनष्टमार्जतु ॥ २० ॥ (६।५।६) एहिवांविमुचोनपा

(६।५।५) सपूषन्नितिदशर्चस्यसूक्तस्यवाहस्यत्योभरद्वाजःपूषागायत्री । (६।५।६) एहिवामितिपट्टचस्यसूक्तस्यवाहस्यत्योभरद्वाजःपूषा

ऋक्सं.

अ. २ अ. ८

॥५६॥

दाघृणेसंसंचावहै । रथीर्कृतस्यनोभव ॥ रथीर्तमंकपुर्दिनमीशानुराधसोमहः । रायःसखायमीमहे ॥ रायोधारा
स्याघृणवसौराशिरजाश्व । धीवतोधीवतःसखा ॥ पपुणन्व१जाश्वमुपस्तोषामवाजिनं । स्वसुर्योजारऽबुच्यते ॥
मातुर्दिधिबुर्मज्रवंस्वसुर्जारःशृणोतुनः । अतैर्द्रस्यसखामर्म ॥ आजार्सःपुपणरथेनिशंभास्तोजनश्रियं । देवंवहंतुवि
भ्रतः ॥ २१ ॥ (६।५।७) यऽर्पणमादिदेशतिकरंभादितिपपणै । नतेनदेवऽआदिशे ॥ उतघ्रासरथीर्तमः । देवंवहंतुवि
जा । इन्द्रोवृत्राणिजिघ्रते ॥ उतादःपरुषेगविसूरश्चक्रंहरण्ययं । न्यैरयद्रथीर्तमः ॥ यदुद्यत्वापुरुदुतब्रवामदस्रमंतुमः ।
तत्सुनोमन्मसाधय ॥ इमंचनोगवेषणंसातयेसीषधोगणं । आरात्पूषन्नसिभ्रतः+ ॥ आतेस्वस्तिमीमहऽअरेऽअघ्रा
मुपावसुं । अद्याचसर्वततयेश्वश्चसर्वततये ॥ २२ ॥ (६।५।८) इन्द्रानुपषणावयंसख्यायस्वस्तये । हुवेमवार्जसा
तये ॥ सोममन्यऽउपासदुत्पातवेचम्बोःसुतं । करंभमन्यऽईच्छति ॥ अजाऽअन्यस्यवह्नयोहरीऽअन्यस्यसंभृता ।
ताभ्योवृत्राणिजिघ्रते ॥ यदिन्द्रोऽअनयद्रितोमहीरुपोवृषन्तमः । तत्रपषार्भवत्सचा ॥ तांपणःसुमतिवयंबुक्षस्यमव
यार्मिव । इन्द्रस्यचारंभामहे ॥ उत्पपणैयुवामहेभीशूऽरिवसाराधिः । मुह्याऽइन्द्रंस्वस्तये ॥ २३ ॥ (६।५।९) शुकं
गायत्री । (६।५।७) यएनमितिपडुचस्यसूक्त्यबाहस्पलोभरद्वाजःपूपागायत्रीअत्यानुष्टुप् । (६।५।८) इन्द्रान्वितिपडुचस्यसूक्त्य
बाहस्पलोभरद्वाजंइन्द्रापूषणौगायत्री । (६।५।९) शुकंतइतिचतुर्कंचस्यसूक्त्यबाहस्पलोभरद्वाजःपूपात्रिष्टुप्द्वितीयाजगती ।

मंडलं ६

अनु. ५

॥५६॥

तेऽन्यर्धजतैऽन्यद्विपुरुषेऽहनीघोरिवासि । विभ्रमाहिमायाऽवसिस्वधावोभद्रातैपूषन्निहरातिरस्तु ॥ अ-
जावःपशुपाचाजपस्त्योधिषंजिन्योभुवनेविभ्वेऽअर्पितः । अष्ट्रपूषाक्षिरामद्वरीवृजत्संचक्षाणोभुवनादेवऽईयते ॥
यास्तैपूषान्नोऽअंतःसमुद्रोहिरण्यरीरक्षेचरंति । तामिरीसिदुल्यांरस्यकामेनकृतश्रवंऽइच्छमानः ॥ पूषासुव-
धुर्दिवऽआर्ध्रिव्याऽइक्ष्पतर्मघवाऽदुस्मर्चाः । यंदेवाऽसोऽअददुःसयैकामेनकृततुवंसंखं ॥ २४ ॥ (६।५।१०)
यस्तैपूषान्नोऽअंतःसमुद्रोहिरण्यरीरक्षेचरंति । तामिरीसिदुल्यांरस्यकामेनकृतश्रवंऽइच्छमानः ॥ पूषासुव-
धुर्दिवऽआर्ध्रिव्याऽइक्ष्पतर्मघवाऽदुस्मर्चाः । यंदेवाऽसोऽअददुःसयैकामेनकृततुवंसंखं ॥ २४ ॥ (६।५।१०)
प्रनुयोचामतेषुवांभीर्या इयानिचक्रुः । हुतासौवांपितरैरेवशत्रवऽइंद्राग्नीजीवथोयुव+ ॥ वळित्थामहिमावामिंद्रा-
ग्नीपनिष्ठऽआ । समानोवाजनिताच्चातरायुवंयमाविहेहमातरा ॥ ओकिवांसामुतसचाँऽअथासमीऽइवादने । इ-
द्रान्वग्नीऽअवसेहवज्रिणावयंदेवाह्वामहे ॥ यऽइंद्राग्नीसुतेषुवांस्तवतेष्वृतावृथा । ज्योषवांकवदंतःपञ्चहोषिणा-
देवाभुसार्थश्चन+ ॥ इंद्राग्नीकोऽअसवांदेवौमर्ताश्चिकेतति । विपूचोऽअथान्ययुजानऽईयतऽएकःसमानऽआरथे ॥ इंद्राग्नीऽआ-
॥ २५ ॥ इंद्राग्नीऽअपाद्रियंपूर्वागत्यद्वतीभ्यः । ह्रित्वीशिरोजिह्वयावावदृच्चरंज्जिगत्पदान्यक्रमीत् ॥ इंद्राग्नीऽआ-
हितंन्यतेनरोधन्वानिवाहोः । मानोऽअस्मिन्महाधनेपरवर्कगविष्टिषु ॥ इंद्राग्नीतर्पिताघाऽअय्योऽअरतयः ।
हितंन्यतेनरोधन्वानिवाहोः । मानोऽअस्मिन्महाधनेपरवर्कगविष्टिषु ॥ इंद्राग्नीतर्पिताघाऽअय्योऽअरतयः ।

हितन्वतनराधन्याः ॥ इन्द्रमायुवारापुत्रः ॥ इन्द्रमायुवारीवहतीभयाश्रतसोनुपुमः ।

(31x13)

इंद्राग्नीऽउक्थवाहसास्तोमैर्भिर्हवनश्रुता । विश्वाभिर्गीर्भिरागतमस्यसोमस्यपीतये ॥ २६ ॥ (६।५।११) अथ ह्यु-
 त्रमतसंनोतिवाजमिन्द्रायोऽअग्नीसहुरीसपर्यात् । इरज्यंतावसव्यस्यभूरेः सहस्रमासहसावाजयंता ॥ तार्योधिष्टम-
 भिगाऽइंद्रननमपःस्वरुषसोऽअगऽउद्धाः । दिशःस्वरुषसऽइंद्रचित्राऽअपोगाऽअग्नेयुवसेनियुत्वान् ॥ आवृत्रहणा-
 वृत्रहभिः शुष्मैरिंद्रयातनमौभिरग्नेऽअर्वाक् । युवंराधोभिरकवेभिरिंद्राग्नेऽअस्मेभंवतमुत्तमेभिः ॥ ताहुवेयथौरिदंप्-
 मेविश्वं पुराकृतं । इन्द्राग्नीनर्मर्धतः ॥ उग्राविधुनिनामृधंऽइंद्राग्नीहवामहे । तानोमृळातऽइंद्राग्ने ॥ २७ ॥ हुतोबुत्रा-
 ण्यार्यो हुतोदासानि सत्पती । हुतो विश्वाऽअपद्विषः ॥ इंद्राग्नीयुवामिमेऽभिस्तोमाऽअनूपत । पिवतंशंभुवासुतं ॥
 यावांसंति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषेनरा । इंद्राग्नीताभिरागतं ॥ तामिरागच्छतं नरोपेदंसर्वनंसुतं । इंद्राग्नीसोमपीत-
 ये ॥ तमीळिष्वयोऽअर्चिषावना विश्वापरिष्वजत् । कृष्णाकृणोति जिह्वया ॥ २८ ॥ यऽइच्छऽआविवांसति सुन्नामि-
 द्रस्यमर्त्यः । द्युन्नायंसतराऽअपः⁺ ॥ तानोवाजवतीरिषऽआशून्पिपृतमर्वतः । इंद्रमग्निं चवोह्वे ॥ उभावाभिंद्रा-
 ग्नीऽआहुवर्ध्याऽउभाराधंसः सहमादयध्वै । उभादातारां विषारं यीणामुभावाजस्यसातये हुवेवां ॥ आनोगव्येभिर-
 श्वैर्वसव्यैर्दु रूपगच्छतं । सर्वायौ देवौ सख्यायंशुं भुवैर्द्राग्नीताहवामहे ॥ इंद्राग्नीशृणुतं हव्यं जमानस्य सुन्वतः । वीतं
 (६।५।११) अथ दृत्रमिति पंचदशर्वस्य सूक्तस्य बार्हस्पत्यो भरद्वाज इंद्राग्नीगायत्री आद्यास्ति स अथोदशी च त्रिष्टुभः चतुर्दशी बृहत्यानुष्टुप् ।

हृदयान्यागतिं पितं सोम्यं मधु ॥ २९ ॥ (६।५।१२)
 उयमद्वद्वदभगवद्गुण्युतं दिवो दामं वधुः शयं द्वायुगे । या
 उयं शुभं भिषिगुणाऽऽगन्तुन्नानुगिरीणां विपिभक्तं
 शश्वतमाचखादो वमं पणितां दुना गतं विगमं स्वति ॥
 भिः । पारावुतु ग्रीमवमे सुवृक्षिभिः मरस्वती माधवमे मध्रीतिभिः ॥
 मरस्वतिः नृनिद्रो निवः यमृगं विश्वं सुनुमयस्य
 भिः । पारावुतु ग्रीमवमे सुवृक्षिभिः ॥ प्रणोदुवी मरस्वती वाऽभिषो जिनीवती ।
 मायिनः । उत्तक्षितिभ्यो च नीरविदो विपमेभ्योऽअस्रवो वा जिनीवति ॥
 धीनामं चित्रयवतु ॥ यस्त्वोदे विमरस्वरुपवृत्ते वने हिते । उदुनं वृत्तं ॥ ३० ॥
 रदोपेव नः सनिं ॥ उत्तस्यानः मरस्वती घोरा हिरेण्यवर्ततिः । पुत्रहीनं पृष्टिमुष्टिं ॥
 र्णिष्णुरेणवः । अमश्चरति रोरुवत् ॥ मानो विश्वाऽअतिद्विपः स्वसुरन्याऽऽकृताचरी । अतुन्नं हेतुसूयः ॥
 सुसप्तस्वसा सुजुष्टा । सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥ ३१ ॥ आपमुशीपाधिवा न्युत्तुजोऽअन्तरिक्षं । मरस्वती निद्रुपातु ॥
 त्रिपथस्यासुसधातुः पंचजाता वृधंती । वाजैवा जेहव्या भूत् ॥ प्रयामद्विन्नामहिनामचे क्ते युन्ना भिरन्याऽअपमं
 पत्तमा । रथेऽइव वृहती विभ्येनै कृतोपस्तुत्यां चिक्नुयामरस्वती ॥ सरस्वत्युभिर्नो नैपि वस्यो मापस्फरीः पर्यमा मानऽ
 आधक् । जुपस्वनः सुखयात्रे श्यां च मात्वत्क्षेत्राण्यरेणा निगन्म ॥ ३२ ॥ ॥ इति चतुर्थोऽष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

(६।५।१२) इयमद्वद्वदिति चतुर्थं शर्चसामूतस्य नाहं दान्यो भगवान्नः मरस्वती गायत्री आमानि मन्त्रस्योऽग्नीनागलोऽप्याणिष्टुः ।

द्वात्रिंशाध्यायेवर्गाः ३२ सूक्तानि १४ ऋचः १६६ ॥ त्यागः ॥ अग्नय. १० मरुद्भ्य. ५ पूष्णइदं. ४ मरुद्भ्य. ३ विश्वेभ्योदेवेभ्य. ६३
 [भे. प. विश्वेभ्योदेवेभ्य. अग्नय. अहोरात्राभ्या. वायव. अध्विभ्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य. सरस्वत्याइ. पूष्ण. अग्नयेत्वष्टू. रुद्राये. मरुद्भ्य. २
 विष्णव. विश्वेभ्योदेवेभ्य. ३ सूर्यायेदं. चावापृथिवीभ्या. मरुद्भ्य २ इंद्राये. अद्भ्य. सवित्र. अग्नय. अध्विभ्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य. ५
 सूर्याये. २ विश्वेभ्योदेवेभ्य. १० अग्नय. सोमाये. विश्वेभ्योदेवेभ्य. ४ सोमाये. विश्वेभ्योदेवेभ्य ८ अग्नय. विश्वेभ्योदेवेभ्य. ३
 अग्निपर्जन्याभ्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य.] पूष्णइ. ३२ इद्रापूपभ्या. ६ पूष्ण. ४ इंद्राग्निभ्या. २५ सरस्वत्याइ. १४ ॥ इतिचतुर्थेऽष्टमः ॥

॥ इतिचतुर्थाष्टकःसमाप्तः ॥

॥ अथपंचमाष्टकप्रारंभः ॥

श्रीः ॥ स्तुपएकादशाश्विनंतुक्लैकपदांतत्रैष्टुभमाद्याविराकुडुश्रियेपलुपस्यत्वेपास्यावपुन्वेकादशमारुतं वि
 श्वेपांमैत्रावरुणं श्रुष्टीवामैद्रावरुणमुपांत्येजगल्यौसंवामष्टावैवेण्वगधृतवतीपद्मद्यावापृथिवीयंजागर्तमुदुप्यः
 सावित्रं त्रिष्टुवंतं मिद्रासोमापंचैद्रासोमयो अद्रिभित्तुचंचाहस्पत्यं सोमारुद्राचतुष्कंसोमारौदजीमूतस्यैवैकोना
 पायुर्भारद्वाजः संग्रामांगान्युक्शोभितुष्टाववर्मधनुज्यामार्त्वाद्दुधिजगल्यधंसारथिमर्धरश्मीनश्वात्रथंगोपा
 न्जगत्याद्यालिंगोक्तदेवताद्वाभ्यामिधून्प्रतोदंहस्तद्वाभ्यामिधून्पराः पन्त्यादयोलिंगोक्तदेवताः संग्रामाशियो
 त्यानुष्टुब्जीतआलाक्तेतिचद्वेद्वेयोद्भ्राः संभूतोवसतीवरीपुष्ट्यमाणास्तुपुष्करेस्थितवान्सर्वतः पुष्करं तत्रविश्वेदे
 वाअधारयन्नुत्थापयतोमहत्तपश्चकारादृष्टमिद्रमन्यैर्कपिभिर्योदृष्टवांस्तपसापूर्वस्तोमभागान्परितुष्टः शक्रः प्रब्रूते
 यस्यसगुणतोनामजैवसतः श्रेष्ठकर्मणः ससप्तमंडलंवसिष्ठोपश्यदग्निंपचाधिकाविराजोष्टादशाद्याः ॥ १ ॥
 श्रीगणेशायनमः ॥ हरिः ओम् ॥ (६।६।१) स्तुपेनरादिवोऽस्यप्रसंताश्विनाहुवेजरमाणोऽअर्कः ।
 यासद्यऽबुष्माव्युषिज्मोऽअंतान्युपतः पर्यरुवरसि ॥ तायज्ञमाशुचिभिश्चक्रमणारथस्यभानुंरुचुरजोभिः । पुरु
 वरांस्यर्भितुमिमानापोधन्यान्यतिथायोऽअजान् ॥ ताहृत्यद्वर्तियदरध्रमुष्टेत्थाधियऽऊह्युः शश्वदश्वैः । मनोजवे

पष्ठेनुवाकेचतुर्दशसूक्तानि (६।६।१) स्तुपेनरेलेकादशसूक्तस्यवाहंसप्तलोभरद्वाजोश्विनौ त्रिष्टुप् ।

क्रक्सं.

अ. ५ अ. १

॥ २ ॥

भिरिपरैः शयधैपरिव्याधिदशुषोमर्त्यस्य ॥ तानव्यसोर्जरमाणस्यमन्मोपभूषतोयुयुजानसंती । शुभं पृक्षमिपमूर्जव
हताहोतायक्षत्प्रत्नोऽअधुग्युवाना ॥ तावत्पूदृक्षापुरुशार्कतमाप्रलानव्यसावचसाविवासे । याशंसतेस्तुवतेशंभवि
मावभुवतुर्गुणतेचित्रराती ॥ १ ॥ तामुज्जुविभिरुभ्यः समद्रातुग्रस्यसनुमहधूरजोभिः । अरेणुभिर्योजनेभिर्भजंताप
तत्रिभिरणसोनिरुपस्थात् ॥ विजयुपरथायातमद्रिश्रुतंहववृणवाधिमत्याः । दशस्यताशयवैपिव्यथगामित्तिच्य
रुधंदधात ॥ यऽईराजानावृत्तुथाविदधर्जसोमित्रोवरुणश्चिकेतत् । तदादित्यावसवोरुद्रियासोरक्षोयुजेतपु
वाय ॥ अंतरैश्चैस्तनयायवर्तिद्युमतायातनवतारथेन । सनुत्येनत्यजसामर्त्यस्यवनुप्यतामपिशीर्षवृक्तं ॥ आप
रमाभिरुतमध्यमाभिर्नियुज्जितमवमामिर्वाक् । इहस्यचिद्रोमतोविव्रजस्यदुरोवर्तगुणतेचित्रराती ॥ २ ॥
(६।६।२) क१त्यावृत्तुपुरुहताद्यदुतो नस्तोमोविद्वजमस्वान् । आयोऽअर्वाङ्गसत्यावर्तमेष्टाह्यसथोऽअस्यमन्म
रिवामंधसोवरीमन्नस्तारिवाहिः सुप्रायणतमं । परित्यक्त्युवर्तिथोऽअंधः । परिहृत्यद्वर्तिथोरिपोनयत्परोनांतरस्तुतुर्वात् ॥ अका
(६।६।२) कलेलेकादगर्चस्रक्ष्मवाहस्पलोभरद्वजोधिनात्रिष्टुपआद्याविराळंलैकपदा ।

मंडलं ६

अनु. ६

॥ २ ॥

रेण्वस्यात्प्ररातिरेतिजनिनीघृताची । प्रतोतागर्तमनाऽउराणोयुक्तयोनामत्याह्वीमन् ॥ आभिश्चित्रेणुद्वितासूयस्य
 रथतस्थौपुरुसुजागतीति । प्रमायाभिर्मायिनाभूतमननरावृतजनिमन्यद्वियानां ॥ ३ ॥ युवंश्रीभिर्दंशनाभिराभिः
 रथतस्थौपुरुसुजागतीति । आवाययोश्चामोवर्षिष्ठाऽअभिप्रयोना
 शुभेपष्टिर्मह्युःसूर्यायाः । प्रवावयोवपेनुपस्रनक्षत्राणामुष्टुताधिण्यावां ॥ पुरुहिवांपुरुसुजादुग्णंयेनुंनुऽउपिन्वतमन्
 सत्यावहंतु । प्रवारथोमनोजवाऽअसर्ज्जिपःपक्षऽउपिधोऽअनुपूर्वाः ॥ पुरुहिवांपुरुसुजादुग्णंयेनुंनुऽउपिन्वतमन्
 कां । स्तुतेश्चवांमाध्वीमुष्टुतिश्चरमाश्चयेवामवरातिमगमन् ॥ इतमंऽक्रुअपुरुयस्यरुचीधुमींउगतंरुकेचपुता । आं
 डोदोद्धिराणिनःस्मर्दिष्टीन्दशवृत्रामोऽअभियाचंऽक्रुप्वान् ॥ मंवांशतानामत्यामह्वान्वाथानांपुनूंयंथीगिरिदात ।
 भरद्वाजायवीरनूगिरिदोद्धतारक्षीसिपुरुदंमसास्युः ॥ आवांसंस्वार्मन्मरिभिःन्यां ॥ ४ ॥ (६।६।३) उटुश्चित्र
 ऽउपसरोचमानाऽअस्थुरपांनोमयोरुथतः । कृणोतिविश्वामपथांसगान्यभेदुवस्वीर्दादणामघोनीं ॥ भद्रादंऽक्षऽउ
 विंयाविभास्युत्तैर्गोचिर्भनवोद्यामपस्रन् । आविर्ब्रक्षःकृणुपथांभमानोपांदिविरोचमानामहोभिः ॥ नहंतिसीमरूणा
 मोरुथेतोगावःसुभगासुविंयाप्रथाना । अपेतेशरोऽअस्तेवग्रन्थाथेतमोऽअजिरोनवोद्यां ॥ मगोतैमपथापवतै
 प्ववृतेऽअपस्तरसिस्वभानो । सानुऽआवहृथुयामन्वेरुयिद्विगोदुहितरिपयधं ॥ सार्वह्योऽअभिरवातोपोनरुवहं

(६।६।३) उटुभियद्वितिपट्टचस्यसूक्तसर्वादस्पतोभरद्वाजउपावित्युप ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. १

॥ ३ ॥

मंडलं ६

अनु. ६

॥ ३ ॥

सिजोषमनु । त्वं दिवो दुहितया ह देवी पूर्वहूतो मंहना दर्शतामूः ॥ उत्तेवयश्चिद्वसतेरपसुन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ । अ
मासते वहसि श्रौरवामसुषो देवि द्वाशुषे मर्त्याय ॥ ५ ॥ (६।६।४) एषास्यानो दुहिता दिवो जाः क्षितीरुच्छंतीमानुषीर
अग्र्यज्ञस्य बृहत्तो नयंती विताना धत्ते तमऽऽर्ज्ययाः ॥ वितद्ययुरणयुग्मिभरभ्वैश्चित्रभान्युपसंश्चरथाः ।
रवत्पत्यमानाऽअवोधातविधतेरलमद्य ॥ इदा हि वो विधतेरलमस्ती दावीरार्यदाशुषं उपसो मर्त्याय । मयोनीर्वी
दुक्थानिष्ममावते वहथा पुरा चित् ॥ इदा हितं उषोऽअद्रिसानो गोत्रागवामं गिरसो गणंति । इदा विप्रायुजरतेय
णाचसत्या नणाम भवहेव हतिः ॥ इदा हितं उषोऽअद्रिसानो गोत्रागवामं गिरसो गणंति । इदा विप्रायुजरतेय
यमधिधेहि श्रवोनः ॥ ६ ॥ (६।६।५) वपुर्मुताच्चिकितुपेचिदस्तुसमानं नाम धेनुपत्यमानं । सुवीरं रयिगृणतो रीरिह्यरुगा
सकृच्छ्रकंदं दुहेष्टश्रिरुधः ॥ येऽअग्रयो न शोशुचन्निधाना द्विर्यत्रिर्मरुतो वावृधंत । अरेणवो हिरण्ययासऽएपांसाकं न
मणैः पोत्येभिश्च भूवन् ॥ रुद्रस्य ये मीहिपुः संति पुत्रायांश्चोनुदाधुविर्भरथै । विदेहि मातामहो महीपासे त्पुश्चिः स भवेद्भुग
भमाधात् ॥ नयऽईषं ते जुनो यान्वं शतः संतो वद्यानि पुनानाः । निर्यदुहेष्टुचयो नुजोपमनुश्रियातु न्वं मुक्षमाणाः ॥
(६।६।४) एपास्येति पटुचस्य सूक्तस्य वाहस्पत्यो भरद्वाज उपास्त्रिष्टुप् । (६।६।५) वपुर्निर्विलेकादशचेस्य सूक्तस्य वाहस्पत्यो भरद्वाजो मरुत-

[illegible]

1. नाम

प्रयामन्मन्तान्जीयमाणान् ।

(31313)

सिद्धम् ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. १

॥ ४ ॥

पाः । परिचक्रुथोरोदसीचिदुर्वसंतिस्पशोऽदन्धासोऽअमूराः ॥ ९ ॥ ताहिक्खत्रंधारयेथेऽअनुद्यन्हंथेसानुमुप
मादिवुद्योः । इब्बो नक्षत्रं उत विथ्वे देवो भूमिमातान्धां धासिनायोः+ ॥ ताविग्रंथे जठरं पणध्याऽआयत्सद्भ्यसभृत
येभूत् । नमृग्यंते युवतयो वाता विसत्पयो विथ्वजिन्वा भरते ॥ ताजिह्वा स दुमेदं सुमेधाऽआयद्वांसत्योऽअरतिर्क्क
नये देवासो ओहसानमर्ताऽअयं न सा चोऽअप्योनपुत्राः+ ॥ वियद्वाचं कीस्तासो भरंते शंसंति केचिन्निविदो मनानाः ।
आद्वांब्रवामसत्यान्युक्थानि केदेवेभिर्यतथोमहित्वा+ ॥ अवोरिथ्वावाच्छदिषोऽअभिष्टौयवो मित्रावरुणावस्कृधो
शु । अनुचद्वावः स्फुरानृजिप्यं धृण्यं यद्रणे वृषं यं नृजन् ॥ १० ॥ (६।६।७) श्रुष्टीवांस्यज्ञोऽउद्यतः सजोषामनुष्व
हुक्कवर्हिषो यजध्वै । आयऽइन्द्रावरुणा विषेऽअद्य मे सन्नायं महऽआवर्तत् ॥ ताहिश्चेष्टा देवता तातु जाश्रूणां शर्वि
ष्टा ताहिभूतं । मधोनां मिहृष्टा तु विशुष्मंऽऽकृतेन वृत्रतुरासर्वसेना ॥ तागृणी हिनमस्येभिः शूषैः सुन्नेभिः श्रुष्टीवांस्यज्ञोऽउद्यतः सजोषामनुष्व
ना । वज्रैर्णान्यः शर्वसाहंति वृत्रं सिर्यत्स्यन्यो वृजने पुर्विम् ॥ माश्च यज्ञरश्च वा वृधंत विथ्वे देवासो नरास्वर्गताः । ग्रैभ्य
ऽइन्द्रावरुणामहित्वाद्यौ श्वपृथिविभूतमूर्वी+ ॥ सऽइत्सुदानुः स्वर्वाऽऽकृता वै द्यायो वावरुणा दाशंति मन् ॥ इषासिद्धिष
(६।६।७) श्रुष्टीवामित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य वाहंस्पत्यो भरद्वाज इन्द्रावरुणौ त्रिष्टुप नवमीदशस्यौ जगत्स्यौ ।

मंडलं ६

अनु. ६

॥ ४ ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. १

॥ ५ ॥

मंडलं
अनु. ६

॥ ५ ॥

प्रथतंजीवसेनोरजांसि ॥ इंद्राविष्णूहविषावाधुनानाद्राद्वानानमसारतहव्या । घृतासुतीद्रविणंघत्तमस्मेसमुद्रःस्थः
कुलशःसोमधानः ॥ इंद्राविष्णुपिवत्तुमध्वोऽअस्यसोमस्यदस्त्राजठरैपुणेथां । आवांमंधांसिमदिराण्यग्मन्नुपब्रह्माणि
शृणुतंहवमे ॥ उभाजिग्यथूनपरजयेथेनपराजिगेकतरथनैनोः । इंद्रश्चविष्णोयदपस्पृधेथात्रेधासहस्रंवितदैरये
थां ॥ १३ ॥ (६।६।९) घृतवतीभुवनानामभिअयोर्वीपृथ्वीमधुदुधसुपेशसा । द्यावापृथिवीवरुणस्यधर्भणावि
ष्कभितेऽअजरेभूरिरेतसा ॥ असेधंतीभूरिधारेपयस्वतीघृतं दुहातेसुकृतेष्टुचिब्रते । राजंतीऽअस्यभुवनस्यरोदसीऽ
अस्मेरेतःसिचतंयन्मनुहितं ॥ योवांमजवेक्रमणायरोदसीमतोदुदाशधिषणेससाधति । प्रमजाभिर्जायतेधर्मणस्प
रिधुवोःसिक्ताविषुरुपाणिसव्रता ॥ घृतेनद्यावापृथिवीऽअभीवृतेघृताश्रियाघृतपृचाघृतावृधा । उर्वोपृथ्वीहोतुवृथेप
रोहितेतेऽइद्विमाऽईकतेसुम्नामिष्टये ॥ मधुनोद्यावापृथिवीभिर्मिक्षतांमधुश्चतामधुदुधेमधुव्रते । दधानेयज्ञंद्रविणंच
देवतामहिअवोवाजमस्मेसुवीर्यं ॥ ऊर्जनोद्यौश्चपृथिवीचपिन्वतांपितामाताविश्वविदांसदंसा । संराणरोदसीवि
श्वशमुवासनिंवाजैरयिमस्मेसमिन्वतां ॥ १४ ॥ (६।६।१०) उदुष्यदेवःसविताहिरण्ययावाहऽअयंस्तसवनायसु
(६।६।९) घृतवतीइतिपट्टचस्यसूक्तस्यवाहस्पत्योभरद्वाजोद्यावापृथिव्यौजगती । (६।६।१०) उदुष्येतिपट्टचस्यसूक्तस्यवाहस्पत्यो
भरद्वाजःसविताजगतीअंत्यास्तिस्रस्त्रिष्टुभः ।

श्रवसं.

अ. ५ अ. १

॥ ६ ॥

मंसत्पित्तानऽआरोदसीदृषभोरोरवीति ॥ जनोयचिद्यऽईवतऽउलोकं बृहस्पतिदेवहृतौ चकार । मन्वृत्राणि विपुरोददं
रीतिजयन्च्छत्रमित्रान्पुत्सुसाहन् ॥ बृहस्पतिः समजयदसूनिमहोव्रजान्गोमतो देवऽएषः । अपः सिषासन्त्स्वऽप्रती
तो बृहस्पतिर्हृत्य मित्रमकैः + ॥ १७ ॥ (६।६।१३) सोमरुद्रा धारयेथामसुर्ध्रुप्रवामिष्टयोरमश्रुवन्तु । दमेदमेससरत्ना
स्मेभद्रासौश्रवसाने संतु ॥ सोमरुद्रायुवमेतान्यस्मे विश्वान् तूष्णभेषजानि धत्तं । अवेस्य तं मे चतुं यज्ञोऽअस्ति तूष्णवृद्धं कुरु
तमेनोऽअस्मत् + ॥ तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमरुद्रा विहसुर्मृळतनः । प्रनोमुंचतुंवरुणस्य पाशो ज्ञोपायतनः सुमन
स्यमाना ॥ १८ ॥ (६।६।१४) जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मायाति समदामुपस्थे । अनो विद्धया तन्वा जयत्वं सत्वा
वर्मणो महिमापि पतु ॥ धन्वनागा धन्वनाजिर्जयेम धन्वनातीव्राः समदौ जयेम । धनुः शन्नोरपकामं कृणोति धन्वनास
भरद्वाजो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् । (६।६।१३) सोमारुद्रेति चतुर्कं च ससूक्तस्य बार्हस्पत्यो भरद्वाजः सोमारुद्रौ त्रिष्टुप् । (६।६।१४) जीमूतस्येवेत्येको
नर्विशत्यसूक्तस्य भारद्वाजः पायुः आद्यानां नवानाक्रमेण वर्मधनुर्ग्याधनुष्कोटीपुधिः सारथीरश्मयोऽश्वारथोरथगोपाः दशम्या ब्राह्मण
पितृसोमपृथिवीपूपाणः एकादश्यादिद्वयोरिपवः त्रयोदश्याः प्रतोदः चतुर्दश्या हस्तत्राणं पंचदशी षोडशोरिपवः सप्तदश्या युद्धभूमिकवच
ब्रह्मणस्पत्यादित्यः अष्टादश्या वर्मसोमवरुणाः अंताया देवब्रह्माणि त्रिष्टुप् । पष्ठी दशम्यौ जगत्पौ द्वादशी त्रयोदशी पंचदशी षोडश्या अनुष्टुभः

मंडलं. ६

अनु. ६

॥ ६ ॥

वीःप्रदिशौजयेम ॥ वृक्षंतीचेदागनीगंति रुगीप्रियंमगायंपरिपस्वनात् । योपेवगितेचितुतापिधन्यन्याऽद्रयंममेनेपा
 रयंती ॥ तेऽआचरंतीसमेनेवयोपामतेवपत्रांविश्रुतामपश्ये । अपअर्चन्निश्रयतांमंविदुनेऽगालीऽउमेर्विफुंतीऽअ
 मित्रान् ॥ वृहतीनांपितावृहुरेस्पपत्रश्चिश्चाकुणोतिममेनाग्रत्ये । उपधिःमंक्षाःपुतनाधुनयोःपुष्टेनिनेद्वेजयतिप्रसूतः
 ॥ १९ ॥ रथेतिष्ठन्नयतिवाजिनःपुरोयत्रयन्नक्तमथेतमुपाग्रिः । अभीष्टानामहिमानंपनायनुमनःपश्चादनुयच्छन्निग
 र्भयः ॥ तीत्रान्योपान्कृण्वतेरुपाणयोश्चरथेभिःमल्लवाजयंतः । अत्रुक्तामंतःप्रपदंरुमित्रांस्त्रिणनिगत्रग्नंनपव्ययं
 तः ॥ रथवाहनंहुविरेस्पनामयत्रायुयुनिहितमस्वयम् । नत्राग्रमुपाग्रमनेदमनिःपालययंसुमनस्यमोनाः ॥ म्याद
 पुंसदःपितरोवयोधाःकृच्छ्रेश्रितःग्रक्तंवेतोगभीराः । चित्रमेनाऽरुचव्याऽअवृथाःसतोमीराऽरुचोत्रातनागाः ॥
 ब्राह्मणासःपितरःमोम्यामःशिवेनोद्यात्रागृधिवीऽअनेहमा । पणानःपलुदुगिताऽतापुशोरश्रामाःकनोऽअग्रथःमऽ
 शत ॥ २० ॥ मयुर्णवस्तेमगोऽअस्यादंतोगोभिःमंनद्रापततिप्रसूता । यवानरःमंनुविचद्वयंतित्रास्मभ्यमिषवःग्रभ
 यंसन् ॥ ऋजीतेपरिवृंभिन्नोश्मभचनुनस्तनूः । मोमोऽअर्धव्रीतुनोर्दतिःग्रभयच्छतु ॥ आज्ञेप्रतिमान्यंवाजघनो
 सप्तदजीपक्तिः ॥ (नमोऽद्रव्याःप्रतोदइत्यत्राश्रोदेवतेति क्वेतिन । चतुर्दशालनप्रतिनक्षत्राणाचतुर्दशानितिगानहोक्तेःनचानमेममुक्त । प
 राःपंचसादयोऽहिलिगोक्तदेवताइत्येवमनु रमण्यामद्यामत्योद्वेगोत्रिदेवाइति क्वेतिनन्यतेवदेवतया ॥ पंचदशदिश्वोऽिगानसुनयना

ऋक्सं.

अ-५अ. १

॥ ७ ॥

मंडलं ७

अनु. १

॥ ७ ॥

उपजिघ्रते । अश्वानिप्रचतसोऽश्वान्त्समस्तुचोदय ॥ अहिरिवभोगैः पर्येतिवाहुं ज्यायहेतिपरिवाधमानः । हुस्तमो
विश्ववयुनानिविद्वान्पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः ॥ आलाक्यारुरुशीर्ष्यथोयस्याऽअयोमुखं । इदंपुर्जन्यरेतस
ऽइष्वैदेव्यैवृहश्मः ॥ २१ ॥ अवसृष्टा परापतुशरं व्येब्रह्मसंशिते । गच्छामित्रान्प्रपद्यस्वामीषांकंचनोच्छिषः ॥
यत्रवाणाः संपतंतिकुमाराविशिखाऽइव । तत्रानोब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्मयच्छतुविश्वह्राशर्मयच्छतु ॥ मर्मानितेव
मैणाछादयामिसोमस्त्वारजामृतेनानुवस्तां । उरोर्वरीयोवरुणस्तेकृणोतुजयंतत्वानुदेवामदंतु ॥ योनःस्वोऽअरणो
यश्चनिष्ठो जिघांसति । देवास्तंसर्वधूवतुब्रह्मवर्मममांतरं ॥ २२ ॥ (इतिभारद्वाजपष्ठमंडलं समाप्तं अत्रसूक्तानि ७५)
(७।१।१) अग्निनरोदीधितिभिरण्योहस्तंच्युतीजनयंतप्रशस्तं । दूक्षाव्योयोदमऽआसनित्यः ॥ प्रच्छोऽअग्नेदीदिहिपुरो नोजसयासम्यग्यविष्ट ।
पवन्त्सुप्रतिचक्षमवसेकुतश्चित् । दूक्षाव्योयोदमऽआसनित्यः ॥ प्रच्छोऽअग्नेदीदिहिपुरो नोजसयासम्यग्यविष्ट ।
दानोऽअग्नेधियारयिसुवीरं स्वपत्यं संहस्यप्रशस्तं । नयंयावातरतियातुमावान् ॥ २३ ॥ उपयमेतियुवतिः सुदक्षदो
पावस्तोर्हविष्मतीघृताची । उपस्यैनमूरमतिर्वसुधुः ॥ विश्वाऽअग्नेपदुहारतीर्थेभिस्तपोभिरदहोजरूथं । प्रनिस्वरं
इतिशौनकः) वासिष्ठेसप्तममंडलेपदनुवाकाः (७।१।१) अग्निनरइतिपंचार्थिशतृचस्यसूक्तस्यभैत्रावरुणिवसिष्ठोमिर्विरादंज्याः सप्तत्रिष्टुभः ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. २

॥ ८ ॥

स्यसूनोसहसोनशत ॥ समर्तोऽअग्नेस्वनीकरवानमर्त्येयऽआजुहोतिहव्यं । सदेवतवसुवनिदधाति यंसरि रथीपच्छमा
नुऽएति ॥ महो नोऽअग्ने सुवितस्य विद्वान्नयिंसरिभ्यऽआवहावृहते । येन वयंसहसावन्मदेमा विक्षितासुऽआयुपासुवी
राः ॥ नूमे ब्रह्माण्य ॥ २७ ॥ इति पंचमाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

पंचमाष्टके सूक्तानि १२९ ऋचः १२६३

मंडलं ८

अनु. १

त्रयस्त्रिंशष्टके वर्गाः २७ सूक्तानि १५ ऋचः १४३ ॥ त्यागः ॥ अश्विभ्यामिद. २२ उषस. १२ मरुद्भ्य. ११ मित्रावरुणाभ्या. ११
इंद्रावरुणाभ्या. ११ इंद्राविष्णुभ्या. ८ द्यावापृथिवीभ्या. ६ सवित्र. ६ इद्रासोमाभ्या. ५ बृहस्पतय. ३ सोमारुद्राभ्या. ४ वर्मणइ.
धनुषइ. ज्यायाइ. धनुष्कोट्या. इपुध्याइ. सारथिराश्मिभ्य. अश्वेभ्य. रथाये. रथगोपेभ्य. ब्राह्मणपितृसोमद्यावापृथिवीष्वभ्य. इपुभ्य. २
प्रतोदाये. हस्तत्राणाये. इपुभ्य. २ युद्धभूमिकवचब्रह्मणस्पत्यादितिभ्य. वर्मसोमवरुणेभ्य. देवब्रह्मभ्य. अग्नये. २५ ॥ इति पंचमे प्रथमः ॥

॥

जुषस्वैकादशप्रमथिवोदशप्रवः प्राग्रयेनववैश्वानरीयंतुप्रसन्नाजः सप्तप्रवो देवमिधेवोधिषलुषो न पंचमहानगन्म
तृचैप्राग्रये वैश्वानरीयंसमिधाबृहत्याद्युपसद्याय पंचोनागायत्रमेनावोद्वादशप्रागार्थमग्नेभवससद्वैपदत्रैष्टुभैत्वे
हंपचाधिकद्वैष्टुदासः पैजवनस्य चतस्रोत्यादानस्तुतिर्यस्तिग्मशृंगएकादश ॥ २ ॥

॥ ८ ॥

॥

[illegible]

स्वप्नमनस्यतिः स्वावाक्यविरुद्धम् ।

श्रवसं.

अ. ५ अ. २

॥ ९ ॥

नऽआत्तामादतिः सुपुत्रास्वाहादेवाऽअमृतमादयतां ॥ २ ॥ (७११३) अग्निवोदेवमग्निभिः सजोषायजिष्ठदत्त
मध्वरेकृणुध्वं । योमर्त्येषनिधुर्विकृतावातपुर्धधुताक्षः पावकः+ ॥ प्रोथदभ्योनयसे विव्यन्यदामहः संवरणाद्व्यस्था
त् । आदस्यवातोऽअनुवातिशोचिरधस्तेवर्जनं कृणुमस्ति ॥ उद्यस्यतेनवजातस्यवृणोमेचरत्यजराऽइधानाः ।
अच्छाद्यामरुषोधूमऽएतिसंदूतोऽअग्नऽइयसेहिदेवान्+ ॥ विचस्यतेपृथिव्यां पाजोऽअग्ने तृषुयदन्नासमवृकजंभैः ।
सेनेवसुष्टाप्रसितिष्टएतियवंनदस्मज्जहविवेक्षि ॥ तमिहोषातमषसियविष्ठमग्निमत्यंनमर्जयंतनरः । निशिशानाऽ
अतिष्ठिमस्यथोनौदीदार्यशोचिराहुतस्यवृष्णः ॥ ३ ॥ सुसंहकैस्वनीकप्रतीकं विचदुक्मोनरोचसऽअपाके ।
तन्युरेतेशुष्मश्चित्रोनसूरः प्रतियक्षिमानुं+ ॥ यथावः स्वाहामयेदार्शोमपरीक्षाभिर्घृतवद्भिश्चहृव्यैः । निशिशानाऽ
सूनोसहसोनिपाहिस्मत्सरीन्जरिवृन्जातवेदः ॥ यावतेति संतेदाशुषेऽअधृष्टागिरोवायाभिर्नवतीरुरुष्याः । ताभिर्नः
त्रोरुशेन्योजनिष्टदेवयज्यायसकृत्+ ॥ निर्यत्येवस्वधितिः शुचिर्गात्स्वयाकृपातन्वाइरोचमानः । आयोमा
यणतेचसंतुयुयं पातस्वस्तिभिः सदानः ॥ ४ ॥ (७११४) प्रवः शुक्रायभानवैभरध्वं हव्यं मतिं चामये सुपूतं । योदै
(७११३) अग्निवदतिदशर्चस्यसुक्लमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोमिषिष्ठुः । (७११४) प्रवः शुक्रायेतिदशर्चस्यसुक्लमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोमि

मंडलं ७

अनु. १

॥ ९ ॥

विशऽआयन्नसिक्तीरसमनाजहतीर्भोजनानि । वैश्वानरपूवेशोद्युचानःपुरोयदग्नेदुरयन्नदीदेः ॥ तवत्रिधातुपृथिवी
 ऽउतद्यौवैश्वानरव्रतमग्नेसचत । त्वंभासारोदसीऽआततथाजस्नेणशोचिपाशोद्युचानः ॥ त्वामग्नेहुरितोवावशाना
 गिरःसचतेधुनयोधृतार्चीः । पतिं कृष्टीनारथ्यरथीणवैश्वानरमुपसांकेतुमहां ॥ ७ ॥ त्वेऽअसुर्यैवसवोन्धृण्वनक्र
 तुंहितेमित्रमहोजुषंत । त्वंदस्यैरोकसोऽअग्नऽआजऽउरुज्योतिर्जनयन्नाथीय ॥ सजार्यमानःपरमेव्योमन्वायुर्नपाथः
 परिपासिसद्यः । त्वंभुवनाज्जनयन्नभिकृन्नपत्यायजातवेदोदशस्यन् ॥ तामग्नेऽअस्मेऽइषमेरयस्ववैश्वानरद्युमतीं
 जातवेदः । ययाराधःपिन्वसिविश्ववारपथुश्रवोदाद्युषेमर्त्यीय ॥ तनोऽअग्नेमघवर्ध्न्यःपुरुधुंरयिनिवाजंश्रुत्ययुवस्व ।
 वैश्वानरमहिनुःशर्मयच्छरुद्रेभिर्मग्नेवसुभिःसजोषाः ॥ ८ ॥ (७।१।६) प्रसन्नाजोऽअसुरस्यप्रशस्तिपुंसःकृष्टीनाम
 नुमाद्यस्य । इंद्रस्येवप्रतवसस्कृतानिवेदेदारुवंदमानोविवक्मि ॥ कविकेतुंधासिभानुमद्रेहिंन्वंतिशंराज्यंरोदस्योः ।
 पुरंदरस्यगीभिराविवासेर्ज्ञेत्तानिपूव्यामहानि ॥ न्यक्तून्मृथिनोमप्रवाचःपर्णारश्रद्धोऽअबुधोऽअयज्ञान् । प्रमृता
 न्दस्यूरग्निर्विवायपूर्वश्चकारापरौऽअयज्युन् ॥ योऽअपाचीनेतमसिमदतीःप्रार्चीश्चकारुवृतमःशचीभिः । तमीशा
 नंवस्वोऽअग्निं गृणीयेनतंदमयंतं पृतन्यून् ॥ योदेह्योऽअनमयद्वधस्यैर्योऽअर्यपत्नीरुपसश्चकारं । सनिरुध्यानहु

(७।१।६) प्रसन्नाजइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यैवत्रावरुणिर्वसिष्टोवैश्वानरोग्निब्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. २

॥ ११ ॥

जानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्वक्षे ॥ कयानोऽअग्नेर्विवसः सुवृत्तिकामुस्वधामृणवः शस्यमानः । कदाभवेमपत
यः सुदत्ररायो बं तारो दुष्टरस्य साधोः ॥ प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे विचत्सूर्यो नरो च ते बृहद्भाः । अभियः परुषृतना सुत
स्यौ द्युतानो दैव्योऽअतिथिः शुशोच ॥ असन्नित्वेऽआहवना निभूरिभुवो विश्वेभिः समनाऽअनीकैः । स्तुतश्चिदग्ने शृ
ण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ॥ इदं वर्चः शतसाः संसहसमुद्रग्रये जनिषीष्ट द्विवर्होः । शयत्स्तोतृभ्यऽआपयेभ
वातिद्युमर्दमीव चातनं रक्षोहा ॥ नूत्वामग्नऽईमहेव सिष्टाऽईशानं सूनो सहसो वसूनां । इवत्स्तोतृभ्यो मघवन्व्यऽआन
व्ययं पातस्व स्तिभिः सदानः ॥ ११ ॥ (७।१।९) अबोधिनारऽउषसां मुपस्थाद्धोतामं द्रः कवितमः पावकः । दधा
ति कुतुमभयस्य जंतोर्हव्यादेवेषु द्राविणं सुकृत्सु ॥ समुक्ततयो विदुरः पणीनां पुनानोऽअर्कपुरुभोजसंनः । होतामंद्रो वि
शां दमूनास्तिरस्तमो ददशे राभ्याणी ॥ अमूरः कविरादिति विवस्वान्त्सु संसन्निमत्रोऽअतिथिः शिवोनः । चित्रभानुरुषसां
भाल्ये प्रांगर्भः प्रस्व १ आविवेश ॥ ईळेन्यो वो मनुष्यो गेपु समनगाऽअशु च जातवेदाः । सुसं दशाभानुना यो विभाति प्र
तिगावः समिधानं बुधंत ॥ अग्नेया हि दुत्यं १ मारिषण्यो देवाँऽअच्छा ब्रह्म कृतां गणेन । सरस्वतीं मरुतोऽअश्विना पोय
क्षिदेवान् ब्रह्मेयां यविश्वान् ॥ त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन्याक्षिराये पुरंधिं । पुरुणीथा जातवेदो जरस्वयं पातस्व
(७।१।९) अबोधिनार इति षट्चस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो मिषिष्टुप् ।

मंडलं ७

अनु. १

॥ ११ ॥

स्तिभिःसर्दानः ॥ १२ ॥ (७।१।१०) उपोनजारःपृथुपाजोऽअश्रेहृथितुदीद्यच्छोभुचानः । नृपाहरिःशुचिरा
 भतिभासाधियोहिन्वानडर्शुतीरजीगः ॥ स्वर्णवस्तोरुपसोमरोचियज्ञतन्वानाऽउशिजोनमन्त्रे । अग्निर्जन्मानि
 देवऽआविचिद्वान्द्रवहृतोदेवयावाचनिष्ठः ॥ अच्छागिरोमतयोदेवयतीराग्निथतिद्राधिगंभिक्षमाणाः । ममदृशंस्र
 तीकुंस्वचंहव्यवाहमरुतिमानुपाणां ॥ इन्द्रोऽअग्नेयसुभिःसजोषारुद्रंरुद्रेभिरावहावहंतं । आद्रित्येभिरादितिविश्व
 जेन्यांवृहस्पतिमृक्कभिर्विभ्वारं । मंद्रहोत्तरमगिजोयविष्ठमग्निंविर्गऽरुळतेऽअधरेयु । महिक्षपावौऽअभनद्रयीणा
 मतंद्रोदुतोयजथायदेवान् ॥ १३ ॥ (७।१।११) महौऽअस्यध्वरस्यप्रकेतोऽनक्रुतेत्वदुमृतामादयते । आविश्वे
 भिःसरथंयाहिदेवेन्येन्नोहोताप्रथमःसदेह ॥ त्वामीळतेऽअजिरंदुल्यायहविष्मतेःसदुमिन्मानुषामः । यस्यदेवेरासे
 दोवर्हिर्ग्रेहन्यस्मैसुदिनाभवति ॥ त्रिश्चिदुक्तोःप्रचिकितुर्वसुर्नित्येऽअंतर्दार्शुमर्त्याय । मनुष्वदन्नऽउहयक्षिदेवा
 न्मवानोदृतोऽअभिशस्तिपावां ॥ अगिरीशेवृहृतोऽअध्वरस्याग्निविश्वसहविर्यःकृतस्य । कृतुर्हस्यसवोजुयंताथोदे
 वादधिरहव्यवाहं ॥ आग्नेवहविरयायेवानिंद्रज्येष्ठासऽउहमादयंतां । इमंयुजंदिविदेवेयुधेहिययंपातस्वस्तिभिः

(७।१।१०) उपोनजारइतिपचर्चस्सूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वैसिष्ठोभिस्त्रिष्टुप् । (७।१।११) महौअमीतिपचर्चस्सूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वैसिष्ठो

सदानः ॥ १४ ॥ (७।१।१२) अगन्ममहानमसायविष्टयोदीदायसमिद्धः स्वेदुरोणे । चित्रभानुरोदसीऽअंतरुर्वा
स्वाहुतांविश्वतःप्रत्यंचं ॥ समह्नाविश्वदुरितानिसाह्वानग्निष्टवेदमऽआजातवेदाः । सनोरक्षिषद्दुरितादवद्यादुस्मा
नृणतऽउतनोमघोनः ॥ त्वंवरुणऽउतमित्रोऽअग्नेत्वांर्वधितिमतिभिर्वसिष्ठाः । त्वेवसुसुपणनानिसंतुययंपातस्वस्ति
भिःसदानः ॥ १५ ॥ (७।१।१३) प्राग्नेयैविश्वशुचेधियंधैसुरग्नेमन्मधीतिभरध्वं । भरेहृविर्नचहृषिप्रीणानोवै
श्वानराययतेयेमतीनां⁺ ॥ त्वमग्नेशोचिषाशोशुचानऽआरोदसीऽअपृणाजायमानः । त्वंदेवाँऽअभिशास्तेरमुंचोवै
श्वानरजातवेदोमहित्वा ॥ जातोयदग्नेभुवर्नव्याव्यख्यःप्रशून्नगोपाऽइर्यःपरिज्मा । वैश्वानरब्रह्मणेविदगातुंययंपातस्व
स्तिभिःसदानः ॥ १६ ॥ (७।१।१४) समिधाजातवेदसेदेवार्यदेवहृतिभिः । हृविभिःशूक्रशौचिपेनमस्विनोवयंदो
शेमाशयै ॥ वयंतेऽअग्नेसमिधाविधेमवयंदोशेमसुष्टुतीर्यजत्र । वयंघृतेनाध्वरस्यहोतव्यंदेवहृविर्पभद्रशोचे ॥ आ
नोदेवेभिरुपदेवहृतिमग्नेयाहिवर्पद्वृत्तिलुषाणः । तुभ्यंदेवायदाशतःस्यामययंपातस्वस्तिभिःसदानः ॥ १७ ॥ (७।१।१५)
उपसर्वायमीहृषऽआस्यैजुहुताहृविः । योनोनेदिष्टमाय्यं ॥ यःपंचचर्षणीरुभिर्निपुसादुदमेदमे । कविर्गृहपतिर्युवां ॥

मिखिष्टुप् । (७।१।१२) अगन्मेतिवचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिवंसिष्टोमिखिष्टुप् । (७।१।१३) प्राग्नेयइतिवचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिवंसिष्टो
वैश्वानरोमिखिष्टुप् । (७।१।१४) समिधेतिवचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिवंसिष्टोमिखिष्टुवाद्यावृहती । (७।१।१५) उपसर्वायेतिपंचदशवस्य

श्रवसं.

अ. ५ अ. २

॥ १३ ॥

रत्नं यजमानाय सुकृतो त्वं हरिर्लघाऽसि । आनऽकृते शिशी हि विश्वमत्विजं सशंसो यश्च दक्षते ॥ २१ ॥ त्वेऽअग्नेस्वा
हुतमियासः संतु सरयः । यंतारो ये मघवानो जनानामुर्वीदयं तगोनां ॥ येषां मिळाघृतं हस्तादुरोणऽऑऽअपि प्रातानि
धीदति । तौ त्वा यस्व स हस्यदुहो निदो यच्छानः शर्मदीर्घश्रुतः ॥ समं द्रयांच जिह्या वहिरासा विदुष्टरः । अग्ने रयिं
घवन्धो नऽआवहव्यदति च सूदय ॥ ये राधांसि ददुत्यभ्यामघाकामे नु अर्वसो महः । तौऽअंहसः पिपृहि पृष्टभिर्द्वशतं
पुर्भिर्बिष्य ॥ देवो वो द्रविणो दाः पूर्णो विवष्टासि च । उद्धांसि च ध्वमुपवापृणध्वमादिद्वो देवऽओहते ॥ तं होतारम
ध्वरस्य प्रचेतसं वाह्ने देवाऽअकृण्वत । दधाति रत्नं विधते सुवीर्यं मशिर्जनाय द्राशुभे ॥ २२ ॥ (७।१।१७) अग्ने भवसु
प्रमिधासमिद्धऽउत बर्हिर्बिष्या विस्तृणीतां ॥ उत द्धारऽउशती विअयंता मुत देवोऽउशतऽआवहेह ॥ अग्ने वीहि हवि
प्रायश्चिदेवान् स्वध्वरा कृणु हि जातवेदः ॥ स्वध्वरा कृरति जातवेदाय क्षेदेवोऽअमृतां न्यप्रयच्च ॥ वंस्व विश्वावार्योणि
प्रचेतः सत्या भवं त्वा शिषो नोऽअद्य ॥ त्वामते दधिरे हव्यवाहं देवासोऽअगऽऊर्जऽआनपातं ॥ ते ते देवा यदा शतः स्या
मम हो नो रत्ना विदधऽइयानः ॥ २३ ॥ (७।२।१) त्वेह यत्पितरश्चिन्नऽइंद्र विश्वावामाज रितारोऽअसन्वन् । त्वे
दियुजः सतो वृहयः । (७।१।१७) अग्ने भवेति सप्त र्वसूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो मिद्धि पदात्रिष्टुप् ॥ द्वितीयेनुवाके षोडशसूक्तानि
(७।२।१) त्वेह यदिति पंचविंशत्युच्यते सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ इन्द्रोऽत्यानां चतसृणां सुदासस्त्रिष्टुप् ॥

मंडलं ७

अनु. २

॥ १३ ॥

प॒रु॒वि॒द॒थे॒म॒ध॒वा॒चं ॥ नि॒ग॒व्य॒वो॒न॒वो॒द्रु॒ह्य॒व॒श्च॒प॒ष्टिः॒श॒ता॒सु॒षु॒षुः॒ष॒द्र॒स॒ह॒सा । प॒ष्टि॒र्वी॒रा॒सोऽअ॒धि॒ष॒डु॒वो॒यु॒वि॒श्वे॒दि॒द्र॒स्य॒
 वी॒र्यो॒क्ता॒नि ॥ इ॒न्द्रे॒णै॒ते॒त॒त्स॒वो॒वे॒र्वि॒षा॒णाऽआ॒पो॒न॒सृ॒ष्टाऽअ॒ध॒वं॒त॒नी॒चीः । दु॒र्मि॒त्रा॒सः॒प्र॒क॒ल॒वि॒न्मि॒र्मा॒ना॒ज॒हु॒र्वि॒श्व॒ानि॒
 भो॒ज॒ना॒सु॒दा॒से ॥ २६ ॥ अ॒र्ध॒वी॒र॒स्य॒शृ॒त॒पा॒म॒नि॒द्रं॒प॒रा॒श॒र्धं॒त॒नु॒देऽअ॒भि॒क्षां । इ॒द्रो॒म॒न्यु॒र्म॒न्य॒न्यो॒मि॒मा॒य॒भे॒जे॒प॒थो॒व॒
 र्ती॒नि॒प॒त्य॒मा॒नः ॥ आ॒ध्रे॒णी॒चि॒त्त॒द्वे॒क॒च॒का॒र॒सि॒ह्य॒चि॒त्ये॒त्वे॒ना॒ज॒घा॒न । अ॒व॒स॒क्ती॒र्व॒द्या॒वृ॒श्च॒दि॒द्रुः॒प्रा॒य॒च्छ॒द्वि॒श्व॒ाभो॒ज॒ना॒
 सु॒दा॒से ॥ श॒श्व॒तो॒हि॒श॒त्र॒वो॒रा॒र॒धु॒ष्टे॒भे॒द॒स्य॒चि॒च्छ॒र्ध॒तो॒वि॒द्रं॒धि । म॒र्तो॒ऽए॒नः॒स्तु॒व॒तो॒यः॒कृ॒णो॒ति॒ति॒ग्मं॒त॒स्मि॒न्नि॒ज॒हि॒व॒ज्रं॒
 मि॒द्र ॥ आ॒व॒दि॒द्र॒य॒मु॒ना॒त॒त्स॒व॒श्च॒म्रा॒त्र॒भे॒दं॒स॒र्व॒ता॒ता॒मु॒षा॒य॒त् । अ॒जा॒स॒श्च॒शि॒ग्र॒वो॒य॒क्ष॒व॒श्च॒व॒लि॒ंशी॒र्षा॒णि॒ज॒भ्रू॒र॒श्व॒या॒नि ॥
 न॒तं॒ऽइ॒द्र॒सु॒म॒त॒यो॒न॒रा॒यः॒सं॒च॒क्षे॒पूर्वा॒ऽउ॒ष॒सो॒न॒नू॒लाः । दे॒वं॒कं॒चि॒न्मा॒न्य॒मा॒नं॒ज॒घा॒व॒त्स॒म॒ना॒बृ॒ह॒तः॒शं॒वरं॒भे॒त् ॥ २७ ॥
 प्र॒ये॒ग॒हा॒द॒र्म॒म॒दु॒स्त्वा॒या॒प॒रा॒श॒रः॒श॒त॒या॒तु॒र्व॒सि॒ष्ठः । न॒तै॒भो॒ज॒स्य॒स॒ख्यं॒मृ॒षं॒ता॒धा॒सु॒रि॒भ्यः॒सु॒दि॒ना॒व्यु॒च्छा॒न् ॥ हे॒न॒सु॒दु॒व॒
 व॒तः॒श॒ते॒गो॒द्वार॒था॒व॒धू॒मं॒ता॒सु॒दा॒सः । अ॒ह॒श्न॒पै॒ज॒व॒न॒स्य॒द॒ानं॒हो॒ते॒व॒स॒द्य॒प॒र्यै॒मि॒रे॒भ॒न् ॥ च॒त्वा॒रो॒मा॒पै॒ज॒व॒न॒स्य॒दा॒नाः॒स॒
 दि॒ष्टयः॒क्व॒शु॒नि॒नो॒नि॒रे॒के । ऋ॒ज्रा॒सो॒मा॒पृ॒थि॒वि॒ष्ठाः॒सु॒दा॒स॒स्तो॒कं॒तो॒का॒य॒श्र॒व॒से॒व॒हं॒ति ॥ य॒स्य॒श्र॒वो॒रो॒द॒सीऽअं॒त॒रु॒वा॒शी
 ष्णो॒शी॒ष्णो॒चि॒व॒भा॒जा॒वि॒भ॒क्ता । स॒प्तो॒दि॒द्रं॒न॒स॒व॒तो॒गु॒णं॒ति॒नि॒यु॒ध्या॒म॒धि॒म॒शि॒श॒ाद॒भी॒कै ॥ इ॒मं॒न॒रो॒म॒रु॒तः॒स॒श्र॒ता॒नू॒दि॒वो

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ३

॥ १५ ॥

खाचक्षुरोविताचनणां ॥ नृऽइंद्रशूरस्तवमानऽजुतीब्रह्मजूलस्तन्वावावृधस्व । उपनोवाजोन्मिमीह्युपस्तीन्युयंपति
स्वस्तिभिःसदानः ॥ ३० ॥ ॥ इतिपंचमाष्टकेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥
चतुर्विंशध्यायेवर्गाः ३० सूक्तानि १८ ऋचः १५६ ॥ त्यागः ॥ समिद्धायाग्रय. नराशंसाये. इळाये. बर्हिषद्. देवीभ्योद्वाग्यद्.
उपासानक्ताभ्या. दैवीभ्योहोतृभ्या. सरस्वतीळाभारतीभ्य. त्वष्ट. वनस्पतय. स्वाहाकृतीभ्य. अग्नय. २० वैश्वानरायाग्रय. १६ अग्नय. ३३
वैश्वानरायाग्रय. ३ अग्नय. ३७ इंद्राये. २१ सुदासायेद. ४ इंद्राये. ११ ॥ इतिपंचमेद्वितीयः ॥

उग्रोदशासाविपिवनवैराजमृतं त्यामुदुपड्योनिरातेनसोमः पंचेन्द्रनरोब्रह्माणोयसोमआनः प्रवोद्धादशगायत्रं
त्रिविराळंतमोषुसप्ताधिकाप्रगार्थं तृतीयाद्विपदासौदासैरशौप्रक्षिप्यमाणाः शक्तिरंत्यग्रगाथमालेभेसोर्धर्चउक्ते
दह्यतंतपुत्रोक्तं वसिष्ठः समापयतेतिशाव्यायनकंचसिष्ठस्यैवहतपुत्रस्यार्पमितितांडकं श्वित्यंचः पठूनासंस्तवोव
सिष्ठस्यसपुत्रस्येद्रेणवासंवादः प्रशुक्रापंचाधिकावैश्वदेवंहाद्याएकविंशतिर्द्विपदाअब्जामहेरर्धर्चउत्तरोहिबुध्या
यशंनः पंचोनाशांतिः ॥ ३ ॥

॥ हरिःओम् ॥ (७।२।३) उग्रोजज्ञेवीर्यीयस्वधावान्चक्रिरेपोनय्योयत्करिष्यन् । जग्मिर्गुर्वानुपदनमवोभिस्त्राता
(७।२।३) उग्रोजज्ञेइतिदशर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठइंद्रब्रिष्टुर् ॥

॥ १५ ॥

मंडलं ७

अनु. २

नऽद्वन्द्वेन सोमहश्चित् ॥ हंता वृत्रमिन्द्रः शूरावानः प्रावीश्ववीरो जरितारमती । कर्ता सुदामेऽअहवाऽउलोकं दाता वसु
 मुहुरावाशुपेभूत् ॥ यध्मोऽअनवर्षखजकृत्समद्वाशूरः सत्रापाद्भुजपुमर्षाढिः । व्यासऽद्वन्द्वः पृतनाः स्योजाऽअधाविश्व
 शत्रुयतैजघान ॥ बुभेचि दिन्द्रो दसीमहि त्याप प्राथत विषीभिस्तु विष्मः । निवज्रमिन्द्रो हरिवाग्निमिक्षन्समं धमाम
 भेषुवाऽउवोच ॥ दृषज्जानवृणं गणाय तमुचिन्नारीनर्यससूत्र । प्रयः सेनानीरधनुभ्योऽअस्तीनः सत्वागवेपणः सध
 षणुः ॥ १ ॥ नूचि त्सभे ते जनो नरे पन्मनो योऽअस्य घोस्मा विनासात् । युज्ञैर्यऽद्वन्द्वे दधते दुवा सिक्षयत्सरायऽक्रतुपा
 ऽक्रते जाः ॥ यदि द्रुपूर्वोऽअपराय शिक्षन्नयज्याया न कनीय सो देष्णं ॥ अमृतऽइत्पयीसीतदूरमाचिन्ना चिन्त्यं भरार
 थिनः ॥ यस्तऽद्वन्द्वं प्रियोजनो ददाश दसं स्त्रिरेकेऽअद्रिवः सखाति । वयं तेऽअस्यांसुमतौ च निष्ठाः स्याम वरूथेऽअघ्नतो नृपा
 तौ ॥ एषः स्तोमोऽअचिक्रद्वृषातऽउतस्तामुमैघवन्नक्रपिष्ट । रायस्का मो जरितारं तऽआगन्त्यमंगशक्रवस्यऽआशको
 नः ॥ स नऽद्वन्द्वं त्ययतायाऽइपेधास्मनो च ये मघव नो जुनाति । वस्वीपुतैज रित्रेऽअस्तु गत्किर्ययं पात ॥ २ ॥ (७।२।४)
 असो विद्वंगोऽक्रजीकमं धोन्यस्मिन्निद्रो जनुपैमुवोच । वो धामसित्वा हर्यथ्ययज्ञैर्वो धानः स्तोममं धसो मे देषु ॥ प्रयंति
 यज्ञं विपयंति वहिः सोममादो विदथे दुप्रवाचः । न्युभ्रियं ते यगसो गभादा दूरऽउपन्दो वृषणो न पाचः ॥ त्वमिन्द्र स्रविं तु

(७।२।४)

प्रकृतं.

अ. ५ अ. ३

॥ १६ ॥

मंडलं ७

अनु. २

॥ १६ ॥

वाऽअपस्कःपारिषिताऽअहिनाशूरपूर्वाः । त्वद्वावक्रेश्योऽनधेनारेजतेविश्वकृत्रिमाणिभीषा- ॥ भीमोर्विवेषायुधे
भिरेषामपांसिविश्चानयीणिविद्वान् । इंद्रःपुरोजहपाणोचिदूधोद्विजहस्तोमहिनाजघान ॥ नयातवऽइंद्रज्जुबुनो
नवर्दनाशविषवेद्याभिः । सर्वधदुर्योधिविषुणस्यजुतोमांशिश्नदेवाऽअपिगुह्यतनः ॥ ३ ॥ अभिक्त्वैद्रभूरधज्जमन्नतेवि
व्यज्जहिमानुरजांसि । स्वेनाहिवृत्रंशवसाजघंधनशत्रुरंतेविविदद्युधाते ॥ देवाश्चित्तेऽअसुर्योयपूर्वेनुक्षत्रायममिरेस
अवोविभूथशतमूतेऽअस्मेऽअभिक्षत्तुस्त्वावतोवरूता- ॥ कीरिश्चिद्वित्त्वामवसेजुहावेदानमिंद्रसौभगस्यभूरेः ।
तुस्मातेवसासमीकेऽभीतिमर्योवनुपांशवांसि ॥ सर्वायस्तऽइंद्रविश्वहस्यामनमोबुधासोमहिनातरुत्र । वृन्वं
रित्रेऽअस्तुशक्तिर्युं० ॥४॥ (७।२।५) पिवासोममिंद्रमर्दतुत्वायतेसुषावहर्ह्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यासुयतोनावो ॥ यस्ते
मदोयुज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्ह्यश्च हंसि । सत्वामिंद्रप्रभूवसोममत्तु ॥ बोधासुममघवन्वाचमेमांयातेवासिष्ठोऽअर्च
तिप्रशंसि । इमाजहंसधमादेजुषस्व ॥ श्रुधीहवविपिपानस्याद्रवोधाविप्रस्यार्चतोमनीषां । कृष्वादुवांस्यंतमासचे
मा- ॥ नतेगिरोऽअपिमृष्येतुरस्यनसुष्टुतिर्मसुर्यस्यविद्वान् । सदतेनामस्वयशोविवक्मि ॥ ५ ॥ श्रुरहितेसर्वना
(७।२।५) पिवासोममिति नवर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठइंद्रोविराकंत्यात्रिष्टुप् ।

अ. ५ अ. ३

॥ १७ ॥

हिःसोमपेयाययाहि । वहतुत्वाहरोमद्व्यचमांगपमच्छातवसंसदाय ॥
हयश्वयाहि । वरीवृजत्स्थविरेभिःसुशिप्रास्मेदधद्वृषणंशुष्ममिद्र ॥
धासि । इन्द्रत्वायमर्कऽइन्द्रवसूनांदिवीवद्यामर्धिनःश्रोमंतंघाः ॥ एषःस्तोमोमहऽउग्रायवाहेधुरीइवात्योनवाजयज्ञ
इधंपिन्वमघवर्चःसुवीराययंपात० ॥ ८ ॥ (७२१८) आतेमहऽइन्द्रोत्युग्रसर्मन्यवोयत्समरतसेनाः । एवानऽइन्द्रवार्यस्यपूधिमतेमहीसुमतिवैविदाम ।
हुन्नर्थस्यबाहोमातेमनोविष्वद्यश्चिचरीत् ॥ शततैशिप्रिन्नतयःसुदासेसहस्रंशंसाऽउतरातिरस्तु । जहिवधर्वनुषोमत्यस्या
पुहिनिनित्सोरानोभरसंभरणवसूनां ॥ त्वावतोहीन्द्रकृत्वेऽस्मि त्वावतोवितुःशूरातौ । विश्वेदहानिताविषीवऽउग्र्योऽओर्कःकृणु
स्मेद्युन्नमधिरलंचधेहि ॥ कुत्साऽएतेहयश्वायशपमिन्द्रसहोदिवज्रतमियानाः । इधंपिन्वमघवर्चःसुवीराययंपात० ॥ ९ ॥ (७२१९)
स्वहरिवोनर्मर्धीः ॥ एवानऽइन्द्रवार्यस्यपूधिमतेमहीसुमतिवैविदाम । इधंपिन्वमघवर्चःसुवीराययंपात० ॥ १० ॥ (७२२०)
मवाजं ॥ कुत्साऽएतेहयश्वायशपमिन्द्रसहोदिवज्रतमियानाः । इधंपिन्वमघवर्चःसुवीराययंपात० ॥ ११ ॥ (७२२१)
नसोमऽइन्द्रमसुतोममादुनाब्रह्माणोमघवानंसुतासः । तस्माऽउक्थंजनयेयज्जुजोपन्नवन्नवीयःशृणवद्यथानः ॥ उक्थ
ऽउक्थेसोमऽइन्द्रममादनीथेनीथेमघवानंसुतासः । यदासुवार्धःपितरंनपुत्राःसमानदक्षाऽअवसेहर्वते । चकारुताकृ
(७२२८) आतेमहइतिपडवस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठइन्द्रस्त्रिष्टुप् । (७२२९) नसोमइतिपंचवस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठइन्द्रस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं ७

अनु. २

॥ १७ ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ३

॥ १८ ॥

प्रति॒यच्चाष्टेऽअ॒नृत॒मने॒नाऽअ॒र्वा॒द्वि॒तावरु॑णो॒मायी॑नः॒सात् ॥ वो॒चेमे॒दि॒द्र॒म॒घवा॑नमे॒नम॑हो॒रायो॒राध॑सो॒यद॑दन्नः । योऽ
अ॒र्च॒तो॒ब्र॒ह्म॒कृ॒ति॒मा॒वि॒ष्टो॒य॒यंपा॑त० ॥ १२ ॥ (७।२।१२) अ॒यंसो॑म॒ऽइ॒द्रु॒भ्य॑सु॒न्वऽआ॒तु॒प्र॒या॒हि॒र॒वि॒स्त॒दो॒काः ।
पि॒वा॒त्त्व॒१स्य॑सु॒षु॒तस्य॑चा॒रो॒दो॒म॒घा॒नि॒म॒घव॑न्नियानः⁺ ॥ ब्र॒ह्म॒न्वी॒र॒ब्र॒ह्म॒कृ॒ति॒जु॒षा॒णो॒वा॒ची॒नो॒ह॒रि॑भि॒र्या॒हि॒त॒यं । अ॒स्मि
न॒त्वा॒या॒धा॒मऽइ॒द्र॒शृ॒णवो॑ह॒वेमा॑⁺ ॥ उ॒तो॒घा॒ते॒पु॒रु॒ष्या॒इ॒डा॑स॒न्येषां॑पू॒र्वेषा॑म॒शृ॒णो॒र्क॒षी॒णां । वि॒श्व॒मती॑रा॒त॒त
त० ॥ १३ ॥ (७।२।१३) आ॒नो॒दे॒व॒श॒व॒सा॒या॒हि॒शु॒भि॒न्भ॒वा॒वृ॒धऽइ॒द्रा॒योऽअ॒स्य । योऽअ॒र्च॒तो॒ब्र॒ह्म॒कृ॒ति॒मा॒वि॒ष्टो॒य॒यंपा॑
क्ष॒त्रा॒य॒पौ॒त्या॒य॒शू॒र ॥ ह॒वै॒तऽउ॒त्वा॒ह॒व्यं॒वि॒वा॒चि॒त॒न॒प॒शू॒राः॒सूर्य॑स्य॒सा॒तौ । त्वं॒वि॒श्वे॑षु॒से॒न्यो॒जने॑षु॒त्वंवृ॒त्रा॒णि॒रं॒ध॒या॒स॒ह
व॒यंते॑त॒ऽइ॒द्र॒ये॒च॒दे॒व॒स्त॒वै॒त॒शू॒र॒द॒द॒तो॒म॒घा॒नि । य॒च्छा॑सि॒र॒भ्यऽउ॒प॒मं॒व॒रु॒थं॒स्वा॒भु॒वो॒ज॒र॒णम॑श्र॒वंत ॥ वो॒चेमे॒दि॒द्र॒म॒घवा॑
(७।२।१२) अ॒यंसो॑म॒इति॑पंच॒र्चस्य॑सू॒क्त॒समै॒त्रावरु॑णि॒र्वसि॑ष्टं॒द्र॒क्षि॒ष्टम् । (७।२।१३) आ॒नो॒दे॒व॒इति॑पंच॒र्चस्य॑सू॒क्त॒समै॒त्रावरु॑-

मंडलं. ७

अनु. २

॥ १८ ॥

नमेनमहोरायोराधसोयददन्नः । योऽअर्चतोन्नहकृत्तिमविष्टोऽग्र्यंपात० ॥ १४ ॥ (७।२।१४) प्रवऽइंद्रायमादंनं
हयैश्वायगायत । सखायःसोमपाने ॥ शंसेदुक्थंसदानंवऽवतद्युधंयथानरः । चक्रमासत्यराधसे ॥ त्वंनऽइंद्रवान्
युस्त्वंगव्युःशतक्रतो । त्वंहिरण्ययुर्वसो ॥ वयमिंद्रत्वायवोभिप्रणोनुमोदयन् । विद्धीत्वैश्वस्यनोवसो ॥ मानोनिदे
चवर्त्तयेयोरधीरराब्णे । त्वेऽअपिक्तुर्मम ॥ त्वंवर्मोसिसप्रथःपुरोयोधश्चवृत्रहन् । त्वयाप्रतिव्रुवेयुजा ॥ १५ ॥
महोऽवृत्तासियस्यतेनुस्वधावरीसहः । मुन्नातैऽइंद्रोदसी ॥ तंत्वांमरुत्वतीपरिभुवद्वर्णीसयावरी । नक्षमाणासह
द्युभिः ॥ ऊर्ध्वासस्त्वान्विदवोभुवन्दस्ममुपद्यवि । संतेनमंतकृष्टयः ॥ प्रयोमहेमहिद्वधैभरध्वंप्रचेतसेप्रसुमुतिकृणु
ध्वं । विशःपूर्वीःप्रचराचर्पणिप्राः ॥ उरुव्यचसेमहिनेमुवृत्किमिंद्रायवृक्षजनयंतविप्राः । तस्यत्रतानिनिर्भिनंतिधी
राः ॥ इंद्रवाणीरनुत्तमन्युमेवसन्नाराजानंदधिरैसहधै । हयैश्वायवर्हयासमापीन् ॥ १६ ॥ (७।२।१५) मोयु
त्वावाघतश्चनारेऽअस्मन्निरैरमन् । आरात्तोच्चित्सधमादंनऽआर्गहीहवासन्नपश्रुधि ॥ इमेहितेवृक्षकृतःसुतेसचाम

(७।२।१४) प्रवइंद्रयेतिद्वादशसूक्तस्यमैत्रावरुणिवैसिष्टइंद्रोऽग्नयत्यास्तिसोविराजः । (७।२।१५) मोपुत्वेतिसप्तविंशत्यु-
चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिवैसिष्टइंद्रः प्रथमाचतुर्थीपष्ठयादियुगचश्चद्वह्ल्यःद्वितीयापचम्याद्ययुगचश्चसतोवृह्ल्यःरायस्क्रामइतिचतीयाद्विप-
दाविराट् (इंद्रक्रतुनइत्यर्चोवांसिष्टःशक्तिःपिरितिशाट्यायनत्राक्षण, इंद्रक्रतुनइत्यगद्वयत्समकस्यशक्तिःपिरितिताडकत्राक्षणं ।)

धौनमक्षऽआसते । इंद्रेकामंजरितारौवसुयवोरथेनपादुमादधुः ॥ रायस्कांमोवज्रहस्तंसुदक्षिणपुत्रोनपितरह्वे ॥
 इमऽइंद्रायसुन्विरेसोमासोदध्याशिरः । तौऽआमदायवज्रहस्तपीतयेहरीभ्यांयाह्योकुऽआ⁺ ॥ श्रवच्छुत्कर्णऽइयतेव
 सूनांनूचिन्नोमर्धिपद्मिः । सद्यश्चिद्यःसहस्राणिशताददृशकिर्दित्संतमार्मिनत् ॥ १७ ॥ सवीरोऽअग्रतिष्कुतऽइंद्रे
 णशूशुवेदृभिः । यस्तैगभीरासर्वनानिवृत्रहन्त्सुनोत्याचुधार्वति ॥ भवाचरुंधंमघवन्मघोनांयत्समजासिर्धतः । वि
 त्वाहंतस्यवेदनंभजेमह्यादूणाशौभरागयं ॥ सुनोतासोमपान्नेसोममिंद्रायवज्रिणे । पचतापत्कीरवसेकृणुच्वमित्पणञ्चि
 त्पुणतेमयः ॥ मार्त्तधतसोमिनोदक्षतामहेकृणुध्वरायऽआतुजे । तरणिरिज्यतिक्षेतिपुष्यतिनदेवासःकवल्वे ॥
 नर्किःसुदासोरथंपर्योसनरीरमत् । इंद्रेयस्यावितायस्यमरुतोगमत्सगोमतिव्रजे⁺ ॥ १८ ॥ गमद्वाजैवाजयञ्चिद्रुम
 त्योयस्यत्वमविताभुवः । अस्माकैवोध्यवितारथानामस्माकंशूरनुणां⁺ ॥ उदिह्वस्यरिच्यतेशोधनंनजिग्युषः । यऽ
 इंद्रोहरीवाञ्चदंभतितरिपोदक्षदधातिसोमिनि ॥ मंत्रमखर्वसुधितंसुपेशंसंधातयज्ञियेष्वा । पर्वीश्चनप्रसितयस्तरति
 तंयऽइंद्रेकर्मणाभुवत् ॥ कस्तमिंद्रत्वावसमामल्योदधरति । श्रद्धाऽइत्तेमघवन्पर्यैद्विविवाजीवाजैसिपासति ॥ म
 घोर्नःसवृत्रहल्येषुचोदययेददतिप्रियावसु । तवप्रणीतीहर्षश्चसरिभिर्विन्वातरेमदुरिता⁺ ॥ १९ ॥ तवेदिद्रावमंव
 सुत्वंपुण्यसिमध्यमं । सुत्राविश्वस्यपरमस्यराजसिनिकिंश्रगोपुवृण्वते ॥ त्वंविश्वस्यधनदाऽअसिश्रुतोयऽईभवंत्याज

यः । तवायं विश्वः पुरुहूतपाथिवो वसुनीमभिक्षते ॥ यद्विद्वयावतस्त्वमेतावद्ब्रह्मीणीय । स्तोतारमिहिधिपेयदाव
सोनपापत्वार्यरासीय ॥ शिक्षेयमिन्महयते त्रिवेदिवेरायऽआकुहचिद्वेदे । न हित्वदन्यन्मघवन्नऽआय्यं वस्योऽअ
स्ति पिताचन ॥ तरणिरित्सपासति वाजं पुरंध्यायुजा । आवऽइंद्रं पुरुहूतं मे गिरानेमिते वसुद्र ॥ २० ॥ न दुष्ट
तीमत्योर्विंदे वसुनस्त्रेधं तं रधिर्न शत । सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देणायसायं त्रिवि ॥ अभित्वांशुरनो न मोदु
ग्धाऽइव धेनवः । ईशानमस्य जगतः स्वर्हशमीशानमिंद्रतृषुः ॥ न तवावोऽअन्योऽन्यो न पाथिवो न जातो न जनि
ज्यते । अश्वायंतो मघवाश्चिद्रवाजिनो गव्यं तं स्वाहवामहे ॥ अभीपतस्तदा भेरद्रज्यायुः कर्त्तृयसः । पुरुवसुहिर्मघव
न्तुनादसि भेरैरेच हव्यः ॥ पराणुदस्वमघवन्नमित्रान्त्सुवेदो नो वसूकृधि । अस्माकं वोध्यवितामं हाधुने भवावृधः सखी
नां ॥ इंद्रक्रतुं नऽआभरपितापुत्रेभ्यो यथा । शिक्षाणोऽअस्मिन् पुरुहूतयामिजीवाज्योतिरशीमहि ॥ मानोऽअज्ञा
तावृजनादुराभ्योऽुमांश्चिवासोऽअवर्कमुः । त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोतिं गूरतरामसि ॥ २१ ॥ (७।२।१६) अत्र
त्यंचोमादक्षिणतस्कपदाधियं जिन्यासोऽअभिहिप्रमंडुः । उन्तिष्ठन्वोचेपरिवर्हिणो न्नमैदूरादवितवेवसिंघाः ॥ दूरा

(७२।१६) श्रित्यचक्षतयुद्धस्य ।
देवताः अत्यानापचानवसिष्टो देवता त्रिष्टुप् (आद्यानां वानामिन्द्रो देवता अत्यानापचानवसिष्टः ।

अ. ५ अ. ३

॥ २० ॥

॥ २० ॥

मंडलं ७

अ. २

॥ २० ॥

दिद्रमनयन्नासुतेनतिरोवैशतमतिपातमूग्रं । पाशद्युन्नस्यवायुतस्यसोमात्सुतादिद्रोऽवृणीतावसिष्ठान् ॥ एवेन्नकुंसि
धुमेभिस्ततारेवेन्नकुंभेदमैर्भिर्जधान् । एवेन्नकुंभेदशराज्ञेसुदासंप्रावदिद्रोब्रह्मणावोवसिष्ठाः ॥ जुष्टीनरोब्रह्मणावःपि
तृणामक्षमव्ययंनकिलारिषाथ । यच्छकरीषुबृहदारवेणैद्रुशुष्ममदधातावसिष्ठाः ॥ उह्यामिवेतृष्णजोनाथितासो
दीधयुदशराज्ञेवृतासः । वसिष्ठस्यस्तुवतऽइद्रोऽअश्रोदुरुत्सुभ्योऽअकृणोदुलोकं ॥ २२ ॥ दंडाऽइवेद्रोऽअज
नासऽआसुन्परिच्छिन्नाभरताऽअर्भकासः । अर्भवच्चपुरऽएतावसिष्ठऽआदितृत्सूनांविशोऽअग्रथंत ॥ त्रयःकृष्णवति
भुवनेपुरेतस्त्रिषःप्रजाऽआर्याज्योतिरग्राः । त्रयोघ्रमसऽउपसंचतेसर्वाऽइतोऽअनुविदुर्वसिष्ठाः ॥ सूर्यस्येववक्ष
थोज्योतिरेपांसमुद्रस्येवमहिमागभीरः । वातस्येवप्रजवोनान्येनस्तोमोवसिष्ठाऽअन्वेतवेवः ॥ तऽइन्निष्ण्यंहृदयस्यप्र
कैतैःसहस्रवल्ग्यमभिसंचरंति । युमेनतुतंपरिधिवयंतोऽसुरसऽउपसेदुर्वसिष्ठाः ॥ विद्युतोऽज्योतिःपरिसंजिहानंमि
त्रावरुणायदपश्यतांत्वा । तत्तेजन्मोतैकवसिष्ठागस्योयन्वाविशऽअजभारं ॥ २३ ॥ उतासिमैत्रावरुणोर्वसिष्ठोर्व
द्याब्रह्मन्मनुसोधिजातः । द्रुप्संस्कृन्नब्रह्मणादैव्येनविश्वेदेवाःपुष्करेत्वादंत ॥ सप्रकेतऽउभयस्यप्रविद्वान्त्सहस्र
दानऽउतवासदानः । युमेनतुतंपरिधिवशिष्यन्नऽसुरसःपरिजज्ञेवसिष्ठः ॥ सत्रेहजाताविषितानमोभिःकुंभरेतैःसि
पिचतुःसमानं । ततोहृमानऽउदिद्यायमध्यात्ततोजातमृषिमाहुर्वसिष्ठं ॥ उक्थभृतैसामभृतैर्विभर्तिप्रावार्णविभ्रत्य

अ. ५ अ. ३

॥ २१ ॥

॥ २१ ॥

तपतिशत्रुस्वर्णभूमांमहासेनासोऽअमेभिरेषां ॥ आयन्नःपत्नीगमन्यच्छात्वष्टासुपाणिर्धातुवीरान् ॥ २६ ॥
प्रतिनःस्तोमंत्वष्टाजुषेतस्यादुस्मेऽअरमतिर्वसुधुः+ ॥ तानोरासत्रातिपाचोवसन्यारोदसीवरुणानीश्रृणोतु । वरुणी
भिःसुशरणोनोंऽअस्तुत्वष्टासुदत्रोविर्धातुरायः ॥ तन्नोरायःपर्वतास्तन्नऽआपस्तद्रातिषाचऽओषधीरुतद्यौः । वरुणी
स्यतिभिःपृथिवीसजोपाऽउभेरोदसीपारिपासतो नः ॥ अनूतदुर्वीरोदसीजिहातामनुद्युक्षोवरुणऽइंद्रसखा । वरुणी
श्वमरुतोयेसहासोरायःस्यामधुरुणधियध्वै ॥ तन्नऽइंद्रोवरुणोमित्रोऽअग्निरापऽओषधीर्वनिनोजुपत । शर्मन्त्याम
मरुतामपस्येयुयंपात० ॥ २७ ॥ (७।३।२) शनंऽइंद्राग्नीर्भवतामवोभिःशनंऽइंद्रावरुणारातहव्या । शर्मन्त्याम
सुवितायशंयोःशनंऽइंद्रापपणावाजसातौ ॥ शनोभगःशमुनःशंसोऽअस्तुशनःपुरंधिःशमुसंतरायः । शर्मन्त्याम
यमस्यशंसःशनोऽअर्यमापुरुजातोऽअस्तु ॥ शनोधाताशमुधतानोऽअस्तुशनऽउरूचीर्भवतुस्वधाभिः । शनःसत्यस्यसु
हृतीशनोऽअद्रिःशनोदेवानांसुहवनिंसंतु ॥ शनोऽअग्निज्योतिरनीकोऽअस्तुशनोमित्रावरुणावध्विनाशं । शनःसु
कृतोसुकृतानिंसंतुशनंऽइपिरोऽअभिवातुवातः ॥ शनोद्यावापृथिवीपर्वहूतौशमंतरिक्षंहशयेनोऽअस्तु । शनऽओष
धीर्वनिनोभवतुशनोरजस्यतिरस्तुजिष्णुः+ ॥ २८ ॥ शनंऽइंद्रोवसुभिर्देवोऽअस्तुशमादित्येभिर्वरुणःसुशंसः ॥ शं
(७।३।२) शनइंद्राग्नीइतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिसिष्टोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप । (अत्रसूक्तेसर्वेमिविश्वेदेवाः) ।

मंडलं ७

अनु. ३

॥ २१ ॥

नोरुदोरुद्रेभिर्जलापः शंनस्वष्टाभाभिरिहृणोतु ॥ शंनः सोमो भवतु ब्रह्म शंनः शंनो आवाणः शमु संतु यज्ञाः । शंनः स्व
 रूपां भित्तो भवतु शंनः प्रस्व १ शम्बस्तु वोदिः ॥ शंनः सूर्यः उरु चक्षाः उदेतु शंनश्चर्तसः प्रदिशो भवतु । शंनः पर्वताध्रुव
 यो भवतु शंनः सिधवः शमु संत्वार्यः ॥ शंनोऽअदिर्तिर्भवतु त्रेभिः शंनो भवतु मरुतः स्वर्काः । शंनो विष्णुः शमु पयानोऽ
 अस्तु शंनो भवित्रं शम्बस्तु वायुः ॥ शंनो देवः सविता त्रायमाणः शंनो भवतु पसो विभातीः । शंनः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः
 शंनः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः ॥ २९ ॥ शंनो देवा विश्वदेवा भवतु शंनो भवतु शंनोऽअर्धतः शमु संतु गार्वः । शंनः शर्म भिपाचः शमु रातिपा
 चः शंनो दिव्याः पार्थिवाः शंनोऽअर्घ्याः ॥ शर्नः सत्यस्य पतयो भवतु शंनोऽअर्धतः शमु संतु गार्वः । शंनः शक्र भवः सुकृतः
 सुहस्ताः शंनो भवतु पितरो हवेषु ॥ शंनोऽअजः एकपादे वोऽअस्तु शंनो हर्ष १ शंसमद्रः । शंनोऽअपां नपात्पेरुस्तु
 शंनः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥ आदित्यारुद्रावसंजुपते दं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः । शृण्वंतु नो दिव्याः पार्थिवा सो गो जा
 ताऽउत ये यज्ञियासः ॥ ये देवानां यज्ञियानां मनोर्यजत्राऽअमृताऽऽकृतज्ञाः । ते नो रासंता मुरुगाय मद्ययं यपात ०
 ॥ ३० ॥ (अथ परिशिष्टं ॥ शंवतीः पारयत्येते तं पृच्छति वचो युजा । अभ्यारंतं यमो कंतुं यऽएवेदमिति ब्रवन् ॥ भा
 सार्केतुं परिस्नुतं भारती ब्रह्मवर्धनी । संजानानामहीमाता यऽएवेदमिति ब्रवत् ॥ इंद्रस्तं किं विभुं प्रभुं भानुनेयं सरस्वतीं ।
 ये न सूर्यमरोचयद्येनेमरोदसीऽउभे ॥ जुपस्वाभेऽअंगिरः काण्वं मे ध्याति शिं । मात्वासोमस्ववर्षे हत्सुतस्य मधुमत्तमः ॥

ऋक्स.

अ. ५ अ. ४

॥ २२ ॥

त्वमग्नेऽङ्गिरःशोचस्वदेववीतमः । आशतमशंतमाभिरुभिर्हिभिःशांतिःस्वस्तिमकुर्वत ॥ शंनुःकनिकदद्देवःपर्जन्योऽ
अभिवर्षतु । शंनोद्यावापृथिवीशंमृजाभ्यःशर्नएधिद्विपदुशंचतुष्पदे ॥ १॥) इतिपंचमाष्टकेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥
पंचविंशत्यायेवर्गा. ३० सूक्तानि १६ ऋचः १६५ ॥ त्यागः ॥ इंद्रायेद. १११ वसिष्ठपुत्रेभ्य. ९ वसिष्ठाये. ५ विश्वेभ्योदेवेभ्य.
१५ [मे. प. देवेभ्य. अश्वह. इंद्राये. २ यज्ञाये. ३ देवेभ्य. २ वरुणाये. देवेभ्य. ३ अग्नय. अपानस्त्रेभ्य.] अहयेभ्य
अहयेषुभ्यायाग्नय. विश्वेभ्योदेवेभ्य. २३ [मे. प. देवेभ्य. २ देवपत्नीत्वष्टृभ्य. त्वष्ट्रे. विश्वेभ्योदेवेभ्यः १९] ॥ इतिपंचमेतृतीयः ॥
प्रब्रह्मनवावोष्टाबुदुष्यःसावित्रमंत्येवाजिन्यौभगमितिभागोवार्धर्चैर्ऋचःसप्तवैश्वदेवत्वोश्रुष्टिःप्रातर्भर्गजग
त्याद्यालिंगोक्तेवतांत्योपस्याप्रब्रह्माणःषडैश्वदेवंतुप्रवःपंचदधिकांदाधिकंजगत्याद्यालिंगोक्तेवतांदेवश्चतु
ष्कंसावित्रमिमारौद्रंत्रिष्टुवंतमापोयमापमृषुक्षणआर्भवंमंत्यावैश्वदेवीवासुद्रज्येष्ठाआर्पमामांमैत्रावरुण्या
मेयीवैश्वदेवीनदीस्तुतिर्जागंतंमत्यातिजगतीशक्करीवादित्यानांतुचमादित्यंत्वादित्यासःप्रद्यावाद्यावापृथि
वीर्यवास्तोर्वास्तोष्पत्यममीवहाष्टौवास्तोष्पत्याद्यागायत्रीशेषारुयुपरिष्टाद्बृहत्यादयोनुष्टुभःप्रस्वापिन्यलपनि
षत्कर्षंपंचाधिकामारुतंहद्याएकादशद्विपदामध्वःसप्तप्रसाकमुक्षेपंज्यंत्रायध्वेद्वादशत्रिप्रगाथादिनवम्याद्या
गायत्र्योत्थानुष्टुबौद्रीमृत्युविमोचनी ॥ ४ ॥

॥

॥

मंडलं ७

अनु. ३

॥ २२ ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ४

॥ २३ ॥

स्तवधैरथोवाजाऽऋभुक्षणोऽअमृक्तः । अभिन्निपष्ठैः सर्वनेपुसोमैर्देसुशिग्रामहभिः पृणध्वं ॥ ययंहुरलैमघवत्सुध
त्यस्वर्होऽऋभुक्षणोऽअमृक्तं । संयज्ञेषुस्वधावतः पिवध्वविनोराधोसिमतिभिर्दयध्वं ॥ उवोचिथहिमघवन्देष्णम्
होऽअर्भस्यवसुनोविभागे । वयंनुतेदाश्वोसः स्यामब्रह्मकृण्वतोहरिवोवसिष्ठाः ॥ त्वमिन्द्रस्वयंशाऽऋभुक्षावाजो नसा
धुरस्तमेष्टृका । वयंनुतेदाश्वोसः स्यामब्रह्मकृण्वतोहरिवोवसिष्ठाः ॥ सनितासिप्रवतोदाधुषेचिद्याभिविवेयोहयश्व
वोधः । अस्ततात्याधियारविंसुवीरपक्षोनोऽअर्वा न्युहीतवाजी+ ॥ ३ ॥ वासयसीववेधमस्त्वनः कृदानंऽइन्द्रवचसो बु
क्षः । उपत्रिवंधुर्जरदष्टिमेत्यस्ववेश्यं कृण्वतमर्तोः ॥ ४ ॥ (७।३।५) उदुष्यदेवः सविताययामहिरण्ययीममतिग्रामशिश्नेत् । स
दानोदिव्यः पायुः सिपकुयंपात० ॥ ४ ॥ (७।३।५) उदुष्यदेवः सविताययामहिरण्ययीममतिग्रामशिश्नेत् । स
नूनंभगोहव्योमानुपेभिवियोरलापुरुवसुर्दधाति ॥ उदुतिष्ठसवितः श्रद्ध्युस्यहिरण्यपाणेप्रभृतावृतस्य । व्युर्वोप
श्वीममतिस्तृजानऽआनृभ्योमर्तभोजनं सुवानः+ ॥ अपिपुतः सवितादेवोऽअस्तुयमाचिद्विश्वेवसवोगणंते । सनः स्तो
मात्रमस्यश्चनोधाद्विश्वेभिः पातुपाशुभिर्निसरीन्+ ॥ अभियंदेव्यार्दिर्तिर्गणतिसुवेवस्यसवितुर्जुपाणा । अभिसन्वा
(७।३।५) उदुष्यदेव इत्यष्टर्चस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्बसिष्ठः आद्यानां पण्णांसविता अंशयोर्द्वयोर्वाजिनश्चिष्टुः (भगमित्यर्धर्चस्य भगोवा) ।

मंडलं ७

अनु. ३

॥ २३ ॥

जोवरुणोणंल्यभिभिन्नासौऽअर्यमासजोपाः ॥ अभियेमिथोवनुपःसपतेरातिदिवोरातिपाचःपृथिव्याः ॥ अहिर्व
 ज्ञेयऽउतनःशृणोतुवरुण्येकेधेनुभिर्निपातु ॥ अनतन्नोजास्पतिर्मसीष्टरलैदेवस्यसत्रिपुरिर्यानः । भगमग्रोवसेजोहवी
 तिभगमनुग्रोऽअर्धयातिरलै ॥ शनौभवंतुवाजिनोहवेपुदेवतातामितद्रवःस्वर्काः । जंभयंतोहिंबुकरक्षीसिसनेभ्यस
 तिममन्नमीवाः ॥ वाजेवाजेवतवाजिनोधनेपुविप्राऽअमृताऽऽकृतज्ञाः । अस्यमध्वःपिचतमादयध्वंतसायातपृथिभ
 द्युयवन्नमीवाः ॥ ५ ॥ (७।३।६) ऊर्ध्वोऽअग्निःसुमतिवस्वोऽअश्रेलतीचीजृर्णिदेवतातिमेति । भेजातेऽअद्रिर्गर्ध्येव
 देवयानैः ॥ ५ ॥ (७।३।६) ऊर्ध्वोऽअग्निःसुमतिवस्वोऽअश्रेलतीचीजृर्णिदेवतातिमेति । विशामकोरुपसःपूर्वहृतौवा
 पंधामंतहोतानऽइषितोर्यजाति ॥ प्रवावृजेसुग्रयावहरेणामविदपतीववीरिदऽइयाते । विशामकोरुपसःपूर्वहृतौवा
 युःपपास्वस्तयेनियुत्वान् ॥ ज्मयाऽअन्नवसवोरंतेदेवाऽउरावंतरिक्षमर्जयंतशुभ्राः । अर्वाक्पथऽउरुज्वयःकृणुध्वंश्रो
 तादृतस्यजगमुपोनोऽअस्य ॥ तेहियज्ञेषुयज्ञियासऽऽरमाःसधस्थंविश्वेऽअभिसंतिदेवाः । तौऽअध्वरऽउशुतोयंध्यमे
 श्रष्टीभगंनासत्यापुरंधि ॥ आग्नेगिरोदिवऽआपृथिव्यामित्रंवह्वरुणमिंद्रमग्निं । आर्यमणमर्दितिविष्णुमेपांसरस्व
 तीमरुतौमादयतां ॥ ररेह्व्यंमतिभिर्धुजियांनानक्षत्कामंमलौनामसिन्धन् । धाताग्निमविदस्यंसांसांस्क्षीमहिद्यु
 र्ज्येभिर्नुदैवैः ॥ नूरोदसीऽअभिष्टुतेवसिधैर्कृतावानोचरुणोमित्रोऽअग्निः । यच्छतुचंद्राऽउपमनोऽअर्कयुयंपात ०
 (७।३।६) ऊर्ध्वोऽअग्निरितिसप्तर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्टोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् (भेदपक्षे—विश्वेदेवाः १ वायुपूषणौ १ विश्वेदेवाः ५ एवं ७) ।

अ. ५ अ. ४

॥ २४ ॥

मंडलं. ७

अनु. ३

॥ २४ ॥

॥ ६ ॥ (७।३।७) ओश्रष्टिर्विदुष्या इ समेतुप्रातिस्तोमं दधीमहितुराणां । यदुद्यदेवः सविता सवाति स्यामां स्यरलि
नो विभागे + ॥ मित्रस्तन्नोवरुणो रोदसी च द्युभक्तमिद्रोऽअर्यमाददातु । विदेष्टुदेव्यादितरेकणो वायुश्चयन्नियुवैतेभग
हिनेतावरुणऽऽकृतस्य मित्रो राजानोऽअर्यमापोधुः । सुहवादेव्यादितिरनवतिनोऽअहोऽअतिर्पुत्ररिष्टान् ॥ अयं
स्यमीहुपोवया विष्णोरेपस्यप्रभथेह विभिः । विदेहिरुद्रोरुद्रियमहित्वया सिष्टवतिरश्विना विरावत् ॥ अस्यदेव
णऽइरस्योवरुद्वीयद्रातिपाचश्चरासन् । मयोभुवोनोऽअर्वतो निपातुष्टिर्परिज्मावातो ददातु ॥ मात्रपूषन्नाष्ट
वसिष्ठैर्ऋतावनोवरुणो मित्रोऽअग्निः । यच्छतुचंद्राऽऽपमनोऽअर्कयुयंपात० ॥ ७ ॥ (७।३।८) प्रातर
भिप्रातारं द्रहवामहे प्रातर्भिन्नावरुणा प्रातरश्विना । आधश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भूक्षीत्याह ॥ भगप्रणेतुर्भगसत्वरधो
मयं हुवेमवयंपुत्रमदितेयोधिधर्ता । भगप्रणो जनयुगो भिरश्वैर्भगप्रवृर्भिर्नवंतः स्याम ॥ उतेदानीं भगवंतः स्यामोतप्रपित्वऽउत
(७।३।७) ओश्रष्टिरिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् (अत्राखिला विश्वेदेवाः) । (७।३।८) प्रातरग्निमिति सप्तर्च
स्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो भगः आद्याया अमीन्द्रमित्रावरुणाश्चिभगपूषन्नक्षत्रपतिरुद्रादेवताः अंस्याया उप आद्या जगती शेषास्त्रिष्टुभः ।

नोनशाखाः ॥ प्रयज्ञऽएतुहेत्वोनससिरुद्यच्छ्वंसमनसोघृताचीः । स्तृणीतवहिरध्वरायसाधूध्वंशोचीषिदेवयून्य
 स्थुः ॥ आपुत्रासोनमातरंविभृत्राःसानौदेवासोबृहिषःसदंतु । आविश्वार्चीविदृथ्यामनक्त्वग्नेमानोदेवतातामृध
 स्कः ॥ तेसीपंतजोषमायर्जत्राऽऋतस्यधाराःसुदुष्टादुहानाः । ज्येष्ठवोऽअद्यमहऽआवसूनामागतनसमनसोयति
 छ+ ॥ एवानोऽअग्नेविश्वार्दशस्यत्वयावयंसहसावन्नास्काः । रायायुजासंधमादोऽअरिष्टाययंपात० ॥ १० ॥
 (७।३।११) दृधिकांर्वःप्रथममन्धिनोषसमग्निंसमिद्धंभगमतयेहुवे । इंद्रविष्णुपषणं ब्रह्मणस्पतिमादित्यान्यावापृ
 थिवीऽअपःस्वः* ॥ दृधिक्रामनमसावोध्यैतऽउदीराणायज्ञमुपप्रयंतः । इळांदेवींबृहिषसादयंतोश्विनाविप्रांसूहवा
 हुवेम ॥ दृधिक्रावाणंबुबुधानोऽअग्निमुपब्रवऽउषसंसूर्यगां । ब्रह्ममाश्रतोर्वरुणस्यवभृतेविश्वसहुरितायावयंतु ॥
 दृधिक्रावांप्रथमोवाज्यवाग्निरथानांभवतिप्रजानन् । संविदानऽउपसासूर्येणादित्येभिर्वसुभिर्गिरोभिः ॥ आनौदधि
 काःपथ्यामनक्त्वृतस्यपथ्यामन्वेतुवाऽर् । शृणोतुनोदैव्यंशर्धोऽअग्निःशृणवंतुविश्वेमहिषाऽअमूराः ॥ ११ ॥

विश्वेदेवाः २ अग्निः १ एवं ५ । (७।३।११) दृधिकावदतिपचर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोदधिका आद्यायादधिकाश्रुषो
 मिभगोद्रविष्णुपूषन्नहणस्पत्यादित्याद्यावापृथिव्यापस्विष्टुवाद्याजगती ।

(७३।१२) आदेवोयांतुसवितासुरलोतरिक्षप्रावहमानोऽअश्वैः । हस्तेदर्धानोनयोपुरुणिनिवेशयन्चप्रसुवन्चभूम ॥
 उदस्यवाह्निथिरावृहताहिरण्ययादिवोऽअंतोऽअनथां । ननंसोऽअस्यमहिमापनिष्टसूरश्चिदस्माऽअनुदादपस्यां ॥
 सघानोदेवःसवितासुहावासाविपद्वसुपतिर्वसूनि । चित्रयमाणोऽअमर्तिमुरूचर्मर्तभोजनमधरासतेनः ॥ इमानीरः
 सवितारसुजिह्वपुर्णगंभस्तिमीळतेसुपाणिं । चित्रययोवृहदस्मेदधातुययंपात० ॥ १२ ॥ (७३।१३) इमारुद्राय
 स्थिरधन्वनेगिरःक्षिप्रपेदेवार्यस्वधाक्षे । अपह्वायसहमानायवेधसेतिमायुधायभरताशणोलुनः ॥ सहिक्षयेणक्ष
 म्यस्यजन्मनःसाम्राज्येनद्विष्यस्यचेतति । अवन्नवतीरुपनोदुरश्चरानमीवोरुद्रजासुनोभव ॥ यतैर्द्विद्युदवसृष्टाद्विव
 स्परिक्षमायाचरनिपरिसावृणक्तुनः । सहस्रैस्त्वपिवातभेषजामानस्लोकेपुतनयेपुरीरिपः ॥ मानोवधीरुद्रमापरद्वि
 मातेभूमप्रसितौहीळितस्य । तंवोवयंशुचिमरिप्रमद्यतमुपमधुमंतवनेम ॥ तमर्भिमोपोमधुमत्तमवोनपादवत्वाशुहे
 इंद्रपानमर्भिमक्कण्वतेळः । तंवोवयंशुचिमरिप्रमद्यतमुपमधुमंतवनेम ॥ तमर्भिमोपोमधुमत्तमवोनपादवत्वाशुहे
 मा । यस्मिन्निद्रोवसुभिर्मादयतेतमक्षयामेदेवयंतोवोऽअद्या ॥ श्रुतपवित्राःस्वधयामदतीदेवीद्वानामपियंतिपा
 मा । यस्मिन्निद्रोवसुभिर्मादयतेतमक्षयामेदेवयंतोवोऽअद्या ॥ श्रुतपवित्राःस्वधयामदतीदेवीद्वानामपियंतिपा
 मा । यस्मिन्निद्रोवसुभिर्मादयतेतमक्षयामेदेवयंतोवोऽअद्या ॥ श्रुतपवित्राःस्वधयामदतीदेवीद्वानामपियंतिपा

(७३।१२) आदेवइतिचतुर्गचसूक्तयमत्रावरुणिर्वसिष्ठःसवितात्रिष्टुप् । (७३।१३) इमारुद्रायेतिचतुर्गचसूक्तस्यमैत्रा
 वरुणिर्वमिष्टोऽरुद्रोऽजगत्स्यात्रिष्टुप् । (७३।१४) आपोयवइतिचतुर्गचसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठआपसिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ४

॥ २६ ॥

थः । ताऽइन्द्रस्य नमिं नतिव्रतानि सिधुभ्यो हव्यं घृतं वज्रहोत ॥ याः सूर्यो रश्मिभिराततानयाभ्यऽइन्द्रोऽअरंदह्ना तु म
मिं । ते सिधवो वारिणो धातनानो ययं पात० ॥ १४ ॥ (७।३।१५) ऋमुक्षणो वाजामादयध्वमस्मेनरो मधवानः सुतस्य ।
आवोर्वाचः ऋतवो नयातां विभोरथं नर्थवर्तयंतु ॥ ऋमुर्कुभुरभिर्वः स्याम विभ्यो विभुभिः शर्वसाशवांसि । वाजोऽअ
स्मोऽअवतु वाजसाता विद्रेण युजातरुपे मवृत्रं ॥ ते चिद्धिपूर्वारभिर्सावित्र्योऽअर्यऽअर्जपूरतां तिवन्वन् । इन्द्रो
विभ्योऽअमुक्षवाजोऽअर्यः शत्रोर्मिथ्या कृणवन्विनुमं ॥ नूदेवासो वारिवः कर्तनानो भूतनो विश्वेऽअसृजोपाः । सम
स्मेऽइपंवसवो ददीरन्ययं पात० ॥ १५ ॥ (७।३।१६) समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनानायं त्यनिं विशमानाः ।
इन्द्रो यावज्जीवंपुभोररादताऽआपो दिवीरिहमामवंतु ॥ याऽआपो दिव्याऽउत वास्रवंति खाने त्रिमाऽउत वायाः स्वयं जाः ।
समद्रार्थायाः शुचयः पावकास्ताऽआपो ॥ यासं राजावरुणो याति मध्ये सत्यानतेऽअवुपश्यन् जनानां । मधुश्चुतः शुच
योयाः पावकास्ताऽआपो ॥ यासं राजावरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मर्दति । वैश्वानरो यास्वनिः प्रविष्टस्ताऽ
आपो ॥ १६ ॥ (७।३।१७) आमांभिर्नावरुणे हरं क्षतं कुलाय यद्विश्वयन्मानुऽआगन् । अजकावंदुर्दशीं कंतिरो
(७।२।१५) ऋमुक्षण इति चतुर्गचस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ऋभ्वक्षिपुप्पलाया विश्वे देवावा । (७।३।१६) समुद्रज्येष्ठा इति चतुर्गचस्य
सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः आपक्षिपुप् । (७।३।१७) आमांमिति चतुर्गचस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो मित्रावरुणवन्निर्विश्वे देवानद्य इति-

मंडलं ७

अनु. ३

॥ २६ ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ४

॥ २७ ॥

यौगण्ठः पुरोमहीदधिरेद्वपुन्ने ॥ प्रपूर्वजे पितरानव्यसीभिर्गीर्भिः कृणुध्वंसदनेऽक्रतस्य । आनोद्यावापृथिवीदैव्येन
जनेनयातुं महिवांवरुथं ॥ उत्तोहिवारल्लेधेयानिसतिं परूणिद्यावापृथिवीसुदासे । अस्मेधत्तयदसदस्कृधोयुययंपात०
॥ २० ॥ (७।३।२१) वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽर्जनमीवोभवानः । यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशंनोभ
तिनो जुषस्व ॥ वास्तोष्पते प्रतरणेनऽएधिययस्फानो गोभिरश्वैर्भिरिदो । अजरसस्ते सख्येस्यामपितेव पुत्रान्य
(७।३।२२) अमीवहावास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविशन् । सखासुशेवऽएधिनः ॥ पाहिक्षेमऽउतयोगे वरं नोययंपात० ॥ २१ ॥
से । वीवत्राजतऽऋष्टयऽउपस्रक्पवप्सतोनिषुस्वप ॥ स्तेनरायसारमेयतस्करं वापुनः सर । यदर्जुनसारमेयदुतः पिशंगयच्छ
मस्मान्दुच्छुनायसे० ॥ त्वंस्रक् रस्यदहहितवददतुस्रक् । स्तोतृनिद्रस्यरायसिकिमस्मा० । स्तोतृनिद्रस्यरायसिकि
सस्तुश्वासस्तुविरपतिः । ससंतु सर्वज्ञातयः सस्त्वयमभितोजनः ॥ यऽआस्तेयश्चरति यश्चरति नोजनः । तेषां सं
हन्मोऽअक्षाणियथेदं हर्म्यतथा ॥ सहस्रं शृंगो वृषभोयः समद्रादुदाचरत् । तेनासहस्येनावयं निजनोन्त्स्वापयामसि ॥
(७।३।२१) वास्तोष्पत इति वृक्षसूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो वास्तोष्पतिश्चिष्टुः । (७।३।२२) अमीवहेलघर्चसूक्तस्य मैत्रावरुणि
र्वसिष्ठः आद्यायावास्तोष्पतिः द्वितीयादिसप्तानां प्रत्यापिनी आद्यागायत्री ततस्तिष्ठ उपरिष्टाद्बृहत्तः अंसाश्च तस्योनुष्टुभः ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ४

॥ २८ ॥

संमिश्राऽओजोभिरुग्राः⁺ ॥ उग्रं वऽओजः स्थिराशवांस्यधामरुग्निर्गणस्तुविष्मान् ॥ शुभ्रोवः शुष्मः क्रुध्मीमनांसि
धुनिर्मुनिरिवशर्धस्यधृष्णोः⁺ ॥ सनेभ्यस्मद्ययोतद्विद्युमावोदुर्मतिरिहप्रणङ्गः ॥ प्रियावोनामहुवेतुराणामायत्तपन्म
रुतोवावशानाः⁺ ॥ २३ ॥ स्वायुधासंऽइष्मिणः सुनिष्काऽउतस्वयंतन्व^१ शुभमानाः ॥ शुचीवोहव्यामरुतः शुची
नां शुचिहिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः । ऋतेनसत्यमृतसार्यऽआयुन्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः ॥ असेष्वामरुतः स्वादयो
वोवक्षः सुरुक्माऽउपशिश्त्रियाणाः । विविद्युतो नवृष्टिर्भीरुचानाऽअनुस्वधामाधुधैर्यच्छमानाः ॥ प्रबुभ्यावऽईरतेम
होसिप्रनामानिप्रयज्यवस्तिरध्वं । सहस्रियंदभ्यं भागमेतंगृहमेधीयं मरुतो जुपध्वं ॥ यदिस्तुतस्य मरुतोऽअधीथेत्या
विप्रस्यवाजिनोहवीमन् । मक्षरायः सुवीर्यस्य दातृन् चिद्यमन्यऽआदभदरावा ॥ २४ ॥ अत्यासो नये मरुतः स्वचौयक्षहृशो
नशभयंतमर्याः । तेहभ्योऽष्टाः शिशवो नशुभ्रावत्सासो नग्रकीळिनः पयोधाः⁺ ॥ दृशस्यंतो नो मरुतो मृळंतुवरिवस्यंतो रोदसी
सुमेकै । आरेगो हानुहावुधोवोऽअस्तु सुमेभि रसेर्वसवो नमध्वं ॥ आवोहोतां जोहवीतिसत्तः सत्रार्चो रातिर्मरुतो गृणा
नः । यऽईर्वतो वृषणोऽअस्ति गोपाः सोऽअद्वयात्रीहवतेवऽउक्थैः⁺ ॥ इमेतूरं मरुतोरामयंती मे सहः सहसऽआनमंति ।
इमे शंसव नुज्यतो निपातिगरुद्धे योऽअररुपेदधंति ॥ इमे रंध्रं चिन्मरुतो जुनंति भूमिं चिद्यथावसवो जुपंत । अपवाधध्वं
वृषणस्तर्मांसिधुत्तविश्वं तनयंतो क्मस्मे ॥ २५ ॥ मावो दान्त्रान्मरुतो निरंराममापंश्चाद्वधमरथ्यो विभागे । आनः स्या

॥ २८ ॥

मंडलं ७

अनु. ४

कृत्स्नं.

अ. ५ अ. ४

॥ २९ ॥

(७१४३) प्रसाकमुक्षेऽअर्चतागणायोदैव्यस्य धान्नस्तुर्विष्मान् । उतक्षोदंतिरोदसीमहित्वानक्षतेनाकुनिक्रतेरव
शात्+ ॥ जनूश्चिद्वोमरुतस्वेव्येणभीमासस्तुर्विमन्यवोयासः । प्रथमहोभिरोजसोनसंतिविश्वोवोयामन्यतेस्वह
कृ+ ॥ बृहद्वयोमघवद्भ्योदधातुजोषन्निम्नरुतःसुष्टुतिनः । गतोनाध्वावितिरातिजुं प्रणः स्याहोभिरुतिभिस्तिरेत ॥
युष्मोतोविप्रोमरुतःशतस्वीयुष्मोतोऽअर्वासहुरिःसहस्री । युष्मोतःसन्नालुतहतिवृत्रप्रतद्धोऽअस्तुधूतयोदेष्णं+
तोऽआरुद्रस्यमीढुषोविवासेकुविन्नसंतेमरुतःपुनर्नः । यत्सस्वतोजिहीक्षिरेयदुविरवतदेनऽईमहेतुराणो ॥ प्रसावा
चिसुष्टुतिर्मघोनामिदंसूक्तंमरुतोऽजुपंत । आराक्षिद्वेषोवृपणोयुयोतयुयंपत० ॥ २८ ॥ (७१४४) यंत्रायध्वऽ
इदमिदं देवांसोयंचनयथ । तस्माऽअग्नेर्वरुणमित्रार्थमन्मरुतःशर्मयच्छत ॥ नृहिवश्चरमंचनवसिष्ठःपरिमंसते । अस्माकमद्यमरु
स्तरतिद्विषः । प्रसक्षयतिरतेविमहीरिषोवोवोवरायदाशति ॥ नृहिवऽऊतिःपृतनासमर्धतियस्माऽअराध्वनरः । अभिवऽआवत्सुमतिर्नवीयसी
तःसुतेसचाविश्वेपिवतकामिनः ॥ नृहिवऽऊतिःपृतनासमर्धतियस्माऽअराध्वनरः । इमावोहव्यामरुतोरेहिकमोष्वऽन्यत्रंगतन ॥ आच
तूयथातपिपीषवः ॥ ओषुष्ट्विराधसोयातनांघांसिपीतये ।

(७१४३) प्रसाकमुक्षइतिपठुचसूक्तस्यमैत्रावरुणिवसिष्ठोमरुतस्त्रिष्टुप् । (७१४४) यंत्रायध्वइतिद्वादश्वस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिवसि
ष्टोमरुतोऽलायारुद्रः आद्यातृतीयापंचम्योबृहद्वयः द्वितीयाचतुर्थोपष्टयः सतोबृहद्वयः सप्तम्यष्टम्यौ त्रिष्टुभौ नवम्याद्यास्त्रिष्टो गायत्र्योऽत्यानुष्टुप् ।

मंडलं ७

अनु. ४

॥ २९ ॥

क्रकसं.

अ. ५ अ. ५

॥ ३० ॥

यदद्यमैत्रावरुणं तु वै सौर्याद्यो ह्यं सप्तोत्सूर्यः षळाद्यास्तिष्ठः सौर्येऽहं तीति चार्धपंचमदि विपंच प्रतिवां प्रमित्रयोरे
को नागायत्रं दशान्यादयस्त्रयः प्रगाथाः पुरं उष्णिक्कृतुश्चाद्या दशादित्यास्तिष्ठः सौर्यैः प्रतिवां दशाश्विनं तु तदाशु
षा अष्टाजषस्यं तु वा उदुसप्तो पोरुचे पदप्रतिपंचन्युषाः प्रतितृचं ॥ ५ ॥
॥ हरिः ओम् ॥ (७।४।५) यदुद्यसूर्यव्रवो नागाऽदुद्यन्मित्रायवरुणाय सत्यं । वयं देवत्रादि ते स्याम तव प्रियासो
ऽअर्यमन्गणतः ॥ एषः स्वमित्रावरुणानुचक्षाऽऽऽभेऽउदेति सूर्योऽअभिज्मन् । विश्वस्य स्थानुर्जगतश्च गोपाऽऽक्रजुर्मतेषु
वृजिना च पश्यन् ॥ अयुक्तसप्तहृतिः सधस्याद्याऽईव हति सूर्ये धृताचीः । धामानि मित्रावरुणायुवाकः संयोजयेवज
निमानि चष्टे ॥ उद्धांपक्षासो मधुमंतोऽअस्थिरासूर्योऽअरुहच्छुक्रमणः । यस्मांऽआदित्याऽअध्वनोरदति मित्रोऽअर्य
मावरुणः सजोपाः ॥ इमे चेतारोऽअर्दतस्य भूरमित्रोऽअर्यमावरुणो हिंसति । इमऽऽक्रतस्य वाधुर्दुरोणे शुभासः प
त्राऽआदितेरदब्धाः ॥ इमे मित्रोवरुणो दुळभासो चेतसि चिच्चितयंति दक्षैः । अपि कुतुसुचेतसं वतंति स्तिरश्चिदंहः सपथा
नयंति ॥ १ ॥ इमे द्विवोऽअर्निमिषा पृथिव्याश्चिक्त्वांसोऽअचेतसं नयंति । प्रवाजो चिन्नद्यो गाधमस्ति पारं नोऽअ
(७।४।५) यदद्येति द्वादशर्चस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो मित्रावरुणावाद्यायाः सूर्यस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं. ७

अनु. ४

॥ ३० ॥

स्यान्निपुतस्यपरेन् ॥ यदुपेपादद्विद्विःशमभेभुष्टमिषोयच्छिपिरेणःसुदाने । नमिजानोहंतनयंटांनगाहंभेदेने
 कंतुगमः ॥ उपोद्विहोचभिरेनुगिगु. कविद्वरणाप्रल.नः । पवित्रेपोगिर्युगार्णकृत्तुदानेपुणाऽऽत्रेहे ॥
 मयश्चिन्मिन्मृतिस्नेयेपामयीन्येनूनंसाजते । युमद्वियापुणोरेपानाऽ । अग्निमिन्नामकृत्तानः ॥ योत्रमे
 णेसुमतिमागजतिपाजस्यमातापरमस्यगयः । मोधनमन्युमुपानोऽयंऽद्वरपरयन्तिहेत्युपानु ॥ अयंऽपुसोऽ
 तिर्युवभ्यायुजेपुमित्रारुणाचकारि । विश्वोनिद्वुगोपिपुनंतिरेनोयुपान ॥ २ ॥ (७५१६) उन्नचधुम्पणन्
 प्रतीक्रेद्वयेरेतिश्रुवस्ततन्वान् । अभियोदिश्याभुनानिचष्टेगमन्मृगत्वेतांहेन ॥ प्रानाभिपान्नापुनासपि
 मोमन्मनिदीधुश्रुद्वियातं । यत्पत्रलाणिमुहन्ऽत्रायुऽआयस्त्याननुगृण्ये ॥ प्रोगोभिपान्नापुश्रुद्वियाप्र
 द्विद्वऽकृताद्वृत्त.युदान् । सगोदथायेऽओपंभीपुविपुयंयुनोऽओनसिपुयंमाणा ॥ गंनोमिस्यमन्गस्यमम
 शुष्मोरोदसीवद्वधेमल्लिवा । अयन्मानुऽअयन्नामृगिःप्रवृत्तमन्मापुजनेतिगते ॥ अमृगविश्वोपुणाविमावा
 नयामुचित्रद्वहेनयुदां । द्रुतःमचतेऽअनृताजानानांनिग्यान्पचिनेऽअमन् ॥ नमुपायजंभयंनमोभिनेपेता

(७५१६) उगाचश्रुद्विद्विःशमभेभुष्टमिषोयच्छिपिरेणःसुदाने ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ५

॥ ३१ ॥

मित्रावरुणासुबाधः । प्रवांसन्मान्यचसेनवानिकृतानिब्रह्मजुषन्निमानि ॥ इयं देवपुरोहिति० ॥ ३ ॥ (७१४७)
उत्सूयोविहदुर्चोव्यश्रेत्पुरुविश्वानिममानुषाणां । समोद्विवादहशरोचमानः कृत्वाकृतः सुकृतः कृत्वाभिर्धत् ॥ ससूर्य
प्रतिपुरोनुजङ्गाऽएभिः स्तोमैर्भिरेतशेभिरैवैः । प्रनोमित्रायवरुणायवोचोनागसोऽअर्यम्णोऽअग्रयेच ॥ विनःसहस्रै
शुरुधोरदंत्तुतावानोवरुणोमित्रोऽअग्निः । यच्छतुचंदाऽउपमनोऽअर्कमानः कामपूरुतुस्तवानाः ॥ द्यावाभूमीऽअ
दितेत्रासीथानोयेवांजुःसुजनिमानऽऋष्वे । माहेळैभूमवरुणस्यवायोर्मा मित्रस्यप्रियतमस्यनणां ॥ प्रवाहवासिस्तंजी
वसेनऽआनोगव्यूतिमुक्षतंधेतनं । आनोजनैश्चवयंतयुवानाश्चतुर्मेमित्रावरुणाहवेमा ॥ नूमित्रोवरुणोऽअर्यमानुस्मने
लोकायवर्षोदधंतु । सुगानोविश्वसुपथानिसंतुयुयंपात० ॥४॥ (७१४८) उद्वैतिसुभगोविश्वचक्षाः साधारणः सूर्योमा
चक्रंपर्याविष्टत्सन्यदेतशोवहतिधूर्युक्तः ॥ विभ्राजमानऽउपसामपस्थाद्भैरुदेत्यनुमद्यामानः । एषमेदेवः सविताच
च्छंदयः समानंनमिनातिधाम ॥ द्विवोरुक्मऽउरुचक्षाऽउदेतिदरेऽअर्थस्तरणिभ्राजमानः । नूनंजनाः सूर्येणप्रसूताऽ
(७१४७) उत्सूर्यइतिपटुचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठआद्यानातिस्तृणासूर्यस्तस्तिस्तृणामित्रावरुणौत्रिष्टुप् । (७१४८) उद्वैती
तिपटुचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठः आद्यानांसार्धचतस्तृणासूर्यस्ततोमित्रावरुणौत्रिष्टुप् ।

॥ ३१ ॥

मंडलं ७

अनु. ३

कृत्स्नं.

अ. ५ अ. ५

॥ ३२ ॥

एषः स्तोमो ॥ ७ ॥ (७।४।११) प्रमित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो नऽएतु शुभ्यः । नमस्वान्तु विजातयोः ॥ याधारयैतदेवाः
सुदक्षादक्षपितरा । असुर्ययुप्रमहसा ॥ तानः स्तिपातनपावरुणजरिवृणां । मित्रसाधयतं धियः ॥ यदुद्यसूरऽउद्दि
तेनागा मित्रोऽअर्थमा । सुवातिसविताभर्गः ॥ सुप्रावीरस्तु सक्षयः प्रनुयामन्त्सुदानवः । येनोऽअंहोतिपिप्रति ॥ ८ ॥
उत स्वराजोऽअर्दि तिरदब्धस्य व्रतस्य ये । महोराजानऽईशते ॥ प्रतिवांसूरऽउद्दि ते मित्रं गृणीषेवरुणं । अर्यमणं रिशा
दसं ॥ रायाहिरण्ययामतिरियमब्रुकायुशवसे । इयं विप्रामेधसा तये ॥ तेषां मदेववरुणते मित्रसरिभिः सह । इपंस्व
अधीमहि ॥ बृहवः सूरचक्षसो भिजिह्वाऽऽकृतावृधः । त्रीण्येये सुविदथानिधीतिभिर्विधा निपरिभूतिभिः ॥ ९ ॥
वियेदुधुः शरदुमासमादहयं नमकुंचाहचं । अनाप्यंवरुणो मित्रोऽअर्यमायुयमतस्य रथ्यः ॥ कृतावानऽऽकृतजाताऽऽकृतावृधो घोरासोऽअनु
सूक्तैः सूरऽउद्दि ते । यदोहेतेवरुणो मित्रोऽअर्यमायुयमतस्य रथ्यः ॥ उदुत्यदर्शतं वपुर्दिवऽएतिप्रतिहुरे । यदोभाशुर्वहतिदेवऽ
तद्विपः । तेषां वः सुमो सुच्छदिष्टमेनरः स्यामयेचसुर्यः ॥ शीर्ष्णाः शीर्ष्णो जगत्स्तस्थुः पुस्पतिं समयाविश्वमारजः । सुसस्वसारः सुवितायुसूर्यवह
एतं शोविश्वस्मै चक्षसेऽअरं ॥ (७।४।११) प्रमित्रयोरित्येकोनविंशत्यृचस्य सूक्तस्य मंत्रावरुणविष्टो मित्रावरुणौ चतुर्थ्यदिदशानामादित्यः चतुर्दश्यादिति स्थणां
(७।४।११) प्रमित्रयोरित्येकोनविंशत्यृचस्य सूक्तस्य मंत्रावरुणविष्टो मित्रावरुणौ चतुर्थ्यदिदशानामादित्यः चतुर्दश्यादिति स्थणां
सूर्यो गायत्रीदशमीद्वादशीचतुर्दश्याबृहत्याः एकादशीत्रयोदशीपंचदश्याः सतो बृहत्याः षोडशी पुरजगिक् ।

मंडलं ७

अनु- ४

॥ ३२ ॥

तिलुस्तिरथे ॥ १० ॥ तच्च भुदुर्वर्तिनं रुमचरेत् । पश्येमग्रन्दःश्रुतं जीवेमग्रन्दःश्रुतं ॥ काव्येभिरद्वय्याया
 तंवरुणयुमत । मित्रश्चमोमपीतये ॥ द्विदोषामभिवरुणमित्रश्चायातमदुर्हा । पिनेमोममानुजी ॥ आयतंमि
 त्नावरुणाजुपाणावाहृतिर । पातंमोममृताट्ठा ॥ ११ ॥ (७१४१२) प्रतित्वारंनपतीनृपतीनृपथेनविमतामने
 सायज्ञियेन । योवादृतोनाधिष्ययावजीगरच्छांसनुर्नपितमविममि ॥ अग्रोच्यमिःममिग्रानोऽग्रसेऽउयोऽअट्श्र
 न्तमसश्चिदंताः । अचेतिरेतुरुगमःपरस्ताज्जियेदुजोदुहितुजायेमानः ॥ अभिचाननमभिनानागुह्यतालोभःसिपकि
 नासत्याविवृकान् । पृथीभियातंपृथ्याभिरवाहृम्वविदुवसुमतारथेन ॥ अग्रोवीननमभिनानायुवाहुःनेयग्रीमंतेमात्री
 वसूयुः । आयवद्वत्तुस्थविरामोऽअभ्याःपिवायोऽग्रसेमुत्तामयूनि ॥ प्रानांशुदेवाग्निनाभियंभेध्रामातयेकृतंम
 शु । विश्वाऽअविष्टनाजुऽआपुरंथीस्तानःग्रकगन्धीपतीग्रचीभिः ॥ १२ ॥ अत्रिष्टंश्रीन्गिनानऽआसुमुजावद्रेनोऽ
 अह्वयनोऽअस्तु । आवांतीकेतनेयैतुजानाःमरुतामोदिवर्वातिममेम ॥ एगस्यवापूवृगत्वैवमख्येनिधिहितोमाध्वी
 रातोऽअसे । अह्वेकतामनुसायातमवागुश्रंताह्व्यमानुपीपुविशु ॥ एकसिन्योगेभुरणाममानेपरिचांससन्नवतोर
 थोगात् । नवायंतिमभ्योदिवयुक्तायेवाधुतुरणयोगवहति ॥ अमश्रतांसग्रमदोहिभृतयेगयामयेदयंजुनंति । प्रयेव

(७१४१२) प्रतिवामिदिग्रार्चसामूक्तस्यभेदावकणि निमोभिनोदिष्ट ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ५

॥ ३३ ॥

धुसुवृताभिस्तिरंगेगव्यापंचतोऽअभ्यामघानि ॥ नृमेहवमार्शुणतयुवानायासिष्टवतिरिध्वनाविरावत् । धृत्तरत्नानि
जरतंचसरीन्युयंपात० ॥ १३ ॥ (७।४।१३) आशुभ्रायातमध्विनास्वधागिरोदस्त्राजुष्टुपाणायुवाकौः । हव्यानि
चप्रतिभृतावीर्तनः ॥ प्रवामंधासिमघान्यस्युरंगतंहविषोवीतेयेमे । तिरोऽअयोहवनानिश्रुतनः ॥ प्रवारथोमनो
जवाऽइयतितिरोरजास्यध्विनाशुतोतिः । अस्मभ्यसूयवसूऽइयानः+ ॥ अयंहयद्वदेवयाऽउऽअद्रिरूध्वोविवक्ति
सोमसुष्टुवभ्यां । आवल्युविप्रोववृतीतहव्यैः+ ॥ चित्रंहयद्वभोजनंनवस्तिन्यत्रयेमहिष्वतंयुयोतं । योवामोमानंद
धतेप्रियःसन्+ ॥ १४ ॥ उत्तयद्वजुरतेऽअध्विनाभक्ष्यवानायप्रतीत्यंहविर्दे । अधियद्वर्षऽइतऽऊतिधृथः+ ॥ उत्त
त्यंभज्युर्मध्विनासखायोमध्येजहुर्दुरेवासःसमूदे । निर्धोपपदरावायोयुवाकुः ॥ वृकायचिज्जसमानायशक्तमतश्रुतं
शयवेहयमाना । यावद्वयामपिन्यतमपोनस्तर्धेचिच्छत्स्यध्विनाशचीभिः ॥ एषस्यकारुर्जरतेसकैरमेदुधानऽउषसां
सुमन्मा । इषातंवर्धद्वयापयोभिर्वयंपात० ॥ १५ ॥ (७।४।१४) आवारथोरोदसीवद्वधानोहिरण्ययोवृषभि
र्यात्वध्वैः । घृतवर्तनिःपुविभीरुचानऽइपांवोह्वानपतिर्वाजिनीवान् ॥ सर्पप्रथानोऽअभिपंचभूमात्रिवंधुरोमनसाया
(७।४।१३) आशुभ्रेतिनवर्चससूक्तसमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोविनौत्रिष्टुपआद्याःसप्तविराजः । (७।४।१४) आवारथइत्यष्टर्चससूक्तस्य
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठोविनौत्रिष्टुप् ।

मंडलं ७

अनु. ४

॥ ३३ ॥

लुप्युक्तः । विज्ञोयेनगच्छथोदेव्यंतीः रुन्नाचियाममभिनान्दधाना ॥ स्वभ्यागुदामार्यातमाम्गन्धानिधिमुमंतंतिपा
 थः । विव्वांरथोवृध्वाइयादमानोतान्दिद्वोतोभतेवर्तन्तिभ्यां ॥ यत्रोःश्रियंपरियोपाणीतसूरोयुहितापरितस्थयायां ।
 यदैव्यंतमवथःशर्चाभिःपरिघंसमोमनानांयोगात् ॥ योहृस्वर्गयिरागन्तुच्चारथोयुजानःपरिथातिवतिः । तं
 ननःशंयोरूपसोव्युष्टान्यभिनानावहंतवृजेऽअसिन् ॥ नरगौरैर्विगुतैर्दृगाणास्मात्प्रग्रमनोपयाते । पुरुनाह्विवांम
 तिभिर्हयैतेमावांमन्योनिर्यमन्देव्यंतः ॥ युवंभन्युमनविजंममद्रुडदृग्धर्णमोऽअन्धियानः । पुनत्रिभिरश्रमरेव्य
 धिभिर्दुसनाभिरभिनानापायता ॥ नृमेहवमारुणुतंयुवानायापिष्टंनिर्भ्विनाविरात्रत् । धृत्तरत्नानिजरंतचमरी
 न्ययंपात० ॥ १६ ॥ (७।४।१५) आदिश्ववाराभिनानागतंनःप्रतत्स्यानमवानिनापृथिव्या । अभ्योनवाजीद्वानपृ
 ष्ठोऽअस्यादायत्सेदथुर्ध्वसेनयोनिं ॥ मिरक्तिमावांसुमतिश्चनिप्रातापिघुर्मोमनुपोदुरोणे । योवाममद्रान्तरितःपि
 पत्यंतवाचिन्नसुयुजांयुजानः* ॥ यानिस्थानान्यग्निनादुधाथेद्विद्योयरीचोपधीपुनिधु । निपर्वतस्यमर्धनिमद्रुतेयं
 जनायद्वाशुपेवहता ॥ चनिष्टैर्देवाऽओर्पधीग्वृष्यद्योग्याऽअश्वेधेऽश्वरीणां । पुरुणिर्ज्वादधर्तान्यगृस्मेऽअनुपूर्वा
 णिचख्यथुर्युगानि ॥ शुश्रुवांसांचिदिग्निनापुरुण्यभिव्रज्ज्वाणिचक्षथेऽश्वरीणां । प्रतिप्रयातंयवमाजनायास्मेयमस्तु

(७।४।१५) आदिश्ववारेतिसप्तर्चससूक्तसमेवापुरुणिर्भसिष्टोभिनानिपृष्ट् ।

अ. ५ अ. ५

॥ ३३ ॥

सुमतिश्चिन्तिषा ॥ योवायज्ञोनासत्याहविष्मान्कृतब्रह्मासमर्थोऽभवाति
शुवभ्यां ॥ इयंमनीषाऽइयमध्विनागीरिमांमुबुक्तिवृषणाजुषेथां । इमाब्रह्माणियुवयून्यगमन्ययपत० ॥ १७ ॥
(७।५।१) अपस्वसुरुषसोनागिजहीतेरिणक्तिक्कृष्णीररुषायपथां । अश्वमघागोमघावाहुवमद्विवानकंशरुमसद्युयोतं ॥
उपायतंदाशुषमत्यारथेनवाममध्विनावहता । युयुतमसदनिराममीवांदिवानकंमाध्वीत्रासीथानः ॥ आवारंथ
मवमस्यांव्युष्टासुन्नायवोवृषणोवर्तयंतु । स्यूमेगमस्तिमृतयुग्मिभ्रश्चैराध्विनावसुमंतवेथां ॥ योवारथोन्तपतीऽअस्ति
वोढात्रिवंधुरोवसुमाऽउस्रयांमा । आनऽएनानासत्योपयातमभियद्धांविश्वरुह्योजिगाति ॥ युवंच्यवानंजरसोमुमुक्तं
निपेदवऽऊहथुराशुमध्वं । निरंहसस्तमसःस्पर्तमत्रिनिजोहुषंशथिरेधातमंतः ॥ इयंमनीषा० ॥ १८ ॥ (७।५।२)
आगोर्मतानासत्यारथेनाश्ववतापुरश्चदेणयातं । अभिवांविश्वानियुतःसंचतेस्पाह्याश्रियातन्वाशुभाना ॥ आनो
देवेभिरुपयातमर्वाक्सजोपसानासत्यारथेन । युवोर्हिनःसख्यापित्र्याणिसमानोबंधुरुततस्यवित्तं ॥ उदुस्तोमांसोऽ
अध्विनोरबुध्नजामिब्रह्माण्युषसश्चदेवीः । आविवासजोदसीधिष्येमेऽअच्छाविप्रोनासत्याविवक्ति ॥ विचेदुच्छंत्यध्वि
नाऽउषासःप्रवांब्रह्माणिकारवोभरंते । ऊर्ध्वभानुंसवितादेवोऽअश्नुहृदग्रयःसमिधाजरंते ॥ आपश्चातनासत्याप
(७।५।१) अपस्वसुरितिपट्टचस्यसूक्तस्यैत्रावरुणिर्वसिष्ठोऽध्विनौत्रिष्टुप । (७।५।२) आगोर्मतेतिपंचस्यसूक्तस्यैत्रावरुणिर्वसिष्ठोऽध्विनौ

11 22 11

रस्तादाधनायातमधरादुदकात् । आविभ्यतः पांचान्येतरायायुपांत० ॥ १९ ॥ (७११३) अतारिस्मत्तमम्
 स्फारमस्यप्रतिस्तोभेदयंतोदधाना । पुरंरंमोदुत्तमोपुजाभेल्याहतेऽत्रिनागीः ॥ न्युप्रियोमनुपःमाद्रिहो
 तानामेत्यायोयजतेदंतच । अश्रुतंमन्त्रोऽत्रिनाऽउपाकऽआपानोनेत्रिद्वेपुमयव्यान् ॥ ओमयुतंयथायुगणाऽ
 इमांसुयुक्तंयुगणाजुगथा । श्रुष्टोवेमुप्रागतोमगोधिप्रतिनोभेगेमणोयभिष्टः ॥ उपलामर्हगमतोविनोयोर्योऽ
 णासंभृतावीलुगणी । समर्थस्यमतमत्सरणिमानोमधिष्टमार्गंतंजिने ॥ आपुद्रातोजामला० ॥ २० ॥ (७११४)
 उमाऽउवादिबिष्टयऽउवात्तंनेऽत्रिना । अयंममैवेनयनीयन्मिर्द्यविशंदिग्व्यधः ॥ यमंनिर्दिष्टयुर्भोनिनरा
 चोदंथांसुवृतावते । अर्वाग्रयंममेनानियञ्जतेपिनंतंनोमंमपु ॥ आयोतमुपयुतंमयःपिननमत्रिना । दग्गंयोर्यो
 वृषणाजेन्यावसमानोमधिष्टमार्गंतं ॥ अर्वाजोयमापुगदुशुयोगतयुगांदीयनिर्धतः । मधुयुभिर्नरायैभिराश्रि
 नोदैवायातमस्स्यू ॥ अर्वाह्यंतोऽत्रिनापुःनंतमरयः । तायमतोमयमन्त्रोधुमंयगोदश्रिदस्मभ्यंतामत्या ॥
 प्रयेयुयुरेवुकास्मेरथोऽववृषातारोजनाना । इतस्वेनुग्रयमाश्रुमृनेऽउतादिवंतियुधितं ॥ २१ ॥ (७११५) व्युग्रा

त्रिष्टुप् । (७११३) अतारिमेनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि । मित्रोभिर्नो । (७११४) उमाऽआमिनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि ।
 त्रिष्टुप् । (७११५) व्युग्राऽआमिनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि । मित्रोभिर्नो । (७११६) व्युग्राऽआमिनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि ।

त्रिष्टुप् । (७११३) अतारिमेनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि । मित्रोभिर्नो । (७११४) उमाऽआमिनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि ।
 त्रिष्टुप् । (७११५) व्युग्राऽआमिनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि । मित्रोभिर्नो । (७११६) व्युग्राऽआमिनिपचंस्सूरन्त्यत्रारुणि ।

ऽआवोदिविजाऽकृतेनाविष्णुण्वानामहिमानुमार्गात् । अपडुहस्तमऽआवुरुष्टमंगिरस्तमापध्याऽअजीगः ॥ महे
 नोऽअद्यसुवितायबोध्युषेमहेसौभगायप्रयधि । चित्ररवियशसंधेह्यसेदेविमत्तुमानुषिश्रवस्युः ॥ एतेत्येभान
 वोदशुतायाश्चित्राऽउपसोऽअमृतसऽआरुः । अभिपश्यतीवयुनाजनानां दिवोदुहिताभुवनस्यपहो ॥ वाजिनीवतीसूर्यस्यो
 पराकात्पंचक्षितीःपरिसद्योजगति । ऋषिष्टुताजरयतीमघोन्युषाऽउच्छतिवाहैभिर्युणानां ॥ सत्यासत्योभिर्महतीमहर्द्ध
 षाश्चित्राऽअहश्चक्षुषसंवहंतः । यातिशुभ्राविश्वपिशारथैर्नदधातिरत्नैर्विधतेजनाय ॥ प्रतियुतानामरुषासोऽअ
 वीदेवेभिर्यजतायजत्रैः । रुजहुहानिदददुस्त्रियाणांप्रतिगार्वऽउपसंवावशंत ॥ नूनोगोमर्द्धीरवद्धेहिरब्रमुषोऽअश्वान
 तुरुभोजोऽअस्मे । मानोवाहिःपुरुषतानिदेकयुयंपात० ॥ २२ ॥ (७।५।६) उदुज्योतिरमृतविश्वजन्यविश्वानरः
 सवितादेवोऽअश्रेत् । अर्धदुकेतुरुपसःपुरस्तात्प्रतीच्यागादधिहृम्येभ्यः ॥ प्रमेपंधादेवयानांऽअहश्चक्षुषमर्धतोवसु
 भिरिष्कृतासः । अर्धदुकेतुरुपसःपुरस्तात्प्रतीच्यागादधिहृम्येभ्यः ॥ तानीदहानिवहुलान्यासत्याप्राचीनुमुदितासू
 र्यस्य । यतःपरिजारऽईवाचरत्युपोददुक्षेनपुनर्यतीव ॥ तऽइहेवानसधुमादऽआसन्नतावानःकुवयःपूर्यासः । गृहं
 (७।५।६) उदुज्योतिरितिसप्तचक्षुषस्यैत्रावरुणिवसिष्ठस्यब्रिहस्प ।

ज्योतिःपितरोऽअन्वविंदत्सत्यमत्राऽअजनयद्गुणसं ॥ समानऽङ्गवेऽअधिसंगतासःसंजनेतेनयंतंतेमिथस्ते । तेदेवा
 नानभिर्नतिव्रतान्यमर्थतोवसुभिर्यादमानाः ॥ प्रतित्वास्तोमैरीकतेवासिष्ठाऽउपवृधःसुभगेतुष्टुवांसः । गवानित्रीवाज
 पत्नीनऽउच्छोपःसुजातेप्रथमार्जस्व ॥ एषानेत्रीरार्धसःसुवृत्तानामुपाऽउच्छतीरिभ्यतेवासिष्ठैः । दीर्घश्रुतैरयिमस्मे
 पत्नीनऽउच्छोपःसुजातेप्रथमार्जस्व ॥ (७।५।७) उपैरुरुचेयुवतिर्नयोपाविश्वजीवंप्रसवतीचरायै । अभूदग्निःसमिधेमानु
 दधानाययंपत० ॥ २३ ॥ (७।५।७) विश्वप्रतीचीसप्रथाऽउदस्थादुशुद्धासोविभ्रतीशुक्रमभ्यैत् । हिरण्यवर्णासुदृशी
 पाणामकज्योतिर्विर्वाधमानातमांसि ॥ विश्वप्रतीचीसप्रथाऽउदस्थादुशुद्धासोविभ्रतीशुक्रमभ्यैत् । उपाऽअदशिरिदमिभ्यैका
 कसंहृगवांमातानेज्यह्नामरोचि ॥ देवानांचलुःसुभगावहतीत्येतनयतीसुदृशीकुमभ्यै । यावयद्देपुऽआभरावसूनिचोद
 चित्रामघाविश्वमनुग्रभता ॥ अंतिवामादरेऽअभिन्नमुच्छोर्गणव्यूतिमभयंकुधीनः । इयंचनोदधतीविश्ववारुगोमदश्वान्व
 यराधोगुणतेमंघोनि ॥ अस्मेश्चेभिर्भानुभिर्विभाह्यपौदेविप्रतिरतीनऽआयुः । सास्मासुधारयिमज्वन्वहतंययंपत० ॥ २४ ॥
 द्रथवच्चरार्धः ॥ गान्त्वापिवोदुहितवर्धयंयुपःसुजातेमतिभिर्वसिष्ठाः । सास्मासुधारयिमज्वन्वहतंययंपत० ॥ २४ ॥
 (७।५।८) प्रतिकेतवःप्रथमाऽअदृशन्नध्वोऽअस्याऽअंजयोविश्रयंते । उपैऽअर्वाचावृहुतारथैनज्योतिर्मतात्राम
 मुस्मभ्यैवक्षि ॥ प्रतियीमग्निर्जरेतेसमिद्धःप्रतिविप्रासोमतिभिर्गणतः । उपायान्तिज्योतिर्पावाधमानाविश्वतमांसिदु
 (७।५।७) उपोरुरुचइतिपडुचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिवसिष्ठउपाक्षिष्टु । (७।५।८) प्रति केतवइतिपचस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणि



रितापदेवी⁺ ॥ एताऽउत्याः प्रत्यहश्रन्पुरस्ताज्योतिर्यच्छतीरुपसौविभातीः । अजीजनन्त्सूर्ययज्ञमग्निमपाचीनन्तमो
 ऽअगादजुष्टं ॥ अचेतिदिवोदुहितामघोनीविश्वेपश्यत्युषसंविभातीं । आस्याद्रथस्वधयायुज्यमानमायमश्वसःसुयु
 जोवहति ॥ प्रतित्वाद्यसमनसोबुधंतास्माकांसोमघवानोवयंच । तिल्विलायध्वमुषसोविभातीर्युयंपत० ॥ २५ ॥
 (७।५।९) व्युष्टाऽआवःपृथ्याङ्जनानांपंचक्षितीमानुषीवोधयंती । सुसंहर्गिभरुक्षभिर्मानुमश्रोद्विसूर्योरोदसीचक्ष
 सावः ॥ व्यंजतेदिवोऽअतैष्वक्नुविशोनयुक्ताऽउषसोयतंते । संतेगावस्तमऽआवर्तयंतिज्योतिर्यच्छंसिवितेववा
 ह⁺ ॥ अश्वदुषाऽइंद्रतमामघोन्यजीजनत्सुवितायश्रवांसि । विद्वोदेवीदुहितादधात्यंगिरस्तमासुकृतेवसूनि ॥ ता
 वंदुषोराधोऽअसम्यंरास्वयावत्स्तोतृभ्योऽअरदोगुणाना । यांत्वाजुष्ट्वैषमस्यारवेणविद्वहस्यदुरोऽअद्रेरणोः ॥ देवं
 देवाराधसेचोदयत्यस्मद्भक्तसूतताऽईरयंती । व्युच्छंतीनःसनयेधियोधायुयंपत० ॥ २६ ॥ (७।५।१०) प्रतिस्रो
 मेभिरुषसंवसिष्टागीभिर्विप्रासःप्रथमाऽअबुधन् । विवर्तयंतीरजसीसमंतेऽआविष्कण्वतींभुवनानिबिम्बा ॥ एषास्या
 नव्यमायुर्दधानागृहीतमोज्योतिषोषाऽअवोधि । अग्रऽएतिश्रुतिरहयाणाप्राचिकित्सूर्ययज्ञमग्निं⁺ ॥ अश्वान्वती
 र्वसिष्ठवषास्त्रिष्टुप् । (७।५।९) व्युपाआवइतिपंचर्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठउपास्त्रिष्टुप् । (७।५।१०) प्रतिस्रोमेभिरितितृच-
 स्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठउपास्त्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ६

॥ ३७ ॥

मंडलं ७

अनु. ५

॥ ३७ ॥

णोतिसनरी ॥ उदुस्त्रियाःसृजतेसूर्यःसर्चाऽउद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् । तवेदुषोव्युषिसूर्यस्यचसंभक्तेनगमेमहि ॥ प्रतित्वा
दुहितर्दिवऽउषोर्जीराऽअमुत्सहि । यावहसिपुरुस्पाह्वेनन्वतिरत्नेनडाशुषेमयः ॥ उच्छंतीयाकुणोषिमंहनामहिप्र
ख्येदेविस्वहृशे । तस्यास्तेरत्नभाजऽईमहेवयस्याममालुर्नसुनवः ॥ तच्चित्रराघऽआभरोषेयर्दीर्घश्रुत्तमं । यत्तेदिवो
दुहितमर्तुभोजनंतद्रास्वभुनजामहै ॥ अर्वाःसरिभ्योऽअमृतवसुत्वनंवाजोऽअस्मभ्यंगोमतः । चोदयित्रीमघोनःसुदु
तावत्युषाऽउच्छदपस्त्रिधः ॥ १ ॥ (७।५।१२) इंद्रावरुणायुवमध्वरायनोविशेजनायुमहिशर्मयच्छतं । दीर्घप्रय
ज्युमतियोवनुष्यतिवयंजयेमपृतेनासुदुह्यः* ॥ सन्नालन्यःस्वराळन्यऽउच्यतेवांमहांताविद्रावरुणामहावसू । विभ्वे
देवासःपरमेव्योमनिसंवाभोजोवृषणासंवलदधुः ॥ अन्वपांखान्यतृतमोजसासूर्यमैरयतंदिविप्रभुं । इंद्रावरुणामदे
ऽअस्यमायिनोपिन्वतमपितुःपिन्वतंधियः ॥ युवामिद्युत्सुपृतेनासवह्योयुवांक्षेमस्यप्रसवेमितज्ञवः । ईशानावस्वऽ
उभयस्यकारवऽइंद्रावरुणासुहवाहवामहे ॥ इंद्रावरुणायदिमानिचक्रथार्विश्वाजातानिभुवनस्यमज्जना । क्षेमेणमि
त्रोवरुणदुवस्यतिमरुर्भिर्यःशुभमन्यऽईयते ॥ २ ॥ महेशुल्कायवरुणस्यनुत्विषऽओजोमिमातेध्रुवमस्यत्स्वं । अ
जामिमन्यःश्रथयंतुमातिरदुभोभिरन्यःप्रवृणोतिभूर्यसः ॥ नतमंहोनदुरितानिमर्त्यमिंद्रावरुणानतपःकुतश्चन ।
(७।५।१२) इंद्रावरुणेतिदशर्चस्यसूक्तमैत्रावरुणिवसिष्ठइंद्रावरुणौजगती ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ६

॥ ३८ ॥

सुदासंऽइंद्रावरुणावशिक्षतं । श्रित्यचोयत्रनमसाकपदिनोधिधाधीवतोऽअसपंतवृत्सवः ॥ वृत्राण्यन्यःसमिधेषुजि
मतेव्रतान्यन्योऽअभिरक्षतेसदा । हवामहेवावृषणासुवृत्किभिरस्मेऽइंद्रावरुणाशर्मयच्छतं ॥ अस्मेऽइंद्रोवरुणोमित्रोऽअ
यमाद्यन्नयच्छतमहिशमसप्रथः । अवधंज्योतिरदिदेकृतावृधोदेवस्यश्लोकंसवितुर्मनामहे ॥ ५ ॥ (७।५।१४) आ
वौराजानावध्वरववृत्त्याहव्योभिर्द्रावरुणानमोभिः । प्रवाधृताचीवाहोर्दधानापरित्मनाविषुरुपाजिगाति ॥ सुवोरा
विदधेपुचारैकृतं ब्रह्माणिसरिपुप्रशस्ता । परिनोहेळोवरुणस्यवृज्याऽवरुणऽइंद्रःकृणवदुलोकं+ ॥ कुतनोयज्ञ
विश्ववारंरयिधत्तं वसुमंतं पुरुक्षुं । प्रयऽआदित्योऽअनृतमिनात्यभिताशरोदयतेवसूनि ॥ अस्मेऽइंद्रावरुणा
वत्तोकेतनयेतुजाना । सुरलोसोदेववीतिगमेमयूपतं ॥ ६ ॥ (७।५।१५) पुनीपेवामरक्षसमनीपांसोममि
द्रायवरुणायजुहवत् । धृतप्रतीकामपसंनदेवीतानोयामशुरुष्यतामभीकं ॥ सधितेवाऽउदेवृहयेऽअत्रयेषुध्वजेषुदिद्य
वःपतति । युवतोऽइंद्रावरुणावमित्रान्हृतं पराचःशर्वाविपूचः ॥ आपश्चिद्विस्वयशसःसदःसुदेवीरिंद्रवरुणंदेवताधुः ।
कुष्टीरन्योधारयतिप्रविक्कावृत्राण्यन्योऽअप्रतीनिहति ॥ ससुकुर्तुर्कृतचिदस्तुहोतायऽआदित्यशवसावांनमस्वान् ।
(७।५।१४) आवांगजानावितिपंचस्यसूक्तसमैत्रावरुणिवसिष्ठइंद्रावरुणौत्रिष्टुप् । (७।५।१५) पुनीधेवामितिपंचस्यसूक्तसमैत्रावरुणि

मंडलं ७

अनु. ५

॥ ३८ ॥

आनर्तद्वयमेवाहमिष्मानुदित्मनुं नितायप्रयंरान् ॥ इयमिष्टंरुंमद्वेगीःप्रापेनो ह्यनयंनुवेजाना । नृगानो
 देवनीतिमेमयंयंपति ० ॥ ७ ॥ (७५१६) भीगतायमहिनानुनयितुमन्मभुगोऽभीनिदुर्गा । प्रनार्ममृन्नु
 नुदेवृत्तैद्वितानक्षेपप्रथेजभम् ॥ इतम्ययातन्याइमंयंनृत्तकुदान्पुनरेणेमुपानि । किंमिह्यमरणानोपुनत
 दामृच्छीकंममनाऽअभिरय ॥ पुच्छेनंनोतरणदिदृशोऽपमिनिहिनुगंमिन्नु ॥ नृमानमिन्मेकुरयंदिदाम्य
 हतुभ्यंवरुणोष्णीते ॥ किमागंऽआमरुणन्येइयन्मोवागुनिगनमिन्नायं । प्रनम्योचोदृकभस्वभारोऽथत्याने
 नानमसातुरऽइयां ॥ अचद्रभानिपिवांमृन्नानोमयायुचं कृमातनभिः । अंगनपययुंनतायुंनृपायुंनंनदाश्चो
 धर्मिष्ठं ॥ नसःस्वोदशोवरुणधृतिःमासुगंमन्युपिंभोदेहोऽर्पाति । अमित्रयायानकनीयनऽउपांरुम्यमंइनेदने
 तस्यप्रयोता ॥ अरंदागोनमीगुपंकराण्युदंवायभुणेनोपाः । अनेनयमृचितोऽपुऽअयौयुन्यंयंकुधितरोनुना
 ति ॥ अयंमुतुभ्यंवरुणस्वधात्रोहृदिन्मोऽपथितऽिदत्तु । अंनुःमंमंमयोपेनोऽअनुगयपान्यन्मिभिः ० ॥ ८ ॥
 (७५१७) रदत्पथोवरुणःसूर्योयुवाणीमिममृद्विवांनदीना । नगोन्मृष्टोऽअर्वापेतायन्नुकारंमहिग्वनोर्गभ्यः ॥
 आत्मातेवालोरजुऽआनवीनोत्पुशुनधुणिंयवमेमनुमान् । अंतर्महीवृलुतीरोत्तुमीमनिःयान्तामपकणप्रियाणि ॥ परि
 र्वेसिष्टद्रावकणोनिगुत् ॥ (७५१८) धीराहिराद्वर्तन्ममृकल्पनेपाकल्पिपिद्योतकल्पिगुत् । (७५१९) र ७ ॥ १८ ॥ नमः ॥ नृगमज्जन

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ६

॥ ३९ ॥

स्पर्शोवरुणस्यस्मादिष्टाऽऽभेदं यतिरोदसीसुमेके । क्रतावानः कवयो यज्ञधीराः प्रचेतसो यऽङ्घ्रयं तुमन्म ॥ उवाच मेव
रुणो मे धिरायुत्रिः स तनामा ह्यविभति । विद्वान्पदस्य गुह्या नवो च द्रुगा यविप्रऽउपराय शिक्षन् ॥ तिस्रो घावो निहिता
अंतरस्मिन् तिस्रो भूमीरुपराः षड्विधानाः । गुत्सो राजावरुणश्चक्रऽएतं द्विविप्रैर्वा हिरण्ययं शुभेकं ॥ अवसिंधुवरुणो
द्यौरिव स्थादृप्सो नभ्येतो मगस्तुर्विष्मान् । गंभीरश्च सोरजसो विमानः सुपारक्षत्रः स तोऽअस्य राजा ॥ यो मळयाति चक्रु
ष्टोमं तं वसिष्ठमीह्यै भरस्व । यईमर्वाचं करं ते यज्ञं सहस्रां मघं वृषणं वृहंतं ॥ अध्रान्वस्य संहृशं जगन्वान् ग्रेनीकं वरुण
अधियदुपांस्तुभिश्चरावप्रैस्वऽईखयावहैशुभेकं ॥ आयद्रुहा ववरुणश्च नानां प्रयत्समद्रमीरया वमध्यं ।
सुदिनत्वेऽअङ्गां याज्ञघ्रावस्तनन्यादुपासः ॥ वसिष्ठं ववरुणो नाव्याधा हर्षिचकार स्वपामहोभिः । स्तोतारं विप्रः
स्वधावः सहस्रं द्वारं जगमागृहंतं ॥ कं१त्यानि नौ सख्यावभूवुः सचावहेयदवृकं पुराचिच । वृहंतं मानं वरुण
जेमयं धिष्णमाविप्रः स्तुवते वरुणं ॥ भ्रुवा सुत्वा सुक्षितिषु क्षियतो व्य१स्य स्या शं वरुणो मुमोचत् । मातुऽएनं स्वतो यक्षिन्मु
भेन वरुणिर्वसिष्ठो वरुणस्त्रिष्टुप् । (७।५।१८) प्रशुं ध्रुवमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्यैत्रावरुणिर्वसिष्ठो वरुणस्त्रिष्टुवंत्याजगती । (अत्यापाशवि-

मंडलं ७

अनु. ५

॥ ३९ ॥

पस्थान्युपगतं ॥ १० ॥ (७।५।१९) मोपुवरुणमन्मयं गङ्गां जज्ञहं गमं । मळासुक्षत्रमळ्यं ॥ यदेभिप्रस्फुरन्निव
दृतिर्नध्मातोऽअद्रिवः । मळा० ॥ ऋतवः समहृदीनात् प्रतीपं जगमाशुचे । मळा० ॥ अपामं ध्येत स्थिवांसं तृष्णा विद
ज्जितारं । मळा० ॥ यत्किंचेदंवरुणदैव्ये जनेभिद्रोहं मनज्या इथरा मसि । अचिन्तीयत्तव धर्मायुयोपि ममानस्तस्मादे
न सो देवरीरिपः ॥ ११ ॥ (७।६।१) प्रवीर्याशुचयोदद्विरेवामध्वयुभिर्भुमंतः सुतासः । अचिन्तीयत्तव धर्मायुयोपि ममानस्तस्मादे
च्छापि वासुतस्यांधसोमदाय ॥ ईशानाय प्रहृतियस्तऽआनइच्छाचिंसोर्मैशुचिपास्तुम्यत्रायो । कृणोपितं मर्त्यं पुप्रशस्तं
जातो जतो जायते वाज्यस्य ॥ रायनुयं जतरोदसीमेराये देवधी धिपणाधातिदेवं । अर्धवायुं नियुतः सश्च तस्याऽउत्तथे
तं वसुधितिं निरेके ॥ उच्छन्नपसः मुदिनाऽअग्निप्रादुरुज्योतिर्विदुर्दीप्यानाः । गव्यं चिद्वर्धमुशिशो विवव्रस्ते पामनुप्र
दिवः सन्नरापः । ते सत्ये न मनसा दीप्यानाः स्वेन युक्तासः ऋतुना वहति । इन्द्रवायूरीरवा इन्द्रं वामीशानयोरभिपृक्षः स
चते ॥ ईशाना सो ये दधते स्वर्णो गोभिरथैर्भुवसुभिर्हिरण्यैः । इन्द्रवायूसूर्यो विश्वमायुर्यद्विर्वरैः पृतनासु सद्युः ॥
अर्धतो न श्रवसो भिक्षमाणाऽइन्द्रवायूसुष्टुतिर्भिवसिष्ठाः । वाजयंतः स्ववसेहुवमयुं पत० ॥ १२ ॥ (७।६।२) कृवि
मोचनीतिगुणः) (७।५।१९) मोपुवरुणेति पंचर्चसूक्त्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठो वरुणो गायत्र्यं त्याज गती । (७।६।१) प्रवीर्येति सप्तर्चस्य
सूक्त्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठः आद्याना च तस्य गानाद्युस्त्यानातिष्ठणामिन्द्रवायुं त्रिष्टुप् । (७।६।२) कृविदेगेति सप्तर्चस्य सूक्त्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठ

मोचनीतिगुणः)

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ६

॥ ४० ॥

दुंगनमसायेबुधासःपुरादेवाऽअनवद्यासऽआसन् । तेवायेवेमनवेवाधितायावासयन्नुपसंसृजेण ॥ उशंतादूतानदभा
यगोपासासश्चपाथःशरदश्चपूर्वीः । इंद्रवायूसृष्टतिर्वीमियानामाङ्गीकमीष्टेसुवितंचनव्यं ॥ वीवोऽअन्नोरयिवृधःसुमे
धाःश्वेतःसिषकिनियुतामभिथ्रीः । तेवायेवेसमनसोवितस्थुर्विश्वेशरःस्वपत्यानिचक्रुः ॥ यावत्तरस्तन्वोऽयावदोजो
यावन्नरश्चक्षसादीध्यानाः । शुचिसोमंशुचिपापातमसेऽइंद्रवायूसदंतवर्हिरेदं ॥ नियुवानानियुतःस्पार्हवीराऽइंद्रवायू
सरथयातमर्वाक् । इदं हिवांमभृतंमध्वोऽअग्रमधग्रीणानाविमुमुक्तमसे ॥ यावीशतंनियुतोयाःसहस्रमिंद्रवायूविश्व
वाराःसचैते । आभिर्यातंसुविदत्राभिरर्वाक्पातंनराप्रतिभृतस्यमध्वः ॥ अर्वतो नश्र्वसोभिक्षमाणाऽइंद्रवायूसृष्टुति
भिर्वसिष्ठाः । वाजयंतःस्ववसेहुवेमययंपात० ॥ १३ ॥ (७।६।३) आवायोभूपशुचिपाऽउपनःसहस्रंतेनियुतोवि
श्ववार । उपेतैऽअंधोमद्यमयामियस्यदेवदधिपेपूर्वपेयं ॥ प्रसोतांजीरोऽअध्वरेष्वस्थात्सोममिंद्रायवायवेपिवध्वै ।
प्रयङ्गमध्वोऽअग्रियंमरत्यध्वयवोदेवयंतःशचीभिः ॥ प्रयाभिर्यासिंदाश्वंसमच्छानियुद्भिर्वायविष्टयैदुरोणे । निनो
रयिसुभोजसंयुवस्वनिवीरंगव्यमश्व्यचराधः ॥ येवायवऽइंद्रमादनासऽआदेवासो नितोशनसोऽअर्यः । मंतोवृत्रा
णि सरिभिःप्यामसासुह्रांसोयुधानृभिरमित्रान् ॥ आनोनियुद्भिःश्रुतिनीभिरध्वरंसहस्रिणीभिरुपचाहियुजं । वायो
इंद्रवायूआद्यातृतीययोर्वयुस्त्रिष्टुप् । (७।६।३) आवायवितिपंचर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठोवायुर्द्वितीयाचतुर्थोऽद्रवायूत्रिष्टुप् ।

मंडलं ७

अनु. ६

॥ ४० ॥

[illegible]

वाङ्गीभिर्विपन्यवः प्रयस्वतो हवामहे । मेघसातासनिष्यवः ॥ १७ ॥ इंद्राग्नीऽअवसागतमस्मभ्यर्चयणीसहा । मा
 नोदुःशंसऽईशत ॥ माकस्यनोऽअररुपोधूर्तिः प्रणज्जत्यस्य । इंद्राग्नीशमैयच्छतं ॥ गोमच्छिरण्यवद्वसुध्वामभ्यावदी
 महे । इंद्राग्नीतद्वनेमहि ॥ यत्सोमऽआसुतेनरऽइन्द्राग्नीऽअजोहवुः । सप्तौ वंतासपर्यवः ॥ उक्थेभिर्वृत्रहर्तमायामं
 दानाच्चिदागिरा । आंगैरुविवांसतः ॥ ताविदुःशंसमर्त्यदुर्विद्वान्संरक्षस्विनं । आभोगंहन्मनाहतमुदधिंहन्मनाह
 तं ॥ १८ ॥ (७।६।६) प्रक्षोदसाधार्यसासस्रऽएपासरस्वतीधरुणमार्यसीपूः । प्रवावधानारथ्यैवयानि विव्वाऽअ
 पोमहिनासिधुरन्याः+ ॥ एकाचेतत्सरस्वतीनदीनां शुचिर्यतीगिरिभ्यऽआसमद्रात् । रायश्चेततीभुवनस्य भूरर्धतंप
 योदुदुहेनाहुपाय ॥ सर्वावृधेन योपणासुवृषाशिष्टुर्वृषभोयज्ञियासु । सवाजिनं मघवज्ज्योदधातिविषातयेतन्वमा
 मृजीत ॥ इतस्यानःसरस्वतीजुषाणोपश्रवत्सुभगायज्ञेऽअस्मिन् । मितर्जुभिर्नमस्यैरियानारायायुजाच्चिदुत्तं रासखि
 भ्यः ॥ इमा जुह्वानायुष्मदानमोभिः प्रतिस्तोमं सरस्वतिजुषस्व । तव शर्मन्प्रियतमे दधानाऽउपस्थेयामशरणं न बुक्षं+ ॥
 अयमुते सरस्वतिवर्षिष्ठोद्वारावृतस्य सुभगेव्यावः । वर्धशुभ्रेस्तु त्वेरासिवाजान्युयंपात० ॥ १९ ॥ (७।६।७) बृहदु

गायत्र्यं त्याजुष्टुप् । (७।६।६) प्रक्षोदसेति षडृचस्य सूक्तस्य भैत्रावरुणिर्वसिष्ठः सरस्वतीवृतीयायाः सरस्वांस्त्रिष्टुप् । (७।६।७) बृहदुगायिपइति ष
 डृचस्य सूक्तस्य भैत्रावरुणिर्वसिष्ठः सरस्वती अंत्यानां तिसृणां सरस्वान् आद्या बृहती द्वितीया सतो बृहती वृतीया प्रस्तारपंक्तिः अंत्यास्त्रिस्तो गायत्र्यः ।

गायिप्रेचौम्यानिर्दनां । संस्वतीमिन्मद्यामुत्कृष्टिः स्तोमं वसिष्ठोदमी ॥ उभेयत्तंमहिनायुञ्जेऽअंधसीऽअ
 धिश्चिर्यंतं पूर्वः । सानो नोध्यवित्रीमरुत्तंगचोद्यशानोमघोनां ॥ भद्रसिद्धद्राहुणवृत्तंमरुत्तंगचोद्यशानोमघोनां ॥ येतेम
 न्ती । गणानाजमदग्निनरुत्तुवानचयसिष्ठनत् ॥ पुनीयंतोन्नग्रयः पुत्रीयंतः मुद्रानवः । मरुत्तंगचोद्यशानोमघोनां ॥ भुक्षीमर्माप्रजासिप
 रस्वऽऊर्मयोमधुमंतोष्टुतः । तेभिर्नांऽवित्तभन ॥ पीपिप्रागंमरुत्तंगचोद्यशानोमघोनां ॥ भुक्षीमर्माप्रजासिप
 ॥ २० ॥ (७।६।८) युज्ञेद्रिजो न पदेन गृध्रिव्यानरो यद्रव्यमोमदंति । उद्रायन्नुसवना निमन्वंगमन्मदयप्रश्रमं वय
 श्च ॥ आदं व्यावृणीमहेनोमिन्मृह्मस्यतिर्नामहऽआर्मरायः । यथाभवेममोत्तुपऽअनां गायो नोद्रात्तापरावतः पितेव ॥ मऽआ
 तमज्येष्ठं नमसाहुविभिः सुशेवृत्रलांणस्पतिं गृणीषे । उद्रुह्योहोमहिर्द्व्यः सितकयोत्रलणोद्वयकृतस्युराजो ॥ तमनो
 नोयोर्निसदत्तुषोवृहस्पतिं विश्वारोयोऽअस्मि । कामोरायः मवीर्यस्य तदात्तपर्वोऽअतंमथतोऽअरिष्टान् ॥ २१ ॥ तंग्रमा
 डूर्कममृतायुष्टुमिमेषां सुसुतोसः पुराजाः । क्षान्तं यजंतं परस्त्रानात्तुल्यगतिं मनुष्याण्येव ॥ २२ ॥ तंग्रमा
 डूर्कममृतायुष्टुमिमेषां सुसुतोसः पुराजाः । महश्चिद्यस्य नीके त्सुधस्यं न भो नृपमं रुमं वसानाः ॥ महिगुचः श्रुत
 डूर्कममृतायुष्टुमिमेषां सुसुतोसः पुराजाः । महश्चिद्यस्य नीके त्सुधस्यं न भो नृपमं रुमं वसानाः ॥ महिगुचः श्रुत
 डूर्कममृतायुष्टुमिमेषां सुसुतोसः पुराजाः । महश्चिद्यस्य नीके त्सुधस्यं न भो नृपमं रुमं वसानाः ॥ महिगुचः श्रुत

सोऽअरुयासाऽजन्तुः
पेवः सशुध्युर्हरेणवात्रीरिपरिस्वयोः । वृहस्पतिः
आगायद्रः नृपानमन्त्राद्योत्रात्मकः

(७।६।८) यज्ञेदिपठतिद्व्यर्थं स्वमुक्तं स भेषात्पनिर्मितोद्भूतः

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ६

॥ ४२ ॥

सीजनित्रीबृहस्पतिं वावृधतुर्महित्वा । दुक्षाव्यायदक्षतासखायुः करुद्रहणे सुतरा सुगाधा- ॥ इयवौ ब्रह्मणस्पते सुवृ-
क्तिर्ब्रह्मद्रायवज्जिणेऽअकारि । अविष्टं धियो जिगतं पुरंधीर्जस्तमर्यो वनुपामरातीः ॥ बृहस्पते युवमिन्द्रश्च स्वोदिव्य
स्यैशाथेऽउत पाथिवस्य । धृतरथिंस्तु वते कीरथे चिद्ययंपात० ॥ २२ ॥ (७।६।९) अध्वर्यवोरुणं दुग्धमं शुं जुहोत न
वृषभार्यक्षित्तीनां । गौराद्वेदीयाऽअवपानमिन्द्रो विश्वाहेद्यातिसुतसोममिच्छन् ॥ यदधिषे प्रदि विचावन्नो दिवो दिवे
पीतिमिदस्य वक्षि । उत हृदोतमनसा जुषाणऽउशन्निद्रप्रस्थितान्पाहि सोमान् ॥ जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्रतेमाताम
हिमानमुवाच । एन्द्रप्राथोर्वि१ तरिक्षं युधादेवेभ्यो वारिवश्च कर्ष ॥ यद्योधयामहूतो मन्यमानान्त्साक्षो मतान्वाहुभिः
शाशदानान् । यद्गानुभिर्वृतं इंद्राभियुध्यास्तं त्वया जिंसौ श्रवसं जयेम ॥ प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्रनूतनामधवाया
चकार । यदेददवीरसं हिष्टमायाऽअथाभवत्केवलः सोमोऽअस्य ॥ तवेदं विश्वमभितः पशुर्व्यं१ यत्पश्यसि चक्षसासूयं
स्य । गवामसि गोपतिरेकं इंद्रभक्षीमहि ते प्रयतस्य स्वः ॥ बृहस्पते युवमिन्द्रश्च स्वोदिव्य स्यैशाथेऽउत पाथिवस्य ।
धृतरथिंस्तु वते कीरथे चिद्ययंपात० ॥ २३ ॥ (७।६।१०) परोमात्रया तु न्वावृधानुन ते महित्वमन्वश्नुवन्ति । उभेते
(७।६।९) अध्वर्यव इति सप्तर्चस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ इंद्राया इन्द्रावृहसती त्रिष्टुप् । (७।६।१०) परोमात्रयेति सप्तर्चस्य
सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो विष्णुः उरुं यज्ञायेति तिसृणामिन्द्राविष्णू त्रिष्टुप् ।

मंडलं ७

अनु. ६

॥ ४२ ॥

विभ्रजनीयुश्चिद्व्यविणोदेवत्वंगमस्यवित्ते ॥ नतंगिणो जायमानोनानातोदेवंगमिन्नः परमंभाप । उदलभ्याना
 कर्मव्यवहंतं द्वाधर्थप्राज्ञं कुरुभंशुश्चिद्व्याः ॥ उगननीधेनमतीतिभतयैवमिनिनयेदगुस्या । जलभ्यागेदेमीवि
 ष्णवेते द्वाधर्थपुश्चिदीमभितोमयूतः ॥ इहेयजायन कथुरुदो केजनयतामूयं भगानेमधि । दानेस्यचिद्व्यविप्रस्यमाया
 जघ्नुर्नरापुतनाज्येयु ॥ इन्द्रविष्णुं नृणां शंनरस्वनयपुरेनयतिनश्चयिष्टं । अंतयुजिनः गुरुचनमाकंदुयोऽअप्रत्य
 सुरस्यवीरान् ॥ इयंमनीयानृतीवर्तोरुक्रमातवमानुधयती । गंग्यान्तोमं चिद्व्येगुमिणोपिन्मिनिमिपोगुनेजिद्र ॥
 वपद्मतेविष्णवामऽआकृणोभितन्मेजुपस्वगिभिषिप्रहृद्यं । नर्धनुत्वागुदुनयोपिनोमिययंपत ॥ २४ ॥ (७।६।११)
 नूमतोदयतेसनिप्यन्योविष्णवऽउरुगायायदाग्रत् । प्रय गवाचामनमायनातऽगतायंतनयंमावित्रामात् ॥ त्रिद्वंशः
 ष्णोसुमतिंविथ्यजन्यामप्रयुतामेववावोमतिदः । पञ्चययानः सुविनस्यभूरर्थानतः पुरुशंद्रस्यरायः ॥ त्रिचक्रमेष्टुश्चिदीम
 धित्रीमेपऽएतांविचक्रमेष्टुतर्चंसमलित्वा । प्रमिण्णुरस्तुतमस्तवीयान्वेषांस्वस्थधिरस्यनाम ॥ त्रिचक्रमेष्टुश्चिदीम
 पऽएतांक्षेत्राद्युविष्णुर्मेनुगेदशस्यन् । ध्रुवासोऽअस्यकृग्योजनामऽउरुक्षितिंनजनिमाचकार ॥ प्रतनेऽअग्रार्गपिवि
 द्युनामार्थः शंसामिचयुनोनिविद्वान् । तंत्वागुणामितवममतेव्यान्ययंतमस्वरजमः परोके ॥ किमितिंविणोपरिचद्वं

(७।६।११) नूमतं दत्तिमप्रचैत्यसूक्तस्यमेतावरुणिर्गमिष्टोनिष्णुनिष्ठम् ।

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ७

॥ ४३ ॥

भूप्रयद्ववक्षोशिपिविष्टोऽस्मि । मावर्षोऽस्मदपगूहऽएतद्यदन्यरूपः समिथेवभूथ ॥ वर्षद्वतेविष्णवाऽआकृणो
मितन्मैनुपस्वशिपिविष्टहृद्यं । वर्धतुत्वासुष्टुतयोगिरोमेयुं पात० ॥ २५ ॥ इतिपंचमाष्टकेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
अष्टविंशत्याध्यायेवर्गः २५ सूक्तानि २० ऋचः १४५ ॥ त्यागः ॥ उपस. ६ इंद्रावरुणाभ्या. ३० वरुणाये. २७ वायव. ४ इंद्र-
वायुभ्या. ३ वायव. इंद्रवायुभ्या. वायव. इंद्रवायुभ्या. वायव. इंद्रवायुभ्या. ४ वायव इंद्रवायुभ्या. ३ विष्णव. ३ इंद्राविष्णुभ्या. ३ इंद्रावे. ६ इंद्रावरुणाभ्या. ३० वरुणाये. २७ वायव. ४ इंद्र-
सरस्वत्. सरस्वत्या. ६ सरस्वत्. ३ इंद्रावे. ६ इंद्रावरुणाभ्या. ३० वरुणाये. २७ वायव. ४ इंद्र-
इंद्रावे. ६ इंद्रावरुणाभ्या. ३० वरुणाये. २७ वायव. ४ इंद्र-
तिष्ठः प्रद्वपार्जन्यं तु पर्जन्याय तु चंगा यत्र द्वितीयापाद निचुदेते कुमार आशेयो पश्यद्व सिष्ट एव वा वृष्टिकर्मः संवत्स
रं दशपर्जन्यस्तुतिः संहृष्टान्मंडूकांस्तुष्टावाद्यानुष्टुविंदासोमापंचाधिकं द्रासोमं राक्षोऽंशपाभिशापप्रायं पदस
वाद्याजगत्पृथक्विंशित्रयोविंशौ चाष्टादशीमारुतीचदशमीचतुर्दश्यावैद्यौ प्रवर्तयेति चतस्रैर्व्योमानोरक्षइत्युपेरात्मानआशीरुत्त
दशीत्रयोदशीसौम्यः सप्तदशीग्राव्यष्टमीषोळाश्यावैद्यौ प्रवर्तयेति चतस्रैर्व्योमानोरक्षइत्युपेरात्मानआशीरुत्त
रोर्धर्चः पृथिव्यंतरिक्षदैवतः परंगा यत्र ग्रावत्सर्पेर्कृषिश्चानुक्तगोत्रः प्राज्जत्स्यात्काण्वोष्टमं डलं माचिच्चतुस्त्रिंश
न्मेधातिथिमेध्यातिथी एदं वार्हती द्विप्रगाथादिद्वित्रिष्टुवर्तमाधं द्रुचंप्रगाथोपश्यत्सधौरः सन्भ्रातुः कण्वस्य पुत्रता
*अत्रांतरिक्षधौरिति दैवत इति पाठो स्ति स च मानोरक्ष इति मेघोर्दैवत्वेन ग्रहणाभावादुपेक्ष्यः वसिष्ठाशीः पृथिव्यंतरिक्षदेवता त्रयमेवात्र युक्तं ।

मंडलं ७

अनु. ६

॥ ४३ ॥

मगात्प्रायोगिश्चासंगोयः स्त्रीभूत्वा पुमानभूत्समेध्यातिथयेदानंदं त्वास्तु हिंस्नुहीति चतसृभिरात्मनानंतुष्टार्चयन्ती
मगात्प्रायोगिश्चासंगोयः स्त्रीभूत्वा पुमानभूत्समेध्यातिथयेदानंदं त्वास्तु हिंस्नुहीति चतसृभिरात्मनानंतुष्टार्चयन्ती
मगात्प्रायोगिश्चासंगोयः स्त्रीभूत्वा पुमानभूत्समेध्यातिथयेदानंदं त्वास्तु हिंस्नुहीति चतसृभिरात्मनानंतुष्टार्चयन्ती

॥ दवोनुष्टुवंल्याभ्यांमेधाताथावामप्राप्तुः ॥ सवृत्तमं दृगवन्गभ्रमोपधी
॥ त्याःकौरयाणस्यपाकस्थान्नोदानस्तुतिर्यदिद्रसैकादेवातिथस्तृचात्यः ॥ सत्रिधातुगुग्रांशर्मयमश्नि
॥ वीश्वतस्त्रःपौण्योवा ॥ ७ ॥ प्रितुःपयःप्रतिगृभ्यातिमानातेनपि
॥ हरिःओम् ॥ (७।६।१२) तिस्रोवाचःप्रवद्व्योतिरग्रायाऽएतद्दुहेमधुदोघमूयः । त्रयःक्रोशामऽउपमेचनमोमभ्यः
॥ नांसद्योजातोवृषभोररेरपि ॥ योवर्धनऽओपधीनांयोऽअपांयोविश्वस्यजगतोद्वेयड्ड्ये । मयोभुवोवृष्टयःसंत्यस्मेगुपिप्यग्राऽ
वर्तज्योतिःस्वभिध्नः ॥ स्तरीरुत्थवृत्तिसूतऽउत्वद्यथावगंत्यंचक्रऽएपः । तन्मऽक्रनंपानुगतगारदाययंपान ॥
तावर्धतेतेनपुत्रः ॥ यस्मिन्विश्वानिभुवनानितस्थुस्तिषोद्यावखेधाममधुरापः । तन्मऽक्रनंपानुगतगारदाययंपानःपात्रिकः ।
श्चोतंल्यभितौविरुक्षं ॥ इदंवाचःपुर्जन्यायस्वराजैहृदोऽअस्यंतरंतल्लुजोपत् । तन्मऽक्रनंपानुगतगारदाययंपानःपात्रिकः ।
ओपधीद्वंगोपाः ॥ सरेतोधावृषभःगर्भ्वतीनांतस्मिन्नात्माजगतस्तस्थुपश्च । तन्मऽक्रनंपानुगतगारदाययंपानःपात्रिकः ।
(७।६।१२) तिस्रोवाचःपुर्जन्यायस्वराजैहृदोऽअस्यंतरंतल्लुजोपत् । तन्मऽक्रनंपानुगतगारदाययंपानःपात्रिकः ।

(७६।१२) तिलानिचद्राताभु

अ. ५ अ. ७

॥ ४४ ॥

॥ १ ॥ (७।६।१३) पर्जन्याय प्रगायत दिवस्पत्राय मीढुषे । सनोयवसमिच्छतु ॥ योगभूमोपधीनांगवोक्कुणोत्यव
तां । पर्जन्यः पुरुषीणां ॥ तस्माद् इदमस्यैह विजुहोतामधुमत्तमं । इळानः संयतं करतु ॥ २ ॥ (७।६।१४) संवत्सरं
शयानाब्राह्मणाव्रतचारिणः । वाचं पर्जन्यं जिन्यतां प्रमंङ्ङ्काऽअवादिषुः ॥ दिव्याऽआपोऽअभियदेनमायुन्दति न शु
ष्कं सरसी शयानं । गवामह न मायुर्वत्सिनीनामंङ्ङ्कानां वधुरत्रासमेति ॥ यदीमेनोऽऽचशतोऽअभ्यवर्षं तृष्यावतः प्रावृ
व्यागतायां । अक्खलीकृत्या पितरं पुत्रोऽअन्योऽअन्यमुपवदतमेति ॥ अन्योऽअन्यमनुगृभ्णात्येनोर्पां प्रसर्गयदमं
दिपातां । मंङ्ङ्कोयदुभिर्दृष्टः कर्निष्कन्पृश्निः संपंके हरितेन वाचं ॥ यदेषामन्योऽअन्यस्य वाचं शाकस्येव वदति शिक्ष
माणः । सर्वतदेपांसमृधेव पर्वयत्सुवाचो वदथ नाध्यप्सु + ॥ ३ ॥ गोमायुरेकोऽअजमायुरेकः पृश्निरेको हरितऽएकऽए
पां । समाननाम विभ्रतो विरूपाः पुरुत्रावाचं पिपिशुर्वदतः ॥ ब्राह्मणासोऽअतिरात्रे न सोमे सरोनपणमभितो वदतः ।
संवत्सरस्य तदहः परिष्ठयन्मंङ्ङ्काः प्रावृषीणं वभूव ॥ ब्राह्मणासः सोमिनो वाचं मक्रतु ब्रह्मकुण्वतः परिवत्सरीणं । अध्वर्य
वो धर्मिणः सिष्विदानाऽआविर्भवंति गुह्या न केचित् ॥ देवा हि तं जुगुप्सुर्दृशस्यऽऽकृतुं नरो न प्रमिनं त्यते । संवत्सरे प्रावृ
(७।६।१३) पर्जन्यायेति वचस्य सूक्तस्याभेयः कुमारः पर्जन्यो गायत्री । (७।६।१४) संवत्सरमिति दशर्चस्य सूक्तस्यैत्रावरुणि-
वसिष्ठः पर्जन्यस्तुतिं सहस्रमंङ्ङ्कास्त्रिमुवाद्यानुष्टुप् ।

॥ ४४ ॥

मंडलं ७

अनु. ६

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ७

॥ ४५ ॥

कदाचिदभिदासतिद्रुहा+ ॥ योमापाकेनमनसाचरतमभिचेष्टअनृतेभिर्वचोभिः । आपऽइवकाशिनासंगृभीताऽ
असन्नत्वासत्तऽइन्द्रवक्ता+ ॥ येषां कशंसं विहरतऽएवैर्वेषाभद्रं दृष्यतिस्वधामिभिः । अहयेवातान्प्रदातुसोमऽआवा
दधातुनिर्ऋतेरुपस्थे ॥ योनोरसंदिप्सतिपित्वोऽअग्नेयोऽअश्वानांयोगवांयस्तनूनां । रिपुःस्तेनःस्तेथक्कृद्वन्नमेतुनिपही
यतांतन्वा इ तनांच ॥ ६ ॥ परःसोऽअस्तुतन्वा इ तनांचतिस्त्रःपृथिवीरधोऽअस्तुविश्वः । प्रतिसुष्यतुयशोऽअस्यदे
वायोनोदिवादिप्सतियश्चनक्तं ॥ सविज्ञानंचिकितुपेजनयिसच्चासच्चवचसीपस्पृधाते । तयोर्थत्सत्यंयतरहर्जायुस्तदि
त्सोमोवतिहंत्यासत् ॥ नवाऽउसोमोवृजिनंहिनोतिनक्षत्रियमिथयाधारयंतं । हंतिरक्षोहंत्यासद्वदतमभाविंद्रस्यप्रसि
तौशयाते ॥ यद्विवाहमनृतदेवऽआसमोर्धवादेवोऽअप्यहेऽअग्ने । किमस्मभ्यंजातवेदोहणीपेद्रोघवाचस्तेनिर्ऋतंसंच
तां ॥ अद्यामुरीययदियातुधानोऽअसिचदियातुस्ततपूरूपस्य । अधासधीरैर्दुशभिर्विथूयायोमामोर्धयातुधानेत्याह
॥ ७ ॥ योमायातंयातुधानेत्याहयोवारक्षाःशुचिरस्मीत्याह । इन्द्रस्तंहंतुमहतावधेनुविश्वस्यजंतोरधमस्पदीष्ट ॥ प्र
वर्तयदिवोऽअश्मानमिन्द्रसोमंशितंमघवन्त्संशिश्राधि । वयोधेभृत्वीपुतयंतिनक्तमिथेवारिपोदधिरदेवेऽअध्वरे+ ॥ वि
याजिगोतिखर्गलेवनक्तमपद्रुहातन्वंगृहमाना । वब्रौऽअनृतोऽअवसापदीष्टयावणोमंतुरक्षसंऽउपवृद्धैः+ ॥ प्र

॥ ४५ ॥

मंडलं ७

अनु. ६

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ७

॥ ४६ ॥

तये । अस्माकं ब्रह्मेदमिद्रभूततेह विधा च वर्धनं ॥ विततूर्यते मघवन्विपुश्चितो यो विपोजनानां । उपक्रमस्व पुरुष
माभरवाजनेदिष्ठमूतये ॥ महेचनत्वामद्रिवः पराशुल्काय देयां । न सहस्रायनायुताय वज्रिवोनशुताय शतामघ ॥ १० ॥
वस्योऽइन्द्रासि मे पितुरुत्तभ्यातुरभुंजतः । माता च मे छदयथः समावसो वसुत्वनाय राधसे ॥ कैयथेकदसि पुरुत्रा चिद्धिते
मनः । अलषि युध्मखजकृत्पुंरं द्रप्रगायत्राऽअगासिषुः ॥ प्रास्मै गायत्रमवतवावातुर्यः पुरंदुरः । यामिः काण्वस्योपव
हिरासदंयासं ह्रीभिन्नपुरः ॥ येतु संति दशग्विनः शतिनो ये संहस्त्रिणः । अश्वो सो ये ते वृषणोरघुद्वस्तेभिर्नः स्तूयमा
गहि ॥ आत्वद्यसवर्द्धाहुवेगायत्रवैपसं । इन्द्रधेनुं सुदुधामन्यामि परमरुधारा मरंकृतं ॥ ११ ॥ यत्तु दत्सूरऽएतं शंवं
कृवातस्य पूर्णिनां । वहुकुत्सं माजुनेयं शतकतुःत्सरं ध्रुवमस्त्वृतं ॥ यऽकृते चिदभिश्चिपः पूराजुभ्यऽआतृदः । सं
धातासंधिं मघवापुरुवसुरिष्कं तां विहृतं पुनः ॥ माभूमनिष्ठाऽइव द्रुत्वदरेणाऽइव । वना निनप्रजहि तान्यद्रिवो दुरोपा
सोऽअमन्महि ॥ अमन्महीदनाशवो नुनासंश्च वृत्रहन् । सकृत्सुते महताशं राराधसानुस्तोमं सुदीमहि ॥ यदितोमं मम
श्रवदस्माकमिन्द्रमिदवः । तिरःपवित्रं ससवोऽआशवो मंदतुग्यावृधः ॥ १२ ॥ आत्वद्यसधसुतिं विवावातुः सख्यु
रागहि । उपस्तुतिर्मघोनां प्रत्वावत्वधातेव हिमसुतिः ॥ सोता हि सोममद्रिभिरेमेनमं सुधावत । गव्यावस्त्रववास
यंतुऽइन्द्रो निधुक्षन्वक्षणाभ्यः ॥ अधज्मोऽअधवा दिवो बृहतो रोचनादधि । अयावर्धस्व तन्वागिराममाजाता सुक्र

मंडलं ८

अनु. १

॥ ४६ ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ७

॥ ४७ ॥

हशेपुरस्तादनुत्थऽङ्कुरवरं वमाणाः । शश्वतीनार्धमिचक्ष्याहुसुभद्रमर्यभोजनविभर्षि ॥ १६ ॥ (८।१।२) इदं व
सोसुतमंधः पिवासुपूर्णमदरं । अनाभयिन्नरिमाते ॥ नृभिर्धूतः सुतोऽअश्वैरव्योवारैः परिपूतः । अश्वोननिक्कोनदी
बु ॥ तंतेयवंयथागोभिः स्वादुमकर्मश्रीणतैः । इंद्रत्वास्मिन्संधमादे ॥ इंदुऽइत्सोमपाऽएकऽइंद्रः सुतपाविश्वायुः ।
अंतद्वैवान्मर्त्यीश्च ॥ नयंशुक्कोनदुराशीनतुग्राऽउरुव्यचसं । अपस्पण्वतेसुहार्दि ॥ १७ ॥ गोभिर्घर्दीमन्चेऽअस्मन्म
गंनवामगयंते । अभित्सरंतिधेनुभिः ॥ त्रयऽइंद्रस्यसोमाः सुतासः संतुदेवस्य । स्वैक्षयेऽसुतपान्नः ॥ त्रयः कोशासः
श्रोतंतिस्त्रिश्चम्वः सुपूर्णाः । समानेऽअधिभार्मन् ॥ शुचिरसिपुरुनिष्ठाः क्षीरैर्मध्यतऽआशीर्तः ॥ इन्नामंदिष्टः शूर
स्य ॥ इमेतंऽइंदुसोमास्तीव्राऽअस्मेसुतासः ॥ शुक्राऽआशीरंयाचंते ॥ १८ ॥ तौऽआशीरं पुरोळाशमिंद्रमंसो
मंश्रीणीहि । रेवंतंऽइंदुसोमास्तीव्राऽअस्मेसुतासः ॥ शुक्राऽआशीरंयाचंते ॥ १८ ॥ तौऽआशीरं पुरोळाशमिंद्रमंसो
स्यात्वावतोमघोनः । मेदुहरिवः श्रुतस्य ॥ उक्थंचनशस्यमानमगौरिरराचिकेत ॥ रेवोऽइंदुवतः स्तोता
पीयुलवेमाशार्धतेपरदाः । शिक्षाशचीविः शर्चीभिः ॥ १९ ॥ वयमुत्वातुदिदंत्वाऽइंद्रत्वायंतः सखायः । कर्णाऽव
(८।१।२) इदं वसोसुतमिति द्विचत्वारिंशद्वचस्यसूक्तस्य मेधातिथिरांगिरसः प्रियमेधश्चेत्युभाद्वपीअंलयोर्द्वयोः काण्वोमेधातिथिर्कपिरिंद्रः
अंलयोर्विभिर्दुर्गायत्रीअष्टाविंश्यनुष्टुप् । (विभिर्दोर्दानस्तुतिः)

मंडलं ८

अनु. १

॥ ४७ ॥

कथेभिर्जरते ॥ नयेमन्यदापनवज्जिन्नपसोनविष्टौ । तवेदुस्तोमंचिकेत ॥ इच्छंतिदेवाःसुन्तुनस्वमायस्पृहयंति ।
 यंतिप्रमादमत्तद्राः ॥ ओपुप्रयाहिवाजेभिर्महिणीथाऽअभ्यस्वान् । महोऽईवयुवजानिः ॥ मोर्व१द्यदुर्हणवान्सा
 यंकरद्वारेऽअस्मत् । अश्रीरऽईवजामता ॥ २० ॥ विद्वाह्यस्यवीरस्यभूरिदारवीरसुमतिं । त्रिपुजातस्यमनांसि ॥
 आतूर्पिचकण्वमंतुनघाविद्वाशवसानात् । यशस्तरंगतमूतेः ॥ ज्येष्ठेनसोतरिद्रोयसोमवीरायशुक्राय । भरापिवन्नय्यय ॥
 योवेदिष्ठोऽअव्यथिष्वन्वावंतंजरितुभ्यः । वाजस्तोतुभ्योगोमंतं । पन्यंपन्यमित्सोतारऽआर्धावतुमद्योय । सोमवीराय
 शूराय ॥ २१ ॥ पातावृत्रहासुतमाघागमन्नारेऽअस्मत् । नियमेतंगुतमूतिः ॥ एहहरीव्रह्मयुजाशुगमावक्षतःसखा
 यं । गीभिःश्रुतंनिर्घणसं ॥ स्वादयःसोमाऽआर्याहिश्रीताःसोमाऽआर्याहि । शिप्रिन्नपीवःशचीवोनायमच्छासधमा
 दं ॥ स्तुतश्चयास्त्वावर्धितिमहेराधसेनम्णाय । इन्द्रकारिणवृधंतः ॥ गिरश्चयास्तेगिर्वोहऽउक्थाचतुभ्यंतानि । सुत्रा
 दधिरेशवांसि ॥ २२ ॥ एवेदेपतुविकर्मिर्वाजोऽएकोवज्रहस्तः । सुनादमृत्तोदयते ॥ हंतवृत्रदक्षिणेनैद्रःपुरुषरुहूतः ।
 महान्महीभिःशचीभिः ॥ यस्मिन्विश्वार्थपूण्यऽउतच्यौलाज्रयांसिच । अनुधेन्मंदीमघोनः ॥ एषऽएतानिचक्रारे
 द्रोविश्वयोतिंशृण्वे । वाजुदावामघोनां ॥ प्रभर्तोरथंगव्यंतमपाकाच्चिद्यमवति । इनोवससहिवोह्वं ॥ २३ ॥
 सनिताविप्रोऽअर्विद्धिहतावृत्रंनृभिःशरः । सुत्योवितानिविधंतं ॥ यजध्वैनंप्रियमेधाऽइन्द्रसत्राचामनसा । योभूत्सोमैः

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ७

॥ ४८ ॥

सत्यम॑द्वा ॥ गाथ॑श्रव॑सं॒सत्प॑तिं॒श्रव॑स्कामं॒पुरु॑त्मानं । क॒र्णो॒सो॒गा॒तवा॒जिनं॑ ॥ यऽ॒कृते॒चि॒द्वा॒स्यदे॒भ्यो॒दा॒त्स॒खा॒नृ॒भ्यः॒श
ची॒वान् ॥ येऽ॒स्मिन्का॒ममा॑श्रयन् ॥ इ॒था॒धी॒र्व॒तमा॑द्रि॒वःका॒ण्वंमे॒ध्याति॑थिं । मे॒षो॒भूतो॑ऽ॒भिय॑न्नयः ॥ शि॒क्षा॒वि॒भि
दोऽ॒स्मैच॒त्वार्य॑यु॒ताद॑दत् ॥ अ॒ष्टा॒परः॒स॒हस्रा॑ ॥ उ॒तसु॒त्ये॒पयो॑वृ॒धामा॑की॒रण॑स्य॒नृह्या॑ । ज॒नित्व॑ना॒र्यमा॑मेहे ॥ २४ ॥
ते॒सुम॑तौ॒वाजि॑नो॒व्यमानः॑त्तर॒भिर्मा॑तये । अ॒स्मान्नि॒चत्रा॑भि॒रव॑ता॒दुभि॑द्वि॒भिरानः॑स॒न्नेषु॑यामय ॥ इ॒माऽ॒र्च॒त्वापु॑रु॒वसो
गि॒रो॒वर्ध॑तु॒याम॑म । पा॒वक॑र्व॒णाःशु॒चयो॑वि॒पश्चि॒तो॒भिस्तो॑मै॒रनृ॑षत् ॥ अ॒यंस॒हस्रा॑मृ॒षिभिः॑स॒हस्कृ॑तःस॒मुद्र॑ऽ॒इव॑प॒प्रथे॑ ।
स॒त्यःसोऽ॒स्यमा॑हि॒मागृ॑णे॒शवो॑य॒ज्ञेषु॑वि॒म्राज्ये॑ ॥ इ॒न्द्रमि॑हृ॒वता॑तयऽ॒इन्द्र॑य॒त्यध्व॑रे । इ॒न्द्रस॑मी॒केव॑नि॒नो॒हवाम॑हऽ॒इन्द्र
ध॒नस्य॑सा॒तथे॑ ॥ २५ ॥ इ॒न्द्रो॒म॒हो॒रो॒दसी॑प॒प्रथ॑च्छ॒वऽइन्द्रः॑सूर्य॒मरो॑चयत् । इ॒न्द्रे॒हवि॑श्वा॒भुव॑नानि॒येमि॑रऽ॒इन्द्र॑सु॒वाना॑सु
ऽइ॒दं दे॒वः ॥ अ॒भित्वा॑प॒र्वर्ष॑तयऽ॒इन्द्र॑स्तो॒मै॒रि॒राय॑र्वः । स॒मीची॑ना॒सऽऽक्र॑भ॒वःस॑र्म॒स्वर॑न्न॒द्रागु॑णं॒तपू॒र्व्यं ॥ अ॒स्येदि॑द्रो॒वावृ॑
धे॒वृष्ण्य॑श॒वो॒मदे॑स॒तस्य॑वि॒ष्णवि॑ । अ॒द्यात॑म॒स्यमा॑हि॒मान॑मा॒यवो॑नु॒ष्टुवं॑ति॒पूर्व॑था ॥ त॒त्त्वाया॑मि॒सुवी॑र्य॒तद्वर्ष॑पूर्वा॒र्चित॑थे ।
(८।१।३) पि॒बा॒सुत॑त्येति॒चतुर्वि॑शत्य॒चस्य॑सू॒क्तस्य॑का॒ण्वोमे॒ध्याति॑थिर्द्वि॒द्रःअ॒न्यच॑त॒सृणां॑पा॒क॒स्थामा॑दे॒वता॑ प्रथ॒मा॒धेको॑नवि॒दय॑ता॒अयु॑जो
बृ॒ह॒त्यःद्वि॒तीया॑दि॒वि॒दय॑ता॒अयु॑जःस॒तो॒बृ॒ह॒त्यःअ॒न्याश्च॑त॒सःक्र॑मे॒णानु॑ष्टु॒वगा॑य॒त्र्यौबृ॑हती॒च ।

॥ ४८ ॥

मंडलं ८

अनु. १

अनायतिभ्योभृगुं मेतिष्ठितेन प्ररुणमा । न ॥ येनोत्सुमनं गोमगिस्तलट्टिगुनिभेन ॥ ननु मोडोभ्यम
 हिमानमनशेयं क्षोणीरुचुनते ॥ २२ ॥ नुगोनेऽंष्टुपचयविवादिनोपि । अगिरसापयप्रथमिपाननं नुगि ।
 स्तोमायपृथ ॥ नुगोनीऽअस्ययनेपुमार्थिभिरेऽंष्टुमिपानतः । अगिरयायानमं नुगार्हिकुमिष्टुगारुमंजरे ॥
 कृतव्योऽअतुनीनानुरोपणीनमलीः । नुगिनेत्यमिमानं निट्टियं वृणोऽथानुशुः ॥ कुरुनुराऽंष्टुनयेनेऽनुऽक
 पिः कोमिप्रऽओतने । कृतव्यमममिद्वसुननः कुरुनुराऽंष्टुगोमः ॥ इत्यनेन पुनचनमिगु नोमानं उम्मे । नुग
 नितोथनमाऽअतिनोवयोनयनोरोऽता ॥ २३ ॥ कर्णोऽंष्टुभृगुः नुगोऽंष्टुभिः मिनिमानय । इत्युमोनि
 भिमह्वतऽआयवः प्रियमथानोऽअस्मन् ॥ नुगार्हिकुपुनमूर्त्तिऽंष्टुपुमार्तः । प्रोचोनिनेऽनुनोमपीनयऽ
 उग्रऽकृत्वेभिगगतिः ॥ इमेनिनेकाव्योऽपानुशुवियापिप्रानोमि स्तोने । नानोनिनारामिष्टगिपोऽनोतशृणुगोह । ॥
 निरिद्रवृत्तीव्योऽनुयव्योऽगरुहः । निरवुद्वसुनयवरागिचोनि पाल्यगाऽंष्टुग ॥ निरुगोऽकृत्वेनिद्रु
 योनिः नोमंऽंष्टुवोरगः । निरुतरिक्षादभमोमार्त्तिः कृतार्होऽंष्टुग ॥ २४ ॥ यं नुगोऽंष्टुगुन पाह्वयामाकोर
 याणः । निथेपुत्तमनागोभिष्टुमुपेवदुपि ताममानं ॥ योऽंतिंगुपाह्वयाननपुररुयुमो । अर्धद्वयोचिचोनि ॥ न
 स्मोऽअन्येद्वगुप्रतिधुरवहतिमल्लयः । अन्तमयोनतुथं ॥ अन्तमपिनुनुरामोऽओनोतऽअम्भेनं । नुगेयमिद्रो

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ७

॥ ४९ ॥

मंडलं ८

अनु. १

॥ ४९ ॥

हितस्यार्कस्थामानंभोजंदातारमब्रवं ॥ २९ ॥ (८।१।४) यद्विद्रप्रागपागुदुङ्ग्यग्वाहयसेनृभिः । सिमापुरुनृपू
तोऽअस्थानुवोस्मिप्रशर्धतुवक्षे ॥ यद्भारुमेरुशमेरुयावैकृपऽइन्द्रमादयसेसर्चा । कण्वाससत्त्वाब्रह्मभिःस्तोमवाहसऽइन्द्राय
च्छंत्यार्गहि ॥ यथागौरोऽअपाकृततृष्यन्नेत्यवोरणं । आपित्वेनःप्रपित्वेतूयमार्गहिकण्वेपुयुसचापिव ॥ मंदंतुत्वा
मधवाञ्चिद्रेद्वोराधोदेयायसुन्वते । आमुष्यासोममपिवश्चमूसुतंज्येष्ठतद्वधिपेसहः ॥ प्रचक्रेसहसासहोवभंजमन्युमो
जसा । विश्वेतऽइन्द्रपृतनायवोयहोनिवक्ष्वाऽईवयोमिरे ॥ ३० ॥ सहस्रेणैवसचतेयवीयुधायस्तऽआनलुपस्तुतिं । पुत्रं
प्रार्वर्गकृणुतेसुवीर्येदाश्रोतिनमऽउक्तिभिः ॥ माभेममाश्रमिष्मोग्रस्यसख्येतव । मध्वासंयुक्ताःसारधेणधेनवस्तूयमेहिद्रवापिव ॥ अश्वी
वशंयदु ॥ सव्यामनुस्किर्यंवावसेवृषानदानोऽअस्यरोषति । मध्वासंयुक्ताःसारधेणधेनवस्तूयमेहिद्रवापिव ॥ अश्वी
रथीसुरूपऽइक्षोमोऽइद्विद्रतेसखा । श्वात्रभाजावर्यसासचतेसदाचंद्रोयातिसभामुप ॥ ऋश्योनतृष्यन्नवपानमार्गहि
पिवासोमंवशोऽअनु । निमेधमानोमघवन्दिवोऽओजिष्ठदधिपेसहः ॥ ३१ ॥ अश्वयोद्भावयत्वंसोममिन्द्रःपिपास
ति । उपननंयुजेवृषणाहरीऽआचजगामवृत्रहा ॥ स्वयंचित्समन्यतेदाशुरिर्जनोयत्रासोमस्यतंपसि । इदंतेऽअ
(८।१।४) यद्विद्रेत्येकविंशत्यृचस्यसूक्तस्यकाण्वोमेधातिथिरिन्द्रःअत्यतिसृणांकुरंगः अयुजोबृहत्योयुजःसतोबृहत्यःअंत्यापुरजष्णिक्

(प्रपणमित्यादिचतसृणांपूपादेवतावा) ।

अ. ५ अ. ८

॥ ५० ॥

॥ ५० ॥

मंडलं ८

अनु. १

॥ ५० ॥

दूरादेकान्नचत्वारिंशद्ब्रह्मातिथिराश्विनं द्विबृहत्यनुष्टुवंतं मंत्याः पंचार्धर्चाश्चैद्यस्य कशोर्दानस्तुतिर्महांद्रोष्ट्राच
त्वारिंशद्ब्रह्मत्सत्त्वचोत्यस्तिरिदिरस्य पार्श्वस्य दानस्तुतिः प्रयद्दः षट्त्रिंशत्पुनर्वत्सो मारुतमानस्त्रयधिका सध्वंसं
आश्विनं ह्यानुष्टुभं त्वानूनसैकाशशकर्णोत्येगायज्या उपपाद्ये चार्धाचतुर्थी षष्ठी चतुर्दश्याद्ये च बृहत्यः पंचमी कर्कुब्द
शम्याद्यास्त्रिष्टुप् विराड्जगत्स्येत्यः षट्प्रगाथोपस्थं हृतीमध्ये ज्योतिरनुष्टुप् स्तारपंक्तिः प्रगाथस्त्वमग्नेदशव
त्स आग्नेयेगायत्रेत्यादैवी त्रिष्टुप् वाद्याप्रतिष्ठोपाद्यावधमाना ॥ ८ ॥
॥ हरिः ओम् ॥ (८।१।५) दूरादिहेव्यत्सत्यं रुणप्सुराशिश्चित् ॥ विभानुं विश्वधातनत् ॥ नवदंस्त्रामनोयुजा
रथेन पृथुपार्जसा । सचेधेऽअश्विनोपसं ॥ शुवाभ्यां वाजिनीवसप्रतिस्तोमाऽअहक्षत ॥ वाचं दूतोयथोहिषे ॥ पुरुषि
चाणऽऊतये पुरुमं द्रापुर्वसू । सुषेकण्वसोऽअश्विनां ॥ मंहिष्ठावाजसातमे षथं ताशुभस्पती । गंताराद्राशुभोगं
॥ १ ॥ तामुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीं । दूतैर्गव्यूतिमुक्षतं ॥ आनः स्तोममुपद्रवतूथं रथेनेभिराशुभिः । यात
मर्थेभिरश्विना ॥ योभंस्तिष्ठः परावतो दिवो विश्वानिरोचना । त्रिऽरून् परिदीर्यथः ॥ उत नो गोमतीरिषऽउतसाती
(८।१।५) दूरादिहेव्ये कोनचत्वारिंशदचस्य मूकस्य काण्वो ब्रह्मातिथिराश्विनौ यथाचिच्चैद्यः कशुरित्यादिसार्धद्वयोः कशुर्गायत्री अंत्या
स्तिष्ठः क्रमेण बृहत्यावनुष्टुपच ।

कंसं.

अ. ५ अ. ८

॥ ५१ ॥

त्पर्वीरश्रंताविधिना । इषोदासीरमर्त्या ॥ आनोद्युधैराश्रवोभिरारायातमश्विना । पुरुश्वद्रानासत्या ॥ एहवाँमु
षितस्सवोवयोवहंतुपर्णिनः । अच्छास्वध्वरंजनं ॥ रथंवामनुगायसंयऽइषावर्ततेसह । नचक्रमभिर्वाधते ॥ हिरण्य
यैनरथेनद्रवत्पाणिभिरश्वैः । धीर्जनानासत्या ॥ ७ ॥ युवंमर्गजागवांसंस्वदथोवावृषण्वसू । तानःपुंक्तमिपार
हशोदशराज्ञोऽअमहत् । अधस्पदाऽइच्चैद्यस्यक्रुष्यश्चर्मन्नाऽअभितोजनाः ॥ माकिरेनापथागाद्येनेमेयोतिचेदयः ।
अन्योनेत्सरिरोहतेभूरिदावत्तरोजनः ॥ ८ ॥ (८।२।१) महोऽइंद्रोयऽओजसापर्जन्योवृष्टिमोऽइव । स्तोमैर्वत्स
स्ववावृधे ॥ प्रजामतस्यपिर्मतःप्रयद्भरतवह्नयः । विप्रोऽकृतस्वाहसा ॥ कण्वाऽइंद्रयदकृतस्तोमैर्यज्ञस्यसाधनं ।
जामिर्बुवत्तऽआयुधं ॥ समस्यमन्यवेविशोविश्वानमंतक्रुष्यः । समद्रायेवसिंधवः ॥ ओजस्तदस्यतित्विपऽउभेयत्स
मवर्तयत् । इंद्रश्चर्मैवरोदसी ॥ ९ ॥ विचिह्नद्रवस्यदोधतोवज्रेणशतपर्षणा । शिरोविभेदवृष्णिनां ॥ इमाऽअभिप्र
णोनुमोविपामग्रेपुधीतयः । अग्नेःशोचिर्नदिद्युतः ॥ गुहसतीरुपत्मनाप्रयच्छोचतधीतयः । कण्वाऽकृतस्वधारया ॥
प्रतमिद्रनशीमहिरयिगोमंतमश्विनं । प्रब्रह्मपुर्वचिच्चे ॥ अहमिद्धिपितुष्परमेधामतस्यजग्रभं । अहंसूर्योऽइवाज
(८।२।१) महोद्विद्रइत्यष्टाचत्वारिंशद्वचस्यसूक्तस्यकाण्वोवत्सइंद्रोत्यतिसृणतिरिदिरोगायत्री । (पार्श्वव्यस्यदानस्तुतिः)

मंडलं ८

अनु. २

॥ ५१ ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ८

॥ ५२ ॥

उ॒तप्रव॑र्धयाम॒तिः ॥ उ॒तब्र॑ह्म॒ण्याव॑य॒तुभ्य॑प्रवृ॒द्धव॒ज्जिवः । वि॒प्राऽअ॒तक्ष॑मजीवसे ॥ अ॒भिक॑र्णाऽअ॒नूष॑तापोन॒प्रव॑ता
य॒तीः । इ॒न्द्र॒वर्न॑न्वतीम॒तिः ॥ इ॒न्द्र॒मुक॑थानिवावृ॒धुःस॒मद्र॑मिव॒सि॒धवः । त्वामि॑द्धु॒वह॑तम॒जना॑सोवृ॒कत्र॑हिषः । अ॒नु॒त्तम॑न्युम॒जरे ॥ १५ ॥ आ॒नो॒या
अ॒नु॒त्वारो॑द॒सीऽउ॒भेच॑कंनव॒त्येत॑शं । इ॒ममि॑न्द्र॒सुत॑पि॒व ॥ इ॒ममि॑न्द्र॒सुत॑पि॒व ॥ म॒दस्वा॑सु॒स्वर्ण॑रऽउ॒तरे॑न्द्र॒शर्य॑णाव॒ति । म॒त्स्वावि॑व॒स्वतो
म॒ती ॥ वा॒वृ॒धान॑ऽउ॒प॒द्यवि॒वृष॑वृ॒ज्यरो॑रवीत् । वृ॒त्रहा॑सोम॒पात॑मः ॥ १६ ॥ ऋ॒षि॒हि॒र्ष॒पूर्व॑जाऽअ॒स्येक॑ऽई॒शान॑ऽओ
ज॒सा । इ॒न्द्र॒चो॒क्क॒य॒सेव॑सु ॥ अ॒स्माक॑त्वा॒सुतौ॑ऽउ॒प॒वी॒तपृ॒ष्ठाऽअ॒भि॒प्रयः । श॒त॒व॒ह॒तु॒हर॑यः ॥ इ॒मांसु॑प॒व्योधि॑यंम॒धोर्ध॒त
स्य॑पि॒प्यु॒षी । क॑र्णाऽउ॒क्थे॑नवावृ॒धुः ॥ इ॒न्द्रमि॑द्धि॒मही॑नांमे॒धेवृ॑णीत॒मर्त्यः । इ॒न्द्र॒सनि॑ष्यु॒रु॒तये ॥ अ॒र्वोच॑त्वापु॒रु॒ष्टुत॑मि
यमे॒धस्तु॑ता॒हरी । सो॒म॒पेया॑यव॒क्षतः ॥ श॒त॒म॒हंति॑रि॒दिर॑स॒हस्रं॑प॒शावा॑दे । रा॒धासि॑या॒द्धानां ॥ त्री॑णिश॒तान्य॑व॒तां
स॒हस्रा॑द॒शो॒नी । द्रु॒ढ॒प॒ञ्चाय॑सन्ने ॥ उ॒दान॑द्र॒ककु॑होदि॒वमु॒ष्ट्रान्च॑तु॒युजो॑द॒त् । श्र॒व॒साया॑द्दु॒र्जनं ॥ १७ ॥ (८।१।२)
स॒त ॥ उ॒दी॒र॒य॒न्तवा॑युभि॒र्वाश्रा॑सुःपृ॒श्निमा॑तरः । धु॒क्ष॒न्तपि॑प्यु॒षीमि॑षं ॥ व॒र्ष॒तिम॑रु॒तोमि॑ह॒प्रवे॑प॒यंति॑प॒र्वता॑न् । य॒द्यामं॑
(८।१।२) अथ॒द्वइति॑प॒द॒त्रि॒श॒द॒च॒स्य॒सूक्त॑स्यका॒ण्वःपु॒नर्व॑त्सोम॒रुतो॑गायत्री ।

मंडलं ८

अनु. २

॥ ५२ ॥

यांतिवायुभिः ॥ नियद्यामायवोगिरिनिर्निर्धवोविधर्मणे । महेष्टुष्माययेमिरे ॥ १८ ॥ युष्मोऽनुनक्तमतेयैयप्मा
 न्दिवाहवामहे । युष्मान्प्रयत्यध्वरे ॥ उदुत्येऽअरुणस्त्वश्चित्रायाभिररिते । वाश्राऽअधिष्णुनादिवः ॥ सृजं
 तिरुद्दिममोजसापंथांसूर्ययातवे । तेभानुभिवितस्थिरे ॥ इमामेरुतो गिरिमिंस्तोममृक्षणाः । इममेव न ताहव ॥
 त्रीणि स रासिपृश्नयोदुदुह्वज्रिणे मधु । उत्संकवधमद्रिणं ॥ १९ ॥ मरुतो यद्धवोदिवः शुभ्रायं तोहवामहे । इयं
 उर्पगतन ॥ युयहिष्ठा सुदानवोरुद्राऽअक्रमुक्षणोदमे । उत प्रचेतसोमदे ॥ आनोरयिमद्रुच्युतैपुरुक्षं विवधायसं । इयं
 तामरुतोदिवः ॥ अधीवयद्रिरीणां यामं शुभ्राऽअचिच्चं । सुवानेर्मदध्वऽइंदुभिः ॥ एतावतश्चिदेपांसुन्नभिर्भक्षेम
 तैः । अदाभ्यस्यमन्मभिः ॥ २० ॥ येद्रप्साऽइवरोदसीधमं लयनुवृष्टिभिः । उत्संदुहंतोऽअक्षितं ॥ उदुस्वानोभरी
 रतऽउद्रैरुदुवायुभिः । उत्तोमैः पृश्निमातरः ॥ येनावतुर्वगंयदं येन कण्वयनस्पृतं । राये सुतस्यधीमहि ॥ इमाऽउ
 वः सुदानवो घृतं न पिप्युपीरिपः । वधीन्काण्वस्यमन्मभिः ॥ कननं सुदानवोमदथावृक्तवर्हिपः । ब्रह्माकोवः सपर्यति
 ॥ २१ ॥ नृहिमयद्धवः पुरास्तोभैर्भिवृक्तवर्हिपः । शधीऽअकृतस्युजिन्यथ ॥ समत्येमहतीरपः संक्षोणीसमसूर्य । संव
 ज्रपर्वशोदधुः ॥ विवृन्नपर्वशोययुर्विपर्वतोऽअरुजिनः । चक्राणावृष्णिपौस्व ॥ अनुत्रितस्य युध्वतः शुष्ममावश्रुतक
 तुं । अन्यद्रवन्नरूपं ॥ विद्युद्धस्ताऽअभिद्यवः शिप्राः शीर्षान्निहृणययीः । शुभ्राव्यं जतश्चिरे ॥ २२ ॥ उशनायत्य

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ८

॥ ५३ ॥

मंडलं ८

अनु. २

॥ ५३ ॥

रावतं ऽ लुङ्गो रं ध्रुमया तन । द्यौर्न च क्रदद्भिया + ॥ आनो मुखस्य दावने भ्यैर्हिरण्यपाणिभिः । देवासऽ लपंगतन ॥ यदे
षां पृषतीरथे मष्टिवहतिरोहितः । याति शुभ्रारिणन्नपः + ॥ सुपो मे शर्यणावत्याजो किपस्त्यावति । युयुर्निचक्रयानरः ॥
सखित्वऽ ओहते ॥ सहोषुणो वज्रहस्तैः कण्वासोऽ अग्निमरुद्भिः । सुषे हिरण्यवाशीभिः ॥ ओषुवृष्णः प्रयज्य नानव्य
सेसुविताय । वृष्ट्यां चित्रवाजान् ॥ गिरयश्चिन्निजिते पशोना सोमन्यमानाः । पर्वताश्चिन्निरेमिरे ॥ आक्षण्यावा
नो वहंत्य तर्क्षेण पततः । धातारः स्तुवते वयः ॥ अग्निर्हजानि पर्यदृच्छदो न सूरौऽ अर्चिषा । ते भाद्रुभिर्वितस्थिरे
॥ २४ ॥ (८।२।३) आनो विश्वाभिरूतिभिराश्वना गच्छंतं युवं । दस्त्रा हिरण्यवर्तनी पिवतं सोम्यं मधु ॥ आनन्या
तमश्विना रथे न सूर्यत्वचा । भुजी हिरण्यपेशसा कवीगंभीरचेतसा ॥ आयातं न ह्युस्पया तारिक्षा सुवृत्तिभिः । आनन्या
थोऽ अश्विना मधुकण्वानां सवने सुतं + ॥ आनो यातं दिवस्पया तारिक्षा दधप्रिया । पुत्रः कण्वस्य वामिह सुपावसोम्यं म
धु ॥ आनो यातुमुपश्रुत्य श्विना सोमपीतये । स्वाहा स्तोमस्य वर्धना प्रकवीधीतिभिर्नरा ॥ २५ ॥ यच्चिद्धिवां पुरऽ क्रप
यो जुहरेर्वसेनरा । आयातमश्विना गतुमुपेमां सुष्टुतिमम् ॥ दिवाश्चिद्रोचना दधानो गंतस्वविदा । धीभिर्वत्सप्रचेतसा
(८।२।३) "आनो विश्वाभिरिति त्रयोविंशत्यृचसूक्तस्य काण्वः सध्वंसोश्विनावनुष्टुप् ।

स्तोमेभिर्हवनश्रुता ॥ किमन्येपयसतेस्मस्तोमेभिरश्विनो । पुत्रः कण्वस्य त्रामृर्गिर्भिवृत्सोऽअवीदृधत् ॥ अवांविग्रऽ
 स्तोमेभिर्हवनश्रुता । अरिप्रावृत्रंहतमातानोभूतंमयोशुवा ॥ आयद्वांयोपेणरथमतिष्ठद्वजिनीवसू । विश्वान्य
 इहावसेद्वृत्तोमेभिरश्विना । अरिप्रावृत्रंहतमातानोभूतंमयोशुवा । वृत्सोवांमधुमद्वचोशंसीत्काव्यः क
 श्विनान्युवंप्रधीतान्यगच्छतं ॥ २६ ॥ अतः सहस्रनिर्णिजा रथेनार्यातमश्विना । आनो विश्वान्यश्विना धत्तंरा
 विः ॥ पुरुमं द्रापुरुवसू मनोतरारयीणां । स्तोमेऽअश्विनो विममभिवह्नीऽअनूपातां ॥ अतः सहस्रनिर्णिजा
 धांस्यह्या । कृतंनऽऽकृत्वियावतोमानोरीरधत्तंनिदे ॥ यन्नासत्यापरात्रतियद्वास्थोऽअध्वरे । अतः सहस्रनिर्णिजा
 रथेनार्यातमश्विना ॥ योवांनासत्याघृर्गिर्भिवृत्सोऽअवीदृधत् ॥ तस्मै सहस्रनिर्णिजमिपंधत्तंघृतश्रुतं ॥ २७ ॥ प्रा
 स्माऽऽऊर्जैघृतश्रुतमश्विनायच्छतंयुवं । योवांसुम्रायतुष्टवद्वसू प्रियमैधाऽअहृपत । राजतावध्वराणामश्विनायामह
 कृतंनः सुश्रियौ नरेमादातमभिष्टये ॥ अवां विश्वामिहूतिभिः प्रियमैधाऽअवीदृधत् ॥ यामिः कण्वं मेधाति
 त्तियु ॥ आनो गंतंमयोशुवाश्विनानां शुवायुवं । योवां विपन्यूतीतिभिर्गिर्भिवृत्सोऽअवीदृधत् ॥ तामिः
 धियाभिर्विशुंशंशत्रजं । यामिर्गोशंयमावतंताभिर्नोवतंनरा ॥ २८ ॥ यामिर्नराऽऽस्यमावतं कृत्वधने । तामिः
 ज्वऽस्मांऽअश्विना प्रावतंवाजसातये ॥ प्रवांस्तोमाः सुवृत्कयो गिरोवधत्वश्विना । पुरुत्रावृत्रंहतमातानोभूतं पुरुष्ट

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ८

॥ ५४ ॥

हो ॥ त्रीणिपदान्यश्विनोराविःसांतिगुहापरः । कवीऽऋतस्यपत्नमभिरवाग्जीवेभ्यस्परि ॥ २९ ॥ (८।२।४) आ
नूनमश्विनायुवंवत्सस्यगंतमवसे । ग्रास्मैयच्छतमवृकंपृथुच्छर्दिषुयुतंयाऽअरातयः ॥ यदंतरेक्षेयद्विवियत्पंचमानुषौ
ऽअनु । नमणतर्द्धत्तमश्विना ॥ ३० ॥ येवांदंसांस्यश्विनाविप्रासःपरिमामशुः । एवेत्काणवस्यबोधतं ॥ अयंवाधूमोऽअश्वि
नास्तोमैन्नपारिषिच्यते । अयंसोमोमधुमान्वाजिनीवस्येनवृत्रंचिकेतथः ॥ यदुसुयद्वनस्पतौयदोषधीषुपुरुदंससाकृ
हिंगच्छथः ॥ आनूनमश्विनोर्ऋषिःस्तोमंचिकेतवामया । आसोमंमधुमत्तमंघर्मसिंचादर्थवणि ॥ आननंरघुवर्तनिर
थतिष्ठाथोऽअश्विना । आवांस्तोमाऽइमेममूनभोनचुच्यवीरत ॥ यद्वकक्षीवाऽउतयद्व्यश्वऽऋषियद्वौदीर्घतमाजुहाव । पृथीयद्वौवैन्यःसादनेभ्वेवेदतो
ऽअश्विनाचेतयेथां ॥ ३१ ॥ यातंछर्दिष्याऽउतनःपरस्याभतंजगत्याऽउतनस्तनूपा । यदौदित्योभिर्ऋभुभिःसजोपसायद्वौविष्णोर्विक्रमणेषुति
(८।२।४) आनूनमित्येकविंशत्यृचस्यसूक्तस्यकाण्वःशशकणोश्चिनावगुष्टुप् आद्याचतुर्थीपक्षीचतुर्दशीपंचदशोबृहत्यःद्वितीयावृतीया
विंशयेकविंशयोगायज्यःपंचमीककुपदशमीविष्टुबेकादशीविराट्द्वादशीजगती ।

मंडलं ८

अनु. २

॥ ५४ ॥

ऋक्सं.

अ. ५ अ. ८

॥ ५५ ॥

स्वधाभिर्गधितिष्ठथोरथमतऽआयातमश्विना ॥ ३४ ॥ (८।२।६) त्वमग्नेव्रतपाऽअसिदेवऽआमर्त्येष्व ॥ त्वयज्ञे
ष्वीज्यः ॥ त्वमसिप्रशस्योविदथेषुसहंत्य ॥ अग्नेरथीरध्वराणां ॥ सत्वमस्मदपुद्दिषोयुयोधिजातवेदः । त्वयज्ञे
अरातीः ॥ अंतित्विस्तंतमहयज्ञमर्तस्यरिपोः । नोपेपिजातवेदः ॥ मर्ताऽअमर्त्यस्यतेभूरिनाममनामहे । अदेवीरग्नेऽ
तवेदसः ॥ ३५ ॥ विप्रंविप्रासोवसेदेवंमर्तासऽऊतये । अग्निंगीर्भिर्हवामहे ॥ आतेवृत्सोमनोयमत्परमाक्षित्सध
स्थात् । अग्नेत्वांकामयागिरा ॥ पुरुत्राहिसदृङ्क्षुःसिविशोविश्वाऽअनुप्रभुः । समत्सुत्वाहवामहे ॥ समत्स्वश्रिमवसे
वाजयंतोहवामहे । वाजेषुचित्रराधसं ॥ प्रलोहिकमीज्योऽअध्वरेषुसनाच्चोतानव्यश्चसत्सि । स्वांचोभेतृन्वपिप्रय
स्वास्मभ्यंचसौभगमार्यजस्व ॥ ३६ ॥ इतिपंचमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ इतिपंचमोऽष्टकः ॥ ५ ॥

चत्वारिंशाध्यायेवर्गाः ३६ सूक्तानि ७ ऋचः १८३ ॥ त्यागः ॥ अध्विन्या. ३६ अधिकशुभ्य. कशव. २ इन्द्राये. ४५ तिरिदि-
राये. ३ मरुद्भ्य. ३६ अध्विन्या. ५० अग्नय. १० ॥ इतिपंचमेऽष्टमः ॥

(८।२।६) त्वमग्नेव्रतपाऽअसिदेवऽआमर्त्येष्व ॥ त्वयज्ञे
ष्वीज्यः ॥ त्वमसिप्रशस्योविदथेषुसहंत्य ॥ अग्नेरथीरध्वराणां ॥ सत्वमस्मदपुद्दिषोयुयोधिजातवेदः । त्वयज्ञे
अरातीः ॥ अंतित्विस्तंतमहयज्ञमर्तस्यरिपोः । नोपेपिजातवेदः ॥ मर्ताऽअमर्त्यस्यतेभूरिनाममनामहे । अदेवीरग्नेऽ
तवेदसः ॥ ३५ ॥ विप्रंविप्रासोवसेदेवंमर्तासऽऊतये । अग्निंगीर्भिर्हवामहे ॥ आतेवृत्सोमनोयमत्परमाक्षित्सध
स्थात् । अग्नेत्वांकामयागिरा ॥ पुरुत्राहिसदृङ्क्षुःसिविशोविश्वाऽअनुप्रभुः । समत्सुत्वाहवामहे ॥ समत्स्वश्रिमवसे
वाजयंतोहवामहे । वाजेषुचित्रराधसं ॥ प्रलोहिकमीज्योऽअध्वरेषुसनाच्चोतानव्यश्चसत्सि । स्वांचोभेतृन्वपिप्रय
स्वास्मभ्यंचसौभगमार्यजस्व ॥ ३६ ॥ इतिपंचमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ इतिपंचमोऽष्टकः ॥ ५ ॥

॥ ५५ ॥

तिरिदि-
राये. ३ मरुद्भ्य. ३६ अध्विन्या. ५० अग्नय. १० ॥ इतिपंचमेऽष्टमः ॥

॥ इतिपंचमाष्टकः समाप्तः ॥

॥ अयमष्टाशतकप्रतिमः ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. १

॥ २ ॥

मौरिद्रस्यवावृधेमिमीतऽइत् ॥ सनिर्मित्रस्यपप्रथऽइद्रःसोमस्यपीतये ।
उक्थवाहसोभिप्रमं दुरायवः । दृतंनर्पिप्यऽआसन्यतस्ययत् ॥ उतस्वराजेऽअर्दितिःस्तोममिद्रायजीजनत् ॥ यंविप्राऽ
शस्तमतयऽऋतस्ययत् ॥ अभिवह्यऽऋतयेनूषतप्रशस्तये । नदेवविप्रताहरीऽऋतस्ययत् ॥ ३ ॥ यत्सोममिद्रविष्णविय
यद्वासिखुन्वतोबुधोयजमानस्यसत्पते । उक्थेवायस्यरण्यसिसमिदुभिः ॥ देवदेवोवोवसऽइद्रमिद्रंरुणीषणि । अ
धायज्ञायतुर्वणेव्यानशुः ॥ यज्ञेभिर्यज्ञवाहसंसोमैभिःसोमपातमं । होत्रभिर्मिद्रंवावृध्व्यानशुः ॥ ४ ॥ महीरस्यप्र
णीतयःपूर्वरुतप्रशस्तयः । विश्वावसूनिद्राशुषेव्यानशुः ॥ इन्द्रवृत्रायहंतवेदेवासोदधिरपुरः । इन्द्रवाणीरनूषतास
मोजसे ॥ महांतमहिनावयंस्तोमैर्भिहवन्श्रुतं । अकैरभिप्रणोनुमःसमोजसे ॥ नयंविचिक्तोरोदसीनांतीरक्षाणिवज्रि
र्ण । अमादिद्रस्यतित्विषेसमोजसः ॥ यद्विद्रपुतनाज्येदेवास्त्वादधिरपुरः । आदिस्तेह्यताहरीववक्षतुः ॥ ५ ॥ य
दावृत्रंदीवृत्तंशवसावज्जिन्नवधीः । आदिस्ते ॥ यदातेविष्णरोजसात्रीणिपुदाविवचक्रमे । आदिस्ते ॥ यदातेह्य
यदासूयममुद्रिविशुक्रंज्योतिरधारयः ॥ आदिस्ते ॥ इमांतऽइद्रसुष्टुतिविप्रऽइयतिधीतिभिः । जामिपदेवपिप्रतीमा
॥ २ ॥

मंडलं ८

अनु. २

॥ २ ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. १

॥ ३ ॥

सुतासुऽइदं वः । इन्द्रे ह विष्मती विशोऽअराणिषुः ॥ तमिद्विप्राऽअवस्ववः प्रवत्वती भिरूतिभिः । इन्द्रक्षोणीरवर्धयन्वयाऽ
इव ॥ त्रिकङ्कुकेषु चेतनं देवासौयज्ञमलत । तमिद्वर्धतु नो गिरः सदा वृधं ॥ स्तोताय त्वेऽअनुव्रतऽउक्थान्यतुथादधे ।
शुचिः पावकऽउच्यते सोऽअश्रुतः ॥ तदिदुद्रस्य चेतति यत्नं प्रलेषु धामसु । मनोयत्रावित ह ध्रुवि चेतसः ॥ १० ॥ यदि
मेसरुथमावरऽइमस्य पाह्यं धंसः । येन विभ्वाऽअतिद्विषोऽअतारिम ॥ कदा तऽइन्द्रगिर्वणः स्तोता भवाति शतमः ।
कदानो गव्येऽअश्वे वसौ दधः ॥ उत ते सुष्टुता हरी वृषणावह तोरथं ॥ अजूर्यस्य मादित्तं मयमीमहे ॥ तमीमहे पुरुष्टुतयं
प्रलाभिरूतिभिः । निवर्हिषि प्रिये स ददधं द्विता ॥ वर्धस्वा सुपुरुष्टुतऽऋषिष्टुताभिरूतिभिः । धुक्षस्व पिप्युषीमिषुम
वाचनः ॥ ११ ॥ इन्द्रत्वमवितेदसीत्यास्पृवतोऽअद्रिवः । ऋतादियमिते धियं मनोयुजं ॥ इह त्यासं धमाद्या युजानः
सोमपीतये । हरीऽइन्द्रप्रतद्वसूऽअभिस्वर ॥ अभिस्वरं तु यतव रुद्रासः सक्षतश्रियं । उतो मरुत्वती विशोऽअभिप्रयः ॥
इमाऽअस्य प्रतृतयः पदं जुषंत यद्वि । नाभाय ज्ञस्य संधुर्यथा विदे ॥ अयं दीर्घाय च क्षसे प्राचिप्रयत्यध्वरे । मिमीते
यज्ञमानुषग्विचक्ष्य ॥ १२ ॥ वृषाय मिद्रे तरेथऽउतो ते वृषणा हरी । वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ॥ वृषाग्ना वा वृषामदो वृ
षा सोमोऽअयं सुतः । वृषाय ज्ञोयमिन्व सि वृषा हवः ॥ वृषा त्वा वृषणं हुवे वः अन्वित्राभिरूतिभिः । वावंशहिप्रतिष्ठति

॥ ३ ॥

मंडलं

अनु. ३

ऋक्सं.

अ. ६ अ. १

॥ ४ ॥

वृषत्वना⁺ ॥ सराजसिपुरुष्टुतएकोवृत्राणिजिघ्रसे । इन्द्रजैत्राश्रवस्याचयंतवे ॥ तंतेमदगुणीमसिवृषणंपुत्सुसास
हिं । उल्लोककुलुमद्रिवोहरिश्रियं ॥ येनज्योतीष्यायवेमनवेचविवेदिथ । मंडानोऽअस्यबहिषोविराजसि ॥ १७ ॥
तदुद्याचिचत्तऽउक्थिनोनुष्टुवंतिपूर्वधा । वृषपत्नीरपोजयादिवेदिदे ॥ तवत्यादिद्वियंबहत्तवुष्टुभूमतक्तुं ॥ १७ ॥
तिधिषणावरेण्यं ॥ तवद्यौरिद्रुपास्थपृथिवीवर्धतिश्रवः । त्वामापःपर्वतासश्चहिन्विरे ॥ त्वांविष्णुर्वहन्क्षयोमित्रोर्ग
णातिवरुणः । त्वांशर्धोमदृत्यनुमारुतं ॥ त्वंवृषाजनानांमंहिष्ठइन्द्रजंज्ञिषे । सत्राविश्वस्वपत्यानिदधिषे ॥ १८ ॥
सत्रात्वंपुरुष्टुतएकोवृत्राणितोशसे । नान्यऽइन्द्रात्करणंभूयऽइन्वति ॥ यद्विद्रमन्मशस्त्वानानाहवतऽऊतये ॥ १८ ॥
स्मार्केभिर्नृभिर्नृत्रास्वर्जय ॥ अरुक्षयायनोमहेविश्वारूपाण्याविशन् । इन्द्रजैत्रायहय्याशचीपतिं ॥ १९ ॥ (८।३।४)
प्रसस्वाजंचर्षणीनामिन्द्रस्तोतानव्यंगीभिः । नरंनृपाहंमंहिष्ठं ॥ यस्मिन्नुक्थानिरण्यंतिविश्वानिचश्रवस्या । अपामवो
नसमूद्रं⁺ ॥ तंसुष्टुत्याविवासेज्येष्ठराजंभरेकुलुं । महोवाजिनंसनिभ्यः ॥ यस्यानूनागभीरामदाऽउरवस्तरुत्राः ।
हृषमंतःशूरसातौ ॥ तमिच्छनेषुहितेष्वधिवाकायहवते । येषामिन्द्रस्तेजयंति ॥ तमिच्छयौहैरार्थतितक्तेभिश्चर्षणयः ।
एषऽइन्द्रोवरिवस्कृत्⁺ ॥ २० ॥ इन्द्रोब्रह्मोद्रऽक्रषिरिंद्रःपुरुषुरुहूतः । महान्महीभिःशर्चाभिः ॥ सःस्तोभ्यःसहव्यः
(८।३।४) प्रसन्नाजमितिद्वादशवर्षस्यसूक्त्यकाण्वइरिबिठिरिद्रोगायत्री ।

मंडलं ८

अनु. ३

॥ ४ ॥

सुखः सत्त्वो विष्णुः । एतच्चित्तमनु शिष्यः ॥ ननु हं गिरंगामभिन्मंगाद्यः प्रियः । उदं न भिन्नित्यः ॥ प्रणेना
रेनस्योऽअच्छा क्तो रन्योतिः समस्तु । गगनाय गुरुभिरात्र ॥ मनुः पक्षिः पारयानि न्वभिनायानुत्तनः । उदं निभ्या
अतिद्विषः ॥ सर्वेनऽदं दवा जेभिर्दं नृसा च गालयान । अन्तानि न मर्त्तनेपि ॥ २१ ॥ (८१३५) आयो हिसुप्रभा
हितऽदं द्रोसो मं पिवाऽदं ॥ एतं वृत्तिः मंदोभम ॥ आत्वाऽन्नगुणाऽपि ताभिर्दं नृशिनो । उपगमणिनः शुभ ॥ न
ह्याणस्त्वावयं यज्ञासो मयाभिर्दं सोमिनः । सुनातोऽन्वागो ॥ अनोयादिमृता नोत्मा हं मृदून्य । पिपासुयादिप्र
क्षयः ॥ आतिमिचामि ह्ययोरनुगाना विभंगु । मभयजिरयामनु ॥ २२ ॥ स्वादुऽअसुगं दुःसुप्रमान्तनेऽ
तत्र । सोमः अमस्तुते ह्ये ॥ अयमुत्वाचिर्णेनार्तिरिगभिर्गुतः । प्रमेगऽदं नमणु ॥ वृत्तिर्गोऽमोऽमः गुग
हुरंधं सोमदे । उदं गोत्राणि जिघ्रते ॥ उदं मेऽपि पुरस्वां पिशुस्वेगानुऽओजना । नृतापि वृत्तजहि ॥ दुपिनेऽअम्यं दु
ओवेनाचसुप्रयच्छेति । यजमानाय सुन्यते ॥ २३ ॥ अयं तेऽदं नृमोमोनि प्रतोऽआभिर्दिभि । एषीमस्य द्रवापि ॥ न्यसिन्दप्रऽआ
न्यसिन्दप्रऽआ

(८।३।५) आयादीतिषवृजर्मसूक्तमनागम् ।

तेतिशोनकः । उपात्ताया अद्य

मनः ॥ वास्तोष्पतेध्रुवास्थूणांसत्रसोम्यानां । द्रुप्तोभेत्तापुरांशश्वतीनामिन्द्रोमुनीनांसखा ॥ पृदाकुसानुर्यजतोगवे
 षण्डएकःसन्नभिभूर्यसः । भूर्णिमश्वनयत्तुजापुरोगर्भेन्द्रसोमस्यपीतये ॥ २४ ॥ (८।३।६) इदंहनूनमेषांसुन्नभिषे
 तमर्त्यः । आदित्यानामपूर्व्यसवीमनि ॥ अनर्वाणोह्येषांपंथाऽआदित्यानां । अदब्धाःसंतिपायवःसुगेवृधः ॥ तत्सु
 नःसविताभगोवरुणोमित्रोऽअर्यमा । शर्मयच्छंतुसप्रथोयदीमहे ॥ देवेभिर्देव्यदितोरिष्टभर्मन्नागहि । स्मत्सरिभिःपु
 रुप्रियेसुशर्मभिः ॥ तेहिपुत्रासोऽअदितेर्विदुर्देवांसियोत्वे । अंहोश्चिदुरुचक्रयोनेहसः ॥ २५ ॥ अदितिनोदिवोप
 शुमर्दितिर्नकुमर्ह्याः । अदितिःपात्वंहसःसदावृधा ॥ उतस्यानोदिवामतिरदितिरूत्यागमत् । साशंतातिमयस्कर
 दपुस्त्रिधः ॥ उतत्यादैव्याभिपजाशनःकरतोऽअश्विना । युयुयातामितोरपोऽअपस्त्रिधः ॥ शमग्निरग्निभिःकरच्छने
 स्तपतुसूर्यः । शंवातोवात्वरपाऽअपस्त्रिधः ॥ अपामीवामपुस्त्रिधमपसेधतदुर्मतिं । आदित्यासोयुयोर्तनानोऽअंहसः
 ॥ २६ ॥ युयोताशरुमसदोऽआदित्यासऽउतामतिं । ऋधग्देवःकृणुतविश्ववेदसः ॥ तत्सुनःशर्मयच्छतादित्याय
 न्मुमौचति । एनस्वतंचिदेनसःसुदानवः ॥ योनःकश्चिद्रिदिरिक्षस्त्वेनमर्त्यः । स्वैःपऽएवैरिरिपीष्टयुर्जनः ॥ स
 मित्तमघमश्वदुःशंसमर्त्यिरिपुं । योऽअस्मन्नादुर्हणावोऽउपद्वयुः+ ॥ पाकुत्रास्थेनदेवाहृतसुजानीधमर्त्य । उपद्वयुंचा

(८।३।६) इदंहेतिद्वाविशत्यचस्यसूक्तस्यकाण्वइरिबिठिरादित्याःचतुर्थीपष्ठीसप्तमीनामदितिःअष्टम्याअश्विनौनवम्याअमिसूर्यामिला

द्रयुंचवसवः ॥ २७ ॥ आशर्मपर्वतानामोतापांचूर्णीमहे । द्यावाशामरेऽअसाद्रपृकृतं ॥ तेनोभूद्रेणशर्मणायुष्मा
 कनाचारवसवः । अतिविश्वानिदुरितापिपर्तन ॥ तुचेतनायतत्युनोद्राधीयऽआयुर्जिवसे । आदित्यासःसुमहमःकृ
 णोतेन ॥ युजोह्रीलोत्रोऽअंतरऽआदित्याऽअस्तिमूलत । युग्मेऽइद्वोऽअपिम्मसिमजाल्ये ॥ बृहद्वरूथंमरुतोदिवंवा
 तारमश्विनो । मित्रमीमहेवरूणंस्वस्तये ॥ अनेहोमित्रायमन्नवद्वरूणशंस्यं । त्रिवरूथंमरुतोयंतनगृह्णदिः* ॥ येचि
 द्धिमत्युवंधवऽआदित्यामनवःससि । प्रसूतऽआयुर्जिवसेतिरतन ॥ २८ ॥ (८।३।७) तंगूर्ध्वयास्वर्णरंदेवासोदे
 वमरुतिंदधन्विरे । देवत्राहुव्यमोहिरे ॥ विभूतरातिमित्रविशोचिपमग्निमीळिव्ययंतुरं । अस्यमेधस्यसोम्यस्यसो
 भरेप्रेमध्वरायपृथ्वी ॥ यजिष्ठत्याववृमहेदेवंदेवत्राहोतारमर्मल्यं । अस्ययज्ञस्यसुक्रतु ॥ ऊर्जोनपातंसुभगंसुदीदितिम
 भिंश्रेष्ठशोचिपं । सनोमित्रस्वरूणस्यमोऽअपामामुन्नयक्षतेद्विवि* ॥ यःसमिधायऽआहुतीयोवेदेनदुदाशमतोऽअ
 मये । योनमसास्वध्वरः* ॥ २९ ॥ तस्येदर्वैतोरंहयंतऽआशवस्तस्यद्युमित्रितर्मयशः । नतमहोदेवकृतंकुतश्चननमर्त्यंकृ

उल्लिङ्गम् । (८।३।७) तंगूर्ध्वयेतिसप्तत्रिंशद्वचस्यसूक्तस्य काण्यःसोभरिरग्निः चतुस्त्रिंशपंचनिश्चोरादित्यांलस्योर्द्वयोन्मदस्युःप्रथमा
 द्विपंचविश्यंताअयुजःऋभुभःद्वितीयादियद्विश्यंतायुजःसतोवृहत्याः पितुर्नेतिसप्तविंशोद्विपदाअष्टाविंशोत्रिंशोद्वानिगीपदत्रिश्यःऋभुभः
 एकोनत्रिंशेकात्रिंशोत्रयस्त्रिंशोपंचविश्यःसतोवृहत्याःचतुस्त्रिंशुपिगक्त्वसप्तत्रिंशोपंचिक ।

श्रुत्वा.

का. ६ अ. १

॥ ६ ॥

मंडलं ६

अनु. ३

॥ ६ ॥

तंनयत् ॥ स्वप्नयोवोऽअग्निभिः स्यामसूनोसहसऽऊर्जापते । सुवीरस्त्वमस्मयुः* ॥ प्रशंसमानोऽअतिथिर्नमित्रियो
श्रीरथोनवेद्यः । त्वेक्षेमासोऽअपि सति साधवस्त्वं राजारयीणां* ॥ सोऽअद्भ्यद्वाध्वरोक्षेमर्तैः सुभगसप्रशंस्यः । सधी
भिरस्तु सनिता ॥ यस्यत्वमूर्ध्वोऽअध्वरायतिष्ठसि क्षयद्वीरः ससाधते । सोऽअर्वद्विः सनितासर्विपन्युभिः सद्गौरैः सनि
ताकृते* ॥ ३० ॥ यस्याग्निवपुर्गुहस्तोमंचनोदधीतविश्ववर्धः । हव्यावावोविषद्विषः ॥ विप्रस्यवास्तुवतः सहसोय
सति । गिरावाजिरथोचिपं । अवोदेवमपरिभर्त्येकधिवसोविविदुषोवचः ॥ योऽअग्निहव्यदातिभिर्नमोभिर्वासुदक्षमाविवा
द्युन्नैरुद्रऽइवतारिपत् ॥ तदग्नेह्यन्नमाभरयत्सासहत्सदनेकंचिद्विणं । मनुजं नस्यदुज्यः* ॥ ३१ ॥ येनचष्ट्वरं
णोमित्रोऽअर्चयामायेन नासत्याभगः । वयंतत्ते शर्वसागातुवित्तमाऽइंद्रत्वोताविधेमहि ॥ तेधेदेमे स्वाद्योऽथेत्वाविप्रानि
दधिरेनचक्षसं । विप्रासोदेवसुकुतु ॥ तऽइद्रेदिसुभगतऽआहुतितेसोतुचक्रिरेद्वि । तऽइद्व्राजेभिर्जिग्युर्महन्नये
त्वेकामन्येरिरे* ॥ भद्रोनोऽअगिराहुतोभद्रारातिः सुभगभद्रोऽअध्वरः । भद्राऽसुतप्रशस्तयः ॥ भद्रमनः कृणुष्वव
त्रतूयेनासमत्सुसासहः । अवस्थिरातनुहिभरिशर्धतां वनेमतेऽअभिष्टिभिः ॥ ३२ ॥ ईळैगिरामनुहितं यदेवाद्भुत
मरतिन्येरिरे । यजिष्ठं हव्यवाहनं ॥ तिग्मजं भायतरुणायुराजते प्रयोगायस्यमे । यः पिंशते स नृताभिः सुवीर्यमग्निघृत

ऋक्सं.

अ. ६ अ. १

॥ ७ ॥

तामार्निष्यत्प्रस्थावानोमार्पस्थातासमन्यवः । स्थिराचिन्नमयिष्णवः ॥ वीळुपविभिर्मरुतऋमुक्षणऽआरुद्रासः सु
द्वीतिभिः । इषानोऽअद्यागतापुरुस्पृहोयज्ञमासौभरीयवः ॥ विद्वाहिरुद्रियाणां शुष्मग्रंमरुतां शिमीवतां । विष्णोरे
ताचिद्धोऽअज्मन्नानानदतिपर्वतासोवनस्पतिः । भूमियमिपुरेजते ॥ ३६ ॥ अमायवोमरुतोयातेवेद्यो जिहत्तुऽउत्तराव
हत् । यत्रानरोदेदिशतेतनून्वात्वक्षांसिवाह्वौजसः ॥ स्वधामनुश्रियंनरोमहित्वेषाऽअमवतोवृषस्ववः । वहतेऽअहुत
प्सवः ॥ गोभिर्वाणोऽअज्यतेसोभरीणांरथेकोशोहिरण्यथे । गोर्बधवःसुजातासऽइपेभुजेमहांतोनःस्पर्सेनु ॥ प्रति
वोवृषदंजयोवृष्णेशार्धोयमारुतायभरध्वं । हव्यावृषप्रयाव्णे ॥ वृषणश्चेनमरुतोवृषस्वनारथेनवृषनाभिना । आश्वे
नासोनपक्षिणोवृथानरोहव्यानोवीतयेगत ॥ ३७ ॥ समानमंज्येषांविभ्राजितेरुक्मासोऽअधिवाहुः । दर्विद्युत
त्यृष्टयः ॥ तऽउग्रासोवृषेणऽउग्रवाहवोनाकिंष्टनूद्येतिरे । स्थिराधन्वान्यायुधारथेष्वोनीकिंष्वधिश्रियः ॥ ये
प्रासर्णो नसप्रथोनामत्वेपंशश्चतामेकुमिद्धुजे । वयोनिपिज्यंसहः ॥ तान्वदस्वमरुतसोऽउपस्तुहितेषां हिधुनीनां । ये
अराणांनचरमस्तदेषां दानामहातदैषां ॥ सुभगःसर्वऽऊतिष्वासपूर्वांसुमरुतोव्युष्टिषु । योवाननमुतासति ॥ ३८ ॥
यस्यवायुयंप्रतिवाजिनो नरऽआहव्यावीतयेगथ । अभिपद्युमैरुतवाजसातिभिःसुन्नावो धूतयोनशत् ॥ यथारुद्रस्य

॥ ७ ॥

मंडलं ८

अनु. ३

सुनवोद्विवोवशंल्यपुरस्यवेधमः । शुवान्सुतथेदसत् ॥ येचार्हतिमरुतःसुदानवःसन्मीगपुश्चरतिवे । अतश्चिदानुऽ
 उपवस्यसाहृदायुवानुऽआववृधं ॥ यूनऽऊनुनार्थषयावृणःपावृणोऽअभिर्नोभरेगिरा । गायगाऽईवृचर्हेभत् ॥
 साहायेसर्तिमुष्टिहेवृहव्योविश्यासुपत्सुहोर्तु । वृणश्चंद्राक्षसुश्रवस्तमान्गिरिवंदस्यमरुतोऽअर्ह ॥ ३९ ॥ गार्वश्चि
 द्वासमन्यवःसज्जालेनमरुतःसर्वधवः । गिहृतेकुरुभोस्मिध ॥ मर्तश्चिद्रोनृतवोरुमयश्चसुऽउर्पश्चानत्वमायति ।
 अर्धिनोगातमरुतःसद्राहिर्चऽआपित्वमस्तिनिधुवि ॥ मरुतोमान्तस्यनुऽअभेगुजस्यवक्षनामुदानवः । ययंमन्वायः
 ससयः ॥ याभिःसिंधुमवथयाभिस्त्वैय्याभिदेनुस्यक्रिधि । मयोनोरुतोतिभिर्मयोभुवःश्रियाभिस्सचद्वियः ॥
 यत्सिंधौचदसिक्त्यांयत्समृदेऽमरुतःमुचर्तिगः । यत्सर्वेतेपुभेगुजं ॥ त्रिधंययंनोमिभृथातुनूचातेनानोऽअर्धिवो
 चत । क्षमारपोमरुतुऽआतुरस्यनुऽउर्कतोचितुंत्पुनः ॥ ४० ॥ उनिगष्टाष्टक्षेत्रधमोऽध्यायः ॥ १ ॥

पष्टाष्टक्षेत्रज्ञानि १२४ मन्त्रः १६५०

एतच्चार्हितायोगो ५० सूक्तानि ० मन्त्रः २०० ॥ नमः ॥ अर्धिते १२१ [मे. म. अर्धिते १२९ गान्तिर्नतीद्वान्तानि.
 इन्द्रावे.] आर्हितोन्म. ३ अर्हिता ३. १ अर्हिलोन्म. १ अर्हिता. २ अर्हिलोन्म. १ अर्हिलोन्म. ३ अर्हिलोन्म. २
 अर्हिलोन्म. २ अर्हिलोन्म. २ ॥ उनिगष्टाष्टक्षेत्रधमः ॥

८॥

६ अ. २

३३

सन्तोष
रापते
सोमपी
दामसि
चतुर्थेनु

८॥

६ अ. २

ऋक्सं.

सन्तो
रापते
सोमर्ष
दामसि
चतुर्थेनु

८॥

६ अ. २

३३

सन्तोष
रापते
सोमपी
दामसि
चतुर्थेनु

८॥

६ अ. २

३३

सन्तोष
रापते
सोमपी
दामसि
चतुर्थेनु

॥ १२ ॥

॥ १२ ॥

॥ १२ ॥

तिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसं ॥ इहत्यापुरुभूतमादेवानमोभिरश्विना । अर्वाचीनास्ववसेकरामहुंगंताराद्राशुषो
गृहं⁺ ॥ युवोरथस्यपरिचक्रमथैयतऽईमान्यद्वामिषण्यति । अस्मोऽअच्छासुमतिर्वीशुभस्पतीऽआधेनुर्विधावतु ॥
रथोयोर्वात्रिवंधुरोहिरण्याभीशुरश्विना । परिद्यावापृथिवीभूपतिश्रुतस्तेननासत्यागतं ॥ ५ ॥ दशस्यंतामनवेपथ्व्यं
दिविवयंवृक्केणकर्षथः । तावामद्यसुमतिभिः शुभस्पतीऽअश्विनाप्रस्तुवीमहि ॥ उपनोवाजिनीवसूयातमतस्यपृथि
भिः । येभिस्तुक्षिर्वृषणात्रासदस्यवंमेहेक्षत्रायजिन्वथः ॥ अयंवामर्द्धिभिः सुतः सोमोनरावृषण्वसू । आयातंसोमपी
तयेपिवतं द्राशुषो⁺ गृहे⁺ ॥ आहिरुहतमश्विनारथेकोशैरिण्ययेवृषण्वसू । युंजाथांपीर्वरीरिषः ॥ यार्भिः पक्थमवे
थोयाभिरध्रिगंग्याभिर्वन्त्रुविजोषसं । तार्भिर्नोमधूतूर्यमश्विनागंतंमिषज्यतंयदातुरं ॥ ६ ॥ यदध्रिगावोऽअध्रिगूऽ
इदचिदहोऽअश्विनाहवामहे । वयंगीभिर्विपन्यवः ॥ ताभिरायातंवृषणोर्पमेहवैविश्वस्युविश्ववार्थं । इषामंहिष्ठा
पुरुभूतमानरायाभिः क्रिविवाबुधुस्ताभिरागतं ॥ ताविदाचिदहानांतावश्विनावंदमानुऽउपब्रुवे । ताऽहुनसोभिराम
हे ॥ ताविद्दोषताऽउपसिंशुभस्पतीतायामनुद्रवर्तनी । मानोमतीथरिपवैवाजिनीवसूपुरोरुद्रावतिख्यतं ॥ आसु
म्याथसुगम्यंप्रातारथेनाश्विनावासक्षणी । हुवेपितेवसोभरी ॥ ७ ॥ मनोजवसावृषणामदच्युतामधुंगमाभिरूति
भिः । आरात्ताच्चिद्भूतमस्मेऽअवसेपवूर्वाभिः पुरुभोजसा ॥ आनोऽअश्वानवदश्विनावतिथीसिष्टमधुपातमानरा । गो

मद्वाहिरण्यवत् ॥ मयानुमयीमिषुवायमनोभृष्टरक्षसिना । अस्मिन्नामायानेनाजिनामविशंगामानिभीम
 हि ॥ ८ ॥ (८१४३) ईळिव्यादिप्रतीव्युयज्ञस्यजातवेदनं । चरिणुभूममगृभीनओचिपं ॥ इमामनंविश्वन्ने
 णेक्षिंश्वमनोगिरा । उतस्तुमुचिग्यधमोरयानां ॥ येषामात्राऽऽहमिग्यऽऽपःपथश्चनिग्रभे । उपविद्रावादीदत्त
 चम्पु ॥ उदस्यगोनिरस्यादीद्रियुपोव्युजरं । तपुजंभस्यमृदुनोगणश्रियः ॥ इदुतिप्रस्यन्गन्तवानोदुव्याहृणा ।
 अभिख्याभामाहृताशुज्ञानिनः ॥ ९ ॥ अद्येयानिपुनृतिभिर्व्यापुननऽआपुः । यथादनेवभूयत्तव्यापानिनः ॥ भिन्नजने
 अश्रियःपव्युहोहोतारंचर्पणीनां । तमयात्रानागृणेतमुचःस्तुपे ॥ यजेभिगृदुततंयज्ञानमन्यन्तुऽत् ॥ भिन्नजने
 सुधितमताननि ॥ कृतावानमृताययोयज्ञस्यमार्धनगिरा । उपोऽपनंनुपुनमेम्यदे ॥ अन्जनोऽअंगिरस्तामय
 जासोयंतुसंयतः । होतायोऽअस्तिविद्यायज्ञस्त्वम ॥ १० ॥ अग्नेनयलोऽअजुर्धनानामोहृताः । अथाऽऽव्यवृण
 स्तत्रिपीयथः ॥ मत्वंनऽऊजापतेगयिराम्यमवीधे । प्रावनमोऽनतर्नयनमत्स्या ॥ यद्वाऽऽविग्यतिःश्रितःसुमीतोम
 नुपोविजि । विधेदृग्निःप्रतिरक्षास्तिमेधति ॥ श्रयंशेनवस्यमेनोमस्यपीगमिगते । निमायिनमपुपारक्षमोदह ॥
 नतस्यमाययाचनगिपुरीशीतमत्यः । योऽअग्नेवदुदागलव्यदातिभिः ॥ ११ ॥ व्यंश्चस्त्वावमनिदंमुक्षण्युरग्रीणाऽ

नतस्यमाययाचनगिपुरीशीतमत्यः । योऽअग्नेवदुदागलव्यदातिभिः ॥

(८१४३)

ऋक्सं.

अ. ६ अ. २

॥ १० ॥

भिः । महोरायेतमुत्वासमिधीमहि ॥ उशनःकाव्यस्त्वानिहोतारमसादयत् । आयुर्जित्वामनवेजातवेदसं ॥ विभ्वेहि
त्वासजोर्पसोदेवासोदुतमकृत । अष्टीदेवप्रथमोयज्ञियोभुवः ॥ इमंघावीरोऽअमृतं दुतं कृण्वीतमर्त्यः । पावकं कृष्ण
वर्तनिं विहायसं ॥ तद्वेमयुतस्तुचः सुभासं शक्रशोचिपं । विशामश्मिजर्प्रलमीड्यं ॥ १२ ॥ योऽअस्मिहव्यदाति
भिराहुतिंमतोविधत् । भरिपोषसधत्तेवीरवद्यशः ॥ प्रथमंजातवेदसमश्नियज्ञेषुपुर्व्यं । प्रतिस्रुगेतिनमसाहुविष्मती ॥
आभिर्विधेमाशयेज्येष्टाभिव्यश्वत् । मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शक्रशोचिषे ॥ नूनमर्चविहायसेस्तोमैभिः स्थूरयूपवत् ।
ऋषवैयश्वदभ्यायाग्रये ॥ अतिथिमानुषाणांसुनुवन्स्पतीनां । विप्रऽअशिमवसेप्रलमीकते ॥ १३ ॥ महोविभ्वोऽअ
मिषतोऽभिहव्यानिमानुषा । अग्नेनिर्षत्सिनमसाधिर्बहिषे ॥ वंस्वानोवार्योपुरुवंस्वरायः पुरुस्पृहः । सवीर्यस्यप्रजा
वतोयशस्वतः ॥ त्वंरोसुषाम्णेमेजेजनायचोदय । सदाविसोरातिथिविष्टशश्वते ॥ त्वंहिसुप्रतूरसित्वंनोगोमतीरिषः ।
महोरायः सातिमग्नेऽअपावृधि ॥ अग्नेत्वंयशाऽअस्यामित्रावरुणावह । ऋतावानासचाजापुतदक्षसा ॥ १४ ॥
(८।४।४) सखायुऽआशिषामहिब्रह्मद्रायवज्रिणे । सुप्रऽऊषुबोदुतमायधृष्णवे ॥ शर्वसाह्यासिंश्रुतोवृत्रहृत्येनवृत्र
हा । मधैर्मघोनोऽअतिशूरदाशसि ॥ सनुःस्तवानुऽआभरुणिचित्रश्रवस्तमं । निरेकेचिद्योहरिवोवसुर्दुदिः+ ॥
(८।४।४) सखायइतित्रिशदचस्यसूक्तस्यवैयथ्योविद्यमनाद्द्रौत्यचस्यवरुणिगंगत्यानुष्टुप् (वरुःसौपाण्योयंराजा) ।

मंडलं ८

अनु- ४

॥ १० ॥

[illegible]

ऋक्सं.

अ. ६ अ. २

॥ ११ ॥

नवं । सुर्विद्वांसं चर्कृत्यं चरणीनां ॥ वेत्याहिनिर्कृतीनां वज्रहस्तपरिवृजं । अहरहः शुंध्युः परिपदामिव ॥ तदिन्द्रावु
आभरयेनादंसिष्ठकृत्वेन । द्विताकुत्साय शिश्रथो निचोदय ॥ १९ ॥ तमुत्वाननमीमहे नव्यदंसिष्ठसन्त्यसे । सत्वं नो
विश्वोऽअभिमातीः सक्षणिः ॥ यः ऋक्षादं हसोमचद्यो वार्यात्सप्तसिंधुषु । वर्धदुसस्य तु विनृगणीनमः ॥ यथावरो
सुपाग्नेः सनिभ्यऽआवहोरयि । व्यश्वेभ्यः सुभगे वाजिनीवति ॥ आनार्यस्य दक्षिणाव्यं चोऽएतु सोमिनः । स्थरंचरा
धः शतवत्सहस्रवत् ॥ यत्त्वापृच्छादीजानः कुह्याकुह्याकृते । एषोऽअपश्रितो वलोगो मतीमवतिष्ठति ॥ २० ॥
(८।४।५) तावां विश्वस्य गोपादेवादेवैपुयज्ञिया । ऋतावा नायजसे पतदक्षसा ॥ मित्रातनान रथ्या इव रणो यश्च सु
कृतुः । सनात्सुजाता तनया धृतव्रता ॥ तामाता विश्वे दसासु र्यायुग्रमहसा । महीजजानादितिर्कृतावरी ॥ महांता
मित्रावरुणासस्त्राजा देवावसुरा । ऋतावाना वृतमार्घोपतो बृहत् ॥ नपाता शर्वसोमहः स नृदक्षस्य सुकृत् । सुप्रदानूऽ
इपोवास्त्वार्थिदक्षितः ॥ २१ ॥ संयादानू नियेमथुर्दिव्याः पार्थिवीरिषः । नभस्वतीरावांचरं तु वृष्टयः ॥ अधियाबृहतो
द्विवोऽभिद्युधेव पर्यतः । ऋतावानासस्त्राजानमसेहिता ॥ ऋतावाना निषेदतुः साम्राज्याय सुकृत् । धृतव्रताक्षत्रिया
क्षत्रमाशतुः ॥ अक्षणाश्चिद्रातुवित्तरानुत्त्वणेन चक्षसा । निचिन्मिषं तानि चिरानि चिक्वतुः ॥ उत नोऽदिव्यादिति रुह्य
(८।४।५) तावा विश्वस्येति चतुर्विंशत्यृचस्य सृक् स्य वैयश्चो विश्वमना मित्रावरुणौ दजम्यादिति सृणां विश्वे देवा उष्णिक् उपात्सोष्णिग्गार्भा ।

मंडलं ८

अनु. ४

॥ ११ ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. २

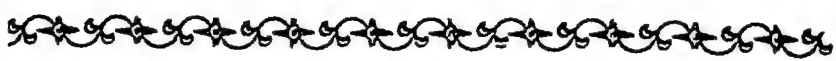
॥ १२ ॥

स्मोमहेतनेनासत्या । अवोभिर्याथोवृषणावृषणवसू ॥ तार्वामद्यहवामहेह्व्येभिर्वाजिनीवसू । पूर्वोरिषऽइषयैताव
तिक्ष्णः ॥ आवांवाहिष्ठोऽअश्विनारथोयानुश्रुतोर्नरा । उपस्तोमान्तरस्यदर्शथःश्रिये ॥ जुहुराणाचिदश्विनाम
ध्रुवणाशुभस्पती ॥ उपनोयातमश्विनारयाविश्वपुषासह । मधवानासुवीरावनपच्युता ॥ अमेऽअस्यप्रतीज्यमिं
द्रनासत्यागतं । देवाद्वेभिरद्यसचर्नस्तमा ॥ वयंहिवांहवामहऽउक्षण्यतोव्यश्ववत् । सुमतिभिरुपविप्राविहागतं ॥
अश्विनास्वेषेस्तुहिकुवित्तेश्रवतोहव । नेदीयसःकृळयातःपर्णोऽरुत ॥ २७ ॥ वयश्वस्यश्रुतंनरोतोमेऽअस्यवेदथः ।
सजोषसावरुणोमित्रोऽअर्यमा ॥ युवादत्तस्यधिष्ण्यायुवानीतस्यसरिभिः । अहरहवृषणामह्यशिक्षतं ॥ योवांय
नेभिरावृतोधिक्त्वावधूरैव । सपर्यताशुभेचक्रातेऽअश्विनो ॥ योवांमुरुव्यचस्तमचिकेततितनपाथ्यं । वृत्तिरश्विनापरि
यातमस्मय ॥ अस्मभ्यंसुवृषणवसूयातवर्तिनपाथ्यं । विषुडहवयश्महधुर्गिरा ॥ २८ ॥ वाहिष्ठोवांहवानांस्तोमोदूतोहुव
वरा । युवाभ्याभूत्वश्विना ॥ यदुदोदिवोऽअर्णवऽइषोवामदथोगहे । श्रुतमिन्मेऽअमर्त्या ॥ उतस्याश्वेत्यावरीवाहिष्ठा
वांनदीनीं । सिंघारिण्यवर्तनिः ॥ सदेतयासुकीत्याश्विनाश्वेतयाधिया । वहेथेशुभ्रयावाना ॥ युक्त्वाहित्वंरथासहाय
वस्वपोष्यावसो । आन्नोवायोमधुपिवास्माकंसवनार्गहि ॥ २९ ॥ तववायवृत्तस्पतेत्वष्टुर्जामातरक्षुत । अवांस्यावृणीमहे ॥

॥ १२ ॥

मंडलं ८

अनु. ४



अस्त्याप्यै । प्रणः पूर्वसैषु वितायवो च तमक्षुसन्नायनव्यसे ॥ ३ ॥ इदा हि वऽउर्पस्तुतिमिदा वामस्य भक्तये । उर्पवो विश्ववेद
 सो नमस्त्युराऽअसृक्ष्यन्यामिव ॥ उदुष्यवः सविता सुप्रणीतयोऽस्यादुध्वो वैरेण्यः । निद्विपादश्चतुष्पादोऽर्थिनो विश्रन्पत
 यिष्णवः ॥ देवं देवं वो वसे देवं देवमभिष्टये । देवं देवं हुवेमवाजसा तये गणं तो द्विव्याधिया⁺ ॥ देवासो हिष्मामनवे स मन्य
 वो विश्वे साकं सरा तयः । ते नोऽअद्य तेऽअर्पतु चेत्तु नो भवतु वरिवो विदः ॥ प्रवः शंसाम्यद्बुहः संस्थऽउर्पस्तुतीनां । नतं
 धूर्तिर्वरुणमित्रमर्त्यो वो धामभ्यो विधत् ॥ प्रसक्ष्यति रते विमहीरियो वो वरायदा शति । प्रप्रजाभिर्जायते धर्मणस्प
 र्धारिष्टः सर्वेऽएधते ॥ ३३ ॥ ऋते सविदते युधः सगे भिर्यात्यध्वनः । अर्यमामित्रो वरुणः सरा तयो वं त्रायं ते सजोषसः ॥
 अजै चिदसै कृणुथान्यं च नंदुर्गे चिदा सुसरुणं । एषा चिदसा दृशनिः परोनुसा सै धंती विनश्यतु ॥ यदुद्यसूर्येऽउद्यतिप्रि
 यक्षत्राऽऋतं दुध । यन्निष्पुचि प्रबुधि विश्ववेद सो यद्वामं ध्यं दिने दिवः⁺ ॥ यद्वामि पित्वेऽअसुराऽऋतं यते छर्दियं मविदा
 शुभे । वयं तद्वो वसवो विश्ववेदसऽउर्पस्थे याममध्यऽआ⁺ ॥ यदुद्यसूरऽउर्दिते यन्मध्यं दिनऽआतुचि । वामं धत्थमने
 वे विश्ववेद सो जुहानाय प्रचेतसे ॥ वयं तद्वः सम्राजऽआवृणीमहे पुत्रो न वहुपाय्यं । अश्याम तदा दित्या जुह्वतो ह्युवि ये न
 वस्यो न शमहै ॥ ३४ ॥ (८।४।८) ये त्रिशति त्रयं सरो देवासो वाहि रसदन् । विदन्न हं द्विता संनन् ॥ वरुणो मित्रोऽ

(८।४।८) ये त्रिशतीति पंचस्य सूक्तस्यैव सतो मनुर्विश्वे वागायत्री चतुर्थी पुरउणिक् ।

अर्थमासद्रातिपाचोऽअग्रयः । पत्नीवंतोवपद्रुताः ॥ तेनोगोपाअपाच्यास्तउदुक्तइत्थान्यक् । पुरस्तात्सर्व
याविशा⁺ ॥ यथावशतिदेवास्तथेदसत्तेदपांनकिरामिनत् । अरवाचनमर्त्यः ॥ सुसानांसप्तऽऽष्टयःसप्तद्युन्मान्ये
पां । सप्तोऽअधिश्चिर्योधिरे ॥ ३५ ॥ (८।४।९) वधुरेकोविपुणःसनरोयुवांज्यैकेहिरण्यं ॥ योनिमेकऽआससा
दुद्योतनोतद्वेपुमेधिरः ॥ वाशीमेकोविभर्तिहस्तऽआयसीमंतद्वेपुनिध्रुविः ॥ वज्रमेकोविभर्तिहस्तऽआहितंतेनवृ
त्राणिजिघ्रते ॥ तिग्ममेकोविभर्तिहस्तऽआयुधंशुचिरोजलोपभेपजः ॥ पृथऽएकःपीपायतस्करोयथोऽएपवेदनि
धीनां⁺ ॥ त्रीण्येकऽउरुगायोविचक्रमेयत्रदेवासोमदंति ॥ विभिद्रीचरतऽएकयासहप्रवासेववसतः ॥ सदोद्वाच
क्रातेऽउपमाद्विसम्वाजासर्पिंसुती ॥ अर्धतऽएकमहिंसामन्वतेनसूर्यमरोचयन् ॥ ३६ ॥ (८।४।१०) नहि
वोऽअस्यर्भकोदेवासोऽनकुमारकः । विश्वेसतोमहांतऽइत्⁺ ॥ इतिस्तुतासोऽअसथारिशादसोयेस्थत्रयश्चत्रिंशच्च ।
मनोर्देवायज्ञियातः ॥ तेनस्त्राध्वंतेवततऽर्जनोऽअधिवोचत । मार्नःपृथःपित्र्यान्मानवादिधिदूरंनैष्टपरावतः ॥ येदेवा

(८।४।९) वधुरेकइतिदशार्चस्यसूक्तस्यैवस्वतोमनुर्विश्वेदेवाद्विपदाविराट् । (भेदपक्षे—सोमः १ अग्निः १ त्वष्टा १ इंद्रः १ रुद्रः
१ पूषा १ विष्णुः १ अश्विनौ १ मित्रावरुणौ १ अश्विनौ १ एवंदश । अस्मिन्मारीचःकश्यपर्विःपाक्षिकः) । (८।४।१०) नहिव
इतिचतुर्कंचस्यसूक्तस्यैवस्वतोमनुर्विश्वेदेवागायत्रीपुरउष्णिग्बृहल्यनुष्टुभः ।

सऽइहस्थन्विश्वेभ्यश्चानराऽवृत । अस्मभ्यंशर्मसप्रथोगवेभ्यश्चायच्छत ॥ ३७ ॥ (८।५।१) योयजाति यजातऽइ
 त्सुनवच्चर्चाति च । ब्रह्मेदिद्रस्यचाकनत् ॥ पुरोळाशंयोऽअस्मैसोमंरतऽआशिरे । पादिसंशक्रोऽअंहसः ॥ तस्य
 द्युमोऽअसद्रथोदेवजतःसशूयवत् । विश्वावन्वन्नमित्रिया ॥ अत्यप्रजार्वतीगहेसंश्रंतीदिवेदेवे । इळाधेनुमतीदु
 हे ॥ यादंपतीसर्मनसासुनुतऽआचुधार्वतः । देवासो नित्ययाशिरा ॥ ३८ ॥ प्रतिप्राशुव्याऽइतःसम्यंचावर्हिंराशते ।
 नतावाजैषुवायतः ॥ नदेवानामपिहृतःसुमतिनर्जुगुक्षतः । श्रवोबृहद्विवासतः ॥ पुत्रिणाताकुमारिणाविश्वमायुव्यै
 श्रुतः । उभाहिरण्यपेशसा ॥ वीतिहोत्राकृतद्वसूदशस्यंतामृतायकं । समूधोरोमशंहतोदेवेषुक्कणुतोदुवः ॥ आशर्म
 पर्वतानांवृणीमहेनदीनां । आविष्णोःसचाभुवः ॥ ३९ ॥ ऐतुपृषारयिर्भगःस्वस्तिसर्वधातमः । उरुध्वास्वस्तये ॥
 अरमतिरनुर्वणोविश्वोदेवस्यमनसा । आदित्यानमिनेहऽइत् ॥ यथानोमित्रोऽअर्यमावरुणःसंतिगोपाः । सुगाऽऋ
 तस्यपंथाः ॥ अग्निर्वःपृथ्वीगिरादेवमालेवसूनां । सपर्यतःपुरुप्रियंमित्रनक्षेत्रसाधंसं ॥ मक्षूदेववर्तोरथःशूरोवापुत्सु

पंचमेनुवाकेद्वादशसूक्तानि (८।५।१) योयजातीत्यष्टादशर्चस्यसूक्तस्यैवस्वतोमनुः यज्ञोदेवतातृतीयादिद्वयोर्यजमानः पंचम्यादीनांदंपती
 दशम्यादिनवानादंपत्याशिषोगायत्रीनवमीचतुर्दश्यावनुष्टुभौदशमीपादमिचृदंत्याश्चतस्रः पंक्तयः (प्रथमयोर्द्वयोरिंद्रोदेवतेतिकेचित् दशम्या
 यजमानपत्न्याशीः ततोद्वयोः प्रपातत एकस्यामित्रार्थमवरुणाः तत एकस्याअग्निः अंत्यचतसृणां यजमान इति शौनकाद्याभिप्रायेण केचिदाहुः) ।

कासुचित् । देवानांयऽइन्मनोयजमानऽर्चयन्भीदयज्वनोभुवत् ॥ नयजमानरित्यग्निमुन्वानन्तदेवयो । देवा
नांयः ॥ नक्तिष्टकर्मणानशुतप्रयोपन्नयौगति । देवानांयः ॥ असदन्नसुनीर्यमुतत्यद्वाश्वम्भ्यं । देवानांयः ॥ ४० ॥
इतिपष्ठाष्टकेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

द्विचत्वारिंशत्यायेवर्गाः ४० सूक्तानि ११ ऋचः २०४ ॥ त्याग ॥ इन्द्राये १६ चित्राये.२ अश्विन्या १८ अमृत.३० इन्द्राये.२७
वरुण इद ३ मित्रावरुणाभ्या ९ निश्वेम्योदेवेभ्य.३ मित्रावरुणाभ्या.१२ अश्विन्या.१९ तायन.६ निश्वेम्योदेवेभ्य.४१ [भे. प. निश्वेम्यो-
दे २७ सोमाये. अमृत. तप. इन्द्राये. रुद्राय. पूरण. निगव अग्निभ्या. मित्रावरुणाभ्या. अश्विन्या निश्वेम्योदेवेभ्य.४] यज्ञाय.२
यजमानाय २ दंपतीभ्या.५ दंपत्याशीर्भ्य ९ ॥ इतिपष्ठेद्वितीयः ॥

प्रकृतानि त्रिंशन्मेधातिथिर्वयंघकोनामेध्यातिथिर्वाहर्तत्रिगायत्र्यनुष्टुप्तंमंद्रयाहिष्यनानीपातिथिरानुष्टुभंतृचो
त्योगायत्रस्तंसहस्रंसुरोचिपोगिरसोपश्यन्नग्निनाचनुर्विशर्तिः इत्यावाश्वआश्विनमुपरिष्टाज्योतिषं चिमहा
बृहतीपंचन्यंतम्वितासिसप्तशाकरंमहापंचन्यंतं प्रदंमहापांचमाद्यातिजगतीयज्ञस्यदशंद्राग्नमग्निमस्तोपिनाभा
र्कआशेयंमहापांचंर्हद्रासीद्वादशंमैत्यात्रिपुष्टितीयाशक्कयस्माऊदशवारुणत्वस्तश्चात्पळचनानात्रात्रेष्टु

भमं त्यं वा तु च माश्विनमा नुष्टुभमपश्यदिमे त्रयस्त्रिंशद्विरूप आंगिरस आग्नेयं तु समिधा शिं त्रिंशदा धद्वि च त्वारिंशं
 त्रिंशो क आद्याग्नेद्री ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥
 हरिः ओम् ॥ (८।५।२) प्रकृता न्यृजीषिणः कणाऽइंद्रस्य गार्थया । मदे सोमस्य बोचत ॥ यः सुविंदुमनश्
 निपिमुद्रासमं ह्रीशुवं । वधीदुग्योरिणन्नपः⁺ ॥ न्यर्द्धदस्य विष्टपवृष्माणं बृहतस्तिर । कुषे तदिंद्रपौस्व ॥ प्रतिश्रुताय
 बोधषत्तूर्णीं शनगिरि रधि । हुवे सुशिप्रमृतये ॥ सगोरश्वस्य विव्रजं मंदानः मोम्येभ्यः । पुरं नशूरदर्षसि ॥ १ ॥ यदि मे
 रारणः सुतऽसुक्थे वा दधसे च नः । आरादुपस्व धागहि ॥ वयं घतिऽअपिष्मसि स्तोतारं इंद्रगिर्वणः । त्वं नो जिन्वसो म
 पाः⁺ ॥ उत नः पितुमाभरं सराणोऽअविक्षितं । मघवन्भूरिते वसु ॥ उत नो गोमंतस्कृद्दिहिरण्यवतोऽअश्विनः ।
 इळाभिः सरं भेमहि ॥ बृहदुक्थं हवामहे सप्रकरत्नमृतये । साधुं कृण्वंतु मर्वसे ॥ २ ॥ यः संस्थे चिच्छतकतुरादीकृणो
 तिवृत्रहा । जरितृभ्यः पुरुवसुः ॥ सनः शुकश्चिदाशकुहानवाँऽअंतराभरः । इंद्रो विश्वाभिरुतिभिः ॥ योरायो इव निर्म
 हान्तु सुपारः सुन्वतः सखा । तमिंद्रमभिगायत ॥ आयंतारं महिस्थिरं पृतना सुश्रवोजितं । भूरेरीशान्मोजसा ॥ न किं
 रस्य शचीनां निर्युता सुनृतानां । न किं वृकान ददिति ॥ ३ ॥ न नूनं ब्रह्मणां मुणं प्राशूनामस्ति सुन्वतां । न सोमोऽअग्र

(८।५।२) प्रकृतानीति त्रिंशद्विरूपस्य कणाण्वो भेधातिथिरिंद्रो गायत्री ।

[illegible]

शंकररूपमध्यान्वयः = १
 (८५५३) वयं घेत्ये को न विंशत्यवृत्तसूक्तस्य काणनो मध्यात्ता वा १२८५

वज्रीरथो हिरण्ययः ॥ यः सुषव्यः सुदक्षिणऽइनोयः सुकर्तुर्गणे । यऽआकरः सहस्रायः शतामघऽइंद्रोयः पूर्भिदारितः+
॥ ७ ॥ यो धृषितो यो वृत्तो योऽअस्ति श्मश्रुश्चितः । विभूतद्युन्नयश्चयवनः पुरुष्टुतः कत्वा गौरिवशाकिनः+
दधे । न किं दानि र्यमदासुते गमो महोश्चरस्यो जसां दुनः शिष्ययं वसः ॥ दाना मगोन वारुणः पुरुत्राचरथं
णवद्धवं नैद्रो योषत्या गमत् ॥ सत्यमित्यावृषेदसि वृषज्जतिर्नो वृतः । यऽउग्रः सन्नतिः दृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः । यदि स्तोतुर्मघवांश्
॥ ८ ॥ वृषणस्तेऽअभीशं वो वृपा कशा हिरण्ययी । वृषारथो मघवन्वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो । वृषासो तो सुनो तु ते
वृषन्नजीपिन्नाभर । वृषादधन्वे वृषणं नदीष्वानुभ्यं स्थातर्हरीणां ॥ इन्द्रयाहिपीतये मधुशविष्ठसोम्यं । नायमच्छा
मघवांश्चणवह्निरो ब्रह्मोक्ता च सुक्रतुः ॥ वहंतु त्वारथेष्ठा स्माहरथो रथयुजः । तिरश्चिद्व्यसवना निवृत्रहन्नन्येषां याशतक्र
तो ॥ अस्माकं मघांतं मंस्तो मधिष्वमहामह । अस्माकं ते सर्वना संतु शंतं मामदाय द्युक्षसो मया ॥ ९ ॥ न हि पस्तव नो म
मंशास्तेऽअन्यस्य रण्यति । योऽअस्मान्वीरऽआनयत् ॥ इन्द्रश्चिद्धातदब्रवीत्स्त्रियाऽअशास्वमनः । उतोऽअहकृतुर
धुं+ ॥ सतीं चिद्धामदृच्युता मिथुनावह तो रथं । एवेद्धूर्वृष्णऽउत्तरा ॥ अधः पश्य स्वमोपरि संतरां पादु कौहर । मातैक

गुरुमौहं मुन्त्रं गीहं नृणां भूषिण ॥ १० ॥ (८१५१३) मंत्रं याहि मंत्रं भिरुपुष्पं लसगुहं । द्वितीऽग्रमुपयमानं
 तोदितं युवदिवानमो ॥ आग्राग्राना नर्द्धितं सोमीयोऽप्यच्छु ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 द्वितीः ॥ अत्राग्राना नर्द्धितं सोमीयोऽप्यच्छु ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 सत्यं धिर्नृणां नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 तामनुहितो देवनां द्यौः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 ह्यसोमं स्वपीतये ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 ताथः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 वो ॥ आनः महश्च यो मे रायुता निगुता विन ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 यऽमुञ्जागतं हंसो रूपा नो रघुचर्दः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 आ ॥ १३ ॥ (८१५१५) अग्निं नृणां नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 (८१५१८) अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥
 सोमाय च ॥ (८१५१५) अग्निं नृणां नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥ द्वितीः ॥ अत्राग्निं भिरुपुष्पं नृणां भूषिणः ॥

पिबतमश्विना ॥ विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेनचादिवापृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा । सजोषसा ० ॥ विश्वैद्वैस्त्रिभिरे
 कादुशैरिहाद्भिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा । सजोषसा ० ॥ जुपेथांयज्ञबोधतंहवस्यमेविश्वेहदेवौसवनावर्गच्छतं । स
 जोषसाऽऽषसासूर्येणचेर्षनोवोह्वमश्विना ॥ स्तोमंजुपेथांयुवशेर्वकन्यनांविश्वेहदेवौसवनावर्गच्छतं । सजोषसा ० ॥
 गिरोजुषेथामध्वरंजुषेथांविश्वेहदेवौसवनावर्गच्छतं । सजोषसा ० ॥ १४ ॥ हारिद्रवेवपतथोवनेदुपसोमंसुतमंह्रिपे
 वावर्गच्छथः । सजोषसाऽऽषसासूर्येणचत्रिर्वीर्तियीतमश्विना ॥ हुंसाविवपतथोऽअध्वगाविवसोमंसुतमंह्रिपेवावर्ग
 च्छथः । सजोषसा ० ॥ इयेनाविवपतथोह्रुव्यदातयेसोमंसुतमंह्रिपेवावर्गच्छथः । सजोषसा ० ॥ पिवतंचतृष्णातंचा
 चर्गच्छतंप्रजांचधत्तंद्रविणंचधत्तं । सजोषसाऽऽषसासूर्येणचोर्जनोधत्तमश्विना ॥ जयतंचप्रस्तुतंचप्रचावतंप्रजांचध
 तंद्रविणंचधत्तं । सजोषसा ० ॥ हुतंचशत्रून्यतंतचमित्रिणःप्रजांचधत्तंद्रविणंचधत्तं ॥ सजोषसा ० ॥ १५ ॥ मि
 त्रावरुणवंताऽऽतधर्मवंतामरुत्वंताजरितुर्गच्छथोहवं । सजोषसाऽऽषसासूर्येणचादित्यैर्यीतमश्विना ॥ अंगिरस्वंता
 ऽऽतविष्णुवंतामरुत्वंताजरितुर्गच्छथोहवं । सजोषसा ० ॥ ऋभुमंतावृषणावाजवंतामरुत्वंताजरितुर्गच्छथोहवं ।
 सजोषसा ० ॥ ब्रह्मजिन्वतमतजिन्वतंधियोहृतरक्षांसिसेधतममीवाः । सजोषसाऽऽषसासूर्येणचसोमंसुन्वतोऽअ
 श्विना ॥ क्षत्रजिन्वतमतजिन्वतंनृहृतरक्षांसिसेधतममीवाः । सजोषसा ० ॥ धेनूजिन्वतमतजिन्वतंविशोहृतरक्षां

$$f(31412)$$

स्यदृत्रहन्नेद्यपिवासोमस्यवज्रिवः ॥ सेहानऽर्धग्रुतेनाऽअभिद्रुहःशचीपतऽइद्रविश्वामिभ्रुतिभिः । माध्यंदिनस्य ॥
 एकराळस्यभुवनस्यराजसिशचीपतऽइद्रविश्वामिभ्रुतिभिः । माध्यंदिनस्य ॥ सस्थावानाययसित्वमेकऽइच्छचीप
 तऽइद्रविश्वामिभ्रुतिभिः । माध्यंदिनस्य ॥ क्षेमस्यचप्रयुजश्चत्वमीशिशचीपतऽइद्रविश्वामिभ्रुतिभिः । माध्यंदि
 नस्य ॥ क्षत्रायत्वमवसिनत्वमाविशचीपतऽइद्रविश्वामिभ्रुतिभिः । माध्यंदिनस्य ॥ इयावाश्वस्यरेभतस्तथाश्रु
 णयथाश्रुणोरत्रैःकर्माणिकृण्वतः । अत्रसदस्युमाविथत्वमेकऽइद्रपाह्यऽइद्रक्षत्राणिवर्धयन् ॥ १९ ॥ (८।५।८)
 यन्नस्यहिस्यऽकृत्विकासस्त्रीवाजेपुक्रमसु । इद्राग्नीतस्यबोधतं ॥ तोशासारथ्यावानावृत्रहणापराजिता । इद्राग्नी ॥
 इदंवांसदिरंमध्वधुक्षत्राद्रिभिर्नरः । इद्राग्नी ॥ जुषेथांयुशमिष्टयेसुतंसोमंसधस्तुती । इद्राग्नीऽआगंतनरा ॥ इमा
 जुषेथांसर्वनायेभिर्हव्यान्युहथुः । इद्राग्नी ॥ इमांगायुत्रवर्तनिजोथांसुष्टुतिमम । इद्राग्नी ॥ २० ॥ प्रातर्यावं
 भिरागतदेवोभेजेन्यावसू । इद्राग्नी ॥ आहंसरस्वतीवतोरिद्राश्वोरवोवृणे । याभ्यांगायुत्रमन्यते ॥ २१ ॥ (८।५।९)
 तयेयथाहुवंतमोर्धिराः । इद्राग्नी ॥ अग्निर्देवोऽअनकुनऽउभेहिविदधेकविरंतश्चरतिदूत्यं नभतामन्यकेसमे ॥
 अग्निमस्तोष्यग्निमयमग्निमीळायुजध्वै । अभिर्देवोऽअनकुनऽउभेहिविदधेकविरंतश्चरतिदूत्यं नभतामन्यकेसमे ॥
 महापंक्तिराद्यातिजगती । (८।५।८) यज्ञस्येतिदशर्चस्यसूक्तस्यात्रेयः इयावाश्वइद्राग्नीगायत्री । (८।५।९) अग्निमितिदशर्चस्यसूक्तस्याकाण्वो

नरानभंता०॥अभ्यर्चनभाकवदिद्राभीयसागिरा॥ययोविश्वमिदंजगद्विद्यधौःपृथिवीमह्युपस्थैविभुतोवसनभंता०॥
 प्रब्रह्माणिनभाकवदिद्राग्निभ्यामिरज्यत । याससबुधमण्वंजिह्वारमपोणतऽइद्रऽइशानऽओजसानभंता०॥
 वृक्षपुराणवह्नतैरिवगुष्पितमोजोदासस्यदंभय । वयंतदस्यसंभृतंवस्विद्रेणविभजेमहिनभंता०॥ २४ ॥ यद्विद्राभीज
 नाऽइमेविह्वयंतेतनागिरा । अस्माकैभिर्नृभिर्वयंसासह्यामपृतन्यतोवनुयामवनुष्यतो नभंता०॥ २४ ॥ यद्विद्राभीज
 वऽउच्चरातऽउपद्युभिः । इन्द्राभ्योरनुव्रतमुहानांयंतिसिधवोयान्त्सीन्धामुचतानभंता०॥ यादुभ्वेताववोद्वि
 पूर्वीरुतप्रशस्तयःसूनोहिनवस्यहरिवः । वस्वोवीरस्यापृचोयानुसाधंतनोधियो नभंता०॥ पूर्वाष्टऽइंद्रोपमातयः
 सत्त्वानमग्निमयं । उतोनुचिद्यऽओजसाशुष्णस्यांडानिभेदतिजेष्वस्वतीरपो नभंता०॥ तंदिशीतासुवृक्किभिस्त्वेषं
 नमत्वियं । उतोनुचिद्यऽओहंतऽआंडाशुष्णस्यभेदत्यजैःस्वतीरपो नभंता०॥ तंदिशीतास्वध्वरंसत्यं सत्त्वा
 गिरस्वदंवाचि । त्रिधातुनाशर्माणापातमस्मान्वयंस्यामपतयोरयीणां॥ २५॥ (८।५।११) अस्माऽऽक्रुषुप्रभृतयेवरुणायमरु
 श्वोर्चाविदुष्टरेभ्यः । योधीतामानुषाणांपृथ्वोगाऽइवरक्षति नभंता०॥ एवेंद्राग्निभ्यांपितृवन्नवीयोमंघातुवदं
 स्यप्रशस्तिभिर्भ्यःसिधूनामुपौदयेससस्वसासमध्यमो नभंता०॥ (८।५।११) अस्माऽऽक्रुषुप्रभृतयेवरुणायमरु
 (८।५।११) अस्माज्जितिदशर्चस्यसूक्तस्यकाण्वोनाभाकोवरुणोमहापक्तिः ।

तः । तद्वाग्नेयीपुन्यमगमिच्छोऽप्येवमुक्तं ॥ यः कुरुर्भानि सत्यः संविद्यानभिर्भुजः । नमानोपुष्ट्युदेनद्र
रंणस्यसहस्रंमहिगोपाडुंयोनंता ॥ योभूतोभुर्नानांयऽउद्याणांभीत्याऽपुंनुनामांविगुप्तो । मृकृषिः सात्रो
पुरुषंयोरित्युपयतिभता ॥ २६ ॥ यस्मिन्निभानिहात्रोच्येन्नामिभिर्गिन्ता । तिनन्नीनितेनतुपायेन
मुनैर्भुजेऽअथोऽअयुऽअनुभता ॥ यऽआत्मकंऽपात्रयंविशोऽनाभ्यां ॥ पञ्चिपामनिर्मुद्राऽन्यत्रयपुगेन्ये
विश्वेदुवाऽअनुतंभता ॥ मर्मपुटोऽत्रोर्गीन्यन्तगोभिर्गोभिनियर्भमपुटुः । नगुनाऽअनिनापुनान्ये
द्याह्मणकुरुतर्भता ॥ यस्यभूतापिचक्षुणानिचोपस्थीभिर्गिन्तः । त्रिचन्मणिपुमनु रंणस्यपुंनद्रुमन्प्रानाभिर्
न्यतिभता ॥ यःभूतोऽअभिनिर्गिन्तश्चकृण्णाऽअनुतुता । नयामपुष्ट्यमंमय म्भुभेनपिगेऽङ्गीऽअत्रो नयामा
स्यवभता ॥ २७ ॥ (८१५१२०) अन्विष्टाऽपामुरोपिगोऽपुंनुऽअभिभिविदिमाणपिष्ट्याः । अन्विष्टुतिऽपु
नानिमिवादिभ्येत्तानिचकृणस्यनुतानि ॥ एतद्विद्वत्संणेपुंनंनमन्वाभिर्समुन्यगोपा । यन्अमंनिकृष्यंविन
त्पातंनोयावापुधिपीऽउपस्थे ॥ उमांभियंअपमाणस्वदेपुंनंनपंरुणनंभिथापि । ययानिपयोऽुगितानंममन
मौणमधिनाचक्रेम ॥ आवायापीणोऽअपिनाभीभिर्गिप्रोऽअनुपुः । नामलानोर्गीन्येनभता ॥ यथापुम
(८१५१२१) अन्विष्टाभिर्गुप्यमंमय लणोनामाकृत्तद्विद्वत्तानाचिष्ट्यानां । यानानाभिर्गपानाचिष्ट्यानां । यानाभि
मृणामनिनोपापानिन्त्रिपुगोत्तामिनोदुभः ।

(८१५१२) अन्नाश्रमिपुत्रात्मकसत्त्वयोगानाम्परित्यागनिष्ठतायाः। वा-नानापरिश्रमादिभूतानामप्यनार्थी
मृणालनिर्वाणामिन्द्रविद्युदौत्साहिनोरुधुम् ।

ऋक्सं.

आ. ६ अ. ३

॥ २० ॥

त्रिरश्विनागीभिर्विप्रोऽअजोहवीत् । नासत्यासोमपीतयेनभता० ॥ एवावामहऽऊतयेयथाहुवतमोधराः । नासत्या
सोमपीतयेनभता० ॥ २८ ॥ (८।६।१) इमेविप्रस्यवेधसोमेरस्तृतयज्वनः । गिरःस्तोमासऽइरते ॥ अस्मैतेप्रतिह
र्यतेजातवेदोविचर्षणे । अग्नेजनमिसुष्टुतिः ॥ आरोकाऽईवधेदहतिग्माऽअग्नेतवत्विषः । दुद्धिर्वनानिबप्सति ॥
वः ॥ २९ ॥ कृष्णारजोसिपत्सुतःप्रयाणेजातवेदसः । एतेत्येवृथगृन्थः ॥ धासिंक्कृण्वानऽओषधीर्वप्सदुग्निर्नवा
यति । पुनर्यतरुणीरपि ॥ जिह्वाभिरह्ननंमदुर्चिषाजंजणामवन् । अग्निर्धद्रोधतिक्षमि ॥ उपसांमिवकेत
रुध्यसे । गर्भेसंजायसेपुनः ॥ उदग्नेतवतद्धृतादुर्चीरोचतऽआहुतं ॥ अस्वमेसधिष्टवसौषधीरनु
सोमपृष्ठायवेधसे । स्तोमैर्विधेमाग्नेये ॥ उदग्नेतवतद्धृतादुर्चीरोचतऽआहुतं । निसानंजुहोइमुखे ॥ ३० ॥ उक्षाज्ञायवशान्नाय
चेमनुष्वदंनऽआहुत । अंगिरस्वद्धवामहे ॥ त्वंहमेऽअग्निनाविप्रोविप्रेणसन्सता ॥ उतत्वाभृगवच्छु
विप्रायद्वाशुषैर्यिदेहिसहस्रिणं । अग्नेवीरवतीमिषं ॥ ३१ ॥ अग्नेभ्यातःसहस्कृतरोहिदश्वशुचित्रत । इमंस्तोमंजुष
स्वमे ॥ उतत्वाग्नेममस्तुतोवाश्रायप्रतिहर्षते । गोष्ठंगवऽइवाशत ॥ तुभ्यंताऽअंगिरस्तमविश्वाःसुक्षितयःपृथक् ।
षष्ठेनुवाकेपद्मरूपाणि (८।६।१) इमेविप्रस्येतित्रयास्त्रिंशदचस्यसूक्त्यांगिरसोविरूपोभिर्गायत्री ।

मंडलं ८

अनु. ६

॥ २० ॥

अश्लोकामायेयेमिरे ॥ अग्निधीभिर्मनीषिणोर्मोधरासोविपश्चितः । अन्नसद्यायहिन्विरे ॥ तंत्वामज्मेपुवाजिनंतन्यानाऽ
 अग्नेऽअध्वरं । वह्निहोतारमीळते ॥ ३२ ॥ पुरुत्राहिसहदुःसिविशोविथ्याऽअनुप्रसुः । समत्सुत्वाहवामहे ॥ तमीळिज्व
 यऽआहुतोन्निर्विभ्राजतेघृतैः । इमंनःशृणवद्ध्रवं ॥ तंत्वोवयंहवामहेक्षणवंतंजातवैदसं । अग्नेघ्नंतमपृद्धिपः ॥ विशांराजो
 नमश्नुतमध्यक्षंमणामिमं । अग्निमीळेसऽउश्रवत् ॥ अग्निविथ्यायुवेपसंमयनवाजिनंहितं । सस्मिनवोजयामसि ॥ ३३ ॥
 नमश्नुतमध्यक्षंमणामिमं । अग्नेतिग्मेनदीदिहि ॥ यंत्वानसऽइधतेमनुज्वदगिरस्तम । अग्नेसवोधिमे
 घ्नन्मध्राण्यपृद्धिपोदहद्व्रक्षांसिविथ्वहा । अग्नेतिग्मेनदीदिहि ॥ यंत्वानसऽइधतेमनुज्वदगिरस्तम । अग्नेसवोधिमे
 वचः ॥ यदग्नेदिविजाऽअस्यपुसजावासहस्कृत । तंत्वागीर्भंहवामहे ॥ तुभ्यंघेत्तेजनाऽइमेविथ्याःसुक्षितयःपृथक् ।
 धांसिहिन्यंत्ये ॥ तेघेदग्नेस्वाधोह्राविथ्यानचक्षसः । तरंतःस्यामदुर्गहा ॥ ३४ ॥ अग्निमंदंपुरुप्रियंशीरंपावकशो
 चिपं । हृदिर्मद्रेभिरीमहे ॥ सत्वमग्नेविभावसुःसुजन्तसूयोनरदिमभिः । शर्धन्तमांसिजिघ्रसे ॥ तत्तेसहस्वऽईमहे
 द्वात्रयन्नोपदस्यति । त्वदग्नेवार्यवसु ॥ ३५ ॥ (८१६।२) समिधाग्निंदुवस्यतघृतैर्वोधयतातिथि । आसिन्हव्या
 जुहोतन ॥ अग्नेस्तोमंजुपस्वमेवधैस्वानेनमर्मना । प्रतिसूक्तानिहर्यनः ॥ अग्निंदुतंपुरोदधेहव्यवाहुमुपब्रुवे । देवाऽ
 आसादयादिह ॥ उक्तेवृहतोऽअर्चयःसमिधानस्यदीदिवः । अग्नेशुक्रासंऽईरते ॥ उपत्वाजुहोऽइमंघृताचीर्यंतुहय

(८१६।२) समिधाग्निमिति त्रिंशद्वचस्य सूक्तस्यागिरसोविरूपोभिर्गायत्री ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ३

॥ २१ ॥

मंडलं ८

अनु. ६

॥ २१ ॥

त । अग्नेहव्याजुषस्वनः ॥ ३६ ॥ मंदं होतारमत्विजं चित्रभानुं विभावसुं । अग्निमीळे स उज्ज्वलं ॥ प्रबं होतारमी
ज्वं जुष्टमग्निं कविक्रतुं । अध्वराणामभि श्रियं ॥ चित्रवान्द्वयं जनं ॥ जुषाणोऽर्चगिरस्तमेमाहव्यान्यानुषक् ॥ अग्नेयुजं नयऽकृतुथा ॥
समिधानऽर्चं सत्यशुक्रशोचऽइहावह । चित्रिद्वेषः सहस्रकृत ॥ अग्निः प्रलेनमन्मनां शुभानस्तन्वपुस्वां । यज्ञानां केतुमीम
हे ॥ ३७ ॥ अग्नेनि पाहि नस्त्वं प्रतिष्म देवरीषतः । भिधिद्वेषः सहस्रकृत ॥ अग्निः प्रलेनमन्मनां शुभानस्तन्वपुस्वां । यज्ञानां केतुमीम
वि विप्रैर्गणवावृधे ॥ ऊर्जो न पातु माहुर्वे निपावकशोचिपं । अस्मिन्यज्ञे स्वध्वरे ॥ सनो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचि
षा । देवैरासत्सि बर्हिषि ॥ योऽअग्निं तन्वोऽदमे देवं मर्तः स पर्यति । तस्माऽइहैदयदसु ॥ ३८ ॥ अग्निर्मर्धादिवः कुडु
त्पतिः पृथिव्याऽअयं । अपारेतां सिजिन्वति ॥ उदग्ने शुचयुस्तव शुक्राभ्याजं तऽईरते । तव ज्योतीं व्यर्चयः ॥ ईशिपेवा
यस्य हि दात्रस्याग्नेः स्वर्पतिः । स्तोता स्यात्तव शर्मणि ॥ त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां हि न्वं ति चित्तिभिः । त्वावर्धतु नो गिरः ॥
अदं वधस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा । अग्नेः सख्यं वृणीमहे ॥ ३९ ॥ अग्निः शुचिं ब्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः ।
शुचीरो च तऽआहुतः ॥ उत त्वाधीतयो मगिरो वर्धतु विश्वहा । अग्ने सख्यस्य बोधिनः ॥ यदग्ने स्यामहं त्वं वाधा स्या
ऽअहं । स्पृष्टे सत्याऽइहा शिषः ॥ वसुर्वसुपतिर्हि कमस्येति विभावसुः । स्याम ते सुमतावपि ॥ अग्ने धृतव्रताय ते समुद्राये
वसिंधवः । गिरो वाश्रासऽईरते ॥ ४० ॥ युवानं विप्रति कविं विश्वधादं पुरुषे पसं । अग्निं शुभामिमन्मभिः ॥ यज्ञानां

रथेनयंतिमजैर्भायनीच्छन् । स्तोमैरिषामग्रं ॥ अयमंश्वलेऽर्गीजिताश्वगुन्त । तस्यैवाणस्तृच्छ ॥ धर्मोन्नत्ये
 सुसद्धिप्रोन्नजायुषिःमदा । अग्रेऽश्वीदयसिप्रदि ॥ पुराग्रेऽश्वीदयसिप्रदि ॥ पुराग्रेऽश्वीदयसिप्रदि ॥ पुराग्रेऽश्वीदयसिप्रदि ॥
 (८१६३) आग्रयेऽग्रिमिधुतस्तुणंतिश्वीदयसिप्रदि ॥ अग्रिमिधुतस्तुणंतिश्वीदयसिप्रदि ॥ अग्रिमिधुतस्तुणंतिश्वीदयसिप्रदि ॥
 रुः । अग्रिमिधुतस्तुणंतिश्वीदयसिप्रदि ॥ अग्रिमिधुतस्तुणंतिश्वीदयसिप्रदि ॥ अग्रिमिधुतस्तुणंतिश्वीदयसिप्रदि ॥
 तःपृच्छद्धिमातरं । कऽग्र्याःकेलशृणिर् ॥ प्रतिव्याजवनीनद्विगवमोनवोऽपिपत् । यन्मग्नवमनिर् ॥ रथीनमोर्
 इतत्वंमधवन्पृणयमेवष्टिचक्षितत् । यद्वीळयानित्रीकुतत् ॥ यद्वीळयानित्रीकुतत् ॥ यद्वीळयानित्रीकुतत् ॥
 धीना ॥ विपुविश्वऽअभियुजोचञ्चिन्विच्ययथादृ । भवानःनश्चमम ॥ अस्माकंसुग्यपुऽदृ । अस्माकंसुग्यपुऽदृ ।
 नयंधूवतिधुतयः ॥ नृज्यामतेपगिद्धिपोरैतज कदाते । गुमेदिद्विगोभनः ॥ ४३ ॥ गनीश्विनोऽग्रिप्रोभ्यांतः
 अतगिनः । विवक्षणाऽअनेतमे ॥ रुद्धाहितेऽश्वीदयसिप्रदि ॥ अश्वीदयसिप्रदि ॥ अश्वीदयसिप्रदि ॥
 जयमिद्विद्वत्तार्चिदारुजं । आद्राणिंयथागर्थं ॥ कुरुतेनिश्चाकमेदंनुगुणादिद्वयः । आद्राणिंयथागर्थं ॥
 योऽअदीशुरिःप्रममयमग्रतये । तस्यनोयेदुऽगर्भे ॥ ४४ ॥ उमऽइत्तादिनभनेनगयऽद्वमेभिनः । पृष्टातेय

थापयन् ॥ एतत्त्वावधिरवयं श्रुत्कर्णसंतमथै । दूरादिहहवामहे ॥ यच्छ्रुयाऽइमंहवदुर्मर्षचक्रियाऽउत । भवे
 रापिनोऽअंतमः ॥ यच्चिद्धितेऽअपिव्यार्थेजगन्वासोऽअमन्महि । गोदाऽइदिद्रवोधिः ॥ आत्वारंभनजिब्रयोर
 भ्माशवससते । उदमसित्वासधस्यऽआ ॥ ४५ ॥ स्तोत्रमिन्द्रायगायतपुरुनम्णाथसत्त्वे । नकिर्यवृण्वतेयुधि ॥
 अभित्वावृषभासुतेसुतंसृजामिपीतये । तंपाव्यश्रुहीमदं ॥ मात्वामराऽअविष्यवोमोपहस्वानऽआर्दभन् । मार्काब्र
 ह्मद्विपौवनः ॥ इहत्यागोपरीणसामहेमदंतुराधसे । सरोगौरोयथापिव ॥ यावृत्रहापरवतिसनानवाचचुच्यवे ।
 तासंसत्सुप्रवोचत ॥ ४६ ॥ अर्पिवत्कद्रुवःसुतमिन्द्रःसहस्रबाह्वे । अत्रादेदिष्टपौस्थं ॥ सत्यंतत्तुर्वशेयद्वौविदानोऽ
 अह्वार्यं । व्यानद्रुतुर्वणेशमि ॥ तुरणिवोजनानां त्रदंवाजस्यगोमतः । समानमप्रशंसिषं ॥ ऋभृक्षणंनवर्तवऽउक्थे
 षुतुग्र्यावृधं । इंद्रसोमसचासुते ॥ यःकृतदिद्वियोन्यं त्रिशोकायगिरिपथुं । गोभ्योगातुनिरैतवे ॥ ४७ ॥ यद्वधि
 पेमनस्यसिमंदानःप्रेदिथक्षसि । मातर्करिद्रमुळ्यं ॥ दृभ्रंचिद्धित्वावतःकृतंशण्वेऽअधिक्षमि । जिगात्विद्रतेमनः ॥
 तवेदुताःसुकीर्तयोसन्नतप्रशस्तयः । यद्विद्रमुळ्यासिनः ॥ मानऽएकसिन्नागसिमाद्वयोरुतत्रिषु । वधीर्माशूरभूरि
 शु ॥ विभयाहित्वावतऽउग्रादभिप्रभंगिणः । दुस्माद्रुहमृतीपहः ॥ ४८ ॥ मासख्युःशूनमाविदेमापत्रस्यप्रभूवसो ।
 आवृत्वद्भूतुतेमनः ॥ कोनुमर्याऽअभिथितुःसखासखायमब्रवीत् । जहाकोऽअस्मदीपते ॥ एवारैवृषभासुतेसिन्व

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ २३ ॥

मंडलं ८

अनु. ६

माद्यक्रत्विकस्तुतिर्वैमानिवाससुपणैर्द्रावरुणं जागतमग्राविशतिर्भर्गः प्रागर्थआग्नेयं प्रागर्थं भूभयं द्यूनां
प्रोअसैद्वादशप्रगाथः पाँकैससम्याद्यास्तिस्रोबृहत्यः सपूव्यो गायत्रमाद्याचतुर्थ्यादिद्वैससमीचानुष्टुभोगायत्री
त्यादैवी त्रिष्टुबुत्वायदिद्रतरोभिः पंचोनाकलिः प्रागर्थमंलानुष्टुपूत्यानुसैकामत्यः सांमदौभैत्रावरुणि
॥ हरिः ओम् ॥ (८।६।४) त्वावतः पुरुवसोवयमिद्रप्रणेतः । स्मसिस्थातर्हरीणां ॥ त्वांसित्यमद्रिवोविद्मद्रा
तारमिषां । विद्मद्राताररयीणां ॥ आयस्यतेमहिमानंशतमूतेशतक्रतो । गीर्भिर्गणंतिकारवः ॥ सुनीथोघासमत्यो
यंमरुतोयमर्यमा । मित्रः पांत्यदुहः ॥ दधानो गोमदश्चवत्सुवीर्यमादित्यजतः एधते । सदा राया पुरुस्पृहां ॥ १ ॥ त
मिद्रदानमीमहेशवसानमभीर्व । ईशानं रायऽईमहे ॥ तस्मिन्हंसत्यतयोविश्वाऽअभीरवः सचा । तमावहंतु स

(८।६।४) त्वावतइतित्रयस्त्रिंशदृचस्यसूक्तस्याश्वयोवशकपिः पृथुश्रवादेवता आद्यानाविशत्यचाभिद्रोदेवताआनोवायवित्यादिचत
स्रणांशतं दासइत्यस्याश्ववायुदेवता आद्यापादमिचतृद्वितीयादितिसोगायत्र्यः पचम्याद्याः क्रमेण ककुब्जगायत्रीबृहत्यनुष्टुपसतोबृहतीगायत्री
बृहतीविपरीताद्विपदागायत्रीबृहतीपिपिलिकमभ्याककुब्जं कुशिराङ्गजगत्युपरिष्टादृहतीविषमपदाबृहतीपंक्तिस्तारपंक्तिगाय-
त्रीपंक्तिबृहतीसतोबृहतीबृहतीसतोबृहतीगायत्रीद्विपदाविराङ्गिर्कपंक्तिगायत्र्यः । (पृथुश्रवाः कानीतो राजा तस्य दानस्तुतिः) ।

॥ २३ ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ २४ ॥

म॒थ्रा॒ने॒मि॒नि॒वा॒वृ॒तुः ॥ दा॒ना॒सः॒पृ॒थ॒श्र॒व॒सः॒का॒नी॒त॒स्य॒सुरा॒र्घ॒सः । र॒थ॒हि॒र॒ण्य॒य॒द॒द॒न्म॑हि॒ष्ठः॒स॒रि॒र॒भू॒द्वि॒ष्टम॑कृ॒त॒श्र॒वः ॥
आ॒नो॒वा॒यो॒म॒हे॒त॒नै॒या॒हि॒म॒खा॒य॒पा॒ज॒से । व॒यं॒हि॒तै॒च॒क्षु॒मा॒श्रि॒दा॒व॒नै॒स॒द्या॒श्चि॒न्मा॒हि॒दा॒व॒नै ॥ ५ ॥ यो॒ऽअ॒श्वे॒भि॒र्व॒हे॒त॒व॒
स्त॑ऽउ॒खा॒स्त्रिः॒स॒प्त॒स॒प्त॒ती॒नां । ए॒भिः॒सो॒मे॒भिः॒सो॒म॒सु॒क्षिः॒सो॒म॒पा॒दा॒ना॒य॒शु॒क्र॒पू॒त॒पाः ॥ यो॒म॑ऽइ॒मं॒चि॒दु॒त्मा॒ना॒म॑द्वि॒त्रं॒दा॒व॒
नै । अ॒र॒टे॒ऽअ॒क्षे॒न॒हु॒पे॒स॒कृ॒त्व॒नि॒सु॒कृ॒त्तरा॒य॒सु॒क्र॒तुः ॥ उ॒च॒थ्ये॒इ॒व॒पु॒पि॒यः॒स्व॒रा॒लु॒त॒वा॒यो॒घृ॒त॒स्नाः । अ॒श्वे॒षि॒त॒र॒जै॒षि॒त॒शु॒ने॒षि॒त॒
प्रा॒ज्म॒त॒दि॒द॒श्रु॒त॒त् ॥ अ॒र्ध॒प्रि॒या॒मि॒पि॒रा॒य॒प॒टि॒स॒ह॒स्त्रा॒स॒नं । अ॒श्वो॒ना॒मि॒त्र॒वृ॒ष्णां ॥ गा॒वो॒न॒य॒थ॒मु॒प॒गं॒ति॒व॒ध्र॒य॒ऽउ॒प॒मा॒यं॒ति॒
व॒ध्र॒यः ॥ अ॒ध॒य॒च्चार॑थे॒ग॒णे॒श॒त॒मु॒ष्टो॒ऽअ॒चि॒क्र॒द॒त् । अ॒ध॒श्वि॒त्ते॒षु॒वि॒श॒ति॒श॒ता॑ ॥ श॒तं॒दा॒से॒र्व॒त्स्व॒थे॒वि॒प्र॒स्त॑रु॒क्ष॒ऽआ॒द॒दे । ते॒तै॒
वा॒य॒वि॒मे॒ज॒ना॒म॒दं॒ती॒द्र॒गो॒पा॒म॒दं॒ति॒दे॒व॒गो॒पाः ॥ अ॒ध॒स्या॒यो॒प॒णा॒म॒ही॒प्र॒ती॒ची॒व॒श॒म॒श्व॒या॒अ॒धि॒रु॒क्मा॒वि॒नी॒य॒ते ॥ ६ ॥ (८।६।५)
म॒हि॒वो॒म॒ह॒ता॒म॒वो॒च॑रु॒ण॒मि॒त्रं॒दा॒शु॒षे । य॒मा॒दि॒त्या॒ऽअ॒भि॒द्रु॒हो॒र॒क्ष॒थाने॑म॒ध॒न॒श॒द॒ने॒ह॒सो॒व॒ऽकृ॒त॒यः॒सु॒ऽकृ॒त॒यो॒व॒ऽकृ॒त॒यः ॥
वि॒दा॒दे॒वा॒ऽअ॒घा॒ना॒मा॒दि॒त्या॒सो॒ऽअ॒पा॒कृ॒तिं । प॒क्षा॒व॒यो॒य॒थो॒प॒रि॒व्यं॒स्मे॒श॒र्म॒य॒च्छ॒ताने॑ह॒सो॒ ॥ व्यं॒स्मे॒ऽअ॒धि॒श॒र्म॒त॒
वि॒श्वे॒स्य॒धे॒दि॒म॒ऽआ॒दि॒त्या॒रा॒य॒ऽइ॒श॒ते॒ने॒ह॒सो॒ ॥ य॒स्मा॒ऽअ॒रा॒स॒त॒क्ष॒य॒जी॒वा॒तुं॒च॒म॒चै॒त॒सः । म॒नो॒
(८।६।५) म॒हि॒व॒इ॒त्य॒ष्टा॒द॒श॒च॑र्य॒सू॒क्त॒स्या॒स्य॒खि॒त॒आ॒दि॒त्या॒अ॒त्य॒प॒चा॒ना॒मा॒दि॒त्यो॒प॒सो॒म॒हा॒प॒ंक्तिः । (अ॒त्याः॒प॒ंच॒दुः॒स्व॒प्र॒ण्यः) ।

नोमत्तासनेऽनो ॥ ७ ॥ परिश्रुतेदुता नोनुमा दत्तयासावति । देसाऽपि नमागयेयमोभित्वाऽभनेनानो
 नो ॥ नतंतिमंनुनला नोनत्रमिनेगुरु । यन्माऽनुनमेसुयऽ ॥ दिव्यालोऽपगोपमनेसो ॥ यन्नेदेसाऽग
 पिममियुयनऽउरुमीगु । यन्मोलेनुऽननेनोयममो । रुगपासनेऽनो ॥ अदिनिऽउरुननुनादिनि नमोयच्यनु ।
 मनामिनशोऽतोयेगुगो । केणव्यचानेऽनो ॥ यदेताऽमोऽनगंयऽउरुयनानु । विपानुयऽउरुयोनदुम्मानुवि
 तनानेऽनो ॥ ८ ॥ आदिन्याऽममिदत्ताविहृत्त्रादितुमग्रः । नतोममोनुयानुनोत्तयानुगमनेऽनो ॥
 नेहभ्रद्रेऽभिविनेनारथनोपयाऽनुन । गोचभ्रद्रेऽनोत्तयानुनोत्तयानुगमनेऽनो ॥ यदुपियेऽपिच्यदेनोचोऽअभि
 दुपकृतं । त्रितेतद्विऽमाह्यऽअरेऽअस्मदपानानेऽनो ॥ यन्मोपुऽपानुयानुनोत्तयानुगमनेऽनो ॥ विनायनोऽ
 भानयोऽष्टायपरांयानेऽनो ॥ निरुंतांयानुणोत्तयानुगमनेऽनो ॥ त्रिंनुऽपानुनोत्तयानुगमनेऽनो ॥ यन्मोपुऽपानुयानु
 ॥ ९ ॥ तदन्तायुनदनेतंभापमुपमुदे । विनाचन्निनायुचोऽपुऽपानुनोत्तयानुगमनेऽनो ॥ यन्मोपुऽपानुयानु
 नुगमनेऽनो ॥ पुमादुऽव्ययंममाह्यननेयामह्यनेऽनो ॥ अऽन्तायानेनायुचोऽपानुनोत्तयानुगमनेऽनो ॥ उपोयमो
 दुःस्वम्यादभैममापुनदुऽरानेऽनो ॥ १० ॥ (८।६।६) म्यादोऽभपियनमुपुऽपानुयानुगमनेऽनो ॥

(८।६।६) म्यादोरिति पचऽनन्मः पूरुस्रस्रपऽऽताप मोनरिच्युपानी तापी ।

विश्वेयं देवाऽऽवृतमर्त्यासोमधुब्रुवंतोऽभिसंचरंति ॥ अंतश्च प्रागाऽअर्दिर्तिर्वास्यवयाताहरसोदैव्यस्य । इदुर्विद्रं
 स्यसख्यं जुषाणः श्रौष्टीवधुरमनुरायऽऋध्याः ॥ अपांसोमममृताऽअभमार्गन्मज्ज्योतिरविं दामदेवाच्च । किं न नम
 स्मान्कृणवदरातिः किमुधुतिरमृतमर्त्यस्य ॥ शनोभवहृदऽआपीतऽइदोपितेव सोमसुनवैसुशेवः । सखेवसख्यऽउरुशं
 सधीरः प्रणऽआयुर्जीवसे सोमतारीः ॥ इमे मापीतायशऽउरुष्यवोरथं न गावः समना हूपवसु । ते मारक्षंतु विस्रसंश्चरि
 त्रादुतमास्त्रामाद्यवद्यं त्विदं वः ॥ ११ ॥ अग्निं न मा मधितं संदिदीपः प्रचक्षय कृणु हिवस्य सोनः । अथाहिते मदऽआसो
 ममन्यैरेवोऽईव प्रचरापुष्टिमच्छ ॥ इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येवरायः । सोमराजन्प्रणऽआयूषितारीर
 हानीवसूयो वासराणि ॥ सोमराजन्मळ्यानः स्वस्ति तव स्मसि ब्रत्या इ स्तस्य विद्धि । अलतिदक्षऽउतमन्युरिदोमानोऽ
 अर्योऽअनुकामं परादाः ॥ त्वं हि नस्तुन्वः सोमगोपागात्रे गाने निपसत्थानचक्षाः । यत्तैव यंप्रमिनामव्रतानि स नोमृळसु
 ष्खादैववस्यः ॥ ऋदुदरेण सख्यासचे योमानरिष्यैर्द्धयैश्चपीतः । अयं यः सोमोन्यर्थाय्यस्मे तस्माऽइदं प्रतिरमेभ्यायुः
 ॥ १२ ॥ अपत्याऽअस्थुरनिराऽअर्मीवानिरत्रसन्तमिषीचीरभैषुः । आसोमोऽअस्मोऽअरुहृद्दिहायाऽअगन्मयत्रप्र
 तिरंतऽआयुः ॥ योनऽइदुः पितरो ह्यसुपीतोर्मर्त्योर्मर्त्योऽआविवेश । तस्मै सोमाय ह्यविषा विधेम मृळीकेऽअस्य सुमतौ
 स्वामि ॥ त्वंसोमपितृभिः संविद्रानो नुद्यावापृथिवीऽआतंतथ । तस्मै तऽइदं ह्यविषा विधेम वयं स्यामपतयोरयीणां ॥

त्रातारोदेवाऽअर्धोचतानोमानोनिद्राऽदंशतमोतर्जान्यः । नृगंनोर्म्यपित्र्यर्धप्रियाणःनृगीगनोत्रिद्वयमारदेम ॥
 त्वनःसोमविश्वतोऽयोथास्वस्वर्वादिभाननथाः । ननंउदंउक्रतिभिःनृनोपाःपाक्षिथातादुतापूरमात् ॥ १२ ॥
 (अथवालरित्यानि ॥ (१) अभिप्रमःमृगप्रमभिद्वर्गन्यथादिदे । योनस्मिन्मयोमपापुन्यार्गुःमृक्रेणोमृशिनः
 ति ॥ शतानीकिमुप्रदिगातिभृण्णयानंतेनृणाणिद्राशुपे । गिरेर्मृप्रमनाऽअम्यमिनिरेन्दोणिपुरुभोजनः ॥ आत्वा
 मुताम्उदंभवोमद्याऽदंशगिणः । आपोनर्वाक्षितन्तोस्यश्वरःपुण्यंतिश्रुगर्भमे ॥ अनेकमैतृगंमृप्राणमभ्यः
 स्वादिष्ठमपिच । आयथाभंदमानःकिराभिनःप्रश्वदेऽमनभृपत् ॥ आनःनोममुपद्रवाऽन्यनोऽअन्योनोवृभिः ।
 यंतैस्वधाचन्स्वद्वयतिधेनमुऽदंशकृण्येगुतर्थाः ॥ १४ ॥ इयंनृरीरंनमनोपेर्मास्मभिर्भूतिमदितायगुं । इद्रीममजि

[illegible]

(१) अभिप्रेतियद्यत्स्वमृक्तस्य कृष्णः प्ररुक्मभूदः अयुजो गृह्णोयु । मनो गुह्यः ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ २६ ॥

नवतोनासि चतेश्वरतीन्द्रीतर्यः ॥ यद्धननयद्वायज्ञेयद्वापृथिव्यामधि । अतो नो यज्ञमाशुभिर्महेमतः उग्रः उग्रो भिराग
हि ॥ अजिरासो हरयो येतः आशवो वातोऽइव प्रसक्षिर्णः । चेभिरपत्यं मनुषः परीयसे येभिर्विध्वंस्वहृशे ॥ एतावतस्तः
इमहः इन्द्रसुन्नस्यगोमतः । यथा प्रावोमघवन्मेध्यातिथियथानीपातिथिधने ॥ यथा कण्वेमघवन्नुसदस्यवियथापक्वथे
दशव्रजे । यथा गोशर्णेऽअसन्नोऽक्रिजिन्वनीद्रुगोमद्विरण्यवत् ॥ १५ ॥ (२) प्रसुश्रुतं सुरार्धसमर्चाशुक्रमभिष्टये ।
यः सुन्वतेऽपुवते काम्यं वसुहस्रेणेवमंहते ॥ शतानीकाहेतयोऽअस्य दुष्टराऽइन्द्रस्य समिषो महीः । गिरिर्न भुज्जमामघव
त्सुपिन्वते यदसुताऽअमंदिषुः ॥ यदसुतासऽइन्द्रो बोभिप्रियममंदिषुः । आयोनर्धायि सवनंमऽआवसो दुग्धाऽइवोपद्वा
शुषे ॥ अनेह संवोहवमानमतये मध्वः क्षरति धीतर्यः । आत्वावसोहवमानासऽइन्द्रवऽउपस्तोत्रेषुदधिरे ॥ आनः सोमै
स्वध्वरऽइयानोऽअत्योनतो शते । यं ते स्वदावन्त्स्वदतिगर्तयः पौरैरुदयसेहव ॥ १६ ॥ प्रवीरमुग्रं विविचिधनस्युतं वि
भूतिरार्धसोमहः । उद्रीववज्रिन्नवतो वसुत्वनासदापीपेथद्वाशुषे ॥ यद्धननं परावतियद्वापृथिव्यादिवि । युजानऽइ
न्द्रहरिर्भिर्महेमतः कृण्वऽकृण्वेभिरागहि ॥ रथिरासो हरयो येतैऽअस्त्रिधऽओजो वातस्यपिप्रति । येभिर्निदस्यं मनुषो
निघोपयो येभिः स्वः परीयसे ॥ एतावतस्तेवसो विद्यामशूरनव्यसः । यथा प्रावऽएतं शकृत्येधने यथा वशं दशव्रजे ॥
(२) प्रसुश्रुतमिति दशर्चस्य सूक्तस्य पुष्टिगुः । अयुजो बृहलो युजः सतो बृहत्सः ।

मंडलं ८

अनु- ६

॥ २६ ॥

कक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ २७ ॥

पस्यायौमादयसेसर्चा ॥ पृथग्मेध्यमातरिभ्वनीद्रसुवानेऽअमं दथाः । यथासोमं दशशिमेदशोण्येस्यूमरमावृज्जनसि ॥
यऽउक्त्वाकेवलादुधेयः सोमं धृषितापिवत् । यस्मै विष्णस्त्रीणिपदावैचक्रमऽउपमित्रस्य धर्मभिः ॥ यस्य त्वमिन्द्रस्तोमे
बुचाकनोवाजेवाजिच्छतक्रतो । तत्त्वावयं सुदुर्घामिव गोदुहो जुहूमासि श्रवस्यर्वः ॥ योनो दाता सनः पितामहोऽउग्रऽई
शानुकृत् । अर्यामश्नुमोमघवापुरुवसगोरभ्वस्य प्रदत्तुनः ॥ २० ॥ यस्मै त्वं सोदानायमहं सेसरायस्पोर्वमिन्वति ।
वसुयवोवसुपतिं शतक्रतुस्तोमैरेदं हवामहे ॥ कदाचन प्रयुच्छस्य भेनिपासि जन्मनी । तुरीयादित्यहवन्तऽइन्द्रियमात
स्यावमृतं दिवि ॥ यस्मै त्वं मघवन्निद्रगिर्वणः शिक्षो शिक्षसि द्राशुषे । अस्माकं गिरऽउत्सुष्टुतिवसोकण्ववच्छृणुधीहवँ ॥
अस्ताविमन्मपर्थ्य ब्रह्मो द्रायवो चत । पूर्वाकृतस्य बृहतीरनूपतस्तोतुर्मेधाऽअसृक्षत ॥ समिद्धो रायो बृहतीरंधूनुतसंक्षो
णीसमसूयै । संशुक्रासः शुचयः संगवा शिरः सोमाऽइन्द्रममं दिदुः ॥ २१ ॥ (५) उपमं त्वां मघो नोज्येष्ठं च वृषभाणां ।
पुमिं तं मघवन्निद्रगोविदमीशानं रायऽईमहे ॥ यऽआयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वा वृधानो द्विवो देवे । तं त्वावयं हर्थं
शतक्रतुं वाजयंतो हवामहे ॥ आनो विभे पांसं मध्वः सिचं त्वद्रयः । येष रावति सुन्विरे जनेष्वायऽअर्वावतीर्दवः ॥ वि
भ्वा द्वे पांसि जहि चावुचाक्कं धि विभे सन्वत्वावसु । शीष्टेषु चित्तेमादिरासोऽअंशवो यत्रा सोमस्य तं पसि ॥ २२ ॥ इन्द्रने
(५) उपमत्वेत्यष्टस्य सूक्तस्य मेध्यहं द्रः अयुजो बृहत्यो युजः सतो बृहत्यः ।

मंडलं ८

अनु. ६

॥ २७ ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ २८ ॥

(७) शूरीदिन्द्रस्यवीर्यं व्यख्यमभ्यायति । राधस्तेदस्यवेवृक ॥ शतं श्वेतासंऽउक्ष्णोद्वितारो नरोचते । मूलादि
वृन्तस्तमुः ॥ शतं वेणुं नृच्छतं शुनः शतं चर्मणि म्लानि । शतं मेव त्वजस्तुकाऽअरुषीणां चतुःशतं ॥ सुदेवाः स्थका
ण्वायनावयोवयोविचरंतः । अर्धासोनचक्रमत ॥ आदित्सासस्यचकिरशार्दूनस्यमहिश्रवः । श्यावीरतिध्वसन्पथ
स्त्रादस्यवेवृकः । नित्याद्वायोऽअमंहत ॥ शतं मेगर्द्भानां शतमूर्णावतीनां । शतं द्वासांऽअतिस्रजः ॥ दशमह्यपौतक्रतः सह
त्सुरोऽअरोचतद्विद्विस्वयोऽअरोचत ॥ २९ ॥ (९) युवं देवाः कर्तुनापव्योण्युकारथेनतविपंयजत्रा । अगच्छतं
नासत्याशर्चाभिरिदंतुतीयं सर्वनपिवाथः ॥ युवां देवास्त्रयंऽएकादशसः सत्याः सत्यस्य ददशेपुरस्तात् । अस्माकं युजंस
वर्नं जुपाणापातंसोममभ्विनादीदमी ॥ पुनाय्यतर्दभ्विनाकृतं वावृपभोदिवोरजसः प्रथिव्याः । सहस्रं शंसोऽउतयेगवि
ष्ट्रासर्वाऽइत्तोऽउपयातापिवध्यै ॥ अयं वाभागो निहितो यजत्रे मागिरोनासत्योपयातं । पिवंतु सोमं मधुमंतमस्मेप्रदा

(७) शूरीदिति पंचरचस्य सूक्तस्य ऋग्वेदादंगायत्री लृतीया पंचम्या वनुभौ । (८) प्रतित इति पंचरचस्य सूक्तस्य प्रथमोऽद्रोत्याया अग्नि
सूक्तो गायत्र्यंत्यापंक्तिः । (९) युवं देवेति चतुर्कचस्य सूक्तस्य मध्योऽध्विनौ त्रिष्टुप् ।

मंडलं ८

अनु. ६

॥ २८ ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ २९ ॥

नेषुधत्तं । प्रजापुष्टिर्भूतिमस्मासुधत्तं दीर्घायुत्वायप्रतिरतं नऽआयुः ॥ ३१ ॥ इतिवालखिल्यानि ॥ (८७११)
अमऽआयाह्यभिर्हितारं त्वावृणीमहे । आत्वामनक्तुप्रयताहविष्मतीयजिष्ठवहिरासदे ॥ अच्छाहित्वासहसःसूनो
ऽअंगिरःसुचश्चरं त्यध्वरे । ऊर्जोनपतंघृतकैशमीमहेम्रियज्ञेषुपुर्व्य- ॥ अग्रेकविर्वेधाऽअसिहोतापावकयक्ष्यः । मं
धितारवसोगहिमदस्वधीतिभिर्हितः ॥ त्वमित्सप्रथाऽअस्यमेत्रातर्कतस्कविः । त्वांविप्रासःसमिधानदीदिवऽआवि
वासंतिवेधसः ॥ ३२ ॥ शोचाशोचिष्ठदीदिहिविशेमयोरास्वस्तोत्रेमहोऽअसि । देवानांशर्मन्ममंसतुसुरयःशत्रुषाहः
स्वग्रयः ॥ यथाचिद्धर्मतुसमग्रेसंजूर्वसिद्धिम् । एवादहमित्रमहोयोऽअस्मद्गुदुर्मन्माकश्चवेनति ॥ मानोमतोचरि
पवेरक्षस्विनेमाधशसायरीरधः । अस्त्रेधमिस्तरणिभिर्यविष्ठयशिवेभिःपाहिपायुभिः ॥ पाहिर्नोऽअशुऽएकयापाह्यु
तद्वितीयया । पाहिगीर्भिस्तिशुर्भिरूजपतेपाहिचतसुर्भिवसो ॥ पाहिविष्वस्माद्रक्षसोऽअरंष्णःप्रसवाजेषुनोव ।
तेपुरुष्यहंसुर्नीतीस्वयंशस्तरं ॥ येनवंसामपुतनासुशर्धेतुस्तरंतोऽअर्यऽआदिशः । सत्वंनोवर्धप्रयसाशचीवसोजिन्वा
सप्तमेनुवाकेदशसूक्तानि (८७११) अमआयाहीतिविशत्यसूक्तस्यप्रागाथोभर्गोमिःअयुजोबृहलयुजःसतोबृहत्याः ।

॥ २९ ॥

मंडलं ८

अनु. ७

[illegible]

(21512)

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ ३० ॥

अश्वस्यपुरुकृद्गवामस्युत्सोदेवाहिरण्यथः । नकिर्हिदानपरिमधिपत्वेयद्यद्यामितदाभर ॥ त्वंहोहिचरेवेविदिदाभगंवसु
त्तये । उद्धावृषस्वमघवन्गर्विष्टयऽउट्टिद्राश्वमिष्टये ॥ त्वंपुरुसहस्राणिशतानिचयथादुनार्यमहसे । आपुरंदुरंचक्र
मुविप्रवचसऽइंद्रं गायंतोवसे ॥ अविप्रोवायदर्विधद्विप्रोर्विद्रतेवचः । सप्रममंदत्वायाशतक्रतोप्राचामन्योऽअहसन ॥
उग्रबाहुस्वकृत्वापुरंदुरोयदिमेशृणवृद्धवै । यद्विष्ट्विंद्रं पूर्णं सचासुतेसखायंकृणवामहै ॥ उग्रयुयुज्मपुतनासुसासहिमणकातिमदाभ्यं ।
नारायासोनजल्हवः । यद्विष्ट्विंद्रं पूर्णं सचासुतेसखायंकृणवामहै ॥ यतऽइंद्रभयामहेततोऽअभयंकृधि । मर्धवन्छगिधतवत्तन्नऽ
वेदाभमंचित्सनितारथीतमोवाजिनंयमिदुनशत ॥ त्वंहिराधस्पतेराधसोमहःक्षयस्यासि विधतः । तंत्वावयमधवन्निद्रगिर्वणःसुतावतोह
ऊतिभिर्विद्विपोविमृधोजहि ॥ इंद्रःस्पृष्टतवृत्रहापरस्पानोवरेण्यः । सनोरक्षिपच्चरमंसमध्यमंसपश्चात्पातुनःपूरः ॥ ३८ ॥ त्वनःपश्चा
वामहे ॥ इंद्रःस्पृष्टतवृत्रहापरस्पानोवरेण्यः । सनोरक्षिपच्चरमंसमध्यमंसपश्चात्पातुनःपूरः ॥ ३८ ॥ त्वनःपश्चा
वाह्वर्षणाशतक्रतो नियावज्रमिमिक्षतुः ॥ ३९ ॥ (८।७।३) प्रभंगीशरोमघवातुवीमघःसंभिश्चोवीर्यायिकं । उभाते
(८।७।३) प्रोअस्माइतिद्वादशर्चसत्सूक्तस्यकाण्वःप्रागाथइंद्रःपक्तिःसप्तम्याद्यास्तिस्त्रोद्वह्यः ।

मंडलं ८

अनु- ७

॥ ३० ॥

स्यामाहि नवयौवर्धतिसोमिनौ भद्राऽइंद्रस्यरातयः ॥ अयजोऽअसंमो नृभिरैकः कृष्टीरयास्यः । पर्वीरतिप्रवावृधेचिथ्वा
 ज्ञातान्योजसा भद्रा ॥ अहितेन चिद्वर्धताजीरदानुःसिपासति । प्रवाच्यमिंद्रतत्तत्रवीर्याणिकरिप्यतो भद्रा ॥
 आयाहि कृणवा मत्तऽइंद्रब्रह्माणि वर्धना । येभिः शविष्ठाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा ॥ धृपताश्चिद्धपन्मनः कृणोषी
 द्रयत्वं । तीव्रैः सौमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूषतो भद्रा ॥ अर्वाचष्टऽकर्षी पमो वृत्तोऽईवमानुषः । जुष्टीदक्षस्य सोमि
 नः सखायं कृणुते युजं भद्रा ॥ ४० ॥ विश्वे तऽइंद्रवीर्यं देवाऽअनुरूपं ददुः । भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुष्टुत भद्रा ॥ विदे
 गणे तदिंद्रते शर्वऽउपमं देवतातये । यद्धं सिद्धन्नमोजसा शचीपते भद्रा ॥ समनेव यपुज्यतः कृणवन्मानुषायुगा । विदे
 तदिंद्रश्चेतनमर्थश्रुतो भद्रा ॥ उज्जातामिंद्रते गवऽउत्वा सुत्तवक्रतु । भूर्गोभूरिवावृधुर्मधवन्तवशर्मणि भद्रा ॥
 अहं च त्वंच वृत्रहन्त्संयुज्यावसनिभ्यऽआ । अरातीवाचिदद्विबो नौ शर्मसते भद्रा ॥ सत्यमिद्धाऽउतं वयमिंद्रस्तवा
 मनावृतं । महोऽअसुन्वतो वधोभूरिज्योतीपिसुन्वतो भद्रा ॥ ४१ ॥ (८।७।४) सपव्यो महानो वेनः कनुभिरान
 जे । यस्य ह्यारामनुष्पिता देवे पुधिर्यऽआनृजे ॥ द्विवोमानो त्संद्रन्त्सोमं पृष्ठासोऽअद्रयः । उक्था ब्रह्मचंशं स्या
 सविद्धोऽअर्गिरोभ्यऽइंद्रो गाऽअवृणोदप । सुपेतदस्य पांसं ॥ सम्रलथा कविबृधऽइंद्रो वाकस्य वक्षणिः । शिवोऽअर्क
 (८।७।४) सपव्य इति द्वादशर्वस्य सूक्तस्य काण्वः प्रगाथा इंद्रो लाया देवा गायत्री आद्या चतुर्धा पंचमी सप्तम्योऽष्टमः अंत्या त्रिष्टुप ।

कृक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ ३१ ॥

स्यहोमन्यसन्नागंत्ववसे ॥ आहुतेऽनुक्तुंस्वाहावरस्यज्यवः । श्वात्रमर्काऽअनृतेऽगोत्रस्यदुवने ॥ इद्रेवि
श्वानिवीर्याकृतानि कर्त्वा निच । यमर्काऽअध्वरं विदुः+ ॥ ४२ ॥ यत्पांचजन्ययाविशेद्रेघोपाऽअसृक्षत । अस्तृणाहु
हर्णाविपोऽु र्योमानस्यसक्षयः ॥ इयमुतेऽअनुष्टुतिश्चकृषेतानिपौ स्या । प्रार्वश्चकस्यवर्तनि+ ॥ अस्तृवृष्णोव्योदंनऽनु
रुक्रमिष्टजीवसे । यवंनपश्वऽआददे ॥ तदधानाऽअवस्यवोयुष्माभिर्दक्षपितरः । स्याममरुत्वतोवृधे+ ॥ अस्तृवृष्णोव्योदंनऽनु
युधासुऽकृकभिःशूरनोनुमः । जेषामेद्वत्यययुजा+ ॥ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहलेभरद्भृतौसजोषाः । यःशंसते
स्त्वतेधार्यपञ्चऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्मोऽअवंतुदेवाः+ ॥ ४३ ॥ (८।७।५) उत्वामंदंतुस्तोमाःकृण्वराधोऽअद्रिवः ।
अवब्रह्माद्विपोजहि ॥ पदापूर्णोऽरराधसोनिवाधस्वमहोऽअसि । न हित्वाकश्चनप्राति ॥ त्वमीशिपेसतानामिद्वत्वमसु
तानां । त्वंराजाजनानां ॥ एहिमेहिक्षयौदिव्याऽुघोपन्चर्पणीनां । ओभेषृणासिरोदसी ॥ त्वंचित्पर्वतं गिरिशतवंतस
हृक्षिणं । विस्तोतृभ्योरुरोजिथ ॥ वयमुत्वादिवासुतेवयंनकंहवामहे । अस्माकंममापृण ॥ ४४ ॥ कं१स्यवृषभो
नुवातुविगीवोऽअनानतः । ब्रह्माकस्तंसपर्यति ॥ कस्यस्वित्सर्वनृषांजुज्वाऽअवगच्छति । इंद्रकऽअस्विदाचके ॥
कंतेद्वानाऽअसक्षतुवृत्रहृन्कंसवीर्या । उक्थेकऽअस्विदंतमः ॥ अयंतेमानुषेजनेसोमःपुरुषस्यते । तस्येहिप्रद्रवापि
(८।७।५) उत्वामंदंत्वितिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यऋणवःप्रगाथइद्रोगायत्री ।

मंडलं ८

अनु. ७

॥ ३१ ॥

च ॥ अयं तैश्वर्यणावतेशुभो माया माधप्रियः । आजीकीयेमदिन्तमः ॥ तमुद्यराधेसमेहेचारुमदगुघृज्ये । एहीमिद्र
द्रवापिच ॥ ४५ ॥ (८१७६) यद्विद्रागपागुद्रुन्यगवाह्यसेनृभिः । आयाहिचूयमाथुभिः ॥ यद्वाप्रसवणेद्रि
वोमादयासेस्वर्णरे । यद्वासमेद्रुअंधसः ॥ आत्वागीभिर्महामरुहेगामिवभोजसे । इन्द्रसोमस्यपीतये ॥ आतंड
द्रमहिमानंहरयोदेवतेमहः । रथेवहतुविभ्रतः ॥ इन्द्रणीपडउस्तुपेमहोडउग्रइशानुकृत् । एहिनःसुतपित्र ॥
सुतावैतस्त्वावयंप्रयंस्वंतोहवामहे । इदंनोवहिरासदे ॥ ४६ ॥ यच्चिच्छिश्र्यतामसीद्रसाधारणस्त्वम् । तंत्वात्रयंह
वामहे ॥ इदंतैसोम्यमध्वधुक्षत्राद्रिभिर्नरः । जुषाणडइद्रतल्पिच ॥ विश्वाऽअयंविपश्चितोतित्व्यस्तूयमागहि । अ
स्मेधेहिश्रवोवृहत् ॥ द्रुतामेष्टृपतीनाराजाहिरण्यवीना । मादेवामघवारिपत् ॥ सहस्रेष्टृपतीनामधिंश्रं वृहत्पथु ।
शक्रं हिरण्यमादे ॥ नपातोदुर्गहस्यमेसहस्रेणसुराधसः । श्रवोदेवेवकृत ॥ ४७ ॥ (८१७७) तरोभिवांविदद्व
सुमिद्रसुवाधडुक्तये । वृहद्वायतःसुतसोमेऽअध्वरेहुवेभरुनकारिणं ॥ नयंदुध्रावरतेनस्थिरामुरोमेदसुशिप्रमंधसः । सडुर्वस्यरेज
गडआहत्याशशमानार्यसुन्वतेदाताजिन्नडुक्त्वर्थः ॥ यःशुक्रोमक्षोऽअश्वयोयोवाकीजोहिरण्ययः । सडुर्वस्यरेज
कलिद्रिः

(८।७।६) यदिद्वेतिद्वादशचर्चसूक्तस्यकाण्वःप्रगीथइन्द्राणांभक्तः
प्रथमावित्रयोदशयताभयुजोबृहत्तःद्वितीयादियुजःसतोबृहत्सोल्यानुष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ४

॥ ३२ ॥

मंडलं ८

अनु- ७

॥ ३२ ॥

यत्यपावृत्तिमिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा⁺ ॥ निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं वसूदिद्वपति दाशुपे । वज्रीसुशिप्रो हयैश्वर्यं श्वऽइत्करदिन्द्रः क्र
त्वायथावशत् ॥ यद्वावंथं पुरुष्टुतपूराचिच्छरनृणां । वयंतत्तं ऽइन्द्रसंभरामसियश्चमुक्थं तुरं वचः ॥ ४८ ॥ सचासो मे
षु पुरुहूतवज्रिवोमदायद्युक्षसोमपाः । त्वमिद्विब्रह्मकृते काम्यं वसुदेष्टुः सुन्वते भुवः ॥ वयमैनमिदाहोपीपे मे हवज्जिणं ।
तस्मां ऽउऽअद्य संमना सुतं भराननं भूयत श्रुते⁺ ॥ कद्रुन्व^१ स्याद्वत्तमिन्द्रं स्यास्ति पौत्स्यं । केनो नु कं श्रोमते न ननु श्रुवेजनुपः परि वृत्रहा⁺ ॥
आगर्हीन्द्रप्रचित्रयाधिया⁺ ॥ कद्रुन्व^१ स्याद्वत्तमिन्द्रं स्यास्ति पौत्स्यं । केनो नु कं श्रोमते न ननु श्रुवेजनुपः परि वृत्रहा⁺ ॥
कद्रुमहीरधृष्टा ऽअस्य तविषीः कद्रुवृत्रघ्नो ऽअस्तुतं । इन्द्रो विश्वान्वेकनादां ऽअहर्हं ऽउत कत्वा पूर्णां ऽरुभि⁺ ॥
वयं घते ऽअपव्यं द्रुब्रह्माणिवृत्रहन् । तिरश्चिद्वर्यः सवनावसोगहिशविष्ठश्रुधिमेहव^१ ॥ वयं घते त्वे ऽइद्विन्द्रविप्रा ऽअपिष्मसि । न हित्व द्रु
वैत ऽइन्द्रो तयः । पुरुहूतकश्चनमघवन्नस्ति मर्दिता⁺ ॥ त्वनो ऽअस्या ऽअमते रुतक्षुधोऽइ भिशस्तेरवस्पृधि । त्वनं ऽउतीतवचित्रयाधि
॥ ५० ॥ (८।७।८) त्यान्नक्षत्रियो ऽअर्वऽआदित्यान्याचिपामहे । अपेदे पध्वस्मार्यति स्वयधैषो ऽअपायति
(८।७।८) त्यान्निलेकविशत्यु. सू. सांमदोमत्स आदित्यादशम्यादिति सृणामदितिर्गायत्री (मैत्रावरुणिर्मान्यो बहवो वामत्स्याजालनद्धाक्रप.)

णःपर्वदर्यमा । आदित्यामोयश्राविदुः ॥ तेषां हि निमग्नमर्थं नृन्मृत्तिद्विश्रुते । आदित्यानामङ्कृतं ॥ मर्दितो
 महुतामोयैरुणमित्रायैमन् । अवांस्यावृणीमहे ॥ जीनान्नोऽभिधेतनादित्यायः पुरात् योत् । रुद्रस्य लव्यनश्रुतः ।
 ॥ ५१ ॥ यद्धः श्रातार्यसुन्येवैरुमस्ति यच्छदिः । तेनानोऽभिधोचन ॥ नृत्तिदेमाऽङ्गो नृन्नेस्तिरलमनोगमः ।
 आदित्याऽअञ्जितनसः ॥ मानुःमेतुः सिग्दुयं महर्गुणकुनसारि । रंष्टुऽअनिश्रुनोययी ॥ मानोमनारिपणानृजिना
 नमविष्यवः । देवाऽअभिप्रमृक्षत ॥ इतत्यामदितेमागृहेव्युपवने । समङ्कीकृतमभिष्टये ॥ ५२ ॥ पापैर्दुर्निगभीर
 ॥ ५३ ॥ अनेनेनऽउरुनऽउरैर्विप्रसर्तये । नृधितो नार्यजीवने ॥ स्तेनवृ
 ऽऑऽउग्रपुत्रे जिघांसतः । माकिलो कस्यनोरिपत् ॥ अनेनेनऽउरुनऽउरैर्विप्रसर्तये । स्तेनवृ
 येमर्धार्नः क्षितीनामद्व्यासः स्वयंशसः । नृनारश्नतेऽअद्रुतः ॥ तेनऽआक्रोरुत्तणामादित्यामोमोचन । स्तेनवृ
 मिवादिते ॥ अपोषुर्णऽइयंशरुरादित्याऽअपदुर्मतिः । अस्मदेलवर्जश्री ॥ ५३ ॥ द्राश्रुत्रिवः मुदानवऽआदित्याऽ
 कृतिभिर्वयं । पुराननं वृभुज्महे ॥ अथतं हिमं चेतसः प्रतियतं चिदेनसः । देवाः कृण्वन्जीवसे ॥ तत्सुनो नव्यंसन्यमऽ
 आदित्याय नमुमौ चति । वंवाद्धृद्धमिवादिते ॥ नास्माकमनितत्तरऽआदित्यामोऽअतिरुद्रे । ययमस्माभ्यंमृळत ॥
 मानोऽहितिविंस्वतऽआदित्याऽकृत्रिमाशरुः । पुरानुजुरमोवधीत् ॥ त्रिपुद्धेऽनेच्छलतिमादित्यामोविमर्दित । विष्णु
 गिववृहतापः ॥ ५४ ॥ ॥ इति पष्ठाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ५

॥ ३३ ॥

चतुश्चत्वारिंशद्वायेवर्गाः ५४ सूक्तानि ११ ऋचः १८८ ॥ त्यागः ॥ इंद्राये. २० पृथुश्रवसे. ४ वायव. ४ पृथुश्रवसे. ३ वायव. पृथुश्रवसे. आदित्येभ्य. १३ आदित्योबोभ्य. ५ सोमाये. १५ अग्नये. २० इंद्राये. ४१ देवेभ्य. इंद्राये. ३९ आदित्येभ्य. ९ अदित्या. ३ आदित्येभ्य. ९ ॥ इति पष्ठे चतुर्थः ॥

आत्वैकोनाप्रियमेधआदावनुष्टुम्मुखास्तु चाश्चत्वारोत्याः षष्ठ्याश्चमेधयोदानस्तुतिः प्रमद्व्यूनानुष्टुभं द्विबृहत्यं द्वितीयोष्णिक् चतुर्थ्याद्यास्तिस्रो गायत्र्यः षोडशेयेकादशयौ पंक्ती अपाद्वैश्वदेवोर्ध्वचस्त्रयोवारुणयोराजापंचोना पुरुहन्मावाहं तं त्रिप्रगाथाद्युष्णिगनुष्टुप् पुरउष्णिगंतं त्वनः सुदीति पुरुमीह्वीतयोर्वन्यतराग्नेयं तु त्रिप्रगाथांतं ह विद्व्यूनाहयतः प्रागाथौ हविषांस्तुतिर्वोदीराथांगोपवनआत्रेयः सप्तवध्रिर्वाश्विनं विशोविशोवः पंचोनाग्नेयं तु त्वनुष्टुम्मुखास्तु चाश्चत्वारोत्यास्तिस्रोनुष्टुभं आक्षस्यश्चुतर्वणोदानस्तुतिर्युक्ष्वाहिपोळशविरूपइमंनुद्रादशकुरुसुतिः का ण्वौजज्ञानएकादशप्रगाथांतं पुरोळाशंदशबृहत्यंतमयंकुलुनवकुलुभर्गवः सौम्यमंत्यानुष्टुभं ह्यन्यंदशैकघ्नौध सोगार्यत्रेत्यादैवी त्रिष्टुवातूनवनकुसीदीकाण्वः ॥ ५ ॥

॥ हरिः ओम् ॥ (८।७।९) आत्वारंधं यथोतये सुन्नायवतयामसि ॥ तु विकुर्मिं मृतीं पृहुमिं द्रुशविष्टसत्पते ॥ तु (८।७।९) आत्वेत्येकोनविंशत्यृचस्य सूक्तसांगिरसः प्रियमेधइंद्रश्चतुर्दश्यादिपण्णासृक्षायमेधौ गायत्री आद्याचतुर्थी सप्तमी दशम्योनुष्टुभः । ॥ ३३ ॥

मंडलं ८

अनु. ७

विंशुष्ममुर्विकृतोऽशीरोविश्वं गमते । आप्राथम्यमिति नृणां ॥ यस्मिन्महिनामृतः परिम्रागंतीयनुः । स्नातञ्जहि
 रण्ययै ॥ विश्वानरस्यनुसन्निमनो न तस्य ग्रहनः । पर्वथापणानामनीः सुग्यानाम् ॥ अभिष्टमसुदायं ध्वंसीधिपुंयं न
 रः । नानाहवैतऽकुतये ॥ १ ॥ परोमानुमूर्णीपममिन्द्रं मधुमगर्भम् । अर्जानं चिद्रथेनां ॥ तं नुमिद्रापनेमः ॥ २ ॥ इन्द्रो
 दामिपीतये । य. पुव्यामनुष्टुतिमीशं रुष्टीनानुष्टुः ॥ नयस्यनेशमानमग्यमानं गुमत्यैः । नहिः शवास्मिन्नशत्रु ॥
 त्वोतासुस्वायुजाप्सुसुधैर्महजने । जयमपत्सुनेत्रियः ॥ तं न्योगुञ्जोभिर्गमो नं गीर्गमिगेवणन्तम् । उंष्ट्रययानिदाविधु
 वाजेषु रुमाख्यै ॥ २ ॥ यस्य ते स्वादुमरुत्यं व्याह्वीप्रणीतिगद्विः । युजोतिं नृनाग्यैः ॥ युग्ममनुष्टुतनेऽनुक्षययान
 स्क्रुधि । उरुगोयं धिजीनमे ॥ उरुनृभ्यऽउरुगवऽउरुशाययं । युववीनिमनामो ॥ उपमापद्रुद्रानागः नोमम्य
 व्यी । तिष्ठेति स्वादुरातयः ॥ सुञ्जानिद्रोतऽआदं दुरीऽह्मन्यसमनीधे । आशुमेषसुरगोतिना ॥ ३ ॥ सुरयोऽआ
 तिथिग्वेस्वमीशं राक्षं । आशुमेधे सुपशमः ॥ पल्लयोऽआतिथिगऽउंष्ट्रोत्वेव भूमेतः । मनापतत्तमनं ॥ गुरुचेतुः
 पण्वत्यंतं कुञ्जेल्लरुपी । सुभीशुः कजावती ॥ नयमेवानं धो निनित्युक्षनमत्यैः । जुषुप्रमर्दिनीभयत् ॥ ४ ॥
 (८१७१२०) प्रप्रवत्तिपुभमियं मेन्द्रां रायंदं च । धियावां मेधमतिचुं पुरुंध्राधिनामति ॥ नुदं वऽओदतीनां नंदयो

(८१७१२०) प्रप्रवत्तिपुभमियं मेन्द्रां रायंदं च । धियावां मेधमतिचुं पुरुंध्राधिनामति ॥ नुदं वऽओदतीनां नंदयो

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ५

॥ ३४ ॥

युवतीनां । पतिवोऽअङ्गानां धेनुनामिषुभ्यसि ॥ ताऽअस्यसुददोहसः सोमं श्रीणांति पृथग्यः । जन्मन्देवानां विशस्त्रि
ष्वारोचनेदिवः ॥ अभिप्रगोपतिगिरैर्द्रमर्चयथाविदे । सुनुंसत्यस्यसर्पतिं ॥ आहरयः ससृज्जिरेरुषीरधिवाहिषे । य
त्राभिसंनर्वामेहे ॥ ५ ॥ इंद्राय गावऽआशिरेदुदुहेवज्जिणेमधु । यत्सीमुपहरेविदत् ॥ उद्यद्भ्रमस्यविष्टपंगूहमिद्रं
अगन्वहि । मध्वः पीत्वासचेवहि विः सससख्युः पदे ॥ अर्चतुग्राचतुप्रियमेधासोऽअर्चत । अर्चतुपुत्रकाऽउतपुरं
धृष्णवर्चत ॥ अर्वस्वरातिगर्गेरोगोधापरिसनिष्वणत् । पिंगापरिचनिष्कदुदिन्द्राय ब्रह्मोद्यतं ॥ आयत्पतत्येन्यः सुदु
घाऽअनपस्फुरः । अपस्फुरंगृभायतसोममिन्द्राय पातवे ॥ ६ ॥ अपादिन्द्रोऽअपादमिर्विभ्वेदेवाऽअमत्सत । वरुणऽ
इदिहक्षयत्तमापोऽअभ्यनूतवत्संसंशिश्वरीरिव ॥ सुदेवोऽअसिचरणयस्यते सससिंधवः । अनुक्षरं तिकाकुदंसम्यसु
पिरामिव ॥ गोव्यतोऽरफाणयत्सुयुक्तोऽउपदाशुषे । तक्रोनेतातदिन्द्रपुरुषमायोऽअमुच्यत ॥ अतीदुशक्रऽओहत
ऽइन्द्रोविश्वाऽअतिद्विपः । भिनत्कनीनऽओदुनंपच्यमानं पुरोगिरा ॥ अर्भकोनकुमारकोधि तिष्ठन्नवरथं । सपक्षन्म
हिंपमंगं पित्रेमात्रेविभुक्तुं ॥ आतूमुशिप्रदंपतेरथं तिष्ठाहिरण्यं । अर्धद्युक्षंसचेवहिसहस्रपादमरुपं स्वस्तिगामनेह
सं ॥ तर्धेमिथानमस्विनऽउपस्वराजमासते । अर्धचिदस्यसुर्धितयदेतवऽआवर्तयति दाने ॥ अनुप्रलस्यौकसः प्रि
णिक्चतुर्थ्याद्यास्तिस्रो गायत्र्यः एकादशी पौकत्र्यौ पक्ती अत्येद्वेबृहस्यौ ।

मंडलं ८

अनु- ७

॥ ३४ ॥

अमं धामऽप्या । पूर्यमस्रयनिपुक्तं विविधोन्नियममऽभाजन ॥ ७ ॥ (८१८११) योगज्ञानेनोन्नायान्नायंभिर
 धिगुः । विधेयमानन्तापुनर्नानां यद्योयोर्नृपगुणे ॥ उदंनं दुर्भेदपुनरुन्नन निशयद्विनामि । तस्यै । उचोयुः प्रमोद
 धायिदशुतोमलोद्विनयुते ॥ नहिदृष्टमोणान्नायुः प्रतस्वराभिः । उदंनयुः प्रपुं रमंमुन्नंनुगर्भः रूपावोजसं ॥
 अपादिमुद्रं प्रतनामुनामिदियमिन्नग्रीकृत्रयः । मयुनयेनमामेदः नोत्तयार्गमोऽनोनः ॥ यथा । उदंनवे
 शतं गतश्रुमं कृतस्युः । नत्तवित्रिस्तुनं नुयोऽनन तानमष्टमोऽनी ॥ ८ ॥ । पप्रानमहिनापुण्यां पुनित्योऽ
 निष्ठशयमा । अस्माऽगं मपमृगोमविप्रोपात्रिन्विनाभिः ॥ नृपीमदेवऽभापुदिदोमोमोमलैः । पमंमा
 चिद्यऽपनंथायुयोऽनिरुगीऽउद्रोद्वयोते ॥ नयोमोमलाय्यमिष्टं शुतापं नमिणं । योपा । पयऽभरिणं पयऽभरिणं
 स्तिह्यः ॥ उदुपुणो नमोमोमं मृगम्यं अग्रा । म । उदुपुमं । मं । पान्माचयऽउद्रोद्वयमिमे ॥ मं । उदंनऽउद्रोद्वयुः
 निद्रोनिवृत्ति । मधेवमिच्युपि नृम्योपे निद्रोमोमं मृगम्यं अग्रा । म । उदुपुमं । मं । पान्माचयऽउद्रोद्वयमिमे ॥ मं । उदंनऽउद्रोद्वयुः
 स्वः सरादुधुवीतिपवैतः । मृगामुदस्यं पवैतः ॥ त्वं । उदंनऽउद्रोद्वयमिमे ॥ मं । उदंनऽउद्रोद्वयुः
 अष्टमेनुपान्तापमृतादि (८१८११) योगोपिपयऽमं । मृगम्यं अग्रा । म । उदुपुमं । मं । पान्माचयऽउद्रोद्वयमिमे ॥ मं । उदंनऽउद्रोद्वयुः

त्रयोऽष्टुगिरहन्तुः दयलुपुनानापुऽउत्तिर ।

कवसं.

अ. ६ अ. ५

॥ ३५ ॥

स्मयुः+ ॥ सखायः क्रतुमिच्छतकथाराधामशरस्य । उपस्तुतिभोजः सुरियोऽअहयः ॥ श्रीरभिः समहऽऽरुपिभिर्वहि
र्मभिः सविष्यसे । यदित्थमेकमेकमिच्छरवत्सान्पराददः ॥ कर्णगृह्यामिघवाशौरदेव्योवत्सर्नस्त्रिभ्यऽआनयत् । अजां
सरिर्नधातवे ॥ १० ॥ (८।८।२) त्वनोऽअग्नेमहोभिः पाहिविष्वस्याऽअरतिः । उत्तद्विषोमर्त्यस्य ॥ नहिमन्युः
पारुषेयुऽईशोहिवः प्रियजात । त्वमिदं सिक्षपावान् ॥ सनोविष्वेभिर्देवेभिरुजोनपाद्भद्रशोच । रथिदेहिबिष्ववारं ॥
नतमग्नेऽअरातयोमर्तयुवन्तरायः । यन्नायसेद्वाश्वांसं ॥ यन्त्वाविप्रमेधसातावमेहिनोपिधनाय । सतवोतीगोपुगन्ता
॥ ११ ॥ त्वंरथिपुरुवीरमग्नेदाद्युपेमर्तीय । प्रणोनयवस्योऽअच्छ ॥ उरुष्याणोमापरादाऽअघायतेजातवेदः । दुरा
ध्येऽमर्तीय ॥ अग्नेमार्कितेदेवस्यरातिमदेवोयुयोत । त्वमीशिपेवसूनां ॥ सनोवस्वऽउपमास्यूजोनपान्माहिनस्य ।
सखैवसोजरितृभ्यः ॥ अच्छानः शीरशोचिपंगिरोयंतुदशतम् । अच्छायाज्ञासोनमसापुरुवसूंपुरुप्रशस्तमर्त्यै ॥ १२ ॥
अग्निंसुंसहसोजातवैदंसदानायुवार्योणां । द्वितायोभूदमृतोमर्त्येग्वाहोतामद्रतमोविशि+ ॥ अग्निवोदेवयुज्यया
मिमयत्यध्वरे । अग्निधीपुमथममग्निमर्वेत्यग्निक्षेत्रायुसाधसे ॥ अग्निरिपांसख्येददातुनऽईशेयोवार्योणां । अग्निंलोके
(८।८।२) त्वनोअग्रइतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यसुदीतिपुरुमीह्यावसिर्गायत्री दशमीद्वादशीचतुर्दश्योबृहत्याः एकादशीत्रयोदशीपंचद-
श्यः सतोबृहत्याः । (अत्रसुदीतिपुरुमीह्योरन्यतरोवाक्यः) ।

मंडलं ८

अनु. ८

॥ ३५ ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ५

॥ ३६ ॥

सोमस्यमित्रावरुणोदितासुराददे । तदातुरस्यभेषजं ॥ उतोन्वस्यत्यपदं हृत्य तस्य निधान्यं । परिधां जिह्यातन
यातमभ्विना । अंति० ॥ (८१८१४) उदीराथामृताय ते यं जायामभ्विनारथं । अतिपञ्च तुवामवः ॥ निमिपश्चिज्जवीयसारथेना
अवंतमत्रयेगंहं कृणतं युवमभ्विना । अंति० ॥ यदद्य कर्हि कर्हि चिच्छुश्रया तमिमं हवँ । अंति० ॥ कुहस्थः कुहं जमथः कुहं श्येने वेपेतथुः ।
ममेरं शायत । अंति० ॥ इहा गतं वृषण्वसूश्रुणतं मं इमं हवँ । अंति० ॥ १८ ॥ अश्विनायामहृतमाने दिष्टयाभ्याज्यं । अंति० ॥
त । अंति० ॥ समानं वासजात्यं समानो वंधुरभ्विना । अंति० ॥ १९ ॥ प्रसहवधिराशसाधारो
आनोगव्येभिरभ्यैः सहैरुपगच्छतं । अंति० ॥ यो वारजां स्य भ्विनारथो वियातिरोदसी । अंति० ॥
अभूदकुञ्चोर्तिकृतावरी । अंति० ॥ अश्विना सुविचाकं शङ्खं परशुमोऽईव । अंति० ॥ अरुणस्सुरपाऽ
धितो विशा । अंति० ॥ २० ॥ (८१८१५) विशो विशो वोऽअतिं धिवाजयंतः पुरुमित्रं । अभिबोदुर्यवचः स्तुपेशुष
(८१८१४) उदीराथामित्यष्टादशर्चस्य सूक्तस्यात्रे योगोपवनो धिनौ गायत्री । (सप्तवधिराकपिः) (८१८१५) विशो विश इति पंच
दशर्चस्य सूक्तस्यात्रे योगोपवनोभिरत्यतिस्वणाश्चतुर्वा गायत्री आद्याचतुर्थी सप्तमी दशम्यस्त्रयोदश्यादिति स्रानुष्टुभः ।

मंडलं ८

अनु. ८

॥ ३६ ।

स्युमन्मभिः ॥ यंजनांसोहविष्मैतोमित्रं नमर्पिरभ्युतिं । प्रगंसतिप्रगस्तिभिः ॥ पन्यामंजातवैदमंयोद्वयतालुयता ।
 अर्गन्मवृत्रहंतमंज्येष्ठमभिमानत्रं । यस्यश्रुतार्चिहृन्नाक्षोऽअर्नीकऽपधते ॥ अमृतजातवैदमं
 हृव्यान्यैर्यद्विचि ॥ आर्गन्मवृत्रहंतमंज्येष्ठमभिमानत्रं । सुनाधोयंजनाऽअमेदुधिलुच्यंघिरीकृते । जुगानामोयतनुचः ॥
 ॥ २१ ॥ सुनाधोयंजनाऽअमेदुधिलुच्यंघिरीकृते । मातेऽअग्नेग्रंतमारचिर्निष्ठाभवतुप्रिया ।
 तिरस्तमांसिदर्शतं । घृताहवनमीद्व्यं ॥ २१ ॥ सुनाधोयंजनाऽअमेदुधिलुच्यंघिरीकृते । मातेऽअग्नेग्रंतमारचिर्निष्ठाभवतुप्रिया ।
 इयंतेनव्यसीमतिरग्नेऽअधोय्यमदा । मंद्रमुजातमुकृतोमृदस्मातिथे ॥ अग्रमिद्वारंथुप्रांत्वेगमिंद्रंनसत्पतिं ।
 तयोवर्धस्वमुदुतः ॥ साद्युर्ध्वंनिनीवृहदुपोपश्रवमिश्रवः । दधीतवृत्रव्यं ॥ सपोवक्रशुचीकृते ॥ अग्रा
 यस्यश्रवोसितूथपन्यंनयंनयंनयं । सवोधिबृत्रव्यं ॥ अहंहुवानऽअश्वेऽश्रुतर्वणिमदुच्युतिं । अर्धासीवस्तुक्राविनाम
 जनांसिऽईकृतेसन्नाधोवाजसातये । सवोधिबृत्रव्यं ॥ अहंहुवानऽअश्वेऽश्रुतर्वणिमदुच्युतिं । अर्धासीवस्तुक्राविनाम
 क्षात्रीपचिंतुर्णा ॥ माचत्वारऽआश्रवःशर्धिष्ठादस्तिमर्त्यः ॥ २३ ॥ (८।८।६) यक्ष्वाहिदेनूहृतमोऽअर्धोऽ
 हेनद्विपुरुण्यवदेदिशं । नेमोपोऽअश्वदातरःशर्धिष्ठादस्तिमर्त्यः ॥ २३ ॥ (८।८।६) यक्ष्वाहिदेनूहृतमोऽअर्धोऽ
 अग्नेरथीरिव । निहोतोपर्व्यःसंदः ॥ उतनोदेवदेवाऽअच्छावोचोविदुष्टरः । श्रद्धिश्वाचार्यीकृधि ॥ त्वंह्यद्यविष्णु
 सहेसःसुनचाहुत । ऋतावायुनियोभुवः ॥ अयमग्निःसहस्रिणोवाजस्यशतिस्रपतिः । मर्धाऋचीरयीणां ॥ तंनेमि

(८।८।६) युक्ष्वाहीतिपोळशर्चस्वसूक्तस्यागिरसोवहपोमिर्गायत्री ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ५

॥ ३७ ॥

म॒भवो॑य॒थान॑म॒स्वस॑ह॒तिभिः॑ । ने॒दी॒यो॒यु॒ज्ञम॑गिरः ॥ २४ ॥ तस्मै॑न॒नम॑भि॒द्यवे॒वाचा॑र्वि॒रूप॑नि॒त्यया॑ । वृ॒ष्णे॒चोद॑स्व॒सु
दु॒ष्टीते॑+ ॥ क॒मु॒ष्विद॑स्य॒सेन॑या॒शेर॑पा॒कच॑क्षसः । प॒णि॒गो॒षु॒स्तरा॑महे ॥ मा॒नो॒दे॒वानां॑वि॒शःप्र॒स्त्राती॑रि॒वो॒क्षाः । कु॒शंन॑हा
सुर॒भ्याः ॥ मा॒नःस॑म॒स्यदू॒र्घ्यः॑प॒रि॒द्वेप॑सोऽअ॒हृतिः॑ । ऊ॒र्मि॒न॒ना॒वमा॑र्वधीत् ॥ न॒र्मस्ते॑ऽअ॒ग्नोऽओ॒ज॒सि॒गणा॑ति॒देव॑कृ॒ष्ट
रा॒वग्भ॑र्भार॒भृद्य॑था । सं॒वर्ग॑सं॒रयि॑र्जय ॥ अ॒न्यम॑स्मा॒द्भिया॑ऽइ॒यम॑ग्ने॒सिप॑क्तु॒दृच्छु॑र्ना । वर्ध॑नोऽअ॒मव॑च्छवः ॥ य॒स्याजु॑
ष॒न्नम॑स्वि॒नःश॑मीम॒दुर्म॑ख॒स्यवा॑ । तंघे॒दृशि॑र्धृ॒धाव॑ति ॥ प॒र॒स्याऽअ॒धि॒संव॑तो॒र्वरो॑ऽअ॒भ्या॑तर ॥ य॒त्राह॑म॒स्मि॒ताँऽअ॒व ॥
वि॒द्याहि॑ते॒पु॒रा॒वय॑म॒ग्नौपि॑तु॒र्यथा॑र्वसः । अ॒यमि॑दो॒मरु॑त्स॒खावि॑बु॒त्रस्या॑भि॒न॒च्छिरः॑ । व॒ज्रेण॑श॒तप॑र्वणा ॥ इ॒द्रेण॑सो॒र्मपी॑तये ॥ म॒रुत्व॑त॒मृजी॑पिण
सा । म॒रुत्व॑तं॒नवृ॑जसे ॥ अ॒यमि॑दो॒मरु॑त्स॒खावि॑बु॒त्रस्या॑भि॒न॒च्छिरः॑ । व॒ज्रेण॑श॒तप॑र्वणा ॥ इ॒द्रेण॑सो॒र्मपी॑तये ॥ म॒रुत्व॑त॒मृजी॑पिण
त्र॒मैर॑यत् । स॒जन्त॑स॒मदि॒र्याऽअ॒पः+ ॥ अ॒यं ह॒येन॑वाऽइ॒दंस्व॑र्म॒रुत्व॑ताजितं । इ॒द्रेण॑सो॒र्मपी॑तये ॥ म॒रुत्व॑त॒मृजी॑पिण
मो॒र्ज॒स्वतं॑वि॒रग्नि॑नं । इ॒दं गी॑भि॒र्हवाम॑हे ॥ इ॒दं प्र॒त्नेन॑म॒न्मना॑म॒रुत्व॑तं॒हवाम॑हे । अ॒स्य सो॑र्म॒स्यपी॑तये ॥ २७ ॥ म॒रुत्वो॑
ऽइ॒दमि॑दुः॒पि॒वासो॑मं॒शत॑क्रतो । अ॒स्मि॒न्य॒ज्ञेपु॑रु॒द्रुत॑ ॥ तु॒भ्येदि॑द॒मरु॑त्व॒ते सु॒ताः सो॑मा॒सोऽअ॒द्रि॒वः । ह॒दा ह॑यं॒तऽज॒क्वि
(८।८।७) इ॒मं न्वि॑ति॒द्वा द॑श॒र्चस्य॑सू॒क्तस्य॑का॒ण्वः कुरु॑सु॒तिरि॑द्रो॒गाय॑त्री ।

मंडलं ८

अनु. ८

॥ ३७ ॥

नः ॥ विवोद्वैद्रमरुत्सखासुतंसोमं दिविष्टिगु । वज्रं शिगानुऽओजसा ॥ उच्चिष्ठो जंसासमहृषीत्वीशित्रीऽअवेपथः ।
 सोममिन्द्रमसुतं ॥ अनुत्वारोदसीऽउभेक्षमाणमकृपेतां । इन्द्रयदस्युहाभवनः ॥ वाचमुष्टापर्पद्नीमहं नवम्रक्तिमृत
 स्पृश । इन्द्रात्परितन्वमे ॥ २२ ॥ (८।८।८) जज्ञानोनुशतकृतुर्विष्टुच्छदितमातरं । कऽउग्राः केहं शृण्वरे ॥ प्रवृद्धोदस्यु
 आदीशवस्यववीदौर्णवाभर्महीशुवम् । तेपुत्रसंतुनिष्टुरः ॥ ममित्तान्वृत्रहाखिदत्सेऽअरोऽइवसेदया । प्रवृद्धोदस्यु
 हाभवत् ॥ एकयाप्रतिधापिवत्साकंसरासिचिंशतं । इन्द्रः सोमस्यकाणका ॥ अभिगैर्धुवर्मतृणदवुधेपूरजः स्या ।
 इन्द्रोव्रक्षाभ्यऽइद्धु । यमिन्द्रचक्रुपेयुजं ॥ तेनस्तोतृभ्यऽआभरुभ्यो नारिभ्योऽअर्त्तव । सद्योजातऽकमुष्टिर ॥ एता
 हस्रपर्णऽएकुऽइत् । यमिन्द्रचक्रुपेयुजं ॥ निराविधद्विरिभ्यऽआधारयत्पकमोदुनं । इन्द्रोव्रं दस्वातं ॥ शतव्रं दऽपुस्तवस
 च्योलानितेकृतावर्षिष्ठा निपरीणसा । हृदात्रीडुधारयः ॥ विभ्वेत्ताविणरारभरुदुरुमस्त्वोर्षितः । शतमं ह्रियान्धीर
 पाकमोदुनं वराहमिन्द्रंऽएमुपं ॥ तुविक्षतेसुकृतंसमयं धनुः साधुर्वदोहिर्णययः । उभातेवाहरण्यासुमंस्कृतऽकद्रूपेचि
 ददुवृधा ॥ ३० ॥ (८।८।९) पुरोळाशौनोऽअंधसुद्रं संहस्रमाभर । शताचक्षुरगोनां ॥ आनोभरुव्यं जं नंगामभ्व
 पुरोळाशमितिदगर्च

(८।८।८) जज्ञानइत्येकादशचर्चसूक्तस्य काण्वः कुरुमुतिरिद्वेगायत्रीअसेद्वेदहतीसतोदृह्यौ । (८।८।९) पुरोळाशमितिदगर्च

स्यसूक्तस्य काण्वः कुरुमुतिरिद्वेगायत्र्यं त्यावृहती ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ५

॥ ३८ ॥

मभ्यर्जनं । सचामनाहिरण्यया ॥ उत्तनः कर्णशोभनापूरुणिधृष्णवाभर । त्वंहिशृण्विवेसो ॥ नकीवृधीकऽईद्रेते
नसुषानसुदाऽउत । नान्यस्त्वच्छूरवाघतः ॥ नकीमिन्द्रो निकर्तवेनशक्रः परिशक्वे । विश्वशृणोतिपश्यति ॥ नकीवृधीकऽईद्रेते
समन्युं मर्त्यानामदब्धो निचिकीपते । पुरानिदंश्चिकीपते ॥ ऋत्वेऽइत्पणमदरतुरस्यास्तिविधुतः । बुत्रघ्नः सोमपात्रः ॥
त्वेषु निरसंगता विश्वाचसोमसौभगा । सुदात्वपरिहृता ॥ त्वामिद्यवयुर्ममकामो गव्युर्हिरण्ययुः । त्वामभ्युरेपते ॥
तवेदिद्राहमाशस्तेदात्रचनाददे । दिनस्यवामघवन्त्संभृतस्यवापुर्धियवस्यकाशिना ॥ ३२ ॥ (८१८।१०)
अयंकुलुरगृभीतो विश्वजिदुङ्घिदित्सोमः । ऋषिर्विप्रः काव्येन ॥ अभ्यूर्णोति यन्नमंभियक्तिविश्वं यत्तुरं । प्रमंघः ख्य
न्निःश्रोणोभूत ॥ त्वंसोमतनूकृद्भ्योद्वेपोभ्योन्यकृतेभ्यः । उरुयंतासिर्वरुधं ॥ त्वंचितीतवदक्षैर्दिवऽआपृथिव्याऽ
ऋजीषिन् । यावीरघस्यचिद्वेपः ॥ अर्थिनोयंति चेदर्थगच्छानि ह्रुदपोरातिं । ववृज्युस्तृप्यतुः कामं ॥ ३३ ॥ विदद्य
त्पुर्व्यं नष्टमुदीमृतायुमीरयत् । प्रमायुस्तारीदतीर्णं ॥ सुशेवो नोमृक्याकुरदसक्तपुरवातः । भवानः सोमशं हृदे ॥
मानः सोमसर्वाविजोमाविधीमिपथराजन् । मानो हार्त्तद्विपावधीः ॥ अवयत्स्वेसधस्येदेवानां दुर्मतीरीक्षे । राजन्न
(८१८।१०) अयंकुलुरिति नवर्चस्यसूक्तस्य कुलुर्भगवः सोमो गायत्र्यत्वात्पुष्ट ॥

मंडलं ८

अनु. ८

॥ ३८ ॥

पद्धिः मेघमीढोऽपुसिधः मेघ ॥ ३४ ॥ (८१८१११) नृगोऽन्याज्जहंरंमिनांरंनरुनो । रंनंऽदंनृज्य ॥
 योतुः शब्दत्पुराविद्यामृधोवाजमातये । मत्तनंऽदंनृज्य ॥ किंगंरुधुनोदंनः मुन्नानस्योऽनंरुमि । रुधिमिधुज्यः
 शकः ॥ दंनृप्रणोरथमवपुथाजित्तनंमद्विनः । पुरलादंनंमेरुगि ॥ हंतोनुकिमंमेप्रयुभंनोरथ ॥ रुधि । उगमंतांनु
 श्रवः ॥ ३५ ॥ अवांनोनापुंरुथंमुरुत्तेकिमितरि । असांनुसुनिगुपररुगि ॥ दंनृज्यम्यपूरुगिगुद्रातंऽगुनिमि
 पृक्तं । रुयधीर्मित्वियानती ॥ मामीमापुगऽआभगुर्वाताष्टोदिनंभन । अपांत्ताऽअरुगयः ॥ तुरीयंनमंयुजियय
 दांरुस्तदुससि । आदिरपतिनंऽओत्तं ॥ जनीगुद्धोऽअमृताऽअभेदीरेरुगुंताऽइतयाऽअंवीः । तसांऽउरा
 धः कृणुतप्रशस्तंमर्धधियावसुर्गम्यात् ॥ ३६ ॥ (८१९११) आतुनंऽदंनृमंत्तिनंमंभंमंभाय । मुल्ल
 स्तीदक्षिणेन ॥ विम्राहित्वोनुविहूमितुनिदेणंतवीमंघं । तमिमापमंरुभिः ॥ नुक्तिवागुग्दुगानगतोमोदित्तं ।
 भीमंनगंवारयते ॥ एतोनिंयद्वंस्तवामंनानंरुस्वराज । नरापंमामधिगतः ॥ प्रलोपुर्गुगतिपुऽउत्तनामगीयमा
 नं । अभिराधंसाजुगुरत् ॥ ३७ ॥ आनोभरुदक्षिणंनभिमुच्येनप्रमृश । उंद्रमानोपगोनिंभीरु ॥ उगंरुम्यभाभ
 (८१८१११) नान्यगितिदृगचंन्यसुसुनोऽमपुऽपृदंलायांरेगगागंलापुर् ॥ नमनेनुतांरुंयोऽनमृमंभि (८१९१११)

आतुनंस्तिनवचंसासुसुकाण्य. रुसीभीद्रोगायनी ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ६

॥ ३९ ॥

धृषताधृष्णोजनानाम् । अदाशूरस्यवेदः ॥ इद्रयऽउनुतेऽअस्तिवाजोविप्रेभिः सनिन्वः । अस्माभिः सुतंसनुहि ॥
सद्योजुर्वस्तेवाजाऽअस्मभ्यै विश्वश्चैद्राः । वयैश्चमध्वर्जरंते ॥ ३८ ॥ इतिषष्टाष्टकेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

पंचचत्वारिंशाध्यायेवर्गाः ३८ सूक्तानि १४ ऋचः १९५ ॥ त्यागः ॥ इद्राये. १३ ऋक्षाश्चमेधाम्या. ६ इद्राये. १० विश्वदेववरुणेभ्य.
वरुणायै. इंद्राये. २१ अग्नय. ३३ अश्विभ्या. १८ अग्नय १२ श्रुतर्वणाये. ३ अग्नय. १६ इंद्राये. ३३ सोमाये. ९ इंद्राये. ९ देवेभ्य. इंद्राये. ९
॥ इतिषष्टेपंचमः ॥

आप्रदेवानां वैश्वदेवप्रेष्ठमुशनाकाव्यआग्नेयमामेकृष्णआश्विनं ह्युभाहिपंचविश्वकोवाकार्ष्णिजर्गितं द्युम्नीपद्मा
सिधोवाद्युम्नीकः प्रियमेधोवाप्रागाथंहंतवोदस्संनोधावृहदिंद्रायसप्तनुमेधपुरुमेधौ द्व्यनुष्टुब्धहृतं तमानो विश्वा
सुषद्रकन्यार्वाः ससात्रेय्यपालेतिहासर्देद्रानुष्टुभं द्विपंकत्यादिपातंत्रयस्त्रिंशच्छ्रुतकक्षः सुकक्षोवाद्यानुष्टुबुद्धच
तुस्त्रिंशत्सुकक्षोत्थैद्रार्भवीगौर्धयतिद्वादशविंदुः पूतदक्षोवामारुतमात्वानवतिरश्वीरांगिरसानुष्टुभं मसैसैका
द्युतानोर्वामारुतस्त्रैष्टुभंचतुर्थीविराळिज्यामितिमारुतः पादः परैर्द्रावार्हसत्याया इद्रपंचोनरेभः काश्यपोवार्ह
तमतजगत्पुं परिष्टाद्बृहत्यावतिजगतीं त्रिष्टुवज्जगतीत्यंततः ॥ ६ ॥

मंडलं ८

अनु. ९

॥ ३९ ॥

॥ हरिःओम् ॥ (८।९।२) आपदंनगरात्तोपिपनश्चापहन् । मरुःप्रतिप्रभंलि ॥ नीषा·गोमांसऽआत्महि
सुतामौमादयिष्णवः । पिपादुधुगयोचिरे⁺ ॥ उपार्थदुग्धावतैरगधमन्यै । भुजिंउंउंउं⁺ ॥ ज्ञानंअपरागं
हिन्नु⁺स्थानिचह्वये । उपमेनेनेद्विपः⁺ ॥ नुन्यायमद्विभि नृपोमोभिःशूनोनाःपृक् ॥ मनोमंउंउंउंउं
॥ १ ॥ ईदंश्रुभिमुमेह्वमसुनतन्युगोर्गतः । निपूनिंतृसिमंभ्रुहि ॥ नऽउंउंउंउंउंउंउंउंउंउंउंउं ॥ निरेन्म
त्वमीडिगे ॥ योऽअप्सुचंद्रमाऽउंउंउंउंउंउंउंउंउंउंउंउं ॥ गये० ॥ गयेनेन पुढार्थगतिरोगंरग्नंन । गिये० ॥ २ ॥
(८।९।३) देवानासिदवोमहचदाणीमोऽयं । दृणासुस्रभ्यमन्ये ॥ तेनःमंनृपुचदार्थगोहिरोऽर्गमा ।
बुधासंश्चप्रचेतसः ॥ अतिनोरिपिनापकृनुभिरुपोनार्गथ । ययमंन्यंरचः ॥ तामनोऽपन्यंमन्यामंरग्नउंउं ॥
वामंन्यायिणीमेहे ॥ नामस्यहिप्रंचंतमुऽउंउंउंउंउंउंउंउंउंउंउंउं ॥ नमोऽन्याऽपुगव्यवत् ॥ २ ॥ न्यभिःसुमाना
क्षियंतोयांतोऽअधुना । देवाधुयंक्रमे ॥ अर्धनऽद्वैयारिणोमिगाना । उनामनोऽत्रिंता ॥ प्रत्रेत्
हंसंदानुवोधंद्धितार्ममान्या । मातुर्गभिरामहे ॥ न्यंनिराग्येदानुऽउंउंउंउंउंउंउं ॥ अथानिहऽउंउंउं

(८।९।२) आपदंनगरात्तोपिपनश्चापहन् । (८।९।३) न्यानिनिचंरग्नमह्वमंन्यामंरग्नः । गीर्गोर्गोर्गो
गायत्री । (भेदपदे-नियोगेता ३ अंगमपकृनु १ विभेदेता ५ ८।९)

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ६

॥ ४० ॥

॥ ४ ॥ (८१९१४) प्रेष्ठवोऽअतिथिस्तुषेभिन्नामिवप्रियं । अग्निरथंनवेद्यं ॥ कविर्मिवप्रचेतसंयदेवासोऽअर्धद्विता ।
निमत्येव्वादधुः+ ॥ त्वयविष्टदाशुषोऽनूःपाहिशृणुधीगिरः । रक्षतोऽकमुतमना ॥ कयतेऽअग्नेऽअंगिरऽऊर्जोनपा
दुपस्तुतिं । वरायदेवमन्यवे ॥ दाशेमकस्यमनसायज्ञस्यसहसोयहो । कर्दुवोचऽइदंनमः ॥ ५ ॥ अधात्वंहिनस्करो
विश्वाऽअस्मभ्यसुक्षितीः । वार्जद्रविणसोगिरः ॥ कस्यननपरीणसोधियोजिन्यसिदंपते । गोषात्तायस्यतेगिरः ॥ तं
मर्जयंतसूक्तुंपुरोयावानमाजिषु । स्वेषुक्षयेषुवाजिनं ॥ क्षेतिक्षेमैभिःसाधुभिर्निक्रियंक्षेतिहंतियः । अग्नेसुवीरऽएध
ते ॥ ६ ॥ (८१९१५) अमेह्वनासत्याभ्विनागच्छंतयुवं । मध्वःसोमस्यपीतये ॥ इमंमेस्तोममभ्विनेममेशृणुतंह
वं । मध्वःसो ॥ अयंवांकृष्णोऽअभ्विनाहवतेवाजिनीवसू । मध्वःसो ॥ शृणुतंजरीतुहंवंकृष्णस्यस्तुवतोर्नरा । म
ध्वःसो ॥ छदिथुतमदाम्यंविप्रायस्तुवतेर्नरा । मध्वःसो ॥ ७ ॥ गच्छतंदाशुषोगहमित्थास्तुवतोऽअभ्विना । म
मध्वःसो ॥ युंजाथारासभंरथेवीडुंगेवृषण्वसू । मध्वःसो ॥ ८ ॥ त्रिवंधुरेणत्रिवृत्तारथेनार्यातमभ्विना । मध्वःसो ॥ नूमे
गिरोनासत्याभ्विनाप्रावंतयुवं । मध्वःसो ॥ ९ ॥ (८१९१६) उभाहिदुसाभिषजामयोभुवोभादक्षस्यवचसोवभूव
(८१९१४) प्रेष्ठवइतिनवर्चस्यसूक्तस्यकव्यउज्ञनाअग्निर्गायत्री । (८१९१५) अमेहवमितिनवर्चस्यसूक्तस्यांगिरसःकृष्णोभ्विनौ-
गायत्री । (८१९१६) उभाहीतिपंचवर्चस्यसूक्तस्यांगिरसःकृष्णोभ्विनौजगती । (अत्रकार्ष्णिर्विश्वकऋषिःपाक्षिकः) ।

मंडलं ८ .

अनु. ९

॥ ४० ॥

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ३

॥ ४१ ॥

मंडलं ८

अनु- ९

॥ ४१ ॥

भीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसं । क्षुमंतुवाजं शतिनं सहस्रिणमक्षूगोमंतमीमहे ॥ नत्वावृंहंतोऽअद्र्योवरतऽइंद्रवीळ्वः ।
यदित्ससिस्तुवतेमावतेवसुनकिष्टदामिनातिते ॥ योद्धासिक्त्वाश्वसोतदंसनाविश्वजाताभिमज्मना । आत्वाय
मर्कऽऊतयेववर्तति यगोतमाऽअजीजनन् ॥ ग्रहिरिक्षोऽओजसादिवोऽअंतेभ्यस्परि । नत्वाविव्याचरजंऽइंद्रपाथि
तये ॥ ११ ॥ (८।९।९) बृहदिंद्राय गायतमरुतो वृत्रहंतं । येन ज्योतिरजनयद्यतावृधो देवदेवाय जागृवि ॥ अ
पाधमदुभिः शस्तीरशस्तिहाथैः पूहदिंद्राय गायतमरुतो वृत्रहंतं । अस्माकं वोध्य चथस्य चोदितामं हि होवाजसा
तो ब्रह्मार्चत । वृत्रहं नतिवृत्रहाशतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥ अभिप्रभरधृषताधृषन्मनःश्रवश्चित्तेऽअसद्वृहत् ॥ अ
त्वापोजर्वसाविमातरोहनो वृत्रं जयास्वः ॥ यज्जार्यथाऽअपूर्व्यमर्धवन्वृत्रहत्याय । तत्पृथिवीमप्रथयुस्तदस्तभाऽउत
द्यां ॥ तत्तैयज्ञोऽअजायततदुर्कऽउतहस्कृतिः । तद्विश्वमभिभूरसियज्जातं यच्च जंतवं ॥ आमासुपक्रमैरयऽआसूयै
रोहयोद्वि । धूर्मनसामन्तपतासुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्विणसेवृहत् ॥ १२ ॥ (८।९।१०) आनो विश्वाऽसहव्यऽइंद्रः स
(८।९।९) बृहदिंद्रायेतिसमर्चस्य सूक्त्यांगिरसौ नृमेधपुरुमेधाविद्रोबृहती द्वितीया चतुर्थ्यासतो बृहत्या पंचमी षष्ठ्या वनुष्टौ ।
(८।९।१०) आनो विश्वाऽस्विति पटुचस्य सूक्त्यांगिरसौ नृमेधपुरुमेधाविद्रोबृहत्या युजः सतो बृहत्याः ।

मस्तुभृगु । उपद्राग्निना नानि नृत्ता गमुन्याऽऽजीगमः ॥ मंदाताप्रयोगेनामव्यभिक्त्यऽऽगानुहत् ।
 तत्रिधमस्तुभृगुणादीमतेपुनस्तुभृगुमोमः ॥ मलातऽऽप्रगिणः कृतेनेऽनेनितुता । इमांशुयव्यत्यर्थश्रयोने
 द्रयातेऽमन्महि ॥ त्वंलिमलो गेगवृगानननोऽनाश्रुंन्त्यंमे । मरंशुपिपुत्ररत्नमुश्रुपांशुगिमाहृति ॥ त
 मिद्वयुगाऽअस्तुजीपीअगसपते । तंनुनागिहंन्यमृनीन्यहुऽऽनुनानागेणीपुना ॥ तमुन्यानमेमुप्रनेतंनंगभोभा
 गभिमेमहे । महीनृकृतिःअगगातेऽऽग्रतेमन्नानोऽअश्रान् ॥ १३ ॥ (८१९११) हन्याऽऽरेतायतीमोममिच्छता
 विदत् । अन्नेभरंलवव्रीदिंद्रययुनंलवागुहाययुनंरता ॥ अनेयऽपरिगीगोमंनुंनिनाहृत् । उमंशंमुने
 पित्रधानावतंकंभिणमपुनंनमश्चनं ॥ आनुननोचिल्लिनामोनेनतव्यानेमपि । अनेमिगानुं हनिंश्चिद्विष्टपातनी
 स्रव ॥ क्विच्छकृत्कुविररुदकुविद्वोऽसामरुत् । कुरित्तिद्विगोयतीगृणसंगमांमेदं ॥ उमानिचीणविष्टपातनी
 द्वविरोह्य । शिरस्तस्योर्वामादिदंमुऽउपोद्रे ॥ अमानयानंऽऽगदिमांतनीमम । अयोतनस्ययन्त्रिःमर्गता
 रोमृगाकृधि ॥ सेरथस्यगेनेमःसेयगस्यगत हतो । अपुल्लाभेद्विष्टपातव्यहृणोःसूयैरन्व ॥ १४ ॥ (८१९१२) पात

(८१९११) हन्यात्रागितिमतर्नैमातृत्वागेगपांशुदुद्रागेप्रकी । (८१९१२) पतमिपिपविजन्मसमृन्मागिरसः

श्रुतकथंश्रेगायध्यानागुहृत् (मुक्तोमान्मपि) ।

मावोऽअंधसऽइंद्रमभिप्रगायत । विश्वासाहंशतक्रतुमंहं चर्षणीनां+ ॥ पुरुहंतं पुरुहंतं गथान्यैः सनं श्रुतं । इंद्रऽइ
ति बवीतन ॥ इंद्रऽइन्द्रो महानां दाता वाजानां ननुः । महोऽअभिभृज्वायमत ॥ अपां दुशिष्यं धंसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः ।
श्वाभिभुवनं भुवत् ॥ तस्य भिप्रार्चते इन्द्रो मस्य पीतये । तदिच्छस्य वर्धनं ॥ १५ ॥ अस्वपीत्वामर्दानां देवो देवस्यौजसा । वि
नरं मवार्यं क्रतुं ॥ शिक्षाणऽइंद्रायऽआपुरुविहोऽक्रचीपम । अवा नः पार्ये धने ॥ अतश्चिदिन्द्रणऽउपायहि शतवाजया ।
इषासुहस्रवाजया ॥ १६ ॥ अयामधीवतो धियोर्विद्भिः शक्रगोदरे । जयमपत्सुर्वज्रिवः ॥ वयमुत्वाशतक्रतो गावोनय
वसेष्वा । उक्थेधुरणया मसि ॥ विश्वाहिर्मत्यत्वनानुकांशतक्रतो । अगन्मवज्रिन्नाशसः ॥ त्वेसु पुत्रशवसो वृत्र
न्कार्मका तयः । नत्वामिन्द्रातिरिच्यते ॥ सनो वृपुन्त्सनिष्ठया संघोरया द्रविह्वा । धिया विह्विपुरंध्या ॥ १७ ॥ यस्ते
ननु शतक्रतुविंश्रुतिं तमो मदः । तेन ननु मदमदेः ॥ यस्ते चित्रश्रवस्तमो यऽइंद्रवृत्रहन्तमः । यऽओजो दातमो मदः ॥
विज्वाहियस्तेऽअद्रिवस्त्वादत्तः सत्यसोमयाः । विश्वासुदसः कृष्टिषु ॥ इन्द्राय मदं ने सुतं परिशोभं नुनो गिरः । अर्कम
चतुकारवः ॥ यस्मिन् विश्वाऽअधिभ्रियोरणं तिस्रसं सदेः । इंद्रसुते हवामहे ॥ १८ ॥ त्रिकडुकेषु चेतनं देवा सोयुजं
बत । तमिदं धनुनो गिरः ॥ आत्वा विशं त्विदं वः समद्रमिव सं धवः । नत्वामिन्द्रातिरिच्यते ॥ विव्यक्थमहिनावृष

स्मृदंमोमसजागृते । यददंद्रजंरुते ॥ अनेदंद्रहृदयेगोमोमगुपुतम् । नृत्तामोम्युदंमः ॥ अरुमन्त्रेण
 गायतिश्रुतंरुतेऽअंरुते । अरुमिदंरुत्यान्त्रे ॥ अरुमिदंरुत्यान्त्रेण गोमोमिदंरुत्यान्त्रे । अरुमिदंरुत्यान्त्रे ॥ २० ॥
 पराकात्ताच्चिद्विद्विस्वावदंतनुगिरः । अरुममामनेनृत् ॥ पुतागामिगोम्युगामेऽउत्तिम् । पुतामेगामनेः ॥
 पुतारातिस्तुवीमघविश्वेभिधायिधानृमः । अर्थाचिद्विद्वेनचा ॥ मोपुतामेतंद्रमुपेयानापने । मत्त्योन्त
 स्युगोभतः ॥ मानदंद्राभ्याद्विद्वःमूरोऽअकृपायमन् । नायुतामेनृत् ॥ नृयोऽप्युतायंमन्त्रिगामि
 सृथः । लमस्माकृतवैस्ससि ॥ त्वामिदंन्यायोनोनोनुतुगमेन । नगोयदंद्रहृदयेः ॥ २० ॥ (८११२३)
 उद्वेदुभिश्चुतामघमुपभंनयोपमं । जन्मामेगित्थे ॥ नृयोर्नृमिपुरोभिधेयामेनृत् । नृयोऽप्युतायंमन्त्रिगामि
 मन्दंद्रःशिवःसगाथ्यावद्वेमघवमत् । इन्धारेदोहने ॥ यदुयकृतामन्त्रुगामेऽअभिन्ने । नृयोऽप्युतायंमन्त्रिगामि
 यद्वाप्रचुदसत्पतेनमराऽरुतिमन्यसे । उतेतत्सत्यमिदं ॥ २१ ॥ येनोममिःपुतापतिथेऽप्युतायंमन्त्रिगामि
 स्तोऽद्वैगच्छसि ॥ तमिदंवाजयामसिमंनुतायंनृत् । यदुयकृतामन्त्रुगामेऽअभिन्ने । नृयोऽप्युतायंमन्त्रिगामि
 तः । युन्नीश्वेकीममोम्य. + ॥ गिरावज्जोनमंश्रुतःनवेलोऽअनेपन्युत. । नृयोऽप्युतायंमन्त्रिगामि

(८११२३) उद्वेदुभिश्चुतामघमुपभंनयोपमं । जन्मामेगित्थे ॥ नृयोर्नृमिपुरोभिधेयामेनृत् । नृयोऽप्युतायंमन्त्रिगामि

कृधिगुणानऽइन्द्रगिर्वणः । त्वंचमघवन्वशः ॥ २२ ॥ यत्सेतूचैद्वदिशंमिनंतिस्वरान्यं । नदेवोनाधिगूर्जनः ॥
 अधातेऽअप्रतिष्कृतं देवीशुभ्रमसपर्यतः । उभेऽशिप्ररोदसी ॥ त्वमेतदधारयः कृष्णासुरोहिणीषुच । परुष्णीषुरुशत्य
 यः ॥ विषदहेरधत्विषोविश्वेदेवासोऽअक्रमुः । विदन्मगस्यतोऽअमः ॥ आदुमेनिवरोभुवद्वत्रहादिष्टुपौस्थं । अजा
 तशत्रुरस्त्वतः ॥ २३ ॥ श्रुतं वोवृत्रहन्तं प्रशर्धचर्षणीना । आशुपेराधसेमहे ॥ अयाधियाचगव्ययापुरुणामन्पुरु
 हृत । यत्सोमेसोमऽआभवः ॥ वोधिन्मनाऽइदंस्तुनोवृत्रहाभूयांसुतिः । शृणोतुशक्रऽआशिषं ॥ कयात्वंनऽअत्या
 भिप्रमदसेवृषन् । कयास्तोतृभ्यऽआभर ॥ कस्यवृषासुतेसर्चानियुत्वान्वृषभोरणत् । वृत्रहासोमपीतये ॥ २४ ॥
 अभीषुणस्त्वरयिर्मदसानः सहसिर्ण । प्रयंतावोधिदाशुषे ॥ पत्नीवितः सुताऽइमऽउशंतोयंतिवीतये । अपांजग्मिनि
 जुंपुणः ॥ इष्टाहोत्राऽअसृक्षतेद्रवृधासोऽअध्वरे । अच्छावभथमोजसा ॥ इहत्यासंधमाद्याहरीहिरण्यकेद्या । वो
 ब्वासुभिप्रयोहितं ॥ तुभ्यंसोमाः सुताऽइमेस्तीर्णवर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्यऽइन्द्रमावह ॥ २५ ॥ आतेदक्षविरोच
 नादधद्रुद्राविदाशुषे । स्तोतृभ्यऽइन्द्रमर्चत ॥ आतेदधामीन्द्रियमुक्थाविश्वाशतक्रतो । स्तोतृभ्यऽइन्द्रमृळय ॥
 भद्रंभद्रंनऽआभरेपमूर्जशतक्रतो । यद्विद्रमृळयांसिनः ॥ सनोविश्वान्याभरसुवितानिशतक्रतो । यद्विद्र०
 ॥ त्वामिद्वृत्रहन्तमसुतावतोहवामहे । यद्विद्रमृळयांसिनः ॥ २६ ॥ उपनोहरिभिः सुतं याहिमदानापते । उप

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ६

॥ ४४ ॥

ते । त्वंहिशश्वतीनांपतीराजाविशामसि ॥ श्रुधीहवतिरश्व्याऽइंद्रयस्त्वासपर्याति । सुवीर्यस्यगोमतोरायस्पृधिंमहा
ऽअसि ॥ इंद्रयस्तेनवीचसीगिरिमुद्रामजीजनत् । चिकित्विन्मनसंधियंप्रलामृतस्यपितृषीं ॥ ३० ॥ तमुष्टवामयं
वीवृध्वांसंशुद्धऽआशीर्वीन्ममत्तु ॥ इंद्रशुद्धोहिनोरयिंशुद्धोरत्नानिदाशुषे । शुद्धोवृत्राणिजिघ्रसेशुद्धोवाजसिषाससि ॥ ३१ ॥ (८।१०।३)
अस्माऽउषासऽआतिरंतयाममिंद्रायनकमूर्याःसुवाचः । अस्माऽआपोमातरःसप्ततस्यनृभ्यस्तुरायसिंधवःसुपाराः+ ॥
अतिविद्धाविथुरेणाचिदह्वात्रिःसप्तसानुसंहितागिरीणां । नतद्देवोनमत्यस्तुतुर्याद्यानिप्रवृद्धोवृषभश्चकार ॥ इंद्रस्य
वज्रंऽआशुसोनिमिश्रऽइंद्रस्यबाह्वोर्ध्वयिष्टमोजः । शीर्षंनिद्रस्यकृतवोनिरेकऽआसन्नेषुतश्रुत्याऽउपाके+ ॥ मन्थे
त्वोर्निद्रधत्सेमदृच्युतमहेहंतवाऽहं । प्रपर्वताऽअनवंतप्रगावःप्रब्रह्माणोऽअभिनक्षंतऽइंद्रं ॥ ३२ ॥ तमुष्टवामयऽ
इमाज्जानविश्वज्जातान्यवराण्यस्मात् । इंद्रेणमित्रांदिधिपेमगीर्भिरुपोनमोर्भिवृपभंविशेम ॥ आयद्धज्रंवा
(८।१०।३) अस्माइलेकविंशत्यृचसूक्त्यांगिरसस्तिरश्वीरेन्द्रश्चतुर्दश्याइंद्रामरुतःपंचदश्याइंद्रावृहस्पतीत्रिष्टुपचतुर्थीविराट्(द्युतानोवाक्.)

मंडलं ८

अनु. १०

॥ ४४ ॥

पमाणाविभेदेवाऽअजहुर्येसखायः । मरुद्भिर्दिद्रसख्यतेऽअस्त्वथेमाविश्वाःपृतनाजयासि ॥ त्रिःपष्टिस्त्वामिरुतोवा
 ॥ त्रिगममायुधंमरुताम ॥ त्रिगममायुधंमरुताम ॥ त्रिगममायुधंमरुताम ॥ त्रिगममायुधंमरुताम ॥ त्रिगममायुधंमरुताम ॥ त्रिगममायुधंमरुताम ॥
 वृधानाऽउसाऽइवराशयोयशियासः । उपत्वेमःकृधिनोभागधेयशुष्मैतऽएनाह्वविपाविधेम ॥ महऽउग्रायतवसेसुब्र
 नीकंक्तऽइद्रप्रतिवञ्चदधर्प । अनायुधासोऽअसुराऽअदेवाश्चक्रेणतोऽअर्पपऽकजीपिन ॥ ३३ ॥ उक्थवाहसेविभ्वेमनीपांङ्क
 किंप्रेयशिवतमायपुश्वः । गिर्वाहसेगिरुऽइद्रायपुर्वीर्धहितन्वेकविदुंगवेदत् ॥ ३३ ॥ उक्थवाहसेविभ्वेमनीपांङ्क
 णानपारमीरयानदीनां । निस्पृशधियातन्विश्रुतस्यजुष्टतरस्यकुवि० ॥ तद्विबिद्धियत्तऽइद्रोजुजौपस्तुहिसुष्टुतिनम
 साविवास । उपभूषजरितमरुण्यःश्रावयावाचकुवि० ॥ अर्वाद्रप्सोऽअश्रमतीमतिष्ठदियानःकृष्णोदशभिःसहस्रैः । नभोनकृ
 आवत्तभिद्रःशच्याधमैतमपुस्त्रेहितीर्नमणाऽअधत्त ॥ द्रुप्समपदयविषुणेचरैतमुपहुरेनुद्योऽअंशुमत्याः । विशोऽ
 ष्णमवतस्थिवांसमिष्योसिवोवृपणोयुध्यताजौ+ ॥ अधद्रप्सोऽअंशुमत्याऽउपस्थेधोरयत्तन्वैतत्विपाणः । विशोऽ
 अदेवीरुम्याऽचरैतीर्बृहस्पतिनायुजैःससाहे ॥ ३४ ॥ त्वंहृत्यत्सप्तभ्योजायमानोशुश्रुभ्योऽअभवःशश्रुर्दिद्र । गृह्णे
 द्यावापृथिवीऽअन्वविदोविभ्रमभ्योभुवनेभ्योरर्णधाः ॥ त्वंहृत्यदप्रतिमानमोजोवज्रेणवज्रिनृषितोजधंय । त्वंशुष्ण
 स्यावातिरोवधैस्त्वंगाऽइद्रशन्वेदविंदः ॥ त्वंहृत्यद्रुपभचर्पणीनांधनोवृत्राणांतविषोवभूथ । त्वंसिंधूऽरसृजस्त
 भानान्त्वमपोऽअजयोद्रासपत्नीः ॥ समक्रतरणितायःसुतेष्वनुत्तमन्युर्योऽअहवेवान् । यऽएकुऽइन्नयर्पांसिकर्तास

वृत्रहापतीदन्यमाहुः ॥ सर्वत्रहेदंश्चर्षणीधृतं सुष्टुत्याहव्यं हुवेम । सप्रवितामधवानो धिवृक्ता सवाजस्य श्रवस्य सदा
 ता⁺ ॥ सर्वत्रहेदं ऽक्रभुक्षाः सद्योजज्ञानो हव्यो वभूव । कृण्वन्नपां सिनर्या पुरुणि सोमो नपीतो हव्यः सखिभ्यः ॥ ३५ ॥
 (८।१०।४) याऽइंद्रमुजऽआभरः स्वर्वाऽअसुरेभ्यः । स्तोतारमिन्मधवन्नस्य वधये च त्वेष्टुक्तवर्हिषः ॥ ३५ ॥
 धिषेत्वमभ्रं गां भागमव्ययं । यजमाने सुग्वतिदक्षिणावति तस्मिन्तंधेहिमापणौ⁺ ॥ यऽइंद्रसस्य व्रतो नृष्वापमदैवयुः । यमिंद्रद
 भिः सतावोऽआर्विवासति ॥ यद्वागसिरोचने दिवः समुद्रस्याधि विष्टपि । यत्पार्थिवे सदेने वृत्रहन्तमयं दंतरीक्षऽआग
 हि ॥ ३६ ॥ सनुः सोमेषु सोमपाः सतेषु शवसस्पते । मादयस्वराधसासनुताविते दरायापरीणसा ॥ मानंऽइंद्रपरावृ
 णभवानः सधुमार्घ्यः । त्वनंऽऊतीत्वमिन्नऽआप्यमानंऽइंद्रपरावृणक् ॥ अस्मेऽइंद्रसचासुते निपदापीतये मधु । कुरु
 धीजरित्रेमधवन्नवो महदस्मेऽइंद्रसचासुते⁺ ॥ नत्वा देवासऽआशतनमर्त्यो सोऽअदिवः । विश्वजातानि शवसाभिभू
 रसिनत्वा देवासऽआशत ॥ विश्वाः पृतनाऽअभिभूतं नरं सृजुस्तक्षुरिंद्रजनुश्चराजसे । कृत्वा वारिष्ठं वरंऽआमुरिं म
 तोयमोजिष्ठं तव संतरस्विनं ॥ ३७ ॥ सर्भरेभासोऽअस्वरश्चिंद्रं सोमस्य पीतये । स्वर्पितियदीवृधे धृतव्रतो होजसासम
 (८।१०।४) याद्रेति पंचदशर्चस्य सृक्तस्य काश्यपो रेभद्रे बृहती दशम्याद्याः क्रमेणातिजगत्युपरिष्ठाद्बृहजगती त्रिष्टुपजगलः ।

तिभिः ॥ नेमिनमंति चक्षसा मेपं विप्राऽअभिस्वरा । सुदीतयोवोऽअद्बुहोपिकर्णं तरस्विनः समृक्कभिः ॥ तमिदं जोहवी
मिमधवानमग्रं सुत्रादधानमग्रं तिष्ठकुतं शवांसि । मां हि षोणीभिर्भारचयुश्चि योव तद्वायेनो विश्वासुपथा कृणोतु वज्री + ॥
त्वं पुरऽइन्द्रं चिक्किदेनाव्योर्जसा शविष्ठशक्रनाशयध्वै । त्वद्विश्वानि भुर्वनानि वज्रिन्द्यावारैर्जेते पृथिवी च भीषा + ॥
तन्मऽकृतमिन्द्रशूरचित्रपात्वपो न वज्रिन्दुरितार्तिपयिभूरि । कुदानंऽइन्द्रायऽआदं शस्ये विंश्वक्त्तये स्यसृहुयायस्यरा
जन् ॥ ३८ ॥ इति पष्ठाष्टके पद्योऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ॥

पट्चत्वारिंशाध्यायेवर्गाः ३८ सूक्तानि १६ ऋचः १९७ ॥ त्यागः ॥ इन्द्राये. ९ विधेय्यो देवेभ्यः. ९ [मे. प. विश्वेभ्यो दे. ३ अर्य-
मवरुणाभ्यामि. विश्वेभ्यो देवेभ्यः. ५] अग्नयः. ९ अश्विभ्यामि. २० इन्द्राये. १२ इन्द्रमुभ्यः. मरुद्भ्यः. १२ इन्द्राये. २२ इन्द्रामरुद्भ्यः. इन्द्राबृहस्प-
तिभ्याः. इन्द्रायेदं. २१ ॥ इति पष्ठे षष्ठः ॥

इन्द्राय द्वादश नृभेघऔष्णिहंससम्युपां त्ये च ककुभौ त्यानवम्यौ पुरउष्णिहौ त्यामिदाष्टौ प्रागाथमयं ते द्वादशनेमो
भार्गवस्त्रैष्टुभं पृथीजगतीं परास्तिष्ठो नुष्टुभेयमिति द्धुचेनं द्रआत्मानमस्तौ दुपां त्ये वाच्यावृधक्थोळशजमदग्निर्भा
र्गवो मैत्रावरुणं प्रागार्थं त्रिष्टुवंतं तृतीयादिगायत्री परासतो बृहतीं स्तोत्रं राजस्वकुसपाददित्याश्विन्यौ वायव्ये
सौर्यौ बृहत्युपस्योसूर्यप्रभास्तुतिर्वीपावमानीगव्येत्वमग्ने ब्रधिकाभार्गवः प्रयोगौ गार्हस्पत्यो वाग्निः पावर्कः सहस्र

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ७

॥ ४६ ॥

मंडलं ८

अनु. १०

॥ ४६ ॥

स्तुतयोर्वाद्योर्गृहपतिर्यविष्ठयोर्वान्यतरआग्नेयत्वदर्शिवत्तुनासोभरिर्वाहितपंचमीविराड् रूपसप्तम्याद्ययुजः
सतोबृहत्प्रादित्युजः ककुब्धसीयसी ककुबनुष्टुवंत्याग्निमारुतीनवमंडलंपावमानसौम्यं स्वादिष्ठया दशम
धुच्छंदाः पवस्त्वमेधातिथिरेषयुनः शेषः सनहिरण्यस्तूपः समिद्धएकादशकादशपोसितो देवलोर्वविंशतिः सूक्ता
न्याद्यमाप्रियश्चतुरनुष्टुवंतं मद्रयानवास्त्रयमेते सोमाः परिप्रियाप्रस्वानास उपपासै सोमा असृग्रं ॥ ७ ॥
हरिः ओम् ॥ (८।१०।५) इंद्राय सार्मगायतविप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ त्वमिन्द्राभिभूर
सित्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वदेवो महोऽसि ॥ विभ्राजन्त्योतिषास्वर्गच्छोरोचनं दिवः । देवास्तं इंद्रस
ख्यायये मिरे ॥ एन्द्रनोगधिप्रियः सन्नाजिदगोह्यः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः+ ॥ अभिहितस्य सोमपाऽउभेव भू
थरोदसी । इंद्रासि सुन्वतो बृधः पतिर् ॥ त्वंहिशश्वतीनामिन्द्रदुता पुरामसि । हुतादस्योर्मनो बृधः पतिर् ॥ १ ॥ अ
धार्हीन्द्रगिर्विणऽउपत्वा कामान्महः ससज्महे । उदेव्यंतंऽउदभिः ॥ वार्ष्णेयाय व्याभिर्बधिति शूरवह्मणि । वावृध्वांसं
चिदद्विबोदिवे दिवे । गुंजंति हरीऽइषिरस्य गार्थयोरैरथऽउरुयुगे । इंद्रवाहवचो युजा ॥ त्वं नऽइन्द्राभरंऽओजो नृगं शत
क्रतो विचर्षणे । आवीरं पृतनाय हं ॥ त्वंहिनः पितावसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधति सुन्नमीमहे ॥ त्वां शुष्मिन्पुरु
(८।१०।५) इंद्राय सामेति द्वादशर्वस्य सूरुत्यांगिरसो नृमेधं इंद्रवर्णिक्सप्तमीदशम्येकादशः ककुभो नवम्यं त्रैपुरवर्णिहौ ।

हृतत्राज्यंतुपुत्रवेगतक्तो । सनोराज्यमवीर्यं ॥ २ ॥ (८११०१६) त्वामिदाग्नो नरोपीव्यन्वच्चिन्तयः । मऽ
 इद्वस्तोर्मवाहतामिदं श्रुधुपस्वस्तरमागहि ॥ मत्स्वायुषिप्रहयित्वादीमलेवंऽआधूतितोयमः । तव श्रवांस्तुभान्मु
 क्त्यामंतोऽबिद्वर्गिणः ॥ श्रायतऽसुखं विप्रेदिं द्रस्य भक्षत । यस्मिन्निजानं मानऽओनं गात्रनिभागं नदीधिम् ॥ त्वमिदं प्रवृत्तिं न
 अनंशोरातिवसुदासुपस्त्वहिभद्राऽद्रस्वरातयः । मोऽअस्य कामं पिभूतो नरोऽनिग्नोऽनुनायं नो रयन् ॥ त्वमिदं प्रवृत्तिं न
 भिविश्वाऽअमिस्पृधः । अगस्तिहाजनितामिदं प्रवृत्तिं तूयतरुयतः ॥ अनुते शुग्मं तस्य तमीयतुः ओणी जिह्वं न मात
 रा । विश्वोस्ते स्पृधः श्रयंतं तमन्यवे मुंयं दिद्वर्गसि ॥ इतऽकृतीवोऽअनं प्रवृत्ताममप्रहितं । आशुं जेतानि तैरिग्नो
 मम तूतं तुष्ट्यावृधं ॥ इत्कृता रमणिं कृतं महं स्तुतं गतमूतिं गतं कृतं । ममानिभिद्वमं गेह्यामले यमं नानं न मुव ॥ ३ ॥
 (८११०१७) अयंतंऽएमित्त्वन्वोपरस्ताद्विश्वेदेवाऽअभिमायंति पृथात् । यदा मायं दीधरो भागिद्रादिन्मया कृण
 वोवीर्याणि ॥ दधामि ते मयुनो भवामत्रैतु तसै भागः मृतोऽअस्तु मोमः । अमं तुल्यं दक्षिणतः मरुता मेघाऽनुवाणि जंघनाव
 (८११०१६) त्वामिदेन पृथं स्यात्कृत्वा गिरमो न मे ॥ १२३ अनुजोऽहृतोऽनुः मतोऽग्रहः । (८११०१७) अयतं न निजं गन्तं न्यमूत्स्य

भागं वोनेमऽपिः अयंतं इति द्वयो रित्त्वः । इदोऽनंतागनोऽनतादन्त्याः सुषणं विस्तामसुऽइदन्त्याः अयऽअमाऽन्तीति द्वयो रित्त्वः । इतऽग्रहोऽग्रहः ।
 पृथीजगतीमत्सम्यायामिन्नोऽनुपुमः ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ७

॥ ४७ ॥

मंडलं ८

अनु. १०

॥ ४७ ॥

भूरि ॥ प्रसुप्तोर्मभरतवाजयंतुऽइंद्रायसत्यं यदि सत्यमस्ति । नद्रोऽअस्तीति नेमऽउत्त्वऽआहूकईददर्शकमभिष्टवाम ॥
अयमस्मिजरितः पश्य मे हविश्वाजातान्यभ्यस्मि मृहा । ऋतस्य माप्रदिशो वर्धयं त्यादितो भुवनादर्दरीमि ॥ आयन्मा
वेनाऽअरुहन्नतस्यऽएकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे । मनश्चिन्मेहृदऽआप्रत्यवोचदचिक्कदुन्धि शुभंतः सखायः ॥ विश्वेत्ताते
सर्वनेषु प्रवाच्यायाचकथं मघवन्निद्रमुन्वते । पारावतं यत्पुरुसंभृतं वस्वपावृणोऽशरभायऽऋषिबंधवे ॥ ४ ॥ प्रननं धा
दिवंसुपर्णो गत्वायुसोर्मवज्जिणऽआभरत् ॥ समद्रेऽअंतः शयतऽउद्रावज्रोऽअभीदृतः । भरत्यस्मै संयतः पुरः प्रसवणा
बलिं ॥ यद्वाग्वदत्यविचेतना निराष्ट्री देवानां निपसादं मद्रा । चतस्रऽऊर्जं दुहुहे पयोसिक्कस्विदस्याः परमं जगाम ॥
देवीवाचं मजनयंत देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदंति । सानोर्मद्रेषूर्मूर्जं दुहानाधेनुवागस्मानुपसृष्टतैले ॥ सखे विष्णो वि
तरं विक्रमस्वद्यौर्द्विहिलोकं वज्राय विष्कभे । हनाववृत्रं रिणचाविसिंधुनिद्रस्यं तु प्रसवे विसृष्टाः ॥ ५ ॥ (८।१०।८) ऋध
(८।१०।८) ऋधगित्येति पौकशर्चस्य सूक्तस्य भार्गवो जमदग्निर्कषिर्भिन्नावरुणौ देवते पंचम्याभिन्नावरुणादित्यादेवताः षष्ठ्या आदि
त्याः सप्तम्यष्टम्योरश्विनौ नवमी दशम्योर्वायुरेकादशी द्वादशयोः सूर्यस्योदयात्तत्रात्र तुर्दश्याः पवमानस्ततो द्वयोर्गौर्बृहती द्वितीया चतुर्थी-
षष्ठ्यष्टम्यः सतो बृहत्याः तृतीया गायत्र्यं लास्ति स्रबिष्टुभः ।

द्वितीया चतुर्थी-

गित्थासमर्थः अशमेदेवततये । योनूनंमित्रावरूणावुभिष्टयऽआनुकेद्वयदातये ॥ नर्षिष्ठशत्राऽउरुचक्षमानरा
 राजानादीर्घिश्रुत्तमा । ताव्राहुतानंदमनारथ्यतः साकंसूर्यस्वर्गदिमर्भिः ॥ प्रयोगांमिनावन्णानिरोदतोऽअद्रवत् ।
 अयःशीर्षमदेरधुः ॥ नयःमंगुच्छेनपुनर्देवीतवेनसवाद्यायुरभते । तस्माद्गोऽअद्यममनेरुत्थयंतगाःभ्यानऽउरुष्यतं ॥
 प्रमित्रायप्रार्थ्यग्नेसंचव्यमृतावसो । नून्यः१वरुणेछंयंचनःजोत्रराजमुगायत ॥ ६ ॥ तैर्नित्रेऽअरुणजेन्यंयस्वे
 कंपुत्रंतिंसुणां । तेषामान्यमृतामर्त्यानामर्दद्वाऽअभिचक्षते ॥ आमेवचांस्युयंनानामृमत्तमानिहर्त्वा । उभायांतना
 सत्यामजोपसाम्रतिहव्यानिवीतये ॥ रातियदामरुक्षमंहर्वामहेयुवाभ्यावाजिनीयम् । प्राचीनोत्रांप्रतिरंताधिन्नरा
 गृणानाजमदग्निना ॥ आनोयजोद्विस्पृशंवायोयाहिममन्मभिः । अंतपुचिऽउपर्श्रीणानोद्वंशहोऽअयामि
 ते ॥ देत्यध्वयुःपृथिभीराजिष्ठःप्रतिहव्यानिवीतये । अधानियुत्तऽउभयस्थानःपिवथुनिमोमंगवाश्रिरं ॥ ७ ॥ वण्म
 होंऽअसिसूर्यवळादित्यमहोऽअसि । महस्तेसुतोमहिमाणनस्यतेजोदेवमहोऽअसि ॥ वदसूर्यश्रवनामहोऽअसिसत्वा
 देवमहोऽअसि । महोदेवानामसूर्यःपुरोहितोविभुःयोतिरदाभ्यं ॥ उयंयानीच्यकिंणीन्पारोहिष्याकृता । चित्रेव
 प्रत्यंदर्यायत्यं१तर्दशसुवाह्वं ॥ प्रजाहंतितोऽअलायमीगुन्त्यं१न्याऽअक्रमभितोविविश्रे । बृहन्नतस्योभुयंनघंतः
 पथमानोहुरितऽआधिवेश ॥ मातारुद्राणादुहितावसूनास्वमोदिलगानाममृतंस्थुनाभिः । प्रनुवोचंचिक्रितुगुजनांय

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ७

॥ ४८ ॥

मागामनोगामादिति विधिः ॥ वचो विदुवाच मुदीरयतीं विश्वाभिर्धामि रपतिष्ठमानां । देवीं ऽदेवेभ्यः पर्येयुषीगमा
मावृक्तमत्यौदुभ्रजेताः ॥ ८ ॥ (८।१०।९) त्वमग्नेव हृदयो दधासि देवदाशुषे । कविर्गहर्पतिर्युवा ॥ सनऽईलान
यासह देवाऽअग्ने दुवस्युवा । चिकिर्द्विभानुवाह ॥ त्वया हि स्विद्युजा वयं चोदंष्ट्रेन यविष्ठ्य । अभिष्मो वाजसातये ॥
और्वभगवच्छुचिममवानुवाहुवे । अग्निं समद्रवांसं ॥ हुवे वातस्वनं कविपुजन्यं कृद्यंसहः । अग्निं ० ॥ ९ ॥ आस
वंसं वितुर्यथा भगस्येव भुजिहुवे । अग्निं ० ॥ अग्निवो बृधंतमध्वराणां पुरुतमं । अच्छानत्वे स हस्वते ॥ अयं यथानऽआ
भुवत्त्वष्टारूपे वत्स्या । अस्य कत्वायशस्वतः ॥ अयं विश्वाऽअभिश्चियो भिदुवेषु पत्यते । आवाजैरुपनोगमत् ॥ वि
श्वेषाभिहस्तु हि होतृणां युशस्तमं । अग्निं युशेषु पर्व्य ॥ १० ॥ शीरं पावकशोचिषं ज्येष्ठो यो दमेष्वा । दीदार्यदीर्घश्रुत्
मीकेऽअस्थिरन् ॥ यस्यान्निधात्ववृत्तं वहिस्तस्यावसंदिनं । आपश्चिन्निदं धापदं ॥ पदं दुवस्य मीढुषो नाघृष्टाभिरूति
भिः । भद्रासूर्येऽइवोपहृक् ॥ ११ ॥ अग्ने धृतस्य धीतिभिस्तेपानो देवशोचिषा । आदेवान् वक्षिष्यक्षिच ॥ तं त्वाजनं
(८।१०।९) त्वमग्र इति द्वाविंशत्यृचस्य सूक्त्यभार्गवः प्रयोगो भिर्गायत्री । अस्मिन् सूक्ते एतत्क्रपयो विकल्प्यते - बार्हस्पत्योऽग्निः पावकः
यद्वासहसः पुत्रौ गृहपतियविष्ठौ अनयोरन्यतरो वा) ।

॥ ४८ ॥

मंडलं ८

अनु. १०

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ७

॥ ४९ ॥

अस्यसुमतिर्नवीयस्यच्छावाजैभिरगमत् ॥ प्रेष्ठमुप्रियाणांलुह्यासावार्तिथिं । अग्निरथानायमं ॥ १४ ॥ उदितायो
निरितावेदितावस्वायज्ञियोववर्तति । दुष्टरायस्यप्रवणेनोर्मयोधियावाजंसिर्वासतः ॥ मानोहणीतामतिथिर्वसुरग्निः
यरातह्व्यःस्वध्वरः ॥ यःसुहोतास्वध्वरः ॥ मोतेरिषन्येऽअच्छोक्तिभिर्वसोमेकेभिश्चिदेवैः । कीरिश्चिद्वित्वामीदृदुल्या
(इतिप्रागाथमष्टमंमंडलंअत्रसूक्तानि ९२) ॥ (९।१।१) स्वादिष्ठयामदिष्ठयापर्वस्वसोमधारया । इन्द्रायपातवेसु
तः ॥ रक्षोहाविश्वचर्षणिर्भियोनिमयोहंत । दुर्णसधस्यमासदत् ॥ वरिवोधातमोभवमंहिष्ठोवृत्रहन्तमः । पर्षि
राधौमघोनाम् ॥ अभ्यर्षमहानांदेवानांवीतिमंधसा । अभिवाजमुतश्रवः ॥ त्वामच्छाचरामसितदिदर्शदिवोदेवे ।
इंद्रोत्वेनऽआशसः ॥ १६ ॥ पुनातितेपरिस्तुतंसोमंसूर्यस्यदुहिता । वारोणशश्वतानां ॥ तमीमण्वीःसमर्चऽआग
भ्यंतियोषणोदश । स्वसारःपार्थदिवि ॥ तमीहिन्वंत्यग्न्यवोधमंतिवाकुरंहति । त्रिधातुवारुणमधु ॥ अभीइमम
इयाऽउतश्रीणांतिधेनवःशिशुं । सोममिंद्रायपातवे ॥ अस्येदिंद्रोमदेष्वाविश्ववृत्राणिजिघ्रते । शूरोमघाचमंह

पावमानेनवमेमंडलेसप्तानुवाकाःतत्रप्रथमेनुवाकेचतुर्विंशतिसूक्तानि (९।१।१) स्वादिष्ठयेतिदशर्चस्यसूक्तस्यैवाभिज्ञोमधुच्छंदाः
पवमानसोभोगायत्री ।

ते ॥ १७ ॥ (९।१।२) पञ्चदेवैरिगिपि विमंता । अंमिदेवगात्रि ॥ आचम्यमहिमगेयं देवमं
 तमः । आयोनिधर्षिः रक्षः ॥ अर्चनमिदं मरुतागमयत्तुम् । अर्पोमिष्टमर्चः ॥ मन्त्रानाम् भिन्नानां
 उअंतिमिधः । यद्गोभिर्मानयिष्ये ॥ यमदोऽअयुममृतेपि यं गोपणोदित । मोरः पितेऽअम्यः ॥ १८ ॥
 अनिरुद्धमालरिगुतामिमनो नयनः । मंमयणरोचनः ॥ गिरजऽअं दुःखोऽनाममृतेऽअम्यः । याभिर्गव्य
 शुभमे ॥ तंत्वामर्गयन्त्युदयोऽरुत्तुमीमः । ननुपत्रजयोगिनिः ॥ अम्यमिदं पितृयुग्मं तः पारम्भारया ।
 पृथ्व्योऽष्टिमाऽर्च ॥ गोपाऽदेनपाऽअस्य तुमार्त्तामाऽन । आरम्यमायं पृथ्वे ॥ १९ ॥ (९।१।३) पृथ
 द्वेयोऽअमर्त्यः पर्णमिरेदीयति । अभिद्रोणाऽन्यामृ ॥ एतं दुःखिपात्रं लोतिरगिः पारति । पामनोऽअदाऽन्यः ॥
 एतदेवोधिपुन्युभिः पामनऽकृतयुभिः । हरिर्गोत्रायमृयते ॥ एतपिऽपानिऽरायोऽग्रेयः । अमर्त्यभिः । पामनः मि
 पासति ॥ एतदेवोदेयं तिपर्वमानोदयसति । आरिऽणोतिपयन्तु ॥ २० ॥ एतपिऽग्रं भिद्रोपाऽदुःखोपिमाऽते ।
 दधुद्रतामिद्राशुभं ॥ एतदिऽपिऽपिऽतिनिरेऽमिभाग्या । पर्वमानः कर्निरुद्रत् ॥ एतदिऽनुऽवामर्गसिरोऽजास्यमृ

(९।१।२) पञ्चदेवैरिगिपि विमंता । अंमिदेवगात्रि । (९।१।३) पञ्चदेवैरिगिपि विमंता । अंमिदेवगात्रिः
 शुनः दोषः मरुतिगोपैरिगिपि विमंता । पामनमोमोमायती ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ७

॥ ५० ॥

तः । पर्वमानः स्वध्वरः⁺ ॥ एष प्रलेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रेऽर्षति ॥ एष उऽस्य पुरुषो जज्ञानो ज
नयन्निर्षः । धारया पवते सुतः⁺ ॥ २१ ॥ (९।१।४) सनाच सोमो जेषि च पर्वमानमहिश्रवः । अथानो वस्य सस्कृ
धि ॥ सनाज्योतिः सनास्वः विश्वाच सोमसौभगा । अर्था० ॥ त्वंसूयन्ऽआभजत वक्रत्वा तवोतिभिः । अर्था० ॥ पर्वी
तारः पुनीतन सोममिद्राय पातवे । अर्था० ॥ त्वंसूयन्ऽआभजत वक्रत्वा तवोतिभिः । अर्था० ॥ २२ ॥ तव कत्वा त
वोतिभिर्ज्योक्पश्येमसूय । अर्था० ॥ अभ्यर्ष स्वायुध सोमं द्विवहं सरथि । अर्था० ॥ अभ्यर्षान् पच्युतोरयिं समत्सु
सासहिः । अर्था० ॥ त्वां यज्ञैरवीवृधन् पर्वमानविधर्मणि । अर्था० ॥ रयिर्नश्चित्रमश्विनमिदो विश्वायुमाभर । अ
र्था० ॥ २३ ॥ (९।१।५) समिद्धो विश्वतस्पतिः पर्वमानो विराजति । प्रीणन् वृषा कर्निकदत् ॥ तनूनपात्पर्वमानः
शृंगे शिशनोऽर्षति । अंतरिक्षेण रारजत् ॥ इळेन्यः पर्वमानो रयिर्विराजति । मधो धारो भिरो जसा ॥ बहिः
प्राचीनमोजसा पर्वमानस्तृणन्हरिः । देवेषु देवऽईयते ॥ उदतैर्जिहते बृहद्दरो देवी हि रण्ययीः । पर्वमानेन सुष्टु
(९।१।४) सनाचेति दशर्चस्य सूक्तस्यांगिरसो हिरण्यस्तूपः पर्वमानसोमो गायत्री । (९।१।५) समिद्ध इत्येकादशर्चस्य सूक्तस्य काश्यपो
सितः क्रमेण षमस्तनूनपादि लोवा हि देवी द्वार उपासान्कादैर्व्योहोतारौ तिस्रो देव्यः सरस्वती व्याभारत्यस्वष्टावनस्पतिः स्वाहाकृतयोगायत्री-
अंलाश्च तस्योनुष्टुभः । (इत आरभ्य विंशति सूक्तेषु काश्यपो देवल्लोऽसितेन सह विकल्पते) ।

॥ ५० ॥

मंडलं ९

अनु- १

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ७

॥ ५१ ॥

ते । ह्रविर्हविष्पुवंशः ॥ प्रयुजोवाचोऽअग्रियोवृषावचक्रदुद्धने । सद्भाभिसत्योऽअध्वरः ॥ परियत्काव्याकुर्विर्न
म्यावसानोऽअर्षति । स्वर्वाजीसिषासति ॥ पर्वमानोऽअभिसृधोविशोराजैवसीदति । यदीमण्वंतिवेधसः ॥ २८ ॥
अव्योवारेपरिप्रियोहरिर्विनेषुसीदति । रेभोर्वनुष्यतेमती ॥ सवायुमिद्रमश्विनासाकंमदेनगच्छति । रणायोऽअस्य
धर्मभिः ॥ आमित्रावरुणाभंगमध्वःपवंतऽऊर्मयः । विद्वानाऽअस्यशकर्मभिः ॥ अस्मभ्यैरोदसीरयिमध्वोवाजस्य
सातये । श्रवोवसूनिंसजितं ॥ २९ ॥ (९।१।८) एतेसोमाऽअभिप्रियमिद्रस्यकाममक्षरन् । वर्धतोऽअस्यवी
धुम् ॥ पुनानासश्चमृषदोगच्छतौवायुमश्विना । तेनोधांलुसवीर्यं ॥ इन्द्रस्यसोमराधसेपुनानोहादिचोदय । ऋतस्य
योनिमासदं ॥ मजंतित्वादशक्षिपोहिन्वातिसप्तधीतयः । अनुविप्राऽअमादिषुः ॥ देवेभ्यस्त्वामदायकंसृजानमति
मेभ्यः । संगोर्भवांसयामसि ॥ ३० ॥ पुनानःकलशेन्वावखाण्यरुषोहरिः । परिगव्यान्त्यव्यत ॥ मधोनऽआपव
स्वनोजहिष्विश्वाऽअपद्धिषः । इंदोसखायुमाविश ॥ दृष्टिदिवःपरिष्वचद्युमंपृथिव्याऽअधि । सहोनःसोमपत्सुधाः ॥
तः । सुवानोर्यातिकुर्विक्तुः ॥ प्रमृक्षर्यायपन्यसेजनयजुष्टोऽअदुहे । वीत्यर्षचनिष्ठया ॥ ससनुर्मातराशुचिर्जातो
(९।१।९) एतेसोमाइतिनवर्चस्यसूक्तस्यकाश्यपोसितःपवमानसोमोगायत्री । (९।१।९) परिप्रियेतिनवर्चस्यसूक्तस्यकाश्यपोसितःपवमान

॥ ५१ ॥

मंडलं ९

अनु. १

अयुः । देवं देवाय देवयु⁺ ॥ सनः पवस्व शंग्वेशं जनाय शमवर्ते । शंरजन्नोषधीभ्यः ॥ बृध्वेनुस्व तव सेरुणा यदिवि
स्पृशे । सोमाय गाथमर्चत ॥ हस्तं च्युते भिरद्रिभिः सुतसोमं पुनीतन । मधावाधावतामधु ॥ ३६ ॥ नमसेदुर्पसीदत
दुमेदुभिश्च्रीणीतन । इंदुमिदं दधातन ॥ अभित्रहाविचर्षणिः पर्वस्वसोमं शंग्वे । देवेभ्योऽनुकामकृत्⁺ ॥ इंद्राय
सोमपातवेमदाय परिषिच्यसे । मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥ पवमानसुवीर्यं रयिंसोमरिरीहिनः । इंदुर्विद्रेण नोयुजा⁺
॥ ३७ ॥ (९।१।१२) सोमाऽअसृग्रमिदं देवः सुताऽऽकृतस्य सादने । इंद्राय मधुमत्तमाः ॥ अभिविप्रऽअनूषतगावो
वृत्सं नमार्तरः । इंदुंसोमस्य पीतये ॥ मदुच्युत्क्षेतिसादने सिंधोरूमं विपश्चित् । सोमो गौरीऽअधिश्चितः⁺ ॥ दिवो
नाभाविचक्षणो व्योवारैमहीयते । सोमो यः सुकर्तुः कविः⁺ ॥ यः सोमः कुलशेषोऽअंतः पवित्रऽआहितः । तमिदुः
परिपस्वजे ॥ ३८ ॥ प्रवाचमिदुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टयि । जित्वन्कोशं मधुश्रुतं ॥ नित्यं सोन्नोवनस्पतिर्धीना
मंतः सर्वदुर्धः । हिन्वानो मानुषायुगा⁺ ॥ अभिप्रियादिवस्पदा सोमो हिन्वानोऽअर्षति । विप्रस्य धारया कविः⁺ ॥
आपवमानधारय रयिंसुहस्रवर्चसं । अस्मेऽइदो स्वाभुवं ॥ ३९ ॥ इति पष्ठाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

(९।१।१२) सोमाऽअसृग्रमिति तव चैव सूक्तस्य काश्यपोऽसितः पवमानसोमो गायत्री ।

सप्तचत्वारिंशत्पञ्चवर्गाः ३९ सूक्तानि १८ तन्त्र. १९८ ॥ त्यागः ॥ उंजये. २७ सुपर्णाय. १ वज्राय. १ त्रिच. २ इन्द्राय. मित्रा-
रुणाभ्या. ४ मित्राय रुणादित्येभ्य. आदित्येभ्य. अश्विन्या. २ वायव. २ सूर्याये. २ उगम. पामानाये. गा६०२ अग्नय. ३५ अग्ना-
मरुद्भ्य. पवमानाय सोमाये. ४० समिद्धायाग्नय. तनूनपात. इळाये वरुणाय. देवीभ्यो द्वाभ्य उपासान्ताभ्या. देविभ्यो ह्येष्ट्या प्रजेतोभ्या.

मरुद्भ्य. पवमानाय सोमाये. ४० समिद्धायाग्नय. तनूनपात. इळाये वरुणाय. देवीभ्यो द्वाभ्य उपासान्ताभ्या. देविभ्यो ह्येष्ट्या प्रजेतोभ्या.

सोमः परिप्राष्टावेषधियो प्रतेप्रनिन्नेनेव परि सुवानः सप्तयत्सोमप्रक्रविरेते धावन्त्येते सोमार्सः सोमा अरुग्रं प्रसोमा
सः पवस्व पद्दृच्छुतं आगस्त्यस्तममृक्षते मवाहो दाहं च्युतं एषकविर्नृमेधं एषवाजी प्रियमेधः प्रास्त्य नृमेधः प्रधारा
त्रिंदुः प्रसोमा सोमो गोतर्मः प्रसोमा सः श्यावाश्वः प्रसोमा सस्वितः प्रसुवान आर्नः पवस्व प्रभूवर्गुरसंजिंसुतो रूह्यगण
एष उष्य आशुरर्षवृहन्मर्तः पुनानः प्रयेगावो मेध्यातिर्धनयन्यो अत्यइव ॥ ८ ॥

॥ हरिः ओम् ॥ (९।१।१३) सोमः पुनानोऽर्पति सहस्रधारोऽअत्यविः । वायो रद्रस्य निष्कृतं ॥ पवमान
मवस्यो विप्रमभिप्रगायत । सुव्याणं देववीतये ॥ पवते वाजसातये सोमः सहस्रपाजसः । गुणानां देववीतये ॥ उत
नो वाजसातये पवस्व वृहतीरिषः । द्युमर्दिदो सुवीर्यं ॥ तेनः सहस्रिणं रयिपवतामा सुवीर्यं । सुवानां देवाऽइंदवः ॥

(९।१।१३) सोमः पुनानं दत्तितवर्चस्य सूक्तस्य काश्यपोऽसितः पवमान सोमो गायत्री ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ८

॥ ५३ ॥

॥ १ ॥ अत्याहियानानहेतुभिरसृग्वाजसातये । विवारमव्यमाश्रवः ॥ वाश्राऽअर्षतीर्दवोभिवत्संनधेनवः । द्रुध
न्विरेगभस्त्योः ॥ जुष्टऽइंद्रायमत्सरःपवमानकनिक्कदत् । विश्वाऽअपद्विषोजहि ॥ अपमंतोऽअराव्णःपवमानाः
स्वर्हशः । योनावृतस्यसीदत् ॥ २ ॥ (९।१।१४) परिप्रासिष्यदत्कविःसिधोरूमविधिश्चितः । कारंविन्नत्पुरुस्पृ
हं ॥ गिरायद्रीसर्वधवःपंचव्राताऽअपस्यवः । पुरिष्कृण्वंतिधर्णसिं ॥ आदस्यशुष्मिणोरसेविश्वेदेवाऽअमत्सत ।
यद्रीगोभिर्वसायते ॥ निरिणानोविधावतिजहृच्छयौगितान्वा । अत्रासंजिघ्रतेयुजा ॥ नसीभिर्योविवस्वतःशुभ्रो
नममजेयुर्वा । गाःकृण्वानोननिर्णिजं ॥ ३ ॥ अतिश्चितीतिरश्चतंगव्याजिगात्यण्व्या । वमुर्मियतिंयंविदे ॥ अ
भिक्षिपुःसर्ममतमर्जयतीरिषस्पतिं । पृष्ठार्गृभ्णतवाजिनः ॥ परिदिव्यानिमर्मैशुद्धिश्चानिसोमपाथिवा । वसूनि
याह्यस्मयुः ॥ ४ ॥ (९।१।१५) एषधियायात्यण्व्याशूरोरथैभिराशुभिः । गच्छन्निद्रस्यनिष्कृतं ॥ एषपरूधि
यायतेबृहतेदेवतातये । यत्रामृतांसऽआसते ॥ एषहितोविनीयतेतःशुभ्रावतापथा । यदीतुंजंतिभूर्णयः ॥ एषभृ
गणिदोधुवच्छिशीतेयुथ्योऽवृषा । नृणादधानऽओजसा ॥ एषरुविमभिरीयतेवाजीशुभ्रेभिरंशुभिः । पतिःसिधू
नांभर्वन् ॥ एषवसूनिपिबुदनापरुषाययिषोऽअति । अवशादेषुगच्छति ॥ एतंमृजंतिमर्ज्यमुपद्रोणेष्वायवः । प्रच

(९।१।१४) परिप्रेत्यष्टर्चस्यसूक्तस्यकाश्यपोसितःपवमानसोमोगायत्री । (९।१।१५) एषधिचेत्यष्टर्चस्यसूक्तस्यकाश्यपोसितः

कृपांमहीरियः ॥ पुतमलंदनुक्षिपोमजंतिमसधीतयः । ग्यायुभंमदितं ॥ ५ ॥ (९।१।१६) प्रतेमोनारंओ
 ण्योइरसंमदायुगुन्ये । मगोनतुत्त्येतथाः ॥ कृत्तादथस्वरुयसुगोत्रमानभमा । गोपामणैपुमक्षिम ॥ अनसम
 म्बुदुष्टंमोमैपवित्रासकृत् । पुनीर्हीद्रायपतने ॥ प्रपुनानस्यचेतमासोभःपुत्रिनेडअर्पति । कर्गामधम्यसामंदत् ॥
 म्बुदुष्टंमोमैपवित्रासकृत् । पुनीर्हीद्रायपतने ॥ प्रपुनानस्यचेतमासोभःपुत्रिनेडअर्पति । कर्गामधम्यसामंदत् ॥
 प्रलानमोभिरिदवुडंद्रुमोमाडअसृक्षत । मलेभरायकृरिणः ॥ पुनानोत्पेडअब्बयंवित्राडअर्पेत्तुभिश्चियः । अरोन
 गोपुतिष्ठति ॥ द्वितोनमानुपिण्णुपीधारामनस्येक्वसः । नृथपुवित्रेडअर्पति । तंमोमविपश्चित्तनापुनानआयु
 प्रलानमोभिरिदवुडंद्रुमोमाडअसृक्षत । मलेभरायकृरिणः ॥ पुनानोत्पेडअब्बयंवित्राडअर्पेत्तुभिश्चियः । अरोन
 गोपुतिष्ठति ॥ द्वितोनमानुपिण्णुपीधारामनस्येक्वसः । नृथपुवित्रेडअर्पति । तंमोमविपश्चित्तनापुनानआयु
 पु । जव्योत्रारुविघासि ॥ ६ ॥ (९।१।१७) प्रनिगंनेवमिंधयोधंतोपुनाणिभ्रणयः । मोमाडअमग्रमाशनः ॥
 अभिमुवानासुडंदवोगुष्टयःपृथिवीमिन् । उंद्रुमोमासोडअधरन् ॥ अर्यमिर्मत्तमरोमदुःमोभःपुवित्रेडअर्पति । विघ्न
 अक्षीसिदेवुयुः ॥ आकलेशैपुधावतिपुवित्रेपदिपिच्यते । उरुथंर्येडोपुपधते ॥ अतिनीसोमरोचनारोहन्नभ्राजसेदि
 त्रक्षीसिदेवुयुः ॥ आकलेशैपुधावतिपुवित्रेपदिपिच्यते । उरुथंर्येडोपुपधते ॥ अतिनीसोमरोचनारोहन्नभ्राजसेदि
 त्रक्षीसिदेवुयुः ॥ आकलेशैपुधावतिपुवित्रेपदिपिच्यते । उरुथंर्येडोपुपधते ॥ अतिनीसोमरोचनारोहन्नभ्राजसेदि
 त्रक्षीसिदेवुयुः ॥ आकलेशैपुधावतिपुवित्रेपदिपिच्यते । उरुथंर्येडोपुपधते ॥ अतिनीसोमरोचनारोहन्नभ्राजसेदि

प्रतेमोनारंओपुमक्षिम । (९।१।१६)

प्रतेमोनारंओपुमक्षिम । (९।१।१७)

प्रतेमोनारंओपुमक्षिम । (९।१।१७)

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ८

॥ ५४ ॥

(९।१।१८) परि॒सु॒वा॒नो॒गि॒रि॒ष्ठाः॒प॒वि॒त्रे॒सो॒मो॒ऽअ॒क्षाः । म॒दे॒षु॒स॒र्व॒धा॒ऽअ॒सि ॥ त्वं॒चि॒प्र॒स्त्वं॒कु॒र्वि॒म॒धु॒प्र॒जा॒तं॒म॒ध॒सः ।
य॒ऽइ॒मे॒रो॒द॒सी॒म॒ही॒सं॒मा॒त॒रे॒व॒दो॒ह॒ते । म॒दे॒षु॒ ॥ अ॒यो॒वि॒श्व॒ना॒या॒व॒सू॒नि॒ह॒स्ते॒यो॒द॒धे । म॒दे॒षु॒ ॥
व्वा॒पु॒ना॒नो॒ऽअ॒चि॒क॒द॒त् । म॒दे॒षु॒ ॥ ८ ॥ (९।१।१९) य॒त्सो॒म॒चि॒त्र॒म॒क्थ्यं॒दि॒व्यं॒पा॒धि॒व॒सु । म॒दे॒षु॒ ॥ स॒शु॒ष्मी॒क॒ल॒शे
भ॒र ॥ शु॒वं॒हि॒स्यः॒स्व॒र्प॒ती॒ऽइ॒दं॒अ॒सो॒म॒गो॒प॒ती । इ॒श॒ना॒पि॒प्य॒तं॒धि॒यः ॥ वृ॒षा॒पु॒ना॒न॒ऽआ॒यु॒ष॒स्त॒न॒य॒न्ना॒धि॒व॒हि॒षि । ह॒रिः
स॒न्यो॒नि॒मा॒सं॒द॒त् ॥ अ॒वा॒व॒शं॒त॒धी॒त॒यो॒वृ॒ष॒भ॒स्या॒धि॒रे॒त॒सि । स॒नो॒र्व॒त्स॒स्य॒मा॒त॒रः ॥ कु॒वि॒द्वृ॒ष॒ण्यं॒ती॒भ्यः॒पु॒ना॒नो॒ग॒र्भ॒मा
द॒ध॒त् । याः॒शु॒क्रं॒दु॒ह॒ते॒प॒र्यः ॥ उ॒प॒शि॒क्षा॒प॒त॒स्थु॒षो॒भ्य॒स॒मा॒धे॒हि॒श॒त्रु॒षु । प॒र्व॒मा॒न॒वि॒दा॒र॒धि॒ ॥ नि॒श॒त्रोः॒सो॒म॒वृ॒ष्ण्यं
नि॒शु॒भं॒नि॒व॒र्य॒स्ति॒र । दू॒रे॒वा॒स॒तो॒ऽअं॒ति॒वा ॥ ९ ॥ (९।१।२०) प्र॒क॒वि॒दे॒व॒वी॒त्ये॒व्यो॒वा॒रे॒भि॒र॒ष॒ति । सा॒ह्य॒न्वि॒श्व॒ा
ऽअ॒भि॒स्पृ॒धः ॥ स॒हि॒ष्मा॒जि॒रि॒त॒भ्य॒ऽआ॒वा॒जं॒गो॒मं॒त॒मि॒न्व॒ति । प॒र्व॒मा॒नः॒स॒ह॒स्रि॒णं ॥ परि॒वि॒श्व॒ानि॒चे॒त॒सा॒म॒श॒से॒प॒र्व॒से
म॒ती । स॒नः॒सो॒म॒श्र॒वो॒वि॒दः ॥ अ॒भ्य॒र्ष॒व॒ह॒द्य॒शो॒म॒घ॒र्व॒भ्यो॒ध्रु॒वं॒रि॒षि । इ॒ष॒स्तो॒तृ॒भ्य॒ऽआ॒भ॒र ॥ त्वं॒रा॒जे॒व॒सु॒व॒त्रो॒गि॒रः॒सो॒मा

(९।१।१८) परि॒सु॒वा॒न॒इ॒ति॒स॒प्त॒र्च॒स्य॒सू॒क्त॒स्य॒का॒श्र॒य॒पो॒सि॒तः॒प॒र्व॒मा॒न॒सो॒मो॒गा॒य॒त्री । (९।१।१९) य॒त्सो॒मे॒ति॒स॒प्त॒र्च॒स्य॒सू॒क्त॒स्य
का॒श्र॒य॒पो॒सि॒तः॒प॒र्व॒मा॒न॒सो॒मो॒गा॒य॒त्री । (९।१।२०) प्र॒क॒वि॒रि॒ति॒स॒प्त॒र्च॒स्य॒सू॒क्त॒स्य॒का॒श्र॒य॒पो॒सि॒तः॒प॒र्व॒मा॒न॒सो॒मो॒गा॒य॒त्री ।

मंडलं ९

अनु. १

॥ ५४ ॥

धिवेगिथ । पुनानोर्वेदेऽअद्भुत ॥ मयतिरुप्सुदुष्टरोमन्यमानोगर्भस्तोः । मोमंश्चमपुमीदति ॥ नीलुर्मनोनर्भलुयुःप
 वित्रसोमगच्छसि । दवंस्तोनेमवीर्यं ॥ १० ॥ (९।१।२१) एतेधात्रतोदंनुःमोमाऽङ्ग्रायमर्गयः । मत्तरामः
 स्वविदः ॥ प्रवृण्वंतोऽअभियुजःसुर्वयेवरिवोविदः । स्वयंस्तोनेवयमृकृतः ॥ युधाभीजंतुऽङ्गव.मधस्यमभ्यंरुमिति ।
 मिं गौरुमाव्यक्षरन् ॥ एतेविश्वानिवायार्पयमानामऽजाशत । हितानमस्तयोरथे ॥ आसिन्पित्रंगमिद्वोद्वधातावे
 नमादिशे । योऽअस्मभ्यमरावा ॥ कुमुनरव्यंनवंद्रधातोमेतमादिशे । शुक्ताःपयःपुमर्णमा ॥ एतऽउत्तेऽअवीवश
 न्नाष्टावाजिनोऽअक्त । सतःप्रासावियुमिति ॥ ११ ॥ (९।१।२२) एतेमोमामऽआगवोग्रथाऽव्यप्रवाजिनः ।
 मर्गाःमष्टाऽअहेपत ॥ एतेवातोऽङ्गोरवःपर्वन्यस्वेवपृथक् । अग्रेरिवश्चमादृथा ॥ एतेपताविगश्चितःमोमामोद
 ध्याशिरः । विषाव्यानाशुधियः ॥ एतेमष्टाऽअभत्याःममवासानाश्रमुः । उयंत.पुथोर्जः ॥ एतेपष्टानिरोदमोत्रि
 प्रयंतोव्यानाशुः । उतेदमुत्तमंरजः ॥ तंतुतन्वानमुत्तममनुप्रवतऽआगत । उतेदमुत्तमायं ॥ त्वंमोमपणिभ्यऽआ
 वसगव्यानिधारयः । तंतंतुमचिक्रदः ॥ १२ ॥ (९।१।२३) मोमाऽअगृममात्रावोमधोर्मदस्यधारया । अभिवि

(९।१।२१) एतेधात्रतीतिमत्तर्चम्यसूतस्वहाश्रयोत्ततःपत्रमातमोमोगायत्री । (९।१।२२) एतेमोमामष्टतिमत्तर्चस्यसूक्त्य
 हाश्रयोत्ततःपत्रमानसोमोगायत्री । (९।१।२३) मोगानामृमितिमतर्चस्यसूक्त्यहाश्रयोत्ततःपत्रमानमोमोगायत्री ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ ८

॥ ५५ ॥

श्वानिकाव्या ॥ अनुप्रत्नासऽआयवःपुननवीयोऽअकमुः । रुचेजनंतसूथे ॥ आपवमाननोभरायोऽअदाशुपोगर्थे ।
बुधिप्रजावतीरिषः ॥ अभिसोमसऽआयवःपवतेमह्यमदं । अभिकोशंमधश्चतै ॥ सोमोऽअर्षतिधर्णसिर्दधानऽइन्द्रि
मिन्द्रोवृत्राण्यमृति । जधानजघनञ्चनु ॥ १३ ॥ (९।१।२४) प्रसोमासोऽअधन्विषुःपवमानासऽइदवः । अस्यपीत्वामदाना
नाऽअप्सुमृजत ॥ अभिगावोऽअधन्विषुरापोनमृवतायतीः । पुनानाऽइन्द्रमाशत ॥ प्रपवमानधन्वसिसोमैद्रायपा
तेवे । नृभिर्वृतोविनीयसे ॥ त्वंसोमनमादनःपर्वस्वचषणीसहे । सस्त्रिग्रोऽअनुमाद्यः ॥ इंदोयदद्विभिःसुतःपवित्रं
परिधावसि । अरमिन्द्रस्यधास्ते ॥ पर्वस्ववृत्रहन्तमोक्थोभिरनुमाद्यः । शुचिःपावकोऽअस्तुतः ॥ शुचिःपावकऽअच्य
तेसोमःसुतस्यमध्वं । देवावीरघशंसहा ॥ १४ ॥ (९।२।१) पर्वस्वदक्षसार्धनोदेवेभ्यःपीतयेहरे । मरुभ्योवाय
वृत्रहोदेववीतमः ॥ विश्वारूपाण्याविशन्पुनानोयातिहर्यतः । यत्रामृतासऽआसते ॥ अरुषोजनयन्निर्ःसोमःपव
(९।१।२४) प्रसोमासइतिसप्तर्वस्यसूक्तस्यकाश्यपोसितःपवमानसोमोगायत्री ॥ द्वितीयेनुवाकेपद्मत्रिशत्सूक्तानि । (९।२।१)
पवसेतिपट्वचस्यसूक्तस्यागस्त्योद्वह्युतःपवमानसोमोगायत्री ।

॥ ५५ ॥

मंडलं. ९

अनु. २

तऽआयुक् । इन्द्रगच्छन्कुचिकुः ॥ आपस्वमरिन्तगुमिच्छंश्चरयाको । अस्म्ययोनिगामद ॥ १५ ॥ (९।२।२)
 तममृक्षतवाजिनमपस्येऽअदितेरधि । त्रिमसोऽअण्वाधिया ॥ तंगयोऽअन्यनूरागमद्वं राएमान्ति । इन्दुऽनो
 रमाद्विः ॥ तंवृधामेधयाण्यनपमानमधियनि । गुणतिभिरिगयमं ॥ तमगन्भूरिनाधिगामं रानेविम्यतः ।
 पतिवाचोऽअदाभ्यं ॥ तंमनावाधिमयोरीक्षित्वंलाद्विभिः । ह्यनंभूरिचयमं ॥ नंन्नाहिनंतिरेण पंगमानि
 रावृधं । इन्द्रविन्द्रायमत्सरं ॥ १६ ॥ (९।२।३) एयकमिगभिष्टुत पवित्रेऽत्रा नोऽने । पुनानोऽनपविधः ॥
 एयऽइन्द्रायवायेस्वजित्सरिपिच्यते । पवित्रेऽदन्मार्धनः ॥ एयमृभिनिधनेद्विोमोर्गुयामनः । नोमोनेपुपिष्ट
 वित् ॥ एयगव्युरचिकदुत्पवमानोहिरण्ययुः । इन्दुऽमनाजिदन्वतः ॥ एयमृपेणाननेपमानोऽअप्रिग्रधं ।
 पवित्रेमत्सरोमदः ॥ एययुग्यसिन्यददंतीक्षेत्राहरे । पुनानऽउर्द्वरद्रमा ॥ १७ ॥ (९।२।४) एयवाजीहि
 तोनृभिर्विविध्विन्मनमरुपतिः । अव्योवारंविधीवति ॥ एयपुनिऽअऽअरुत्तोमोर्द्वेन्यमनः । विऽमाधानंरात्रिज
 न् ॥ एयेद्वेवःशुभावृतेधियोनावमर्त्यः । वृत्रहादेववीतमः ॥ एययुगाकनं तदद्वगभिर्जामिभ्येतः । अभिद्रोणा

(९।२।२) तममृक्षतेतिपट्टास्वसूक्तस्य शर्द्धेयुः १५ म ३।११माननोनिगापी । (९।२।३) एयकमिदिगुत्तमवृत्त्यागिरगो
 वृमेधःपवमानसोमोगायत्री । (९।२।४) एयपातीतिपट्टास्वसूक्तगागिरम.पिने १.१माननोमोगायत्री ।

ऋक्सं.

अ. ६ अ. ८

॥ ५६ ॥

निधावति ॥ ए॒प॒सूर्य॑मरोच॒य॒त्प॒र्व॒मानो॑वि॒च॒र्ष॒णिः । वि॒श्व॒धा॒मा॒नि॒वि॒श्व॒वित् ॥ ए॒प॒श॒प्य॒दो॒भ्यः॒सोमः॑ पु॒नानो॑ऽअ
र्षति । दे॒वावी॑र॒घशं॑स॒हा+ ॥ १८ ॥ (९।२।५) प्रा॒स्य॒धा॒रो॒ऽअक्ष॑र॒न्वृ॒ष्णः सु॒तस्यो॑जसा । दे॒वो॒ऽअ॒नु॒प्र॒भू॒षतः ॥
स॒क्षि॒मृजं॑ति॒वेध॑सो॒गण॑तः॒कार॑वो॒गिरा । ज्योति॑र्ज॒ज्ञान॑म॒कथ्य॑ ॥ सु॒प॒हा॒सो॒मता॑नि॒ते पु॒नाना॑य॒प्र॒भू॒षसो । व॒धो॒स॒मु॒द्र
त । नि॒दो॒यत्र॑मु॒म॒च॒मेहे ॥ ए॒ंदो॒पा॒थं॒व॒रु॒धि॒द्वि॒व्य॑प॒व॒स्व॒धा॒र॒या । इ॒न्दु॒दे॒पांसि॑स॒थ्य॑क् ॥ र॒क्षा॒सु॒नो॒ऽअ॒र॒रु॒षः स्व॒ना॒त्स॒म॒स्य॒कस्य॑चि
अस्य॒शु॒ष्मि॒णो॒वृ॒था॒प॒वि॒त्रे॒ऽअक्ष॑र॒त् । पु॒नानो॑वा॒चमि॒ष्यति॑ ॥ इ॒न्दु॒हि॒यानः॑ सो॒तुर्भि॑र्म॒ज्य॒मानः॒ कर्नि॑क॒दत् । इ॒यंति॑व
शु॒भि॒द्वि॒यं+ ॥ आ॒नः शु॒भं न॒पा॒ह्य॒वी॒र॒वै॒तं पु॒रु॒स्पृ॒हं । प॒र्व॒स्व॒सो॒म॒धा॒र॒या ॥ प्र॒सो॒मो॒ऽअ॒ति॒धा॒र॒या॒प॒र्व॒मानो॑ऽअ॒सि॒ष्य॒द
त । अ॒भि॒द्रो॒णो॒न्या॒स॒दं ॥ अ॒प्सु॒त्वा॒म॒धु॒म॒त्त॒मं॒ह॒रि॒ह्रि॒न्व॒त्य॒द्रि॒भिः । इ॒न्दु॒र्वि॒द्रा॒य॒पी॒तये ॥ सु॒नो॒ता॒म॒धु॒म॒त्त॒मं॒सो॒म॒भि॒द्रो
य॒व॒जि॒णे । चा॒रुं॒श॒र्धी॒य॒म॒त्स॒रं+ ॥ २० ॥ (९।२।७) प्र॒सो॒मा॒सः॒स्वा॒ध्व॒ः प॒र्व॒मा॒ना॒सो॒ऽअ॒क्र॒मुः । रा॒यि॑कृ॒ण्वं॒ति॒चे॒त्
नं ॥ दि॒व॒स्पृ॒थि॒व्या॒ऽअ॒धि॒भ॒वे॒दो॒द्यु॒न्न॒व॒र्ध॒नः । भ॒वा॒वा॒जा॒नां॒पा॒तैः ॥ तु॒भ्यं॒वा॒ता॒ऽअ॒भि॒प्रि॒य॒स्तु॒भ्य॑म॒प॒ति॑सि॒ध॒वः ।
(९।२।५) प्रा॒स्य॒धा॒रा॒इति॑प॒डु॒च॒स्य॒सू॒क्त्या॑गिर॒सो॒नृ॒मे॒धः प॒व॒मा॒न॒सो॒मो॒गा॒य॒त्री । (९।२।६) प्र॒धा॒रा॒इति॑प॒डु॒च॒स्य॒सू॒क्त्या॑गिर॒सो
वि॒दुः प॒व॒मा॒न॒सो॒मो॒गा॒य॒त्री । (९।२।७) प्र॒सो॒मा॒स॒इति॑प॒डु॒च॒स्य॒सू॒क्त्या॑रा॒ह्णो॒गो॒त॒मः प॒व॒मा॒न॒सो॒मो॒गा॒य॒त्री ।

मंडलं ९

अनु. २

॥ ५६ ॥

मोम्वधिते महः ॥ आयायव्यमर्मेतुनेत्रिनः मोमृणम् ॥ भुगानास्यगणे ॥ वुभ्यंगात्रोघृतं पयोचञ्चोऽङ्कुरे
 S अर्क्षितं ॥ वापेष्टेऽधियानेचि ॥ म्यायुगस्येनमनोभुनस्यगनेमुयं ॥ उंगेमिहासुममि ॥ २१ ॥ (९।२।८)
 प्रमोमोममृन्युत. श्रवमेनोमघोनेः । सताविदेऽअक्यु ॥ आर्धितस्यगोणोर्धिरिन्ध्वत्यद्विभिः । उंदमिद्रो
 यपीतये ॥ आर्दीहमेयथागुणनिशस्यवीचगन्मति । अलो नगोभिर्गन्ने ॥ उभेमोमापुचाह्यान्मगोननतोऽअगे
 ति । मीदंभृतस्ययोनिपा ॥ अभिगात्रोऽअनूयतयोर्जागर्भवप्रियं । अगद्वानियथाहिने ॥ अस्मधेहिगुमयद्रो
 मघवेत्रश्चमयं । मनिमेधामृतश्रवः ॥ २२ ॥ (९।२।९) प्रमोमोमोचिपुधितोर्णनयस्यमेयः । प्रनोनिमिद्रियाऽ
 इव ॥ अभिद्रोणान्निश्रवः शुक्ताऽकृतस्यधारया । त्रानंमोमैतमभग्न ॥ मताऽऽद्रोयवायवेवरूपायमन्यः ।
 सोमोऽअर्पतिविणने ॥ तिस्रोवाचुऽददीरेगायोमिमंतिधेनवः । तिमितिहनिहदत् ॥ अभिद्रोमिर्गन्तयतीकृतस्य
 मातरः । मर्मयंतेद्विचः शिशु ॥ राय. ममद्राश्चतुऽरोमभ्यमोममृतिः । आपवम्वमलुचिर्णः ॥ २३ ॥ (९।२।१०)
 प्रसुवानोधारयातनेदुहिन्वानोऽअर्पति । रुजद्वगव्योर्जना ॥ मृतऽऽद्रोयवायवेवरूपायमन्यः । मोमोऽअर्पति
 प्रसुवानोधारयातनेदुहिन्वानोऽअर्पति । रुजद्वगव्योर्जना ॥ मृतऽऽद्रोयवायवेवरूपायमन्यः । मोमोऽअर्पति

(९।२।८) प्रमोमामरुतिपट्टवस्यमृतस्यानेय. दयावाशः पमानमोमोः गात्री । (९।२।९) प्रमोमामरुतिपट्टवस्यमृतस्यानेय. दयावाशः पमानमोमोः गात्री ।

पमानमोमोः गात्री । (९।२।१०) प्रसुवानरुतिपट्टवस्यमृतस्यानेय. दयावाशः पमानमोमोः गात्री ।

ऋक्सं.

अ.६अ. ८

॥ ५७ ॥

विष्णवे ॥ वृषाणं वृषभिर्युतं सुन्वत्सोममाद्रिभिः । दुहंति शक्मनापर्यः ॥ भुवन्त्रितस्य मज्यो भुवदिद्रायमत्सरः । सं
रूपैरज्यते हरिः ॥ अभीमत्तस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः । चारुप्रियतमं हविः+ ॥ समेन महता ऽइमा गिरा ऽअर्पति स
सुतः । धेनुर्वाश्रो ऽअवीवशत् ॥ २४ ॥ (९।२।११) आनः पवस्व धारया पवमानरुचिपुंशुं । यया ज्योतिर्विदा
सिनः ॥ इदो समुद्रमीखय पवस्व विश्वमेजय । रायो घृतान् ऽओजसा ॥ त्वया वीरेण वीरवो भिव्यामपृतन्यतः । क्षरा
पो ऽअभिवार्य ॥ प्रवाजमिदुरिष्यतिसिपासन्वाजसा ऽऋषिः । वृता विद्वान् ऽआयुधा ॥ तंगी भिवाचमीखयं पुनानं
वांसयामसि । सोमं जनस्य गोपतिं ॥ विश्वो यस्य वृते जनो दाधार धर्मण्यसतैः । पुनानस्य प्रभूवसोः ॥ २५ ॥ (९।२।१२)
असर्जिरथ्यो यथापवित्रे च र्ग्वोः सुतः । कर्षमेन्वाजीन्यक्रमीत् ॥ सवर्हिः सोमजागृविः पवस्व देव वीरति । अभिकोशं
मधुश्चुतं ॥ सनोज्योतीं पिपूव्य पवमानु विरोचय । कृत्वेदक्षायनो हिनु ॥ शुभमानं ऽऋतायुर्भिर्मज्यमानो गभस्त्योः ।
पवते वारं ऽअव्यये ॥ सविश्वा दाशुपेव सुसोमो दिव्यानि पार्थिवा । पर्वता मां तरिक्ष्या ॥ आदिवस्पृष्टमं श्वयुर्गव्ययुः
सोमरोहसि । वीरयुः शवसस्पते ॥ २६ ॥ (९।२।१३) ससुतः पीतयेवृषा सोमः पवित्रे ऽअर्पति । विघ्नत्रक्षां सिदेवयुः+ ॥
(९।२।११) आनः पवस्वेति पट्टचस्य सूक्तस्यागिरसः प्रभूवसुः पवमानसोमो गायत्री । (९।२।१२) असर्जाति पट्टचस्य सूक्तस्यागिरसः
प्रभूवसुः पवमानसोमो गायत्री । (९।२।१३) ससुत इति पट्टचस्य सूक्तस्यागिरसो रहूगणः पवमानसोमो गायत्री ।

मंडलं. ९

अनु. २

॥ ५८ ॥

ऋक्सं.

आ. ६ अ. ८

॥ ५८ ॥

ऽअक्रमीदुभिर्विश्वामुधोविचर्षणिः । शंभंतिविप्रधीतिभिः ॥ आयोनिमरुणोऽरुहद्रमदिन्द्रव्यासुतः । ध्रुवेसदसिषी
दति ॥ नूनोरयिमहामिदोस्मभ्यंसोमविश्वतः । आपवस्वसहस्रिणं ॥ विश्वासोमपवमानद्युम्नानीदुवारभर । वि
वृषन्निदोनऽउक्थ्यं ॥ ३० ॥ (९।२।१७) प्रयेगावोनभूण्यस्त्वेषाऽअयासोऽअर्कमुः । ध्रुवोऽद्विहसंरुधिं ।
सुवितस्यमनामहेतितेतेतुदुराव्यं । साह्वांसोदस्युमव्रतं ॥ शृण्वेष्टेरिवस्वनःपवमानस्यशुष्मिणः । चरंतिविद्युतो
द्विव ॥ आपवस्वमहीमिधंगोमदिदोहिरण्यवत् । अश्वोवद्वज्रवत्सुतः ॥ सपवस्वविचर्षणऽआमहीरोदसीपुण ।
उपाःसूर्योनरदिमभिः ॥ परिणःशर्मयत्याधारचासोमविश्वतः । सरारसेवविष्टपं ॥ ३१ ॥ (९।२।१८) जनय
त्रोचनानाद्यत्तुपयैपवतेवार्जसातये । सोमःसहस्रपाजसः ॥ दुहानःप्रलमितपयःपवित्रेपरिषिच्यते । क्रदन्देवोऽअं
जीजनत् ॥ अभिविश्वानिवायुभिर्देवोऽकृतावृधः । सोमःपुनानोऽअर्षति ॥ गोमन्नःसोमवीरवदश्वोवद्वज्रवत्सुतः
(९।२।१७) प्रयेगावइतिपटुचस्यसूक्तस्यकाण्वोभेध्यातिथिःपवमानसोमोगायत्री । (९।२।१८) जनयन्नितिपटुचस्यसूक्तस्य

॥ ५८ ॥

मंडलं ९

अनु- २

॥ इति षष्ठाष्टकः समाप्तः ॥

॥ अथसप्तमाष्टकप्रारंभः ॥

ॐ प्रणोयास्यः सपवस्वासुप्रन्नयासोमः पंचकविर्भगवस्तत्वापवस्वोत्तेऽशुष्मास उच्योऽध्वर्योपरिद्युक्षते चतु
ष्कमवत्सारोऽस्य ग्रहांचयवर्षपरिसोमः प्रतेधारास्तरत्सपवस्वप्रगायत्रेणोपांत्यापुरउर्णिगयावीतीत्रिंशदमहीशु
रेतेऽअसृग्रंजमदगिरापवस्वनिधुविः कारयपोवृयासोमकश्यपः ॥ १ ॥

हरिः ओम् ॥ (९।२।२०) प्रणऽइंदोमहेतनंऽऊर्मिनविच्रदपसि । अभिदेवोऽअयास्यः ॥ मतीजुष्टोधि्या
ह्रितः सोमोहिन्वेपरावति । विग्रस्यधारयाकुविः⁺ ॥ अयंदेवेषुजायुविः सुतऽएतिपवित्रऽआ । सोमोयातिविचर्ष
णिः ॥ सनः पवस्ववाजुयुश्चक्राणश्चारुमध्वरं । वहिष्माऽआविवासति ॥ सनोभगायवायवेचिग्रवीरः सुदावृधः । सो
मोदेवेष्वायमत् ॥ सनोऽअद्यवसुत्तयेऽक्रतुविद्वानुवित्तमः । वाजं जेपिश्रवोवृहत् ॥ १ ॥ (९।२।२१) सपवस्वमदाय
कं न चक्षादेववीतये । इंदुविद्रायपीतये ॥ सनोऽअर्षाभिदुत्यंशुत्वमिद्रायतोशसे । देवान्सखिभ्यऽआवरं ॥ उतत्वा
मरुणवयंगोभिरेज्जुमोमदायकं । विनोरायेदुरोवृधि ॥ अत्यूपवित्रमक्रमीद्वाजीधुरं नयामनि । इंदुदेवेषुपत्यते ॥ स
मीसर्वायोऽअस्वरन्वनेऽकीळंतुमत्यविं । इंदुनावाऽअनूपत ॥ तयापवस्वधारं याययापीतोविचक्षसे । इंदोस्तोत्रेषु

(९।२।२०) प्रणइंदुवितिपडुचससूक्स्यांगिरसोयास्यः पत्रमानसोमोगायत्री । (९।२।२१) सपवस्वोतिपडुचससूक्स्यांगिरसो
यास्यः पवमानसोमोगायत्री ।

• ऋक्सं.

अ. ७ अ. १

॥ २ ॥

वीर्यं ॥ २ ॥ (९।२।२२) असृग्नेद्वीतयेत्यासः कृत्याऽइव । क्षरतः पर्वतावृधः ॥ परिष्कृतासऽइद्वोयोवेवपि
त्र्याचती । वायुसोमसऽअसृक्षत ॥ एतेसोमसऽइद्वः प्रयस्वतश्चमूसुताः । इद्वर्धतिकर्मभिः ॥ आधावतासुह
स्त्यः शुक्रागृभीतमंथिना । गोभिः श्रीणीतमत्सरं ॥ सपवस्वधनं जयप्रयुं ताराधसोमहः । अस्मभ्यसोमगातुवि
तुभ्यवर्धत । मंदानऽज्जृषायते ॥ इन्द्रायमत्सरं ॥ ३ ॥ (९।२।२३) अयासोमः सुकृत्ययोमहाश्च
सोवजः सहस्रसाभुवत् । उक्थंयदस्य जायते ॥ ४ ॥ (९।२।२४) तं त्वानुमृगानि विभ्रंतं सधस्थे पुमहोदि
पासतूरयीणां वाजेष्ववतामिव । भरेषु जिग्युषामसि ॥ ५ ॥ (९।२।२५) पर्वस्वष्टिमासु नोपाममिद्विस्पर्षि । अ
वः । चारुसुकृत्ययेमहे ॥ संवृक्तधृणुमवर्धमहामहिमतमदं । शतं पुरोरुक्षणि ॥ अतस्त्वारयिमभिराजनं सुकृतो
दिवः । सुपर्णोऽअव्यधिर्भरत् ॥ विवर्धस्माऽइत्स्वहोसाधारणं रजस्तुरं । गोपामतस्य विर्भरत् ॥ अधाहिन्या नऽइ
द्रियं ज्यायोमहित्वमानशे । अभिष्टिक्कद्विचर्षणिः ॥ ५ ॥ (९।२।२५) पर्वस्वष्टिमासु नोपाममिद्विस्पर्षि । अ
(९।२।२२) असृग्नेति पटुचस्य सूक्त्यांगिरसो यास्यः पवमानसोमो गायत्री । (९।२।२३) अयासोम इति पंचचस्य सूक्त्यभार्गवः कविः । अ
पवमानसोमो गायत्री । (९।२।२४) तं त्वेति पंचचस्य सूक्त्यभार्गवः कविः पवमानसोमो गायत्री । (९।२।२५) पवस्वेति पंचचस्य सूक्त्य

मंडलं ९

अनु. २

॥ २ ॥

यक्ष्मावृहुतीरिषः ॥ तयोपवस्वधारयायागार्वऽइहागमन् । जन्यासऽउपनोगृहं ॥ घृतंपवस्वधारयायज्ञेषुदेववीतमः ।
 अस्मभ्यं ब्रुष्टिमापव ॥ सनऽऊर्जेव्यं व्ययंपवित्रं धावधारया । देवासः शृण्वन्निहं ॥ पर्वमानोऽसिष्यदुद्रक्षोऽस्यपजंघ
 नत् । प्रलवद्रोचयुन्नृचः ॥ ६ ॥ (९।२।२६) उत्ते शुभ्मासऽईरतेसिंधोर्भूमैरिवस्वनः । वाणस्यचोदयापविं ॥ प्रसवेत्तऽ
 उदीरतेत्सोवाचोमखस्युर्वः । यदव्यऽएपिसानवि ॥ अव्योवारेपरिप्रियंहरिहिवं त्यद्रिभिः । पर्वमानंमधश्चुत् ॥
 आपवस्वमादितमपवित्रं धारयाकवे । अर्कस्ययोनिसदं ॥ सपवस्वमादितमगोभिरजानोऽअक्तुभिः । इन्द्रविद्रायपी
 तये ॥ ७ ॥ (९।२।२७) अध्वर्योऽअद्रिभिः सुतसोमपवित्रऽआसृज । पुनीहोद्रायुपातवे ॥ दिवः पीयूषमुत्तमंसो
 ममिन्द्रायवज्रिणो । सुनोतामधुमत्तमं ॥ तवत्यऽईद्रोऽअंधसोदेवामधोर्व्यश्रते । पर्वमानस्यमरुतः ॥ त्वंहिसो
 मवर्धयन्त्सुतोमदोयभूर्णये । वृषन्त्सोतारमतये ॥ अभ्यर्धविचक्षणपवित्रं धारयासुतः । अभिवाजमुतश्रवः ॥ ८ ॥
 (९।२।२८) परिद्युक्षः सनद्रयिर्भरुद्रार्जनोऽअंधसा । सुवानोऽअर्षपवित्रऽआ ॥ तवप्रलेभिरध्वभिरव्योवारे
 परिप्रियः । सहस्रधारोयात्तना ॥ चरुनयस्तमीख्येदोनदानमीख्य । वृधैर्वधस्तवीख्य ॥ निशुष्ममिंदेवेषांपुरुहूत

मार्गवः कविः पवमानसोमोगायत्री । (९।२।२६) उत्ते शुभ्मास इति पंचर्वसूक्तस्यागिरस उच्यते । पवमानसोमोगायत्री । (९।२।२७) अथ
 यो इति पंचर्वसूक्तस्यागिरस उच्यते । पवमानसोमोगायत्री । (९।२।२८) परिद्युक्ष इति पंचर्वसूक्तस्यागिरस उच्यते । पवमानसोमोगायत्री

ऋक्सं.

अ. ७ अ. १

॥ ३ ॥

जनीनां । योऽअस्माँऽआदिदेशति ॥ शतनंऽइदंऽऊतिभिः सहस्रैवाशुचीनां । पर्वस्वमंहयद्रयिः ॥ ९ ॥ (९।२।२९)
उत्तेशुष्मासोऽअथरक्षोभिर्दंतोऽअद्रिवः । नुदस्वयाः परिस्पृधः ॥ अयानिजिघ्रिरोजसारथसंगेधनैहिते । सत्वाऽअ
विभ्युषाहृदा⁺ ॥ अस्यव्रतानिनाधृषेपवमानस्यदुह्या । रुजयस्त्वापृतन्यति ॥ तंहिन्वंतिमदुच्युतंहरेनदीषुवाजिनै ।
इंदुमिंद्रयिमत्सरं⁺ ॥ १० ॥ (९।२।३०) अस्यप्रलामनुद्युतंशुक्रंदुदुह्मेऽअहयः । पयः सहस्रसामृषि । अयंसूर्येऽइवोपहग्यं
सरांसिधावति । सप्तप्रवतऽआदिर्व ॥ अयंविश्वानितिष्ठतिपुनानोभुवनोपरि । सोमोदेवोनसूर्यः ॥ परिणोदेववीतये
वाजौऽअर्षसिगोमतः । पुनानऽइदविद्र्युः⁺ ॥ ११ ॥ (९।२।३१) यवयवंनोऽअंधसापुष्टुपुष्टुपरिस्त्रव । सोमवि
श्वचसौभगा ॥ इंदोयथातवस्तवोयथातेजातमंधसः । निर्वहिषिप्रियेसदः ॥ उतनो गोविदंश्ववित्पर्वस्वसोमांध
सा । मधूतमेभिरर्हभिः ॥ योजिनातिनजीयतेहंतिशत्रुमभीत्य । सर्पवस्वसहस्रजित् ॥ १२ ॥ (९।२।३२) परि
सोमऽक्रतंवहडाशुःपवित्रैऽअर्षति । विम्रन्नक्षंसिदेव्युः ॥ यत्सोमोवाजमर्षतिशतधाराऽअपस्युवः । इंद्रस्यसुख्य
(९।२।२९) उत्तेशुष्मासइतिचतुर्ऋचस्यसूक्तस्यकाश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्री । (९।२।३०) अस्यप्रलामितिचतुर्ऋचस्य
सूक्तस्यकाश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्री । (९।२।३१) यवयवमितिचतुर्ऋचस्यसूक्तस्यकाश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्री ।
(९।२।३२) परिसोमइतिचतुर्ऋचस्यसूक्तस्यकाश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्री ।

मंडलं ९

अनु. २

॥ ३ ॥

माविशन् ॥ अभिवायोपणोदशजानंनकन्यानुपत । मज्यसैसोमसातये ॥ त्वमिन्द्रायविष्णवेस्वादुरिदोपरिस्वव ।
 नन्तलोदृग्पाहंसः ॥ १३ ॥ (९।२।३३) प्रतेधाराऽअसश्चतोदिवोनयंतिष्टुर्यः । अच्छावाजैसहृस्त्रिणं ॥ अ-
 समर्मृजानडायुभिरिभोरजेवसुव्रतः । समर्मृजानडायुधा ॥ (९।२।३४) तरत्समं
 हारिस्तुजानडायुधा ॥ पुनानडैद्वामर ॥ १४ ॥ (९।२।३५) पर्वस्व
 मिप्रियाणिकाव्याविश्वाचक्षानोऽअर्पति । हारिस्तुजानडायुधा ॥ पुनानडैद्वामर ॥ १५ ॥ (९।२।३५) पर्वस्व
 द्येनोनवंशुपीदति ॥ सनोविश्वोदिवोवसतोपथिव्याऽअधि । पुनानडैद्वामर ॥ १५ ॥ (९।२।३५) पर्वस्व
 दीधावतिधारासुतस्यांधसः । तरत्समंदीधावति ॥ उस्त्रावेद्वामर ॥ १५ ॥ (९।२।३५) पर्वस्व
 रासहस्राणिदद्महे । तरत्समं ॥ आययोस्त्रिशतंनसहस्राणिचुदद्महे । तरत्समं ॥ १५ ॥ (९।२।३५) पर्वस्व
 नोजिदश्वजिद्विश्वजित्सोमरण्यजित् । प्रजावद्रलामर ॥ पर्वस्वाद्वोऽअदाम्यःपर्वस्वोपधीभ्यः । पर्वस्वधिपणा
 भ्यः ॥ त्वंसोमपर्वमानोविश्वानिदुरितार् । कविःसीदुनिवर्हिप ॥ पर्वमानःस्वर्विदोजायमानोभवोमहान् । इंदो
 विश्वोऽअभीदसि ॥ १६ ॥ (९।२।३६) प्रगायत्रेणगायतपर्वमानंविचर्षणिं । इंदुसहस्रचक्षसं ॥ तंत्वोसहस्रचक्ष
 विश्वोऽअभीदसि ॥ १६ ॥ (९।२।३६) तरत्समंदीतिचतुर्कचस्यसूक्तस्य

(९।२।३३) प्रतेधाराइतिचतुर्कचस्यसूक्तस्यकाश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्री । (९।२।३४) तरत्समंदीतिचतुर्कचस्यसूक्तस्य
 काश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्री । (९।२।३५) पर्वस्वेतिचतुर्कचस्यसूक्तस्यकाश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्री । (९।२।३६) प्रगाय
 त्रेणेतिचतुर्कचस्यसूक्तस्यकाश्यपोवत्सारःपवमानसोमोगायत्रीरुततीयापुरउष्णिक् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. १

॥ ४ ॥

मंडलं ९

अनु. ३

॥ ४ ॥

समथोसहस्रभर्णसं । अतिवारमपाविषुः ॥ अतिवारान्पर्वमानोऽअसिष्यदत्कलशोऽअभिधावति । इन्द्रस्यहाद्यो
विशन् ॥ इन्द्रस्यसोमराधेशंपवस्वविचर्षणे । प्रजावद्रेतुऽआभर ॥ १७ ॥ (१।३।१) अयावीतीपरिस्त्रव्य
स्तऽइंदोमदेष्वा । अवाहन्नवतीर्नव ॥ पुरःसद्यऽइत्थाधिद्येदिवोदासायशंबरं । अधृत्यंतुवशयदु ॥ परिणोऽअ
श्वमश्वविज्ञोमदिंदोहिरण्यवत् । क्षरांसहृक्षिणीरिषः ॥ पर्वमानस्यतेव्यंपवित्रमभ्युदुतः । सखित्वमावृणीमहे ॥
येतेपवित्रमर्मयोभिक्षरतिधारया । तेभिर्नःसोममृळ्य ॥ १८ ॥ सनःपुनानऽआभरयिवीरवतीमिषं । ईशानःसो
मविश्वतः ॥ एतमुत्यं दशक्षिपोमजंतिंसिंधुमातरं । समोदित्येधिरख्यत ॥ समिंद्रेणोतवायुनासुतऽएतिपवित्रऽआ ।
संसूर्यस्वरदिमभिः ॥ सनोभगायवायेपूष्णेपवस्वमधुमान् । चारुभिन्नेवरुणेच ॥ उच्चातैजातमंधसोदिविषद्भूम्या
ददे । उग्रशर्ममहिश्रवः ॥ १९ ॥ एनाविश्वान्यर्च्यऽआद्युन्नानिमानुषाणां । सिषांसतोवनामहे ॥ सनऽइंद्राययज्य
नोगिरोवत्संसंश्रिश्चरीरिव । यऽइंद्रस्यहृदंसनिः ॥ अर्षीणःसोमशंगवधुक्षस्वपिप्युषीमिषं ॥ तमिदधंतु
॥ २० ॥ पर्वमानोऽअजीजनद्विचश्चित्रंनर्तन्यतुं । ज्योतिर्वैश्वानरंवहत ॥ पर्वमानस्यतेरसोमदौराजन्नदुच्छुनः ।
वृतीयेनुवाकेसप्तसूक्तानि (१।३।१) अयावीतीतित्रिशद्वचस्यसूक्तस्यागिरसोऽमहीयुःपवमानसोमोगायत्री ।

विवारमव्यमर्षति ॥ पर्वमानरसस्तवदक्षो विराजतिद्युमान् । ज्योतिर्विभ्वंहृशे⁺ ॥ यस्तेमद्वोवरैण्यस्तेनोपवस्वांध
 सा । देवावीरघशंसा⁺ ॥ जघ्निर्वृत्रमभिन्त्रियंसस्त्रिवाजीद्वेदिवे । गोपाड्डेऽअश्वसाडसि ॥ २१ ॥ संमिश्रोऽअ
 रूपेभंवसूपस्थाभिर्नधेनुभिः । सीदन्छयेनोनयोनिमा⁺ ॥ सपवस्वयऽआविर्धद्रव्रायुहंतवे । वत्रिवांसमहीरपः⁺ ॥ सोमव्रतेषुजा
 सुवीरसोवयंधनाजयेमसोममीढुः । पुनानोवर्धनो गिरः ॥ त्वोतासस्तवावसास्यामवन्वतंऽआमुरः । सोमव्रतेषुजा
 गृहि ॥ अपघ्नन्पवतेमृधोपसोमोऽअरावणः । गच्छन्निरस्यनिष्कृतं⁺ ॥ २२ ॥ महोनोरायऽआभर्गपवमानजहीमृ
 घः । राखंदोवीरवृद्धाशः ॥ नत्वाशतंवहृतोराधोदित्संतमामिनन् । यत्पुनानोमखस्यसे ॥ पर्वस्वेदोवृषासुतःकुधी
 नोयशसोजने । विश्वाऽअपद्धिषो जहि ॥ अस्यतेसख्येवयंतवैदोद्यन्नाड्डत्तमे । सासह्यामपृतन्यतः⁺ ॥ यातेभीमा
 न्यायुधातिगमानिसंतिधूर्वणे । रक्षासमस्यनोनिदः⁺ ॥ २३ ॥ (९।३।२) एतेऽअसृग्रमिदवस्तिरःपवित्रमाशवः ।
 विश्वान्यभिसौभगा ॥ विघ्नंतोदुरितापुरुसगातोकार्यवाजिनः । तनाकृण्वंतोऽअर्वते ॥ कृण्वंतोवरिवोगेवैम्यर्षतिसु
 द्रुति । इळांसमभ्यस्यत ॥ असाव्यंशुर्मदयाप्सुदक्षौ गिरिष्ठाः । ज्येनोनयोनिमासदत् ॥ शुभ्रमंधोदेववातमप्सु
 धृतोन्नुभिःसुतः । स्वदंतिगावःपयोभिः ॥ २४ ॥ आदीमभ्वनहेतारोशुभन्नमृताय । मध्वोरसंसधमादे ॥ यास्ते

घृतोन्नुभिःसुतः । स्वदंतिगावःपयोभिः ॥ २४ ॥ आदीमभ्वनहेतारोशुभन्नमृताय । मध्वोरसंसधमादे ॥ यास्ते

(९।३।२) एतेअसृग्रमितिनिशहचस्यसूक्तस्यभार्गवोजमदभिःपवमानसोमोगायत्री ।

धारामधुश्चुतोसुग्रमिंदऽकृतये । तामिःपवित्रमासदः ॥ सोऽअष्वद्रायपीतयेतिरोमाण्यव्यया । सीदुन्योनावने
 ब्वाः ॥ त्वमिंदोपरिस्वस्वाद्विष्टोऽअंगिरोभ्यः । वरिवोविद्वृधतंपयः ॥ अयंविचर्षणिर्हितःपर्वमानःसचेतति ।
 हिन्यानऽआप्यंबुहत् ॥ २५ ॥ एषपृषावृषव्रतःपर्वमानोऽअशस्तिहा । करद्वसूनिदाशुषे ॥ आपवस्वसहस्रिणंर
 यिगोर्मतमश्विनं । पुरुश्चंद्रंरुस्पृहं ॥ एषस्यपरिषिच्यतेमर्मज्यमानऽआयुभिः । उरुगायःकृचिक्तुः ॥ सहस्रोतिः
 श्रतामघोविमानोरजसःकृविः । इंद्रायपवतेमदः ॥ गिराजातऽइहस्तुतऽइंदुरिंद्रायधीयते । वियोर्नावसुताविव
 ॥ २६ ॥ पर्वमानःसुतोवृभिःसोमोवार्जमिवासरत् । चमषुशकर्मनासदं ॥ तंत्रिपृष्ठेत्रिवंधुरैथेयुजंतियातवे । ऋषी
 णांसप्तधीतिभिः ॥ तंसौतारोधनस्पृतमाशुवाजाययातवे । हरिहिनोतवाजिनं ॥ आविशन्कलशंसुतोविश्वाऽअर्षेन्न
 भिश्रियः । शूरोनगोर्षुतिष्ठति ॥ आर्तऽइंदोमदायुकंपयोदुहंत्यायवः । देवादेवेभ्योमधु ॥ २७ ॥ आनःसोमंपवि
 त्रऽआसजतामधुमत्तमं । देवेभ्योदेवश्रुत्तमं ॥ एतेसोमाऽअसृक्षतगुणानाःश्रवसेमहे । मदिन्तमस्यधारया ॥ अभि
 गव्यानिवीतयेनृग्णापुनानोऽअर्षसि । सनद्धाजःपरिस्त्रव ॥ उतनोगोर्मतीरिषोविश्वाऽअर्षपरिष्टुभः । गुणानोजमदं
 श्रिना ॥ पर्वस्ववाचोऽअश्रियःसोमचित्राभिरूतिभिः । अभिविश्वानिकाव्या ॥ २८ ॥ त्वंसमुद्रियाऽअपौश्रियोवाचं
 ऽईरयन् । पर्वस्वविश्वमेजय ॥ तुभ्येमासुर्वनाकवेमहिम्नेसोमतस्थिरे । तुभ्यमर्थतिसिंधवः ॥ प्रतैदिवोनवृष्टयोधा

रायंलस्रश्चतः । अभिशुक्रानुपस्तिरं ॥ इन्द्रायेंदुपुनीतनोग्रं दक्षायसाधनं । ईशानंवीतिराधसं ॥ पर्वमानऽऽकृतः कृचिः
 सोमः पवित्रमासदत् । दधत्तोत्रेसुवीर्यं ॥ २९ ॥ (९।३।३) आपर्वस्वसहृस्त्रिणं रयिंसौमसवीर्यं । अस्सेश्रवासि
 धारय ॥ इपमूर्जैचपिन्वसुऽइन्द्रायमत्सरिन्तमः । चमूष्वानिपीदसि ॥ सुतऽइन्द्रायविष्णवे सोमः कलशेऽअक्षरत् ।
 मधुमोऽअस्तुवायवे ॥ एतेऽअसृग्रमाशवोतिहिरासिवश्रवः । सोमाऽऽकृतस्यधारया ॥ इन्द्रवर्धतोऽअसुरः कृण्वंतो वि
 श्वसार्थं । अपघ्नंतोऽअरांणाः ॥ ३० ॥ सुताऽअनुस्वमारजोभ्यर्षतिवश्रवः । इन्द्रगच्छतुऽइन्द्रवः ॥ अयापर्वस्वधार
 याययासूयमरोचयः । हिन्वानोमानुपीरपः ॥ अयुक्तसूतऽएतं शंपर्वमानोमनावर्धं । अंतरेक्षेणयातवे ॥ उत्तया
 हूरितोदशसूरोऽअयुक्तयातवे । इंदुरिन्द्रऽइतिव्रुवन् ॥ परीतोवायवैसुतं गिरुऽइन्द्रायमत्सरं । अव्योवारैपुसिंचत
 ॥ ३१ ॥ पर्वमानविदारयिमसभ्यसोमदुष्टरं । योदूणाशौवननुयुता ॥ अभ्यर्षसहृस्त्रिणं रयिंसौमसवीर्यं । अमि
 वाजंमृतश्रवः ॥ सोमोऽइन्द्रायवज्रिणे सोमासोदध्योशिरः । पवित्रमत्यक्षरन् ॥ ३२ ॥ प्रसोममधुमत्तमोरायेऽ
 वाजंमृतश्रवः ॥ सुताऽइन्द्रायवज्रिणे सोमासोदध्योशिरः । पवित्रमत्यक्षरन् ॥ ३२ ॥ प्रसोममधुमत्तमोरायेऽ
 अर्पयपवित्रऽआ । मद्योयेदेववीतमः ॥ तमीमृजंत्यायवोहरि नदीपुत्राजिनं । इंदुमिद्रायमत्सरं ॥ आपर्वस्वहिरण्य

(९।३।३) आपवस्वेति त्रिशदृचत्वात् कस्यकाश्रयपोनिष्ठुविः पर्वमानसोमोगायत्री ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. १

॥ ६ ॥

वदध्वावत्सोमवीरवत् । वाजंगोमत्तमाभर ॥ परिवाजेनवाज्युमव्योवारोऽसिचत । इन्द्रायमधुमत्तमे ॥ कविर्मृजंति
मज्जीधीभिर्विप्राऽअवस्वः । वृषाकनिऋदर्थेति ॥ ३३ ॥ वृषणंभीभिरसुरंसोममत्तस्यधारया । मतीविप्राःसमस्वर
विश ॥ अपुमन्यवसेमृधःऋतुवित्सोममत्सरः । नुदस्वादवयुंजनं ॥ पर्वमानाऽअसृक्षतसोमाःशुक्रासऽइंदवः । प्रियःसमद्रमा
विश्वानिकाव्या ॥ ३४ ॥ पर्वमानासऽआशवःशुभ्राऽअसृग्रमिंदवः । प्रतोविश्वऽअपुद्विषः ॥ पर्वमानादिवस्पयं
तरिक्षादसृक्षत । पथिव्याऽअधिसानवि ॥ पुनानःसोमधार्येदोविश्वऽअपुसिधः । जहिरक्षांसिसुक्रतो ॥ अपुम
न्तोमरुक्षसोभ्यर्षकनिऋदत् । द्युमंतंशुष्ममुत्तमं ॥ असेवसूनिधारयसोमदिव्यानिपाथिवा । इंदोविश्वानिवायं
॥ ३५ ॥ (९।३।४) वृषासोमद्युमाऽअसिदृषादेववृषव्रतः । वृषाधर्माणिदधिषे । वृषणस्तेवृषण्यंशवोपृषावनंचृषा
मदः । सत्यंवृषन्वृषेदसि ॥ अश्वोनचक्रदोवृषासंगऽइंदोसमवतः । विनोरायेदुरोवृधि ॥ असृक्षतप्रवाजिनोऽगव्या
सोमासोऽअश्वया । शुक्रासोवीरयाशवः ॥ शुभमानाऽअकृतायुभिर्मज्ज्यमानागर्भस्थोः । पर्वतेवारोऽअव्यये ॥ ३६ ॥
तेविश्वऽआद्येवसुसोमादिव्यानिपाथिवा । पर्वतामांतरिक्ष्या ॥ पर्वमानस्यविश्ववित्पतेसर्गाऽअसृक्षत । सूर्यस्येव
(९।३।४) वृषासोमेतित्रिशदचसृक्षस्यमारीचःकश्यपःपवमानसोमोगायत्री ।

मंडलं ९

अनु. ३

॥ ६ ॥

[illegible]

ऋक्सं.

अ. ७ अ. २

॥ ७ ॥

वाज्यं कमीत् । सीदं तो वनुषो यथा ॥ ऋधक्सोमस्वस्तये संजमानो दिवः कविः । पर्वस्वसूयो हृशे ॥ १ ॥

एकोनपंचाशाध्यायेवर्गाः ४१ सूक्तानि २१ ऋचः ११६ ऋचः १२६३ ॥

हिन्वंति भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्विश्वामित्रो जमदग्निर्विश्विष्ट इतीह तृचाः सप्तर्षयः १२६३ ॥

इवाजः कश्यपो गोतमो त्रिविश्वा मित्रो जमदग्निर्विश्विष्ट इतीह तृचाः सप्तर्षयः १२६३ ॥

मत्स्यो नित्यद्विपदा गायत्र्योऽवितानस्तिष्ठः पौष्ण्यो वायते पवित्रं पंचाग्न्यैः सावित्र्यग्नि सावित्री वैश्वदेवी वासा

मंत्यास्त्रिंशी पुरः षण्णक्सप्तविंशत्यनुष्टुवंत्ये च ते पावमान्यथे तृस्तुती जागतमूर्ध्वप्रागुशनसः प्रदेवंदशवत्सर्पिर्भा

लंदनस्त्रिष्टुवंतं हेतुर्न हिरण्यस्तूपौत्ये त्रिष्टुभौ त्रिरस्मरेणुरादक्षिणानवक्रभस्तौ वैश्वा मित्रौ हरिहरिर्मतः सक्केपवि

त्रः शिशुर्न कक्षी वांस्त्रिष्टुवष्टम्याभिप्रियाणि पंचकविः ॥ २ ॥

॥ हरिः ओम् ॥ (९।३।५) हिन्वंति सूरमुत्तयुः स्वसारो जामयुस्पतिं । मुहामिंदुमहीयुवः ॥ पर्वमानरुचार्चुचा

(९।३।५) हिन्वंतीति त्रिंशदक्षसूक्तस्य वारुणिर्भृगुः पवमानसो भोगायत्री । (अत्र मार्गवोजमदग्निः पाक्षिकः) ।

मंडलं ९

अनु. ३

॥ ७ ॥

देवोदेवेभ्यस्परि । विश्वावसन्त्याविश ॥ आपवमानसुष्टुतिंष्टुदेवेभ्योदुर्वः । इयेपवस्वसंयतं ॥ वृषाह्यसिभानुना
द्वामतैत्वाहवामहे । पवमानः स्वाध्यः ॥ आपवस्वस्ववीर्यमंदमानः स्वायुध । इहोष्विदुवागहि ॥ १ ॥ यदग्निः प
रिविच्यसेमज्यमानो गभस्त्योः । द्रुणासधस्थमश्रुपे ॥ प्रसोमायव्यश्ववत्पवमानायगायत । महेसहस्रचक्षसे ॥ य
रिषिच्यसेमज्यमानो गभस्त्योः । इंदुमिंद्रायपीतये ॥ तस्य ते वाजिनो वयं विश्वाधनो निजिगुपः । सखित्वमावृणी
स्वर्षणीमधुश्चतुर्हरिं हिन्वंत्याद्रिभिः । इंदुमिंद्रायपीतये ॥ २ ॥ तंत्वाधर्तारमोण्योऽङ्गुः पवमानस्वईशं ।
महे ॥ वृषापवस्वधारयामरुत्वतेचमत्सरः । विश्वादधानुऽओजसा ॥ युजंवाजेपुचोदय ॥ आनेऽइंदोमहीमिपुंवस्वविश्वद
हिन्वेवाजेषुवाजिनं ॥ अयाचितो विपानयाहरीः पवस्वधारया । युजंवाजेपुचोदय ॥ आनेऽइंदोमहीमिपुंवस्वविश्वद
शतः । अस्मभ्यसोमगातुवित् ॥ आकलशाऽअनृतं दोधाराभिरोजसा । एंद्रस्यपीतये विश ॥ यस्य ते मध्वरसैतीत्रं
दुहंत्यद्रिभिः । सपवस्वाभिमातिहान् ॥ ३ ॥ राजामेधाभिरीयते पवमानो मनावधि । अंतरिक्षेणयातवे ॥ अ
इंदोशतग्विगंवापोपंस्वर्ध्य । वह्नाभगत्तिमतये ॥ आनः सोमसहो जुरो रूपनवर्चसेभर । सुष्वाणो देववीतये ॥ सोमोऽ
वीसोमद्युमत्तमोभिद्रोणानिरोरुवत् । सीदन्धुधेनोनयोनिमान् ॥ अप्साऽइंद्रायवायेवरुणायमरुद्भ्यः । सोमोऽ
पतित्विष्णवे ॥ ४ ॥ इयंतो कार्यनो दधंदुस्मभ्यसोमविश्वतः । आपवस्वसहस्रिणं ॥ ये सोमासः परावतिथेऽर्वावति
सुन्विरे । येवादः शर्यणावति ॥ यऽआर्जीकेषु कृत्वस्येमभ्यैपस्त्यानां । येवाजनेषुपंचसु ॥ तेनोवृष्टिं दिवस्पपरिपवता

ऋक्सं.

अ. ७ अ. २

॥ ८ ॥

मासवीर्यं । सुवानादेवासऽइंदवः ॥ पर्वतेहयतोहरिर्गुणानोजमदधिना । हिन्वानोगोराधित्वचिन् ॥ ५ ॥ प्रशुक्रा
सौवयो जुवो हिन्वाना सोनससयः । श्रीणानाऽअप्सुमृजत ॥ तंवासुतेष्वाभुवो हिन्विरेदेवतातये । सर्पवस्वानयोरु
चा ॥ आतेदक्षमयोभुववाहिमद्यावृणीमहे । पांतमापुरुस्पृह ॥ आमुद्रमावरण्यमाविप्रमर्मनीषिणं । पांतमा ॥
आरयिमासुचेतुनमासुक्रतोतनूष्या । पांतमा ॥ ६ ॥ (९।३।६) पर्वस्वविश्वचर्षणेभिर्विश्वानिकाव्या । सखासखि
भ्यऽईर्ज्यः ॥ ताभ्यांविश्वस्यराजसियेपवमानुधामनी । मृतीचीसोमतस्थतुः ॥ परिधामानियानेतुंत्वंसोमासिविश्व
तः । पर्वमानऽऋतुभिःकवे ॥ पर्वस्वजनयन्निषोभिर्विश्वानिवार्यो । सखासखिभ्यऽऋतये ॥ तवशुक्रासोऽअर्चयो
दिवस्पष्टेवितन्वते । पवित्रंसोमधामभिः ॥ ७ ॥ तवेमेसससिंधवःप्रशिर्षसोमसिस्वते । तुभ्यंधावन्तिधेनवः ॥ प्रसो
मयाहिधारयासुतऽइंद्रायमत्सरः । दधानोऽअक्षितिश्रवः ॥ समुत्वाधीभिरस्वरन्हिन्वतीःससजामयः । विप्रमाजा
अर्वतो नश्रवस्ववः ॥ ८ ॥ अच्छाकोशमधुश्रुतमसृग्ध्वारोऽअव्यये । अर्वावशंतधीतर्यः ॥ अच्छासमद्रमिंदुवोस्तंगावोन
(९।३।६) पवस्वेतित्रिशदचस्यसूक्तस्यशतवैखानसाःपवमानसोमएकोनविंशदितिस्तुणामग्निःपवमानो गायत्र्यष्टादश्यनुष्टुप् (शतं
वैखानसा एते स्वायंभुवाः अतएवांगोत्रं नास्ति एवमेपि नारायणादय ऊह्याः) ।

॥ ८ ॥

मंडलं ९

अनु- ३

धेनवः । अमन्नतस्ययोनिमा⁺ ॥ प्रण्डइदोमेहेरणऽआपोऽअर्पतिसिंघवः । यद्गोभिर्वासिचिष्यसे ॥ अत्यतेसख्येवयमि
यक्षतस्त्वोत्तयः । इंदोसखित्वमुदमसि ॥ आपवस्वगविष्टयेमहेसोमनचक्षसे । एंद्रस्यजठरेविश ॥ ९ ॥ महोऽअसिसो
मज्येष्ठऽउग्रणांमिंद्रऽओजिष्ठः । युध्वासन्धजिगेथ ॥ यऽउग्रेभ्यश्चिदोर्जीयान्छरेभ्यश्चिच्छरतरः । भरिदाम्य
श्चिन्महीयान् ॥ त्वंसोमसूरऽएप्लोकस्यसातातनूनां । वृणीमहेसख्यायवृणीमहेयुज्याय ॥ अम्रऽआयू⁺पिपवसुऽ
आसुवोर्जिमिषंचनः । अरेबाधस्वदुच्छुनां ॥ अग्निर्कविः पर्वमानः पांचजन्यः परोहितः । तमीमहेमहागयं⁺ ॥ १० ॥
अग्नेपर्वस्वस्वर्पाऽअस्मेवर्चः सुवर्धि । दधद्रयिमयिपोषं ॥ पर्वमानोऽअतिस्त्रिधोभ्यर्पतिसुष्टुतिं । सरोनिवध्वदर्शतः ॥
समर्भृजानऽआयुभिः प्रयस्वान्प्रयसेहितः । इंदुरत्योविचक्षणः⁺ ॥ पर्वमानोऽअतिश्चोचिपः ॥ ११ ॥ पर्वमानो⁺थीतमः शुभ्रे
तमांसिजंघनत् ॥ पर्वमानस्यजंघनो⁺हरेश्चंद्राऽअसृक्षत । जीराऽअजिरशोचिपः ॥ दधत्सोत्रेसुवर्धि ॥ प्रसुवानऽइंदु
भिः शुन्नशस्तमः । हरिश्चंद्रोमरुहणः ॥ पर्वमानो⁺व्यश्रवद्रक्षिमभिर्वाजसातमः । दधत्सोत्रेसुवर्धि ॥ इंद्रमदायजोहुवत् ॥ यस्य
रक्षाः पवित्रमत्यव्ययं । पुनानऽइंदुरिद्रमा ॥ एषसोमोऽअधित्वचिगवांकीळत्यद्रिभिः । इंद्रमदायजोहुवत् ॥ अजिष्ठोऽअज्य
तेद्युन्नवत्पयः पर्वमानाभूतं दिवः । तेनोमृळजीवसे ॥ १२ ॥ (९।३।७) त्वंसोमासिधारयुर्मंद्रऽओजिष्ठोऽअज्य

(९१३१७)

रे । पर्वस्वमंहयद्रयिः ॥ त्वंसुतो न माद नो दधन्वान्मत्सरिन्तमः । इन्द्राय सरि रंधसा ॥ त्वंसुष्वाणोऽअद्रिभिरभ्य
 र्षकनि क्रदत् । द्युमंतं शुभ्रममुत्तमं ॥ इंदुहिं न्वानोऽअर्षति तिरो वार ण्यव्यया । हरिर्वार्जमचि क्रदत् ॥ इंदो व्यव्यम
 र्षसि विश्रवांसि वि सौभगा । विवाजान्तो मोगो मंतः ॥ १३ ॥ आनंऽइंदो शतग्विनं रथि गो मंतमभ्वनं । भरांसो मस
 हृस्त्रिणं ॥ पर्वमानासऽइंदवस्तिरः पवित्रमाशवः । इंद्रयामेभिराशत ॥ ककुहः सोम्योरसऽइंदुरिंद्राय पर्व्यः । आ
 युः पर्वतऽआयवे ॥ हिन्वंतिसूरमुखयः पर्वमानं मधुश्चुतं । अभिगिरासमस्वरन् ॥ अविता नोऽअजाश्वः पूषायामनिया
 मनि । आभक्षत्कन्यासुनः ॥ १४ ॥ अयंसोमः कपर्दिनैर्घृतं न पर्वते मधु । आभं० ॥ अयंतंऽआघृणे सुतो घृतं न पर्व
 ते शुचिं । आभं० ॥ वाचोजंतुः कवीनां पर्वस्वसो मधारया । देवेषु रत्नधाऽअसि ॥ आकलशेषु धावति श्येनो वर्मविगा
 हते । अभिद्रोणा कनि क्रदत् ॥ परिप्रसोमते रसो र्जिकलशेषुतः । श्येनो न तक्तोऽअर्षति ॥ १५ ॥ पर्वस्वसो ममंदय
 त्त्रिंद्राय मधुमत्तमः । अस्त्यन् देववीतये वाज्यंतो रथाऽइव ॥ ते सुतासौ मदिन्तमाः शुक्रावायुर्मसृक्षत ॥ ग्राव्णा तुन्नोऽ
 मागिरसः पवित्रऋषिः (अत्र वसिष्ठो वापवित्रवसिष्ठौ वेति पक्षौ) पवमानसो मोदेवता दशम्यादिति स्त्रणा पूषावा यत्ते पवित्रमित्या-
 दिपंचानामग्निः अंत्ययोर्द्वयोः पावमान्यधेता गायत्री षोडश्याद्यास्ति सो द्विपदा गायत्र्यः त्रिंशी पुरवर्णिक्सप्त विश्वेका त्रिंशी द्वाविंशो नुष्टुभः
 (पंचविंश्यादिति स्त्रणां क्रमात्सविताग्निः सविता रौविश्वे देवा इति देवता अभिनास हविकल्पते) ।

[illegible]

ऋक्सं-

अ. ७ अ. २

॥ १० ॥

सस्तपसोऽथ तु पावमानीर्द्धं चोब्रवीत् ॥ १ ॥ यन्मे गभेर्वसतः पापमग्रं यज्जायमानस्य च किंचिदन्यत् । जातस्य च यच्चो
पि च वर्धते मे तत्पावमानीर्द्धं पुनामि ॥ माता पित्रोर्यन्न कृतं वचो मे यत्स्यात्वरं जंगममावभूव । विश्वस्य तत्प्रहृषितं व
चो मे तत्पावमानीर्द्धं पुनामि ॥ गोघ्नात्स्करत्वात्स्त्रीवधाद्यच्च किं त्विषं । पापकंच चरणेभ्यस्तत्पावमानीर्द्धं पु
नामि ॥ ब्रह्मवधात्सुराणामनात्स्वर्णस्तेषां द्रुपदलिगमनमैथुनसंगमात् । गुरोर्दाराधिगमनाच्च तत्पावमानीर्द्धं पु
नामि ॥ २ ॥ दुर्यष्टदुरधीतं पापं यच्चान्न तो कृतं । अयाजिताश्चासंयज्यास्तत्पावमानीर्द्धं पुनामि ॥ अमंत्रमन्नं य
त्किंचिच्छूयते च हुताग्ने । सर्वस्वरकृतं पापं तत्पावमानीर्द्धं पुनामि ॥ ऋतस्यो न यो मृतस्य धाम विश्वदेवेभ्यः पुण्यं
गंधाः । तानऽआपः प्रवहंतु पापं शुक्लाग्च्छामि सुकृतां मुलोकं तत्पावमानीर्द्धं पुनामि ॥ पावमानीः स्वस्त्ययनीर्या
भिर्गच्छति नां दुनं । पुण्याश्च भक्षान्भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ पावमानीः पितृन्देवान्ध्यायेद्यश्च सरस्वती । पितृस्त
स्योपवर्तेत क्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पावमानं परं ब्रह्म शुक्रं ज्योतिः सनातनं । ऋषीस्तस्योपतिष्ठेत्तत्क्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पाव
मानं परं ब्रह्म ये पठन्ति मनीषिणः । सर्वजन्मभवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदुपारगाः ॥ दशोत्तराण्यृचांश्चैव पावमानीः शतानि षड् ।

मंडलं ९

अनु. ३

॥ १० ॥

एतज्जुहुञ्जपेन्मंत्रेधोरमृत्युभयंहरेत ॥ ३ ॥ इतिपरि० (९।४।१) प्रदेवमच्छामधुमंतुडइंदुवोसिष्यदंतगावऽआ
 नधेनयः । वृष्टिपदोवचनायंतुडऊर्ध्वभिःपरिस्त्रुतमस्त्रियानिर्णिजधिरे ॥ सरोरुवद्वभिपूर्वाऽअचिक्रदुपारुहःश्रथय
 वियोममेयम्यासंयतीमदःसाकंवृधापय ॥ वियोममेयम्यासंयतीमदःसाकंवृधापयःप्रमोधिरेः
 ॥ समातरोविचरन्याजयन्नपःप्रमोधिरेः
 नत्त्वादतेहरीः । तिरःपुवित्रैपरियन्नरुज्योनिशयार्थणिदधतेदेवऽआवरं ॥ समातरोविचरन्याजयन्नपःप्रमोधिरेः
 सापिन्वदक्षिता । महीऽअपारेरजसीविवेविददभिव्रजनाक्षितंपाजऽआददे ॥ संदक्षेणमनसाजायतेकविकृतस्यग
 स्वधयापिन्वतेपदं । अंशुयवेनपिपिशेयतो नृभिःसंजाभिभिर्नसत्तेरक्षतेशिरः ॥ संदक्षेणमनसाजायतेकविकृतस्यग
 भौनिहितोयमापरः । यूनाहुसंताग्रथमंविजज्ञतुगुहोहितंजनिमनेमुद्यतं ॥ १९ ॥ मंद्रस्यरूपंविविदुर्मनीषिणः
 ज्येनोयदंधोऽअभरत्परावतः । तंमर्जयतसुवृधनदीर्घ्वोऽउशतंमंशुपरिर्यंतमिगमयं ॥ त्वामृजंतिदशयोर्षणःसुतंसोम
 ऽक्राभिभिर्मतिभिर्धीतिभिर्हितं । अद्योचारैभिरुतदेवहृतिभिर्नृभैर्यतोवाजमादयिंसातये ॥ पुरिप्रयंतवृथ्यसुपंसदं
 सोममनीपाऽअभ्यनूपतस्तुभः । गोधारयामधुमोऽऊर्मिणादिवऽइयतिवाचैरधिपाळमल्यः ॥ अयंदिवऽइयतिविश्व
 मारजःसोमःपुनानःकुलशैषुसीदति । अद्भिर्गोभिर्मृज्यतेऽअद्भिभिःसुतःपुनानऽइंदुर्वैवोविदस्रियं+ ॥ एवानःसो

चतुर्थेनुवाकेऽष्टादशसूक्तानि (९।४।१) प्रदेवमितिदशचैत्यसूक्तस्यमालंदनोवत्सप्रिःपवमानसोमोजगलंस्यान्निष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. २

॥ ११ ॥

मंडलं ९

अनु. ४

मपरिचिन्त्यमानोवयोदधच्चित्रतमंपवस्व । अद्भुषेद्यावागृथिवीहुवेमदेवाधत्तरयिमस्मेसुवीरं ॥ २० ॥ (९।४।२) इषुर्न
धन्वन्प्रातिधीयतेमतिर्वत्सोनामतुर्पसज्युर्धनि । पुरुधारेवदुहेऽअग्रऽआयत्यस्यत्रतेष्वपिसोमऽइष्यते ॥ उपो
मतिःपृच्यतेसिच्यतेमधुमंद्राजनीचोदतेऽअंतरासनि । पूर्वमानःसंतनिःप्रक्षताभिर्वमधुमान्द्रुप्सःपरिवारमर्षति ॥ उपो
अव्येवधुयुःपवतेपरित्वचिअश्रीतेनसीरदितेऋतंयते । हरिरकान्यजुतःसंयतोमदोनृणाशिशानोमहिषोनशोभते ॥
उक्षामिमातिप्रतिथंतिधेनवोदिवस्यदेवीरुपयंतिनिष्कृतं । अत्यक्रमीदजुर्नंवारमव्ययमत्कननिक्कंपरिसोमोऽअव्यत ॥
अमृकेनरुशतावाससाहरिरमर्त्योनिर्णिजानःपरिव्यत । दिवस्पध्वर्हणाणिर्णिजेकृतोपस्तरणंचम्वोर्नभस्मयं ॥ २१ ॥
सूर्यस्येवरश्मयोद्रावयिलवोमत्सरासःप्रसुपःसाकर्मोरते । तंतुतंपरिसर्गोसऽआशवोर्नेद्रादृतेपवतेधामकिंचन ॥
सिंधोरिवप्रवणेनिम्नऽआशवोवृषच्युतामदासोगातुमाशत । शनोनिवेशेद्विपदेचतुष्पदेसेवाजाःसोमतिष्ठंतुक्कृष्टयः ॥
आनःपवस्ववसुमद्विरण्यवदश्वावहोमद्यवमत्सुवीर्यं । यूयंहिसोमपितरोममस्थनदिवोमधूनुःप्रस्थितावयस्कृतः ॥
एतेसोमाःपूर्वमानासऽइंद्रथाऽइवप्रययुःसातिमच्छं । सुताःपवित्रमातियंत्यव्यंहिल्वीवात्रिहुरितोवृष्टिमच्छं ॥ इंदुर्विं
(९।४।२) इषुर्नेतिदशर्चस्यसूक्त्यांगिरसोहिरण्यस्तूपःपवमानसोमोजगल्येद्वेत्रिण्यभौ ।

॥ ११ ॥

द्रायवृहतेपवस्वसुमृच्छीकोऽअनवद्योरिशादाः । भराचंद्राणिगृणतेवसूनिदेवैर्द्यावापृथिवीप्रावतनः ॥ २२ ॥ (९।४।३)
 त्रिरस्मैससंधेनवोदुहेसत्यामाशिरपुर्व्येव्योमनि । चत्वार्यन्यामुवननिनिर्णिजेचारुणिचक्रेयद्वैतैरवर्धत ॥ सभि
 क्षमाणोऽअमृतस्यचारुणऽइभेद्यावाकाव्येनाविशश्रथे । तेजिष्ठाऽअपोमंहनापरिव्यतयदीदिवस्यश्रवसासदोविदुः⁺ ॥
 तेऽअस्यसंतुकेतवोमृत्यवोदाभ्यासोजुषीऽइभेऽअनु । येभिर्नग्णाचदेव्याचपुनतऽआदिद्राजानंमननाऽअगृभ्यत ॥
 तेऽअस्यसंतुकेतवोमृत्यवोदाभ्यासोजुषीऽइभेऽअनु । व्रतानिपानोऽअमृतस्यचारुणऽइभेनचक्षाऽअनुपश्यते
 समज्यमानोदुशभिःसुकर्मभिःप्रमथ्यमासुमातृषुप्रमेसचा । वृषाशुभेणवाधतेविदुर्मतीरादेर्दिशानःशर्य
 विशौ ॥ समर्मजानऽईद्रियायुधायसऽओभेऽअंतारोदसीहर्षेतेहितः । वृषाशुभेणवाधतेविदुर्मतीरादेर्दिशानःशर्य
 हेवशुरुधः ॥ २३ ॥ समातरानददृशानऽइस्त्रियोनानंददेतिमरुतामिवस्वनः । ज्ञानव्रतंप्रथमंयत्स्वर्णरंप्रशस्तयेकमे
 वृणीतसुक्रतुः ॥ रुवतिभीमोवृषभस्तविष्ययाश्रुंगेशिनोहरिणीविचक्षणः । आयोनिःसोमःसुकृतंनिषीदतिगव्ययी
 त्वग्भवतिनिर्णिगव्ययी ॥ शुचिःपुनानस्तन्वसरेपसमव्येहरिन्यधविष्टसानवि । जुष्टोमित्रायवरुणायायवैत्रिधा
 तुमधुक्रियतेसुकर्मभिः ॥ पवस्वसोमेदेवभीतयेवृषेद्रस्यहादिंसोमधानमाविश । पुरानोवाधादुरितातिपारयक्षेत्रविद्धि
 दिशऽआहोविपृच्छते ॥ हितोनसतिरुभिवाजमपवद्रस्येदेजठरुमापवस्व । नवानसिंधुमतिपर्विविद्वान्छूरोनयुञ्ज

त्रिरस्माद्वतिदृशर्वस्यत्सूयैश्चाभिन्नोरेणुःपवमानसोमोजगलंयत्त्रिष्टुप् ।

वनोनिदस्पः ॥ २४ ॥ (९।४।४) आदक्षिणासृज्यते शुब्ध्या इ सदेवेति दुहोरक्षसः पाति जागृविः । हरिरोपशंकृणु
तेन भस्पर्यऽउपस्तिरेचम्वो इ ब्रह्मनिर्णिजे ॥ प्रकृष्टिहेवशूषऽपतिरोरुवदस्यै १ वर्णनिर्णिणीतेऽअस्यतं । जहातिवत्रिपि
तुरेति निष्कृतमुपपुतकृणुते निर्णिजंतना ॥ अद्रिभिः सतः पवते गभस्त्यो वृथायते न भसावेपते मती । समोदते न सते सा
धते गिराने नि केऽअप्सु यजेते परीमणि ॥ परिद्युक्षंसहसः पर्वता वृधं मध्वः सिंचति हर्म्यस्य सक्षीर्णे । आयस्मिन्गारवः सुहु
तादऽऊर्ध्वनिमर्धन्धीणं त्यग्रि यं वरीमभिः ॥ समीरथं न भुरिजो रहेषतदशस्वसारोऽअदिते रूपस्यऽआ । जिगाहुपञ्चय
तिगोरपीच्यैपदं यदस्य मत्तुथाऽअजीजनन् ॥ २५ ॥ इधे नो न यो निंसर्दनं धिया कृतां हेरण्ययमासदं देवऽएषति । एरि
णंति बहिषि ग्रिग्रि गिराश्वो न देवौऽअप्येतियज्ञिर्यः ॥ पराव्यक्तोऽअरुषो द्विवः कविर्वृषात्रिपृष्ठोऽअनविष्टगाऽअभि ।
सहस्रणीतिर्यतिः परायतीरे भोनपूर्वीरुपसो विराजति ॥ त्वेषं रूपं कृणुते वर्णोऽअस्य स यत्राशयत्समृतासेधति सिधः ।
अप्सायातिस्वधया दैव्यं जनं संसृष्टुती न स ते संगोऽअग्रया ॥ उक्षेव यथा परियन्नरावीदधित्विषीरधितसूर्यस्य । दिव्यः
सुपर्णो वचक्षतक्षांसोमः परिक्रतुना पश्यते जाः ॥ २६ ॥ (९।४।५) हरिं सृजंत्यरुषो न युज्यते संधेनुभिः कूलशेसोमो

(९।४।४) आदक्षिणेति नवर्चस्य सूक्तस्य वैश्वामित्र ऋषभः पवमानसोमो जगत्पत्न्या त्रिष्टुप् । (९।४।५) हरिं सृजंतीति नवर्चस्य सूक्तस्यां
गिरसो हरि मंतः पवमानसोमो जगती ।

उद्धाचमीरयथतिष्ठित्वैमतीपुरुषतस्यकतचित्परिप्रियः ॥ साकंवदतिवहवौमनीषिणऽइंद्रस्यसोमंजठरेय
ऽअज्यते । यदीमजंतिसुगभस्तयोनरःसनीळाभिर्दृशभिःकाम्यमधु ॥ अरममाणोऽअत्येतिगाऽअभिसूर्यस्यप्रियंदुहि
ददुहुः । यदीमजंतिसुगभस्तयोनरःसनीळाभिःस्वसृभिःक्षेतिजामिभिः ॥ नृधृतोऽअद्रिषुतोवर्हिषिप्रियःपतिर्ग
नुस्तिरोरवं । अन्यस्मैजोयमभरद्विगंगसःसंहरयीभिःस्वसृभिःक्षेतिजामिभिः ॥ नृबाहुभ्यांचोदितोधारयासुतो
वोप्रदिवऽइंद्रुर्कृत्वियः । पुरंधिवान्मनुषोयज्ञसाधनःश्रुचिर्धियापवतेसोमंइंद्रते ॥ नृबाहुभ्यांचोदितोधारयासुतो
नृष्वधंपवतेसोमंइंद्रते । आप्राःकतुन्त्समजैरध्वरेमतीर्वेनद्रुषच्चबोइ रासंदुद्धरिः ॥ २७ ॥ अंशुदुहंतिस्तनयैतम
नुष्वधंपवतेसोमंइंद्रते । समीगावौमतयौयंतिसंयतऽकृतस्ययोनोनासदंनपुनर्भुवः ॥ नाभापृथिव्याधरुणोम
क्षितंकृचिकवयोपसौमनीषिणः । इंद्रस्यवज्रोवृषभोविभूवसुःसोमोदुहेपवतेचारुमत्सरः+ ॥ सतूपवस्वपरिपाथिबं
होदिवोइ पाममौसिंधुवंतरक्षितः । इंद्रस्यवज्रोवृषभोविभूवसुःसादनस्यशौर्येपिशंगवहुलवंसीमहि ॥ आतूनऽइंद्रोशतदा
रजस्तोत्रे शिक्षन्नाधून्वतेचसुक्रतो । मानोनिर्भागवसुनःसादनस्यशौर्येपिशंगवहुलवंसीमहि ॥ २८ ॥ (९।४।६) सक्के
त्वर्थ्यसहस्रदातुपशूमाक्षिरण्यवत् । उपमास्वबृहतीरेवतीरिपोधिस्तोत्रस्यपवमाननोगहि ॥ २८ ॥ (९।४।६) सक्के
द्रुप्तस्यधमतःसमस्वरद्वृतस्ययोनोनासमरंतनाभेयः । त्रीन्त्समध्नोऽअसुरश्चक्रऽआरभेस्यस्यनावःसुकृतमपीपरन् ॥
सुम्यक्स्यम्यंचोमहिषाऽअहेषतुसिधोरुमावर्धिवेनाऽअवीविपन् । मधोर्धाराभिर्जनयंतोऽअकमिषियामिंद्रस्यतन्व

मम्यकसम्यंचौमाहिषाडहपुलकः ।
७-पञ्चाननमोमोजगती ।

(31815)

ऋक्सं.

अ. ७ अ. २

॥ १३ ॥

मवीवृधन् ॥ पवित्रवतःपरिवाचमासतेपितृषांप्रत्नोऽभिरक्षतिव्रतं
ब्यारभं ॥ सहस्रधारेवतेसर्मस्वरन्दिवोनाकेमधुजिह्वाऽअसश्चतः ।
तिसैतवः ॥ पितुर्मातुरध्यायेसमस्वरन्नुचाशोचैतःसंदहतोऽअव्रतान् ।
नोदिवस्परि ॥ २९ ॥ प्रलान्मानादध्यायेसमस्वरन्ध्रोकेयन्नासोरभसस्यमंतवः ।
तस्यपंथानंतरंतिदुष्कृतः ॥ सहस्रधारेवितेपवित्रऽआवाचैपुनंतिकवयोमनीषिणः ।
ह्रुःस्पशुःस्वंचःसुहृशानूचक्षसः ॥ ऋतस्यगोपानदभायसुक्रतुस्त्रीपपवित्राहुर्द्युतरादधे ।
पश्यत्यवाजुष्टान्विध्यतिकर्तेऽअव्रतान्+ ॥ ऋतस्यतंतुविततःपवित्रऽआजिह्वायाऽअग्रेवरुणस्यमाया ।
त्समिनक्षंतऽआशुतात्राकर्तमवपद्यात्यप्रभुः ॥ ३० ॥ (९।४।७) शिशुर्नजातोवचक्रद्वनेस्वर्ग्यद्वाज्यरूपःसिपा
सति । द्विवोरेतसासचतेपयोवृधातमीमहेसुमतीशर्मसप्रथः ॥ द्विवोयस्कंभोधरुणःस्वाततऽआर्पणोऽअंशुःपयैतिवि
तंथते । ईशेयोबृष्टेरितऽबृष्टियोवृपापानेतायऽइतऽऊर्तिकर्मयः ॥ महिप्सरःसुकृतंसोम्यमधुर्वीगव्यूतिरदितेर्क
(९।४।७) शिशुर्नेतिनवर्चस्यसूक्तस्यदैर्घतमसःकक्षीवान्पवमानसोभोजगल्यष्टमीत्रिष्टुप् ।

मंडलं ९

अनु. ४

॥ १३ ॥

[illegible]

भिः सुतोमतिभिश्च नो हितः प्ररोच्यन्नादसामासु
लशाड्याश्च कडू

(21815)

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ३

॥ १४ ॥

वे ॥ परिंसोमप्रधन्वास्वस्तयेनुभिः पुनानोऽअभिर्वासयाशिरं । येतेमदोऽआहुनसोविहायसुसोभिरिन्द्रचोदयदातवे
मधं+ ॥ ३३ ॥ इतिसप्तमाष्टकेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥
पंचाशाध्यायेवर्गाः ३३ सूक्तानि ११ ऋचः १६३ ॥ त्यागः ॥ पवमानायसोमाये. ४८ अग्नयेपवमानाये. ३ पवमानायसोमाये. ३१
[भे. प. पवमानायसो. १८ पूरणेपवमानायसोमाये ३ पवमानायसोमाये. १०] अग्नयेपवमानाये. ५ [भे. प. अग्नयेप. २ सवित्र. अग्नि-
सवितृभ्या. विश्वेभ्योदेवेभ्य.] पवमानायसोमाये. ३ पावमान्यध्वेतृभ्य. २ पवमानायसोमाये. ७१ ॥ इतिसप्तमेद्वितीयः ॥
धर्तेपप्रराजाचोदसः सोमस्यवसुभरिद्वारजः प्रसोमस्यासावीति त्रिष्टुवंते पवित्रंते पवित्रः पवस्ववाच्यः प्रजापतिरि
द्रायद्वादशेवनोभार्गवो द्वि त्रिष्टुवंतं प्रतेष्टा चत्वारिंशदपि गणादशर्चा अकृष्टामापाः प्रथमैः सिकतानि वावरी द्विती
येषु श्रियो जास्तृतीयेषु त्रयश्चतुर्थेऽत्रैः पंचां त्यागुत्समदः प्रतुनवो शनायं सोमो ह्यौ प्रोस्य सप्तमं हि न्वानः पञ्चवसिष्ठः ॥ ३ ॥
॥ हरिः ओम् ॥ (९।४।९) धृतां दिवः पवते कृत्वोरसो दक्षो देवानां मनुमाद्यो नृभिः । हरिः सृजानोऽअत्योनस
त्वभिर्बुधापाजौ सिकृणुते नदीष्व+ ॥ शूरो न धत्तुऽआयुधागर्भस्योः स्वः १ः सिर्षा सन्नधिरो गविष्टिषु । इन्द्रस्य शुष्ममी
रयन्नपस्युभिरिदुर्हिन्वानोऽअज्यते मनीषिभिः ॥ इन्द्रस्य सोमपर्वमानऽऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वविश । प्रणः पि
(९।४।९) धर्तेति पंचर्चस्य सूक्तस्य भार्गवः कविः पवमानमोमोजगती ।

मंडलं ९

अनु. ४

॥ १४ ॥

न्वविद्युदुन्नेवरोदसीधियानवाजोऽउपमासिशश्वतः ॥ विश्वस्यराजोपवतेस्वर्दशऽकृतस्यधीतिमृपिपाळवीवशत् ।
 यःसूर्यस्यासिरेणमज्यतेपितामतीनामसमष्टकाव्यः ॥ वृषेयथापरिकोशमर्षस्यपामपस्यैवृषभः कर्निरुदत् ॥ सङ्द्राय
 पवसेमत्सरिन्तमोयथाजेपोमसमिधेत्योतयः ॥ १ ॥ (९।४।१०) एप्रकोशमधुमाऽअचिरुदृदिदस्यवज्रोवणुवोवपुष्ट
 रः । अभीमतस्यसुदुघाघृतश्रुतौवाश्राऽअर्षेतिपयसेवधेनवः ॥ सपव्यःपवतेयंदित्रस्यरिदयेनोमथायदिपितस्तिरोर
 जः । समध्वऽआयुवतेवैविजानुऽइरुजानोरस्तुर्मनसाहविभ्युपां ॥ तेनःपूर्वासऽउपरामऽइदयोमेहेवाजोयधन्वतुगो
 मते । ईक्षेण्यासोऽअद्योऽनचारवोव्रह्मब्रह्मयेजुपुहुर्विहविः ॥ अयंनोविद्वान्वनवद्वनुयुतऽइदुःसन्नाचामनसापुरुष्ट
 तः । इनस्ययःसर्दनेगर्भमादुधेगवांमुरुजमभ्यर्षेतिघ्नजं ॥ २ ॥ (९।४।११) प्रराजावाचैजनयन्नसिष्यददुपो
 ते । असाविमित्रोवृजनेपुयज्ञियोल्योनयथेवृषयुःकर्निरुदत् ॥ इन्द्रायसोमपरिपिच्यसे
 वसानोऽअभिगाऽइयक्षति । गभ्णातिरिप्रमधिरस्यतान्वाशुद्धोदेवानामुपयानिनिष्कृतं ॥ इन्द्रायसोमपरिपिच्यसे
 नृभिर्नचक्षाऽऽजुर्मिःकृधिरज्यसेनै । पूर्वाहितैस्तयःसंतियातेवेसुहस्रमथाहरयश्चमपदः ॥ सुमद्रियाऽअप्सरसोम
 नीपिण्मसीनाऽअंतरभिःसोममक्षरन् । ताऽईहिन्वन्तिहुर्म्यस्यसंक्षणियाचैतुसुन्नपर्वमानमक्षितं ॥ गोजिन्नःसोमोर

(९।४।१०) एप्रइतिपंचर्चस्यसूक्त्यस्यभार्गवः कविः पउमानसोमोजगती । (९।४।११) प्रराजेतिपंचर्चस्यसूक्त्यस्यभार्गवः कविः पवमानसोमो

थजिद्धिरण्यजित्स्वर्जिद्वजित्पवतेसहस्रजित् । यंदेवासश्चक्रिरेपीतयेमदंस्वादिंघद्रप्समरुणमयोभुवं ॥ एतानि सोम-
पर्वमानोऽअस्मयुःसत्यानि कृण्वन्द्रविणान्यर्षसि । जहिशत्रुमंतिकेदूरकेचयऽउर्वीगन्धूतिमभयंचनस्कृधि ॥ ३ ॥
(९।४।१२) अचोदसोनोधन्वंत्विदवःप्रसुवानासौबृहद्वेवेषुहरयः । विचनशत्रुऽइषोऽअरातयोयोनंशंतसानिषंत
नोधियः ॥ प्रणोधन्वंत्विदवोमदच्युतोघनावायेभिरवतोजुनीमसि । तिरोमर्तस्यकस्यचित्परिह्वतिव्यंघनानिविश्च
धाभरेमहि ॥ उत्तस्वस्याऽअरात्याऽअरिहिषऽउतान्यस्याऽअरात्यावृकोहिषः । धन्वन्नवृष्णासमरीततौऽअभिसोम
जहिपवमानदुराध्यः* ॥ दिवितेनाभापरमोयऽआददधृथिव्यास्तैरुरुहुःसानं विक्षिपः । अद्रयस्त्वावप्सस्तिगोरधित्व
क्यं१प्सुत्वाहस्तैर्दुहुर्मनीषिणः ॥ एवातऽइंदोसुभ्यंसुपेशंसंतुजंतिप्रथमाऽअभिश्रियः । निर्दंनिदंपवमाननिता
रिषऽआविस्तेशुष्मोभवतुप्रियोमदः ॥ ४ ॥ (९।४।१३) सोमस्यधारापवतेनचक्षसऽऋतेनदेवान्हवतेदिवस्परि ।
बृहस्पतेरवथेनाविदिद्युतेसमुद्रासोनसर्वनानिविद्युः ॥ यत्वावाजिन्नइयाऽअभ्यनूषतायोहतंयोनिमारोहसिद्युमा
न । मघोनामारुःप्रतिरन्महिश्रवऽइंद्रायसोमपवसेवृषामदः ॥ एंद्रस्यकुक्षार्पवतेमदिन्तमऽऊर्जवसानःश्रवसेसुमंग

जगती । (९।४।१२) अचोदसहतिपंचर्चस्यसूक्तस्यभार्गवःकविःपवमानसोमोजगती । (९।४।१३) सोमस्येतिपंचर्चस्यसूक्तस्य
भारद्वाजोवसुःपवमानसोमोजगती ।

लः । प्रत्यङ्सविश्वामुर्वनाभिर्पथेऽक्रीळन्हरिरत्यः स्वन्दतेवृषा ॥ तं त्रविश्वेभ्यो मधुमत्तमं नरः महर्षधारं दुहते दशुक्षि
 पः । नृभिः सोमप्रच्युतो ग्रावभिः सुतो विश्वान्देवाऽऽपवस्था महस्त्रजित् ॥ तं त्रालुस्तिनो मधुमत्तमाद्रिभिर्दुहं त्यमुष्टु
 पभंदशुक्षिपः । इन्द्रो सोममादयन्दैव्यं जन्संधोरिवोमिः पवमानोऽअर्गसि ॥ ५ ॥ (९।४।१४) प्रमोमस्वपयमानस्यो
 मयुऽइन्द्रस्यंति जठरं सुपेर्गमः । दध्नायद्रीमुर्ध्नीतायशमागयो दानाय गुरं मदमेदिगुः मत्ताः ॥ अञ्जलि सोमः कूलगो
 ऽअसिष्यदुदत्यो नवोछारुघुवर्तनिर्धुपा । अथादेवानां मभयस्य जन्मनो विद्धोऽअश्रोत्यमुतंऽउत्तश्चयत् ॥ आनः सोमप
 वमानः किरावस्विदो भवमघवाराधसोमहः । शिक्षावयो धोवसुवैमुचेतुनामानो गयमारोऽअसत्यगमिचः ॥ आनः प
 पापवमानः सुरातयो मित्रो गच्छंतु वरुणः सजोर्गमः । दृहस्पतिं मूर्खतो वायुरग्निना त्वष्टा सविता सुयमामरं स्वती ॥ ३
 भेद्यावापृथिवी विश्वमिन्वेऽअर्थमादेवोऽअदिति विधाता । भगोनृगं मऽउर्वी तर्क्षि विदेवाः पवमानं जुयंत ॥ ६ ॥
 (९।४।१५) असां विश्वसोमोऽअरुपो वृषाहरी राजैव दसोऽअभिगाऽअचिक्रदत् । पुनानो वारं पथं त्यव्ययं द्येनो नयो
 निघृतवतमासदं ॥ कविर्वैधस्यापयं पिमाहि नुमत्यो नमष्टोऽअभिवाजमर्गसि । अपसेधन् दुर्गिता सोममृळय घृतं वसन्तः

(९।४।१४) प्रसोमस्येति पचर्वस्मृत्कृत्स्नभारद्वाजोऽयमुः पवमानसो गोजगत्या निघृप् । (९।४।१५) अमानीति पंचर्नस्मृत्कृत्स्न
 भारद्वाजो वसुः पवमानसो गोजगत्या त्रिघृप् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ३

॥ १६ ॥

पारयासिनिर्णिजं ॥ पर्जन्यः पितामहिषस्य पूर्णिनो नाभापृथिव्यागिरिषक्षयंदधे । स्वसारऽआपोऽअभिगाऽवृतासरं
न्तं स्याद्वर्भिनसते वीतेऽअध्वरे ॥ जायेवपत्यावधिशेवमंहसे पत्रायागर्भशृणुहि ब्रवीमि ते । अंतवर्णीषु प्रचरासु जी
वसे निद्योवृजने सोमजा गृहि ॥ यथा पूर्वैभ्यः शतसाऽअमृध्रः सहस्रसाः पर्ययावार्जमिंदो । एवापवस्व सुविताय नव्यसेत
वव्रतमन्वारपः सचंते ॥ ७ ॥ (९।४।१६) पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः । अतस्तत नर्तदा
मोऽअश्रुते श्रुतासऽइद्वहंतस्तत्समाशत ॥ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेशोर्चतोऽअस्य ततं वोव्यस्थिरन् । अवैत्यस्य पवी
तारमाशवो दिवस्पृष्टमार्धं तिष्ठति चेत्सा ॥ अरुरुचदुषसः पृथिरग्रियऽउक्षाविभर्ति भुवनानि वाज्युः । माया विनोममिरे
ऽअस्य मायया न चक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥ गंधर्वऽइत्थापदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यस्तुतः । गभ्णाति रिपुं
निधयानि धापतिः सुकृत्तमामर्धुनो भक्षमाशत ॥ हविर्हविष्मो महिसद्भ्यं न भोवसानः परियास्यध्वरं । राजापवित्रं
शोवाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बहत् ॥ ८ ॥ (९।४।१७) पवस्व देवमाद नो विचर्षणि रप्साऽइंद्राय वरुणाय
वायवे । कृधीनोऽअद्य वारिवः स्वस्तिमदुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनं ॥ आयस्तस्यौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः प
(९।४।१६) पवित्रं तद्वति पंचर्वसूक्त्यां गिरसः पवित्रः पवमानसोमो जगती । (९।४।१७) पवस्वेति पंचर्वसूक्त्यवाच्यः
प्रजापतिः पवमानसोमो जगती ।

॥ १६ ॥

मंडलं ९

अनु. ४

रितात्ययेति । एतन्ममंयुतं प्रितुनंमभिष्टयऽऽदुःखिपन्त्युपमंनयूः ॥ आपोगोषिः नृग्यनऽओषीपादुपानांमृ
क्षऽदुपयुक्षुपांसुः । अत्रियुतापत्तेः पारयागुनऽदंष्टुमोमांसायन्त्ययनं ॥ एषस्यमांशं पानेनान्युनिनिन्युनो
वाचमिषिरामुपेयुः । दंष्टुः समुद्रमुदितप्रियुगिरिदंष्ट्रमादं हृदयोपमीदति ॥ अभिलंगत् पयंसायोरुपमोऽथो
णंतिमतिभिः स्वनिदं । धुनंजगः पवतं हृत्त्वोरन्योनिमं हृषिः साध्योनाम्यचनाः ॥ ९ ॥ (९।४।१८) उदंमिनोममु
पुतः परिस्रवापामोवाभमतुरांसागद । सातेनस्यस्यननयुपिनोदधिगम्यनऽदुःखोदिरः ॥ अस्मान्त्समंयुपेयमा
नचोदयुदशोद्ववानाममिह्निद्रिगोमदः । जुष्टिअनैऽरुभ्याभंदनायुन पिंष्टुमोममंनोमुभोनाति ॥ अदंष्ट्रऽदंष्ट्रोपय
मेमदिन्तंमऽआत्तमंस्वभगमिथासिक्तमः । अभिर्भ्यर्गनिहृदयोमनीपिणोर्गजानमृगधुरनस्यनिगते ॥ मृत्त्युणीयः
श्रुतधरोऽश्नुतऽदंष्ट्रायेंदुं पवतं साम्यंमथु । जन्मनेनमुभ्यपोननपऽदंष्ट्रोनां गातुं पुनोममदिः ॥ कनिहृदन्त
ओगोभिरज्यसेज्यं व्यथैममयाचारमपेति । समंन्यमानोऽअत्योक्तोनामिर्दंष्ट्रस्यसोमनऽरंनभःपरः ॥ म्यादुःपम्य
द्विव्यायुजन्मेस्वादुरद्रायमुन्धीनुनास्ते । म्यादुमंतायनंणायसायनेपुष्टस्यतेपंगपुमाऽअत्रिभ्यः ॥ १० ॥ अ
त्यमृजंतिरुल्लेखेदुगुक्षिप प्रविप्रमाणामतथोवाचऽरेत । पथमानाऽअन्वर्धतिगुष्टतिमंष्ट्रिपिंतिमद्रिगन्तुऽदंष्ट्रः ॥

(१।४।१८) उद्गारेति जाग्रज्यं स्वमृत्तल्यभार्गोतिः पमानमोमोपगन्त्यन्तेऽपि कुम्भी ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ३

॥ १७ ॥

मंडलं ९

अनु. ५

॥ १७ ॥

पर्वमानोऽअभ्यर्षसुवीर्यमूर्वागव्यूतिमहिशर्मसप्रथः । मार्किनोऽअस्यपरिष्पतिरीशतेंदोजयेमत्वयाधनं धनं ॥ अधि
द्यामस्थाद्वृषभोर्विचक्षणोरूरुचद्विदिवोरोचनाकविः । राजापवित्रमत्येतोरोरुवहिवः पीयूषं दुहते न चक्षसः ॥ द्विवो
नाके सुपुणमुपपत्तिवांसगिरोवेनानाहुहन्त्यक्षणे गिरिष्ठां । अप्सुद्रुसंवावृधानं समद्रुआसिंघोरूमामधुमंतपवित्रा ॥ द्विवो
गंधर्वोऽअधिनार्केऽअस्याद्विश्वा रूपाप्रतिचक्षणोऽअस्य । भानुःशुक्लेणशोचिपाव्यद्यौरुचद्रोदसीमातराशुचिः ॥ ऊर्ध्वो
मदिन्तमासःपरिकोशमासते ॥ प्रतेमदांसोमदिरासंऽआशवोसृक्षतरथ्यासोयथापृथक् । द्विव्याःसुपर्णामधुमंतऽइंदवो
णमिंद्रमिंदवोमधुमंतऽऊर्मयः ॥ अत्योनहियानोऽअभिवाजमर्षस्वर्वित्कोशद्विवोऽअद्रिमातरं । धेनुर्नवत्संपयसाभिवज्जि
सानोऽअव्ययेसोमःपुनानऽइंद्रियायुधायसे ॥ प्रतऽआश्विनीःपवमानधीजुवोद्विवोऽअसृन्पयसाधरीमणि । प्रां
पंचमेनुचकेएकादशसूक्तानि (९।५।१) प्रतआशवइत्यष्टाचत्वारिंशदृचस्यसूक्तस्यआद्यानां दशानामकृष्टामाषाऋषयःएकादश्यादि
दशानांसिकतानिवावरीएकविंश्यादिदशानांपृथ्वियोजाःएकत्रिंश्यादिदशानामत्रयःएकचत्वारिंश्यादिपंचानांभौमोजिःअंत्यानांतिष्ठणां
औनकोपुत्समदःपवमानसोमोजगती ।

तर्कयः स्थाविररसस्तयेत्वा मज्जत्युपि पाणवेधसः ॥ विश्वाधामानि विश्वचक्षुः प्रभोस्ते सतः परियंति केतवः ।
 तर्कयः पवसे सोमधर्माभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ १२ ॥ उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परियंति के-
 व्यानुशिः पवसे सोमधर्माभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ १२ ॥ उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परियंति के-
 तवः । यदीपवित्रेऽधि मज्जते हरिः सत्तानियोना कुलशेषु सीदति ॥ युज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानां सुपयाति
 तवः । सहस्रधारः परिकोशमर्षति चृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ॥ राजा समुद्रं नद्यो देविगा हते पामर्मि संचते सिंधुषु श्रि-
 निष्कृतं । सहस्रधारः परिकोशमर्षति चृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ॥ राजा समुद्रं नद्यो देविगा हते पामर्मि संचते सिंधुषु श्रि-
 तः । अर्धस्थात्सानुपर्वमानोऽअव्ययनाभापृथिव्या धरुणो महो दिवः ॥ द्विवोनसानुस्तनयं चिक्रदृष्ट्यौ श्रयस्य पृ-
 थिवी च धर्माभिः । इन्द्रस्य सुख्यं पवते विवेदित्सोमः पुनानः कुलशेषु सीदति ॥ ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधुप्रियं पिता देवा-
 नां जनिता विभूवसुः । दधाति रत्नं स्वधरौ रपीच्यमदितं मोमत्सरऽईन्द्रियोरसः ॥ १३ ॥ अभि क्रंदं कुलशेषा ज्यर्ष-
 त्पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः । हरिर्मित्रस्य सदनं बुसीदति मर्ज्जानो विभिः सिंधुभिर्वृषा ॥ अग्ने सिंधूनां पर्वमानोऽ
 अर्पत्य ग्रेवाचोऽअग्नियोगोऽगच्छति । अग्ने वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतभिः पूयते वृषा ॥ अयं मतवान्छकुनो य-
 आहृतिर्ये ससारपर्वमानऽज्जर्मिणा । तव क्रत्वारो दसीऽअंतरा कवेष्टु चिर्धिया पवते सोमऽइंद्रते ॥ द्वापि वसानो यज-
 तोर्दिविस्पृशं तं रिक्षप्रासुर्वनेष्वर्षितः । स्वर्जज्ञानो न भसार्भ्य क्रीत्सु लभस्य पितरमा विवासति ॥ सोऽअस्य विशेशे हि
 शर्मयच्छति योऽअस्य धाम प्रथमं व्यानुशे । पदं यदस्य परमेव्यो मन्यतो विश्वाऽअभिसंयाति संयतः ॥ १४ ॥ प्रोऽअ

क्रक्सं.

अ. ७ अ. ३

॥ १८ ॥

यासीदिदुरिद्रस्यनिष्कृतं सखासख्युनप्रमिनातिसंगिरं । मर्येऽइवयुवतिभिः समर्षतिसोमः कलशेशतयास्नापथा+ ॥
प्रवोधिर्गोमं द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्कमुः । सोममनीषाऽअभ्यनूषतस्तुभोभिधेनवः पयसेमशिश्रयुः ॥
आनः सोमसंयतं पिप्युपीमिपिमिदोपवस्वपवमानोऽअस्त्रिधं । यानोदोहतेत्रिरहुन्नसंश्रुषीक्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यं ॥
वृषामलीनापवते विचक्षणः सोमोऽअहः प्रतरीतोषसोदिवः । क्राणासिंधूनां कलशाऽअवीवशादिद्रस्यहाद्योविशन्मनी
षिभिः ॥ मनीषिभिः पवतेपर्व्यः कुविर्दुर्भिर्यतः परिकोशाऽअचिक्कदत् ॥ त्रितस्यनामजनयन्मधुक्षरदिद्रस्यवायोः सु
ख्यायकर्त्तव्ये ॥ १५ ॥ अयंपुनानऽउपसोविरोचयदयंसिंधुभ्योऽअभवदुलोककृत् । अयं त्रिःसप्तदुदुहानऽआशिरं
सोमोहृदपवते चारुमत्सरः+ ॥ पवस्वसोमदिव्येषुधामसुसुजानऽईदोकलशैपवित्रऽआ । सीदन्निद्रस्यजठरेकनिक्कद
नुभिर्यतः सूर्यमारोहयोदिवि+ ॥ अर्द्रभिः सुतः पवसेपवित्रऽऑऽइदुविद्रस्यजठरेष्वविशन् । त्वं न चक्षाऽअभवो वि
चक्षणसोमगोत्रमंगिरोभ्योवृणोरप ॥ त्वांसोमपवमानं स्वाध्यानुविप्रासोऽअमदन्नवस्ववः । त्वांसुपर्णोऽअभरहिव
स्पर्शदोविश्वभिर्मतिभिः परिष्कृतं ॥ अव्येषुनानंपरिवारऽऊर्मिणाहरिनवतेऽअभिसप्तधेनवः । अपामपस्येऽअध्या
यवः क्वचित्तस्ययोनानाहिपाऽअहेपत ॥ १६ ॥ इंदुः पुनानोऽअतिगाहतेमृधोविश्वानिक्खवन्त्सुपथानियज्यवे ।
गाः कृण्वानोनिर्णिजहृतः क्विरत्योनक्रीळन्परिवारमपति ॥ असश्चतः शतधाराऽअभिश्चियोहारनवंतेवताऽजन्

मंडलं ९

अनु. ५

॥ १८ ॥

न्युवः । क्षिपोमृजंतिपरिगोभिरावृतततीयेपष्ठेऽधरोचनेदिवः⁺ ॥ तवेमाःप्रजादिव्यसरेतस्सत्वंविश्वस्यभुवन
 स्यराजसि । अथेदंविश्वपवमानतेवशेत्यमिदोप्रथमोर्धामधाऽअसि ॥ त्वंसमुद्रोऽअसिविश्ववित्कवेतेवेमाःपंचप्रदि
 शोविधर्मणि । त्वंचांचगृथिर्वीचातिजश्चित्तवज्योतीपिपवमानसूर्यः ॥ त्वंपवित्रेरजसोविधर्मणिदेवेभ्यःसोमपव
 मानपूयसे । त्वामश्विजःप्रथमाऽअगृभ्णततुभ्येमाविश्वभुवनानियेमिरे ॥ १७ ॥ ग्रेभऽएत्यतिवारमव्ययंवृषाव
 नेष्ववचक्रदृद्धरिः । संधीतयोवावशानाऽअनूपतशिशुरिहंतिमतयःपनिमत्तं ॥ ससूर्यस्यरश्मिभिःपरिव्यतंतुत
 न्यानस्त्रिवृतयथाविदे । नयन्नृतस्प्रशिशोनेवीयसीःपतिर्जनीनामुपयातिनिष्कृतं⁺ ॥ राजासिर्धूनापवतेपतिर्दिवऽ
 क्रतस्ययातिपृथिभिःकर्निकदत् । सहस्रधारःपरिपिच्यतेहरिःपुनानोवाचंजनयुधुर्पावसुः ॥ पवमानमह्यर्णोविधावसि
 सूरोनचित्रोऽअव्ययानिपव्यया । गर्भस्तिपूतोवृभिरर्द्रिभिःसुतोमहेवाजायुधन्यायधन्वसि ॥ इपमूर्जपवमानाभ्यर्ध
 सिश्येनोनवंकुलशेषुसीदसि । इन्द्रायमह्यमद्योमदःसुतोदिवोर्विष्टंभऽउपमोर्विचक्षणः⁺ ॥ १८ ॥ सप्तस्वसारोऽअभि
 मातरःशिशुनवजज्ञानंजेन्व्यविपश्चित् । अपांगंधर्वीद्विष्यन्नचक्षसंसोमंविश्वस्यभुवनस्यराजसे ॥ इज्ञानऽइमाभुवना
 निवीयसेयुजानऽइदोहुरितःसुपर्णैः । तास्तेक्षरंतुमधुमद्वृतं पयस्तवव्रतेसोमतिष्ठतुकुष्टयः ॥ त्वंनुचक्षाऽअसिसोमचि
 श्वतःपवमानवृभुताविधावसि । सनःपवस्ववसुमृद्धिरण्यवद्वयंस्यामभुवनेपुजीवसे ॥ गोवित्पवस्ववसुविद्धिरण्य

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ३

॥ १९ ॥

मंडलं ९

अनु. ५

॥ १९ ॥

विद्रेतोधाऽइदोभुवनेष्वर्पितः । त्वंसुवीरोऽसिसोमविश्वचित्त्वाविप्राऽउपगिरेमऽआसते ॥ उन्मध्वऽऊर्भिर्वनना
ऽअतिष्ठिपदपोवसानोमहिषोविगाहते । राजापवित्ररथोवाजमारुहत्सहस्रभृष्टिर्जयतिश्रवोवृहत् ॥ १९ ॥ सभे
दनाऽउर्दियतिप्रजावतीर्विश्वयुर्विश्वाःसुभराऽअर्हादिंवि । ब्रह्मप्रजावद्रथिमर्भपस्यंपीतऽइदुविद्रमस्मभ्यंयाचता
त् ॥ सोऽअग्नेऽअह्नांहरिहव्यतोमदःप्रचेतसाचेतयतेऽअनुद्युभिः । द्राजनायातर्यंज्ञतरीयतेनराचशंसदैव्यंचधत्
॥ अंजतेव्यंजतेसमंजतेऋतुरिहंतिमधुनाभ्यंजते । सिंधोरुच्छ्रासेपतर्यंतमक्षणींहिरण्यपावाःपशुमांसुगृभ्णते ॥
विपश्चितेपर्वमानायागायतमहीनधारात्यन्धोऽअर्षति । अहिर्नज्जुर्णमितिसर्पतित्वचमत्योनकीळञ्जसरद्धृषाहरीः ॥
अग्नेगोराजाप्यस्तविष्यतेविमानोऽअह्नांभुवनेष्वर्पितः । हरिर्धृतस्तुःसुहृशीकोऽअर्णवोव्योतीरथःपवतेरायऽओक्वः ॥
॥ २० ॥ अर्षजिस्कंभोदिवऽउद्यतोमदःपरिन्निधातुर्भुवनान्यर्षति । अंशुरिहंतिमतयुःपनिमतंगिरायदिनिर्णिजम
सोमकलत्रेषुसीदसि ॥ पर्वस्वसोमकतुविन्नऽउक्थ्योव्योवारेपरिधावमधुप्रियं । जहिविश्वाञ्जक्षसऽइदोऽअत्रिणोब
हवदेमविदथेसुवीराः ॥ २१ ॥ (९।५।२) प्रतुद्रवपरिकोशंनिर्षादुन्नाभिःपुनानोऽअभिवाजमर्ष । अश्वंनत्वावा
(९।५।२) प्रतुद्रवेतिनवर्चस्यसूक्तस्यकाव्यउशनःपवमानसोमस्त्रिष्टुप् ।

जिर्नमर्जयंतोच्छ्रावहर्षिशनाभिर्नयंति ॥ स्वायुधः पवते देव इंदुरशस्तिहावृजनं रक्षमाणः । पिता देवानां जनिता सु
 दक्षो विष्टं भो द्विवो धरुणः पृथिव्याः ॥ ऋषिर्विप्रः पुरऽएता जना नाम भुधर् रऽवशना काव्येन । सचिद्वेदनिर्हितं यदा
 सामपीच्यै गुह्यं नाम गोनी ॥ एष स ते मधुमोऽइंद्र सोमो वृषा वृष्णे परिपुवित्रेऽक्षाः । सहस्रसाः शतसाधूरिदावांश
 श्वत्तमं बहिरावाज्यं स्यात् ॥ एते सोमोऽभिगव्या सहस्रामहेवाजायामृतोयुश्रवांसि । पुवित्रेभिः पर्वमानाऽअसृग्र
 न्द्रवस्यवो न पृतनाजोऽअत्याः ॥ २२ ॥ परिहिण्मो पुरुहूतो जनां विश्वासं रज्जो जनापयमानः । अथाभरश्येन भृत
 प्रयांसि रधिंतुं जानोऽअभिवाजमर्ष ॥ एष सुवानः परिसोमः पुवित्रे सगो न सष्टोऽअदधावदवी । द्विवो न विद्युत्स्तनयं त्यत्रैः सोम
 न श्रंगे गाव्यन्नभिश्शरो न सत्वा ॥ एषाय यौ परमादुतरद्रेः कूचि त्सती रूच्यगा विवेद । पूर्वीरिपो वृहती जीरदा नो शिक्षा शचीव
 स्यते पवतऽइंद्र धारा ॥ २३ ॥ (१।५।३) अयं सोमोऽइंद्र तुभ्यं सुन्वेतुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि । त्वंहयं च कृपे त्वं वृषऽइ
 स्तवताऽअपुष्टुत् ॥ २३ ॥ (१।५।३) अयं सोमोऽइंद्र तुभ्यं सुन्वेतुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि । आद्रीं विश्वानहु ज्याणि जातास्वर्पाताव
 दुं मदायुज्याय सोमं ॥ सऽईरथो न भुरिपाळयो जिमहः पुरुणि सातये वसूनि । विश्ववारो द्रविणो दाऽइव त्वमन्पये वधीज
 नेऽऊर्ध्वानं वंत ॥ वायुर्नयो नियुत्वौऽइष्टया मानासेत्येव हवऽआशं मविष्टः । विश्ववारो द्रविणो दाऽइव त्वमन्पये वधीज

(१।५।३) अयं सोम इत्यष्टयं सूक्तस्य काव्य उग्रनापवमानसोमस्त्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ३

॥ २० ॥

वनोसिसोम ॥ इन्द्रो नयो महाकर्माणि चर्कित्वा वृत्राणामसिसोमपभित् । पैद्वोनहित्वमहिनाम्ना हुंता विश्वस्यासिसोम
दस्योः ॥ अग्निर्नयो वनऽआसज्यमानो वृथा पाजो सिद्धयुतेन दीपु । जनोनयुध्वामहृतऽउपन्द्रिर्यतिसोमः पवमानऽ
ऊर्मिः ॥ एते सोमाऽअतिवारण्यव्यादिव्यानकोशासोऽअश्रवर्षाः । वृथासमुद्रांसिध्वो ननीचीः सुतासोऽअभिकुल
शाऽअसृग्रन् ॥ शुष्मीशर्धो नमारुतं पवस्वानभिशस्तादिव्यायथाविद् । आपोनमक्षुसुमतिर्भवानः सहस्राप्साः पृतना
म ॥ २४ ॥ (९।५।४) प्रोस्यवाहिः पथ्याभिरस्यान्दिवोनवृष्टिः पवमानोऽअक्षाः । सहस्रधारोऽअसदृश्यः स्मेमा
तुरुपस्थे वनऽआचसोमः ॥ राजासिधूनामवसिष्टवासऽकृतस्यनावमारुहदजिष्ठा । अप्सुद्रुप्सो वा वृधेयेन जूतो दुहऽ
इपितादुहऽईपितुर्जाः ॥ सिंहं न संतमध्वोऽअयासंहरिमरुषं दिवोऽअस्यपति । शरोयुत्सुप्रथमः पृच्छते गाऽअस्य च
क्षसापरिपात्युक्षाः ॥ मधुपृष्ठघोरमयासमभ्रंरथं युजंयुरुचक्रऽक्रुष्वं । स्वसारऽईजामयोमर्जयंतिसनाभयोवाजिन
मूर्जयंति ॥ चतस्रऽईघृतदुहः सचंते समानेऽअंतर्धरणे निषत्ताः । ताऽईमर्षति नर्मसा पुनानास्ताऽईविश्वतुः पारिपंति
पूर्वीः ॥ विष्टभो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वाऽउत क्षितयो हस्तेऽअस्य । असत्तऽउत्सो गृणते नियुत्वान्मध्वोऽअंशुः प

(९।५।४) प्रोस्यवाहिरिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य काव्य उशनापवमानसोमस्त्रिष्टुप् ।

वतऽईन्द्रियाय ॥ वृन्वन्नवातोऽभिदुवर्गीतिमिन्द्रायसोमघृत्रहापवस्य । शग्धिमाःपुरुश्चन्द्रस्वरायःसुवीर्यस्यपतयः
 स्याम ॥ २५ ॥ (९।५।५) ग्रहिन्यानोजनितारोदस्योन्नवाजसनिव्यत्रयासीत् । इन्द्रगच्छन्नायुधासंजिज्ञानो
 विश्वावसुहस्तयोरादधानः ॥ अभिव्रिपृष्ठवृणंययोधामौगयाणामवावशंतवाणीः । वनावसानोवर्कणोनसिन्धुनिचर
 लुधादयतेवार्याणि ॥ शूरयामःसर्ववीरःसहवान्जेतापवस्यसर्निताधनानि । तिग्मायुधःक्षिप्रधन्याममत्स्वर्पातुःमा
 ह्वानृतनासुशत्रून् ॥ उरुगव्यूतिरभयानिकृण्वन्त्समीचीनेऽआपवस्त्रापुरंधी । अपःसिपासद्गपमःस्वर्गःसांचक्र
 दोमहोऽअसभ्यवाजांन् ॥ मत्सिसोमवरुणंमत्सिमित्रमत्स्रीद्रमिंदोपवमानविष्णुं । मत्सिशर्धामारुतंमत्सिदेवान्म
 त्सिमहामिन्द्रमिद्रोमदोय ॥ एवारजैवक्रतुर्माऽअर्मेनविश्वाघनिश्शुद्रुरितापवस्य । इंदोसृक्तायवचमेवयोधायूयपा
 तस्यस्तिभिःसदानः ॥ २६ ॥ ॥ इतिसप्तमाष्टकेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

एकपचाशाध्यायेवर्गाः २६ सूक्तानि १५ त्रय १३५ ॥ न्याग ॥ पवमानाग्नोमायेद १३५ ॥ इतिसप्तमेतृतीयः ॥

असर्जिकस्यपःपरिसुवानःसाकमुक्षःपंचनोधाअधियत्कर्णवःकनिकंतिप्रस्कर्णवःप्रसेनानीश्चतुर्विंशतिदंबोदासिः
 प्रतर्दनोस्यप्रेपाष्टापंचाशदादंघृतंचवसिष्ठोपश्यदुत्तरानवपृथग्वासिष्ठइंद्रममतिर्वृषगणोमन्युरुपमन्युर्व्याघ्रपा

(९।५।५) ग्रहिन्यानइतिपट्टचस्यसूक्तस्यमेत्रावर्कणिर्धेसिष्ठःपवमानसोमग्निपृष्ट ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ४

॥ २१ ॥

च्छर्किः कर्णशुन्मूलीकोवसुकइतिचतुर्दशपराशरौत्याः कुत्सोभिनोद्वादशावरीषक्रजिश्वाचानुष्टुभंहब्रहत्युपां
त्याहर्यतायाद्यैरभसूतकाश्यपोबृहत्याद्याभीनवंतेनव ॥ ४ ॥
॥ हरिः ओम् ॥ (९।५।६) असर्जिवक्त्राश्च्यथाजौधियामनोताप्रथमोमनीषी । दशस्वसारोऽअधिसानोऽ
अव्येजतिवह्निंसदनान्यच्छ ॥ वीतीजनस्यद्विव्यस्वकव्यैरधिस्वानोनहुज्यैभिर्दिदुः । प्रयोनुभिरमृतोमर्त्यैभिर्मर्त्यै
जानोविभिर्गोभिरद्भिः ॥ वृषावृष्णोरुवदुशरसैपर्वमानोरुशदीर्तेपयोगोः । सहस्रमुकापयिभिर्वचोविदध्वस्म
भिः सरोऽअण्वंविधाति ॥ रुजाहृद्वाचिदुक्षसः सदासिपुनानडदङ्कणुहि विवाजान् । वृश्चोपरिष्ठात्तुजतावुधेनयेऽ
अतिदुरादुपनायमेषां ॥ समलवन्नव्यसेविश्ववारसुक्तार्यपथः कृणुहिप्राचः । येदुःषहासोवनुषावहंतस्तास्तेऽअश्याम
पुरुकृत्पुरुक्षो ॥ एवापुनानोऽअपः स्वर्गाऽअस्मभ्यतोकातनयानिभूरि । शनः क्षवमरुज्योतीषिसोमज्योदः सूर्यहृश
येरिरीहि ॥ १ ॥ (९।५।७) परिसुवानोहरिरंशुः पवित्रेथोनसर्जिसनयेहियानः । आपच्छोर्कमिद्वियंपयमानः प्र
तिदेवाँऽअजुषतप्रयोभिः ॥ अच्छानचक्षाऽअसरत्पवित्रेनामदर्धानः कविरस्योनौ । सीदन्होतेवसदनेचमूषूपेगम
नृषयः सप्तविप्राः ॥ प्रसुमेधागातुविद्विश्चदेवः सोमः पुनानः सदेऽएतिनित्यं । सुवद्विभ्येषुकाव्येषुरतानुजनान्यततेप
(९।५।६) असर्जातिषड्वस्यसूक्तस्यमारीचः कश्यपः पवमानसोमस्त्रिष्टुप् । (९।५।७) परिसुवानइतिषड्वस्यसूक्तस्यमारीचः कश्यपः पवमान

मंडलं ९

अनु. १

॥ २१ ॥

चधीरः ॥ तवत्येसोमपवमाननिण्येविध्वेदेवास्त्रयऽएकादशार्कः । दशस्वधाभिरधिमानोऽअव्येमृजंतिगानधःमृत
 यृहीः+ तन्नसत्यंपवमानस्यास्तुयविध्वेकार्कःसंनसंत । ज्योतिर्यदहेऽअकृणोदुलोक्तंप्रावन्मनंदस्येकरुभीकं ॥ २ ॥
 परिसञ्चैवपशुमातिहोतारजानसत्यःसर्भितीरियानः । सोमःपुनानःकलशोऽअयामीत्सोदन्मगोनमंष्ट्रियोवनेषु ॥ ३ ॥
 (९।५।८) साकमुक्षौमर्जयंतस्वसारोदशधीरंस्वधीतयोधनुत्रीः । हरिःपयंद्रवृजाःसूर्यस्यद्रोणनक्षेत्रेऽअत्योनवा
 जी+ संमातृभिर्नशिर्वावशानोवृषादधन्येपुरुवारोऽअद्विः । मर्योनयोपोमभिर्निष्कृतंयन्संगच्छतेकलशऽअगुन्नि
 योभिः ॥ उत्तप्रपेप्यऽऊधरश्चोवाऽदंष्टुर्धोराभिःमचतेसुमेधाः । मर्धानगावःपर्यमानमृष्यभिर्श्रीगंतिवसुभिर्ननि
 कैः+ सनोदेवेभिःपवमानरुदोरयिमश्विनैवावशानः । रुधिरायतोमुशूर्तपूरधिरस्मर्गगाद्रावनेवसूनां ॥ ४ ॥ (९।५।९)
 नोरयिमुपमास्वनचलंपुनानोवाताप्यंविश्वश्चंद्रं । प्रवदितुर्दिदोतार्यथुःप्रातमंशधियात्रमुजगम्यात् ॥ ५ ॥ (९।५।१०)
 अधियदसिन्वाजिनीवशुभःस्पधीतेधियःसूर्येनविशः । अपोरुणानःपंचतंरुधीयन्त्रजंनपेशुवर्धेनायमन्मं ॥ द्रुता
 व्युर्णवन्नमृतस्यधामंस्वर्विदेभुवनानिप्रयंत । धियःपिन्वानाःस्वमरेनगर्वऽअस्तायंतीग्भिवावश्रऽदंष्टु ॥ परियत्कृषिः

व्युर्णवन्नमृतस्यधामंस्वर्विदेभुवनानिप्रयंत । धियःपिन्वानाःस्वमरेनगर्वऽअस्तायंतीग्भिवावश्रऽदंष्टु ॥ ५ ॥ (९।५।१०) अग्निगितिपन्नंममृकस्य

नसोमस्त्रिष्टुप् । (९।५।८) साकमुश्रद्धतिपचर्चस्यमृक्तसगौतमोनोया.पवमानसोमस्त्रिष्टुप् ।
 धीरःकण्वःपवमानसोमस्त्रिष्टुप् ।

कक्सं.

अ. ७ अ. ४

॥ २२ ॥

मंडलं ९

अनु. ५

॥ २२ ॥

काव्याभरते शूरो न रथोऽसुर्वनानि विन्वा । देवेषु यशोमती यभूषन्दक्षायराचः पुरुभूषनव्यः ॥ अथेजातः श्रियऽआनिरिया
यश्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति । अथं वसानाऽअमृतत्वमायन्मवैतिसत्यासमिथामितद्रौ ॥ इषमूर्जे मभ्यर्षाभ्यंगामुरु
ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान् । विन्वानि हि सुषहृता नितुभ्यं पवमाना वधसे सोमशत्रून् ॥ ४ ॥ (९।५।१०) कनिकंति हरि
रासज्यमानः सीदुन्वर्नस्य जठरे पुनानः । नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजंगाऽअतो मतीर्जनयतस्वधाभिः ॥ हरिः सृजानः पृथ्वा
मृतस्यैर्यति वाचमरिते वनाव । देवो देवानां गुह्यानि नामा विष्कृणोति बर्हिषप्रवाचे ॥ अपामिवेदमयस्तुराणाः प्रमेनी
षाऽईरते सोममच्छ । नमस्यंतीरुपचयति संचविशं त्युशतीरुशतं ॥ तं मृजानं महिषं नसानां वंशुदं हत्यक्षणी गिरिष्ठां ।
तं वावशानं मृतयः सच ते त्रितो बिभर्ति वरुणं समुद्रे ॥ इष्यन्वाचमुपवक्तेव होतुः पुनानऽईदो विष्यामनीषां । इन्द्रश्च यत्क्ष
यथः सौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ ५ ॥ (९।५।११) प्रसेनानीः शूरोऽअश्रेयानां गव्यत्रेति हर्षतेऽअस्य सेना ।
भद्रान् कृण्वानि द्रह्वान्तसखिभ्यऽआसो मोवस्वारभसानि दत्ते ॥ समस्य हरिं हरयो मृजं त्यश्वहृयैरनिशितं नमोभिः ।
आतिष्ठति रथमिन्द्रस्य सखा विहोऽएना सुमति यात्यच्छ ॥ सनो देव देवताते पवस्वमहे सोमस्सरसऽइन्द्रपानः । कृण्वन्
(९।५।१०) कनिकंतीति पंचर्यस्य सूक्तस्य कण्वः प्रस्कण्वः पवमानसोमस्त्रिष्टुप् । (९।५।११) प्रसेनानीरिति चतुर्विंशत्यृचस्य सूक्तस्य
देवो दासिः प्रतर्दनः पवमानसोमस्त्रिष्टुप् ।

कृण्वन्

पोवर्पयन्ध्यामतेमामुरारानोवरिवस्यापुनानः ॥ अजीतयेहृतयेपवस्वस्यस्तयेसर्वतातयेचुहते । तदुशंतिविश्वऽङ्गुमेस
 स्वायुस्तदुहंवदिमपवमानसोम ॥ सोमःपवतेजनितामतीनांजनिताद्वियोजनितापृथिव्याः । जनिताग्नेजनितासूर्यस्य
 जनितेद्रस्यजनितोतविष्णोः ॥ ६ ॥ ब्रह्मादेवानांपदुवीःकवीनामृषिविप्राणांमहिषोमगाणां । स्येनोगृध्राणांस्वर्धितिर्व
 नानांसोमःपवित्रमत्यैतिरेभन् ॥ प्राचींविपद्भ्यश्चऽकुर्मिनसिंधुगिरःसोमःपवमानोमनीपाः । अंतःपश्यन्धुजनेमावरा
 ण्यातिष्ठतिवृषभोगोर्पुजानन् ॥ समत्सरःपुत्सुवन्वन्नवातःसहस्रेताऽअभिवाजमर्ष ॥ इंद्रविद्रोपवमानोमनीप्यं
 शोरूमिमीरयुगाऽईपण्यन् ॥ परिप्रियःकलशेदेववातुऽइंद्रायुसोमोरण्योमदाय ॥ सहस्रधारःश्रुतवाजऽइंद्रवृजिन
 सस्रिःसमनाजिगति ॥ सपथ्योर्वसत्रिजायमानोमृजानोऽअप्सुदुहुहानोऽअद्रौ । अभिशस्तिपाभुवनस्यराजविद
 ह्नातुंब्रह्मणेपयमानः ॥ ७ ॥ त्वयाहिनःपितरःसोमपूर्वैकमीणिचक्रुःपवमानधीराः । वृन्वन्नवातःपरिधींऽरपौर्णुवीरे
 भिरश्वैर्मघवोभवानः ॥ यथापवथामनवेवयोधाऽअमित्रहाव्रिवोविद्धविग्मान् । एवापवस्वद्रविणंदधानऽइंद्रेसंति
 षज्जनयानुधानि ॥ पर्वस्वसोममधुमाँऽकृतावापोवसानोऽअधिसानोऽअव्ये । अवद्रोणांनिघृतवाँतिसीदमदिन्तमो
 मत्सरऽइंद्रपानः ॥ दृष्टिदिवःश्रुतधारःपवस्वसहस्रावाजयुदेवधीतो । संसिंधुभिःकलशैवावशानःसमस्त्रियाभिः
 प्रतिरन्नऽआयुः ॥ एपस्वसोमोमतिभिःपुनानोल्योनवाजीतरतीदरातीः । पयोनदुग्धमदितेरिपरिमाविवगातुःसुयमो

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ४

॥ २३ ॥

नवोहो ॥ ८ ॥ स्वायधः सोतृभिः पयमानोभ्यर्षिर्गुह्यं चारुनाम । अभिवाजं सतिरिव श्रवस्याभिवायुमभिगादेव सोम ॥
शिष्टं जज्ञानं हर्षतं मृजति शूभंति वाह्मिरुतोगेने । कविर्गीर्भिः काव्येनाकविः सन्तोमः पवित्रमत्यैतिरेभन् ॥ ऋषिम
नायऽऽर्कषिऽकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनां । तृतीयं धर्ममहिषः सिषा सन्तोमो विराजमनुराजतिष्टुप् ॥ चमष
च्छयेनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुऽप्सऽआयुधानि विभ्रत् । अपामासि सचमानः समुद्रतुरीयं धर्ममहिषो विवक्ति ॥ मयो
नशू अस्तन्वमृजानोत्यो न सृत्वा सनयेधनानां । वृषेव यथा परि कौशमर्षन्कनि कदञ्चम्बो इराविवेश ॥ ९ ॥ पर्वस्वेदो
पवमानो महोभिः कर्निकदत्परिवारण्यर्ष । क्रीळन् चम्बो इराविश पयमानऽइन्द्रतेरसो मदिरोर्ममत्तु ॥ प्रास्य धारा बृहती
रस्यन्नचो गोभिः कुलशोऽआविवेश । सामकृण्वन्त्सामन्यो विपश्चित्कदेनेत्यभिसख्युर्नृजामिन् ॥ अपमन्नो विपवमा
सोमयोषेव यंति सुदुर्घाः सुधाराः । सीदन्वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कुलशोऽपसत्ता ॥ आतेरुचः पवमानस्य
षष्ठेनुवाके समसूक्तानि (९।६।१) अस्य प्रेयस्य पंचाशद्वचस्य सूक्तानां तिसृणामैत्रावरुणिर्वसिष्ठश्चतुर्थ्यादिति सृणां वासिष्ठ इन्द्रप्रमतिः
ततः द्वितीयादि नववचानां पवमानसोमस्त्रिष्टुप् समस्यादिति सृणा वासिष्ठो धृपगणो दशम्यादिति सृणा वासिष्ठो मन्युस्त्रयोदश्यादिति सृणा वा
सिष्ठ उपमन्युः षोडश्यादिति सृणा वासिष्ठो न्यात्रपादेकोनविंश्यादिति सृणा वासिष्ठः शक्तिर्द्वाविंश्यादिति सृणा वासिष्ठः कर्णश्चतुष्विंश्यादि

मंडलं ९

अनु. ६

॥ २३ ॥

प्रेषाहुमनापयमानो देवो देवेभिः समं पृक्तसं । सुतः पुत्रिन् पयंतिरेभन्मि तेव स द्रव्यं पशुमांतिहोता ॥ भद्रावस्त्रासमन्या इ
 वसानो महान्कृविनिर्वचनानि शंसन् । अवच्यस्व चन्द्रोः पयमानो विचक्षणो जागृद्विदेवपीतौ ॥ समुप्रियो मृज्यते
 सानोऽअव्येयशस्त्रो यशसांक्षितोऽअस्मे । अभिस्वर्घन्वापयमानो ययं पातस्वस्तिभिः सदानः ॥ प्रगायताभ्यर्चो मदे
 वान्तो मं हि नो तमहुते धनाय । स्वादुः पवातेऽअति पारमव्यमासीदतिकलशं देवयुतैः ॥ इंदुदेवानां सुपसख्यमाय
 वान्तो मं हि नो तमहुते धनाय ॥ ११ ॥ स्तोत्रे राये हरि ररपुनानऽइंद्रं
 वान्तो मं हि नो तमहुते धनाय ॥ १२ ॥ प्रकाव्यं मुशने वव्रवाणो देवो देवानां ज
 न्तुहस्रधारः पवते मदाय । वृभिः स्तवानोऽअनुधामपूर्वमगन्निद्रं महते सौभगाय ॥ १३ ॥ प्रहंसासस्तुपलं मन्युमच्छामादस्तं वृपगणाऽ
 मदीगच्छतु ते भराय । देवैर्धा हि सरथं राधोऽअच्छायूं पातस्वस्तिभिः सदानः ॥ प्रहंसासस्तुपलं मन्युमच्छामादस्तं वृपगणाऽ
 निमाविवक्ति । महि व्रतः शुचि वंधुः पावकः पदावराहोऽअभ्येतिरेभन् ॥ प्रहंसासस्तुपलं मन्युमच्छामादस्तं वृपगणाऽ
 अयासुः । आंगुल्यैः पवमानं सखायो दुर्धर्षसाकं प्रवदंति वाणं ॥ सरंहतऽउरुगायस्य जतिवृथा कीलं तं मिमते नगावः । हंति र
 परीणं संकृणुते तिग्मश्रृंगो दिवा हरिर्दहशेनकं मज्रः ॥ इंदुर्वाजी पवते गो न्योघाऽइंद्रो सोमः सहऽइन्वन्मदाय । हंति र
 क्षोबाधते पर्यराती र्वीरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥ १४ ॥ अधधारयामध्वा पृचानस्तिरोरोर्मपवतेऽअद्रिदुग्धः । इंदु
 ॥

तिष्ठणावा सिधो मृली कोष्ट विंश्यादिति स्तनां वा सिधो वसुक्र एकत्रिंश्यादिव तुर्दशानां शाक्त्यः पराशरः पंचचत्वारिंश्यादिव तुर्दशानां गिर

साः कृत्स्नः ऋषयः पवमानसो मच्छिद्रम् ।

अवसं.

अ. ७ अ. ४

॥ २४ ॥

रिद्रस्यसखं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥ अभिप्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्स्वेन रसेन पंच ॥ इन्द्रो धर्मोऽयु
तुथावसानो दशक्षिणोऽव्यतसानोऽव्ये ॥ वृषाशोणोऽभिकर्त्तुः कृत्वा न दयन्नेति पृथिवी मत्तदा ॥ इन्द्रस्येव ब्रह्म
राश्रुण्वऽआजौ प्रचेतयन् प्रपति वाचमेमां ॥ एवापवस्व मदिरो मदायो दद्यात् भस्य न मय न्वधुस्त्रैः ॥ परिवर्णो भरमाणो रुशतंगव्यु
कृण्वन्निद्राय सोमपरिपिच्यमानः ॥ १३ ॥ जुष्टीन् इन्द्रो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन् ॥ धनेव विष्वग्दुरितानि वि
नोऽअर्पणोऽपि सोमसिक्तः ॥ १३ ॥ जुष्टीन् इन्द्रो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन् ॥ धनेव विष्वग्दुरितानि वि
नोमयो देवधन्वपस्त्यावान् ॥ जुष्टो मदाय देवता तदं द्रोऽपि ण्युना धन्वसानोऽव्ये ॥ सुहस्रधारः सुरभिरदब्धः परिस्र
ववाजसातौ न पृथ्वी ॥ अरुमानो यैरथाऽअयुक्ताऽअत्यासोन ससृजानां सऽआजौ ॥ एते शक्रा सोधन्वति सोमा देवांसस्तौ
उपयातापि वधैः ॥ १४ ॥ एवान् इन्द्रोऽभिदेवतीति परिस्रवन् भोऽअर्णश्चमूषु ॥ सोमोऽअसभ्यं काम्यं बृहत् रयिं ददा
गावऽइन्द्र ॥ मदानुदो द्विव्यो दातुं पिन्वऽकृतमताय पवते सुमेधाः ॥ धर्माभुव कृजन्त्यस्य राजा प्रदिमभिर्दशभिर्भारिभूम ॥

मंडलं ९

अनु- ६

॥ २४ ॥

पवित्रैभिः पर्वमानो न च क्षाराजो देवानां मतमर्थानां । द्वितां भुवद्रयिपतीरयीणामतं भरत्सुभृतं चार्विदुः ॥ अर्वोऽद्व
 वसेसातिमच्छेद्रस्यवायो रभिवीतिमर्ष ॥ सनः सहस्राबृहतीरिषो द्वाभवा सोमद्रविणो विपुनानः ॥ १५ ॥ देवाव्यो
 नः परिपिच्यमानाः क्षयसुवीरधन्वंतु सोमाः । आयुज्यवः सुमतिं विश्ववारा होतारो न दिवि जयो मद्रतमाः ॥ एवादेव दे
 वताते पवस्व महे सोमस्वरसे देवपानः । महश्चिच्छिन्मसिहिताः समये कृधिसुष्ठाने रोदसी पुनानः ॥ अश्वोनकदो वृष
 भिर्युजानः सिंहेन भीमो मनसो जवीयान् । अर्वा चीनैः पथिभिर्यरजिष्ठाऽआपवस्व सोमनसं नऽइदो ॥ शतंधारो देवजा
 ताऽअसृग्रन्तसहस्रमेनाः क्रवयो मृजंति । इदो सनित्रं दिवऽआपवस्व पुरऽएता सिमहृतो धनस्य ॥ द्वियो नसर्गोऽअससृ
 ग्रमल्लारजानमित्रप्रार्मिनातिधीरः । पितुर्नपुत्रः क्रपुर्भिर्यतानऽआपवस्व विशेऽअस्याऽअर्जीति ॥ १६ ॥ प्रते धाराम
 धुमतीरसृग्रन्वारान्यत्पुतोऽअत्येज्यव्यान् । पर्वमानपर्वसे धामगो न हि न्वानो वाचमतिभिः कवीनां ॥ द्विव्यः सुपणोर्वचक्षि
 मतस्य शुक्रो विभास्य मृतस्य धाम । सऽइंद्रा यपवसे मत्सरवान् हि न्वानो वाचमतिभिः कवीनां ॥ तिस्रो वाचऽईरयतिप्रवाहि
 सोमपिन्वन्धाराः कर्मणा देवधीतौ । इदो विशकलशो सोमधानं कंदं निह्रिसूर्यस्यो परादिमं ॥ तिस्रो वाचऽईरयतिप्रवाहि
 क्रतस्य धीति ब्रह्मणो मनीषां । गावो यंति गोपतिं पच्छमानाः सोमं यंति मतयो वावशानाः ॥ सोमगावो धेनवो वावशा
 नाः सोमं विप्रार्मतिभिः पच्छमानाः । सोमः सतः पूयतेऽअज्यमानः सोमोऽअकर्कास्त्रिष्टुभः संनवंते ॥ १७ ॥ एवानः सोम

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ४

॥ २४ ॥

रिद्रस्यसखं जुषागर्पवस्वपयमानः स्वस्ति । इन्द्रमाविश बृहदारवेण वर्धया वाचं जनया पुरंधि ॥ आजगृवि विप्रः क्रुता
तुथावसानो दशानोऽअसदच्छमूषं । सपतियं मिथुना सोनिकामाऽअध्वर्यवो रथिरासः सहस्ताः ॥ सपुनानऽउपसूरेन
राश्रपक्षऽआजौ दिसी विषऽआवः । प्रियाचिद्यस्य प्रियसासंऽकृती सतूधनं कारिणेन प्रयंसत् ॥ सर्वधिं तावर्धनः पयमा
नः सोमो माद्वोऽअभिनोज्योतिषा वीत् । येनानः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्दिदोऽअभिगाऽअद्रिमुष्णन् ॥ अक्रान्तस्समुद्रः
प्रथमे विधर्मन् जनयन् प्रजाभुवनस्य राजा । वृषा पवित्रेऽअधिसानोऽअव्यवृहत्सोमो वावृधे सुवानऽइदुः ॥ १८ ॥ मह
त्तसोमो महिषश्च कारापां यज्ञभो वृणीत देवान् । अर्द्धादिद्रे पर्वमानऽओजो जनयत्सूरेज्योतिरिदुः ॥ मत्सिवायुमिष्ट
येराधं सेच मत्सि मित्रावरुणा पयमानः । मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावा पृथिवी देवसोम ॥ ऋजुः पर्वस्ववृजि
नस्य हंता पाभी वां वाधमानो मृधश्च । अभिश्रीण नपयः पयसा भिगोना मिद्रस्य त्वं तव वयं सखायः ॥ मध्वः सूदं पर्वस्वव
स्वऽउत्सवीरं च मऽआर्पवस्वाभगं च । स्वदस्वेन्द्राय पर्वमानऽइदो रथिं च नऽआर्पवस्वासमुद्रात् ॥ सोमः सुतो धारया
त्योन हित्वा सिधुर्न निम्नमभिवाज्यक्षाः । आयोनिं वन्यमसदत्पुनानः समिदुर्गो भिरसरत्समद्भिः ॥ १९ ॥ एषस्य ते
पवतऽइन्द्रसोमश्च मपुधीरऽउज्यते तव स्वान् । स्वर्चक्षारथिरः सत्यशुष्मः कामो नयो देवयतामसर्जि ॥ एष प्रत्नेन वयं सापु
नानस्तिरो वर्षी सिदुहि तुर्दधानः । वसानः शर्मन्निव रूथमप्सु होतैव यातिसर्मने पुरेभन् ॥ नूनस्त्वं रथिरो देवसोमपरिस्त्र

मंडलं ९

अनु. ६

॥ २५ ॥

वचुभ्योःपयमानः । अप्सुस्वार्दिद्योमधुमोऽकृतावादेवोनयःसवितासत्यमन्मा ॥ अभिवायुंवीत्यर्पागुणानोऽभिभि
 त्नावरुणापयमानः । अभीनरंधीजवनरथेष्टामभीद्रुपणंवज्रचाहु ॥ अभिवत्सासुवसनान्यर्पाभिधेनूःसुदुर्घाःपयमा
 नः । अभिचंद्राभर्तवेनोहिरण्याभ्यश्वात्रथिनोदेवसोम ॥ २० ॥ अभीनोऽअर्पदिव्यावसूग्यभिविश्वापाधिवापूय
 मानः । अभियेनद्रविणमश्रवाभ्यापयंयजमदग्निवज्रः ॥ अयापवापवसूनावसूनिमोश्चत्वऽईदोसरसिप्रधन्व । त्र
 णश्चिदत्रयातो नजुतःपुरुमेधश्चित्तकवेनरदात् ॥ उतनऽएनापवयापवस्वाधिध्रुतेश्चाव्यस्यतीर्थे । अस्वापयश्चिगुतसेहयच्चापामि
 वसूनिबुक्षंनपुक्कंधूनवद्रणाय ॥ महीमेऽअस्यवृपुनामशपेमोश्चत्वेवापृशनेवावधन्ने । असिभगोऽअसिंदात्रस्यदातासिमघ
 त्रोऽअपाचितोऽअचेतः+ ॥ संत्रीपुवित्राविततान्येप्यन्येकैधायसिपयमानः । असिभगोऽअसिंदात्रस्यदातासिमघ
 वासुघवश्च्यऽईदो ॥ २१ ॥ एषर्विश्चवित्पवतेमनीषीसोमोविश्वस्यभुवनस्यराजा । द्रुप्सोऽईरयन्विदथेष्विदुर्विवार
 मव्यसमयाति याति ॥ ईदुरिहंतिमहिषाऽअदब्धाःपुदेरेभंतिक्रययोनगुप्राः । ह्रिन्वतिधीरादृशभिःक्षिपाभिःसमंज
 तेरूपमपारंसेन ॥ त्वयावयंपवमानेनसोमभरेकृतंविचिनुयामशब्धत् । तन्नोमित्रो ॥ २२ ॥ (१।६।२) अभि
 नोवाजसातमंरयिमर्पपुरुस्पृहं । ईदोसुहस्रभणसंतुविद्युन्मविभ्वासहं ॥ परित्यसुवानोऽअव्ययंरथेनवर्मोव्यत ।

(१।६।२) अभिनदतिद्वादशार्चस्यसूक्त्यावरीपक्वजिह्वानौपवमानसोमोनुष्टुवेकादशीदृष्टती ।

इंदुरभिदुणाहितोहि्यानोधारभिरक्षाः ॥ परिष्यसुवानोऽअक्षाऽइंदुरव्येमदच्युतः । धारायऽऊर्ध्वोऽअध्वरेत्राजा
 नैतिगव्ययुः⁺ ॥ सहित्वदैवशश्वतेवसुमतीयदाशुपे । इंदोसहृषिणैर्यिशुतात्मानंविवाससि ॥ वृथतेऽअस्यवृत्रह
 न्वसोवस्वःपुरुस्पृहः । निनेदिष्ठतमाऽइषःस्यामसन्नस्योधिगो ॥ द्विर्येपंचस्वयंशंसस्वसारोऽअद्रिसंहतं । प्रियमिंद्र
 स्यकाम्यंप्रत्नापयंत्यमिणं ॥ २३ ॥ परित्यहृतंहरिवृभुपुनंतिवारेण । योदेवान्विभ्वोऽइत्परिमदेनसहगच्छति ॥
 अस्यवोह्यवसापांतौदक्षसार्धनं । यःसरिषुश्रवौबृहद्देस्व^१र्णहृतः⁺ ॥ सर्वायज्ञेर्षुमानवीऽइंदुर्जनिष्टरोदसी । देवो
 देवीगिरिष्ठाऽअस्त्रेधंतंतुविष्वणि ॥ इद्रोयसोमपातवेवृत्रघ्नेपरिपिच्यसे । नरेचदक्षिणावतेदेवायसदनासदे ॥ तेप्र
 त्नासोव्युष्टिपसोमाःप्रवित्रेऽअक्षरन् । अपमोथंतःसनुतहुँरश्चितःप्रातस्ताँऽअग्रचेतसः ॥ तंसखायःपुरोरुचंयूयंवयंच
 सरयः । अश्यामवाजंगंध्यंसेनेमवाजंपस्यं ॥ २४ ॥ (९।६।३) आहृत्यतायधृष्णवेधनुस्तन्वंतिपौंस्यं । शुक्रांव
 यंत्यसुरायनिर्णिजंविपामग्रैमहीयुवः ॥ अधक्षपापरिष्कृतोवाजौअभिप्रगाहते । यदीविवस्वतोधिहोहारिहिन्वंति
 यातवे ॥ तमस्यमर्जयामसिमदोयऽइंद्रपातमः । यंगवऽआसभिर्दधुःपुराननंचसरयः ॥ तंगार्थयापुराण्यापुनान
 मभ्यनूषत । उतोऽकृपंतधीतयोदेवानांनमविभ्रतीः ॥ तमुक्षमाणमव्ययेवारपुनंतिधर्णसि । दतुनपूर्वचिंत्तयऽआ

(९।६।३) आहृत्यतायेत्यष्टचस्यसूक्तस्यकाश्यगौरेमसूतूपवमानसोमोनुवाद्याबृहती ।

शोसतेमनीपिर्णः ॥ २५ ॥ सधुनानोमद्विन्तमःसोमश्चमूयुसीदति । पुशोनरेतऽआदधत्पतैर्वचस्यतोधिः+ ॥ समृ
 ज्यतेसुकर्मभिर्दुवोदेवेभ्यःसुतः । विदेयदासुसंददिमहीरपोविगाहते ॥ सुतऽइदोपवित्रऽआनुभिर्भुतोविनीयसे ।
 इंद्रायमत्सरिन्तमश्चमूष्वानिषीदसि ॥ २६ ॥ (९।६।४) अभीनवंतेऽअद्भुहःप्रियमिंद्रस्यकाम्यं । वृत्सनपूर्वऽआ
 युनिजातरिंहंतिमातरं ॥ पुनानऽइदुवाभरसोमद्विवहंसरयिं । त्वंवसूनिपुष्यसिविश्वानिद्राशुपोगृहे+ ॥ त्वंधियम
 नोयुजैसुजावृष्टिनर्तन्यतुः । त्वंवसूनिपार्थिवादिव्याचसोमपुष्यसि ॥ परितेजिग्युषेयथाधारासुतस्यधावति । रंह
 माणाव्युव्यंवारवाजीवसानसिः+ ॥ ऋत्वेदक्षायनःकवेपर्वस्वसोमधारया । इंद्रायपातवेसुतोमिन्नायुवरुणायच
 ॥ २७ ॥ पर्वस्ववाजसातमःपुवित्रेधारयासुतः । इंद्रायसोमविष्णवेदेवेभ्योमधुमत्तमः ॥ त्वारिंहंतिमातरोहरिपुवि
 त्रेऽअद्भुहः । वृत्संजातंनधेनवःपर्वमानविधर्मणि ॥ पर्वमानमहिश्रवश्चित्रेभिर्च्यसिरिदमभिः । द्यर्धन्तमंसिजिघ्रसे
 विश्वानिद्राशुपोगृहे ॥ त्वंधांचमहिब्रतष्टुधिर्वीचातिजन्त्रिषे । प्रतित्वापिममुंचथाःपर्वमानमहित्वना+ ॥ २८ ॥ इति
 सप्तमाष्टकेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

द्विपचाशाध्यायेवर्गा २८ सूक्तानि १० ऋचः १३८ ॥ त्यागः ॥ पवमानायसोमायेद. १३८ ॥ इतिसप्तमेचतुर्थ ॥

(९।६।४) अभीनवतइतिनवर्चससूक्तस्यकाश्यपौरेभसूनुपवमानसोमोनुष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ २७ ॥

पुरोजितीषोळशांधीगुः श्यावाश्विर्ययातिर्नाहुषोनहुषोमानवोमनुः सांवरणइतितृचाः शेषेप्रजापतिरुपाद्योगाय
ज्यौकाणाष्टौत्रितऔष्णिहवैप्रपुनानायषड्द्वितआह्यः सखायः पर्वतनारदौकाश्यपौद्रेशिखंडिन्यौवाप्सरसौ
तंवइंद्रमच्छषळूनामिश्राधुषश्चधुर्मानवोमनुराप्सवइतितृचाः पंचाम्निः परीतः षड्विंशतिः ससऋषयः प्रागाथंतु
तीयाषोळश्यौद्विपदेअष्टम्याद्येचबृहत्यौपवस्वषोळशगौरिवीतिद्वृचंशकिरेकामूर्ऋजिश्चोर्ध्वसद्माकृतयशा
ऋणंचर्यइत्युषयोद्वृचास्तिर्षः शक्तिः काकुभाः प्रागाथाः ससुन्वेगायत्रीयवमध्यापरसतोबृहतीपरिद्व्यधिकाग्र
योधिष्ण्याऐश्वरयोद्वैपदंपर्युषुद्वादशज्यरुणत्रसदस्यूरानौतिसोनुष्टुभः पिपीलिकमध्याषळूच्वबृहत्यस्तिन्न
श्वविराजोयारुचातृचमनानतः पारुच्छेपिरात्यष्टनानांचतुष्कंशिशुः पाङ्कंहिशर्यणावत्येकादशकश्यपोयइंदो
॥ हरिः ओम् ॥ (९।६।५) पुरोजितीवोऽअंधसः सुतार्यमादयित्वे ॥
रयापावक्यापरिप्रस्यंदतेसुतः । इंदुरश्वोनकृत्व्यः ॥

(९।६।५) पुरोजितीतिषोळशर्चस्यसूक्तस्याद्यानांतिस्त्रुणांश्यावाश्विरंधीगुश्चतुर्थादितिस्त्रुणानाहुषययातिः सप्तम्यादितिस्त्रुणांमान
चोनहुषोदशम्यादितिस्त्रुणांसांवरणोमनुष्ययोदश्यादिचतस्त्रुणवैश्वामित्रः प्रजापतिः पवमानसोमोनुष्टुपद्वितीयातृतीयेगायज्यौ ।

॥ २७ ॥

मंडलं ९

अनु. ६

सुतासोमधुमत्तमाः सोमाऽइन्द्रायमंदिनः । पवित्रव्रतोऽक्षरन्देवान्गच्छन्तुवोमदाः ॥ इंदुरिन्द्रायपवतऽइतिदे-
वासोऽअब्रुवन् । वाचस्पतिमखस्यतेविश्वस्येशानऽओजसा ॥ १ ॥ सहस्रधारःपवतेसमुद्रोवाचमीखयः । सोमःप-
तीरयीणांसखेद्रस्यदिवेदेवे ॥ अयंपपारयिर्भगः सोमः पुनानोऽअर्पति । पतिर्विश्वस्यभूमनोव्यव्यद्रोदसीऽउभे ॥
समुप्रियाऽअनूपतगावोमदायुघृज्वयः । सोमसिः कृण्वतेपथः पवमानासऽइंदवः ॥ यऽओजिष्ठस्तमाभरपवमानश्चवा-
च्यं । यः पंचचर्षणीरुभिरयियेनवनामहै ॥ सोमाः पवतऽइंदवोस्सभ्यंगातुवित्तमाः । मित्राः सुवानाऽअरेपसः स्वाध्यः
स्वर्विदः ॥ २ ॥ सुष्वाणासोव्याद्रिभिश्चितानागोरधित्वचि । इपमसभ्यमभितः समस्वरन्यसुविदः ॥ एतेपूतावि-
पश्चितः सोमासोदध्याशिरः । सूर्यसोमनदशतासौजिगलवोभ्रुवाघते ॥ प्रसुन्यानस्यांधसोमतानवृततद्वचः । अप-
श्वानमराधसंहूतामखनभृगवः ॥ आजामिरत्केऽअव्यतभुजेनपुत्रऽओण्योः । सरज्जारो नयोपणां वारो नयोनिमास-
दं ॥ सवीरोदक्षसाधनोवियस्तस्तभरोदसी । हरिः पवित्रेऽअव्यतवेधानयोनिमासदं ॥ अव्योवोरैभिः पवतेसोमो-
ज्येऽअधित्वचि । कर्निकदृष्टपाहरिरिन्द्रस्याभ्येतिनिष्कृतं ॥ ३ ॥ (९।६।६) क्राणाशिधुर्महीनांहिन्वन्नतस्यदी-
धितिं । विश्वापरिप्रियासुवदधद्विता ॥ उपत्रितस्यपाण्योइरभेकयदुहपदं । यज्ञस्यसप्तधामभिरधप्रियं ॥ ३

(९।६।६) क्राणाशिधुरित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यास्य खितः पवमानसोमजलिगक ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ २८ ॥

णित्रितस्य धारया पृष्ठेर्वरयारयि । मिमीतेऽस्य योजनो विमुक्तुः ॥ जज्ञानं सप्तमातरो विधामं शासतश्चित्रे । अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतयत् ॥ अस्य ब्रूते सजोषसो विभ्वे देवासोऽद्भुहः । स्याहर्भवंति रंत्यो जूषंतयत् ॥ ४ ॥ यमीगर्भं मृतान् वधो हृशे चारुमजीजनन् । कविमंहिष्ठमध्वरे पुरुस्युहं ॥ समीचीनेऽभिस्मनो युहीऽकृतस्य मातरौ । तन्वाना युज्जमानौ वधेऽसे सोमाय वचऽउद्यतं । भतिनभरामतिभिर्जुजोषते ॥ हिन्वन्नतस्य दीर्घिति प्राध्वरे ॥ ५ ॥ (९।६।७) प्रपुनाना पुनानः कृणुते हरिः ॥ परि कोशं मधुश्चतुर्मव्ये वारोऽर्पति ॥ परिवाराण्यव्ययागो भिरंजानोऽर्पति । त्रीषधस्था वोऽअर्दाभ्यः । सोमः पुनानश्च भवौ विशद्धारिः ॥ परि देवीरनुस्वधाऽइंद्रेण याहिसरथं । पुनानो वाघद्वाघद्भिरमृत्युदेः नायुप्रगायत । शिशूनयज्ञैः परैर्भूयतश्चित्रे ॥ ६ ॥ (९।७।१) सखायुऽआनिर्षीदत पुना पुनातां दक्षसाधनं यथाशार्धाय वीतये । यथा मित्राय वर्णाय शतमः ॥ असमर्थत्वाव सुविदं मभिवाणीरनूपत । गोभिः

(९।६।७) प्रपुनानायेति षड्वचस्य सूक्तस्याहोद्वितः पवमानसोम उष्णिक् ॥ सप्तमे जुवाके एकादशसूक्तानि (९।७।१) सखायइति षड्वचस्य सूक्तस्य काश्यपौ पर्वतनारदौ पवमानसोम उष्णिक् (शिखंडिन्यावत्सरसौ ऋषिकेव पाक्षिके किंच पर्वतनारदौ काण्वावपि) ।

मंडलं ९

अनु. ७

॥ २८ ॥

कक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ २९ ॥

मंडलं ९

अनु. ७

प्साऽर्द्धमुतऽइंद्रमदायवावृधुः । त्वां देवासोऽमृतायकंपपुः ॥ आनः सुतासऽइंदवः पुनानाधावतारयि । वृष्टिद्या
वोरीत्यापः स्वर्दिदः ॥ सोमः पुनानऽऊर्मिणाव्योवारविधावति । अग्नेवाचः पवमानः कर्त्तिकदत् ॥ १० ॥ धीभिर्हि
न्यंतिवाजिनं वने क्रीळतमत्यवि । अभित्रिपष्टं मतयः समस्वरन् ॥ अर्सेजिकलशोऽअभिमीढे ससिर्नवाजयुः । पुनानो
वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥ पर्वते हर्यतो हरिरतिह्वरांसिरह्या । अभ्यर्षेन्त्सोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥ अयापवस्वदेवयुर्मघो
धीर्योऽअसुक्षत । रेभ्यन्पवित्रं पर्येषि विष्वतः ॥ ११ ॥ (९।७।४) परीतोषि च तासु तं सोमो यऽर्द्धं त्तमंहविः । दधन्वो
साश्रीणतो गोभिरुत्तरं ॥ परिसुवानश्चक्षुः सेदुवमादनुः क्रतुरिदुर्विचक्षणः । सुतोषि च्चाप्सुर्मदामोऽअंध
आरुलधायो निमतस्य सीदस्युत्सो देव हिरण्ययः ॥ पुनानः सोमधारया पोवसानोऽअर्षसि ।
वाज्यर्षति नृभिर्धूतो विचक्षणः । दुहानऽऊर्ध्वं मधुप्रियं मूलं सधस्थमासदत् । त्वं विप्रोऽअभवो गिरस्तमो मध्वा
(९।७।४) परीत इति पडिशत्युच्यते । सुक्त्यर्वाहं स्पत्यो भरद्वाजो मारीचः कश्यपो राहूगणो गोतमो भौमो त्रिर्गाथिनो विश्वामित्रो भार्गवो
जमदग्निमित्रावरुणिर्वसिष्ठः ऋषयः पवमानसो मो देवता आद्याचतुर्थषष्ठ्यष्टमी नवमी दशमी द्वादशी चतुर्दश्यः सप्तदश्याद्युजश्च बृहत्याः द्विती
या पंचमी सप्तम्येकादशी त्रयोदशी पंचदश्योष्टादश्यादियुजश्च सतो बृहत्याः तृतीया षोडशी च द्विपदा विराट् ।

॥ २९ ॥

युञ्जन्मिच्छनः ॥ सोमोमीद्वान्वतेगातुवित्तमऽक्रविप्रैर्विविक्षणः ॥ त्वं कविरभवो देववीतम् आसूयरो हयो द्विवि-
सोर्मऽप्युवाणः सौत्त्रभिरधिष्णुभिरवीनां । अथेव हृरितायातिधारयामद्रयायातिधारया ॥ अनपगोमान्नोभिर
क्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः । समुद्रं न संवरणा न्यमन्मदीमदा यतो शते ॥ असौ मधुवानोऽअद्रिभिस्त्रिवारोऽन्यव्य
था । जनेन पुरिचन्वो विशुद्धरिः सद्वो ने पुदधिपे ॥ १३ ॥ समांमुजे तिरोऽअण्वानिमेब्यो मीढ्वे स सिर्न वज्रयुः । अ
नुमाद्यः पर्वमानो मनीषिभिः सोमो विप्रैर्भिक्रकभिः ॥ प्रसौ मे देववीतये सिंधुर्न पिब्येऽअर्णसा । अंशोः पर्य सामा दिरो न
जागृविरच्छाकोशं मधुश्रुतं ॥ आहृतोऽअर्जुनेऽअल्केऽअव्यतप्रियः मनुर्न मन्यैः । तमीहि न्वत्यप सो यथा रथं न दीष्या
गमस्त्योः ॥ अभिसो मांस आयवः पवंते मधुमदं । समद्रस्या धि विष्टिपमनीपिणो मत्सरासः स्वर्विदः ॥ तरत्समुद्रं प
मानऽक्रमिणाराजो देवऽक्रतंवृहत । अपैन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मै प्रा हिं न्वानऽक्रतंवृहत ॥ १४ ॥ नृभिरेमानो ह्य
तोर्विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः ॥ इंद्राय पवते मदः सोमो मरुत्व ते सुतः । सहस्रधारोऽअलव्यमर्षतितमी मजंत्याय
वः ॥ पुनानश्च मूजुनयन्मतिकविः सोमो देवेषु रण्यति । अपो वसानः परिगोभि ररुतः सीदन्वनैव बध्यत ॥ तवाहंसोम
रारणसख्यऽईदो द्विविदेवे । पूरुणि वञ्चो नि चरंति मामवपरिधाँडरतिताँडइहि ॥ उताहं न कं मुत सोमो ते दिवा सख्याय
वच्चऽऊधनि । घृणातपैतमति सूथैः पुरः शुक्लाऽइव पक्षिम ॥ १५ ॥ मज्यमानः सुहस्य समुद्रे वाचमिन्वसि । रुयिपि

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ ३० ॥

मंडलं ९

अनु. ७

॥ ३० ॥

शर्गवहलं पुरुषं पवमानाभ्यर्षसि ॥ मजानो वारं पवमानोऽव्यये वृषावचक्रदोवने । देवानां सोमपवमाननिष्कृतं
गोभिरजानोऽर्षसि ॥ पवस्व वाजसातये भविष्वानिकाव्या । त्वंसमुद्रं प्रथमो विधारयो देवेभ्यः सोममत्सरः ।
ऽअसृक्षतपवित्रमतिधारया । मरुत्वतो मत्सराऽईंद्रियाहयामेधामभिप्रयांसि च ॥ अपोवसानः परिकोशमर्पतीं
ईंद्रियानः सोतृभिः । जनयन्त्योतिर्मदनाऽअवीवशद्वाः कृण्वानो न निर्णिजं ॥ १६ ॥ (९।७।५) पवस्व मधु
मत्तमऽईंद्राय सोमक्रतुवित्तमो मदः । महिद्युक्षतमो मदः ॥ यस्त्येपीत्वा वृषभो वृषाय ते स्वपीता स्वविदः । ससु
प्रकेतोऽअभ्यक्रमीदिपोच्छावाजं नैतशः ॥ त्वहं गूगदव्यापवमानं जनिमानिद्युमत्तमः । अमृतत्वार्यघोषयः ॥ ये
नानवग्वो दध्यङ्घ्र्योऽपोर्णते येन विप्रासऽआपिरे । देवानां सन्नेऽअमृतस्य चारुणे येन श्रवांस्यानशुः ॥ एषस्य धारया सुतो
व्यो वारंभिः पवते मदिन्तमः । कीळन्नमिर्पाभिष ॥ १७ ॥ यऽउस्त्रियाऽअग्न्याऽअंतरश्मनो निर्गाऽअकृतदोजसा ।

(९।७।५) पवस्वेतिपोळशर्चससूक्तस्याद्ययोर्द्वयोः शाक्तयोर्गौरिवीतिस्तृतीयायावसिष्ठः शक्तिश्चतुर्थ्योर्द्वयोर्गौरिरसज्जुष्यष्टयादि-
द्वयोर्भारद्वाजक्रजिष्ठाष्टम्यादिद्वयोर्गौरिरसज्जुष्वसद्भादशम्यादिद्वयोर्गौरिरसः कृतयशाद्वादश्यादिद्वयोर्ऋणचयश्चतुर्दश्यादिति सृणांवासि
ष्ठः शक्तिरित्युषयः पवमानसोमो देवता अयुजः ककुभोयुजः सतोवृहल्यः ससुन्वेयइतियवमभ्यागायत्री ।

अभिद्रजन्तलिपेगव्यमभ्यवर्षीवधृष्णवारुज ॥ असौतापरिपिचताभ्वनस्तोमसुरैरजसुरै ॥ वनक्रक्षसुदुप्रतं ॥
अभिद्युन्नं वृह ॥ अभिद्युन्नं वृह ॥ अभिद्युन्नं वृह ॥ अभिद्युन्नं वृह ॥ अभिद्युन्नं वृह ॥ अभिद्युन्नं वृह ॥
सहस्रधारं वृषभं पयोवर्धं प्रियं देवाय जन्मने ॥ क्रतेन यऽक्रतजतो विवाधे राजा देवऽक्रतं वहत ॥ अष्टदिवः
शुऽइपस्पतेदिद्रीहि देवदेव्युः ॥ विकोशं मध्यमं युव ॥ आवच्यस्व सुदक्ष चम्बोः सुतो विशावाह्निर्विशर्पतिः ॥ वृष्टिदिवः
॥ १८ ॥ एतमत्यं मद्युतसहस्रधारं वृषभं देवौ दुहुः ॥ विश्वावसूनि विभ्रतं ॥
पवस्व रीतिमपां जिन्वागविष्टये धियः ॥ १९ ॥ यस्य नऽइन्द्रः पिवाद्यास्य मरुतो यथ्यवार्यमणा भगः ॥ आयेन मित्रावरु
वृषा विज्ञे जनयन्नमर्त्यः प्रतपन्त्योति पातमः ॥ पवस्व मधुमत्तमः ॥ इन्द्रस्य हार्दि
रायामा नेता यऽइक्षानां ॥ सोमो यः सुक्षितीनां ॥ २० ॥ यस्य नऽइन्द्रः पिवाद्यास्य मरुतो यथ्यवार्यमणा भगः ॥ आयेन मित्रावरु
णाकरामहऽइन्द्रमवसेमेहे ॥ इन्द्राय सोमपातं वेनुभिर्यतः स्वायुधो मदिन्तमः ॥ पवस्व मधुमत्तमः ॥ इन्द्रस्य हार्दि
सोमधानमाविशसमुद्रमिव सिंधवः ॥ जुष्टो मित्राय वरुणा यवाय वैदिवो विष्टं भऽइक्षानां ॥ एवामृतायाम
परिप्रधन्वैद्राय सोमस्यादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ इन्द्रस्ते सोमसुतस्य पेयाः क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥ सोम
हेक्षयाय सशुक्रोऽर्षदिव्यः पीयूषः ॥ पवस्व सोममहान्तस्सुमद्रः पिता देवानां विश्वाभिधाम ॥ शुक्रः पवस्व देवभ्यः सोम
दिवो धृतांसि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन्वाजी पवस्व ॥ पवस्व सोमद्युन्नी सुधारो महामर्षीनाम
दिवो धृतिव्यं शं च प्रजायै ॥ दिवो धृतांसि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन्वाजी पवस्व ॥ पवस्व सोमद्युन्नी सुधारो महामर्षीनाम

हेक्षयसिद्धांशः॥
द्विवोघतांशः॥

(31618)

द्विवेपथिव्यशचप्रजापतः । पमिमेविद्वानिगत्यचस्यसूक्तस्यैश्वर्योर्गो

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ ३१ ॥

नुपूर्यः⁺ ॥ नृभिर्येमानोर्जज्ञानःपतःक्षरद्विभ्वनिमद्रःस्ववित्⁺ ॥ इंदुःपुनानःप्रजामुराणःकरद्विभ्वानिद्रविणानि
नः ॥ पर्वस्वसोमक्रत्वेदक्षायाश्वोनिकोवाजीधनाय ॥ २० ॥ तंतेसोतारोरसंमदायपुनतिसोमंमहेद्यन्नाय ॥ शिशुं
येनविभ्वानिमृजंतिपवित्रेसोमंदेवेभ्यऽइंदुं ॥ इंदुःपविष्टचारुमदायापामपथैकविभगाय ॥ विभर्तिचाविद्रस्यनाम
वित्रंविवारुमव्यम् ॥ सवाज्यक्षाःसहस्रेताऽअद्विमृजानोगोभिःश्रीतस्यनृभिःसुतस्य ॥ प्रसुवानोऽअक्षाःसहस्रधारस्तिरःपु
अद्विभिःसुतः⁺ ॥ असंजिवाजीतिरःपवित्रमिद्रायसोमःसहस्रधारः ॥ अंजत्येनंमध्वोरसेनेद्रायवृष्णऽइंदुमदाय ॥
देवेभ्यस्त्वावृथापार्जसेपोवसानंहरिमृजंति ॥ इंदुरिद्रायतोशतेनितोशतेश्रीणन्नग्रोरिणन्नपः⁺ ॥ २१ ॥ (९।७।७)
पर्युप्रधन्ववाजसातयेपरिवृत्राणिसक्षणिः । द्विषस्तरध्याऽऋणयानंऽईयसे ॥ अनुहित्वासुतंसोममदामसिमहेसम
अजीजनोऽअमृतमर्त्येष्वोऽऋतस्यधर्ममृतस्यचारुणः । सदासरोवाजमच्छासनिष्यदत् ॥ अभ्यभिहिश्रवसातत
(९।७।७) पर्युष्वितिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यरुणत्रसदस्यूरानौपवमानसोमःआद्यास्तिस्त्रोनुष्टुभःपिपीलिकमध्याःचतुःश्यादिषळर्ध्व-
बृहल्योऽत्यास्तिस्त्रोविराजः ।

मंडलं ९

अनु. ७

॥ ३१ ।

द्विथोत्संनकंचिज्जनपानमक्षितं । शयीभिर्नभरमाणोगमस्त्योः ॥ आद्रीकेचित्पश्यमानासऽआप्यवसरुचोदिव्याऽ
 अभ्यनूय । वारंनेदेवःसविताव्यूषेते ॥ २२ ॥ त्वेसोमप्रथमाबृक्तवाहिणेमेहेवाजायश्रवसेधियंदधुः । सत्वंनोवी
 रवीर्यीयचोदय ॥ द्विवःपीर्यूप्वर्येयदुक्थ्यमहोगाहद्विवऽआनिरधुक्षत । इंद्रमभिजायमानंसमस्वरन् ॥ अधुय
 द्विमेपवमानुरोदसीऽइमाचविश्वामुर्वनाभिमज्मना । युथेननिःषावृपभोवितिष्ठसे ॥ सोमःपुनानोऽअव्ययेवारेशिशु
 न्नीकृत्नपर्वमानोऽअक्षाः । सहस्रधारःशतवाजऽइंदुः ॥ एषपुनानोमधुमाऽकृतावेंद्रायेदुःपवतेस्वादुरुभिः । वाज
 सनिर्वरिवोविद्वयोधाः⁺ ॥ सर्पवस्वसहमानःपृतन्यून्त्सेयन्नक्षांस्यर्पदुर्गहाणि । स्वायुधःससह्वान्तसोमशत्रून् ॥ २३ ॥
 (९।७।८) अयारुचाहरिण्यापुनानोविश्वद्वेपांसितरतिस्वयुग्वभिःसूरोनिस्वयुग्वभिः । धारासुतस्यरोचतेपुनानो
 अरुपोहरिः । विश्वायद्रूपापरियात्यृक्कभिःसप्तास्यैभिर्ऋकभिः ॥ त्वंल्यत्पणीनांविदोवसंसमातृभिर्मज्यसिस्वऽआद
 मेऽकृत्स्यधीतिभिर्दमे । परावतोनासमतच्चारणैतिधीतयः । त्रिधातुभिरुपीभिवयोदधेरोचमानेवयोदधे ।
 पूर्वामनुप्रदिशंयातिचेकित्संरुदिमभिर्नयतेतेशेतोरथोदैव्योदशेतोरथः । अगमन्नृक्थानिपैस्येंद्रजैत्रायहर्षयन् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ ३२ ॥

वज्रश्चयऋक्वथोऽअनपच्युतासमस्वनपच्युता ॥ २४ ॥ (९।७।९) नानानवाऽउनोधियोवित्रतानिजनानां ।
तक्षारिष्टंरुतंभिषग्ब्रह्मासुन्वतमिच्छतीन्द्रयेदोपरिस्त्र ॥ जरतीभिरोषधीभिःपर्णेभिःशकुनानां । कर्मारोऽअश्मभि
द्युभिर्हिरण्यवतमिच्छती० ॥ कारुरुहंतोभिषगुपलप्रक्षिणीनना । नानाधियोवसयवोनुगाऽइवतस्थिर्मद्रा० ॥ अ
श्वोवोह्वासुखंरथंहसनामुपमंत्रिणाः । शेपोरोमण्वंतौभेदौवारिन्मंडूकऽइच्छती० ॥ २५ ॥ (९।७।१०) शर्यणाव
तिसोममिंद्रःपिवतुवृत्रहा । वलंदधानऽआत्मानिंकरिव्यन्वीर्धिमहदिंद्रा० ॥ २५ ॥ (९।७।१०) शर्यणाव
सोमेरसमादधुरिंद्रा० ॥ ऋतंवदद्यतद्युन्नसत्यंवदन्त्सत्यकर्मन् । श्रद्धांवदन्त्सोमराजन्धात्रासोमपरिष्कृतऽइंद्रा० ॥
सत्यमुग्रस्यबृहतःसंस्रवंतिसंस्रवाः । संयतिरसिनोरसाःपुनानोब्रह्मणाहरऽइंद्रा० ॥ २६ ॥ यत्रब्रह्मापवमानछंदस्यांइ
वाचंवदन् । श्रवणासोमेमहीयतेसोमेनानंदजनयन्निंद्रा० ॥ यत्रज्योतिरजसंयस्मिंल्लोकेस्वाहितं । तस्मिन्माधेहिप
वमानामृतलोकेऽअक्षितऽइंद्रा० ॥ यत्रराजवैवस्वतोयत्रावरोधनंदिवः । यत्रामूर्यह्वतीरापुस्तत्रमाममृतंक्रुधींद्रा० ॥
(९।७।९) नानानमितिचतुर्क्वचस्यसूक्त्यागिरसःशिशुःपवमानसोमःपंक्तिः । (९।७।१०) शर्यणावतीलेकादशर्चस्यसूक्तस्य
मारीचःकश्यपःपवमानसोमःपंक्तिः ।

॥ ३२ ॥

मंडलं ९

अनु- ७

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ ३३ ॥

कृधीर्द्रो ॥ १ ॥ (१०।१।१) अग्नेबृहन्नृषसामध्वोऽअस्थान्निर्जगन्वान्तमसोज्योतिषागात् । अग्निमानुनारु
रतास्वंगऽआजातोविश्वसद्भान्यप्राः ॥ सजातोगर्भोऽअसिरोदस्योरशेचारुर्विभृतऽओषधीषु । चित्रःशिशुःपरित
मांस्यक्तून्यमातृभ्योऽअधिकर्निक्रदद्वाः ॥ विष्णुरित्थापरमस्यविद्वान्जातोबृहन्नभिपातितुतीयं । आसायदस्यपयो
असित्वंविधुमानुषीषुहोता ॥ होतारंचित्ररथमध्वरस्ययज्ञस्यकेतुरुशतं । ताऽईमत्यैषिपुर्न्यरूपाऽ
मतिर्धिजनानां ॥ सतुवस्त्राण्यधुपेयनानिवसानोऽअग्निर्नाभपृथिव्याः । अरुषोजातःपदऽइळायाःपुरोहितोराज
न्यक्षीहदेवान् ॥ आहिद्यावापृथिवीऽअग्नऽउभेसर्दापुत्रोनमातरततंथ । प्रयाह्यच्छौशतोयविष्टाथावहसहस्येहदे
वान् ॥ २९ ॥ (१०।१।२) पिप्रीहिदेवाँऽउशतोयविष्टविद्वोऽऋतूँऽऋतुपतेयजेह । येदैव्याऽऋत्वजस्तेभिरग्ने
त्वंहोतृणामस्यार्थजिष्ठः ॥ वेषिहोत्रमुतपोत्रंजनानांमंधातासिद्रविणोदाऽऋतावा । स्वाहोवयंकृणवांमाहुर्वीषिदेवोदे
दशमेमंडलेदशानुवाकाः । तत्रप्रथमेनुवाकेषोडसूक्तानि । (१०।१।१) अग्नेबृहन्नितिसप्तर्चस्यसूक्तस्यात्यन्त्रितोमिस्त्रिष्टुप् ।
(१०।१।२) पिप्रीहीतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यात्यन्त्रितोमिस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु- १

॥ ३३ ॥

वान्यजत्वगिरिह्वं ॥ आदेवानामपि पंथमगन्मयच्छक्रवाप्तदनुप्रवौहं । अग्निर्विद्वान्त्सयज्जात्सेदुहोतासोऽअध्वरा
 न्त्सऽऽक्रतून्कल्पयति ॥ यद्वैवयं प्रमिनामव्रतानि विदुषां देवाऽअविदुष्टरासः । अग्निष्टद्विध्वमापृणति विद्वानन्येभि
 र्देवाऽऽक्रतुभिः कल्पयति ॥ यत्पाकत्रामनं सार्दीनदक्षानयज्ञस्य मन्वते मर्त्यासः । अग्निष्टद्वोताक्रतुर्विद्वानन्यजि
 ष्ठो देवोऽऽक्रतुशोयजति ॥ विश्वेपां ह्यध्वराणामनीकं चित्रं कुंजनितात्वाज्जान ॥ सऽआयजस्वनवतीरनुक्षाः स्पाहो
 ऽइयः क्षुमती विश्वजन्म्याः ॥ यत्वाद्यावापृथिवीयं त्वापस्त्वष्ट्रायं त्वासुप्तो दक्षाय सुप्तोऽअदर्शि । चिकिद्भिर्भा
 र्दं प्रेमिन्मिधानो विभाहि ॥ ३० ॥ (१०।१।३) इनो राजन्नरतिः सभिद्धो रौद्रो दक्षाय सुप्तोऽअदर्शि । पथामनु प्रविद्वान्पतयाणं द्युम
 तिमभ्यासवृहतासिक्कीमेति रुशतीमपाजन् ॥ कृष्णां यदेनीमभिवर्षसाभूज्जनयन्योपावृहृतः पितुर्जा । ऊर्ध्वभानुं सूयस्य
 तिमभ्यासवृहतासिक्कीमेति रुशतीमपाजन् ॥ कृष्णां यदेनीमभिवर्षसाभूज्जनयन्योपावृहृतः पितुर्जा । मप्रकृतेद्युभिरग्नि
 स्तभायन्दिद्वो वसुभिररतिर्विभाति ॥ भद्रो भद्रया स च मानऽआगात्स्वसारं जारोऽअभ्येति पश्चात् । इद्वस्य वृष्णो वृहृतः
 विंतिष्ठन्नशङ्खिर्वर्णैरभिराममस्थात् ॥ अस्यामासो वृहृतो न वयन्निधानाऽअग्नेः सव्युः शिवस्य । ज्येष्ठेभिर्यस्ते जिष्टैः क्रौ
 स्वासोभामासो यामन्नकवश्चिकित्रे ॥ स्वनानयस्य भामासः पर्वतैरोचमानस्य वृहृतः सुदिवः । प्रलोभिर्योरुशङ्खिर्देव
 कुमाद्भिर्वपेभिरभांनुभिर्नक्षत्रिणां ॥ अस्य शुष्मसो ददशानपेर्वेहमानस्य स्वनयन्निगुद्भिः । प्रलोभिर्योरुशङ्खिर्देव

(१ नात्र स्वाहाकारः किमु मन्त्रांत एव हविः प्रक्षेपः ।) (१०।१।३) इनो राजन्निति सप्तर्वस्य सुक्तस्यान्यत्रितोमिच्छिष्टम् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ५

॥ ३४ ॥

तमो विरेभंश्चिरतिर्भाति विभ्वा ॥ सऽथावक्षिमाहेनऽआचसत्सिदिवस्पृथिव्योररतिथुवत्योः । अग्निः सुतुकः सुतुकै
भिरश्वैरभस्वङ्गीरभस्वोऽएहगम्याः ॥ ३१ ॥ (१०।१।४) प्रतयक्षिप्रतऽइयमिमन्मभुवोयथावद्योनोहवेषु । धन्वं
न्निवप्रपाऽअसित्वमग्नऽइयक्षवेपरवैप्रहाराजन् ॥ यंत्वाजनसोऽअभिसंचरतिगार्वाऽउष्णमिवव्रजंयविष्ट । दूतोदेवा
सिहयन्जिगीषसेपशुरिवावसृष्टः ॥ शिशुनत्वाजेन्यवर्धयंतीमाताविभर्तिसचनस्यमाना । धनोरधिप्रवताया
ह्यतैयुवतिविश्रपतिः सन् ॥ कूर्चिजायतेसनयासुनव्योवनेतस्थौपलितो धूमकैतुः । शयेवत्रिश्चरतिजिह्वादन्नेरि
सोयंप्रणयंतमर्ताः ॥ तनृत्यजेवतस्करावनुरशनाभिर्दुशभिरभ्यधीतां । इयंतेऽअग्नेनव्यसीमनीषायक्ष्वारथंनशुच
यंश्चिरगैः ॥ ब्रह्मचतेजातवेदोनमश्चेयंचगीः सदमिद्वर्धनीभूत । रक्षाणोऽअग्नेतनयानितोकारक्षोतनस्तन्वोऽइ अप्रयु
च्छन् ॥ ३२ ॥ (१०।१।५) एकः समुद्रोधुरणोरयीणामसद्भदोभूरिजन्माविचष्टे । सिषक्त्यूधर्निण्योरुपस्थऽउ
त्सस्यमध्येनिहितंपद्वेः ॥ समानं नीळं वृषणोवसानाः संजग्मिरेमहिषाऽअवर्षतीभिः । ऋतस्यपदंकवथोनिपातिगुहा
नामानिदधिरेपराणि ॥ ऋतायिनीमायिनीसंधातेमित्वाशिर्जुजज्ञतुर्वर्धयती । विश्वस्यनाभिंचरतोभ्रुवस्यकवेश्चित्तं
(१०।१।४) प्रतइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यात्यन्त्रितोमिच्छिष्टुप् । (१०।१।५) एकः समुद्रइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यात्यन्त्रितोमिच्छिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. १

॥ ३४ ॥

तुंमनसावि॒र्यतः ॥ ऋतस्य॒ हिव॒र्तनयः॒ सुजा॒तमि॒षोवा॒जाय॒प्रदि॒वः स॒चैते । अधी॒वा॒सरो॒दसी॒वाव॒साने॒घेतर॒न्नैर्वा॒वृधा॒ते
 म॒धूनां ॥ सु॒प्तस्व॒सूरु॒षी॒वीव॒शानो॒वि॒द्वान्म॒ध्वऽउ॒ज्ज॒भारा॒दृशे॒कं । अ॒न्तर्मे॒ऽअ॒न्तरि॒क्षे॒पुरा॒जाऽइ॒च्छन्व॒त्रिम॒विदत्पू॒ण
 स्य ॥ सु॒प्तम॒र्यादाः॒ कृ॒वय॑स्तत॒क्षुस्ता॒सामे॒कामि॒दृम्य॑हुरो॒गात् । आ॒योह॑स्त्वंभ॒र्षप॒मस्य॒नीळे॒पथा॑वि॒सर्गे॒धरु॒णेयु॒तस्यौ ॥
 अ॒र्षस॒च॒प॒रमे॒व्योम॒न्दक्ष॑स्य॒जन्म॒न्नादि॑तेरु॒पस्थे । अ॒ग्नि॒हे॒नःप्र॒थम॒जाऽऋ॒तस्य॒पूर्वऽआ॒र्युनि॒ष्टम॒श्वधे॒नुः ॥ ३३ ॥
 अ॒र्षस॒च॒प॒रमे॒व्योम॒न्दक्ष॑स्य॒जन्म॒न्नादि॑तेरु॒पस्थे ॥ अ॒ग्नि॒हे॒नःप्र॒थम॒जाऽऋ॒तस्य॒पूर्वऽआ॒र्युनि॒ष्टम॒श्वधे॒नुः ॥
 अ॒र्षस॒च॒प॒रमे॒व्योम॒न्दक्ष॑स्य॒जन्म॒न्नादि॑तेरु॒पस्थे ॥ अ॒ग्नि॒हे॒नःप्र॒थम॒जाऽऋ॒तस्य॒पूर्वऽआ॒र्युनि॒ष्टम॒श्वधे॒नुः ॥ इति॒सप्त॑मेपंचमः ॥

अ॒र्षस॒च॒प॒रमे॒व्योम॒न्दक्ष॑स्य॒जन्म॒न्नादि॑तेरु॒पस्थे ॥ ५ ॥
 इति॒सप्त॑माष्टकेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
 त्रि॒प॒चा॒ग्ना॒ध्या॒येव॒र्गाः ३३ सू॒क्तानि १९ ऋ॒चः १८९ ॥ त्या॒गः ॥ प॒व॒मा॒ना॒य॒सोमा॒ये. १५४ अ॒ग्नय॑द्दं. ३५ ॥ इति॒सप्त॑मेपंचमः ॥
 अ॒यंस्व॒स्तिप्र॒केतु॒नान॒व॒त्रि॒शि॒रास्त्वाष्ट्र॑स्तृ॒चोत्य॑र्षे॒द्र॒आपो॒हि॒सि॒बुद्धी॒पोवा॑वरी॒पआ॑पा॒ंगाय॒त्रैद्वानु॒ष्टुवं॑तंपंचमीवर्धं
 मा॒ना॒सप्त॑मीप्रति॒ष्ठौचि॒त्प॒छन॑वै॒वस्व॒तयो॒र्यम॒य॒म्योःसं॒वादः॑प॒ष्ठय॒युग्मि॒भ्यमी॒मि॒थुना॑र्य॒यमं॑प्रोवाच॒सतां॑नवमीयु
 गि॒भर॑नि॒च्छन्म॒र्याचा॒ष्टवृ॒षानवा॑र्गि॒हिवि॒र्धन॑आग्नेयंतु॒त्रि॒ष्टुवं॑तं॒द्यावा॒युजे॑पंच॒विव॒स्वान्वा॒दित्यो॑हो॒वि॒धनि॑जग
 त्यंत॑परे॒यिवांसो॑लशयमोयामैष॒ष्ठीलिं॑गोक्तदे॒वता॑पराश्च॒ति॒स्रःपि॒त्र्यंज॑ग॒त्येका॒दशी॑मै॒नंद॑मनऽआग्नेयंचतुर॒ष्टुवं॑तं॒त्वष्टा॑दे॒वश्र॒वाद्धे
 त्या॒यामा॒यनाः॑परेपंचोदी॒रतां॑प॒छूनो॑शंखःपि॒त्र्यंज॑ग॒त्येका॒दशी॑मै॒नंद॑मनऽआग्नेयंचतुर॒ष्टुवं॑तं॒त्वष्टा॑दे॒वश्र॒वाद्धे
 सर॒ण्यदे॒वते॑पौ॒ण्यश्च॒तस्रः॑सार॒स्वत्य॑स्ति॒स्रःपंचा॒प्यो॒द्रप्स॑स्ति॒स्रःसौ॒म्योवा॑लेअनु॒ष्टुभा॑उपा॒त्यापु॒रस्ता॑द्रु॒हती॑वापं॒

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ६

॥ ३५ ॥

मृत्योः संकुसुक्चतस्रो मृत्युदेवताः पराधात्री परात्वाष्ट्री पराः पितृमेधा एकादशी प्रस्तारपङ्क्तिर्जगत्युपांत्यां तानुष्टुप्
प्राजापत्या वासानिरुक्ता ॥ ६ ॥
॥ हरिः ॐ ॥ (१०।१।६) अयंसयस्य शर्मन्त्रवो भिरग्रेरेधते जरिताभिर्ह्ये । ज्येष्ठेभिर्यो भानुभिर्ऋषणां पयैति परि
वीतो विभावा ॥ यो भानुभिर्विभावा विभाल्यग्निर्देवभिर्ऋता वाजस्रः । आयो विवार्यसख्या सखिभ्यो परिहृतोऽत्यो
नससिः ॥ ईशेयो विश्वस्या देववीतेरीशे विश्वार्युरुषसो व्युद्यौ । आयस्मिन्मना हवीष्यन्नावीर्यरथः स्कन्नातिशयैः + ॥
नृ + ॥ तमस्वामिन्द्रं नरेजमानमग्निं गीर्भिर्नमो भिराकृणुध्वं । अयं विप्रसोमतिभिर्गणंते जातवैदसं जुह्वं सहानां ॥ संय
स्मिन्विश्वार्युनिजग्मुर्वाजेनाश्वाः ससीवंतऽएवैः । अस्मेऽकृतीरिन्द्रं वातमाऽर्वाचीनाऽअग्नमाऽआकृणुष्व ॥ अधा
ह्यग्नेमहानिषद्यासद्योजज्ञानो हव्यो वभूथ । तंते देवासोऽअनुकेतमायन्नार्धवर्धत प्रथमासऽऊर्माः ॥ १ ॥ (१०।१।७)
अग्नेमुतयस्तुभ्यं ज्ञाता गोभिरश्वैरभिर्युधिष्यन्विहयजार्थदेव । स च महितवदसप्रकेतैरुरुष्याणऽउरुभिर्देवशंसैः ॥ इमाऽ
(१०।१।६) अयंस इति सप्तर्चस्य सूक्तस्यात्यस्वितो मिच्छिष्टुर् । युदाते मर्तोऽअनुभोगमानुदसो दधानो मतिभिः सुजात ॥ अग्निं

॥ ३५ ॥

मंडलं
अनु. १

[illegible]

गर्वाय । मुयाउत्तु । धिरेस्वषाज्जह्निमन ८
 विनिमधानंदधिरेस्वषाज्जह्निमन ८

(218103)

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ६

॥ ३६ ॥

॥ १८ ॥

मंडलं १०

अनु. १

॥ ३६ ॥

स्य । सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे जाभिर्ब्रवाणऽआयुधानिवेति ॥ सपित्र्याण्यायुधानिविद्वानिद्रिषितऽआह्योऽअभ्यनु
ध्यत् । त्रिशिर्षाणं सप्तरीं जयन्वान्वाष्टस्य चित्रिः ससृजे त्रितोगाः ॥ भूरीदिन्द्रऽउदिनक्षतमोजोवाभिनुत्सपति
र्मन्यमानं । त्वाष्टस्य चिद्विध्वरूपस्य गोनमाचक्राणस्त्रीणि शिर्षापरवर्क ॥ ४ ॥ (१०।१।९) आपोहिष्मार्मयोभुव
स्तान्ऽऊर्जे दधातन । महेरणायुचक्षसे ॥ गोवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिवमातरः ॥ तस्माऽअरंग
मानवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजनयथाचनः ॥ शनो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्त्रवन्तुनः ॥ इ
भुवं ॥ आपः पृणीतभेपजंवरुथ तन्वेऽमम । ज्योक्चसूर्यहृशे ॥ इदमापः प्रवहतयत्किंच दुरितं मधि । अग्निंच विव्वश
दुद्रोहयद्विशेषऽलुतानृतं ॥ आपोऽअद्यान्वचारिषरसेन समगसाहि । पर्यस्वानमऽआगहितं मासं सृजवर्चसा ॥ (प
रिशिष्टं ॥ ससृषीस्तदपसो दिवानकंच ससृषीः । वरेण्यक्रतूरहमादेवीरवसेहुवे) ॥ ५ ॥ (१०।१।१०) ओचि
(१०।१।९) आगेहिष्ठेति नवर्चस्य सूक्तस्यावरीपः सिंधुद्वीपऽआपो गायत्री पंचमी वर्धमाना सप्तमी प्रतिष्ठात्येद्वे अनुष्टुभौ । आपोहिस्सिंधुद्वीपो वा
वरीप इत्येवमनुक्रमण्यां सिंधुद्वीपस्य पाक्षित्वस्वीकारे पूर्वोक्तत्रिशिराः प्राप्नोति तथापि प्रयोक्तृभिः सिंधुद्वीप एवाद्रियते । (१०।१।१०) ओचि
दिति चतुर्दशर्चस्य सूक्तस्य नवमी वर्ज्यानामयुजां पष्ठथाश्च वैवस्वतीयमीकृत्वा यमो देवतापष्टी वर्ज्यानां युजानवम्याश्च वैवस्वतोरयमीकृत्वा ।

त्सखायंसख्याववृत्यातिरःपुरुषैर्दण्डं जगन्वान् । पितुर्नपतमादधीतवेधाऽअधिक्षमिप्रतुरंदीर्घानः ॥ नतेसखास
 ख्यं वधेयतत्सलक्ष्मायद्विषुकरूपाभवाति । महस्पत्रासोऽअसुरस्यवीराद्विवोधतारैऽउर्वियापरिल्यन् ॥ उशंतिघातेऽ
 ख्यं वधेयतत्सलक्ष्मायद्विषुकरूपाभवाति । नितेमनोमनसिधाद्यस्मेजन्यःपतिस्तन्वंमाविविद्याः ॥ नयत्पराचक्रुमा
 अमृतासऽएतदेकस्यचिन्त्यजसंमल्यस्य । गंधर्वोऽअप्स्वप्याचयोपासानोनाभिःपरमंजामितन्नौ ॥ गर्भेनुनौजनितादंप
 कर्द्धनूनमृतावदौतोऽअचूतरेपेम । गंधर्वोऽअप्स्वप्याचयोपासानोनाभिःपरमंजामितन्नौ ॥ ६ ॥ कोऽअस्यवेदप्र
 कर्द्धनूनमृतावदौतोऽअचूतरेपेम । नकिरस्यप्रमिर्नतिव्रतानिवेदनावस्यपृथिवीऽउतद्यौः ॥ युमस्यमायुर्म्यं ॥
 तीकद्वेवस्त्वष्टासवित्ताविश्वरूपः । नकिरस्यप्रमिर्नतिव्रतानिवेदनावस्यपृथिवीऽउतद्यौः ॥ नतिष्ठतिननिर्मपं
 श्रमस्याह्वःकऽईददशुकऽइहप्रवोचत् । ब्रह्मन्मित्रस्यवरुणस्यधामकदुव्रवऽआहनोवीच्यानन् ॥ नतिष्ठतिननिर्मपं
 कामऽआगन्तस्मानेयोनौसह्येचरति । अन्येनमदाहनोयाह्वित्युतेनविह्वुरथैवचक्रा ॥ रात्रीभिरस्माऽअहभिर्दशस्येत्सू
 त्येतेदुवानांस्पशऽइहयेचरति । अन्त्येनमदाहनोयाह्वित्युतेनविह्वुरथैवचक्रा ॥ ७ ॥ किंआतासद्यदनाथंभवा
 शस्यचक्षुमुहुर्निमसीयात् । दिवापृथिव्यामिथुनासर्वधूयमीर्यमस्यविभृयादजामि ॥ आघातागच्छानुत्तरायुगानि
 यत्रजामयःकृणवन्नजामि । उपवर्षहिदृषभायवाहुर्मन्यमिच्छस्वसुभगेपतिमत् ॥ नवाऽउतेतन्वातन्वंसंपपृ
 तिकिमस्वसायन्निक्रैतिर्निगच्छात् । काममृतावद्धेऽत्रद्रपामितन्वामेतन्वंसंपिगृन्धि ॥ वृत्तोर्वतासियमनैवतेम
 च्यापापमाहुर्धुःस्वसारंनिगच्छात् । अन्येनमत्प्रमुदःकल्पयस्वनतेआतासुभगेवधेयतत् ॥

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ६

॥ ३७ ॥

नोहृदयंचाविदाम । अन्याकिलत्वांकक्षेवयुक्तं परिध्वजाते लिबुजेववृक्षं+ ॥ अन्यमुषुत्वंभ्यन्यऽउत्वां परिष्वजाते
लिबुजेववृक्षं । तस्यवात्वंमनऽइच्छासवातवाधाकृणुष्वमंविदंसुभद्रां ॥ ८ ॥ (१०।१।११) वृषावृष्णोदुहुदोहं
प्याचयोषणानदस्यनादेपरिपातुमेमनः । इष्टस्यमध्येऽअदिनिधातुनोभ्रातानोज्येष्टः प्रथमोविवोचति ॥ रपङ्गधर्वीर
सुभद्राक्षमतीचशस्वत्युषाऽउवासासनवेस्वर्वती । यदीमशतंमुशतामनकृतुमग्निहोतारंविदथायजीजनन् ॥ अधत्यङ्ग
संविभ्वविचक्षणंविराभरदिषितः इयेनोऽअध्वरे । यदीविशोवृणतेदस्मार्थाऽअग्निहोतारमधरीरजायत ॥ सदा
सिरणवोयवसेवपुष्यतेहोत्राभिरमेमनुषःस्वध्वरः । विप्रस्यवायच्छशमानऽउक्थ्यैवाजससवोऽउपयासिभूरिभिः
॥ ९ ॥ उदीरयपितरंजारऽआभगमियक्षतिहृतोहृत्तऽईष्यति । विवक्तिवर्हिः स्वपस्यतेमखस्तविष्यतेऽअसुरोवेप
तेमती+ ॥ यत्तेऽअग्नेसुमतिमतोऽअक्षत्सहसःसूनोऽअतिसप्रश्रृण्वे । इपंदधानोवहमानोऽअभैरासद्युमोऽअमवान्भू
षतिद्यन्+ ॥ यदन्नऽएपासमितिर्भवातिदेवीदेवेषुयजतायजत्र । रत्नाचयद्भिभजोसिस्वधावोभाग्नोऽअत्रवसुमंतं
वीतात् ॥ श्रुधीनोऽअग्नेसदनेसधस्थैयुक्ष्वारथममृतंस्वद्रविलुं । आनोवहुरोदसीदेवपुत्रेमाकिंदवानामपभूरिहस्याः
(१०।१।११) वृषावृष्णइतिनवर्चससूक्त्यांगिर्हविर्धानोऽभिर्जगतीअलास्तिस्त्रिष्टुभः ।

मंडलं १०

अनु. १

॥ ३७ ॥

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ६

॥ ३८ ॥

मंडलं ३०

अनु. १

॥ ३८

मानिद्विद्यानिस्तुः ॥ यमेऽइवयत्मानेयदैतंप्रवांभरन्मानुषादेवयंतः । आसीदंतस्वमुलोकंविदानेस्वासस्थेभवत
मिद्वेनः ॥ पंचपदानिरूपोऽअन्वरोहंचतुष्पदीमन्वेमित्रतेन । अक्षरेणप्रतिमिमऽएतामतस्यनाभावधिसंपुनामि ॥
देवेभ्यःकर्मवृणीतमयुग्मजायैकममृतंनावृणीत । बृहस्पतियज्ञमकृण्वतऽऋषिंप्रियायमस्तन्वंप्रागिरेचीत् ॥
रंतिशिशवेमरुत्वतेपित्रेपुत्रासोऽअप्यवीवितन्नृतं । उभेऽइदस्योभयस्वराजतऽउभयेतेऽउभयस्यपुष्यतः ॥ १३ ॥
(१०।१।१४) परेयिवांसंप्रवतोमहीरजुवहुभ्यःपंथामनुपस्पशानं । यत्रानःपूर्वपितरःपरयुरेनाजज्ञानाःपथ्याइ अनुस्वाः+ ॥
स्य ॥ यमोनौगालुंम्रथमोविवेदुनैषागव्यूतिरपभर्तुवाऽहं । यत्रानःपूर्वपितरःपरयुरेनाजज्ञानाःपथ्याइ अनुस्वाः+ ॥
मातलीकुर्वैर्यमोऽअंगिरोभिबृहस्पतिक्रिक्रिर्भवावृधानः । योश्चदेवावावृधुर्येचदेवान्त्स्वाहान्येस्वधयान्यमदंति ॥
इमंयमप्रस्तरमाहितीदांगिरोभिःपितृभिःसंविदानः । आत्वांमंत्राःकविशुस्तावंहंवेनाराजन्हुविषामादयस्व ॥ अं
गिरोभिरागहियज्ञियैभिर्यमवैरूपैरिहमादयस्व । विवस्वतंहुवेयःपितातोस्मिन्यज्ञेवहिष्यानिषद्य ॥ १४ ॥ अंगिरसो
नःपितरोनवग्वाऽअर्थवाणोभृगवःसोभ्यासः । तेषांवयंसुमतौयज्ञियानामपिभद्रेसौमनसेस्याम ॥ प्रेहिप्रेहिपथिभिः
(१०।१।१४) परेयिवांसमितिपोळशचैस्यसूक्तस्यवैवस्वतोयमऋपिःयमोदेवतापष्ठयाअगिरःयमिथर्वभृगुसोमाःदशम्यादितिसृणां
थानौत्रिष्टुपत्रयोदशीचतुर्दशीबोध्योनुष्टुभःपंचदशीबृहती (प्रेहिप्रेहीत्यादितिसृणांपितृदेवतावैकल्पिकी) ।

पुष्पंभिर्यन्त्रानःपूर्वापितरःपरैर्युः । उभाराजानास्त्वध्यामदैतायमर्पयथासिवरुणंचंद्रवं ॥ संगच्छस्वपितृभिःसंयमेनै
प्रापतेनपरमेव्योमन् । हित्वायावद्यंघणुनस्तुमेहिंसंगच्छस्वतुन्यासुवर्चाः ॥ अपेतवीतविचसर्पवातोस्माऽएतपितरो
ष्टापत्तेनपरमेव्योमन् । अहोभिरुद्भिरुक्तुभिर्व्यक्तंयमोददात्यवसानमस्मै ॥ अतिद्रवसारमेयौश्वानौचतुरक्षौशुवलोसाधुनाप
लोकमकृन् । अहोभिरुद्भिरुक्तुभिर्व्यक्तंयमोददात्यवसानमस्मै ॥ १५ ॥ यौतेश्वानौयमरक्षितारौचतुरक्षौशुवलोसाधुनापितरौजनोंऽ
था । अथोपितृन्सुविदत्रोऽवपेहियमेनयेसंधमादुमदैति ॥ १५ ॥ उरूणसावमुतपाऽउदुंवलयमस्यदुतौचरतोजनोंऽ
सौ । ताभ्यामिनंपरिदेहिराजन्स्वस्तिचास्माऽअनमीवंचंधेहि ॥ १५ ॥ उरूणसावमुतपाऽउदुंवलयमस्यदुतौचरतोजनोंऽ
अनु । तावसाभ्यंद्दृशयेसूयैयपुनर्दत्तामसुमद्येहमद्रं ॥ यमायसोमंसुतयमायजुहुताहुविः । यमहयज्ञोर्गच्छत्य
मिदूतोऽअरकृतः ॥ यमाययुतवंध्रुविजुहोतप्रचतिष्ठत । सनोदेवेष्वायमद्वीर्धमायुःप्रजीवसे ॥ यमायमधुमत्तमंरा
त्रेहव्यंजुहोतन । इदंनमऽक्रपेभ्यःपूर्वजेभ्यःपूर्वभ्यःपथिकृद्भ्यः ॥ त्रिकट्ठकैभिःपततिपुङ्खारेकुमिद्वहत् । त्रिष्टुङ्गा
यन्त्रीछंदोऽसिस्वातायमऽआहिता ॥ १६ ॥ (१०।१।१५) उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः । येषांथिवे
असंयऽईयुरवृकाऽकृतज्ञास्तेनौवंपुपितरोहवेषु ॥ इदंपितृभ्योनमोऽस्त्वद्ययेपूर्वासोयऽउत्परासऽईयुः । बहिपदोयेस्व

वर्दीरतामिति वदुदशचखरु
(१०१११५)

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ६

॥ ३९ ॥

धर्मासुतस्यभर्जतापित्वस्तऽङ्गहार्गमिष्ठाः ॥ बर्हिषदःपितरऽङ्गृत्यर्वागिमावोहव्याचकृमाजुषध्वं । तऽआगतावसाशं
तमेनार्थानःशंयोररपोदधात ॥ उपहृताःपितरःसोम्यासोबर्हिव्येषुनिधियुग्मिषेष्टु । तऽआगमंततऽङ्गहश्रुवृत्त्वधिद्वुवं
तुतेवंत्वस्मान् ॥ १७ ॥ आच्याजानुदक्षिणतोनिषद्येभ्यश्मभिरुणीतविश्वे । माहिसिष्टपितरःकेनचिन्नोयद्वऽआ
गःपुरुषताकराम ॥ आसीनासोऽअरुणीनामपस्थेरुयिचत्ताशुषेमर्त्याय । पुत्रेभ्यःपितरस्तस्यवस्वःप्रयच्छततऽङ्गहोर्जद
धात ॥ येनःपूर्वेपितरःसोम्यासोन्नूहिरसोमपीथंवसिष्ठाः । तेभिर्यमःसंरराणोहवीभ्यश्नशब्दिःप्रतिकाममस्तु ॥ ये
तातुष्टुद्वन्त्राजेहमानाहोत्राविदुःस्तोमंतष्टासोऽअर्कैः । आग्नेयाहिसुविदत्रेभिरवाङ्मस्यैःकव्यैःपितृभिर्धर्मसद्भिः ॥
येसत्यासोहविरदोहविष्पाऽङ्ग्रेणदेवैःसरथंदधानाः । आग्नेयाहिसहस्रदेववन्दैःपरैःपूर्वैःपितृभिर्धर्मसद्भिः ॥
अग्निष्वात्ताःपितरऽएहगच्छतुसदःसदःसदतसुप्रणीतयः । अत्ताहवीषिप्रयतानिबर्हिव्यथारथिसववीरंदधातन ॥
त्वमग्नऽईळितोजातवेदोवाहव्यानिस्वरभीणिक्कृत्वी । प्रादाःपितृभ्यःस्वधयातेऽअक्षन्नद्धित्वंदेवप्रयताहवीषि ॥ येचेह
पितरोयेचनेहयोश्चविद्ययोऽर्चनप्रविद्ध । त्वंवेत्थयतितेजातवेदःस्वधाभिर्यज्ञंसुक्रतंजुपस्व ॥ येऽअग्निदग्धायेऽअ
नग्निदग्धामध्येदिवःस्वधयामादयते । तेभिःस्वराळसुनीतिमेतांयथावशंतर्चकल्पयस्व ॥ १९ ॥ (१०।१।१६) मैत
(१०।१।१६) मैतमितिचतुर्दशर्चस्यसूक्तस्यामायनोदमनोभिस्त्रिष्टुवंत्याश्चतस्रोतुष्टुभः ।

मंडलं १०

अनु. १

॥ ३९ ॥

मग्नेविदहोमाभिर्शोचोमास्यत्वचैचिक्षिपोमाशरीरं । यदाश्रुतकृण्वोजातवेदोथेमेनंप्रहिणुतात्पितृभ्यः ॥ श्रुतं य
 दाकरसिजातवेदोथेमेनंपरिदत्तात्पितृभ्यः । यदागच्छात्यसुनीतिमेतामथादेवानां वशनीर्भवाति ॥ सूर्यचक्षुर्गच्छतु
 वार्तामात्माद्यांचगच्छपृथिवीचर्मणा । अपोरागच्छयद्रितत्रतेहितामोषधीपप्रतितिष्टाशरीरैः ॥ अजोभागस्तपसात
 तपस्वततेशोचिस्तपतुततैऽर्चिः । यास्तैश्शिवास्तन्वोजातवेदस्ताभिर्वहैनंसुकृतामुलोकं ॥ अवसृजपुनरग्रेपितृभ्यो
 यस्तऽआहुतश्चरतिस्वधाभिः । आयुर्वसान्ऽउपवेत्तशोपःसंगच्छतांतन्वाजातवेदः ॥ २० ॥ यत्तैकृष्णःशकुनऽआतु
 तोदपिपीलःसर्पऽउत्तवाश्वापदः । अग्निष्टद्धिर्वाद्गदं कृणोतसोमश्चयोत्राह्मणोऽआविवेश ॥ अग्नेर्वर्मपरिगोर्भिव्यय
 स्वसंप्रोर्णेष्वपीवसामेदसाच । नेत्वाधृष्णुर्हरसाजहपाणोदधृग्विधृक्ष्यनर्थं खयति ॥ इममग्नेचमसंसाविर्जिह्वरःप्रियो
 देवानामृतसोम्यानां । एषयश्चमसोदेवपानस्तस्मिन्देवाऽअमृतामादयते ॥ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमिदं यमराज्ञो गच्छ
 तुरिप्रवाहः । इहैवायमितरोजातवैदादेवेभ्योहृद्व्यं वहतुप्रजानन् ॥ योऽअग्निःक्रव्यात्प्रविवेशवोगहमिमपश्यन्नि
 तरंजातवैदसं । तंहरामिपितृयज्ञार्थेद्वंसघममिन्यात्परमेसधस्ये ॥ २१ ॥ योऽअग्निःक्रव्यवाहनःपितृन्यक्षदत्तावृ
 धः । प्रेदुहृद्व्यार्निवोचितदेवेभ्यश्चपितृभ्यऽआ ॥ उशंतस्त्वानिधीमह्युशंतःसमिधीमहि । उशंश्शतऽआवहपितृन्ह
 विषेऽअत्तेवे ॥ यत्त्वमग्नेसमदहृस्तमनिर्वोपयापुनः । क्रियाम्ब्वन्नरोहतुपाकदुर्व्याल्कशा ॥ शीर्तिकेशीर्तिकावतिहा

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ६

॥ ४० ॥

दिक्केहार्दिकावति । मंडक्या इ सुसंगमऽइमंस्व१ग्निहर्षय ॥ २२ ॥ (१०।२।१) त्वष्टादुहित्रेर्वहुतुं कृणोतीतीदं
विश्वं भुवनं समैति । यमस्य माता पर्युह्यमाना महोज्ञाया विवस्वतो ननाश ॥ अपागूह्य मृतां मर्त्येभ्यः कृत्वाी सवर्णां मददु
विवस्वते । उताश्विनां वभरद्यत्तदासीदजहादुद्धामिथुनां सरण्यूः ॥ पृषात्वेतश्चयवयतुप्रविद्धाननष्टपशुभुवनस्यगो
पाः । सत्वैतेभ्यः परिददत्पितृभ्योऽग्निद्वैभ्यः सुविद्विभ्यः ॥ आयुर्विभ्यायुः परिपासति त्वापूषात्वापातुप्रपथेपुर
स्तात् । यत्रासते सुकृतोयत्र तेययुस्तत्र त्वादेवः सविता दधातु ॥ पृषेमाऽआशाऽअनुवेदु सर्वाः सोऽअस्मोऽअभयतमेन
नेषत् । स्वस्तिदाऽआर्घ्वाणिः सर्ववीरो प्रयुच्छन्पुरऽर्पतु प्रजानन् ॥ २३ ॥ प्रपथे पथामजनिष्टपपाप्रपथेदिवः प्रपथे पृथि
व्याः । उभेऽअभिप्रियतमे सधस्येऽआचपरोचचरति प्रजानन् ॥ सरस्वती देवयंतो हवन्ते सरस्वतीमध्वरेतायमने ।
सरस्वती सुकृतोऽअहयंतु सरस्वती द्वाशुषे वार्यदात् ॥ सरस्वतिया सरथं ययार्थस्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदती । आसद्या
लोऽअत्रभागं रायस्योपयर्जमानेषु धेहि ॥ आपोऽअस्मान्मातरः शुं धयंतु धृतेन नो घृतं चः पुनंतु । विश्वं हि रिप्रं प्रवर्हति देवी
द्वितीये तु वाके त्रयोदश सूक्तानि (१०।२।१) त्वष्टादुहित्र इति चतुर्दश सर्वस्य सूक्तस्य आमायनो वेदश्चाक्रुषिः आद्ययोर्द्वयोः सरण्युदेवता ततश्च त
सृणापूपाततस्ति सृणां सरस्वती ततः पंचानामपस्त्रिष्टुपं अंते द्वे अनुष्टुभौ (द्रप्सश्चस्कन्देति तिसृणां सोमो देवता वाऽपां त्यापुरस्ताद्धृती वेति च) ।

मंडलं १

अनु. २

॥ ४० ॥

रुदिदाम्यः शुचिरापतऽपि ॥ २४ ॥ द्रुप्सश्चस्कंदप्रथमोऽनद्युनिमंचयोनिमनयश्चपूर्वः । समानयोनिमनुंसं
 चरंतं द्रुप्सं जुहोम्यनुससहोत्राः ॥ यस्तैद्रुप्सः स्कंदतियस्तेऽंशुर्बाहुच्युतोधिपणायऽनुपस्थात् । अध्वर्योर्वर्षवायः प
 चरंतं द्रुप्सं जुहोमि नसावपद्रुक्तं ॥ यस्तैद्रुप्सः स्कन्नोयस्तेऽंशुरवश्चयः पुरःस्रुचा । अयं देवो बृहस्पतिः संतंसि चतुराध
 वित्रात्तैजुहोमि नसावपद्रुक्तं ॥ यस्तैद्रुप्सः स्कन्नोयस्तेऽंशुरवश्चयः पुरःस्रुचा ॥ (१०।२।२) परं सृत्यो
 से ॥ पर्यस्वतीरोपधयुः पर्यस्वन्मामकंवचः । अपांपर्यस्वदित्पयस्तेन मासु हयुधत ॥ २५ ॥ मत्योः पुंदं
 ऽअनपरो हि पंध्यांयस्ते स्वऽइतरो देवयानात् । आप्यायेमानाः प्रजयाधनेन शुद्धाः पुताभवतयशियासः ॥ इमे जीवा वि
 शोपयंतो यदैतद्राधीयुऽआयुः प्रतुंदधानाः । आप्यायेमानाः प्रजयाधनेन शुद्धाः पुताभवतयशियासः ॥ इमे जीवेभ्यः परि
 मत्तैरावद्वृत्रभूद्रादेव हूतिनोऽअद्य । प्रांचोऽअगामनतयेह सायद्राधीयुऽआयुः प्रतुंदधानाः ॥ यथाहान्यनुपूर्वभवतियथं ऽ
 मत्तैरावद्वृत्रभूद्रादेव हूतिनोऽअर्थमेतं । शतं जीवं तु शरदः पुरुचीरं तमत्युदंधतां पर्वतेन ॥ यथाहान्यनुपूर्वभवतियथं ऽ
 धिंदधामि मे पांनुगादपरोऽअर्थमेतं । यथानपूर्वमपरो जहात्येवाधोतरायूः कल्पयैषां ॥ २६ ॥ आरोहतायुर्जसं वृणानाऽअ
 क्रतवं ऽक्रतुर्भिर्यति साधु । यथानपूर्वमपरो जहात्येवाधोतरायूः कल्पयैषां ॥ इमानां रीरविधवाः सुपत्नीरां जनेन सु
 नुपूर्वयतमानायतिष्ठ । इह त्वष्टासुजनिमासोपादीर्घमायुः करतिजीवसेवः ॥ इमानां रीरविधवाः सुपत्नीरां जनेन सु

(१०।२।२) परमृत्यो इति चतुर्दशैव सूक्तस्यामायनः सक्कुरुः आधानाचतसृणां सृत्युः पचम्याधातापद्यथास्त्वष्टाशिष्टानापिष्टमेधा

(१०।२।२) परमृत्यो इति चतुर्दशैव सूक्तस्यामायनः सक्कुरुः आधानाचतसृणां सृत्युः पचम्याधातापद्यथास्त्वष्टाशिष्टानापिष्टमेधा

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ६

॥ ४१ ॥

मंडलं १०

अनु. २

॥ ४१ ॥

पिपासंविशंतु । अनश्रवो न मीवाः सुरत्वाऽआरोहतु जनयो निमग्रे ॥ उदीर्ष्व नार्घ्यं भिर्जीवलो कंगता सुमेतमुपशेषऽए
हि । हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभिसर्वभूय ॥ धनुर्हस्ताद्वाददानीम तस्यास्मेक्षत्रायवर्चसेवलाय । अत्रैव
त्वमिह वयं सुवीरा विभ्वाः स्पृधोऽअभिमातीर्जयम ॥ उपसर्पमातरं भूमिमेतां मुख्यं च संपृथिवीं सुशेवां । अत्रैव
तिर्दक्षिणावतऽएषा त्वापातुर्निकृतेरुपस्थात् ॥ २७ ॥ उच्छ्वंच स्वपृथिविमानि वाधथाः सूपायनास्मै भवसूयं चना ।
मातापुत्रं यथा सिचाभ्येन भूमऽऊर्णहि ॥ उच्छ्वंच माना पृथिवी सुतिष्ठतु सहस्रं मि तऽउपहि श्रयंतां । ते गहासो घृतश्चुतो
भवंतु विभ्वाहास्मै शरणाः संत्वत्र ॥ उत्तैस्तन्नामि पृथिवीं त्वत्परीमं लो गं निदधन्मोऽअहंरयं । एतां स्थूणां पितरो धारयं
तु ते त्रायमः सादना ते मिनोतु ॥ प्रतीची नेमाम हनीष्वः पूर्णमिवादधुः । प्रतीची जग्रभावाचमर्ध्वं रशुनया यथा ॥ २८ ॥
इतिसप्तमाष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

चतुःपंचाशाध्यायेवर्गाः २८ सूक्तानि १३ ऋचः १४१ ॥ त्यागः ॥ अग्नयः २० इंद्राये. ३ अश्वइ. ९ यमाये. यम्याइ. यमाये.
यम्याइ. यमाये. ३ यम्या. ३ यमाये. यम्या. यमाये. १८ हविर्धानाये. ५ यमाये. ५ अगिरः पित्र्यर्वाष्टगुसोमेभ्यः.
यमाये. ३ श्वानाभ्यामि. ३ यमाये. ४ पितृभ्यः १४ अग्नयः १४ सरण्यव. २ वृष्ण. ४ सरस्वत्या. ३ अश्व. ५ मृत्यव. ४ धात्रइ.
त्वष्ट्रइ. पितृमेधाये. ८ ॥ इतिसप्तमेपष्ठः ॥

[illegible]

(१०।२।३) निरुद्धनिर्मुक्तप्रवृत्तिः ।

नाकृणिभृगुगाननश्रुतः

जीवाभिर्भुनजामहे ॥ परैवोविश्वतोदधऽऊर्जघतेनपर्यसा । येदेवाःकेचयज्ञियास्तेरथ्यासंसृजंतुनः ॥ आनिवर्त
नवर्तयनिनिवर्तनवर्तय । भूम्याश्चतस्रःप्रदिशस्ताभ्यऽएनानिवर्तय ॥ १ ॥ (१०।२।४) भद्रनोऽअपिवातयमनः ॥
अग्निमीळेभुजायविष्टशसासामिन्द्रुर्धरीतुं । यस्यधर्मन्स्वरेनीःसपुर्थतिमातुरुर्धः ॥ यमासाकृपनीळभासाकेतुवर्ध
यति । आजतेश्रेणिदन् ॥ अयोविशांगतुरैतिप्रयदानेद्भुदिवोऽअंतान् । कविरुभ्रंदीर्घानः ॥ जुषद्धव्यामानुषस्यो
ध्वस्तस्थावृभ्वायज्ञे । मिन्वन्तस्सङ्गपुरऽएति ॥ सहिक्षेमोहविर्यज्ञःश्रुष्टीदस्यगतुरैति । अग्निदेवावाशीमंतं ॥ २ ॥
यज्ञासाहंदुर्वऽइषेग्निपूर्वस्यशेवस्य । अद्रैःसुनुमायुमाहुः ॥ नरोयेकेचास्मदाविश्वेत्तेवामऽआस्युः । अग्निहविषावर्ध
तः ॥ कृष्णःश्वेतोरुषोयामोऽअस्यब्रह्मऽऽजऽउतशोणोयशस्वान् । हिरण्यरूपंजनिताजजान ॥ एवातेऽअग्नेविम
दोर्मनीषामूर्जोनपादमृतैभिःसजोषाः । गिरऽआवक्षत्सुमतीरियानऽइषमूर्जसुक्षितिविश्वमाभाः ॥ ३ ॥ (१०।२।५)
आग्निंनस्ववृकिभिर्होतारंत्वावृणीमहे । यज्ञायस्तीर्णवर्हिषेविवोमदेशीरंपावृकशोचिषंविर्वक्षसे ॥ त्वामुतेस्वामुवः

(१०।२।४) भद्रमितिदशर्वस्यसूक्तलैद्रोविमदोभिर्गायत्रीआद्यैकपदाविराद्वितीयानुष्टुबंलेविराद्विष्टुमौ (भद्रंनःप्रद्युतिसप्तसूक्तेषु
यद्रेद्रोविमदःसप्राजापत्योवैकल्पिकः किंचवासुक्रोवसुकृद्वा) । (१०।२।५) आग्निनेत्यष्टर्वस्यसूक्तलैद्रोविमदोभिरास्तारपंक्तिः ।

श्रुमंतश्चर्याधमः । केतित्वामुपमेचनोविरोमदुःसर्गातिरमुःसर्गनिर्दिष्टः ॥ त्वं प्रमाणंऽअन्यतेऽङ्गभिः भिन्ननीर्यव ।
 दुष्णाहपाण्यजुनाविरोमदेविश्राडअधिप्रियाधिपुवि ॥ यमेश्वरगन्धर्वगिनाः नावन्नगल्य । तमानोपावर्जनातयेमि
 वोमदेयुक्तेषु चिन्तामर्षरावि ॥ अग्निर्गोतोऽयर्थोणाप्रिद्विर्गोनिताव्या । भुवन्तोपिप्रम्वनोविरोमदेप्रियोयुमस्यका
 म्योवि ॥ ४ ॥ त्वायुज्ञेर्गोळनेमेप्रयुल्यचरे । त्वंमयूनि कान्यविरोमेदेनिर्गोभासिमुश्रुपेवि ॥ त्वायुज्ञेऽतुल्विजुचानं
 ममेन्निपेदिरे । घृतधर्तीकुरुमनुषोविरोमदेऽङ्ग कंचोतंप्रमदभिवि ॥ अंगेश्वरं शोभिगोऽयमेववृत्त । अग्निर्देन्दुया
 यमेविरोमदेगर्भदद्यासिजामिपुवि ॥ ५ ॥ (१०।२।६) कुतश्चतुऽदंष्ट्रः कृमिस्तुगजनेमिनोविश्रुयने । तर्पीणा
 वायःश्वेयुहागाचर्कगिरा ॥ उहृश्रुतदंष्ट्रोऽअसंऽअयनावेपुव्यूचीपमः । भिनोनयोऽजनेन्यायशधुकेऽअना
 म्या ॥ महोयस्यतिःअवसोऽअनाम्यामहोनम्यास्यनूतनिः । भुतावत्रस्वपृणोःपितापुत्रभिर्वप्रिय ॥ युजानोऽज
 श्वावातस्यधुनीदेवोदेवस्यवज्रिवः । स्वतापयानिन्मर्मतासुजानःलोव्यर्चनः ॥ त्वत्याचिद्धातुस्याव्यागोऽमुज्जालम
 नावहृथे । ययोद्विंदोनसल्योयंतानिर्विद्राव्यः ॥ ६ ॥ अश्वमंतोशनपृच्छतेवाकृथेनोऽनागहं । जानगमथुःपरा
 कादिवश्रममश्मल्य ॥ जानदंष्ट्रदंष्ट्रमेस्माकंरलोयते । तत्त्वायाचामहंवःशुण्यच्छन्नमानुषं ॥ अकुरुमदस्युरभि

(१०।२।६) रुहश्रुतइतिपचदशर्चससूक्तेशोपमः२३ःपुरादुःशीपनमीमगीनाःयोषुभुभान्तापिपु ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ७

॥ ४३ ॥

मंडलं १

अनु. २

॥ ४३ ॥

नोऽअमुं नुरन्यव्रतोऽअमानुषः । त्वंतस्यामित्रहन्वधर्दासस्यदंभय ॥ त्वनंऽइंद्रशूरशूरैरुतंत्वोतासोबुर्हणा । पुरुत्रा
लेविपुर्त्योनवतक्षोणयौथा ॥ त्वंतान्वृत्रहलेचोदयोनृन्कापर्णेक्षूरवज्रिवः । गुहायर्देकवीनांविज्ञानक्षेत्रशवसां
॥ ७ ॥ मक्षतातंऽइंद्रदानामसऽआक्षणेक्षूरवज्रिवः । यद्धशुण्यस्यदुंभयोजातंविश्वसयावभिः ॥ माकुध्यंगिंद्रशू
रवस्वीरस्मेभूवन्नभिष्टयः । वयंवयंतऽआसांसुमेस्यामवज्रिवः ॥ अस्मेतातंऽइंद्रसंतुसत्याहिंसंतीरुस्पृशः । विद्या
मयासांभुजोधेनूनांनवज्रिवः ॥ अहुस्तायदुपदीवधैतक्षाःशचीर्भिवेद्यानां । शुष्णंपरिप्रदक्षिणिद्धिश्वायवेनिशिश्नथः ॥
पिवापिवेदिंद्रशूरसोमंमार्गिपण्योवसवानुवसुःसन् । उत्तत्रायस्वगुणतोमघोनोमहश्चरायोरेवतस्कृधीनः ॥ ८ ॥
(१०।२।७) यजामहुऽइंद्रं चज्रदक्षिणंहरिणांरथ्यं१विव्रतानां । प्रश्मश्रुदोधुवदूर्ध्वथाभुद्विसेनाभिर्दयमानोविरा
धसा ॥ हरीन्वस्ययावनेविदेवस्विद्रोमधैर्मघवावृत्रहाभुवत् । ऋमुवार्जऽऋभक्षाःपत्यतेशवोवधणौमिदासस्यनामचि
तिः ॥ सोचिन्नुवृष्टिर्यथाइ स्वासर्चोऽइंद्रःश्मश्रुणिहरिताभिर्गुण्यते । अववेतिसक्षयंसुतेमधूदिद्धूनोतिवातोयथाव
नं ॥ योवाचाविवाचोमधवाचःपुरुसहस्वाग्निवाजधानं । तत्तदिदस्यपौंस्यगृणीमसिपितेवयस्ताविपीवावृधेशवः ॥
(१०।२।७) यजामहइतिसप्तर्चस्यसूक्त्यैद्रोविमदंद्रो जगत्याद्यात्येतिपुभौपंचम्यमिसारिणी ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ७

॥ ४४ ॥

वि० ॥ तवत्येसोमशक्तिभिर्निकामासोव्यृण्वरे । गृत्स्यधीरोत्सवसोविवोमदेव्रजंगोमत्तमश्विनंविर्वक्षसे ॥ ११ ॥
पुंशुनःसोमरक्षसिपुरुत्राविद्धित्तजंगत् । समार्कणोपिजीवसेविवोमदेविश्वसंपश्यन्भुवनवि० ॥ त्वनःसोमविश्वतो
क्षेत्रचित्तरोमनुषोविवोमदेदुहोर्नःपाह्वहसोवि० ॥ त्वनोवृत्रहंतमेद्रस्येदोशिवःसखा । यत्सीहवतेसमिथेविवोमदेयु
अयमानास्तोकसातौवि० ॥ अयंघसतुरोमदुइद्रस्यवर्धतप्रियः । अयंकक्षीर्वतोमहोविवोमदेमतिविप्रस्यवर्धयद्वि० ॥
अयंविप्रायदाशुपेवार्जोइयतिगोमत्तः । अयंससभ्यऽआवरंविवोमदेप्रांधश्रोणंचतारिपुद्वि० ॥ १२ ॥ (१०।२।१०)
प्रह्यच्छामनीपाःस्पाह्यायतिनियुतः । प्रदुस्मानियुदंथःपूपाऽअविष्टुमाहिनः ॥ यस्यत्यन्महित्वंवाताप्यमयंजनः ।
विप्रऽआवंसङ्गीतिभिश्चिकेतसुष्टुतीनां ॥ सर्वदसुष्टुतीनामिदुर्नपूपावृषा । अभिगसुरःप्रपायतिव्रजंनऽआयुपायति ॥
मंसीमाहित्वावयमस्माकंदेवपूप्न । मतीनांचसार्धनंविप्राणांचाध्वन् ॥ प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयोरथानां । ऋषिःस
योमनुहितोविप्रस्ययावयत्सखः+ ॥ १३ ॥ आधीर्पमाणायाःपतिःशुचायाश्चशुचस्यच । वासोवायोवीनामावासां
सिममृजत् ॥ इनोवार्जानांपतिरिनःपुष्टीनांसखा । प्रहमश्रुहृतोदूधोद्विद्वथायौऽअदाभ्यः ॥ आतेरथस्यपूप्नजा
(१०।२।१०) प्रह्यच्छेतिनवर्चस्यसूक्तस्यैद्रोविमदःपूपातुपुपभाद्याचतुर्थावुणिहौ ।

मंडलं १८

अनु. २

॥ ४४ ॥

धुरववृत्तुः । विश्वस्यार्थिनः सखामनोजाऽअनपच्युतः ॥ अस्माकमजार्थपपाऽअविष्टमार्हितः । भुवद्वाजानां वृत्र
 इमं नः शृणु वद्धयै ॥ १४ ॥ (१०।२।११) अस्तस्मै जरितः राभिर्वोगेयसु न्यतेयजमानाय शिक्षं । अनागीर्दाम्
 इमं नः शृणु वद्धयै ॥ १४ ॥ (१०।२।११) यदीदृहं यथैमं नयान्यदेवयूत्समरेण जयन्वान् । यदावाख्यत्त्वमरेण मृघावदादि
 हर्मस्मिन् प्रहृतास्तस्य धृतं जिनार्थं तमाभुं ॥ नाहं ते देव इदं त्रिवीत्यदेवयूत्समरेण जयन्वान् । जिनामित्रेलेमऽआसंतमाभुं प्रतीक्षणां
 चानितीं सुतं पंचदशं निषिंचं ॥ यदज्ञोतिषु जनेष्व्यासं विश्वे सतो मयत्रानोमऽआसन् । मर्मस्वनात्कृधकणौ भयातऽएवेदनुद्यन्किरणः स
 ह्रमेवपुभाप्रभुं गति ॥ यदज्ञोतिषु जनेष्वारयते न पर्वता सोयद्रुहं मनस्ये । मर्मस्वनात्कृधकणौ भयातऽएवेदनुद्यन्किरणः स
 पर्वते पादगृह्यं ॥ नवाऽउमां वृजनेवारयते न पर्वता सोयद्रुहं मनस्ये । मर्मस्वनात्कृधकणौ भयातऽएवेदनुद्यन्किरणः स
 मेजात् ॥ १५ ॥ दर्शयन्क्षीव्युऽआयुरानुदृष्यपूवोऽअपरो नुदं पत् । ह्येपयस्ते पतितनमृतो योऽअस्यापारं रजसो विवेप ॥ अत्रे
 वीयं प्रयुताऽअय्योऽअक्षन्ताऽअपश्यं सहगोपाश्चरंतीः । हवाऽइदृयोऽअभितः समायुन्किर्यदासुखपतिश्छंदयाते ॥ अत्रे
 संयद्वयं यत्र साद्रे जना नो महं यत्रादं इव जैऽअंतः । अत्रायुक्ते वसातारमिच्छादथोऽअयुक्तं युनजद्वन्वान् ॥ १६ ॥
 दुर्मेमं ससे सत्यमुक्तं द्विपाच्चयच्छतुष्पात्सं सजानि । स्त्रीभिर्योऽअत्र वृषं गतं न्यादयुक्तेऽअस्य विभजानि वेदः ॥ १६ ॥

(१०।२।११) असहिस्वतिचतुर्विंशत्युचस्यसूक्तसैन्द्रोवसु ऋद्रक्षिषुप ।

यस्यानुक्षादुहिताजात्वासकस्तांविद्धोऽअभिमन्यातेऽअंघां । कुतरोमेनिंप्रतितंमुचातेयऽईवहतेयऽईवावरेयात्+ ॥
 किर्यतीयोषामर्यतोवधयोःपरिप्रीतापन्यसावार्येण । भद्रावधूर्ध्ववतियत्सुपेशाःस्वयंसामित्रंवनुतेजनेचित् ॥ पत्तो जे
 गारप्रत्यंचमत्तिशीष्णांशिरःप्रतिदधौवरूथं । आसीनऽऊर्ध्वामपसिंक्षिणातिन्यङ्कुःक्षानामन्वेतिभूमि ॥ बृहन्नच्छा
 योऽअपलाशोऽअर्वातस्यौमाताविषितोऽअत्तिगर्भः । अन्यस्यावृत्संरिहृतीमिमायकयाभुवानिदधेनुरूधः ॥ सप्त
 वीरासोऽअधरादुदयन्नष्टोत्तरात्तात्समजगिरन्ते । नवपश्चातात्स्थिविमंतऽआयन्दशप्राक्सानुवित्तिरत्यश्वः ॥ १७ ॥
 दशानामेकंकपिलंसमानंतोहन्वंतिःक्रतवेपार्यय । गर्भमातासुधितंवक्षणास्ववेनंतुपयंतीविभर्ति ॥ पीवानंमेपमप
 चंतवीरान्युसाऽअक्षाऽअनुदीवऽआसन् । द्वाधनुर्वृहृतीमस्वं१तःपवित्रवंताचरतःपुनंता ॥ विक्रोशनासोविष्वंच
 ऽआयन्यचातिनेमोनहिपक्षदुर्धः । अयंमेदेवःसवितातदाहृद्वन्नऽइद्वनवत्सपरिन्नः ॥ अपश्यंग्रामंवहमानमारादंच
 क्रयास्वधयावर्तमानं । सिपत्त्ययःप्रयुगाजनानांसद्यःशिश्नाप्रमिनानो नवीथान् ॥ एतौमेगावौप्रमरस्ययुक्तौमोषुप्र
 सैधीमुहुरिन्ममंधि । आपश्चिदस्याविर्नशंत्यर्थसूरश्चमर्कऽउपरोवभवान्+ ॥ १८ ॥ अयंयोवज्रःपुरुधाविवृत्तोवःसूर्य
 स्वबृहतःपुरीयात् । श्रवऽइदेनापरोऽअन्यदस्ति तदव्यथीजरिमाणस्तारंति ॥ बृक्षेवृक्षेनियतामीमयुहौस्तोवयःप्रप
 तान्पूरुपादः । अथेदंविभ्वंभुवनंभयात्ऽइंद्रायसुन्वदृष्येचशिक्षत् ॥ देवानांमानैप्रथमाऽअतिष्ठन्कृतत्रादेपासुपरा

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ७

॥ ४६ ॥

मंडलं १०

अनु. २

॥ ४६ ॥

दधतोवक्षणासुयत्राकृपीटमनुतदंहति ॥ शशःक्षुरप्रत्यंचजगाराद्रिलोगेनव्यभेदमारात् । वृहतंचिहृहृतेरंधयानिव
यद्वत्सोवृषभंशुवानः ॥ सपूर्णऽइत्थानखमासिषायावरुद्धःपरिपदंनसिंहः । निरुद्धश्चिन्महिषस्तथ्यावाङ्गोधात
स्माऽअयर्थकषदेतत् ॥ तेभ्योगोधाऽअयर्थकषदेतद्येवृहणःप्रतिपीयूत्यन्नैः । सिमऽउक्ष्णैवसृष्टोऽअदंतिस्वयंबल
नितन्वःशृणानाः ॥ एतेशमीभिःसुशमीऽअभूवन्येहिन्विरेतन्वः ॥ सोमऽउक्थैः । नुवद्धदुक्षुपनोमाहिवाजान्दि
विश्रवोदधिपुनामवीरः ॥ २१ ॥ (१०।२।१३) वनेनवायोन्यधायिचाकन्धुचिवास्तोमोभुरणावजीगः । यस्ये
दिदःपुरुदिनेपुहोतानुणानयोनृतमःक्षुपावान् ॥ प्रतैऽअस्याऽउषसःप्रापरस्यानतौस्यामनृतमस्यनृणां । अनुत्रिशो
कःशतमार्गहृद्वन्कुत्सेनरथोयोऽअसत्सवान् ॥ कस्तेमदऽइंद्रंत्योभूदुरोगिरोऽअभ्युग्रोविधाव । कदाहोऽअ
र्वागुपमामनीषाऽआत्वाशक्यामुपमंराधोऽअन्नैः ॥ कदुद्यन्नामिद्वत्वावतो नन्कयाधियाकरसेकन्नऽआगन् । मित्रोन
सत्यऽइरुगायभत्याऽअन्नैःसमस्ययदसन्मनीषाः ॥ २२ ॥ मारेयसूरोऽअर्थनपारंयेऽअस्यकामंजनिधाऽइवगमन् । गिरंश्चये
तवतःसुतासुःस्वाङ्गन्भवंपुपीतयेमधूनि ॥ २२ ॥ मात्रेनुतेसुभितेऽइंद्रपूर्वीद्यौर्मज्जमनापृथिवीकाव्येन । वरायतेघ
(१०।२।१३) वनेनेत्यष्टर्चस्यसूक्तस्यैद्रोवसुक्रद्विष्टुप् ।

रिमगापुगिब्बाऽअभिक्त्यानर्थः पौंस्त्र ॥ व्योनाकिट्टः पत्तना. खोजाऽआस्संगत्तनेनुगयानपणीः । आस्साग्गुत्तनगुत्त
 नासुतिष्ठवंभद्रयासुसुत्थाचोदयानि ॥ २३ ॥ (१०१३१) प्रदेनुनात्रात्तोगानुरेत्तापोऽअच्छाप्पन्नमन्नमोन्नप्रयुक्ति । अत्रया
 महीमित्रस्वरूपस्यधामिपुत्रअर्थनेरीगागुक्तिः ॥ अर्धगोपेऽविभक्तोहिभताच्छापडत्ताश्रुतीरुजंतः । मवोदददृग्मि
 चासुपुत्तस्समोमंमधुमंतंमुत्त ॥ योऽअनिग्गमोदीद्रेयुग्गुत्तनंमिप्राग्गुत्तनेऽअ चरेत्तु । अपानपान्मधुमतीरपो
 श्रष्टेऽअरुणः सुपुणत्तमास्यः नममिभप्रागुत्तः ॥ अर्धगोपेऽविभक्तोहिभताच्छापडत्ताश्रुतीरुजंतः । मवोदददृग्मि
 चासुपुत्तस्समोमंमधुमंतंमुत्त ॥ योऽअनिग्गमोदीद्रेयुग्गुत्तनंमिप्राग्गुत्तनेऽअ चरेत्तु । अपानपान्मधुमतीरपो
 द्वावाभिर्द्वोवाधुनीर्या ॥ २४ ॥ एतेगुत्तनयोनमनयदीमज्जुगुतीरेत्तच्छे । तस्माऽऽद्रोयुम
 परेल्लियदोमिंचाऽओपेधीम. पुनीतात् ॥ २४ ॥ एतेगुत्तनयोनमनयदीमज्जुगुतीरेत्तच्छे । तस्माऽऽद्रोयुम
 धिक्किनेध्वयवोधिपणापेध्वेवीः ॥ चोनात्ताम्योऽअकृणोदुलोक्कंयोवाग्गुत्ताऽअभिजेल्लेगुत्त चरेत्तु । मज्जुगुत्तमीज्जमचरे
 धुमंतममिंदेनुमादंनंमिहोत्तनाप ॥ तंमि ववोमत्तराभेदपानममिंदेनुयड्मंउत्तयानि । मज्जुगुत्तमीज्जमचरेत्तु । मज्जुगुत्तमीज्जमचरे
 व्यापेरिवतीः शृणुताहवमि ॥ तंमि ववोमत्तराभेदपानममिंदेनुयड्मंउत्तयानि । मज्जुगुत्तमीज्जमचरेत्तु । मज्जुगुत्तमीज्जमचरे
 विचरैत्तुमुत्त ॥ आवधुत्ततीरधुद्विधारागोपुधोननिग्रवंचरंती । मज्जुगुत्तमीज्जमचरेत्तु । मज्जुगुत्तमीज्जमचरेत्तु । मज्जुगुत्तमीज्जमचरेत्तु ।

वृत्तीयनुनाक्किनयोऽअमृगानि (१०१३१) प्रदेनुनात्रात्तोगानुरेत्तापोऽअच्छाप्पन्नमन्नमोन्नप्रयुक्ति । अत्रया

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ७

॥ ४७ ॥

नीः ॥ २५ ॥ हिनोतानोऽअध्वरैर्देवयज्याहिनोतब्रह्मसुनयेधनानां । ऋतस्ययोगेविष्यध्वमूर्धःशुष्टीवरीर्भूतनास्म
भ्यमापः ॥ आपौरवतीःक्षयथाहिवस्वःऋतुचभद्रविभूथामृतं च । रायश्चस्थःस्वपत्यस्यपत्नीःसरस्वतीतद्गुणतेवयोधा
त् ॥ प्रतियदापोऽअहश्चमायतीर्घतंपयांसिबिभ्रतीर्मधूनि । अध्वर्युभिर्मनसांसंविदानाऽइंद्रायसोमंसुषुतुंभरंतीः ॥
एमाऽअगमन्नेवतीर्जीविधन्याऽअध्वयवःसादयतासखायः । निवर्हिषिधत्तनसोम्यासोपांनप्लांसंविदानांसंऽएनाः ॥
(१०।३।२) आनोदेवानामुपवेतुशंसोविश्वेभिस्तुरैरवसेयजत्रः । तेभिर्वयंसुषुखायौभवेमतरंतोविश्वानुरितास्यो
म ॥ परिचिन्मतोद्रविणंमन्याहुतस्वपथानमसाविवासेत् । उतस्वेनऋतुनासंवदेतश्रेयांसंदक्षमनसाजगृभ्यात् ॥ २६ ॥
अर्धाचिधीतिरससुग्रमंशस्तीर्थेनदुस्समुपयंत्यूमाः । अभ्यानऋमसुवितस्वशपंनवेदसोऽअमृतानामभूम ॥ नित्यश्चा
कन्यात्स्वपतिर्दमूनायस्माऽउदेवःसंविताज्जानं । भगोवागोभिर्यमेमनज्यात्सोऽअसैचारुश्छदयदुतस्यात् ॥ इयं
साभूयाऽउषसांमिवक्षाचच्छुमंतःशर्वसासमार्यन् । अस्यस्तुतिर्जरितुर्भिक्षमाणाऽआनःशुमासऽउपयंतुवाजाः ॥ २७ ॥
अस्येदेवासुमतिःपयथानाभवत्पव्याभूमनागैः । अस्यसर्नीळाऽअसुरस्योनोसमानऽआभरणेविभ्रमा
(१०।३।२) आनोदेवानामित्येकादशर्चस्यसूक्तत्वेत्पःकवषोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् (भेदपक्षे-विश्वेदेवाः ९ अथत्यगर्भाशमी १ उषोमी १ एवं ११) ।

मंडलं १

अनु. ३

॥ ४७ ॥

णाः ॥ किंस्त्रिद्वन्द्वकऽउसद्वृक्षऽआसयतोद्यावापृथिवीनिष्टतुधुः । संतस्थानेऽअजरेऽइतऽकृतीऽअहनिपर्वीरुपसोज
 रंत ॥ नैतावदेनापरोऽअन्यदस्त्युक्षसद्यावापृथिवीविभर्ति । त्वचंपवित्रं कृणुतस्वधावान्यदस्युनहुरितोवहति ॥
 स्तेगोनक्षामत्यैतिपृथ्वीमिहंनवातोविहवातिभूम । मित्रोयत्रवरुणोऽअज्यमानोऽत्रिवेनेनव्यष्टशोकं ॥ स्तरीयत्सूत
 सद्योऽअज्यमानाव्यथिरव्यथीः कृणुतस्वगोपा । पुत्रोयत्पूर्वः पित्रोर्जनिष्टशम्यांगौर्जगारयद्धृष्टच्छान् ॥ उतकर्ण्वन
 पदः पुत्रमाहुरुतस्यावोधनमादत्तवाजी । प्रकृष्णायरुशदपिन्वतोर्धकृतमन्नकिंरस्माऽअपीपेत् ॥ २८ ॥ (१०।३।३)
 प्रसुग्मंताधियसानस्यसक्षणिर्विरेभिर्वरोऽअभिप्रसीदतः । अस्माकमिद्रंऽउभयं जुजोपतियत्सोम्यस्यांधसोऽबुबोधति ॥
 वींद्रयासिद्विद्यानिरोचनाविपार्थिचानिरजसापुरुष्टुत । यत्त्वावहंतिमुहुरध्वरोऽउपतेसुर्वन्वतुवग्वनोऽअराधसः ॥
 तदिन्मेच्छन्त्सद्वपुषोवपुष्टरंपुत्रोयज्जानं पित्रोरधीयति । जायापतिवहतिवसुनासुमत्पुंसऽइद्धद्रोवहनुः परिष्कृतः ॥
 तदित्सधस्यमभिचारुदीधयुगावोयच्छासन्वहतुनधेनवः । मातायन्मर्तुर्यथस्वपूव्योभिवाणस्यसधातुरिज्जनः ॥
 प्रवोच्छारिरिचेदेवयुषदमेकौरुद्रेभिर्योतितुर्वणिः । जरावायेष्वमृतैपुदावनेपरिवऽक्रमेभ्यः सिंचतामधु ॥ २९ ॥
 निधीयमानमपगृह्णमप्सुप्रमेदेवानां व्रतपाऽउवाच । इन्द्रोविद्धोऽअनुहित्वाचक्षतेनाहमग्नेऽअनुशिष्टऽआगौ ॥ अक्षेत्र

(१०।३।३) प्रसुग्मतेतिनवर्चस्यसूक्त्यैल्लपः कवपदं द्रो जगती अत्याश्रतसस्त्रिष्टुभः ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ८

॥ ४८ ॥

मंडलं १

अनु. ३

॥ ४८ ॥

वित्क्षेत्रविदुं ह्यग्रादस्रैतिक्षेत्रविदार्नुशिष्टः । एतद्वैभद्रमनुशासनस्योतस्तुतिर्विदत्यंजसीनां ॥ अद्येदुग्राणीदममन्निमा
हापीधृतोऽअधयन्मातुरुधः । एमेनमापजरिमायुवानमहेळन्वसुःसुमनावभूव ॥ एतानिभद्राकलशक्रियामकुरुश्रवण
ददतोमघानि । दानऽइहोमघवानुःसोऽअस्त्वयंचसोमोहृदिचविभमि ॥ ३० ॥ इतिसप्तमाष्टकेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

पचपचाशाध्यायेवर्गाः ३० सूक्तानि १४ ऋचः १५३ ॥ त्यागः ॥ अज्योग्नीपोमाम्या. अज्य ७ अग्नय १८ इद्राये. २५ अश्वि-
भ्या. ३ सोमाये. ११ पूष्ण. ९ इद्राये. २५ वसुक्राये. इद्राये. ३ वसुक्राये. इद्राये. वसुक्राये. इद्राये. इद्राये. ८
अज्य. १५ विश्वेभ्योदेवेभ्य. ११ [मे प. विश्वेभ्योदे. ९ अश्वत्थगर्भयेभ्योदे. ९ उपसेग्नय] इद्राये. ९ ॥ इतिसप्तमेसप्तमः ॥

प्रमाद्यावैश्वदेव्यैः प्रगार्थः परागायत्र्योद्विकुरुश्रवणस्यत्रासदस्यवस्यदानस्तुतिः पराभिर्मृतेभिन्नातिथौराज्ञित
त्स्नेहाहगिरुपमश्रवसपुत्रमस्यव्यशोकर्यत्रावेपाः पठूनामौजवान्वाक्षोक्षकृपिप्रशंसाचाक्षकितवनिंदाचसप्तमी
जगत्यबुधं लुशोधानाकोवैश्वदेवंतुद्वित्रिष्टुवंतंतूपासानक्तानमोद्वादशसौर्योभितपाः सौर्यजागतवैत्रिष्टुवदशम्य
स्मिन्नः पंचमुष्कवानिंद्रोयोवांपठूनाकाक्षीवतीघोपाश्विनंहित्रिष्टुवंतरथंयांतंसमानंतंचसुहस्रलोघोपेयोस्त्वैका
दशकृष्णोच्छामेद्वित्रिष्टुवंतंत्वायातुत्रित्रिष्टुवार्दिद्वित्रस्यरिद्वादशवत्सप्रिराग्नेयंतु ॥ ८ ॥

श्रुत्सं.

अ. ७ अ. ८

॥ ४९ ॥

विदामि कितवस्य भोगं ॥ अन्ये जायां परिसृशत्यस्य स्याद्युधेदेनेवाज्यं १क्षः । पिता माता भ्रातरः एनमाहुर्नजानी
मोनयता बद्धमेतं ॥ यद्वादी ध्येनदविषाण्येभिः परायध्वोर्वहीयेसखिभ्यः । न्युसाश्च बध्वोवाचमक्रतुं एमीदृषानि
ब्रुतं जारिणीव ॥ ३ ॥ सभाभेति कितवः पच्छमानोजेभ्यामीति तन्वा इ शशुजानः । अक्षासोऽअस्यवित्तिरंति कामं प्र
हणो मध्वासंयुक्ताः कितवस्य वर्हणा ॥ त्रिपंचाशः क्रीळति भ्रातः एपां देवऽइव सवितः सत्यधर्मा । कुमारदेष्णा जयतः पुन
मंतराजां चिदेभ्यो नमऽइत्कुणोति ॥ नीचार्वर्ततऽउपरि स्फुरत्यहुस्तासो हस्तवन्तं सहते । दिव्याऽअंगाराऽइरिणेन्यु
साऽशीताः संतो हृदयं निदं हति ॥ जाया तप्यते कितवस्य ह्रीनामाता पुत्रस्य चरतः कस्वित् । ऋणावाविभ्युद्धनमिच्छमा
नोन्येपा मस्तमुपनर्कमेति ॥ ४ ॥ स्त्रियं हृद्ग्राय कितवन्तं तापान्येपां जायां सुकृतं च योनिं । पूर्वलिऽअश्वान्युजे हिवन्न
न्तोऽअग्नेरंते वृषलः पपाद ॥ योर्वः सेनानीर्महूतो गणस्वराजा व्रातस्य प्रथमो बभूव । तस्मै कुणोमिनधनारुणांश्मिदशा
हंप्राचीस्तद्वत् वदामि ॥ अक्षमादीन्व्यः कृपिमिदं पस्ववित्तेरमस्वबहुमन्यमानः । तत्र गावः कितवत्तत्र जाया तन्मे विचं
ष्टे सविताय मूर्धः ॥ मित्रं कृणुध्वं खलु मळतानो मानो धोरेण चरताभिधृणु ॥ निवो नुमन्युर्विशतामरातिरन्यो वभ्र

मंडलं १०

अनु. ३

॥ ४९ ॥

पांप्रसितौ न्वस्तु ॥ ५ ॥ (१०।३।६) अबुग्रमत्यऽइंद्रवंतोऽअग्रयोज्योतिर्भरतऽउपसोव्युष्टिषु । महीद्यावागृथि
 वीचेतामपोद्यादेवानामवऽआवृणीमहे ॥ दिवस्पृथिव्योरवऽआवृणीमहेमावृन्तिसधुन्पर्वतान्छर्यणावतः । अना
 गास्त्वसूर्यमपासमीमहेभद्रंसोमःसुवानोऽअद्याकृणोतुनः ॥ द्यावानोऽअद्यापृथिवीऽअनागसोमहीत्रायेतांसुविताय
 ॥ इयंनऽउस्माग्रथमासुदेव्यैरेवत्सनिभ्यैरेवतीव्यु
 मातरा । उपाऽउच्छत्यपवाधतामघंस्वस्त्य१॥ ६ ॥ प्रयाःसिखतेसूर्यस्यरश्मिभिर्ज्योतिर्भरतीरुषसोव्युष्टिषु । आयु
 च्छतु । आरेमन्युर्दुर्विदत्रस्यधीमहिस्वस्त्य१॥ ६ ॥ अनमीवाऽउपसऽआचरंतुनऽउदग्रयोजिहतांज्योतिषावहत् । आयु
 नोऽअद्यश्रवसेव्युच्छतस्वस्त्य१॥ ६ ॥ श्रेष्ठनोऽअद्यसंवित्वरेण्यभागमासुवसहिरल्लाघाऽअसि । रायोजनित्रीधि
 क्षातामश्विनातूतुजिरथंस्वस्त्य१॥ ७ ॥ पिपेतुमातहतस्यप्रवाचनेदेवानांयन्मनुष्याइ अमन्महि । विश्वाऽइदुस्त्राःस्पलुदेतिसूर्यः
 पणामुपबुवेस्वस्त्य१॥ ७ ॥ अह्योऽअद्यावर्हिपःस्तरीमणिग्राव्णांयोगेमन्मनःसार्धऽईमहे । आदित्यानांशर्मणिस्थामुरण्यसिस्व
 स्वस्त्य१॥ ७ ॥ अनौवर्हिःसधमादेवहृदि विदेवोऽईळेसादयासप्तहोतृन् । इंद्रमित्रवरुणंसातयेभगैस्वस्त्य१॥ ७ ॥ तऽ
 स्त्या१॥ ७ ॥ आनौवर्हिःसधमादेवहृदि विदेवोऽईळेसादयासप्तहोतृन् । इंद्रमित्रवरुणंसातयेभगैस्वस्त्य१॥ ७ ॥ तन्नोदेवायच्छत

आदित्याऽआर्गतासर्वतातेयवृधेनौयज्ञमवतासजोपसः । बृहस्पतिपुपर्णमश्विनाभगैस्वस्त्य१॥ ७ ॥ तन्नोदेवायच्छत
 (१०।३।६) अबुग्रमितिचतुर्दशर्चस्यसूक्तस्थानाकोलुशोविश्वेदेवाजगत्संख्येद्वेदत्रिष्टुभौ(भेद-विश्वेदेवाः३उपसोभिः२विश्वेदेवाः१एवं१४)

ऋक्सं०

अ ७ अ. ८

॥ ५० ॥

मंडलं १०

अनु. ३

॥ ५० ॥

सुप्रवाचनंछादिर्गदित्याः सुभरंनपाथं । पश्वेतोकायुतनयायजीवसेस्वस्त्यं१३॥ विष्वेऽअद्यमरुतोविष्वेऽजुती
विष्वेभवंत्वमयःसमिद्धाः । विष्वेनोदेवाऽअवसागंमंतुविष्वमस्तुद्रविणंवाजोऽअस्मे ॥ यदेवांसोवथवाजसातौव
त्रायध्वेयंपिपथात्यंहः । योवोगोपीथेनभयस्यवेदुतेस्यामद्ववीतयेतुरासः ॥ ८ ॥ (१०।३।७) उपासानकाबृह
तीसुपेशसाद्यावाक्षामावरुणोमित्रोऽअर्यमा । इन्द्रहवेमरुतःपर्वतोऽअपऽआदित्यान्यावापृथिवीऽअपःस्वः* ॥ द्यौ
श्चनःपृथिवीचप्रचेतसऽक्रतावरीरक्षतामहसोरिषः । मादुर्विदन्नानिक्रितिनऽईशततहेवानामवोऽअद्यावणीमहे ॥ द्यौ
विष्वस्मान्नोऽअदितिःपात्वंहसोमातामित्रस्यवरुणस्यरेवतः । सर्वज्योतिरवृकनशीमहितहे ॥ ग्रावावदन्नपरक्षा
सिसेधतुदुःष्वस्यंनिक्रितिविष्वमन्त्रिणं । आदित्यंशर्मरुतामशीमहितहे ॥ एन्द्रोवहिःसीदतुपिन्वतामिळाबृहस्पतिः
सामभिक्रकोऽअर्चतु । सुप्रकृतंजीवसेमन्मधीमहितहे ॥ ९ ॥ द्विस्पृशयज्ञमस्माकमश्विनाज्जीराध्वरंकृणुतंसन्नामिष्ट
हे । ग्राचीनरश्मिमाहुतघृतेनतहे ॥ उपह्वयेसुहवंमारुतंगणंपावकमण्वसख्यायशंभुवं । रायस्पोषसौश्रवसायधीम
नितसुनित्वंभिव्यंजीवपुत्राऽअनागसः । ब्रह्मद्विषोविष्वगेनोभरेततहे ॥ येस्थामनोर्यज्ञियास्तेशृणोतनयद्वौ
(१०।३।७) उपासानकेतिचतुर्दशर्वस्यसूक्तस्थानाकोलुशोविष्वेदेवाजगलंलेद्वेविष्टुभौ (भेदपक्षे—विष्वेदेवाः १३ सविता १ एवं १४) ।

देवाऽईमहेतद्देवातन । जैत्रं कुरु रयिमधुरीरयद्यशस्तुहे ० ॥ १० ॥ महद्दुयर्महतामार्घुणीमहेच्चोदेवानां वृहतामनवर्णा ।
 यथाचसुवीरजातं नशामहेतद्दे ० ॥ महोऽअग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनर्गा मित्रेवरुणोन्वस्तये । श्रेष्ठस्यामसवितुः सवीम
 नितहे ० ॥ येसवितुः सत्यसवस्य विश्वमित्रस्य व्रतेवरुणस्य देवाः । तेसो भग्वीरवहो मदमोदधतनद्रविणं चित्रमस्मे ॥
 सवित्तापश्चात्तात्सवितोत्तरात्तात्सवित्ताधरात्तात् । सवितानः सुवतुसवतात्तिसवितानो रासतां दीर्घमा
 युः ॥ ११ ॥ (१०।३।८) नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायुतदृतं सपर्यत । दुरेदशेदेवजाताय केतवेदिवरपुत्रा
 यसूर्ययशंसत ॥ सामांसल्योक्तिः परिपालु विश्वतोद्यावाचयव्रततनुन्नहनिच । विश्वमन्यन्निविद्यतेयदेजतिविश्वान्ना
 पो विश्वान्नोदेति सूर्यः ॥ नतेऽअदेवः प्रदिवो निवासतेयदेतशोभिः पतुरैरथर्यसि । प्राचीनमन्यदनुवर्तते रजऽउदन्येन
 ज्योतिपायासिसूर्य ॥ येन सूर्यज्योतिपावाधमेतमोजगच्च विश्वमुद्रियापि भानुना । तेनास्मद्विश्वमनिरामनाहुतिमपा
 मीवामर्षदुःष्वम्यसुव ॥ विश्वस्य हि मेरि तोरक्षसि व्रतमेहेळयद्वच्चरसि स्वधाऽअनु । यदुद्यत्वा सूर्योपव्रवा महेतं नो देवा
 ऽअनुमंसीरतकुर्वु ॥ तं नोद्यावापृथिवीतन्नऽआपइंद्रः शृण्वतुमरुतो हवंच । माशूनैधमसूर्यस्य संदृशि भद्रं जीवंतो
 जरुणामंशीमहि ॥ १२ ॥ विश्वान्नाहं त्वा सुमनसः सूचक्षसः प्रजावतोऽअनमीवाऽअनर्गसः । उद्यंतं त्वा मित्रमहोदिवे

(१०।३।८) नमो मित्रस्येति द्वादशार्चस्य सूक्तस्य सौर्गोभितपा सूर्यो जगतीत्यगमी त्रिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ८

॥ ५१ ॥

दि॒वे॒ज्यो॒ग्जी॒वाः प्र॒ति॒प॒श्ये॒मसूर्य॑ ॥ म॒हि॒ज्यो॒तिर्वि॒भ्रत॑त्वा॒वि॒क्षण॒भास्व॑तंच॒क्षुषे॒चक्षु॒षेम॑यः । अ॒रो॒ह॑त॒बृ॒ह॒तः पा॒ज॒स॒
स्पर्॑य॒व॒यं जी॒वाः प्र॒ति॒प॒श्ये॒मसूर्य॑ ॥ य॒स्य॒ते वि॒श्वाभु॒व॒ना॒नि के॒तुना॑ प्र॒चे॒र॒ते नि॒च॒वि॒श॒तेऽअ॒क्तुभिः॑ । अ॒ना॒गा॒स्त्वे॒न॒हरि॑के
श॒सूर्या॒हो॒हानो॑ व॒स्य॒सा॒व॒स्य॒सो॒दि॒हि ॥ श॒नो भ॒व॒च॒क्ष॒सां श॒नोऽअ॒ह्नां श॒मा॒नु॒नां श॒हि॒मां श॒घ॒णेन॑ । यथा॒श॒म॒ध्व॒न्छ॒म॒स॒हु
रो॒णे॒तत्सूर्य॑द्र॒वि॒णं धे॒हि चि॒त्रं+ ॥ अ॒स्माक॑दे॒वाऽउ॒भया॑य॒ज॒न्म॒ने॒श॒र्म॒य॒च्छ॒त॒द्वि॒पदे॑ च॒तु॒ष्ट॒पदे॑ । अ॒द॒त्पि॒व॒द॒र्ज॒य॒मान॒मा॒शि
त॒स्मि॒न्त॒दे॒नो॒व॒स॒वो॒नि॒धे॒त॒न ॥ यद्दो॑दे॒वाश्च॒क्षु॒म॒जि॒ह्वा॒ग॒रु॒म॒न॒सो॒वा॒प्र॒यु॒ती॒दे॒व॒हे॒ळ॒नं । अ॒रो॒वा॒यो नो॑ऽअ॒भि॒दु॒च्छ॒ना॒य॒ते
य॒त्र गो॑पा॒ता धृ॒षि॒ते॒षु॒ला॒दिषु॑ वि॒ष्व॒क्प॒त॑ति॒दि॒द्य॒वो॒न॒पा॒ह्ये ॥ स॒नः क्ष॒म॑त॒स॒द॒ने॒व्यू॒र्ण॒हि॒गोऽअ॒र्ण॑सं॒र॒यि॒मि॒द्र॒श्र॒वा॒य्वं । स्या
म॒ते॒ज॒य॒तः श॒क्र॒मे॒दि॒नो॒य॒था॒वि॒य॒म॒इ॒म॒सि॒त॒द्व॒सो॒कृ॒धि ॥ यो॒नो॒दा॒स॒आ॒र्यो॒वा॒पु॒रु॒ता॒दे॒व॒इ॒द्र॒य॒धे॒चि॒के॒त॒ति । अ॒स्मा
भि॒ष्टे॒सु॒ष॒हाः सं॒तु॒श॒त्र॒व॒स्व॒या॒वि॒य॒ता॒न्व॒न॒य॒म॒सं॒ग॒मे+ ॥ यो॒द॒भ्रे॒भि॒ह॒व्यो॒यश्च॒भूरि॑भ्यो॑ऽअ॒भी॒कै॒व॒रि॒वो॒वि॒श्र॒पा॒ह्ये । तं
वि॒खा॒दे॒स॒स्त्रि॒म॒द्य॒श्रु॒तं न॑र॒म॒र्वा॒चि॒मि॒द्र॒म॒व॒से॒क॒रा॒म॒हे ॥ स्व॒वृ॒जं॒हि॒त्वा॒म॒ह॒मि॒द्र॒श्र॒वा॒ना॒नु॒दं॒वृ॒ष॒भ॒र॒भ्र॒चो॒द॒नं । प्र॒मु॒च॒स्व
(१०।३।९) अ॒स्मि॒न्न॒इ॒ति॒प॒च॑र्च॒स्य॒सू॒क्त॒स्य॒सु॒ष्क॒वा॒नि॒द्र॒द्रो॒ज॒ग॒ती ।

मंडलं १०

अनु. ३

॥ ५१ ॥

परिकुत्सादिहागहि किमत्वावांन्मृक्योर्वद्धासते ॥ १४ ॥ (१०।३।१०) योवांपरिज्मासवृदंश्विनारथोदोपा
 मपासोहव्योह विष्मता । शश्वत्तमासस्तुवामिदं वयं पितुर्ननामसुहवंहवामहे ॥ चोदयतंसनृताः पित्वतंधियडत्पुरै
 धीरीरयतंतदुश्मसि । यशसभागंकृणुतनोऽअश्विनासोमंनचारुमघवत्सुनररुतं ॥ अमाजुरैश्चिद्वथोयवभगोनाशो
 श्चिदवितारपमस्यचित् । अंधस्यचिन्नासत्याकृशस्यचिद्ववामिदंहुभिपजारुतस्यचित् ॥ यवंच्यवानंसनयंयथारथं
 पुनर्युवानंचरथायतक्षथुः । निष्टौग्र्यमूहथुरद्व्यस्परिविश्वेत्तावांसवनेपुप्रवाच्या ॥ पुराणावाधीर्याइं प्रत्रवाजनेथौहा
 सथुर्भिपजामयोभुवा । तावानुनव्यावसेकरामहेयंनसत्याश्रदुरिथयादधत् ॥ १५ ॥ इयंवांमहे शृणुतंमैऽअश्वि
 नापत्रायैवपितरामह्यंशिक्षतं । अनोपिरजाऽअसजात्यामतिः पुरातस्याऽअभिज्ञेस्तेरवस्पृतं ॥ यवंरथेनविमदायंशु
 ध्युवन्मूहथुः पुरुमित्रस्ययोपणां । यवंहवंवधिमत्याऽअगच्छतंयवंसुपुतिचक्रथुः पुरंधये ॥ यवंविप्रस्यजरासुपेयुपः पु
 नः कलेरंकृणुतंयुवद्वयः । यवंवंदनमृश्यादादुद्रूपथुयंवसद्योविशपलामेतवेकथः ॥ यवंहरेभृपणागुहाहितमुदैरयतंम
 मवांसमश्विना । यवमवीसमततमत्रयुऽओमन्वंतंचक्रथुः सप्तवध्रये ॥ यवंश्वेतंपेदेवैश्विनाश्वंनवभिर्वाजैर्नवतीच
 व्राजिनै । चकृत्यददथुद्राव्यत्सखंभंगननृभ्योहव्यमयोभुवं ॥ १६ ॥ नतराजानावदितेकुतश्चननांहोऽअश्रोति

(१०।३।१०) योवामितिचतुर्दशचस्यसुक्तस्यकाक्षीवतीघोपाश्विनौजगत्याविष्टपू ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ८

॥ ५२ ॥

दुरितं किं भयं । यमं भिना सुहवारुद्रवर्तनीपुरोरथं कृणुथः पत्न्या सह ॥ आतेन यातं मनसो जवीयसारथं यवामभवंश्च
कुरं भिना । यस्य योगे दुहिता जायते दिवऽउभेऽअहनी सुदिने विवस्वतः ॥ तावर्तियं तं जयुषा विपर्वतमपि न्वतशयवे
धेनुमं भिना । वृकस्य चिद्वर्तिकां मंतरास्याद्युवंशचीभिर्प्रसिताममुंचतं ॥ एतं वांस्तोममं भिना वकमातक्षामभृगवो न
रथं । न्यमृक्षामयोर्षणानमर्थे नित्यं न सुनुत न यदधानाः ॥ १७ ॥ (१०।३।११) रथं यातुं कुहको हंवा नराप्रतिद्युमंतं
सुवितायं भूषति । प्रातर्यावाणं विभ्वं विशे विशे वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धियाशमि ॥ कुहस्विहोपाकुहवस्तोरं भिना कुहाभि
पित्वं कर्तुः कुहोपतुः । कोवांशयुत्रा विधेव देव रंमर्थं नयोषा कृणुते सुधस्यऽआ- ॥ प्रातर्जे रथे जरणे वृकापयावस्तोर्व
स्तोर्वहोत्रा मृतुथा जुहते नरेपंजनाय वहथः शुभस्पती ॥ युवांमगेव वारणा मृगण्यवोदोषा
वस्तोर्वविषा निह्वयामहे । कस्य ध्वस्त्रा भवथः कस्य वानरा राजपुत्रे वसवना वगच्छथः ॥ युवांमगेव वारणा मृगण्यवोदोषा
दुहितापच्छेवां नरा । भूतं मेऽअहंऽउत्तं भूतं मृकवे भवते रथिने शकुमवते ॥ १८ ॥ युवंकवीष्टः पर्यं भिना रथं विशोन
कुत्सो जरितुर्न शायथः । युवोर्हमक्षा पर्यं भिना मध्वासाभरत निष्कृतं न योषणा ॥ युवंहं भृजुं युवमं भिना वशं युवंशं
रमशानामुपरथुः । युवोररावापरि सख्यमासेतु वोरहमवसासु ममाचके ॥ युवंहं कृशयुवमं भिना शयुं युवंधितं विध
(१०।३।११) रथं यातमिति चतुर्दशर्वस्य मृकस्य काक्षीवती घोषा धिनौ जगती ।

मंडलं १०

अनु. ३

॥ ५२ ॥

वांमुरुण्यथः । युवंसनिभ्यःस्तनयन्तमभ्विनापत्रजमूर्णुथःसुहास्यं ॥ जनिष्टयोपापतयत्कनीनकोविचारुहन्वीरुधोदं
 सनाऽअनु । आस्मैरीयतेनिवनेवसिंधवोस्माऽअह्नेभवतितत्पतित्वनं ॥ जीवरुदंतिविमयंतेऽअध्वरेदीर्घाभनप्रास
 तिंदीधियुनरः । वामंपितृभ्योयऽइदंसेमेरिरेमयःपतिभ्योजनयःपरिज्वले ॥ १९ ॥ नतस्यविद्वतदुपुप्रवौचतयुवाह
 यद्युवत्याःक्षेतियोनिषु । प्रियोस्त्रियस्यवृषभस्यरेतिनोर्गृहमेमाभ्विनातदुर्मसि ॥ आवांमगन्तुमतिर्वाजिनीवसन्य
 भ्विनाहत्सुकामाऽअयंसत । अभूतंगोपामिथुनाशुभस्यतीप्रियाऽअर्थगोदुर्थाऽअशीमहि ॥ तामंदसानामनुपोदुरो
 णऽआधत्तंरयंसहवीरंवचस्यवे । कृतंतीर्थसुप्रपाणंशुभस्यतीस्थाणुपथेष्टामपदुर्मतिहंतं ॥ कस्विदृद्यकतमास्वभ्विना
 विक्षुद्रन्नामादयेतेशुभस्यती । कऽइनिर्घेमेकतमस्यजगमत्विप्रस्यवायजमानस्यवागंहं ॥ २० ॥ (१०।३।१२)
 समानमत्यपुरुहृतमुक्थ्यैरुथैत्रिचक्रंसर्वनागनिगमतं । परिजमानंविदुर्ध्यसुवृत्तिर्भवेयंन्युष्टाऽउपसौहवामहे ॥ प्रा
 तर्जुनासत्याधितिष्ठथःप्रातर्थावाणंमधुवाहंनरथं । विशोयेनगच्छथोयज्वरीनिराकीरेश्चिद्यज्ञंहोतमंतमभ्विना ॥ अ
 ध्वर्जुवामधुपाणिंसुहस्यमग्निर्धवाधृतदक्षंदर्मनसं । विप्रस्यवायत्सर्वनानिगच्छथोतऽआयातंमधुपेयमभ्विना ॥ २१ ॥
 (१०।३।१३) अस्तेवसुप्रतंरलायमस्यन्धूपन्निवप्रभरास्तोममस्मै । वाचाविप्रास्तरतवाचमर्योनिरामयजरितःसोम
 (१०।३।१२) समानमितितृचस्यसूक्तस्यधौपेयःसुहस्त्योश्विनौजगती । (१०।३।१३) अस्तेवेकादशर्चस्यसूक्तस्यगिरसःकृष्णइंद्रक्षिप्रु ।

ऽइंद्रं ॥ दोहेनगामुपशिक्षासखायं प्रवोधयजरितजरीमिंद्रं । कोशं न पर्णवसुना न्यष्टमाच्यावयमघदेयो यशूरं ॥ किं
 मंगत्वा मघवन्भोजमाहुः शिशिहिमां शिशयं त्वाश्रणोमि । अमस्वती मम धीरस्तु शक्रवसुविदुं भगमिंद्राभरानः ॥ त्वां ज
 योऽअस्मै तीव्रान्तसोमोऽआसनोति प्रयस्वान् । तस्मै शत्रून्स्तु कान्प्रातरहो निस्वष्ट्रा न्यवतिहंति वृत्रं ॥ धनं न स्पंदं बहुलं
 न्वयं दधिमांशं मिद्रेयः शिश्रायं मघवाकामं मुस्मे । आराक्षित्सन्भयतामस्य शत्रुन्यस्मै द्युभ्राज न्या नमंतां ॥ आराच्छ
 त्रमर्पवाधस्वदूरमुग्रोयः शंभुः पुरुहूतेन । अस्मे धेहि यवमद्रोमं दिद्रकृधी धियं जरित्रे वार्जखां ॥ प्रयमं तर्षुषसवासोऽ
 अमन्तीत्राः सोमावहुलान्तासं ऽइंद्रं । नाहं दामानं मघवानिथं सन्निसुन्येव हतिभूरिवामं ॥ उत्तप्रहामतिदीव्याजया
 तिक्कृतं च्छुभी विचिनोत्तिकां । यो देवकामो न धनारुणद्विसमिं तं रायासृजतिस्वधावान् ॥ गोभिष्टरे मारुतिदुरेवाय
 वेन शुभं पुरुहूतविश्वीं । वयं राजभिः प्रथमाधनान्यस्माकेन वृजेन नाजयेम ॥ बृहस्पतिर्नः परंपातुपश्चादुतोत्तरस्मादध
 रादद्यायोः । इंद्रं पुरस्तादुत मध्यतो नः सखासखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ २३ ॥ (१०।४।१) अच्छामं ऽइंद्रं मतयः स्व
 विदः सत्रीचीर्विश्वाऽउशतीरनूपत । परिष्वजं ते जनयो यथापतिमर्त्यं न शंभुं मघवानमतये ॥ नघात्वद्रिगपवेति मेमन
 चतुर्थेनुवाकेष्टादशसूक्तानि । (१०।४।१) अच्छामइत्येकादशसूक्तस्यांगिरसः कृष्णइंद्रो जगत्येवेद्विप्रभौ ।

स्वेऽइत्कामं पुरुहूतशिश्रय । राजैवदस्मानिपदोर्ध्वहिंज्यस्मिन्सुसोमैवपानमस्तुते ॥
 विष्वदिन्द्रोऽअर्मतेरुतक्षधःस ॥ वयोनवृक्षं पलाशमासद् ॥
 इन्द्रायोमघवावस्वऽईशते । तस्येदिमेव्रणेसस्रिधोवयोवर्धतिवृषभस्यशुग्मिर्णः ॥
 इन्द्रो नवृक्षं विचिनोतिदेव ॥ कृतं नवृक्षं विचिनोतिदेव ॥
 न्तोमोसऽइंद्रंमंदिनश्चमपदः । प्रैयामनीकंशवसादर्वेद्युतद्विदत्स्वभ्रमनवेज्योतिरार्ध ॥
 २४ ॥ विश्वं विशं मघवापय ॥
 न्तोमोसऽइंद्रंमंदिनश्चमपदः । नतत्तेऽअन्योऽअनुवीथिशक्रपुंराणोमघवन्नोतनूतनः ॥ आपो नसिंधुम
 नेसवर्गयन्मघवासूर्यजयत् । यस्याहंशक्रः सवनेपुण्यतिसतीत्रैः सोमैः सहतेपृतन्यतः ॥ वृषानक्रु
 शायतजनांनोर्धेनाऽअवचाकशदृषा । वर्धतिविग्रामहोऽअस्यसादनेयवंनवृष्टिर्दिव्येनदारुना ॥ उज्जा
 भियत्समक्षरन्तोमोसऽइंद्रं कुल्याऽइवहृदं । वर्धतिविग्रामहोऽअस्यसादनेयवंनवृष्टिर्दिव्येनदारुना ॥ उज्जा
 ह्रः पतयद्रजः स्वायोऽअयर्पलीरकृणोदिमाऽअपः । ससुन्वतेमघवाजीरदानोवेर्धिविद्वज्योतिर्मनवेहविष्मते ॥
 यतांपरशुज्योतिपासहभयाऽकृतस्यसुदुघापुराणवत् । विरोचतामरुपोभानुनाशुचिः स्वर्णशुक्रंशुचीतसत्पतिः ॥
 गोभिष्टराममतिदुरेवायवैनुधुधंपुरुहूतविन्धवा । वयंराजभिः प्रथमाधनान्यस्माकैनवृजनैनाजयेम ॥ बृहस्पतिर्नः प्र
 रिंपातुपुश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः । इंद्रः पुरस्तादुतमध्यतो नः सखासखिभ्योवरिवः कृणोतु ॥ २५ ॥ (१०।४।२)
 आयात्विन्द्रः स्वर्पतिर्मदाययोधर्मेणानुजानस्तुर्विष्मान् । प्रत्यक्षाणोऽअतिविन्धासहोस्वपाणेनमहतावृण्येन ॥

(१०।४।२) आयात्विन्द्रोऽअतिविन्धासहोस्वपाणेनमहतावृण्येन ।
 आयात्विन्द्रः स्वर्पतिर्मदाययोधर्मेणानुजानस्तुर्विष्मान् ।

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ८

॥ ५४ ॥

सुषामारथःसयमाहरीतेमिम्यक्षवज्रोनुपतेगभस्तौ । शीर्भराजन्सुपथार्थाह्यवाङ्मतेपुषोवृण्वानि ॥ एन्द्र
वाहोनुपतिवज्रबाहुमयमत्रासस्तविषासंएनं । प्रत्वक्षसंवृषभंसत्यथुष्ममेमस्मन्नासधमादोवहंतु ॥ एवापातद्रो
णसाचसचेतसमर्जःस्कभंघरुणऽआवृपायसे । ओजःकृष्वसर्गभायुत्वेऽअप्यसोयथकेनिपानामिनोबुधे- ॥ गम्
अस्मेवसुन्याहिशंसिपस्वाशिपुंभरमायाहिसोमिनः । नयेशेकुर्वन्निपानावमारुहमीमेवतेन्यविशंतके
॥ २६ ॥ पृथक्मार्यन्प्रथमादेवहृतयोऽकृण्वतश्रवस्यानिदुष्टरा । इत्यायेप्रागुपरं संतिदावनेपूरुणियत्रवयुनानिभोजना ॥
पयः ॥ एवैवापागपरंसतुदुव्योश्वायेपादुयुजंऽआयुयुजे । समीचीनेधिपणेविष्कभायतिवृष्णःप्रीत्वामदंऽउ
गिरांऽरज्राजमानोऽअधारयुद्ध्योःऋदं दुर्तरिक्षाणिकोपयत् । असिन्तुतेसवनेऽअस्त्वोक्वसुतऽइष्टौ
कथानिशंसति ॥ इमंविभमिसुकृतंतेऽअंकुशेनारुजासिमघवच्छफारुजः । व्यंरार्जभिःप्रथमाधनान्यस्माकेनवृजनेनाजये
म ॥ बृहस्पतिर्नःपरिपातुपश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः । इन्द्रःपुरस्तादुतमध्यतो नःसखासखिभ्योवर्षिःकृणो
उ ॥ २७ ॥ (१०।४।३) दिवस्परिप्रथमंर्जनेऽअग्निरस्माद्वितीयंपरिजातवैदाः ॥ तृतीयमनुमणाऽअर्जस्रमिधान
(१०।४।३) दिवस्परीतिद्वाद्गर्चस्यसूक्तस्यभालद्वनोवत्सप्रिरग्निस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ४

॥ ५४ ॥

एतंजरतेस्वाधीः+ ॥ विद्मतेऽअग्नेधामिन्द्रायणि विद्मतेधामिन्द्रायणि विद्मतेधामिन्द्रायणि विद्मतेधामिन्द्रायणि । विद्मतेनामपरमंगुहायद्विद्मते
 संप्रतऽअहो गंधं ॥ समद्रत्वानमणाऽअस्वर्गतुर्न चक्षाऽईधेदिवोऽअन्नऽऊर्ध्वं । तृतीयैत्यारजसितस्थिवांसमपामु
 त्संयतेऽअहो गंधं ॥ अक्रंददग्निःस्तनयन्निवद्योऽक्षामोरारिहृदीरुधःसमंजन् । सद्योज्ञानोविहोमिद्धोऽअख्यदा
 पस्थेमहिषाऽअवर्धन् ॥ श्रीणामुद्गरोधरुणोरथीणांमनीषाणांप्रापणःसोमगोपाः । वसुःसुनुःसहसोऽअप्सुराजा
 रोदसीभानुनाभालुतः+ ॥ विश्वस्यकेतुर्भुवनस्यगर्भऽआरोदसीऽअपृणाज्जायमानः । वीळुं चिदद्रिमभिनत्परा
 विमाल्यग्रंऽउपसांमिधानः+ ॥ विश्वस्यकेतुर्भुवनस्यगर्भऽआरोदसीऽअपृणाज्जायमानः । वीळुं चिदद्रिमभिनत्परा
 यन्जनायदग्निमयंजंतुपंच ॥ २८ ॥ उशिक्पावकोऽअरतिःसुमेधामतैर्ब्वग्निरभृतोनिर्धायि । इयंतिधूममरुपंभरिश्च
 दुच्छ्रेणैर्धामिनक्षन् ॥ इशानोरुक्मऽउर्वियाव्यद्यौर्धुर्मपमायुःश्रियेरुचानः । अग्निरभृतोऽअभवद्वयोभि
 र्धदनुधाजेनयत्सुरेताः ॥ यस्तैऽअद्यकृणवर्द्धशोचैपुपदैवघतवतमग्ने । प्रतनयप्रतुर्वस्योऽअच्छाभिसुमन्देवभक्त्य
 विष्ट ॥ आतंभजसौश्रवसेष्वग्नऽउक्थऽआभजशस्यमाने । प्रियःसूर्यप्रियोऽअग्नाभवात्युजातेर्नभिनद्रुजानि
 त्वैः ॥ त्वामभ्येजमानाऽअनद्यन्विश्ववासुदधिरेवार्याणि । त्वयासहद्रधिणमिच्छमानाव्रजंगोमंतमशिजोविवव्रुः ॥
 अस्ताव्यग्निर्नरासुरेवोवैश्वानरऽऋषिभिःसोमगोपाः । अद्वेद्यावापृथिवीर्दुमेदेवाधत्तरयिमस्मेसुवीरं ॥ २९ ॥
 ॥ इतिसप्तमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

ऋक्सं.

अ. ७ अ. ८

॥ ५५ ॥

पदपंचाशाध्यायेवर्गाः २९ सूक्तानि १३ ऋचः १४४ ॥ त्यागः ॥ विश्वेभ्योदेवेभ्य. इंद्राये. २ कुरुश्रवणाये. २ उपमश्रवस. ४
अक्षेभ्य. अक्षकितवाये. ५ अक्षेभ्य. अक्षकितवाये. २ अक्षेभ्य. कृष्याइ. अक्षकितवाये. विश्वेभ्योदेवेभ्य. २८
[मे. प. विश्वेभ्योदे. ३ उषसेभ्य. २ विश्वेभ्योदेवेभ्य. २२ सवित्र. १] सूर्याये. १२ इंद्राये. ५ अधिभ्यामि. ३१ इंद्राये. ३३ अग्नये. १२
॥ इतिसप्तमेष्टमः ॥

॥ इतिसप्तमाष्टकःसमाप्तः ॥



मंडलं १०

अनु. ४

॥ ५५ ॥

॥ इतिससमाष्टकः समाप्तः ॥

॥ अथाष्टमाष्टकप्रारंभः ॥

६० प्रहोतादशजगृभ्माष्टौसप्तगुर्वकुठमिंद्रुष्टावचिंकुठानामासुरींद्रतुल्यपुत्रमिच्छंतीमहत्तपस्तेपतस्याःस्वयमे
 वेंद्रःपुत्रोज्ञेसप्तगुस्तुतिसंहृष्टात्मानमुत्तरैस्त्रिभिस्तुष्टावाहंभुवमेकादशांल्योत्रिष्टुभौसप्तमीचाहंदामंत्यो
 पाद्येचत्रिष्टुभौप्रवोमहेसप्तद्विजगत्याद्यंतकेतेभिसारिण्यौवपट्कारेणवृक्केषुभ्रातृषुसौचीकोशिरपःप्रविश्यंदे
 वैःसमवददुत्तरैस्त्रिभिर्महत्तन्नवान्नयुजोभिवाक्यंविश्वइत्युत्तरंचपट्कमयुजोदेवानांयमैच्छामेत्युत्तरंचैकादश
 कंतदद्येतितुहृचोभेस्तनुमाद्याजगत्योष्टमीवर्जैतांसुपट्बृहदुक्थोवामदेव्योवाद्दुरेष्टाविदंतेसप्तवैश्वदेवंतुचतु
 श्याद्यास्तिस्त्रोजगत्यःपराणिचतुवारिसूक्तान्युक्ताऋषयैद्वैपदेत्वत्रिमंडलैथहैक्ष्वाकोराजासमातिर्गोपायनान्वं
 ध्वादीन्पुरोहितांसत्यक्त्यान्यौमायाविनौश्रेष्ठतमौमत्वापुरोदधेतमितरेऋद्धाअभिचेरुथतौमायाविनौसुवंधोः
 प्राणानाचिक्षिपतुरथास्यभ्रातरस्त्रयौमाप्रगामेतिपट्कंगायत्रंस्वस्त्यनंजस्वायत्तइतिद्वादशचर्मामानुष्टुभंमनआ
 वर्तनंजेषुःप्रतारीतिदशर्चेचतस्रोर्निकृत्यपनोदार्थेषुश्चतुर्थ्यांसोमंचास्तुवंन्मृत्योरपगमायोत्तराभ्यांदेवीमसु
 नीतिसप्तम्यांलिंगोक्तेवर्ताःशिष्टाभिःपङ्क्तिमहापङ्क्तिपङ्क्त्युत्तराभिर्द्यावापृथिव्यौसमिद्रेतींद्रचार्यर्चेनानभि
 तिद्वादशचर्चाआनुष्टुभंचतसृभिरसमातिमस्तुवंनंचम्यद्रपथ्यागस्त्यस्वसामातैपाराजानमस्तौत्पराभिःसुवं

धोर्जीवमाह्वयत्समंत्ययालब्धसंज्ञमस्पृशन्पंचाद्यागायत्र्योष्टम्याद्येपङ्क्तौ इदमित्याससाधिकानाभानेदिष्टोमा
 नवोवैश्वदेवंतत् ॥ १ ॥
 ॥ हरिःओम् ॥ (१०।४।४) प्रहोताजातोमहाश्रभोविन्नपद्वासीददुपामुपस्थे ॥
 निविधतेतनूपाः+ ॥ इमंविधतोऽअपांसधस्थेपशुननष्टपदैरनुग्मन् । दधियोधायिसेतेवयांसियंतावसू ॥
 विदन् ॥ इमंत्रितोभूयैविददिच्छन्वैभूवसोमधन्यइयायाः । सशेवृधोजातऽआहृम्येषुनाभिर्युवाभवतिरोचनस्य ॥
 मंद्रहोतारमशिनोमौभिः प्रांचयुज्ञंनेतारमध्वराणां । विशामकृण्वन्नरतिपावकंहव्यवाहृदधतोमानुषेषु ॥
 तंमहांविपोधांमराऽअमूरपरांदुर्माणं । नयंतोगर्भवनांधियैधृहिरेइमश्रूनावीणंघर्नच ॥ प्रभूर्जयं
 यन्परिवीतोयोनौसीदंतः । अतःसंगृभ्याविशांदमूनाविधर्मणायैत्रैरीयतेनन्+ ॥ अस्याजरांसोदुमामरित्राऽअर्च
 ङ्कमासोऽअग्नयःपावकाः । श्वितीचयःश्वात्रासोभुरण्यवोवर्णदोवायवोनसोमाः ॥ प्रजिह्वयोभरतेवेपोऽअग्निःप्रव
 युर्नानिचेतसापृथिव्याः । तमायवःशुचयंतपावकमंद्रहोतारंदधिरयेजिष्ठं ॥ द्यावायमग्निंधृथिवीजनिष्टामापस्त्वष्ट्रा
 भृगवोयंसहोभिः । ईळन्यंप्रथमंमातरिश्वादेवास्ततक्षुर्मनवेयजन्नं ॥ यंत्वादेवादधिरैहव्यवाहृपुरुस्पृहोमानुषासोय
 (१०।४।४) प्रहोतेतिदशर्चस्यसूक्तस्यभालंदनोवत्सप्रिरभिबिष्टुप् ।

जत्र । स्यात्सन्नोस्तुवतेवयौधाःप्रदेवयन्यशसःसंहिपर्वीः ॥ २ ॥ (१०।४।५) जगन्मातेदक्षिणमिन्द्रहस्तवस्य
 वीवसुपतेवसूनां । विद्वाहित्यागोपतिंशरुगोनमस्मभ्यंचित्रंरूपंरयिदाः ॥ स्वायुधस्ववसंसुनीयंचतुःसमुद्रंधरुणं
 रयीणां । चकृत्यंशंस्यभूरिवारमस्मभ्यं ॥ सुब्रह्माणंदेववंतंवहंतमरुंभीरंपृथुदुश्मिद्र । श्रुतऽकृपिमग्रमभिमाति
 पाहमस्मभ्यं ॥ सनद्धांजंविप्रवीरंतरुंधनस्पतेशशुवांससदक्ष । दस्युहनेपृभिर्दमिद्रसत्यमस्मभ्यं ॥ अश्वोवंतर
 धिनंवीरवंतंसहृस्त्रिणंशतितनंवाजमिद्र । भद्रत्रांतंविप्रवीरंस्वर्षामस्मभ्यं ॥ ३ ॥ प्रसप्तगुप्ततर्धीतिसुमेधांबृहस्पतिंम
 तिरच्छाजिगति । यऽआगिरसोनमसोपसद्योस्मभ्यं ॥ वनीवानोममदूतासइंद्रस्तोमाश्चरतिसुमतीरियानाः ।
 हृदिस्पृशोमनसावच्यमानाऽअस्मभ्यं ॥ यत्वायामिदृच्छितन्नइंद्रवहंतक्षयमसंजनानां । अभितह्यावापृथिधी
 गुणीतामस्मभ्यं ॥ ४ ॥ (१०।४।६) अहंमुंववसुनःपर्व्यस्पतिरंहंनानिसंजयामिश्रतः । मांहंतेपितरंनजं
 तवोहंदाशुपेविभजाभिभोजनं ॥ अहमिंद्रोरोधोवक्षोऽअथर्वणस्त्रितायगाऽअजनयमहुरधि । अहंदस्युभ्यःपरिन्मण
 मादेगोत्राशिक्षन्दधीचेमातरिध्वने ॥ मद्यत्वाष्टावज्रमतक्षदायसमर्थिदेवासौवृजत्रपिकुलुं । ममानीकंसूर्येस्येवदुष्टरं
 जगतीसप्तमीदशन्येकादश्यस्त्रिष्टुभः ।

(१०।४।५) जगन्मेष्टाष्टसूक्तसप्तगुर्वंकुठइंद्रबिष्टुप् । (१०।४।६) अहमुत्रमित्येकादशचंसूक्तस्यैकुकुठइंद्रोवैकुकुठइंद्रो

रुक्मं.

अ. ८ अ. १

॥ ३ ॥

मामार्थेति कुतः न कर्त्तव्यं च ॥ अहमेतंगव्ययमर्थपशुपुंरीषिणं सार्थकेनाहिरण्ययं । पुरुषसहस्रानि शिशामि दाशुषेयन्मा
सोमांसऽलुक्थिनोऽअमं विदुः ॥ अहमिद्वोनपराजिग्यऽइच्छन् नमत्यवेव तस्येकदा च न । सोममिन्मासु चन्तोया च ताव
सुनमेपूरवः सख्योरिपाथन ॥ ५ ॥ अहमेतान्छाश्वसतो द्वादश्वयवज्रयुधे कृण्वत । आह्वयमानोऽअवहन्मना हनं ह
हमहेवृत्रहत्येऽअशुश्रवि ॥ अहंगुण्योऽअतिथिग्वमिष्कुरुमिपं न वृत्ररुरं विधुधारयं । खलेन पर्षान्यातिहन्मिभूरि किं
नं शंस्यमुक्थ्यं करं ॥ प्रमेनमीसाप्यऽइपेभजेभुद्रवामेपेसख्याकृणुत द्विता । दिद्युयदस्य समिथेषु मंहयमादिदे
वहृलेवृद्धोऽअंतः ॥ आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां नमिनामिधाम । सतिग्मशृंगवृषभं युयुत्सन्दुहस्तस्यौ
स्वतुमपाहं ॥ ६ ॥ (१०।४।७) अहं दग्गुणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनं । अहं भुव्युशवसेततक्षुरपराजितम
नः साक्षिविथस्मिन्भरे ॥ मांधारिं दुर्नाम देवतां दिवश्चग्मश्चापां च जंतवः । अहं हरीवृषणां विवतारुधूऽअहं वज्रं शवसेध
षवादेदे ॥ अहमर्त्तकवयेशिभ्यं हथैरुहं कुत्समावमाभिरूतिभिः । अहं शुष्णस्य अर्थितावर्धयं न योरुरऽआर्युनामुद
(१०।४।७) अहं दामिलेकादशर्चस्य सूक्तस्यैकुंठं द्रौकुंठद्राजती द्वितीयात्ये त्रिष्टुभौ ।

मंडलं-१०

अनु-४

॥ ३ ॥

[illegible]

के॒ते॒वा॒जा॒या॒स॒या॒या॒हा॒न्व॒क॒उ॒न॒ । के॒ते॒वा॒जा॒या॒स॒या॒या॒हा॒न्व॒क॒उ॒न॒ ।

(218108)

ऋक्सं.

अ ८ अ. १

॥ ४ ॥

पुसर्वनेषुयज्ञियः । सुवोर्नैश्चौलोविश्वस्मिन्भरज्येष्ठश्चमंत्रौविश्वचर्षणे ॥ अवानुकंज्यायान्यज्ञवनसोमर्हीतऽओमा
त्रांशुष्टयोविदुः । असोनुकमजरोवर्धाश्चविश्वेदेतासर्वनातूतुमाकृषे ॥ एताविश्वसर्वनातूतुमाकृषेस्वयंसूनोसहसोया
निदधिषे । वरायतेपात्रं धर्मेतनायज्ञोमंत्रोब्रह्मोद्यंतवचः ॥ येतेविप्रब्रह्मकृतः सुतेसचावसूनांचवसुनश्चद्रावने ।
प्रतेसुन्नस्यमनसापथाभुवन्मदेसुतस्यसोम्यस्यांधसः ॥ ९ ॥ (१०।४।९) महत्तदुल्वंस्थविरंतदासीधेनाविष्टितः प्र
विवेशिथापः । विश्वाऽअपश्यद्बहुधातेऽअग्नेजातवेदस्तन्वोदेवऽएकः ॥ कोमाददर्शकतमः सदेवोयोमेतन्वोवहधाप
र्धपश्यत् । काहमित्रावरुणाक्षियत्यग्नेर्विश्वाः समिधोदेवयानीः ॥ ऐच्छामत्वाबहुधाजातवेदः प्रविष्टमग्नेऽअस्त्रोष
धीषु । तंत्वायमोऽअचिकेच्चित्रभानोदशांतरुष्यादतिरोचमानं ॥ होत्रादहंवरुणविभ्यदायज्ञेदेवमायुनजन्नदेवाः ।
तस्यमेतन्वोबहुधानिर्विष्टाऽएतमर्थनचिकेताहमग्निः ॥ एहिमनुदेवयुर्गृहकमोरंक्रत्यातमसिष्यन्ते । सगान्पथः
कुणुहिदेवयानान्वहहव्यानि सुमनस्यमानः ॥ १० ॥ अग्नेःपूर्वेभ्रातरोऽअर्थमेतंरथीवाध्वानमन्वावरीडुः । तस्मा
सुमनस्यमानोभागंदेवेभ्योहविषःसुजात ॥ प्रयाजान्मेऽअनुयाजांश्चकेवलानूर्जस्वंतंहविषोदत्तभागं । अर्थावहासि
(१०।४।९) महत्तदिति नवर्चस्यसूक्तस्य द्वितीयादियुष्टासौचीकोमिच्छपिः अयुजादेवाः ऋषयः युजादेवादेवताः अयुजामग्निर्देवता त्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ४

॥ ४ ॥

पंचौषधीनामुन्नेश्चद्विर्धमायुरस्तुदेवाः ॥ तवप्रयाजाऽअनुयाजाश्चकेवलुऽऊर्जस्वतोहविपःसंतुभागाः । तवाम्रेयज्ञोऽ
 यमस्तुसर्वस्तुभ्यनमंतां प्रदिशश्चतस्रः ॥ ११ ॥ (१०।४।१०) विश्वेदेवाःशास्त्रनमायथेहहोतावृतोमनवैयन्निप
 च । प्रमेव्रतभागधेयंयथावोयेनपथाहव्यमावोवहन्ति ॥ अंहंहेतान्यसीदंयजीयान्विश्वेदेवामरुतोमाजुनंति । अहं
 रहरश्विनाश्वयंवांब्रह्मासमिद्भवतिसाहुतिर्वा ॥ अयंयोहोताकिरुसयमस्यकमप्यह्वेतसमंजंतिदेवाः । अहरहर्जाय
 तेमासिमास्यथादेवादधिरेहव्यवाह ॥ मांदेवादधिरेहव्यवाहमपंभुक्तंवहुष्टुच्छाचरंतं । अग्निर्विद्वान्यज्ञंनःकल्पया
 त्तिपंचयामंत्रिवृतंसघतंतु ॥ आवोयक्ष्यमृतत्वंसुवीर्यथावोदेवावरिवःकराणि । आवाहोर्वज्रमिंद्रस्यधेयामथेमवि
 श्वाःपृतनाजयाति ॥ त्रीणिशुतानीसहस्राण्यग्निं त्रिंशच्चदेवानवचासपर्यन । औक्षन्धतैरस्तृणन्वहिरैस्साऽआदिद्धो
 तौरन्यसादयंत ॥ १२ ॥ (१०।४।११) यमैच्छाममनसासोऽयमागोद्यज्ञस्यविद्वान्परपश्चिक्त्वान् । सनोयक्षदेव
 तातायजीयाग्निहिपत्सुदंतरःपूर्वोऽअस्मत् ॥ अराधिहोतानिपदायजीयानभिप्रयांसिसुधितानिहिर्यत् । यजामह्य
 त्रियान्हंतदेवोऽईळामहाऽईळ्योऽआज्येन ॥ साध्वीमर्कदुर्वीतिनोऽअद्ययज्ञस्यजिह्वामविदामगुह्या । सऽआयुरागा
 त्रियान्हंतदेवोऽईळामहाऽईळ्योऽआज्येन ॥ (१०।४।११) यमैच्छामेसेकादशर्वस्यसूक्तस्यदेवाक्रपयः

चतुर्थीपंचम्योःसौचीकोमिक्तंपिःअग्निदेवताचतुर्थीपंचम्योर्देवादेवताजगतीअद्मन्वतीरिति त्रिष्टुप् ।

ऋक्से.

अ. ८ अ. १

॥ ५ ॥

त्सुरभिर्वसानोभद्रामकद्वैवहतिनोऽअद्य⁺ ॥ तदद्यवाचःप्रथमंसीयेनासुराऽअभिदेवाऽअसाम । ऊर्जीदऽउतयन्नि
यासःपंचजनाममहोत्रंजुषध्वं ॥ पंचजनाममहोत्रंजुषतां गोजाताऽउतयेयुश्चियासः । पृथिवीनःपार्थिवात्पात्वंहसौतरीक्षं
दिव्यात्पात्वस्मान् ॥ १३ ॥ तंतुतन्वव्रजसोभानुमन्विहिज्योतिष्मतःपथोरक्षधियाकृतान् । अनुत्वंणंवयतजोगुवामपो
मनुर्भवजनयादैव्यंजनं ॥ अक्षानहोनह्यतनोतसौम्याऽइष्कुण्ठंरशनाऽओतपिंशत । अष्टावधुरंवहताभितोरथ्येन
देवासोऽअनयन्नभिप्रियं⁺ ॥ अहमन्वतीरीयतेसंरंभच्चमुत्तिष्ठतुप्रतरतासखायः । अत्राजहामयेऽअसन्नश्चेवाःशिवा
न्ययमुत्तरेमाभिवाजान् ॥ त्वष्टामायवेदुपसामपस्तमोविभ्रत्पात्रादेवपानानिशंतमा । शिश्रतिनूनंपरशुंस्वायसंयेनवृ
श्चादेतशोब्रह्मणस्पतिः ॥ सतोन्नंकवयःसंशिश्रीतवाशीभिर्याभिरमुतायुतक्षथ । विद्वांसःप्रदागुह्यानिकर्तन्येनदे
वासोऽअमृतत्वमनशुः⁺ ॥ गर्भयोपामर्दधुर्वत्समासन्यपीच्येनमनसोतजिह्वया । सविश्वाहासुमनोयोग्याऽअभिसि
वोदेवोऽआतिरोदासमोजःप्रजायैत्वस्यैयदशिक्षऽइंद्र ॥ तांसुतेकीर्तमघवन्महित्वायत्वाभीतेरोदसीऽअह्वयेतां । प्रा
त्सातेयानियुद्धान्याहुर्नाद्यशत्रुननुपुराविवित्से ॥ कऽउनुतेमहिमनःसमस्यास्मत्पूर्वऽऋप्योतमापुः । यन्मातरंचपितरं
(१०।४।१२) तांसुतइतिपहुचस्यसूक्तसवामदेव्योबृहदुक्थइंद्रस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ४

॥ ५ ॥

चसकमर्जनयथास्तुन्वः१ः स्वार्थाः ॥ चत्वारितेऽअसुर्याणिनामादोभ्यानिमहिपस्यंसति । त्वमंगतानि विभ्वनिवि
 त्सेयेभिः कर्मणिमघवन्चकर्थ ॥ त्वं विश्वादिधिपेकैवलानियान्या विर्याचगुह्यावसूनि । काममिन्मेमघवन्मावितारी
 स्त्वमाज्ञातात्वमिद्रासिदाता⁺ ॥ योऽअदधाज्योतिपिज्योतिरंतर्याऽअसृजन्मधुनांसमधूनि । अधप्रियंशपमिद्रायमन्म
 स्त्वमाज्ञातात्वमिद्रासिदाता⁺ ॥ १५ ॥ (१०।४।१३) दूरेतन्नामगुह्यं पराचैर्यत्त्वाभीतेऽअह्वयेतांवयोधै । उदस्तन्नाः पृ
 ऋकृतौबृहदृक्थादवाचि ॥ १५ ॥ ॥ महत्तन्नामगुह्यं पुरुषग्येनभूतंजनयोयेनभव्यं । प्रलंजातंज्योति
 र्विर्वीद्यामभीक्रेभ्रातुः पुत्रान्मघवन्तित्विपुणः⁺ ॥ ॥ चतुस्त्रिंशतापुरुधाविचष्टे
 र्यदस्यप्रियं प्रियाः समविशंतुपंच ॥ आरोदसीऽअपृणादोतमध्यपंचदेवोऽक्रतुशः सप्तसप्त । यत्तेजामित्यमवरं परं स्यामहन्मह
 सरूपेणज्योतिषाविब्रतेन ॥ यदुपऽऔच्छः प्रथमाविभानामर्जनयोयेनपृष्टस्यपुष्टं । देवस्यपश्यकाव्यं महित्वाद्याममारसह्यः समा
 त्याऽअसुरत्वमेकं ॥ विधुंदद्राणंसमनेनवहूनांयुवानंसंतं पलितोर्जगार । देवस्यपश्यकाव्यं महित्वाद्याममारसह्यः समा
 न ॥ १६ ॥ शाकर्मनाशकोऽअरुणः सुपर्णोऽआयोमहः शूरः सनादनीळः । यच्चिकेतसत्यमित्तन्नमोघंवसुस्पाह्मसुतजे
 तोतदाता ॥ ऐभिर्देववृण्यपौस्यानियेभिरौक्षद्वृत्रहत्यायवज्री । येकर्मणः क्रियमाणस्यमहऽक्रतेकर्मसुदजायतदे
 वाः⁺ ॥ युजाकर्मणिज्जनयन्विश्वौजोऽअशस्तिहाविश्वमनास्तुरापाद् । पीत्वीसोमस्यदिवऽआवृधानः शूरोनिर्युधाम

(१०।४।१३) दूरेतदित्यष्टचस्यस्यवामदेव्योबृहदुक्थदंद्रकिष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. १

॥ ६ ॥

इत्यनू ॥ १७ ॥ (१०।४।१४) इदं तु एकं परं ऽ ऊतुं एकं तु तीये नृज्योतिषां विश्वं । संवेशने तु न्वं १ श्वारुरेधि मि
यो देवानां परमेजनित्रे ॥ तनूश्चेवाजिन्तु न्वं १ नयंतीवामसमभ्यधातुशर्मनुभ्यं । अहुतो महो धरुणाय देवान्द्वीव
ज्योतिः स्वमाभिमीयाः ॥ वाज्यसिवाजिनेनासुवेनीः सुवितः स्तोमं सुवितो दिवंगाः । सुवितो धर्मप्रथमानुसत्यासुवितो द्वे
वान्सुवितो नुपत्नं ॥ माहिन्नऽएपां पितरंश्चने शिरे देवा देवेष्वदधुरपि क्रतुं । समविव्यचुरुतयान्यत्विषुरैषां तनूनि वि
विशुः पुनः ॥ सहोभिर्विध्वपरैश्चक्रमरजः पूर्वाधामान्यमितामिमानाः । तनूषु विश्वाभुर्वनानिये मिरे प्रासारयंत पुरुध
प्रजाऽअनु ॥ द्विधासनवोसुरंस्वविदुमास्थापयंत तु तीये नृकर्मणाः । स्वां प्रजां पितरः पित्र्यं सहऽआवरं स्वदधुस्तं मात
तं ॥ नवानक्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरतिदुर्गाणि विश्वा । स्वां प्रजां बृहदुक्थोमहित्वावरं स्वदधादापरं ॥ १८ ॥
(१०।४।१५) माप्रगामपथो वयं मायुशार्दिद्रसोमिनः । मातस्थुनोऽअरतयः ॥ योयज्ञस्य प्रसाधनस्तं देवेज्वात
तः । तमाहुतं नशीमहि ॥ मनो न्वाहुवामहे नाराशंसे न सोमैन । पितॄणां च मनमभिः ॥ आतं ऽएतुमनः पुनः कृत्वेदक्षाय
(१०।४।१४) इदं तद्वतिसप्तर्चस्य सूक्तस्य वामदेव्यो बृहदुक्थो विश्वेदेवास्त्रिपुचतुर्ग्यादिति स्रोजगत्यः । (१०।४।१५) माप्रगामे
विपदुचस्य सूक्तस्य गौपायनावंधुः श्रुतवंधुर्विप्रवंधुर्विश्वेदेवा गायत्री । (भेदपक्षे—इंद्रः १ अमिस्तं तुः १ विश्वेदेवाः ३ सोमः १ एवं ६ । माप्रगामे
तिसूक्तानां बंध्वाद्याः ऋषय इत्यापानुक्रमण्यां शौनकः) । अत्रैपांगौ पायनत्वमेव न लौपायनत्वं तथा सुबंधोर्लोपश्च सर्वा. भा.) ।

॥ ६ ॥

मंडलं १० ।

अनु. ४

जीवसे । ज्योक्चसूर्यदृशो⁺ ॥ पुनर्नः पितरोमनोदोतुदैव्योजनः । जीवन्नातसचेमहि ॥ वयंसौमव्रतेतवमनस्तनू-
 पविभ्रतः । प्रजावतः सचेमहि ॥ १९ ॥ (१०।४।१६) यत्तैयमवैवस्वतमनोजगामदूरकं । तत्तऽआवर्तयामसीह
 क्षयायजीवसे ॥ यत्तेदिवंयत्पृथिवीमनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ यत्तेभूमिचतुर्भुष्टिमनोजगामदूरकं । तत्तः ॥
 यत्तेचतस्रः प्रदिशोमनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ यत्तेसमद्रमण्वमनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ यत्तेमरीचीः प्रवतोमनो
 जगामदूरकं । तत्तः ॥ २० ॥ यत्तेऽअपोयदोषधीमनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ यत्तेसूर्ययदुपसंमनोजगामदूरकं ।
 तत्तः ॥ यत्तेविश्वमिदंजगन्मनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ यत्तेऽपराः
 तत्तः ॥ यत्तेपर्वतान्बृहतोमनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ यत्तेविश्वमिदंजगन्मनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ (१०।४।१७) प्रता
 वरावतोमनोजगामदूरकं । तत्तः ॥ यत्तेभूतंचभव्यंचमनोजगामदूरकं ॥ तत्तः ॥ २१ ॥ (१०।४।१७) प्रता
 र्यायुः प्रतरंनवीयः स्यातोरेवक्रतुमतारथस्य । अधन्यवानुडत्तवीत्यथैपरतरं सुनिर्कृतिर्जिहीतां ॥ सामन्नुरायेनिधि
 मन्ववज्रंकरामहेसुपुंरुधश्रवांसि । तानोविश्वानिजरितामस्तपरा ॥ अभीष्वर्धः पौंस्वैर्भवेमद्यौर्नभूमिगिरयोना
 मन्ववज्रंकरामहेसुपुंरुधश्रवांसि । तानोविश्वानिजरितामस्तपरा ॥ (१०।४।१७) प्रतार्यायुरितिदशर्चस्य

(१०।४।१६) यत्तैयममितिद्वादशर्चससूक्तस्यगौपायनाबधुः श्रुतवंधुर्विप्रबंधुर्मनोनुष्टुप् । (१०।४।१७) प्रतार्यायुरितिदशर्चस्य
 सूक्तस्यगौपायनावंध्वादयः ऋषयः आद्यानांचतसृणानिर्कृतिर्देवताचतुर्थ्यानिर्कृतिः सोमौपंचमीपष्ठगोरसुनीतिदेवीसप्तम्याः पृथिवीद्यावतरि
 क्षसोमपूपपथ्यास्तयोदेवताः अंलानांतिस्त्रणाद्यावापृथिव्यौत्रिष्टुप् अंलार्धर्चस्यैन्द्रः अंलार्धर्चस्यैन्द्रः अंलार्धर्चस्यैन्द्रः अंलार्धर्चस्यैन्द्रः

ऋक्सं.

अ. ८ अ. १

॥ ७ ॥

जान् । तानोविश्वानिजरिताचिकेतपरा० ॥ मोषुणःसोममृत्यवेपरादाःपश्येमनुसूर्यमुच्चरंतं । द्युभिहितोजरिमासू
नोऽअस्तुपरा० ॥ असुनीतेमनोऽअस्मासुधारयजीवार्तवेसुप्रतिरानऽआयुः । रांरुधिनःसूर्यस्यसंहशिघृतेनत्वन्वव
स्ति+ ॥ पुनर्नोऽअसुपृथिवीददातुपुनर्द्यौःपुनःप्राणमिहनोधेहिभोगं । ज्योक्पश्येमसूर्यमुच्चरंतमनुमतेमूळयानःस्व
शरोदसीसुबंधवेयुह्वीऽऽकृतस्यमातरां । भर्तामपयद्रपोद्यौःपृथिविक्षमारपोमोषुतेकिंचनाममत् ॥
त्रिकादिवच्चरंतिभेषजा । क्षमाचरिष्णवैकभर्तामपयद्रपोद्यौःपृथिविक्षमारपोमोषुतेकिंचनाममत् ॥ अवंद्वकेऽअव
गार्मनङ्गाहंयऽआवहदुशीनराण्याऽअनः । भर्तामपयद्रपोद्यौःपृथिविक्षमारपोमोषुतेकिंचनाममत् ॥
(१०।४।१८) आजनैत्वेपसंहशंमार्हीनानामुपस्तुतं । भर्तामपयद्रपोद्यौःपृथिविक्षमारपोमोषुतेकिंचनाममत् ॥ समिद्रेय
रथं । भजेरथस्यसत्पतिं ॥ योजनान्महिषोऽईवातित्त्यौपवीरवान् । अस्मातिंनितोशनंत्वेषानिययिनं
वान्मरारयेधते । द्विवीवपंचकृष्टयः ॥ इन्द्रक्षत्रासमातिपुरथप्रोष्ठेषुधारय । द्विवीवसूर्येहृशे+ ॥ अगस्त्यस्यनञ्जुःस
(१०।४।१८) आजनमितिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यगौपायनांश्चादयऋषयःपष्ठथाअगस्त्यस्वसाऋषिकाआद्यानांचतसृणांषष्ठथाश्वासमाति
देवतापंचम्याइंद्रःसप्तम्याद्विपंचानांजीवःद्वादयाहस्तोऽनुष्टुप् आद्याःपंचगायत्र्यःअष्टमीनवम्यौपंत्ती ।

॥ ७ ॥

मंडलं १०

अनु- ४

सीयुनक्षिरोहिता । पणीच्यक्रमीरभिबिश्वाज्जाग्रधसः ॥ २४ ॥ अयंमातायंपितायंजीवातुरगमत् । इदंतवप्र
सर्पणंसुर्वध्वेहिनिरिंहि ॥ यथायंगंवन्नयानद्यतिध्रुणायकं । एवादधारतेमनोजीवातेवेनमत्यथोऽअरिष्टात
ये ॥ यथेयंयृथिवीमहीद्राधारेमान्नस्पतीन् । एवादधार० ॥ युमाद्रुहंवस्वतात्सुवंधोर्मनऽआभं । जीवातेवेनम
ल्येथो० ॥ न्यग्भवतोववातिन्यक्तपतिसूर्यः । नीचीनमङ्गायुहेन्यग्भवतुरेपः ॥ अयमेहस्तोभगवानयमेभगव
त्तरः । अयंभैविश्वभैपजोयंशिवाभिर्मर्शनः ॥ २५ ॥ (१०।५।१) इदमित्यारौद्रद्रुगतंचात्रह्नुक्रत्वामंत्ररा
जौ ॥ क्राणायदस्यापितरामहेनेष्टाः पर्येत्यक्थेऽअहुन्नासप्तहोतृन् ॥ सऽइद्धानायदभ्यायवृन्चन्यवानः सुदैरमिमितिचे
दि । तूर्वेयाणोगूर्वचस्तमः क्षोदोनरेतऽइतऽऊतिसिंचत् ॥ मनोनयेपुहवनेपुतिगमंचिपः शच्यावनथोद्रवता । आयः
शयीभिस्तुविनम्णोऽअस्याश्रीणीतादिशंगभस्तौ ॥ कृष्णायद्वोष्वरूणीपुसीदद्विवोनपताभ्यनाहुववां । वीतंभेयञ्च
मार्गतेमेऽअर्बववन्वासांनेपुमस्पृतध्रू ॥ प्रथिष्टयस्यवीरकर्ममिण्णदलुष्ठिंनुनयोऽअपौहत् । पुनस्तदावृहहतियल्कना

पंचमेनुवाकेष्टसूक्ति । (१०।५।१) इदमित्येतिसप्तविंशत्युच्यते । सामः १ आभः १
अश्विनौ २ रुद्रः २ विश्वेदेवाः १ वास्तोष्पतिकुद्रौ १ वास्तोष्पत्यग्नी १ अगिरसः १ इंद्रः ३ अग्निः १ नासत्येन्द्राः १ सामः १ आभः १
दिष्टौ १ नामानेदिष्टथेनू १ अग्निः १ इंद्राग्नी १ इंद्रः १ मित्रावरुणतानामनेदिष्टाः १ वरुणः १ मित्रावरुणौ १ वरुणः १ देवाः १ एवं २७) ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. १

॥ ८ ॥

यादुहिगुराऽअनुभृतमनुर्वा ॥ २६ ॥ मध्यायत्कत्वमर्भवद्भीक्रेकामकृण्वानेपितरियुवत्यां । मनुनमेतो जहतुर्वि
यंतासानौनिषिक्तं सुकृतस्योनौ ॥ पितायत्स्वादुहितरमधिष्कन्धमयारेतः संजग्मानो निषिचत् । स्वाध्योजनयन्ब्रह्म
देवावास्तोष्यति व्रतपां निरतक्षन् ॥ सऽईवृषानफेनमस्य द्वाजौ सदा परेदपदुश्च चेताः । सरत्पदानदक्षिणा परावृड्न्
तानुमेष्टुशून्यो जगृभ्रे ॥ मक्षूनवाहैः प्रजायाऽउपबिदरभिननमऽउपसीदुद्धः । सनि तेभंसनि तोतवाजंसधुतर्जज्ञे
सहसायवीयुत् ॥ मक्षूकनार्याः सख्यं नवगवाऽकृतं वदत् ऽकृतयुक्तिमगमन् । द्विवहसो यऽउपगोपमागुरदक्षिणा सोऽ
अच्युतादुदक्षन् ॥ २७ ॥ मक्षूकनार्याः सख्यं नवीयोराधो नरेतऽकृतमिस्तुरण्यन् । शुचियत्तेरेकणऽआयजंतसवर्दु
घायाः पर्यऽउच्चियायाः ॥ पश्वायत्पश्चाद्वियुताबुधं तेति ब्रवीति वकरीरणः । वसोर्वसुत्वाकारवोनेहाविश्वं विवेष्टिद्र
विणमुपधु ॥ तदिदं च स्वपरिपद्मोऽअगमन्पुरुषदंतो नार्षदं विभित्सन् । विशुष्णस्य संग्रथितमनुर्वा विदपुरुषजा
तस्य गुहायत् ॥ भगोहूनामोतयस्य देवाः स्वर्गयेन्निपधस्ये निपेदुः । अग्निहूनामोतजातवैदाः श्रधीनो होतः कृतस्य
होता ध्रुक् ॥ उत त्यामेरौ द्राविचिं मता नार्षत्या विद्रगतयेयजधै । मनुष्वहू कर्वाहि रराणामंदूहितप्रयसा विश्वयज्य
॥ २८ ॥ अयंस्तु तोराजं दिवेधाऽअपश्चविप्रस्तरतिः स्वसेतुः । सकक्षीर्वं तरेजयत्सोऽअग्निनेमिनचक्रमर्वेतोरघुदु ॥
सद्विबं धुवैतरणो यष्टां सवर्धुधेनुमस्वदुहधै । संयन्मित्रावरुणावृजऽउक्वथैज्यैष्ठेभिर्यमणं वरुथैः ॥ तद्वधुः सरिद्धि वि

मंडलं १०

अनु.

॥ ८ ॥

त्रेधियुधानाभानोदिधोरपतिप्रवेनन् । सानोनाभिः परमास्वर्वाघाहंतपश्चाकतिथिश्चिदास ॥ इयमेनाभिरिहमेसधस्थ
 मिमेमेदेवाअयमस्मिस्वर्धः । द्विजाऽअहप्रथमजाऽऽकृतस्येदधेनुरेदुहजार्यमाना ॥ अर्धासुमद्रोऽअरतिर्विभावावस्य
 त्तिद्विवर्तनिर्वनेपाद् । ऊर्ध्वायच्छेणिर्नाशिशुर्दन्मक्षूस्थिरंशेवृधंसूतमाता ॥ २९ ॥ अधागावुडपमातिकृनायाऽअ
 नुश्वांतस्यकस्यचित्परेयुः । श्रुधित्वंसुद्रविणोनस्त्वयाळाश्वघ्नस्यवावृधेसनुताभिः ॥ अधत्वमिन्द्रविज्यः१सान्महोरा
 येनृपतेवज्रबाहुः । रक्षाचनोमघोनः पाहिसुरीनेनेहसस्तेहरिवोऽअभिष्टौ ॥ अधयद्राजानागविष्टौसरत्सरण्युःकारवे
 जरण्युः । विप्रः प्रेषुः सद्योपांवभूवपराचवक्षदुतपदेनान् ॥ अधान्वस्यजेन्यस्यपष्टौवृथारेभंतऽईमहेतदूनु । सरणुरे
 स्यसन्नुरभ्वोविप्रश्चासिश्रवसश्चसातौ ॥ युवोर्धादिसख्यायास्मेशर्थायस्तोमंजुजुपनमस्वान् । विश्वत्रयस्मिन्नागिरः स
 मीचीः पूर्वीविगालुर्दाशसूतार्थै ॥ सर्गणानोऽअद्भिर्देववानितिसुवंधुर्नमसासूक्तैः । वधैद्रुक्थैर्वचोभिराहिननंव्यध्वे
 त्तिपयसऽउन्निर्यायाः ॥ तऽऊणोमहोयजत्राभूतदेवासऽकृतयेसजोपाः । येवाजोऽअनयताविधंतोयेस्थानिचेता ॥
 ॥ ॥

रोऽअमूराः ॥ ३० ॥ इत्यष्टमाकेप्रथमोऽध्यायः ॥

अष्टमाष्टकेभूक्तानि १४५ ऋचः १२९३

सप्तपंचाशत्यायेवर्गाः ३० सूक्तानि १६ ऋचः १६१ ॥ साग. ॥ अग्नय. १० वैकुण्ठायेंद्राये. ३७ क्षग्नय. देवेभ्य. अग्नय.

ऋक्सं.

अ. ८ अ. २

॥ ९ ॥

देवेभ्य. अग्नय. देवेभ्य. अग्नय. देवेभ्य. अग्नय. देवेभ्य. ६ अग्नय. ३ देवेभ्य. २ अग्नय. ६ इंद्राये. १४ विधेभ्यो देवेभ्य. १३ [भे. प. विधेभ्यो दे. ७ इंद्राये. अग्नये तंतव. विधेभ्यो देवेभ्य. ३ सोमाये.] मनस इदं. १२ निर्वृतय. ३ निर्वृतिसोमाभ्या. असुनीत्या. २ विधेभ्यो देवेभ्य. २७ [भे. प. रुद्राये. २ अग्निभ्या. २ इंद्रावापृथिवीभ्य. असमातय. ४ इंद्राये. असमातय. जीवायेदं. ५ हस्ताये. ३ अग्नय. नासत्येदेभ्य. सोमाये. अग्नय. आदित्यनाभानेदिष्टेभ्य. नाभानेदिष्टेभ्यो देवेभ्य. २ अग्नय. इंद्राग्निभ्या. अंगिरोभ्य. नेदिष्टेभ्य. वरुणाये. मित्रावरुणाभ्या. २ देवेभ्य.] ॥ इत्यष्टमे प्रथमः ॥

येयज्ञेनैकादशाद्याः षळंगिरसांस्तुतिर्वात्या त्रिष्टुप् चम्यनुष्टुप् प्रगाथोनुष्टुप् भौगायत्री चतस्रोत्याः सावर्णेर्दानस्तुतिः परावतरुयूनागयः श्रुतो द्वि त्रिष्टुवंतं तु स्वस्ति नस्त्रिष्टुब्वासासहोत्तरयापथ्यास्वस्ति देवत्या कथायां मे त्रिष्टुबन्नि

रिंद्रः पंचोनावसुकर्णो वासुकस्त्रिष्टुवंतं तु देवान्हुव इमां धियं द्वादशायास्यो वा हस्पत्यं तूदुहोतो भद्राः सुमित्रो वाभ्य

॥ हरिः ओम् ॥ (१०।५।२) येयज्ञेन दक्षिण्यासर्मक्ताऽइंद्रस्य सख्यं मम तु त्वमानुश । तेभ्यो भद्रमंगिरसो वोऽ

(१०।५।२) येयज्ञेनेत्येकादशार्चस्य सूक्तस्य मानवो नाभानेदिष्टो विधेदेवाः प्रचूनमित्यादि चतसृणां सावर्णिर्जगती पंचम्यष्टमी नवम्यो-

अस्तुप्रतिगृभ्यीतमानुवंसुमेधसः ॥ यऽउदार्जन्पितरोऽगोमयंवसृतेनाभिं दन्परिवत्सरेवलं । द्वीर्घायुत्वमंगिरसोवोऽ
अस्तुप्रति० ॥ यऽक्रतेनसूर्यमारोहयन्दिव्यप्रथयन्पृथिवीमातरंवि । सुप्रजास्त्वमंगिरसोवोऽअस्तुप्रति० ॥ अयं ना
भाविदतिघल्युवोगृहेदेवपुत्राऽऽकपयस्तच्छृणोतन । सुब्रह्मण्यमंगिरसोवोऽअस्तुप्रति० ॥ विरूपासऽइहययस्तऽइदं
भीरवैपसः । तेऽअंगिरसःसनवस्तेऽअग्नेःपरिजज्ञिरे ॥ १ ॥ येऽअग्नेःपरिजज्ञिरेविरूपासोद्वियस्परि । नवग्वोनुद
शग्वोऽअंगिरस्तामःसचादेवेपुमंहते ॥ इद्रेणयुजानिःसृजंतवाघतोव्रजंगोमंतमश्विनं । सहस्रमिददतोऽअष्टक्रण्यः१
श्रवोदेवैव्यक्त ॥ प्रननंजायतामयंमनस्तोक्मेवरोहतु । यःसहस्रंशुताय्वसद्योदानायमंहते ॥ नतमश्रोतिकश्चनदि
वऽइवसान्वारभं । सावर्ण्यस्युदाक्षिणाविसिंधुरिवप्रथे ॥ उतद्रासापरिविपेसादिष्टीगोपरीणसा । यदुस्तुवश्चमाम
हे ॥ सहस्रदाग्रांमणीमोर्पिपुन्मनुःसूर्येणास्ययतमानैतुदक्षिणा । सावर्णेर्दवाःप्रतिर्त्वायुर्यस्मिन्नश्रीताऽअर्सनामुवा

नुष्टुभःपट्टीबृहतीसप्तमीसतोबृहतीदशमीगायत्रीअंल्यात्रिष्टुप् (भेदपक्षे—अंगिरसः६ विश्वेदेवाः१ सावर्णिः४ एवं११ । अंगिरसोलुक्रम
ण्यापाक्षिकाउक्ताः) । येयज्ञेनेतिचतस्तृणात्रिष्टुपंछंदस्त्वंकथिद्रुतेतद्बहुविरुद्धं । विरोधास्तु—पठंगिरसास्तुतिर्वात्यात्रिष्टुपित्यलुक्रमाच्छेपा
जगत्सदितिपरिभाषाव्याघातएकः । तासात्रिष्टुपंछंदस्तेनादेशपरिभाषयातासामत्यायाश्चत्रिष्टुप्तेसिद्धेत्यात्रिष्टुपिति सिद्धानुवादलक्षणदोषा
विष्करणद्वितीयः । दशमीत्वस्यागायत्रीजगत्सन्धाविनोत्तमाभितिशौनकवचनाज्ञानेनस्तेच्छयान्व्याख्यानमिति तृतीयश्चेति ।)

ऋक्सं.

अ. ८ अ. २

॥ १० ॥

जै ॥ २ ॥ (१०।५।३)

ऽआसतेतेऽअधिब्रुवतुनः ॥ विश्वाहिदोनमस्यानिवद्यानामनिदेवाऽलुतयज्ञियानिवः । यथातेर्येनहुष्यस्यवृहिषिदेवा
न्स्वमसुस्तौऽआदित्याऽअनुमदास्वस्तये ॥ नृचक्षसोऽअनिमिपतोऽअर्हणवृहदेवासोऽअमृतत्वमानशुः । एकथशुष्मान्वृषभरा
आविवासनमसासुबुक्तिभिर्महोऽआदित्याऽअर्कद्योतः पर्वदत्यहः स्वस्तये ॥ ३ ॥ कोवः स्तोमराधतियजुजोपथविश्वेदेवासोमनुषो
यतिष्ठन । कोवोध्वरं तु विजाताऽअर्कद्योतः पर्वदत्यहः स्वस्तये ॥ ३ ॥ कोवः स्तोमराधतियजुजोपथविश्वेदेवासोमनुषो
सहोवृभिः । तऽआदित्याऽअभयं शर्मयच्छतसुगानः कर्तसुपथास्वस्तये ॥ यऽईशिरेशुर्वनस्यप्रचेतसो विश्वस्यस्थालुर्ज
गतश्चमंतवः । तेनः कृतादकृतादेनसस्पर्धद्यादेवासः पिपृतास्वस्तये ॥ भरोष्विद्रं सुहवंहवामहेहो मुचंसकृतदैव्यं जनं ।
अग्निमिचंवरुणं सातये भगं द्यावापृथिवीमरुतः स्वस्तये ॥ सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेह संशमणमर्दतिसुप्रणीति । दैवीं

(१०।५।३) परावतइतिसप्तदशर्चस्यसूक्तस्य गयः स्नातो विश्वेदेवाः पंचदशी षोडशोः पथ्यास्वस्तिर्जगत्येद्वे त्रिष्टुभौ स्वास्तिस्त्रिष्टुब्वा ।
(भेदपक्षे - विश्वेदेवाः ४ दिवः १ विश्वेदेवाः ४ पथ्यास्वस्ति २ विश्वेदेवाः १ एवं १७) गयः स्नातइत्यत्र स्नातो गयो विश्वेदेवा इत्यपि कचित्प्रयुजते) ।

॥ १० ॥

मंडलं १०

अनु. ५

नावस्वन्नामनागसमन्वन्तीमारुहेमास्वस्तये ॥ ४ ॥ विश्वेयजत्राऽअधिवोचतोतयेत्रार्थध्वनोदुरेवायाऽअभिहृतः ।
 सत्ययवोदेवहृत्पाहुवेमशृण्वतोदेवाऽअवसेस्वस्तये ॥ अपामीवामपविश्वामनाहुतिमपारातिदुर्विदत्रामघायतः ।
 आरेदेवाद्देवोऽअस्मद्युचोतनोरुणःशर्मयच्छतास्वस्तये ॥ अरिष्टःसमतुर्विश्वेऽएधतेप्रज्जाभिर्जायतेधर्मणस्परि । प्रा
 यमादित्यासोनयथासुनीतिभिरतिविश्वानिदुरितास्वस्तये ॥ यदेवासोवधवाजसातौयंशूरसातामरुतोहितेधने । प्रा
 तर्थावाणरथमिन्द्रसानसिमरिष्यन्तमारुहेमास्वस्तये ॥ स्वस्तिनःपृथ्यासुधन्वसुस्वस्त्ये १ सुवृजनेस्ववति । स्वस्तिनःपु
 त्रकुपेपुयोनिपुस्वस्तिरायेमरुतोदघातन ॥ स्वस्तिरिद्धिप्रथेऽश्रेष्ठारेवर्णस्वत्यभियावाममोति । सानोऽअमासोऽअर
 णेनिपतुस्वावेशाभमवलुदेवगौपा ॥ एवापुतेःसुनुरवीवृधद्वे ॥ स्वस्तिरिद्धिप्रथेऽश्रेष्ठारेवर्णस्वत्यभियावाममोति । सानोऽअमासोऽअर
 त्येनास्ताविजनोद्विज्योगयेन ॥ ५ ॥ (१०।५।४) कथादेवानां कृतमस्ययामनिमुमंतुनामशृण्वतांमनामहे । को
 मृळातिकृतमोनोमयस्करत्कृतमऽकृतीऽअभ्याववर्तति ॥ कृतयंतिकर्तवोहृत्सुधीतयोवेनतिवेनाःपतयंत्यादिशः ।
 नमर्द्धिताविद्यतेऽअन्यऽएभ्योदेवेषुमेऽअधिकामाऽअयंसत ॥ नरोवाशंसंपणमगोह्यमग्निदेवेछमभ्यर्चसेगिरा ।
 नमर्द्धिताविद्यतेऽअन्यऽएभ्योदेवेषुमेऽअधिकामाऽअयंसत ॥ नरोवाशंसंपणमगोह्यमग्निदेवेछमभ्यर्चसेगिरा ।
 नमर्द्धिताविद्यतेऽअन्यऽएभ्योदेवेषुमेऽअधिकामाऽअयंसत ॥ नरोवाशंसंपणमगोह्यमग्निदेवेछमभ्यर्चसेगिरा ।

नमर्द्धिताविद्यतेऽअन्यऽएभ्योदेवेषुमेऽअधिकामाऽअयंसत ॥ नरोवाशंसंपणमगोह्यमग्निदेवेछमभ्यर्चसेगिरा ।

(१०।५।४) कथादेवानामितिसप्तदशर्चस्यसूक्तस्यगयःज्ञातोविश्वेदेवाजतीद्वादशीपोडशीसप्तदश्यस्त्रिष्टुभः (भेदपक्षे-विश्वे-

देवाः४ आदित्यार्यमणः१ त्रिश्रेदेवाः३ नद्यः१ विश्वेदेवाः४ घावापृथिव्यौ१ विश्वेदेवाः३ एवं१७) ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. २

॥ ११ ॥

सूर्यामासाचंद्रमसायुमंदिवित्रितंवातमषसमंस्तुमश्विनां ॥ कथाकविस्तुवीरवान्कयागिराबृहस्पतिर्वाधुधतेसुवृत्ति-
भिः । अजऽएकपात्सुहवेभिरक्रकभिरहिःशृणोतुबुधोऽहवीमनि ॥ दक्षस्यवादितेजन्मनित्रेराजानामित्रावरुणावि-
वाससि । अतूर्तपंथाःपुरुषोऽअर्यमाससहोताविषुरुपेबुजन्मसु ॥ ६ ॥ तेनोऽअर्वतोहवनश्रुतोहवंविश्वेशृण्वंतुवा-
जिनोमितद्रवः । सहस्रसामेधसातावित्मनामहोयेधनसमिथेषुजन्मिरे- ॥ प्रवोवायुरंथयुजंपुरंधिस्तोमैःकृणुध्वंस-
ख्यायंपपणं । तेहिदेवस्यसवितुःसवीमनिक्रतुंसर्वेतेसचितःसचेतसः ॥ त्रिःसप्तसन्नान्द्योमहीरपोवनस्पतीन्पर्वतोऽ-
अग्निमत्तये । कुशानुमस्तृन्तिष्यंसधस्यऽआरुद्रंरुद्रेषुरुद्रियंहवामहे ॥ सरस्वतीसरयुःसिंधुरुर्मिभिर्महोमहीरवसायंतु
वक्षणीः । देवीरापोमातरःसूदयित्वोद्यतवत्पयोमधुमन्नोऽअर्चत ॥ उतमाताबृहद्विवाशृणोतुनस्त्वष्टादेवेभिर्जनि-
भिःपितावचः । ऋभुक्षावाजोरथस्पतिर्भगोरण्वःशंसःशशमानस्यपातुनः ॥ ७ ॥ रण्वःसंहृष्टौपितुमाऽइवक्षयोभद्रा-
रुद्राणामरुतामुपस्तुतिः । गोभिःज्यामयशसोजनेष्वासर्वादेवासऽइळयासचेमहि ॥ यामेधियंमरुतऽइद्रदेवाऽअद-
दातवरुणमित्रयुयं । तापीपयत्पयसेवधेनुंकुविक्षिरोऽअधिरथेवहाथ ॥ कुविदंगप्रतियथाचिदस्यनःसजात्यस्यमरु-
तोबुवोधध । नाभायत्रप्रथमंसंनसामहेतत्रजामित्वमर्दितिर्दधातुनः ॥ तेहिद्यावापृथिवीमातरामहीदेवीदेवान्जन्म-
नायज्ञियेऽइतः । उभेविभृतऽउभयंभरीमभिःपूरैतांसिपितृभिश्चसिंचतः ॥ विषाहोत्राविश्वमश्रोतिवार्यंबृहस्पति

रमतिः पनीयसी । ग्रावायत्रमधुपुदुच्यते बृहदवीवशंतमतिभिर्मनीषिणः ॥ एवाकविस्तुवीरवाँऽकृतज्ञाद्रविणस्यु
द्रविणसश्चक्रानः । उक्थेभिरत्रमतिभिश्चविप्रोपीपयद्गयोदिव्यानिजन्म ॥ एवाहृतेः सुनुरवीवृधद्वोविश्वेऽआदित्याऽ
अदितेमनीपी । ईशानासोनरोऽअमर्त्येनास्ताविजनौदिव्योगयेन ॥ ८ ॥ (१०।५।५) अग्निर्द्रोचरुणोमित्रोऽअर्यमा
वायुः पपासरस्वतीसजोपसः । आदित्याविष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत्सोमोरुद्रोऽअदितित्रह्मणस्पतिः ॥ इंद्राग्नीवृत्रहत्येपुस
तपतीमिथोहिंन्यानातन्वा इ समौकसा । अंतरिक्षंमह्यापपुरोर्जसासोमोघृतश्रीमहिमानमीरयन् ॥ तेषां हिमह्मामृता
मनर्वणांस्तोमोऽइर्यर्गृतज्ञाऽकृतावृधां । येऽअप्सवमर्णवंचित्राधसस्तेनोरासतांमहयेसुमित्र्याः ॥ स्वर्णरमंतरि
क्षाणरोचनाद्यावाभूमौपृथिवीस्कंभुरोजसा । पृक्षाऽइवमहयंतः सुरातयौदेवाः स्तवंतेमनुपायसरयः ॥ मित्राग्नयिक्ष
वरुणायद्राशुपेयासुआजामनसानप्रच्युतः । ययोधमिधर्मेणारोचतेवृधद्योरुभेरोदसीनाधसीवृतौ ॥ ९ ॥ यागौ
धर्तनिर्पयतिनिष्कृतंपयोदुहानाव्रतनीरवारतः । साप्रब्रुवाणावरुणायद्राशुपेदेवभ्यौदाशद्वविपाविवस्वते ॥ दिवक्ष
सोऽअग्निजिह्वाऽकृतावृधऽकृतस्योर्निविमशंतंआसते । द्यांस्कभित्व्युपऽआचक्रुरोजसायज्ञंजनिवीतन्वी इ नि
शेनमकृणोर्विश्वेदेवाजालंयान्निष्टुप् । (भेदपक्षे—विश्वेदेवाः ४ मित्रावरुणौ १)

(१०।५।५) अमिरिद्रइतिपचदशचस्यधु... विओदेवाः३ एवं१५ ।

गौः१ विश्वदेवाः१ घावाप्राथिव्या१ विश्वदूवाः२ नाभः१

ऋक्सं.

अ. ८ अ. २

॥ १२ ॥

मा॒मृ॒जुः ॥ प॒रि॒क्षि॒ता॒पि॒तरा॑पूर्वजावरीऽकृतस्ययोनाक्षयतः समो॒क्ता
षा॒यपि॒न्वतः ॥ प॒र्जन्या॒वाता॑वृ॒षभा॑पुरी॒पिण॑द्रवायूर्व॒णोमि॒त्रोऽर्च्य॑मा । दे॒वोऽऽदि॒त्योऽर्चि॑तिहवामहे॒येपा॑र्ध
मि॒न्द्रि॒यसो॑मं॒धन॒साऽर्च॑ऽई॒महे ॥ १० ॥ ब्र॒ह्म॒गाम॑र्ध्व॒जन॑यंत॒ओष॑धीर्व॒नस्पती॑न्पृथि॒वीप॑र्वतौऽअ॒पः । सूर्य॑दि॒विरो॒ह
यंतः॒सु॒दान॑व॒ऽआर्यो॑व्र॒तावि॑सृजंतोऽअ॒धिक्ष॑मि ॥ भु॒ज्युम॑हंसः॒पि॒पृथो॑नि॒रश्वि॑ना॒श्याव॑पुत्र॒वध्मि॒मत्या॑ऽअ॒जि॒न्वतं । कृ
म॒द्युर्व॑वि॒मदा॑यो॒हथु॑र्यु॒वावि॑ष्णा॒र्च्वि॒विश्व॑का॒याव॑सृजथः ॥ पा॒वीर॑वी॒तन्य॒तुरे॑कपा॒द्भुजो॑दि॒वो॒धर्ता॑सि॒धरा॑पः॒सम॑द्रि॒यः ।
वि॒श्वेदे॒वासः॑शृ॒णव॑न्व॒चासि॑मे॒सर॑स्व॒तीस॒ह॒धीभिः॑पु॒रंध्या ॥ वि॒श्वेदे॒वाःस॒ह॒धीभिः॑पु॒रंध्या॒मनो॑र्य॒जन्ना॑ऽअ॒मृता॑ऽकृ॒त
ज्ञाः । रा॒ति॒षाचो॑ऽअ॒भि॒षाचः॑स्व॒र्विदुः॑स्व॒र्गिरो॑ब्र॒ह्मसू॑क्तं॒जुपे॑रत ॥ दे॒वान्व॑सि॒ष्ठोऽअ॒मृता॑न्व॒वंदे॒येवि॒श्वभु॑व॒नाभि॑म्र
त॒स्थुः । ते॒नो॒रास॑ता॒मुरु॑गा॒यम॑द्य॒यूय॑पा॒तस्व॑स्ति॒भिःस॒दानः ॥ ११ ॥ (१०।५।६) दे॒वान्हु॒वेव॑ह॒च्छ॒वसः॑स्व॒स्तये॑ज्योति
ये॒सूर्य॑स्य॒ज्योति॑पो॒भाग॑मा॒न॒शुः । म॒रु॒त॒णेवृ॒जने॑म॒न्म॒धीम॑हि॒माघो॑ने॒यु॒ज्ञंज॑नयंत॒सूर्यः ॥ इ॒न्द्रो॒वसु॑भिः॒परि॑पा॒तुनो॑ग॒य
(१०।५।६) दे॒वान्हु॒वइति॑पंच॒दश॑र्चस्य॒सूक्त॑स॒वासु॒कोव॑सु॒कर्णो॑वि॒श्वेदे॒वाज॑ग॒त्यत्रि॑ष्टु॒प्(प॒क्षे-वि॒श्वेदे॒वाः८ एवं॑ १५) ।

मंडलं १०

अनु. ५

॥ १२ ॥

मादित्यैर्नोऽदितिः शर्मयच्छतु । रुद्रोरुद्रेभिर्देवोर्मूढयातिनस्त्वष्टनोशाभिः सुवितार्यजिन्वतु ॥ अदितिर्द्यावापृ
 थिवीऽऽकृतं महर्दिद्राविष्णुर्मरुतः स्वर्वहत् । देवोऽदित्योऽअवसेहवामहेवक्षुद्रान्तस्वितारसुदंसं ॥ सरस्वान्धी
 शिवैरुणोधतव्रतः पूषाविष्णुर्महिमावायुरश्विनौ । ब्रह्मकृतौऽअमृतविश्वदेवसः शर्मनोयसन्त्रिवरूथमंहसः ॥ १२ ॥
 शिवैरुणोधतव्रतः पूषाविष्णुर्महिमावायुरश्विनौ । ब्रह्मकृतौऽअमृतविश्वदेवसः शर्मनोयसन्त्रिवरूथमंहसः ॥
 वृषोयज्ञोवृषणः संतुयज्ञियावृषणो देवावृषणो हविष्कृतः । वृषणाद्यावापृथिवीऽऽकृतावरीवृषोपर्जन्योवृषणोवृपस्तुभः ॥
 अग्नीषोमावृषणावाजसातेये पुरुप्रशस्तावृषणाऽउपब्रुवे । यावीजिरेवृषणो देवयज्ययातानः शर्मत्रिवरूथमंहसः ॥
 धतव्रताः क्षुत्रियायज्ञनिष्कृतौ बृहद्वियाऽअध्वराणामभिश्रियः । अग्निहोतारऽऽकृतसापोऽअद्भुतोऽअसृजन्ननुवृत्र
 धतव्रतः ॥ धतारोदिवऽऽक्रुभवः सुहस्तावातापर्जन्यार्मह्विपस्यतन्यतोः । आपऽओषधीः प्रतिरनुनो गिरो भगौरातिर्वाजि
 नोयंतु मे हवै ॥ १३ ॥ समुद्रः सिंघुरजोऽअंतरिक्षमजऽएकपात्तनयिबुर्णवः । अहिर्बुध्न्यः शृणवद्वचांसि मे विश्वे देवा
 संऽउत सरयो मम ॥ स्यामवो मनवो देववीतये प्रांचनो यज्ञं प्रणयत साधुया । आदित्यारुद्रावसवः सुदानवऽइमा ब्रह्मेश
 स्यमनानि जिन्वत ॥ दैव्या होताराग्रथमापूरो हितऽऽकृतस्य पंध्रामन्वेमि साधुया । क्षेत्रस्य पतिप्रतिवेशमीमहे विश्वान् देवा
 ऽअमृतोऽअग्रयुच्छतः ॥ वसिष्ठासः पितृवद्वाचमकृतदेवोऽईळानाऽऽकृषितस्वस्तये । प्रीताऽइव ज्ञातयः काममेत्या

ऋक्सं.

अ. ८ अ. २

॥ १३ ॥

सोदेवासोर्वधुतावसु ॥ देवान्वसिष्ठोऽमृतांन्वदेवेविश्वामुर्वनाभिप्रतस्थुः । तेनोरासंतामुरुगयमद्यय्यंपत
स्वस्तिभिःसदानः ॥ १४ ॥ (१०।५।७) इमां धियं ससशीर्ष्णां पितानं ऽऋतप्रजातां बृहतीम विदत् । तुरीयं स्वज्ज
रसोदधाना युज्ञस्य धाम प्रथमं मनंत ॥ इंसैरेव सखिभिर्विदद्भिरिमन्मर्यानि न हनाव्यसन् । विप्रं पदमंगि
दुजाऽऽतप्राप्तौ दुर्च्चविद्वोऽअगायत् ॥ अवोद्वाभ्यां पुरऽएकया गागुहातिष्ठतीरं नृतस्यसेतौ । बृहस्पतिरभिकनिक्क
तिरिच्छन्नदुस्त्राऽआकुर्विहितिस्त्रऽआर्वः ॥ विभिद्या पुरं शयथे मपां चीनि स्त्रीणि साकमुदधेरंकृतत् । बृहस्पतिस्तर्मसिज्यो
र्थगामर्कं विवेदस्तनयं निवद्यौः+ ॥ इन्द्रो वलं रक्षितारं दुधानां करेणेव विचकतोरवेण । स्वेदां जिभिराशिरमिच्छमानो
रोदयत्पणिमागाऽअमुष्णात् ॥ १५ ॥ सऽईसत्येभिः सखिभिः शुचिभिर्गोधा यंसंविधनुं सैरददः । ब्रह्मणस्पतिर्वृषभि
विराहैर्धर्मस्वदेभिर्द्रविणं व्यानद् ॥ ते सत्ये नुमनं सारोपतिंगाऽइयानासं ऽइषणयंत धीभिः । बृहस्पतिर्मिथोऽअवद्यगे
भरेभरेऽअनुमदमजिष्णुं+ ॥ युदावाजुमसं न द्विश्वरूपमाद्यामरं क्षुद्रुतराणि सन्न । बृहस्पतिर्वृषणं शूरसातौ
(१०।५।७) इमां धियमिति द्वादर्शस्य सूक्त्या गिरसोऽयास्यो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं १० ।

अनु. ५

॥ १३ ॥

विभ्रतो ज्योतिरासा⁺ ॥ मृत्यामाशिपंकृणुतावयोधैकीरिचिद्धवथस्वेभिरेवैः । पश्चाद्यधोऽपपभवंतुविश्वस्तद्रोद
 सीश्रणुतंविश्वमिन्वे⁺ ॥ इन्द्रोमहामहतोऽर्णवस्यविमर्धानमभिनदर्वदस्य । अहन्नहिमरिणात्सप्तसिधून्देवैर्द्यौवा
 पृथिवीप्रावतनः ॥ १६ ॥ (१०।५।८) उदप्रुतो नवयोरक्षमाणवावदतोऽअत्रियस्येवघोषाः । गिरिभ्रजोनोर्म
 योमदंतोबृहस्पतिमभ्यर्चुर्कोऽअनावत् ॥ संगोभिरांगिरसोनक्षमाणोभगऽइवेदयमणनिनाय । जनेमित्रोनदंपतीऽ
 अनकिबृहस्पतेवाजयाशैरिवाजौ⁺ ॥ साध्वर्याऽअतिथिनीरिपिराः सार्हाः सुवर्णाऽअनवद्यारूपाः । बृहस्प
 भ्योवितूर्यानिर्गोऽअपेयवमिवस्थिविभ्यः ॥ आप्रपायन्मधुनऽऋतस्ययोनिमवक्षिपन्नर्कऽउल्कामिवद्योः । बृह
 तिरुद्धरन्नश्मनोगाभूम्याऽउद्धेववित्वचंविभेद ॥ अपज्योतिपातमोऽअंतरिक्षादुद्धः शीपोलमिववातऽआजत् । बृह
 स्पतिरनुमृदयात्रलस्याभ्रमिववातऽआचक्रऽआगाः⁺ ॥ यदावलस्यपीयतो जसुभेद्वहस्पतिरश्रितपोभिरर्कैः । बृह
 नजिह्वापरिविष्टमाददाविर्निर्धारकणोदुस्त्रियाणां ॥ १७ ॥ बृहस्पतिरमृतहिल्यदासां नामस्वरीणांसदनेगुहायत् । नि
 आंडेवभित्वाशकुनस्यगर्भमुदुस्त्रियाः पवैतस्यत्समजत् ॥ अश्रापिनं मधुपर्धे पश्यन्मत्स्यं नदीनऽबुदनिक्षिपंतं । नि
 एजं भारचमसं न बृक्षादृहस्पतिर्विरेवोणाविकृत्य ॥ सोपामेविदुत्सः स्वर्गः सोऽअग्निं सोऽअर्केणविववाधेतमोसि । बृह

एजं भारचमसं न बृक्षादृहस्पतिर्विरेवोणाविकृत्य ॥

ऋक्सं.

अ. ८ अ. २

॥ १४ ॥

स्पतिर्गोवपुषोवलस्यनिर्मज्जानंनपर्वणोजभार ॥ हिमेवपर्णामुषितावनानिबृहस्पतिनाकृपयद्वुलोगाः । अनानुकुल्य
मपनश्चकारयात्सूर्यामासमिथऽउच्चरतः ॥ अभिश्यावंनकृशनेभिरश्वंनक्षत्रेभिःपितरोद्यामपिशन् । रात्र्यांतमोऽ
अर्धधूर्ज्योतिरहन्बृहस्पतिर्भिनदद्रिद्विदद्गाः⁺ ॥ इदमकर्मनमोऽअत्रियाययःपूर्वीरन्वानोनवीति । बृहस्पतिःसहि
गोभिःसोऽअश्वैःसवीरेभिःसनुभिर्नोवयोधात् ॥ १८ ॥ (१०।६।१) भद्राऽअग्नेर्वैद्यश्वस्यसंहशोवामीप्रणीतिः
सुरणाऽउपेतयः । यदौसुमित्राविशोऽअग्रऽइंधतेघृतेनाहुतोजरतेदर्विद्युतत् ॥ घृतमग्नेर्वैद्यश्वस्यवर्धनंघृतमन्नंघृत
म्वस्यमेदनं । घृतेनाहुतऽउर्वियाविपग्रथेसूर्यऽइवरोचतेसर्पिरासुतिः ॥ यत्तेमनुयदनीकंसुमित्रःसमीधेऽअशेतदिदं
नवीयः । सरेवच्छौचसगिरोजुषस्वसवार्जदर्विसऽइहश्रवोधाः ॥ यत्त्वापूर्वमीळितोवैद्यश्वःसमीधेऽअशेतदिदं
स्व । सनःस्तिपाऽउतर्भवातनपादात्रंरक्षस्वयदिदंतेऽअस्मे⁺ ॥ भवाद्युम्नीवाऽश्वोतगोपामात्वतारीदृभिर्मातिर्जना
नां । शरंऽइवधृणुश्च्यवनःसुमित्रःप्रनुवौचंवाध्यश्चस्यनाम⁺ ॥ समज्ज्यापर्वत्याइवसूनिदासावृत्राण्यार्योजिगेथ ।
शरंऽइवधृणुश्च्यवनोजनानांत्वमग्नेपृतनार्यूरभिष्याः ॥ १९ ॥ दूर्धतनुर्वहदुक्षायमग्निःसहस्रस्तरीःशतनीथऽक्र
भ्या । ह्युमान्धुमत्सुनुर्भिर्मज्यमानःसुमित्रेपुदीदयोदेवयत्सु ॥ त्वेधेनुःसदुघाजातवेदोसश्चतेवसमनासवधुक् । त्वं
पथेनुवाकेपोडशसूक्तानि (१०।६।१) भद्राअग्नेरितिद्वादशार्चस्यसूक्तस्यावाध्यधःसुमित्रोभिर्बिष्टुवाद्येद्वेजगलौ ।

मंडलं १०

अनु. ६

॥ १४ ॥

नृभिर्दक्षिणावद्भिरेसुभिन्नेभिरिच्छसेदेवयद्भिः ॥ देवार्थितेऽअमृतज्ञातवेदोमहिमानंवाय्यप्रवोचन् । यत्संप्र
 ष्णमानुपीर्विशुऽआयन्त्वन्वृभिरजयस्त्वावृधेभिः ॥ पितेवपुत्रमविभरुपस्येत्वामग्नेवाय्यश्वःसपर्यन् । जुषाणोऽअस्य
 समिधैयविष्टोतपूर्वाऽअवनोत्रार्धतश्चित् ॥ शश्वद्ग्निर्यय्यस्यशत्रुदृभिर्जिगायसतसोमवद्भिः । समनंचिददहश्चि
 त्रभानोवब्राधैतमभिनद्धाश्चित् ॥ अयमग्निर्वय्यस्यवृत्रहासनकात्येद्धो नमसोपवाक्यः । सनोऽअजामिहृतवावि
 जामीनभित्तिष्ठशर्धतोवाय्यश्व ॥ २० ॥ (१०।६।२) इमामेऽअग्नेसुमिधंजुपस्वेळस्पदेप्रतिहयार्धितार्चो । वर्ष्म
 जामीनभित्तिष्ठशर्धतोवाय्यश्व ॥ २० ॥ (१०।६।२) आदेवानामग्रयावेहयातुनराशंसोविश्वरूपेभिरश्वैः । वरिष्ठैरश्वैःसु
 नृथिव्याःसुदिनत्वेऽअह्नामध्वोर्भवसुक्रतोदेवयज्या ॥ अश्वत्तमसीकतेदूल्यायहुविष्मतोमनुष्यासोऽअग्निं । अहेळतामनसादेववर्द्धिर
 स्वपथानमसामिधेधोदेवेभ्योदेवतमःसुपूदत् ॥ शुश्वत्तमसीकतेदूल्यायहुविष्मतोमनुष्यासोऽअग्निं । अहेळतामनसादेववर्द्धिर
 वृत्तारथेनादेवान्वक्षिनिपदेहहोता ॥ विप्रयतांदेवजुष्टंतिरश्वादीर्घद्राघ्मासुरभिभूत्वस्मे । अश्वतीर्द्धरोमहिनामह
 द्रज्येष्ठोऽउशतोयक्षिदेवान् ॥ दिवोवासानुसृपशतावरीयःपृथिव्यावामात्रयाविश्रयध्वं । उशतीर्द्धरोमहिनामह
 निद्वेद्वंरथैरथयुधौरयध्वं ॥ २१ ॥ देवीदिवोदुहितरासुशिल्पेऽउपासानक्तोसदतानियोनौ । आवादेवासऽउशती

(१०।६।२) इमामह्येकादशसूक्तस्यवाय्यश्वःसुभिन्नेभिरिच्छसेदेवयद्भिः ॥ देवार्थितेऽअमृतज्ञातवेदोमहिमानंवाय्यप्रवोचन् । यत्संप्र
 ष्णमानुपीर्विशुऽआयन्त्वन्वृभिरजयस्त्वावृधेभिः ॥ पितेवपुत्रमविभरुपस्येत्वामग्नेवाय्यश्वःसपर्यन् । जुषाणोऽअस्य
 समिधैयविष्टोतपूर्वाऽअवनोत्रार्धतश्चित् ॥ शश्वद्ग्निर्यय्यस्यशत्रुदृभिर्जिगायसतसोमवद्भिः । समनंचिददहश्चि
 त्रभानोवब्राधैतमभिनद्धाश्चित् ॥ अयमग्निर्वय्यस्यवृत्रहासनकात्येद्धो नमसोपवाक्यः । सनोऽअजामिहृतवावि
 जामीनभित्तिष्ठशर्धतोवाय्यश्व ॥ २० ॥ (१०।६।२) इमामेऽअग्नेसुमिधंजुपस्वेळस्पदेप्रतिहयार्धितार्चो । वर्ष्म
 जामीनभित्तिष्ठशर्धतोवाय्यश्व ॥ २० ॥ (१०।६।२) आदेवानामग्रयावेहयातुनराशंसोविश्वरूपेभिरश्वैः । वरिष्ठैरश्वैःसु
 नृथिव्याःसुदिनत्वेऽअह्नामध्वोर्भवसुक्रतोदेवयज्या ॥ अश्वत्तमसीकतेदूल्यायहुविष्मतोमनुष्यासोऽअग्निं । अहेळतामनसादेववर्द्धिर
 स्वपथानमसामिधेधोदेवेभ्योदेवतमःसुपूदत् ॥ शुश्वत्तमसीकतेदूल्यायहुविष्मतोमनुष्यासोऽअग्निं । अहेळतामनसादेववर्द्धिर
 वृत्तारथेनादेवान्वक्षिनिपदेहहोता ॥ विप्रयतांदेवजुष्टंतिरश्वादीर्घद्राघ्मासुरभिभूत्वस्मे । अश्वतीर्द्धरोमहिनामह
 द्रज्येष्ठोऽउशतोयक्षिदेवान् ॥ दिवोवासानुसृपशतावरीयःपृथिव्यावामात्रयाविश्रयध्वं । उशतीर्द्धरोमहिनामह
 निद्वेद्वंरथैरथयुधौरयध्वं ॥ २१ ॥ देवीदिवोदुहितरासुशिल्पेऽउपासानक्तोसदतानियोनौ । आवादेवासऽउशती

तीळाभारत्यस्त्वष्टावनस्पतिःस्वाहाकृतयक्षिष्टम् ।

उशंतऽउरौसीदंतुसुभगेऽउपस्थे ॥ ऊर्ध्वोग्रावाबृहदग्निःसमिद्धःप्रियाधामान्यदितेरुपस्थे । पुरोहितावृत्विजायज्ञेऽ
 अस्मिन्विदुष्टराद्रविणमायजेथां ॥ तिस्रोदेवीर्विहिरिदं वरीयऽआसीदतचक्रुमावःस्योनं । मनुष्वद्यज्ञंसुधिताहवीषी
 द्रविणोदःसुरलः ॥ वनस्पतेरशनयानियूयदेवानांपाथऽउपवक्षिविद्वान् । सदेवानांपाथऽउपविद्वानुशन्यक्षि
 थिवीहवमे ॥ आग्नेवह्वरुणमिष्टयेनऽइंद्रदिवोमरुतोऽअंतरिक्षात् । स्वदातिदेवःकृणवद्वर्वीष्यवतांद्यावापृ
 तामादयतां ॥ २२ ॥ (१०।६।३) बृहस्पतेप्रथमंवाचोऽअग्रयत्पैरतनामधेयंदधानाः । यदैपांश्रेष्ठयदरिप्रमासी
 त्प्रेणातदैपांनिहितं गुहाविः+ ॥ सक्तुमिवतितउनापनंतोयत्रधीरामनसावाचमक्रेत । अत्रासखायःसख्यानिजान
 तेभद्रैर्षालक्ष्मीर्निहिताधिवाचिः+ ॥ यज्ञेनवाचःपद्वीर्यमायुन्तामन्वविद्वद्वर्षिपुप्रविष्टां । तामाभृत्याव्यदधुःपुरुत्रा
 तांससरेभाऽअभिसंनवंते ॥ उतत्वःपश्यन्नददर्शवाचमतत्वःशृण्वन्नशृणोत्येना । उतोत्वस्मैतन्वै+विससेजायेवपत्य
 ऽउशतीसुवासाः ॥ उतर्वसुख्येस्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वंत्यपिवाजिनेषु । अन्धेनवाचरतिमाययैपवाचंशुश्रुवोऽअफ
 लामपूष्पां+ ॥ २३ ॥ यस्तित्याजसचिविदंसखायंनतस्यवाच्यपिभागोऽअस्ति । यदींशृणोत्यलंकंशृणोतिनहिप्रवेद
 (१०।६।३) बृहस्पतइत्येकादशर्चससृक्तस्यागिरसो बृहस्पतिज्ञानं त्रिष्टुप्नवमीजगती ।

सुकृतस्य पंथी ॥ अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोज्ञे ज्वसमावभूतुः । आदृशास उपकक्षास उपवेहृदा ऽईव स्नात्वा ऽ
उत्वेददृश्रे ॥ हृदा तुष्टे पुमनसो ज्वेपयद्राक्षणाः संयजते सखायः । अन्नाहृतं विजहृवृद्याभिरोह ब्रह्माणो विचरंत्युत्वे ॥ सर्वे न
इमे ये नार्वाङ्गपूरश्चरति न ब्राह्मणा सो न सुते कर्सासः । तऽ एते वार्चमभिपद्य पापया सिरीस्तत्रैतन्वते ऽ अप्रजज्ञयः ॥ कृचां त्वः पोष
दंतिय शसागते न सभासाहे न सख्या सखायः । किल्विपुसृलितु पणिह्यै पामरं हितो भवति वाजिनाय ॥ कृचां त्वः पोष ॥ इत्य
मास्ते पुष्वान्नायंत्रत्वौ गायति शक्करीषु । ब्रह्मात्वे वदति जातविद्याय नृस्य मात्रां विभिमीतऽ उत्वः ॥ २४ ॥ ॥ इत्य
एमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अष्टपंचाशाध्यायेवर्गाः २४ सूक्तानि १० ऋचः १३३ ॥ त्यागः ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यः ७ [भे. प. अगिरोभ्यः ६ विश्वेभ्यो देवेभ्यः १]
सावर्ण्यः ४ विश्वेभ्यो देवेभ्यः १४ [भे. प. विश्वेभ्यो दे. ९ दिवे. विश्वेभ्यो देवेभ्यः ४] पथ्यायै स्वस्तयः २ विश्वेभ्यो दे. ४७ [भे. प. विश्वेभ्यो दे. ४
अदित्यर्यमभ्या. विश्वेभ्यो देवेभ्यः ३ नदीभ्य विश्वेभ्यो दे. ४ द्यावापृथिवीभ्या. विश्वेभ्यो देवेभ्यः ७ मित्रावरुणाभ्या गवइ. विश्वेभ्यो देवेभ्यः
द्यावापृथिवीभ्या. विश्वेभ्यो देवेभ्यः ३ अध्विभ्या. विश्वेभ्यो देवेभ्यः ९ अग्नीषोमाभ्या. विश्वेभ्यो देवेभ्यः ८] बृहस्पतयः २४ अग्नयः १२ समि-
व नस्पतयः स्वाहाकृतीभ्यः ज्ञानाये ११ ॥ इत्यष्टमे द्वितीयः ॥

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ३

॥ १६ ॥

मंडलं १८

अनु. ६

॥ १६ ॥

देवानां नवलौक्यो वा बृहस्पतिर्दाक्षायण्यदितिर्वादेवमानुष्टुभं जनिष्ठा एका दशगौरिवीतिर्वसूनां षट्प्रसुनवसिंधुक्षि
त्ययमेधोनदीस्तुतिर्जगत्तत्त्वावो ह्यौ स परेरावतो जरत्कर्णोऽग्राव्णोस्तौ दध्नप्रुषः स्यूमरद्विमर्गवो भारुतं तु पंचमी
जगती विप्रासो द्वितीया पंचम्याद्याश्च तिस्रो जगत्यो पश्यं सप्तसौ चीको भ्रिवैश्चानरो वासिर्वावाजं भरऽआग्नेयं त्वं
मिः ससिय इमा विश्वा विश्वकर्मा भौवनो वैश्वकर्माणं तु द्वितीया विराड्पाचक्षुषो यस्ते मन्यो मन्युस्तापसो मान्यं त्वं
त्वाद्या जगती त्वयामन्यो चतुर्जगत्यं तस्येन सप्त चत्वारिंशत्सावित्री सूर्यात्मदैवतमानुष्टुभं पंचभिः सोममस्तौ तप
राभिः स्वविवाहं सप्त दद्याद्देवान्परया सोमाको परया चंद्रमसं परानृणां विवाहं त्रयाशीः प्रायाः परादेहीति द्वेव
धूवासः संस्पृशानि दार्थे परायक्ष्मनाशिनी दंपत्यो नवो नवस्तिस्त्रो नृक्षरा गृभ्णामीति द्वे द्वे यदध्विना पूर्वाधोरचक्षुरि
ति त्रिष्टुभं स्तुष्टुसुरो बृहती पूर्वापरमिह प्रियमानः प्रजां जगत्यः ॥ ३ ॥
॥ हरिः ओम् ॥ (१०।६।४) देवानां नुवयं जाना प्रवोचाम विपन्यया । उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरेषु
ने ॥ ब्रह्मणस्पतिरेता संकुमारिऽइवाधमत् । देवानां पुर्व्येयुगे सतः सदर्जायत ॥ देवानां युगे प्रथमे सतः सदर्जायत ।
तदाशाऽअन्यजायंतं तु ज्ञानपदुस्परि ॥ भूर्जज्ञऽउत्तानपदो भुवऽआशाऽअजायंत । अदितेर्दक्षोऽअजायत दक्षाह
(१०।६।४) देवानामिति नवर्चस्य सूक्तस्य लौक्यो बृहस्पतिर्देवा अनुष्टुप् । (आंगिरसो वा बृहस्पतिः ऋषिर्दाक्षायण्यदितिर्वाजः पिका) ।

दितिः परी ॥ अदिर्द्विजनिष्टदक्ष्यादुहितात्वं । तां देवाऽअन्वजायंतमद्राऽअमृतवंधवः ॥ १ ॥ यद्देवाऽअदः
 सलिले सुसंख्याऽअतिष्ठत । अत्रावोच्यते तां मिवतीत्रोरेणुरपायत ॥ यद्देवाय तयो यथाभुवना न्यर्पिष्यत । अत्रास
 मद्राऽआगच्छमासुर्यै मजभर्तन ॥ अष्टौ पुत्रा सोऽअदिर्तेयं जातास्तान्वं सुपरि । देवाऽउपप्रेतैस्सप्तभिः परा मातोऽडमास्य
 त ॥ सप्तभिः पुत्रैर्दितिरुपप्रेत्यव्ययं । प्रजायै मयैव त्वत्पुनर्मतोऽडमाभरत ॥ २ ॥ (१०।६।५) जनिष्ठाऽउग्रः
 सहसेतुरायं मद्राऽओलिषो बहुलाभिमानः । अवधेन्निद्रं मरुतंश्चिदत्र मातायद्धीरं दुधनच्छनिष्ठा ॥ द्रुहो निरपत्ता पृशनी
 चिदैवैः पूरुशं सेनवावृष्टुऽइंद्रं । अभीवृतेव तामहापदेन ध्वांतात्प्र पित्वा दुदरन्तगर्भाः ॥ क्रुष्वाते पाद्वा प्रयजिगास्यव
 ध्वाजोऽउतये चिदत्र । त्वमिन्द्रसालावृकान्सहस्रमासन्दधि येऽअश्विनाववृत्त्याः ॥ समनातूर्णैरुपयासियुजमाना
 सत्या सुख्यायवक्षि । वृसाव्यामिन्द्रधारयः सहस्राश्विनोऽशूरददतु मेघानि ॥ मन्दमानऽक्रुतादधि प्रजायै सखिभिर्द्रि
 ऽइषिरेभिरर्थी । आभिर्हि मायाऽउपदस्य मागान्मिहः प्रतन्वाऽअवपुत्तमांसि ॥ ३ ॥ सनामाना चिह्नस्यो न्येऽसंकृ
 वाहृन्निद्रंऽउपसोयथानः । क्रुष्वैरगच्छः सखिभिर्निकमैः साकं प्रतिष्ठाह्वाजधंथ ॥ त्वजंघनमुचिं मखस्युदासंकृ
 ण्वानऽक्रुष्ये विमायं । त्वंचकर्थमनवेस्यो नान्यथो देवत्रान्जं सेवयानान् ॥ त्वमेतानि पप्रिये विना मे शानऽइंद्रदधिपे

(१०।६।५) जनिष्ठा इत्येकादशर्चस्य सूक्तस्य शाक्त्योगौ रिवीतिर्दिद्विबिष्टम् ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ३

॥ १७ ॥

गभस्तौ । अनुत्वादेवाः शर्वसामदत्युपरि बुभान्वनिनश्चकर्थ ॥ चक्रयदस्याप्स्वानिषत्तमोतदस्मैमध्विचच्छद्यात् । प
थिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधाऽओषधीषु ॥ अर्वादि यायेति यद्वदं त्यो जसो जातमुतमन्यऽएनं । मन्योरियाय
हृम्येष्टतस्थौ यतः प्रजुह्वदं द्रोऽस्य वेद ॥ वयः सुपर्णाऽउपसेदुरिद्रं प्रियमैधाऽऋषयो नाधमानाः । अपस्वांतमूर्ण
हि पार्थिवं चर्धुर्मुग्धं १ स्मान्निधये ववृद्धान् ॥ ४ ॥ (१०।६।६) वसूनां वाचकृषऽइयक्षन्धिया वायुश्चैव रोदस्योः ।
अर्वतो वायेरयिमंतः सातौ वनुं वाये सुश्रुणोऽधुः ॥ हवऽएषामसुरो नक्षतृद्यां श्रवस्यतामनसानि सतक्षां । चक्षाणा
यत्र सुविताय देवाद्यौ न वारैभिः कृणवंतस्वैः ॥ इयमेषाममृतानां गीः सर्वतां ताये कृपणं तरुणं । धियं च यज्ञं च सार्धं तस्ते
नौ धांतु वसव्यं १ मसामि ॥ आतत्तं दं द्रायवः पनंताभ्यऽऊर्वगोर्मंतं तितृत्सान् । स कृत्स्वं १ ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधा
रां बृहतीं दुर्दक्षन् ॥ शचीं वऽइंद्रमवसे कृणुध्वमनंतं दुमयंतं पृतन्यूर् । ऋभुक्षणं मुघवानं सुबुद्धिं भर्ता यो वज्रं नयं पुरु
धुरो जसा ॥ प्रतैरदृक् ऋणो यातवे पथः सिधो यद्वाजौऽअभ्यद्रवस्त्वं । प्रससससत्रेधा हि चक्रमुः प्रसुत्वरिणामति सिं
(१०।६।६) वसूनामिति पट्टचस्य सूक्तस्य शाच्यो गौरिबीतिरिद्राश्चिष्टुः । (१०।६।७) प्रसुवइति नवर्चस्य सूक्तस्य ग्रैयमेधः सिधुश्चिन्नद्योजगती ।

मंडलं १०

अनु. ६

॥ १७ ॥

ज्यसि ॥ द्विविस्वनोर्यतलेभूम्योपर्यनंतं शुष्ममुदियति भानुना । अत्रादिवप्रस्तनयंति बृष्टयः सिंघर्यदेति वृषभोनरोरु
 वत् ॥ अभित्वासिंधोश्चिशूभिन्नमातरौ वाश्राऽर्धतिपयसेवधेनवः । राजैवयुध्वानयसित्वमिस्त्रिचौयदासामग्रं प्रव
 ताभिर्नक्षसि ॥ इमं मे गेयमुने सरस्वतिश्चतुर्द्विस्तोमं स च तपारुण्या । अस्मिन्नयामरुद्धे धेवितस्तया जीकीये शृणु ह्यासु
 पोभया ॥ ६ ॥ (परिशिष्टं ॥ स्मितासिते सरिते यत्र संग्रहे तत्राप्नुता सो दिवमुत्पतंति । ये वै तन्वन्विष्टं जंति धीरास्ते ज
 नसोऽमृतत्वं भजंते ॥ १ ॥) तृष्टामयाग्रथमंयातवे सजः सुसत्वारसयाश्चेत्यात्या । अदब्धासिंधुरपसामपस्तमाभ्यानचि
 त्वासा रथं याभिरीयसे ॥ ऋजीत्येनीरुशतीमहित्वा परिज्रयां सिभरते रजांसि । अदब्धासिंधुरपसामपस्तमाभ्यानचि
 त्वासा रथं याभिरीयसे ॥ स्वश्वासिंधुः सुरथा सुवासो हिरण्ययी सुकृता याजिनीवती । ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्यताधि
 त्वासा रथं याभिरीयसे ॥ सुखं रथं युजोसिंधुरश्विनं तेन वाजं सनिपदस्मिन्नाजौ । महान्हास्यमहिमापनस्य तेदब्धस्य स्वयं
 वस्ते सुभगो मधुवृधं ॥ सुखं रथं युजोसिंधुरश्विनं तेन वाजं सनिपदस्मिन्नाजौ । महान्हास्यमहिमापनस्य तेदब्धस्य स्वयं
 शसो विरश्चिनः ॥ ७ ॥ (१०।६।८) आवऽऽकंजसऽऽकृजोऽव्युष्टिर्विद्रं मरुतोरोदसीऽअनकन । उभेयथानोऽअह
 नीसचा मुवासदः सदो वरिवस्यातंऽअद्भिदा ॥ तदुश्रेष्ठं सर्वनं सुनोतनात्यो न हस्तं यतोऽअद्रिः सोतरि । विदद्भ्योऽर्थोऽअ
 भिमूर्तिपां स्य महोरायो चित्तरुते यद्वैतः ॥ तदिच्छस्य सर्वनं विवेरपो यथा पुरामनं वेगा तुमश्रेत । गोऽअर्णसित्वाष्ट्रेऽअ

(१०।६।८) आवकंजस इत्यष्टवर्षस्य सूक्तस्यैरावतो जरत्कर्णः स पर्षो प्रावाणो जगती ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ३

॥ १८ ॥

श्वनिर्णिजिप्रमध्वरेष्वध्वरोऽअशिश्रयुः ॥ अपहतरक्षसोभंगरावतःस्कभायतनिर्क्रतिसेधतामतिं । आनोरगिसर्वी
रंसुनोतनदेवाव्यंभरतश्लोकमद्रयः ॥ दिवश्चिदावोमवत्तरेभ्योविभ्यनाचिदाश्वपस्तरभ्यः । वायोश्चिदासोमरभस्त
म्यंमध्वाघोषयतोऽअभितोमिथस्तुरः ॥ ८ ॥ भ्रंतुनोयशसःसोत्वंधसोआवाणोवाचादिवितादिवित्मता । नरोयत्रदुहुतेका
नायकनरोहव्यानमर्जयंतऽआसभिः ॥ सुन्वतिसोमरथिरासोऽअद्रयोनिस्वरसंगविपोदुहंतिते । दुहंत्यूधरूपसेच
यधाम्नेवसुवसुवःपार्थिवायसुन्वते+ ॥ ९ ॥ (१०।६।९) अश्वमुपोनवाचाप्रुषावसुहविष्मंतोनयज्ञार्विजानुषः । वामंवांमवोदिव्या
तंनब्रह्माणमहसगणमस्तोष्येषानशोभसे ॥ श्रियेमर्यासोऽअंजोऽरकृण्वतसमारुतंनपर्वीरतिक्षपः । दिवस्पुत्रासऽ
एतानयेतिरऽआदित्यासस्तेऽअक्रानवावृधुः ॥ प्रयेदिवःप्रुथिव्यानवर्हणात्मनरिरिञ्चेऽअञ्चासूर्यः । पाजस्वतो
नवीराःपनस्ववोरिशादंसोनमर्याऽअभिर्द्यवः ॥ युष्माकंवृधुऽअपांनयामनिविधुर्यतिनमहीश्रथ्यति । विश्वप्सुर्यशो
ऽअर्वागंयसुवःप्रयस्वतो नसत्राचऽआर्गत ॥ ययंध्रुयुजोनरश्मिभिर्व्योतिष्मंतोनभासाव्युष्टिषु । श्येनासोनस्वयं
शसोरिशादंसःप्रवासोनप्रासितासःपरिपुषः ॥ १० ॥ प्रयद्धहध्वेमरुतःपराकाद्ययमहःसंवरणस्वस्वः । विद्वानासो
(१०।६।९) अश्वमुपइत्यष्टर्चस्यसूक्तस्यभार्गवःस्थूमरश्मिरुतखिप्रुपंचमीजगती ।

॥ १८ ॥

मंडलं १०

अनु. ६

वसवो रात्र्यस्याराचिद्वेपः सन्ततयुयोत ॥ यऽवृद्धचिद्यज्ञेऽअर्चरेष्ठा मरुद्भ्यो न मारुदो ददाश्रत् । रेवत्सवयो दधते सुवीरं स
 देवानामपि गोपीथेऽअस्तु ॥ ते हियज्ञे पुत्रियासऽक्रमऽआदित्ये नान्नाशं भविषाः । ते नो वं तुरथ वूर्मनी पांमहश्च यामे
 न्नध्वरे च कानाः ॥ ११ ॥ (१०।६।१०) विप्रः सो न मन्मभिः स्वाद्यो देवा व्योऽनयज्ञैः स्वमसः । राजानो न चित्राः
 सुसंहशः क्षितीनां न मर्याऽअरेपसः ॥ अग्निनेये न्नार्जसारुक्मवक्षसो वाता सो न स्वयुजः सद्यऽऽकृतयः । प्रज्ञातारो न ज्ये
 ष्ठाः सुनीतयः सुशमीणो न सोमाऽऽकृतयते ॥ वाता सो न ये धुने योजि गलवो ग्रीनां न जिह्वा विरोकिणः । वर्मण्वतो न यो
 धाः शिमी वंतः पितृणां न शंसाः सुरातर्यः ॥ रथानां न ये पुराः सनाभयो जिगीवां सो न शूराऽअभिर्धवः । वुर्यवो न मर्याऽष्ट
 तपुर्भो भिस्वतीरोऽअर्कं न सुष्टुभः ॥ अश्वो सो न ये ज्येष्ठासऽआशवा विधिष्वो न रथ्यः सुदानवः । आपो न निश्चेरुर्दभिर्जि
 गलवो विश्वरूपाऽअंगिरसोऽनसामभिः ॥ १२ ॥ आवाणो न सरयः सिंधुमातरऽआदितिरासोऽअद्र्यो न भिर्व्यंश्चितन् ।
 शिशूलानकीळ्यः सुमातरो महाग्रामो न यामं नुत त्विपा ॥ उपसां न केतवो ध्वरश्रियः शुभं यवो नां जिभिर्व्यंश्चितन् ।
 सिंधवो न ययियो न्नार्जहृष्टयः परावतो न योजे नानि मभिरे ॥ सुभागा न्नो देवाः कृणुता सुरलो न्मान् सो वृन्मरुतो वा वृधा

सिंधवो न ययियो न्नार्जहृष्टयः परावतो न योजे नानि मभिरे ॥ सुभागा न्नो देवाः कृणुता सुरलो न्मान् सो वृन्मरुतो वा वृधा

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ३

॥ १९ ॥

मंडलं १०

अनु. ६

॥ १९ ॥

नाः । अधिस्तोत्रस्यस्यस्यगातसनाद्धिर्वोरलधेयानिसंति ॥ १३ ॥ (१०।६।११) अपश्यमस्यमहुतोमहित्वम
मर्त्यस्यमर्त्यसुविधु । नानाहनुविभृतेसंभरेतेऽअसिन्वतीवप्सतीभूर्यत्तः ॥ गुहाशिरोनिहितमृधगक्षीऽअसिन्वन्न
सर्पदुर्वीः । ससनपुक्रमविदच्छुचंतैरिहिसंरित्युत्तानहस्तानमसार्धविधुः ॥ प्रमातुःप्रतरंगुह्यमिच्छन्कुमारोनवीरुधः
ऽअत्ति । नाहंदेवस्यमर्त्यश्चिकेताग्निरंगविचेताः सप्रचेताः ॥ योऽअस्माऽअन्नतुष्वाइंदधात्याज्यैर्धृतैर्जुहोतिपुष्यति ।
तस्मैसहस्रमक्षभिर्विचक्षेत्रैर्विश्वतःप्रत्यङ्मुखः ॥ किंदेवेषुत्यजऽएनश्चकथामेपच्छामिनुत्वामविद्वान् । अर्कोळन्की
ळन्हरिरत्तवेदन्विपर्वशश्चकर्तृगामिवासिः ॥ विष्वोऽअश्वान्युयुजेवनेजाऽऽकृतीतिभीरशनाभिर्गृभीतान् । चक्ष
देमित्रोवसुभिःसुजातुःसमानृधेपर्वभिर्वाविधानः ॥ १४ ॥ (१०।६।१२) अग्निःसप्तिवाजंभरंददात्यग्निर्वीरंश्च
त्यैकर्मनिःष्ठां । अग्नीरोदसीविचरत्समन्जन्निर्वीरकुक्षिंपुरंधिं ॥ अग्नेरसःसमिदंस्तुभद्राग्निर्महीरोदसीऽआवि
वेश । अग्निरेकंचोदयत्समत्स्वमिदृत्राणिदयतेपुरुणि ॥ अग्निहृत्यंजरतुःकर्णमावाग्निर्द्व्योनिरंदहुज्जरुधं । अग्निरत्रि
(१०।६।११) अपश्यमिति सप्तर्चस्यसूक्तस्यौचीकोमिरभिस्त्रिष्टुप् (वैश्वानरोमिर्वाजंभरःसप्तिरितीमावृषीपाक्षिकौ) । (१०।६।१२)
अग्निःसप्तिमिति सप्तर्चस्यसूक्तस्यौचीकोमिरभिस्त्रिष्टुप् (वैश्वानरोमिर्वाजंभरःसप्तिरितीमावृषीपाक्षिकौ) ।

[illegible]

॥ वाचस्पतावृन्धना ॥ इन्द्रिणद्विव्याविराइल्पा ।

(2013123)

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ३

॥ २० ॥

मंडलं १

अनु. ६

॥ २० ॥

हवनानिजोपद्विश्वशंभुरवसेसाधुकर्मा ॥ १६ ॥ (१०।६।१४) चक्षुषःपितामर्नसाहिधीरोघतमेनेऽअजनन्नमा
ने । युदेदंताऽअददहंतपूर्वऽआदिह्यावापृथिवीऽअप्रथेतां ॥ विश्वकर्माविर्मनाऽआदिह्याधाताविधातापरमोत्सं
निविश्वा । योदेवानांमधाऽएकएवतंसंप्रभ्रंभुवनायंत्यन्याः ॥ योनःपिताजनितायोविधाताधामानिवेदभुवना
भना । असूतैस्सूतैरजसिनिपत्तेभ्यस्तानिसमकृण्वन्निमानि ॥ पुरोदिवापरऽएनापृथिव्यापुरोदेवेभिरसुरैर्यदस्ति । कंस्य
द्रभप्रथमंदध्रऽआपोयत्रदेवाःसमपश्यंतविश्वे ॥ तमिद्वर्भप्रथमंदध्रऽआपोयत्रदेवाःसमगच्छंतविश्वे । अजस्यनाभा
वध्येकमपितंयस्मिन्विश्वानिभुवनानितस्थुः ॥ नतंविदाथयऽइमाजनानान्यद्युष्माकमंतरंवभूय । नीहारेणप्रावृता
जल्प्याचासुतृपऽउक्थशासंश्चरति ॥ १७ ॥ (१०।६।१५) यस्तेमन्योर्विधद्वजसायकसहऽओजःपुष्यतिविश्वमा
नपृक् । साह्यामदासमार्यत्वयायुजासहस्कृतेनसहसासहस्वता ॥ मन्युरिद्रौमन्युरेवासदेवोमन्युर्होतावरुणोजातवै
दाः । मन्युर्विशऽईळतेमानुपीर्याःपाहिनोमन्योतपसासजोपाः ॥ अभीहिमन्योतवसस्तवीयान्तपसायुजाविर्जहिश
(१०।६।१४) चक्षुषइतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यभोवनोविश्वकर्माविश्वकर्मात्रिष्टुप् । (१०।६।१५) यस्तेमन्यवितिसप्तर्चस्यसूक्तस्य
तापसोमन्युर्मन्युस्त्रिष्टुपायाजगती ।

त्रू । अमित्रहावृत्रहादस्यहाचविश्ववस्यभरात्वनः ॥ त्वं हि मन्योऽअभिभूत्यो जाः स्वयंभूरामोऽअभिमातिपा
 हः । विश्वचर्षणिः सहुरिः सहवानस्मास्वोजः पृतनासुधेहि ॥ अभागः सन्नपरेतोऽअस्मितवक्रत्वातविपस्यप्रचेतः । मन्यो
 तंत्वामन्योऽअक्रुजिहीष्ठाहंस्वातून्वैलेदयामेहि ॥ अयंतेऽअस्म्युपमेह्यवार्डप्रतीचीनः सहुरेविश्वघायः । जुहोमि ते ध
 वज्रिन्नभिमाववृत्स्वहनावदस्यूतवोऽध्यापेः ॥ अभिप्रैहिदक्षिणतोभवामेधावृत्राणिजघनावृत्ररि । जुहोमि ते ध
 वज्रिन्नभिमाववृत्स्वहनावदस्यूतवोऽध्यापेः ॥ १०।६।१६ ॥ त्वयामन्योसुसर्थमारुजंतोहर्षमाणासोद्युपिता
 रुणमध्वोऽअग्रमुभाऽवर्षांश्चुप्रथमार्षिवाव ॥ १८ ॥ (१०।६।१६) अग्निरेवमन्योत्वपितः सहस्वसेनानीर्नः सह
 मेरुत्वः । तिम्रपवऽआर्युधासंशिशानाऽअभिप्रयन्तुनरोऽअशिरूपाः ॥ अग्निरेवमन्योऽअभिमातिमस्मेरुजन्मन्त्र
 रेहृतऽपधि । हृत्वायशन्नन्विभजस्ववेदुऽओजोमिमानोविमृधोनुदस्व ॥ सहस्वमन्योऽअभिमातिमस्मेरुजन्मन्त्र
 मणन्प्रेहिशन्नू । उग्रतेपाजोनन्वारुरुभ्रेवशीवशोनयसऽएकजत्वं ॥ एकोवहनामसिमन्यवीक्रितोविश्वयुधयेसं
 विश्वाधि । अकृतरुक्त्वयायुजावयंद्यमन्तंघोषंविजयार्यकृणमहे ॥ विजेपुक्रदिद्रडवानवव्रवोऽस्माकमन्योऽअधिपा
 भवेह । प्रियतेनामसहुरेगुणीमसिविद्वातमुत्संयतऽआवर्ध ॥ आभूत्यासहजावज्रसायकसहोविभर्त्यभिभूतऽउत्त
 रं । कृत्वानोमन्योसहमेवोधिमाहाधनस्यपुरुहूतसंसृजि ॥ संसृष्टंघनंभयंयसमाकृतमस्म्यं दत्तांवरुणश्चमन्युः । भि

(१०।६।१६) त्वयामन्यविति सप्तचस्यसूक्तस्य तापसोमन्युर्मन्युर्जगती आद्यास्ति द्वात्रिंशद्भुजः ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ३

॥ २१ ॥

युंदधानाहृदयेषु शत्रवः पराजिता सोऽअपनिर्लयतां ॥ १९ ॥ (१०।७।१) सत्येनोत्तंभिताभूमिः सूर्येणोत्तंभिताद्यौः ।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठतिद्विषोमोऽअधिश्चितः ॥ सोमेनादित्याबलिनः सोमेनयुधिर्वीमही । अथोनक्षत्राणामेषामुपस्ये
सोमऽआर्हितः ॥ सोमं मन्यते पवित्रान्यत्सं पिबत्योषधिं । सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ॥ आच्छाद्विधा
नैरुपितो बार्हतैः सोमरक्षितः । ग्राव्यामिच्छुण्वन्तिष्ठसिनतैऽअश्नाति पार्थिवः ॥ यत्त्वादेव प्रपिबंति तत्तुऽआप्यायसे
पुनः । वायुः सोमस्य रक्षितासमानां मासऽआकृतिः ॥ २० ॥ रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसीन्योचनी । सूर्यायाभद्रमि
द्वासो गार्थयैति परिष्कृतं ॥ चित्तिराऽउपवर्हणं च क्षुराऽअभ्यंजनं । द्यौर्भूमिः कोशऽआसीद्यदयात्सूर्यापतिं ॥ स्तोमो
ऽआसन्प्रातिधर्यः कुरीरिच्छंदऽओपशः । सूर्यायाऽअश्विनो वराग्निरासीत्पुरोगवः ॥ सोमो वधयुरभवद्विनास्तामभा
वरा । सूर्यायत्येवं शंसंतीमनसासविता ददात् ॥ मनोऽअस्याऽअनऽआसीद्द्वारो रसीदुत छुदिः । शुक्रावन्नुद्ग्राहवास्तां
सममेनुवाकेषदसूक्तानि । (१०।७।१) सत्येनेति समचत्वारिंशदचस्यसूक्तस्य सूर्यासावित्रीऋषिकापंचानां सोमो देवता तत एकादशानां
सूर्यो विवाहः समदश्या देवाः अष्टादश्याः सोमाकौ एकोनविंश्याश्चंद्रमाः ततो नवानां नृणां विवाहं त्रयाश्वीः प्रायाः ततो द्वयोर्वधूवो सो देवता
एकत्रिंश्या यस्मद्वाशिष्ठानामृचां सूर्यासावित्री अनुष्टुप्चतुर्दशी एकोनविंश्यादिति सप्तयोर्विंशी चतुर्विंशी पांडुरीषदत्रिंशी सप्तत्रिंशी चतुश्च
त्वारिंश्याश्च त्रिष्टुभः अष्टादशी सप्तविंशी त्रिचत्वारिंश्याश्च जगलः चतुर्विंश्या रोवृहती ।

मंडलं १०

अनु. ७

॥ २१ ॥

[illegible]

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ३

॥ २२ ॥

धाममुतस्करं । यथेयमिन्द्रमीढुःसुपुत्रासुभगासति ॥ २४ ॥ पृषात्वेतो नयतु हस्तगृह्याभ्विनात्वा प्रवहतां रथेन । गृहा
नाच्छगुहपत्नीयथासौ विशिनी त्वं विदथ मावदसि ॥ इह प्रियं प्रजयति समृद्धतामस्मिन् गृहे हर्षं पत्या यजागृहि । पुना
पत्या तन्वं संसृज स्वाधाजिघ्री विदथ मावदथः ॥ नीललोहितं भवति कृत्यासक्तिर्व्यज्यते । एधंतेऽअस्याज्ञातयः पतिं । पुना
वैधेषु बध्यते ॥ परदिहिशामुल्यं ब्रह्मभ्यो विभजावसु । कृत्यपापद्वती भूत्या जाया विशते पतिं ॥ अश्रीरातनू भवतिरु
शती पापयामुया । पतिर्यद्वध्वोऽवासांसास्वमंगमभिधित्सते ॥ २५ ॥ येष्वध्वं द्रवहुतं यक्ष्मायं तिजनादनु । पुनस्ता
न्यश्चियदेवानयंतु यतऽआगताः ॥ माविदन्परिपंथिनो यऽआसीदंतिदपती । सगोभिर्दुर्गमतीतामर्पद्धान्स्वरतयः ॥
समंगलीरियंवधुरिमांसमेतपश्यत । सौभाग्यमस्यैदुत्वायाथास्तं विपरेतन ॥ तृष्टमेतत्कटुकमेतदपाष्ठवद्विषवज्ञैतद
चैवे । सूर्यायो ब्रह्माविद्यात्सऽइद्धाधूयमर्हति ॥ आशसंनं विशसं नमथोऽअधिविकर्तनं । सूर्यायाः पश्यरूपाणि तानि
ब्रह्मा तु शुं धति ॥ २६ ॥ गृभ्णामि ते सौभगत्वायु हस्तं मया पत्या जुरदं द्विर्यथासः । भगोऽअर्यमांसवितानु रं धिमह्यं त्वा
दुर्गहं पत्या यदेवाः ॥ तां पूषन्छिवतं मा मेरय स्वयस्यां वीजं मनूष्या इवपति । यानऽऊरू उचशती विश्रया ते यस्यामृशंतः
प्रहरामशेषं ॥ तुभ्यमग्ने पर्यवहन्सूर्यावहुतनांसह । पुनः पतिभ्यो जायां दाऽअग्ने प्रजयांसह ॥ पुनः पत्नीमग्नि रं दादा
युषासहवर्चसा । दीर्घायुरस्यायः पतिर्जीवातिशरदः शतं ॥ सोमः प्रथमो विविदे गंधर्वो विविदऽउत्तरः । तृतीयोऽ

मंडलं १८

अनु. ७

॥ २२ ॥

अग्निष्टेपतिस्तुरीयस्तेमनुष्यजाः⁺ ॥ २७ ॥ सोमोददद्गंधर्वायंगंधर्वाददद्गन्धे । रुधिचपुत्रांश्चादादृग्निर्मह्यमथोऽह
 मां ॥ इहैवस्समाविष्यौष्टं विश्वमायुर्व्यंश्रुतं । कीळंतौपुत्रैर्नष्टृभिर्मोदमानोस्वगेहे⁺ ॥ आर्नःप्रजांजनयतुप्रजापतिरा
 जरसायुसर्मेनक्त्वर्थमा । अदुर्मगलीःपतिलोकमाविशशंनोभवद्विपदंश्चतुष्यदे ॥ अघोरचक्षुरपतिद्वयेधिशिवाप
 शुभ्यःसुमनोःसुवर्चोः । वीरसूद्वेयकामास्योनाशंनोभवद्विपदंश्चतुष्यदे ॥ इमांत्वामिदमिद्वःसुपुत्रांसुभगांकृणु ।
 दशास्यांपुत्रानाधेहिपतिमेकादशंकीधि ॥ सन्वाज्जीव्यशुरेभवसन्वाज्जीव्यश्चांभव । ननादरिसन्वाज्जीभवसन्वाज्जीअ
 धिदेष्टुषु ॥ समंजतुविश्वेदेवाःसमाणेहृदयानिनौ । संमतरिश्वासंधातासमुददृष्टीदधानुनौ ॥ २८ ॥ परिशि
 ष्टं ॥ अविधवाभववपुर्णिश्रुतंसांग्रंतुसुग्रता । तेजस्वीचर्यशस्वीचधर्मपत्नीपतिव्रता ॥ जनयद्बहुपुत्राणिमाच
 दुःखंलभेत्क्वचित् । भर्तातेसोर्मपानित्यंभवेद्धर्मपरायणः ॥ अष्टपुत्राभवलंचसुभगांचपतिव्रता । भर्तुश्चैवपितुश्चांलु
 हृदयानंदिनीसदा ॥ इन्द्रस्यतुयथेद्राणीश्रीधरस्ययथाश्रिया । शंकरस्ययथागौरीतद्भर्तुरपिभर्तारि ॥ अत्रैर्यथानुसू
 यास्याद्दुःखंलभेत्क्वचित् । कौशिकस्ययथासतीतथात्वमपिभर्तारि ॥ भ्रूवैधिपोष्यामयिमह्यंत्वादाद्बहुस्पतिः ।
 मयापत्याप्रजावतीसंजीवशरदःश्रुतं ॥ इत्यष्टमाष्टकेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ४

॥ २३ ॥

एकोनषष्ठ्यायेवर्गाः २८ सूक्तानि १४ ऋचः १४८ ॥ त्यागः ॥ देवेभ्यः ९ इंद्राये १७ नदीभ्यः ९ प्रावभ्यः ८ मरुभ्यः १६ अग्नयः १४ विश्वकर्मणः १४ मन्यवः १४ सोमाये ५ सूर्यासावित्र्याः ११ देवेभ्यः सोमाकर्माभ्याः चंद्रमसः सूर्यासावित्र्याः ९ वध्रुवाससइः २ दंपती-
राजयक्ष्मसइः सूर्यासावित्र्याः १६ ॥ इत्यष्टमेतृतीयः ॥

विहित्र्यधिकैद्रोवृषाकपिर्द्राणींद्रश्चसमूदिरेपाङ्कुरक्षोहणंपंचाधिकापायुराग्नेयंराक्षोक्षंचतुरनुष्टुवंतंहविरैको
नांगिरसोमूर्धन्वान्वामदेव्योवासौर्वैश्वानरीयमिंद्रस्तवह्यनारेणुःपंचम्यैद्रासोमीसहस्रशीर्षपोळशनारायणः
पौरुषमानुष्टुभंत्रिष्टुवंतुंसंजागृवद्भिःपंचोर्नारुणोवैतहव्यआग्नेयंयज्ञस्यशार्यातोमानवोवैश्वदेवंतुजागतंमहि
तान्वःपार्थ्यैःप्रस्तारपाङ्कःपुरस्ताद्धृत्यंतत्रयोदश्युपाद्येचानुष्टुभौनवम्यक्षरैःपङ्क्तिरेकादशीन्यंकुसारिणीप्रितेष
॥ हरिःॐम् ॥ (१०।७।२) विहिसोतोरसृक्षतुर्नंद्रैवमंसत । यत्रामदद्गुपाकपिर्त्यःपुष्टेपुमत्सखाविश्वस्मा
(१०।७।२) विहिसोतोरिति त्रयोविशत्यृचस्यसूक्तस्यआद्याष्टम्येकादशीचतुर्दशीनामेकोनविश्यादिततसृणांचैद्रऋषिःसप्त
इंद्राणीवृषाकपीनांविभागशोदेवतात्वंकैचिन्मन्यंतेतद्भाष्यकारादिविरुद्धं ।

मंडलं १०

अनु. ७

॥ २३ ॥

दिन्द्रउत्तरः ॥ परार्होद्ग्रावसिष्ठाकपेरतिव्याधिः । नोऽअहुप्रविंदस्यन्यत्र सोमपीतयेविश्वं ॥ किमयंत्वांघ्रपाकपिथश्च
कारुहरीतोमृगः । यस्मादइरस्यसीद्रुन्वं चोषापुष्टिमद्वसुविश्वं ॥ यमिंत्वंघ्रपाकपिं प्रियमिंद्राभिरक्षति । भवान्नस्यजं
भिपदपिकर्णैर्वराह्युविश्वं ॥ प्रियातृष्टानिमेकापित्वीकाव्यदूढपत । शिरोन्वस्यराविपंसंगदुद्धृतैमुवंविश्वं ॥ १ ॥
नमत्स्त्रीभुसत्तरानसुयाद्यंतराभुवत् । नमत्प्रतिच्यवीयीनीनसक्थ्युद्यमीयसीविश्वं ॥ उवेऽअंवसुलाभिकेयथैवांगभं
विष्यति । भसनम्भेऽअंवसविश्वेशिरोमेधौवह्न्यतिविश्वं ॥ किंसुवाहोस्वगुरेषुष्टुष्टोपुजाधने । किंरूपलि
नस्त्वमभ्यमीपिव्वापाकपिंविश्वं ॥ अवीरामिवमामथशरारुरुभिर्मन्यते । एताहमस्मिर्वीरिणींद्रपलीमस्तसेखावि
श्वं ॥ संहोत्रंस्पर्शनारीसमनुवावगच्छति । वेधाऽऋतस्थवीरिणींद्रपलीमहीयतेविश्वं ॥ २ ॥ इन्द्राणीमासु
नारिपुसुभर्गामहमंत्रं । नहस्याऽअपरंचनजरसामरेतेपतिविश्वं ॥ नाहमिंद्राणिरणसख्युर्घ्रपाकपेर्हते । यस्ये
दमयंहविः प्रियंद्रेवेपुगच्छतिविश्वं ॥ वृषोकपायिरेवतिसुप्तुऽआदुसुष्ठुपे । घसत्तुऽइंद्रऽउक्षणः प्रियंकाचित्करं ह
विश्वं ॥ ३ ॥ उक्ष्णोहिमे पंचदशासाकपचतिविश्वं । एताहमग्निपीवऽइदुभाकुक्षीपृणंतिमेविश्वं ॥ ब्रुपभोनतिग्मं
गोतयथेपुरोरुवत् । मंथस्तऽइंद्रशंहदेयंतेसुनोतिभावयुविश्वं ॥ ३ ॥ नमस्येयस्यरंवेंतरासक्थ्याइकपद्धिः ॥
यस्यरोमशोनिपेदुपोविजंभेतविश्वं ॥ नमस्येयस्यरोमशोनिपेदुपोविजंभेत । सेदीशेयस्यरंवेंतरासक्थ्याइकपद्धिः ॥

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ४

॥ २४ ॥

मंडलं १८

अनु. ७

॥ २४ ॥

अयमिन्द्रवृषाकर्कपिः परस्वतंहृतं विदत् । असिसुनानवचरुमादेयस्यानुऽआर्चितं विश्वं ॥ अयमैमिविचारकशद्विचिन्वन्दा
समार्थं । पिवामिपाकसुर्वनोभिधीरमचाकशं विश्वं ॥ धन्वचयत्कुंतत्रचकतिस्वित्तावियोजना । नेदीयसोवृषाकपे
स्तेमहिगहोऽउपविश्वं ॥ पुनरोहिवृषाकपेसुविताकल्पयावहै । यऽएपः स्वमनंशनोस्तेमेपिपथापुनर्विश्वं ॥ यदुदचोवृ
षाकपेगहमिन्द्राजंगतन । कऽस्यपुल्वधोमगः कर्मगन्जनयोपनोविश्वं ॥ पशुह्वनाममानवीसाकंससूवविशति । भद्रंभ
ल्यस्याऽअभयस्याऽउदरमामयद्विश्वं ॥ १०।७।३ ॥ रक्षोहणंवाजिनमार्जधमिभिन्नप्रथिष्ठमुपयामिशर्म । शिशो
नोऽअग्निः ऋतुभिः समिद्धः सनोदिवासरिपः पातुनक्तं ॥ अयोदंष्ट्रोऽअर्चिर्पायातुधानानुपस्पृशजातवेदः समिद्धः । आजि
ह्यामूरदेवात्रभस्वक्रव्यादोवृक्तव्यापिधत्स्वासन् ॥ उभोभयाविश्वपुर्धेहिदंष्ट्राहिंस्रः शिशानोवरंपरंच । उतांतरिक्षेपार्ष
याहिराजन्जभैः संधेह्याभियातुधानान् ॥ यशैरिपूः सन्नममानोऽअग्नेवाचाशल्याऽअशनिभिर्दिहानः । ताभिर्विध्यहृद
मेयातुधानान्पतीचोवाहन्पतिभङ्ग्येषां ॥ अग्नेत्वचंयातुधानस्यभिर्धिहिंस्वाशनिर्हरसाहत्वेन । प्रपर्वाणिजातवेदः शृ
णीहिक्रव्यात्कविष्णुर्विचिनोतुवृक्णे ॥ ५ ॥ यन्नेदानीपश्यसिजातवेदस्तिष्ठतममऽउतवाचरंतं । यद्वांतरिक्षेपुथिभिः पतै
तंतमस्ताविध्यशर्वाशिरानः ॥ उतालंबंस्पृणुहिजातवेदऽआलेभानाहृष्टिभिर्यातुधानात् । अग्नेपूर्वोनिजहिशोऽुचानऽ
(१०।७।३) रक्षोहणमितिपंचविंशत्यृचस्यसूक्तस्यभारद्वाजः पायूरक्षोहाभिस्त्रिष्टुप् अंसाश्चतस्रोऽनुष्टुभः ।

आमादुःखिचक्रास्तमदंत्वेनीः ॥ इहप्रब्रूहियतमः सोऽअग्नेयोयातुधानोयऽइदं कृणोति । तमारभस्वसमिधायविष्ठनच
 क्षसश्चक्षुर्पेदधैन ॥ तीक्ष्णेनाग्नेचक्षुपारक्षयज्ञप्रांचवसुभ्यः प्रणयप्रचेतः । हिंस्रक्षास्यभिशोऽनुचानमात्वादभन्यातुधा
 नानृचक्षः ॥ नृचक्षारक्षः परिपश्यविश्रुतस्यत्रीणिप्रतिशृणीह्यग्रा । तस्याग्नेपटीर्हरसाशृणीहित्रेधामूलयातुधानस्यवृ
 श्च ॥ ६ ॥ त्रिययातुधानः प्रसितितऽएत्तुतयोऽअग्नेऽअनृतेनहति । तमर्चिपस्फूर्जयन्जातवेदः समक्षमेनंगुणतेनिवृ
 क्षि ॥ तदग्नेचक्षुः प्रतिधेहिरेभेशफारुजयेनपश्यसियातुधानं । अथर्ववल्ज्योतिपादैव्येनसत्यं धूर्वतमचित्तन्योप ॥ यद
 ग्नेऽअद्याभिथुनाशपातोयद्वाचस्तृष्टंजनयंतेभाः । मन्योर्मनसः शरव्याऽजायतेयातयाविध्यहृदयेयातुधानान् ॥ पराश्र
 णीहितपसायातुधानान्पराग्नेरक्षोर्हरसाशृणीहि । परार्चिपामूर्देवाञ्छृणीहिपरामृतपौऽअभिशोऽनुचानः ॥ पराद्य
 देवावृजिनंशृणुप्रत्यगेनंशपथायंतुष्टाः । वाचास्तेनंशरवऽकच्छंतुमर्मेन्विष्यस्येतुप्रसितिंयातुधानः ॥ ७ ॥ यःपौ
 रुषेयेणक्रविपासमङ्गेयोऽअभ्येनपुशुनायातुधानः । योऽअभ्यायाभरतिक्षीरमग्नेतेपांशीर्पाणिहरसापिवृश्च ॥ संवत्स
 रीणंपयऽउच्चियास्तस्यमाशीघ्रातुधानोनृचक्षः । प्रीयूपमग्नेयतमस्तिवृत्सात्तंप्रत्यंचमर्चिपविध्यमर्मेन ॥ विपंगवा
 यातुधानाः पिवंत्वावृश्चयंतामदितेयदुरेवाः । परैरान्देवः संविताददातुपराभागमोर्पधीनांजयतां ॥ सनादग्नेमृणसि
 यातुधानान्नत्वारक्षांसिपृतनासुजिग्युः । अनुदहसहर्मूरान्कव्याद्रोमातेहृत्यामुक्षतदैव्यायाः ॥ त्वनोऽअग्नेऽअध

रादुर्दक्तात्पञ्चादुत्तरं क्षापुरस्तात् । प्रति ते तेऽजरास्तपिष्ठाऽअघशंसोऽुचतोदंहुतु ॥ ८ ॥ पञ्चात्पुरस्तादधरा
दुर्दक्तात्कविः काव्येन परिपाहिराजन् । सखे सखायमजरौजरिग्नेशे मर्तोऽअमर्त्यस्त्वनः ॥ परि त्वाग्नेपुरव्यं विप्रसह
भिर्क्रुष्टिभिः ॥ धषद्वर्णदिवेदे हुतारं भंगरावतां ॥ विषेण भंगरावतः प्रतिष्मरक्षसोदह । अग्नेतिग्मेन शोचिषा तपुरग्रा
रः शृणीहि विभ्रतः प्रति । यातुधानस्य रक्षसो वलं विरुजवीर्यं ॥ ९ ॥ (१०।७।४) हविष्पातं मजरस्वविदं दिविस्पृ
श्याहुतं जुष्टमग्नौ । तस्य भर्मेणो भुवनाय देवा धर्मेण कंस्वधया पप्रथंत ॥ गीर्णं भुवनं तमसा परब्रह्ममाविः स्वरं भवज्जातेऽअ
भानुना पृथिवीं धाम ते माता नरोदसीऽअंतरिक्षं ॥ देवेभिर्न विपितो यज्ञियैर्भिरग्निस्तोषाण्युजरं वृहंतं । यो
जीत्वरं स्थाजगद्यच्छान्नमग्निरङ्गो ज्ञातवैदाः ॥ यो होतासीत्पथमो देव जुष्टोऽयं समां जन्नाज्येनावृणानाः । सर्पत
भिर्गीर्भिरुक्थैः सयज्ञियोऽअभवोरोदसि प्राः ॥ १० ॥ मूर्धा भुवोर्भवति नक्तमग्निस्ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् । मा
(१०।७।४) हविष्पातमिलेकोनविंशत्युचस्य सूक्तस्य गिरसो मूर्धन्वान् सूर्यवैश्वानरौ त्रिष्टुप् । (मरीचिः—हविष्पातं द्विदैवत्यसौ र्य-
वैश्वानरीयकमिति द्वेदेवते अत्र । तेन सूर्यवैश्वानर इत्यग्नेर्गुण इति वदंतः परास्ताः) ।

यामतुयज्ञियानामे तामपोयचर्णिश्चरतिप्रजानन् ॥ दृशेन्योयोर्महिनासमिद्धोरोचतद्विवियोननिर्विभावा । तस्मिन्न
स्रौसूक्त्याकेनदेवाह्वविर्विश्वऽआजुहवुस्तपाः ॥ सक्तृवाकंयथममादिदृग्निमादिद्धविरजनयंतदेवाः । सऽर्षांय
ज्ञोऽअभयत्तनपास्तंघावैर्दुतपृथिवीतमर्षः ॥ यंदेवासोर्जनयंतार्थ्यसिन्नाजुहवुर्धुवनानिविश्वा । सोऽअर्चिंपापृथिवीं
ज्ञोऽअभयत्तनपास्तंघावैर्दुतपृथिवीतमर्षः ॥ स्तोमेनहिद्विविदेवासोऽअग्निमजीजनच्छक्तिभीरोदसिमां । तमूऽअकृ
द्यामतेमामृज्यमानोऽअतपन्महित्वा ॥ यंदेनमदधुर्थ्यज्ञियासोद्विविदेवाःसूर्यमादित्यं । यदाच
पवन्त्रेधाभवेकसऽओषधीःपचतिविश्वरूपाः ॥ ११ ॥ विश्वस्माऽअग्निंभुवनयदेवावैश्वानरंकेतुमहोमकृण्वन् ।
रिण्णभित्थुनावभूतामादित्यापश्यन्भुवनानिविश्वा ॥ वैश्वानरंकवयोयज्ञियासोग्निदेवाऽअजनयन्नज्यं । योमहि
आयस्तानोपसौविभतीरपोऽऊर्णोतितमोऽअर्चिंपायन् ॥ वैश्वानरंविश्वहदीद्वियांसंत्रैरग्निंकविमच्छावदामः । ताम्योमिदंविश्व
नक्षत्रंप्रब्रमर्भिनच्चरिण्युक्षस्यार्धक्षतविपंवृहंतं ॥ वैश्वानरंविश्वहदीद्वियांसंत्रैरग्निंकविमच्छावदामः । ताम्योमिदंविश्व
मार्परिवभूवोर्वीऽउतावस्तादुतदेवःप्रस्तात् ॥ द्वेस्रुतीऽअश्रुणवंपितृणामंहदेवानामुतमर्थीनां । ताम्योमिदंविश्व
मेजत्समेतियदैतरापितरंमातरंच ॥ १२ ॥ द्वेसंसीचीविभृत्श्वरंतंशीर्षतोज्ञातंमनसाविमृष्टं । सप्रत्यङ्विश्वामुव
नानितस्थावप्रयुच्छन्तरिण्भ्राजमानः ॥ यत्रावदेतेऽअवरःपरंश्वयज्ञन्योःकतुरोनैविवेद । आशेकुरित्संधमादंस
खायो नक्षतयज्ञंकऽइदंविवौचत् ॥ कत्यमयुःकतिसूर्यासुःकत्युपासुःकत्युस्विदापः । नोपस्मिजवःपितरोवदामिपू

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ४

॥ २६ ॥

च्छामिवः कवयो विद्वानेकं ॥ यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपण्योऽवसते मातरिभ्यः । तार्वद्वात्युपयज्ञमायन्त्राह्वा
णो होतुरवरो निषीदन् ॥ १३ ॥ (१०।७।५) इन्द्रस्तवानृतमयस्य मत्वा विववाधेरो च नाविज्मोऽअन्तान् । आयः प
नसर्गकृष्णातमां सितिव्याजधान ॥ सुमानमस्माऽअनपावदुर्चक्ष्मया दिवोऽअसमं ब्रह्मन्व्यं । अतिष्ठतमपस्यै १
न्युर्यऽइन्द्रश्चिकायनसखायमीये ॥ इन्द्राय गिरोऽअनिशितसर्गाऽअपः प्रेरयं सगरस्य बुधात् । योऽअक्षेणवचक्रिया
शचीभिर्विष्वक्तस्तं भृगुथिर्वीमतद्यां ॥ आपातमन्युस्तु पलं प्रभर्मा धुनिः शिमीवा न्छरुमाऽऋजीषी । सोमो विश्वान्य
तसावनां निनार्वागिन्द्रं प्रतिमाना निदेभुः ॥ १४ ॥ नयस्यद्यावापृथिवी न धन्वनां तारिक्षं नाद्रयः सोमोऽअक्षाः । यद
स्य मन्युरमिन्नकं भमागाऽइन्द्रोऽअकृणुत स्वयुग्भिः ॥ त्वंहृत्य हणयाऽइन्द्रधीरो सिनपर्ववृजिना श्रृणसि । प्रयेमिन्नस्य
गिरिनवमिन्नकं भमागाऽइन्द्रोऽअकृणुत स्वयुग्भिः ॥ त्वंहृत्य हणयाऽइन्द्रधीरो सिनपर्ववृजिना श्रृणसि । प्रयेमिन्नस्य
वरुणस्य धाम युजं जनानां भिनन्ति मित्रं ॥ प्रयेमिन्नं प्रार्यमणं दुरेवाः प्रसंगिरः प्रवरुणं भिनन्ति । न्युमिन्नेषु वधमिन्द्रतुल्यं
वृषन्वृषाणमरुणं शिशीहि ॥ इन्द्रो दिवऽइन्द्रोऽइन्द्रोऽअपामिन्द्रऽइत्यर्षतानां । इन्द्रो बृधामिन्द्रऽइन्मेधिरा
(१०।७।५) इन्द्रस्तवेत्यष्टादशर्वस्य सूक्तस्यैवामित्रोरेणुरिन्द्रः पंचम्या इन्द्रा सोमौ त्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ७

॥ २६ ॥

णामिन्द्रःक्षेमयोगोहव्यऽइंद्रः ॥ १५ ॥ प्राक्तुभ्यऽइंद्रःप्रवृधोऽअहंभ्यःप्रान्तरिक्षात्प्रसमद्रस्यधासेः । प्रवातेस्यप्रथसः
 प्रज्मोऽअंतात्प्रसिधुभ्योरिरिचेप्रक्षितिभ्यः ॥ प्रशोद्युचत्याऽउपसोनकेतुरसिन्वातेवर्ततामिद्रहेतिः । अद्रमेवविध्य
 द्विवऽआसृजानस्तपिषेनेपसाद्रोधमित्रान् ॥ अन्वहुमासाऽअन्विद्वनान्यन्योर्ध्वीरनुपर्वतासः । अन्विद्रुरोदसी
 वावशानेऽअन्वापोऽअजिहृतजार्यमानं ॥ कर्हिस्त्रित्सातऽइंद्रचेत्यासदयस्ययद्भिनदोरक्षऽएषत् । मित्रक्रुवोयच्छस
 नेनगार्चःपृथिव्याऽआपुर्गमयाशयते ॥ शुत्रयंतोऽअभियेनस्तत्सेमहिब्राधतऽओगणासऽइंद्र । अंधेनामि
 त्रास्तमसासचंतांसुल्योतिपोऽअक्वस्तोऽअभिप्युः ॥ पुरुणिहित्यासर्वनाजनानां ब्रह्माणिमंदन्युतामृषीणां ।
 इमामाघोपन्नवसासहृतिंतिरोविश्वोऽअर्चतोयाह्यर्वाङ् ॥ ॥ एवातेवयमिद्रमुंजतीनांविद्यामसुमतीनांनवानां ।
 विद्यामवस्तोरवसागणंतोविश्वामित्राऽउत्ततऽइंद्रनूनं ॥ शुनहुवेममघवानमिद्रमस्मिन्भरेवृत्तंमंवाजसातो । शुण्वंत
 मग्रमतयेसमत्सुघंतवृत्राणिसंजितुंनानां ॥ १६ ॥ (१०।७।६) सहस्रशीर्षांपुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् । सभूमि
 विश्वतोब्रुत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलं ॥ पुरुषऽएवेदं सर्वयद्भुतंयच्चभवं । उतामृतत्वस्येशानोयदन्नैनातिरोहति ॥ एता
 वानस्यमहिमतोज्यायाश्चपूरुषः । पादौस्यविश्वभूतानि त्रिपादस्यामृतं द्विवि ॥ त्रिपादूर्ध्वऽउदैरुपुरुषःपादौस्येहा
 (१०।७।६) सहस्रशीर्षेतिपोळशर्चस्यसूक्तनारायणःपुरुषोदुष्टुंत्यात्रिष्टुप् ।

क्रवसं.

अ. ८ अ. ४

॥ २७ ॥

भवतुनः । ततोविष्वङ्कामत्साशनानशनेऽअभिः ॥ तस्माद्विराळजायतविराजोऽअधिपूरुषः । सजातोऽअ
त्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपरः ॥ १७ ॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमर्तन्वत । वसंतोऽअस्यासीदाज्यग्रीष्मऽइध्मः
शरद्धविः ॥ तंयज्ञंविहिषिप्रैक्षन्पुरुषंजातमग्रतः । तेनदेवाऽअयजंतसाध्याऽऽकर्षयश्च ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसं
भृतंपृषद्वाज्यं । पशून्तांश्चैवायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऽकृचःसामानिजज्ञिरे । छंदसिज
ज्ञिरेतस्माद्यज्ञस्तस्मादजायत ॥ तस्मादश्वाऽअजायंतयेकौभयादतः । गार्वोहजज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः
॥ १८ ॥ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् । मुखंकिमस्यकौवाहकाऽऽकुरुपादऽऽरच्यते ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासी
द्धाहराजन्यःकृतः । कुरुतदस्ययद्वैर्यःपृथ्वाशुद्रोऽअजायत ॥ चंद्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्योऽअजायत । मुखादि
द्रश्चाग्निश्चग्राणाद्वायुरजायत ॥ नाभ्याऽआसीदुतरिक्षंशीर्णोद्यौःसमवर्तत । पृथ्वाभूमिदिशःश्रोत्रात्तथालोकोऽ
अकल्पयन् ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः । देवायद्यज्ञंतन्वानाऽअवध्नन्पुरुषंपशुं ॥ यज्ञेनयज्ञमय
जंतदेवास्तानिधर्माणप्रथमान्यासन् । तेहनाकमहिमानःसंचंतयत्रपूर्वसाध्याःसंतिदेवाः ॥ १९ ॥ (१०।८।१)
संजागवद्भिर्जरेमाणऽइध्यतेदमेदमूनाऽइययन्निकस्पदे । विश्वस्यहोताहविषोवरेण्योविभुर्विभावांसुपत्वांसखीयते ॥
अष्टमेनुवाकेनवसूक्तानि । (१०।८।१) संजागवद्भिरितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यवैतहव्योरुणोभिर्जगलंत्वात्रिष्टुप् ।

॥ २७ ॥

मंडलं १०

अनु. ८

सदृशं श्रुतिं श्रुतिं धिर्गहेर्गुह्वनेन वनेन शिश्रियेत क्वधीरिव । जनं जनं न्योनार्तिमन्यते विशुऽआक्षेति विरयोऽङ्गु विशं विंशं ॥
 सदक्षो दक्षैः ऋतुनासि सुकतरं कविः काव्येनासि विभ्रवित् । वसुवसूनां क्षयसित्वमेकऽइह्यावाचयानि पृथिवीचपुण्यं ॥
 तः ॥ प्रजानन्नेतव्यो निर्भत्विग्यमिळायास्पदे घृतवतुमांसदः । आतेचिकित्रऽउपसांमिवेततयोरेपसः सूर्यस्येवरुमयः ॥
 तद्यश्रियौ वृष्यस्येव विद्युत्तश्चित्राश्चिकित्रऽउपसांनकेतवः । यदोपधीरुभिस्तुष्टोवननिचपरिस्वयंचिनुयेऽअन्नमास्ये
 ॥ २० ॥ तमोपधीर्दधिरुर्भेगर्भे मत्वियंत मापोऽअग्निं जनयंत मातरं । तमिस्समानं वनिर्नश्चवीरुधौ तर्तवीतीश्च सुवते च वि
 श्वहो ॥ वातोपधृतऽइपितोवशोऽअनुवृणुयदज्ञावे विपद्द्वि तिष्ठसे । आतेयंत ते रथ्योऽङ्गु यथापृथक् शार्धस्य भेऽअजरो
 निधक्षतः ॥ मेधाकारं विदथस्य प्रसार्धनमग्निं होतारं परिभूतं ममति । तमिदं भूविज्यासमानमिच्छमिन्महेवृणतेना
 न्यंतवत् ॥ त्वामिदं वृणते त्वाययो होतारमग्निं विदथेषु वेधसः । यदेवयंतो दधति प्रयांसिते हविष्मंतो मनवो वृक्कर्वहि
 पः ॥ तवाग्नेहोत्रंतवपोत्रमत्वियंतवनेद्रृत्वमग्निदत्तायतः । तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्माचारसि गहपतिश्च नोदमे
 ॥ २१ ॥ यस्तुभ्यमग्नेऽअमृतोयमर्त्यैः समिधा दाशं दुतवां हविष्कृति । तस्य होता भवसियासि दुत्यं मुपवपूये जस्य ध्व
 रीयासि ॥ इमाऽअसैमतयोवाचोऽअस्मदोऽअक्रचो गिरः सुष्टुतयः समममत । वसुवयो वसवे जातवेदसे बृद्धासु चिद्धर्धनो
 ॥ इमां प्रबाय सुष्टुतिं नवीयसीवो च्येयमस्माऽअशतं शृणोतुनः । भयाऽअंतरा हृद्यस्य निस्तृशे जायेव पत्यऽ

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ४

॥ २८ ॥

उशतीसुवासः ॥ यस्मिन्नश्वासऋषभासऽउक्षणौवशमेषाऽअवसष्टासऽआहुताः । कीलालपेसोमपृष्ठायेवेधसेहृदा
मातिर्जनयेचारुमग्ने ॥ अहाव्यमेहविरास्येतेसुचीवधतंचर्मीवसोमः । वाजसनिर्चिमस्मोसुवीरंप्रशस्तधैहियशसंब
पकेतुर्जतोद्यामशायत ॥ इमंजस्यामभयेऽअकृण्वतधर्माणमग्निविदर्थस्यसाधनं । शोचन्छुष्कसुहारिणीषुजभुरद्ध
नपातमरुषस्यनिसते ॥ वळस्यनीथाविपणेश्चमन्महेवयाऽअस्यप्रहुताऽआसुरत्तवे । अकुनयुह्वमषसःपुरोहितंतनू
दिज्जनस्यदैव्यस्यचर्किरन् ॥ ऋतस्यहिप्रसितिद्यौरुरुव्यचोनमोमह्यऽरमतिःपनीयसी । यदाघोरासोऽअमृतत्वमाशुता
रेथोभगःसवितापतदक्षसः ॥ प्ररुद्रेणययिनायंतिसिधवस्तिरोमहीमरमतिदधन्विरे । इन्द्रोमित्रोवरुणःसंचिकित्रि
मित्रोऽअर्घ्यमेद्रोदेवोभिरवृशोभिरवृशः ॥ २३ ॥ ऋणारुद्रामरुतोविश्वकृष्टयोदिवःइयेनासोऽअसुरस्यनीळ्यः । तेभिश्चष्टेवरुणो
रेयुजंवज्रंनपदनेषुकारवः ॥ सूरश्चिदाहरितोऽअस्यरीरमदिद्रादाकश्चिद्भयतेतवीयसः । प्रयेन्वस्यार्हणततक्षि
सोदिवोदेवैसहुरिस्तन्नर्वाधितः ॥ स्तोमवोऽअघरुद्रायशिकसेक्षयद्वीरायुनमसादिदिष्टन । येभिःशिवःस्ववोऽएव
(१०।८।२) यज्ञस्येतिपंचदशर्चसूक्तसमानवःशार्यतोविश्वेदेवाजगती ।

मंडलं १०

अनु. ८

॥ २८ ॥

यावभिर्द्विवःसिपक्स्वयशानिकामभिः ॥ तेहिप्रजायाऽअभरंतुविश्रयोऽनृहस्पतिर्वृषभःसोमंजामयः । यज्ञैरथर्वाप्र
 थमोविधारयद्देवादक्षैर्भृगवःसंचिकित्रे ॥ २४ ॥ तेहिद्यावापृथिवीभूरैरेतसानराशंसश्चतुरंगोयमोदंतिः । देव
 स्वयष्टाद्रविणोदाऽऽर्कभूक्षणाःप्ररोदुसीमरुतोविष्णुरहिरे ॥ उत्तस्यनंदुशिजामुर्विंयाकृविरहिःऋणोतुनभ्योऽहवीमनि ।
 सूर्यामासाविचरंतादिविष्वितोऽधियाशमीनहृयीऽअस्यवोधतं ॥ प्रनःपूपाचरथैविश्वदेव्योपांनपादयतुवायुरिष्टये ।
 आत्मानंयस्योऽअभिवातंमर्चततदभ्यनासुहृवायामनिश्रुतं ॥ विशामासामभयानामधिक्षितंगीर्भिरुस्वयशसंगुणी
 मसि । आभिर्विश्वोभिरादितिमन्युर्णमत्तोयुवानंनमणाऽअधापतिं ॥ रेभद्रजनुपापूर्वोऽअंगिरायाचोणऽऊर्ध्वोऽ
 अभिचक्षुरध्वरं ॥ येभिर्विहायाऽअभवद्विचक्षणाःपार्थःसुमेकंस्वधित्तिर्नन्यति ॥ २५ ॥ (१०।८।३) महिद्यावा
 पृथिवीभूतमवीनारीगृहीनरोदसीसदनः । तेभिर्नःपातंसह्यसऽणुभिर्नःपातंशुपर्णि ॥ यज्ञेयज्ञेसमत्योऽदेवान्तसपथ
 ति । यःसुभ्रूर्दीर्घश्रुत्तमऽआविवासात्येनान् ॥ विश्वेपामिरज्यवोदेवानांवामहः । विश्वेहिचिविश्वमहसोविश्वेयज्ञेपु
 यज्ञियाः ॥ तेघाराजानोऽअमृतंस्पमंद्राऽअर्थमामित्रोवरुणःपरिजमा । कद्रुद्रोऽनूपांस्तुतोमरुतःपूयणोभगः ॥ उत्त

(१०।८।३) महीतिपंचदशार्चसमूहस्यपार्थस्तान्वोविश्वेदेवाःप्रस्तारपंक्तिर्द्वितीयात्रयोदश्यनुष्टुभोनवम्यश्चरैःपंक्तिरेकादशीन्य
 कुसारिण्यंलापुरस्ताद्गृहीती ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ४

॥ २९ ॥

नोनक्तुमपावृण्वससूर्यामासासदनायसधुन्या । सचायत्साद्येषामर्हिबुधैर्बुधः* ॥ २६ ॥ उतनोदेवावश्विनाशु
भस्पतीधामभिर्मित्रावरुणाडुरुज्यतां । महःसरायऽएषतेतिधन्वेवदुरिताः ॥ उतनोरुद्राचिन्मृळतामश्विनाविभेद्
वासोरथस्पतिर्भगः । ऋसुर्वाजऽऋसुक्षणःपरिज्मविश्ववेदसः ॥ कुधीनोऽअहयोदेवसवितःसर्चस्तुपेमुधोना । सहोनऽइन्द्रोव
स्ववाजिनो । दुष्टरयस्यसामचिहर्धग्यज्ञोनमार्जुपः ॥ कुसुर्कभक्षऽऋसुर्विधतोमदऽआतेहरीज्जुवान
ह्निभिर्न्येषांचर्षणीनांचक्रंरश्मिनयौयुवे ॥ ऐषुद्यावापृथिवीधातंसहदस्मेवीरेषुविश्वचर्षणिश्रवः । पक्षंवाजस्यसातये
पृक्षंरायोततुर्वणो ॥ २७ ॥ एतंशंसमिन्द्रास्मयुङ्क्चिस्संतसहसावन्नभिष्टयेसदापाह्यभिष्टये । मेदतोविदतोवसो ॥
एतमेस्तोर्मितनानसूर्येद्युतर्धामानंवावृधंतनुणां । संवर्ननंनाभ्यंतष्टेचानपच्युतं ॥ वावर्तयेपारायायुक्तैर्पांहिरण्ययी ।
नेमधितानपौस्यावृथेवविष्टांतां ॥ प्रतदुःशीमेपृथवानेवेनेप्ररोमेवोचमसुरेमघवत्सु । येयुक्त्वायुपंचशतास्मयुपथावि
आव्येषां ॥ अधीन्वन्नसप्ततिंचसप्तच । सद्योदिदिष्टतान्वःसद्योदिदिष्टपार्थ्यःसद्योदिदिष्टमायवः ॥ २८ ॥ (१०।८।४)
प्रैतेर्वदंतुमवयंवदामग्रावभ्योवाचवदतावदंध्यः । र्वदंध्यःपर्वताःसाकमाशवःश्लोकंधोपंभरथेद्रायसोमिनः ॥ एतेव
दंतिशतवत्सहस्रवदुभिक्रंदंतिहरितेभिरासभिः । विद्रीग्रावाणःसुद्वर्तःसुकृत्याहोर्तुश्चित्पूवहविरधमाशत ॥ एतेव
(१०।८।४) प्रैतइतिचतुर्दशचसूक्तस्यकाद्रवेभोर्बुदःसर्पोग्रावाणोजगतीपंचमीसप्तमीचतुर्दश्यस्त्रिष्टुभः ।

मंडलं १

अनु. ८

॥ २९ ॥

दुल्याविदन्ननामधूनूखयेंतेऽर्धाधिकऽआमिपि । वृक्षस्यशाखांमरुणस्यवत्सतस्तेसूर्भत्रावृषभाः प्रेमराविषुः ॥ बृहद्र
दंतिमदिरेणमिदिनंद्रंक्रोशतोविदन्ननामधु । संभ्याधीराः स्वस्त्यभिरनतिपुराघोरपथैतः पृथिवीमुपज्झिभिः ॥ सुपर्णा
दंतिमदिरेणमिदिनंद्रंक्रोशतोविदन्ननामधु । न्यङ्गिद्युपरस्यनिष्कृतंपल्लवेतौदधिरेसूर्यश्चित्तः ॥ २९ ॥ उ
वाचमकृतोपद्याव्याखुरेकुणाऽइपिराऽअनतिपुः । यच्छंसंतोजग्रसानाऽअराविषुः अण्वऽएयांग्रोग्रथोऽअर्थता
ग्राऽइवप्रवहतः समार्यमुः सांक्युक्तावृषणोविभ्रतोधुरः । दशभीशुभ्योऽअर्चिताजरैभ्योदशधुरोदशयुक्ताव
मिव ॥ दशवनिभ्योदशकश्येभ्योदशयोक्त्रेभ्योदशयोजनेभ्यः । दशभीशुभ्योऽअर्चिताजरैभ्योदशधुरोदशयुक्तव
हन्त्र्यः ॥ तेऽअद्रयोदशंगत्रासऽआशवस्तेपांमाधानंपथतिहर्यत । तऽऊसतस्यसोम्यस्यांधंसोशोः पीयूषंथमस्यभेजिरे ॥ वृषा
तेसोमादोहरीऽइंद्रस्यानिसंतुष्टुंहंतोऽअथासतेगावि । तेभिर्दुग्धंपपिवात्सोम्यंसंधिंद्रोवर्धतेप्रथतेवृषायते ॥ वृषा
वोऽअंशुर्नकिलारियाथनेकांवतः सवमित्स्थनाशिताः । रैवत्येवमहसाचारवः स्थनयस्यग्राचाणोऽअजुपध्यमध्वरं
॥ ३० ॥ तुविलाऽअर्तदिलासोऽअद्रयोश्रमणाऽअश्रुधितोऽअमृत्यवः । अनतराऽअजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो
ऽअर्तपिताऽअर्तणजः ॥ ध्रुवाऽएववः पितरैर्युगेयुगेक्षेमकामासः सदसेनयुजते । अजूर्यासोहरिपाचोहरिद्रवऽआ
नांगवेणप्रथिवीमशुश्रुः ॥ तदिद्धंदूलद्रयोविमोर्चनेयार्धंजस्पाऽइवघेदुपज्झिभिः । वपंतोवीजमिवधान्याकृतः पू

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ५

॥ ३० ॥

चंति सोमं नमिन्नं तिवत्सतः ॥ सुतेऽअध्वरेऽअधिवाचमक्रताक्रीळ्योनमातरं तु दंतः । विपुं चासुपुबुपोमनुपां विवर्त
तामद्रथश्चार्चमानाः ॥ ३१ ॥ इत्यष्टमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पष्ठध्यायेवर्गाः ३१ सूक्तानि ९ ऋचः १६० ॥ त्यागः ॥ इंद्राये २३ रक्षोघ्नेऽग्नय. २५ सूर्यवैश्वानराये. १९ इंद्राये. ४ इंद्रासोमाभ्या.
इंद्राये १३ पुरुषाये १६ अग्नय. १५ विश्वेभ्यो देवेभ्य. ३० [भे. प. विश्वेभ्यो दे. १ अग्नय. ३ विश्वेभ्यो देवेभ्य. ३ इंद्राये. विश्वेभ्यो देवेभ्य. ७
द्यावापृथिवीभ्या. विश्वेभ्यो देवेभ्य. ६ इंद्राये विश्वेभ्यो देवेभ्य. द्यावापृथिवीभ्या. इंद्राये. विश्वेभ्यो देवेभ्य. ४] ग्रावभ्य इदं १४ ॥ इत्यष्टमे चतुर्थः ॥

हयेद्व्यू नोर्वशीमैळः पुरुरवाः पूर्वोपितान्कामान्पुनरासाद्यावरोद्धुमैच्छत्सातमनिच्छंती प्रत्याचष्टे हयऽइषुर्याकदा
सुदेवौ तरिक्षां सचेतितिस्रश्चैलवाक्यं शिष्टाऽउर्वर्याः प्रते ससो नावरुः सर्वहरिवैद्रो हरिस्तुतिं द्वित्रिष्टुवंतं याऽओ
पधीस्त्रयधिकार्थवर्णो भिपगोपधिस्तुतिरानुष्टुभं बृहस्पते द्वादशाष्टिपेणो देवापर्वष्टिकामो देवांस्तुष्टावर्कनो वसो
वैखानस इन्द्रदुवस्युर्वानो वैश्वदेवं तु त्रिष्टुवंतं मुहुर्ध्वं बुधः सौम्यऋत्विक्स्तुतिर्वानवमयं त्येजगत्सौ पंचमी बृहती
गायत्र्योर्मध्ये प्रते मुद्गलोभार्म्यश्चोद्घणेन ऋपभेन चानिजिगायेति द्रौघं वा द्यावृतीयां त्याबृहत्यं आशुः ससो नै
द्रोप्रतिरथश्चतुर्थो वा र्हस्पत्योपां त्याप्वा देव्यं त्यानुष्टुम्मारुतीचां साव्ये कादशाष्टकौ वैश्वामित्रः कदाकौत्सो दुर्मित्रो
नाम्ना सुमित्रो गुणतः सुमित्रो वानाम्ना दुर्मित्रो गुणतऽऔष्णिहं हरीवञ्चं पिपीलिकमर्धे त्रिष्टुवंत्याद्या गायत्री वा ॥ ५ ॥

मंडलं १०

अनु. ८

॥ ३० ॥

हरिःओम् ॥ (१०।८।५) ह्येजायेमनसातिष्ठधरोवर्चासिमिश्राकृणवावैनु । ननोमंत्राऽअनुदितासऽएतेम
 यस्करुण्यरतरेचनाहन् ॥ किमेतावाचाकृणवातवाहंक्रामिपुमसामग्रियेव । पुरुषःपुनरस्तंपरेहिदुरापनावातऽ
 इवाहमस्मि ॥ इयुर्नीश्रियऽइपुर्धेरसनागोपाःशतसानरंहिः । अव्यरेक्तौविद्विद्युत्तत्रोरानमायुंचितयंतुनयः ॥ त्रिःसमाह्वः
 सावसुदर्धतीश्वशुरायवयुऽउपोयद्विवद्यंतितृहात् । अस्तनक्षेयसिन्वाकन्दिवानकैश्रधितावैतसेन ॥ त्रिःसमाह्वः
 श्रथयवैतसेनोतस्ममेव्यत्यैपृणासि । पुरुषोवोतुतेकेतमायंराजमेवीरतन्वऽस्तदासीः ॥ १ ॥ यासुजुणिःश्रेणिःसु
 म्नाऽआपिहृदेचक्षुर्नम्रंमृधिनौचरण्युः । ताऽअंजयोरुणयोनसंस्तुःश्रियेगावो न धेनवोनवंत ॥ समस्मिन्जायमानऽआसत्
 शाऽउतेमवर्धन्नद्यऽस्वर्गताः । मेहयन्त्वापुरुषोराणायावर्धयन्दस्युहत्यायेदेवाः ॥ सत्रायदासुजहतीष्वत्कममा
 नुपीपुमानुपोनिषेवै । अपस्ममत्तरसंतीनभज्यस्ताऽअत्रसत्रयस्पृशोनाश्वः ॥ यदासुमतोऽअमृतासुनिस्पृक्संक्षोणी
 भिःक्रतुभिर्नपुंके । ताऽआतयोनतन्वःशुभतस्वाऽअश्वसोनक्रीळयोदंशानाः ॥ विद्युन्नयापतंतीदर्विद्योद्भरतीमेऽ
 अय्याकाम्यानि । जनिष्टोऽअपोनर्यःसुजातःप्रोवर्शोतिरतर्द्धिमायुः ॥ २ ॥ जजिपऽइत्यागोपीश्यायहिदुधाथत्

(१०।८।५) ह्येजायेइत्यष्टादशर्वस्यसूक्तस्याद्यातृतीयापठेनवम्यादिततमृणाचतुर्दशीसप्तदशीत्येवंनानामैलःपुरुषवाक्परिवर्शो
 देवता शिष्टानामुर्वशीक्रपिकापुरुषरवादेवतानिष्टुप् ।

क्रकसं.

अ. ८ अ. ५

॥ ३१ ॥

मंडलं १०

अनु. ८

॥ ३१ ॥

त्पुरुषोमऽओजः । अशंसत्वाविदुपीससिन्नहृन्मऽआद्योः किमभुग्वदासि ॥ कदासुनुः पितरं जातऽईच्छाञ्चक्रं
नाश्रुवर्तयद्विज्ञानम् । कोदं पतीसमनसा विर्यूयोदधयदग्निः श्वशुरेपुदीदयत् ॥ प्रतिब्रवाणिवर्तयेतेऽअश्रुचक्रं नन्द
द्राध्यै शिवायै । प्रतत्ते हिनवायत्तेऽअस्मे परे ह्यस्तं न हि मूरमार्षः ॥ सुदेवोऽअद्य प्रपतेदना वृत्परावर्तपरमांगं तवाऽउ ।
अध्याशयीत निर्गते रूपस्थे धैर्न वृकारभुसासौऽअद्युः+ ॥ पुरुषोमामृथामाप्रपसोमात्वावृकासोऽअशैवासऽउक्षन् ।
नवैस्त्रैणानि सख्यानि संतिसालावृकाणां हृदयान्येता+ ॥ ३ ॥ यद्विरूपाचरं मर्त्येण्ववसंरार्वाः शरदुश्चतस्रः । घृतस्य
स्रोकंसङ्कदहंऽआश्रान्ता देवेदंता वृपाणां चरामि ॥ अंतरिक्षप्रारजसो विमानि मुपशिक्षाम्युर्वशीं वसिष्ठः । घृतस्य
तिः सुकृतस्य तिष्ठान्निवर्तस्व हृदयं तप्यते मे ॥ इति त्वा देवाऽइमऽआहुरै ल्यथे मे तद्भवसि मत्युर्वधुः । उपत्वा रा
पायजातिस्वर्गऽउत्त्वमपि मादयासे ॥ ४ ॥ (१०।८।६) प्रतमे हे विदथै शसिपुं हरी प्रतैव न्वेव नु पो ह्युत्तमदं । घृतं न
यो हरिं भिश्चरुसे च तऽआत्वा विशंतु हरिं वर्षसंगिरः ॥ हरिं हियो निर्मभिये समस्वरन् हि न्वं तो हरी दिव्यं यथा सदः । आ
अपुणं ति हरिं भिर्न धेनवऽइन्द्राय शूय हरिं वं तमर्चत ॥ सोऽअस्य वज्रो हरिं तोयऽआयु सो हरिं निकामो हरि रागभस्त्योः ।
(१०।८।६) प्रत इति त्रयोदश चर्चस्य सूक्तस्यांगिरसो वरुर्हरिर्जगत्येद्वे त्रिषु भौ (ऐन्द्रः सर्व हरिर्वपिरत्र । हरि रिति द्विनाम । शौनकस्तु
मुखत एवैतत्सूक्तं मे द्रमि त्याह । हरि रिति द्वाश्वनामेति च कश्चित् । एवं हरि शब्दार्थे विप्रतिपत्ताव्याकरोदित हरि शब्दोच्चारणं युक्तमुत्पश्यामः) ॥

[illegible]

(१०।८।७) याआपिधा॥रातनप्रान्त-६

शतर्वोऽअवधामानिसहस्रमुतवोरुहः । अर्धाशतकत्वोयुयमिमंऽअगदं कृत ॥ ओषधीःप्रतिमोदध्वंपुष्पवतीःप्रसूवं
रीः । अर्धाऽइवसजित्वरीर्वीरुधःपारयिष्णवः ॥ ओषधीरितिमातरस्तद्वोदेवीरुपब्रुवे । सनेयमश्वंगंवासऽआत्मा
नंतवपूरुप ॥ अश्वत्थेवोनिपदनंपर्णेवोवसतिष्कृता । गोभाजऽइतिकलासथयत्सनवथूपूरुपं ॥ ८ ॥ यत्रौषधीःसमग्मं
तराजानःसमिताविव । विप्रःसऽउच्यतेभिषग्भक्षोहासीवचार्तनः ॥ अश्ववतीसोमावतीमर्जयतीमुदोजसं । आवि
त्सिसर्वाऽओषधीरस्माऽअरिष्टतातये ॥ उच्छुष्माऽओषधीनांगावोगोष्ठादिवेरते । धनंसनिष्यंतीनामात्मानंतवपू
रुप ॥ इष्टुतिर्नामवोमाताथोययंस्थनिष्कृतीः । सीराःपतत्रिणीस्थनयद्वामयतिनिष्कृथ ॥ अतिविश्वःपरिष्ठाःस्ते
नऽइवव्रजमक्रमुः । ओषधीःप्रादुच्यवुर्यकिंचतन्वोऽरुपः ॥ ९ ॥ यदिमावाजयन्नहमोषधीर्हस्तऽआदुधे । आत्मा
यक्ष्मस्यनश्यतिपुराजीवगृभौयथा ॥ यस्यौषधीःप्रसर्पथांगमंगपरुपरुः । ततोयक्ष्मंविवाधध्वऽउग्रोर्मध्यमशीरिव ॥
साकंवातस्यध्राज्यासाकंनश्यनिहाकया ॥ अन्यावोऽअन्यामवत्वन्यान्यस्या
ऽउपावत । ताःसर्वाःसंविद्वानाऽइदंमेप्रावतावचः ॥ याःफलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः । बृहस्पतिप्र
सूतास्तानोमुंचंत्यंहसः ॥ १० ॥ मुंचंतुमाशपथ्याऽइदोवगुरुण्यादुत । अथोयमस्यपद्मंशतसर्वस्मादेवकिल्बिपात् ॥
अवपतंतीरवदन्दिवऽओषधयस्परि । यंजीवमश्वर्वामहैनसरिग्यातिपूरुपः ॥ याऽओषधीःसोमराजीवह्वीःशतविच

क्षणाः । तासां त्वमेत्युत्तमां कामायुशं हृदं ॥ याऽओपधीः सोमराज्ञी विधिं ताः पृथिवीमनु । बृहस्पतिं प्रमृताऽअस्यै
 संदंत्तवीर्यं ॥ मावोरिपत्वनितायस्मै चाहं खनामिवः । द्विपच्चतुष्पदस्माकंसर्वमस्त्वनतुरं ॥ याश्चेदमुपशृण्वंति
 याश्च दूरं परगताः । सर्वाः संगत्य वीरुद्योस्यै संदंत्तवीर्यं ॥ ओपधयुः संवदंते सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं री
 जन्पारयामसि ॥ त्वमुत्तमास्योपधेतव वृक्षाऽउपस्तयः । उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं योऽअस्मोऽअभिदासति ॥ ११ ॥
 ॥ (१०।८।८) बृहस्पतेः प्रतीयेत देवतामिहि मित्रो वायुद्वरुणो वासिष्णु । आदित्यै वायुद्वसुभिर्मरुत्वान्तसपर्जन्यं शंतेन चै
 वृपाय ॥ आदेवोदतोऽअजिरश्चिकित्वा न्वदेवापेऽअभिमार्मगच्छत् । प्रतीचीनः प्रतिमामावदृत्स्वदधांमि तेद्युमतीं
 वाचमासन् ॥ अस्मै धेहि द्युमती वाचमासन् नृहस्पतेऽअनमीवामिपिरां । यया दृष्टिं शंतेन वेनान्विदिवो द्रुप्सो मधुमां
 आविवेश ॥ आनो द्रुप्सामधुमंतो विशुं त्विन्द्रे दृष्ट्या धियंसहस्रं । निपीद होत्रमृतुं तथा यजस्व देवान् देवापे हविषसपर्यं ॥
 आदृष्टिं णो होत्रमृगं निपीदं देवापि देवसुमतिं चिकित्वा ॥ सऽउत्तरस्मादधरंसमद्रमपोदिव्याऽअसृजद्ब्रवीऽअ
 भि ॥ अस्मिन्समूहेऽअधुत्तरसिन्नापोदेवेभिर्निवृताऽअतिष्ठन् । ताऽअद्रवन्नादृष्टिं णेन सृष्टेवापिनां प्रपितामक्षि
 (शौनकस्वस्मिन्सूक्ते आद्यानां चतसृणां बृहस्पतिस्ततश्चत-

(१०।८।८) बृहस्पत इति द्वादश सूक्तस्यादृष्टिं णोदेवापि देवा बिभृषु ।

सृष्टा देवास्ततः पंचानामग्निरित्येव देवतान्यवस्थामाह ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ५

॥ ३३ ॥

णीयु ॥ १२ ॥ यदेवापिः शंतनवे पुरोहितो होत्राय ब्रुतः कृपयन्नदीधेत् । देवश्रुतं वृष्टिचानिं रणो बृहस्पतिर्वचमस्माऽ
अयच्छत् ॥ यत्वा देवापिः शुशुचानोऽअस्रऽआष्टिपुणोर्मनुष्यः समीधे । विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्रपुर्जन्यमीरयावृ
ष्टिमत् ॥ त्वांपूर्वऽऋषयो गीर्भिरायन्त्वामध्वरेपुपुरुहूतविश्वे । सहस्राण्यधिरथान्यस्मेऽआनोयन्नरो हिदुश्वोपयाहि ॥
एतान्यग्नेन वृत्तिर्नवत्वेऽआहुतान्याधिरथासहस्रा । तेभिर्वधस्वतुन्वः शूरपर्वीदिवोनो वृष्टिभिपितो रीहि ॥ एतान्य
ग्नेन वृत्तिं सहस्रासंप्रयच्छवृष्णऽइंद्राय भागं । विद्वान्पृथऽऋतुशो देवयानान्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ॥ अग्ने चार्धस्ववि
सृधो विदुर्गहापामीवामपूरक्षांसि सेध । अस्मात्समद्राद्वृहूतो दिवोनोपां भूमानुमुपनः सृजेह ॥ १३ ॥ (१०।८।९)
कन्नश्चित्राभिपण्यसि चिकित्वा नृधूमगमानं वाश्रवावृधध्वै । कत्तस्य दातुशर्वसो न्युष्टौ तक्षद्वज्रैव त्रुतुर्मपिन्वत् ॥ सहिद्यु
ताविद्युतावेतिसामपृथुयोनिमसुरत्वाससाद । ससनीं केभिः प्रसहानोऽअस्य भ्रातुर्नऽऋते ससर्थस्य मायाः+ ॥ सवाजं
यातापदुष्पदुयन्त्स्वर्णाताप र्पदत्स निज्यन् । अनुवायिच्छतदुरस्य वेदो घ्नन्ति श्रद्धैऽअभिवर्षसाभूत्+ ॥ सयहृथोइ
वनीर्गोष्ववर्जुहोति प्रधन्याससधिः । अपातोयवृज्यसोरथाद्रोण्यश्वासऽईरतेयुतं वाः+ ॥ सरुद्रेभिरशस्तवारऽ
ऋभ्यांहित्वीगर्गमारेऽअवद्यऽआगात् । वृचस्य मन्ये मिथुनाविर्वघ्रीऽअन्नमभीत्यारोदयन्मुपायन्+ ॥ सऽइद्वसंतुवी
(१०।८।९) कन्नइति द्वादशस्य सूक्तस्य वैखानसो वज्रद्वं ब्रिपुम् ।

मंडलं १०

अनु. ८

॥ ३३ ॥

रूपतिर्दन्पल्लुक्षेत्रीयाणिदमन्यत् । अस्यत्रितोन्वोजसावृधानोविपावरुहमयोऽअग्रयाहन् ॥ १४ ॥ सद्रुहणेमनु
सोऽअश्रियोनयवस ॥ सनृत्तमोनहुपोस्तसुजातःपुरोभिन्दहन्दस्युहले ॥ सत्राधतःशवसानोभिरस्यकु
पऽऊर्ध्वमानऽआसोविपदर्शसानायशरं । उपयत्सीदुदिंशरीरैःक्षेनोयोपाटिर्हतिदस्यून् ॥ अयंदशसन्नयैभिरस्यदुस्मो
ऽउदन्यन्धयायगातुंविदशौऽअस्मे । अयंकविमन्यच्छस्यमनमत्कंयोऽअस्यसानितोतनूणां ॥ अस्यस्तोभैभिरौशुजऽऋजिभ्वाव्रजंदर
त्सायशुष्णंकृपणेपरादात् । अयंकनीनंऽऋतुपाऽअवेद्याभिमीतारुंयश्चतुष्पात् ॥ एवामहोऽअसुरवक्षथायवन्नकःपुङ्ग
देवैर्भिवरुणेनमाथी । अयंकनीनंऽऋतुपाऽअवेद्याभिमीतारुंयश्चतुष्पात् ॥ १५ ॥ (१०।९।१) इंद्रदृढमघवन्त्वा
यद्रूपभेणपिप्रोः । सुत्वायद्यजतोदीदयुद्धीःपुरंऽइयानोऽअभियर्षसाभूत् ॥ १५ ॥ (१०।९।१) इंद्रदृढमघवन्त्वा
रूपसर्पदिंद्रं । सऽइयानःकरतिस्त्रिस्तमस्माऽइषमूर्जैशुक्षितिर्विश्वमाभोः ॥ १५ ॥ (१०।९।१) इंद्रदृढमघवन्त्वा
वदिद्रुजऽइहस्तुतःसुतपावौधिनोबुधे । देवेर्भिनःसविताप्रावतुश्रुतमासर्वतातिमदितिवृणीमहे ॥ भरायसुभरतभा
गमत्विद्यंप्रवायवैशुचिपेक्रंददिष्टये । गौरस्यःपर्यसःपीतिमानुशऽआसर्व ॥ आनोदेवःसवितासाविपद्वयंऽऋजू
तेजमानायसुन्वते । यथादेवान्प्रतिभूषेमपाकवदासर्व ॥ इंद्रोऽअस्मेसुमनाऽअस्तुविश्वहाराजासोमःसुवितस्या
तेजमानायसुन्वते । यथादेवान्प्रतिभूषेमपाकवदासर्व ॥ इंद्रोऽअस्मेसुमनाऽअस्तुविश्वहाराजासोमःसुवितस्या
तेजमानायसुन्वते । यथादेवान्प्रतिभूषेमपाकवदासर्व ॥ इंद्रोऽअस्मेसुमनाऽअस्तुविश्वहाराजासोमःसुवितस्या

नवमेनुवाकेत्रयदशसूक्तान्
द्विद्विती१ इद्रः१ एवं१२) ।

प्रमतिर्नः पिता हि कुमासर्वं ॥ इन्द्रस्य तु कुतैव्यं स ह्योमिर्गहेज रिता मोधिरः कविः । यज्ञश्च भद्रिदथे चारुरंतमुऽआस
मीवांस वितासा विपुन्यं ग्वरीयऽइदपसेधन्त्वद्रयः । गवायत्रमधुपुदुच्यते वृहदासर्वं ॥ ऊर्ध्वो ग्रावविसवोस्तु सोत
रि विभ्वाद्देपांसि स न तयुयोत । स नो देवः स विता पायुरीक्ष्यऽआसर्वं ॥ ऊर्ध्वगवो यवसेपीवोऽअत्तनऽऽकृतस्य याः स द
ने कोशोऽअइध्वे । त नूरे वतन्वोऽअस्तु भेषजमासर्वं ॥ क्रतु प्रार्वाज रिता शर्वतामवऽइन्द्रऽइन्द्रद्रा प्रमतिः सुतावतां ।
पूणमूर्धदिव्यं यस्य सिक्तयऽआसर्वं ॥ चित्रस्ते भानुः क्रतु प्राऽअभिष्टिः संति स्पृधोजरणि प्राऽअर्धृष्टाः । रजिष्ठयार
काः । दुधिक्राममिमपसं च देवीमिन्द्रा वतो वसेनि ह्येवः ॥ १७ ॥ (१०।९।२) उद्धृध्य ध्वंसमनसः सखायः सममिध्वं बहवः सनी
कृणुध्वमायुधार्कृणुध्वं प्राचैयुज्ञं प्रणयता सखायः ॥ युनक्तु सीरा वियुगा तनुध्वं कृते योनौ वपते हवीजं । गिरा च श्रुष्टिः
(१०।९।२) उद्धृध्य ध्वमिति द्वादश च सप्त सप्तसोम्यो बुधो विधेदेवास्मिन् पृथग्यौ गायत्र्यौ पंचमी वृहती नवमी द्वादश्यौ जगत्सौ
(ऋत्विजो देवतावा) ।

समेरुऽअसन्नोनेदीयुऽइत्सुण्यःपक्वमेयात् ॥ सीरयुंजंतिकवयोयुगावितन्वतेपृथक् । धीराद्वेपुसुक्रया⁺ ॥ निरा
ह्वाचान्कृणोतनसंवत्त्रादधातन । सिंचामहाऽअवतसुद्रिणंययसुपेकमनुपक्षितं ॥ इष्कृताहावमवतंसुवत्रंषुपेचनं ।
उद्विणंसिंचेऽअक्षितं ॥ १८ ॥ ग्रीणीताश्वान्द्वितंजयाथस्तिवाहुरयमित्कृणुध्वं । द्रोणाहावमवतमदमचक्रमंसत्र
कोशंसिंचतानुपाणं ॥ व्रजंकुणुध्वंसहिंवोनपाणेवर्मसीव्यध्वंवह्लापथूनि । पुरःकृणुध्वमायसीरधृष्टामावःसुखोच्च
मसोदंहतातं⁺ ॥ आवोधिचहरेर्मिंद्रोरुपस्थेवाशीभिस्तक्षतामन्मयीभिः । वनस्पतिवनऽआस्थापयध्वंनिपूदधिध्वमखनंतऽ
यसासुहीनौः⁺ ॥ आतूषिचहरेर्मिंद्रोरुपस्थेवाशीभिस्तक्षतामन्मयीभिः । वनस्पतिवनऽआस्थापयध्वंनिपूदधिध्वमखनंतऽ
ह्यियुनक्त ॥ उभेधुरौवाहिरुपिबंदमानोतयनेवचरतिद्विजानिः । निष्टिग्रयःपुत्रमान्यावयोतयुऽइंसवाधऽइहसोमपीत
उत्सं ॥ कथन्नरःकपथमुदधातनचोदयतखुदतुवाजंसातये । निष्टिग्रयःपुत्रमान्यावयोतयुऽइंसवाधऽइहसोमपीत
ये ॥ १९ ॥ (१०।१।३) प्रतेरथमिथुकृतमिंद्रोवतुधृष्ण्या । अस्मिन्नाजौपुरुहृतश्रवाय्येधनमधेपुनोव ॥ उत्सु
(१०।१।३) प्रतेरयमितिद्वादशार्चसूक्तसामान्यश्चोमुद्रलोद्वगणबिष्टुप्आद्याहतीयायाबुह्यः । (प्रतेरयमितिस्फुक्देवतात्वे
विप्रतिपत्तिःपरस्परमाचार्याणां । उक्तंचशौनकेन-प्रेतीतिहाससूक्तुमन्यतेशाकटायनः । यात्कोद्रौघणमैंद्रवैश्वदेवंतुशौनकः । आजान
वेनंभान्म्यध्वंद्रासोमौतुमुद्रइति ।)

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ५

॥ ३५ ॥

वातोवहतिवासोऽअस्याऽअधिर्थयदजयत्सहस्रं । रथीरभून्मुहुरानीगविष्टौभरेकृतंव्यवेदिद्रसेना+ ॥ अंतर्गच्छ
जिघांसितोवज्रमिद्राभिदासतः । दासस्यवामघवृन्नाथस्यवासनतर्थवयावधं+ ॥ उम्रोहृदमपिवज्रहृषाणःकूटंस्मृतं हृद
भिर्मातिमेति । प्रमुष्कभारःश्रवंऽइच्छमानोजिरंवाहूऽअभरत्सिपासन् ॥ न्यक्रंदयन्नपयंतंऽएनमभैहयन्वृषभंमध्ये
ऽआजेः । तेनसूभवंशतवत्सहस्रंगवांमुहुरलःप्रधनेजिगाय ॥ कुरंदवैवृषभोयुक्तऽआसीदवावचीत्सारथिरस्यकेशी ।
दुर्धैर्युक्तस्यद्रवतःसहानसऽऋच्छंतिष्मानिष्पदोमुहुरानी ॥ २० ॥ उतप्रधिमुदहस्यविद्वानुपायुनृग्वंसंगमव्रशि
क्षन् । इन्द्रऽउदवत्पतिमश्यानामरंहतपद्याभिःकुक्षान् ॥ शुनमष्टाव्यचरत्कपर्दीर्वित्रायांदावानह्यमानः । नम्णा
निकृण्वन्वहवेजनायगाःपस्पशानस्ताविधीरधत्त ॥ इमंतंपश्यवृषभस्ययुजंकाष्ठायामध्येद्रुघुणंशयानं । येनजिगायंश
तवत्सहस्रंगवांमुहुरलःपृतनान्येषु ॥ आरेऽअघाकोन्वी१त्थाददर्शययुजंतिताम्यास्थापयंति । नास्मैवृणोदुकमाभर
न्युत्तरोधुरोर्वहतिप्रदेदिशत् ॥ परिवृक्तेवपतिविद्यमानद्वीप्यानाकूचक्रेणवसिंचन् । एषैष्याचिद्रथ्याजयेमसुमंगलंसि
नवदस्तुसातं+ ॥ त्वंविश्वस्यजगत्त्रधुरिद्रासिचक्षुषः । वृषायद्राजिवृषणासिपाससिचोदयन्वाध्रिणायुजा+ ॥ २१ ॥
(१०।९।४) आशुःशिशानोवृषभोनभीमोर्धनाघनःक्षोभेणश्चर्पणीनां । संक्रंदनोनिमिषऽएकवीरःशतसेनाऽअज
(१०।९।४) आशुःशिशानहतित्रयोदशर्चस्यसूक्तस्यैद्रोमतिरथइन्द्रश्चतुर्थ्याबृहस्पतिर्द्वादश्याअप्तादेव्यत्यायामरुतस्त्रिष्टुवंत्यानुष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ६

॥ ३५ ॥

यत्साकमिंद्रः ॥ संक्रंदेनानिमिपेणजिष्णुनायुक्कारेणदुश्चयनेनधृष्णुना । तदिद्रेणजयततत्सहध्वयुधोनरऽइह
 सेनवृष्णा ॥ सऽइधुहत्तैःसर्निपंगिभिर्वृषीसंचष्टासयुधऽइद्रेणणेन । संसृष्टजित्सौमपात्राहुश्वधूध्रधन्वाप्रतिहि
 ताभिरस्ता ॥ बृहस्पतेपरिदीयारथैरक्षोहामित्रौऽपवाधमानः । प्रभंजन्तेनोःप्रमणोयुधाजयन्नसाकमेध्यविता
 रथानां ॥ बलविज्ञायःस्थविरःप्रवीरःसहैस्वान्वाजीसहमानऽबुध्रः । अभिवीरोऽअभिसत्वासहो जाजैत्रिमिंद्ररथमार्तिष्ठ
 गोचित् ॥ गोत्रभिर्दगोविद्वज्रचाहुंजयंतमज्मप्रमणंतमोजसा । इमंसजाताऽअनुवीरयध्वमिंद्रं सखायोऽअनुसंरभ
 ध्वं ॥ २२ ॥ अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोवीरःशतमन्युरिंद्रः । दुश्चयनःधृतनापाळयुधोऽस्माकंसेनाऽअय
 त्प्रयुत्सु ॥ इंद्रऽआसानेताबृहस्पतिर्दक्षिणायुज्ञःपुरऽएतुसोमः । देवसेनानामभिभंजतीनांजयतीनांमरुतोयंत्य
 त् ॥ इंद्रस्त्वृष्णोवरुणस्तराज्ञऽआदित्यानांमरुतांशर्धऽबुध्रं । महार्मनसांभुवनच्यवानांघोषोदेवानांजयतामुदस्था
 त् ॥ उद्धर्पयमघवृक्षायुधान्युत्सर्वानामामकानांमनीसि । उद्धृत्रहन्वाजिनुवाजिनान्युद्रथानांजयतांयंतुघोषाः ॥
 अस्माकमिंद्रःसमृतेपुध्वजेष्वस्माकंयाऽइष्वस्ताजयंतु । अस्माकंवीराऽबृत्तेरभवंत्वस्मांऽधदेवाऽअवताहवेयु ॥ अमी
 पांचितंप्रतिलोभयंतीरुहाणांगान्यव्येपरेहि । अभिमेहिनिर्देहत्सुशोकैरंधेनुमित्रास्तर्मसासंचतां ॥ मेत्वाजयतानर

(आशुःकिशानःसूक्तोपांसायाआप्लादेवीत्यनुक्रमण्यांमप्लादेवीतिशोभनीये)

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ५

॥ ३६ ॥

इंद्रोवःशर्मयच्छतु । उग्रावःसंतुवाहवौनाध्व्यायथासथ ॥ (परिशिष्टं ॥ असौयासेनामरुतःपरेशमभ्यैतिनऽओज
सास्पर्थमाना । तांर्हृततमसापव्रतेनयथामीषाऽअन्योऽअन्यंनजानात् ॥ अंधाऽअमित्राभवताशीर्षाणाऽअहयऽइव ।
तेषांविोऽअग्निर्दधानामग्निर्मूढानामिदं हंतुवरं ॥ २३ ॥ (१०।९।५) असाविसोमःपुरुहूततुभ्यंहरिभ्यांयज्ञ
मुपयाहितृषं । तुभ्यंगिरोविप्रवीराऽइयानादधन्विरऽइंद्रपिवासुतस्य ॥ अप्सुधुतस्यहरिवःपिवेहद्यभिःसुतस्यजठरं
पृणस्व । मिमिक्षुर्धमद्रयऽइंद्रतुभ्यंतेभिर्वधस्वमदमुक्थवाहः ॥ प्रोत्रापीतिवृष्णऽइयमिसत्यांप्रयैसुतस्यहयैश्वतुभ्यं ।
इंद्रधेनाभिरिहमादयस्वधीभिर्विश्वाभिःशर्च्यागणानः+ ॥ ऊतीशचीवस्तववीर्येणवयोदर्धानाऽइशिजऽऋतज्ञाः ।
प्रजावर्दिंद्रमनुषोदुरोणेतस्थुर्गंतःसधमाद्यासः ॥ प्रणीतिभिष्टेहयैश्वसद्योःसुपन्नस्यपुरुचोजनासः । मंहिष्मति
वित्तिरेदर्धानाःस्तोतारऽइंद्रतवसुतताभिः ॥ २४ ॥ उपब्रह्माणिहरिवोहरिभ्यांसोमस्ययाहिपीतयेसुतस्य । इंद्रत्वा
यज्ञःक्षममाणमानद्वाभ्योऽअस्यध्वरस्यप्रकेतः+ ॥ सहस्रवाजमभिमतिपाहंसुतेरणमघवानंसुवृक्कि । उपभूषंतिगि
रोऽअयतीतमिदंनमस्याजरितुःपनंत ॥ सप्तापोद्वीःसुरणाऽअमृक्कायाभिःसिधुमतरऽइंद्रपुर्भित् । नवतिस्त्रोत्यान
वचस्वतीद्वेभ्योगातुंमनुषेचविंदः ॥ अपोमहीरभिश्चोत्तोरमं चोर्जागरास्वधिदेवऽएकः । इंद्रयास्त्वंवृत्रतूयैचकथं
(१०।९।५) . असावीलेकादशचसूक्तस्यैश्वामित्रोष्टकंद्रक्षिष्टम् ।

मंडलं १०

अनु. ९

॥ ३६ ॥

ताभिर्विश्वायुस्तन्वपुपुण्याः ॥ वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिरुतापिधेनपुरुहूतमीदृ ॥ आर्देयद्वृत्रमकृणोदुलोकंससाहेश
 क्रः पृतनाऽअभिष्टिः ॥ शुनंहुवेमघवान्मिन्द्रमसिन्भरेनृतमंवाजसाता ॥ शृण्वंतमग्रमतेयेसमत्सुभ्रंतं वृत्राणि संजि
 तं घनानां ॥ २५ ॥ (१०।९।६) कदावसोस्तोत्रहयैतऽआवश्मशारुधुद्धाः । दीर्घसुतंवाताप्याय ॥ हरीयस्यसुशु
 ज्जाविब्रतावेर्यतानुशेषा । उभारुजीनकेशिनापतिर्दन् ॥ अपयोरिन्द्रः पारपञ्जऽआमतोनशश्रमाणोविभीवान् । शुभे
 यद्युजेतविपीवान् ॥ सचायोरिन्द्रश्चकृपऽऑऽरपानसः सपर्यन् ॥ नदयोर्विब्रतयोः शूरऽइन्द्रः ॥ अधियस्तस्यैकेश
 वंताव्यचस्वतानपुष्ट्यै । वृनोतिशिर्माभ्यांशिप्रिणीवान् ॥ २६ ॥ प्रास्तौहृष्वौजाऽऽकृष्वेभिस्ततश्चशूरः शर्वसा । क्रतु
 र्नक्रतुभिर्मतारिर्ध्वा ॥ वज्रयश्चक्रेसुहनायदस्यवेहिरीमशोहिरीमान् । अरुतहनुरक्षुतंनरजः ॥ अर्वनोवृजिनाशिशी
 ह्युचावनेमानुचः । नाब्रह्मायज्ञऽऽक्रधगजोपतित्वे ॥ ऊर्ध्वायत्तेत्रेतिनीभूद्यज्ञस्यधूपुसङ्गन् । सजूर्नवंस्वयशसंसचा
 योः ॥ श्रियेतेष्टश्रिरुपसेचनीभूच्छिद्येदर्विरेपाः । ययास्वेपात्रैसिंचसऽउत् ॥ शतंवायदसुर्यग्रतित्वासुभिन्नऽइ
 त्यास्तौहुभिन्नऽइत्यास्तौत् ॥ आवोयदस्युहलेकुत्सपुत्रं प्रावोयदस्युहलेकुत्सवृत्सं ॥ २७ ॥ इत्यष्टमाष्टकेपं
 चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

(१०।९।६) कदेत्येकादशचर्यस्य सूक्तस्य कौत्सोदुभिन्नइन्द्रउष्णिक् आद्यागायत्रीवा द्वितीयासप्तन्यौपिपीलिकमध्ये अत्याविष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ६

॥ ३७ ॥

एकषष्ट्याव्यायेवर्गाः २७ सूक्तानि ११ ऋचः १४९ ॥ त्यागः ॥ उर्वश्या. पुरुरवस. उर्वश्या. पुरुरवस. २ उर्वश्या. पुरुरवस.
उर्वश्या. ३ पुरुरवस. उर्वश्या. पुरुरवस. उर्वश्या. पुरुरवस. २ उर्वश्या. पुरुरवस. २ उर्वश्या. पुरुरवस. २ उर्वश्या. पुरुरवस.
बृहस्पतय. ३ देवेभ्य. ४ अग्नय. ५] इंद्राये. १२ विश्वेभ्यो देवेभ्य. २४ [भे. प. विश्वेभ्यो दे. १० इंद्रादितिभ्या. इंद्राये. ऋक्विज. १२]
दुधणाये. १२ इंद्राये. ३ बृहस्पतय. इंद्राये. ७ अप्वाधै देव्याइ. मरुद्भ्य. इंद्राये. २२ ॥ इत्यष्टमे पंचमः ॥

उभौभूतांशः काश्यप आश्विनमाविद्व्यौ दक्षिणावाप्राजापत्या दक्षिणांतदातृन्वास्तौ चतुर्थीजगती किमिच्छंती
पणिभिरसुरैर्निगूढागाधन्वेष्टुं सरमा देवशुनीं मिद्रेण ग्रहितामयुग्मिभः पणयो मित्रीयंतः प्रोचुः सातान्युग्मां त्याभि
रनिच्छंती प्रत्याचष्टे ते वदन्तस्सप्तजुह्वन्नृत्वा जायां ब्राह्मणोर्ध्वनाभं विश्वदेवं द्यनुष्टुवंतं समिद्धं एकादशजमदक्षिस्त
त्सुतो वाराम आग्रियः परे च त्वारो वैरूपामनी पिणो दशाष्टादंष्ट्रं इंद्रपिवनमः प्रभेद नस्तमस्य शतप्रभेद नो त्यात्रिष्टुप्
धर्मासिधस्तापसो वायमो विश्वदेवं चतुर्थीजगती चित्रऽइन्नववाष्टिं हव्य उपस्तुत आग्नेयं जागतं त्रिष्टुप् शक्यं तं पिव
स्थौरो शिशुतो शिशूपो वानवा उभिधुर्धनान्नदानं प्रशंसा चोद्ये जगत्या वने हंस्त्युरुक्षयऽआमहीयवऽआग्नेयं राक्षोघ्नं
गायत्रं त्वितैससो नैन्द्रो लव आत्मानं तुष्टाव ॥ ६ ॥

॥

॥

मंडलं १०

अनु.

॥ ३७ ॥

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ६

॥ ३८ ॥

मंडलं १०

अनु. ९

॥ ३८ ॥

दक्षिणाभिर्नैजिह्वायंत्योनर्केपताम ॥ २ ॥ (१०।९।८) आविरभून्माहिमाथोनमेषांविश्वजीवंतमसोनिरमो
चि । महिल्योतिःपितृभिर्दत्तमागदुरुःपंध्यादक्षिणायाऽअदर्शि ॥ उच्चादिविदक्षिणावंतोऽअस्थुर्येऽअश्वदाःसहते
सूर्येण । हिरण्यदाऽअमृतत्वमंजतेवासोदाःसौमप्रतिरंतुऽआयुः ॥ दैवीपूतिर्दक्षिणादेवयुज्यानकवारिभ्योनहितेप
पणंतिप्रचयच्छतिसंगमेतेदक्षिणांसोवद्यभियाब्रह्मवःपृणंति ॥ शतधारंवायुमुकस्वविर्दनुचक्षसस्तेऽअभिचक्षतेहविः । अ
मन्येनपतिजनानांयःप्रथमोदक्षिणांमाविचार्य ॥ दक्षिणावान्प्रथमोहृतऽएतिदक्षिणावान्प्रमणीरअमेति । तमेव
स्यतुन्वोवेदतिस्रोयःप्रथमोदक्षिणयारार्य ॥ ३ ॥ तमेवऽऋषितमुब्रह्माणमाहुर्यज्ञान्यसामगामुक्थशासं । सशक्र
तेयोर्नऽआत्मादक्षिणांवर्मकृणुतेविज्ञानम् ॥ दक्षिणाश्वंदक्षिणागांददातिदक्षिणाचंद्रमतयच्चिरण्यं । दक्षिणाश्वंवनु
नंस्वश्चैतत्सर्वदक्षिणैभ्योददाति ॥ भोजाजिग्युःसुराभियोनिमभोजाजिग्युर्वध्वध्यासुवासाः । इदंयद्विश्वंभुव
यंसुरायाभोजाजिग्युर्वेऽअहताःप्रयंति ॥ भोजायाश्वंसमृजंत्याहुंभोजायास्तेकन्याइ शुभमाना । भोजस्येदंपुष्करि
(१०।९।८) आविरिलेकादशर्चस्रसूक्तानंगिरसोदिव्योदक्षिणात्रिष्टुपचतुर्थजगती । (प्राजापत्यादक्षिणानात्रीऋषिकावादक्षिणा-
दातारोवादेवता) ।

णीववेऽमपरिष्कृतं देवमानेव चित्रं ॥ भोजमर्थाः सुषुवाहोवहति सुषुद्रथोवतते दक्षिणायाः । भोजदेवासोवताभरेषु
 भोजः शत्रून्समनीकेषु जेता ॥ ४ ॥ (१०।९।९) किमिच्छंतीसरमाप्रेदमानद्दुरेह्यध्वाजगुरिः पराचैः । कास्मेहि
 तिः कापरितक्म्यासीत्कथं रसायाऽअतरः पर्यासि ॥ इन्द्रस्यदूतीरिपिताचरा मिमहऽइच्छंतीपणयोनिधीन्यः । अति
 ष्कदोभियसातन्नं आवृत्तार्थरसायाऽअतरं पर्यासि ॥ क्रीद्वद्धिद्रः सरमेकाहशीकायस्येदं दूतीरसरः पराकात् । आच
 गच्छान्मित्रमेनादधामाथागवांगोपतिनो भवति ॥ नाहंतैवेददभ्यंदभस्सयस्येदं दूतीरसरं पराकात् । नतंगूहंति सव
 तौगभीराहुताऽइद्रेणपणयः शयञ्चे ॥ इमागार्वाः सरमेयाऽएच्छः परिद्रियोऽअतान्सुभगेपतंती । कस्तं एनाऽअव
 सृज्जादयुऽव्युतास्माकमायुधासंति तिग्मा ॥ ५ ॥ असेन्यार्वाः पणयोवचांस्यनिपुव्यास्तन्वः संतुपापीः । अघृष्टोवऽ
 एतवाऽअस्तुपंथाबृहस्पतिर्वऽउभयानमृळात् ॥ अयं निधिः सरमेऽअद्रिबुध्नोगोभिरभैर्बसुभिर्नृष्टः । रक्षति तं प
 णयोयैर्सुगोपारेकुपदमलंकमाजंगंथ ॥ एहर्गमन्त्रपयुः सोमं शिताऽअयास्योऽअंगिरसो न वग्याः । तऽएतमूर्ध्वविभजंत
 गोनामथैतद्वचः पणयोवमन्त्रितं ॥ एवाच त्वं सरमऽआजंगंथप्रवाधिता सहसा दैव्येन । स्वसारं त्वाकृण्वैमापुनर्गोऽ

(१०।९।९) किमिच्छंतीत्येकादशचर्चस्य सूक्तस्यायुजापणिनामासुराक्रपयः युजामेकादशयाश्च सरमानाग्नीदेवशुनीकृषिकाअयुजासरमा
 देवतायुजामेकादशयाश्च पणयब्रिहृप् ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ६

॥ ३९ ॥

मंडलं १०

अनु. ९

॥ ३९ ॥

अपतेगवांसुभगेभजाम ॥ नाहवेदश्चातुत्वंनोस्वस्त्वमिन्द्रोविदुरंगिरसश्चघोराः । गोर्कामामेऽअच्छदयुन्यदायुमपा
तऽइतपणयोवरीयः ॥ दुरमितपणयोवरीयऽउह्मवोयंतुमिनतीकृतेन । बृहस्पतिर्याऽअर्विदुन्निगूहः सोमोऽग्रावाण
ऽऋषयश्चविप्राः ॥ ६ ॥ (१०।९।१०) तेवदन्यथमाब्रह्मकिल्बिषेकूपारःसलिलोमतिरिश्वा । वीळुहरास्तपऽउग्रो
मयोभूरापोदेवीःप्रथमजाऽऋतेन ॥ सोमोराजाप्रथमोब्रह्मजायांपुनःप्रयच्छदहणीयमानः । अन्वर्तितावरुणोभिन्न
ऽअसीदुमिर्होताहस्तगृह्यानिनाय ॥ हस्तैवग्राह्यऽआधिरस्याब्रह्मजायेयमितिचेदवोचन् । नदुतायप्रह्येतस्यऽए
षातथाऽराष्ट्रंगुपितंक्षत्रियस्य ॥ देवाऽएतस्यामवदंतपूर्वसप्तऽऋषयस्तपसेयेनिषेदुः । भीमाजायाब्राह्मणस्योपनीतादु
धीदधातिपरमेव्योमन् ॥ ब्रह्मचारीचरतिवेषिषद्विपःसदेवानाभवत्येकमंगं । तेनजायामन्वविदुहुहस्पतिःसोमेन
नीतांजुह्वीनदेवाः ॥ पुनर्वैदेवाऽअददुःपुनर्मनष्याऽदुत । राजानःसत्यंकृण्वानाब्रह्मजायांपुनर्ददुः ॥ पुनर्दयिब्रह्म
जायांकृत्वीदेवैर्निकिल्बिषं । ऊर्जपृथिव्याभक्त्वायोरुगायमुपासते ॥ ७ ॥ (१०।९।११) समिद्धोऽअद्यमनुषो
(१०।९।१०) तेवदन्नितिसप्तर्चस्यसूक्तस्यब्रह्मजायाजुह्वविश्वेदेवास्त्रिष्टुवंत्येद्वेअनुष्टुभौ । (ब्राह्मोबोर्ध्वनाभऋषिः) (१०।९।११)
समिद्धदलेकादशर्चस्यसूक्तस्यभार्गवो जमदग्निरिध्मस्तनूतपादिकोवर्हिर्देवीर्द्वारिउपासानक्तदैव्योहोतारौसरस्वतीळामारत्यस्त्वष्टावनस्पति-
स्वाहाकृतयस्त्रिष्टुप । (जामदग्निःपरशुरामोवा)

दुरोणेदेवोदेवान्यजसिजातवेदः । आचवहमित्रमहश्चिकित्वान्वदूतः कुविरसिप्रचेताः ॥ तनूनपात्पथऽकृतस्यया
 नान्मध्वासमंजनस्त्वदयासुजिह्व । मन्मानिधीभिरुतयज्ञमन्धनैदेवत्राचकृणुह्यध्वरनः ॥ आजुह्वानऽईक्ष्योवंच्यश्वाया
 ह्यग्नेवसुभिःसजोपाः । त्वंदेवानामसियह्वहोतासऽएनान्यक्षीपितोयजीयान् ॥ प्राचीनैवहिःप्रदिशापृथिव्यावस्तो
 रस्यावृज्यतेऽअग्नेऽअह्ना । व्युप्रथतेवितरंवरौयोदेवेभ्योऽअदितयेस्योनः ॥ व्यर्चस्वतीरुविंश्रियविश्रयंतापतिभ्योनज
 नयुःशुभमानाः । देवीर्द्वारोबृहतीविंश्वमिन्वादेवेभ्योभवतसुप्रायणाः⁺ ॥ ८ ॥ आसुष्वयंतीयजतेऽउपकेऽउपा
 सानक्तासदतांनियोनौ । दिव्येयोषणेबृहतीसुहृत्सुक्मेऽअधिश्श्रियंशुक्रपिशुंधाने ॥ दैव्याहोतराप्रथमासुवाचाभिमा
 नायज्ञंमनुषोयजध्वै । प्रचोदयंताविदथैषुक्तारुप्राचीनंज्योतिःप्रदिशादिशंता ॥ आनोयज्ञंभारतीतूयमेत्विळामनु
 ष्वदिहचेतयंती । तिस्रोदेवीर्नहिरंदस्योनंसरस्वतीस्वपसःसंदतु ॥ यऽइमेद्यावपृथिवीजनित्रीरूपैरपिशुश्रुवनानि
 विभ्वा । तमद्यहोतरिपितोयजीयान्देवंत्वष्टारमिहयक्षिविद्वान्⁺ ॥ उपावसुजतमन्यासमंजनदेवानांपाथऽकृतथाहु
 वीषि । वनस्पतिःशमितादेवोऽअग्निःस्वदंतुह्रव्यंमधुनाघृतेन ॥ सद्योजातोव्यमिमीतयज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरो
 गाः । अस्यहोतुःप्रदिश्यतस्यवाचिस्वाहाकृतंहुविरंदंतुदेवाः⁺ ॥ ९ ॥ (१०।९।१२) मनीषिणःप्रभरध्वमनीपां

(१०।९।१२) मनीषिणइतिदशर्चस्यसुक्तस्यैरूपोप्रादंष्ट्रंद्रक्षिष्टम् ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ६

॥ ४० ॥

यथायथामतयः संति नृणां । इन्द्रस्यैरेरयामाकृतेभिः सहिवीरोर्गवर्णस्युर्विदानः ॥ ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत्संगा
इयोरवृषभोगोभिरानद् । उदतिष्ठत्तविपेणारवेणमुहांति चित्संविद्याचारजांसि ॥ इन्द्रः किलं श्रुत्याऽअस्य वेदुसहिजि
ष्णुः पथि कृत्स्नर्याय । आन्मेनां कृष्णवच्युतो भुवद्भोः पतिर्दिवः संनजाऽअप्रतीतः ॥ इन्द्रो महोऽअर्णवस्य ब्रतामि
नादं गिरो भिर्युगानः । पुरुर्णे चिन्विततानारजांसि द्वाधरो धरुणं सत्यताता ॥ इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वानि
दुसर्वनाहंति शुष्णं । महीं चिद्व्यामातनोत्सूर्येण चार्कं भचित्कभेने नृस्कभीयान् ॥ १० ॥ वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्तरदेवस्य शू
शुवानस्य मायाः । विधृणोऽअत्र धृपतार्जघंथाभो मघवन्वाहो जाः ॥ स च तयदुपसः सूर्येण चित्रामस्य केतवोरामे वि
दन् । आयन्नक्षत्रंददहो दिवो न पुनर्युतो न किं रज्जानुवेद ॥ दुरं किल प्रथमा जगमुरासामिन्द्रस्य याः प्रसेवे ससुरापः । क
स्विदग्रं कवुधुऽआसामपो मध्यं कवो नृनमंतः ॥ सृजः सिधूरिह नाजग्रसानोऽआदिदेताः प्रवि विज्रे जवेन । मुमुक्षमा
णाऽवृतयामुमुच्रे धेदेतानरमंते नितिकाः ॥ सध्रीचीः सिधुशुतीरि वायन्त्सनाज्जारऽआरितः पर्भिर्दासां । अस्तमा
ते पार्थिवा वसून् यस्मे जग्मुः स नृताऽइन्द्रपुर्वीः + ॥ ११ ॥ (१०।९।१३) इन्द्रपिव प्रतिकामं सुतस्य प्रातः सावस्तव हि प
र्वपीतिः । हर्षस्वहंतवैश्वरानुवर्थाभिष्टेवीर्या इ प्रब्रवाम ॥ यस्तेरथो मर्नसो जवीर्या न द्रुते न सोमपयाययाहि । तूयमाते
(१०।९।१३) इन्द्रपिवेति दशर्चस्य सूक्तस्यैरूपो नभः प्रभेदं न हंद्रस्त्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ९

॥ ४० ॥

हरयः प्रद्रवतुयेभिर्यासिष्वपमिर्मदमानः ॥ हरित्वतावर्चसासूर्यश्रष्टैरूपैस्त्वयस्पर्शयस्व । अस्माभिरिद्रुसखिभि
 हुवानः संप्रीचीनोर्मादयस्वानिपद्य ॥ यस्यत्यत्तमहिमानंमदेष्ट्विमेमहीरोदसीनाविविकां । तदोक्तुऽआहारैर्भिरिद्रयु
 क्तैः प्रियेभिर्याहिप्रियमन्नमच्छ ॥ यस्यशश्वत्पिषांऽईद्रुशत्रूनानाकुल्यारण्याचकथं । सतेपुराधितविपीमियतिंसत
 मदायसुतऽईद्रुसोमः ॥ १२ ॥ इदंतेपात्रं सनेवित्तमिन्द्रपिवासोमेमेनाद्यतकतो । पूर्णऽआह्वयोमदिरस्यमध्वोयंवि
 श्वऽइदमिह्यतिदेवाः ॥ विहित्वामिन्द्रपुरुधाजनांसोहितप्रयसोवृषभह्वयते । अस्माकंतेमधुमत्तमानीमासेवन्त्सवं
 नातेषुहर्ष ॥ प्रतऽइंद्रपव्याग्निप्रननंवीर्योचंप्रथमाकृतानि । सतीनमन्युरश्रथायोऽअद्रिसुवेदनामकृणोर्ब्रह्मणे
 गां ॥ निषुसीदगणपतेगणेपुत्वामाहुर्विप्रतमंकवीनां । नऽऽकृतेत्वत्कियतेकिंचनारेमहामर्कमघवन्वित्रमर्च ॥ अभि
 ख्यानोमघवन्नाधमानान्त्सखेवोधिर्वसुपतेसखीनां । रणंकुधिरणकृत्सत्यशुष्माभक्तैचिदाभेजारयेऽअस्मान्
 ॥ १३ ॥ (१०।१०।१) तमस्यद्यावपृथिवीसचेतसाविश्वेभिर्देवैरनुशुष्ममावतां । यदैत्कुण्वानोमहिमानमिन्द्रियं
 पीत्वीसोमस्यकृतेमोऽअवर्धत ॥ तमस्यविष्णुर्महिमानमोजसांशुंदधुन्वानमधुनोविरिञ्चते । देवेभिरिन्द्रोमघवासा
 वमिभृत्रंजघ्नवोऽअभवद्वरेण्यः ॥ वृत्रेणयदहिनाविभ्रादायुधासमस्थिथायुधयेशंसमाविदे । विश्वेतेऽअत्रमरुतःस

दशमेनुवाकेषोडशसूक्तानि (१०।१०।१) तमस्येतिदशर्चसासूक्तस्यैवरूपः शतप्रमेदनोजगत्वंत्यान्निद्रुप् ।

हत्सनावर्धय्यमहिमानमिद्वयं ॥ जज्ञानऽएवव्यवाधतस्पृधःप्रापयद्द्वीरोऽअभिपौस्यरणं । अर्धश्चदद्रिमवसस्य
 दःसृजदस्तभ्रात्राकंस्वपस्ययापुथुं ॥ आदिद्रःसन्नातविपीरपत्यतवरीयोद्यावापृथिवीऽअवाधत । अवाभरद्वृपितो
 वज्रमायसंशोर्वमित्रायवरुणायदाशुपे ॥ १४ ॥ इन्द्रस्यात्रतविषीभ्योविरुद्धिनऽऽक्रघायतोऽअरंहयतमन्यवे । वृत्रय
 दुग्रीव्यवृश्चदोर्जसापोविभ्रतंतमसापरीवृतं ॥ यावीर्योणिप्रथमानिक्त्वोमहित्वेभिर्यतमानौसमीयतुः । ध्वांतंतमो
 वेदध्वसेहृतऽइंद्रोमह्नापर्वहृतावपत्यत ॥ विश्वेदेवासोऽअधुवृण्योनितेवर्धयन्त्सोभवत्यावचस्यया । रज्ज्वृत्रमहि
 मिद्रस्यहर्न्मनाग्निर्नर्जभैस्तुष्वन्नमावयत् ॥ भरिदक्षैर्भिवचनेभिर्रक्तभिःसख्येभिःसख्यानिप्रवोचत । इन्द्रोधुनिचक्षु
 मुरिचंद्रभयन्ऽह्नामनुस्याशृणुतेदुभीतये ॥ त्वंपुरूण्याभरास्वश्यायेभिर्मसैनिवचनानिशंसन् । सुगेभिर्विश्वादुरि
 तातरेमविदोषुणऽउर्वियागाधमद्य ॥ १५ ॥ (१०११०१२) घर्मासमंतात्रिवृतंव्यापतुस्तयोर्जुष्टिमातरिश्वाजगा
 म । दिवस्पयोदिधिपाणाऽअवेपन्विदुर्दुवाःसहसामानमर्क ॥ तिस्रोदेष्ट्रायनिक्रंतीरुपासतेदीर्घश्रुतोविहिजानंति
 तस्यासुपर्णावृषणानिपैदतुर्थदेवादधिरेभांगधेयं ॥ चतुष्कपदायुवतिःसुपेशाधतप्रतीकावयुनानिवस्ते ।
 (१०११०१२) घर्मेतिदशर्चस्यसूक्तस्यैरूपःसध्रिर्विश्वेदेवास्त्रिपुचतुर्थोजगती । (तापसोघर्मोवाक्रपिः)

नमनसापश्यमंतितस्तमातारैहिसडर्जरेहिमातरं ॥ सपुर्णविप्राःकवयोवचोभिरेकसंतवहुधाकल्पयंति । छंदोसिचद
 धतोऽअचरेपुग्रहान्सोमस्यामिमतेद्वादश ॥ १६ ॥ षट्त्रिंशोश्चतुरःकल्पयंतश्छंदोसिचदधतऽआद्वादशं । यज्ञंवि
 मार्यकवयोमनीपऽऋक्सामाभ्यांप्रार्थयंत्यति ॥ चतुर्दशान्येर्महिमानोऽस्यतंधीरावाचाप्रणयंतिसप्त । आग्रानं
 तीर्थकऽइहप्रवौचद्येनपथाप्रपिर्वतेसुतस्य ॥ सहस्रधापंचदशान्युक्थायावह्यावापृथिवीतावदित्तत् । सहस्रधामहि
 मानःसहस्रयावद्ब्रह्मविष्टितंतावतीवाक् ॥ कश्छंदसांयोगमावेदधीरःकोधिण्यांप्रतिवाचंपपाद । कमत्विजामष्टमं
 शूरमाहुर्हरीऽइंद्रस्यनिचिकायकःस्वित् ॥ भूम्याऽअंतंपर्येकंचरंतिरथस्यधर्षुयुक्तासोऽअस्थुः । श्रमस्यदायंविभजं
 त्येभ्योयुदायमोभवतिहृग्भ्यंहितः ॥ १७ ॥ (१०।१०।३) चित्रऽइच्छिशोस्तरुणस्यवक्षथोनयोमातरावप्येतिधा
 तवे । अनुधायदिजीजनदधाचनुववक्षसद्योमहिदुत्यं चरन् ॥ अग्निर्हनामधायिदन्नपस्तमःसंयोनयवतुभसना
 दूता । अभिप्रमुरोजुह्वस्वध्वरऽइनोप्रोथमानोयवसेवृषा ॥ तंवोविनद्रुपदैदेवमंधसऽइंदुप्रोथंतप्रवर्पतमर्णवं । आ
 सार्वाह्निनशोचिषाविरिण्णिनमहिर्ब्रतंसुरजैतमध्वनः ॥ विचस्थतेज्रयसानस्याजर्धक्षोर्नवाताःपरिसंत्यच्युताः ।
 आरुण्वासोयुधुयोनसत्वनंत्रितनंशंतप्रशिपंतऽइष्टये ॥ सऽइदृशिःकण्वतमःकण्वसखार्यःपरस्यांतरस्यतरुपः । अ

(१०।१०।३) चित्रइतिनवर्चसूक्तस्यवाष्टिहव्यउपस्तुतोभिर्जगतीअष्टमीनवम्यौत्रिष्टुपशक्यौ ।

मिःपालुगुणतोऽग्निःसुरीनग्निर्देदातुतेषामवोनः ॥ १८ ॥ वाजिन्तमायसहस्रेषुपिच्यतुषुच्यवानोऽनुजातवेदसे ।
 अनुदेचिद्योधुषतावरसतमहिन्तमायधन्वनेदविच्यते+ ॥ एवाग्निर्मतेःसहसुरिभिर्वसुःष्ट्वेसहसःसुनरोद्युभिः । मित्रा
 त्वांस्तोषामत्वयासुवीराद्राधीयऽआयुःप्रतरं दर्धानाः ॥ इति त्वाग्नेवृष्टिहव्यस्यपुत्राऽर्पस्तुतासऽऋषयोवोचन् । तां
 ममहृतऽईदृश्यायपिवावुत्रायहंतवेशविष्ट । पिवरायेशवसेहूयमानःपिवमध्वस्तुपदिंद्रावृषस्व ॥ अस्यपिवक्षुमतःप्र
 स्थितस्येदुसोमस्यवरमासुतस्य । स्वास्तिदामनसामादयस्वावाचीनोरेवतेसौभगाय ॥ ममस्तुत्वादिव्यःसोमऽईदृमम
 त्तयःसुयतेपार्थिवेषु । ममस्तुयेनवारिवश्चकथमस्तुयेननिरिणासिशन्नू ॥ आद्विवर्हऽअमिनोयात्विद्रोवृषाहरिभ्यां
 पारिपिक्कमंधः । गव्यासुतस्यप्रभृतस्यमध्वःसुत्राखेदामरुशहावृषस्व ॥ नितिगमानिन्नाशयन्नाश्यान्यवस्थिरातनु
 हियातुजूनौ । उत्रायतेसहोवलंददामिप्रतीत्याशत्रून्विगदेषुवृश्च ॥ २० ॥ व्यर्ग्यऽईदृतनुहिश्रवांस्योजःस्थिरेवध
 न्वनोभिमातीः । अस्मद्गवावृधानःसहोभिरनिभृष्टस्तन्ववावृषस्व ॥ इदं हविर्मधवन्तुभ्यंरुतंप्रतिसम्राळहणानो गृ
 (१०।१०।४) पिवेतिनवर्चस्रूक्त्यस्यौरोमिथुतइंद्रस्त्रिष्टुप । (अभिथूपोवाक्कविः)

भाय । तुभ्यं सुतोर्मघवन्तुभ्यं पृच्छोऽर्क्षोऽद्रिपिवचप्रस्थितस्य ॥ अर्क्षोर्दिद्रुप्रस्थिते माहूवीं पिचनोऽधिष्यपचतोतसोमं ।
 प्रयस्वंतः प्रतिहर्यामसित्वा सत्याः संतयजमानस्य कामाः ॥ प्रेक्षाग्निभ्यां सुवचस्यामियमिंसि धाविप्रेरयं नावमर्कः । अ
 योऽइव पारिचरति देवायेऽअसमभ्यर्धनदाऽउद्भिर्दश्च ॥ २१ ॥ (१०।१०।५) नवाऽउदेवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशि
 तमुपगच्छंति मत्यवः । उतो रयिः पृणतो नोपदस्यत्युता पृणन्मर्द्धितारं न विदते ॥ यऽआग्रार्थचकमानार्थपित्वोन्नवा
 न्तसन्नफिता योपजग्मुयै । स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्समर्द्धितारं न विदते ॥ सऽइद्भेजो योगहवे दद्राल्यन्नकामा
 यचरेते कशाय । अरमसैभ चतियामहूताऽउता पुरीषु कृणुते सखायं ॥ न स सखा यो न ददति सख्यै सचाभुवे स चमाना
 यपित्वः । अपास्मात्प्रेयान्नतदोकोऽअस्ति पणं तमन्यमरणं चिदिच्छेत् ॥ पूणीयादिना धमानाय तव्यान् द्राघीयां समनु
 पश्येत्तपंथां । ओहिर्वर्तैरथैव चक्रान्यमन्यमुपतिष्ठन्तरायः ॥ २२ ॥ मोघमन्नं विदतेऽअप्रचेताः सत्यं व्रीमि वधऽ
 इत्सतस्य । नार्यमणं पुण्यतिनो सखायं केवलाघोभवति केवलादी ॥ कृपन्नित्फालऽअशितं कृणोति यन्नार्ध्वानमपबु
 क्ते चरित्रैः । वदन् नृत्वावदतो वनायान्पणन्नपिरपृणंतमभिष्यात् ॥ एकपाद्भ्योऽद्विपदो विचक्रमेद्विपात्रिपादमभ्येति
 पृश्नात् । चतुष्पदेति द्विपदमभिस्वरैः सपश्यन्पुंस्त्रीरुपतिष्ठमानः ॥ समौ चिज्जस्तौ न समं विविष्टः संमातरौ चिन्नसमं दु

(१०।१०।५) नवा इति नवर्चस्य सूक्तस्यागिरसो मिश्रध्वना न्नदानं त्रिष्टुवाद्ये जगत्सौ ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ६

॥ ४३ ॥

हाते । युमयोश्चिन्नसमावीर्षाणिज्ञातीचित्तलौनसमंपूणीतः ॥ २३ ॥ (१०।१०।६) अग्नेहंसिन्यश्त्रिणंदीद्यन्मल्ये
ष्वा । स्वैक्षयेयुचिव्रत ॥ उत्तिष्ठसिस्वाहुतोघृतानिप्रतिमोदसे । यत्त्वास्तुचःसमस्थिरन् ॥ सऽआहुतोविरोचतेभिरी
केन्योगिरा । सुचाप्रतीकमज्यते ॥ घृतेनाग्निःसमज्यतेमधुप्रतीकुऽआहुतः । रोचमानोविभावसुः ॥ जरमाणःस
दाभ्येनशोचिषाग्नेरक्षस्त्वंदह । गोपाऽऽकृतस्यदीदिहि ॥ सत्वमग्नेप्रतीकेनप्रत्योषयातुधान्यः । अदाभ्यंगहपतिं ॥ अ
तत्त्वागीभिर्रुक्षयाहव्यवाहंसमीधिरे ॥ यजिष्ठमानुषेजने ॥ २५ ॥ (१०।१०।७) इतिवाऽइतिमेमनोगामश्वंस
नुयामिति । कूवित्सोमस्यापामिति ॥ प्रवाताऽइवदोधतुऽउन्मापीताऽअयंसत । कुवि० ॥ उन्मापीताऽअयंसतर
थमश्वऽइवाशवः । कुवि० ॥ उपमामतिरस्थितवाश्रापुत्रमिवप्रियं । कुवि० ॥ अहंतष्टवंधुरपर्यंचामिहदामतिं ।
कुवि० ॥ नहिमेऽअक्षिपच्चनाच्छान्तसुःपंचकृष्टयः । कुवि० ॥ २६ ॥ नहिमेरोदसीऽउभेऽअन्यपक्षंचनप्रति ।
कुवि० ॥ अभिद्यामहिनामुवमभीडु मांपृथिवीमही । कुवि० ॥ हंताहंपृथिवीमिमानिदधानीहवेहवा । कुवि० ॥

(१०।१०।६) अग्नेहंसीतिनवर्चस्यसूक्तस्यामहीयवरुक्षयोरक्षोहाग्निगयत्री । (१०।१०।७) इतिवाइतित्रयोदशर्वस्यसूक्तस्यैन्द्रो
ल्वोगायत्री ।

॥ ४३ ॥

मंडलं १

अनु. १८

अ०प०मि०तृ०थि०वी०मं०जुं०घना०नी०हव्य०हवा । कुवि० ॥ द्विविमैऽअन्यःपक्षोऽधोऽअन्यमचीक्रुपं । कुवि० ॥ अ०हर्मसि
महा०म०हो०भि०नु०भ्यमुदी०पितः । कुवि० ॥ ग०होया०भ्यरं०कृतोदेवेभ्यो०हव्यवाहनः । कुवि० ॥ २७ ॥ इत्यष्टमाष्टके

पष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
द्विपष्ठयव्यायेवर्गाः २७ सूक्तानि १४ ऋचः १४० ॥ त्याग. ॥ अध्विन्या ११ दक्षिणाया. ११ सरमाया. ११ वरिप.
पणिम्य. सरमाया. पणिम्य. सरमाया. पणिम्य. २ विश्वेभ्योदेवेभ्य. ७ समिद्धायामय. तन्नूनात. इळाये. वरिप.
पणिम्य. सरमाया. पणिम्य. सरमाया. पणिम्य. २ विश्वेभ्योदेवेभ्य. ३० विश्वे-
देवीभ्योद्धार्य. उपासानक्ताभ्या. देवीभ्याहोतृभ्याप्रचेतोभ्या. सरस्वतीळभारतीभ्य त्वष्ट्र. वनस्पतय. स्वाहाकृतीभ्य. इद्राये. ३० विश्वे-
देवीभ्योदेवेभ्य. ३ परमात्मनंइन्द्राये. २ यज्ञायपरमात्मन. २ मध्यमैवाच. गायत्र्यादिष्टोम्य. विश्वेभ्योदेवेभ्य]
१० [भे. प विश्वेभ्योदे. ३ परमात्मनंइन्द्राये. २ यज्ञायपरमात्मन. २ मध्यमैवाच. गायत्र्यादिष्टोम्य. विश्वेभ्योदेवेभ्य]

देव्याश्वाभ्यः ७ भागः १ ॥ १० ॥ अथ शिष्येभ्यो दे. ३ परमात्मन इन्द्राय. १ ॥ इत्यष्टमे पठ ॥
म्यो देवेभ्यः १० ॥ भे. ५ विश्वेभ्यो दे. ३ परमात्मन इन्द्राय. १ ॥ इत्यष्टमे पठ ॥
अग्नयः १ इन्द्राये. १ धनान्नायः १ रक्षोघ्नेभ्यः १ ऐन्द्राय लवाये १ ॥ इत्यष्टमे पठ ॥
तद्विन्नाथार्चणो वृद्धिर्वाहिरण्यगर्भो दशहिरण्यगर्भः प्राजापत्यः कार्यवसुनाष्टौ चित्रमहावासिष्ठ आग्नेयं जागर्त
माद्यापंचमी च तैयं वेनो वै न्यमिभं नो नैव द्युत्तमानि हवो भिवरुणसो मानामाद्याग्नेयी तिस्रश्चाग्नेरात्मस्तवः शिष्टाय
थानि पातंसमभीजगत् हमष्टौ वागां भृण्यात्मानं युष्टावद्वितीयाजगती न तं शैल्लुपिः कुलमलत्र हि पौवामदेव्योर्वाहो
मुगैश्वदेवमुपरिष्टाद्वाहंतं त्यात्रिष्टुपरात्रीकुशिकः सौभरो रात्रिर्वाभारद्वाजी रात्रिस्तवांगायत्रं समाग्नेन वविह

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ७

॥ ४४ ॥

व्यौवैश्वदेवं जगत्यंतं नासत्सप्तप्रजापतिः परमेष्ठी भाववृत्तं तु योजो यज्ञः प्राजापत्यो जगत्याद्याप्राचः सुक्रीतिः
काक्षीवतो मध्ये नुष्टुप् सोत्तराचाध्विन्यावी जानंशकपूतो नाम धौमैत्रावरुणं न्यंकुसारिण्याद्यालिंगोक्ते देवतां त्या
महासतो बृहत्पुपाद्योपां त्ये प्रस्तारपंक्तीशोपाविराडूर्पाः प्रोषु सुदाः पैजवनः शाकरमहापांक्तवाद्यौतचौत्रिष्टुवंतं सु
भेयन्मांघातायौवनाश्वौ महापांक्तं पंक्तिरंत्यातामध्यर्धांगोधापश्यर्धसिन्कुमारोयामायनोयामानुष्टुभं हि के
श्रीमुनयो चातरशान्जुतिर्वातजूतिर्विप्रजूतिर्वृषाणकः करिक्तं एतशक्रदयश्रृंगश्चैकर्चाः कैशिनं सुतदेवाः सप्तक्र
पर्यएकचर्वैश्वदेवं तवत्ये पळंगऽऔरवो जागतं सूर्यरश्मिर्देवगंधर्वो विश्वावसुरात्मानमस्तौ तूर्वाधसवितारमग्ने
तवाग्निः पावक आग्नेयं विष्टारपंक्तीति स्रः सतो बृहत्ये उपरिष्टाज्योतिरग्ने अच्छाग्निस्तापसौ वैश्वदेवमानुष्टुभं ह्ययम
ष्टौ द्वृचाः शार्ङ्गाजरीताद्रोणः सारिष्टकः संवमित्रश्चाग्नेयमाद्ये जगत्यौ चतस्रस्त्रिष्टुभः ॥ ७ ॥
हरिः ओम् (१०११०८) तदिदं सुभुवेन पुज्येष्टं यतो जज्ञऽउग्रस्त्वेप नृम्णः । सद्यो जज्ञानो निरिणातिशत्रुननुयं
विश्वेमदं त्यूमाः ॥ बाब्रुधानः शर्वसाभूयो जाः शत्रुर्दुःसार्यभियसं दधाति । अर्च्यनच्च न्यूनच्च सस्त्रिंसेन वं तप्रभृतामर्दे
षु ॥ त्वेकतुमार्पिं वृजंति विश्वे द्विर्यदेतो त्रिर्भवत्यूमाः । स्वादोः स्वादीयः स्वादुर्नासृजा समदः सुमधुमधुनाभियोधीः ॥
(१०११०८) तदिदिति नवर्चस्य सूक्तस्याथर्वणो बृहद्वि वंदं ब्रह्मिष्टुप् ।

मंडलं १८

अनु. १०

॥ ४४ ॥

इति चिच्छित्वा धनाजयं तमदेऽअनुमदंति विप्राः । ओर्जीयो धृष्णो स्थिरमातं जुष्यमात्वादभन्यातु धानादुरेवाः ॥
त्वया विन्यंशा शस्त्रहेरणे पुप्रपश्यं तोयधेन्या निभूरि । चोदयामितऽआयुधावचोभिः संतेशि शामि ब्रह्मणा वयांसि ॥ १ ॥
स्तुप्यैषु पुरुषसमृन्धमिनतं ममाष्टयमाह्वानं । आदर्पेत शवसासदा ननप्रसाक्षते प्रतिमाना निभूरि ॥ नितहं धिपेवं परं
चयं सिन्ना विथावसादुरोणे । अमातरास्थापयसे जिगलूऽअतऽइनो पिकर्वरा पुरूर्णि ॥ इमा ब्रह्मवहद्विबोऽवि वक्कीद्राय
क्षुपमं ग्रियः स्वर्पाः । महोगोत्रस्य क्षयति स्वरजोदुरश्च विश्वाऽअवृणोदपस्वाः ॥ एवामहान्वहद्विबोऽअथर्वावोच
त्वां त्वं वृमिद्रमेव । स्वसारोमातरि भ्वरीररि प्राहि चंति च शवसावधयंति च ॥ २ ॥ (१०११०१९) हिरण्यगर्भः
समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधारपृथिवीं द्यामते मां कसैदेयाय हविषा विधेम ॥ यऽआत्सदा बल
दायस्य विश्वऽअवपासते प्राशिपंयस्य देवाः । यस्य छाया मृतं यस्य मृत्युः कसैः ॥ यः प्रणतो निर्निमित्तो महिलैकऽइद्राज्ञा
जगतो बभूव । यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कसैः ॥ यस्य मे द्विमवतो महित्वायस्य समुद्रं सर्यासुहाहुः । यस्येमाः
प्रदिशो यस्य स्वाहू कसैः ॥ येन द्यौरुग्रापृथिवी च द्वायेन स्वः स्तभितं येन नारकः । योऽअंतरिक्षे रजसो विमानः कसैः
॥ ३ ॥ यं कंदसीऽअवसातस्तमानेऽअभ्यैक्षंतां मनसो रजमाने । यत्राधिसूरऽअदितो विभातिकसैः ॥ आपो ह्ययं द्रु

३ ॥ यक्रदसाऽअवसापताः ॥
(१०११०९) हिरण्यगर्भइतिदशचस्यासूक्तस्यप्राजापत्यो हिरण्यगर्भः प्रजापतिश्चिदुप ।

हृतीर्विश्वमायुन्गर्भं दधाना जनयंतीरग्निं । ततो देवानां समवर्तता सुरैः कस्मै ० ॥ यश्चिदापो महिना पर्यपश्य हक्षं दधा
 ना जनयंतीर्यज्ञं । यो देवेष्वाधे देवऽएकऽआसीत्कस्मै ० ॥ मनो हिंसीज्जनितायः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधमं जजानं ।
 यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै ० ॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वं ज्ञातानि परितावभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअ
 स्तुवयं स्याम परयो रयीणां ॥ ४ ॥ (१०।१०।१०) वसं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमर्तिथि मद्द्विषेण्यं । सरासते
 शुरुधो विश्वधा य सोमिर्होता गृहपतिः सुवीर्यं ॥ जुषाणोऽअग्ने प्रतिहर्षमेव चो विश्वानि विद्वान्वयुना निसुक्रतो । सरासते
 णिग्ब्रह्मणे गालुमेरय तव देवाऽअजनयन्ननुव्रतम् ॥ सप्तधामानि परियन्नमर्त्यो दाशहृष्टुषे सुक्रते मामहस्व । द्युतनि
 रयिणा मे स्वाभुवा यस्तऽआनदसमिधा तं जुपस्व ॥ यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हविष्मत्तऽईळते सप्तवाजिनं । सुवीरेण
 द्युतपृष्ठमुक्षणं पूर्णं तं देवं पृणते सुवीर्यं ॥ त्वंदूतः प्रथमो वरेण्यः सहूयमानोऽअमृताय मत्स्व । त्वामर्जयन्मरुतो दाशुषेण
 हेत्वांस्तो मे भिर्भृगवो विरुचुः ॥ ५ ॥ इषंदुहन्सुदुर्घा विश्वधा य संयज्ञं प्रिये यजमानाय सुक्रतो । अग्नें घृतस्त्रुस्त्रिक्वता
 निदीर्घं हृत्तिर्वज्रं परियन्त्युक्ततूयसे ॥ त्वामिदुस्याऽउपसोव्युष्टिषु तं कृण्वानाऽअयजंतु मानुषाः । त्वां देवामहया
 र्या यवा वृधूरा ज्यमग्ने निमजंतोऽअध्वरे ॥ नित्वावसिष्ठाऽअहंतवाजिनं गणंतोऽअग्ने विदथैषु वधसः । रायस्पोष्य
 (१०।१०।१०) वसुमिदं पृथस्य सूक्तस्य वासिष्ठश्चित्रमहा अमिर्जगती आधापंचम्यौ त्रिष्टुभौ ।

जमानेषुधारययु० ॥ ६ ॥ (१०११०११) अयंवेनश्चोदयत्युश्रिगभज्योतिर्जरायुर्जसोविमाने । इममपांसंग
मेसूर्यस्यशिशुश्रुत्रविप्रामतिभीरिंहति ॥ समद्रादूर्मिसुदितिवेनोर्नभोजाःपृष्ठंहर्यतस्यदर्शि । ऋतस्यसानावार्धिविष्टपि
आद्रसमानयोनैर्मर्भ्यनूपतत्राः⁺ ॥ समानपर्वीरुभिवावशानास्तिष्ठन्त्वसस्यमातरःसनीळाः । ऋतस्यसानावार्धिचक्र
माणारिंहतिमध्वोऽअमृतस्यवाणीः ॥ ज्ञानंतोरूपमकृपंतविप्रामगस्यघोषमहिपस्यहिग्मन् । ऋतेनयंतोऽअधिसिंधुम
स्थुर्विदङ्गधर्वोऽअमृतांनिनाम ॥ अप्सराज्जारमुपसिष्मियाणायोषाविभर्तिपरमेव्योमन् । चरद्विप्रयस्ययोर्निषुप्रियः
सन्सीदत्पक्षेहिरण्ययेसवेनः⁺ ॥ ७ ॥ नाकैसुपर्णमुपयत्ततंहृदावेनंतोऽअभ्यर्चक्षतत्वा । हिरण्यपक्ष्वरुणस्यदुतंय
मस्ययोनौशकुनेभुरण्युं⁺ ॥ ऊर्ध्वोर्गंधर्वोऽअधिनार्कैऽअस्थात्प्रत्यङ्चित्राविचन्द्रस्यायुधानि । वसानोऽअल्कसुरभि
हृदोर्कस्वर्णनामजनतप्रियाणि ॥ द्रुसःसमद्रमभियजिगीतिपश्यन्गृध्रस्यचक्षसाविधर्मन् । भानुःशुक्रेणशोचिषा
चकानस्तूतीयेचक्रेरजसिप्रियाणि ॥ ८ ॥ (१०११०१२) इमंनोऽअग्नऽउपयज्ञमेहिपंचयामंत्रिवृत्तसप्ततंतुं । अ
सौहव्यवाळुतनःपुरोगाज्योगेवदीर्घतमऽआश्रयिष्ठाः ॥ अदेवाद्देवःप्रचतागुहायन्यपश्यमानोऽअमृतत्वमैमि । शि

(१०११०११) अयमित्यष्ट्वस्यसूक्तस्यभार्गवोवेनोवेनस्त्रिष्टुप् । (१०११०१२) इमंनइतिनवर्चस्यसूक्तस्याद्यायाःपंचम्यादिचतसृणांचा
भिवरुणसोमाऋपयःद्वितीयादितिस्तृणामप्रिर्द्धेविःआद्यानाचतसृणामग्निःपंचमीसप्तम्यष्टमीनारुणःषष्ठ्याःसोमोनवम्याःसोमैर्द्वौत्रिष्टुप्

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ७

॥ ४६ ॥

मंडलं १०

अनु. १०

॥ ४६ ॥

वयं तसं तम शिवो जहामि स्वात्सव्या दर्शनाभि मेमि ॥ पश्यन्नन्यस्याऽअतिथिवयायाऽऽकृतस्युधामविमिमेषूरुणि ।
शंसामि पित्रेऽअसुराय शेषमयज्ञियाद्याज्ञियभाग मेमि ॥ ब्रह्मीः स माऽअकरमंतरस्मिन्निद्रवृणानः पितरं जहामि । अग्निः
सोमो वरुणस्ते च्यवते पर्यावद्राष्ट्रं तदवाम्यायन् ॥ निर्मयाऽउत्येऽअसुराऽअभूवन्त्वंभावणकुमयासे । ऋतेनरा
जन्नष्टं विविचन्ममराष्ट्रस्याधिपत्य मेहि ॥ ९ ॥ इदं स्वरिदमिदं स्वामयं प्रकाशऽउर्वीऽतरिक्षं । हनो ववृत्रं निरेहि
सोमहविष्ठासंतं हविषो यजाम ॥ कविः कवित्वादि विरूपमासजदप्रभूतीवरुणो निरपः सृजत् । क्षेमं कृण्वाना जनयो न
सिधं वस्ताऽअस्यवर्णं शुचयो भरिञ्चति ॥ ताऽअस्यज्येष्ठमिन्द्रियं संचते ताऽईमाक्षेति स्वधयामदतीः । ताऽई विशो नरा
जानं वृणाना वीभत्सुवोऽअपवृत्रादतिष्ठन् ॥ वीभत्सुनां सयुजं हंसमाहुरपादिव्यानां सख्ये चरंतं । अनुष्टुभमनुचर्च्य
माणमिन्द्रं निचिक्वुः कवयो मनीषा ॥ १० ॥ (१०।१०।१३) अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यरुतविश्वेदेवैः ।
अहं मित्रावरुणो भाविभर्म्यहमिन्द्राभीऽअहमश्विनोभा ॥ अहं सोममाहुनसं विभर्म्यहं त्वष्टारमुतपपणं भगं । अहं दधा
मिन्द्रविणं हविष्मते सुग्राव्येऽयजमानाय सुन्वते ॥ अहराष्ट्रीं संगमनी वसूनां चिकितुर्भीषथ मायुज्ञियानां । तां मादेवा
व्यदधुः पुरुत्राभूरिस्थात्राभूर्यविशयतीं ॥ मया सोऽअन्नंऽमत्तियो विपश्यतियः प्राणेतियऽईशुणोत्युक्तं । अमंतवो मां
सप्तमी जगती । (१०।१०।१३) अहं रुद्रेभिरत्यष्टर्वसूक्त्यां भृणिर्वागाभृणिर्वाक्त्रिष्टुप् द्वितीया जगती ।

तडपक्षियंतिश्रुतिश्रुतश्रद्धितेवदामि ॥ अहमेवस्वयमिदं वदामि जुष्टं देवैर्भिरुतमानुषेभिः । यंकामयेतंतमग्रं कृ
तडपक्षियंतिश्रुतिश्रुतश्रद्धितेवदामि ॥ अहमेवस्वयमिदं वदामि जुष्टं देवैर्भिरुतमानुषेभिः । यंकामयेतंतमग्रं कृ
णोमितंब्रह्माणंतमृपितं सुमेधां ॥ ११ ॥ अहं रुद्राय धनुरातनो मित्रह्वा द्विपेशरेवेहंत वाड ॥ अहं जनान्समदं कृणोम्य
हं द्यावापृथिवीऽआर्विरेण ॥ अहं सुवेपितरं मस्य मर्धन्मसयो निरुस्व १ तः समुद्रे । ततो विर्तिष्ठे भुवनानुविश्वोतामं द्यां व
र्ध्मणोपस्पृशामि ॥ अहमेव वातं दह्य प्रवाग्यारभमाणं भुवनं निविश्यां । पुरो द्विवा परऽ एनापृथिव्यं तावतीमहिना सं
वधूव ॥ १२ ॥ (१०।१०।१४) नतमं ह्येन दुर्गितं देवा सोऽअष्टमर्त्यं । सजोपसो यमर्त्यं मामिन्नो नयंति वरुणोऽअति
द्विपः ॥ तद्धि वयं वृणीमहे वरुण मित्रार्थं मन ॥ येनानिरंहं सो ययं पाथनेथाचमर्त्यं मतिद्विपः ॥ तेन नं नो यमतये वरुणो
मित्रोऽअर्थमा । नयिष्याऽउनेनेपणिपयिष्याऽउनः पर्पयतिद्विपः ॥ ययं विश्वं परिपाथ वरुणो मित्रोऽअर्थमा । युष्मा
कंशर्मणिप्रिये स्याम सुप्रणीतयोतिद्विपः ॥ आदित्या सोऽअतिस्निधो वरुणो मित्रोऽअर्थमा । उग्रं मरुद्भीरुद्रं हुवे मेद्रं मग्निं
स्वस्तयेतिद्विपः ॥ नेतारऽऊ पुर्णस्तिरो वरुणो मित्रोऽअर्थमा । अतिविश्वानिदुरिताराजानश्चर्यणीनामतिद्विपः ॥ शुनम
स्मभ्यमृतये वरुणो मित्रोऽअर्थमा । शर्मयच्छंतु सप्रयं द्यादित्या सो यदीमहेऽअतिद्विपः ॥ यथा हृत्य द्रसवो गैर्धीचिप
स्रभ्यमृतये वरुणो मित्रोऽअर्थमा । शर्मयच्छंतु सप्रयं द्यादित्या सो यदीमहेऽअतिद्विपः ॥ यथा हृत्य द्रसवो गैर्धीचिप

(१०।१०।१४) नतमित्यष्टवस्य सूक्तस्य शैल्यपिः कुलमलत्रहिणो विश्वे देवा उपरिष्ठाद्द्रहस्यं तानिष्टुप् । (अत्र त्रयमदेव्यो दोमुक्त्रपाक्षिकः कृपिः ।
कुलमलत्रहिण इत्यदंतं प्रातिपदिकं) ।

दिशितामसुचतायजत्राः । एवोष्वस्मन्मुचताव्यहःप्रतर्धमेप्रतर्धः ॥ १३ ॥ (१०१०११५) रात्रीव्य
 ख्यदायतीपुरुत्रादेव्यक्षभिः । विश्वाऽअधिश्रियोधित ॥ ओर्वप्राऽअर्मत्यानिवतोदेव्युद्धतः । ज्योतिषावाधते
 तमः ॥ निरुखसारमस्कृतोषसदेव्यायती । अपेदुहासतेतमः ॥ सानोऽअद्यस्यावयंनितेयामन्नाविक्षमहि । वृक्षेनवे
 सतिवयः ॥ निग्रामसोऽअविक्षतनिपुद्धंतोनिपक्षिणः । निदयेनासश्चिदर्थिनः ॥ यावयावृक्ष्यं१वृक्षैयवसेनमूर्ध्वे ।
 अर्थानःसुतराभव ॥ उर्पमापेपिशुत्तमःकृष्णव्यक्तमस्थित । उर्षऽऽकृणेवयातय ॥ उपतेगाऽइवाकरंवृणीष्वदुहितर्दिचः ।
 रात्रिस्तोमनजिगुषे ॥ १४ ॥ (परिशिष्टं ॥ आरात्रिपाथिवंरजःपितरःप्रायुधार्मभिः । द्विवःसदोसिबुद्धतीवितिष्ठसऽआ
 त्वेपर्वतेतमः ॥ येतेरात्रीनुचक्षसोयुक्तासोनवतिर्नव । अशीतिःसत्त्वष्टाऽउतोतेससुसप्ततीः ॥ रात्रीप्रपद्येजननीसर्वभू
 तनिवेशनी । भद्रांभगवतीकृष्णांविश्वस्यजगतोनिशां ॥ संवेशिनीसंयमिनीग्रहनेक्षत्रमालिनी । प्रपन्नोहंशिवारात्री
 भद्रेपारमशीर्महिभद्रेपारमशीमह्योनमः ॥ १ ॥ स्तोभ्यामिप्रयतोदेवीशरण्यावहृचप्रियां । सुहस्रसंमितांदुर्गाजातवेद
 देविप्रपद्यतिब्राह्मणाहव्यवाहनी । अविद्याचहुविद्यावासनःपर्वदत्तदुर्गाणिविश्वा ॥ येऽअशिवर्णशुभांसौम्यक्रीत
 (१०१०११५) रात्रीत्यष्टर्चसूक्तस्यसौभरःकुशिकोरात्रिर्गायत्री । (अत्रभारद्वाजीरात्रिक्रपापाक्षिकी) ।

धिष्यन्ति ये द्विजाः । तान्तरयति दुर्गाणि नावेव सिद्धुदृतात्यग्निः ॥ २ ॥ दुर्गेषु विपमेषोरेसंग्रामैरिपसंकटे । अग्निचो
 रनिपातेषु दुष्टग्रहनिवारणे ॥ दुर्गेषु विपमेषु त्वसंग्रामेषु वनेषु च । मोहयित्वा प्रपद्यते तेषामेऽअभयंकुरुतेषामेऽअभयंकुरु ॥
 के शिनीं सर्वभूतानां पंचमी तिच नाम च । सामांसमानि शार्देवी सर्वतः परिरक्षतु सर्वतः परिरक्षत्वोन्नमः ॥ ३ ॥ तामश्निवर्णा
 तपसा ज्वलन्ती वैरोचनीं कर्मफलेषु युष्टी । दुर्गादेवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसितरसेनमः सुतरसितरसेनमः ॥ दुर्गादुर्गेषु स्थाने
 पुशानो देवी रभिर्ये । यऽइमं दुर्गास्तं वपुष्यं रात्रौ रात्रौ सदा पठेत् ॥ रात्रिः कुशिकसो भरो रात्रिर्वाभारद्वाजी रात्रिस्तवोगा
 युत्री । रात्रीं सक्तं जपेन्नित्यं तत्काले मुपपद्यते ॥ उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहिश्वयातुं मुतकोकयातुं । सुपर्णयातुं मतगृ
 प्रयातुं हृदयप्रमृष्टरक्षऽइन्द्र ॥ पिशंगं मृष्टिमं भृगुं पिशाचं विमिद्वसं मृग । सर्वरक्षो निर्वह्य ॥ ४ ॥ हिमस्य त्वाजरायु
 णाशाले परिव्ययामसि । उत हृदो हि नो धियो भिर्दे दातु भेषजं ॥ शिशी त हृदो हि नो धियो भिर्दे दातु भेषजं । अंतिकाम
 शिमजनयदूर्वातः शिशुलागमत ॥ अजातपुत्रपक्षाय हृदयं मम दूयते । विपुलं वनं बृहत्काशं च रजातवेदः कामय ॥
 मां चरक्षु पुत्रांश्च शरणमभ्युत्तव । विंशालो हितग्रीवः कृष्णवर्णनमोस्तुते ॥ अस्मान्निवर्हैरस्येनां सागरस्योर्मयो यथा ।
 इन्द्रः क्षत्रं देदातु वरुणमभिषिचतु ॥ शत्रवो निधनयातु जयत्व ब्रह्मतेजसा ॥ ५ ॥ कपिलजटं सर्वभक्षचाग्निप्रत्यक्षदे
 वतं ॥ वरुणं च वशाभ्यग्रे मम पुत्रांश्च रक्षतु मम पुत्रांश्च रक्षत्वोन्नमः ॥ साग्रवर्षशतं जीवपि खादचमोद च ॥ दुःखितांश्चाद्वि

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ७

॥ ४८ ॥

जांश्चैव प्रजां च पशुपालय ॥ यावदादित्यस्तपति यावद्भ्राजति चंद्रमाः । यावद्वायुः स्रवायति तावज्जीवजयजय ॥ येन
केन प्रकारेण को हि नाम नु जीवति । परे पासुपकारार्थं युजीवति स जीवति । एतां वैश्वानरीं सर्वदेवाश्च मोक्षते ॥ येन
भयं न च सर्पभयं न च व्याघ्रभयं न च मृत्युभयं । यस्यापमृत्युर्न च मृत्युः सर्वलभते सर्वजयते ॥ ६ ॥ इति परिशिष्टं ॥ न चौर-
(१०।१०।१६) समग्नेव चो विहवेष्वस्तु यत्वं धानास्तु न्यपुपेम । मह्यं न मंतां प्रदिशश्च तस्वयाध्यक्षेण घृतं नाजये
मयि देवा विहवेषस्तु सर्वसुदंष्ट्रं इदं तमरुतो विष्णुरग्निः । ममांतरिक्षमरुतं कम्पयन्तं पूर्वो ह्यष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः ॥ मह्यं यजं
तुम मयानि हव्या कृतिः सत्यामनसो मेऽस्तु । एनो मानिर्गाकतमच्छनाहं विश्वे देवासोऽधिवो चतानः ॥ देवीः पलु
वोरुरुनः कृणोत विश्वे देवासऽइह वीरयध्वं । माहास्महि प्रजया मातनूभिर्मारधाम द्विषते सोमराजन् ॥ १५ ॥ अग्नेम
न्युग्रं तिनूद न्यरेपामर्दं वधोगोपाः परिपाहि नस्त्वं । प्रत्यं चोयं तु निगुतः पुनस्तेऽमैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत् ॥ धाता धातु
नो महिषः शर्मयंस दुस्मिन् हवेष्वपुरुहूतः पुरुधुः । इमं युजमश्विनो भाबुहस्पतिर्देवाः पांतु यजमानं न्यर्थात् ॥ उरुव्यचा
(१०।१०।१६) मसामा इति नवर्चससूक्तस्यांगिरसो विहव्यो विश्वे वास्त्रिषु वत्याजगती ।
येनः सपत्न्याऽअपते ॥ ४८ ॥

मंडलं १

अनु. १८

भवंत्विद्वाग्निभ्यामववाधामहेतान् । वसवोरुद्राऽदित्याऽजपरिस्पृशं मोघं च तारमधिराजमक्रन् ॥ (परिशिष्टं ॥
 अवीचमिन्द्रमुतोहवामहेयोगोजिह्वजिह्वजिह्वः । इमं नोयज्ञं विह्वेजुं पस्वास्यकुल्मोहरिवोमेदिनत्वा) ॥ १६ ॥
 (परिशिष्टं ॥ आयुर्व्यवस्यरायसोषमौद्भिदं । इदं हिरण्यं वचस्वजैत्रायाविशतादिसाम् ॥ उच्चैर्वाजीधृतनापाद्रसे
 भासाहं धनं जयं । सर्वाः समं शाऽऽक्रुद्धं यो हिरण्येऽस्मिन्समाहिताः ॥ शुनमहं हिरण्यस्य पितुर्मानेव जग्रभं । असेऽप्रजा
 त्वचमकरं परुषु प्रियं ॥ सुव्याजं च विराजं चाभिष्टिर्याच मेध्रवा । लक्ष्मीराष्ट्रस्य यामुखेतयामामिन्द्रसंयुज ॥ यद्वेदुराजावरु
 तं परियच्छिरण्यममृतं यज्ञेऽअधिमर्त्येणु । यऽएनेद्वेदुसद्वेदं नमर्हति जरामत्युर्भवति यो विभर्ति ॥ १ ॥ यद्वेदुराजावरु
 णो यदुदेवी सरस्वती । इन्द्रो यद्वृत्रहा वेदुतन्मेव च सऽआयुषे ॥ न तद्रक्षां सिनर्पिशाचाश्चरंति देवानामोजः प्रथमं जह्ये
 तत् । यो विभर्ति दाक्षायुणा हिरण्यं स देवे पुं कृणुते दीर्घमायुः समनुष्ये पुं कृणुते दीर्घमायुः ॥ यदावभ्रन्दाक्षायुणा हिरण्यं शु
 तानां कायसुमनस्यमाना । तन्नऽआवभ्रामिशतशारद्रायायुष्मान्जरदृष्टिर्यथासत् ॥ घृतादुल्लेखं मधुमत्सवर्णधनं जयं ध
 रुणधारयिष्णु ॥ ऋणक्षसपत्न्यादधरांश्च कृण्वदारोहममहृते सौभगाय ॥ प्रियं मां कुरु देवेषु प्रियं राजसुमाकुरु । प्रियं
 विभ्वेषु गोप्लेषु मविधेहि रुचारुचं ॥ अग्निर्येन विराजति सुयोधेन विराजति ॥ विराज्येन विराजति तेनास्मान्ब्रह्मणस्पते

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ७

॥ ४९ ॥

मंडलं १०

अनु. ११

॥ ४९ ॥

विराजसमिधंकुरु ॥ २ ॥ इतिपरिशिष्टं ॥ (१०।१।१) नासदासीन्नोसदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो न्यो मा पुरो
यत् । किमावरीवः कुहकस्यशर्मन्नभः किमासीद्गहनं गभीरं ॥ नमत्युरासीदृष्टतं न तर्हि नराभ्याऽअहं ऽ आसीत्यक्रेतः ।
आनीद्व्यातं स्वध्यातदेकं तस्माद्भ्रान्यन्नपरः किंच नास ॥ तर्मासीत्तर्मसागृहमेप्रकृतं सलिलं सर्वमाऽइदं । तुच्छये
नाग्वापि हितुं यदासीत्तर्पसस्तन्महिना जायतैकं ॥ कामस्तदग्रे समवर्तता धिमनसो रेतः प्रथमं यदासीत् । सतो बंधुमसंति
आसन्महिमानं ऽ आसन्स्वधाऽअवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥ कोऽअच्छावेदकऽइह प्रवोचत्कुतऽ आजता कुतऽ इयं विसृ
ष्टिः । अर्वाग्देवाऽअस्य विसर्जने नाथाको वै द्युतं ऽ आबुभूव ॥ इयं विसृष्टिर्द्युतं ऽ आबुभूव यदिव दधेय दिवान् । गोऽअ
स्याध्यक्षः परमेव्यो मन्त्सोऽअंगवे द्युदिवानवेदं ॥ १७ ॥ (१०।१।२) यो यज्ञो विश्वतस्तुं भिस्ततऽ एकं शतं देवकु
र्मभिरायतः । इमेर्वयंति पितरो यऽ आययुः प्रवयापवयेत्यासते तुते ॥ पुमान् ऽ एनंतं नुतऽ उत्कृणत्ति पुमान्वितलेऽ अधि
नाकं ऽ अस्मिन् । इमे मथूखाऽ उपसेदुरुः स दुःसाम निचक्रुस्तस्राण्योतवे ॥ कासीत्यमाप्रतिमा किं निदानमज्यं किमासी
एकादेशेनुवाकेन योर्विशतिसूक्तानि (१०।१।१) नासदिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्भाववृत्तिस्त्रिष्टुपायाजगती ।
इतिसप्तर्चस्य सूक्तस्य प्राजापत्यो यज्ञो भाववृत्तिस्त्रिष्टुपायाजगती । (१०।१।२) यो यज्ञ

तपरिधिः कऽर्आसीत् । छंदः किमासीत् छंदंगं किमुक्थं यद्देवा देवमयं जंतु विश्वे ॥ अग्नेर्गायत्र्यभवत्सयुग्योष्णिहयासवि
 तासं वभूव । अनुष्टुभासोर्मंडलक्यैर्महस्वान्धुहस्यते बृहती चर्चमावत् ॥ विराणिमत्रावरुणयोराभि श्रीरिंद्रस्य त्रिष्टुविह
 भगोऽअहः । विश्वान्देवान्जगत्या विवेशेते न चारुप्रऽऽकृपयोमनुज्याः ॥ चारुप्रेते नऽऽकृपयोमनुज्याः सुहृत्प्रमाऽऽकृपयः सप्त
 नः पुराणे । पदयन्मन्येर्मनसा चक्षसातान्यऽइमं यज्ञमयं जंतु पूर्वं ॥ सहस्रोमाः सहस्रैदसऽआवृताः सहस्रमाऽऽकृपयः सप्त
 दैव्याः । पूर्वेपां यामनु दयुधीराऽअन्वालेभिरेरुथ्योऽनरुमीनः ॥ १८ ॥ (१०।१।३) अपप्राचऽइंद्रविश्वो
 ऽअमित्रानपापचोऽअभिभूतेनुदस्य । अपोदीचोऽअपशूधराचऽउरौ यथातवशं नमदेम ॥ कुविदंगयवंमंतो यवंचि
 द्यथादांत्यनु पूर्वं विथूय । इहैह पां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमो द्युक्तिं न जग्मुः ॥ न हि स्थूयैतुथायातमस्ति नोतश्रवो
 विविदे संगमेपु । गव्यं तऽइंद्रं सख्याय विप्रोऽअभ्यायंतो द्युपणं वाजयंतः ॥ युवंसुराममश्विनानमुचावासरे सचा । वि
 पिपानाशुभस्पतीऽइंद्रं कर्म स्वावतं ॥ पुत्रमिव पितरां विश्विनोर्भेद्रावयुः काव्यैर्दुसनीभिः । यत्सुरामं व्यापिचः शचीभिः
 सरस्वतीत्वामघवन्नभिष्णाक् ॥ इंद्रः सुत्रामास्ववोऽअवोभिः सुमृलीकोर्भवतु विश्ववेदाः । वाधतो द्वेपोऽअभयंकृणो
 तुसुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ तस्य वयं सुमंतो यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम । ससुत्रामास्ववोऽइन्द्रोऽअसेऽआराच्छिद्धे

(१०।१।३) अपप्राच इति सप्तर्चस्य सूक्तस्य काक्षीवतः सुक्तीति रिंद्रश्चतुर्थीपंचम्योरश्विनौ त्रिष्टुचतुर्थानुष्टुप् ।

शकसं.

अ. ८ अ. ७

॥ ५० ॥

पः सनुतयुयोतु ॥ १९ ॥ (१०।११।४) ईजानमिद्व्यौर्गतवसुरीजानंभूमिरभिरभयणि । ईजानंदेवावधि
नोवभिसुमैरवर्धतां ॥ तावांमित्रावरुणाधारयद्धितीसुपन्नेर्षित्वतायजामसि । शुवोःक्राणयसुखैरभिरभ्यामरक्ष
सः ॥ अर्धाचिन्नुयदिधिषामहेवामभिमिरेकणःपत्यमानाः । दृष्टोवायत्पुण्यतिरेकणःसम्वारज्ञाकैरस्यमघानि ॥
असावन्योऽअसुरसूयतुद्यौस्त्वंविश्वेपावरुणासिराजा । मर्धारथस्यचाकृन्नेतावतैनसांतकभृक् ॥ अस्मिन्स्वेइतच्छ
कपूतुऽएनोहितेमित्रेनिर्गतान्हंतिवीरान् । अवोर्वायद्वाप्तून्वर्वाःप्रियासुयज्ञियास्वर्वा ॥ युवोहिमातादितिर्विचेत
साद्यौर्नभूमिःपर्यसापुपूतनि । अर्वप्रियादिदिष्टनसूरोनिनिकरदिमभिः ॥ युवंह्यमराजावसीदंतितुष्ट्रयन्धूपदेवन्
पदं । तानःकणूकयन्तीर्नमेधस्तत्रेऽअंहसःसुमेधस्तत्रेऽअंहसः ॥ २० ॥ (१०।११।५) प्रोष्वसैपुरोरथमिन्द्रायशप
मर्चत । अभीर्केचिदुलोककृत्संगेसमत्सुवृत्रहास्माकंवोधिचोदितानभंतामन्यकेगंज्याकाऽअधिधन्वसु ॥ त्वंसिधेर
वास्तुजोधराचोऽअह्वन्वाहं । अशुशुरिद्रजन्निपेविश्वंपुण्यसिवार्यंतत्वापरिष्वजामहेनभंतां ॥ विषुविश्वऽअरातयो
योनंशंतनोधिचः । अस्तासिशत्रवेवुधंयोनंऽइन्द्रजिघांसितियातेरातिर्दुर्दिवसुनभंतां ॥ योनंऽइन्द्राभितोजनोवृका
(१०।११।४) ईजानमितिसप्तर्चसूक्त्यनामैधःशकपूतोमित्रावरुणाद्याशुभूम्यध्विनोविराड्रूपाःआद्यान्यकुसारिणीद्वितीयापष्ठ्यौ
प्रस्तारपंक्तीअंत्यामहासतोबृहती । (१०।११।५) प्रोष्वतिसप्तर्चसूक्त्यसुदाःपैजवनइन्द्रःशकरीचतुथ्यादितिसोमहापंक्त्योत्यात्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ११ ।

॥ ५० ॥

युरादिदेशति । अधस्पदं तमीकृधिविवाधोऽअसिसासहिर्भता० ॥ योनंऽइन्द्राभिदासतिसनार्भिर्यश्च निग्रः । अब्र
 तस्यचलतिरमहीवद्यौरधत्मानभता० ॥ वयमिद्रत्याययः सखित्वमारंभामेहे । ऋतस्यनः पथानयाति विश्वानिदुरि
 तानभता० ॥ अस्मभ्यं सुत्वमिद्रतां शिक्षयादोहेते प्रतिवरं जस्त्रि । अक्लिद्रोभ्रीपीपयद्यथानः सुहृद्यधारापयसामहीगौः
 ॥ २१ ॥ (१०।११।६) उभेयदिन्द्रोदसीऽआपप्राथोपाऽईत्र । महंतत्त्वामहीनांसम्राजं चर्यणीनांदेवीजनित्र्यजी
 जनद्राजनित्र्यजीजनत् ॥ अवस्सदुर्हणा यतोमर्तस्य तनुहि स्थिरं । अधस्पदं तमीकृधियोऽअस्मोऽआदिदेशति देवी० ॥
 अवत्यावृहतीरियोविश्वश्चैन्द्राऽअमित्रहन् । शचीभिः शक्रधनुर्हीद्व विश्वोभिरुतिभिर्देवी० ॥ अवयत्वं शतक्रतुविद्रुवि
 श्वानिधूनुपे । रयिनसुग्वते सचासहस्रिणीं भिरुतिभिर्देवी० ॥ अवस्वेदाऽइवाभितो विज्वक्पतंतु द्विद्यवः । दूर्वाया
 ऽइव तंतवोव्यं १ सदैतु दुर्भतिर्देवी० ॥ दीर्घह्यं कुशं च धाशक्तिं विभिमं तुमः । पूर्वेणमघवन्पुदाजो वयां यथायमो देवी०
 न किंदेवामिनीमसिनकिरायोपयामसिमंत्रश्रुत्यचरामसि । पक्षेभिरपिक्षेभिरत्राभिसंरंभामेहे ॥ २२ ॥ (१०।११।७)
 यस्मिन्वृक्षे सुपलाशो देवैः संपिबते यमः । अत्रानो विद्वपतिः पिता पुराणोऽअनुवेनति ॥ पुराणोऽअनुवेनंतं चरंतं पापया
 यस्मिन्वृक्षे सुपलाशो देवैः संपिबते यमः । अत्रानो विद्वपतिः पिता पुराणोऽअनुवेनति । (१०।११।७) यस्मि

(१०।११।६) उभेयदिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य यौवनयोमाघातैः अत्यानातिमृणामर्धचांगोर्ध्वोमहापंक्तिरं त्यापंक्तिः । (१०।११।७) यस्मि

त्रिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य यामायनः कुमारो यमोऽनुष्टुप् ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ७

॥ ५१ ॥

मुया । अस्यन्नभ्यचाकशंतस्माऽअस्पृह्यपुनः ॥ यंकुमारनवरथमचक्रमनसाकृणोः । एकैषंविश्वतःप्रांचमपश्यन्न
धितिष्ठसि ॥ यंकुमारप्रावर्तयोरथंविप्रैभ्यस्परि । तंसामानुप्रावर्ततसमितोनाव्याहितं ॥ कःकुमारमजनयद्रथंकोनि
रवर्तयत् । कःस्वित्तदुद्यनोब्रूयादनुदेयीयथार्भवत् ॥ यथाभवदनुदेयीततोऽअग्रमजायत । इयमस्यधम्यतेनाळीरयंगीभिःपरिष्कृतः ॥ २३ ॥
आश्रिरयणंकृतं ॥ इदंयमस्यसादनंदेवमानंयदुच्यते । इयमस्यधम्यतेनाळीरयंगीभिःपरिष्कृतः ॥ २३ ॥
(१०।११।८) केदयं१मिकेशीविषंकेशीविभतिरोदसी । वातस्यानुधार्जियंति यद्देवासोऽअर्विक्षत ॥ उन्मदितामौनेयेनवातोऽआतस्थिमावयं । शरी
नाःपिशंगावसतेमला । वातस्यानुधार्जियंति यद्देवासोऽअर्विक्षत ॥ उन्मदितामौनेयेनवातोऽआतस्थिमावयं । शरी
रेदस्माकंयूयंमतोसोऽअभिपश्यथ ॥ अंतरीक्षेणपततिविश्वारूपवचाकशत् । उभौसमुद्रावाक्षेति यश्चपूर्वोऽउतापरः ॥ अस्तरसांगंधूर्वाणामुगा
तः ॥ वातस्याभौवायोःसखाथोद्वेपितोमुनिः । उभौसमुद्रावाक्षेति यश्चपूर्वोऽउतापरः ॥ वातुरस्माऽउपमंथपिनष्टिस्माकुनन्नमा । केशीविषस्य
णांचरणेचरन् । केशीकेतस्यविद्वान्सखाऽस्वादुर्मदिन्तमः ॥ वातुरस्माऽउपमंथपिनष्टिस्माकुनन्नमा । केशीविषस्य
(१०।११।८) केशीतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यवातरशनाजूतिर्वातजूतिर्विप्रजूतिर्वृषाणकःकरिक्तएतशत्राज्यशृंगइतिकमेणैकर्चाकपयः
केदयमिष्ट्यवायवोदेवताअनुष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. ११

॥ ५१ ॥

पात्रेण्यद्रुद्रेणापि वत्सह ॥ २४ ॥ (१०।१।१९) उत्तदेवाऽअवहितुदेवाऽउन्नयथापुनः । उतागश्चक्रुर्देवादेवा
 जीवर्यथापुनः ॥ द्वाविमौवातोवातऽआसिधोरपरवतः । दक्षतेऽअन्यऽआवातुपरान्योवातुयद्रपः ॥ आवातवा
 हिभेपजंविवातवाहियद्रपः । त्वंहिभ्वभेपजोदेवानां दूतऽईर्यसे ॥ आत्वागमंशततिभिरथोऽअरिष्टतातिभिः ।
 त्वंहिभ्वभेपजोदेवानां दूतऽईर्यसे ॥ त्वायतामिहदेवास्त्रायतांमरुतगणः । त्वायतांविश्वान्भूतानियथायमरपाऽअ
 दक्षतेभद्रमाभार्षपरायधर्मसुवामिते ॥ त्वायतामिहदेवास्त्रायतांमरुतगणः ॥ हस्ताभ्यांदशशाखा
 दक्षतेभद्रमाभार्षपरायधर्मसुवामिते ॥ आपःसर्वस्यभेषजीस्तालेकृण्वन्भेषजं ॥ तवत्यऽइंद्रसह्ये
 सत् ॥ आपऽइन्द्राऽभेषजीरापोऽअमीवचार्तनीः ॥ आपःसर्वस्यभेषजीस्तालेकृण्वन्भेषजं ॥ तवत्यऽइंद्रसह्ये
 भ्यांजिह्वावाचःपुरोगवी । अनामयिलुभ्यात्वाताभ्यांत्वोपस्पृशामसि ॥ २५ ॥ (१०।१।१९०) तवत्यऽइंद्रसह्ये
 पवत्यऽऽकृतंमन्यानाव्यददिरुवेलं । यत्रादशस्यक्षपसोरिणन्नपःकुत्सोयमन्मन्नाद्यश्चदंसर्यः ॥ अवांसजःप्रस्वाःश्वंच
 योनिरीनुदाजऽउस्त्राऽअपिबोमधुप्रियं । अर्धयोवनिनोऽअस्यदंससाशुशोचसूर्यऽऽकृतजातयागिरा ॥ विसूर्योम
 क्षेऽअमुचद्रथंविबोविदद्वासायप्रतिमानमार्थः । दृष्टानिपिप्रोरसुरस्यमायिनऽइंद्रोव्यास्यच्चक्रुवोऽऽकृजिभ्वना ॥ अ
 नाघृष्टानिघृपितोव्यास्यन्निर्धोऽरदेवोऽअमृणदयास्यः । मासेवसूर्योवसुपुन्यमादेदगुणानःशत्रूऽरशृणाद्विरुक्मता ॥
 नाघृष्टानिघृपितोव्यास्यन्निर्धोऽरदेवोऽअमृणदयास्यः । मासेवसूर्योवसुपुन्यमादेदगुणानःशत्रूऽरशृणाद्विरुक्मता ॥

(१०।१।१९) उतेतिसप्तर्चस्यसूक्तसभरद्वाजःकश्यपोगतमोत्रिविधमित्रो जगद्विभर्धसिष्टतित्तेनैकचार्णकपयोविश्वेदेवाअनुपु ।
 (भेदपक्षे—देवाः १ वातः ३ विश्वेदेवाः १ आपः २ एवं ७) । (१०।१।१९०) तवत्यऽइतिपटुचस्यसूक्तसौरवोंगंद्रोजगती ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ७

॥ ५२ ॥

अयुष्मसेनोविश्वविभिदुतादाशद्वृत्रहातुज्यानि ते जते । इन्द्रस्य वज्रादविभेदमिश्रथुः प्राक्रामच्छंध्यूरजहादुषाऽअनः ॥
एतात्याते श्रुत्यानिके वलायदेकऽएकमकृणोरयुशं । मासां विधानमदधाऽअधिघावित्वया विभिन्नं भरति प्रधिपिता ॥
॥ २६ ॥ (१०।११।११) सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सवितज्योतिरुदयाऽअजस्रं । तस्य पपायसवेयातिविद्वान्सं
ताचीरंतरापूर्वमपरंचकेतुं ॥ नृचक्षाऽएयदिवोमर्धऽआस्तऽआपमिवात्रोदसीऽअंतरिक्षं । सविश्वाचीरभिचष्टेघ्न
तस्थौसमरेधनानां ॥ रायोवृधः संगमनोवसूनां विश्वारूपाभिचष्टे शचीभिः । देवऽईवसवितासत्यधर्मद्वेन
परिधौऽरंपश्यत् ॥ विश्वावसुसोमगंधर्वमापोदहृषीस्तहतेनाव्यायन् । तदुन्ववैदिदोरारहाणऽआसां परिस्सूर्यस्य
नोधिद्यऽइन्नोऽअव्याः ॥ सस्त्रिमविदुर्चरणे नदीनामपावृणोऽदुरोऽअश्मन्नजानां । मासांगंधर्वोऽअमृतानि चोचदिद्रो
दक्षं परिजानादहीनां ॥ २७ ॥ (१०।११।१२) अमेतवश्रवोवयोमहिभ्राजतेऽअर्चयो विभावसो । बृहन्नानो शवसा
वार्जमकथ्यं दधासि दधुर्पेकवे ॥ पावकवर्चाः शुक्रवर्चाऽअनूतवर्चाऽउदियर्षिभानुनां । पुत्रोमातराविचरन्नुपावसि
(१०।११।११) सूर्यरश्मिरिति पटुचस्य सूक्तस्य देवगंधर्वो विश्वावसुः सवितान्यसि सृणां देवगंधर्वो विश्वावसुश्चिपुप् । (१०।११।१२)
अमेतवैति पटुचस्य सूक्तस्य पावको गिरिभिः सतो बृहती आद्ये विष्टारपंक्ती अंत्योपरिष्टाज्योतिः ।

मंडलं १०

अनु. ११

॥ ५२ ॥

पुणक्षिरोदसीऽबुभे⁺ ॥ ऊर्जोनपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मदस्वधीतिभिर्हितः । त्वेऽइपुःसंदधुर्भूरिर्वर्षसश्चित्रोत्तयो
 वामजीताः ॥ इरुज्यन्नेप्रथयस्वजुंभिरुसोरायोऽअमर्त्य । सदंशतस्यवपुषोविराजसिपणक्षिसानुसिंक्रतुं ॥ इज्ज
 तारैमध्वरस्यप्रचैतसंक्षयंतराधसोमहः । रातिवामस्यसुभगांमहीमिपदधासिसानुसिर्यि⁺ ॥ ऋतावानंमहिपंविश्वद
 शतमग्निं सुन्नायदधिरेपरोजनाः । श्रुत्कर्णसुप्रथस्तमंत्वागिरादैव्यंमाजुपायुगा⁺ ॥ २८ ॥ (१०।११।१३) अग्नेऽ
 अच्छावेदुहनेः प्रत्यङ्गः सुमनोभव । प्रनौयच्छविशस्पतेधनुदाऽअसिनस्त्वं⁺ ॥ प्रनौयच्छत्वर्थमाप्रभगः प्रवृहुस्पतिः ।
 अञ्जानांमर्षसुमनोभव । प्रनौयच्छविशस्पतेधनुदाऽअसिनस्त्वं⁺ ॥ आदित्यान्विष्णुंसूर्यंब्रह्माणं चवृहुस्प
 प्रदेवाः प्रोतसुनृतारायोदेवीदेदातुनः ॥ सोमंराजानमर्वसेग्निगीर्भिर्हवामहे । अर्यमणवृहुस्पतिमिंद्रं दानां
 त्वं ॥ इन्द्रवायूवृहुस्पतिं सुहवेहवामहे । यथानः सर्वेऽइज्जनः संगत्यांसुमनाऽअसत ॥ अर्यमणवृहुस्पतिमिंद्रं दानां
 यचोदय । वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं चवाजिनं ॥ त्वनोऽअग्नेऽअग्निभिर्ब्रह्मयज्ञं चवर्धय । त्वनोदेवतातयेरायो
 दानायचोदय ॥ २९ ॥ (१०।११।१४) अयमग्नेजरितात्वेऽअभदपिसहसः सूनो न ह्यन्यदस्त्याप्यं । भुद्रं हि श
 भं त्रिवरूथमस्ति तऽआरेहिंसानामपदिद्युमाकृधि ॥ प्रवचैऽअग्नेजनिमापितूयतः साचीव विश्वाभुवनान्यृजसे । प्रस

भं त्रिवरूथमस्ति तऽआरेहिंसानामपदिद्युमाकृधि ॥ प्रवचैऽअग्नेजनिमापितूयतः साचीव विश्वाभुवनान्यृजसे । प्रस

(१०।११।१३) अमेअच्छेतिपटुचस्यसूक्तस्यतापसोभिर्विश्वेदेवाअनुष्टुप । (१०।११।१४) अयमग्रहलष्टर्चस्यसूक्तस्यप्रथमयोः शान्नो
 जरितावृतीयाचतुर्थ्योः शान्नोद्विगेण. पंचमीपष्ठोः शान्नोः सप्तम्यष्टम्योः शान्नोः सप्तम्यष्टम्योः शान्नोः सप्तम्यष्टम्योः शान्नोः

सयुः प्रसन्निवन्तनो धियः पुरश्चरति पशुपाऽह्वत्सना ॥ उतवाऽउपरि वृणक्षि वत्सं ह्योरग्नऽउलपस्य स्वधावः । उत खि
 त्याऽउर्वराणां भवंति माते ह्येति विषं चक्रुधाम ॥ यदुद्धतौ निवतो यासि वत्सपृथगेषि प्रगर्धनी विसेना । यदा ते वातो
 नोन्यङ्कुत्तानामन्वेषिभूमि ॥ उत्तेशुष्मा जिहता मुत्तैऽअर्चिरुत्तैऽअग्रे शशमानस्य वार्जाः । ब्राह्म्यदेवेऽअनुमर्तृजा
 आत्वाद्य विश्वे वत्सवः सदंतु ॥ अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनं । उच्छ्वचस्वनिर्नमवर्धमानऽ
 नेते पुरार्यणे ह्वर्वीरे हंतु पृष्णिः । हृदाश्च पंडुरीकाणि समुद्रस्य गहाऽइमे ॥ ३० ॥ इत्यष्टमाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

त्रिषष्ट्यध्याये वर्गाः ३० सूक्तानि २३ ऋचः १७२ ॥ त्यागः ११ इन्द्राये. ९ प्रजापतय. १० अग्नय. ८ वेनाये. ८ अग्नय. ४
 वरुणाये. सोमाये. वरुणाये. २ सोमेद्राम्या. आभृणैवाच. ८ विश्वेभ्यो देवेभ्य. ८ राज्या. ८ विश्वेभ्यो देवेभ्य. ९ [मे. प. विश्वेभ्यो दे. अग्नय.
 मित्रावरुणाभ्या. ६ इन्द्राये. ११ गोधेद्राये. ३ यमाये. ७ कैश्यग्निसूर्यवायुभ्य. ७ विश्वेभ्यो देवेभ्य. ७ [मे. प. देवेभ्य. वाताये. ३ विश्वेभ्यो
 देवेभ्य. १ अश्व. २] इन्द्राये. ६ सवित्र. ३ देवगंधर्वाय. विश्वावसव. ३ अग्नय. ७ विश्वेभ्यो देवेभ्य. ५ अग्नय. ८ ॥ इत्यष्टमे सप्तमः ॥

त्वं पट्टसंख्योत्रिराश्विनमयं हिताक्षर्यपुत्रः सुपणो यामायनो वोर्ध्वकृशनो गायत्रीबृहती गायत्र्यौ सतो बृहती विष्टा
 रपङ्क्तिरिमाभिर्द्राण्युपनिर्पत्सपत्नीवाधनमानुष्टुभंतुपङ्क्त्यंतमरण्यान्यैरमदो देवमुनिरण्यानीं तुष्टावश्रत्तेपंच
 सुवेदाः शैरीपिस्त्रिष्टुनंतं सुष्याणासः पृथुवैर्न्यः सवितार्चितो हैरण्यस्तूपः सावित्रसमिद्धो मृळीको वासिष्ठऽआग्नेयं
 बार्हितमंत्येऽउपरिष्टाज्योतिषीजगत्युपां त्यावाश्रद्धयाश्रद्धाकामायनीं श्राद्धमानुष्टुभंतुं शासः शासो भारद्वाज ई
 खयं तीर्देवजामर्य ईद्रमातरो गायत्रं सोमोयमीभाववृत्तमानुष्टुभं त्वरायि शिरिं विठो भारद्वाजोऽलक्ष्मीर्द्वितीयातृ
 तीया ब्राह्मणस्पत्ये अं त्यावैश्वदेव्यग्निं केतुराग्नेयं आग्नेयं गायत्रमिमानुक्तं भुवनऽआस्यः साधनो वाभौ वनो वैश्वदेवं द्वे
 पदं त्रैष्टुभं सूर्यो नश्चक्षुः सौर्यः सौर्यं गायत्रमुदसौ षट्पौलोमी शच्यात्मानं तुष्टावानुष्टुभं तीव्रस्य पंचपूर्णो वैश्वामित्रो
 मुंचामित्वा प्राजापत्यो यक्ष्मनाशनो राजयक्ष्मघ्नं मत्यानुष्टुब्जह्मणा षट्वाहो रक्षोहागर्भसंस्त्रावे प्रायश्चित्तमानुष्टुभं
 ह्यक्षीभ्यां विवृहाकाशयपो यक्ष्मघ्नमपेहि पंचप्रचेतादुःस्वमघ्नं पत्स्यंतं त्रिष्टुम्भं देवानैर्कृतः कपोतः कपोतोपहतौ
 प्रायश्चित्तं वैश्वदेवं मृपभमृपभौ वैराजः शाकरो वासपलघ्नमानुष्टुभं महापत्स्यंतं तुभ्येदंच तुष्कं विश्वामित्रजमदग्नी
 जागतं तृतीयालिङ्गोक्तदेवतावातस्यानिलोवातायनो वायव्यमयोभूः शंवरः काक्षीवतो गव्यं विश्वाट् विश्वाट्सौ
 र्यः सौर्यं जागतं मास्तारपत्स्यंतं त्वं त्वल्यमिमिदो भार्गवो गायत्रमाया हि संवर्ततऽपस्यं द्वैपदमात्वा षट्पुर्वो राज्ञः स्तुतिस्त्वा

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ५४ ॥

नुष्टुभं त्वं भवते न पंचाभीवर्तैः प्रवक्ष्यतु ऋक्मूर्ध्वोऽग्रावासर्पो बुद्धिर्मात्रोऽसौ ह्यत्र प्रसूनवः सूनु राभवं आग्नेयमानु
ष्टुभं द्वितीयागायत्र्याद्यार्भवी पतंगं तु च पतंगः प्राजापत्यो माया भेदं जगत्यादित्यमूष्वरिदने मिस्ताक्षर्यमुत्तिष्ठतैक
र्चोऽशिविरौशीनरः काशिराजः प्रतर्दनोरोहिदश्वो वसुमना आद्यानुष्टुप्रससाहिषे जयेन्द्रः प्रथमैर्कर्चाः प्रथो वासि
ष्ठः सप्रथो भारद्वाजो धर्मः सौर्वैश्वदेवबृहस्पतिस्तपुर्मूर्धावार्हस्पत्यो वार्हस्पत्यमपश्यं प्रजावान्याजापत्यो नवृचं
यजमानपत्नी होत्राशिषो विष्णुस्त्वष्टा गर्भकर्तो विष्णुर्वा प्राजापत्यो गर्भार्थि शीर्लिंगो ऋदैवतमानुष्टुभं महिसत्यघृ
तिर्वारुणिरादित्यं स्वस्त्ययनं गायत्रवैवातो वातायन उलोवायव्यं प्राग्नेयं पंचाग्नेयो वत्स आग्नेयं तु प्रनूतं तु च माग्नेयः
अये नो जातवेदस्य मायंगौः सार्षपाभ्यात्मदैवतं सौर्यं वऽऽकृतं च माधुच्छंदसोऽधमर्षणो भाववृत्तमानुष्टुभं तु संसंचतु
ष्कं संवननः संज्ञानमाद्याग्नेर्यातृतीयात्रिष्टुपतृतीयात्रिष्टुप् ॥ ८ ॥ तदेतत्सूक्तसहस्रं सप्तदशकं सपादाधिकं मु
ग्धे देपारायणपाठे शाकल्ये शैशिरीयके नमः शौनकाय नमः शौनकाय ॥ १ ॥
हरिः ओम् ॥ (१०११११५) त्वं चिदत्रिमृतजुरमर्थं भवं नयातवे । कक्षीवंतं यदी पुनारथं न कृणुथोनवं ॥ त्वं
चिदभ्वं न वाजिनं मरेण वोयमलत । इहं ग्रंथिनं विष्यतु मत्रियं विष्णुमारजः ॥ नरादं सिष्ठावत्र ये शुश्रासिषासंतं धियः ।
(१०११११५) त्वं चिदिति षडुचस्य सूक्तस्य सांख्यो त्रिरश्विनावनुष्टुप् ।

मंडलं १८

अनु ११

॥ ५४ ॥

अथाहिवादिनोर्नापुनस्तोमोनविशसे ॥ चितेतद्वांसुराधसारातिः सुमतिरश्विना । आयन्नः सदेनेपथौ समनेनेपथेन
 रा ॥ शुवंभुज्युसंमद्रऽआरजसः पारऽईक्षितं । यातमच्छापतन्निभिर्नासत्यासातेयेकृतं ॥ आवांसुन्नैः शूद्रऽईवमहि
 द्याविश्वेवेदसा । समस्मेभूयतंनरोत्संनपिप्युषीरिषः ॥ १ ॥ (१०।१।१६) अयंहितेऽअर्मत्येऽइंदुरत्योनपत्यते ।
 दक्षोविश्वायुर्वेधसे ॥ अयमस्मासकाव्यऽऽक्रभुर्वज्रोदास्यते । अयंविभत्युध्वकृशन्नंमदंमभुनकृत्यमदं ॥ द्युयुःश्येना
 युक्तत्वनऽआसुस्वासुवंसगः । अवदीधेदहीशुवः ॥ यंसुपूर्णः परावर्तः श्येनस्यपुत्रऽआभरत् । शतचक्रयोऽइहोवर्त
 निः ॥ यंतेश्येनश्चारुमवृकंपदाभरदरुणमानमंधसः । एनावयोवितायार्थुर्जीवसेऽएनाजोगारवंधुता ॥ एवातादि
 द्रऽइंदुनादेवेषुचिद्धारयातेमहिल्यजः । कलावयोवितायार्थुः सुक्रतोक्रत्वायमस्मदासतः ॥ २ ॥ (१०।१।१७)
 इमांखनाभ्योर्षधिवीरुधंवलवत्तमां । ययांसपत्नीबाधेतेययांसंविंदतेपतिं ॥ उत्तानपर्णे सुभगेदेवजल्लेसहस्यति । सप
 त्नीमपराधमपतिमेकेवलंकुरु ॥ उत्तराहमुत्तरऽउत्तरेदुत्तराभ्यः । अथांसपत्नीयाममाधरासाधराभ्यः ॥ नह्यस्याना
 मगम्णामिनोऽअसिन्नमेतेजने । परमिवपरावर्तसपत्नीगमयामसि ॥ अहमस्मि सहेमानाथुत्वमसिसासहिः । उभेस
 मगम्णापतिः (यामायन

(१०।१।१६) अयंहीतिषड्वचस्यसूक्तस्यार्थपुत्रः सुपूर्णइन्द्रोगायत्रीद्वितीयावृद्धतीपंचमीसतोवृद्धतीपष्टीविष्टारपंक्तिः ।
 ऊर्ध्वकृशनोवात्ररूपिः) । (१०।१।१७) इमामितिषड्वचस्यसूक्तस्यैन्द्राणीसपत्नीनाशनमनुष्टुब्यापंक्तिः ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ५५ ॥

हस्वतीभूत्वीसपत्नीमिसहावहै ॥ उपतेधांसहमानामभित्वाधांसहीयसा । मामनुप्रतेमनौवत्संगौरिवधावतुपथावारि
वधावतु ॥ ३ ॥ (१०११११८) अरण्यान्यरण्यान्यसौयाप्रेवुनश्यसि । कथाग्रामंनपृच्छसिनत्वाभीरिविविदती ३ ॥
वृषारवायवदेतेयदुपावतिचिच्छिकः । आघादिभिरिवधावयन्नरण्यानिर्महीयते ॥ उतगार्वड्इवादत्युतवेदमेव
दृश्यते । उतोऽअरण्यानिःसायंशंकटीरिवसर्जते ॥ गामैषड्आह्वयतिदार्विगेषोऽअपावधीत् । वसन्नरण्यान्यांसा
जलगंधिसुरभिर्वह्निन्नामकृषीवलां । नवाऽअरण्यानिहृत्यन्यश्चेन्नाभिगच्छति । स्वादोःफलस्यजग्ध्वाययथाकामंनिपद्यते ॥ आं
धुमार्यमन्यवेहृत्यद्वुत्रनर्थविवेरपः । प्रहंसगणामातरंमरण्यानिमंशंसिपं ॥ ४ ॥ (१०११११९) अत्तेदधामिप्र
धुवधासोयेमधवन्नानुशुर्मधं । त्वामिन्नरोवृणतेगर्विष्टिपुत्वांविश्वसुहव्यास्विष्टिषु ॥ त्वमायाभिरनव
न्मदुयोऽअस्यरंह्यचिकेतति । त्वावृधोमघवन्दुर्ध्वधरोमक्षसवाजैभरतेधनानृभिः ॥ सऽइन्द्रुरायःसुभृतस्यचाकन
(१०११११८) अरण्यानीतिपट्टचससूक्तस्यैरमदोदेवमुनिरण्यान्यनुष्टुप् । (१०११११९) अत्तइतिपंचर्वससूक्तस्यशैरीषिः
सुवेदाहंद्रोजगलंलात्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. १९

॥ ५५ ॥

कृधिमधवन्छिधरायः । त्वनोमित्रोवरुणोनामायीपित्वोनदंसादयसेविभक्ता ॥ ५ ॥ (१०१११२०) सञ्वाणा
 सऽइन्द्रस्तुमसित्वासवांसंश्चतुविभृणवाजै । अनोभरसुवितंयस्यचाकन्तमनातनसनुयामत्वोताः ॥ ऋष्यस्त्व
 सिन्द्रशूरजातोदासीर्विशःसूर्येणसह्याः । गुहोहितंगुह्यगृह्णमसुविभमसिप्रवणेनसोमं ॥ अयोवागिरोऽअभ्यर्चवि
 मिन्द्रशूरजातोदासीर्विशःसूर्येणसह्याः ॥ इमाब्रह्मैद्रतुभ्यंशंसिदानृभ्योनां
 तस्यामेयेरणयत्सोमैरेनोतनुभ्यर्थोद्धमैः ॥ ६ ॥ (१०१११२१) सवितायत्रैःपृथिवीमरम्णादस्कभने
 दानृषीणांविप्रःसुमतिंचकानः । तस्यामेयेरणयत्सोमैरेनोतनुभ्यर्थोद्धमैः ॥ ६ ॥ (१०१११२१) सवितायत्रैःपृथिवीमरम्णादस्कभने
 शूरशर्वः । तेभिर्भवसक्तयैषुचाकन्नतत्रायस्वगृणतऽउतस्तीन ॥ ६ ॥ (१०१११२१) सवितायत्रैःपृथिवीमरम्णादस्कभने
 आयस्तेयोनिघतवतमस्वाङ्गुर्मिनिर्निर्गैवयतवक्राः ॥ ६ ॥ (१०१११२१) सवितायत्रैःपृथिवीमरम्णादस्कभने
 सविताद्यामहंहत । अर्धमिवाधुक्षुनिमंतरिक्षमतूतैवञ्चसवितासमद्रं ॥ यत्रोसमद्रःस्कभितोव्यौनदपानपात्स
 वितातस्येद । अतोभूरतऽआऽउत्थितरजोतोद्यावापृथिवीऽअप्रथेतां ॥ पृथेदमन्यदभवद्यजत्रमर्मल्यस्यभुवनस्य
 भना । सुपर्णोऽअंगसंविदुर्गुरुमान्पूर्वोजातःसऽउऽअस्यानुधर्म ॥ गार्वऽइवग्रामंयूधिरिवाध्वान्वाश्रेववत्संसमना
 दुहाना । पतिरिवजायामभिनोन्धेतोदिवःसंविताविश्ववारः ॥ हिरण्यस्तूपःसवितर्यथात्वांगिरसोजुह्वेवाजेऽ
 (१०१११२१) सवितेतिपंचर्चस्यसूक्तस्यहिरण्यस्तूपो

(१०।११।२०)
ध्वंसवितान्निष्ठम् ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ५६ ॥

अस्मिन् । एवात्वार्वन्नर्वसेदमानः सोमस्येवांशुप्रतिजागराहं ।
वेभ्यो हव्यवाहन । आदित्यैरुद्वैर्वसुभिर्नडागहिमृलीकार्यनडागंहि ॥ ७ ॥ (१०।१।१२२) समिद्धश्चित्समिध्यसेदु
तौ सस्त्वासमिधानहवामहेमृलीकार्यहवामहे ॥ त्वामुजातवैदसं विश्ववारंगुणधिया । इमं युज्जमिदं वचो जुषुषाण्डउपागहि । म
नृमृलीकार्यप्रियव्रतान् ॥ अग्निदेवो देवानां भवत्पुरोहितोऽग्निं नृप्याङ्गं कर्षयः समीधरे । अग्निमहो धनसातावहं हुवे
पुरोहितः ॥ ८ ॥ (१०।१।१२३) अद्भयाग्निः समिध्यते अद्भयो हयते हविः । अग्निं वासिष्ठो हवते पुरोहितो मृलीकार्य
प्रियं भोजेष्वर्ज्यस्माकमुदितं कृधि ॥ प्रियं भोजेष्वर्ज्यस्विदं मडाउदितं कृधि ॥ अद्भ्यां भगस्य मर्धनिवचसावैदयामसि ॥
एवं भोजेष्वर्ज्यस्माकमुदितं कृधि ॥ अद्भ्यां देवायर्जमानावायुगोपाडाउपासते । अद्भ्यां देवाऽअसुरेषु अद्भ्यामग्रेषु चक्रिरे ।
तेवसु ॥ अद्भ्यां प्रातर्हवामहे अद्भ्यां मध्यं दिनं परं । अद्भ्यां हृदयं शयाकूत्या अद्भ्यां विद
धाम ह्यमंगिरसो मेधांससऽकर्षयोददुः । मेधां मिदं श्रान्निश्च मेधां धाताददातुते ॥ ९ ॥ (परिशिष्टं ॥ मे
(१०।१।१२२) समिद्धइति पंचर्वस्य सूक्तस्य वासिष्ठो मृलीको प्रिवृहती अत्येद्वे उपरिष्टाज्योतिषी (उपां त्याजगतीवा) (१०।१।१२३)
अद्भ्येति पंचर्वस्य सूक्तस्य अद्भ्यां कासायनी अद्भ्यानुष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु- ११

॥ ५६ ॥

ती । मेधांतोऽअश्विनौ देवावाधेत्तां पुंस्करस्त्रजा ॥ यामेधाऽअप्सरस्तुगंधर्वेषु च यन्मनः । देवीयामादुपीमेधासामामा
 विंशतादिमां ॥ यन्मेनोऽकृतद्रवतांशे क्यं यदनुब्रुवे । निशामंतं निशामिहैमयि त्रतसहव्रतेषु धूयांसं ब्रह्मणा संगमेमहि ॥
 शरीरमेविक्षणं वाञ्छेम धुमदुहां । अवृद्धमहमसौ सूर्यो ब्रह्मणा नीत्यः श्रुते मेमा प्रहासीः ॥ मेधां देव्यो मनसो रजमानां गं
 धर्वजुष्टां प्रतिनोजुपस्व । महां मेधां वदुमह्यं श्रियं वदमेधावीधूयासमजराजरिणु⁺ ॥ सदस्सपतिमद्भुतं प्रियमिंद्रस्य
 काम्यं । सनिमेधामया सिपं ॥ यामेधां देवर्गणाः पितरं श्रोपासते । तयामामेधयामेधामेधाविनंकुरु ॥ मेधाव्य^१ हंसमनाः
 सप्रतीकः श्रद्धामनाः सुत्यमेतिः सुशेवः । महायशाधारयिण्युः प्रवृक्ताभयासंमसैशुरयो प्रयोगे ॥ १ ॥ इति परिशिष्टं ॥
 (१०।१२।१) शासऽइत्थामहांऽअस्य मित्रखादोऽअद्भुतः । नयस्य हृन्व्यते सखानजीयते कदाचन⁺ ॥ स्वस्तिदावि
 शस्पतिर्वृत्रहाविमधोवशी । वृषेद्रं पुरऽएतुनः सोमपाऽअभयंकुरः⁺ ॥ विरक्षो विमृधोजिह्विवृत्रस्य हनूरुज । विम
 न्युमिंद्रवृत्रहन्मित्रस्याभिदासतः ॥ विनऽइंद्रसुधौ जहिनीचार्यच्छृणुतन्यतः । योऽअस्मांऽअभिदासत्यधरंगमया
 तमः ॥ अपैद्रद्विषतो मनोपजिज्यासतो वधं । विमन्योः शर्मयच्छवरीयो वयावधं⁺ ॥ १० ॥ (१०।१२।२) ईखयं
 न्युमिंद्रवृत्रहन्मित्रस्याभिदासतः । विमन्योः शर्मयच्छवरीयो वयावधं⁺ ॥ १० ॥ (१०।१२।२) ईखयंतीरिति

द्वादशेऽनुवाके चत्वारिंशत्सूक्तानि (१०।१२।१) शास इति पंचमसूक्तस्य भारद्वाजः शास इन्द्रोऽनुष्टुप् । (१०।१२।२) ईखयंतीरिति
 पंचमसूक्तस्य देवजामय इन्द्रमातर इन्द्रो गायत्री ।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ५७ ॥

१। तारपस्युवऽइंद्रजातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यं ॥ त्वमिंद्रवलादधिसहसोजातऽओजसः । त्वंवृषन्वेषेदसि ॥ त्वमिंद्रासिवृत्रहाव्यं त्रिरक्षमतिरः । उह्यामस्तभ्याऽओजसा ॥ त्वमिंद्राभिर्भूरसि विभ्राजातान्योजसा । सविश्वामुवऽआर्भवः ॥ ११ ॥ (१०।१२।३) वज्रं शिशानऽओजं वतेधृतमेकऽउपासते । येभ्योमधुप्रधावतितांश्च देवापि गच्छतात् ॥ तर्पसायेऽअनाध्व्यास्तर्पसायेस्वयं युः । तपोये च क्रिरेमहस्तांश्चि० ॥ येयुर्ध्वं ते प्रधनेषु शरसोयेतन्यजः । येषांसहस्रदक्षिणास्तांश्चि० ॥ येचित्पूर्वऽऋतसापऽऋतावानऽऋतावृधः । पितृन्तर्पस्वतोयमृतांश्चि० ॥ सहस्रणीथाः कुवयो ये गोपायं तिसृषं । कृषीन्तर्पस्वतोयमतपोजोऽअपि गच्छतात् ॥ १२ ॥ (१०।१२।४) अरायिकाने विकटे गिरिं गच्छसदान्वे । शिरिर्विठस्य सत्वभिस्तेभिष्ठाचा तयामसि ॥ चत्तोऽइतश्चत्तामुतः सर्वाभ्या न्यारुषी । अराय्यं ब्रह्मणस्पते तीक्ष्णशृंगो हृषन्नहि ॥ अदोयद्वारुषवत्ते सिंधोः पारेऽअपूरुषं । तदारभस्व दुर्हणो ते न गच्छ परस्तरं ॥ यद्धप्राचीरजंगतो रोमं दूरधाणि कीः । हुताऽइंद्रस्य शत्रवः सर्वबुद्धुदयाशवः ॥ परीमेगामने पतप्यं शिमहपत । देवेष्वं कृतश्रवः कऽइमोऽआदधर्षति ॥ १३ ॥ (१०।१२।५) अग्निं हि (१०।१२।३) सोम इति पंचर्चस्य सूक्तस्यैव स्वतीयमीभावद्यतिरनुष्टुप् । (१०।१२।४) अरायीति पंचर्चस्य सूक्तस्य भारद्वाजः शिरिविठोऽलक्ष्मीनाशनो द्वितीयाद्यो ब्रह्मणस्पतिरित्यायाविश्वेदेवा अनुष्टुप् । (१०।१२।५) अग्निमिति पंचर्चस्य सूक्तस्याग्नेयः केतुरग्निर्गोयत्री ।

॥ ५७ ॥

मंडलं १०

अनु. १२

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ५८ ॥

हणोथोमेदुहिताविराट् । उताहर्मस्मिंसंजयापत्यौमेऽश्लोकऽउत्तमः+ ॥ येनेद्रोहविपांक्रुत्व्यभंवह्युस्युत्तमः । इदंतदे
क्रिदेवाऽअसपत्नाकिलमुवं ॥ असपत्नासपत्नीजयत्यभिध्वरी । आर्धक्षमुन्यासांवचोराधोऽअस्येयसामिव ॥
यसोऽअस्यपाहिसर्वथाविहरीऽइहसुंच । इंद्रमात्वायजमानासोऽअन्येनिरीरमन्तुभ्यमिमसुतासः ॥ तीव्रस्याभिव
भ्यमसोत्वासुत्वांगिरःश्वाज्याऽआह्वयति । इंद्रेदमद्यसर्वनंजुषाणोविश्वस्यविद्वोऽइहपांहिसोमं ॥ तुभ्यंसुतास्तु
सोममसैसर्वहृदादेवकामःसुनोति । नगाऽइंद्रस्तस्यपरंदातिप्रशस्तामिच्चारुमसैकृणोति ॥ यऽइशुतामनसा
स्योऽअस्रेवात्रसुनोतिसोमं । निररुलौमधवातंदधातिब्रह्माद्विषोहृत्यनानुदिष्टः ॥ अनुस्पष्टोभवत्येषोऽअ
महेत्वोपगंतुवाऽइ । आभूपतस्तेसुमतौनर्वायांवयमिंद्रत्वाशुनंहवेम ॥ १८ ॥ (१०।१२।१०) मुंचामित्वेतिपंचर्चस्यसूक्तस्यप्राजापत्योयक्षम
(१०।१२।९) तीव्रस्येतिपंचर्चस्यसूक्तस्यवैधामित्रः पूरणइंद्रबिष्टुप् । (१०।१२।१०) मुंचामीतिसूक्तेराजयक्षमत्रमित्युक्तेराजयक्षमनाशनोदेवतेतिकेचित् अन्येप्राजापतिमाहुः इंद्रामीइतितुयास्कः
इत्थंमतवैविध्येषि 'पळाहुतिश्चरुमुंचामित्वाहविपाजीवनायकमिसेतेनेति' गृह्यसूत्रानुसारिष्टुत्तिकृत्कारिकादिभिरस्यसूक्तस्यैद्रामि-
देवतात्वनिर्देशात्तेष्वस्माभिरुक्ते ।

मंडलं १

अनु. १.

॥ ५८ ॥

जीवनायुक्तमज्ञातयुष्मादुतराजयुधमात् । ग्राहजन्नाह्वयदिवेतदेनंतस्याऽइंद्राग्नीप्रमुक्तमेनं ॥ यदक्षितायुयदि
वापरेतोयदिमत्योरतिर्कनीतऽप्य । तमाहरामिनिर्कतेरुपस्थ्यादस्पाभिमेनंशतशारदाय ॥ सहस्राक्षेणशतशारदनश
तायुपाह्वविपाह्वभिमेनं । शतंयथेमंशरदोनयातींद्रोविश्वस्यदुरितस्यपारं ॥ शतंजीवशरदोवर्धमानःशतहैमंतान्छ
तमुवसंतान् । शतमिंद्राग्नीसंवितावृहस्पतिःशतायुपाह्वविपेमंपुनर्दुः ॥ आहर्पिवादिदंत्वानुरागाःपुनर्नव । अमीवायस्ते
गसर्वैतेचक्षुःसर्वमायुश्चतेविदं ॥ १९ ॥ (१०।१२।११) ब्रह्मणाग्निःसंविदानोरक्षोहावाधतामितः । अमीवायस्ते
गर्भदुर्णामायोर्निमाशये ॥ यस्तेगर्भमीवाद्गुर्णामायोर्निमाशये । अग्निं ब्रह्मणासहनिष्कव्यादमनीनशत् ॥ यस्तेहं
तिपुतयंतंनिपुत्सुंयःसरीसृपं । ज्ञातंयस्तेजिघांसितमितोनाशयामसि ॥ यस्तंयस्तेजिघांसितमितोनाश
योऽभंतरारेद्वितमितोनाशयामसि ॥ यस्त्याभ्यातापतिर्भूत्याजारोभूत्याजिनपद्यते । प्रजांयस्तेजिघांसितमितोनाश
तिपुतयंतंनिपुत्सुंयःसरीसृपं । (अत्र सूक्तेऽतु-रुमण्यवष्टभेन देवता निर्णयोनभवति । तथाच शौनकः भग्नेषु ह्यनिरु

तत्पुत्रपुत्रं निपुत्रं यः सारसिप । जातं पुत्रं ॥ यस्याभ्यात्तापतिभ्युत्पन्नं भवति । (अत्र सूक्तेऽनुक्रमण्य वष्टभेन देवता निर्णयोन भवति । योऽअंतररेद्धितमितीनाश्यामसि ॥ यस्याभ्यात्तापतिभ्युत्पन्नं भवति । (अत्र सूक्तेऽनुक्रमण्य वष्टभेन देवता निर्णयोन भवति ।

(१०।१२।११) ब्रह्मणा भिरिति पट्टचस्य सूक्तस्य त्राक्षोरक्षो ह्यप्रजापतिरनुष्टुप् । (अत्र सूक्तेऽनुक्रमण्य वष्टभेन देवता निर्णयोन भवति । योऽअंतररेद्धितमितीनाश्यामसि ॥ यस्याभ्यात्तापतिभ्युत्पन्नं भवति । (अत्र सूक्तेऽनुक्रमण्य वष्टभेन देवता निर्णयोन भवति ।

यतस्तत्र गर्भस्थे प्रायश्चित्तिरित्युक्तेन सूक्तस्य प्रभावमात्रं द्योतेन दुर्देवता । अतोऽत्र प्रजापतिर्देवता प्राया । तथाच शौनकः 'मंत्रेषु पुण्यनिश्चये देवता कर्मतो वदेत् । मंत्रतः कर्मणा चैव प्रजापतिरसंभवे' इति । भाज्यकारैरपि प्रजापतिरेवोक्तः । बृहद्देवतायां तुराक्षोऽत्राश्वमेधमित्युक्तं तत्र युक्त्या युक्तं सन्निर्विचारणीयम् ।

कवसं.

अ. ८ अ. ८

॥ ५९ ॥

यामसि ॥ यस्त्वास्वमेनतमसामोहयित्वा निपद्यते । प्रजायस्तेजिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ २० ॥ (१०।१२।१२)
अक्षीभ्यांतिनासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुडुकादधि । यक्ष्मंशीर्षण्यं मस्तिष्काजिह्वाया विवृहामिते ॥ श्रीवाभ्यस्तऽज्जिह्वा
यक्ष्मंमत्स्नाभ्यां युक्ताऽनक्यात् । यक्ष्मंदोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि० ॥ आंत्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि ।
वि० ॥ मेहनाडुनं करणल्लोमभ्यस्तो नखेभ्यः । यक्ष्मंसर्वसादात्मनस्तमिदं वि० ॥ २१ ॥ (१०।१२।१३) अपैहि मनसस्पते पक्राम परश्चर । पुरोनिर्ऋ
पर्वणि । यक्ष्मंसर्वसादात्मनस्तमिदं वि० ॥ २१ ॥ (१०।१२।१३) अंगदंगल्लोमो लोमो जातं पर्वणि
त्याऽआर्चश्च बहुधा जीवतोमनः ॥ २१ ॥ (१०।१२।१३) अपैहि मनसस्पते पक्राम परश्चर । पुरोनिर्ऋ
सानिःशसां भिशसो पारिमजाग्रतो यत्स्वपंतः । अग्निर्विभ्यान्यपदुष्कृतान्यनुष्टान्यरेऽअस्मद्दधातु ॥ यद्विद्वद्ब्रह्मणस्प
ते भिद्गोहं चरामसि । प्रचेतानऽआंगिरसो द्विषतां पात्वंहसः ॥ अजैष्माद्यासना मुचाभमाना गसो वयं । जाग्रत्स्वमः सं
कल्पः पापोयं द्विष्मस्तंसऽकृच्छतु यो नो द्वेष्टितमृच्छतु ॥ २२ ॥ (१०।१२।१४) देवाः कपोतऽइषितो यदिच्छन्दुतो
(१०।१२।१२) अक्षीभ्यामिति षडृचसूक्तस्य कादयपो विवृहायक्ष्महातुष्टु । (१०।१२।१३) अपेहीति पंचसूक्तस्यांगिरसः
प्रचेतादुःस्वमनाशनोऽनुष्टुप् नृमीयात्रिष्टुप् अंलापक्तिः । (१०।१२।१४) देवा इति पंचसूक्तस्य नैर्ऋतः कपोतो विश्वे देवास्त्रिष्टुप् ।

मंडलं १०

अनु. १२

॥ ५९ ॥

निर्वृत्त्याऽइदमाजगाम । तस्माऽअर्चामकृण्वामनिष्कृतिं शनोऽअस्तु द्विपदे शंचतुष्पदे ॥ शिवः कृपो तऽइयितो नोऽ
 अस्वनागादेवाः शकुनो गेहं । अग्निहिं विप्रोजुपतां हविर्नः परिद्वेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु ॥ द्वेतिः पक्षिणी नदं भात्यस्मा
 नाष्ट्रयापदं कृणुतेऽअग्निधाने । शनो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मानो हिंसीदिह देवाः कृपोतः ॥ यदुर्लको वदति सो घमेत
 द्यत्कृपोतः पदमभौ कृणोति । यस्य दूतः प्रहितऽएषऽएतत्तस्यैयमायनमोऽअस्तु मृत्यवे ॥ ऋचाकृपो तं नुदत प्रणोदुमिषं
 मर्दतः परिगां नयध्वं । संयोपयं तोदुरितानि विभ्वा हि त्वानुऽऊर्जं प्रपतात्पतिष्ठः ॥ २३ ॥ (१०।१२।१५) ऋपमं मा
 समानानां सपत्नानां विषासहिं । हुंतां शत्रूणां कृधिविराजं गोपतिं गवां ॥ अहर्मस्मि सपत्नैर्हं देऽइवारिष्टोऽअक्षतः ।
 अधः सपत्नानां मे पदोरिमे सर्वेऽअभिष्टिताः ॥ अत्रैव वोपिन ह्याम्यभेऽआलीऽइव ज्यया । वाचस्पते निपेधे मान्यथा मदघ
 रं वदान् ॥ अभिभूरहमार्गमविश्वकर्मैण धाम्ना । आर्वश्चित्तमावो व्रतमावो हंसमिति ददे ॥ योगक्षेमं च देवादाया हं भू
 यासमुत्तमऽआवोमूर्धानमकर्मौ । अधुस्पदान्मऽउददं मंडूकाऽइवोदकान्मंडूकाऽउदकादिव ॥ २४ ॥ (१०।१२।१६)
 तुभ्येदमिदं प्ररिषिच्यते मधुत्वं सुतस्य कुलशं सराजसि । त्वं रथिं पुरुवीरं मुनस्त्वधित्वं तर्पः परितप्याजयः स्वः ॥ स्व

(१०।१२।१५) ऋषभमिति पंचवत्ससूक्तस्य वैराजऋषभः सपत्नानां शनो नुष्यन्त्यामहापत्किः । (शाकरोवाकपिः) । (१०।१२।१६)
 तुभ्येदमिति चतुर्दशसूक्तस्य गाथिभार्गवौ विश्वामित्रजमदग्नीद्विद्वत्स्तीयायाः सोमवरुणवृहस्पत्यनुमतिघातविधातारोजगती ।

ऋक्सं-

अ. ८ अ. ८

॥ ६० ॥

मंडलं १०

अनु. १२

॥ ६० ॥

जितुमहिमं दानमंधसो हवामहे परिशुक्रं सुतोऽउष । इमं नो यशमिह वो ध्यागहि स्थु धोजयंतं मघवानमीमहे ॥ सोमस्य
राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्याऽउशर्मणि । तवाहमद्यमघवश्चपस्तुतौ धातुर्विधातः कुलशोऽअभक्षयं ॥ प्रसूतो
भक्षमकरं च रावपिस्तोमै च मेमं प्रथमः सरिरुन्मृजे । (१०।१२।१७) वातस्य नुमहिमानं रथस्य रुजनेति स्तनयं न्नस्य घोषः । द्विविष्टयुग्यात्परुणा निष्कृण्वन्नतोऽएति पृथि
व्यारेणुमस्यन् ॥ संप्रेरतेऽअनुवातस्य विष्टाऽएनैगच्छंति सभं नूनयोषाः । ताभिः सयुक्सरथं देवऽईयते स्य विश्वस्य मुव
नस्य राजा ॥ अंतरेक्षे पृथिभिरीयमानो न निर्विशते कतमच्च नाहः । अपांसखा प्रथमजाऽऽकृता वाक्स्विजातः कुतऽआ
वभूव ॥ आत्मा देवानां सुर्वनस्य गभैर्यथा वशं चरति देवऽएषः । घोषाऽइदं स्य शृण्विरे नरूपं तस्मे वाताय हविषा विधेम
॥ २६ ॥ (१०।१२।१८) मयो भूर्वातोऽअभिवातु स्याऽऽर्जस्वती रोषधी रारिशंतां । पीवस्व तीर्जो वधन्याः पिवंत्वव
सायपद्वतैरुद्रमृळ ॥ याः सरूपा विरूपाऽएकरूपायाः समशिरिष्ठानामा निवेदं । याऽअंगिरसस्तपसे हचक्रुस्ताभ्यः प
जन्यमहिशमयच्छ ॥ या देवे पुतन्वैरैर्यं तथा सोमो विश्वा रूपाणि वेदं । ताऽअसभ्यं पर्यसापिन्वमानाः प्रजावती
(१०।१२।१७) वातस्येति चतुर्कचस्य सूक्तस्य वाताय नो निलो वायुश्छिष्ट ॥ (१०।१२।१८) मयो भूरिति चतुर्कचस्य सूक्तस्य काक्षीवतः
शंवरोगावबिष्टु ॥

रिन्द्रगोष्ठेरीहि ॥ प्रजापतिर्मह्यमेतारारणोचिश्चैद्वैःपितृभिःसंविदानः । शिवाःसतीरुपनोगोष्ठमाकृत्तासीव्यंम
ज्यासंसंक्षेपे ॥ २७ ॥ (१०।१२।१९) विभ्राद्वहृत्पिवतुसोम्यमध्यायुर्धधृक्षपतावर्धितं । वार्तजतूयोऽअ
भिरक्षतिलमनाप्रजाःपुपोपुरुधाविराजति ॥ विभ्राद्वहृत्सुभृतंवाजसार्तमंभर्षन्दिबोधुरणैःसत्यमर्पितं । अमित्रहावृ
ज्यासंसंक्षेपे ॥ २७ ॥ (१०।१२।१९) विभ्राद्वहृत्सुभृतंवाजसार्तमंभर्षन्दिबोधुरणैःसत्यमर्पितं । अमित्रहावृ
भिरक्षतिलमनाप्रजाःपुपोपुरुधाविराजति ॥ विभ्राद्वहृत्सुभृतंवाजसार्तमंभर्षन्दिबोधुरणैःसत्यमर्पितं । अमित्रहावृ
त्रहाद्वस्युहृतंमंज्योर्तिर्जज्ञेऽअसुरहासंपल्लहा ॥ इदंश्रष्टुज्योर्तिपांज्योर्तिरुत्तमंविश्वजिह्वनजिदुच्यतेवहृत् । विश्व
आड्भ्राजोमद्विसूयैर्दृशऽडुरुप्रथेसहऽओजोऽअच्युतं ॥ विभ्राजंज्योर्तिपास्वर्गगच्छोरोचनंदिवः । येनेमाचि
श्चाभुवनान्याभृताविश्वकर्मणाविश्वदेव्यावता ॥ २८ ॥ (१०।१२।२०) त्वंत्यमित्तोरथमिन्द्रप्राचःसुतार्धतः ।
अशृणोःसोमिनोहवै ॥ त्वंमखस्यदोधतःशिरोवत्वचोभरः । अगच्छःसोमिनोहं ॥ त्वंत्यमिन्द्रमर्त्यमाखवृध्यायै
न्यं । मुहुःश्रभामनस्यै ॥ त्वंत्यमिन्द्रसूयैपश्चासंतंपुरस्कृधि । देवानांचित्तिरोवशं ॥ २९ ॥ (१०।१२।२१) आ
याद्विनसासहगार्वःसंचंतवतुर्नियद्वृधभिः ॥ आयोद्विस्व्याधियामंहिषोजाग्यनमखःसुदानुभिः ॥ पितृभृतोनंतं
याद्विनसासहगार्वःसंचंतवतुर्नियद्वृधभिः ॥ आयोद्विस्व्याधियामंहिषोजाग्यनमखःसुदानुभिः ॥ पितृभृतोनंतं

यौहिर्वनसासुहगावःसंचंतवतोनिदूधामः ॥ (१०१२१२०)
(१०१२११९) विआडित्तिचतुर्द्धचस्यसूक्तस्यसौर्वोविआद्रसूजंगत्यास्तारपक्तिः। (१०१२१२०)
सूक्तस्यभार्गवददंद्दोगायत्री। (१०१२१२१) आयाहीत्तिचतुर्द्धचस्यसूक्तस्यागिरसःसर्वतुपाद्विषदाविराद।

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ६१ ॥

तुभिस्सुदानवःप्रतिदध्मोयजामसि ॥ उषाऽअपस्वसुस्तमःसर्वतयतिवर्तुनिमुजाता ॥ ३० ॥ (१०।१२।२२) आत्वा
हर्षमंतरेधिध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः । विशस्वासवीवांछंतमात्वद्राष्ट्रमधिअशत् ॥ इहैवैधिसार्पच्योष्ठाःपर्वतऽइवा
विचाचलिः । इद्रऽइवेहध्रुवस्तिष्ठेहराष्ट्रमुधारय ॥ इममिद्रोऽअदीधरद्वुवंध्रवेणहविषा । तस्मैसोमोऽअधिब्रवत्त
स्माऽउब्रह्मणस्पतिः ॥ ध्रुवाद्यौध्रुवाध्रुथिवीध्रुवासःपर्वताऽइमे । ध्रुवन्विध्वमिदजगद्ध्रुवोराजाविशामयं ॥ ध्रुवतेरा
जावरुणोध्रुवदेवोबृहस्पतिः । ध्रुवतऽइद्रश्चाग्निश्चराष्ट्रधारयतांध्रुवं ॥ ध्रुवंध्रुवेणहविषाभिसोमंमृशामसि । अथोत
ऽइंद्रःकेवलीविशोबलिहर्तस्करत् ॥ ३१ ॥ (१०।१२।२३) अभीवर्तेनहविषायेनेद्रोऽअभिवावृते । तेनास्मान्ब्र
ह्मणस्पतेभिराष्ट्रावर्तय ॥ अभिवृत्सपत्नानभियानोऽअरातयः । अभिपृतन्यंततिष्ठाभियोनऽइरस्यति ॥ अभि
त्वादेवःसविताभिसोमोऽअवीधृतत् । अभित्वाविश्वभूतान्यभीवतोयथाससि ॥ येनेद्रोहविषाकृत्यभवह्युफ्युत्त
मः । इदंतदकिदेवाऽअसपलःकिलाभुवं ॥ असपलःसपलंहाभिराष्ट्रोविपासहिः । यथाहमेपांभूतानांविराजानिज
नस्यच ॥ ३२ ॥ (१०।१२।२४) प्रवोग्रावाणःसवितादेवःसुवतुधर्मणा । ध्रुषुर्गुज्यध्वंसुनुत ॥ ग्रावाणोऽअप
(१०।१२।२२) आत्वेतिषड्चस्यसूक्तसागिरसोध्रुवोराजानुष्टुप् । (१०।१२।२३) अभीवर्तेनेतिपंचर्चस्यसूक्तागिरसोभीवतो
राजानुष्टुप् । (१०।१२।२४) प्रवइतिचतुर्कचस्यसूक्तसोर्ध्वग्रावर्तुदःसर्पऋषिपुत्रोमावाणोगायत्री ।

मंडलं १०

अनु. १२

॥ ६१ ॥

दुच्छुनामपसेधतदुर्मतिं । उस्त्राः कर्तनभेषजं ॥ आवाण्डउपरैष्वामहृयंतैसुजोपसः । वृष्णेदधतोवृष्ण्यं ॥ आवा
 णः सवितानुवोदेवः सुवतुधर्षणा । यजमानाय सुवन्ते ॥ ३३ ॥ (१०।१२।२५) प्रसनवऽऋभूणां वृहद्वतवृज
 नो । क्षमाये विश्वधाय सोऽश्रन्धेनुनमातरं ॥ प्रदेवदेव्याधिया भरताजातवेदसं । हव्यानो वक्षदानपक्व ॥ अयमु
 ष्य प्रदेवयुहोतयुज्ञाय नीयते । रथोनयो रभीधृतो घृणीवान्वेत तितमनी ॥ अयमग्निरुरुज्यत्यमुतो दिवजन्मनः । सह
 सश्चित्सहीयान् देवो जीवातवेकृतः ॥ ३४ ॥ (१०।१२।२६) पतंगमृक्तमसुरस्य मायया हृदा पर्ययं तिमनसा विषाश्चि
 तः । समुद्रेऽअंतः कवयो विचक्षते मरीचीनां पदमिच्छंति वेधसः ॥ पतंगो वाचं मनसा विभर्ति तां गंधवीं वदद्भेऽअंतः ।
 तां द्योतमानां स्वर्धमनीपा मतस्य पदे कवयो निपाति ॥ अपर्ययंगोपामनिपद्यमानमाचरो च पृथिविभिश्चरंतं । ससघ्रीचीः
 स विप्यूचीर्वसानां स्वर्धमनीपा मतस्य पदे कवयो निपाति ॥ ३५ ॥ (१०।१२।२७) त्वमपुत्राजिनं देवजंतुं सहावानंतरुतारं रथा
 स विप्यूचीर्वसानां स्वर्धमनीपा मतस्य पदे कवयो निपाति ॥ ३५ ॥ (१०।१२।२७) त्वमपुत्राजिनं देवजंतुं सहावानंतरुतारं रथा
 नां । अरिष्टनेमिं पृतनार्जमां शुस्वस्तये तार्क्ष्यमिहाहुवेम ॥ इंद्रस्य वरातिमाजो हुवानाः स्वस्तये नार्वमिवारुहेम । उर्वान
 पृथ्वीवहुलेगभीरिमावाभेतौ मापरेतौ रिपाम ॥ सुद्यश्चिद्यः शर्वसापंचकृष्टीः सूर्यऽइव ज्योतिषा पस्ततानं । सहस्रसाः श
 नां । अरिष्टनेमिं पृतनार्जमां शुस्वस्तये तार्क्ष्यमिहाहुवेम ॥ इंद्रस्य वरातिमाजो हुवानाः स्वस्तये नार्वमिवारुहेम । उर्वान

पतगमिति वचस्य
 पृथ्वीवहुलेगभीरिमावाभेतौ मापरेतौ रिपाम । (१०।१२।२६) पतगमिति वचस्य
 पृथ्वीवहुलेगभीरिमावाभेतौ मापरेतौ रिपाम । (१०।१२।२७) त्वमपुत्राजिनं देवजंतुं सहावानंतरुतारं रथा
 नां । अरिष्टनेमिं पृतनार्जमां शुस्वस्तये तार्क्ष्यमिहाहुवेम ॥ इंद्रस्य वरातिमाजो हुवानाः स्वस्तये नार्वमिवारुहेम । उर्वान

(१०।१२।२५) प्रसनवऽऋभूणां वृहद्वतवृज
 नां । अरिष्टनेमिं पृतनार्जमां शुस्वस्तये तार्क्ष्यमिहाहुवेम ॥ इंद्रस्य वरातिमाजो हुवानाः स्वस्तये नार्वमिवारुहेम । उर्वान

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ६२ ॥

तसाऽअस्यरं हिनस्मावरंतेयुवतिनशयी ॥ ३६ ॥ (१०।१२।२८) उत्तिष्ठतावपश्यतेद्रस्यभागमत्वियं । यदिआ
तो जुहोतनयद्यश्रतोममत्तनं ॥ आतंहविरोऽब्विद्रप्रयाहिजगामसुरोऽअर्धनोविमध्यं । परित्वासतेनिधिभिःसखा
यःकुलपानव्राजपतिचरंतं ॥ आतमन्यऽऊर्ध्वनिश्रातमग्नौसुश्रातमन्येतदृतनवीयः । माध्यंदिनस्यसर्वनस्यदुग्धःपिवं
द्रवजिन्पुरुकुज्जुपाणः+ ॥ ३७ ॥ (१०।१२।२९) प्रससाहिपेपुरुहृतशत्रून्येष्टेस्तेशुष्मऽइहरातिरस्तु । इद्राभ
रदक्षिणेनावसूनिपतिःसिंधूनामसिरुवतीनां ॥ मगोनभीमःकुचरोगिरिष्ठाःपरावतऽआजगंथापरस्याः । सकंसंशा
यपविमिदतिगमंविशत्रून्ताह्निविमृधौनुदस्व ॥ इन्द्रक्षत्रमभिवाममोजोयाथावृपभचर्पणीनां । अपानुदोजनममि
त्रयंतमरुंदेवेभ्योऽअकृणोरुलोकं+ ॥ ३८ ॥ (१०।१२।३०) प्रथश्चयस्यसप्रथश्चनानामनुष्टुभस्यहविषोहविर्यत् ।
धातुद्युतानात्सवितुश्चविष्णोरथंतरमार्जभारावसिष्ठः ॥ अविदुन्तेऽअतिहितयदासीद्यज्ञस्यधामपरमंगुहायत् । धा
तुद्युतानात्सवितुश्चविष्णोर्भूरद्वजोवहदाचकेऽअग्नेः+ ॥ तैविदुन्मनसादीधानायजुःष्कत्रंप्रथमंदेवयानं । धातुद्यु
(१०।१२।२८) उत्तिष्ठतेतितृचस्यसूक्तयौशीनरःशिविः१ काशिराजःप्रतर्दनोर रोहिदशोवसुमना३ इतिक्रमेणैकचंद्रस्त्रिष्टुवा
वातुष्टु१ । (१०।१२।२९) अससाहिपइतिवृचस्यसूक्तस्यैद्विजयइंद्रस्त्रिष्टु१ । (१०।१२।३०) प्रथश्चेतिवृचस्यसूक्तस्यवासिष्ठःप्रथो १
भारद्वाजःसप्रथ२ सौर्योधर्म३ अैकचर्विविद्येद्विष्टु१ ।

मंडलं १०

अनु. १२

॥ ६२ ॥

तानात्सवित्रुश्चविष्णोरासूर्यादभरन्धममेतं ॥ ३९ ॥ (१०।१२।३१) बृहस्पतर्नयतुदुर्गहातिरःपुनर्नपदुघशंसा
यमन्म । क्षिपदशस्तिमपदुर्मितहृन्नयक्रद्यजमानायशयोः ॥ नराशंसोनोवप्रयाजेशनोऽसस्वतुयाजोहवेषु ।
क्षिपद० ॥ तपुर्मूर्धातपतुरक्षसोयेब्रह्माक्षिपःशरवेहंतवाऽव । क्षिपद० ॥ ४० ॥ (१०।१२।३२) अपश्यंत्यामनं
साचेर्कितानंतपसोजातंतपसोविभूत । इहप्रजाभिर्हृयिराणःप्रजायस्वप्रजयापुत्रकाम ॥ अपश्यंत्यामनंसादीध्या
नांस्वार्थांतनूऽकृत्यनार्धमानां । उपमाम्चायुवतिर्विभूयाःप्रजायस्वप्रजयापुत्रकामे ॥ अहंगर्भमदधामोपधीज्वहंवि
श्वेषुमुवेन्वंतः । अहंप्रजाऽअजनयंष्ट्रिध्यामंहंजनिभ्योऽअपरीषुपुत्रान् ॥ ४१ ॥ (१०।१२।३३) विष्णुर्गो
र्निकल्पयतुत्वष्टारूपाणिपिंशतु । आसिंचतुप्रजापतिर्धातागर्भेदधातुते ॥ गर्भेधेहिसिनीवाल्लिगर्भेधेहिसरस्वति ।
गर्भेतेऽअश्विनौदेवावाधेतांपुष्करस्त्रजा ॥ हिरण्ययीऽअरणीयंनिर्धतोऽअश्विनौ । तंतैर्गर्भेहवामहेदशमेमासिसू
तवे ॥ ४२ ॥ (अथपरिशिष्टं ॥ नेजमेपरोपतसुपुत्रःपुनरपत । अस्थैमेपत्रकामायेगर्भमाधेह्रियःपुमान् ॥ यथेयंष्ट्र
अपश्यमितिचतस्रसूक्तसप्रा-
(१०।१२।३२) अपश्यमितिचतस्रसूक्तसप्रा-
(१०।१२।३२) अपश्यमितिचतस्रसूक्तसप्रा-

(१०।१२।३१) बृहस्पतिरिति वचस्य सूक्तस्य ब्राह्मणस्य तप्तपुमूधादृष्टं । (अपश्यन्ते त्वेतस्याद्यायाजमानमाक्षितं । इति वा लिसरस्वत्य जापत्यः प्रजावाट्टपिः यजमानो यजमानपत्नीहोता इति क्रमेण देवता खिद्रुप ।)

अवसं.

अ. ८ अ. ८

॥ ६३ ॥

शिवीमह्युत्तानागर्भमादधे । एवंतंगर्भमाधेहिदशमेमासिसूतवे ॥ पुत्रानाधेहिदशमेमासिसूतवे ॥ १ ॥ (१०।१२।३४) महित्रीणामवोस्तुद्युक्षंमित्रस्यार्यम्णः । दुराधर्पवरुणस्य ॥ नहितेर्पममाचननाध्वसुवारणेभु । ईशेरिपुरधशंसः ॥ यस्मैपुत्रासोऽर्दतेःप्रजीवसेमर्त्येय । ज्योतिर्यच्छंत्यजस्रं ॥ ४३ ॥ (१०।१२।३५) वातऽआर्वातुभेपुजंशुभयोमुनोहिदे । प्रणऽआधूयितारिपत् ॥ पुतवातपितासिनऽतु तन्त्रातोतनःसखा । सनोजीवातवेकृधि ॥ यदुदोर्वाततेगेहेऽमृतस्यनिधिर्हितः । ततोनोदेहिजीवसे ॥ ४४ ॥ (१०।१२।३६) प्राग्रयेवाचमीरयवृषभार्थक्षितीनां । सनः० ॥ यःपरस्याःपरावतस्तिरोधन्वातिरोच ते । सनः० ॥ योरक्षांसिनिजूर्ध्वतिवृषाशुक्रेणशोचियां । सनः० ॥ यःपरस्याःपरावतस्तिरोधन्वातिरोच सनः० ॥ योऽअस्यपारेरजसःशुक्रोऽअग्निरजायत । सनः० ॥ ४५ ॥ (परिशिष्टं ॥ अनीकंवतमृतयेभिर्गिगीभिर्हवा ध्विनस्तृतीयायाअध्विनावनुष्टुप । (प्राजापत्योविष्णुर्वाक्यपिः) । (१०।१२।३४) महीतिवृचस्यसूक्तस्यारुणिःसत्यधृतिरादित्या गायत्री । (महिसत्यधृतिर्वारुणिरादित्यंस्वस्त्यनमित्यनुक्रमण्याअदितिर्देवतायस्येत्यादित्यंआदित्योदेवतायस्येत्यादित्यमितिद्वैविध्येनप्राप्ता वययत्रादित्यानामेवदेवतात्वंनादितेः 'माहित्रंयन्महित्रीणामादित्यानांस्तुतिविदुः' इतिशौनकोक्तेः) । (१०।१२।३५) वातइतिवृचस्य सूक्तस्यवातायनउलोवायुर्गायत्री । (१०।१२।३६) प्राग्रयद्वतिपचर्चस्यसूक्तस्याग्नेयोवत्सोभिर्गायत्री ।

मंडलं १०

अनु. १२

॥ ६३ ॥

ऋक्सं.

अ. ८ अ. ८

॥ ६४ ॥

चित्तमेषां । समानं मंत्रमभिर्मन्त्रयेवः समानेनैवोहविषा जुहोमि ॥
स्त्वोमनो यथावुः सुसहसति ॥ ४९ ॥ इत्यष्टमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ (परिशिष्टं ॥ संज्ञानमृशनावदत्सं
ज्ञानं वर्णो वदत् । संज्ञानमिदंश्चाग्निं संज्ञानं सविता वदत् ॥ संज्ञानं नृभ्यः संज्ञानमरणेभ्यः । संज्ञानं मन्विनायुव
मिहास्मासुनियच्छतां ॥ यत्कक्षीवां संवननं पुत्रोऽअंगिरसा भवेत् । तेनोद्यविश्वे देवाः संप्रियां समजीजनन् ॥ संवो
मनां सिजानतां समाकूतिर्मनामसि । असौ यो विर्मनामनः संसमावर्तयामसि ॥ १ ॥ नैह स्तलं सेनादरणं परिचर्त्तु यजू
विः । तेनाभिन्नाणां वाहून्हुविषां शोषयामसि ॥ परिवर्त्मान्येषामिदं पृषाचसर्त्तुः । तेषां वोऽअग्निदग्धानामग्निमू
ह्वानामिद्रोऽहं तु वरं ॥ ऐषु न ह्यवृषाजिनं हरिणस्य धियं यथा । परांऽअमित्रांऽऐषत्वर्वाचीं गौरुपाजंतु ॥ प्राध्वराणां
पतेव सोहोतु वरं ॥ ऐषु न ह्यवृषाजिनं हरिणस्य धियं यथा । परांऽअमित्रांऽऐषत्वर्वाचीं गौरुपाजंतु ॥ प्राध्वराणां
सहब्रह्मैकमक्षरं बहुब्रह्मैकमक्षरं ॥ २ ॥ यदक्षरं भूतकृतं विश्वे देवाऽउपासते । महऽऽकृषिमस्य गोसारजमदग्निरकुर्वतं ॥
जमदग्निराप्यायते छंदोभिश्चतुरुक्षरैः । राजा सोमस्य भक्षेण ब्रह्मणा वीर्यावितां ॥ शिवानः प्रदिशो दिशः सत्यानः प्रदि
शो दिशः । अजो यत्तेजो ददद् अशुक्रं ज्योतिः परो गुहा ॥ यदपिः कश्यपः स्तौतिसत्यं ब्रह्म चारं ध्रुवं ब्रह्म चारं । त्र्या
यं पञ्चमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुपमगस्त्यस्य त्र्यायुपं ॥ यद्देवानां त्र्यायुपं तन्मेऽअस्तु त्र्यायुपं सर्वमस्तु शतायुषं वृत्राद्युषं ॥

तच्छंयोरार्चणीमहेगातुंयज्ञार्थगातुंयज्ञर्पतये । देवींस्वस्तिरस्तुनःस्वस्तिर्मानुयेभ्यः । ऊर्ध्वजिगातुभेपञ्जंशंनोऽस्तु ॥
 द्विपदेऽंशचतुर्पदे ॥ ३ ॥ (इतिपरिशिष्टं ॥)

चतुःपष्ट्यध्यायेवर्णाः ४९ सूक्तानि ४९ ऋचः २१८ ॥ त्यागः ॥ अध्विन्या. ६ इन्द्राये. ६ सपत्नीनाशनाये ६ अरण्यान्या. ६
 इन्द्राये. १० सवित्र. ५ अग्नय. ५ श्रद्धाया. ५ इन्द्राये. १० भाववृत्तय. ५ अलक्ष्मीनाशनाये. २ व्रक्षणास्पतय. २ अलक्ष्मीनाशनाये. विश्वेभ्यो-
 देवेभ्य. अग्नय. ५ विश्वेभ्योदेवेभ्य ५ सूर्याये. ५ शन्याइ. ६ इन्द्राये. ५ इन्द्राग्निभ्या ५ प्रजापतय. ६ यक्ष्मन्नइ ६ दुःस्वप्ननाशनाये. ५ विश्वे-
 भ्योदेवेभ्य. ५ [मे. प विश्वेभ्योदे. ३ यमाये. विश्वेभ्योदेवेभ्य.] सपत्ननाशनाये. ५ इन्द्राये. २ सोमत्ररणवृहस्पत्यनुमतिधातुविधातुभ्य.
 इन्द्राये. वायव. ४ गोम्य. ४ सूर्याये. ४ इन्द्राये ४ उपस. ४ राज्ञइदं. ११ प्रावम्यइ. ४ ऋभुभ्य. अग्नय. ३ मायाभेदाये. ३ ताक्ष्याये. ३
 इन्द्राये. ६ विश्वेभ्योदेवेभ्य. ३ वृहस्पतय. ३ यजमानाय. यजमानपत्न्या. होत्रइदं. विष्णुत्वष्टृप्रजापतिधातुभ्य. सिनीत्रालिसरस्वत्यध्विभ्य.
 अध्विन्या. आदित्येभ्य. ३ वायव. ३ अग्नय. ५ जातवेदसेभ्य. ३ सूर्याये. ३ भाववृत्तय ३ अग्नय. संज्ञानायेदं. ३ ॥ इत्यष्टभेऽष्टमः ॥

ऋक्सं.

॥ ६५ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथनिविदध्यायः ॥ ओम् अग्निदेवेक्षः ॥ अग्निर्मन्विद्धः ॥ अग्निःसुषामत् ॥ होतादेव
वृतः ॥ होतामनुवृतः ॥ प्रणीर्यज्ञानां ॥ रथीरध्वराणाम् ॥ अतूर्तोहोता ॥ तूर्णिहव्यवाद् ॥ आदेवोदेवान्वक्षत् ॥
यक्षदशिर्देवोदेवान् ॥ सोअध्वराकरतिजातवेदाः ॥ १२ ॥ १ ॥ इंद्रोमरुत्वान्सोमस्यपिवतु ॥ मरुत्तोन्नोमरुद्ग
णः ॥ मरुत्सखामरुद्गुधः ॥ मन्वृत्रासृजदपः ॥ मरुतामोजसासह ॥ यईमेनदेवाअन्वमदन् ॥ असूयेवृत्रतूर्ये ॥
शंवरहत्येगविष्टौ ॥ अर्चतंगुह्यापदा ॥ परमस्यांपरावति ॥ आदीब्रह्माणिवर्धयन् ॥ अनाष्टृष्टान्योजसा ॥ कृण्व
न्देवेभ्योदुवः ॥ मरुद्भिःसखिभिःसह ॥ इंद्रोमरुत्वोइहश्रवदिहसोमस्यपिवतु ॥ प्रेमादेवोदेवहूतिमवतुदेव्याधिया ॥
प्रेदंब्रह्मप्रेदंक्षत्रं ॥ प्रेमंसुन्वंतयजमानमवतु ॥ चित्रश्चित्राभिरूतिभिः ॥ श्रवद्ब्रह्माण्यावसागमत् ॥ २० ॥ २ ॥
इंद्रोदेवःसोमपिवतु ॥ एकजानांवीरतमः ॥ भूरिदानंतवस्तमः ॥ हर्योःस्थाता ॥ पृश्नेःप्रेता ॥ वज्रस्यभर्ता ॥ पुरां
भेत्ता ॥ पुरांदर्मा ॥ अपांस्रष्टा ॥ अपानेता ॥ सत्वानानेता ॥ निजग्निर्दूरेश्रवाः ॥ उपमातिकृदंसनावान् ॥
इहोशदेवोवभूवान् ॥ इंद्रोदेवइहश्रवदिहसोमस्यपिवतु ॥ प्रेमादेवोदेवहूतिमवतुदेव्याधिया ॥ प्रेदंब्रह्मप्रेदंक्षत्रं ।
प्रेमंसुन्वंतयजमानमवतु । चित्रश्चित्राभिरूतिभिः । श्रवद्ब्रह्माण्यावसागमत् ॥ २० ॥ ३ ॥ सवितादेवःसोमस्य
पिवतु ॥ हिरण्यपाणिःसुजिह्वः ॥ सुबाहुःस्वंगुरिः ॥ त्रिरहन्त्सत्यसवनः ॥ यःप्रासुवद्भसुधीती ॥ उभेजोष्ट्रीसवीम

परिशि

॥ ६५ ॥

नि ॥ श्रेष्ठसावित्रमासुवं ॥ दोग्धीधेनुं ॥ वोह्वारमनड्वाहं ॥ आशुसंतिं ॥ पुरंधियोपां ॥ जिष्णुरथेष्ठां ॥ समेयं
 ॥ प्रेमांदेवोदेवहूतिमवतुदेव्याधिया ॥ २० ॥ ४ ॥
 युवानं ॥ परामीवांसाविपराघशंसं ॥ सवितादेवइश्रवदिहसोमस्यमत्सत् ॥ श्रवद्रह्माण्यावसागमत् ॥ धन्याचधिपणाच ॥ सुरे
 प्रेदं ब्रह्मप्रेदंक्षत्रं ॥ प्रेमंसुनवंतंयजमानमवतु ॥ चित्राश्चित्राभिरूतिभिः ॥ धेनुश्चक्रपभश्च ॥ द्यावापृथिवीइहश्रुतामिहसो
 द्यावापृथिवीसोमस्यमत्सतां ॥ पिताचमाताच ॥ पुत्रश्चप्रजननंच ॥ रेतोधाश्चरेतोभृच्च ॥ चित्रेचित्राभि
 ताश्चसुदुघाच ॥ शंभूश्चमयोभूश्च ॥ ऊर्जस्वतीचपयस्वतीच ॥ प्रेमंसुनवंतंयजमानमवतां ॥ विप्रीस्वपसः ॥ कर्मणासुह
 मस्यमत्सतां ॥ प्रेमांदेवीदेवहूतिमवतांदेव्याधिया ॥ प्रेदं ब्रह्मप्रेदंक्षत्रं ॥ विप्रीस्वपसः ॥ अरक्षन्धेनुमभ
 रूतिभिः ॥ श्रुताब्रह्माण्यावसागमतां ॥ १५ ॥ ५ ॥ क्रभवोदेवाःसोमस्यमत्सन् ॥ विप्रीस्वपसः ॥ अरक्षन्धेनुमभ
 स्ताः ॥ धन्याधनिष्ठाः ॥ शम्भ्याशमिष्ठाः ॥ शच्याशचिष्ठाः ॥ वेधेनुंविश्वजुवंविश्वरूपामरक्षन् ॥ प्रेमंसुनवंतंयजमानमवं
 वद्विश्वरूपी ॥ अयुजतहरीअयुर्देवौजप ॥ अबुधन्तंसंकीर्णामदंतः ॥ संवत्सरेस्वपसोयज्ञियंभागमायन् ॥ क्रभवो
 देवाइहश्रवन्निहसोमस्यमत्सन् ॥ प्रेमांदेवादेवहूतिमवतुदेव्याधिया ॥ प्रेदं ब्रह्मप्रेदंक्षत्रं ॥ विभ्वैश्वा
 तु ॥ चित्राश्चित्राभिरूतिभिः ॥ श्रवद्रह्माण्यावसागमन् ॥ १७ ॥ ६ ॥ विभ्वेदेवाःसोमस्यमत्सन् ॥ वातात्मानोअग्नि
 नराः ॥ विभ्वेहिविश्वमहसः ॥ महिमहांतः ॥ तक्कान्नानेमतिथीवानः ॥ अस्काःपचतवाहसः ॥

दूताः ॥ येषांचपृथिवींचातस्थुः ॥ अपश्चस्वश्च ॥ ब्रह्मचक्षत्रं च ॥ वहिश्चवेदिं च ॥ यज्ञंचोरुचांतरिक्षं ॥ येष्यत्रय
एकादशाः ॥ त्रयश्चत्रिंशच्च ॥ त्रयश्चत्रीचशता ॥ त्रयश्चत्रीचसहस्रा ॥ तावंतोभियाचः ॥ तावंतोरातिषाचः ॥
तावतीः पत्नीः ॥ तावतीर्माः ॥ तावंतउदरणे ॥ तावंतोनिवेशने ॥ अतोवादेवाभूयांसः स्थ ॥ माचोदेवाअपिशसा
मापरिशसावृक्षि ॥ विश्वेदेवाइहश्रवन्निहसोमस्यमत्सन् ॥ प्रेमां देवादेवहूतिमवंतुदेव्याधिया ॥ प्रेदं ब्रह्मप्रेदं क्षत्रं ॥
प्रेमंसुन्वंतं यजमानमवंतु ॥ चित्राश्चित्राभिरूतिभिः ॥ श्रवद्ब्रह्माण्यावसागमन् ॥ ३० ॥ ७ ॥ अग्निर्वैश्वानरः सो
मस्यमत्सत् ॥ विश्वेपां देवानांसमित् ॥ अजस्रंदैव्यं ज्योतिः ॥ योविद्भ्योमानुषीभ्योअदीदेत् ॥ द्युपुपूर्वासुदिद्यु
तानः ॥ अजरउपसामनीकै ॥ आयोद्यांभाल्यापृथिवीम् ॥ ओर्वंतरिक्षं ॥ ज्योतिषायज्ञायशर्मयंसत् ॥ अग्निर्वैश्वा
नरइहश्रवदिहसोमस्यमत्सत् ॥ प्रेमां देवोदेवहूतिमवंतुदेव्याधिया ॥ प्रेदं ब्रह्मप्रेदं क्षत्रं ॥ प्रेमंसुन्वंतं यजमानमवंतु ॥
चित्राश्चित्राभिरूतिभिः ॥ श्रवद्ब्रह्माण्यावसागमत् ॥ १५ ॥ ८ ॥ मरुतोदेवाः सोमस्यमत्सन् ॥ सुष्टुभः स्वर्काः ॥
अर्कस्तुभोवृहद्वयसः ॥ शूराअनाधृष्टरथाः ॥ त्वेपासः पृश्निमातरः ॥ शुभ्राहिरण्यखादयः ॥ तवसोभंददिष्टयः ॥
नभस्यावर्पनिर्णिजः ॥ मरुतोदेवाइहश्रवन्निहसोमस्यमत्सन् ॥ प्रेमां देवादेवहूतिमवंतुदेव्याधिया ॥ प्रेदं ब्रह्मप्रेदं क्ष
त्रं ॥ प्रेमंसुन्वंतं यजमानमवंतु ॥ चित्राश्चित्राभिरूतिभिः ॥ श्रवद्ब्रह्माण्यावसागमन् ॥ १४ ॥ ९ ॥ अग्निर्जा

[illegible]

अथकुंतापाध्यायः ॥ अथनाराशंस्यः ॥ ओम् ॥ इदंजनाउपश्रुतनराशंसस्तविष्यते ॥ षष्टिसहस्रानवतिचकौरम
 आरुशमेषुदद्वहे ॥ उष्ट्रायस्यप्रवाहणोवधूमंतोद्विर्दश ॥ वर्ष्मार्थस्यनिजिहीळतेदिवईयमाणउपस्पृशः ॥ एषइया
 यमामहेशतंनिष्कान्दशस्रजः ॥ त्रीणिशतान्यवतांसहस्रादशगोनां ॥ ३ ॥ इतितिस्रो नाराशंस्यः ॥ ॥ एषइया
 वच्यस्वरेभवच्यस्ववृक्षेनपक्षेयकुनः ॥ नष्टेजिह्वाचर्चरीतिक्षुरो नभुरिजोरिव ॥ प्ररेभासोमनीषयावृथागावइवेरते ॥
 इतितिस्रोरैभ्यः ॥ ॥ अथपारिक्षित्यः ॥ राज्ञोविश्वजनीनस्ययोदेवोमर्त्योअति ॥ वैश्वानरस्यसुष्टुतिमासुनोतापरिक्षि
 तिः ॥ परिक्षिन्नःक्षेममकरत्तमासुनुमासरं ॥ मरायन्कुर्वन्कौरव्यःपतिर्वदतिजायया ॥ कतरत्तआहराणिदधिमंथां
 परिस्रुतां ॥ जायापतिविपृच्छतिराष्ट्रेराज्ञःपरिक्षितः ॥ अभीवर्ष्मप्रजिहातेयवःपक्वःपथोविलं ॥ जनःसभद्रमैधत्त
 राष्ट्रेराज्ञःपरिक्षितः ॥ इतिचतस्रःपारिक्षित्यः ॥ ॥ अथकारव्याः ॥ इन्द्रःकारुमवबूधदुत्तिष्ठविचराजनं ॥ ममेदुम्र
 स्यचर्कृधिसर्वोइत्तेपृणादुरिः ॥ इहगावःप्रजायध्वमिहाश्वाइहपूरुपाः ॥ इहोसहस्रदक्षिणोवीरस्त्रातानिषीदतु ॥
 नेमाइंद्रगावोरिषन्मोआसांगोपतीरिषत् ॥ मासाममित्रयुर्जनइंद्रमास्तेनईशत ॥ उपवोनरएमसिसूतेनवचसावयं
 भद्रेणवचसावयं ॥ चनोदधिध्वनोअंगिरोनरिष्येमकदाचन ॥ ४ ॥ इतिचतस्रःकारव्याः ॥ ॥ अथदिशंस्तयः ॥

यःसंभेयोविदथ्यःसुत्वायज्याचपूरुपः ॥ सूर्यचाभूरिशादसंतदेवाःप्रागकल्पयन् ॥ योजाम्याअप्रत्तदमद्यःसखाय
 निनिस्तसि ॥ ज्येष्ठेयदिप्रचेतास्तदाहुरधरागिति ॥ यद्भद्रस्यपुरुषस्यपुत्रोभवतिदाधृयिः ॥ तद्विप्रोअब्रवीदुदगं
 धर्वःकाव्यंवचः ॥ यश्चपणिरभुजिष्योयश्चरेवोअदाश्रुतिः ॥ धीराणांशश्वतामहंतदपागितिशुभ ॥ येचदेवाअय
 जंताथोयेचपरादिदिः ॥ सूर्योदिवमिवगत्वामघवानोविरपशते ॥ ५ ॥ इतिपंचदिशांहृत्सयः ॥ अथजनकल्पाः ॥
 योनाक्ताक्षोअनभ्यक्तोमणिवोअहिरण्यवः ॥ अन्नह्माब्रह्मणस्पुत्रस्तोताकल्पेपुसंमितः ॥ यआक्ताक्षःस्वभ्यक्तःसुम
 णिःसुहिरण्यवः ॥ सुब्रह्माब्रह्मणस्पुत्रस्तोताकल्पेपुसंमितः ॥ अप्रपाणाचयेशंतारेवोअप्रददिश्चयः ॥ सुयन्त्राकन्या
 कल्याणीतोताकल्पेपुसंमितः ॥ सुप्रपाणाचयेशंतारेवानुसुप्रददिश्चयः ॥ सुयन्त्राकन्याकल्याणीतोताकल्पेपुसंयि
 तः ॥ वावाताचमहिष्यंनस्ताचयुधिगमः ॥ अनाशुरश्वआयामीतोताकल्पेपुसंमितः ॥ परिवृक्ताचमहिषीविश्व
 स्त्याचयुधिगमः ॥ स्वाशुरश्वआयामीतोताकल्पेपुसंमितः ॥ इतिपड्जनकल्पाः ॥ ॥ अथेंद्रगाथाः ॥ त्वं
 द्रोदाशरज्ञेमानुपंव्यगाहथाः ॥ विरुपःसर्वस्माआसीत्सहगक्षायवंचते ॥ त्वंविपाक्षंमघवन्नम्रंपर्याकरोरभि ॥ त्वं
 रौहिणंव्यास्यस्त्वंदृन्नस्याभिनच्चिरः ॥ यःपर्वतान्व्यदधाद्योअपोव्यागाहथाः ॥ योवृत्रोवृत्रहन्हंस्तस्माइंद्रनमोस्तु
 ते ॥ प्रष्टिधावंतंहयोरौरोचैःश्रवसमब्रवं ॥ स्वस्त्यश्वजैत्रायेंद्रमावहसुस्रजं ॥ यत्त्वाभ्वेतोचैःश्रवसंहयोर्युंजंतिदक्षिणं ॥

मूर्धानमश्वं देवानाविश्वदिन्द्रमहीयसे ॥ इति पंचेन्द्रगाथाः ॥ ॥ अथैतशप्रलापाः ॥ एता अश्वा आहवन्ते ॥ प्रतीपंप्राति
 सत्वनं ॥ तासामेका हरिहिका ॥ हरिहिके किमिच्छसि ॥ साधुपुत्रं हिरण्ययं ॥ क्वाहकं परास्यः ॥ यत्रामूस्तिन्नः
 शिंशपाः ॥ परित्रयः पृदाकवः ॥ शृंगंधमंत आसते ॥ अयं महान्ते अवहि ॥ १० ॥ स इत्थकंस एवकं ॥ सघाघतेस
 घागमे ॥ गोमीघमोमिनीरभिः ॥ पुमान्भून्ने निनिस्सति ॥ वद्ववथो इति ॥ वद्ववथो इति ॥ अजकोरकोविका ॥
 अश्वस्यवालो गोशफः ॥ केशिनीश्येनी एनीवा ॥ अनामयोपजिहिका ॥ २० ॥ कोअं वकुलिमायुनि ॥ कोअर्जुन्याः
 पयः ॥ कोअसिक्याः पयः ॥ एतं पृच्छकुहं पृच्छ ॥ कुहाकं पक्कं पृच्छ ॥ यआयंतिश्वभिष्कुभिः ॥ अकुभ्यंतः कुभा
 यवः ॥ आमणकोमणत्थकः ॥ देवत्तः प्रतिहूर्यः ॥ पिनष्टिपतिकाहविः ॥ ३० ॥ प्रबुद्धो मथायति ॥ शृंगडत्पत ॥
 मात्वां विसखानाविदन् ॥ वशायाः पुत्रमायांतं ॥ इराचेंद्रममंदत ॥ इयं नियंति ॥ अथोइयंति ॥ अथोज्याय
 स्तरोमुवत् ॥ इयं यकाशलाकका ॥ आभिणोति निभज्यते ॥ ४० ॥ तस्या अनुनिभंजनं ॥ वरुणो याति वभ्रुभिः ॥
 शतं वभ्रोरभीशवः ॥ शतं कशाहिरण्ययीः ॥ शतरथाहिरण्ययाः ॥ आहलुकुः शवर्तकुः ॥ आयवनेन तेजनिः ॥
 शफेन पीवओहति ॥ वनिष्टुनोपनृत्यति ॥ इयं मह्यमदुरिति ॥ ५० ॥ तेवृक्षाः सहतिष्ठति ॥ पाकवलिः शकवलिः ॥
 अश्वत्थः खबुरोधवः ॥ अरदुः परमः शये ॥ हत इव पापपूरुषः ॥ अदोहमिति पीयूषकं ॥ द्रौचहस्तिनौदती ॥ अध्य

ध्वचपरस्वतः ॥ आदलाबुकमेककं ॥ अलाबुकंनिरवातकं ॥ ६० ॥ कर्करिकोनिरवातकः ॥ तद्वातउन्मथाइति ॥
 कुलायंकरवोइति ॥ उग्रंवल्लिशदाततं ॥ नवल्लिशनदाततं ॥ कएपांकर्करिखत् ॥ कएपांडुडुभिहनत् ॥ यदीहन
 त्कथंहनत् ॥ दैलींहनत्कथंहनत् ॥ पर्याकारंपुनःपुनः ॥ ७० ॥ इतिसप्ततिपदान्यैतशप्रलापाः ॥ ॥ अथप्रवहिकाः ॥
 विततौकिरणौद्वौतावापिनष्टिपूरुपः ॥ नवैकुमारितत्तथायथाकुमारिमन्यसे ॥ मालुष्टेकिरणौद्वौनीवीतःपुरुषादृते ॥
 नवैकुमारितत्तथायथाकुमारिमन्यसे ॥ निगृह्यकर्तकौद्वौनिरायच्छसिमध्यमां ॥ नवैकुमारितत्तथायथाकुमारिम
 न्यसे ॥ उत्तानायैशयानायैतिष्ठन्नेवावगूहसि ॥ नवैकुमारितत्तथायथाकुमारिमन्यसे ॥ श्लक्षणायाश्लक्ष्णकायांश्ल
 क्षणमेवावगूहसि ॥ नवैकुमारितत्तथायथाकुमारिमन्यसे ॥ अवश्लक्ष्णमवभ्रशदंतलोमवतिहृदे ॥ नवैकुमारितत्त
 थायथाकुमारिमन्यसे ॥ इतिषट्प्रवहिकाः ॥ ॥ अथाजिज्ञासेन्याः ॥ इहेत्थप्रागपागुदगधराक् ॥ अरालाउदभं
 थते ॥ इहेत्थप्रागपागुदगधराक् ॥ वत्साःप्रुपंतआसते ॥ इहेत्थप्रागपागुदगधराक् ॥ सवीपुत्सीलिलीशये ॥ इहे
 त्थप्रागपागुदगधराक् ॥ स्थालीपाकोविलीयते ॥ इतिचतस्रजिज्ञासेन्याः ॥ ॥ अथप्रतिराध्यः ॥ भुगित्यभिगतः ॥
 शरित्यभिष्ठितः ॥ फलित्यपकांतः ॥ इतितिस्रःप्रतिराध्यः ॥ ॥ अथातिवादः ॥ वीमेदेवाकंसताध्वर्योक्षिप्रंचर ॥
 सुशस्तिरिद्धवामस्यतिप्राक्खिबदसोमैह ॥ इत्यतिवादः ॥ ॥ अथदेवनीथाः ॥ आदित्याहजरितरंगिरोभ्योदक्षिणामन

ऋक्सं.

॥ ६९ ॥

यन् ॥ तांहजरितर्नप्रत्यायन् ॥ तामुहजरितःप्रत्यायन् ॥ तांहजरितर्नप्रत्यगृभ्यन् ॥ तांहजरितःप्रत्यगृभ्यन् ॥
अहानेतसंनविचेतनानि ॥ जज्ञानेतसन्नपुरोगवासः ॥ उत्तश्चेतआशुपत्वा ॥ उत्तोपद्याभिर्जविष्टः ॥ उत्तेमाशुमानं
अस्तुसुचेतनं ॥ शुष्मेअस्तुदिवेदिवे ॥ प्रत्येवगृभायत ॥ इंदराधोःप्रतिगृभ्णीह्यंगिरः ॥ इंदराधोबृहत्पृथु ॥ देवाददत्वावरं ॥ तद्धो
द्रशर्मरिणाहव्यंपरावतेभ्यः ॥ विप्रायस्तुवतेवसूनिजुरश्रवसेमेहे ॥ त्वमिंद्रकपोतायच्छिन्नपक्षायवंचते ॥ इयामा
कंपक्कंपीलुचवारस्माअकृणोद्धु ॥ अरंगरोवावदीतित्रेधावद्धोवरत्रया ॥ इरामुहप्रशंसत्यनिरामपवाधतां ॥ इतितिस्रो
भूतेच्छदः ॥ ॥ अथाहनस्याः ॥ यदस्याअंहुभेद्याःपृथुश्चूरमुपातसत् ॥ मुष्काविदस्याएजतेगोशफेशकुलाविव ॥ य
दास्थूरेणपससाअनूमुष्काउपावधीत् ॥ विष्वंचावस्याअर्दतेसिकतास्विवर्गदभः ॥ यदल्पिकास्वल्पिकाकर्कधुकेवप
च्यते ॥ वासंतिकमिवतेजनोयभ्यमानावितन्वते ॥ यदेवासोलगमुंपिपीपिनमापिपुः ॥ सक्क्षादेहश्यतेनरःस
क्थ्यःसाक्षीवगोयथा ॥ महानग्न्युपब्रुतेअश्वस्यावेशितंपसः ॥ ईदक्फलस्यवृक्षस्यशूर्पभजेमहि ॥ महानग्न्यहसं
हिसोक्रंददत्तमासरत् ॥ शक्रुकाननाशकामशंकसक्थ्युद्यमत् ॥ महानग्न्युल्लखलमतिकमंत्यब्रवीत् ॥ यथैवतेवनस्प

परिशि.

॥ ६९ ॥

ऋक्सं.

॥ ७० ॥

देवो देवहूतिमवतु वेत्वा ज्यस्य होतॄर्ज ॥ ४ ॥ होताय क्षद्गर्हिः सुष्टरीमोर्णस्रदा अस्मिन्यज्ञे विचप्रचप्रथतां स्वासस्थं देवेभ्यः ॥ एमेन दद्यवसवोरुद्रा आदित्याः स दंतु प्रियमिन्द्रस्यास्तु वेत्वा ज्यस्य होतॄर्ज ॥ ५ ॥ होताय क्षहुरऋषवाः कवन्य ऊर्जो सतवसेमं यज्ञं दिवि देवेषु धत्तां वीतामा ज्यस्य होतॄर्ज ॥ ६ ॥ होताय क्षदुषासानकावृहती सुपेश सानुः पतिभ्यो योनिं कृण्वाने ॥ संस्यमाने इंद्रेण देवैरेदं गर्हिः सीदतां वीता दमपस्तन्वतां ॥ देवेभ्यो देवीर्देवमपो व्यंत्वा ज्यस्य होतॄर्ज ॥ ८ ॥ होताय क्षत्तिन्नो देवीरपसामपस्तमा अच्छिद्रमद्ये क्षद्ध्यो जोष्टारं शशमं नरः ॥ स्वदान्स्वधितिर्कृत्वा देवो देवेभ्यो हव्यवाङ् देत्वा ज्यस्य होतॄर्ज ॥ ९ ॥ होताय क्षत्त्वष्टारमचिष्टमपाकरेतो धां विश्रवसं य होताय क्षदग्निस्वाहा ज्यस्य स्वाहमेदसः स्वाहा स्तोकां स्वाहा कृतीनां स्वाहा हव्यसूक्तीनां ॥ १० ॥ होताय क्षद्गनस्पति सुपावस्र पाजुपाणा अग्न आज्यस्य न्यंतु होतॄर्ज ॥ ११ ॥ अजैर्दग्निरसन ॥ १२ ॥ इति प्रयाज प्रैषः ॥ होताय क्षदग्निमा ज्यस्य जुपतां हविर्होतॄर्ज ॥ १३ ॥

परिशि.

॥ ७० ॥

॥ १४ ॥ होतायक्षदग्नीपोमौल्लगस्यजुपतांहविर्होतर्त्यज ॥ १५ ॥ होतायक्षदग्नीपोमौल्लगस्यवपायामेदसोजुपेतांहवि
र्होतर्त्यज ॥ १६ ॥ होतायक्षदग्नीपोमौल्लगस्यजुपेतांहविर्होतर्त्यज ॥ १७ ॥ होतायक्षदग्निपुरोळाशस्यजुपतांह
र्होतर्त्यज ॥ १८ ॥ होतायक्षदग्नीपोमौल्लगस्यहविषआत्तामद्यमथ्यतोमेदञ्चतुंपुराद्वेपोभ्यःपुरापरौषेव्यागृभः ॥
विर्होतर्त्यज ॥ १९ ॥ होतायक्षदग्नीपोमौल्लगस्यहविषआत्तामद्यमथ्यतोमेदञ्चतुंपुराद्वेपोभ्यःपुरापरौषेव्यागृभः ॥
घस्तान्नूयसेअज्राणांयवप्रथमानांसुमत्क्षराणांशतरुद्रियाणामग्निज्वात्तानांपीचोपवसनानांपार्श्वतःश्रोणितःश्रिताम
तउत्सादतौगादंगादवत्तानांकरतएवाग्नीपोमौल्लगस्यजुपेतांहविर्होतर्त्यज ॥ २० ॥ देवेभ्योवनस्पतेहवींषिहिरण्यपर्णप्रदिवस्ते
अर्थ ॥ प्रदक्षिणिद्रशनयानियूयकृतस्यवक्षिपथिभीरजिष्ठैः ॥ होतायक्षद्वनस्पतिमभिहिपितमयारभिष्टयारशनयाधि
त ॥ यन्नाग्नेराज्यस्यहविषःप्रियाधामानियन्नाग्नेर्होतुःप्रियाधामानियन्नाग्नेर्होतुःप्रियाधामानियन्नाग्नेर्होतुःप्रियाधामानियन्नाग्नेर्होतुः
मानियन्वनस्पतेःप्रियापाथांसियन्नेदेवानामाज्यपानांप्रियाधामानियन्नाग्नेर्होतुः ॥ २० ॥ वनस्पतेरशनयानियूयपिष्टतमयावयुना
पावस्त्रक्षद्रभीयांसमिवकृत्वीकरदेवंदेवोवनस्पतिर्जुपतांहविर्होतर्त्यज ॥ २१ ॥ होतायक्षदग्निस्विष्टकृतमयाळभिरग्नेराज्यस्यहविषःप्रि
निविद्वान् ॥ वहदेवन्नादिधिपोहवींषिप्रचदाताममृत्युवोचः ॥ होतायक्षदग्निस्विष्टकृतमयाळभिरग्नेराज्यस्यहविषःप्रि
याधामान्ययाट्सोमस्याज्यस्यहविषःप्रियाधामान्ययाळभिरग्नेराज्यस्यहविषःप्रियाधामान्ययाड्सोमस्याज्यस्यहविषःप्रि
स्ययाड्सोमस्याज्यस्यहविषःप्रियाधामान्ययाळभिरग्नेराज्यस्यहविषःप्रियाधामान्ययाड्सोमस्याज्यस्यहविषःप्रि

जातवेदाजुषतांहविर्होतॄयज ॥ २१ ॥ इतिपाशुकप्रेषाः ॥ अथानुयाजप्रेषाः ॥ देववर्हिःसुदेवंदेवैःस्यात्सुवीरंवीरै
र्वस्तोर्वृज्येताक्तोःप्रश्त्रियेतात्यन्यान्नायावहिष्मतोमदेमवसुवनेवसुधेयस्यवेतुयज ॥ २२ ॥ देवीद्वारःसंघातेविद्वीर्यमंछि
थिराध्रुवादेवहूतौवत्सईमेनास्तरुणआमिमीयात्कुमारोवावनजातौमैनाअवरैणुककाटःपृणगवसुवनेवसुधेयस्यव्यंतुयज
॥ २३ ॥ देवीउपासानकाद्यास्मिन्यज्ञेप्रयत्यहेतामपिनूनंदेवीर्विशःप्रायासिष्टांसुप्रीतेसुधितेवसुवनेवसुधेयस्यवीतांयज
॥ २४ ॥ देवीजोष्ट्रीवसुधितीययोरन्याद्याद्वेपांसियुयवदान्यावक्षद्वसुवार्याणियजमानायवसुवनेवसुधेयस्यवीतांयज
॥ २५ ॥ देवीऊर्जाहुतीइपमूर्जमन्यावक्षत्सग्निंसपीतिमन्यानवेनपूर्वदयमानास्यामपुराणेननवंतामूर्जमूर्जाहुतीऊर्जय
मानेअधातांवसुवनेवसुधेयस्यवीतांयज ॥ २६ ॥ देवादैव्याहोतारापोतारानेष्टाराहताग्रशंतावाभरद्वसुवनेवसुधेयस्यवी
वसुमत्यासधमादंमदेमवसुवनेवसुधेयस्यव्यंतुयज ॥ २८ ॥ देवोनराशंसस्त्रिशीर्षापळक्षःशतमिदेनंशितिपृष्ठाआदधति
सहस्रमींप्रवहंतिमिन्नावरुणेदस्युहोत्रमहंतोवृहस्पतिस्तोत्रमश्विनाध्वर्यवंवसुवनेवसुधेयस्यवेतुयज ॥ २९ ॥ देवोवनस्प
तिर्वर्षप्रावाघृतनिर्णिकृद्यामग्नेणास्पृक्षदांतारिक्षंमध्येनाप्राःपृथिवीमपरेणाहंहीद्वसुवनेवसुधेयस्यवेतुयज ॥ ३० ॥ देवं
हिवरितीनानिधेधासिप्रच्युतीनामप्रच्युतंनिकामधरणंपुरुषार्हयशस्विदेनंवहिंन्यावर्होभ्यभ्यामवसुवनेवसुधेयस्य

३१ ॥ देवोअग्निःस्विष्टकृत्सुद्रविणामंद्रःकविःसत्यमन्मायजीहोताहोतुर्होतुरायजीयानग्नेयां देवायनयाभ्यौ
 वेतुयज ॥ ३१ ॥ अपिप्रेयतेहोत्रेअमत्सततांससनुर्पीहोत्रां देवंगमांदि विदेवेपुयज्ञमेरयेमंस्विष्टकृच्छाग्नेहोताभूर्वसुवनेयसुधेयस्यनमोवाकेत्री
 अग्निमद्यहोतारमवृणीतायंयजमानःपचन्पत्नीःपचन्पुरोळागंगृह्णन्नयआज्यं
 हियज ॥ ३२ ॥ अथसूक्तवाकप्रैपः ॥ अग्निमद्यहोतारमवृणीतायंयजमानोमायाज्येनाग्नीयोमाभ्यांछागेना
 गृह्णन्सोमायाज्यंवन्नग्नीयोमाभ्यांछागंसूपस्थाअद्यदेवोवनस्पतिरभवदग्रयआज्येनमोमायाज्येनाग्नीयोमाभ्यांछागेना
 द्यस्तंतंमेदस्तःप्रतिपचताग्रभीष्टामवीवृधेतांपुरोळागोनत्वामयर्पआर्पेयक्रीणांनपादवृणीतायंयजमानोवहुभ्यआसंगथे
 भ्यः ॥ एपमेदेवेपुवार्यादक्षयतइतितायादेवादेवदानान्यदुस्तान्यस्माआचशास्वाचगुरस्वेयितश्चहोतरसिभद्राव्यायप्र
 वितोमानुपःसूक्तयाकायसूक्तात्रू ३ हि ॥ ३३ ॥ अथसुत्यायामवनीयप्रैयाः ॥ होतायक्षदंभिंछागस्यवपायाभेदसो
 जुपतांहविर्होतय्यज ॥ ३४ ॥ होतायक्षदिंद्रहरिवांइंद्रोधानाअत्तुपूण्वान्करंभंसरस्वतीवान्भारतीवान्परिवापंद्रस्या
 पूषः ॥ मित्रावरुणयोःपयस्याप्रातःप्रातःसावस्यपुरोळाशौइंद्रःप्रस्थितांजुपाणोवेतुहोतय्यज ॥ ३५ ॥ होतायक्षदंभिंपु
 रोळाशानांजुपतांहविर्होतय्यज ॥ ३६ ॥ होतायक्षद्वायुमग्रेगानग्नेयावाणमग्रेसोमस्यपातारंकरदेवंनायुरावसागमज्जुपतां
 वेतुपित्रतुसोमंहोतय्यज ॥ ३७ ॥ होतायक्षदिंद्रवायूअर्हताह्णांगव्याभिर्गोमंतांश्रिग्रंतांवीर्याशुक्रयाएनयोर्नियुतो गो
 अग्रावीरोपशाश्वपुररस्यास्तासामिहप्रयाणमस्त्वहविमोचनंकरतएवद्राथूजुपेतांवीतापिततांसोमंहोतय्यज ॥ ३८ ॥

होतायक्षन्मित्रावरुणासुक्षत्रारिशदसानिचिन्मिपतानिचिरानिचिर्यासाक्षणाश्चिह्नवित्तरानुल्वणेनचक्षसकृतमृतमि
तिदीध्यानाकरतएवंमित्रावरुणाजुपेतांवीतांपिचतांसोमंहोतर्यज ॥ ३९ ॥ होतायक्षदध्विनानासत्यादीद्यग्नीरुद्रवर्तिनी
न्यतरेणचक्रेणवामीरिपऽऊर्जवहंतसुवीराः सनुतरेणाररुपोवाधेतामधुकशयेमयंयुवानामिमिक्षतांकरतएवाध्विना
जुपेतांपिचतांवीतांसोमंहोतर्यज ॥ ४० ॥ होतायक्षदिंद्रप्रातःप्रातःसावस्यार्वावतोगमदापरावतओरोरंतरिक्षादास्वात्स
धस्थादिमेअस्मैशुक्रामधुश्रुतःप्रस्थिताइंद्रायसोमास्तांजुपतांवेतुपिवतुसोमंहोतर्यज ॥ ४१ ॥ होतायक्षदिंद्रहोत्रात्सजूर्दे
वआपृथिव्याक्रतुनासोमंपिवतुहोतर्यज ॥ ४२ ॥ होतायक्षन्मरुतःपोत्रात्सुष्टुभःस्वर्काक्रतुनासोमंपिवतुपोतर्यज ॥ ४३ ॥
होतायक्षद्रावोनेष्ट्रात्त्वष्टासुजनिमासजूर्देवानांपत्नीभिर्क्रतुनासोमंपिवतुनेष्ट्यज ॥ ४४ ॥ होतायक्षदग्निमाग्नीध्राहतुना
सोमंपिवत्वग्नीद्यज ॥ ४५ ॥ होतायक्षदिंद्रोब्रह्मात्राह्मणाहतुनासोमंपिवतुब्रह्मन्यज ॥ ४६ ॥ होतायक्षन्मित्रावरुणौ
प्रशस्तारौप्रशस्त्राहतुनासोमंपिचतांप्रशस्तर्यज ॥ ४७ ॥ होतायक्षदेवंद्रविणोदांहोत्राहतुभिःसोमंपिवतुहोतर्यज ॥ ४८ ॥
होतायक्षदेवंद्रविणोदांपोत्राहतुभिःसोमंपिवतुपोतर्यज ॥ ४९ ॥ होतायक्षदेवंद्रविणोदानेष्ट्राहतुभिःसोमंपिवतुनेष्ट्यज
॥ ५० ॥ होतायक्षदेवंद्रविणोदामपाद्धेन्त्रादपात्पोत्रादपात्नेष्ट्रात्तुरीयंपात्रममृक्कममर्त्यमिंद्रपानंदेवोद्रविणोदाद्राविणो
दसःस्वयमायूयाःस्वयमभिगूर्याःस्वयमभिगूर्तयाहोत्रयक्रतुभिःसोमस्यपिवत्वच्छावाकयज ॥ ५१ ॥ होतायक्षदध्विना

[illegible]

॥ ७३ ॥

परिशि.

॥ ७३ ॥

अद्यदेवोयनस्पतिरभवदद्रयआज्येनसोमायाज्येनाग्नेच्छागेन्द्रायसोमेनहरिभ्यांधानाभिरघत्तंमेदस्तःप्रतिपचग्रभीद
वीवृधतपुरोळाशैरपादिंद्रःसोमंगवाशिरंयवाशिरंतीव्रांतंवहुदमध्यमुपोत्थामदाश्रौद्धिमदोआनळवीवृधतांगूपैस्त्वामद्य
वीवृधतपुरोळाशैरपादिंद्रःसोमंगवाशिरंयवाशिरंतीव्रांतंवहुदमध्यमुपोत्थामदाश्रौद्धिमदोआनळवीवृधतांगूपैस्त्वामद्य
वीवृधतपुरोळाशैरपादिंद्रःसोमंगवाशिरंयवाशिरंतीव्रांतंवहुदमध्यमुपोत्थामदाश्रौद्धिमदोआनळवीवृधतांगूपैस्त्वामद्य

इति ऋक्संहितापरिशिष्टानि

॥ इति अष्टमाष्टकः समाप्तः ॥

अयं ग्रंथः पणशीकरोपाहविद्धरलक्ष्मणशर्मतनुजनुपा वासुदेवशर्मेणा^१ परिष्कृत्य
संशोधितः सचायं सुंभय्यां निर्णयसागराख्यमुद्रणयंत्रपरियुद्धैः श्रीमद्भिः
पांडुरंग जावजी इत्येतैः स्वीयेऽकनालये सुद्रयित्वा प्रका
शितः ।



शकः १८५२, सनः १९३०.

Published by Pandurang Jawaji, at the Niranya-sagar Press, 26-¹/₂, Kolbhat Lane, Bombay
Printed by Ramchandra Yeshu Shedge, at the Niranya-sagar Press, 26-28, Kolbhat Lane, Bombay

॥ अक्षसंहितासभासा ॥

